जियो और जीने दो

भागवती व जीवनोपयोगी शिक्षा

एक इष्ट की ही चौखट पर ही सर झुके तो सुकून मिलता है,
भटक जाते है वरना वो लोग जिनके हजारों भगवान होते है।

* संग्रीकरण :- सौ. प्रगती प्रभाकर अकीम

* छायांकन :- श्री सुधीर वासुदेवराज लिंगायत
आर्टटेक ग्राफीक्स, ७८९/९०, गुरुवार पेठ, पुणे- मो. ९४२२३६३३११

* सौजन्य :- पार्टस् कॉटेज, ६-ए, दिवाडकर अपार्टमेंटस्, ताडीवाला रोड, पुणे- ४११००१

* संशोधन, शुद्धिकरण:- श्री अशोक चांदमल सिंहल

* प्रेषक व्यवस्था :- श्री मोहन तुलस्यान (तुलस्यान एक्सप्रेस कुरिअर) फोन नं.२६११९२९१,
३, सागर अपार्टमेंटस्, फ्लॅट नं.८, ताडीवाला रोड, पूना-४११००१
घर-२६०५०७६१ मो.९८२३०४४८३२

* सहयोगी छायांकन :- रश्मि हीरा - संजय हीरा

* पॅकिंग श्री ओमप्रकाश बलभद्रप्रसाद अग्रवाल

* भागवतकार :- श्री अनन्तसुत मणिरत्नम् महेन्द्रकुमार पाटोदिया

कोनार्क इन्क्लेव्ह, बी-८, बंड गार्डन रोड, पुणे - १
फोन नं. - २६१६२६७२, २६०५९६७४, २६०५९५०९ मो. ९३७१११६६८३

* प्रकाशन नारायणी देवी सांस्कृतिक भवन ट्रस्ट
श्री नारायणी धाम, सर्व्हे नं. ७४/१-बी, प्लॉट नं. १७-१८-१९,
कात्रज दूध डेअरी के पीछे, सातारा रोड, पुणे-४११०४३ फोन- २४३६५१५१

*** जिंदगी जीना आसान नहीं होता बिना संघर्ष कोई महान नहीं होता,**
जब तक न पड़े हथौड़े की चोट तो पत्थर भी भगवान नहीं होता।

*** मूल्य - आपकी खुशी**

ग्रन्थ प्राप्ति का स्थान

१) महालक्ष्मी मंदिर,
नेहरू स्टेडियम के पास,
सारस बाग, पुणे- ४११०३७

२) नारायणी देवी सांस्कृतिक भवन ट्रस्ट, (राणी सती मन्दिर)
सर्व्हे नं. ७४/१-बी/२, प्लॉट नं. १८-१९,
कात्रज दूध डेअरी के पीछे, सातारा रोड,
पुणे- ४११ ०४६ फोन नं. २४३६५१५१

३) अमरनाथ अग्रवाल
१०३१, बुधवार पेठ, जगोबादादा तालीम के पास,
पूना-४११००२ फोन नं. ऑ.२४४७३३१० घर-२५४३०२७४

४) श्री एस. सी नागपाल (आर्य समाज)
आर्य समाज, ए-१/१०१, ऑक्सफर्ड व्हिलेज,
वानवडी, पूना-४११०४० फोन नं. २६८५१६९०

५) श्री जगदीश बाघमल अग्रवाल
हॉटेल टूरिस्ट, मंगलवार पेठ, पुणे- २

६) श्री शाम ग्यानीराम अग्रवाल
आज का आनंद, शिवाजीनगर, पुणे-५
फोन ऑ. २५५३४८८८

७) श्री सुशीलजी अग्रवाल
एस-३, जनता कॉलनी, जयपुर-३०२००४
फोन नं. ऑ. ०१४१-२६०६७४६, मो. ९८२९०६०६७४

८) श्री प्रेमप्रकाश सूतवाला
नवशील अपार्टमेंटस्, ब्लॉक नं. ५, फ्लॅट नं. २, ५६ कॅन्टोनमेंट,
कानपुर (उ.प्र.)- २०८००४ फोन नं. २३८११७०

९) श्रीमती गीता जयप्रकाश गोयल
बिल्डिंग ९ए, ११ वां मजला, गंगा सॅटेलाईट,
वानवडी, पुणे- ४११०४० मो. ९८६०००००२२
फोन नं. ऑ. २६१४०२५१ घर- २६८३७४३४

१०) शंकरलाल रिणवाँ
धानूका आश्रम, परिक्रमा मार्ग, रमण रेती,
वृंदावन- २८११२१ (यू.पी.) मोबाईल -०९७५६२५८२४२
फोन नं. ०५६५-३२९०८०४, २५४००७५, २५४०७३१

११) श्री विजय चौधरी
आशिष, विमान नगर, खामगांव-४४४३०३
फोन नं. (०७२६३) २५२४०३ ऑ. २५३११६

१२) श्री बनवारीलाल अगरवाल
१६-११-७४१/डी/३६, मूसारामबाग,
हैद्राबाद- ५०००३६ मो. ९४२४६३५४९१९

१३) श्री किरण अग्रवाल
कुसुम बंगलो, आकाशगंगा सोसायटी,
कृष्णचरन अपार्टमेंटस् के सामने, काठे गल्ली,
द्वारका, नासिक- ४२२००१
फो. (०२५३) ८०४६३३, २५९५१०४, मो. ९८५०३०४०६१

१४) श्री देवीप्रसाद सरावगी
गोकुलधाम,२९बी-२ रा मजला, ३२/१बी,
रामकृष्ण समाधी रोड, कलकत्ता-७०००५४
फोन नं. घर-२३२०१४१४ ऑ.२३५३८७६८

१५) श्री मोतीलाल डेंगला
अरुणोदय, ११८९/ए, १३-मेन हॉल, दूसरा स्टेज
बेंगलोर- ५६०००८ फो. २५२६४२०५, मो.९३४१२६२४९३

१६) श्री सुनील गर्ग (दर्शना)
उत्तम टाऊनस्केपस्, फ्लॅट नं. (ए-१)-१०२,
सिरीन हॉस्पिटल के सामने, येरवडा, पुणे- ४११००६
मो. ९८९०४५६९२८, ९९६०२६०६६१ (दर्शना)

१७) श्री राजेन्द्र बेनीप्रसाद मंगल
श्री खाटू श्याम मित्र मंडल, पूना
सी.एम.ई. पुणे- ४११०३१ मो. ९७६४४५५८५५

१८) बनवारीलाल जाजोदिया
रघुमणि, डी-३४, एचआयजी कॉलनी,
शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के पीछे, आग्रा-मुंबई रोड,
इंदौर- ४५२००१ (म.प्र.)
फो. २५५९४५१ मो. ९३००५६९४७१

१९) श्रीकांत रामस्वरूप मोरारका
नानसा गेट, स्टेशन नवलगढ़- ३३३०४२
जिल्हा- झुनझुनु (राजस्थान) मो. ९४१४३१५७३०

*** सहयोगी दल *** १) श्री राजकुमार बन्सीलाल अग्रवाल, २) श्री ओमप्रकाश बलभद्रप्रसाद अग्रवाल, ३) श्री श्यामसुंदर बांकेलाल गोयल, ४) श्री राधेश्याम गोयल, ५) श्री राजेन्द्र बेनीप्रसाद मंगल, ६) श्री राजेश अग्रवाल

गणेश

हिंदू धर्म में भगवान श्री गणेश का अद्वितीय स्थान है। पूजा-पाठ हो या विधि-विधान, हर मांगलिक, वैदिक कार्यों को प्रारंभ करते समय सर्वप्रथम गणपति का स्मरण किया जाता है। वे बुद्धि के अधिदेवता, विघ्नविनाशक है। इनकी पीछे जो शक्तियां है वो चौदह देवता है। देवताओं के मूल प्रेरक भी गणेश ही है। गणपति सब देवताओं में अग्रणी है। गणेश जी अपने आपमें वास्तु है। गणेश जी की पूजा पाठ से नौ ग्रहों का दोष भी दूर हो जाता है। श्वेत गणपति की पूजा लाभदायक है। इससे जीवन में भौतिक सुख एवं समृद्धि का प्रभाव आता है।

गणेशजी का महत्व भारतीय धर्मों में सर्वोपरि हैं। उन्हें हर नए कार्य, हर बाधा या विघ्न के समय बड़ी उम्मीद से याद किया जाता है और दु:खों, मुसीबतों से छुटकारा पाया जाता है। श्रीगणेश को विघ्न विनाशक माना गया है। गणेशजी को देवसमाज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। गणेशजी को विघ्नहर्ता और रिद्धि-सिद्धि का स्वामी माना गया। इनके स्मरण, ज्ञान, जप और पूजन मे समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है। ये बुद्धि के अधिष्ठाता, साक्षात् प्रणव स्वरूप और शीघ्र प्रसन्न होनेवाले देवता है। शुभ कार्यों में सर्वप्रथम गणेश जी का ही पूजन किया जाता है। जब किसी भी कार्य को आरंभ किया जाता है तो कहते हैं कि कार्य का श्रीगणेश हो गया।

भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को मध्याह्न के समय गणेशजी का जन्म हुआ था। गणेशजी को बुद्धि का देवता भी माना जाता है। गणेशजी का वाहन चूहा है। इनकी दो पत्नियां भी हैं, जिन्हें रिद्धि और सिद्धि के नाम से जाना जाता है। इनका सर्वप्रिय भोग मोदक यानी लड्डू है।

मूलत: गणेशोत्सव पारिवारिक त्यौहार था, किन्तु बाद के दिनों में लोकमान्य बाल गंगाधर ने इस त्यौहार को सामाजिक स्वरूप दे दिया तथा गणेशोत्सव राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बन गया। तिलक ने गणेशोत्सव के द्वारा आजादी की लड़ाई, छुआछूत दूर करने और समाज को संगठित किया।

आज महाराष्ट्र का गणेशोत्सव विश्व भर में प्रसिद्ध है, जहां गणेश भगवान को मंगलकारी देवता के रूप में व मंगलमूर्ति के नाम से पूजा जाता है।

पूरे महाराष्ट्र में गणेश ही ऐसे देवता है जिन्हें छोटा-बड़ा, अमीर गरीब हर कोई चाहता है। उनके रूप को लेकर सबके मन में बड़ी-बड़ी उत्सुकताएं बनी रहती है। गणेशजी की विदाई गणेश चतुर्थी के दस दिन के बाद होती है। तो घर खाली हो जाता है मन उदासी से भर जाता है। हमारे सभी देवताओं की मूर्तियों का एक रूप निश्चित होता है पर गणेश जी की मूर्तियों में बड़ी विभिन्नता है। गणेश पुराण में चार युगों के चार गणेश जी का वर्णन मिलता है। कलियुग का आरंभ होकर हजारों साल व्यतीत हो गये इस युग के गणपति धूमकेतू है। ये द्विभुज गणपति है और इनका वाहन अशुभ है पर गणेश जी का यह स्वरूप ज्यादा प्रचलित नहीं हुआ।

गणेशजी विद्या के देवता और समृद्धि के देवता माने जाते हैं। ऋद्धि, सिद्धि गणेश जी की पत्नियां है जो सफलता कीर्ति समृद्धि की प्रतीक है। गणेश चौंसठ कलाओं के स्वामी माने जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि प्रत्येक शुभ कार्य के आरंभ में निर्विघ्न कुरु में दैव सर्व कार्येषु सर्वदा। गणेश की पूजा की जाती है और उससे हर कार्य में सफलता असंदिग्ध हो जाती है।

भारतीय समाज उत्सवधर्मी है। सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक या पारिवारिक आदि विभिन्न कारणों से वार्षिक अथवा प्रासंगिक रूप से मनाए जानेवाले उत्सवों की जितनी लंबी सूची हमारे देश में है, उतनी बड़ी विश्व के अन्य किसी भी देश

में नहीं है। उसमें भी धार्मिक उत्सवों के पीछे श्रद्धा और कर्त्तव्य का सुंदर समन्वय होने के कारण विदेशों में रहनेवाले अनिवासी भारतीय नागरिक अपने उत्सव साथ में ले जाते हैं। ऐसे उत्सवों की सूची में महाराष्ट्र के गणेशोत्सव और बंगाल की दुर्गापूजा, इन दो मूर्तिपूजक उत्सवों का समावेश है। कालांतर में गाणपत्य संप्रदाय की इष्टपूजा में विराजमान गणपति हिंदू धर्म के देवताओं में अग्रपूजा के स्थान पर विराजमान हुए और घर-घर में शुभकार्य का प्रारंभ गणेश-पूजन से होने लगा। महाराष्ट्र के लोग सदियों से गणेश चतुर्थी के अवसर पर अपने घरों में गणेश की प्रतिमा स्थापित करके पूजा-अर्चना करते रहे हैं। पर महाराष्ट्र में सार्वजनिक गणेशोत्सवों की शुरुआत १२२ वर्ष पहले लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने की थी, जिसका उद्देश्य धार्मिक भावना के साथ समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगों को एकजुट करके स्वतंत्रता-संघर्ष में उन्हें सहभागी बनाना था। वर्ष १८९२ में स्वतंत्रता के लिए चलाया गया आंदोलन जोरों पर था। अंग्रेजी हुकूमत आंदोलन को कुचलने के लिए हर संभव प्रयास कर रही थी। सरकार ने उसे कुचलने के लिए दमनचक्र चला रखा था। सभाओं के आयोजन पर प्रतिबंध लगा दिया गया था, पर धार्मिक आयोजनों पर प्रतिबंध नहीं था। लोकमान्य तिलक ने सार्वजनिक तौर पर गणेशोत्सव के आयोजन का निर्णय लिया और इसके माध्यम से सामाजिक कुरीतियों को रोकने के लिए जनजागरण का काम शुरू हुआ।

गणेश मूलत: वैदिकेतर देवता हैं, इस संबंध में लगभग सभी पाश्चात्य व भारतीय विद्वान एकमत हैं। हिंदू धर्म में प्राणिपूजा प्रचलित है। प्राचीन काल में भी वह प्रचलित थी। पांच हजार वर्ष पूर्व की सिंधुकालीन मुद्राओं पर हाथी का चित्र अंकित होना इस बात का प्रमाण माना जा सकता है कि इस विशालकाय प्राणी को लेकर लोगों के मन में कुतूहल था। शुक्ल यजुर्वेद की मैत्रायणी संहिता में शतरुद्रियात देवता का उल्लेख है, जिसे कराट (हाथी जैसे कानवाला), दंती (हाथी के जैसे दांत वाला), हस्तिमुख (हाथी के मुख जैसा मुखवाला) आदि विशेषण दिए गए हैं। महाभारत में वर्णित गणेश उपकारकर्ता हैं, पर उपद्रवी भी हैं। कोई भी काम सिद्ध हो, इसके लिए विनायक (गणेश) की शांति कराएं, ऐसा कहा गया है। इससे वे विघ्नकर्ता से विघ्नहर्ता बन जाते हैं। गणेश समस्त विद्याओं और कलाओं के अधिष्ठाता हैं। गजमुख, तुंदीलतनु, लंबोदर, मूषकवाहन इन तमाम भिन्न आकारों और रंगों को एकत्र करके गणेश की प्रतिमा सकार होती है। यह अद्‌भुत समायोजन है। प्राणी का शीर्ष और मानवीय शरीर इस स्वरूप के अन्य अनेक देवता हमारे यहां हैं। परंतु गणेश के आकर्षक स्वरूप का दर्शन उनमें नहीं दिखाई देता है। इस अर्थ में वे उन सबमें विशिष्ट है।

बदलते समय के साथ गणेशोत्सव के स्वरूप में भी काफी बदलाव आ गया है। इस धार्मिक-सांस्कृतिक उत्सव पर राजनीति और व्यावसायिकता हावी होती जा रही है। राजनैतिक वर्चस्व स्थापित करने की होड़ में ऊंची-ऊंची प्रतिमाएं स्थापित की जाने लगी हैं।

देवों में सर्वप्रथम पूज्य भगवान श्री गणेश को प्राचीन काल से ही हिन्दू संस्कृति में विशिष्ट स्थान प्राप्त हैं। वक्रतुंड, एकदंत, कर्णपिंगाक्ष, लंबोदर, गजानन, विनायक आदि नामों से पुकारे जानेवाले गणेश जी का जन्म भाद्रपक्ष शुक्ल चतुर्थी को माना जाता है। इस दिन पूरे देश में जगह-जगह गणपति जी की विशाल प्रतिमाओं की स्थापना की जाती है। गणेशोत्सव के लिए विशाल साज सज्जायुक्त झाकियां बनाई जाती हैं। साथ ही सांस्कृतिक एवं धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। गणेशोत्सव की सर्वाधिक धूम महाराष्ट्र में देखी जा सकती है।

गणेश भारतीय संस्कृति में शुभ और मंगल के प्रतीक हैं। हिंदू धर्म में जो देवता आदि पूजित हैं, यानि जिनकी परिकल्पना हमारी सभ्यता के बिल्कुल आरंभिक दिनों से मिलती है, उनमें एक गणेश भी हैं।

आश्चर्यजनक रूप से हमारे धर्म में जो अनेक पंथ और संप्रदाय हैं, उन सबमें गणेश की महिमा एक समान महत्वपूर्ण

है। हिंदू धर्म के सभी सोलह संस्कारों का प्रारंभ गणेश वंदना से किया जाता है। लंबे समय से यह प्राय: पूरे भारत में प्रचलित प्रथा ही बन गई है। वे बाल सुलभ हैं और बेहद निर्मल वृत्ति के देवता हैं। उनके रौद्र या विकराल रूप की कोई अवधारणा ही नहीं है। वे लालित्य के अद्भुत प्रतीक हैं।

पूजा के लिए भी उनका बाल रूप ही प्रचलित है। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि उनका सिर पिता द्वारा काट दिए जाने के बाद अपने शरीर पर हाथी का सिर धारण करने की व्याख्या आप भारत की पहली ट्रांसप्लांट सर्जरी के रूप में करते हैं या समाज के मनोविज्ञान की अभिव्यक्ति के रूप में- महत्वपूर्ण यह है कि उनका बड़े गोल पेटवाला और हाथी के सिरवाला रूप जितना बड़ों को लुभावना और आकर्षक लगता है, उतना ही बच्चों को भी।

सुंदर आंखें, एक सफेद हाथी की दांत, पूरी भाव भंगिमा में एक तरह की निश्चिंतता यह रूप सभी को मोहित करती है, कभी भयभीत नहीं करती। द्वादश विनायक और कहीं-कहीं अष्ट विनायक के रूप में गणेश के अनेक मंगलकारी रूप विद्यमान हैं, लेकिन वे सब एक समान मोहक और शांतिदायी हैं।

गणेश की छवि माता-पिता के आज्ञाकारी पुत्र की छवि है। पूरी पृथ्वी नापने के लिए अपने माता-पिता की ही परिक्रमा कर लेना यही संदेश देता है। उनकी यह बुद्धिमत्ता भी बाल सुलभ है। गणेश ब्रह्मचारी हैं, लेकिन उनके जीवन में हमेशा दो देवियां एक साथ आती हैं। उनकी दो मांएं हैं पार्वती और गंगा। वे रचना कर्म के अधिष्ठाता हैं। इसलिए हम लक्ष्मी और सरस्वती का पूजन गणेश की सहदेवी के रूप में करते हुए समृद्धि और ज्ञान की कामना करते हैं और ऋद्धि-सिद्धि भी हमेशा गजानन के ही साथ पूजित होती हैं। गणेश जी के यही गुण उन्हें अन्य देवताओं से श्रेष्ठ बनाते हैं।

यहां गणेशोत्सव महज उत्सव या आस्था का प्रतीक नहीं है, अपितु यह अतिक्रमण हैं मन की शुद्धि, एकात्मकता, ध्यान व अध्यात्म का। दस दिनों तक लोगबाग इस उत्सव में इस कदर तल्लीन होते हैं कि उन्हें गणपति के सिवा कुछ नजर ही नहीं आता और इसे ही ध्यान की पहली सीढ़ी माना गया है कि मनुष्य किसी एक बिंदु पर आकर अपना सुधबुध खो बैठे, चाहे वह आस्था के रूप में हो, या उत्सव के रूप में।

आदि आराध्य देव गणपति को प्रथमेश माना गया है, इसलिए यज्ञ, पूजन, सत्कर्म, उपनयन, विवाह आदि धार्मिक उत्सवों की निर्विघ्न संपन्नता के लिए शुभ के रूप में गणेशजी की पूजा सबसे पहले की जाती है। भाद्रपद की चतुर्थी से चतुर्दशी तक दस दिन चलनेवाले गणेशोत्सव में गणपति को मंगलपूर्ति के रूप में पूजते हैं। यूं तो गणेशोत्सव कमोबेश पूरा देश मनाता है, किंतु महाराष्ट्र का गणेशोत्सव विश्वप्रसिद्ध है, जिसमें मुंबई, पुणे की खास अहमियत है।

महाराष्ट्र में सात वाहन, राष्ट्रकूट, चालुक्य आदि राजाओं ने गणेशोत्सव की प्रथा शुरू की थी। छत्रपति शिवाजी महाराज भी गणपति उपासना करते थे। पेशवाओं ने गणेशोत्सव को बढ़ावा दिया। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने गणेशोत्सव को राष्ट्रीय एकता में पिरो दिया। पहले गणेश पूजा परिवार तक सीमित थी। तिलकजी ने इसे सार्वजनिक बनाते आजादी की लड़ाई, छुआछूत दूर करने और समाज को संगठित करने तथा आम आदमी का ज्ञानवर्धन करने का जरिया बनाकर एक आंदोलन का स्वरूप दे दिया। इस आंदोलन ने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। तिलकजी द्वारा १८९३ में किया गया गणेशोत्सव का सार्वजनिक पौधरोपण अब विराट वट वृक्ष बन चुका है। वर्तमान में केवल महाराष्ट्र में ५० हजार से ज्यादा सार्वजनिक गणेशोत्सव मंडल हैं। इसके अलावा आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और गुजरात में भी बड़ी संख्या में गणेशोत्सव मंडल हैं।

तिलक ने गणेशोत्सव प्रारंभ कर हमें यह सिखाया उत्सव ही जीवन की वास्तविक कला है और यही हमें दु:ख से निजात

दिलाकर शाश्वत आनंद की ओर ले जाता है। यही वह सीमा है जहां से हम अपने अंतस्थ में उत्तर ध्यान की ओर बढ़ते हैं। इसकी कुंजी छिपी है गणेशोत्सव में, जो सैकड़ों सालों का सफर तय कर आज विश्वव्यापी हो गया है। तिलक ने संदेश दिया उत्सव हमें एकता के सूत्र में पिरोता है। जब तक समाज में कुरीतियां, कुप्रथाएं, अंधविश्वास व्याप्त है तब तक शाश्वत स्वराज्य की कल्पना नहीं की जा सकती। गणेश के अनेकों रूप हैं। उनके कुछ उदाहरण प्रस्तुत है।

बाल गणपति- ये चतुर्भुज गणपति हैं। इनके चारों हाथों में केला, आम, कटहल, ईख तथा सूंड में मोदक होता है। यह गणपति प्रतिमा अरुण वर्णीय लाल आभायुक्त होती है। नि:संतान दंपति इनकी आराधना से संतान सुख प्राप्त करते हैं, ऐसी शास्त्रीय मान्यता हैं।

तरुण गणपति- यह गणपति का अष्टभुजी रूप है, जिनके हाथों में पाश, अंकुश, कपित्थ फल, जामुन, टूटा हुआ हाथी दांत, धन की बाली तथा ईख आदि होते हैं। इनकी भी हल्की लाल आभा होती है। युवा वर्ग अपने शीघ्र विवाह की कामना के लिए इनकी आराधना करता है।

ऊर्ध्व गणपति- इन गणपति विग्रह की आठ भुजाएं हैं। देह का वर्ण स्वर्णिम हैं। हाथों में नीलोत्पल, कुसुम, धान की बाली, कमल, ईख, धनुष, बाण, हाथी दांत और गदायुध हैं। इनके दाहिनी ओर हरे रंग से सुशोभित देवी भी हैं। जो भी व्यक्ति त्रिकाल संध्याओं में इन गणपति विग्रहों में से किसी की भी भक्तिपूर्वक उपासना करता है, वह अपने शुभ प्रयत्नों में सर्वदा विजयी रहता है।

भक्त गणपति- गणपति के इस रूप के चार हाथ हैं, जिनमें नारियल, आम, केला व खीर के कलश सुशोभित होते हैं। इस गणपति प्रतिमा का वर्ण पतझड़ की पूर्णिमा के सामन उज्ज्वल श्वेत होता है। इष्ट प्राप्ति की कामना से इनकी आस्थापूर्वक आराधना की जाती है। मान्यता है कि इससे समस्त इच्छाओं की पूर्ति होती है।

वीर गणपति- श्री गणेश की यह प्रतिमा सोलह भुजाओंवाली होती है। इनकी छवि क्रोधमय तथा भयावनी हैं। शत्रुनाश एवं संरक्षण के उद्देश्य से की गई इनकी आराधना तत्काल लाभ पहुंचाती है। यह भक्तों को शत्रुओं पर विजय दिलाने में सहायक माने जाते हैं।

शक्ति गणपति- इस प्रतिमा की बायीं ओर सुललित ऋषि देवी विराजमान होती हैं, जिनकी देह का रंग हरा है। संध्याकाल की अरुणिमा के समान धूमिल वर्णवाले इन गणपति के दो ही भुजाएं हैं। सुख, समृद्धि, भरपूर कृषि व अन्य शांति कार्यों के लिए इनका पूजन अत्यंत शुभ माना जाता है।

हेरंब विघ्नेश्वर- बारह भुजाओं से युक्त हेरंब गणपति की इस प्रतिमा का दाहिना हाथ अभय मुद्रा व बायां हाथ वरद मुद्रा प्रदर्शित करता है। सिंह पर सवार हेरंब गणपति के पांच मुख हैं। इनके देह का वर्ण श्वेत हैं। संकटमोचन तथा विघ्ननाश के लिए अत्यंत प्रसिद्ध हैं।

लक्ष्मी गणपति- गणपति की इस प्रतिमा के दोनों पार्श्वों में रिद्धि-सिद्धि नामक दो देवियां विराजमान होती हैं। इनके आठ हाथों में तोता, अनार, कमल, मणिजड़ित कलश, पाश, अंकुश, कल्पलता और खड्ग शोभित हैं। देवियों के हाथों में नील कुमुद होते हैं। सुख, समृद्धि की कामना पूर्ण करने के लिए लक्ष्मी गणपति अति प्रसिद्ध हैं।

महागणपति- द्वादश बाहुवाले महागणपति अत्यंत सुंदर, गजबदन, भाल पर चंद्र कलाधारी, तेजस्वी, तीन नेत्रों से युक्त तथा कमल पुष्प हाथ में लिए क्रीड़ा करती देवी की गोद में उठाए अत्यंत प्रसन्न मुद्रा में अधिष्ठित हैं। इनकी देह का वर्ण सुहावनी लालिमा से युक्त हैं। अन्न-धन, सुख-विलास व कीर्ति प्रदान करनेवाला महागणपति का यह स्वरूप भक्तों

की कामना पूर्ति के लिए प्रसिद्ध हैं।

विजय गणपति- अरुण वर्णी सूर्य कांति से युक्त तथा चार भुजाओंवाले विजय गणपति की यह प्रतिमा अपने हाथों में पाश, अंकुश, हाथी दांत तथा आम फल लिए हुए होती है। मूषक पर आरूढ़ यह विजय गणपति प्रतिमा कल्पवृक्ष के नीचे विराजमान होती है। अपने किसी भी मंगल प्रयास में विजय की कामना से विजय गणपति की आराधना की जाती है।

विघ्नराज/भुवनेश- स्वर्णिम शरीर व बारह भुजाओंवाली गणपति की यह प्रतिमा हाथों में शंख, पुष्प, ईख, धनुष, बाण, कुल्हाड़ी, पाश, अंकुश, चक्र, हाथी दांत, धान की बाली तथा फूलों की लड़ी लिए रहती है। इनका पूजन किसी भी शुभ कार्य के प्रारंभ में करना अत्यंत लाभदायक होता है।

भारत की सबसे पुरानी गणेश प्रतिमा- यदि भारत में सबसे पुरानी गणेश प्रतिमाओं की बात करें तो वह छत्तीसगढ़ के बस्तर सम्भाग के दंतेवाड़ा जिले के आदिवासी बहुल क्षेत्र बारसुर में देखने को मिलती हैं। यह द्वय प्रतिमायें बालू पत्थर से बनी हैं जिनमें बड़ी मूर्ति की ऊंचाई ८ फीट व आधार का व्यास १७ फीट है, जबकि उसके समीप छोटी मूर्ति की ऊंचाई ५ फीट है। माना जाता है यह दोनों प्रतिमायें यहां पर बने एक विशाल शिव मंदिर में स्थापित रही होंगी जो काल के थपेड़ों को झेल न सका और ध्वस्त हालत में है। किन्तु यह विशाल प्रतिमायें यहां पर बची रह गईं। इसके पास एक ध्वस्त मंदिर के भग्नावशेष बिखरे हैं। सातवीं शती के आस-पास बारसूर नागवंशियों-राजाओं की राजधानी चक्रकोट नाम से मशहूर थी तब यहां पर डेढ़ सौ के आस-पास मंदिर के भग्नावशेष बिखरे हैं। सातवीं शती के आसपास बारसूर नागवंशियों-राजाओं की राजधानी चक्रकोट नाम से मशहूर थी तब यहां पर डेढ़ सौ के आस-पास मंदिर व तालाब हुआ करते थे। उनके बाद आये कल्चुरी राजाओं के समय भी यह एक सम्पन्न नगरी रही। १४ वीं शती में जब चालुक्यों की एक शाखा के राजा ने इस पर आधिपत्य करने के लिए आक्रमण किया तो यहां के शासक व प्रजा यहां से पलायन कर बस्तर की ओर चली गई और उस स्थान को बसाया। चालुक्य नरेश ने बारसूर को जीतने के बाद अपनी राजधानी ६० किमी दूर दंतेवाड़ा को बनाया। राजधानी के बदलने से बारसूर नेपतथ्य में चला गया और यहां पर स्थापित मंदिर, तालाब व दूसरे भवन उपेक्षा के कारण खंडहर में बदलते चले गए। आज भी बारसूर की तीन कोसी की परिधि में यहां के मंदिरों व भवनों के खंडहर बिखरे मिलते हैं। इनमें मामा-भांजा व बत्तीसा मंदिर बेहतरीन हैं। इन गणेश प्रतिमाओं को राज्य पुरातत्व विभाग ने एक जालीदार कक्ष में स्थापित किया है।

ग्रेनाइट के श्रीगणेश- इसके अलावा बारसूर से ग्रेनाइट पत्थरों से बनी गणपति सहित अनेकों देवी-देव प्रतिमाओं से कुछ को दंतेवाड़ा स्थित प्रसिद्ध दंतेश्वरी मंदिर में रखा गया है तो कुछेक राज्य व राज्य के बाहर के संग्रहालयों में प्रदर्शित हैं। आज का बारसूर एक आदिवासी बहुल क्षेत्र है जिनकी परम्पराओं से लेकर, उपास्य पद्धति व संस्कृति हिंदू रीति-रिवाजों से एकदम अलग है। नक्सल हिंसा से प्रभावित क्षेत्र में इसके होने से न तो राज्य के पुरातत्व विभाग बारसूर में दिलचस्पी दिखाई है और न भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने ही इसकी सुध ली है। नक्सल वरदातों के होने से पर्यटक भी दंतेवाड़ा से बारसूर तक कम ही जाते हैं। कर्नाटक के विश्वविरासत स्थल हम्पी में गणपति की दो विशाल प्रतिमायें हरेक का ध्यान खींचती हैं। वैसे तो हम्पी में कई दर्शनीय संरचनाएं मौजूद हैं। इन संरचनाओं में ही गणपति के दो मंदिर हैं, जिनमें गणपति की यह विशालतम प्रतिमाएं मौजूद हैं। हम्पी में जैसे ही प्रवेश करते हैं तो बाईं ओर हेमकूट की छोटी पहाड़ी पर नजर जाती है। इसी की ढाल पर यह दो गणपति मंदिर हैं। इनमें एक मंदिर कडलेकालु गणेश है, जिसमें गणेश जी की १५ फीट ऊंची प्रतिमा मौजूद है। कडलेकालु का कन्नड़ अर्थ चने के दाने से है। गणेश जी की यह विशाल प्रतिमा मंदिर के गर्भगृह में स्थापित है। मूर्ति के कुछ भाग मुस्लिम आक्रांताओं के द्वारा विजयनगर पर आक्रमण के समय खंडित किए गए, किन्तु

इतनी बड़ी प्रतिमा को आततायी ज्यादा नुकसान न पहुंचा सके। खंडित होने पर भी इसकी भव्यता व स्वरूप यथावत बना है। गर्भ गृह के बाहर प्रस्तरों के खम्भों से युक्त आयताकार मंडप है। मंदिर के खम्भों पर अनेकानेक शानदार कलाकृतियां गढ़ी गई हैं। यह प्रतिमा १५ वीं शती में निर्मित की गई मानी जाती है।

इसी पहाड़ी पर गणेश जी की दूसरी बड़ी प्रतिमा सासिवकालु गणेश की है। जिसका कन्नड अर्थ है सरसों का दाना। यह चारों ओर से खुले एक प्रस्तर मंडप में स्थापित है जो ८ फीट ऊंची है। मूर्ति का कुछ भाग खंडित है। फिर भी यह मूर्ति देखनेवाले को काफी प्रभावित करती है। इन मंदिरों के ऊंचे टीले पर होने से दूर-दूर का दृश्य सामने दृष्टिगोचर होता है, जिनमें विरुपक्ष मंदिर के गोपुरम की भव्यता देखते ही बनती है। हम्पी के यह मंदिर विजयनगर के राजाओं के समय बने। इनमें से सासिवकालु गणेश की प्रतिमा को आंध्र में चंद्रगिरी के एक व्यापारी द्वारा अपने राजा नरसिंह की स्मृति में स्थापित करवाया गया। इन मंदिरों की प्रतिमाओं के खंडित करने के कारण यह मंदिर हमेशा के लिए पूजा के लिए त्याज्य हो गए। लेकिन फिर भी कई हिंदू श्रद्धालु यहां पर विधि-विधान से पूजा करते मिलते हैं। हम्पी के एक कोने पर ही वह किष्किन्धा पर्वत है जिसके आधार पर पम्पा सरोवर के समीप हनुमान जी को राम-लक्ष्मण के दर्शन का सौभाग्य मिला था, जो सीता को खोजते-खोजते वहां पहुंचे थे। यहीं पर हनुमान ने किष्किंधा पर्वत पर सुग्रीव से मुलाकात कराई थी और लंका परा जीत की रणनीति बनी। इस अभियान को सफल बनाने से पहले यहां पर राम-लक्ष्मण ने गणेश जी की पूजा की थी। हम्पी में रामायण प्रसंग को लेकर हजार राम मंदिर दर्शनीय हैं। इनके अलावा दक्षिण में कई दूसरे स्थानों व गुफाओं में गणेश जी की खुदी प्रतिमायें मिलती हैं। इनमें सबसे विशाल मूर्ति आंध्र प्रदेश के अनंतपुर जिले के लिपाक्षी में है। जहां पर लाल पत्थर पर खुदी विनायक की लगभग ८ फीट ऊंची मूर्ति है। माना जाता है लिपाक्षी में श्रीराम को जटायु मिले थे।

कोल्हापुर में है सबसे ऊंची मूर्ति- इन पुरानी विशाल मूर्तियों से यदि हटकर बात की जाए तो भारत में सबसे विशाल गणेश प्रतिमा महाराष्ट्र के कोल्हापुर में है, जो ६६ फीट ऊंची है। इक्कीसवीं शती में निर्मित इस प्रतिमा के निर्माण में आधुनिक निर्माण सामग्री का प्रयोग हुआ है। यह प्रतिमा २० फीट ऊंची वेदिका पर स्थापित है। इसलिए यह जमीन से ८८ फीट ऊंची है, जो बहुत दूर से दिखाई देती है। अक्टूबर से फरवरी तक का समय बस्तर व हम्पी जाने का सबसे बेहतर समय होता है। बस्तर की सीमा महाराष्ट्र को छूती है। नागपूर से रायपुर या कोलकाता से राउरकेला होते हुए रायपुर आ सकते हैं, जहां से ३०० किमी की दूरी पर बस्तर का मुख्यालय जगदलपुर है। यह पर्यटकों के लिए हर तरह की सुविधाओं से युक्त है। जगदलपुर से बारसूर जाने के लिए भवानीपट्टनम वारंगल मार्ग पर गीदम आना होता है, जहां से एक ओर बारसूर ३० किमी है तो दूसरी ओर इतना दूर दंतेवाड़ा है। बारसूर में गणपति व दूसरे मंदिरों को देखने के साथ-साथ आप जगदलपुर में भारत का सबसे विशाल चित्रकोट व तीरथगढ़ प्रपात व दंतेवाड़ा में सुप्रसिद्ध दंतेश्वरी मंदिर देख सकते हैं। विशाखापट्टनम से जगदलपुर होते हुए दंतेवाड़ा रेल से भी आया जा सकता है। वहीं हम्पी मुंबई से लगभग ७०० किमी, गोवा से ३२५ किमी दूर है। दिल्ली से कर्नाटक एक्सप्रेस से गुंटकल उतर कर रेल या सड़क मार्ग से बेल्लारी होते हुए ढाई घंटे में होसपेट आ सकते हैं। हम्पी होसपेट यहां से १२ किमी दूर है। बस अड्डे से हम्पी के लिए लगातार वाहन चलते रहते हैं। हम्पी में विजयनगर राजाओं की राजधानी के खंडहर पूरे २६ किमी इलाके में फैले हैं। इसे देखने के लिए कम से कम दो दिन चाहिए होते हैं। सायंकाल में होसपेट के समीप तुंगभद्रा बांध व नन्दनवन पार्क का नजारा दर्शनीय होता है जहां रोजाना की संख्या में लोग जुटते है। जबकि लिपाक्षी आंध्र व कर्नाटक की सीमा पर है और बेंगलुरु से १२० किमी की दूरी पर है। मुंबई, हैदराबाद, दिल्ली से बेंगलुरू जानेवाली रेल लाइन पर हिंदूपुर से कुछ ही दूर लिपाक्षी है। लिपाक्षी में विजयनगर शैली में बनी कुछ संरचनायें व मंदिर हैं और प्रमुख है भारत की सबसे बड़ी नंदी प्रतिमा।

HHH(८)HHH

माता-पिता

माँ तुम वो दीपक हो, जिसके पीछे प्रकाश चलेगा। माँ तुम वो सूरज हो जिसके पीछे आकाश चलेगा।
जिन राहों पर तुम कदम रख दो, उन राहोंपर इतिहास चलेगा।।

मां को चाहे जो उपहार दे दें, वह उपहार हमेशा छोटा ही होगा। जो उपहार मां ने आपको दिया है जिन्दगी जीवन जीने का अमूल्य उपहार। मां का प्यार ऐसा ईंधन हैं, जो साधारण से साधारण मनुष्य को भी नामुमकिन काम करने की शक्ति देता है। दुनिया के लिये आप केवल एक शख्स हो सकते हैं, पर एक शख्स मां के लिए आप ही दुनिया है। एक पूरे समय मां होना सबसे ज्यादा तनख्वाह वाली नौकरी है क्योंकि इसके बदले जो मेहनताना मिलता है, वह खालिस प्रेम है। ऐसा कोई महान शख्स नहीं हुआ, जिसकी मां महान न रही हों। माँ से आपको जीवन जीने की सलाह मिलती है। मां बच्चे की उस बात को समझ लेती हैं जो उसका बच्चा नहीं कह पाता। जो व्यक्ति यह कहता है कि वह अतीत को याद नहीं करता, निश्चित रूप में उसकी कोई मां ही नहीं है। मां दुनिया की सबसे सहज दार्शनिक होती है। लड़कियों को ऐसे पुरुष से शादी नहीं करनी चाहिए जो अपनी मां से नफरत करता है। ऐसा व्यक्ति आगे चलकर अपनी पत्नी से भी नफरत करें। जिस वक्त बच्चे का जन्म होता है उसी वक्त स्त्री में मां का जन्म होता है। अगर पिता बच्चों की मां को प्रेम करें तो बच्चोंके लिये सबसे बड़ी खुशी है। सभी मांये कामकाज करनेवाली होती है। दुनिया में एक ही बच्चा सबसे खूबसूरत है और वह बच्चा हर मां के पास है।

दुनिया के सारे रिश्ते एक तरफ हैं और मां-बच्चे का रिश्ता एक तरफ। ईश्वर ने इस रिश्ते का प्राकृतिक और भावनात्मक रूप से अनोखा बनाया है। मां का अहसास हमारे अवचेतन मन से ही हमारे साथ होता है। इस रिश्ते की दुनिया के किसी भी रिश्ते से तुलना नहीं हो सकती। किसी भी जाति, धर्म और संप्रदाय योनि के लोग हो उनमें मां और बच्चे के बीच एक ही तरह का जुड़ाव होता है। एक बच्चा जब न किसी धर्म को समझता है, न भाषा समझता है, न भावनायें और न ही आवाज समझता है पर उसे मां के स्पर्श का पूरा ज्ञान होता है। यही कारण है कि यह रिश्ता उसके अवचेतन में समा जाता है। यह एक ऐसा रिश्ता है जो जीवन को जीने लायक बनाता है। यही वो रिश्ता हैं जहां जिंदगी के असल मायने व पाठ सीखते हैं। मां और बच्चे का रिश्ता हर लेन-देन से परे हैं। आज जहां हर चीज का बाजारीकरण कर दिया गया, आज यही एक ऐसा रिश्ता है जो बिना शर्त प्रेम में बंधा है। पुत्र शायद अपने उस प्रेम को जाहिर ही नहीं कर पाता पर भीतर से वह भी अपनी मां से उसी प्रेम से जुड़ा होता है। भले ही वह जानवरों की मां हो या इंसानों की जब वह अपने बच्चोंको दूध पिलाती है तो ऐसा कभी नहीं होता कि लड़की को ज्यादा पिलायें और लड़के को कम। उसके लिये अपने बच्चोंमे कोई फर्क नहीं होता।

जिंदगी रफ्तार लेती जा रही है, तेज उसकी धार होती जा रही है।
रोज रिश्तों के नये मतलब निकलते जा रहे हैं, पर अभी भी थपकियों की गति वही है, लय वही है,
और ममता से भरा स्पर्श भी बिल्कुल वही है।
शुक्र है सूरज वहीं है, चंद्रमा भी है अभी तक, शुक्र है जिंदा है लोरी, है जहां में मां अभी तक।।

मां एक ऐसी एहसास का नाम है जो बिना कोई उम्मीद रखे नि:स्वार्थ भाव से संतान को जन्म देती है और उसे उसकी मंजिल तक पहुंचाने में मदद करती है। उसकी खातिर अपना सब कुछ बलिदान कर देती है। मां को किसी शब्दों में या परिभाषा में नहीं बांधा जा सकता केवल महसूस किया जा सकता है।

मां के आंचल की छांव में बच्चे पलकर बड़े हो जाते हैं। पर वह यह नहीं जानते कि मां कितनी तकलीफों से गुजरी होगी। पर बच्चों को इसका अहसास नहीं होता कि मां ने हमारे लिये क्या किया।

एक पुत्र ने मां को कविता लिखी-

जब वह छोटा था, उसे बोलना नहीं आता था। वह सिर्फ तुतलाता था और मां उसकी हर बात समझ लेती थी।
अब वह बड़ा हो गया और बहुत बोलता है। पर उसकी एक भी बात मां को समझ में नहीं आती।

मां का रिश्ता शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। मां हमारे व्यक्तित्व में हमारी सभ्यता और परंपराओं को इस तरह से बना देती हैं कि हम कुछ गलत काम नहीं कर सकते। मां पूरे घरको बहुत अच्छी तरह से बांध कर रखती है और वही परिवार की ताकत है। मां संस्कार देती है जो हर स्थिति का सामना करने के लिए हिम्मत रखते है।

हिन्दुस्तानी महिला बदलाव के किसी भी दौर से गुजरे लेकिन बच्चे कि हिफाजत में उसकी जान अटकी रहती है। हमारी सभ्यता और संस्कृति ने हमें यही सिखाया है कि मां से बढ़कर कुछ नहीं। मां का मन खुश है तो उससे मिलनेवाले आशीर्वाद सफलता की ओर ले जाते हैं। मां का बच्चे के साथ ऐसा रिश्ता है जो हमेशा एकसा रहता है। बच्चे आज जिस मुकाम पर हैं उसकी सफलता में मां-बाप की मेहनत और हिम्मत छुपी है। मां आपको सुरक्षित घेरा प्रदान करती है और आपको शक्तिशाली बनाती है। आजकल बच्चे मां-बाप की संभाल नहीं करते, स्वार्थी हो गये हैं ये खुद बंगले में रहते हैं और मां-बाप को रहने के लिए गॅरेज में रखते हैं। परिवार की विरासत को गौरवपूर्ण तरीके से आगे बढ़ाना और परिवार को अक्षुण्ण बनाये रखना सफलता की सीढ़ियां चढ़ने का जज्बां मां ही गुम्फित कर सकती है। मध्यमवर्गीय परिवार में सामाजिकता और सामुदायिकता के संस्कार मां द्वारा ही निरोपित किए जाते हैं।

माँ एक स्पर्श है, मैं सोचता हूँ अगर यह स्पर्श नहीं होता,
तो हमें कभी नहीं आता किसी के रिसते हुए घाव को देखकर सिसकी भरना।
क्योंकि हम देख ही नहीं पाते बच्चे को चोट लगने पर ममता की आँखों से आँसू का झरना।
(शरीर विज्ञान तो हमें सिर्फ इतना बताता है कि जिसे चोट लगती है आँसू सिर्फ उसी की आँख में आता है।
वह माँ है जो अपनी ममता से संवेदना के धरातल पर जीना सिखाती है
और इसी कारण दूसरों का दु:ख दर्द देखकर हमारी आँख भर आती है।
माँ एक शब्द है, मैं सोचता हूँ अगर ये शब्द नहीं होता तो सारी सभ्यता गूँगी रह जाती।
क्योंकि हमें कभी बोलने की कला ही नहीं आती।
वह माँ है जिसने हमारे तुतलाते बोलों को भी इतनी आत्मीयता से अपनाया।
कि यह मानव बोलने की कला तो सीख पाया। **- मधुप पांडेय**

मां का प्यार एक ऐसी ऊर्जा है, जो सामान्य मानव को असम्भव कार्य करने के लिये सक्षम बनाती है। भूतपूर्व अमरीकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने कहा है कि मैं अपनी मां की प्रार्थना को याद करता हूँ जो हमेशा मेरे साथ रहती है और जो जिन्दगी भर मुझसे जुड़ी रही है। मैं जो कुछ भी आज हूँ और जो कुछ कर सकता हूँ वह सब मेरी देवी तुल्य मां की प्रेरणा से है। शिक्षित व कामकाजी महिला अगर मां हो तो वह बच्चों के प्रति अधिक जागरूक व संवेदनशील हो। वह बच्चों की परवरिश अच्छे तरीके से करेगी व उनके निर्णयों में भागीदार बनेगी। बच्चे अपनी मां की उपलब्धियों पर गर्व करेंगी।

मनुष्य जहां मिट जाता है, हार जाता है, टूट जाता है, बिखर जाता है। जहां उसे सिर्फ अंधेरा दिखाई देता है। जहां जीवन बोझ लगने लगता है। जहां सारे रास्ते बन्द हो जाते हैं। जहां कुछ भी सुझाई नहीं देता वहां होती हैं मां। ऐसे लोग आत्महत्या करना चाहते हैं। जिनके पास मां है उन्हें आत्महत्या या निराश होनेकी जरूरत नहीं है। यदि वे मां के पास जाएं

तो मां तो जीवन स्रोत है, ऊर्जा का भण्डार है। वह ऐसा सूर्य है जिसमें ताप नहीं, उत्ताप नहीं शीतलता है।

सम्पूर्ण विराट की जननी अधीश्वरी मां मानी गई है। देवी मानी गई है। यह मानना मान्यता नहीं है, जानी गई बात है। आत्मा शब्द का भी विश्लेषण करे तो अर्थ होता है आत+मा। अर्थात जो भीतर से जन्म लेता है- मूल स्रोत इसीको अगर परम से जोड़ा जाएं वह है मां। सहृदय व्यक्ति के भीतर मां छिपी होती है। हर हृदयवान व्यक्ति मां ही है। अपने भीतर की इस मां को जगाएं, इसे प्रकट करें तो इस दुनिया में ऐसी कोई समस्या नहीं जिसका हल न हो।

नारी मनुष्य की जन्मदात्री होती है। मनुष्य होना भाग्य की बात है, पर जन्मदात्री मां को सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद दिया जाता है। प्रजनन के समय मां का नया जन्म होता है, कारण प्रजनन की पीड़ा सहन करने की क्षमता केवल मां में ही होती है। मां होना एक दैविक उपलब्धि है। शिशु मां के शरीर का अंग होता है। प्रकृति (विधाता) की विलक्षण व्यवस्था है कि गर्भावस्था में ही मां का हृदय वात्सल्य, दया, करुणा, ममता से भर जाता है। प्रकृति शिशु के जन्म से पूर्व ही उसके लिए दूध के रूप में पोषक आहार की व्यवस्था कर देती है। मां के सारे अरमान, सुख खुशियां होने वाले शिशु से जुड़ जाती हैं। शिशु के जन्म के पश्चात नारी पालनहार मां बन जाती है। मां है तो मकान घर हो जाता है, घर में रीति रिवाज तीज त्यौहार सांस लेते हैं। इस प्रकार मां परिवार की धुरी है। मां स्वयं में पूर्ण संस्था है, वह सबको जोड़ना जानती है। बालक मां के आंचल में सुकून पाता है, अपने को सुरक्षित महसूस करता है तथा जीने का सलीका सीखता है। मां साफ भी करती है और माफ भी करती है। मां क्षमा व सहनशीलता की मूर्ति है। मां का बलिदान अनमोल और सेवा नि:स्वार्थ है। वह अपमान व अवमानना सह कर भी आशीर्वाद ही देती है। ये मां की स्वाभाविक क्रियाएं होती हैं। वह अपने स्वभाव के कारण ही मां है। मां शिशु के प्रति पूर्ण समर्पित है और इस समर्पण में उसे असीम आनंद व संतुष्टि की अनुभूति होती है। ममता, करुणा, सेवा ये गुण उसमें बाहर से नहीं आते, ये तो ममत्व से जुड़े हैं, जैसे फल के साथ रस, फूल के साथ खुशबू व दूध के साथ सफेदी। क्रूर व अपराधी प्रवृत्ति का व्यक्ति भी मां की ममता व दिव्यता को अनुभव करता है। जीवन में मां का महत्व वे जानते हैं जिन्हें दुर्भाग्यवश बचपन में मां की गोद नसीब नहीं हुई।

जो अपनी संतान की रक्षा के लिए भगवान से प्रार्थना करे, जो संतान को बुरे आचरणों से बचाए तथा शुभ कार्यों में प्रवृत्त करे, जो पुत्र के शरीर को अपने दुग्ध से पुष्ट करे, जो अपनी अमृतमयी वाणी से शरीर की थकान दूर करे, जो सर्वदा पुत्र के कल्याण की इच्छा करे- इस प्रकार की गुणशीला महिला को माता कहते हैं। सबसे बड़ी गुरू मां ही होती है जो गर्भ धारण करने से लेकर उसके पालन-पोषण करने, पढ़ाने-लिखाने आदि तक पुत्र का ध्यान रखती है।

भगवान वेदव्यास ने ब्रह्मवैवर्त पुराण में सोलह प्रकार की माताओं का उल्लेख दिया है। दूध पिलानेवाली मां, गर्भ में धारण करनेवाली मां, भोजन देनेवाली, गुरू पत्नी, इष्टदेव की पत्नी, पिता की पत्नी अर्थात सौतेली माता, समस्त कन्याएं अर्थात मां दुर्गा-सरस्वती स्वरूपा, गर्भवती बहन, पुत्रवधु, पत्नी की माता अर्थात सासू मां, सौतेले भ्राता की माता और दादी, भाई की स्त्री, मौसी, बुआ और मामी।

शास्त्र में कहा गया है कि उपाध्यायान् दशाचार्य, आचार्याणाम शतं पिता, सहस्त्रं तु पितृन माता, गौ रवेणातिरिच्यते। अर्थात दस उपाध्यायों की अपेक्षा आचार्य, सौ आचार्यों की अपेक्षा पिता और हजार पिताओं की अपेक्षा माता का गौरव अधिक होता है। मनुस्मृति के अनुसार व्यवहार में भी जब कभी हम सुख-दुख में गौरी-शंकर, राधा-कृष्ण, लक्ष्मी-नारायण आदि नामों का स्मरण करते हैं या भगवन्नामों का उच्चारण करते हैं तो शक्ति अर्थात मां का नाम पहले आता है। उस समय सर्वप्रथम हमारे सामने जगतजननी का ही नाम आता है। यों भी जगत का कारण मां-आद्या शक्ति ही है।

स्वार्थ सत्ता प्राणी मात्र में पायी जाती है। स्वार्थ को ही लक्ष्य रख कर संसार का प्रत्येक प्राणी मात्र एक-दूसरे से प्रेम करता है, व्यवहार करता है लेकिन माता में स्वार्थ का सर्वथा अभाव रहता है, मां अपनी संतान से निस्वार्थ प्रेम करती है। यही कारण है कि स्नेहमयी ममतामयी मां के उपकार का बदला हम जन्म-जन्मांतर में भी नहीं चुका सकते। संतान के लिए इस संसार में मां से बढ़कर कोई देवी-देवता नहीं है।

धर्माचार्यों ने कहा है कि- नास्ति मातृसमं देवम्। नास्ति मातु परं तीर्थम्। मां से बड़ा कोई देवता नहीं और मां के चरणों से बड़ा कोई तीर्थ नहीं। कुछ लोगों की ऐसी धारणा हो सकती है कि मां सुंदर और सुयोग्य संतान से ही प्रेम करती है लेकिन मां के हृदय में इस प्रकार की बात स्वप्न में भी नहीं आ सकती। माता के लिए संतान अपंग ही क्यों न हो, मां उसे अपने प्राणों से भी अधिक प्यार करती है। शास्त्रकारों ने स्पष्ट किया है कि कुपुत्रो जायेत क्वचदपि माता कुमाता न भवति। पुत्र कुपुत्र हो सकता है लेकिन माता कुमाता नहीं हो सकती। यह है मां का गौरव। मां कैसी भी हो, पुत्र को चाहिए कि उसकी सेवा बिना विचार किए ही करे, तभी उसको अभीष्ट फल भी प्राप्त होगा।

कितनी बड़ी विडंबना है कि एक-एक पैसे के लिए माता-पिता मोहताज हो जाएं और बेटा-बहू ऐश करें। ऐसे लोगों के होश दुरुस्त करने के लिए सचमुच कड़े कानून की आवश्यकता है जो उन्हें माता-पिता की समुचित देखभाल के लिए बाध्य करे।

भारत जैसे देश में जहां मातृ देवो भव, पितृ देवो भव की अवधारणा सनातन काल से रूढ़ रही है और जहां मातृ-पितृ भक्ति के अनेक उदाहरण पुराण कथाओं में वर्णित हैं, वहां ऐसी नौबत आ पड़ी कि माता-पिता को उनका हक दिलाने के लिए कानून बनाना पड़ रहा है? जाहिर है कि आज न तो श्रवणकुमार जैसी संतानें हैं, न पिता के वचन की खातिर वनवास जाने को तत्पर राम जैसे पुत्र। कुछ परिवारों में तो यह हाल है कि घर के बूढ़े-बुजुर्गों को कदम-कदम पर अपमान और उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। जिस मां ने ९ माह गर्भ में रखा, असह्य वेदना सह कर जन्म दिया, स्वयं गीले में सोकर सूखे में सुलाया, हर जिद पूरी की, लालन-पालन कर संस्कार सिखाए, छोटे से बड़ा किया, उसी जन्मदात्री का अपमान करनेवाले कपूतों की कमी नहीं है। मां के दूध का कोई मोल नहीं होता लेकिन कुछ ऐसे भी कृतघ्न हैं जो मां को नौकरानी या घर का कूड़ा-कचरा समझते हैं। जिस मां ने बोलना सिखाया, उसी से दो मीठे बोल बोलने या कुशलक्षेम पूछने की फुर्सत जब बेटे के पास न हो तो वह बेटा किस काम का। जिस पिता ने गोद में खिलाया, उंगली पकड़ कर चलना सिखाया, उसी का बुढ़ापे में हाथ थामने और सेवा करने से संतान कन्नी काटे तो उसके दिल पर क्या गुजरती होगी? क्या अपने माता-पिता की उपेक्षा करनेवाले, मामूली जरूरतों के लिए भी उन्हें तरसाने वाले युवा सोचेंगे कि कल को वे भी बूढ़े होंगे, यदि तब उनके बच्चों ने उनके साथ ऐसा ही बर्ताव किया तो क्या होगा? हमारी संस्कृति में मातृ ऋण, पितृ ऋण, ऋषि ऋण और देव ऋण का उल्लेख है। यद्यपि कितनी भी सेवा की जाए तो भी इन्हें चुका पाना कठिन है परंतु कर्त्तव्य तो यही कहता है कि यथासामर्थ्य माता-पिता की सेवा की जाए जिनके चरणों में सारे तीर्थ हैं। यह तो हुई भावना की बात, व्यावहारिकता कुछ अलग है। कितने ही माता-पिता ऐसे हैं जिनकी संतानें दूसरे शहरों या विदेश में जा बसी हैं। उनकी अपनी जिंदगी है। वे न तो माता-पिता को अपने पास रखना चाहते हैं न उनका खर्च उठाना चाहते हैं। कुछ स्वभाव से ही एहसान फरामोश हैं तो कुछ पत्नी के दबाव में अपने माता-पिता की उपेक्षा करते हैं। कुछ गलती बुजुर्गों की भी होती है। वे इस भरोसे के साथ कि उन्होंने बच्चों का लालन-पालन, पढ़ाई लिखाई की है तथा आत्मनिर्भर होने लायक बनाया, तो वे भी बुढ़ापे में उनकी देखभाल करेंगे, अपनी सारी संपत्ति आंख मूंदकर उनके नाम कर देते हैं। यहीं से उनके दुर्दिन शुरू

हो जाते हैं। वहीं औलाद उनका जीवन दूभर कर देती है या वृद्धाश्रम भेज देती हैं। यह कितनी बड़ी विडंबना है कि एक-एक पैसे के लिए माता-पिता मोहताज हो जाएं और बेटा-बहू ऐश करें। ऐसे कृतघ्न लोगों के होश दुरुस्त करने के लिए सचमुच कड़े कानून की आवश्यकता है जो उन्हें माता-पिता मोहताज हो जाएं और बेटा-बहू ऐश करें। ऐसे कृतघ्न लोगों के होश दुरुस्त करने के लिए सचमुच कड़े कानून की आवश्यकता है जो उन्हें माता-पिता की समुचित देखभाल के लिए बाध्य करे और न मानें तो उन्हें कारागृह भेज दिया जाएं।

मां एक सुखद अनुभूति है। वह एक शीतल आवरण है जो हमारे दु:ख, तकलीफ की तपिश को ढँक देती है। उसका होना, हमें जीवन की हर लड़ाई को लड़ने की शक्ति देता रहता है। सच में, शब्दों से परे है माँ की परिभाषा।

माँ शब्द के अर्थ को उपमाओं अथवा शब्दों की सीमा में बाँधना संभव नहीं है। इस शब्द की गहराई, विशालता को परिभाषित करना सरल नहीं है क्योंकि इस शब्द में ही संपूर्ण ब्रह्माण्ड, सृष्टि की उत्पत्ति का रहस्य समाया है। माँ को विभिन्न रूपों-स्वरूपों में पूजा जाता है। कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में मातृ ऋण से मुक्त नहीं हो सकता। भारतीय संस्कृति में जननी एवं जन्मभूमि दोनों को ही माँ का स्थान दिया गया है।

मानव अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति जन्मभूमि यानी धरती माँ से, तो जीवनदायी आवश्यकता की पूर्ति जननी से करता है। मनुष्य से लेकर पशु एवं पक्षियों तक को आत्मनिर्भर, स्वावलंबी एवं कुशल बनाने के लिए उनकी माँ उन्हें स्वयं से अलग तो करती है परंतु ठीक इसके विपरीत कई बार मानव स्वयं अपने बढ़ते बुद्धि विकास के कारण अपनी सुरक्षा एवं आवश्यकता के प्रति स्वार्थी होकर माँ और उसकी ममता के प्रति उदासीन हो जाता है। फिर वह अपनी पूर्ति के लिए जननी और जन्मभूमि दोनों का दोहन तो करता है परंतु उनके प्रति अपने कर्त्तव्यों का पालन करना भूल जाता है। जो व्यक्ति अपने इन कर्त्तव्यों का पालन करता है वो स्नेह, ममत्व की छाँव में रहकर सद्‌गुण संस्कार, नम्रता को प्राप्त करता है। वह अपने जीवन में समस्त सुखों और जीवन लक्ष्यों को प्राप्त कर ऊँचाइयों को प्राप्त कर लेता है। वहीं ऐसे व्यक्ति जो अपने कर्त्तव्यों के निर्वहन में मातृशक्ति को, उसके स्नेह, ममत्व को उपेक्षित कर उन्नति का मार्ग ढूँढ़ने का प्रयास करते हैं, वे जीवन भर निराशा के अलावा कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाते। माँ अनंत शक्तियों की धारणा होती है। इसीलिए उसे ईश्वरीय शक्ति का प्रतिरूप मानकर ईश्वर के सदृश्य माना गया है। माँ के समीप रहकर उसकी सेवा करके, उसके शुभवचनों, शुभाशीष से जो आनंद प्राप्त किया जा सकता है वह अवर्णनीय है। अपने दिए स्नेह के सागर के बदले माँ बच्चों से कुछ नहीं चाहती। वह हर हाल में केवल बच्चों का हित सोचती है, खुद को मिटाकर भी। इसलिए अपनी ओर से हम उसे कभी दु:ख न दें, यही हमारा कर्त्तव्य होना चाहिए।

मां के कदमों तले स्वर्ग है। अगर दुनिया में किसी से मुहब्बत करना चाहते हो तो मां से करो। मां उस घने पेड़ की तरह है जो अपने साये से नन्हें पौधों को धूप से बचाता है।

जो पुत्र शक्ति रहते अपने माता-पिताकी सेवा नहीं करता, वह कभी कल्याण का भाजन नहीं हो सकता।

मातृहृदय एक ऐसी जटिल पहेली है कि उसका समुचित ज्ञान अभी तक किसी को हुआ नहीं। माता का अपनी सन्तान के प्रति कितना अनुराग होता है, इसकी उपमा खोजी जाय तो यही कहा जायगा जितना जननी का अपने बच्चे के प्रति प्रेम होता है, इसका दूसरा उदाहरण मिलता ही नहीं। एक बार जिसे माता ने नौ महीना अपने गर्भ में धारण कर लिया, वह फिर उत्पन्न होकर कहीं चला जाय, कहीं पले पोसे, इस लोक में रहे या परलोक में, उसे वह भूल नहीं सकती। सन्तान माता का दूसरा हृदय होता है, तभी तो गर्भवती स्त्री को द्विहृदया कहते हैं। कोई माता से कहे कि संसार में तुझे सबसे प्रिय

वस्तु कौन है तो वह अपनी सन्तान को बतावेगा।

पश्चिमी देशों में जहां भोगवादी संस्कृति सबसे पहले आई और आत्मिक संबंधों में विच्छिन्नता का दौर शुरू हुआ, वहां भी मां और बच्चों का संबंध अभी भी अपनी प्राचीन गरिमा और आत्मीयता के साथ जीवित है। भारत में अभी भी लोग संबंधों के निर्वहन को पारिवारिक-सामाजिक दायित्व मानते हैं और इसे निभाते हैं। यहां के परिवेश में मातृत्व की महत्ता दूसरे किसी समाज व देश के मुकाबले अधिक है। सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में बच्चों के प्रति माँ के लगाव को दर्शाया गया है। माँ बच्चोंकी रक्षा के लिये अपने प्राणों की भी बाजी लगा देती है। इसका जिक्र अनेकानेक भारतीय परंपरा में बार-बार मिलता है। आधुनिकता की जो हवा पूरी दुनिया में बह रही है और आर्थिक उदारीकरण व भूमंडलीय गांव निर्माण की प्रक्रिया शुरू होने के बाद जिस हवा के झोंके भारत में तेजी से आ रही है फिर भी माता के प्रति श्रद्धा, सम्मान और प्यार के इजहार में कोई कमी नहीं आयी बल्कि पश्चिम में भी भारतीय सभ्यता और संस्कृति का असर हुआ जिससे माँ शब्द से शांति, प्यार और सम्मान के प्रतीक विदेशों में भी माँ के प्रति सम्मान होने लगा। बदलते हुए किरदारों के बावजूद भी माँ पूरी पृथ्वी पर सबसे अनमोल चीज है। माँ शब्द अपने आप में सुरक्षा व ममत्व से भरा हुआ भावनाओं से ओतप्रोत है।

मां ठंडी छाँव है और पिता घना पेड़। माँ के पैरों तले जन्नत है, पिता जन्नत का दरवाजा है। मां के बिना घर सुना सुना होता है, पिता के बिना जिंदगी वीरान होती है। माँ मुहब्बत का दरिया है तो पिता करूणा का समुंदर है। माँ संतान की दोस्त है तो पिता ईश्वर का आशीर्वाद- दया है। मां को संतान के लिये गर्व है, पिता को अपने संतान के लिए गुरुर।

माता-पिता कभी बोझ नहीं होते बल्कि एक धरोहर है वे तो अनुभवों के जीते जागते सागर है।

माँ तेरे दूध का हक मुझसे अदा क्या होगा, अगर तू नाराज है तो खुश मुझसे खुदा क्या होगा?

माँ जैसा बोलती है बच्चा वैसे ही सिखता है। इसलिये माता को संस्कारवान और मधुरभाषिणी होना चाहिए। व्यक्ति के निर्माण में माता-पिता और गुरु का विशेष महत्व है।

हिंदी शब्द वर्ण माला के २ लाख शब्दों में सबसे छोटा शब्द मां है। माँ में कुसुम की कोमलता, वज्र की कठोरता, सागर की गंभीरता, पृथ्वी की सहिष्णुता गंगाकी पवित्रता, चांदनी की शीतलता है। भूख प्यास की पूर्ति के लिए बच्चे माता का ही स्मरण करते है। माँ से बड़ा कोई देवता नहीं और माँ से बड़ा कोई तीर्थ नहीं। माँ सत्य अडिग शिव मांगलिक एवं सुंदरम मोहक का अवतरण है। माँ प्यार का सागर है। माँ है तो जहान है। मां धात्री, जन्म दात्री, निर्मात्री तीनों का अभिनय निभाती है। मां त्याग समर्पण सेवा की प्रतिमूर्ति है और घर की धुरी है। मातृत्व देवत्व से भी महान है। माँ पुरुष व पौरुष की जननी है। नारी का सर्वाधिक सुंदर और पूज्य रूप माँ ही है। मां की खुशी हमारी हँसी में है और दु:ख हमारे गम से है। माँ वह सीप है जिसमें वह अपनी संतान के सभी अवगुण छिपा लेती है। माँ सबकी जगह ले सकती है पर माँ की जगह कोई नहीं ले सकता। मानव का आधार माँ ही है। पंच सजीव देवी देवताओं में माता, पिता, गुरु, चंद्र एवं सूर्य के दर्शन हम कर सकते हैं। पूरी सृष्टि ही मातृ स्वरूपा है।

मां भले गणित और विज्ञान न जानती हो पर वह इस बातकी दिलासा देना जानती है कि बेटा मेहनत करो। हार मत मानो। तुम पढ़ लिखकर अच्छे व्यावहारिक आदमी बनो। अच्छा मार्गदर्शन करती है। मां केवल खान-पान और स्वास्थ्य का ही ख्याल नहीं रखती वह बच्चे में सभी संस्कारों का बीजारोपण करती है और यह देखती है कि वह सही तरीके से हुआ या नहीं। वह यह भी जानती है कि बेटे के कौन मित्र अच्छे है कौनसी आदतें बुरी है उसका बेटा कितनी ऊंची उड़ान भर सकता है। बेटे को सही मार्गदर्शन करनेवाली मां ही होती है।

माँ से बढ़कर कोई वफादार नहीं होता। माँ- दुनिया में माँ के समान भला कोई नहीं कर सकता।

तीनों लोकों में माँ की ममता का मुकाबला कोई नहीं कर सकता।

❋ देवों का घर है माँ के चरणों में, प्यार का सागर है माँ के चरणों में।

आशा के फूल खिले माँ के चरणों में, चारों धाम मिले माँ के चरणों में।।

माँ- छाया मिले हरदम आपकी, सर पर आपका हाथ हो। जीवन के हर मोड़पर, बस माँ आपका आशीर्वाद हो।

यदि किसी को स्वर्ग की चाहत हो तो उसे माँ-बाप की सेवा करनी चाहिए। इस संसार में माँ ही वो अकेली हस्ती है जो अपने बच्चों के लिए दुआ करती है। माँ से ज्यादा कोई हमदर्द हस्ती नहीं हो सकती। माँ को सताना दुनिया का सबसे बड़ा अपराध है। माँ का साया सिर पर रहने से हम अपने आपको सुरक्षित महसूस करते है। जिसकी माँ जिंदा ना हो वो तो सबसे अधिक अभागा है। अगर एक पलड़े में सारी दुनिया को तौला जाये और दूसरे में माँ की मुहब्बत को तो माँ वाला पलड़ा ही सबसे भारी होगा। वो मनुष्य बड़ा ही बदकिस्मत है जिसके माँ होते हुए भी वह उसकी मुहब्बत हासिल नहीं कर पाता।

मनुष्य पर माँ बाप से बढ़कर किसी का अहसान नहीं होता और उनके अहसान का बदला कभी चुकाया नहीं जा सकता। उसके खून की एक-एक बूंद दूध में बदल जाती है। कमजोर पौधे को मजबूत और विशाल वृक्ष बनाने में खर्च हो जाता है। बच्चे को जरा भी कष्ट हो तो माँ की ममता इस तरह विहाल हो जाती है जैसे खुद कोई उसके खंजर चुभ गया हो। पिता भी गाढ़ा पसीना बहाता है, वतन छोड़कर बेवतन हो जाता है। वह अपने बच्चों को ज्यादा से ज्यादा बेहतर हाल में रखता है। बच्चों के थोड़े से आराम के लिए अपनी सम्पूर्ण जरूरतों को छोड़ देता है। उनके लिए वह स्वयं मामूली हालात में रहता है, तकलीफ उठाता है पर अपने बच्चों के आँखों में आंसू नहीं देख सकता। खुद मशक्कत बर्दाश्त कर लेगा हमेशा चाहेगा कि बच्चों के लिए दौलत छोड़कर जाएं। उसके मुहब्बत की कोई कीमत अदा नहीं की जा सकती। दुनिया में इसका कोई पर्याय नहीं। आज तो अपने बूढ़े माता-पिता के लिए वृद्धाश्रम बन चुके है। नैतिकता, अच्छा चरित्र और आधुनिक शिक्षा को प्रभावी और दिलचस्प बनाकर मनुष्य बनकर माता-पिता की सेवा करें।

पिता का प्यार, माँ का दुलार अनमोल है रखना उसे सहेजकर इसका ना मोल है ना तोल है। माता पिता को हमेशा खुश रखने की कोशिश करो। माँ बाप की मुहब्बत और उनकी हल्की सी मुस्कुराहट संतान के लिए दुआ की तरह है। जो उसे जिंदगी के हर मैदान में सफलता में ले जाती है। जिस तरह की मुहब्बत आप अपनी माता-पिता से करेंगे वैसे ही मुहब्बत आपकी संतान आपसे करेगी।

मनुष्य की जिंदगी में माता-पिता बहुत ही महत्वपूर्ण होते है। हर व्यक्ति चाहे गरीब हो चाहे अमीर, फकीर हो या बादशाह अपने माँ-बाप की मुहब्बत के साये में कुछ न कुछ वक्त जरूर बिताता है। माँ-बाप अपनी संतान का बड़े शौक से शिक्षण, लालन-पालन करते है। अगर बच्चे की तबीयत खराब हो जाए तो बेचैन हो जाते है। अपनी हैसियत के अनुसार डॉक्टर हकीमों से ईलाज करवाते है। बच्चा जब बहुत छोटा होता है तो अपनी आवश्यकताओं को मुंह से बोल भी नहीं पाता। उस समय भी माँ-बाप उसके इशारों से उसकी हरकतों का पता लगाते है। उसे किस चीज की जरूरत है और महसूस करके फौरन उसको देने की कोशिश करते है। माँ उस बच्चे को नौ माह तक अपने गर्भ में पालती है और वो कई तरह की तकलीफ बर्दाश्त करती है। जब संतान बोलने, चलने फिरने के काबिल हो जाते है तो माता-पिता संतान की अच्छी शिक्षा का इंतजाम करते है। अच्छी-अच्छी पाठशालाओं, कॉलेजों में अच्छी शिक्षा दिलाने के लिए हैसियत से भी अधिक दिल खोलकर खर्चा करते है ताकि संतान बेहतरीन इंसान बन सके और शिक्षा की रोशनी में अपनी जिन्दगी को

प्रकाशित कर सके। मगर वर्तमान में माँ-बाप की बेइज्जती और आज्ञा नहीं मानना जारी है। माँ-बाप संतान के अच्छे बर्ताव को तरसते है। अच्छे बर्ताव के अधिकारी है। आजकल के बहुत से लोग अपने माता-पिता के साथ अच्छा बर्ताव नहीं करते। कितने ही ऐसे लोग देखने में आये जिनकी आय आमदनी बहुत अच्छी होने के बावजूद भी घर का काम अपने माता-पिता से करवाते है। जब उनकी शरीर की हालत वे काफी बूढ़े हो चुके है। शरीर में शक्ति नहीं है फिर भी उन्हें मजबूर किया जाता है या ऐसी पृष्ठभूमि बनायी जाती है कि माँ बाप स्वयं संतान को छोड़कर दूर चले जाते है। माता-पिता पर संतान का यह दुर्व्यवहार बहुत ही निंदनीय है। यहाँ तक की माता-पिता का इलाज भी ठीक से नहीं कराया जाता जबकि वो ही माता-पिता संतान के बीमार पड़ने पर रात-दिन जागकर एक कर देते थे और हर तरह के इलाज पर अपने हक से ज्यादा खर्च कर देते थे। उसकी हर जरूरत पर प्यार, मुहब्बत लुटा देते है। माता-पिता संतान के लिए अच्छे से अच्छा खाना, कपड़ा, उसकी आवश्यकता पूरी करने में अपनी पूरी जिंदगी लगा देते है। माँ-बाप की पूरी जिंदगी सेवा करना संतान का कर्त्तव्य है। वक्त निकालकर उनके पास बैठना, उनका दु:ख, तकलीफ आराम पूछना संतान का फर्ज है। माँ-बाप संतान के अच्छे बर्ताव के हकदार है। पिता जन्नत के बड़े दरवाजों में से है चाहे तो उसे खो दो चाहे तो उसे सुरक्षित कर लो। अपने माता-पिता के साथ सदैव अच्छा व्यवहार करना चाहिए उसे देखकर आपकी संतान भी आपके साथ अच्छा व्यवहार करेगी।

माँ ही बच्चे को अपनी गोद से कब्र तक ज्ञान अर्जित कराती है। शिक्षा प्राप्त करने के लिए आयु की कोई सीमा नहीं होती। माँ बाप से मुहब्बत करना भी एक उपासना है। माता-पिता के द्वारा दिए गए संस्कार ही बच्चे को मानव या दानव बनाते है। मां के बगैर दुनिया वीरान है। कभी-कभी कहीं से भी माँ की याद दिल को छुने आ जाती है और आँखें भर आती है। माँ अपने बेटी को विदा करते समय शिक्षाएं देती है कि अपने पिता का सम्मान का ख्याल रखना, भाई का मान और मेरी लाज बचाना। अपनी छाती को वज्र की तरह कठोर बना लेना, इच्छाओं को सह लेना, अनगिनत इच्छाओं को अपने में ही जीवनभर छुपाए रखना। माता-पिता बन जाना बहुत आसान है। मातृत्व पितृत्व जगाना बहुत कठिन है। माँ बांप तो पशु पक्षी भी बन जाते है। उनमें कुछ बहुत अच्छे गुणों की जरूरत नहीं है। बच्चे की सही परवरिश कब उसको मुक्त करना, उसको आत्मनिर्भर बनाना इस कला को जाननेका नाम ही मातृत्व और पितृत्व है। बच्चे को उस जगह खड़ा कर दें, जहां वो स्वयं चल सकता है यही सही मातृत्व-पितृत्व है। मां मंदिर का कलश, मस्जिद की मीनार और ममता का धर्म है और ईबादत का प्यार। माँ तो आखिर माँ ही होती है। किसी बच्चे की परवरिश करना आसान काम नहीं है। ये माँ ही है जो अपनी नस्ल को परवान चढ़ाकर बच्चे का पालन-पोसकर समाज काबिल शख्स बनाती है। एक हौसलेमंद माँ ही बच्चे का लालन-पालन कर सकती है। रोते हुए बच्चे को बहलाना माँ को ही आता है। दुनिया में कोई दूसरी स्त्री इस जिम्मेदारी को हजार चाहनेके बावजूद भी माँ की तरह नहीं निभा सकती।

मां ने आंखें क्या मूंद लीं जब से, वो न आंचल है न वो राहत है।
है न हलचल न मां की आहट है, खाली नजरें हैं खाली रास्ता है।
हर घड़ी अजनबी सा लगता है।
हां जो दी थी मुझे रिदा मां ने, उसको आंचल सा ओढ़कर अब मैं,
मां की यादों में खोती जाऊंगी, सारे दुख-दर्द खोलकर अपने,
सामने मां के मैं बताऊंगी, बांटकर मां से सारी तकलीफें, कितनी राहत सुकून पाऊंगी।
फिर तो आंचल की अहमियत सबको, यूं मुहब्बत से मैं बताऊंगी,

मां का आंचल तो जैसे बरगद है, है छुपी उसमें सब मुहब्बत है, मां का आंचल ही मेरी जन्नत है।

माँ बाप की जितनी सेवा करो उतनी कम है। कड़ी धूप में लगता है कि माँ का आँचल सिर पर है जैसे कोई बरगद है। उससे शांति मिलती है, राहत मिलती है माँ की गोद में जन्नत मिलता है। खुशियां, जज्बात, सांसें, मुस्कान, एहसास, सोच यह सब माँ की शिक्षा से ही मिलती है। बेटियां बहन मर्द के साए में पलती हैं और मर्द की जान मां की दुवाओं से चलती है। माँ की गोद संतान के लिए पहला शिक्षालय और मदरसा है। संतान को जो कुछ भी सिखाया जाता है उसका असर बच्चेकी जिंदगी में हमेशा रहता है। माँ बाप से सही शिक्षा हासिल करनेवाला बच्चा ही एकदिन समाज का प्रभावी हिस्सा बनता है। उससे सामाजिक बुराइयां खुद ब खुद खत्म हो जाती है। जो माँ बाप बच्चों के लिए अपनी जिम्मेदारियां बखूबी गंभीरता से निभाते है वो समाज पर एक आदर्श समाज बनाने का बड़ा एहसान करते है। बच्चों को माता-पिता से अपेक्षित प्यार, दुलार न मिल पाने से बच्चे चिड़चिड़ेपन के शिकार हो जाते है व बात-बात पर कूड़ते रहते है। ऐसे बच्चों में हीन भावना एवं द्वेष भावना घर कर जाती है। जिसका कुप्रभाव उसके स्वास्थ्य पर पड़ता है। ऐसे बच्चों में पढ़ाई लिखाई के प्रति भी अरुचि जागृत हो जाती है ऐसे बच्चे मनमानी व अनुशासनहीनता के राग अलापने लगते है। वे तनावग्रस्त होनेसे अपनी स्मरणशक्ति को भी धीरे-धीरे खोने लगते है। चेहरे की कांति गायब हो जाती है। समस्त जीवन में आक्रमक तेवर हावी हो जाते है। माता-पिता को चाहिए कि अपनी जरूरतों में से थोड़ा समय निकालकर अपने बच्चों के लिए दें, उनकी सही परवरिश और शिक्षा करने में माँ-बाप का बड़ा महत्वपूर्ण और बुनियादी किरदार है। अगर कामियाब होना चाहते हो तो माँ-बाप का सम्मान करना सीखो। माँ-बाप की सेवा करने से लौह और पत्थर की सीलें भी आपके हाथ में मोम बन जाएगी। माँ की प्रार्थना ईश्वर के पास सीधे स्वीकार होती है। माँ की प्रार्थना जन्नत की हवा है। माँ पूरे घर को रोशन रखती है। जिस घर में माँ नहीं है वो घर वीराना है और जिसके पास माँ है उसके पास दुनिया की सबसे बड़ी दौलत है। माँ अपने बच्चों को सीधा और सच्चा रास्ता दिखाती है। माँ के मुँह से निकली आह सीधा ईश्वर तक पहुंचती है। पुरुष की तो एक ही माँ होती है पर नारी की दो माँ होती है एक शादी से पहले की माँ और एक पति की माँ। माँ चाहे कैसी भी हो उसका सम्मान और उसकी सेवा संतान के लिए जरूरी है। जब आप अपने माता-पिता से अच्छा बर्ताव करोगे तो आपकी संतान भी आपके साथ अच्छा बर्ताव करेगी। बदसलूकी करे बच्चा तो भी माँ दुआ देती है।

जीवन संघर्ष में वही सफल होते हैं, जिन्हें माता-पिता ने शांत रहने और धैर्य रखने की शिक्षा दी हो। जो पुत्र अपने माता-पिता को अपशब्द कहता है, उसकी धन-संपत्ति पूर्णत: नष्ट हो जाती है।

मां तो माँ है वो हर पल मां रहेगी, मैं उसकी जान हूं वो मेरी जां रहेगी।
है जन्नत पाँव के नीचे मुझे मालूम है उसकी, इससे बढ़कर भला जन्नत कहां रहेगी।
बुरा मैं कितना भी क्यों न हो जाऊं चाहे, फकत दुआएं ही देगी वो जहां रहेगी वो।
कहीं भी न मिलेगी ऐसी छाव दुनिया में, मां के आंचल तले घनी जो छां रहेगी,
पा जाओगे सब जख्मी कमी न कुछ भी होगी, गर तुम्हारे साथ हर पल तुम्हारी मां रहेगी।
माँ बाप का दिल जीत लो, कामयाब हो जाओगे वरना सारी दुनिया जीतकर भी हार जाओगे।

माँ का आशिर्वाद सीधा ईश्वर के पास पहुंचता है। माँ संसार का सबसे खूबसूरत रिश्ता है।

हर माता-पिता के लिए अपने बच्चों का हित सर्वोपरि होता है और उनका हर निर्णय बच्चों के बेहतरीन लक्ष्य को लेकर ही होता है। पिता की सेवा और उनकी आज्ञा का पालन जैसा धर्म दूसरा कोई भी नहीं है। माता-पिता में अगर कोई मतभेद

भी है तो बच्चों की अनुपस्थिति में ही इसके बारे में चर्चा करें। बच्चों की गलत आदत की बुनियाद न रखीं जाए वह अपनी बात मनवाने के लिए आपको ब्लैकमेल करने लगता है। बच्चे को अच्छे बर्ताव के लिए पुरस्कृत करना चाहिए। अति उत्साह से कई माता-पिता अपने बच्चे से छोटी सी उपलब्धि के लिए उसके तारीफों के पुल बांध देते है। उसके मन में अपनी क्षमताओं के बारे में गलत तस्वीर का निर्माण करते है इस प्रकार उसे धोखे में मत रखें।

माँ के आँचल की स्नेहिल छांव और पिता की संरक्षणयुक्त ममतामयी गोद बच्चे की परवरिश में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। बच्चा सबसे पहले अपने पिता की अंगुली पकड़कर ही चलना सीखता है तथा दुनिया की तस्वीर अपने पिता के साथ ही सबसे पहले देखता है। बच्चों के लिए पिता ही ईश्वर समान होते है। पिता अपने बच्चे को अपना दोस्त समझकर उसका मार्गदर्शन करता है और भविष्य में उसके दिशा निर्देशों का योगदान उसे मिलता है। पिता का दायित्व है कि उसे अच्छे से अच्छी तालिम दिलवा दे। आर्थिक दृष्टि से कमजोर पिता के लिए भी यह संभव नहीं होता, फिर भी हर पिता का यह सपना होता है संतान आगे चलकर काफी बड़ा नाम कमाए और बड़ा आदमी बनें ताकि माँ-बाप का नाम रौशन हो। पिता का दायित्व है कि अच्छी परवरिश के साथ साथ संतान को दिये गए संस्कारों में कोई कमी तो नहीं रह गयी। अत्यधिक लाड़-प्यार बच्चे को बिगाड़ सकता है। बच्चे के कदम गलत राहोंपर भटक सकते है। बच्चों की नाजायज माँगों को कभी भी पूरा नहीं करना चाहिए। पिता बच्चे का भविष्य निर्माता होता है। इसलिए बच्चे की परवरिश में कभी अपने आपसे पीछे न हटें न ही समय के अभाव का रोना रोएं।

माँ बच्चे के लिए एक शिक्षालय होती है। एक पढ़ी लिखी माँ बच्चे को अच्छी मानसिकता दे सकती है। एक ईमानदार, दिनदार, परहेजगार माँ ही अपनी सन्तान की परवरिश अच्छे तरह से कर सकती है। इसलिए माँ का दिनदार होना अच्छे समाज और भविष्य के लिए अनिवार्य है। माँ बच्चे की बुनियाद है। यदि बीज ही गलत हो तो वह पेड़ कैसे बन पायेगा। वह तो झाडी बनकर दूसरों के रास्ते में बाधाएं उत्पन्न करेगा। जैसे छाँव की कोई उम्मीद नहीं की जा सकती और अंत में वह सूखकर खत्म हो जायेगा।

जब एक महिला शिक्षित होती है तो पूरा खानदान, पूरा कुल परिवार शिक्षित होता है। माँ कभी अपने बच्चे को गलत राहपर चलने नहीं देती है। इसलिए माँ को पढ़ी लिखी व्यक्तित्ववाली होना जरूरी है। ईश्वर ने हर माँ को यह जिम्मेदारी दी है कि वो अपनी सन्तान को काबिल बनाएं।

माँ- माता पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने से उद्योग व्यापार में बरकत और लम्बी उम्र नसीब होती है। जिनके सिर पर माँ-बाप का साया अभी तक सलामत है वो बड़े किस्मतवाले है। माँ वो हस्ती है जो सन्तान के लिए दुनिया में आने का जरिया है। माँ तो इतनी खास हस्ती है पर दुनिया ने उसको भूला दिया है। माँ हमेशा माँ है और हर वक्त माँ है। इसलिए दिनके चौबीसों घंटे पूरी जिंदगी के हर पल में माँ की सेवा अनिवार्य है। **माँ रोती थी जब रोटी नहीं खाता था बेटा, माँ आज भी रोती है जब रोटी नहीं खिलाता बेटा।**

माँ का स्पर्श बच्चे को तनावमुक्त करता है। दुनिया में माँ से ज्यादा हसीन व सुंदर चीज कोई नहीं है। माँ तपते रेगिस्तान में छांव और मौजों के समुन्दर में किनारा है। माँ जन्नत जानेका रास्ता है, अन्धेरी रात में उजाला है। बारिश और धूप बचाने के लिए साया है। माँ मुहब्बत की मूरत है। इस महान हस्ती की सुरक्षा के लिए मुहब्बत करनी चाहिए जिसने हमें जमाने के सूरज जैसी गर्मी की किरणों से बचाए रखा और स्वयं को जलाया। माँ एक अजीब तोहफा है।

माँ एक ऐसी हस्ती है जो सन्तान के लाखों राज सीने में छुपा लेती हैं। माँ वो शख्सियत है जो हर वक्त संतान के लिए

ईश्वर से दुआयें माँगती है। माँ वो हस्ती हैं जो जन्नत भी उसके कदमों तले है। पिता जन्नत का दरवाजा है। माँ वो हस्ती हैं जिसके बगैर घर भी कब्रस्तान है। ये ईश्वर की तरफ से नायाब तोहफा है। माँ वो हस्ती है जिसकी खुशबू से सारा जहां महक उठता है। माँ बाप जब बूढ़े हो जाएं तो उनका आदर व अधिक सेवा करनी चाहिए क्योंकि उस समय वो उस छोटे बच्चे की तरफ हो जाते है जिसको हरवक्त सहारे की जरूरत हो जाती है उन्हें कभी अकेला नहीं छोड़ना चाहिए।

माँ जब बच्चे पर क्रोध करती है तो शेरनी की तरह दहाड़ती है और जब प्यार करती है तो हिरनी की तरह उसे चाहती है। संसार में आज भी सबसे अच्छे मित्र, संरक्षक यदि हैं तो वे माता-पिता हैं। वे यदि गुस्सा भी होते हैं तो उनको अधिकार है, क्योंकि उस गुस्से के पीछे उनकी बेइंतहां मुहब्बत होती है। मुहब्बत भी वह, जो बिना लालच के होती है।

मंजिल दूर है और सफर बहुत है छोटी सी जिन्दगी की चिन्ता बहुत है,
मार डालती है ये दुनिया कब की हमें, लेकिन माँ की दुआओं में असर बहुत है।

पिता होने के नाते बच्चों को पढ़ाना लिखाना, उनकी बेहतरीन परवरिश करना आपका फर्ज है। उन्हें पैरों पर खड़ा करना, आत्मनिर्भर बनाना यह आपका फर्ज है। एक ऐसा अच्छा मनुष्य बनाना जो मनुष्यता के मूल्यों की बेहतरीन कद्र करना जानता हो। एक ऐसा मनुष्य जो आपकी बुढ़ापे में परवरिश करना जानता हो।

जो व्यक्ति आंख होने के बावजूद भी अंधा हो और कुदरत की हसीन उपहार को न देख सकें ईश्वर ने हर मनुष्य को खूबसूरत तोहफा माँ बाप के रूप में दिया है। माता का हृदय व्यंग्य की चोटें नहीं सह सकता।

माँ ने बनाया, पिता ने पहचाना, माँ ने शब्द दिये, पिता ने अर्थ दिया।
माँ ने विचार दिये, पिता ने वृत्ति दी, माँ ने शक्ति दी, पिता ने नीति।
इसी परिश्रम के बल पर, आज हमारी पहचान है।

माँ एक ऐसी गोद है जहां पहुंचकर जिंदगी की सारी थकान दूर हो जाती है और मनुष्य जिंदगी में जन्नत की हवाएं महसूस करता है। अगर आपके माता-पिता आपको घर, धन-दौलत छोड़ने के लिए भी कहें तो उनकी आज्ञा आदर सहित स्वीकार करनी चाहिए। माँ मन्दिर है। माँ मूर्ति है, माँ शक्ति है, माँ भक्ति है, माँ विश्वास है, माँ प्रकाश है। माँ शिक्षिका है, माँ गंगा जल के जैसा कोई जल नहीं। माँ के दिल के जैसा कोई दिल नहीं। गंगा का जल निर्मल है, माँ का दिल कोमल है। माँ से ही मायका है और जायका है। माँ ही दुर्गा है, माँ ही लक्ष्मी है। माँ की जितनी उपमाएं दी जाएं कम है और माँ की जितनी दुआएँ ली जाएँ वो भी कम हैं। माता-पिता ने अपने बच्चों के नाम एक पैगाम भेजा और कहा- जिस दिन तुम हमें बुढ़ा देखो तब तक सब्र करना और हमें समझने की कोशिश करना। जब हम कोई बात भूल जाएं तो हमपर क्रोधित न होना और उस समय अपने बचपन को याद करना। जब हम बूढ़े होकर चल ना सके तो हमारा सहारा बनना और अपना पहला कदम याद रखना। जब हम बीमार हो जाएं वो दिन याद करके हमारे ऊपर अपने पैसे खर्च करना, जब हम आपकी ख्वाहिशें पूरी करने के लिए अपनी ख्वाहिशें कुर्बान करते थे। बचपन के आठ साल तक आपको अंगुली पकड़कर जो माँ-बाप पाठशाला ले जाते थे उस माँ बाप को बुढ़ापे के आठ साल सहारा बनकर मंदिर ले जाना आपका फर्ज है, आपका कर्ज उतर जायेगा, आपका फर्ज पूरा हो जायेगा।

माँ तो वो है जो अपनी सन्तान को सुख के साथ अच्छे संस्कारों और सभ्यता की शिक्षा देती है।

मातृशक्ति ही जीवन का प्रवाह है। हमारी प्राणशक्ति का स्रोत है। मातृशक्ति को आद्यशक्ति भी कहा गया है। बच्चा अगर बीमार हो तो माँ को दुआ माँगने का तरीका खुद ब खुद आ जाता है।

प्रार्थना

हम प्रार्थना उन वस्तुओं को पाने की कोशिश के लिए करते हैं, हमें लगता है कि हमारी प्रार्थना हमें मदद करेंगी। प्रार्थना इस उद्देश्य से करनी चाहिए कि प्रभु जो चाहे वही हमारे जीवन में दे। प्रभु हमारी सब बातों से वाकिफ है, परिचित है, जो घटनाएं हमारे साथ घट रही है और वे जानते है कि हमारे लिए क्या बेहतर है। इसीसे हमारी जिंदगी और परेशानी हल हो जाएगी। हमें अपना निर्णय ईश्वर पर छोड़ना चाहिए कि हमें वह दे जो हमारे लिये बेहतर हो यही सच्ची प्रार्थना है। प्रार्थना ईश्वर से बात करने का सबसे प्रभावशाली तरीका है। लोग कई तरह की प्रार्थनाएं ईश्वर से करते है उनमें अधिकतर प्रार्थनाएं सांसारिक सुखों के लिए होती है। अच्छी नौकरी, नया घर, सुंदर पत्नी, अच्छा स्वास्थ्य, भरपूर धन आदि। जो हम मांग रहे है हमें लगता है कि हमारे लिये यह सब सुखदायी होंगे तो हो सकता है यह जीवनभर के लिये आपकी सही सोच न हो और न ही सही योजना। जब मन चाहे चीज मिल जाएं कुछ समय बाद वो ही चीज हमारे लिये उपयुक्त नहीं होती है। प्रार्थना का अर्थ है ईश्वर को जानना और उससे एकाकार हो जाना। प्रार्थना के माध्यम से अपने आपको प्रभुमें एकाग्र कर देना है, उसको खोजना है। प्रार्थना में प्रभु को पाने की तड़प और तीव्रतम इच्छा हमारे मन, हृदय और आत्मा में होनी चाहिए। प्रार्थना ऐसी अवस्था है जो प्राकृतिक रूप से ईश्वर से मिलने और उसमें समा जाने के लिए अंतस की गहराई से उठती है।

ईश्वर के हजारों नाम है चाहे जिस नाम से पुकारो लेकिन जिस नाम को आप परमात्मा के नाम से पुकारते हो उसमें श्रद्धा होनी चाहिए। श्रद्धा में बड़ी शक्ति होती है और वह शक्ति आपकी है। आप शक्ति के अजस्त्र स्त्रोत हो। हमेशा अपनी शक्ति का स्मरण करना चाहिए।

जीवन में बद्दुआएं विनाश करती हैं, दुआएं विघ्नों को हरती हैं। दुआएं मांगने से नहीं मिलती, दुआएं तो दुखी को मदद करने से मिलती हैं। कौन कहता है, दुआएं असर नहीं करती? भूखे की भूख मिटाकर देखो, गरीबों की दुआएं लेकर देखो। दुआएं फलती हैं, जिंदगी दुआओं पर चलती है।

जिसने ईश्वर की प्रार्थना छोड़ दी, ईश्वर ने उसकी फिक्र छोड़ दी। प्रार्थना उपासना की जान है। प्रार्थना और ध्यान से आत्मिक जीवनशक्ति बढ़ती है। तब निश्चय ही सांसारिक कर्म भी सर्वोत्तम रीति से कर सकेंगे। सच्चे दिल से ईश्वर से की प्रार्थना कभी रद्द नहीं होती। प्रार्थना में वो ताकत है जो बड़ी से बड़ी मुसीबतें टाल देती है। नेक इरादों के लिए प्रार्थना करने से अपनी जिंदगी को ईश्वर के निर्देश के मुताबिक संवारने और सुधारने की कोशिश करनी चाहिए। गलत कामों से हमेशा परहेज करना चाहिए।

चाहे जितनी प्रार्थना व व्रत्त रखो उससे कोई फायदा नहीं होगा जब तक बेईमानी और अनैतिकता से कमाया धन घर में रहेगा। हमारी प्रार्थना तभी स्वीकार होती है बशर्ते हमने सच्चे दिल से प्रार्थना की हो। प्रार्थना मनुष्य के लिए दवा से भी बेहतर है। प्रार्थना एक सच्ची हकीकत है, मन की शांति है। हर मुश्किल को आसान बना देती है, नेक राह पर चलाती है। स्वर्ग की चाबी है। प्रार्थना हमेशा ईश्वर की तरफ ले जाती है। ईश्वर से मुहब्बत और डर पैदा होने लगता है जिससे मनुष्य बुराइयों से दूर हो जाता है। बेहयाई और बुरे कर्मों से रोक देती है।

प्रार्थना करने के लिए आपको किसी विशेष योग्यता या सामर्थ्य की आवश्यकता नहीं है। आप चाहे ज्ञानी हों या अज्ञानी, चाहे धनी हों या निर्धन आप प्रार्थना कर सकते हैं। जीवन में विकास के लिए प्रार्थना एक महत्वपूर्ण साधन है। जब आप किसी बाधा का सामना करने में कठिनाई महसूस करें तब दिल से की गई प्रार्थना चमत्कार कर सकती हैं। जो आप करने में समक्ष हैं वह आप करते हैं और जिसे आप करने में असक्षम हों, उसके लिए आप प्रार्थना कर सकते हैं। आप

चाहे जो भी कर्म करें, बस इतना जान लें कि उसके फल का अधिकार उस परम शक्ति का ही है और आप प्रार्थना के माध्यम से उस परम शक्ति की ताकत तक पहुंच सकते हैं।

जब मन और वाणी एक होकर कोई चीज मांगते हैं, तब उस प्रार्थना का फल अवश्य मिलता है।

सामान्य व्यक्ति प्रार्थना नहीं करते, वे केवल याचना करते हैं। अहंकार को शून्य करने में प्रार्थना मदद दे सकती है। प्रार्थना कोई यांत्रिक वस्तु नहीं, वह हृदय की क्रिया है। भगवान की प्रार्थना में सारे भेदों को भूल जाने का अभ्यास हो जाता है। शब्द जितने कम होंगे, उतनी ही अच्छी प्रार्थना होगी।

कृतज्ञ और उल्लसित हृदय से की गई प्रार्थना भगवान को सबसे अधिक प्रिय है। प्रार्थना नरक की आग की ढाल है, ईश्वर के नजदीक आने का तरीका है। प्रार्थना कब्र के अंधेरे में भी चिराग है। कयामत की सख्त धूप में छांव है। गरीब की सेवा से आप ईश्वर की प्रार्थना से ज्यादा संतोष पाते हैं। प्रार्थना का अर्थ शब्दों में छिपी दैविकता की अनुभूति प्राप्त करने में है। प्रार्थना अगर हृदय के बजाए जीभ से होती तो गूंगे, तोतले और मूढ़ व्यक्ति प्रार्थना न कर पाते। प्रार्थना द्वारा ईश्वर को पुकारिए वह आपको आपकी कमजोरियों से मुक्त करेंगे। पवित्र हृदय से निकली प्रार्थना ईश्वर को स्वीकार होती है।

परमात्मा और मनुष्य इन दोनों की इच्छाओं का एकीकरण करना ही प्रार्थना का सार है। पूजा या प्रार्थना वाणी से नहीं, हृदय से करने की चीज है। तेज स्वर में की गई प्रार्थना ईश्वर तक पहुंचे यह आवश्यक नहीं किन्तु सच्चे मन से की गई प्रार्थना जो भले ही मौन रहकर की गई हो वह ईश्वर तक अवश्य पहुंचती है। सोई हुई शक्ति प्रार्थना से जाग उठती है। प्रार्थना ऐसे करनी चाहिए जैसा कि सब कुछ ईश्वर पर ही निर्भर है। खुद को जान लिया तो साधना हो गयी प्रेम को फैला दिया तो प्रार्थना होगी।

मनुष्य ने जब से पंचतत्वों की शक्ति को पहचाना, तभी से प्रार्थना का जन्म हुआ। प्रकृति की कोप से सुरक्षा के लिए उसके हाथ उठे आग हवा पानी का कहर थमा तो मनुष्य की आवश्यकता बढ़ी। जरूर कोई शक्ति है जो सबकुछ नियंत्रित करती है। उसके अधीन सब है। प्रार्थना से एक नई सकारात्मक ऊर्जा का नियंत्रण होता है। प्रार्थना से मनुष्य के अंदर एक विश्वास पैदा होने लगता है। उसे लगता है कि उसकी वास्तविक जिंदगी में विपत्तियां टल जाएगी। उसका अच्छा वक्त शुरु हो गया है। ऐसी सोच से उसके अंदर एक नयी आध्यात्मिक शक्ति, आत्मबल का अहसास होता है। सकारात्मक भावना उसमें वक्त और हालात से लड़ने की नयी शक्ति देती है और वो संयम और धैर्य से इस बिगड़े हालात में मुकाबला करने के लिए तैयार हो जाता है। जिंदगी के संघर्ष में हौसले से कूद जाता है। प्रार्थना अपने लिए ही नहीं दूसरों के लिए की जाती है। प्रार्थना सार्वभौतिक है, सम्पूर्ण सृष्टि के लिए है। कितने ही ऐसे लोग है जो किसी की मदद न कर सकते हो लेकिन प्रार्थना की शरण में आकर उनसे अच्छे की कामना कर सकते है। जीवन की हर परीक्षा में प्रार्थना अपने चाहनेवालों के साथ ही रहती है। जिन लोगों ने अपना पूरा जीवन मानवता की सेवा और प्रभु की प्रार्थना में लगा दिया उनकी दुआयें जरूर कबूल होती है। प्रार्थना के लिए मनुष्य का नेक कर्म होना जरूरी है। उसके इरादे और नीयत साफ होनी चाहिए। अगर किसी के बुरे के लिए मनुष्य हाथ उठाएगा तो वह फिर प्रार्थना कहां होगी। वह तो बद्दुआ हो जायेगी। प्रार्थना पाखंडी, स्वार्थी और दूसरों का बुरा चाहनेवालों की स्वीकार नहीं होती। जब कुछ नहीं होता तो सिर्फ प्रार्थना होती है। जहां मदद भी काम नहीं आती वहां प्रार्थना ही काम आती है। बड़े से बड़ा चिकित्सक भी चिकित्सा करके हार जाता है। तो वह कहता है कि दवा की जरूरत नहीं दुआं की जरूरत है। उस समय दवा कारगार नहीं होती दुआ ही होती है। यदि हम अपना बोझ हल्का करने के लिये प्रार्थना न करें, बल्कि मजबूत कंधों के लिये प्रार्थना करें।

हमारी प्रार्थनाएं जनसाधारण की भलाई हेतु होनी चाहिए, क्योंकि प्रभु जानता है कि हमारे लिए श्रेयस्कर क्या है। जो लोग जिम्मेदारी लेते हैं, वे प्रार्थना नहीं करते और जो प्रार्थना करते हैं, वे जिम्मेदारी नहीं लेते।

जिन्दगी क्या है?

मनीषियों ने कहा है-

जिन्दगी- एक शमा है जो बुझ जानेवाली है।

जिन्दगी- एक रेत का घरौंदा है जो गिर जानेवाला है।

जिन्दगी- समुंदर की एक लहर है जो मिट जानेवाली है।

जिन्दगी- एक तोहफा है जो आपसे छीन जानेवाला है।

जिन्दगी- एक गम का दरिया है जहां जीना और मरना बस में नहीं है। जिंदगी में गम के सिवा कुछ भी नहीं शायद खुशी भी आती है तो आंसू बन जाती है।

जिन्दगी- दुनिया के इम्तिहान में सफल होने का नाम है।

जिन्दगी- एक शराबी के अनुसार एक ख्वाब है और ख्वाब में झूठ क्या है और सच क्या?

जिन्दगी- बगैर मुहब्बत के मुसीबत है और बगैर बुद्धि के हैवानियत है।

जिन्दगी- एक रहस्य है जिसे आज तक कोई नहीं जान पाया।

जिन्दगी- एक संघर्ष है, जब तक जिओगे जिंदगी में उतार-चढ़ाव चलता ही रहेगा।

जिन्दगी- एक अवसर है जिससे लाभ उठाना चाहिए।

जिन्दगी- खूबसूरत है इसकी प्रशंसा करो।

जिन्दगी- एक सपना है इसका अहसास करो।

जिन्दगी- एक चुनौती है इसे स्वीकार करना सीखो।

जिन्दगी- एक सुहाना सफर है। न जाने यहां कल क्या हो किसने जाना?

जिन्दगी- जीवन के सफर में राही मिलते है बिछुड़ जाने को।

जिन्दगी- यह कैसा है सफर कोई समझा नहीं कोई जाना नहीं।

जिन्दगी- एक कड़वा जहर है जो पीना भी पड़ता है।

जिन्दगी- रेत के घरौंदे पर बनाया हुआ ताश का वो महल है जो कभी भी गिर सकता है।

जिन्दगी - जिन्दगी कैसी है पहेली कभी तो हँसाये, कभी तो रुलाये।

जिन्दगी- शतरंज का एक खेल है और हम सब उसके मोहरे हैं और हमारे कर्म उसकी गोटियां है।

जिन्दगी- एक ताश का खेल है, खेल खेलना हमारी मजबूरी है पर ताश के पत्ते हमें अपने नसीब से मिलते है।

जिन्दगी- जीना यहाँ मरना यहाँ इसके सिवा जाना कहां?

जिन्दगी- जन्म और मृत्यु के दो छोर के बीच का पड़ाव है।

जिन्दगी- सदा बहार है, इसे मस्ती से जियो और सभी रंगों में जियो क्योंकि जीवन रंगीन है।

जिन्दगी- वो चिराग है जो हर दिल को रोशन करे।

जिन्दगी- चौपड़ का खेल है जिसकी किसी भी गलत चाल से खेल की शियारें पिट जाती है।

जिन्दगी- अपनी भूलों का अहसास है।

जिन्दगी- एक परीक्षा है, इम्तिहान है जो हर घड़ी हमें देनी पड़ती है।

जिन्दगी- एक पैमाना है, कसौटी है, जहां सम्भलकर वक्त गुजारना पड़ता है।
जिन्दगी- कांटों भरी राह है जिसपर चलना है।
जिन्दगी- एक पुकार है जो हर वक्त ललकारती है।
जिन्दगी- एक सवाल है जिसका कोई जवाब नहीं।
जिन्दगी- एक खुशी है सबको बांटने के लिये।
जिन्दगी- समस्याओं का घरौंदा है जिसका समाधान ढूंढना कठिन है।
जिन्दगी- एक बोझ है ढोने के लिये।
जिन्दगी- सुख-दुख का एक खेल है खेलने के लिए।
जिन्दगी- एक खुबसूरत धोखा है।
जिन्दगी- एक भ्रम है।
जिन्दगी- एक पक्का इरादा है।
जिन्दगी- विश्वास का नाम है।
जिन्दगी- ईश्वर से मिली अनमोल नैमत (सौगात) है।
जिन्दगी- आशा और उम्मीदों का पुलिन्दा है।
जिन्दगी- एक प्रेरणा है, एक उद्देश्य है।
जिन्दगी- उड़ान है, गतिशील है जो तेज रफ्तार से दौड़ती है, ठहरती नहीं।
जिन्दगी- अनुभवों की एक पाठशाला है, जहां भावनाओं के धरातल पर जीना पड़ता है।
जिन्दगी- कर्म और नसीब का झमेला है।
जिन्दगी- जीवन की गणित है।
जिन्दगी- एक अलिखित वक्त का सच है।
जिन्दगी- एक राज है जिसे समझना बहुत मुश्किल है।
जिन्दगी- एक इतिहास है, एक कहानी है भविष्य के लिये।
जिन्दगी- रोने और हंसने का नाम है जिन्दगी।
जिन्दगी- मेहनत से जीने का नाम है जिन्दगी।
जिन्दगी- निद्रा से जागने का नाम है।
जिन्दगी- एक खुबसूरत आश्चर्य है।
जिन्दगी- एक दर्पण है जो हमारे प्रतिबिम्ब को दिखाता है।
जिन्दगी- एक तलाश है, खोज है।
जिन्दगी- स्वयं का एक निर्माण है।
जिन्दगी- हार जीत का खेल है।
जिन्दगी- एक विराट अस्तित्व है।
इन सबको जानते हुए भी आपको किसी अन्य के जीवन के साथ खेलने का अधिकार नहीं है।

उपदेशक के उद्‌गार

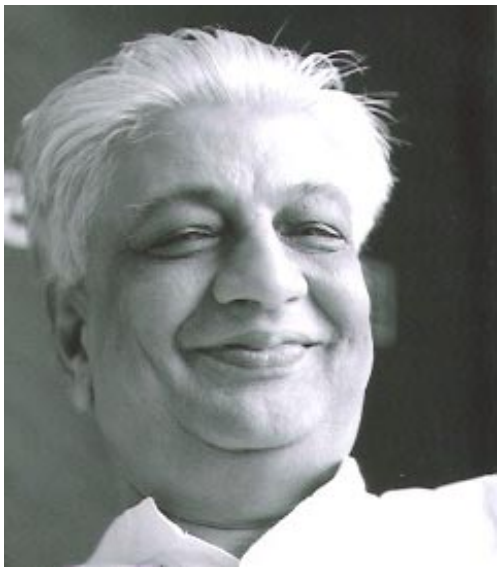

जो भी व्यक्ति अपने और अपने समय के बारे में लिखता है, वही वास्तव में समस्त मनुष्यता और सभी युगों के लिए लिख सकता है और इसी लक्ष्य को रखकर मैंने समाज में फैली बुराइयां, संकीर्ण मानसिकताओं, स्वार्थपरक आदतों का मेरे हर ग्रंथ में खुलकर विरोध किया है। लिखना जीवन का एक महत्वपूर्ण कौशल है। यह विचारों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम और कला है।

साहित्य सामाजिक जीवन की वह सीढ़ी है जो हमें सत्य-असत्य, शुभ-अशुभ, अच्छे-बुरे का दर्शन कराती है और उसका अंतर समझाती है, सही मुकाम तक पहुँचाने में सहायक होती है। समाज में व्याप्त अंधकार, रूढ़ियों, अंधविश्वासों, कुरीतियों, बुराई आदि को दूर करने के लिये मैंने सतत प्रयास किया है। मैंने समाज में संस्कृति, कला व साहित्य को बचाये रखने के हेतु ऐसी रचनाएँ लिखकर समाज के सामने पेश किये है और पूरा प्रयास किया है। कलम भले ही कभी टूट जाएं पर समाज के हित के लिये लिखना कभी न रुकेगा। सच्चे साहित्य का निर्माण एकांत चिंतन और एकांत साधना में ही होता है। किताबों का अध्ययन दिमाग को रोशन कर देता है।

साहित्यकार व्यक्तिगत रूप से अपने समय से बंधा होता है, लेकिन उसका अंत:स्फुरण समय-सीमा का अतिक्रमण भी करता है। रचनात्मकता अपनी विकास-यात्रा का निर्धारण स्वयं करती है। प्रतिभा जिस प्रेरणा से स्फूर्त होती है, उसका स्पंदन साहित्यकार के भीतर कहीं बहुत गहरे में होता है। वह स्पंदन इतना स्वाधीन है कि कई बार वह साहित्यकार की मान्यताओं को भी मानने से इंकार कर देता है। काव्य सभी ज्ञान का आदि और अन्त होता है- वह उतना ही अमर है जितना कि मानव का हृदय।

एक पुस्तक और एक कलम सारी दुनिया को बदलने की क्षमता रखती है। शिक्षा के द्वारा आतंकवाद और गरीबी से निबटा जा सकता है। सारी दुनिया में नये बदलाव लाये जा सकते हैं। मनुष्यता के लिये सुन्दर भविष्य का निर्माण कर सकते है। हमें हमारी कलम और किताब उठाने की देरी है, ये हमारे सबसे शक्तिशाली अस्त्र है। शिक्षा, गरीबी और आतंकवाद के खिलाफ सम्पूर्ण विश्व को संघर्ष करना चाहिए।

हमारी वैदिक सनातन संस्कृति के पथप्रदर्शक वेद, पुराण तथा उपनिषद् हैं। संस्कृति का ज्ञान हमें ग्रंथों से होता है। ये ग्रंथ हमें अपने कर्त्तव्यों का बोध कराते हैं तथा हमें धर्म मार्ग पर चलने को प्रस्तुत करते है। धर्म ग्रंथ हमारे पथप्रदर्शक है। अत: ग्रंथों के अध्ययन से ही संस्कृति का निरंतन विकास संभव है। इसमें दिये गये सुभाषित वाक्य आत्मविश्वास के लिए अत्यंत उपयोगी है और प्रत्येक आत्मविश्वास के इच्छुक व्यक्ति को चाहिए कि वह इनपर अमल करे जो उनके व्यक्तित्व की गहराई तक प्रभावित होगा।

जियो आज, अभी, पूर्णता से, समग्रता से जियो। कल स्वयं ही अपनी चिंता कर लेगा। यह तयशुदा है कि एकदिन सबको मरना है। इसलिये सम्पूर्णत: से जियो। हर तरह की सांसारिक संपत्ति भी शायद मिल जावे पर खुशी से जीने के अंदाज अलग

होते है। हिंदू धर्म एक अत्यंत व्यापक दृष्टिकोण है, जिसमें कण-कण में ईश्वर की कल्पना की गई है पर विश्व बंधुत्व का संदेश यही है कि जियो और जीने दो का अभियान है। जीना है तो मरना सीखो, कलम को हथियार बनाकर लड़ना सीखो।

किताबें समय के महासागर में जलदीप की तरह रास्ता दिखाती है। तमाम ग्रन्थों का सार ही मानवता है। न तो इसके लिये तकरीर की जरूरत है और न ही कोई जलसे की। सुख जीवन का राज है जो आपके पास है उसका आनंद लो, जो नहीं है, उसके पीछे बेहताशा पागल मत बनो। यह न हो कि जो मिला है वो भी हाथसे निकल जाए। सम्राट सिकंदर तो महावीर था फिर भी उसके सपने और महत्वकांक्षाएँ पूरी नहीं हुई फिर आप और हम तो बहुत मामूली है। सोने और चांदी की प्राप्ति से जीवन का आनंद नहीं मिल सकता। सच्चा आनंद तो परिश्रम से ही मिलेगा। मनुष्य पूजा ही सच्ची ईश्वर की पूजा है। मजदूर और मजदूरी का तिरस्कार करने से दरिद्रता प्राप्त होती है। काम, मजदूरी और हाथ के कला-कौशल के बिना विचार और चिंतन व्यर्थ है। अपने अनुभव का साहित्य किसी दर्शन के साथ नहीं चलता, वह अपना दर्शन पैदा करता है। सच्चा सुख पाने के लिए बच्चों जैसी खेल-कूद की हरकतें करके बेफिक्री से जीयो। जवानी की रंगरेलियां एक वृद्ध आदमी को शोभा नहीं देती। इस सत्य को कभी मत भूलो कि नदी कभी अपने उद्‌गम स्थान की तरफ नहीं लौटती। जब बचपन ही अपना न रहा तो युवावस्था कितने दिन रहनेवाली है। वृद्धावस्था और मृत्यु तो समयानुसार निश्चित है। अगर घर-परिवार में सुख-शांति चाहते हो, सुखी जीवन व्यतीत करना चाहते हो तो अपने घर में ज्योतिष और तांत्रिक को कभी प्रवेश मत दो। जिन घरों में इनका आना-जाना शुरू हो जाता है उन घरों की शांति और सुख चले जाते है। महिलाएं सबसे पहले इनका शिकार हो जाती है। एक बार उनके ग्रंथ का पृष्ठ खुल गया तो खुलते ही चला जाता है और विनाश के खतरे बढ़ते जाते है। जीवन की लम्बी उम्र कोई महत्व नहीं रखती, महत्व उस बात का है कि वह गहराई से कितना जीया।

जो लोग विषयों पर अच्छी पकड़ रखते हैं, पर जीवन जीने का गुण नहीं सीखते, उन्हें पूरी सफलता कभी नहीं प्राप्त होती। जीवन में सही सफलता के लिये हर युवक को दक्ष रहने, जीवन मूल्यों को जानने और सही अंदाज को विकसित करने की जरूरत है। साथ ही लगातार सीखते रहने की ललक होना भी जरूरी है।

यह ज्यादा महत्वपूर्ण है कि हम अपने भीतर की शांति के लिए प्रयास करें। जियो और जीने दो, के मूल मंत्र को समझ ले तो वह निश्चित रूप से खुश रहेगा।

जिंदगी है सिर्फ एक सवाल उसका न कोई हल, न कोई जवाब।
सबने हल किया है ये सवाल देकर खुद अपनी ही मिसाल।।

धर्मग्रंथ, गीता पुराण, बाइबल, रामायण, महाभारत अगर सही तरह से बचपन से ही बच्चे को सिखाया जाएं तो बुराई संसार में काफी हद तक समाप्त हो सकती है। कम से कम वह मनुष्य का जीवन जीने की कला सीख जायेगा जो सबसे जरूरी है। आज मनुष्य न ठीक से जी रहा है और न दूसरे को जीने दे रहा है। जीने की कला का वर्णन पवित्र ग्रंथों में अच्छी तरह से दिया गया है। जिसके अनुकरण करने से जिंदगी की हर परेशानियां और समस्याएं दूर हो सकती है। जब भी मनमें कोई विकार उत्पन्न हों हमें उन ग्रंथों का अनुकरण करना चाहिए।

जिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, वही आपकी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है। उन्हीं परिस्थितियों में निर्माण और पतन के बीज छिपे है। जीवन में कुछ बेहतर करने के लिये अच्छे और बुरे अनुभव जरुरी होते है। प्रतिकूल परिस्थितियों में खुद को संयमित, धैर्य और स्थिर रखना चाहिए।

जिंदगी में उतार-चढ़ाव आना जाना कोई नई बात नहीं है। कभी हार तो कभी जीत, यही जिंदगी की रीत है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि अपनी छोटी खुशियों से हर पल समझौता किया जाए? अपनी जीवनशैली में थोड़ा बहुत बदलाव करें, तड़का लगाएँ ताकि जिंदगी से बोरियत दूर चली जाए।

अनुभवी संत महात्माओं की वाणी में कुछ ऐसा ही जादू होता है जो हमें जीवनभर मार्ग-प्रदर्शित करने का कार्य करता है। किसीने कहा-

तुम्हें जिंदगी की मंजिल मिलेगी, जरा दिल की राहों पर आकर तो देखो।
जिसे ढूंढते हो, नहीं दूर तुमसे, इन आंखों से पर्दा हटा कर तो देखो।।

जिंदगी की मंजिल कब मिलेगी यह तो पता नहीं धन-यश कमाना ही जीवन की मंजिल नहीं है। जीवन में संतुष्टि प्राप्त करना, सदा आनंद में रहना ही जीवन का साध्य है। अपने अंत:करण में प्रवेश करके देखो जिसे हम ढूंढ रहे है वह वहीं हमें मिलेगा। हमने तो उसे बाहर ढूंढा- पहाडों पर ढूंढा, मंदिर-मस्जिद में ढूंढा, गिरजाघर में ढूंढा लेकिन वह कही न मिला सिर्फ अंत:करण की राह पर चलकर देखो वह वही मौजूद है। आँखों से अज्ञानता का पर्दा हटाओ तो उसको देखोगे। उसको न जानना ही अज्ञानता है और उसको जान लेना, पहचान लेना ही ज्ञान है।

बहुत से हैं अरमां, बहुत सारी हसरत, मेरे ख्वाब हर रात दिन बढ़ते जा रहे है।
जो दिल चाहता है, वह चीज कौन सी है, कभी पता लगाकर तो देखो।

हमारे अरमान, इच्छाएं और सपने दिनोंदिन बढ़ते जा रहे है। इसका अर्थ यह नहीं है कि सपने नहीं देखें और इच्छाओं का दमन कर दे बल्कि इन भौतिक सपनों और अरमानों में दिल की चाहत होती है उससे जोड़ लिया जाएं। जीवन की मंजिल पाने में यूं तो हमें हजारों लोग मिले और हजारों लोग जुड़े फिर भी हमारा दिल मायूस रहता है। अपने आपको अकेला महसूस करते है।

हजारों मिले और हजारों जुड़े भी, मगर यह दिल की तनहाई कम न हो पायी।
अपने ही दिल में यारों का यार बैठा है, कभी उसे दोस्त बनाकर तो देखो।।

बाहर के मित्रों पर जो बहुत विश्वास, भरोसा किया पर अंत में धोखा ही हाथ आया। जब तक धन पास रहा सभी दोस्तों ने साथ दिया लेकिन जब-जब जेब खाली हुई और मुसीबतों का पहाड़ टूटा तो कोई दोस्त दोस्त ना रहा। सभी अनजाने बन गये। असली दोस्त तो वो ही है जिससे धोखा नहीं मिलेगा, सुख-दु:ख में साथ रहेगा ऐसे मित्र से मित्रता करनी चाहिए।

जमाने की खुशियाँ बाँटना चाहते हो मगर अपनी झोली में तो कुछ है ही नहीं।
एक दिन आप लुटा सकोगे, पहले यह दौलत कमा कर तो देखो।।

आनंदरूपी, खुशी रूपी हीरों से अपने अंत:करण की झोली को भरों। दिल की राह पर चलकर ही यह खजाना हमें मिलेगा फिर हम उसे अपने मनमाने ढंग से लुटा सकेंगे। यह खजाना कभी कम नहीं होगा बल्कि दिन-रात चौगुना बढ़ेगा।

मेरी कोशिशों में कसर तो नहीं है मगर मैं अब तक क्यूं नहीं समझा की जिन्दगी क्या है।
सिवाय उसके कोई न समझा पाया, जरा दर पे मुर्शिद के सर झुका कर तो देखो।।

प्रयत्न तो हमने बहुत किये है लेकिन जिन्दगी के रहस्य को समझ नहीं पाये। इस बहुमूल्य दुर्लभ जिन्दगी के राज को समझना सिवाय मुर्शिद के समझ नहीं सकते। हमारे इस अहंकारी सिर को मुर्शिद के कदमों में झुकाने के लिये शर्म आती है। सच्चा मुर्शिद बनने की देर है और जिस दिन मिल जाएं तो जीवन की मंजिल मिल जायेगी। दिल की राहों पर चलना

सीख जायेंगे और बेशुमार खजाना पाकर मालामाल हो जाएंगे।

जो बात दवा से हो न सके, वह बात दुआ से होती है। जब कामिल मुर्शिद मिलते है तो बात खुदा से होती है।।

सफलता को एक मूल्य की तरह स्थापित किए जानेवाले दौर में सहजता सबसे बड़ी उपलब्धि है। इसलिए जीवन में सहजता और सरलता से प्राप्त होनेवाली खुशियों को विकसित करें। जीवन में कभी-कभी तेज क्षण में नदी में तैरने का आनंद भी मिलता है। भीगते हुए भुट्टा खाने या पतंग लूटकर लाने जैसा बचपना एक नये तरह का आनन्द देता है। अपने बनाये हुए खोल से बाहर जाकर देखें सामान्य होकर जीने में क्या मजा है। आपके भीतर हमेशा एक अज्ञात की आशंका रहती है जिससे हम सभी हर समय डरे हुए रहते है। नौकरी में असफल होने का डर हमें सताता है। घर से निकले हैं तो लगता है आज लौट पाएंगे या नहीं। हम अपने भीतर की शांति के लिए प्रयास करें। कोई भी व्यक्ति जीवन में पूर्ण नहीं होता फिर भी व्यक्ति जियो और जीने दो का मूलमंत्र को समझ ले तो निश्चित रूप से खुश रह सकेगा। हर समय अपने आपको विशिष्ट बनाने, विशिष्ट समझने की बजाय सामान्य बनने का प्रयत्न करना चाहिए। अपनी असफलताओं से सीख ले, उन्हें स्वीकारें, अपनी उन्नति की भाँति असफलताओं की भी खुशी मनायें। दोनों एक-दूसरे से जुड़ी हैं। असफल रहने का डर हमें किसी भी नई चुनौती को स्वीकारने से डराता है। किसी प्रकार के भय को अपने जीवन पर हावी न होने दे। छोटी-छोटी चीजें जीवन में कितना सुख देती है उतना सुख शायद जीवन में हमें बड़ी चीजें नहीं दे सकती। अपने इर्द-गिर्द छाए भय के आतंक से आप मुक्ति पायें।

इस संसारमें ऐसे बहुत-से शिक्षक होते हैं जो दूसरोंको शिक्षा देते हैं कभी यहाँ प्रचार करते हैं और कभी वहाँ प्रचार करते हैं। लेकिन दूसरोंके लिए शिक्षाका प्रचार करनेवाले यह नहीं देखते कि उन्होंने अपने लिए क्या किया है। अपनी ओर तो उनकी नजर ही नहीं जातीं। किन्तु दूसरोंकी शिक्षित करनेकी अपेक्षा अपने मनको ही शिक्षा दे-देकर अपना पक्का शिष्य बना लिया है। महावीर स्वामी भारतीय संस्कृति के ऐसे तीर्थंकर रहे हैं, जिन्होंने जगत को जियो और जीने दो का सूत्र दिया। हर प्राणीयों को स्वतंत्रता से जीने का अधिकार दिया। स्वतंत्रता ही मानव की अमूल्य धरोहर है इस बात का ज्ञान सभी को करवाया। महावीर स्वामी अलौकिक पुरुष थे। वे तपस्वियों में आदर्श, विचारकों में महान, प्रचलित कानून विधाओं में पारंगत, अपनी तपस्या के बल पर उन विधाओं को रचनात्मक रूप देकर जनसमूह के समक्ष उपस्थित किया।

हमारी इस दुनिया में आज तरह-तरह के शोध हो रहे हैं। आदमी की उम्र कैसे बढ़े, आदमी युवा कैसे रहे, बुढ़ापा कैसे न आये और आदमी कभी बीमार न पड़े आदि बातों के लिए शोध चल रहे हैं। इसके अलावा रोबोट और नेनो टेक्नोलॉजी से लेकर नई-नई चीजें भी आ रही हैं। मगर इस बात पर कोई शोध नहीं हो रहा कि इन्सान श्रेष्ठ कैसे बने और वो ईर्ष्या, द्वेष, षड्यंत्र, परनिंदा आदि से मुक्त कैसे हो? इसीलिये भागवत् में जो शिक्षायें मिली है हमारी संस्कृति को जागरूक रखने के लिये जो उपदेश है वो एकत्रित कर यहाँ प्रस्तुत किये है।

धर्म, संस्कृति, इन्सानियत, मानवता ये सभी सत्य संज्ञाएं आदमी कहलवाने वाले मानव के साथ युग-युगान्तर से जुड़ी है। जियो-जीने दो की मूलभूत सत्यगामी विचारधारा ही मानवता की मूल पहचान है, हमारी पूज्य भारतीय संस्कृति का वो चमकता कोहिनूर है जिसके आलोक में आज भी सारा विश्व प्रकाशित होता है।

पुस्तक कहती है- मुझे मूर्ख के हाथ में मत देना। अच्छी पुस्तकें जीवन्त देव-प्रतिमाएँ हैं। उनकी आराधना से तत्काल प्रकाश और उल्लास मिलता है। मानव-जीवन का एक संस्मरण भी जीवन-चरित्र के विशाल ग्रन्थ के समान है। लेखक की अपने कृति का सर्वश्रेष्ठ पारिश्रमिक यही है कि उसकी कृति की विद्वान लोग प्रशंसा करें। कलाकार की कला की कलामर्मज्ञ यदि बड़ाई करें तो उसका परिश्रम सफल हो जाता है। बुद्धिमानों की रचनाएं ही एकमात्र ऐसी अक्षय निधि हैं,

जिन्हें हमारी संतति विनष्ट नहीं कर सकती।

जीवन भी एक पहेली के सिवा क्या है? हर वर्ग के लोगों के जीवन स्तर को उपर उठाने के लिये कोशिशें करनी चाहिए जिससे उनकी हीन भावनाओं पर नियंत्रण हो और निरंतर हो रहे अपराधों में कमी लायी जा सके ताकि उनका उज्ज्वल भविष्य बन जाये। आबादी बढ़ी तो निश्चय ही अपराध भी बढ़ेंगे। जनता इसे प्रशासन की ढील कहकर पल्ला झाड़ लेती है पर मूल वजह इसके पीछे अमीर और गरीब के अलावा ग्रामीण और शहरी जीवन शैली भी बड़ी भूमिका निभाती है। अपराधियों को अभाव ग्रस्त जीवन भी कहीं न कहीं अपराध करने को उकसाता है।

संसार में नयी कोई बात ही नहीं। सदा सर्वदा उन्हीं-उन्हीं पुरानी घटनाओं की आवृत्ति होती रहती है। हम नित्य ही शौच जाते हैं, नित्य ही स्नान करते हैं, नित्य ही भोजन करते हैं, नित्य ही दैनिक व्यापार करते हैं। वे ही सोलह स्वर और चालीस व्यंजन हैं, चाहे तुम कितना भी बड़ा ग्रन्थ लिखो, कितनी भी खोज पूर्ण बातें लिखो, सबको इन्हीं स्वर व्यंजनों में लिखना होगा। एक भी शब्द ऐसा न होगा, जो इनसे भिन्न हो।

अपने पूर्वजों को देवता बनानेवाली पुस्तकें अमर होती है। बुद्धि वैभव के भार से दबे हुए ग्रंथों की अधिकता से क्या हम ऊब नहीं उठे हैं? अपनी पुस्तकों की प्रशंसा करनेवाला लेखक अपने बच्चों की प्रशंसा करनेवाली माता के समान ही है।

पुस्तकें वे विश्वस्त दर्पण हैं जो विद्वानों के मस्तिष्क का परावर्तन हमारे मस्तिष्क पर करती हैं। साधन के रूप में पुस्तकें हैं, स्वाध्याय करनेवाले पुस्तकों का सहारा लें। स्वयं का अध्ययन करना मनुष्य का तप है। स्वयं का अध्ययन बुद्धि का यज्ञ है जिससे सत्य प्राप्त होता है। किसी उपदेशक के दोषों पर प्राय: जल्दी ही ध्यान आकर्षित होता है।

किसी भी राष्ट्र की बहुत थोड़ी पुस्तकें पठनीय होती हैं। साहित्य का कर्त्तव्य केवल ज्ञान देना नहीं है, बल्कि एक नया वातावरण देना भी है। जिसे पुस्तक पढ़ने का शौक है, वह हर जगह सुखी रह सकता है। पुस्तकें पढ़ने से मनोरंजन व ज्ञान प्राप्त होता है, जिसमें स्थायित्व रहता है।

आदमी अभी तक उत्तर खोज नहीं पाया है कि जिंदगी क्या है? क्योंकि उसकी बुद्धि छोटी है और अस्तित्व विराट है। अंश पूर्ण को नहीं समझ पाता, लेकिन पूर्ण को जी सकता है। पूर्ण के साथ एकात्म हो सकता है। हम अपने जीवन को जीने की चेष्टा में संलग्न न करें। जो पल बीत गया सदा के लिये बीत गया फिर लौटकर नहीं आ सकेगा। प्रत्येक पल को जीवन के उत्सव में संलग्न करना चाहिए, जीवन की प्रार्थना में लीन करना चाहिए। जीवन कोई प्रश्न नहीं है। एक ऐसी पहेली है जिसका कोई उत्तर भी नहीं है। अगर जीवन को जानने की आकांक्षा है तो जियो और जीने दो। खूब बाँटो, जितना रस ले सको और जितना रस दे सको। जितना दोगे उतना ही मिलेगा इसमे कंजूसी मत करना।

मैं आपको कुछ सिखा नहीं सकता पर आपको सब कुछ स्वयं ही सिखना है। मैं आपके विचारों को प्रकट कर आपको बदलने का माध्यम देनेका प्रयास कर सकता हूं। मेरा ऐसा विश्वास है, इस ग्रंथ का एक-एक वाक्य जीवन के लिए अनमोल सिद्ध होगा, अमृत की एक बूंद ही अमर बनानेके लिए काफी हुआ करती है। महापुरुषों के वाक्यों को पढ़ने समय उनके व्यक्तित्व की गरिमा भी आपको प्रभावित करती है, जिससे अचेतन मन वैसा करने या न करने को विवश हो जाता है। इस प्रकार की स्थिति व्यक्तित्व के विकास के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करती है। इसके सुभाषित वाक्यों से आपके व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने में सहायता मिलती है। यह आपकी जीवन में नई स्फूर्ति का संचार करते हुए आपमें आत्मविश्वास पैदा करेगा कि आप सबमें श्रेष्ठ है और कोई भी ऐसा काम नहीं है जिसे आप नहीं कर सकते। यह ग्रंथ प्रत्येक क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति के लिए उपयोगी सिद्ध होगा ऐसा मेरा विश्वास है। **- महेन्द्रकुमार पाटोदिया**

* कमाल का हौसला दिया ईश्वर ने हम मनुष्यों को। भरोसा अगले पल का भी नहीं है और वादे कर लेते हैं जन्म-जन्मान्तरों के।

* हालात को बदलना हमारे हाथ में नही है, पर विचारों को बदलना हमारे हाथ में है।

* अपने कर्म पर विश्वास करो, राशियों पर नहीं क्योंकि राम और रावण, कृष्ण और कंस, गांधी और गोडसे, ओबामा-ओसामा इनकी राशियां तो एक ही हैं पर इनके कर्म अलग-अलग है।

* सड़क कितनी भी साफ हो, धूल तो हो ही जाती है, आदमी कितना भी सभ्य हो, भूल तो हो ही जाती है।

* किसी को हरा देने की कोशिश कभी मत करो। हर किसी का दिल जीतने की कोशिश करो।

* टूट जाता है गरीबी में वो रिश्ता जो खास होता है, हजारों यार बन जाते हैं जब पैसा पास होता है।

* मनुष्य सब कुछ भूल सकता है सिवाय उन लम्हों के जब उसे अपने वालोंकी जरूरत थी और उन्होंने साथ नहीं दिया।

* जिंदगी में हमेशा उड़ने की कोशिश कीजिये। जब उड़ नहीं सकते तो दौड़ने की कोशिश कीजिये, दौड़ नहीं सकते तो चलने की कोशिश कीजिये, चल नहीं सकते तो सरकने की कोशिश कीजिये, क्योंकि एक स्थान पर रहकर आप जिंदगी में आगे नहीं जा सकते, यही जिंदगी का सच है।

* रुपया उतना नहीं गिरेगा, जितना रुपये के लिए मनुष्य गिर चुका है।

* पैसा तो हर कोई कमा लेता है लेकिन खुशनसीब होते है वो जो परिवार कमा लेते हैं।

* जीवन एक गणित है। गणित में जोड़ना, घटाना, गुणा और भाग देना यह उसके अंग है और जिंदगी में भी सब जरूरी है। जिंदगी में दोस्ती का जोड़ करो, दोस्त खुद-ब-खुद बढ़ जायेंगे। दुश्मनी को घटा दो, शत्रु कम हो जायेंगे। खुशियों को गुणा कर दो, खुशियां अधिक हो जायेगी, दु:ख का भाग कर दो दु:ख स्वत: कम हो जायेंगे। इतना करनेपर जिंदगी का वर्गमूल अपनेआप निकल जायेगा।

* जिससे मुहब्बत हो जाए उससे प्रतिस्पर्धा नहीं की जाती।

* गमसे बढ़कर दोस्त कोई दूसरा होता नहीं, सब जुदा होते हैं लेकिन गम जुदा होता नहीं।

* लगेगी एक दिन आपके गरुर को ठोकर, जमीन पर जो कदम देखकर नहीं रखते।

* ये राहें ले ही जायेंगी मंजिल तक हौसला रख, कभी सुना है कि अंधेरे ने सवेरा नहीं होने दिया।

* आपकी नेकी का लिबास ही आपका वजन ढकेगा, क्योंकि ऊपरवाले के घर कपड़े की दुकान नहीं होती।

* खुशियां मिलती नहीं मांगने से मंजिल मिलती नहीं राह पर रुक जाने से, भरोसा रखना खुद पे और उस ईश्वर पे, जो सब कुछ देता है वो सही वक्त आने से।

* समय, सत्ता, संपत्ति और शरीर चाहे साथ दें ना दें, लेकिन स्वभाव, समझदारी, सत्संग और सच्चे संबंध हमेशा साथ देते हैं।

* किसी और की नींव पर बना मकान जाने कब गिर जाये, उसकी मजबूती का भरोसा तो तब होता है जब बुनियाद में हर ईंट अपने हाथों से रखी हो।

* आपकी घड़ी कितनी भी कीमती क्यों न हो, मगर वक्त तो ऊपरवाले के हिसाब से ही चलता है।

जीवन जीने की शिक्षा

❊ जियो अपनी धुन में - क्षण भर की जिंदगी है। अब गये, तब गये। क्या फिक्र करते हो घर की, परिवार की? क्या फिक्र करते हो मित्रों की, प्रियजनों की? एक ही बात की फिक्र करो कि आप अपना गीत गाकर जाओगे, कि आप अपना नृत्य नाच कर जाओगे, कि आप अपनी सुगंध बिखेर कर जाओगे, कि मरते समय आपको यह अपराध भाव न लगेगा कि मैं अपनी जिंदगी अपने ढंग से न जी सका। यही सिद्धि है। मरते समय आपको यह आनंद रहे कि जैसा जीना था, वैसा जीया, जो करना था, वही किया, न तो झुका, न समझौते किये। अपनी मौज में रहा। अपनी मस्ती में रहा।

❊ वादा खिलाफी- जहां तक हो सके वादे को निभाया जाए। जब वह वादा करे, तो उसकी खिलाफ वर्जी करे। मोमिन का काम यह है कि जब वह वादा करता है तो उसको निभाता है। उसको पूरा करता है। अगर किसी शख्स ने कोई वादा किया और बाद में उस वादे को पूरा करने में कोई शदीद उज्र किया और बाद में उस वादे को पूरा करने में कोई शदीद उज्र (दिक्कत) पेश आया, या कोई रुकावट पेश आ गई जिसकी वजह से उसके लिए उस वादे को पूरा करना मुमकिन नहीं रहा, तो उस सूरत में यह वादा करनेवाला शख्स उस दूसरे शख्स से बता दे कि अब मेरे लिए उस वादे को पूरा करना मुमकिन नहीं रहा। जब तक उस वादे को पूरा करने की कुदरत है और कोई शरई उज्र (धार्मिक रुकावट) नहीं है, उस वक्त तक उस वादे को पूरा करे। जब जुबान से बात निकल जाती है तो फिर मुकरना नहीं चाहिए।

बहुत सी चीजें ऐसी हैं जिनको वादा खिलाफी समझते हैं और बहुत सी चीजें ऐसी हैं जिनको हम वादा खिलाफी नहीं मानते है। दीन हमारी जिंदगी के हर क्षेत्र के अंदर शामिल है।

❊ जीवन को सुखी व समृद्ध बनाने के लिये मनुष्य को इन बातोंपर गौर करना चाहिए।

हर किसी की कामना होती है कि उसका परिवार सुखी हो। परिवार के सभी सदस्य स्वस्थ हों। इसके लिए कहते हैं, पहला सुख निरोगी काया। परिवार के सुखी रहने की पहली शर्त है- आरोग्य। ज्ञान और समृद्धि प्राप्ति की भी पहली शर्त है- स्वास्थ्य।

स्वास्थ्य जीवन की ऊर्जा है। जो व्यक्ति तन-मन से स्वस्थ होता है वह हर क्षण आनंद की अनुभूति करता है। आज तनावपूर्ण जीवन, विश्राम की उपेक्षा तथा अनियमित जीवन शैली के कारण अनेक प्रकार के रोग हो रहे हैं। कुपथ्य, कुसंग, प्रमाद, व्यसन और आवेग आदि को नियंत्रित कर ही हम सही अर्थों में आरोग्य को प्राप्त कर सकते हैं।

आरोग्य के बाद सुखी परिवार का दूसरा द्वार है- घर में माया। गरीबी जीवन का सबसे बड़ा उपहास है। आवश्यकता से अधिक धन जहां जीवन में कुरीतियां प्रकट करता है, वहीं उसका अभाव विकट परिस्थितियां पैदा कर देता है। हमारे आपके साधन कुछ भी हों, चाहे व्यापार करते हैं या नौकरी- अपनी चादर के अनुसार ही पैर फैलाएं। आय के स्रोत नैतिक होंगे, तभी बिना किसी भय के हम जीवन-यापन कर सकेंगे। अनैतिक साधनों से प्राप्त संपदा के कारण परिवार में हर समय अनावश्यक भय समाया रहता है।

तीसरा द्वार है- सुलक्षणा नारी। नारी परिवार की आधारशिला है। परिवार का सौंदर्य, समृद्धि और गौरव उसी के कारण स्थिर है। नारी के अनेक रूप हैं- माता, पत्नी, बहन, बेटी आदि। वह हर रूप में पूजनीय है। नारी परामर्श में मंत्री, गृहकार्य में दासी, धर्म कार्य में पत्नी, सहिष्णुता में पृथ्वी, गृहव्यवस्था में लक्ष्मी, ममता में माता, विलास में रंभा और क्रीड़ा में मित्र की भूमिका निभाती है। नारी का एक महत्वपूर्ण रूप है शिक्षिका का- बच्चों को संस्कारी बनाने से लेकर परिवार के सदस्यों को सन्मार्ग की ओर ले जानेवाली वही होती है। भौतिक उन्नति के बिना सुख संभव नहीं। भौतिक उन्नति हर्ष

देगी, सुविधा देगी, किंतु सुख नहीं दे सकती। पैसों के बल से पकवान तो मिलेंगे, किंतु भूख कुदरती होती है। पैसों के बल पर सुविधाएं जुटा सकते हो, महल खड़े कर सकते हो, लेकिन प्रेमपूर्वक भोजन खिलाने वाली पत्नी या मां नहीं मिलेगी।

चौथा द्वार है- गुरु और भगवान में विश्वास। किसी भी साध्य की प्राप्ति के लिए किसी न किसी आलंबन की आवश्यकता रहती है। गुरु और भगवान हमें आलंबन प्रदान करते हैं। आस्था के बिना पुरुषार्थ फलता नहीं, पुरुषार्थ के बिना आस्था स्थिर नहीं होती। पुरुषार्थ जगाने का पहला सूत्र है- आस्था। यह संजीवनी शक्ति है। आज उपासना के नाम पर प्रतिदिन जो कर्मकांड, हिंसा, धोखा और स्वार्थ विकसित हो रहा है, वह आस्था नहीं है। जो आस्था और उपासना को चरित्र से अलग मानते हैं, उनकी उपासना दोषपूर्ण रहती है।

पांचवा द्वार है- सार्वजनिक प्रतिष्ठा। व्यक्ति की साफ-सुथरी छवि परिवार के लिए यशदायी होती है। जब तक व्यक्ति में प्रामाणिकता, ईमानदारी, सच्चाई आदि गुण नहीं होंगे, तब तक वह समाज में सच्ची प्रतिष्ठा नहीं पा सकता। अधिकारों की मांग करना मौलिक अधिकार है, किंतु कर्त्तव्यों का पालन करना भी उतना ही आवश्यक है। जीवन की मूल आवश्यकताओं को पूरा करनेवाले लोग उतने भ्रष्टाचारी नहीं होते, जितने वे लोग हैं जो सुख-सुविधाओं को भोगने के लिए भ्रष्टाचार में लिप्त हैं।

छठा द्वार है- सामाजिक यश। हमारा जीवन समाज सापेक्ष होता है और वह सहकार पर ही टिका रहता है। समाज के प्रति हमारा कर्त्तव्य है। हमें समाज के विकास के लिए स्वयं पुरुषार्थ करना होगा। सेवा मानवीय मूल्यों की मिठास है।

सुखी परिवार का अंतिम और सातवां द्वार है- व्यक्तित्व विकास। व्यक्ति के साथ अभेद रूप से जुड़ा हुआ तत्व है उसका व्यक्तित्व। आज व्यक्तित्व को विकसित करने की, व्यक्तित्व को निखारने की अनेक प्रयोगशालाएं खुली हैं। जीवन अनंत संभावनाओं की कच्ची मिट्टी है। महत्वाकांक्षी और स्वप्नदर्शी होना बुरा नहीं। किंतु निरर्थक महत्वाकांक्षा, पतन की राह पर ले जाती है।

गाड़ी नहीं है तो मैं दुखी हूं, गाड़ी मिल गई, तब भी हम परम सुखी नहीं होते हैं। बच्चा नहीं है तो दु:खी हैं। बच्चा हो गया तो दुख मिटा नहीं, अब और कोई दुख है। सत्ता नहीं है तो हम दुखी हैं। लेकिन सत्ता मिलने पर हम अदुखी नहीं होते। जब तक परम सुख नहीं मिला, हम निर्दुख नहीं होते, क्योंकि हम अमर हैं, शाश्वत हैं। क्षणिक सुविधाएं हमको संतोष नहीं दे सकती। सुख और दु:ख तो आते जाते रहेंगे दोनों परिस्थितियों में एक से रहो। जैसी परिस्थितियाँ जीवन में आये उसका सामना करो। उनसे डरना नहीं चाहिये। जो परिस्थितियों से घबरा जाता है वो मानव जीवन में कभी प्रगति नहीं कर सकता। असंतोष से आदमी दुखी बनता है। आज आदमी जो उसके पास नहीं हैं, उसके लिए दुखी है। जो है उससे वह सुखी नहीं है। आदमी की आकांक्षाएं ही वास्तव में उसे दुखी बनाती है। यदि वह अपनी आकांक्षाएं या इच्छाएं कम कर ले या सीमित कर लें तो संसार की कोई ताकत उसे दुख नहीं पहुंचा सकती। आपका हृदय जितना मधुर, कोमल, उज्ज्वल होगा, उतना अधिक सुख आपको प्राप्त होगा।

* दूसरों को सुख बन सके तो दे देना; लेकिन सुख न दे सको, तो कम से कम दु:ख मत देना। अपना सुख ऐसा बनाना कि वह तुम पर ही निर्भर हो, दूसरे के दुख पर निर्भर न हो।

* सुख बाहर से आता है इसलिए क्षणिक है, शांति भीतर की है इसलिए शाश्वत है। सुख की व्याख्या हरेक व्यक्ति के लिए अलग-अलग है। किसी को भोजन करने में सुख का अनुभव होता है, तो किसीको किसी चीज में सुख का अनुभव होता है, किसीको एक जगह बैठे रहने में ही सुख मिलता है, तो किसीको टहलने में सुख मिलता है पर शांति और पीड़ा ये दोनों सबके लिये समान है।

✻ सुखी जीवन का राज है कि हर दिन इस तरह बिताओ कि रात चैन की नींद सो सको, हर रात इस तरह गुजारो कि सुबह किसी को मुंह दिखाने में न शरमाओ। जवानी को इस तरह से जीओ कि बुढ़ापे में पछताना न पड़े और बुढ़ापे को इस तरह बनाओ कि किसी के सामने हाथ फैलाने न पड़े। सुख इच्छाओं की पूर्ति में नहीं है, बल्कि इच्छाओं के अभाव में है। सुख बाहरी स्थितियों पर निर्भर नहीं है, बल्कि वह हमारे दृष्टिकोण और मानसिक स्थिति पर निर्भर है।

✻ दु:खसे द्वेष और सुखसे राग होता है। बन्धन दोनोंमें है। संसारमें जहाँ सुख मिलता है वहाँ भी मनुष्य फँसता है और जहाँ दु:ख मिलता है वहाँ भी फँसता ही है। अपने हृदयमें परमेश्वरका चिंतन करो, जिससे सुख-दु:ख दोनोंसे ऊपर ऊठ जाओ।

✻ सुख वस्तुओं में नहीं, बल्कि विचारों में होता है। अगले क्षण के जीवन का हम भरोसा नहीं दे सकते; लेकिन लाखों योजनाओं के साथ भी हम संतुष्ट नहीं हैं। हम हमेशा चिंता करते रहते हैं, लेकिन इसके परिणामों के बारे में कभी सोचते नहीं।

✻ मनुष्य चाहता तो है स्थायी सुख और उसे ढूँढता है नश्वर वस्तुओंमें। चाहते हैं प्रत्येक स्थानमें रहनेवाला सुख, ढूँढते है उसे एक स्थानमें। चाहते हैं सबसे सुख और स्वयं उसे सीमाबद्ध कर देते हैं। चाहते हैं कि सुख बिना श्रम मिले और उसे पानेका आयास करते हैं। आपके मनकी प्यास ईश्वरके बिना बुझनेवाली नहीं है। यह आपका भ्रम है, कि आपकी प्यास पुरुष या स्त्री, धन, पद आदि मिलनेसे बुझेगी।

✻ दूसरेको सुख देना है, सेवा करनी है तो अपनेको शान्त रखना होगा।

✻ सुख-दु:ख हर इन्सान की जिन्दगी में आते रहते हैं, यह खेल जन्म से लेकर मृत्यु के समय तक चलता है। सुख का आगमन हो तो खुशियों पर इतराये नहीं और दु:ख के आने पर धीरज खोये नहीं, तो जीवन सरलता से चलते रहेगा।

✻ **मायका-** मायकेकी माया भी बहुत बड़ी विलक्षण होती है। यह आसक्ति जितनी टूट जाये उतनी ही अच्छी है। स्त्री का कल्याण इसीमें समझो, कि जितनी मायकेकी माया उसके मनसे निकल जायें। लड़की जब ससुराल में जाती है, नये घरमें पहुँचती है, तब उसको थोड़ी नवीनता मिलती है और उसका वहांपर मन नहीं लगता है यह स्वाभाविक है। परन्तु माँ-बाप को भी पुत्री को अधिक प्रश्रय नहीं देना चाहिए, और साफ-साफ कह देना चाहिए पुत्री अब यह घर तुम्हारा नहीं रहा। न तो हमारी ओर देखना और न तो हमसे कोई आशा रखना। इसके पश्चात ससुराल को ही अपना घर समझकर उसे अपने अनुकूल बनानेका प्रयास करना। हमारे घरमें तुम्हारे लिए जगह नहीं है, जिससे कि वह ससुराल में बिलकुल जाकर ससुराल को स्वीकार करें और मायकेकी तरफका आकर्षण बिलकुल छूट जाये। बड़े घरकी लड़कियाँ अपने पति से कह देती हैं- तुम्हारे घर में क्या है। मेरे मायकेमें मेरे पिताका ऐसा भवन, ऐसी सम्पत्ति, ऐसा वाहन है। जब लड़की मायकेकी वस्तु वैभवको लेकर घमण्ड करती है तब ससुरालमें उसके प्रति सद्भाव नहीं रह जाता। जो कुछ भी अपने पिताके घरमें था, उसे तो वह वहां छोड़ आयी अब जो यहाँ है वहीं उसका है। यहीं घर, यहीं परिवार, ससुराल उसके काम आयेगा। विवाह होने के बाद कन्यासे साफ-साफ कह देना चाहिए कि अब तुम्हारा सब कुछ ससुरालमें हैं। कभी मायकेका भरोसा मत करना, इधर मत देखना। नहीं तो वह भाग-भागकर आ जायेगी या ससुरालवालोंके सामने डींग हाँकेगी कि मेरा मायका ऐसा है- वैसा है, इससे उसका ससुरालसे विरोध हो जायेगा। कोई भी लड़की शादी के बाद भी अपने मायके पर उतना ही हक समझें जितना पहले था, जबकि यह सरासर गलत है। क्योंकि भाभी जो पराए घर से आयी है उसका भी ससुराल में कोई हक होता है और जब लड़की अपने ससुराल जाती है, तो वह भी अपना अधिकार जमाने की कोशिश करती हैं। अपना अधिकार चाहती भी हैं। मायके से ससुराल जाते समय हर माँ अपनी बच्ची को अच्छी भली शिक्षा देती है। ससुराल में ननंद देवरों से कैसा व्यवहार करना। हर सास को भी अपनी बहू को मायके जाते समय समझाना चाहिए कि तुम्हारा अपना घर यह है। अगर बहू ससुराल में सम्मान पायेगी तो

मायके के सभी लोग उसके लिए आंखें बिछाएंगे। ससुराल में अपमानित कन्या मायके में भी अप्रिय हो जाती है। मायके में कोई अप्रिय घटना घट जाएं, कोई कष्ट या दु:ख की बात हो जाएं तो बिना सूचना दिए भी पहले पहुँचना चाहिए लेकिन खुशियां और अन्य किसी प्रकार का उत्सव हो तो बिना निमंत्रण के मायके में भी नहीं जाना चाहिए। विवाह के पूर्व कन्या मायके की ज्योति होती है। बेटी से बाबुल का आंगन झगमगाता है पर अब ससुराल का घर उसका अपना घर है और हर अच्छाई-बुराई के साथ उसे इस घर को अपनाना चाहिए। कभी भी अपने माता-पिता, भाई-बहन, भाभियों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, उनसे मिलने की इच्छा हो तो स्वयं चले जाना चाहिए। मायके में जाकर अपने माता-पिता तक ही सीमित नही रहना चाहिए भाभी को भी अपनी बैठक में शामिल करना चाहिए। भैया-भाभी पर अपना प्यार लुटाना चाहिए। उनपर कभी भी अनावश्यक बोझ नहीं बनना चाहिए क्योंकि रिश्तों की नीव त्याग पर टिकी होती है। मायके के द्वारा दिये गये उपहारों को सहजता से स्वीकार करना चाहिए। उसे कभी भी मूल्यों से नहीं आंकना चाहिए। माता-पिता अगर अपनी बहू की बुराई भी करें तो उनसे कभी भी झगड़ना नहीं चाहिए। ऐसे समय में तटस्थ बना रहना चाहिए।

बेटी के लिए माँ का घर हमेशा ऐसी जगह होती है जहाँ वह जाना चाहती है। खुलकर जीना चाहती है। यह भी उसका अपना ही घर होता है लेकिन कभी-कभी ऐसा होता है कि बेटी मायके को सिर्फ आराम करने की जगह ही मानती है, उसे लगता है कि मायके का अर्थ आरामगाह है। तो ऐसे में धीरे-धीरे वहां जाने के भी लाले पड़ जाते हैं।

जब भी मायके आकर आप इस तरह का व्यवहार करेंगी और दिन रात आराम फरमाती रहेंगी तो आपका आना न सिर्फ भाभी को बल्कि माँ को भी अखरने लगेगा। आखिर वो लोग आपके चाकर तो नहीं है। आपको मायके में काम करना अच्छा नहीं लगता और आपका मानना है कि मायका तो होता ही आराम करने के लिये है। तो आप गलत हैं, आप रिश्तों की मर्यादाएँ भूल गई हैं और अपने व्यवहार से रिश्तों में खटास बढ़ा रही हैं। इससे धीरे-धीरे अपनों के ही बीच अजनबीपन आने लगेगा। आपको यह भी तो सोचना चाहिए कि भाभी भी आखिर एक इन्सान है और उस पर काम का सारा बोझ लाद देना उचित नहीं है।

इसके ठीक विपरीत जब आप कभी कभार ही मायके जाती है और वहाँ जाकर भाभी के कार्यों में दौड़-दौड़ कर हाथ बंटाती है, भतीजे-भतीजियों को नहलाना व उनको तैयार करना अपना ही कार्य समझती हैं। तब मायके का वातावरण भी हल्का-फुल्का रहता है और आपके जाने से उल्लास और खुशी की लहर दौड़ जाती है। जाहिर है कि आप मायके को विश्रामस्थल नहीं समझती बल्कि ज्यादा अपना समझती हैं तो इसका असर सब पर दिखाई देता है। फिर यह भी तो होता है कि आप ससुराल जाने को तैयार होती हैं तो आपके साथ पूरे घर की आँखें नम हो जाती हैं।

कई बार युवतियाँ मायके जाती हैं और दिन भर भाभी पर हुक्म चलाती हैं। अपने बच्चे कब खा रहे हैं कब नहा रहे हैं यह जिम्मा भी भाभी पर डाल देती हैं। उनको लगता है कि मायका तो होता ही है आराम के लिए। फिर ससुराल जाकर तो उन्हें काम ही करना है। लेकिन यह सोच ठीक नहीं है काम से तो मनुष्य क्रियाशील बनता है, जितना आप आराम करके अपने शरीर को सुस्त बनाएँगी उतना ही कष्ट आपको ससुराल जाकर फिर से काम करने में होगा। लेकिन यह भी न करें कि पूरा काम ही अपने ऊपर ले लें, बल्कि आप उचित सहयोग से काम लें। मायके आने पर मां से और भाभी से नई-नई चीजें बनाना सीखें। वही चीजें ससुराल में आपको वाह-वाही दिलाएँगी। बुनाई, कढ़ाई, सिलाई या कोई नया व्यंजन हो आप कुछ भी पीहर में सीखकर ससुराल में प्रशंसा प्राप्त कर सकती है।

*** ससुराल -** जैसे-जैसे लड़की बड़ी होती है उसका दृष्टिकोण बदलते जाता है कि उसे तो दूसरे घर जाना है, बहू बनना है। जितने समय अपने माता-पिता के साथ रहती है उसे ससुराल सम्बन्धी कुछ न कुछ शिक्षाएं जरूर दी जाती है। ससुराल में

नये-नये रिश्ते शादी के बाद ही तो बनते है जैसे भाभी, ननंद, जेठानी, चाची आदि। जब लड़की पहली बार ससुराल जाती है तो उसका नये घर में नये-नये लोगों से परिचय होता है। वह नये घर में बहुत सकुचाती है फिर भी परिवार के नये सदस्यों में वह घुलने-मिलने का पूरा प्रयत्न करती है। ससुरालवालों का व्यवहार समझने में उसे काफी परेशानी उठानी पड़ती है और वह इन समस्याओं को किसी से कह भी नहीं सकती। मन में कभी भी ऐसी धारणां लेकर न चले कि ननंद और भाभी का रिश्ता हमेशा परस्पर अच्छा नहीं होता। या सास खराब होती है या देवरानी, जेठानी से झगड़े होना जरूरी है। अब समय बहुत बदल चुका है किसी समय यह धारण अवश्य प्रचलित थी कि अगर बहू को आते ही न दबाया जाए तो वह आगे काबू में नही रहेगी लेकिन अब तो वह सास, ननद, जेठानी आदि बहुत ही मित्र भाव से बहू को स्वीकार करते है। फिर बहू को भी अपने व्यवहार से सबका मन मोहने की कोशिश करनी चाहिए। ससुराल में सभी को अपने प्रति प्यार और आदर प्रकट करने का अवसर दे। जिंदगी में प्यार और दुलार के अवसर बहुत कम आते है। यदि आपको ससुराल में छोटे-बड़े लोगों का प्यार मिले तो उसे सहज स्वीकार करना चाहिए। पहली बार में ज्यादा खुलने या स्वतंत्र होने का प्रयत्न न करें। दो-चार दिन घर के लोगों का व्यवहार और लोगों को पहचानने का प्रयत्न करें।

ससुराल में आपके उम्र के ही जो अन्य लोग है उनसे किसी भी मामले में आपसे ही प्रतिस्पर्धा करके आपको नीचा दिखाने लगे तो आप उस प्रतिस्पर्धा में भाग न ले क्योंकि इस प्रकार की स्पर्धा से दूरगामी प्रभाव पड़ते है। यदि ससुराल में कोई आपसे अधिक सुन्दर, योग्य है तो उससे ईर्ष्या नही करे क्योंकि जिस किसी ने भी जो चीज पायी है वह अपनी मेहनत, योग्यता और तकदीर से पायी है। यदि आपने ससुराल में किसीको उच्चगुणों से युक्त पाया है तो उसकी प्रशंसा करे और उसकी अच्छी बातों को ग्रहण करे, यही तो सत्संग की महत्ता है। जो भी अच्छे गुण आप किसी में देखे उसे अपना ले। दूसरों की अच्छाईयों से, गुणों से यदि आप जलती, कुढ़ती रही तों इसमें आप अपना समय नष्ट करेंगे। इसलिये वह समय आप अच्छी बातों को सीखने में लगाये तो आपकी भी लोग तारीफ करने लगेंगे। गर्व, घमंड भूलकर भी न करे। जिससे भी आपने कुछ सीखा है, कुछ पाया है, उसका आभार माने। ससुराल में आपको अपने गुस्से पर नियंत्रण रखना पड़ेगा। भले आप मायके में क्रोध में बोली हो, चीजें इधर-उधर फेंक दी हो, वो आपके माँ-बाप का घर था आपको विश्वास था कि आपके माता-पिता आपको मना लेंगे लेकिन ससुराल में आपके साथ यह नहीं होगा। यदि आपने यह किया तो आप ससुराल में लोगों का प्यार खो देंगे। क्रोध, गुस्सा तभी करना चाहिए जब कभी वास्तव में आपके साथ कोई गंभीर अन्याय या दुर्घटना हुई हो। लगातार गुस्सा करने से आप अपना प्रभाव खो देंगे और न ही कोई तरक्की कर पाएंगे। <u>पत्नी द्वारा केवल शांतिपूर्वक प्यार से दिया गया प्रोत्साहन पति को उचित प्रेरणा प्रदान करता है</u>। अपने पति या रिश्तेदारों को बाहरी लोगोंके सामने कभी भी नीचा दिखानेका प्रयत्न न करे। कभी भी ऐसा प्रयत्न न करे जिससे परिवार टूटे, न ही ऐसे कोई विचार मन में लावे। घर की कोई ऐसी-वैसी बात दूसरों को न बताएं लोग केवल उनका ही नहीं आपका भी मजाक करेंगे। अपनी कोई भी समस्या हो तो केवल घनिष्ठ मित्र या संबंधी से ही कहे जो आपकी समस्या का उचित समाधान कर सके। ननद को बहन या सहेली जैसा मान दे उससे कुछ छिपाए नहीं, उसे व्यवहार से रुष्ठ होकर कुछ भला बुरा न कहें।

यदि आप बेहद सुंदर और आकर्षक हो तो भी आप अपने में गर्वित ना हो, स्वार्थी ना बने। जो आदर और प्यार आप दूसरों से चाहती है वही आपको दूसरों को भी देना पड़ेगा। ससुराल में यदि कोई छोटी-मोटी बात हो भी गई तो बातचीत करके सुलह, सामझौता कर लेनी चाहिए। क्योंकि एक बार मन में बैठी हुई कोई गांठ टूटा या सत्य समय के साथ आपके लिए तिल का ताड़ बन जाएगा। ससुराल किसी भी बहू के लिए सबसे अधिक स्मरणीय है क्योंकि वह अपना असली जीवन यही से शुरू करती है

और यही उसका अपना घर होता है। ससुराल में जाकर ही लड़की अपने जीवन की सार्थकता महसूस करती है। जब वह ससुराल में पहला कदम रखती है तो वह अनुभूति एक मधुर संबंध की तरह उसके हृदय में हमेशा धड़कती रहती है। जो वह उसे किसी किमत पर गवाना नहीं चाहती। आपकी कई गई बात सही हो या आपका किया गया काम भी सही हो इस बात की जिद करके अड़े नहीं। अपने सारे कर्त्तव्यों को यथा समय पूरा कर लें। ससुराल वालों को ताने न मारे। विवाह के बाद कहीं लोगों और चीजों झगड़ों में तालमेल बनाना जरूरी है। घर की बहू बनकर मर्यादा में रहें तभी आपकी शोभा है। मर्यादा में बंधी बहू को हर कोई पसंद करता है। बहू को लज्जाशील होना अत्यंत आवश्यक है। परिधान अत्यंत भड़कीले या खुले या अंग प्रदर्शित करनेवाले न हो। हर व्यक्ति के प्रति अपने दायित्व को यथासंभव पूरा करें। ससुराल के रिती रिवाजों को अपनाएं। पति ससुराल में अगर किसी व्यक्ति को बहुत चाहते है या प्यार करते हैं तो ईर्ष्या से व चिढ़कर अपना मुँह नहीं फुला बैठे बल्कि उससे आप भी स्नेह करें। अपने व्यवहार और सदआचरण से लोगों को अपना प्रशंसक बनाएं और खुद को ससुराल का एक सदस्य मानें। बाहरी लोगों के साथ या पड़ोसियों के साथ अपना व्यवहार सीमित रखें।

आज-कल नौकरी, व्यापार आदि काम के चक्कर में ससुराल में नहीं रह पाती पर वहां के लिए लड़कियों के मन में जो जुड़ाव होता है, एक अहसास होता है जो उन्हें हमेशा के लिए जीवंत बनाये रखता है। ससुराल से ही लड़कियों का अस्तित्व है। और ससुराल से ही उनका परिचय। शहरी जीवन की भागदौड़, तनाव, बच्चों की जिम्मेदारी, पति कि जिम्मेदारी, पति की तीमारदारी के बीच लड़कियां अपना अस्तित्व ही भूल जाती है। चेहरे पर परेशानियां झलकती है। एक कमनीय नाजूक चेहरा पता नहीं कब प्रौढ़ चेहरे में बदल जाता है। जब कभी भी त्यौहार या छुट्टियों में लड़किया अपनी मायके से ससुराल जाती है तो अपने आप सिर पर पल्लु आ जाता है, नजरे झुक जाती है, चाल में नजाकत आ जाती है और वापिस लड़की से बहुरानी बना देती है। सास ससुर का प्यार, देवर की मनुहार वापिस उन्हें अपने अस्तित्व का अहसास करा देती है। जिन परिवारों में लोग संयुक्त रूप से रहती है, बहुएं अनुशासन और पड़दे में रहती है चाहे कितनी बड़ी हो जायें अपने को दिखाने के लिए काफी छोटी लगती है। पारिवारिक तनाव से दूर, नम्रता और गुस्सा न करने की आदत के कारण वे हमेशा चिंता मुक्त रहती हैं और इसलिए उनके चेहरे पर स्निग्ध शालीनता हमेशा बनी रहती है। पर्दे के पीछे रहने से उनका रूप लावण्य भी कोई चुरा नहीं पाता। जिंदगी को जिंदा दिली से जीने के लिए यह सब जरूरी है।

ससुराल को अपना घर समझते हुए सास को अपनी माँ समझकर उन्हें अपने सुख-दुख में शामिल करना चाहिए। मायके के प्रति अत्यधिक मोह रखने से नये घर में व पति से मधुर सम्बन्ध बनाएं रखने में मुश्किल होती है। पहनावें और श्रृंगार के मामले में अपनी पसंद के साथ-साथ ससुराल वालों के रुचि का भी खयाल रखना चाहिए। जीन गुणों की वजह से आपको बहू के रूप में स्वीकार किया गया है उन गुणों को बरकरार रखने का प्रयत्न करना चाहिए। परिवार की हर छोटी-बड़ी घटना, समस्याएँ अपने पड़ोसी या मायके वालों को नहीं बतानी चाहिए। ससुराल के सभी सदस्यों से सिर्फ ऊपरी तौर पर ही नहीं, बल्कि भावनात्मक स्तर पर भी जुड़ने का प्रयत्न करना चाहिए। पैसों की बात को लेकर कभी विवाद न खड़ा करें। हर छोटी बात पर रूठकर मायके जानेकी अपनी आदत न बनाएं और न ही मायके का डर दिखाएं। ससुराल से झगड़ा करके मायके में कभी नहीं जाना चाहिए। अपने घर का झगड़ा अपने घर तक ही सीमित रखना चाहिए। परिवार में खुशी का माहौल बनाएं रखें। सास हमेशा यह चाहती है कि वह अपने बेटे, उसके पति को खुश रखें, उसे इज्जत, मोहब्बत दे। घर में उसके बड़ेपने, अधिकार को स्वीकार करें, जो बात सास को पसन्द न हो उससे परहेज करें और कोई ऐसा काम नहीं करें जिससे दूसरों को ऊंगली उठाने का मौका न मिले। बहू अगर सूझबूझ से काम ले तो सास

की पाबंदियां उसे नहीं लगेगी बल्कि एक सही शिक्षा लगने लगेगी। जब बहू सास का भरोसा जीत लेगी तो घर की बेटी बन जायेगी। सास भी बहू को खरी खोटी सुनाने का बहाना ढूंढते रहती है। सास को चाहिए कि वह बहू की गलतियों का सुधार करे और घर के पूरे तौर तरीके प्यार से सिखाएं। जब तक दोनों तरफ से पहल नहीं होगी तब तक हालात अच्छे नहीं होंगे। सास और बहू के दरम्यान अगर तालमेल रहा तो बहू को सास से और सास को बहू से कभी कोई शिकायत नहीं रहेगी। सास और बहू दोनों समझदारी का प्रदर्शन करे तो सास-बहू का झगड़ा किसी घर में नजर नहीं आयेगा और हर घर जन्नत बन जायेगा। पर मायकेवाले ऐसी सोच पैदा करते है कि पहली बार अगर सास से दब गयी तो हमेशा दबकर रहना पड़ेगा। यही सोच सास को माँ नहीं बनने देता। लड़की को एकदिन तो अपने पति के घर जाना ही होता है। अकलमंद बहूएं सास की मानसिकता को भी महसूस करती है और परिस्थिति के मुताबिक अपने आपको ढाल लेती है। जब नई बहू का रवैया आज्ञाकारी बहू बन जाता है तो सास भी कोई विरोध नहीं करती। इसलिये लड़की को घरेलू रहनसहन और ससुराल में रहने की शिक्षा देना जरूरी है। जब स्वयं की मां कोई शिक्षा बेटी को देती है तो बेटी भी उसे खुशी से सुनकर उसका अंमल करती है। कोई भी माँ अपनी बेटी की शादी इसलिये करती है कि वो अपना घर बसायें। हर माँ अपने बेटी को और अपने आपको खुश देखना चाहती है। अपने पति की तुलना कभी भी अपने भाइयों से नहीं करना चाहिए। मायके जाने से पूर्व पत्र या दूरध्वनी द्वारा सूचित करना चाहिए ताकि मायकेवालों के कार्यक्रम में कोई तरह की फेरबदली करने की आवश्यकता पड़े। ससुराल में सास का होना बहुत जरूरी है। जब लड़की ससुराल नई-नई आती है तो सास उसे घरके रीति रिवाजों व जिम्मेदारियोंके बारे में अवगत कराती है। सास के रहने से बहू को घर की जिम्मेदारी कम निभानी पड़ती है। सास होने से कही काम आसान हो जाते है। घर का तनाव मिट जाता है, आपको कही बाहर हो तो आप अपने बच्चों को सास के पास छोड़कर बेफिक्र जा सकती है। सास से भावनात्मक सहारा मिलता है। सास के साथ वक्त बिताकर आप बहुत कुछ सीख सकते है। अगर आप किसी बात को लेकर परेशान है तो सास आपकी तकलीफ को समझ सकती है और शायद उस समस्या का समाधान भी कर दे। सास जिस रिश्ते को ज्यादा अहमियत देती है खुद बहू भी उस रिश्ते को अहमियत देने लगती है। सास आपके पति के साथ आपके रिश्ते को मजबूत बनाने में सहायता करती है।

कभी-कभी ससुराल में गलतफहमी हो जानेपर नाराज नहीं होना चाहिए न ही किसी प्रकार का कलह करना चाहिए। यदि परिवार वालों को पाश्चात्य परिधान पहनना पसंद नहीं हो तो अपनी जिद से उन परिधानों का बहिष्कार करना चाहिए। वही परिधान धारण करें जो अधिकतर भारतीय परिवारों में पहनी जाती है। घर के सारे कामकाज सास पर नहीं छोड़े उनके साथ हाथ बटाएं। अपने अच्छे गुणों को सिद्ध कर परिवारवालों को अपनी ओर आकर्षित करें। अपनी चीजों पर अपना ही अधिकार नहीं जताएं न ही कोई बुरा मानें। अगर वो चीजें परिवार के अन्य सदस्य चाहते हों तो उन्हें भी दें। ससुराल के रीति रिवाजों को अपनाएं ताकि आप भी अपने बच्चों को यही सीख दे सकते है। हर मां अपनी पुत्री को सहयोग देती है उसमें आत्मविश्वास जगाती है और सद्गुणी बनाती है। बेटी को विदा करते समय उसमें यह गुण आरोपित करें। उसे सास-ससुर की इज्जत करनी चाहिए और पति का सम्मान करना सिखना चाहिए। ससुराल जाकर मायके का गुणगान बखान न करें। न बार-बार मायके आने की जिद और धमकी दे। संयमी और सहनशील बने, गुस्से में कहा गया एक शब्द भी उसके जीवन का सुख नष्ट कर सकता है। कम बोले, पर असत्य नहीं बोले, न ही किसी के आगे अपने घर की निंदा करें। पति जब भी क्रोध में हो उस वक्त शांत रहे बाद में वास्तविकता का बोध करा सकते हैं। ससुराल में मायके की तरह देर से उठने की बजाय प्रात: जल्दी उठकर ससुराल को अपना घर समझकर काम करें। ससुराल में परिधान

सलीकेदार धारण करें। घर के अन्य सदस्यों की शिकायत अपने पति से न करें और पति के घर आने के समय माहौल खुशगंवार बनायें। मायके के रिति रिवाज ससुरालवालों पर न थोपे। पत्नी किसी बात पर नाराज भी हो जाए तो पति के मनानेपर जल्दी मान जाना चाहिए और जिस बात पर कलह झगड़ा घर में पैदा हो ऐसी परिस्थिति पैदा न करें। ससुराल के व्यक्तियों का मन प्रेम से जीतें। ससुराल की हर बात शिकायत मायके में जाकर नहीं करना चाहिए। घर आये अतिथियों का प्रेमपूर्वक स्वागत सम्मान करें। ससुरालवालों की सहमति से ही मायके व बाहर जाएं।

जब भी किसी लड़की की शादी होती है, तो वह जाने-अनजाने ही सही, मायके और ससुराल में तलना करने लगती है, जिसका खामियाजा अक्सर लड़की को ही भुगतना पड़ता है। जैसे आपके मायके में काम होता हो, वैसा ही ससुराल में भी किया जाये। यह हमेशा संभव नहीं, क्योंकि दोनों की जगह अलग रीति-रिवाज, माहौल व अलग मान्यताओं के लोग होते हैं, जिससे रहन-सहन में भी अंतर होना स्वाभाविक है। मायके में खाने से लेकर सफाई तक का सारा काम यदि नौकरों से कराया जाता है, तो जरूरी नहीं कि ससुराल में भी यह सब पसंद किया जाये। दोनों जगहों की समस्याएं व जरूरतें अलग-अलग होती हैं, इसलिए दोनों में तुलना करने से बचें।

मायके में न करें ससुराल की बुराई- शादी के बाद अक्सर लड़कियां मायके में अपने ससुराल की हर छोटी-बड़ी बात किसी को भी बताने लगती है। हर एक का सोचने का तरीका अलग होता है। कोई सही शब्दों में लेता है, तो कोई गलत। अलग-अलग तरह से अपनी राय देना शुरू कर देते हैं। इन्हीं में से कुछ लोग ससुराल के बारे में गलत राय देकर भड़काने लगते हैं, जिससे असमंजस में पड़कर लड़की ससुराल में सामंजस्य नहीं बिठा पाती और तनाव का माहौल बना लेती है। इसी तनाव से झगड़े बढ़ जाते हैं जिन्हें संभालना मुश्किल हो जाता है।

यही मेरा घर है- विशेषज्ञों के अनुसार शादी के बाद लड़कियों को इस भावना से ओत-प्रोत हो जाना चाहिए कि अब यही मेरा घर है, तभी तनाव न होने की गुंजाइश हो सकती है। सास ससुर को माता-पिता तुल्य समझें तथा हर एक के सुख-दुख में अपनी पूरी भागीदारी निभाएं। औरत में वह शक्ति निहित है, जिससे वह घर को डुबो भी सकती है और चमक भी ला सकती है। जरूरत है तो सही दृष्टिकोण अपनाने की। अब यह आपकी समझदारी और संस्कारों पर निर्भर करता है, कि आप अपनी क्षमता का उपयोग किस दिशा में करते हैं।

*** संयुक्त परिवार-** परिवार में अपने से बड़े सदस्यों का हमेशा सम्मान करें। वे जो कुछ कहें उस पर अमल करने की कोशिश करें। दूसरे भाइयों-भाभियों के रिश्तेदारों से भी संवाद बनाए रखें और उनकी अनुपस्थिति में भी कभी आयें तो उन्हें बेगानेपन का अहसास न होने दें। बच्चों के लिए अगर कभी कोई चीज लायें तो उसमें सभी बच्चों को हिस्सा दें। भले ही सबको थोड़ा-थोड़ा मिल सके। परिवार के सभी सदस्यों की निजात का पूरा सम्मान करें। अगर अनिवार्य न हो तो कभी किसी के निजी मामले में हस्तक्षेप न करें। बच्चों या बड़ों के बीच कोई विवाद होने पर शांतिपूर्वक समझाने-बुझाने का तरीका अपनाएं। बच्चों के बीच किसी तरह का विवाद होने पर डांट-फटकार से बचें और पक्षपात कभी न करें। बड़े लोगों के आदेश का उल्लंघन तुरंत कभी न करें, भले ही वह आपको सही न लग रहा हो। आवश्यकता पड़ने पर सबके सहयोग के लिए तैयार रहें। कुछ गलत होने पर तुरंत किसी पर आरोप न लगायें। किसी के भी रिश्तेदारों के आने पर किसी तरह का रूखापन न दिखाएं।

इस नीरस गृहस्थाश्रम में सरसता का सञ्चार कामधुरा कामिनी ही करती है, संसार में आनन्दोत्पादक दो ही वस्तुएँ हैं। सुन्दरी और दरी (गुफा) जिस घर में अनुकूलता पति-परायण पत्नी नहीं उसके लिये घर में रहना व्यर्थ है, उसे गुफा का

आश्रय लेना चाहिये। घर तो मिट्टी के बने होते हैं जड़ हैं, किन्तु उन घरों को चैतन्यता पत्नी ही प्रदान करती हैं। घर में नाना चिन्तायें उत्पन्न होकर उसे कड़वा बनाये रहती हैं, उस कड़वाहट को मेंटकर गृहिणी ही उसे मधुर बनाती है। स्त्री कैसी भी क्यों न हो वह पुरुष को घर में बाँधे रहती है। यदि ऐसा न होता तो सभी प्रतिकूलताचरण करनेवाली पत्नी का परित्याग करके पत्नीहीन जीवन बिताते। दिन भर का थका पुरुष पत्नी को देखकर उसका आतिथ्य ग्रहण करके नवजीवन प्राप्त करता है। दिनभर की चिन्ताओं से व्यथित पुरुष पत्नी की मधुर मुस्कान को निहार कर तथा उससे दो हँसी विनोद की सरस बातें करके आत्म विस्मृत होता है। लोग सुरापन करके भी अपनी चिन्ताओं से कुछ काल के लिये मुक्ति पाना चाहते हैं, किन्तु उसमें एक दोष है, वह अचेत करके निश्चिन्त करती हैं, किन्तु धर्मपत्नी तो सचेत करती हुई पुरुष को चिन्ता रहित बनाती है, पुत्र प्रसव करके संतति चलाती है, गृहस्थी की गाड़ी को चलाती है, दिन भर श्रम करके भी वह हँसती रहती है और चिन्ता के समय पति के प्रति सहानुभूति प्रकट करती हैं। ऐसी स्त्री का मुख प्रेम में, रोष में, दुख में, सुख में, तथा सभी अवस्थाओं में स्फूर्ति प्रदान करनेवाला होता है।

पत्नी अपने रास्ते चलती है और पति उसके साथ चलता है। बगैर बुलाए मेहमानों के समान उम्दा तथ्यों को बिगाड़नेवाले अपवादों के अलावा आदमी के जीवन में पत्नी का अद्‌भुत स्थान है। राह भटकते आदमी को पकड़कर, झगड़कर और जकड़कर सही पटरी पर चलाती है उसकी इकलौती बीवी। मुद्दा बेवजह चमकाने का नहीं है, परंतु स्वभावत: चंचल पति को एक अदद पत्नी का साया मिल जाता है तो पति की हरकतें काफी मर्यादाशील हो जाती हैं। सीधी-सादी पत्नी मन मसोसकर रह जाती है वह अपने बिगड़ैल पति की नाक में नकेल नहीं डाल पाती है। परंतु जहां पत्नी की भूमिका अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए भी तनिक तेजतर्रार हो तो पारिवारिक जीवन में ऊष्मा होती है, जान होती है और गति भी। पति के पीछे अगर कुशल पत्नी मौजूद हो तो वह जीवन में तेजी से प्रगति करता है। दिल को धड़कन तब मिलती है जब पत्नी दिल की बारीक संवेदनाओं का ताना बुनकर पति को नवजीवन देती है। दाम्पत्य जीवन पत्नी के द्वारा पति का सतत सृजन है। वह नियति नहीं, निर्माण है। पुरुष जब भौतिक सुखों और प्रगति के चित्राकाश में कुलांचे भरता है तो कई बार भटक जाता है। यह कमोबेश वही स्थिति है कि किसी बढ़ते वृक्ष की शाखाएं फैल तो रही हैं, लेकिन जड़ें कमजोर होकर मिट्टी छोड़ रही हैं। अपने दाम्पत्य जीवन की मिठास की अवलेना कर ऊंचे दिवास्वप्न देखनेवाला कटे पेड़ की तरह धडाम से गिर पड़ता है और उस समय भी उसे प्रेम से पुचकारकर उठानेवाली, आंचल से उसका घाव पोंछनेवाली उसकी पत्नीही होती है। दाम्पत्य जीवन में समर्पण का सर्वाधिक महत्व है। पत्नी पति के लिये वृत्त होती है जिसकी परिधि तक घूमकर पति उसके केंद्र से उर्ध्वाकार प्रगति करता है, परंतु आधार पत्नी का केंद्रबिंदु रहता है।

गृहस्थी में नित्य नूतन झंझट लगे रहते हैं। यह ऐसा बिना पानी का अंध कूप है, कि यह कभी भरता ही नहीं। चिन्ता, व्याधि, शोक, धनाभाव, पुत्र पुत्रियों का विवाह व्यवसाय की चिन्ता, दुष्टों का, चोरों का, राजा का, प्रजा का, कुल का और न जाने किस-किसका भय बना रहता है। गृहस्थी में दु:ख-ही-दु:ख है।

जो लोग अपने को बहुत बुद्धिमान समझते हैं, किसी से कोई भूल हो जाती है तो उसकी हँसी उड़ाते हैं, उसे मूर्ख बताते हैं, और कहते- यह इतना भी नहीं सोच सकते थे कि इसका परिणाम क्या होगा। दूसरों को तो ऐसा कहकर मूर्ख बताते हैं, जब स्वयं अपने आपसे ऐसी भूल हो जाती है तो पश्चात्ताप करते हुए कहते हैं- क्या करें उस समय मेरी मति ऐसी भ्रष्ट हो गयी कि आगे की बात सोच ही न सका। ऐसा ही होना था, भवितव्यता को कौन मेंट सकता है। वास्तविक बात यही है, जिस समय जैसा होना होता है, वैसी ही मति बन जाती है। श्रीराम क्या जानते नहीं थे कि सुवर्ण का मृग होता ही नहीं किन्तु

भावी की प्रबलता प्रदर्शित्त करने के लिये उसके पीछे भागे। भगवान की यह गुणमयी माया ऐसी प्रबल है कि बड़े-बड़े ज्ञानी ऋषि मुनि इसके चक्कर में फँसकर न करने योग्य कामों को कर डालते हैं। एक बार नहीं अनेक बार। यह जानते हुए भी कि यह कार्य बुरा है, इसके करने से दु:ख-ही-दु:ख होगा, फिर भी रहा नहीं जाता, अवसर आने पर फिसल ही जाते हैं। जब ज्ञानियों की यह दशा है तो असुर प्रकृतिवालों के सम्बन्ध में तो कुछ कहा ही नहीं जा सकता। भगवान की माया ने लोगों पर ऐसा जाल बिछा रखा है कि प्राणी विवश हो जाता है, जब भगवान की माया में इतनी मोहकता है तब यदि स्वयं ही वे मोहन रूप रखकर किसी को मोहना चाहें तो वह कैसे मोह में न आवेगा वह तो फँस ही जायगा।

संयुक्त परिवारों के नियम कई दशकों पूर्व हिल चुकी है किंतु उनके स्थान पर जो विकल्प आया छोटे परिवार वह तो पूरी तरह से असफल हो गये। संयुक्त परिवारों में जो सुख, सद्भाव और शांति थी वह आधुनिक परिवारों में दूर-दूर तक रही है। संयुक्त परिवारों में सभी लोग साथ-साथ रहते थे और आपस में एक-दूसरे के सुख में सहयोग करते थे, जिससे संयुक्त परिवार शांतिमय जीवन जीता था किंतु वर्तमान में परिवारों को सुख-शांति दूर-दूर तक नसीब नहीं हो रही। उन्हें न तो मानसिक शांति प्राप्त है और न ही आत्मिक। जहां पति-पत्नी दोनों भी काम में है उनके बच्चों का पालन-पोषण सही ढंग से नहीं हो पाता, जिससे वे अनुशासनहीन हो जाते हैं। अत: संयुक्त परिवार का विकल्प छोटे परिवार संयुक्त परिवार का स्थान नहीं ले सकते। संयुक्त परिवारों की महत्ता कम नहीं आंकी जा सकती। स्वस्थ, सुखी और मनोरंजनयुक्त आदर्श जीवन जीने के लिए संयुक्त परिवार अनिवार्य है।

पुत्रियों के प्रति कर्त्तव्य- पुत्री गौ के समान पूजनीया और दया की पात्री है। पुत्री का योग्य वर को दान करना सैकड़ों यज्ञों के समान है। पुत्री के पुत्र अपने नाना के वंशजों को जल दान देते हैं। पुत्री का अधिकार जीवन भर लेने का होता है। विवाह के समय उसे भली-भाँति वस्त्राभूषणों से अलंकृत करके तथा समस्त गृहस्थोपयोगी वस्तुओं को शक्ति के अनुसार देकर विदा करे। फिर पर्वों पर उसके यहाँ कुछ-न-कुछ सदा भेजता रहे। पर्व-पर्व पर उसे उपहार भेजे। जब गर्भवती हो तब भेजे। बच्चे का जन्म सुने तब भेजे, बच्चे को लेकर आवे तब उसे यथाशक्ति दे। जब भी वह आवे तभी उसे कुछ देता रहे। लड़की जब तक जीती है, तब तक पिता के घर से पाती रहती है, यही नहीं उसके बाल-बच्चे भी सदा पाते रहते हैं। पुत्री के लड़के लड़कियों का विवाह हो तो भात दे, उनके बच्चे हों तो उन्हें भी, क्योंकि सब मान्य पक्ष के हैं।

सम्बन्धियों के प्रति कर्त्तव्य- सम्बन्धी दो प्रकार के होते हैं- एक तो स्वयं जिनके मान्य हैं जैसे अपने ससुराल वाले, ननसाल वाले। उनके यहाँ समय-समय पर जाय। वे जो प्रेम से दें उसे सदा स्वीकार करें। दूसरे अपने मान्य होते हैं, जिनके यहाँ अपनी बुआ, बहिन, पुत्री या भतीजी आदि विवाह हों। उन मान्य सम्बन्धियों का सदा सम्मान करे, उन्हें पर्वों पर स्मरण करे और यथाशक्ति दे। सम्बन्धियों के सम्बन्धियों से भी प्रेम का सम्बन्ध रखे।

*** घूंघट की परंपरा-** घूंघट भारतीय परंपरा में अनुशासन और सम्मान का प्रतीक माना जाता है। घर की बहूओं को परिवार के बुजुर्गों के आगे घूंघट निकालना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में तो यह अनिवार्य है और अक्सर देखा गया है। महानगरी परिवारों में भी कहीं स्थानों पर ऐसा चलन है। यह घूंघट परंपरा हिंदुस्तान पर आक्रमण करने के लिए है। पहले राज्योंमे आपस के झगड़े और फिर बाद में मुगल साम्राज्य आनेपर मुगलों के हमले। भारत में महिलाओं को पूज्यनीय दर्जा दिया गया है और इनसे बचने के लिए महिला वर्ग को पड़दे के पीछे कर दिया गया। भारतीय महिलाओं की सुन्दरता से प्रभावित आक्रमणकारी अत्याचारी होने लगे। महिलाओं के साथ बलात्कार और अपहरण की घटनाएं बढ़ने लगी। तब महिलाओं की सुन्दरता को छिपाने के लिए घूंघट प्रथा को इजाद किया गया। अब यह परिवार में बड़ों के सम्मान के लिए

अनिवार्यता का रूप धारण कर लिया। इसलिए आज भी कई महिलाओं के चेहरे पर यह पर्दा अभी भी कायम है।

*** पति- पत्नी-** पति-पत्नी जीवन की गाड़ी के दो पहिये है जो समान है। उनमें से कोई बड़ा या छोटा होनेपर गाड़ी डगमगाने लगती है। सफलतापूर्वक जीवन निर्वाह करना ही सुखी दाम्पत्य की पूंजी है। कभी-कभी गलतफहमी और शक इस गाड़ी को बीच में ही तोड़ देता है और गृहस्थ जीवन की नांव मजदार में डगमगाने लगती है। इसमें आपसी समझ की बहुत बड़ी आवश्यकता है जिससे इस नाजूक रिश्ते को टूटने से बचा जा सकें। पत्नी को कभी यह अहसास भी नहीं होना चाहिए कि उसकी उपेक्षा की जा रही है। पत्नी को प्रसन्नचित रखना पति का मुख्य कर्त्तव्य है। पति उसका सबसे नजदीकी मित्र होता है। दूरदराज से वह अपने घर को छोड़कर पति के पास आयी है। सबके बीच में उसकी हंसी मजाक उड़ाकर उसे मानसिक पीड़ा न पहुंचाए। पत्नी को बेवकूफ समझकर उसे किसी बात पर राय न लेना पति की गलती है। उसे नासमझ भी नहीं समझे और बेवकूफ भी नहीं माने और अगर पत्नी कुछ भी पढ़ी लिखी नहीं है तो उसे बार-बार यह अहसास न करायें कि उसमें दिमाग नहीं है, बुद्धि नहीं है। उसको सदैव आशावादी बनाये रखनी चाहिए उसकी नकारात्मक सोच को साकारात्मक बनाने में पूरा सहयोग देना चाहिए। परिवारवालों के बहकावे में आकर उसका तिरस्कार नहीं करना चाहिए।

दुनिया में सबसे बड़ा और तीव्रगामी कोई दूसरा रोग नहीं जिससे इतने ज्यादा लोग ग्रसित हैं। खराब वैवाहिक संबंध से त्रस्त रहते हैं। पति-पत्नी को अधिक से अधिक समय एक-दूसरे का साथ देना चाहिए। एक-दूसरे का सम्मान करना सीखना चाहिए। ओज और स्नेह, इकतरफा बहाव नहीं है। इनको बनाए रखने के लिए पत्नियों की भूमिका अहम और महत्वपूर्ण होती है। एक-दूसरे के प्रति कठोर धारणाएं मत बनाएं। किसी भी पुरुष के बारे में कोई अंतिम राय नहीं बनायी जा सकती भले ही वह पत्नी के साथ कितना ही लम्बा समय गुजार लिया हो। एक-दूसरे के प्रति त्याग की भावना रखनी चाहिए। एक-दूसरे के प्रति बिना समर्पण के यह रिश्ता निभने का सम्भव नहीं। विवाह एक स्थायी बंधन है और यह ऊब पैदा करने के लिए कोई एक चीज ही काफी है।

पति-पत्नी को एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए। हो सकता है दोनों की रूचि एवं शौक अलग अलग हो। कार्यक्षेत्र भी अलग-अलग हो सकते हैं। इसके लिए एक-दूसरे को प्रोत्साहन देना एवं सहयोगात्मक रवैया अपनाना चाहिए। परिवार में जो मनमुटाव एवं कलहपूर्ण वातावरण निर्माण होता है वो आपके प्रेम, विश्वास, एवं सद्भावना की कमी से होता है। इससे पति पत्नी का नाजूक अटूट बंधन टूट जाता है यह ईश्वर द्वारा प्रदत्त रिश्ता उसकी अनुपम भेंट है।

पति पत्नी का सहयोग तब ज्यादा महत्वपूर्ण होता है जब आप भावनात्मक सहयोग करते हुए अपने साथी को विपरीत परिस्थितियों से बाहर निकाल ले आते है और इससे दोनों के बीच भावनात्मक जुड़ाव अधिक हो जाता है। हर महिला यह चाहती है कि उसका पति उसे सुरक्षित करें, हर मुश्किल में उसके सामने ढाल की तरह खड़ा हो वह आप पर ही निर्भर रहना चाहती है। अच्छी खूशबू सभी को अपनी ओर आकर्षित करती है और महिलाओं को खूशबू से बहोत प्यार होता है। इसलिए पति को हमेशा परफ्यूम इस्तेमाल करना चाहिए। पत्नी को आश्चर्यकारक उपहार देने चाहिए। ईमानदारी एक ऐसी खूबी है जो हर पत्नी अपने पति में देखना चाहती है। उसके साथ पूरी तरह पारदर्शिता होनी चाहिए। पति-पत्नी के बीच आपसी सामंजस्य और बेहतर सम्वाद हो तो आयोजित शादी सफल हो सकती है।

*** बेटी के लिए योग्य वर की तलाश-** माता-पिता को अपनी बेटी की पसंद का ध्यान रखना चाहिए और प्रेमपूर्वक बेटी की चाहत सुनें। मानसिक व शारीरिक अवगुणोंवाले लड़के साथ आपकी बेटी खुश नहीं रह सकेगी। आर्थिक

सम्पन्नता ही सबकुछ नहीं होती। बेटी की उम्र के साथ लड़के की उम्र का अंतर तीन से छ वर्ष का ही रखें। बेटी की शिक्षा एवं भवितव्यता का ध्यान रखकर ऐसे लड़के और घर का चुनाव करें जहां उसकी प्रतिभा में किसी तरह की रुकावट न हो। दहेज के लोभियों के बीच आपकी बेटी सुखी नहीं रह पायेगी। समाज में धन-परिवारों की बजाय, बेटी का रिश्ता अपने बराबरवालों के तथा इज्जतदार घराने के लड़के के साथ ही करना चाहिए जहांपर आपकी बेटी अधिक सुखी रह सकेगी। बेटियों का भी फर्ज बनता है कि माता-पिता से उनकी क्षमता से अधिक दहेज ले जाने का जिद नहीं करें। आजकल फैशन की चकाचौंध से रिश्तों को स्थायी अंजाम नहीं दिया जा सकता। बेटियों के लिए लड़का ढूंढने से पहले अपनी सामर्थ्य के अनुसार ही उचित लड़के का चुनाव करें। माता-पिता अपने सामर्थ्य के अनुसार बेटी के विवाह में खर्च करें। इन सब मुद्दों को देखकर ही करें जिससे आपकी बेटी सुखी रह सकें। आप अपनी बेटी से पूछ ले कि वो क्या चाहती है।

* कोई भी वस्तु किसी विशेष दिन के लिए न रखें, क्योंकि आपका प्रत्येक दिन एक विशेष दिन है। ज्ञान की खोज करें, अधिक से अधिक अध्ययन करें, अपनी आवश्यकताओं पर से ध्यान हटाकर प्राकृतिक छटा को निहारें। अपने परिवार के साथ अधिक से अधिक समय व्यतीत करें। अपनी पसंद का भोजन करें। अपनी पसंद की जगह पर घूमने अवश्य जाएं। जिंदगी सिर्फ जीवन ही नहीं, खुशी के क्षणों की श्रृंखला है। आपका हर दिन, हर घंटा और हर क्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है शायद यह दुबारा न आए।

* भारतीय और पाश्चात्य दर्शन में जमीन-आसमान का अंतर है। भारतीय दर्शन कहता है कि इंद्रियों और सुविधाओं के सुख से अंदर से तुम खोखले और पराधीन होते जाओगे। औषधि की तरह उसका अल्प मात्रा में ही उपयोग करो और अंदर का सुख बाहर के व्यवहार में छलकाओ।

* पश्चिमी जगत की सारी छानबीन और खोज इस पर निर्भर है कि ऐसा हो जाए तो सुखी, वैसा पा लें तो सुखी, ऐसा बना लें तो सुखी। वहां के लोग बाहर के आसरे से प्रीति, विश्रांति और स्वतंत्रता चाहते हैं। हमारे यहां शबरी भीलन, रविदास, सदना कसाई- इन सबके जीवन में आत्मतृप्ति छलकती है।

* धर्म का आचरण करो, अधर्म का नहीं।

* सत्य बोलो असत्य नहीं।

* दीर्घ दृष्टि रखो, संकुचित नहीं।

* ऊपर की ओर देखो, नीचे दुनिया की ओर नहीं, संसार की तरफ नहीं।

* मनुष्य को उसके आदर्श ही अमरता दिलाते हैं। आदर्शों का स्थान भौतिकता से बहुत ऊपर है। आदर्शों का पुंज विराट है और भौतिकताओं का समूह लघु। मानव मूल्यों की तुलना कभी भौतिकता से नहीं जी जा सकती, यह नश्वर हैं। किन्तु नैतिकता शाश्वत है जो कभी नष्ट नहीं होती।

* श्रीसंपन्न बनें। अर्थात लक्ष्मी सम्पन्न बनें। साथमें, पवित्र आभामंडल वाले बनें। यह आभामंडल त्याग की शक्ति से बनता है। लज्जा सम्पन्न बनें। लज्जा-वान व्यक्ति कभी गलत आचरण नहीं करता। लज्जा का अर्थ है आत्मानुशासन। धीसंपन्न अर्थात् बुद्धि संपन्न बनें। बुद्धि का विकास दूसरों की भलाई के लिए हो। धृति संपन्न अर्थात धैर्य का विकास करें। जीवन में समरसता के लिए धैर्य का विकास जरूरी है। शक्ति सम्पन्न बनें। राम, कृष्ण, महावीर आदि ऐसे महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने विकास के लिए अभय की साधना को बहुत जरूरी माना है। शांति सम्पन्न बने। अशान्ति से आनन्द नहीं मिलता। आनन्द संपन्न बने। मनुष्य जैसा शरीर और शक्तिशाली मस्तिष्क किसी दूसरे प्राणी के पास नहीं है। बुद्धि और पुरुषार्थ द्वारा

कठिनाइयों का समाधान करें और आनन्दमय जीवन जीयें। शुक्ल संपन्न बने। अर्थात पवित्र बनें। व्यक्ति के पास बहुत धन है, सुविधाएं हैं, किन्तु पवित्रता नहीं तो वह दीर्घकाल तक सुखी जीवन नहीं जी सकता। पवित्रता जीवन की सबसे बड़ी शक्ति है। जो दूसरों को क्षमा करता है, भगवान उसको क्षमा करता है।

❊ कभी भी जीवन में उदासी और अवसाद नहीं लाना चाहिए। जियें तो ऐसे जैसे कल ही अंत हो। सीखें इतना कि जीवन अनन्त हो। सच्चाई, सादगी और संतोष, शांति प्रदान करते हैं।

❊ कर्त्तव्य को धर्म समझना चाहिये। उषाकाल में सूर्य उदय होनेपर अग्नि द्वारा प्रदत ज्वलनशीलता तथा नमक द्वारा प्रदत्त स्वाद की तरह मनुष्य को भी अपना कर्त्तव्य निभाना चाहिए। आसान आय के स्रोतों से दूर रहना चाहिए। कर्म को पूजा बनाओ, प्रलोभनों से दूर रहो। इनमें अनर्थ छिपा रहता है। शुभ कर्म की कमाई ही फलती है। जो सुख-समृद्धि और शांति प्रदान करती है, अत: सदकर्मों की कमाई करो, प्रलोभनों के चक्कर में नहीं पड़ो। प्रकृति से जुड़ो- संस्कृति से जुड़ो। प्रकृति मां की भांति है। शाकाहारी भोजन व प्राकृतिक चिकित्सा को अपनाना चाहिए। सागर की तरह विशाल और गहरा बनो, धरती की तरह उदार तथा शांत बनो, हवा की तरह स्वतंत्र व लचीले बनो, सहजता से बिछी कोमल घास तूफान में बनी रहती है। सहजता व सरलता का जीवन जीओ। आडम्बर रहित सरल जीवन शैली अपनाओ। अनुग्रहपूर्वक सहज जीवन जीओ।

❊ जैसा सामर्थ्य हो दान करें। पास में अर्थ नहीं हो तो अच्छे संस्कार दान करें और कुछ भी नहीं हो तो मुस्कान ही दान करें। सच्चा आनंद त्याग में है, भोग विलास में नहीं। कर्त्तव्य का पालन करना सीखें, ईश्वर में अटूट विश्वास तथा किसी का बुरा मत सोचें, न बुरा करे। नर में नारायण और मानव में माधव देखें। मानवता मानव जीवन की संजीवनी है, मानवीय शुद्ध व्यवहार ही मानवता की कसौटी है। प्रत्येक जीव में ईश्वर के दर्शन करें। संसार की सकल शक्तियों का स्रोत स्वयं अपने आप में ही हो। जहां चाह वहां राह बन जायेगी। जीवन के उतार-चढ़ाव के समय संतुलन बनायें रखें। जीवन में साहस और धैर्य रखने से जीवन की अमावस्या को पूर्णिमा में बदला जा सकता है। हमेशा यही सोचना चाहिए जो समय आया है वह भी गुजर जायेगा। वास्तव में धनी व्यक्ति वही होता है जिसके पास ईश्वर का नाम रूपी सच्चा धन है। यदि हम अपने जीवन को उज्ज्वल और सफल करना चाहते है तो हमें अपने मन में ईश्वर को मानकर उसके आदर्शों पर चलकर, उसकी उपासना कर, सच्ची सेवा और सच्चे कर्म की प्रेरणा लेनी चाहिए। संसार को दिव्य दृष्टि से देखें। समाज व संसार को दोष दृष्टि से मत देखो, लोगों में दोष मत देखो बल्कि अच्छाई व सकारात्मक भाव से, देव दृष्टि से देखो। सर्वत्र भगवद द्रष्टि रखो। स्वयं सूर्य बनकर अपने आपको प्रकाशित करो और अपने प्रयासों से परिवार व समाज को आलोकित करो। सम्पूर्ण विश्व मानव के बीच प्रबल प्रेमभावना हो, यही सर्व धर्म समभाव का पावन संदेश है, विश्व बंधुत्वका मूल मंत्र है। हिन्दुओं में सहिष्णुता, आध्यात्मिकता, यहूदियों की श्रद्धा और आज्ञा पालन, इस्लाम का खुदा की खिदमत में समर्पण भाव आदि सच्ची आध्यात्मिक भावना है। बौद्ध धर्म की करुण भावना, ईसाइयों की दया, प्रेम भावना, जैन धर्म की अहिंसा भावना, मानव के आंतरिक गुण हैं। इन सब को समभाव से स्वीकार करना-कराना ही तो सर्व धर्म समभाव है। परलोक में धर्म ही धन है।

❊ जीवन में आचरण एवं व्यवहार में सत्य का प्रयोग ज्यादा से ज्यादा करना चाहिए। सादा जीवन, उच्च विचारों को अपनाओ। झूठ और पाखण्ड से दूर रहो। जीवन की सच्चाई को स्वीकार करो। यदि व्यक्ति ऐसा अपनाता है, या करता है, या व्यवहार में लाता है, तो वह पैसा न रहने से भी सुखी रह सकता है, पुरुषार्थ करो, काम करो, उद्योग करो, फल तो मिलेगा ही, उद्यमशील बनो, विनयी बनो, परिश्रमी बनो, उन्नति अवश्य होगी। छल, कपट, बेईमानी, अहंकार, क्रोध, दिखावा से दूर रहो तो परिवार में एवं समाज में तुम्हे सभी मान-सम्मान देंगे एवं इज्जत भरी दृष्टि से देखेंगे।

❊ भोग की जीवन में आवश्यकता है किन्तु भोग ही जीवन का आदि-अन्त नहीं है।

❊ सच्ची जिन्दगी वही है जो हम अपने लिये नही बल्कि सबके लिये जीते हैं।

❊ हमारा जीवन क्षणिक है लेकिन सत्कार्य व सृजन से हम उसे अनन्तकाल तक फैला सकते है।

❊ दान देने की शक्ति, प्रिय बोलने की शक्ति, संयम शक्ति, निरपेक्षता व पाप से अपने को बचाना ये चीजें बड़ी दुर्लभ हैं।

❊ संसार के दीन-दुखी, दरिद्र और असहाय रोगियों के पास जाओ। लाखों लोग तुम्हारी सहायता पाने की प्रतीक्षा में हैं। जाति, धर्म, नस्ल, पंथ के भेदभाव के बिना नि:स्वार्थ रूप से तन, मन, धन से मानव सेवा में लग जाओ। भूखों को खानादो। प्यासों को पानी पिलाओ। जितना हो सके मन, वचन और कर्म से दूसरों का उपकार करो। परसेवा, दया, सहानुभूति तथा दरिद्र नारायण की सेवा ही सच्ची प्रभु पूजा और भक्ति है।

❊ परोपकार से ही तुम्हारे अशान्त, चंचल मन को शान्ति एवं प्रभु दर्शन की सुखद अनुभूति प्राप्त होगी। मानव सेवा ही आत्मशान्ति का कल्याणकारी मुक्ति मार्ग है। परमार्थ परसेवा में अपना सर्वस्व निछावर करनेवाले मानव संसार में महान और पूज्य बन अमर हो जाते हैं।

❊ जो मनुष्य दूसरों के हित में अपना पूरा जीवन समर्पित करता उस महान पुरुष को शब्दों में वर्णन अथवा तुलना करना मुश्किल कार्य है।

❊ पहला सुख निरोगी काया, दूजा सुख घर में हो माया। तीजा सुख सुलक्षणा नारी, चौथा सुख पुत्र आज्ञाकारी।
पांचवां सुख स्वदेश में वासा, छठवां सुख राज में पासा, सातवां सुख संतोषी जीवन, ऐसा ही तो धन्य है जीवन।।

❊ जीवन की सार्थकता इसी में है कि दीपक बनकर जला जाए। जले बिना कभी भी प्रकाश उत्पन्न नहीं होता। जितने भी महान पुरुष हुए हैं; उनकी महानताका रहस्य उनके हर पल जल कर दूसरों को प्रकाश देने की भावना छिपा होता है, न कि दूसरों के जलने से उत्पन्न प्रकाश में सहारा लेने की आदत में। इसलिए महाभारत के रचनाकार वेदव्यासजी को लिखना पड़ा-जिन्दगीभर धुआं देते रहने से एक बार चमक कर बुझ जाना कहीं बेहत्तर है। यही है जीने का सही अंदाज कि हम पल भर के लिए ही सही, किसी को रोशनी दे सके, न कि धुआं बन कर उसकी आंखों में भरते रहें। निश्चय ही उससे हम स्वयं ही लाभान्वित होंगे।

❊ संसार का हर व्यक्ति अपने भविष्य को अच्छा बनाने की कोशिश करता है, वह सोचता है कि आनेवाला हर दिन अच्छा हो, लेकिन जीवन में सिर्फ खुशियाँ नहीं होती, दुख, परेशानियाँ, उतार-चढ़ाव ये सब सामना कर व त्याग तथा मधुरता से अपने जीवन को सजाता है, तो उसका जीवन महानताओं से भरा होता है।

❊ जब भी कोई काम शुरू करें, मन को प्रसन्न रखें व हर समय मन में प्रसन्नता हो, जब भी बोले मीठा बोलें, कडवाहट जुबान पर न हो, भगवान से बाहर तथा घर के अन्दर मिठास हो, भगवान श्रीकृष्ण ने भी वाणी पर ही जोर दिया। वाणी मीठी हो उसके साथ शांति भी होनी चाहिए। वरना कुछ लोग मीठा तो बोलते हैं मगर शांति नहीं होती। जिस तरह एक फूल डाली पर खिलकर पूरे वातावरण को खुशबू देता है। उसी प्रकार एक श्रेष्ठ इंसान जिस घर में जन्म लेता है, पूरे वातावरण की ही नहीं, अपने शहर गाँव की भी शोभा बन जाता है।

❊ जीवन में इतना ज्यादा भी व्यस्त मत रहो कि एक वक्त का खाना भी परिवार के साथ बैठकर न खा सको। जीवन में परिवर्तन केवल अच्छी बातों से नहीं बल्कि सच्ची बातों से आता है। विपत्ति से बढ़कर अनुभव सिखानेवाला कोई विद्यालय नहीं। गृहस्थ को चाहिए कि व धन कमाने की अपेक्षा बच्चों के चरित्र का ख्याल रखे। असफलता गिरने में नहीं

बल्कि गिरकर हार मान लेने में है। अत: उठो और आगे बढ़ो।

* आपका खोया हुआ धन, बिछुड़ा या रूठा हुआ मित्र, भटकी हुई स्त्री या स्वजन, अपहृत किया हुआ राज्य और सम्पत्ति सब वापस मिल सकते हैं परन्तु मानव शरीर बार-बार नहीं मिलता।

* सच्ची जिन्दगी वही है जहाँ हम अपने लिए नहीं सबके लिए जीते हैं।

* जग में हर प्राणी के मन में मंगल भावना हो। दूर रहें हर एक बुराई से,
जूड़ जाये हर एक अच्छाई से। पवित्र हो हम सब के मनकी भावना।
निर्धन को धन, निर्बलको बल, अज्ञानी को ज्ञान मिले।
सब को भोजन, बेघर को घर, सबको यह संसार मिले।।
ना करना पड़े दु:खों का सामना, जग में हर प्राणी के मन में हो मंगलभावना।।
लोभ क्रोध से दूर रहें, सत्य का साथ न छोड़ें। राग द्वेष से मुक्त रहैं, प्रेम से नाता जोड़े।
छु ना सके अभिमान और वासना। जग में हर प्राणी के मन में हो मंगलभावना।।
सुख शांति से भरा हो यह जीवन, हर आंगन से प्यार मिले। तन हो निरोगी मन हो पावन, स्वस्थ सुलभ विचार बने।।

* कुदरत से करें सभी यह प्रार्थना, जग में हर प्राणी के मन में हो मंगलभावना।

* जिंदगी को महकते फूलों की तरह उल्लासपूर्ण ढंग से जीयें- बीज की तरह उगें और बेल की तरह निरंतर बढ़ते और ऊंचे उठते ही रहें। जीवन का अंत तक आनन्द लें। होठों पर हंसी की एक उजली रेखा चमकती रहे।

* मनुष्य अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करता है। जीवन के हर मोर्चेपर आगे बढ़ना चाहिए।

* कठिनाइयाँ आपके पुरुषार्थ का परीक्षण करती है जो जीवन विकास के लिये अनिवार्य है। किसी भी विषम परिस्थिति में परेशान न हो, धैर्य के साथ मानसिक संतुलन बनाये रखे। आशा नहीं छोड़े, अच्छा समय आनेवाला है इसका इंतजार करें।

* विरोध और आलोचना के समय चट्टान की तरह अडिग रहे। हरि आँखोंवाले दैत्य (ईर्ष्या) से बचें। इन वृत्तियों का शमन करें, ठंडे व शांत रहें। मन से मिथ्या भय का त्याग करें।

* पुरुषार्थी बनें, परिश्रम की पूंजी उन्नति कराती है। कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती वे शिखर तक पहुंच जाते हैं।

* छुई-मुई स्वभाव (तुनक मिजाजी) जीवन के लिय अत्यंत हानिकारक है। अपने हृदय में देवताओं के गुण विकसित करें। आत्मसंयम से मनुष्य देवता बनता है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण धारण करने से सुख-शान्ति और समृद्धि मिलती है।

* मनुष्य जितना अधिक काम में व्यस्त रहता है उतना ही अधिक जीवित और स्वस्थ रहता है। धन का सदुपयोग सद्‌गुणों की वृद्धि के लिये किया जाना चाहिए।

* सम्पूर्ण विश्व परमात्मा का स्वरूप है, सबसे बड़ा धर्म मानवता है। ईश्वरीय प्रेरणा से जीवन प्रकाशमय हो जाता है। जो जन्मते हैं वह मरते नहीं कीर्ति से जीवित रहते हैं।

* चिंता छोड़िये प्रसन्न रहिए। आपके कष्ट क्षणिक है। अपने मुख का हर्ष कभी न छोड़िये। सारे मनोरथ दुनिया में किसके पूरे हुए। जितने मनोरथ पूर्ण हो चुके, वही उत्तम है। जो नहीं हो सके, वो न सही उन्हें त्याग दीजिये।

* निराशा कायरता है- इसे त्यागिए। बुद्ध, न्यूटन, ब्रुस, अब्राहम लिंकन व राकफेलर से प्रेरणा लीजिये- जो गिरकर उठे, उठकर चले और सफल हुए।

* अपने आसपास चारों तरफ सुखद सात्विक वातावरण बनाए। उदासी से सावधान रहे। रुखे-रुखे ना रहे- विकासमय

काल्पनिक भय से मुक्त रहे- प्रकृति का सौंदर्य ग्रहण करे। चित प्रसन्न रहने से मनुष्य के सब दु:ख दूर हो जाते हैं। प्रसन्नचित वाले की बुद्धि स्थिर हो जाती है। हमेशा शुभ सोचो, शुभ दर्शन करे और शुभ वचन ही उच्चारण करे। शुभ विचारों में नवनिर्माण शक्ति है। जीवन के उज्ज्वल पक्ष पर ध्यान दे। पुरानी दु:खद स्मृतियां मन से मिटा दें।

❊ ईश्वर पर दृढ़ विश्वास और अटल आस्था मनुष्य को मानसिक संतुलन और शक्ति प्रदान करती है। सदैव ऊँचे उठने की बात करे। नीचे गिरने की बात न कभी सोचे, न गिरे। सदैव उन्नति करे। अवनति भूलकर भी मत होने दे। गिरनेवाले नहीं, जिंदगीको उत्तरोत्तर उठानेवाले पुष्ट विचारों और सत्कर्मोंको अपनाये। इस संसार सागर में उद्योगी ही पार होते हैं। पुरुषार्थहीन व्यक्तियोंकी नाव बीचमें ही डूब जाती है। जीवन के बारे में सोचे। जब तक जीवित हैं, स्वस्थ और पूर्ण आनन्द की ही कल्पनाएँ मन में रखो। उत्साही और आशावादी का साथ पकड़े। उन कायरोंसे दूर रहिये जो आपको डरपोक बनाते हैं और भविष्य के लिये निराशाजनक बाते करते हैं। उन्हीं की प्रशंसा करें जो धर्मपर दृढ़ है। आप भी उन जैसा साहसी बने। दीर्घजीवी और स्वस्थ रहें, आत्मगौरव प्राप्त करें। हम सदा शान्त रहें। हमारे चारों ओर शान्ति रहे। हम शान्तिपूर्वक अपनी समस्याओं को हल करने में स्वस्थचित्त रहे।

Wherever there is Sunset, Sunrise is there.

❊ अपने जीवन में आत्म निरिक्षण प्राप्त विवेक के प्रकाश में अपने दोषों को नहीं देखें। की हुईभूल को, पुन: न दोहराने का व्रत लेकर सरल विश्वासपूर्वक प्रार्थना करे। विचार का प्रयोग अपने पर और विश्वास का दूसरों पर, न्याय अपने पर, और प्रेम तथा क्षमा अन्यों पर करें। जितेन्द्रियता, सेवा, भगवत्चिंतन और सत्य की खोज द्वारा अपना जीवन निर्माण करें। दूसरों के कर्तव्य को अपना अधिकार, दूसरों की उदारता को अपना गुण और दूसरों की निर्बलता को अपना बल नहीं माने। पारिवारिक तथा जातीय सम्बन्ध न होते हुए भी पारिवारिक भावना के अनुरूप ही, पारस्परिक सम्बोधन तथा सद्भाव अर्थात कर्म की भिन्नता होनेपर भी स्नेह की एकता करे। निकटवर्ती जन समाज की यथाशक्ति, क्रियात्मक रूप से सेवा करे। शारीरिक हित की दृष्टि से आहार विहार में संयम, तथा दैनिक कार्यों में स्वावलम्बित रहे। शरीर श्रमी, मन संयमी, बुद्धि विवेकवती, हृदय अनुरागी, तथा अभिमान को शून्य करके अपने को सुन्दर बनायें। सिक्के से वस्तु, वस्तु से व्यक्ति, व्यक्ति से विवेक, विवेक से सत्य को अधिक महत्व दे। व्यर्थ चिन्तन त्याग तथा वर्तमान के सदुपयोग द्वारा भविष्य को उज्ज्वल बनाये। जो प्राप्त है उसे ईश्वर का प्रसाद समझकर परमानंद की अनुभूति करे। जीना है तो जमाने में हंसी हास्य योग का कोई बहाना खोजे।

❊ जीवन-शांति अन्तर्मन में है। आडम्बरपूर्ण जीवन जीनेवाला आत्मा की अमरता को भूलता हुआ सत्य से दूर होकर अशांत जीवन जीता है। दु:खों का यही कारण है। लोग शांति पाने के लिये धार्मिक स्थलों पर जाते हैं या धार्मिक प्रवचनों को सुनकर शांति की तलाश में प्रयासरत रहते हैं लेकिन यदि वे अपने अन्दर इसे तलाश करें तो आत्मा की मानिन्द में हमेशा रहता है तो बेहतर होगा। जिस प्रकार आत्मा का अस्तित्व कोई नहीं मिटा सकता उसी प्रकार सत्य का अस्तित्व कभी नष्ट नहीं होता।

❊ ईश्वर का आभार मानो, धन्यवाद करो कि हमें सुखी जीवन जीने का अधिकार दिया हैं, जो स्वयं पर निर्भर है। सुख-दु:ख मन की मान्यता से है।

❊ जीवन एक आपाधापी, एक दौड़, एक संघर्ष या एक परीक्षा का नाम है। जीवन गति है, जीवन निर्माण है, कुछ देने का नाम जीवन है, सहने का नाम, चलते रहना, कुछ दे देना सब कुछ सहकर कुछ न कहना जीवन है लेकिन इस तरह से

जीना कितनी अर्न्तव्यथा से गुजरता है। यह दीपक जो स्वयं जलता है, पर जलानेवाले को अलोक प्रदान कर जाता है। अत: मनुष्य को जीवन जीना चाहिए। अन्तिम श्वास तक कहीं नहीं रुकना है। बाधाओं के सामने भविष्य से वर्तमान और वर्तमान से भूत तक गतिमान रहना है यह ही जीवन है। हर दिन ऐसे बिताओ कि रात को चैन की नींद सो सको और हर रात को ऐसे बिताओ जब जागो तभी सवेरा, चेहरे पर ताजगी और प्रसन्नता हो। जवानी ऐसे बिताओ कि बुढ़ापे में पछताना न पड़े। हाथों से लगाई गांठों को एक दिन दांतों से खोलना नहीं पड़े।

*** हम अपने सत्य, ईमान, इन्साफ और नैतिकता को छोड़ रहे है। स्वयं अपने जीवन में विष घोल रहे है।**

* परिमित बोलो और शुभ बोलो। भोग में संतोषी और योग में लोभी बनो। सरल बनो, कपट की बात छोड़ दो। बड़े बूढ़ों और रोगियों की सेवा करो। अज्ञान जैसा दूसरा शत्रु नहीं है।

* संयम और उपवास से बहुत से रोग दूर हो जाते है। विद्या वही है जो बुरे मार्ग से हटा दे। देने से पाने का रास्ता खुल जाता है। सत्संग पारस मणि है। आँसू करुणा की बूंद है। आनंद का मूल स्त्रोत है संतोष। इतिहास स्वदेशाभिमान का साधन है। यथार्थता और ईमानदारी दोनों सगी बहनें है। कर्तव्य कठोर होता है, भाव प्रधान नहीं। सेवा हृदय और आत्मा को पवित्र करता है। मन पवित्रऋ होगा तो आचरण भी सुंदर होगा। आलसी को सदा असंतोष रहेगा। शालीनता से मनमोहक कुछ भी नहीं है। सदविचार से जीवन सुगंधित हो उठता है। मानवता सब धर्मों का सार है। संघर्ष और दु:ख तुम्हारी शक्तियों को बढ़ाती है। अपने सुख के लिये दुसरों को कष्ट देना महापाप है। शुभ करो शुभ होगा, अशुभ करो अशुभ होगा। स्पष्टीकरण मांगना कायरता का प्रतीक है। सृष्टि नहीं दृष्टि सुधारो। स्व का दर्शन ही सुदर्शन है। सर्वोत्तम शक्ति संकल्प शक्ति है। जीवन में परिवर्तन केवल अच्छी बातों से नहीं बल्कि सच्ची बातों से आता है। चाहे सुखद परिस्थिति हो या दु:खद, अपने कर्तव्य में डटे रहो। एक चैतन्य ही अनंत रूपों में प्रकट कर रहा है, फिर किससे राग और किससे द्वेष। विपत्ति से बढ़कर अनुभव सिखानेवाला कोई विद्यालय नहीं। जो प्रतिकूलता को अपनाते हैं, ईश्वर उनके सम्मुख रहते हैं। गृहस्थ को चाहिए कि वह धन कमाने की अपेक्षा बच्चों के चरित्र का ख्याल रखे। असफलता गिरने में नहीं बल्कि गिरकर हार मान लेने में है। जैसी संगत वैसी रंगत। एक हाथ से अर्जन दूसरे हाथ से विजर्सन। आत्मज्ञान ही ब्रह्मज्ञान है। जिनके जीवित रहने से विद्वान, मित्र, बंधु-बांधव जीते हैं, उसी का जीना सार्थक है, अपने लिए कौन नहीं जीता?

* आतिथ्य घर का वैभव है। प्यार घर की प्रतिष्ठा है। समझौता घर का सुख है। व्यवस्था घर की शोभा है। ऐसा मत बोलो जो क्लेश हो। ऐसा मत करो जो चिन्ता हो। ऐसा मत कमाओ जो पाप हो। ऐसा खर्च न करो जो कर्ज हो। ऐसा मत खाओ जो रोग हो। कर्त्तव्य व धर्म का हमेशा पालन करो। नित सत्संग करो। बुरी आदतें कुसंगत छोड़कर बच्चों पर विशेष ध्यान दो। अपने आप को पहचानो। माता-पिता, गुरु का सम्मान और सेवा करो। हरि भक्ति करो। प्रभु को इसी जन्म में प्राप्त करने का प्रयास करो। यदि सुख प्राप्त करना चाहते हो, तो दूसरों को अपने समान सुख दो। इसी में कल्याण निहित है। जिसकी कीर्ति जग में है वह सदैव जीवित है।

* बड़े शहरों में जीवन की रफ्तार बहुत तेज हो गई है। वहां की महिलाएं, पुरुष बच्चे सभी एक दूसरे से आगे रहने की होड़ में लगे रहते हैं। इस स्पर्धापूर्ण युग में कोई भी पीछे नहीं रहना चाहता। बेहतर जीवन जीने के लिए शहर का हर प्राणी संघर्षील है। इस संघर्षील जीवन में शांति दूर होती जा रही है। हम अपने जीवन को अपने से दूर न होने दे ताकि जिन्दगी बिना तनाव के जी सकें। हर वक्त व्यस्त न रहकर कुछ समय अपने लिए, अपने परिवार और सगे संबंधियों के लिए निकालें। यदि ऐसा नहीं करेंगें तो दांपत्य जीवन और सगे संबंधियों में दूरियां बढ़ती चली जाएगी। जीवन में ना उम्मीद

कभी न हों, उम्मीदों का दामन थामें रहें। कुछ खाली समय अपने लिए भी रखें। उस समय का प्रयोग आप अपने पसंद के मनोरंजक कार्यों में लगा सकते हैं। कुछ समय व्यायाम के लिये भी निकालिये। कभी भी यह न सोचें कि आप में सिर्फ कमियां ही कमियां हैं अपने अन्दर की खूबियां ढूंढे और निखारें। अपनी कमियों को दूर करने का प्रयास करें।

* कामकाजी महिलाओं को अपना बहुमूल्य समय परिवार को देना चाहिए। जितना भी समय मिले, परिवार की बेहतरी और उनके सुखद जीवन के बारे में सोचें और प्रयासरत रहें। जीवन में संपूर्णता संभव नहीं होती। जीवन के हर पल को खुशी में जीने का प्रयास करें। कुछ अभाव, तनाव, क्लेश व बीमारियां तो जीवन में आते ही रहते हैं। उन सबके साथ जीना ही तो जिंदगी है। जितनी धन दौलत अपने पास हैं, उसी में खुश रहें। तनाव न पालें। पूर्णता को तलाशने का प्रयास न करें। अपनी सोच सकारात्मक रखें। नकारात्मक सोच प्रगति के मार्ग में अवरोधक का काम करती है। अपने जीवन को ऐसे कार्यों में लगाएं जिन्हें कर आपको खुशी और शांति मिल सकें। जिंदगी में किसी तरह का अपराध बोध न हो। अपनी गलतियों को सुधारें और आगे का रास्ता सुखमय बनाएं। बच्चों में अच्छी आदतें और अच्छे संस्कार डालें। किसी जरूरतमंद को मदद पहुंचाकर अपने मन को शांति दे। जिन्दगी में सपने जरूर देखें और उन्हें पूरे करने का प्रयास करें। अगर जिंदगी में कुछ चाहत या सपना नहीं होगा तो जिन्दगी अधूरी लगेगी। निराशा, ईर्ष्या, तृष्णा, लोभ, अविश्वास की भावनाओं को दूर कर आशावादी दृष्टिकोण अपनायें और विपरीत परिस्थितियों को बदलने का प्रयास करें ताकि जिन्दगी का पूरा आनंद उठा सकें।

* सूर्य और चन्द्र अत्यंत नियमित होते हैं, वैसे ही हमको अपना जीवन नियमित करना चाहिए।

* आज की चिंता आज और कल की चिंता कल पर छोड़ दे। अपनी वासना पर नियंत्रण करो। आज की रोटी भगवान हमें आज दें। कल की रोटी की फिक्र हम आज ही न करें। जैसे चन्द्र रोज नया होता है वैसे मनुष्य को रोज नया होना चाहिये। जीवन का आधार शाश्वत धर्मतत्त्वों पर खड़ा है, जहां सब पंथों का विसर्जन होता है।

* संसार की सबसे महत्वपूर्ण वस्तु है शास्त्र।

अमेरिका के उद्योगपति एंड्रयु कार्नेगी खरबपति थे। जब वह मरने को थे तो उन्होंने अपने सेक्रेटरी से पूछा- देख, तेरा-मेरा जिन्दगी भर का साथ है। एक बात मैं बहुत दिनों से पूछना चाहता था। ईश्वर को साक्षी मानकर सच बताओ कि अगर अंत समय परमात्मा तुझसे पूछे कि तू कार्नेगी बनना चाहेगा या सेक्रेटरी, तो क्या जवाब देगा?

सेक्रेटरी ने बेबाक उत्तर दिया, सर। मैं तो सेक्रेटरी ही बनना चाहूँगा। कार्नेगी बोले, क्यों? इस पर सेक्रेटरी ने कहा, मैं आपको ४० साल से देख रहा हूँ। आप दफ्तर में चपरासियों से भी पहले आ धमकते हैं और सबके बाद जाते हैं। आपने जितना धन इकट्ठा कर लिया उससे अधिक के लिए निरंतर चिंतित रहते हैं। आप ठीक से सिखा भी नहीं सकते, रात को सो नहीं सकते। मैं तो स्वयं आपसे पूछनेवाला था कि आप दौड़े बहुत लेकिन पहुंचे कहाँ? यह क्या कोई सार्थक जिन्दगी है? आपकी लालसा, चिंता और संताप देखकर ही मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि हे भगवान। तेरी बड़ी कृपा, जो तूने मुझे एंड्रयु कार्नेगी नहीं बनाया।

यह सुनकर कार्नेगी ने अपने सेक्रेटरी से कहा, मेरे मरने के बाद तुम अपना निष्कर्ष सारी दुनिया में प्रचारित कर देना। तुम सही कहते हो। मैं धनपति कुबेर हूं। लेकिन काम से फुर्सत नहीं मिली, बच्चों को समय नहीं दे पाया, पत्नी से अपरिचित ही रह गया, मित्रों को दूर ही रखा, बस अपने साम्राज्य को बचाने-बढ़ाने की निरंतर चिंता। अब लग रहा है कि यह दौड़ व्यर्थ थी। कल ही मुझसे किसी ने पूछा था, क्या तुम तृप्त होकर मर पाओगे मैंने उत्तर दिया कि मैं मात्र दस खरब डालर छोड़कर मर रहा हूँ। सौ खरब की आकांक्षा थी, जो अधूरी रह गई।

यह उदाहरण उन लोगों के लिए शिक्षाप्रद सिद्ध हो सकता है जो अकूत धन की लालसा लिए चिंता, भय, तनाव, ईर्ष्या जैसे मनोरोगों से ग्रसित होकर सार्थक जीवन के वास्तविक आनंद से वंचित हो रहे हैं। कार्नेगी के सेक्रेटरी की भांति चरित्रवाले व्यक्ति सकारात्मक जिन्दगी में विश्वास करते हैं जिससे उनका जीवन संतुलित रहता है। वे जानते हैं कि वर्तमान में ही भावी जीवन का निर्माण होता है और इसके लिए धन-संचय की प्रवृत्ति निर्मूल है।

* यदि आप बोलना ही चाहते हैं तो सत्य बोलिए। यदि आप खाना चाहते हैं तो गम को खाईए।

यदि आप मारना चाहते हैं तो मन को मारिए। यदि आप पीना चाहते है तो क्रोध को पीजिए।

यदि आप लड़ना चाहते हैं तो बुराईयों से लड़िए। यदि आप रखना चाहते हैं तो मान-सम्मान को रखिए।

यदि आप फैलाना चाहते है तो यश को फैलाइए। यदि आप लेना चाहते हैं तो ज्ञान लीजिए।

यदि आप देना चाहते है तो दान दीजिए। यदि आप कुछ करना चाहते है तो अच्छा व्यवहार कीजिए।

यदि आप पढ़ना चाहते है तो अच्छी पुस्तके पढ़िए। यदि आप बढ़ना चाहते है तो उन्नति की ओर बढ़िए।

यदि आप छोड़ना चाहते हैं तो बुरी संगत छोड़िए। यदि आप जोड़ना चाहते हैं तो मानव को मानव से जोड़िए।

* चले बिना रास्ता कटता नहीं, दिए बिना (कर्ज) पटता नहीं। दवाई लिए बिना रोग मिटता नहीं, कितनी भी उतावल व उत्तेजना करने से दूरियां नजदीक आती नहीं।।

* सुन भव्य, मैं अनुभव कहूं अपना। सत्य प्रभु भजन, जगत सब सपना।। जगत है सभी स्वार्थ का, जहाँ कौन किसका होता है। रिश्ते नाते जो बनते हैं, असल में सब धोखा होता है।।

* चढउतंग जहाँ से पतन, शिखर नही वो कूप है। जिस सुख अन्दर दु:ख बसे, सो सुख भी दु:ख का रूप है।।

* शुद्धी: स्नान से देह की शुद्धी होती है, दान से धन की शुद्धी होती है। ध्यान से मन की शुद्धी होती है, चिंतन से विचारों की शुद्धि होती है।

* कुछ सीखो- उड़ता हुआ पंछी कह रहा है, मुझसे ऊँचा उड़ना सीखो। खिलता हुआ फूल कह रहा है, मुझको महकना सीखो। कह रही है प्रकृति की हर मुर्त-अमुर्त दास्तानें हमको, इंसान होकर इंसान की तरह तुम जीना सीखो।।

* धैर्य बिना धन नही, बिना शौर्य के जश। ज्ञान बिना मोक्ष नहीं, बिना दान के यश।।

* हर समस्या सुलझेगी, आप उलझना छोड दे। हर मंझिल मिलेगी, आप भटकना छोड़ दे। दूध का सार मलाई हैं। जीवन का सार भलाई है।।

* दान छपवाकर नहीं, छिपाकर दो।। ढोंग का नहीं ढंग का जीवन जीयें।।

* देश की बातों के बादशाह नहीं, आचरण के आचार्य बनना चाहिए।। कर्म की गति न्यारी, पाप की सजा भारी।। जब तक जिनके पुण्य का पहुंचे नहीं करार। तब तक उसे माफ है गुनाह करे हजार।। पाप छिपाये न छिपे, जो छिपे तो बड़ भाग। जैसे नाव में बढे पानी, घर में बढे दाम। दोनों हाथ उलीचिये, यही सज्जन का काम।।

* मन अपने वश में करे, हो माया से मुक्त। आप दीन बन जाएं, हम होय ज्ञान से युक्त।।

* दिवगंतो के गुण अपनाओ, करो नहीं फरियाद। धर्मकर्म में सदा रहो व्रत, आयु न हो बरबाद।।

* बडों को प्रणाम करना छोटों की महानता है। छोटों का सम्मान करना बड़ों की महानता है।। एक विनम्रता है और एक वात्सल्य है। अपने अपने स्थान पर दोनों की प्रधानता है।

* मीठा बोलो, नम के चलो, सब से करो स्नेह। कितना दिन का जीवन है, कितने दिन की देह।।

✻ धैर्य धरे, धीरज रखे, समझै धर्म का अर्थ। प्रमाद छोड़ पुरुषार्थ करें, जीवन न जावे व्यर्थ।।

✻ हे दिल तुझे कसम है, तू कभी हिम्मत न हारना। दिन जिंदगी के जैसे भी गुजरें खुशी से गुजारना।।

✻ पूरा मर्द वह है, जो हर हाल में खुश है। मिल गया माल तो, उस माल में खुश है। राम के करे ममता, संसार में रखे समता, वही हर हाल में खुश है।। बुजदिल नहीं खुशदिल ही जीवन है।।

✻ झूठी माया, झूठी काया, झूठा यह संसार। स्वप्नवत् सब कुछ है, इस तथ्य को स्वीकार करे।। विश्व की बगिया में मुस्कराते फूल हो, न किसी से वैर हो, सत्यशील व्यवहार हो। मानवता के वास में फूलों का उद्धार हो, सुमनों की गंगा में, मानवता का संचार हो।। वही है जिंदा जिस की आस जिंदा, वही है जिंदा जिस की प्यास जिंदा हैं। श्वास लेने का नाम ही जिंदगी नही, जिंदा वह है, जिस का विश्वास जिंदा है।। गोधन, गजधन, रत्नधन, कंचन खान सुखान। जब तक न आवे संतोषधन, सब धन धूल समान।। भाग्य के अनुसार सिद्धि मिलती है, कर्म के अनुसार बुद्धि मिलती है। दान के अनुसार कीर्ति मिलती है, पुण्य के अनुसार लक्ष्मी मिलती है।।

✻ दु:ख में दीन न बनो, सुख में लीन न बनो। राग में रोगी न बनो, द्वेष के भोगी न बनो। कर्त्तव्य में कायर न बनो, कर्म के कैदी न बनो।। आत्मा के आराधक बनो, समता के साधक बनो। कषायों के काल बनो, जिनेश्वर के दास बनो।।

✻ समय का फेर सबके जीवन में आता है। कोई ऐसा नहीं मिलेगा जो कहे कि हमने अपने जीवन में दिन ही दिन देखा है, रात नहीं देखी। जो सृष्टि में आये हो तो दिन के साथ रात भी देखनी पड़ेगी। संसार बना ही है सुख-दु:ख, संयोग-वियोग के मिश्रण से। अत: जीवन में सभी प्रकार के द्वन्द्व आते हैं। विधाता के प्रापंचिक सबके जीवन में आते हैं।

✻ समय पड़े नर क्या करे समय समय की बात। किसी समय के दिन बड़े किसी समय की रात।
ऐसे विपत्ति के समय में सबही मे मिल जानो आप, आप भये बेगाने तो पायँ का को गहिये।।
दोष नाहिं दूसर को दोष कर्म आपने को, अपने मन की व्यथा काहू से न कहिये।
जब लगि दीनानाथ कृपा हूं न नेक करें, तब लगी ऊँची नीची सबही की सहिये।
हारिये न हिम्मत बिसारिये न हरिनाम, जाहि विधि राखि राम ताहि विधि रहिये।।

✻ यहां कुछ भी स्थिर नहीं है। या तो आगे जाओ या पीछे जाओ। जाना तो पड़ेगा ही। स्थिर होना असंभव है। कोई चीज स्थिर नहीं है, या तो रोज-रोज नये जीवन में प्रवेश करो, या रोज-रोज पुरानी मृत्यु में दबते जाओ।

✻ आज की भागदौड़ और सुख-शांति की चाह में लोग व्याकुल हैं। उन्हें कहीं भी मन की शांति नहीं मिलती और तनाव भरा जीवन जीने को विवश हैं।

✻ विद्वान का मतलब क्या है?- विद्वान वह है जिसने विद्या को पचा लिया अर्थात समझ लिया। ब्रह्मविद्या उसकी शक्ति बन गयी। उस शक्ति से उसको नाश किसका करना है। असल में विद्वान वह है जो आत्मा की सत्यता को सम्यक रूप से समझ चुका हो। जो यह भी समझ चुका हो कि जब तक आत्म तत्व की प्राप्ति नहीं होगी, तब तक उसके जीवन में कुछ न कुछ अपेक्षाएं बाकी रह जाएंगी और जब तक मनुष्य के जीवन में अपेक्षाएं बाकी रहेंगी तब तक वह दु:खी रहेगा।

✻ मोक्ष का बीज क्या है?- जिस वास्तविक तत्व से हम पूर्ण रूप से अपरिचित हैं, उससे हमें परिचित करा दे और जो आत्मतत्व रहस्यपूर्ण है, उस आत्मतत्व के रहस्य को हमारे सामने प्रकट कर दें। शास्त्र मानव जीव का दर्पण है। जब तब मनुष्य दर्पण के सामने खड़ा नहीं होता, तब तक उसे अपने चेहरे के दाग नहीं दिखाई देते और जब तक दाग न दिखाई दे, तब तक वह उन्हें साफ करने का प्रयास कैसे कर सकता? सद्गुरु ने बताया है कि शास्त्र रूपी दर्पण सत्संग में प्राप्त होता है।

✻ पवित्र कौन है? - पवित्र वह है, जिसका मन शुद्ध है। वास्तव में पवित्र वह व्यक्ति है, जो कभी किसी से कोई अपेक्षा नहीं रखता। यही मनुष्य जीवन की दक्षता है। यहां पवित्रता से तात्पर्य परमात्मा को प्राप्त करने की योग्यता से है।

✻ पंडित कौन है?- विवेकी ही पंडित है, पांडित्य ही एक ऐसा महान शास्त्र है, जिसके द्वारा विवेकी संसार के दृढ़तर बंधनों को काटकर संसार के अधिष्ठान स्वरूप परमात्मा के साथ में एकता प्राप्त कर लेता है।

✻ संसार में सार क्या है?- आत्मचिंतन मनुष्य अनात्मा का चिंतन और अनात्म पदार्थों का ही श्रवण करता है, जो कि मानव जीवन की अशांति और दु:ख के कारण हैं। इसलिए शांति और दु:ख की निवृत्ति का साधन जो आत्मचिंतन है, वही मनुष्य जीवन का सार है।

✻ मनुष्य जीवन सफल किसका है? - जो सब जगह स्वयं को सब में देखता है और दूसरों के उद्धार के लिए जो करता है और उसमें अपना ही उद्धार समझता है तथा सदा स्व और परहित में उद्यत रहता है। यही मानव जीवन की पूर्णता है।

✻ इच्छाओं की तृप्ति का उपाय एक ही है कि इच्छाएँ त्याग दी जायें। जिस विवेकी ने इस जगत को सपने या इन्द्रजाल के समान समझ लिया है, जिसे दृश्य नष्ट रूप में दिखने लगा है वह दोषदर्शी विवेकी इसमें अनुराग नहीं कर सकता। ज्ञानी जागरण को सत्य समझना छोड़ देने पर फिर पहले की भाँति अनुरक्त नहीं होता। ज्ञानी प्रत्येक वस्तु को अपनी आत्मा समझता है। मुर्दे की कल्पना बार-बार मन में लाना काम-वासना से मुक्त होने का सर्वोत्तम उपाय है। शव को पड़े हुए देखकर मन भयभीत होता है। परिणाम की कभी परवाह नहीं करनी चाहिए। अज्ञानी लोग समझते हैं कि कार्य की सफलता में कार्य करने की अपेक्षा अधिक आनन्द है। किसी परिणाम से उतना सुख नहीं मिलता जितना काम करने से मिलता है। अपने विचारों को सदा वास्तविक आत्मा में रखो और परिस्थितियों की परवाह मत करो। तब तक आपकी हानि नहीं हो सकती, जब तक कि आप स्वयं उसे नहीं बुलाते।

✻ बाहर की बातों में कुछ भी नहीं मान अपमान। अपना काम किये जा निशिदिन इसमें ही सम्मान।

✻ दूसरे लोग तुम्हारी आलोचना, निंदा करते हों उन्हें रोकने की चेष्टा न करो क्योंकि इन्हीं सब बातों के द्वारा तुममें सद्गुणों की वृद्धि होगी। जब तक तुम्हारा हृदय इतना दृढ़ नहीं है कि तुम मूर्खों के बकने पर स्थिर और शांत बने रहो, अथवा तुममें इतनी सहनशीलता नहीं है कि अज्ञानी मूर्खों को क्षमा कर सको तब तक तुम अपने को कहीं ज्ञानी न समझ बैठना। यदि तुम शरीर ओर मन से ऊपर उठ जाओ तो सब चिंता और भयों से छूट जाओगे। किसी भी आकस्मिक दुर्घटना से धैर्य न छोड़ो, क्योंकि घबराहट से शक्ति तथा बुद्धि का नाश होता है। किसी भी प्रकार की कठिनाइयों के आगे दु:खी न होकर गम्भीरतापूर्वक उनका सामना करो, तभी तुम नि:सन्देह विजय प्राप्त करोगे। तुम कहीं भी हतोत्साह होकर निराश न होओ।

✻ किसी भी डर को अपने पास फटकने मत दो। लोग यदि तुम्हारी बुराई करते हैं तो तुम उन्हें आशीर्वाद दो। ऐसे स्थान पर जाओ जहाँ लोग तुमसे घृणा करें। प्रसन्नतापूर्वक अपमान सहन करने से और नम्रता धारण करने से अभिमान की निवृत्ति होती है। किसी पवित्र स्थान पर जाओ तो वहाँ के अनुशासन का पालन करो। वहाँ चप्पलों की चटाक्-पटाक्, आभूषणों की खनखनाहट, भड़कीले वस्त्रों की फरफराहट आदि हमसे न हो इसका पूरा ध्यान रखो। कहीं भी किसीके भी चित्त को या शांत वातावरण को अशांत करने का हमें कोई अधिकार नहीं है।

✻ अपने किसी भी दु:ख या अशांति का कारण बाहर मत ढूँढो। बाहर की परिस्थितियों या व्यक्तियों को दोष मत दो। कारण अपने भीतर ढूँढो। निर्दोष भाव से ढूँढोगे तो कारण भीतर ही मिल जायेगा। उसे दूर करने की चेष्टा करो। शांतचित्त रहने का यही बहुमूल्य उपाय है। जो आत्म-अनुशासित है, वे ही शासन कर सकते हैं। ऐसा करने के लिए नाम-जप करें,

ध्यान करें, किसी आत्मनिष्ठ संत का पावन सान्निध्य प्राप्त करें। सब तरह से निर्भय एवं प्रसन्न बनने का यह श्रेष्ठ साधन है। विनम्र बनो, निरहंकारी बनो। अपने-आपको बड़ा बताने की चेष्टा न करो। विनम्रता एवं निरभिमानिता ही तुम्हें बड़ा बनायेगी। विनम्रता मनुष्य का बहुत बड़ा भूषण है। निर्मल दृष्टि रखो। किसीके दोष देखना यह बहुत बड़ा दुर्गुण है। छिद्रान्वेषी न बनो। दूसरों के दोष देखना पाप अर्जन करना है। गुणग्राही बनो।

* जिसने कभी कोई गलती नहीं की, समझ लीजिए उसने जिंदगी में कोई नई कोशिश नहीं की।
* भूखा आदमी अच्छा राजनीतिक सलाहकार नहीं हो सकता।
* साधनों को लेकर पूर्णता और मकसद को लेकर भ्रम ही हमारी तकलीफों की वजह है।
* जो बहुत पढ़ते हैं पर दिमाग का इस्तेमाल कम करते हैं, उन्हें सोचने की आलस भरी लत जग जाती है।
* भगवान के सामने हम सभी बराबर समझदार और बराबर बेवकूफ हैं।
* बहुत कम लोग अपनी आँखों से देखते हैं और अपने दिल से महसूस करते हैं।
* अलग और बेहतर सोच वालों को हमेशा औसत दर्जे की सोच वालों के विरोध का सामना करना पड़ता है।
* ताकत हमेशा लोगों की नैतिकता को नीचे की ओर खींचती है।
* मनुष्य एक शांतिप्रिय आतंकी है और हर समय वह शांति के लिए लड़ाई को भी तैयार है।
* एक ही काम को बार-बार करना और अलग फल की प्राप्ति की उम्मीद करना बेवकूफी है।
* समझदार समस्या को हल करते हैं और वरिष्ठ उन्हें होने से रोकते हैं।
* अपने खाली समय में कुछ न कुछ करते रहें। अपनी रुचियों पर ध्यान दें। आलस को छोड़े व जीवन को बेहतर बनाने हेतु प्रयासरत रहें। ऊबाऊ जिंदगी से बचने हेतु परिवर्तनशील बनें। समय के अनुसार स्वयं को ढालना सीखें। अपने काम से छुट्टी लेकर कुछ पल मौज-मस्ती भी करें। वहां घूमने जाएं, जहां आपको पूर्ण आनंद मिलता हो। खुश रहने के साथ-साथ आपका अच्छा दिखना भी जरूरी है। अपने व्यस्त समय में से कुछ समय दोस्तों व पारिवारिक सदस्यों के लिये भी निकालें। वे आपके जीवन को रंगों से भर देंगे। यथासंभव सामाजिक कार्यों में हिस्सा लें। दूसरों के लिए कुछ करें। ऐसे लोगों की सहायता करें जो अपना काम स्वयं न कर सकते हों। इससे आपको मानसिक संतुष्टि तो मिलेगी, साथ ही दूसरे लोगों की दुआएं भी आपको लगेंगी। घर व बाहर अपने काम के प्रति ईमानदार रहें। किसी का भी नाजायज फायदा उठाने से बचें। संतुलित ढंग से जिएं, इससे आपको कभी भी निराशा का सामना नहीं करना पड़ेगा।
* संसार मार्ग में मनुष्य को अपने से श्रेष्ठ अथवा अपने जैसा साथी न मिले तो भी वह दृढ़तापूर्वक अकेला ही चले परन्तु मूर्ख की संगति कदापि न करे।
* तुच्छ मनुष्यों की जीविका की हानि का, मध्यम वर्गीय के लोगों को जीवन की हानि का और उच्च व उत्तम पुरुषों की अपनी मानहानि का सदा भय बना रहता है।
* कोई ऐसी बात किसी आदमी के बारे में मत कहो जो उस मनुष्य के सम्मुख नहीं कह सकते।
* धन से अमरता की आशा नहीं की जाती।
* पुरुषार्थ का सहारा पाकर ही भाग्य चमकता है।
* आपत्ति उपस्थित होने पर जो उसका प्रतिकार कर लेता है वह बुद्धिमान है।
* धीर व्यक्ति विपत्ति को पार कर लेते हैं।

✻ वे व्यक्ति जीवन में कभी भी अकेले नहीं है जिनके विचार सुन्दर होते हैं।

✻ पाप तो सबको अपने भोगने ही पडते है इससे भगवान का क्या दोष है।

✻ असली रूप तो अपने गुणों से ही झलकता है। अपना प्रभाव गुणवान होकर ही प्रकट होता है रूपवान होकर नहीं।

✻ शरीर को रोगी और दुर्बल रखने के समान दूसरा कोई पाप नहीं है।

✻ हर आदमी हर दिन कुछ क्षणों के लिये मूर्ख बनाया जा सकता है समझदारी इसीमें है कि इसे बढने न दिया जाये।

✻ खुद पर विश्वास करना सफलता का पहला रहस्य है।

✻ मित्र वही है जो तुम्हारे भीतर की मन:स्थिति को बदलने में सहयोगी हो जाता है।

✻ महाराज पृथु की कथा का सार यही है। मनुष्य को जीवन में किसी न किसी स्थिति पर पहुँचकर सन्तोष कर लेना चाहिए अन्यथा वह भ्रमित होकर विभिन्न योनियों में घूमता फिरेगा। जीवन में तृप्ति का अनुभव कर सांसारिक कार्यों को विराम देकर ही उसे सच्ची शान्ति, आनन्द और प्रभु की प्राप्ति हो सकती है।

✻ विषयों की लालसा ही सारे दु:खों का मूल कारण है। मन्दबुद्धि लोग बड़ी मुश्किल से उसका त्याग कर पाते हैं। शरीर बूढ़ा हो जाता है किन्तु लालसा नित्य नवीन होकती जाती है अत: अपना कल्याण चाहनेवाले व्यक्ति को चाहिये कि वह इस लालसा, भोग वासना का परित्याग कर दे। इन्द्रियाँ बड़ी बलवान हैं। वे बड़े-बड़े विद्वानों को भी विचलित कर देती हैं। **आशा तृष्णा ना मिटे, मर-मर जाय शरीर।** अपनी युवती माँ, तरुणी बहन और जवान कन्या के साथ भी एकान्त में एक आसन पर सटकर नहीं बैठना चाहिये। इन्द्रियाँ बड़ी बलवान है। वे बड़े-बड़े विद्वानों को भी विचलित कर देती है।

✻ भोग विलास तो प्रत्येक योनि में प्राप्त हो जाता है। विष्ठाभोगी जीव भी इसका सुख ले लेते हैं, किन्तु मनुष्य शरीर विषय भोग या सुख-दु:ख भोगने मात्र के लिए नहीं है बल्कि दिव्य तप, स्वाध्याय करना भी इसी योनि में ही सम्भव है जिससे अन्त:करण शुद्ध होता है। अन्त:करण शुद्ध होने पर संग और कुसंग का भेद स्पष्ट दिखाई देने लगता है। वैसे शास्त्रों ने महापुरुषों का संग मोक्ष का तथा स्त्री कामियों का संग नरक द्वार बताया है। महापुरुष उनको समझना चाहिए जो सब में समभाव रखते हों, सबके हित चिन्तनक, सदाचार सम्पन्न परम शान्त हों जिन्हें स्त्री-पुत्र-परिवार से अरुचि हो।

✻ अपना मान खोकर दूसरों का सम्मान करना, नीतिबद्ध आचरण रखना, सुख-दु:ख, मान-अपमान, निन्दा और स्तुति में समभाव रखना, किसी को कष्ट न देना, मद और अहंकार से किसी को कष्ट न पहुँचाना ही सन्तता है।

✻ अपने को सबसे छोटा मानना, ऐसा आचरण करना जिससे किसी को कष्ट या असुविधा न हो। दूसरों को यदि अपने आचरण से कष्ट हुआ- असुविधा हुई तो सन्तता नहीं रह गई।

✻ सांसारिक वस्तुओं में मोह करना, ममत्व करना, अपना समझना ही बन्धन का कारण है। सबको भगवान की वस्तु समझना उनका उपयोग भगवान के लिए करना, उसे अपना न समझना ही मोक्ष प्रदायक हैं।

✻ जब कर्मवासनाओं के परिणाम स्वरूप हृदयग्रन्थि शिथिल हो जाती है तब दाम्पत्य भाव में भी शिथिलता आने लगती है और धीरे-धीरे विरक्ति आने लगती है तथा अहंकार त्याग करने के लिए मनुष्य साधन करने लगता है जैसे भगवत् चिन्तन, सत्संग, संकीर्तन आदि। पिता पुत्र को, गुरु शिष्य को, राजा प्रजा को निष्काम कर्म करने का उपदेश दें। पुत्र, शिष्य एवं प्रजा को बन्धन मुक्त कराने का दायित्व ही इन्हीं तीनों पर है। राजा, गुरु औरपिता के मोक्ष में, प्रजा, शिष्य तथा पुत्र आदि बाधक होता है तो उसे त्याग देना चाहिए या पुत्र, शिष्य या प्रजा के मार्ग में पिता, गुरु और राजा बाधक हो तो उनका भी त्याग कर देना चाहिए- ईश्वर प्राप्ति के लक्ष्य में कोई भी बाधक हो उसे त्याग देना ही श्रेयस्कर है।

* धर्म इसीमें है कि दूसरेको भी जीने दें। धर्म भी रहे और दूसरे भी जीये यह धर्म है। अपने जीवन के लिये अन्न चाहिये, वस्त्र, स्थान चाहिये। इसलिए दूसरोंको भी अन्न, वस्त्र, स्थान देना धर्म है। जीनेमें जो जो चीजें आवश्यक है- जैसे औषधि इत्यादि उन सबको देना धर्म है। आत्मा चित्तस्वरूप है मैं जानता हूँ और जानता रहूँ दूसरे भी जानें और जानते रहे। उनकी ज्ञान-बुद्धिमें मदद करना, उनको विद्या पढ़ाना, सत्संगकी सुविधा देना, वाचनालय खोलना सब प्रकारकी शिक्षा देना धर्म है। हम आनन्दमें अपनेको प्यार करते हैं और दूसरोंके प्यारे बना रहना चाहते हैं। दूसरोंको भी प्रेम मिलना चाहिए, आनन्द मिलना चाहिए। सबके लिए मनोरंजन चाहिए- संगीत, वाद्य, नृत्य यह सब धर्मके अन्तर्गत आता है। जैसे हम अपनी प्रधानता चाहते हैं, वैसे ही दूसरोंकी प्रधानता भी बनी रहे। इसका ख्याल रखना चाहिए कि सब मेल-मिलापसे रहे। न आपसमें फूट पड़े और न हम दूसरोंमें फूट डालें। धर्म और आनंद सच्चिदानन्द से ही मिलता है।

* हमारे मन, वचन और कर्म में शीलवत्ता बनी रहनी चाहिए। वे गुणोंके खजाने है। जो दूसरोंकी उन्नति और सम्पत्ति देखकर खुश होते हैं और दूसरेको दु:खी देखकर दु:खी होते हैं, उनका कोई शत्रु नहीं होता। वे सबका दु:ख मिटाते है और बाहर-भीतर सर्वत्र भगवानका ही दर्शन करते हैं।

* किसीको नमस्कार करनेसे अपना प्रभाव क्षीण नहीं होता। जो लोग किसीको नमस्कार करते देखकर करते हैं कि हमको इतना बड़ा आदमी नमस्कार करता है, इसलिए वह छोटा है और हम बड़े हैं यह उचित नहीं। वास्तवमें तो नमस्कार करनेवाला ही बड़ा है। उसके अन्दर विनयरूप सद्गुण है, वह निरहंकार है, जो अपनेको छोटा मानकर दूसरोंको नमस्कार करता है, और जिसको नमस्कार किया जाता है, उसमें यदि यह अभिमान है कि हम बड़े है तो वह वास्तवमें छोटा ही है। जिसमें विनय है, वह ही बड़ा है।

* जब मनुष्य उद्वेग की दशामें कोई काम करता है, तो उससे उद्विग्न करनेवाली वस्तु ही पैदा होती है। किन्तु जब वह शान्त, एकाग्र और स्वस्थ चित्तसे कोई काम करता है, तब वह अच्छी तरह पूरा भी कर लेता है और उससे दूसरोंको भी लाभ होता है।

* बिना श्रद्धा-विश्वासके मनुष्य जी नहीं सकता। उसका जीवन निर्वाह नहीं हो सकता। इसलिए श्रद्धा और विश्वासके संयोगसे मनुष्यकी उत्पत्ति होती है?

* पत्नीको पतिपर विश्वास होना चाहिए। जब पति बाहरसे आनेपर बतायें कि वे कहाँसे आ रहे हैं तो उसपर विश्वास करना चाहिए। यदि पति-पत्नीमें परस्पर विश्वास न हो तो घरमें नरक आजायेगा। एक-दूसरेके विश्वाससे ही गृहस्थी चलती है। इस प्रकार पवित्र रहना चाहिए कि कोई कलंक न लगने पावे। गौरवका भाव सदा बना रहना चाहिए। तिरस्कार-अपमान नहीं करना चाहिए। दमन- अपनी इन्द्रियोंको, जीभको, आँखोंको काबूमें रखना चाहिए। हर समय भोगकी लालसा नहीं रखनी चाहिए। बराबर सेवा-परायण रहे। सद्भाव रखें और बोलनेमें यह नहीं समझे कि हम जो चाहें कह सकतें हैं, हमारा आपसमें प्रेम हैं, इसलिए हमें बोलनेकी स्वतन्त्रता है। नहीं, तू तड़ाककी बोली कभी अच्छी नहीं होती। झगड़ा वचनोंमें-से ही निकलता है। जब आदमी रूखा बोलने लगता है और सामनेवालेकी परवाह नहीं करता तब उसीमें-से दुर्भाव निकल आता है। इसलिए वाणी हमेशा ऐसी बोलनी चाहिए, जो मधुक्षरण करती हो। आपकी वाणीसे जो भी निकले, वह मीठा ही निकले तो आपको अपना दिल भी मीठा बनाना पड़ेगा। बाहरकी साधारण मधुर वाणी भी आपके हृदयको मधुर बना देती है।

* पत्नीको काम, दम्भ, द्वेष, लोभ, पाप, अभिमान छोड़ देना चाहिए। कभी किसी काममें यह प्रमाद नहीं करना चाहिए। प्रमाद और आलस्यमें थोड़ा अन्तर होता है। आलस्यमें काम तो याद रहता है, परन्तु मनुष्य उसे टाल देता है,

समयपर नहीं करता। प्रमाद उसको कहते हैं कि समयपर याद न आये कि क्या काम करना है? पत्नीको निरन्तरसेवाके लिए उद्यत रहना चाहिए। किसी भी समय कोई अतिथि आ जाये तो उसको भोजन करानेके लिए तैयार रहना चाहिए।

❋ लोह की जंजीर तोड़ना तो सरल है, मगर मोह के कच्चे धागे को तोडना महादुष्कर है।। देह और देहके सम्बन्धसे जो मैं और मेरा है उसीका नाम मोह है। वर्तमानमें जो मैं-मेरा है, वह हमारे साथ चले, इसका नाम मोह है। यह मैं, मेरा चित्तकी विपरीतता है। या तो हम यह कहते है कि यह प्रकृतिका है और न कहते तो भगवान का है। यह तो सिर्फ प्रतीतिमात्र है लेकिन मोह के वशीभूत न तो हम प्रकृति को मानते है, न ईश्वर को। संसार मिटानेकी जरूरत नहीं है, परन्तु इसमें जो बेवकूफीपकड़ है, उसे मिटानेकी जरूरत है।

❋ किसी पर पराश्रित होना विवशता भी हो सकता है परंतू स्वयं को पंगु मानकर दूसरों के सहारे पर पूरे जीवन सफर को तय करने का प्रयास घोर लज्जा और शर्मनाक विषय है। ऐसा मनुष्य पूरी तरह निष्क्रिय हो जाता है। चारों ओर से व्यंग बाणों की वर्षा निकलती है। मानसिकता प्रभावित होती है इससे पराश्रित व्यक्ति का स्वाभिमान भी जागृत होता है। पराश्रित व्यक्ति के शरीर को आलस्य अपना स्थायी निवास बना लेता है। आलस्य से क्षणिक आवेश में कुछ करने की कोशिश करता है लेकिन शीघ्र ही टूट जाता है। जीवन की शुरूआत में उसे तन, मन का अपेक्षित सहयोग नहीं मिलता। यह ठीक है कि बचपन में हम अपने माता-पिता पर निर्भर रहते हैं पर जब हम युवा हो जाते हैं तो हमारा ही दायित्व बनता है खुद की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए धनार्जन करें। हममें जब आत्मविश्वास और स्वाभिमान पैदा होगा तब शरीर अपनेआप श्रमयोग्य हो जाएगा और पसीने की छलकती बूंदे अपनेआप आत्मसंतुष्टि देंगी।

❋ मनुष्यकी मजबूरियां ही उसे बर्बाद कर देती है। जब उसके पास धन का अभाव हो, पैसा पास में न हो तो वो गलत रास्ते अपनाने लगता है। हर किसीके दिल में तमन्ना होती है की मैं धनवान बनूँ, पैसेवाला बनूँ, पर उसे जब कोई रास्ता नहीं सूझता तब वो गलत कदम उठा लेता है। पैसा यदि पास में हो तो हजारों मित्र बन जाएंगे, पर पैसा पास में नहीं हो तो कोई भी पास नहीं फटकता। इसलिए हिम्मत न हारते हुए कदमों को गलत रास्तेपर न ले जाकर अपनी परिस्थितियों का सामना करना चाहिए।

❋ जीवन एक संतुलन का नाम है। जो लोग मुश्किलों में जी लेते है वे ही सुख पाने के अधिकारी होते हैं। हमें परिस्थिति स्वीकार करनी चाहिए और उसीके अनुसार जीना सीख लेना चाहिए। ऐसा कोई कदम नहीं उठाना चाहिए जिसमें ज्यादती हो। न ज्यादा बोले, न ज्यादा मौन रहे। लोगोंसे मिलना, जुलना उनसे सीखना भी जरूरी होता है। कुछ लोग पैसे को ही सबकुछ मान बैठते है। पैसे की चाहत जीवन के साथ-साथ निजी जीवन को भी प्रभावित करती है। आवश्यकता से अधिक धन होने की भूख अपनों से दूर कर देती है। व्यक्ति समाज से कटने लगता है। अपने आखिरी जीवन में समझ में आता है पैसा, धन तो व्यर्थ की चीज है एक सीमा से अधिक यह किसी काम का नहीं। जब परिवारवाले, अपने ही निजजन आपका तिरस्कार करने लगते है। यह समझमें आने तक बहुत देर हो चुकी होती है। जीना इस तरह चाहिए न तो खुशी मिलने पर बेहद प्रसन्न हो और न ही दु:ख मिलनेपर आवश्यकता से अधिक गम करे। गम और खुशी, सुख और दु:ख जीवन की धूप-छाँव है। अन्धेरे के बाद प्रकाश आता है और प्रकाश के बाद अंधेरा। सुख-दु:ख तो ढलती छाया है।

❋ जन्म भी दु:ख है, बुढ़ापा भी दु:ख है, मृत्यु भी दु:ख है। शोक, रुदन, रोना, पीटना, मन की चिन्ता व हैरानी दु:ख है। अप्रिय से मिलन, प्रिय से वियोग दु:ख। मनुष्य जिसकी इच्छा करता है उसे नहीं पाता तो दु:ख हैं और जिसकी इच्छा नहीं

करता वो मिल जाये तो भी दु:ख है। मनुष्य दु:ख का विनाश और सत्य का मार्ग चाहता है। जिसपर चलकर मनुष्य दु:खोंका अन्त कर निर्माण (मुक्ति) को प्राप्त हो सकता है।

✻ बहुत से मनुष्य और देवताओंने भगवान से पूछा- अपने सुखी जीवन एवं कल्याण की इच्छा रखनेवाले कौन से मंगल कर्म है? जिनके पालन से जीवन सुखी हो सकता है? भगवान बोले- अपने जीवन को सुखी बनाने के लिये बुद्धिमानों की संगति करना व अपने पूज्यों में, माता-पिता, गुरुजन, साधु-श्रमणों की पूजा करनी चाहिए। अनुकूल स्थानों पर निवास या विचरण करना चाहिए। अपने को अच्छे सुख एवं नैतिक मार्ग पर लगाए रखना चाहिए। मनुष्य को अपनी ज्ञानेन्द्रियां खुली रखनी चाहिए, जिससे वह चारों ओर का ज्ञान प्राप्त कर सके। शिल्प सीखना, शिष्ट व्यवहार करनेवाला, सुशिक्षित (नैतिक शिक्षा) एवं मृदुभाषी (मीठा बोलनेवाला) होना चाहिए। मनुष्य को अपने माता-पिता की सेवा तथा पत्नी व बच्चों का पालन-पोषण करना चाहिए और कोई गलत (अनैतिक) कार्य नहीं करना चाहिए। मनुष्य को सामर्थ्य के अनुसार दान देना, धर्म के अनुसार आचरण करना, भाई-बहन व रिश्तेदारों का आदर-सत्कार करना व दोषरहित कार्य करना चाहिए। मन, वचन, कर्म से सभी प्रकार के छोटे-बड़े पापों को त्यागना, नशीले पदार्थों, जैसे-शराब, भांग, गांजा, अफीम आदि का त्याग करना व धार्मिक, नैतिक, शुभ व मंगल कर्मों को करने के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए। स्वयं पर गौरव करना, नम्र होना, प्रत्येक स्थिति में संतुष्ट रहना, दूसरों के एहसान मानना और ठीक समय पर धर्म का उपदेश सुनते रहना चाहिए। मनुष्य को हमेशा क्षमाशील तथा आज्ञाकारी होना चाहिए और उचित समय पर धार्मिक चर्चा करनी चाहिए। मनुष्य का जीवन तप पूर्ण होना चाहिए। मन सदा निर्वाण (मुक्ति) की ओर लगाये रखना चाहिए।

✻ मनुष्य का मन सुख-दुख, लाभ-हानि, जय-पराजय व यश-अपयश जैसे लोक धर्मों से विचलित नहीं होना चाहिए। शोक नहीं करना चाहिए, पवित्र व बिना भय के रहना चाहिए। मनुष्य का जीवन दु:खों व तकलीफों से भरा हुआ है। दुख जगत में एक ऐसा सत्य है, जो जीवन के साथ लगा रहता है। दु:ख के बिना मनुष्य के जीवन की कल्पना करना ही असंभव है।

✻ दोस्ती का दुश्मन दगा है- और जो दगा न करे वही सगा है।

✻ दो दो बात करने से काम बनता है। दो दो हाथ करने से काम बिगडता है।

✻ दुनिया इक तमाशा है, लोग तमाशबीन है। तुम जैसा तमाशा दिखलाओगे, देख लेंगे। लेकिन याद रहे तमाशे की कीमत केवल तालियाँ है।

✻ हर रोग की दवा है, पर दवा से मरनेवालों का कोई इलाज नहीं।

✻ कागज की नाव लेकर आग की दरिया में उतरना बुद्धिमानी नहीं है।

✻ जिसे नंगापन रास आ गया, उसे कपडे दिखाकर नहीं ठगा जा सकता।

✻ गरीब के मुँह पर गरीबी का बखान करना उसका शीलहरण करना जैसा है। कभी भी किसी गरीब की बद्दुआ मत लीजिये। उसकी हाय में लोहा को भी भस्म करने की ताकत होती है।

✻ पहाड से गिरने की अपेक्षा नजर से गिरना अधिक खतरनाक है।

दूसरों की नजर से भले ही गिरो, लेकिन अपनी नजरों से कभी मत गिरो।।

✻ आदमी अपने गुणों, संगति एवं व्यवहार से पहचाना जाता है, न कि अपनी पोशाक से।

✻ जीवन तभी कष्टमय होता है, जब वस्तुओं की इच्छा करते हैं और मृत्यु तभी कष्टमयी होती है, जब जीने की इच्छा करते है।

* प्रतिकूलताओं से डरो नहीं। उनका धैर्य और साहस से सामना करो। कठिनाइयाँ ही आदमी को निखारती है। सोना आग में तपने के बाद ही कुन्दन बनता है।

* सुर्खरू होता है इंसां ठोकरें खाने के बाद। रंग लाती है हीना पत्थर पे घिसने के बाद।।

* जो सभी का होता है, वही हमारा होता है। जो किसी भी समय किसी का नहीं होता, वह हमारा हो ही नहीं सकता।

* धन से वस्तु श्रेष्ठ है, वस्तु से मनुष्य श्रेष्ठ है, मनुष्य से विवेक श्रेष्ठ है और विवेक से भी परमात्मा श्रेष्ठ है।

* जो स्वयं सेवा करने के लिये आगे आता है, वह स्वयं सेवक। जो निरन्तर कार्य करता है, वह कार्यकर्ता। जो अधिक कार्य करे- वह अधिकारी। इनको कुर्सी से क्या लेना देना?

* भूल करना मानव का स्वभाव है, लेकिन उसे स्वीकार कर उसमें सुधार करना मानवता है, अन्यथा भूल-कर्ता को निगल जाती है।

* दूसरे भी हमारे लिये वैसे ही हैं जैसे हम दूसरों के लिये हैं।

* अच्छाइयों को जानना अच्छी बात है, पर अच्छा होना बड़ी बात हैं।

* जोखिम उठाना कर्मवीर की निशानी है। खतरों से खेले बिना खोखलापन दूर नहीं होता। जंग में घुड़सवार ही गिरते हैं। जिसने कभी घोड़े की सवारी ही नहीं की वो भला क्या गिरेगा।

*** धन से क्या खरीद सकते है?**

धन से शैया खरीदी जा सकती है नींद नहीं। धन से पुस्तकें खरीदी जा सकती है ज्ञान नहीं।

धन से भोजन खरीदा जा सकता है हाजमाशक्ति नहीं। धन से दवाएं खरीदी जा सकती है स्वास्थ्य नहीं।

धन से मकान खरीदा जा सकता है घर नहीं। धन से विलासिता खरीदी जा सकती है सभ्यता नहीं।

धन से आमोद प्रमोद खरीदी जा सकती है खुशी नहीं। धन से प्रसाधन सामग्री खरीदी जा सकती है सुन्दरता नहीं।

धन से देवालय खरीदा जा सकता है निर्मलता नहीं। धन से आज्ञाकारी सेवक खरीदा जा सकता है सम्मान नहीं।

धन से नौकर खरीदा जा सकता है मित्र नहीं। धन से धन खरीदा जा सकता है समानता नहीं।

धन से विषय सुख खरीदा जा सकता है प्यार नहीं। धन से आदमी खरीदे जा सकते है विश्वास नहीं।

धन से वस्तुएं खरीदी जा सकती है शान्ति नहीं। धन से सामाजिक स्थिति खरीदी जा सकती है कुलीनता नहीं।

धन से मान्यता खरीदी जा सकती है प्रतिष्ठा नहीं। धन से पदवी खरीदी जा सकती है महानता नहीं।

धन से सेवा खरीदी जा सकती है स्वामिभक्ति नहीं। धन से शक्ति खरीदी जा सकती है प्रभाव नहीं। धन से इंसान खरीदे जा सकते हैं इन्सानियत नहीं।

* डरे हुए को अभय दान दो, भूखे को अनाज का दान। प्यासे को जल दान करो, अपमानित को आदर सम्मान। विद्यादान करो अनपढ़ को, विपद ग्रस्त को आश्रय दान। वस्त्रहीन को वस्त्र दान दो, रोगी को औषध का दान। धर्म रहित को धर्म सिखाओ, शोकातुर को धीरज दान। भूले को सन्मार्ग बता दो, गृह-विहिन को दो गृह-दान। करो सभी निस्वार्थ भाव से, मन में कभी न हो अभिमान। अपने सम सबहीं को मानो, फिर किस पर किसका अहसान। इन बारह पुष्पों से, प्रभु का करता जो अर्चन ओ ध्यान। हो निष्काम प्रेम युत, उसको निश्चय मिलते हैं भगवान।

* पति अपनी पत्नी के लिए और पत्नी अपने पति के लिए मधुर और शांतिदायक वाणी का इस्तेमाल करे। सुबह उठने के पश्चात् छोटे अपने बड़ों का चरण स्पर्श करें। इसी तरह बड़ों का कर्त्तव्य है कि वे अपने से छोटों के प्रणाम का

स्नेह भरे स्वर में या मौन आशीष दें। बराबर वालों में परस्पर एक दूसरे का प्रेमपूर्ण अभिवादन होना चाहिए।

* लकीरों पर चलना धर्म नहीं है अंधविश्वास है।

* कर्तव्य पालन करने से हमारे धर्मको बल मिलता है। एक परिमित मात्रामें जो मिल जाये, उसमें सन्तुष्ट रहो। न अधिककी आकांक्षा करो और न कम पाकर विचलित होओ। आहार-विहार नियमित रखो। कम बोलना, एकांतमे वास करना, शांतिसे रहना, लोगोंके प्रति मैत्रीकी भावना रखना, दु:खीसे दयाका बर्ताव रखना, इन्द्रियोंका संयम रखना, अपना देह तथा देहके सम्बन्धियोंके प्रति मैं-मेरेका भाव न करना ही धर्म है। नियम से भोजन करना चाहिए, न अधिक खाना, न कम खाना।

* भोजनके सम्बन्धमें उसकी मात्रा मर्यादित होनी चाहिए, अमात्र भोजन नहीं करना चाहिए। अमात्र केवल ब्रह्म ही होता है, संसारकी कोई अन्य वस्तु नहीं। ब्रह्म के सिवाय यदि कोई दूसरी वस्तु मर्यादाका उलंघन करेगी, तो वह मार डालेगी, स्वयं फट जायेगी, अथवा फाड़ डालेगी। भोजन हमेशा यज्ञ अवशिष्ट भोजन हो अर्थात जो भोजन कर रहे हैं वो हवन के योग्य है या नहीं। भगवान उसका भोग लगा सकते है या नहीं? वैष्णव भोग बहुत पवित्र भोग्य है। अपने भोजनमें तुलसीदल डाल सकते हैं तो वह पवित्र भोजन है। भोजन में पवित्रता और मात्रा दोनों भी होनी चाहिए। भोजन में तीन दोष बताये गये हैं- एक तो पदार्थ में जाति-दोष नहीं होना चाहिए- जैसे मांस आदि। दूसरे में आश्रय-दोष नहीं होना चाहिए- जैसे उसका पात्र और स्थान और उसको तैयार करनेवाला आदमी पवित्र होना चाहिए। तीसरा दोष- बाहरसे कोई अशुद्ध वस्तु नहीं मिलानी चाहिए और अपनी ईमानदारी का कमाई का होना चाहिए।

* हमेशा एकांत और पवित्र देश में रहना चाहिए। किसीको सताना नहीं चाहिए। सच बोलना चाहिए, अन्यथा झूठको सच बनानेके लिए बहुत परिश्रम करना पड़ता है। दूसरेका माल कभी न लें और अपने हककी कमाईपर ही निर्भर करें। जितना प्रयोजन हो उतनी वस्तु अपने पास रखनी चाहिए। ब्रह्मचर्य, तपस्या, पवित्रता, स्वाध्याय, भगवत्पूजा, मौन, स्थिर आसन, प्राण-जय, इन्द्रियोंका प्रत्याहार यह सब करते हुए भगवान्‌की लीलाओंको ध्यान द्वारा चित्तको समाहित होकर श्रवण करना चाहिए।

* अपने धर्म का पालन करना सबसे महान है। वास्तवमें अपनी आत्माकी ओर लौटनेका नाम ही अध्यात्मयोग है। आत्माओंको जान लेने और उससे एक होनेका नाम ही अध्यात्मयोग है। अध्यात्मयोग में न राग, न द्वेष, न अपना, न पराया। सारा भेद मिट जाता है। पवित्र कर्म करना, किसीको दु:ख नहीं पहुँचाना, भगवान की मूर्ति का पूजन, दर्शन, स्पर्श आदि करना, जो प्राणी सामने आये, उसमें भगवानकी भावना करना, कहीं आसक्ति न करना और बड़ोंका सत्कार करना। सबके प्रति समदर्शी होना, मनुष्यको सबके भीतर एक ईश्वरकी भावना करनेका शिक्षण नहीं मिले तो वह अभिमानी हो जाता है। इसलिये अपनेसे महान्‌का आदर करो, दीनोंपर कृपा करो और जो समान हैं उनसे मैत्री जोड़ो। यम-नियमका पालन करो, आध्यात्मिक विषयोंका श्रवण करो, नाम-संकीर्तन करो, सरलता बनाये रक्खो, श्रेष्ठ पुरुषोंका संग करो और अभिमानका त्याग करो इनसे मनुष्यका हृदय शुद्ध होता है। फिर श्रवणमात्रसे हृदयमें भक्ति आ जाती है। इसतरह से तुम निर्विकार आत्मा के दर्शन कर पाओगे। <u>जिसके हृदयमें ईश्वरकी भक्ति नहीं, उसका वेदमें कोई अधिकार नहीं हो सकता</u>।

* मनुष्य अपने सुखके लिए कष्टसे कितनी चीजोंको पकड़ता है और वही चीज उसके हाथसे छीन जाती है। इस दुनिया में कोई किसीका कुछ भी नहीं रहता। मनुष्य कहता है कि अमुक वस्तुसे हमें सुख प्राप्त होगा पर सुख न तो मकान में है, न पुत्र से, न शरीर से, न पत्नी से, न धन से है, सुख तो सिर्फ ईश्वरसे प्राप्त होगा। शरीर तो मरणाधर्मा है। लोगोंको इस मरनेवाले शरीरके मरनेका ख्याल नही आता। मनुष्य जानता है कि आत्मा अजर, अमर है। पर वे देहसे एकाकार होनेपर देहको ही अजर-अमर

मान बैठता है। मनुष्यके पास कितना ही धन हो जाएं उसको लगेगा कि यह धन उसके पास ही रहेगा पर थोड़े ही समय में कितने ही कंगालसे करोड़पती और करोड़पति से कंगाल होते देखा है। जहां भी मनुष्य जाता है अपने मैं के कारण वही उसका मोह हो जाता है। जीव जब भी नरकमें भी जाता है तो उसे इतना सुख प्राप्त होता है कि वह इस शरीरको छोड़ना नहीं चाहता। वहाँ भी उसके पत्नी-पुत्रादि इकट्ठे हो जाते हैं और वह उनका भार उठाते-उठाते दु:खोंकी अग्निमें जलता है। जो स्त्री अपनी पतिकी नहीं हुई, वह दूसरे पुरुषसे एकान्तमें बड़ी मीठी-मीठी प्रेमकी बातें करती हैं। क्या वह उसकी हो जायेगी। ये गृहस्थ लोग ऐसे कूटधर्मी होते हैं कि पत्नी की बात मातासे और माताकी बात पत्नीसे नहीं कह सकते है। बेटे की बात भाई से नहीं कह सकते। फिर भी कहते हैं हमें बड़ा भारी सुख मिला। निश्चय ही उसे कोई सुख नहीं मिलता। बल्कि जो अधिक दु:ख था वो ही कुछ कम हो सकता है। दु:ख कम होनेका मतलब सुख मिलना नहीं होता।

* अपने देहका पालन-पोषण करने से यह आपको पतन की ओर ले जायेगा। जब आदमीका रोजगार नहीं चलता, उससे कुटुम्बका भरण-पोषण नहीं होता, उसके सब उद्यम वृथा हो जाते हैं और मरनेकी स्थितिमें आ जाता है तब उसके पुत्र, पत्नी, माता-पिता, भाई, कुटुम्बी, रिश्तेदार भी नहीं पूछते। अनेक पत्नियों, पतियों, माताओं, पिताओं, पुत्रों और भाईयोंको देखा है, जो मनुष्य असमर्थ हो जानेपर यह कहते सुना- भगवान मुझे धरती से उठा ले तभी अच्छा है। उनकी सेवा-सुश्रूषा करते हम हैरान हो गये। जैसे किसान लोग बूढ़े बैल का आदर नहीं करते, वैसे ही बूढ़े आदमी का आदर यह संसारी और भोगी जीव लोग नहीं करते। इतना होनेपर भी मनुष्य को वैराग्य नहीं आता। मृत्यु उसके सामने खड़ी है, घरवाले लोग उसे ऐसे भोजन देते हैं जैसे कुत्तेको देते हैं। शरीर में अनेक व्याधियां हो जाती है, उसे काम नहीं होता। घरके लोग ऐसे बूढ़े आदमी से परेशान होकर उसे वृद्धाश्रम या तीर्थाश्रम में भेजने का निर्णय लेते हैं और कहते है वहां उनके रहने, खाने-पीने के लिये रुपया भेज दिया करेंगे। इसतरह वृद्धावस्था आनेपर मनुष्य अपने परिवार पर भार बन जाता है और उसके बुलानेपर भी कोई उसके पास नहीं जाता। अंत में उसे मरना ही पड़ता है। यौन अवस्था में जुआ खेलते समय वो यही सोचता है शायद जीत जायें, शायद नहीं भी जीते। हार भी हो सकती है। ऐसे व्यक्तियों को जुआ नहीं खेलनी चाहिए। यदि परलोक में जाना पड़ा तो अपने पापोंका फल भोगना पड़ेगा यही सोचकर मनुष्यको पापसे बचना चाहिए। इसलोक में कोई मनुष्य सुखी तो कोई दुखी है। यही पर कोई स्वर्ग भोग रहा है, तो कोई नरक भोग रहा है। दूसरी तरफ एक साधु है जनके पास न खानेके लिए रोटी है, न सोनेके लिए मकान, न पहनने के लिए कपड़ा है फिर भी जब वह सड़कपर निकलता है तो मस्त होकर, खुश होकर भ्रमण करता है। एक करोड़पति सेठ है जो बीमार रहते हैं, उनके दु:खका ठिकाना नहीं, जब पदार्थ उपलब्ध है तो बीमार है, भूख नहीं लगती, खाया नहीं जाता। इसलिए वस्तुओं मे सुख नहीं है यह तो लोगोंका मिथ्या भ्रम है। जो बेईमान है वे नरक में है, जो ईमानदार है वे स्वर्ग में है। जो अपना-पराया करते हैं, भयंकर पाप करते हैं, उनको नरक में जाना पड़ता है।

* मनुष्य-जीवन के समयको अमूल्य और क्षणिक समझकर उत्तम-से-उत्तम काम में व्यतीत करना चाहिये। एक क्षण भी व्यर्थ नहीं बिताना चाहिये।

* यदि किसी कारणवश कभी कोई क्षण भगवत्-चिन्तनके बिना बीत जाय तो उसके लिये पुत्रशोकसे भी बढ़कर घोर पश्चात्ताप करना चाहिये, जिससे फिर कभी ऐसी भूल न हो।

* जिसका समय व्यर्थ व्यय होता है, उसने समय का मूल्य समझा ही नहीं।

* मनुष्यको कभी निकम्मा नहीं रहना चाहिये; अपितु सदा-सर्वदा उत्तम-से-उत्तम कार्य करते रहना चाहिये।

* मनसे भगवान्का चिन्तन, वाणीसे भगवान्के नामका जप, सबको नारायण समझकर शरीरसे जगज्जनार्दनकी

नि:स्वार्थ सेवा यही उत्तम-से-उत्तम कर्म है।

* बोलनेके समय सत्य, प्रिय, मित और हितभरे शास्त्रानुकूल वचन बोलने चाहिये।

* अपने दोषोंको सुनकर चित्तमें प्रसन्नता होनी चाहिये।

* यदि कोई हमारा दोष सिद्ध करे तो उसके लिये जहाँतक हो, सफाई नहीं देनी चाहिये; क्योंकि सफाई देनेसे दोषोंकी जड़ जमती है तथा दोष बतलानेवालेके चित्तमें भविष्यके लिये रुकावट होती है। इससे हम निर्दोष नहीं हो पाते।

* यदि हम निर्दोष हैं तो दोष सुनकर हमें मौन हो जाना चाहिये, इससे हमारी कोई हानि नहीं है और यदि सदोष हैं तो अपना सुधार करना चाहिये।

* दोष बतलानेवालेका गुरुतुल्य आदर करना चाहिये, जिससे भविष्यमें उसे दोष बतलानेमें उत्साह हो।

* अपने निकट-सम्बन्धीका दोष सहसा नहीं कहना चाहिये, कहनेसे उसको दु:ख हो सकता है; जिससे उसका सुधार सम्भव नहीं।

* यदि कहीं किन्हींसे काम लेना हो तो उनको अपने पास न बुलाकर उन्हींके पास जाना चाहिये।

* सादगीसे रहना चाहिये।

* स्वावलम्बी बनना चाहिये।

* जीवनको अधिक खर्चीला नहीं बनाना चाहिये। ऋषि-मुनियोंका जीवन खर्चीला नहीं था। अधिक खर्चीला जीवन मनुष्यको रुपयों और दूसरे पुरुषोंका दास बना देता है, जिसके कारण अनेक पाप करने पड़ते हैं और दर-दर भटकना पड़ता है।

* शरीर निर्वाहके लिये भी अनासक्तभावसे ही पदार्थोंका उपयोग करना चाहिये।

* भोजनके समय स्वादकी ओर ध्यान नहीं देना चाहिये; क्योंकि वह पतनका हेतु है। स्वास्थ्यकी ओर लक्ष्य रखना भी वैराग्यमें कमी ही है।

* कल्याणकामी पुरुषको तो वैराग्ययुक्त चित्तसे केवल शरीर-निर्वाहके लिये ही भोजन करना चाहिये।

* व्यवहारके समय भजन-ध्यानमें मुख्य वृत्ति और संसारी कामोंमें गौण वृत्ति रखनी चाहिये।

* सोते समय भी भगवान्‌के नाम, रूपका स्मरण विशेषतासे करना चाहिये, जिससे शयनका समय व्यर्थ न जाय। शयनके समयको साधन बनानेके लिये सांसारिक संकल्पोंके प्रवाहको भुलाकर भगवानके नाम, रूप, गुण, प्रभाव और चरित्रका चिन्तन करते हुए ही सोना चाहिये।

* अपने ऊपर भगवान्‌की अहैतुकी दया और प्रेम समझकर हर समय प्रसन्न रहना चाहिये।

* सब प्राणियोंपर हेतुरहित दया और प्रेम करना चाहिये।

* एकान्तमें मनको सदा यही समझाना चाहिये कि परमात्माके सिवा किसीका चिन्तन न करो; क्योंकि व्यर्थ चिन्तनसे बहुत हानि है।

* भगवान्‌के समान अपना कोई भी हितैषी नहीं हे, अत: अपने अधीन सब पदार्थोंको और अपने-आपको राजा बलिकी भाँति भगवान्‌के समर्पण कर देना चाहिये।

* भगवत्प्राप्तिके लिये मनुष्यको पात्र बनना चाहिये। पात्र बननेपर भगवान स्वयं ही शीघ्र दर्शन दे सकते हैं।

* सुननेवालोंकी इच्छाके बिना वक्ताको सत्संगके रहस्यकी बातें नहीं सुनानी चाहिये।

* जहाँ व्याख्यानदाता बहुत हों, वहाँ जहाँतक हो व्याख्यान न दे।

* पूजा-प्रतिष्ठा, ऊँचे आसन और ऊँचे पदसे सदा ही दूर रहना चाहिये।

* जहाँतक हो, गुरु बननेकी इच्छा कभी न करे।

* किसी सम्बन्धीकी मृत्यु सूचना मिलनेपर, जहाँ आवश्यकता हो, वहाँ जाना चाहिये; किंतु अपने घरमें किसीके मरनेपर, जहाँतक हो, दूरस्थ कुटुम्बियोंको आनेके लिये सभ्यतापूर्वक निवारण कर देना चाहिये।

* दहेज और दान देना चाहिये; किंतु जहाँतक हो, लेनेसे बचना चाहिये।

* जहाँतक हो, पंच न बनना चाहिये। बने तो पक्षपात नहीं करना चाहिये।

* जहाँतक हो, सगाई (वाग्दान)- विवाह आदि सम्बन्ध करानेके कामसे दूर रहना चाहिये।

* ब्राह्ममुहूर्तमें उठना चाहिये। यदि सोते-सोते ही सूर्योदय हो जाय तो दिनभर उपवास और जप करना चाहिये।

* एकान्तके साधनको मूल्यवान बनानेके लिये संध्या, गायत्रीजप, ध्यान, पूजा, पाठ, स्तुति, प्रार्थना, नमस्कार आदिके अर्थ और भावको समझते हुए ही निष्कामभावसे श्रद्धा भक्तिपूर्वक नित्य करना चाहिये।

* भगवत्प्राप्ति पवित्र और एकान्त देशका सेवन, सत्संग और स्वाध्याय, परमात्माका ध्यान और उसके नामका जप, निष्कामभाव, ज्ञान, वैराग्य और उपरति- इनके समान कोई भी साधन नहीं है।

* द्विजातिमात्रको उचित है कि नित्य सूर्योदय और सूर्यास्तसे पूर्व ही संध्योपासना और गायत्री जप करे।

* भगवान्‌के नाम-रूपको याद रखते हुए ही सामाजिक, व्यावहारिक, आर्थिक आदि कार्य न्यायपूर्वक नि:स्वार्थ-भावसे करे; क्योंकि अपनी सारी चेष्टा नि:स्वार्थभावसे दूसरेके हितके लिये करनेसे ही कल्याण होता है।

* स्नान और नित्यकर्म किये बिना दातुन और जलके सिवा कुछ भी मुखमें न ले।

* श्री भगवानके भोग लगाकर तथा यथाधिकार बलिवैश्वदेव करके ही भोजन करे।

* तुलसीदलके सिवा चलते-फिरते या खड़े हुए भी कोई भी चीज कभी न खाय।

* भोजनके आदि और अन्तमें आचमन करे।

* एकान्तमें दो आदमी बात करते हों तो उनकी सम्मतिके बिना उनके समीप न जाय।

* जीवहिंसाको बचाता हुआ चले।

* घी, दूध, शहद, तेल, जल आदि तरल पदार्थ छानकर काममें ले।

* कर्त्तव्यका पालन न होनेपर तथा अपनेसे बुरा काम बन जानेपर पश्चात्ताप करे, जिससे कि फिर कभी वैसा न हो।

* कर्त्तव्यकर्मको झंझट मान लेनेपर वह भाररूप हो जाता है, विशेष लाभदायक नहीं होता।

* वही कर्म भगवान्‌को याद रखते हुए प्रसन्नतापूर्वक मुग्ध होकर किया जाय तो बहुत ऊँचे दर्जेका साधन बन जाता है।

* अकर्मण्यता (कर्तव्यसे जी चुराना) महान् हानिकारक है। पापका प्रायश्चित्त है, किंतु इसका नहीं। अकर्मण्यताका त्याग ही इसका प्रायश्चित्त है।

* कर्त्तव्यपालनरूप परम पुरुषार्थ ही मुक्तिका मुख्य साधन है।

* धनका प्राप्त होना यद्यपि अपने वशकी बात नहीं है, तथापि मनुष्यको शरीर निर्वाहके लिये कर्त्तव्यबुद्धिसे न्याययुक्त परिश्रम तो अवश्य करना चाहिये।

* सुख-दु:ख आदिके प्राप्त होनेपर उनको भगवानका मंगल-विधान समझकर हर समय परम संतुष्ट रहना चाहिये।

* उत्तम कामको शीघ्रातिशीघ्र करनेकी चेष्टा करे, क्योंकि शरीरका कोई भरोसा नहीं है।

✻ जिसमें प्राणियोंकी हिंसा होती हो, ऐसी किसी चीजको व्यवहार में न लावे।

✻ रेशम और तूष काममें न ले।

✻ हिंसायुक्त शहद, मृग-चर्म और कस्तूरी काममें न ले।

✻ जहाँतक हो, कारखानेकी बनी चीजें खानेके काममें न ले।

✻ सदा-सर्वदा ईश्वरपर निर्भर रहना चाहिये। इससे धीरता, वीरता, गम्भीरता, निर्भयता और आत्मबलकी वृद्धि होती है।

✻ महापुरुषोंके आचरणसे बढ़कर कोई अनुकरणीय आचरण नहीं। भगवद्भावसे बढ़कर कोई भाव नहीं। समतासे बढ़कर कोई न्याय नहीं। सत्यके समान कोई तप नहीं। परमात्माकी प्राप्तिके समान कोई लाभ नहीं। कुसंगके समान कोई शत्रु नहीं।

✻ दयाके समान कोई धर्म नहीं, हिंसाके समान कोई पाप नहीं, ध्यानके समान कोई साधन नहीं, ऋणके समान कोई दु:ख नहीं, ज्ञानके समान कोई पवित्र नहीं, ईश्वरके समान कोई इष्ट नहीं, पापीके समान कोई दुष्ट नहीं- ये सब अपने अपने स्थानपर अपने-अपने विषयमें सबसे बढ़कर प्रधान हैं।

✻ कामीके साख नहीं, लोभीके नाक नहीं, क्रोधीके बाप नहीं, अज्ञानीके थाप नहीं, भक्तके शाप नहीं, नास्तिकके जाप नहीं, ज्ञानीके माप नहीं अर्थात् इन लोगोंपर इन पदार्थोंका प्रभाव नहीं पड़ता।

✻ गंगाके समान कोई तीर्थ नहीं, गौके समान कोई सेव्य नहीं, गीताके समान कोई शास्त्र नहीं, गायत्रीके समान कोई मन्त्र नहीं एवं गोविन्दके समान कोई देव नहीं। गंगा-स्नान, गौकी सेवा, अर्थसहित गीताका अभ्यास, गायत्रीका जप और गोविन्दका ध्यान- इनमेंसे किसी एकका भी निष्कामभाव और श्रद्धा भक्तिपूर्वक सेवन करनेसे कल्याण हो सकता है।

✻ जिसने सत्य, अहिंसा, क्षमा, दया, समता, शान्ति, संतोष, सरलता, तितिक्षा, त्याग आदि शस्त्र धारण कर रखे हैं, उसका कोई भी शत्रु किंचिन्मात्र भी अनिष्ट नहीं कर सकता।

✻ आचरणोंके सुधारकी जड़ स्वार्थका त्याग है।

✻ झूठसे बचनेके लिये जहाँतक हो, भविष्यके निश्चित वचन नहीं कहने चाहिये।

✻ संसारके किसी भी पदार्थसे आसक्ति नहीं करनी चाहिये; क्योंकि आसक्ति होनेसे अन्त कालमें उसका संकल्प हो सकता है। संकल्प होनेपर जन्म लेना पड़ता है।

✻ निन्दा-स्तुति आदि सुनकर जरा भी हर्ष-शोक, राग-द्वेष आदि विकार नहीं होने चाहिये।

✻ कल्याणकामी मनुष्यको उचित है कि मान और कीर्तिको कलंकके समान समझे।

✻ हर समय संसार और शरीरको कालके मुखमें देखे।

✻ मरुभूमिमें जल दीखता है, वास्तवमें है नहीं। अत: कोई भी समझदार मनुष्य प्यासा होते हुए भी वहाँ जलके लिये नहीं जाता। इसी प्रकार संसारके विषयोंमें भी सुख प्रतीत होता है, वास्तवमें है नहीं। ऐसा जाननेवाले विरक्त विवेकी पुरुषकी सुखके लिये उनमें प्रवृत्ति नहीं होती।

✻ जीवन्मुक्त ज्ञानी महापुरुषोंकी दृष्टिमें संसार स्वप्नवत् है। इसीलिये वे संसारमें रहकर भी संसारके भोगोंसे लिप्त नहीं होते।

✻ जीते हुए ही जो शरीरको मुर्देके समान समझता है, वही मनुष्य जीवन्मुक्त है। अर्थात् जैसे प्राणरहित होनेपर शरीरसे कोई सम्बन्ध नहीं रहता, वैसे ही प्राण रहते हुए भी जिसका शरीरसे कोई सम्बन्ध नहीं, वही जीवन्मुक्त महाविदेही है।

✻ श्रद्धालु मनुष्यके लिये तो महात्माका प्रभाव अपरिमेय है। महापुरुषोंके प्रभावसे भगवान्‌की प्राप्ति होना- यह तो

उनका अलौकिक प्रभाव है तथा सांसारिक कार्यकी सिद्धि होना- लौकिक प्रभाव है। महापुरुषोंकी चेष्टा उनके तथा लोगोंके प्रारब्धसे होती है एवं लोगोंके श्रद्धा-प्रेम तथा ईश्वराज्ञासे भी होती है।

* सर्वस्व जाय तो भी कभी किसी निमित्तसे कहीं किंचिन्मात्र भी पाप न करे, न करवावे और न उसमें सहमत ही हो।

* पैसे न्यायसे ही पैदा करे, अन्यायसे कभी नहीं, चाहे भूखों ही मरना पड़े।

* ईश्वरकी भक्ति और धर्मको कभी छोड़े ही नहीं, प्राण भले ही चले जायँ।

* धैर्य, क्षमा, मनोनिग्रह, अस्तेय, बाहर-भीतरकी पवित्रता, इन्द्रियनिग्रह सात्त्विकबुद्धि, अध्यात्मविद्या, सत्यभाषण और क्रोध न करना- ये दस सामान्य धर्मके लक्षण हैं।

* पाण्डवोंने अपनेसे निम्न श्रेणीके राजा विराटकी नौकरी स्वीकार कर ली, पर धर्मका किंचिन्मात्र भी कभी त्याग नहीं किया। महाराज युधिष्ठिरने स्वर्गको ठुकरा दिया, पर अपने अनुगत कुत्तेका भी त्याग नहीं किया।

* स्वार्थका त्याग समान व्यवहारसे भी श्रेष्ठ है, इसलिये नि:स्वार्थभावसे सबकी सेवा करनी चाहिये।

* स्त्रीके लिये पातिव्रत्य धर्म ही सबसे बढ़कर है। इसलिये भगवान्‌को याद रखते हुए ही पतिकी आज्ञाका पालन विशेषतासे करना चाहिये तथा पतिके और बड़ोंके चरणोंमें नमस्कार करना और उन सबकी यथायोग्य सेवा करनी चाहिये।

* विधवा स्त्रीके लिये तो विषय-भोगोंसे वैराग्य, ईश्वरकी भक्ति, सद्‌गुण-सदाचारका पालन और नि:स्वार्थभावसे सबकी सेवा ही सर्वोत्तम धर्म है।

* दूसरोंको दु:ख पहुँचानेके समान कोई पाप नहीं है और सुख पहुँचानेके समान कोई धर्म नहीं है। इसलिये हर समय दूसरोंके हितके लिये ही प्रयत्न करना चाहिये।

* कुटुम्ब, ग्राम, जिला, प्रान्त, देश, द्वीप, पृथ्वी और त्रिलोकीतक उत्तर-उत्तरवालेके हितके लिये पूर्व-पूर्ववालेके हितका त्याग कर देना चाहिये।

* किसीके भी दुर्गुण-दुराचारका दर्शन, श्रवण, मनन और कथन नहीं करना चाहिये। यदि उसमें किसीका हित हो तो कर सकते हैं; किंतु मन धोखा दे सकता है, अत: खूब सावधानीके साथ विचारपूर्वक करना चाहिये।

* किसीका उपकार करके उसपर अहसान न करे, न किसीसे कहे और न मनमें अभिमान ही करे; नहीं तो किया हुआ उपकार क्षीण हो जाता है। ऐसा समझे कि सब कुछ भगवान् ही करवाते हैं, मैं तो निमित्तमात्र हूँ।

* अनिष्ट करनेवालेके साथ बदलेमें बुराई न करे, उसे क्षमा कर दे; क्योंकि प्रतिहिंसाका भाव रखनेसे मनुष्य दोषका भागी होता है।

* यदि अनिष्ट करनेवालेको दण्ड देनेसे उसका उपकार होता हो तो ऐसी अवस्थामें उसे दण्ड देनेमें दोष नहीं है।

* अपनेपर किये हुए उपकारको आजीवन कभी न भूले एवं अपना उपकार करनेवालेका बहुत भारी प्रत्युपकार करके भी अपने ऊपर उसका अहसान ही समझे।

* अपने द्वारा किसीका अनिष्ट हो जाय तो सदा उसका हित ही करते रहे, जिससे कि अपने किये हुए अपराधको वह मनसे भूल जाय, यही इसका असली प्रायश्चित्त है।

* मन और इन्द्रियोंको इस प्रकार वशमें रखना चाहिये कि जिससे वे व्यर्थ और पापके काममें न जाकर जहाँ हम लगाना चाहें उसी भगवत्प्राप्तिके मार्गपर लगी रहें।

* जीते हुए मन-इन्द्रिय मित्रके समान हैं और न जीते हुए विषयासक्त मन-इन्द्रिय शत्रुके समान हैं।

✻ शरीर और संसारमें जो आसक्ति है, वही सारे अनर्थोंका मूल है, उसका सर्वथा त्याग करना चाहिये।

✻ कोई भी सांसारिक भोग खतरेसे खाली नहीं है, इसलिये उससे दूर रहना चाहिये।

✻ कञ्चन, कामिनी, मान, बड़ाई, ईर्ष्या, आलस्य, प्रमाद, ऐश, आराम, भोग, दुर्गुण और पापको साधनमें महान् विघ्न समझकर इन सबका विषके तुल्य सर्वथा त्याग करना चाहिये।

✻ शौचाचारसे सदाचार बहुत ऊँचा है, उससे भी भगवान्‌की भक्ति और भी ऊँचे दर्जेकी चीज है।

✻ श्रद्धा होनेपर श्रद्धेय पुरुषकी छोटी-सी-छोटी क्रियामें भी बहुत ही विलक्षण भाव प्रतीत होने लगता है।

✻ माता, पिता, पति, स्वामी, ज्ञानी, महात्मा और गुरुजनोंकी श्रद्धापूर्वक नि:स्वार्थ सेवासे आत्माका शीघ्र कल्याण हो सकता है।

✻ अनिच्छा या परेच्छासे होनवाली घटनाको भगवान्‌का भेजा हुआ पुरस्कार मान लेनेपर काम-क्रोध आदि शत्रु पास नहीं आ सकते, जैसे सूर्यके सम्मुख अन्धकार नहीं आ सकता।

✻ प्रेमपूर्वक जपसहित भगवान्‌के ध्यानका अभ्यास, श्रद्धापूर्वक सत्पुरुषोंका संग, विवेकपूर्वक भावसहित सत्शास्त्रोंका स्वाध्याय, दु:खी, अनाथ, पूज्यजन तथा वृद्धोंकी नि:स्वार्थभावसे सेवा- इनको यदि कर्तव्यबुद्धिसे किया जाय तो ये एक-एक साधन शीघ्र कल्याण करनेवाले हैं।

✻ अपने शरीर और प्राणों के ही भरण-पोषण में लगे रहनेवाले लोभी राजा अपने माता-पिता, पत्नी और पुत्र की भी हत्या करने में नहीं हिचकते।

✻ धर्म तो सूर्य की भांति स्पष्ट है, लेकिन आंखें तो खोलो। धर्म जड़ता नहीं है। इसलिए सोओ नहीं, जागो और चलो। जो सोता है, वह खोता है, जो चलता है, वह पहुंचता है। जो जागता है, वह पाता है।

✻ हमारे यहां पाश्चात्य जीवनशैली के प्रभाव स्वरूप एवं व्यक्तिगत मजबूरियों के चलते संयुक्त परिवारों का विघटन हुआ है। इनके अभाव में बच्चों को जो संस्कार मिलने चाहिए, वे उनसे वंचित होते जा रहे हैं। रही-सही कसर एकाकी बच्चों के दूरदर्शन से लगाव व उसके प्रभाव ने पूरी कर दी है। ऐसे माहौल में बच्चे परिवार के बुजुर्गों से रूखा व्यवहार करते हैं। तो वे अपने को उपेक्षित महसूस करते हैं। संयुक्त परिवारों के महत्व को समझते हुए युवाओं को इन्हें महत्व देना चाहिए। ताकि बचपन से बच्चों में वे संस्कार आएं जो कल्याणकारी भारतीय संस्कृति के मूल आधार हैं।

✻ गर्व बहुत दु:खदायी होता है। उसके जैसा दु:खदायी और कोई नहीं। आत्मा और परमात्माको काट देनेवाला कोई पदार्थ संसारमें है तो वह अभिमान ही है।

✻ मनुष्य अपने मनको प्रधानता देता है, लेकिन गुरुके मनसे, शास्त्रके मनसे, इष्टके मनसे या ईश्वरके मनसे जो हो रहा है- उसको प्रधानता देना नहीं चाहता। अपने व्यक्तित्वको ही सबसे बड़ा बनाकर रखना चाहता है।

✻ यदि किसीमें तुमसे अधिक गुण है तो उसे देखकर खुश हो जाओ, किसीमें कम गुण हैं तो उसपर कृपा करो, अहंकार मत करो और समान गुणवालेसे मित्रताका भाव रखो। किसीने कोई बात कह दी तो तुम्हारे अन्दर उसे सहन करनेकी शक्ति होनी चाहिए। हमारे अंदर यह गलती है, वह गलती है, इस प्रकारका विचार मत करो। पराये दोष ध्यान करनेकी वस्तु नहीं है। न तो अपने दोषोंका आचरण करो और न ही उनका ध्यान करो। केवल भगवान के गुणानुवादका ध्यान करो। दोषानुसन्धानको अपनी बुद्धिसे निकाल देना चाहिए। दोष भले ही अपने भीतर न हो या सामनेवालेमें न हो, लेकिन उसका चिन्तन किया जाय तो वह दिखाई पड़ने लगता है, प्रकाशित हो जाता है। जिस दोष को तुम दूसरेके अन्दर नहीं देखना चाहते, उसका चिन्तन

करके उसको अपने दिलमें क्यों लाते हो? न तो किसीकी निन्दा करना, न मनमें कोई वासना रखना, अनिन्दनीय नहना और निर्वासन रहना। जो कुछ भी दु:ख आये, उसको सह लेना। संसारमें अभिमानी, आग्रही, हठी, नामसझके अतिरिक्त और कोई दुखी नहीं होता। वह चाहता है- ऐसा ही हो। ऐसा ही रहे। यह न हो। उसने ईश्वरकी इच्छाके सामने अपने मनको खड़ा कर दिया। वह अपनेको महत्त्व देता है और चाहता है कि ईश्वर हार जाय। ऐसे व्यक्तिको संसारमें दु:ख मिलता है। आश्चर्य यह है कि मनुष्य अपनी नासमझी मिटाना नहीं चाहता। जबतक मनुष्यको दूसरोंमें और अपनेमें भी दोष दीखें, धर्म उसके जीवनमें अभी आया नहीं। दूसरोंमें दोष न दिखें, पर अपनेमें दोष दिखें तो भक्ति आ सकती है; किन्तु ईश्वरमें स्थिति नहीं हो सकती। ईश्वरमें तब होगी जब केवल ईश्वर दिखेगा। अपने पराये किसीमें दोष नहीं दिखेगा।

* भले पुरुष व सज्जन पुरुषोंका यह काम है कि जो अपनेसे ज्ञानवृद्ध है, वयोवृद्ध, विद्यावृद्ध, गुरुजन हैं उनका आदर करे और उनकी अच्छी सलाहके सामने जिद्द न करे, उनकी बात मान ले, उनकी बातोंमें और अनुभवोंमे बड़े-बड़े रहस्य छिपे रहते हैं।

* सुख आये तो लोगोंको बाँट दो और दु:ख आये तो उसको स्वीकार मत करो। मैं दुखी हूँ यह अभिमान कभी धारण मत करो। दु:खको स्वीकृति देनेका अर्थ हैं, मैं दु:खी हूँ यह धारण करना। इसलिए कभी भी अपनेको दु:खी मत मानो; चाहे कुछ भी हो जाये।

* अपने मुँहसे अपनी तारीफ करना सत्पुरुष लोग पसन्द नहीं करते।

* जो विकारको मिटाये और संस्कारको जाग्रत करे- उसका नाम औषधि है।

* भगवानकी अपेक्षा सन्तोंके आगमनकी महिमा अधिक है। भगवान् तो वैकुण्ठ आदिसे आते हैं, किन्तु सन्त लोग तो धरती पर ही रहते हैं।

* सज्जन पुरुष बहुमूल्य वस्त्रोंके द्वारा अपनी श्रेष्ठता नहीं दिखाते। जिनके अन्दर अपनी श्रेष्ठता नहीं होती, वही अपना बड़प्पन दिखाता है। कपड़ोंका बड़प्पन तो उधार लिया होता है। जिनकी आकृति मधुर है, जो स्वभावसे सुन्दर है, उसे किसी वस्तुकी, आभूषणकी आवश्यकता नहीं पड़ती।

* अन्यायसे आयी हुई सम्पत्ति कुछ समय के लिये रह सकती है, परन्तु जैसे रुईके ढेरमें आग लगकर नष्ट हो जाती है वैसे ही अन्यायी लोग शामको तो करोड़पति बनते देखे, किन्तु सुबह होते ही कंगाल हो जाते है।

* जिसके अन्दर सद्गुण है, शील है, कृतज्ञता है, बड़े-बूढ़ोंका आश्रय है ऐसे सत्पुरुषोंके पास सम्पत्ति स्वयं आ जाती है।

* जो अपने बड़े-बूढ़ोंका आदर नहीं करेगा उसकी क्रमशक्ति का ऱ्हास हो जायेगा।

* जीवन में श्रद्धा विश्वास धारण करना चाहिए। वास्तवमें श्रद्धा ही संस्कारधाधनी है। हमारे हृदयमें सत्संस्कारका आधान करनेवाली वस्तु श्रद्धा है।

* पुण्य वहीं है जिससे हमारा हृदय पवित्र हो जाये। जो लोग अर्थाराम और इन्द्रियाराम हैं, जिनको रूपयों पैसों ओर भोगमें मजा आता है, उनसे बात ही मत करो और वो जिसकी तारीफ करे उसको अपने पास मत रखो। पवित्र एकान्तमें रहनेकी रुचि करो, अपने आपमें सन्तुष्ट रहो।

* विषयोंका चिन्तन करनेसे मनुष्य गलत रास्तेपर चला जाता है और इधर-उधर भटक जाता है। इसलिए जीवन में जो विषयोंका चिन्तन है, वही अपना नाश करनेवाला है।

* इस संसारमें सबसे बड़े हानिकारक धन और भोग है। इनका चिन्तन ही मनुष्यके लिए सबसे बड़ा अकल्याण है। इसलिए

इनमें आसक्ति नहीं करनी चाहिए। मोक्ष ही मनुष्यका परम पुरुषार्थ है। चार पदार्थोंमें अर्थ और काम तो पूर्वपक्ष है, धर्म और मोक्ष उत्तरपक्ष है। धर्मके द्वारा अन्त:करण शुद्ध होकर मोक्षस्वरूप परमात्माकी प्राप्ति होती है। किन्तु जो अर्थ एवं काममें ही लग जाते हैं वे संसारमें भटकते रहते हैं। जहां-जहां त्रिवर्ग है, वहाँ-वहाँ यमराजका भय लगा हुआ है। संसारकी वस्तुएँ चाहनेवालोंको संन्यासकी प्राप्ति कभी नहीं होती। परमात्मा विषयके भीतर, इन्द्रियोंके भीतर और अन्त:करणके भीतर है।

✻ जहाँ कृतज्ञताका उदय होता है, वहाँ मनुष्य अपने आपको अर्पित्त किये बिना रह नहीं सकता।

✻ बुढ़ापा मृत्यु का जमानती वारण्ट है। कान के बगल के बाल जब सफेद होने लगे तो समझ लेना चाहिये कि मृत्यु ने सावधान करने के लिये द्वार पर दस्तक दे दी है।

✻ स्त्री का रूठना भी उसकी एक कला है। वे रूठकर पतिको अपने वशमें कर लेती है, लेकिन सबका रूठना एक-जैसा नहीं होता। कभी-कभी स्त्रियाँ अच्छे उद्देश्यको लेकर भी रूठ जाती है।

✻ पुरुषोंके लिए, बहादुरोंके लिए कोई घर नहीं होता, वे तो जहां जाते हैं वहीं उनका घर हो जाता है।

✻ मनुष्यके जीवन में प्रीति ही सबकुछ हो यह बात नहीं है। प्रीतिका भी एक अन्त है और वह परमानन्द में परिणित होती है। दुनियामें जो बहुत समझदारी, बहुत जानकारी है, इसका भी अवसान परमज्ञानमें, अद्वैतज्ञानमें होता है। जीवन का जो अस्तित्व पृथक् मालूम पड़ता है, इसका अन्त ब्रह्मसत्तामें-अखण्ड सत्तामें है।

✻ भक्तिमें इष्टदेव बदलनेकी आवश्यकता नहीं होती। जो इष्टदेव बदल देता है, उसकी बुद्धिमें आकार बदलता रहता है मन्त्र भी नहीं बदलना चाहिए। मन्त्र बदलनेसे प्रत्येक शब्द द्वारा पृथक-पृथक आकृति बनती है, दूसरा इष्ट आने लगता है। अपना गुरु कभी नहीं बदलना चाहिए। गुरु, मन्त्र और इष्ट एक ही रहे। भाव उच्च-से-उच्चतम हो। इन सब साधनोंद्वारा अन्त:करणके कामादि मल परिपक्व हो जाते हैं और कड़वाहट बीच-बीचमें सताती है, मिट जाती है। यदि घरमें रहकर भी कोई सदाचारका पालन करे और भगवत्कथा श्रवण द्वारा अपना जीवन व्यतीत करे तो घर उसको नहीं बाँधता। जो बांध ले उसका नाम घर होता है। कथा श्रवण के फलस्वरूप स्वयं ब्रह्म ही सबके हृदयमें प्रकट होता है। तुम्हारी अन्तरात्मा में जो सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान विद्यमान है यही अद्वितीय ब्रह्म है। उसका साक्षात्कार करके मनुष्य कभी शोक-मोहको प्राप्त नहीं होता और न लौकिक धर्मको प्राप्त होता है।

✻ जो लोग विद्या, धन, कुल और कर्म इनके अभिमानसे संतोंका तिरस्कार करते हैं, उनकी पूजाको भगवान ग्रहण नहीं करते। भगवान ऐसे कृपालु है कि भक्तके लिये अपनी पत्नीको छोड़ देते हैं। भगवान के पीछे-पीछे लक्ष्मीजी चलती है, उन्होंने छोड़ दिया, लक्ष्मीको चाहनेवालोंको छोड़ दिया। उन्हें किसीकी जरूरत थोड़े ही है वे तो अपने आपमें पूर्ण है। अगर भगवान किसीके अधीन है तो केवल अपने भक्तके अधीन है।

✻ **दाम्पत्य जीवन की शिक्षा-** अपने जीवनसाथी को सच्चे हृदय से प्यार करिए। प्यार का तात्पर्य है- साथी के दोषों और गलतियों को क्षमा करते रहना। यदि आपस में मतभेद या कोई गलतफहमी हो जाये तो जल्द से जल्द उसे दूर करने का प्रयत्न कीजिए। एक-दूसरे पर अविचल विश्वास रखिए। संदेह को पनपा कर ही अनेक दंपति आज कष्ट भोग रहे हैं। सब परिस्थितियों में एक-दूसरे का पूरा साथ दीजिए। आर्थिक, सामाजिक आदि सब कार्य साथ-साथ संपन्न कीजिए। बीमारी-पीड़ा, दुख, मानसिक स्थिति में एक-दूसरे का पूरा-पूरा सहयोग दीजिए। एक-दूसरे की नि:स्वार्थ भाव से सेवा कीजिए। पति-पत्नी को दो शरीर एक प्राण होना चाहिए। स्वेच्छाचारी मत बनिए। दोनों हर काम एक राय से करिए। कोई काम या बात अपने साथी से छिपाकर मत करिए। यथासंभव एक-दूसरे की आलोचना से बचिए। कमजोरी और दोष किसमें नहीं है। सर्वगुणसंपन्न

कौन है। यदि आप परिवार में सुख-शांति चाहते हैं तो दूसरों में दोष ढूंढने की आदत ही त्याग दीजिए। दोष निकालते रहने से परस्पर कटुता की भावना पैदा होती है और विश्वास नष्ट होता है। अधिकार और बड़प्पन की दुर्भावना को छोड़ दीजिए। पहले आपका सुख-पीछे मेरा यह भावना घर को स्वर्ग बना देती है। किसी भी बात को सादे ढंग से समझाइए। पारिवारिक जीवन में अशिष्ट व्यवहार सर्वदा निंदनीय एवं त्याज है। परिवार के सदस्यों पर टीका-टिप्पणी न करें। पति-पत्नी अपने जीवन के गहरे और सच्चे साथी होते है और वे दोनों मिलकर ही धर्म, अर्थ, काम ओर मोक्ष के लिये सामूहिक प्रयास करते हैं।

* किसी के पास बहुत अनाज होता है, पर भूख नहीं होती पर किसीके पास भूख है पर पेट भरने के लिए अनाज नहीं। भूख ऐसी चीज है जो रोटी हासिल करने के लिए पत्थर की दीवार भी गिरा सकता है।

* सबसे ज्यादा तंग और लाचार वह शख्स है जो बिना दोस्तों के हो और उससे भी अधिक तंग और लाचार वह है जो अच्छे और सच्चे दोस्तोंको पाकर गवा दें।

* नशेवाली चीजों का अवसर सबसे ज्यादा आदमी के दिमाग पर होता है इसलिए नशेवाली चीजों से बचना चाहिए।

* रात का खाना कभी मत छोड़ो, चाहे खजूर खाकर ही रात बितानी पड़े। रात का खाना छोड़ने से शीघ्र बुढ़ापा आता है।

* शब्द, वाणी के दम से इन्सान को जानवरों से ज्यादा ऊँचा बनाया गया है।

* समविचारी लोग हमसफर हो जाएं तो मंझिल आसानी से मिल जाती है।

* खुद पर भरोसा करना सफलता की तरफ पहला कदम है। अपनी सोच बदलने से इन्सान दुनिया को बदल सकता है।

* पीडितों की बद्दुआ से डरो, क्योंकि उसके और ईश्वर के बीच कोई पड़दा नहीं होता।

* गुनाहों पर शर्मिंदा होना चाहिए ताकि गुनाह मिट जाए और नेकियोंपर मगरूर होना नेकियों को मिटा देता है।

* मुहब्बत उससे करो जो बेगरज हो और बेवफा न हो।

* फूल खुशबू से और चांद रोशनी से, मनुष्य अच्छे चरित्र से पहचाना जाता है।

* दुनिया का कोई व्यक्ति मूर्ख नहीं है हर व्यक्ति से कुछ न कुछ सीखा जा सकता है।

* मुस्कान एक बेहतरीन तोहफा है जो हर व्यक्ति एक-दूसरे को खुशी से दे सकता है बदले में कुछ न मिलने की ख्वाहिश और मुस्कुराहट एक बेहतरीन कर्म भी है जो हमारे बेहतरीन आचरण बर्ताव को प्रकट करती है।

* इन्सान का शरीर बच्चे से बढ़ा होने पर बढ़ता है और बुद्धि युवा होनेपर बढ़ती है इसके बाद उम्रके आखिर पड़ाव तक अनुभव भी बढ़ता है।

* लक्ष्मी की पूजा तो करना मगर लक्ष्मी पर भरोसा मत करना और भगवान की पूजा भले ही मत करना लेकिन भगवान पर भरोसा हर-हाल में रखना। दुनिया में भरोसे के काबिल सिर्फ भगवान ही हैं। लक्ष्मी का क्या भरोसा? वह तो चंचला है। आज यहां और कल वहां। जिस-जिस ने भी इस पर भरोसा किया आखिर में वह रोया है।

* बुजुर्गों की संगति करो। क्योंकि बुजुर्गों के चेहरे की एक-एक झुर्री पर हजार-हजार अनुभव लिखे होते हैं। उनके कांपते हुए हाथ, हिलती हुई गर्दन, लड़खड़ाते हुए कदम और मुरझाया हुआ चेहरा संदेश देता है कि जो भी शुभ करना है, वह आज, अभी और इसी वक्त कर लो। कल कुछ नहीं कर पाओगे। बूढ़ा इंसान इस पृथ्वी का सबसे बड़ा शिक्षालय है क्योंकि उसे देखकर उगते सूरज की डूबती कहानी का बोध होता है।

* एक अनिश्चित जीवन को दिशा देना बड़ा कठिन कार्य है। जीवन आवश्यकताओं से जीया जाता है सिद्धान्तों से नहीं।

* नम्रता का व्यवहार सबके लिये अच्छा होता है।

✻ मेहनत से तकदीर भी बदल जाती है।

✻ दुनिया का मानव समाज आज भी सदभाव और समभाव के खम्भों पर खड़ा है।

✻ हर इंसान के जीवन में तीन चीजें आवश्यक है- शांति, स्वाधीनता और प्रेम। शांति का मतलब है सुकुन से जीना। ऐसा जीवन तभी हो सकता है जब हम अपने लक्ष्य के अनुसार एक निश्चित जीवन जी सकें।

✻ कई लोग कहते हैं मेरी पत्नी, मां-बाप, मित्र या अमुक-अमुक मुझे प्रेम नहीं करते। दूसरों से प्रेम की अपेक्षा करोगे तो रोते ही रह जाओगे। तुम अपनी तरफ से प्रीतिपूर्वक व्यवहार करो। फिर देखो, उस व्यवहार का फल यह होगा कि तुम दैवी आनंद के सुख का आस्वादन कर लोगे।

✻ कुछ लोग सोचते हैं, भगवान का नाम जपेंगे तो क्या फायदा होगा? अरे, यह व्यापारिक दृष्टिकोण मत अपनाओ, ऐसे ही जपो- भगवान के प्रति अपनी प्रीति के लिए। गरीब-गुरबों की सहायता व सेवा करो, परंतु दिखाने और वाहवाही के लिए नहीं, ऐसे ही सहज भाव से करो। इसी से आंतरिक सुख मिलेगा।

✻ हर इंसान में चार गुण होते है- जागरूकता, विवेक, इच्छाशक्ति और कल्पनाशीलता। इनसे ही उसे आजादी मिलती है। आजादी जिम्मेदारी और नतीजों के साथ आती है। आजादी का मतलब अपनी इच्छाओं पर अंकुश लगाना है। जो दूसरों की आजादी छीनते हैं, उन्हें खुद आजाद रहने का हक नहीं।

✻ एक पल का भी सत्संग किसीको मिल जाये, तो उस सत्संग की बराबरी कोई नहीं कर सकता। न स्वर्ग कर सकता है, न मुक्ति कर सकती है। ये बात नितांत सत्य है। दुर्योधन ने अपने जीवन में सौ, दो सौ बार कृष्ण के दर्शन कर लिये पर सत्संग नहीं मिलने के कारण वह निरा मूर्ख, क्रोधी और अहंकारी ही रहा। शिशुपाल ने भी दस-पाँच बार श्रीकृष्ण का दर्शन कर लिये पर क्रोध को नहीं जीत सका। इसलिये भगवान के दर्शन के अतिरिक्त सत्संग आवश्यक है। ध्रुवजी को आत्मज्ञान का सत्संग नहीं मिला और बिना सत्संग के किसीको मोक्ष नही मिल सकता। बिना सत्संग के जीव को विवेक नहीं मिलता। बिना परमात्मा के कृपा के सत्संग नहीं हो सकता। सत्संग का चस्का जिसको लग जाता है, उसपर परमात्मा की कृपा बरसती है, लक्ष्मी उसका घर छोड़कर कभी नहीं जाती, स्थायी रूप से वहाँ वास करती है पर सत्संग के प्रति रुझान होना चाहिए। कलुषित व्यक्ति भी संतों के संग से सुधर जाता है। जैसे पारस मणि के स्पर्श से लोहा सुवर्ण हो जाता है।

✻ जीवन में तीन चीजें ऐसी हैं शास्त्र के अनुसार- अधिक ममता किसीसे मत करो, प्रेम सभी से करो, प्रेम करना चाहिये, ममता नहीं। ममता बांधती है, प्रेम परमात्मा से मिलाता है। व्यक्ति की ममता धन, पुत्र और स्त्री में ज्यादा है। सत्संग ही सर्वोत्तम साधन है। सत्संग को जीवन में अपनाना चाहिए।

✻ मनुष्य के बिगड़ने के यही साधन है- रूप, यौवन, सम्पत्ति एवं बड़ा पद मिल जाना। इन चारोंके साथ यदि विवेक नहीं है तो निश्चित रूप से व्यक्ति अनर्थ किये बिना नहीं रह सकता। यदि विवेक है तो यहीं चीजें व्यक्ति का कुछ नहीं बिगाड़ सकती और ये विवेक सत्संग से प्राप्त होता है। देवताओं के प्रति, वेदों के प्रति, गऊ-ब्राह्मणों के प्रति जिसके मन में विद्वेष हो, वह व्यक्ति शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। उस व्यक्ति को नष्ट होने से कोई रोक नहीं सकता।

✻ जीव का जन्म कर्म से होता है, मृत्यु भी कर्म से होती है। सुख और दु:ख भी, जो भी मिलता है, केवल कर्म से मिलता है। सारी प्रजा जो आज दु:खी है उसका मूल कारण की लोग कर्म नहीं करते, कर्म करेंगे तभी तो फल मिलेगा। ईश्वर भी फल उसीको देता है जो कर्म करता है। जो कर्म नहीं करता उसको फल ईश्वर कभी नहीं देता। अच्छा कर्म किया तो अच्छा फल मिलेगा, बुरा कर्म किया तो बुरा भाग्य बनेगा। इसलिए कर्म प्रधान है। भाग्य नाम की कोई चीज अलग से नहीं

होती। बोया पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से होय। परमात्मा भी सहायता उसीकी करता है, जो अपनी सहायता स्वयं करना चाहता है। जो मनुष्य स्वयं अपनी सहायता नहीं करता, उसकी सहायता परमात्मा भी नहीं करता।

* हम कोई भी धर्म का कार्य करें, तो शास्त्र सम्मत करना चाहिए, शास्त्र के विरुद्ध नहीं करना चाहिये। शास्त्र के विरुद्ध किया जानेवाला कोई भी कार्य अनैतिक होता है। जो बात अपने लिए बुरी लगती है, वो कभी दूसरे के लिए मत करो, यही सबसे बड़ा धर्म है। दूसरों का हित करना ही सर्वोत्तम धर्म है। दूसरे को पीड़ा पहुँचाना ही सबसे बड़ा पाप है।

* उत्पन्न परिस्थितियों से मुँह मोड़ लेना कायरता का परिचायक है। विवेक के बल पर परिस्थितियों का सामना करना सच्चे अर्थों में पुरुषार्थ है।

* प्रत्येक परिस्थिति में परमात्मा को याद करो। परमात्मा ने जो शरीर दिया है, वो केवल विषय भोगने के लिये नहीं मिला। यह शरीर मिला है गोविन्द के चिंतन के लिए, गोविन्द की याद के लिये।

* आकांक्षाएं लोभ को जन्म देती है और लोभ दुख को जन्म देता है। लोभ के कारण वह सब कुछ प्राप्त कर लेना चाहता है जो उसके पास नहीं है। लोभ से बचने का उपाय है संयम। संयमी व्यक्ति कभी दुखी नहीं हो सकता क्योंकि संयम उसे इतना आत्मबल प्रदान कर देती है कि वह जो नहीं है उस पर आसानी से काबू पा लेता है। संयम संतोष को जन्म देता है और सभी जानते हैं कि संतोषम् परमम् सुखम अर्थात संतोष ही सबसे बड़ा धन है। संतोष से बड़ा कोई धन नहीं है।

* वही मनुष्य श्रेष्ठ है जो पराये को भी अपना बना ले।

* अगर आप चाहते है कि आपको अच्छे लोग मिले तो पहले खुद अच्छा बनना पडेगा।

* बड़ा आदमी वो ही है जो क्रोध आने पर भी नपा-तुला ही बोलता है।

* समस्यायें हमें कुछ सीखने और विकास करने का अवसर देती है।

* स्वराज का अर्थ है हम अपनी सीमाओं, मर्यादाओं में रहे, आत्मनियन्त्रित रहे।

* हमारा सुन्दर भविष्य भाईचारे में है न कि आपसी भेदभाव में।

* मनुष्य तो वही है जो दूसरों के दु:ख दर्द पहचाने और उनको दूर करने का प्रयास करे अन्यथा तो नर नहीं नराधम है।

* ज्ञान अतीत का संचयन है, धरोहर है, परन्तु सीखना वर्तमान की क्रिया है।

* मोह माया में पड़कर मनुष्य सक्षम होते हुये भी कुछ नहीं कर पाता।

* प्रेम शक्ति है, प्रेम में शालीनता है और जो प्रेम सें जीता है वो ही वस्तुत: जीतता है।

* लकीरों पर चलकर धर्म अन्ध:विश्वास हो जाता है।

* सत्संग करने से भगवान् की लीला कथाओं के श्रवण करने से मनुष्य मात्र के अज्ञान रूपी अन्धकार नष्ट हो जाते हैं और विवेक, ज्ञान आदि के प्रकाश से उस जगत् के जीव अन्त पर्यंत तक जगमगाने लगता है।

* सम्पूर्ण प्राणियोंके प्रति दया करो। दया करते समय यह मत सोचो कि यह बिच्छू है, यह साँप है। दया तो दु:खीपर ही की जाती है। उसमें जाति-पाँतिका विचार नहीं होता। क्योंकि उसके भीतर तो परमात्मा ही बैठे हुए हैं। दूसरी बात यह है कि अपने लिए जैसा जो कुछ मिलता है, उसीमें सन्तोष करो। परिस्थितिकी ओर मत देखो, परिस्थिति पैदा करनेवालेकी ओर देखो। फिर अपने आप सन्तोष हो जायेगा। तीसरी बात यह है कि अपनी इन्द्रियोंको शान्त रखो। क्योंकि ये बड़ी चुलबुली हैं। कभी यहाँसे वहाँ और कभी वहाँसे यहाँ- कोई-न-कोई गड़बड़ पैदा करती रहती है। अगर हम बोलनेमें ध्यान रखने लग जायें, तो करनेमें भी ध्यान आजायेगा। लोग बे-मतलब बोलते हैं। यह वाणीका अपव्यय है। यदि बोले बिना

काम चल जाता है, तो नहीं बोलना चाहिए।

✻ रावण की मृत्यु तब निश्चित हो गयी जब विभीषण ने लंका का त्याग कर दिया और यहां कौरवों का विनाश तब निश्चित हो गया जब महात्मा विदुर ने कौरवों का साथ छोड़ दिया। कभी-कभी हमारे परिवार में भी ऐसा कोई व्यक्ति होता है, जिसके ऊपर पूरा परिवार चल रहा है। यदि वह चला गया तो छिन्न-भिन्न हो जाता है पूरा परिवार और जब तक है तब तक कद्र भी नहीं करते। जाने के बाद याद आते हैं। तब तक बहुत देर हो जाती है।

✻ कर्म का सिद्धांत है जब तक पिछले जन्म के कर्म का हिसाब पूरा न हो तब तक इस जन्म के कर्म का फल नहीं मिलता। ज्यादातर लोग इस जन्म में जो भुगत रहे हैं यह पिछले जन्म की कमाई है। बहुत कम लोग हैं जो इस जन्म में कर्म करें और इस जन्म में ही उनको इसका फल मिल जाए। कुछ नैतिक कर्म ऐसे हैं कि कर्म किया और तुरन्त फल मिल गया जैसे भूख लगी, रोटी खा ली। तृप्ति। यह शीघ्र फल है लेकिन ज्यादातर जो प्रारब्ध का हमारा फल होता है वह तो पिछले जन्म का हम भुगत रहे हैं इसीलिए समाज विपरीत दिखाई देता है। जो चोरी कर रहा है, बेईमानी कर रहा है वह तो सुख से जी रहा है, बड़े-बड़े बंगले में रह रहा है और बड़ी-बड़ी गाड़ी में घूम रहा है। और सत्य की राह चलनेवाला तो बेचारा सड़कपति है फुटपाथ पर है। यदि जीव सुखी है तो पिछले जन्म में उसने किसी को दिया है कुछ। यह भिखारी घर-घर में भटक रहा है, रोटी मांग रहा है, भीख मांग रहा है। वह भीख नहीं मांग रहा। वह हमें संदेशा दे रहा है कि पिछले जन्म में मैंने किसी को दिया नहीं इसलिए मेरी यह हालत हो गयी।

✻ काम, क्रोध, लोभ जहां भी जाओ साथ में जायेंगे। देव बनने के बाद भी लोभी बन सकते हो। देव बनने के बाद कामी भी हो सकते हो। जैसे इन्द्र कामी है। देवता क्रोधी है, उनका कोप भी होता है। जहां भी जाओ तुम्हारी प्रकृति तुम्हारे साथ है, इसलिए सत्संग करके मनको निर्मल करो। इस शरीर में हमें विविध प्रकार के भोग भी मिल सकते हैं। हमारी उन्नति हो सकती है। मन को चमन बनाओ, अमन बनाओ पर किसीमें फंसो मत। अनेक प्रकार की बाधाएं जीवन में आती है चाहे बच्चा हो, बूढ़ा हो। प्रलोभन आते रहेंगे। विविध प्रकार की अग्नि जीवन में आती है- क्रोधाग्नि, कामाग्नि, लोभाग्नि। जैसा भाव मन में आता है वैसी ही आकृति बन जाती है। जब क्रोध आता है तो आंखे लाल होती है, भृकुटि खड़ी हो जाती है,शरीर कांपने लगता है। और जब आदमी मस्ती में हो तो चेहरे की रेखाएं बदल जाती है।

✻ आदमी चाहे कितना भी शांत हो, पर जिसके पास लक्ष्मी आ गयी वह तो चंचल हो गया। परमात्मा शांत है उसीका ध्यान करना चाहिये। समाज का संतुलन रखने के लिए आदमी को एक जगह पर स्थिर होना चाहिए और पैसा घूमते रहना चाहिए। यदि पैसा नहीं घूमेगा तो समाज का संतुलन बिगड़ जायेगा। आजकल पैसा तो बैंक में जमा हो गया और आदमी उसके चारों ओर घूमने लग गया।

✻ जहां गृहस्थ आश्रम में संयम-नियम का पालन होता है वहां दैवी संतान उत्पन्न होती है, जहां असंयम है वहां असुर का जन्म होता है।

✻ जिसकी आंख स्थिर नहीं, जिसका शरीर स्थिर नहीं उसका मन भी स्थिर नहीं होगा। मन को स्थिर करने के लिए संसार का चिंतन नहीं करना चाहिए, मंत्र का जाप करते समय जगत की विस्मृति आवश्यक है। जगत की विस्मृति नहीं हुई तो मन भटकेगा। यह मन बड़ा बलवान है। न्यायशास्त्र कहता है जो बलवान है उसके साथ संधि करनी चाहिए। मन से हमारा बहुत गहरा नाता है, बहुत लंबा नाता है, इसे कहीं भी शांति नहीं मिलेगी, भटकता-भटकता अपने पास ही आयेगा।

✻ जगत् सत्य हो या असत्य बन्धन तो सत्य है। जीव बंधा हुआ है वासना के कारण। यह वासना की गांठ उतनी ही प्रबल

हो जाती है जितनी हमारी इच्छाएं बढ़ती है। अपनी इच्छाओं को कम करना चाहिए। इस दुनिया में अधिकतर लोग बद्ध दशा में है। अपनी दुनिया में, अपनी वासना में, अपनी इच्छाओं और मांग में ही फंसे रहते हैं ये ही चीजें उनपर हावी हो जाती है।

✻ सत्य को किसी आधार की आवश्यकता नहीं है, सत्य अपने आप ही खड़ा है। यदि आप सत्य की राह पर चल रहे है तो सत्य बाहर आयेगा ही।

✻ जो जीवन में कुछ भी नहीं कर पाते, वे अक्सर आलोचक बन जाते हैं। जीवन पथ पर चलने में जो असमर्थ हैं, वे राह के किनारे खड़े हो, दूसरों पर पत्थर ही फेंकने लगते हैं। यह मन की बहुत रुग्ण दशा है।

✻ आदमी गलत को तो अभी कर लेता है, सही को कल पर टाल देता है। चोरी करनी हो तो अभी। क्रोध करना हो तो अभी। जब तुम्हें कोई गाली देता है तो तुम यह नहीं कहते, कल करूंगा क्रोध, सोचूंगा, विचारूंगा, पत्नी-बच्चों से भी सलाह लूंगा। जब तुम्हें क्रोध करना होता है तब तुम अभी करते हो और जब तुम्हें जीवन में कुछ शुभ का भाव उठता है, उमंग उठती है- संन्यास लेना, कि ध्यान करना, कि प्रार्थना में उतरना- तो तुम सोचते हो, सोचेंगे। सोचने का मतलब होता है टालोगे। टालने का मतलब होता है हिम्मत नहीं है।

✻ दुनिया में रहते हुए दो चीजों को कभी नहीं भूलना चाहिए। न भूलनेवाली चीज एक तो परमात्मा तथा दूसरी अपनी मौत। भूलने वाली दो बातों में से एक है- तुमने किसी का भला किया तो उसे तुरन्त भूल जाओ और दूसरी किसी ने तुम्हारे साथ अगर कभी कुछ बुरा भी कर दिया तो उसे तुरन्त भूल जाओ। बस, दुनिया में ये दो ही बातें याद रखने और भूल जाने जैसी हैं।

✻ जिस व्यक्ति का मन अहंकार से रहित महापुरुषों की बड़ाई को देखकर ईर्ष्या से भर जाता है वे अपनी इन्द्रियों पर काबू नहीं कर पाते। ऐसा पुरुष दैत्यों की तरह से ही महापुरुषों से द्वेष मानता रहता है, कुढ़ता है।

✻ संसार में अति कोमल, अधिक निर्मल, सहज और सरल बनना भी ठीक नहीं है। जिनका ऐसा स्वभाव होता है या तो लोग उसे कमजोर समझते हैं या उसके स्वभाव का फायदा उठाते हैं।

✻ अच्छी संगति मिले या न मिले, लेकिन कम से कम कुसंगति से बचना चाहिए। बुरी संगत वाले को अपना मित्र नहीं बनाना चाहिए उससे बुराई हमारे पास आए बिना नहीं रह सकती। हम अच्छी और बुरी दोनों आदतें अपने साथ अधिक समय तक रहनेवाले व्यक्ति से सीख जाते हैं। कुसंगति व्यक्ति को अपने गिरफ्त में ले लेती है। हम किसी आदत को बुरा मानते हैं लेकिन अच्छे मित्र की संगति हमारे विचार में परिवर्तन ला सकती है। अच्छी आदत ग्रहण करने में व्यक्ति को समय लगता है लेकिन बुरी आदत सीख लेना आसान है।

✻ अनाधिकारी को जब सत्ता मिलती है, स्वतंत्रता मिलती है तो वह पापी घोर पाप करेगा।

✻ सत्य ही परब्रह्म है। सत्य ही परम तप है। सत्य ही श्रेष्ठ है और सत्य ही शास्त्र ज्ञान है। सत्य में ही सब कुछ प्रतिष्ठित है। तप, यज्ञ, पुण्य, देवता, ऋषि और पितरों का पूजन, जल और विद्या ये सब सत्य पर ही आश्रित हैं। सबका आधार सत्य ही है। सत्य ही ब्रह्मचर्य है। सत्य से ही वायु चलती है। सत्य से ही सूर्य तपता है। सत्य से ही आग जलती है और सत्य से ही ब्रह्माण्ड स्थिर है। सत्य से सब कुछ प्राप्त हो जाता है, इसमें संशय नहीं है। अनेक यज्ञों से बड़ा है तप। समस्त देवता सत्य से ही प्रसन्न होते हैं, इसलिए सत्य को ही परम धर्म कहा जाता है। अनेक ऋषि, मुनि और पुरुष सत्य के मार्ग से ही मोक्ष की प्राप्ति किए हैं। सत्य ही सबसे बड़ा धर्म है। जो व्यक्ति माया, मोह से दूर रहकर अपने हित के लिए भी झूठ नहीं बोलता उसे मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। अत: व्यक्ति को सदा सत्य बोलना चाहिए। सत्य का आचरण करना चाहिए। सत्य ही कल्याणकारी है।

✻ बिना किसी द्वेष या मत्सर की भावना से अपनी शक्ति के अनुसार अपने पिता की आज्ञा को माने। पुत्र द्वारा पिता की

यह सबसे बड़ी पूजा है। जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में यज्ञस्वरूप भगवान को सन्तुष्ट नहीं किया उसका जीवन व्यर्थ है।

❋ स्वत: प्राप्त भोग की अवहेलना करना विरक्त पुरुष के लिए कभी उचित नहीं होता। विभूति और सिद्धियों की प्राप्ति उस व्यक्ति को नहीं हो सकती जिसे अपने श्रेष्ठ होने का अभिमान है।

❋ जीवन के लिये काम भी आवश्यक है, अत: काम या यौन संबंधों की उपेक्षा संभव नहीं। लेकिन इसकी अधिकता चाहे अनैतिक न हो, व्यक्ति की असंतुलित मनोदशा का सूचक अवश्य है। अमर्यादित यौन पिपासा वास्तव में जीवन में संतुलन तथा संयम के अभाव के कारण ही पैदा होती है। जैसे भोजन के बिना जीवन असंभव है, लेकिन अधिक मात्रा में भोजन करना या बार-बार भोजन करना अथवा तामसिक भोजन करना अनेक प्रकार के रोगों को आमंत्रित करता है, उसी प्रकार सुखी व संतुष्ट जीवन तथा सृष्टि के विकास के लिए यौन संबंध और तद्जन्य संतुष्टि भी जरूरी है। लेकिन इसमें जहां भी मर्यादा का उल्लंघन अथवा अतिक्रमण हुआ या उच्छृंखलता आई, व्यक्ति का संतुलन बिगड़ा। यदि व्यक्तियों का संतुलन बिगड़ेगा तो समाज का संतुलन भी निश्चित रूप से बिगड़ेगा। समाज में हिंसा और अनैतिकता के लिए अमर्यादित यौन संबंध काफी हद तक उत्तरदायी है।

❋ अगर डर मन की एक अवस्था है, तो साहस भी मन की दूसरी अवस्था है। यह आप पर निर्भर है कि आप क्या चुनते हो। चेतन या अचेतन मन में अगर असफलता का डर तुम्हारे सपने साकार करने की क्षमता को कम कर देता है।

❋ आपके पास नसीब जितना लेकर आता है, उसे पाने के उतने ही अवसर आपके पास होते हैं। जैसे आप सोचते हैं वैसे ही आप बन जाते हैं। अगर आप हमेशा भयंकर के बारे में सोचते हैं, तो भयंकर ही घटित होगा।

❋ भगवान के धाम तक पहुँचने के लिए सात द्वार पार करना पड़ता है। संक्षेप में यम, नियम, आसन, प्रणायाम, प्रत्याहार, ध्यान और धारणा रूपी हर द्वार पर विघ्न है। साधना की अवधि में जागतिक विकारों से सतर्क रहना चाहिए। मौके पर अपनी शालीनता, सहिष्णुता आदि सद्गुण नहीं खोना चाहिए। जय और विजय का अर्थ है कीर्ति और प्रतिष्ठा। ये दोनों परस्पर साथ ही रहते हैं। ज्ञानी को इसमें ध्यान नहीं देना चाहिए तभी वह तदाकार हो सकता है। कश्यप और दिति ये दोनों एक हैं, कर्ममार्ग हैं। कर्ममार्ग द्वारा भगवत्प्राप्ति में दुर्भाग्य रूपी प्रबल प्रभञ्जन (बाधा) बाधक होता है। गृहस्थाश्रम की प्रशंसा समवेत स्वर से की जाती है। गृहस्थाश्रम में समुचित यम-नियम के पालन से ब्रह्म की प्राप्ति सरल है। पति-पत्नी परिवार जन का कर्तव्य है कि किसी कार्य को सम्पादित करने से पहले परिणाम का विचार कर लें, अन्यथा हानि सम्भव है। बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय। काम बिगारे आपनो जग में होय हसाय।। कश्यप-दिति ने परिणाम का विचार नहीं किया। अत: निर्मल वंश के कलंक रूप राक्षसपुत्र हुये। गृहस्थाश्रमवासियों के लिए शास्त्र कहता है कि किसी पर्व पर तथा पुण्य विशेष तिथि एवं ब्राह्म मुहूर्त में ईश्वर चिंतन के साथ संयम का पालन करें।

❋ जो बीज आप बो देते हैं, वहीं से सब शुरू होता है। जो भी मेहनत आप डालते हो, वैसे ही परिणाम आप पाएंगे। थोड़ी देरी हो सकती है। धीरज रखना आपको सीखना होगा। कई बार जल्दबाजी में होने का दृष्टिकोण आपको कतार में सबसे आखिरी में रख देता है। इसलिए छोड़ो नहीं। प्रयास करते रहो। डर पर जीत हासिल करने का सबसे बेहतर तरीका है कि निरंतर आगे बढ़ना चाहिए। अपने डर के कारण कामों को अधूरा न छोड़ो। हालात कभी भी निराशावादी नहीं होते। आप उस पर निराशा से सोचते हो।

❋ आप अभी जहां पर हैं और जो भी हैं, वह आपने जो किया या जो किया नहीं, उसके कारण है। इसलिए दूसरों

को दोष देना या हमेशा सहानुभूति और यान पाना बंद करना चाहिए नहीं तो ऐसा करना खुद को मूर्ख बनाना है और मात्र समय की बर्बादी है।

✻ सामान्य ज्ञान के बिना सिर्फ किताबी ज्ञान बहुत कम उपयोगी है और कई बार यह घातक भी सिद्ध होता है अधिक अच्छे इन्सान बनने की वृद्धि को बढ़ावा देते हैं। सामान्य ज्ञान, अच्छा व्यक्तित्व और निर्मल हृदय उच्च शिक्षा से भी कई ज्यादा उपयोगी है।

✻ दुनिया की ख्वाहिश का न होना, शरीर और दिल के लिए सुकून की बात है क्योंकि दुनिया की चाहत रंजो और गमों को बढ़ाती है।

✻ बुराई को रोकना और अच्छाई का प्रचार करना भी इन्सान के फर्ज में शामिल है।

✻ अपना बुरा बर्ताव बदल कर देखो कि तकदीर खुद-ब-खुद बदल जायेगी।

✻ आदमी को किसी की चाहत उसे अंधा और बहरा बना देती है।

✻ दूसरों के लिये वो ही पसंद करो जो अपनों के लिये पसंद करते हो।

✻ आवश्यकताओं के मुताबिक जिंदगी जीनी चाहिए, ख्वाहिशों के मुताबिक नहीं। जरूरत तो फकीर की भी पूरी हो जाती है और ख्वाहिश शनहशाहों और बादशाहों की भी अधूरी रह जाती है।

✻ काल से अपवित्र भूमि आदि की, स्नान-शौच से शरीर आदि की, प्रक्षालन से वस्त्र आदि की, संस्कारों से गर्भ आदि की, तपस्या से इन्द्रिय आदि की, यज्ञ से ब्राह्मण आदि की, दान से धन-धान्य की, सन्तोष से मन की और आत्म-ज्ञान से आत्मा की शुद्धि होती है।

✻ घर में धन की अधिकता होने पर- मद्यपान, परस्त्रीगमन और द्यूतक्रीड़ा आदि दुर्गु स्वाभाविक रीति से चले आते हैं। ऐश्वर्यमद और श्रीमद से अन्धे होकर व्यक्ति अपने को अजर-अमर समझते हुए प्राणियों की हत्या किया करते हैं। अण्डे, मांस आदि घृणित भोजन के आदी बन जाते हैं। उन्हें दूसरों के दु:ख-कष्टकी अनुभूति नहीं होती। किसी भी प्राणी को डाँटने, फटकारने, मारने यहाँ तक कि वध करने में भी वे हिचकते नहीं है। इसीलिये श्रीमदान्ध असत् पुरुषों को दरिद्र बना देना उनकी आँखों में अंजन लगाना है क्योंकि दरिद्र हो जाने पर ही वे दरिद्रता के दु:ख को समझ सकते हैं। जिस के पैर में बिवाय फटती है, वही बिवाय के फटने के कष्ट को जानता है और जिसके पैर में बिवाय नहीं फटी वह दूसरे की बिवाय के कष्ट को क्या जाने, अत: दरिद्रता सब रोगों की एक दवा है। दरिद्र व्यक्ति में अहंकार नहीं होगा, मद नहीं होगा और उसे जो कष्ट मिलेगा, वह उसकी तपस्या हो जायेगी। दरिद्र व्यक्ति दूसरे प्राणियों को अपने ही समान समझता है।

✻ अजेयता बचाव में निहित होती है, जबकि विजय की संभावना आक्रमण से जुड़ी होती है। कामयाब बचाव जैसी कोई चीज नहीं होती। एक तरह के बचाव में हम जिम्मेदारी लेते हैं लेकिन गलती नहीं मानते, दूसरे तरह के बचाव में गलती मानते हैं लेकिन जिम्मेदारी नहीं लेते। उदासी भी एक तरह का बचाव है। कामयाब बचाव जैसी कोई चीज नहीं होती। हमेशा बचाव से ज्यादा जोश हमले में होता है। विस्तार से लोकाचार का पालन करने से अच्छा बचाव कोई नहीं होता।

✻ ईश्वर को बाँधने की शक्ति तो एकमात्र भक्ति में ही है अत: भक्ति ज्ञान से बढ़कर है।

✻ भोजन सर्वदा हँसते हुए ही करना चाहिये। प्रसन्न मन से किया गया भोजन बुद्धि और बल का विकास करता है।

✻ बिना कर्म के फल प्राप्ति के सपने देखना मूर्खता है।

✻ जिसके पास अच्छे विचार है वह कमी निर्धन नहीं है।

❋ कुछ पाकर जिया जा सकता है पर जिन्दगी को तो कुछ देकर ही पाया जा सकता है।

❋ सफल होने के लिये अपने काम से प्रेम होना अनिवार्य है।

❋ देवता प्रसन्न होने पर और कुछ नहीं देते, सद्‌बुद्धि प्रदान करते है।

❋ कृष्ण और कंस, राम और रावण, गान्धी और गोडसे इनकी राशियां एक ही थी फिर भी संस्कारों एवं आचरण में दो कमी न मिलनेवाले छोर जितना अन्तर था। यह शाश्वत सत्य है कि जीवन एक गूंज है उसमें जैसा हम कहेंगे और करेंगे वैसा ही हमें कथन एवं कृत्य के रूप में लौट कर प्राप्त होगा। आज विश्व में भौतिक सुख-सुविधाओं, ऐश्वर्य-विलास एवं नश्वर धन का कोई अभाव नहीं है। कमी है तो सिर्फ अच्छे संस्कारों की और सद्‌गुणोंकी। अपनी सन्तान को विरासतमें वह धन दीजिये जो कभी नष्ट नहीं होता और बांटने पर अधिकाधिक बढे। अच्छे संस्कार और आचरण आपके परिवार, कुल, समाज, देश एवं राष्ट्र का नाम उजागर (रोशन) करेंगे।

❋ बैर विरोध, कलह से झगडा, बखेडा होता है जो कुल नाश के लिये बिना धातु का शस्त्र है।

❋ छल, कपट और अनीति से कमाया धन बहुत लम्बे समय तक स्थिर नहीं रहता।

❋ संसार में रहते हुये संसार का न होना जीवन जीने की सबसे बडी कला है।

❋ सच्ची जिन्दगी वही है जहां हम अपने लिये नहीं सबके लिये जीते है।

❋ जो सूकुन, शान्ति और मानसिक सम्बल संयुक्त परिवार में मिलता है वह कही नही मिलता, न एकल परिवार में, न वृद्धाश्रम में चाहे संयुक्त परिवार के सिवा तुम्हें सम्पूर्ण सुख-सुविधा मिल जाये पर परिवार की कमी हर समय खलती रहेगी। वृद्धाश्रम हमारी संस्कृति और समाज का हिस्सा नहीं है। आधुनिकता के पीछे पागल हुई पीढ़ी ने अपनी सुविधा की सहुलियत से इसे समाज में जगह दे दी है। वृद्धों की कभी उपेक्षा मत करो, उनकी सेवा और सम्मान करो। उनके चेहरे पर अनुभवों की गीता लिखी हुई है, वे संसार को पढ़ना जानते है और इन्सान को पहचानते है।

❋ मेहनत व लगन ही मनुष्य को परिपूर्ण बनाती है।

❋ जीवन ही मन्दिर है और जीवन के प्रति श्रद्धा ही सच्चा धर्म है।

❋ जो दूसरों को खाई खोदता है, उसके लिये कुँआ तैयार रहता है।

❋ पुण्यकर्म छिपाने से और अधिक फैलता है और पापकर्म प्रगट करने से नष्ट होता है। पुण्यकर्म तथा पापकर्म कितने भी छिपकर किये जायँ, एक दिन वे अवश्य ही प्रगट हो जायँगे। लोग समझते हैं- हमारे पुण्य और पापों को एकान्त में कोई देखता नहीं। परन्तु परमात्मा सबको देखते हैं। सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, अन्तरिक्ष, दिन, रात्रि, सन्ध्या तथा धर्म- ये सभी की बातें देखते हैं।

❋ जहाँ विधि, निषेध दोनों का ही अन्त हो जाता है। इसी अवस्था का नाम अवधूतावस्था है।

❋ जो वृक्ष साथ-साथ सामूहिक रूप में खड़े होते है, वे एक-दूसरे के सहारे से तेज आंधी को झोकों से, और तेज तूफान को भी झेल जाते है, उखडते नहीं इसलिये एक साथ रहना सीखो।

❋ लालच ईमान को खा जाता है और चिन्ता आयु को खा जाती है।

❋ गुस्सा आना स्वभाविक प्रवृत्ति है पर इससे परस्पर बोल चाल बन्द मत करना क्योंकि आपस की बोल चाल बन्द होते ही सुलह के सब दरवाजे बन्द हो जाते है। गुस्से के बाद आदमी जो बैर पाल लेता है वह बुरा है।

✻ वही मनुष्य श्रेष्ठ है जो पराये को भी अपना ले।

✻ जो काम शुरू ही नहीं होता उसे खत्म होने भी देर लगती है। सही काम करने के लिये हर दिन, हर समय शुभ और सही है।

✻ जिस भाषा के बोलने में बहादुरी, सच्चाई, दया इत्यादि के लक्षण नहीं होते तब उस भाषा के बोलनेवाले बहादुर, सच्चे और दयावान व्यक्ति नहीं होते।

✻ विद्वान शत्रु भी सदा श्रेष्ठ है और मूर्ख मित्र कभी हितकारी नही।

✻ दोष ही खोजना है तो स्वयं में खोजो तभी तुम कुछ कर सकोगे।

✻ मनस्वी पुरुष कहते है विजय की और सफलता का मूल अच्छी मंत्रणा है।

✻ अकेला व्यक्ति सर्वज्ञ भी हो तो उसके निर्णय में दोष हो सकता है।

✻ अधिकार की अपनी मर्यादा होती है और उसकी सुरक्षा के लिये अधिकार का प्रयोग करना संयत रखना पडता है।

✻ जो कूडे करकट को भी खाद में परिणित कर दे वही सच्चा कलाकार है।

✻ बच्चों के साथ किये हुये वादे निभाने चाहिये।

✻ सौन्दर्य तथ्य की सीमा को लांघ जाता है उसके गणित में कोई आदर्श नहीं है कोई परिणाम नहीं है।

✻ अगर कुछ करना ही चाहते हो तो अच्छा काम करो। माँ-बाप की सेवा करो। पड़ोसियों का ख्याल करो, बड़ों का आदर करो, ईमानदारों से दोस्ती करो, मुसीबतों से सब्र करो, गुनाहों से दूर रहो। अपने आप में सुधार करो, भगवान पर भरोसा करो, जिंदगी की कद्र करो, झूठ से बचा करो। नेक कामों में खर्च करो। हक के साथ इंसाफ करो। दूसरों के ऐब छिपाया करो। सिर्फ भगवान के सामने झुका करो। कर्ज जल्दी अदा करो। भगवान के डर से रोया करो। गरीबों पर दया करो। छोटों से मोहब्बत करो। बीमारों की पूछताछ करो। बुरे कामों से नफरत करो। मृत्यु को याद करो।

✻ जैसे बीज अपना अस्तित्व मिटा कर (पृथ्वी में मिल कर) वृक्ष बन कर एक से अनेक हो जाता है, उसी प्रकार वह प्राणी जो सब प्राणियों के हित में अपने को मिटा देता है तो वह अनंत शक्तिसंपन्न हो जाता है।

✻ जब तक देह निरोग है और जब तक मृत्यु से दूर है, तभी तक ही पुण्यादि करके अपना हित करना उचित है, मृत्यु हो जाने पर कोई क्या करेगा?

✻ रात में तीन लोग जागते हैं उनमें योगी, भोगी और रोगी होते हैं। योगी साधना के खातिर जागता है, भोगी वासना के खातिर जागता है और रोगी वेदना के खातिर जागता है। योगी साधना से सिद्ध बन जाता है। भोगी वासना से गिद्ध बन जाता है और रोगी वेदना से क्रुद्ध बन जाता है। वासना को छोड़ो, साधना से स्वयं को जोड़ो और कभी रोग आ जाए तो समता से सामना करो। उससे मुंह मत मोडो। किसी भी नगर में दो चीजों का होना शर्म की बात है एक शराब की दुकान और दूसरा जुआ घर। जुआ इन्सान को प्रलोभन देकर उसका जीवन बर्बाद करता है। शराब आदमी को पी जाती है। आदमी एक बार पीता है, लेकिन बाद में शराब इन्सान को जीवन भर पी-पीकर चुसती है। शराब पीने के बाद आदमी-आदमी नहीं रहता वह शैतान बन जाता है। शराब से राजस्व तो बढ़ता है, पर साथ-साथ राज्य में शैतानों का भी इजाफा बड़े पैमाने पर हो जाता है। शराब और गुटका आदमी के खाने के लिए नहीं है ये तो गधेका भोजन है।

✻ हमने इमारतें तो ऊंची बना ली है परंतु दिल छोटे कर लिये है। रास्ते तो चौडे कर लिए हैं परंतु देखने का नजरिया तंग हो गया है। हम ज्यादा खर्च तो करते हैं परंतु आनन्द नहीं लेते। हमारे पास बड़ा मकान तो है परंतु उसमें रहनेवाला परिवार

छोटा है। आज मकान तो अच्छे बनते हैं परंतु घर टूट रहे हैं। हमारे पास समय की कमी है इसीलिए समझौते ज्यादा हैं। हमारी आमदनी तो अधिक है पर नैतिकता कम। हमें स्वतंत्रता तो अधिक है पर खुशियां कम। भोजन तो अधिक है पर पोषण कम। आज घर में पति-पत्नी कमानेवाले दोनों भी है परंतु आपस में सामंजस्य कम है। हमारे पास ज्ञान तो बहुत है पर निर्णय लेने की क्षमता कम है। हमारे पास दवाएं बहुत हैं, पर शरीर स्वस्थ नहीं है। हम बातें ज्यादा करते हैं, प्यार थोड़ा और नफरत अधिक। हम लोग चांद पर तो हो आए परंतु सड़क के पार पड़ोसी के घर जाना कठिन लगता है। हमने अंतरिक्ष पर तो विजय हासिल कर ली, परंतु अपनी अन्तर्रात्मा तक नहीं पहुंच सके।

❊ प्रेमी जहां से गुजर जाते हैं, वहां मंदिर खड़े हो जाते हैं। उनके पैरों के चिन्ह जहां पड़ जाते हैं, वहां काबा और कैलाश बन जाते हैं, वहां तीर्थों के निर्माण हो जाते हैं।

❊ अविश्वास सन्देह से होता है। सन्देह स्वार्थ से होता है, स्वार्थ असद्बुद्धि करने से होता है, असत् में बुद्धि विषयों में आसक्ति होने के कारण होती है।

❊ ईश्वरका चिन्तन नहीं करोगे, ईश्वरकी ओर देखोगे नहीं तो ईश्वर मिल कैसे जायगा? ईश्वरका चिन्तन करोगे तो ईश्वर मिलेगा और संसारका चिन्तन करोगे तो संसार मिलेगा। जड़का चिन्तन करोगे तो जड़ मिलेगा, अहंकारका चिन्तन करोगे तो अहंकार बढ़ेगा और ईश्वरका चिन्तन करोगे तो ईश्वर मिलेगा।

❊ दु:खाकारवृत्ति प्रारब्धानुसार अपने-आप आती है। अनेक बार बिना बाहरी कारण हुए भी अन्त:करणमें दु:खाकारवृत्ति उदित हो जाती है। संसारमें अभिमानी, आग्रही, हठी, नामसझके अतिरिक्त और कोई दु:खी नहीं होता। वह चाहता है- ऐसा ही हो। ऐसा ही रहे। यह न हो। उसने ईश्वरकी इच्छाके सामने अपने मनको खड़ा कर दिया। वह अपनेको महत्त्व देता है और चाहता है कि ईश्वर हार जाय। ऐसे व्यक्तिको संसारमें दु:ख मिलता है। आश्चर्य यह है कि मनुष्य अपनी नासमझी मिटाना नहीं चाहता। जब तक मनुष्यको दूसरेमें दोष दीखें, वह धर्मात्मा नहीं है। जब तक मनुष्यको दूसरोंमें और अपनेमें भी दोष दीखें, धर्म उसके जीवनमें अभी आया नहीं। दूसरोंमें दोष न दीखें, पर अपनेमें दोष दीखें तो भक्ति आ सकती हैं; किन्तु ईश्वरमें स्थिति नहीं हो सकती। ईश्वरमें तब होगी जब केवल ईश्वर दीखेगा। अपने पराये किसीमें दोष नहीं दीखेगा। पामर कहता है- सब पतित है। विषयी कहता है- तुम पतित हो। साधक कहता है- मैं पतित हूँ। सिद्ध कहता है- कोई पतित नहीं।

❊ जो ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, निन्दा आदिसे अपना हृदय मलिन करता है, वह अपने जीवनको ही नरक बनाता है। वह अपने पैरों पर ही कुल्हाड़ी मारता है।

❊ जहाँ विचारयुक्त श्रद्धा और श्रद्धायुक्त विचार होता है, वहाँ ज्ञानकी उत्पत्ति होती है।

केवल विचारसे ज्ञान नहीं होता न केवल श्रद्धासे ज्ञान होता है। जहाँ श्रद्धामें सहृदयता हैं और विचारमें प्रकाश है, इसीसे ही वहाँ जीवन्मुक्ति आती है। वस्तुकी सिद्धि करोड़ों कर्मनुष्ठानसे नहीं होती। वह तो विचारसे ही होती है। अज्ञानकी निवृत्ति विक्षेपके अभावसे नहीं होती। अभाव किसीका भी निवर्तक या प्रवर्तक नहीं होता। अज्ञानको ज्ञान निवृत्त करता है।

❊ तुम्हारी या कारीगरकी बनायी मूर्ति तो ईश्वर हो सकती है तो ईश्वरकी बनायी मूर्ति क्यों ईश्वर नहीं हो सकती? माता-पिता कन्या-दान किसी लड़केको नहीं करते, लड़केको नारायण समझकर कन्यादान करते हैं। जहाँ तुम ईश्वर-बुद्धिसे सेवा करते हो, वहाँ यह मत देखो कि वह क्या करता हे। नर्मदेश्वरको आपने सृष्टिसंहार करते या शालग्रामको जगत्पालन करते देखा है? श्रद्धा ही तो करते हैं कि नर्मदेश्वर प्रलयंकार शिव हैं और शालग्राम जगत्पालक नारायण हैं। भावना ही मनुष्यका कल्याण करती है। जिसके हृदयमें भावनाकी पूँजी है, उसका कल्याण ही कल्याण है।

* विश्वास करो और विश्वासपात्र बनो। प्रेमके लिए पति-पत्नी में विश्वास होना आवश्यक है। तुम चाहे छोटी बातमें झूठ बोलो या बड़ी बातमें; किन्तु सामनेवालेको तुमपर अविश्वास तो हो ही जायगा कि यह दूसरी बातोंमें भी झूठ बोलता होगा। अविश्वास आयेगा तो जीवन में विष आ जायेगा। अविश्वासमें सच्चा प्रेम नहीं हो सकता। विश्वास प्रेम का बाप है। यदि तुम किसीके कहनेसे झूठ बोलते हो तो कहनेवाला भी फिर सोचेगा जो मेरे कहनेसे यह झूठ बोल गया, वैसे ही दूसरेके कहनेसे भी मुझसे झूठ बोल सकता है जिसके लिए चोरी करो, वही तुम्हें चोर कहे। अत: ऐसा कुछ मत करो कि अपने प्रियाकार अविश्वास भाजन बनो। जब कोई बुराई नहीं करनी है तो एकान्तमें देना-लेना या कानाफूसी करनेकी आवश्यकता क्या है।

* किसीसे प्रेम तभी होता है जब मन में गौरवका भाव बना रहता है तब प्रेम दिनोंदिन बढ़ता है। जहां प्रेमका अर्थ अनादर हो जाता है, तब प्रेमके घटनेका मार्ग खुल जाता है। अत: प्रत्येक बातमें बराबरीका अधिकार मत रखो।

* गरीब की आत्मा में पुण्य बसता है। जब आपने उसे मीठी बातसे सन्तुष्ट नहीं किया और उसका अपमान किया तो फिर पुण्य कैसा? मनमें सौहार्द्र बना रहना चाहिए।

* अपने मनमें दोष मत भरो। अत: अपने हृदयको भरनेके लिए दूसरोंसे दोष उधार मत लो। पापियोंकी चर्चा भी मत करो; क्योंकि वह चर्चा भी अकल्याणकारिणी है। उनकी बातें सुनकर तुम्हारा हृदय बिगड़ेगा, वह तुम्हारा मित्र नहीं शत्रु है। तुम प्रभुको अपना हृदय समर्पित करना चाहते हो। तुम तो दोषदर्शी हो। जो दोष तुमने देखा नहीं, उसे कानोंसे सुनकर हृदयमें भर लिया, तब भगवानके सम्मुख कैसे जाओगे?

* लेने-देने का नाम व्यवहार नहीं है। हमारे मनमें किसके विषयमें क्या विचार है और वाणी किसके विषयमें क्या बोलती है इसका नाम व्यवहार है। प्रेमसे मारा गया थप्पड भी मधुर लगता है। तिरस्कारपूर्वक लगाया गया चन्दन भी दु:खी करता है।

* कुलीनता, विद्या, सौन्दर्य, धन, पद आदिका मद व्यक्तिको हुआ करता है और ये मद व्यक्तिको भगवान्‌से भी विमुख कर देते हैं।

* ईश्वर के सभी कार्य मंगलमय और शुभ ही होते हैं इसमें अमंगल और अशुभ की सम्भावना ही नहीं। ईश्वर में विरीतता तो है ही नहीं जो ईश्वर के कार्यों की आलोचना व अवहेलना करते हैं, ईश्वर को मानवीय तराजू पर तोलते हैं वे बादमें पछताते रह जाते हैं।

* प्राणियों को प्राण सबसे अधिक प्रिय होते हैं। किन्तु प्राणों से भी अधिक प्रिय स्त्रियों के लिये पति का गौरव है। सती साध्वी पतिव्रता स्त्रियाँ सब कुछ सह सकती हैं, किन्तु वे अपने पति का अपमान सहन नहीं कर सकती। भूल से भी उनसे कभी पति की इच्छा के विरुद्ध आचरण हो जाता है, तो उसका प्रायश्चित वे प्राणों की बलि देकर भी करती है।

* जीवन में तीन चीजें मिलना कठिन हैं- पहली अच्छी पत्नी, दूसरी अच्छा पुत्र, तीसरी अच्छा पड़ोसी। पत्नी और धर्म पत्नी में फर्क है। जो पतन के मार्ग ले जाये, वह पत्नी है और जो खुद धर्म के पथ पर चले और पति को चलने के लिए प्रेरित करे, वह धर्म-पत्नी है। अच्छा पुत्र वह नहीं, जो मां-बाप को अपने पास रखता है बल्कि वह है, जो खुद मां-बाप के पास रहता है। अच्छे पड़ोसी से अच्छा कोई मित्र नहीं, हम मित्रों के बिना तो जी सकते हैं, अच्छे पड़ोसी के बिना नहीं। संतों का पड़ोसी ईश्वर है।

* इंसान दिल में बोझ रखता है, गधा पीठ पर ढोता है।

* हम दूसरों की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझ कर जीएं। अपने दु:ख से दु:खी होकर तो हर कोई आंसू बहा लता है

लेकिन धर्मात्मा और ज्ञानी तो वही है जिसकी आंखें दूसरों के दु:ख और पीड़ा को देखकर नम हो जाती है। मनुष्य तो वही है जो दूसरों के दु:ख-दर्दों को पहचानता है और उन्हें दूर भी करता है। जो दूसरों की पीड़ा को न पहचाने और दूसरों की पीड़ा को देखकर सुख का अनुभव करे वह नर नहीं, नराधम है।

* जिसे स्वयं पर विश्वास है, वह स्वर्ग में है।

* रोज कुछ लोग दुनिया में पैदा होते हैं और इतने ही लोग मर भी जाते हैं। पर इससे दुनिया में क्या फर्क पड़ता है? कौन आया, कौन गया कुछ भी मालूम नहीं पड़ता पर जो लोग परहित के लिए जीते हैं उनके जाने से एक अभाव सा महसूस होता है।

*** लोग जनमते और मरते है ये सभी जानते है एक दिन सबको जाना है।**
न कोई किसीके साथ आया है, न किसीके साथ जायेगा।।
किसी एक के जाने से दुनिया ठहर नहीं जाती है।
लाखों मिल जानेपर भी किसी एक की कमी पूरी नहीं होती।।

* जो महान् शक्तियाँ हैं, अभूतपूर्व विभूतियाँ हैं, उनके वचन को ही, सत्य मानना और अपने-अपने अधिकार के अनुसार उसी के अनुसार आचरण करना चाहिये। उनके आचरण का अनुकरण तो कहीं-कहीं ही किया जा सकता है। इसलिये बुद्धिमान पुरुष को चाहिये कि उनका जो आचरण उनके उपदेश के अनुकूल हो, उसीको अपने जीवन में उतारें।

* लोग तुम्हें क्या कहते हैं इसके बारे में चिंता मत करो। हमेशा अपने कुंठा पर सोचना बंद करो और इस्तेमाल में न लाई गई अपनी क्षमताओं पर एकाग्रता लाओ। उन पलों के बारे में सोचना बंद करो, जब तुमने अपना लक्ष्य हासिल करने की कोशिश की थी और असफल हो गये थे।

सफल आदमी वह है जो आलोचना को रचनात्मकता में बदल देता है। हमारे विचार और कृत्यों की जिम्मेदारी हमें लेनी होगी। क्योंकि हमारी अनुमति से ही सारी बातें होती हैं। इसलिए खुद से वादा करो कि अपनी खुद की समस्याओं के लिए दूसरों को दोष नहीं दोगे।

अगर आप खुद पर भरोसा नहीं करते हो, तो सफल होने के बहुत कम अवसर आपके पास हैं। कोई दूसरा तुम्हें धक्का दे, या साहस का स्त्रोत बने, इसका इंतजार क्यों करते हो? इस दुनिया का समाना करने खुद ही क्यों तैयार नहीं होते? आप एक महान व्यक्ति हैं। एक बार आप इस भरोसा करेंगे, आपकी ताकत और साहस कई गुना बढ़ने लगेगा। फिर आपकी राह में आनेवाली दुनिया का सामना करने आप तैयार हो जायेंगे। जो भी करो, उसके बारे में दीवाने हो जाओ। गलती करने में डरो मत। जो भी आप करते हो, उसको लेकर वरिष्ठ, प्रामाणिक और मेहनती बनो। केंद्रित रहो, क्योंकि सुव्यवस्थित अनुशासित और निर्देशित मन को हराया नहीं जा सकता।

* मनुष्य के पास सब कुछ है, पर सब्र नहीं है। जिंदगी में सब्र न हो तो फिर अपनी कब्र खोद लेनी चाहिए क्योंकि सब्र के बिना मौत के अलावा और कोई चारा नहीं है।

* जरूरत पाप नहीं है, जरूरत से ज्यादा रखना पाप है। चीजों को जरूरत के रूप में इस्तेमाल करो, उन्हें विलासिता के रूप में अपनाने की जरूरत नहीं है।

* धार्मिक होने के लिये किसी से घृणा न हो, भय ना हो तथा शत्रुता भी न हो।

* उदारता एक सीमा के बाद हमारी कमजोरी जाहिर करने लगती है।

❋ जो व्यक्ति स्वयं का स्वामी हो जाता है वह दूसरे का स्वामीतत्व में आनन्द नहीं ले सकता।

❋ पुस्तक और मित्र जीवन में बहुत कम और अच्छे होने चाहिये। दो व्यक्तियों के एक चित्त होने पर कोई भी कार्य असाध्य नहीं रह जाता।

❋ खोखले अहंकार के कारण मनुष्य भूल जाता है।

❋ जिस मनुष्य में जितना साहस होता है उसी के अनुसार उसका संकल्प भी होता है।

❋ स्वयं को व्यस्त रखना और संयमित नियमन दिनचर्या रख कर जीना कई बीमारियों का इलाज है। व्यक्ति इससे अपने आपको कभी अकेला महसूस नहीं करता।

❋ जिसने मन को जीत लिया है उसने संसार को जीत लिया।

❋ दूसरों की अच्छी बातों को ग्रहण करना स्वयं के लिय अच्छा है।

❋ जो उधार है वह निष्प्राण है जो नगद है वही वास्तव में जीवित है।

❋ जब तक मनुष्य उद्योग करेगा तो उससे भूल होना सम्भव है।

❋ वही कविता अच्छी मानी जाती है जो बिना कुछ कहे ही बहुत कुछ कह जाती है।

❋ किसी के साथ उपकार किया है तो उसे प्रसिद्ध करके उपकृत को लज्जित मत करो।

❋ आर्थिक विषमता के आगे राजनैतिक समता की कुछ नहीं चलती।

❋ बिनालक्ष्य के जीवन जीना खाली मैदान पर प्रतिस्पर्धियों के लक्ष्य की ओर फुटबॉल को ठोकर मारने के बजाय इधर-उधर मारने में समय व्यर्थ करने जैसा है। यह बेहद जरूरी है कि आपके व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में कोई लघु या दीर्घ लक्ष्य हो और फिर हासिल करने हेतु संगठित तरीके से पूरी कोशिश करनी चाहिए। ये सभी लघु या दीर्घ लक्ष्य अंतिमत: जीवन में सबसे ऊंचा लक्ष्य हासिल करने के लए बुनियाद बन जाते हैं; जिसे हम आत्म ज्ञान कहते हैं। जो भी आप सोचते, बोलते या करते हैं, उसमें निश्चित रूप से एक लक्ष्य होना चाहिए।

❋ एक आलसी और दिशाहीन मन बहुत आसानी से नकारात्मक विचार और निराशा का शिकार हो जाता है। गलतियाँ करना मनुष्य स्वभाव है। इसमें अस्वाभाविक या अपराध जैसा कुछ भी नहीं है। गलतियाँ आपकी सफलता में खाद का काम करती हैं। हर गलती में हमारे लिए एक संदेश छिपा रहता है। लेकिन हम अपनी गलतियों से सीखेंगे नहीं तो हम उस सबका लाभ खो देंगे, जो हर गलती उसके साथ ले आती है।

❋ जब कोई आपको ठुकराता है तब हतोत्साहित महसूस करना मूर्खता है। आपके साथ ऐसा करनेवाला व्यक्ति हो सकता है आपका मूल्यांकन करने के लिए तकनीकी रूप से योग्य न हो, या वह बहुत कुंठित, पक्षपाती और ईर्ष्यालु हो। इसलिए आपकी ओर से उसके मूल्यांकन को सही समझ लेना ठीक नहीं है।

❋ अगर किसी विशिष्ठ काम को लेकर एक व्यक्ति आपकी आलोचना करता है, तब उसकी टिप्पणियों को आप अगले कार्य में सुधार हेतु उपयोग की तरह लें, और सारे मामले को कुरेदना टालें। मानसिक शांति पर इतना हावी होने न दें कि आप पूरी तरह अनैतिक हो जाएँ। ऐसे लोगों के बारे में निरंतर सोचकर उन्हें महत्व देने की बजाय उन्हें पूरी तरह अनदेखी करें।

❋ कोई कार्य शुरू करने के लिए सबसे सही समय अभी और यही है और न कि कल। रोज बातों पर चर्चा और बहस करने का मतलब है, आप असफलता की ओर चल पड़े हैं, इसलिए आलस टालें और अभी शुरूआत करें।

❋ जीवन में प्रमाद नहीं होना चाहिए, प्रमादरहित होना चाहिए। आवश्यक काममें भूल नहीं होनी चाहिए। आलस्य यह

है कि स्मरण तो था; किन्तु काम किया नहीं और स्मरण ही नहीं रहा, यह प्रमाद है। प्रमाद प्रेमकी कमीका सूचक है। प्रमाद मृत्यु है। जिसे समयपर अपने कर्तव्यका स्फुरण नहीं हो, वह तो शव के समान है।

* शास्त्र कहता है कि जब पति जो तप या धर्म करता है, उसमें आधा पत्नीका भाग होता है।

* जो स्वयं सम्मान न चाहे, दूसरेको सम्मान दे, वही सम्मान्य है। सम्मान देनेमें कृपणता नहीं करनी चाहिए। घरके आत्मीयका भी अपमान मत करो। आप बच्चेका तिरस्कार करते हो तो उसके अवचेतन मनमें उसका संस्कार जन्म जाता है। बड़ा होनेपर वह अपने अपमानका बदला लेता है। शत्रुको देखकर तुमने मुख बिगाड़ा तो शत्रु का क्या बिगड़ेगा? इससे तो अपने तिरस्कार का मार्ग खोल दिया। आज तुमने उसका तिरस्कार किया है कल वो तुम्हारा तिरस्कार करेगा।

* किसीकी विवशताका लाभ नहीं उठाना चाहिए। अगर तुम किसीकी सेवा करो तो वे तुम्हारा सेवक हो जायेगा। सेवा तो सास-ससुर, देवर-जेठ आदि सबकी करनी चाहिए, यह सबकी सेवा पतिके लिए ही है। पतिके सम्बन्धसे ही यह सब सम्बन्ध है। अगर पति कहे अमुककी सेवा मत करो तो उसकी सेवा नहीं करनी चाहिए। सर्वश्रेष्ठ सम्बन्धपात्र पति ही है। अपना शरीर संसारमें सबसे प्रिय है। अपने शरीरकी, मनकी अपेक्षा न करके सेव्यकी सेवा की जाती है।

* घरकी आवश्यकता स्त्रीके लिये है, गृहस्थ का नाम ही अङ्गनाश्रम है। मकानका स्वामी पुरुष नहीं है। मकानकी स्वामिनी स्त्री है। एक बार महात्मा गांधीजी जब युवा थे उनकी कस्तूरबासे आपस में कुछ कहा-सुनी हो गयी। गांधीजीने कस्तूरबा से कहा- घर से निकल जाओ। पर कस्तूरबा घरसे नहीं निकली। तो गांधीजी ने उसे हाथ पकड़कर द्वारसे बाहर कर दिया और घरका किवाड़ बन्द कर दिया। थोड़ी देर बात गांधीजीने किवाड़ खोलकर देखा, तो कस्तूरबा द्वारपर ही बैठी रही। तो गांधीजी बोले- यही बैठी हो, गयी नहीं? कस्तूरबा बोली- आपको शरम आनी चाहिए। आप घरसे निकल जाओ और रात्रिमें किसी मित्रके यहाँ ठहर जाओ तो आपको कोई कुछ नहीं कहेगा, किन्तु मैं घरसे जाकर रात्रिमें दूसरेके घर रह आऊँ तो लोग मेरी बदनामी करेंगे और आपकी भी बदनामी करेंगे। यह घर तो मेरा है, मैं तो इसीमें रहूँगी। आप इसे छोड़कर जाना चाहो तो भले चले जाओ जब आना हो तो आ जाना।

* दुष्टोंका रक्षण यही है कि उसे हम कुछ भी देकर तृप्त नहीं कर सकते। देहमें ऐसी कुछ दुष्ट इन्द्रियां मनमें बस गयी है। जीवन में सचमुच आवश्यकता कितनी है और झूठी माँग कितनी है। हम बहुत ही नकली आवश्यकताएं बनाते रहते हैं। यह भी ले लें, यह भी लेलें। करते करते संसारमें मनुष्यको मरनेके दिनतक सन्तोष नहीं होता। इकट्ठा करते-करते मर जाता है, भोगनेका अवसर ही नहीं मिलता। मधुमक्खी शहद इकट्ठा करती है और शहद निकालनेवाले उसे भगाकर, मारकर शहद ले जाते हैं। ऐसे ही धन तथा पदार्थ एकत्र करते-करते मनुष्य मर जाता है, कुछ भी सञ्चय किया हुआ काम नहीं आता। अत: इन्द्रियोंकी तृप्तिमें नहीं लगाना चाहिए।

* इन्द्रियाँ शक्तिहीन हैं। ये बहुत दिन भोग नहीं सकती। भोग पराधीन है और भोक्ताका कोई स्वत्व नहीं है। यह वस्तु सदा हमारे पास रहे और हम प्रत्येक दिशामें उसे भोग सकें, ऐसा सम्भव नहीं। जीवको नाना देहोंमें जाना पड़ता है। जब इस प्रकार का विवेक मनुष्य के मन में उदय हो जाता है तब वैराग्य का उदय होने लगता है। तब वह ज्ञान का अधिकारी हो जाता है। काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह वैराग्य न होनेसे होते है। मनुष्य के मन में सब दोष वैराग्यकी कमीसे ही आते हैं।

* धनसे अमृतत्व पानेकी कोई आशा नहीं है। यह पैसेसे खरीदनेकी वस्तु नहीं है। पैसेसे न परमात्मा मिलता है, न ज्ञान, न भक्ति, न सन्त। पैसेसे केवल अभिमान मिलता है। पैसेसे सुख नहीं मिलता। मेरे पास इतना है, इतना है, करते-करते मर जाओ, फिर उत्तराधिकारी ले लेगा। पैसेको भोगोगे तो, रखोगे तो और दान करोगे तो भी उससे अभिमान ही प्राप्त होगा।

* यह चित्त ही अपने बन्धन और मोक्षका भी कारण है। यह गुणोंमें आसक्त होता है तो बन्धनका कारण हो जाता है और परमात्मा में लग जाता है तो मुक्तिका हेतु हो जाता है। आप यदि संसारमें बँधना चाहते हैं तो अपने मनको संसारके गुण-दोष-चिन्तनमें लगाइये और मुक्त होना चाहते हैं तो ईश्वर-चिन्तनमें लगाइये। आत्म-चिन्तन मुक्तिका कारण है तो विषयचिन्तन बन्धनका कारण।

* मनमें जो काम, क्रोध, लोभ आदि मल हैं, वे अहंता और ममताके कारण हैं। जब मन इनसे रहित-शुद्ध होता है, तब वह संसारकी बातोंसे दु:खी या सुखी नहीं होता, सम रहता है।

* किसी व्यक्ति वस्तु या प्रतिष्ठा में आसक्ति ही पीडा का कारण बनती है।

* निरहंकारी व्यक्ति को दु:खी करना और अहंकारी को सुखी करना असम्भव है।

* जहां प्यास है वहां गति है।

* खेल मानव चरित्र के प्रतीक होते है इसलिये खिलाड़ियों को अपना चरित्र स्वच्छ रखना चाहिये।

* खुद को समझने के लिये समय चाहिये।

* कार्य की सिद्धि होने पर लोग राजा की प्रशंसा करते है और असफल होने पर लोग मन्त्री की बुद्धि को दोष देते हैं।

* जब घर के सभी लोग एक दूसरे की जरूरतें और जज्बाजत का ख्याल रखते हैं तब वो घर जन्नत बन जाता है।

* गुनाह में लज्जत जरूर है मगर शांति नहीं।

* सबसे बड़ी विजय यह है कि आप अपने इच्छा, वासना, कामना को नियंत्रण कर ले।

* ईमानदार व्यक्ति अपनी बीवी से नाराज न रहा करे क्योंकि उसकी कोई आदत नापसंद है तो पसंद भी होगी।

* झूठी कसमें देश तक बर्बाद कर देती है।

* ज्यादा बोलना बेवकूफी और कम बोलना अक्लमंदी की निशानी है।

* अकेले में भगवान को याद करो।

* वह व्यक्ति अक्लमंद नहीं जा दुनिया की लज्जतों से खुश और मुसीबतों से परेशान होता है। परेशानी हालात से नहीं विचारों से पैदा होते हैं।

* जब किसी के पास खूब धन-दौलत जमा हो जाती है, तो लोग उससे ईर्ष्या करने लगते है, इसीसे दूश्मनी पैदा हो जाती है।

* बुराई को देखकर चुप मत रहो, ताकत से नहीं तो बोल कर इसका विरोध जरूर करो।

* अगर हमें खुशी मिलती है तो अपने ईश्वर का धन्यवाद अदा करना चाहिए और दुख या तकलीफ मिलती है तो भी अपने गुनाह का फल समझकर उस पर सब्र करना चाहिए।

* जीवनसाथी की बात शांति से सुनें। पत्नी से अधिक की अपेक्षा न करें। आदतों को एकदम बदलने की कोशिश न करें। पत्नी को मित्र या फिर बहुत अहम साथी मानें। चुनौतियों को ऐसा अवसर मानें, जिसमें दोनों को साथ में आगे बढ़ने का मौका मिला है। गलतियों का आकलन कर उन्हें स्वीकारें। बहस करते हुए भी एक-दूसरे का सम्मान करें। पत्नी को अपमानित न करें। बहस के बजाय समस्त हल करने पर जोर दें। हंसी-मजाक नहीं छोड़ें और मिलकर आनंद लें।

* अकृतज्ञता मानवता के प्रति घोर विश्वासघात है।

* आत्मविश्वास, आत्मज्ञान और आत्मसंयम सिर्फ यही तीन जीवन को बल और सबलता प्रदान करते हैं।

* आपत्तियों को पराजित करना ही जीवन के आनंद की पराकाष्ठा है।

* अपनी रोजी को कभी दूर न समझो। क्योंकि कोई आदमी जब तक जिन्दा है, तब तक के लिए उसकी रोजी उसके मुकद्दर में लिख दी गई हैं। इन्सान को चाहिए कि वो रोजी हासिल करने में बेहतर तरीका अपनाये। ईमानदारी की रोजी कमाए और हराम का छोड़ दे।

* ईश्वर के नाम में बरकत है। वो हर मुसीबत का इलाज है। उसका नाम लेने पर बुरे ख्यालात से छुटकारा मिलता है।

* आश्चर्य है उन पर जो अन्न तो ईश्वर का खाते हैं मगर काम शैतान का करते हैं।

* किसी से सामना होते वक्त इतनी गुंजाइश जरूर रखो कि वापस आना रहे तो रास्ता कठिन न हो।

* मनुष्य परेशान उस हाल में होता है जब वह चांद को छूने का लक्ष्य हासिल करने की आरजू रखता है लेकिन उसके मुताबिक क्षमता नहीं रखता।

* तकदीर पर यकीन रखने का मतलब है ईश्वर पर भरोसा लाना। ईश्वर की मर्जी पर विश्वास रखना कि ईश्वर जो कुछ करता है, मनुष्य के भले के लिए करता है।

* अपने इच्छा के अनुसार जिन्दगी गुजारने वाला खुदगर्ज है। दूसरों के दु:ख सुख से लापरवाही, बेखबर रहना गुनाह है। दूसरों की खुशी का ध्यान रखना भलाई है।

* किसी अपने से नाराज होकर दो दिन से ज्यादा तक बोलचाल बंद न रखें। अच्छा यही है कि आप खुद ही बोलचाल की पहल करें।

* बाहर की खूबसूरती के बजाय अंदर के विचार खूबसूरत होनी चाहिए।

* जिन्दगी में कल नहीं होता। जिंदगी की सिर्फ आज होती है।

* मत खेलो ऐसा खेल जिसमें बदनामी हो।

* मत चुनो ऐसे फूल जो जिंदगी बर्बाद या वीरान करते है।

* अक्सर मुहब्बतें इसलिए बर्बाद हो जाती हैं कि हम उन्हें गलत हाथों में सौंप देते हैं।

* मत सुनो वह बात जो किसी की बुराई करती हो।

* जिंदगी में फायदे के लिए दोस्ती मत करो वर्ना तन्हा रह जाओगे।

* ईश्वर की बनाए हुए प्राणियों से इतनी मुहब्बत करो कि वह तुमसे मुहब्बत करने पर मजबूर हो जाए।

* मनुष्य इज्जत-आबरू को आज इंसानी नजर में कोई पूछ नहीं रही। दरअसल यह एक ऐसा कवच है कि जिसमें रहकर इंसान बुरे कामों से बचा रहता है।

* कुछ खराबियाँ आदमी के दिल में होती हैं और कुछ उसके बर्ताव में। मगर बुरा बर्ताव ज्यादा खराबियाँ पैदा करता है।

* किसी गुमराह को राह पर लाने के लिए अगर कड़ी बात भी कहनी पड़ जाए तो जरूर कहनी चाहिए।

* बड़े आदमी जिन्दगी में कम और किताबों में ज्यादा मिलेंगे। इन्सान अन्दर से टूट जाए तो तामीरे हयात (जिन्दगी बनानेवाली) की किताबें मदद नहीं कर सकतीं।

* अध्ययन से तुम्हें दो फायदे होंगे, एक तुम्हारी मालूमात में ज्ञान बढ़ेगा, दूसरे तुम्हारा व्यक्तित्व भी दिलचस्प बन जाएगी। ज्ञान हासिल कर तो लिया जाता है मगर बहुत कम उस पर अमल करते है।

* हर काम सिर्फ उस वक्त तक मुश्किल लगता है जब तक कि उसे सर अन्जाम देने के लिए पहला कदम न उठा लिया जाए।

* गम कितना ही संगीन क्यों न हो, नींद से पहले तक होता है।
* हर छोड़कर जानेवाला व्यक्ति बेवफा नहीं होता और इसी तरह हर साथ देनेवाला व्यक्ति आपका अपना नहीं होता।
* बड़ा बनने के लिए छोटा होना पड़ता है।
* जिस व्यक्ति के पास सलाह देने के लिए बुरे लोग होते हैं उसे सांपों की जरूरत नहीं होती।
* जिन्दगी में अगर कुछ बनना ही चाहते हो तो एक क्षण भी बेकार मत करो।
* ऐसी खुशी से दूर रहो जो बाद में गम का कांटा बन जाए।
* परेशानी के वक्त घबराना ही सबसे बड़ी मुसीबत है।
* मनुष्य पांव से कम और जबान से ज्यादा फिसलता है।
* मनुष्य की शांति उस हाल में लुट जाती है जब वह सपने देखता है, पर उसको पूरा करने के लिए कर्म नहीं करता। कोशिश भी करता है तो उसको पाने के लिए सब्र नहीं रखता। शान्ति के लिये जरूरी है या तो अपनी कामनाएं, इच्छाएं कम की जाएं या अपनी सहुलियत, प्रतीभा बढ़ा ली जाए।
* किसीको खुश करने के खातिर किसीको दुत्कारना गुनाह है। सच्चे अर्थों में तो आदमी झुकना सीखे। मीठी वाणी और नर्म व्यवहार के सहारे मजबूरों और बेबसों पर दया करे।
* आंख खोलकर अपनी साथी के ऐब देखकर उसपर पर्दा डाल दे।
* अनजाने में ऐसी हरकत हो जाती है कि अपनों का दिल दु:ख जाता है, उन्हें खुश करने का कोई उपाय नहीं रहता। इससे बचने के लिए बस यही उपाय है कि हरेक से अच्छा व्यवहार करने की आदत अपने अन्दर पैदा करे।
* चमत्कारों की योजना बनाना ठीक है पर यथार्थवादी बने रहे।
* जीवन को देखने का ढंग ही जीवन का आधार बन जाता है।
* हो सकता है आपका पहला अवसर ही अन्तिम भी हो।
* आचरण के साथ-साथ जागरण सीखो।
* ज्ञान अतीत का संचयन है परन्तु सीखना सदैव वर्तमान की प्रक्रिया है।
* जनसंख्या की वृद्धि से या अन्य राष्ट्रों को हड़प कर कोई राष्ट्र शक्तिशाली नहीं बन सकता।
* दरिद्र प्राणी उस धनी से कही अधिक सुखी है जिससे उसका धन सांप बनकर काटता है।
* कर्म व प्रयास से भाग्य की रेखायें बदली जा सकती है।
* मनुष्य अपनी भूलों से संसार की विचित्र स्थितियों में फंस जाता है।
* व्यक्ति का मान नष्ट होने पर फिर उसे प्राप्त नहीं होता।
* जहां बुद्धि काम नहीं करती और पौरुष हार जाता है तो वहां अन्त में होनहार की आड ही काम देती है।
* विकट परिस्थितियों में भी मनुष्य के धैर्य का बान्ध नहीं टूटना चाहिये।
* किसीका उपकार न भूले, अपना किया हुआ उपकार भूला दे।
* अतीत के बारे में चिन्ता मत करो क्योंकि वह बदला नहीं जा सकता।
* वास्तविक शोभा इसी में है कि उपकार के बदले उपकार किया जाये।
* अपनी विफलताओं का अकेले में विश्लेषण करना चाहिये।

✻ सन्तोष तो प्रयासों में है उपलब्धि में नही।

✻ जहां से कुछ अधिक प्राप्त होता है वही से ज्यादा की अपेक्षा की जा सकती है।

✻ अन्तस: की स्वतन्त्रता को पाये बिना जीवन की सार्थकता और कृतार्थता तक नहीं पहुंचा जा सकता।

✻ ईश्वर के मन्दिर जरूर जाना चाहिये लेकिन ईंट, चूने, गारे और पत्थर के मन्दिर नहीं है। मन्दिर तो मन के भीतर है और वही जाना वास्तव में मन्दिर में जाना है।

✻ जीवन में आशा और विश्वास का त्याग कभी नहीं करना चाहिये।

✻ मनुष्य के लिये जीवन में सफलता का रहस्य हर आनेवाले अवसर के लिये तैयार रहता है।

✻ कर्मठ मनुष्य भाग्य को भी बदलनेकी शक्ति रखता है।

✻ मोह माया में पडकर आदमी सक्षम होते हुये भी कुछ नहीं कर पाता।

✻ सच्चा प्रेम विश्व को भी रूपातंरित कर सकता है।

✻ हमेशा सुधार करते रहें पर सूरज की चमक में भी ज्यादा रहने पर जल जाने का खतरा है।

✻ दुर्भाव रिश्ते तोड देता है, सद्भाव आपस में जोड देता है।

✻ असन्तुष्ट मनुष्य संसार में अधिक दिन तक जीवित नही रहता।

✻ क्षमता के अनुसार ही व्यय करे इससे अधिक करनेवाले गर्त में जाने का मार्ग खोजते है।

✻ मनुष्य के लिये धर्म के बिना जीवन का अर्थ समझना सम्भव नहीं है।

✻ बुराई का रास्ता एक तरफा है, जिस पर पीछे वापिस लौटना बहुत मुश्किल है।

✻ टूटे हाथों से काम हो सकता है लेकिन टूटे दिल से नहीं।

✻ रोग का अन्त करने के लिये रोगी का अन्त कर देना न बुद्धि संगत है न न्यायसंगत। आग आग से शान्त नहीं होती पानी से शान्त होती है।

✻ चरित्र से बढ़कर और कोई उत्तम पूंजी नहीं है।

✻ उस राह पर दौड़ने से क्या लाभ जिसकी दिशा ही सही ना हो।

✻ समर्पण और विनम्रता ही ज्ञान है।

✻ भीड़ की मानसिकता एक अन्धी शक्ति होती है।

✻ जहां आपका दिमाग जाता है वही आपकी ऊर्जा भी उसी ओर जाती है।

✻ उबासी भली ही असभ्यता की सूचन है पर वह ईमानदार राय बताती है।

✻ विद्वता अच्छे दिनों में आभूषण विपत्ति में सहायक और बुढ़ापे में संचित धन है।

✻ चुनौती और दावें असाधारण हो तो सबूतों और साक्षी में भी दम होना चाहिये।

✻ नहीं कहना सीखें। हम में से अधिकतर लोग काम को बिलकुल धूर्ततापूर्वक और अच्छे ढंग से करते रहते हैं, हमें यह अच्छा पता होता है कि हम जो भी कर रहे हैं, वह पूरी तरह अपनी इच्छा के खिलाफ है। सच्चाई का सामना करने का साहस हमारे पास नहीं है। हम दूसरों के लिए नापसंद होने से डरते हैं दूसरों को संतुष्ट करने के लिए हम अपनी खुद की मन:शांति खोने तैयार रहते हैं। जब भी तुम्हारे मन में नकारात्मक विचार प्रवेश करे, तत्काल उसे निकालकर उसकी जगह सकारात्मक विचार को लाएं।

* हर दिन ऐसे जीएं यह तुम्हारा आखिरी दिन हो, और तब आपके जीवन का हर दिन साहसिक व सफल बन जाएगा। सोने से पहले कुछ प्रोत्साहन देनेवाले और वास्तविक बातें और संकल्पों को लिखें वे बातें आपके अवचेतन मस्तिष्क पर अंकित होने लगेंगी। कई दिनों तक बार- बार इसको लिखे, पढ़े, बहुत जल्द आप अपने आपमें जबर्दस्त बदलाव देखेंगे।

* किसीसे कड़वी बात मत कहो। किसीको कठोर दृष्टिसे मत देखो। अपनेको जलानेवाला मत बनाओ। सबमें भगवानको देखकर भावपूर्वक सबकी सेवा करो। कुछ दो, प्रेमसे बोलो, प्रेमसे देखो, आदर करो, ऊँचा आसन दो।

* प्रत्येक परिवार में एक संत होता है। जो सबकी सह ले, सबसे समताका व्यवहार करे, सबको समेटे रखे, वही तो सन्त है। ऐसा व्यक्ति परिवारमें नहीं रहता तो परिवार बिखर जाता है। सन्तके पास स्नेहकी रज्जु होती है। वह सबकी सहता है और सबका भला करता है।

* संसारमें सदा अपने मनका ही नहीं होता है। जीवनमें ऐसे हजारों अवसर आते हैं जब लोग अपने मनके अनुसार व्यवहार नहीं करते। गृहस्थको भी सहनशीलता का अभ्यस्त बनना चाहिए।

* धोका एक ऐसे शिकंजे का नाम है जिसमें अक्सर व्यक्ति खुद ही फंस कर रह जाता है।

* झूठों के घरों से बरकतें उठ जाती है।

* रोग और शत्रुओं को तो उत्पन्न होते ही खत्म करना चाहिए। एक बार यदि वे आपके जीवन में दाखिल हो गये तो उनपर नियंत्रण पाना मुश्किल हो जाता है।

* संसारके लोग आपको सिखाते है आपके पास धन होगा तो आप सुखी होंगे। भवन होगा तब आप सुखी होंगे। पद-प्रतिष्ठा होगी तो आप सुखी होंगे। पर इन सबके बिना भी सुखी रहा जा सकता है। जो भगवानकी कथाको छोड़ता है वह तो अभागा है। उसके जीवनमें वासना बढ़ेगी, दु:ख बढ़ेगा। वह कहीं न कहीं अवश्य फँस जायेगा। भगवान के विषय में सुनना अच्छा है, भगवानकी आज्ञा पालन करना अच्छा है। भगवानकी कथा सुनोगे या सुनाओगे नेत्र और हृदय उन्मुख होंगे। भगवत्कथा भगवान्को सम्मुख कराती है। भगवत्कथा हृदयके दोष दूर कर उसे निर्मल कर देती है। यह हृदयरोगका रसायन है। जिस कथामें भगवानके पराक्रमका, गुणोंका वर्णन हो, वह कथा सुननी चाहिए। भगवत्कथा संसार-चर्चासे उपरत कर देनेवाली है। हृदय की जलन मिटानेवाली अमृतधारा है। कानसे पीनेका अमृत है, उससे अजीर्ण नहीं होता। जहां कथा मिले वही सत्संग है। जहाँ संसार-चर्चा मिले, वहाँ सत्संग नहीं है। संसारमें किसीके राग-द्वेषका वर्णन जिसमें न हो, वही कथा है। सत्संगका अर्थ है सन्तसे प्रेम। सत्संग सुनने की नहीं करनेकी वस्तु है।

* विनयी पर प्रेमी रसधारा गिरती है। प्रेमका अभिमान करनेवाला प्रेमसे वंचित हो जाता है। प्रेमकी मार्गमें अधिकार नहीं, कर्त्तव्य होता है। प्रेममें सर्वस्व समर्पण होता है। प्रेममें प्रेमी अपने प्रियतमको सुख देना चाहते है।

* नासमझ दूसरे के अनुभवों से सीख नहीं सकता। नासमझ अपने अनुभवों से भी मुश्किल से सीख पाता है। समझदार अपने अनुभव के लिए नहीं रुकता है; दूसरे के अनुभव से भी वह सीख लेता है।

* लोगों की परेशानी दूर करना ही अच्छा बर्ताव है, अच्छे बर्ताव में वो ताकत है जो दौलत में भी नहीं; अच्छे बर्ताव से आदमी की उन्नति के रास्ते आसान हो जाते है।

* यदि कोई मनुष्य जूठे मुँह सो जाता है तो उसपर भूत-पिशाचादि आक्रमण करते है; उसीको उन्माद कहते हैं।

* अज्ञानवश असत्पुरुषोंके साथ किया हुआ जो संग संसार-बन्धनका कारण होता है, वही सत्पुरुषों के साथ किये जानेपर असंगता प्रदान करता है। संसारमें जिस पुरुषके कर्मोंसे न तो धर्मका सम्पादन होता है, न वैराग्य उत्पन्न होता है

और न भगवानकी सेवा ही सम्पन्न होती है, वह पुरुष जीतेही मुर्देके समान है।

❊ चित्त शुद्ध एवं प्रसन्न होकर परमात्माके मार्गमें प्रवृत्त हो जाता है। यथाशक्ति शास्त्रविहित स्वधर्मका पालन करना तथा शास्त्रविरुद्ध आचरणका परित्याग करना, प्रारब्धके अनुसार जो कुछ मिल जाय उसीमें सन्तुष्ट रहना, आत्मज्ञानियोंके चरणोंकी पूजा करना। विषय-वासनाओंको बढ़ानेवाले कर्मोंसे दूर रहना, संसारबन्धनसे छुड़ानेवाले धर्मोंमें प्रेम करना, पवित्र और परिमित भोजन करना, निरन्तर एकान्त और निर्भय स्थानमें रहना। मन, वाणी और शरीरसे किसी जीवको न सताना, सत्य बोलना, चोरी न करना, आवश्यकतासे अधिक वस्तुओंका संग्रह न करना, ब्रह्मचर्यका पालन करना, तपस्या करना (धर्मपालनके लिये कष्ट सहना), बाहर-भीतरसे पवित्र रहना, शास्त्रोंका अध्ययन करना, भगवान्‌की पूजा करना, वाणीका संयम करना, उत्तम आसनोंका अभ्यास करके स्थिरतापूर्वक बैठना, धीरे-धीरे प्राणायामके द्वारा श्वासको जीतना, इन्द्रियोंको मनके द्वारा विषयोंसे हटाकर अपने हृदयमें ले जाना। मूलाधार आदि किसी एक केन्द्रमें मनके सहित प्राणोंको स्थिर करना। निरन्तर भगवानकी लीलाओंका चिन्तन और चित्तको समाहित करना। इनसे तथा व्रत-दानादि दूसरे साधनोंसे भी सावधानीके साथ प्राणोंको जीतकर बुद्धिके द्वारा अपने कुमार्गगामी दुष्ट चित्तको धीरे-धीरे एकाग्र करे, परमात्माके ध्यानमें लगावे।

❊ जो भेददर्शी और अभिमानी पुरुष जो दूसरे जीवोंके साथ वैर बाँधता है और उनके शरीरोंमें विद्यमान आत्मासे द्वेष करता है उसके मनको कभी शान्ति नहीं मिल सकती। दूसरे जीवोंका अपमान करके बहुत सी घटिया-बढ़िया सामग्रियोंसे अनेक प्रकारके विधि-विधानसे ईश्वर की मूर्तिका पूजन भी करे तो ईश्वर प्रसन्न नहीं होता। मनुष्य अपने धर्मका अनुठान करकर ईश्वर प्रतिमा आदिमें पूजा करता रहे, जबतक उसे अपने हृदयमें एवं सम्पूर्ण प्राणियोंमें स्थित परमात्माका अनुभव न हो, जो व्यक्ति आत्मा-परमात्माके बीच थोड़ासा भी अन्तर करता है ऐसे भेददर्शीको मृत्युरूपसे महान् भय उपस्थित होता है।

❊ अत्यन्त शोचनीय, स्त्रियोंके क्रीड़ामृग पुरुष, अशान्त, मूढ़ और देहात्मदर्शी असत्पुरुषोंका संग कभी नहीं करना चाहिए। इस जीवको किसी औरका संग करनेसे ऐसा मोह और बन्धन नहीं होता, दुष्ट स्त्रियों और दुष्ट संगियोंका संग करनेसे होता है। जिसकी बुद्धि स्त्रीरूपिणि मायासे मोहित हो गई उसका भी पतन ही होता है। जो पुरुष घरमें रहकर सकाम भाव से गृहस्थी धर्मोंका पालन करता है और उसके फलस्वरूप अर्थ एवं कामका उपभोग करके फिर सकाम कर्म करता है, तरह-तरह के कामनाओंसे मोहित होकर वह भगवत् कर्मोंमे विमुख हो जाता है और यज्ञोंद्वारा श्रद्धापूर्वक देवता, पितरोंकी आराधना करता है उसे चन्द्रलोक में स्वर्ग और नरक ही प्राप्त होते है और पुनरागमन होता है। जो विवेकी पुरुष धर्मोंका अर्थ भोग विलासके लिये उपयोग नहीं करते बल्कि भगवान् हरि की आराधना का पालन करते है ऐसे अनासक्त, प्रशान्त, शुद्धचित्त, निवृत्तिधर्मपरायण, ममतारहित और अहंकारशून्य पुरुष सत्त्वगुणके द्वारा सर्वथा शुद्धचित्त होकर पूर्णपुरुष हरिको प्राप्त होते है।

❊ बातचीत करना भी एक कला है। विवाद अनेक लोग कर सकते है किन्तु वार्तालाप, कुशलता हर व्यक्ति नहीं कर सकता। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। घर, दफ्तर, सभा गोष्ठी, बाजार में वह अपने परिचित-अपरिचित लोगों के साथ मिलता है और उनसे बातचीत भी करता है। बातचीत के दौरान अपनी बात कहने के लिए वह न केवल भाषा का सहारा लेता है बल्कि उसके चेहरे के हाव-भाव भी बात कहने में सहायक होते हैं।

बातचीत असल में अपने भावों-विचारों को संप्रेषित करने का माध्यम होता है। आप अपनी बात उतनी प्रभावी ढंग से तभी संप्रेषित कर पाएंगे जब आपको बातचीत का सही सलीका आता हो। कार्य को सर्वोत्तम तरीके से संपन्न करना कला की श्रेणी में आता है। कुछ लोगों का बात करने का ढंग इतना अच्छा एवं संतुलित होता है कि वे सामनेवाले को प्रभावित कर ही लेते हैं। बातचीत में निपुणता हासिल करने के लिए शिक्षित होना कोई जरूरी नहीं। बातचीत उद्देश्यपरक ही हो।

निरर्थक बात करने से बचें। बातचीत के दौरान सभ्य तथा सरल भाषा का प्रयोग करें, जिसे आसानी से सामनेवाला समझ सके। अपनी विद्वता या भाषा ज्ञान का अनुचित प्रदर्शन करने से दूर रहें। बातचीत के दौरान संयत रहें। उल-जलूल वाक्यों का प्रयोग करने से बात का प्रभाव कम हो जाता है और उसका सकारात्मक असर नहीं होता। तैश में आना या अपशब्दों का प्रयोग भूल कर भी न करें। किसी पर अनावश्यक टीका-टिप्पणी एवं छींटाकशी को अपनी बात में शामिल न करें। इससे अनावश्यक विवाद ही जन्म लेंगे और हासिल कुछ नहीं होगा। बच्चों से, महिलाओं से, यार-दोस्तों से, बड़े बुजुर्गों से भी सभी से बातचीत करने का अलग ढंग, अलग मर्यादा होती है, इस बात को भूले नहीं। बुजुर्गों के साथ बात करते वक्त उनके सम्मान का सदैव ध्यान रखें। बातचीत करने की कला एक दिन में सीखी नहीं जा सकती। सतत प्रयास, साधना एवं संतुलन की आवश्यकता होती है। आज के युग में सफलता की चाह रखनेवाले व्यक्ति को यह कला सीखनी आवश्यक हो गई है।

* ईमान की पहचान सब्र है इसलिये सब्र को न छोड़ो। बेसब्री से कभी-कभी आदमी फायदा भी हासिल कर लेता है, लेकिन अंजाम कभी अच्छा नहीं होता।

* ज्ञान से जहां नहीं पहुंचता मनुष्य, वहां प्रेम से पहुंच जाता है।

* कभी-कभी अज्ञता के कारण आदमी दूसरे को चोट पहुंचा बैठता है। इच्छा न होते हुए भी दूसरे को चोट पहुंचाता है, आदमी परिस्थिति का दास होता है।

* अपनी इन्द्रियों को जो नहीं जीत सकता, वह कैसा आदमी। आदमी में कामना-वासना रहेगी। पर वह रहे आदमी की सीमा में। नारी-पुरुष मिलन से ही सृष्टि चिर नूतन, चिर सुंदर है। तो क्या स्थान, काल, पात्र का विचार किए बिना नारी-पुरुष का मिलन होना चाहिए? आदमी जिह्वासुख का दास है। पर निष्ठा से व्रत, पूजा, उपासना करते समय जीभ स्वाद पदार्थ देखकर भी बेकाबू नहीं होती। कितना ही ज्ञानी और विद्वान हो, मन यदि विवेक के अधीन नहीं है, तो वह विद्या और ज्ञान पृथ्वी को ध्वंस कर देगा।

* संसारी माया-जाल से छूटने के लिए मनुष्यों को ज्ञान प्राप्त करने के सिवाय दूसरी उत्तम बात नहीं है। माता-पिता, भाई, बेटा और मित्र उसी को कहना व समझना चाहिए जो ज्ञान की बात सिखायें। जो माता-पिता आदि अपने परिवार को ज्ञान नहीं सिखाते उन्हें हितैषी न जानकर शत्रु जानना उचित है। ज्ञान प्राप्त हुए बिना काम-क्रोध आदि वश में नहीं हो सकते। गृहस्थी में मन लगाना ही संसार की फाँसी है। मनुष्य जितनी प्रीति परिवार और धन आदि झूठे व्यवहार की करता है उतनी प्रीति साधु-महात्मा संत इत्यादि से करें तो मुक्ति पदवी पर पहुँच जावे। जब तक संसारी तृष्णा नहीं छूटती तब तक भक्तियोग मिलना कठिन है।

* सत्य बोलना, आचार से रहना, सब जीवों की रक्षा करना, बिना प्रयोजन अधिक न बकना, बुद्धि को नष्ट न करना, कुसंगति व बुरे कामों से अलग रहना, सदा चित्त प्रसन्न रखना, जितना परमेश्वर दे उस पर सन्तोष करना, किसी के पास द्रव्य देखकर डाह न करना, शुभ कर्म करके संसार में यश कमाना, अपयश किसी बात का न लेना, किसी पर क्रोध न करना, धर्म से कमाई करके अपना कालक्षेप करना, परमेश्वर के चरणों में प्रीति रखना, ईश्वर को अपना मालिक उत्पन्न करनेवाला जानते रहना, किसी जीव को दु:ख न देना, परनारी से प्रसंग न करना, साधु-सन्त व ब्राह्मणों की सेवा करते रहना, परमेश्वर की कथा व कीर्तन सुनना, परमेश्वर के नाम का भजन करना, बड़ों की सेवा में रहकर कभी उनका अनादर न करना, भली-बुरी सब बातों को परमेश्वर की इच्छा समझना, अपने कर्म-धर्म पर वर्तमान रहना। जो जीव मनुष्य तन

पाकर इस तरह के कर्म करेंगे वे आवागमन से छूटकर भवसागर पार उतर जायँगे। पर ये सब गुण बिना सत्संग किये व कथा पुराण सुने प्राप्त नहीं होते, इसलिए मनुष्य को महात्मा व ज्ञानी लोगों से प्रेम रखना बहुत उचित है। जितना उनका सत्संग करे उतना अधिक गुण उसका है। अधर्मी लोगों की संगति करने में, कदाचित पहले से भी कोई गुण उसमें होगा तो वह भी जाता रहेगा। संसार में परस्त्रीगामी, जुआरी, लोभी, चोर मद्यप, चुगुल, झूठ बोलनेवाले और अपना शरीर पालन करनेवाले, जो सुख के लिए अपना धर्म छोड़ देते हैं उन लोगों की संगति कभी न करनी चाहिए। उन मनुष्यों की एक क्षण संगति करने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। जो लोग परस्त्री से प्रसंग करते हैं उनके ज्ञान और धर्म नष्ट हो जाते हैं, इसलिए अपनी पुत्री व बहिन के पास भी अकेले में बैठना न चाहिए, क्योंकि मनुष्य का चित्त सब क्षण एक तरह का नहीं रहता। कामदेव का मद ऐसा बुरा है जो मनुष्य का ज्ञान हरकर उससे बहुत पाप कराता है। मनुष्य को द्रव्य व स्त्री की संगति नहीं करनी चाहिए।

* मनुष्यकी असफलताका कारण उसका अविश्वास होता है। मनुष्यके मन इन्द्रिय तो यों ही चंचल है, अविश्वाससे औरभी चंचल हो जाते हैं और इसको किसी एक स्थानपर टिकने नहीं देते।

* जहाँ पवित्रता होती है, वहाँ श्रद्धा होती है। जहाँ श्रद्धा होती है, वहाँ विश्वास होता है। जहाँ परस्पर विश्वास होता है, वहाँ प्रेमका उद्य हो जाता है और एक-दूसरेको सुख पहुँचानेकी इच्छा होती है। जो कष्ट सहता है उसीके जीवनमें सिद्धि आती है।

* भोग-वासना तो कभी किसीकी तृप्त होती नहीं। जितना ही भोग मिलता है, उतनी ही उसकी वासना बढ़ती है। इसी तरह कामाग्नि भी शान्त नहीं होती। प्यासका कभी अन्त नहीं होता।

* जैन और बौद्ध ये दोनों धर्म ईश्वरका अवतार नहीं मानते। जब वे ईश्वरको नहीं मानते तब उनके यहाँ अवतार होगा ही कहाँसे? वे जीवका उत्थान या उतान मानते हैं और कहते हैं कि वह शुद्ध होकर नीचेसे ऊपर जाता है। जितने बुद्ध, जिन हैं, पारसनाथ, महावीर है, वे सब जीवोंके सिद्ध रूप हैं।

* अच्छी और नेक सोच आदमी के जिस्म में खून साफ करती है और दूसरों पर अत्याचार करने से रोकती है।

* रहम और हमदर्दी, ये प्रकृति की शक्तियां हैं, इसके लिये किसीको किसी की खुशामद नहीं करनी पड़ती। ये जज्बे तो खुद ब खुद मनुष्य के दिल से उबल पड़ते हैं।

* ज्योतिष मूलत: भविष्य की तलाश है और विज्ञान जो हो गया है, अतीत की तलाश करता है। विज्ञान यह पता लगाता है इसके होने मे कारण क्या है, प्रमाण क्या है और ज्योतिष यह बतलाता है कि आगे इसका क्या परिणाम होनेवाला है, इसका आगे भविष्य क्या होगा, इसका क्या असर होगा? दोनों में बड़ा अन्तर है। विज्ञान को दिन प्रतिदिन का अनुभव होता है। जो बाते अनहोनी लगती थी, कभी सही नही होती वह सही होती मालुम पड़ती, अन्ध:विश्वासों को दूर हटाती। वैज्ञानिक इस बात को मानते हैं प्रत्येक व्यक्ति में जन्म के साथ ही क्षमता, प्रतिभा, व्यक्तित्व होता है जैसे आम के बीज को बो देनेपर जो वृक्ष पैदा होगा उसमें आम पैदा करने का कार्यक्रम निहित है। वह आम ही उत्पन्न करेगा। वह न तो कोई विशेषज्ञों की सलाह लेने जाता है न ही किसी विद्यालय या विद्यापीठ में शिक्षा ग्रहण करने जाता है, यह तो उसमें स्वत: जन्मजात कौशल है।

* धीर पुरुष कार्य सिद्धि होने में विलम्ब होनेपर भी अपने सर्वस्वभूत धैर्य को नहीं छोड़ते।

* असलमें जो अपनी उन्नति तथा दूसरोंकी उन्नतिमें मदद करनेवाला काम है, वह पुण्य है। किन्तु जो अपनी और दूसरोंकी उन्नतिमें बाधक है वह पाप है। पाप-कर्मकी परिभाषा ही यह है कि जिसमें कर्तृत्वका अभिमान हो, वासना हो और जिससे अन्तमें दु:ख मिलें तथा ग्लानि उत्पन्न हो।

* अगर प्रतिकूल परिस्थिति में श्रद्धा बनी रहे तो सफलता मिलती है, और यदि प्रतिकूल परिस्थिति में श्रद्धा न रहे तो

असफलता का सामना करना पड़ता है।

* जिसको अपने गुरु के वचनों पर विश्वास नहीं है श्रद्धा नहीं है, तो क्या वह स्वप्न में भी सुख और समृद्धि प्राप्त कर सकता है?

* वस्तु उत्तम हो तो खुद उसके मालिक और खरीददार उसको ढूँढते हुए आ जाते हैं, और अगर वह घटिया हो तो वस्तु ही दर-दर भटकते फिरती है।

* प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी प्रकार की योग्यता सामर्थ्यता रखता ही है। चाहे धन की योग्यता हो चाहे संगति की योग्यता हो। माया इन्हीं व्यक्तियों को विशेष रूप से पकड़ती है।

* बुराई को रोकना और अच्छाई का प्रचार करना भी मनुष्य के मकसद में शामिल है।

* यदि तुम्हारे घर में, तुम्हारे परिवार में तुम्हें शांति नहीं मिल रही है तो बाहर शांति खोजने मत जाओ। बाहर नहीं मिलेगी। शांति कोई बहिर्मुख का विषय नहीं, शांति तो तुम्हारे भीतर ही मिलेगी।

* प्रतीक्षा की शक्ति होनी चाहिए। धीरज, होना चाहिए।

* कभी भी किसी भी तीर्थ की निन्दा करना पाप है। वहां के पुरोहित लोग जो सेवा-पूजा करवाते हैं, किसी भी ढंग से करवाते हैं, हमें इससे क्या। लोग उनकी शिकायत करते हैं हैरान हो जाते है। कलियुग का प्रभाव है, वो अपने जीव का कलियुग व्यापार करते हैं पर तुम बीच में मत आओ। अपना काम करो और निकल जाओ।

* अर्थ शरीरसे बाहर रहता है, इसको सबलोग चाहते हैं, परन्तु यह गतिशील होता ह। जो चलता रहे, किसी एकके हाथमें न रहे, उसका नाम अर्थ होता है। काम रहता है, मनमें जितने भी सुख-दुख और भोग होते हैं, वे सब मनमें रहते हैं। अर्थकी अपेक्षा काम अन्तरंग होता है। अर्थ तथा काम दोनोंका नियंत्रण करनेके लिए धर्म बुद्धिमें रहता है। धर्मका निवास बुद्धिमें होता है। बुद्धि अगर ठीक है तो मनसे जो चाहेंगे तन वहींपर जायेगा। तनपर विवेक का नियंत्रण है। जहाँतक मोक्षका प्रश्न है, वह आत्माका स्वरूप है। उसको पाया नहीं जाता, जाना जाता है। अपने दु:खको कभी नहीं बढ़ाना चाहिए, अपने अंदर ही पचा लेना चाहिए। जिस बातसे परिवारवालों तथा मित्रोंका मन बिगड़े, उसको कहना धर्म नहीं होता।

* जिस यज्ञ के पीछे ईष्या, द्वेष, स्पर्धा हो वो यज्ञ कभी सफल नहीं होता। प्रतिशोध की भावना धर्मको की पूर्ण नहीं होने देती न ही अन्त:करणको शुद्ध करती है, न अहिंसामें प्रतिष्ठित होने देती है और न व्यवहारमें सफलता आने देती है। जो काम श्रद्धा से किया जाता है, वह तो पूर्ण होता है किन्तु अश्रद्धा, ईर्ष्या, द्वेष तथा स्पर्धासे और दूसरोंको नीचा दिखानेके लिए किया गया काम कभी परिपूर्ण नहीं होता।

* यदि कभी पति और पितामें मतभेद हो जाय तो पत्नीको अपने पतिका साथ देना चाहिए, पिताके पक्षमें नहीं जाना चाहिए।

* जिसका कल्याण होता है, उसके मार्गसे विघ्न-बाधाएं स्वत: दूर हो जाती है और सत सुगम मार्ग भी प्राप्त हो जाता है।

* आज जिसको हम बहुत सत्य और बहुत उत्तम समझते हैं, कल वही मलिन समझा जाता है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। आजका बढ़िया कल घटिया होता है। अविनश्वर और अपरिवर्तनीय तत्त्व तो परामात्मा ही है।

* अपने से बड़ोंके प्रति सहनशीलता, छोटोंके प्रति दया, बराबरवालोंके साथ मित्रता और समस्त प्राणियोंके साथ समताका बर्ताव करनेसे ही प्रभु प्राप्ति होती है। प्रजा को पीड़ित करनेवाला राजा तो राक्षस होता है।

* अपने मनमें कर्तापन और भोक्तापनका अभिमान होनेका नाम ही संसार है। इसलिए मैं और मेराकी निवृत्तिका नाम ही संसारकी निवृत्ति है। संसारकी निवृत्ति होनेपर ही मनुष्य जीवनमुक्त व्यतीत करता है।

* कन्या भले ही जीवन भर क्वाँरी रह जाय, वह ऋतुमती हो जानेपर पिताके घर रहे, परन्तु किसी गुणहीन व्यक्तिके साथ कन्याका विवाह कदापि नहीं करना चाहिए।

* संसारमें दो प्राणियोंके मन कभी एक नहीं होते। थोड़े दिनोंके लिए मिल भी जाय तो बादमें बिछुड़ जाते हैं। रास्तेमें दो आदमी साथ-साथ चलते हों, प्याऊपर साथ-साथ पानी पीते हों तो भले ही मिल जायँ, लेकिन संस्कार और देश-काल-पात्रकी भिन्नताके कारण दो मन कभी एक नहीं होते।

* सृष्टिमें ऐसा कौन है, जो अपनी सारी-की-सारी सच्ची बात किसी एक व्यक्तिको बताता हो। इस संसारका सारा व्यवहार तो कपटपर चलता है। यहाँ कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं, जो अपना दिल खोलकर किसीके सामने रख सके। किसीसे कोई भी सम्बन्ध हो, कितनी भी प्रेम हो, व्यवहारके समय कुछ-न-कुछ कूट-कपट जरूर बीचमें रहेगा। इसलिए सच्चे लोग सत्पुरुषोंके पास ही रहना और उनका सत्संग प्राप्त करना पसंद करते हैं।

* गुणवान को देखकर उससे प्रीति करें, ईर्ष्या न करें। गुणहीन को देखकर उस पर दया करें, उसका तिरस्कार न करें एवं समान से मैत्री करें, स्पर्धा न करें। ऐसा करने पर मनुष्य तापों से पीड़ित नहीं होता।

* ज्ञान का उदय होने पर क्लेशों का नाश हो जाता है।

* कपट न करना, दूसरों की निन्दा न करना, निष्ठुर वचन न बोलना यदि कोई अप्रिय वचन कह दे तो उसे सह लेना, क्रोध न करना, शास्त्रों का प्रचुर ज्ञान रहने पर भी मूक के तुल्य रहना अर्थात् अहंकार न करना, दूसरे के दोषों को छिपाना और गुणों को प्रकट करना ये आठ गुण पण्डितों में रहते हैं। सत्य, तप, ज्ञान, अहिंसा, विद्वानों को प्रणाम करना तथा सुशीलता ये गुण जिसमें हो वह विद्वान हैं। केवल पुस्तक पढ़नेवाला विद्वान नहीं है। इन गुणों से सम्पन्न विद्वान पुरुष अविद्यारचित भौतिक शरीर में तथा इससे उत्पन्न गेह, पुत्र, द्रव्य आदि में ममता नहीं करते। केवल स्वयं प्रकाशमान आत्मा का हृदय में चिंतन करते हैं जिससे अन्त:करण निर्मल हो जाता है और ईश्वरकी अनुभूति होने लगती है। आत्मा से भिन्न देहाभिमानी जीव को संसार की अनुभूति होती है आत्मा की नहीं। इसलिए विवेकी पुरुष सम्पत्ति या विपत्ति में हर्ष, शोक आदि से विकार को प्राप्त नहीं होता। संसारी पुरुष जिन्हें विपत्तियाँ समझते हैं वे विपत्तियाँ नहीं और जिन्हें सम्पत्तियाँ समझते हैं वे सम्पत्तियाँ नहीं।

* विद्या, तप, धन, सुदृढ़ शरीर, युवावस्था और उच्च कुल- ये छ: सत्पुरुषोंके तो गुण हैं, परन्तु नीच पुरुषोंमें ये ही अवगुण हो जाते हैं; क्योंकि इनसे उनका अभिमान बढ़ जाता है और दृष्टि दोषयुक्त हो जाती है एवं विवेक-शक्ति नष्ट हो जाती है। इसी कारण वे महापुरुषोंका प्रभाव नहीं देख पाते। इसीसे जो अपने यहाँ आये हुए पुरुषोंको कुटिल बुद्धिसे भौं चढ़ाकर रोषभरी दृष्टिसे देखते हैं, उन अव्यवस्थितचित्त लोगोंके यहाँ ये हमारे बान्धव हैं ऐसा समझकर कभी नहीं जाना चाहिये। शत्रुओंके बाणोंसे बिंध जानेपर भी ऐसी व्यथा नहीं होती, जैसी अपने कुटिलबुद्धि स्वजनोंके कुटिल वचनोंसे होती है। क्योंकि बाणोंसे शरीर छिन्न-भिन्न हो जानेपर तो जैसे-तैसे निद्रा आ जाती है, किन्तु कुवाक्योंसे मर्मस्थान विद्ध हो जानेपर तो मनुष्य हृदयकी पीड़ासे दिन-रात बेचैन रहता है।

* जब किसी प्रतिष्ठित व्यक्तिका अपने आत्मीयजनोंके द्वारा अपमान होता है, तब वह तत्काल उनकी मृत्युका कारण हो जाता है।

* मनुष्य के गुणों का महत्व उसके बाद ही जाना जाता है।

* असलमें मनुष्य के असन्तोषका कारण मोहके सिवा और कुछ नहीं है। संसारमें मनुष्य अपने कर्मानुसार ही मान-अपमान या सुख-दु:ख आदिको प्राप्त होता है। दैववश उसे जैसी भी परिस्थितिका सामना करना पड़े उसीमें सन्तुष्ट हो।

जो मनुष्य दूसरोंको दु:ख देता है, उसे स्वयं ही उसका फल भोगना पड़ता है। विधाताके विधान के अनुसार सुख-दु:ख जो कुछ भी प्राप्त हो, उसीमें चित्तको सन्तुष्ट रखना चाहिये। यों करनेवाला पुरुष मोहमय संसारसे पार हो जाता है। मनुष्यको चाहिये कि अपनेसे अधिक गुणवानको देखकर प्रसन्न हो, जो कम गुणवाला हो, उसपर दया करे और जो अपने समान गुणवाला हो, उससे मित्रताका भाव रखे। यों करनेसे उसे दु:ख कभी नहीं दबा सकते।

* मनमाना कर्म करनेसे मनुष्य अभिमानके वशीभूत होकर कर्मोंमें बँध जाता है तथा गुण-प्रवाहरूप संसारचक्रमें पड़कर विवेकबुद्धिके नष्ट हो जानेसे अधम योनियोंमें जन्म लेता है।

* घरमें माता अथवा पतिपरायणा भार्या न हो, तो वह घर बिना पहियेके रथके समान हो जाता है; फिर उसमें कौन बुद्धिमान दीन पुरुषोंके समान रहना पसंद करेगा।

* जो मनुष्य लोक अथवा शास्त्रकी दृष्टिसे देनेयोग्य वस्तुका दान नहीं करता और जो शास्त्रदृष्टिसे अधिकारी होकर भी ऐसा दान नहीं लेता, वे दोनों ही दुराग्रही और मूढ़ हैं, अतएव शोचनीय है। पुरुषका सबसे बड़ा धर्म दीनोंपर दया करना ही है।

* मनुष्य सदा एक-सी स्थिति में रहते-रहते ऊब-सा जाता है। वह कुछ परिवर्तन चाहता है। कुछ मनोरंजन की आवश्यकता सबको होती है, प्रकृति-भेद से मनोरंजन की सामग्रियों मं और उपायों में अन्तर तो होता है, नहीं तो कुछ विशिष्ट लोगों को छोड़कर सभी कुछ-न-कुछ मनोरंजन चाहते है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसे दस-बीसों के साथ घुलमिल कर रहने में, अपने स्नेहियों के साथ वार्तालाप करने में, साथ बैठकर खाने-पीने में, हँसी विनोद करने में स्वाभाविक सुख होता है। पुरुषों में तो अभिमान की मात्रा अधिक रहती है, वे अपनी पद-प्रतिष्ठा समझकर बड़ी गंभीरता से दूसरों से बातें करते हैं। बहुत काल में वे सम्बन्ध स्थापित कर पाते हैं।

* भावना से ही हम अपनी, पराई; छोटी-बड़ी, कुरूप, सुरूप अच्छी बुरी की कल्पना कर लेते हैं। जिनसे अपनापन है, मैत्रीभाव है, उनके सुख में सुख और दु:ख में दु:ख होता है। जिनसे अपनापन नहीं है, शत्रुता है, उनके सुख और दु:ख में और दु:ख में सुख होता है। जो उदासीन हैं उनके सुख दु:ख में सामान्य बुद्धि होती है, किन्तु जिनका सर्वत्र समान भाव है, जिनके लिये शत्रु, मित्र, उदासीन आदि का भेद भाव है ही नहीं उनके लिय किसी घटना से कुतूहल नहीं।

* अपना अपराध कोई स्वीकार नहीं करता। दूसरे के तिल भर दोष भी पहाड़ के समान दिखाई देते हैं।

* बड़ों की आज्ञा मानने में ही कल्याण हैं, जो लोग बड़ों का अपमान करते हैं, उनकी आज्ञा का उल्लंघन करते हैं, उनकी बताई हुई शिक्षा को नहीं मानते, अन्त में उन्हें पछताना पड़ता है। हम अपनी अपरिपक्व बुद्धि के कारण बड़े लोगों की बातों को व्यर्थ समझते हैं, किन्तु हम इस बात को भूल जाते हैं कि इनकी शिक्षा के साथ पिछला अनुभव छिपा हुआ है।

* यह अच्छा है, यह बुरा है- ये नियम माया में ही सम्भव हैं। मायासे परे होने पर न कुछ अच्छा है, न बुरा।

* हमें उस जगह बिल्कुल नहीं जाना चाहिये जहां जाने पर सामनेवाले को खुशी नहीं होती हो भले ही वहां सोना बरसता हो चाहे वह कितना ही अपना आत्मीय क्यों न हो। एक बार पराया व्यक्ति अपना अपमान भी कर दे तो वह सहन हो जाता है पर जब कोई अपना निकटतम अपना अपमान कर देता है तो वह मृत्यु तुल्य हो जाता है। जिनके समीप बड़ी-बड़ी आशायें लगाकर जाते हैं, अपनापन समझकर जिनके यहाँ स्वत: चले जाते हैं, फिर यदि वे हमारा अपमान करें, हमें देखकर मुँह फेर लें, हमारी बात भी न पूछें तो चित्त में बड़ा क्लेश होता है। यदि समर्थ होता है, तो उसका बदला ले लेता है, यदि असमर्थ हुआ तो रक्त का-सा घूंट पीकर तुरन्त लौट जाता है, यदि क्षमावान हुआ, तो भगवान की माया समझकर उन सर्वान्तर्यामी उरप्रेरक प्रभु को प्रणाम करके न हर्ष करता है न विषाद, किन्तु ऐसे क्षमाशील विरले ही

होते हैं। मानापमान का ध्यान बड़े-बड़ों को होता है और प्राय: समस्त कलह, युद्ध, लड़ाई, झगड़े मनस्वी लोगों में मानापमान के ही पीछे होते हैं।

* जिनके प्रति अपनी प्रगाढ श्रद्धा है, जो अपने सर्वस्व हैं, जीवनाधार हैं, प्राणों से भी अधिक प्यारे हैं। उनके यदि हमें अनिष्ट की, अपमान की सम्भावना हो, तो भावुकता में भरकर हम सब कुछ करने को तैयार हो जाते हैं। न करने योग्य काम कर जाते हैं, न कहने योग्य बातें कह जाते हैं। न बर्तने योग्य व्यवहार बर्त जाते हैं। सारांश यह कि फिर हम अपने आपे में नहीं रहते।

* मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल पाता है, यदि हम किसी को रुलाते हैं, तो हमें भी आँसू बहाने पड़ते हैं, यदि हम किसी को दु:ख देते हैं, तो हमें भी महान क्लेश उठाना पड़ता है, यदि हम किसी की निन्दा करते हैं, तो हमें भी संसार में निन्दित होना पड़ता है, यदि हम किसी के लिये खाईं खोदते हैं, तो हमारे लिये भी कुँआ तैयार हो जाता है। पक्के घर में जैसी ध्वनि करोगे, वैसी ही प्रतिध्वनि आवेगी। यह संसार का ध्रुव सिद्धान्त है। आज हम जब दूसरों की हँसी उड़ाते हैं, तो इस बात को भूल जाते हैं, हमारी ये सब बातें किसी बड़े कार्यालय में लिखी जा रही हैं; हम दूसरों को दु:ख देते समय, दूसरों की निन्दा करते समय अन्धे हो जाते हैं। आगे चलकर जब हमारे ऊपर भी वही बीतती है, तब हमें ध्यान होता है।

* कामना ही मनुष्य को दीन बनाती है- जब तक कोई इच्छा नहीं होती, तब तक मनुष्य स्वतंत्र और निस्पृह बना रहता है।

* संसार में सर्वत्र सुख है, सर्वत्र अभय है। हम दुख और भय की सृष्टि स्वयं कर लेते हैं। दूसरों को दुखी करेंगे, तो हमें अवश्य दु:ख भोगना पड़ेगा। दूसरों को भय देंगे, तो हमें भी दूसरों से भय खाना पड़ेगा, क्योंकि एक ही आत्मा सब में व्याप्त है। इसलिये जो व्यवहार तुम्हें स्वयं बुरा लगे, उसका आचरण दूसरों के साथ मत करो। हम अपने पाप से दूसरों में पाप देखते हैं, अपने भय से भयभीत होते हैं। महान पुरुषों का अपराध करके हम सोचते हैं, वे भी हमारी भाँति क्षुद्रता करेंगे; अत: हम उनके सम्मुख जाने में लज्जा करते हैं; किन्तु जिनकी आत्मा महान है, जो महापुरुष महात्मा महेश्वर हैं, उन्हें पहिले तो किसी पर क्रोध आता ही नहीं, यदि परिस्थिति वश कभी किसी पर आ भी जाता है, तो वह पानी की लकीर के समान होता है, आया और विलीन हो गया। यही तो उनकी महानता है, इस महत्ता को महान पुरुष ही अनुभव कर सकते हैं।

* शरीर के तीन भाग हैं, नाभि से नीचे का भाग, नाभि से ऊपर का भाग और सिर। तीनों ही जीवन के लिये अत्यावश्यक है। तीनों के बिना जीवन यात्रा नहीं चल सकती। संघात में ही सृष्टि हैं। त्रिगुणमयी सृष्टि त्रिदेवों के बिना चल नहीं सकती। अत: हमारे यहाँ तीन का बड़ा महत्व है। त्रिकाल, त्रिदोष, त्रिदेव, त्रिसवन, त्रयीवेद, त्रिगुण आदि तीन से सृष्टि चल रही है। इन तीनों में से जो एक का भी बहिष्कार करता है, तो तीनों असन्तुष्ट हो जाते हैं। इसलिए प्राचीन मर्यादा का भंग करके नूतन पंथ नहीं चलाना चाहिये। सत्य सनातन पथ का ही अनुसरण करना चाहिये।

* स्त्री के समीप रहना, तपस्या में बड़ा विघ्न हैं, स्त्री संगति ज्ञान वैराग्य को नाश करनेवाली और संसार बंधन को जकड़नेवाली है। अत: मोक्ष की कामनावालों को स्त्रियों से सदा दूर ही रहना चाहिये, उनसे कभी एकान्त में बातें न करनी चाहिये। आवश्यक प्रयोजन भर बातें करनी हों, तो किसी के सम्मुख करे। यह चित्त चंचल है। प्रकृति का संसर्ग होने से अनर्थ की सृष्टि तत्क्षण करने लगता है।

* प्रेमी में कभी अवगुण दिखाई देते नहीं। प्रेम तो ऐसा काँच है कि जहाँ वह आँखों पर लगा कि सबको अपने ही रूप का बना लेता है।

* याचना करना किसी से माँगना यह सबसे नीच कर्म है।

* गौ घास पर दया करे, तब तो उसे भूखों ही मर जाना होगा। अपने आहार पर कौन दया करता है? चींटी दीमक को

खा जाती है, दीमक सुन्दर-से-सुन्दर पौधों को जड़ से चट कर जाती है। हरे-हरे सुन्दर पौधों को भेड़, बकरी, गौ चर जाती हैं। बकरी के सुन्दर भोले बच्चों को मांसाहारी बड़े-बड़े शिष्ट ज्ञानी ध्यानी चट कर जाते हैं, उनकी हड्डी तक चबा जाते हैं। कितने सुन्दर फल लगते हैं, मनुष्य उन्हें तोड़कर खा लेते हैं। ककड़ी, लौकी, कद्दू जब कोमल होते हैं, बढ़ने नहीं पाते, उन्हें ही तोड़कर मनुष्य खा जाते हैं, क्या उनमें जीव नहीं? क्या उन्हें कष्ट नहीं होता? मांसाहारी लोग अपने घर में बकरी, मुर्गी पालते है। उनके अंडे बच्चों को खा लेते हैं। सर्पिणी अपने बच्चों को ही खा जाती है। इस पेट को तो किसी-न-किसी प्रकार भरना ही है। संसार में ऐसा कौन पदार्थ है, जिसमें जीव नहीं। सभी जीव-जीवों के बल से जीते हैं। एक जीव दूसरे जीव से अपनी जीविका चलाता है। केवल अपना ही पेट पाल लेना यह तो पशुता है।

* मन से भी किसी को दु:ख देने की बात सोचना महापाप है। दु:खी पुरुष से उसके दु:ख के सम्बन्ध की बातें पूछने से उसे शान्ति होती है। अपना दु:ख कहते-कहते चित्त हलका होता है। दु:ख का आवेग कम होता है। इसीलिये दु:ख में अपने स्नेही आते हैं और दु:ख की बातें करके उसके हृदय को हलका करते हैं।

* विषयों के संग्रह के आग्रह में दु:ख, कलह, संताप और विषाद है। त्याग में सुख, शांति, प्रेम और एकत्व की भावना है।

* जब तक मनुष्य पूर्ण सिद्ध नहीं होता तब तक हृदय में कामवासना तो छिपी रहती है। अनुकूल अवसर पाने पर वह उभड़ आती है।

* कामातुर पुरुषों को लज्जा, शील, संकोच, भय आदि रहते ही नहीं। वे अपनी ही धुन में मस्त रहते हैं उनका संसार ही पृथक होता है।

* ध्रुवजी पूर्वजन्म में बडे तपस्वी थे, मुनि-पुत्र थे, किन्तु संग दोष से उन्हें ब्राह्मण से क्षत्रिय होना पड़ा। संगति का बड़ा भारी प्रभाव पड़ताहै। जिस प्रकार सत्संगति से मनुष्य तर जाता है, उसी प्रकार बुरी संगति से आदमी का पतन हो जाता है। इसलिये मनुष्य का प्रधान कर्त्तव्य है कि सदा विषयी लोगों के संसर्ग से बचा रहे। इन इन्द्रियों की स्वाभाविक प्रवृत्ति विषयों की ही ओर होती है। बड़े यत्न से बलपूर्वक उसे हटाकर भगवान की ओर लगाना पड़ता है, यदि ऐसी दशा में विषयों का संसर्ग हो जाय तो मन उसमें ही फँस जाता है। उपासना से एकाग्र हुआ मन जहाँ लगता है, वहाँ बड़ी आसक्ति के साथ लगताहै। कितने त्यागी, तपस्वी भरतजी का मन उस हिरण के बच्चे में लग गया। साधारण विषयी लोगों का मन चंचल होने से कामिनियों में भी क्षणभर को ही लगता है, किन्तु तपस्या उपासना से जिनका चित्त एकाग्र हो जाता है, ऐसे लोग विषयों में भी फँसे तो उनका चित्त तदाकार हो जाता है। कण्डू मुनि के पास प्रम्लोचा नामक अप्सरा हजारों वर्ष रही, किन्तु उनका चित्त उसमें ऐसा तल्लीन हुआ कि उन्हें हजारों वर्ष क्षण के समान प्रतीत हुए, इसीलिये संग की बड़ी महिमा है।

* मनुष्य में गुण-अवगुण संसर्ग से आते हैं। जैसी संगति होगी वैसे ही गुण मनुष्यों में आ जायेंगे। संगति का बड़ा प्रभाव होता है, इसीलिये मोक्ष की इच्छा रखनेवालों को भूलकर भी विषयी लोगों से संसर्ग, उनसे घनिष्टता नहीं करनी चाहिये।

* हृदय के निकले हुए अश्रुओं का पाषाण हृदय पर भी प्रभाव पड़ता है। हृदय तो हृदय की भाषा को समझ जाता है।

* अहंकारी को उपदेश देना, उपदेश की दुर्दशा करना है। जो जानते नहीं भोले-भाले हैं, उन्हें समझाया जा सकता है। जिनमें बुद्धि है विवेक है। किन्तु किसी बात में उन्हें सन्देह हैं, उनकी समझ में नहीं आतीं, उन्हें और भी सरलता से युक्तियों द्वारा शास्त्रीय प्रमाणों तथा बड़े-बड़े सन्त-महात्मा तथा महापुरुषों के जीवन सम्बन्धी उदाहरण देकर समझाया जा सकता है, किन्तु जो वास्तव में हैं तो मूर्ख, परन्तु अपने को माने बैठे हैं बड़ा पण्डित ऐसे अभिमानी ज्ञानलवदुर्विदग्ध पुरुषों को समझाने में कोई समर्थ नहीं। अभिमान तथा अहंकार के कारण वे सबको तुच्छ समझते हैं। जो उनकी हाँ-में-हाँ मिलाता

रहे, वह तो ठीक जिसने उनके विरुद्ध तनिक भी चींचपड़ की वही उनका शत्रु। उसे नष्टकरने, सताने के लिये वे प्राणपन से प्रबल प्रयत्न करते हैं। अत: ऐसे अधकचरे अभिमानी मूर्खों को तो कोई महाशक्तिशाली अपनी प्रबल शक्तिद्वारा ही अन्याय से रोक सकता है। दूसरे साधारण लोगों की शक्ति के तो वह बाहर हो जाता है।

* देश के वातावरण का सभी सहृदय पुरुषों पर प्रभाव पड़ता है। प्रभाव तो जड़ चेतन सभी पर पड़ता, किन्तु जड़ उसे व्यक्त नहीं कर सकते, उसके प्रतिकार के लिये प्रयत्न नहीं कर सकते। सहृदय पुरुष देश की दुर्दशा देखकर दुखी होते हैं। उत्थान तथा उन्नति देखकर हर्षित होते हैं। जब तक हमें शरीर का भान है, सुख-दु:ख का अनुभव है, तब तक प्रभु-प्रीत्यर्थ परोपकार और दया करनी चाहिये। यह कह देना सब अपने प्रारब्ध का भोग, भोग रहे हैं, यह अकर्मण्यता का चिह्न है। प्रारब्ध का भोग, भोग रहें हैं यह ठीक है। किन्तु तुमको किसी की प्रारब्ध को मेटने की कामना से नहीं, अपनी दयावृत्ति को बढ़ाने के लिये, सबमें वे ही सर्वान्तर्यामी विराजमान हैं, इस धारणा को दृढ़ करने के निमित्त प्रभु-प्रीत्यर्थ परोपकार करना चाहिये। जो ऐसा नहीं करते, दीनों पर दया नहीं दर्शाते, अपने सामने होते हुए अन्याय का सामर्थ्य होने पर भी विरोध नहीं करते, उसके प्रतीकार के लिये शक्ति भर प्रयत्न नहीं करते उनके जप, तप, नियम, व्रत, संयम सभी व्यर्थ है।

* धर्मात्मा के पास सब गुण स्वत: ही चले आते हैं। भाग्यशाली को याचना नहीं करनी पड़ती। सब सम्पत्ति स्वयं ही उनके समीप आपसे-आप आ जाती हैं। जिसने सत्य धर्म को छोड़ दिया उसके यहाँ रहनेवाले भी सब गुण भाग जाते हैं। जिसने धर्म को पकड़े रखा, उसके गये हुए गुण भी लौट आते हैं।

* रुपये पैसे के लाभ को ही लाभ थोड़े ही कहते हैं। अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करना यह भी बड़ा लाभ है।

* कांचन में सभी गुण निवास करते हैं। लक्ष्मीहीन पुरुष गुणहीन समझा जाता है।

* जो सेवा करने से समर्थ नहीं उसे स्वामी बनने का भी अधिकार नहीं। जो प्रजा के दु:खों को दूर करने के लिये निरंतर प्रयत्न नहीं करता रहता उसे प्रजा-पालक नहीं कह सकते। जो आश्रितों पर आई हुई विपत्तियों के निवारण के लिये शक्ति भर उपाय नहीं करता वह भर्ता तथा भयत्राता कैसे कहा जा सकता है। प्रजा का कार्य है, न्यायपूर्वक राजा को आय का षष्ठांश दें और राजा का कार्य है प्रजा की दस्युओं से, चोर डाकुओं से, प्रबल शत्रुओं से दैहिक, दैविक विपत्तियों से रक्षा करे। जो राजा मनमानी करता है, प्रजा के मत की अवहेलना करता है वह शीघ्र ही विनष्ट हो जाता है।

* संसार में पुत्र-शोक से बढ़कर दूसरा कोई भी दु:ख नहीं। पुत्र के वियोग में मृत्यु से बढ़कर दु:ख होता है।

* बहुत से रोग के कीड़े साधारण लोगों को नहीं दीखते तो क्या उनका अस्तित्व ही नहीं। अनेक नगरों को हमने नहीं देखा तो क्या वे हैं ही नहीं। अपनी-अपनी आँखों को ही हम नहीं देख सकते, अपनी पीठ को भी नहीं देख सकते तो क्या वे नहीं? कुछ बातें अनुमान से सिद्ध होती हैं, कुछ आप्त वाक्यों से महापुरुषों के वचन से ही उसके सत्य होने में प्रमाण हैं। आर्ष प्रमाण आप्तवाक्य के अतिरिक्त कोई दूसरा प्रमाण नहीं होता।

* वस्तुएँ सब एक-सी हैं, इनमें भेद नहीं, विषमता नहीं, दु:ख नहीं, सुख नहीं। योग के भेद से, कर्ता के भेद से, पात्र के भेद से वस्तुओं में भेद-भाव स्थापित कर लिया जाता है। योग का भेद इस प्रकार है कि अंगूर हैं, जो हैं, गुड़ हैं, ये सब सुन्दर है सात्विक हैं, किन्तु इन्हें ही सड़ाकर युक्ति से सुरा बनाते हैं तो यह तामस और मादक अशुचि वस्तु बन जाती है। कर्ता के भेद से इस प्रकार होता है कोई धातु है शुद्ध सात्विक कर्ता उसकी भगवान की मनोहर मूर्ति बनाता है, उसका पूजन करके परमपद को प्राप्त करता है। दूसरा हिंसक कर्ता उसके अस्त्र-शस्त्र बनाता है, खड्ग बाण आदि बना के निरपराध प्राणियों की हिंसा करता है नरक का अधिकारी बनता है। कर्ता जैसा योग करेगा वैसा ही वस्तु बन जायगी। संखिया है।

कर्ता चाहे तो उसके प्रयोग से दूसरों के प्राण ले सकता है और उसी को शोधकर फूँककर औषधि बनाकर मरते हुओं को जिला सकता है। पात्रभेद से भी वस्तुओं में भेद हो जाता है। दूध, दही अमृत माने गये हैं। किन्तु इन्हें ही ताँबे के पात्र में रख दो तो विष बन जाते हैं। वर्षा का जल है। नदी में पड़ने से मिष्ठ और पेय होता है, वही समुद्र में पड़ने से खारा और अपेय हो जाता है। वस्तुओं को अच्छी बुरी बनानेवाला कर्ता की भावना ही है। भाव ही भाव का कारण है। जो जैसा होता है, वह अपनी भावना के अनुसार वैसा ही वायुमण्डल पैदा कर लेता है और वैसी ही वस्तुओं का सृजन करता है। कर्ता योग और पात्र भेद से ही वस्तुओं में भेद होता है।

✻ स्वार्थ के वशीभूत होकर मनुष्य मान, प्रतिष्ठा, लज्जा, संकोच सभी का परित्याग कर देता है। अपना स्वार्थ जैसे भी सिद्ध हो, अपने हित की किसी प्रकार भी रक्षा हो सके उसके लिये सतत प्रयत्न करता है। कर्तव्य-अकर्तव्य का भी ध्यान छोड़ देता है। स्वार्थ में ऐसा अन्धा हो जाता है कि विचार विवेक सभी को तिलांजलि दे देता है। ये संसारी अनित्य सुख सदा किसी के समीप नहीं रहे, ये नश्वर हैं, क्षणभंगुर है, परिवर्तनशील हैं, परिणाम में दु:खों को देनेवाले हैं, फिर भी प्राणी इनकी प्राप्ति के लिये प्राणपन से प्रयत्न करताहै। धर्माधर्म का ध्यान भी नहीं रखता। यह कैसी विडम्बना है भगवान की कैसी दुरत्यय माया है। भगवान ही जिसकी रक्षा करें वही इससे बच सकता है, वही विषयों के हठ को छोड़ सकता है। स्वार्थ में मनुष्य ऐसा अन्धा हो जाता है कि फिर उसे विवेक रहता ही नहीं। स्वार्थ के वशीभूत होने पर भी सभी सम्बन्ध, सभी उपकार, सभी ज्ञान, सभी महत्ता, पुरुष भुला देता है। उस समय तो जैसे भी हो, हमारा स्वार्थ सिद्ध हो जाय- यही आग्रह हृदय में समा जाता है और फिर निन्दित-से-निन्दित कार्य करने में भी नहीं हिचकता। ये संसार सब स्वार्थी है। कोई भी पुरुष बिना स्वार्थ के बात नहीं करता। जिनसे अपना स्वार्थ होगा, उनसे नाता न होने पर भी नाता निकाल लेते हैं। ये संसारी मनुष्य स्वार्थ को ही सब कुछ समझते हैं। अपना स्वार्थ साधने को बड़ी-बड़ी युक्तियाँ लगाते हैं। जिनसे कुछ अपना स्वार्थ निकलता है, मनुष्य उसका तो बड़ा आदर-सत्कार करते हैं चाहे उनसे किसी प्रकार भी कभी सम्बन्ध नहीं रहा हो, किन्तु जिनसे किसी स्वार्थ की आशा नहीं होती, वह चाहे अपना सहोदर भाई ही क्यों न हो मनुष्य उनकी भी उपेक्षा कर देते हैं। <u>पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में स्वार्थ की मात्रा अधिक होती है</u>।

✻ सज्जन, सर्वत्र क्रोधहीन होते हैं, किन्तु जब कोई उन्हें अत्यन्त सताता है, नितानन्त विवश कर देता है तो उन्हें भी कभी-कभी क्रोध आ जाता है और ऐसा क्रोध आता है कि वे न करने योग्य कार्य को भी करने को उद्यत हो जाते हैं।

✻ दान चाहे कितना भी करें यदि वह श्रद्धा और सम्मानपूर्वक नहीं किया जाता तो सब व्यर्थ है। लेने वालों को हार्दिक प्रसन्नता नहीं होती, पूर्ण सन्तोष नहीं होता। इसके विपरीत चाहे दान कम ही दिया जाय, किन्तु मान-सम्मान और श्रद्धा सहित उचित पात्र को दिया जाय तो उसका अक्षय फल होता है।

✻ विषयों में न सुख है न दुख। ये सब तो मन के धर्म हैं। मन जिसमें सुख मान लेता है, वही सुखद प्रतीत होता है, जिसमें दु:ख मानता है, वह दुखद हो जाती है।

✻ जो बीत गया तो बीत ही गया, वह तो लौटकर आने का नहीं, उसकी चिंता करना व्यर्थ है। आनेवाला समय भविष्य के गर्भ में छिपा है, अत: उसका पता नहीं आवे न आवे, कैसा आवे। जिसका अभी अस्तित्व नहीं उसकी भी चिन्ता व्यर्थ है। जो इस समय बीत रहा है वर्तमान है वही समय सबसे श्रेष्ठ हे। इसीलिये इस क्षण जो बीत रहा है वही सर्वश्रेष्ठ समय है। जिसे आप श्रेष्ठ समझते हैं, वह दूसरों की दृष्टि में अत्यन्त ही कनिष्ठ है। आप जिसे क्षुद्र समझते हैं, बहुतों की दृष्टि में वही महान् है। अत: वर्तमान क्षण में जो हमारे सम्मुख हो वही श्रेष्ठ है।

* कार्य न कोई श्रेष्ठ, न कनिष्ठ, अपनी अपनी भावना के अनुसार लोग श्रेष्ठ, कनिष्ठ बना लेते हैं। अत: वर्तमान क्षण में अपने सम्मुख जो भी कार्य आ जाय वही श्रेष्ठ है।

* जो शास्त्र विहित दान नहीं देता, अथवा अधिकारी होकर जो श्रद्धा से दान दे उसे ग्रहण नहीं करते वे दोनों ही दोषी माने जाते हैं।

* छिपी बात को जानने की उत्कंठा स्वाभाविक होती है।

* महापुरुषों का पधारना एक प्रकार का महोत्सव माना जाता है। जो प्रतिष्ठा वय में, प्रभाव में, तप में, कीर्ति में, पदप्रतिष्ठा में श्रेष्ठ हैं उनके आगमन से एक प्रकार का आनन्द होता है। उनके दर्शनों की चित्त में स्वाभाविक उत्कण्ठा होती है, उनके स्वागत-सत्कार में एक प्रकार का अभिनव उल्लास उत्पन्न होता है तथा उनके आगमन में यथाशक्ति यथा सामर्थ्य श्रद्धांजलि समर्पित करने की लालसा बलवती हो उठती है। कुछ स्वागत सत्कार अनिच्छापूर्वक विश्व बनाकर बलपूर्वक भी कराया जाताहै। उसमें कुछ आनन्द नहीं आता। वह तो एक प्रकार अन्याय है, जो निर्बल होने के कारण विवश होकर करना पड़ता है। स्वागत तो वही है जिसमें स्वाभाविक प्रवृत्ति हो, रोम-रोम प्रफुल्लित हो उठें।

* पृथक पृथक कामनाओं के लिये पृथक पृथक देवताओं की आराधना की जाती है। जैसे तेज की इच्छावालों को सूर्य की उपासना करनी चाहिये, धन की इच्छा वालों को वसुओं की, स्वर्ग की कामना वालों को देवों की, राज्य की कामनावालों को विश्वदेवों की, प्रतिष्ठा की इच्छावालों को पृथ्वी की, रूप की इच्छा वालों को गन्धर्वों की उपासना करनी चाहिये। इसी प्रकार प्रजा की कामना करनेवालों को प्रजापति ब्रह्मा का आराधन करना चाहिये।

* धर्म से प्राप्त अर्थ और काम स्वर्ग के हेतु हैं, धर्म से रहित ये दोनों नरक ले जानेवाले हैं। स्त्री कामना हो तो विवाह करो, धर्मपूर्वक उसे अपनी पत्नी सहधर्मिणी बनाओ। पुत्र की कामना हो तो वेद विधि से भगवान की उपासना करो, उनसे पुत्र के लिये प्रार्थना करो। अगर तुम्हें अर्थ का अभाव है, उसके बिना गृहस्थी का काम नहीं चलता, तो सम्पूर्ण धनों के अधीश्वर श्रीहरि से माँगो। उनकी शरण में जानेवालों के लिये कोई भी पदार्थ दुर्लभ नहीं। उनके लिये सभी सुलभ हो जाते हैं।

* पुरुष अकेला पुरुष नहीं है। स्त्री को मिलाकर वह पूरा पुरुष कहलाता है। पत्नी को भी इसलिये शास्त्रकार अर्धांगिनी कहते हैं।

* सांसारिक फलों की इच्छा से इसी प्रकार के लिये कर्म सकाम कहलाते हैं। इन कर्मों से तो संसार बन्धन और दृढ़ होता है। निष्काम कर्मों से अन्त:करण की शुद्धि होती है। जो कुछ करो, जो खाओ, जो पिओ, जो यज्ञादि शुभ कर्म करो, जो सुवर्ण, गौ, अन्न, धान्य दान करो कृष्ण प्रीत्यर्थ ही करो। प्रारब्धवश संसार में रहकर विवशता से संसारी भोग भोगने पड़े तो दीन होकर उन्हीं से प्रार्थना करो प्रभो। मुझे इन कर्मों से छुड़ाओ मुझे दास जान के अपनाओ। दीन दीन को अपने पादपद्मों का किंकर बनाओ। ये संसारी भोग जितनी भी शीघ्रता से जितनी भी मात्रा में छूट सकें, निरन्तर छोड़ने का प्रयत्न करते रहो, इसी में जीवों का कल्याण है वही मुक्ति का सरल सुगम मार्ग है, यही प्रभु प्राप्ति का पुनीत पन्थ है।

* जो जिस योनि में चला जाता है, वह उसी योनि में अपने को सुखी समझता है, उस शरीर को छोड़ना नहीं चाहता। कोई बड़े ध्यानी-ज्ञानी किसी अन्तराय के कारण किसी हीन योनि को प्राप्त कर लेते हैं और भगवद् आराधना के प्रभाव से उन्हें पूर्वजन्म का स्मरण बना रहता है तो वे उस अधम योनि का अन्त होने की बड़ी उत्कण्ठा से प्रतीक्षा करते हैं।

* संसार को निस्सार समझ लेना यह तो दूसरी बात है किन्तु विपत्ति में फँसने पर भी उसे विपत्ति न समझना, प्राणों पर आ बनने पर भी निर्विकार बने रहना, मृत्यु की तनिक भी चिन्ता न करना यही ज्ञानी का यथार्थ लक्षण है। वाचिक ज्ञान तो बहुतों को होता है, किन्तु अवसर पर काम न आवे, वह हृदय को स्पर्श न करे तो केवल व्यसन मात्र ही है। मन से यह हृदय प्रपंच हट जाय, अनुकूल प्रतिकूल वेदनाओं का हृदय पर कुछ भी प्रभाव न पड़े। समस्त व्यापारों में सदा सर्वदा

श्रीहरि की इच्छा ही अवलोकन करना, यही सच्चे स्थितप्रज्ञ का लक्षण है।

❊ मनके अनुकूल पत्नी बड़े पुण्यों से प्राप्त होती है। जिस पत्नी ने अपने शील स्वभाव सदाचार तथा सद्गुणों से सम्माननीय अतिथि को संतुष्ट कर दिया, भूखे की आत्मा को मिष्ट भोजन और मीठे वचनों से तृप्त कर दिया, वही वास्तव में पत्नी गृहणी कहलाने योग्य है। जो अतिथि अभ्यागत को देखकर ईर्ष्या करने लगे, जल जाय, जो महापुरुषों की सेवा को इल्लत समझे वह तो चाण्डाली है, ऐसी पत्नी के साथ स्वार्थी कामी पुरुषों को छोड़कर कौन धर्मात्मा सद्गुहस्थ एक रात्रि भी रहने का विचार करेगा।

❊ सत्कुल में उत्पन्न होने से ही मनुष्य कुलीन हो जाता है। प्राचीनकाल में कुलीनता पर अत्यधिक ध्यान दिया जाता था। कुलीन निर्गुण भी क्या न हो, वह भी वंदनीय माना जाता था और अकुलीन चाहे गुणी क्यों न हो, फिर भी कुलागत आचार के अनुसार उसके गुण की तो प्रशंसा थी, किन्तु वह कुलीन गुणी के समान आदरणीय नहीं समझा जाता था। यद्यपि सत्कुल में भी क्रूर और दुष्ट लोग उत्पन्न हो जाते हैं, फिर भी सामान्यतया कुलागत कुछ-न-कुछ गुण तो आते ही हैं। इसीलिये राजा का पुत्र ही राजा बनाया जाता था, मन्त्री का पुत्र मंत्री ही होगा, वैद्य का पुत्र वैद्यक ही करेगा। कलिकाल में यह प्रथा पापों की वृद्धि के कारण नहीं रही।

❊ कर्म कोई न बुरे हैं न अच्छे, उनमें आसक्ति ही सुख-दु:ख में कारण है। जीवों की स्वाभाविक प्रवृत्ति संसारी विषयों में ही होती है। उस प्रवृत्ति को संयम में रखना यही धर्म है। उसे असंयत छोड़ देना मनमानी करना यही अधर्म है। जो जिसका उत्पत्ति-स्थान है, उसमें उसकी स्वाभाविक आसक्ति होती है। जैसे हमारा जन्म माथुर मंडल में है तो उस भूमि में हमारा सहज स्नेह होगा। इसीलिये स्त्री पुरुषों की व्यवसाय में, मैथुन में स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, इसे सिखाने पढ़ाने की आवश्यकता नहीं। यह शरीर मांस के सारभूत रज-वीर्य से बना है, अत: लोगों की अन्नसार स्वादु पदार्थों में स्वत: प्रवृत्ति होती है। इसी प्रकार मनुष्य कुछ देर को संसार को भूलकर कुछ आत्मविस्मृति चाहता है। योग करके समाधि लगाना जग को भुला देना तो कठिन है, इसीलिये मनुष्य किसी-न-किसी मादक द्रव्य का किसी-न-किसी रूप में सेवन करना चाहते हैं। इन स्वाभाविक प्रवृत्तियों को आप्त वचनों, शास्त्र वाक्यों द्वारा संयम में लाना, इसी का नाम धर्म है। इन पर कोई रोक थाम न लगाकर इन्द्रियों को स्वच्छन्द विषयों में छोड़ देना, मनमाने ढंग से विषयों में प्रवृत्त हो जाना, यही अधर्म है। पहिले जब सत्ययुग में सबकी स्वाभाविक रुचि धर्म में थी, तब न कोई नियम था न विवाह-बन्धन। न नरक थे न रोग, न यम थे न मृत्यु। जब पाप ही नहीं तो मृत्यु भी नहीं। मृत्यु नहीं तो नरक भी नहीं, दु:ख भी नहीं।

❊ भविष्य की चिन्ता जो नहीं करता, वह या तो जड़ है या जीवन मुक्त है, नहीं तो सबके चित्त में यह प्रश्न उठता है आगे क्या होगा। साधु महात्मा को, दैवज्ञ ज्योतिषी को देखकर सभी हाथ दिखाने लगते हैं, हमारे भाग्य में क्या है। प्राणियों में स्वाभाविक प्रवृत्ति है, पुण्य चाहे न करें, किन्तु पुण्य का परिणाम जो सुख है उसे सब प्राप्त करना चाहते हैं। इसी प्रकार पाप तो चाहे करते रहें, किन्तु पाप के परिणाम दु:ख को वे भोगना नहीं चाहते। इसीलिये सभी सुख पाने का और दुखसे बचने का उपाय करते हैं। जो लोग परलोक को नहीं मानते, वे इस लोक में दु:खों की सम्भावना होने पर उनसे बचने के लिये सब कुछ करते हैं।

❊ महापुरुष जिस मार्ग से गये हैं और उन्होंने जिस मार्ग की प्रशंसा की है, वही सर्वश्रेष्ठ सर्वोपरि मार्ग है।

❊ दूसरों के धर्म का ज्ञान न होना अन्याय और भूल का स्त्रोत है।

❊ जिसने शराब पी है, वह तो सुबह होश में आ जायेगा, लेकिन जिसने राजनीति पी है, वह शायद होश में आये ही न। उसकी सुबह शायद हो ही न। जिसने धन का नशा पिया है, पद का नशा पिया है- उन्हें शायद ही कभी होश आये।

इसलिए तो धन-मद, पद-मद कहा है, मद यानी मदिरा। जिन्होंने कहा है, ठीक शब्द खोजे हैं। ये मूर्छा लाते हैं। ये अहंकार को फूला देते हैं।

* सच्ची दया का भाव कभी बदल नहीं सकता, भले ही आपके सामने वाला आपसे दुर्व्यवहार ही क्यों न कर रहा हो।

* हमारे सभी सपने सच में तब्दील नहीं हो सकते। लेकिन वे हमारे शानदार भविष्य की नींव रख सकते हैं।

* पति के लिए, संतान के लिए ममता, समाज के लिए शील, विश्व के लिए दया तथा जीव-मात्र के लिए करुणा संजोने वाली महा प्रकृति का नाम ही नारी है।

* वाणी की सार्थकता इसी में है कि वह आकाश में सीढ़ी बांधकर मनुष्य को उस स्थान पर चढ़ा दे जहां से वाणी का उद्‌गम हुआ है।

* कभी अपने आपको इतना उच्च मत समझो। कानून तुमसे भी ऊपर है।

* जो केवल विचारते हैं उनके लिए विश्व सुखमय है, जो अनुभव करते हैं उनके लिए दु:खमय।

* जिस प्रकार श्रम शरीर को शक्ति प्रदान करता है, उसी प्रकार कठिनाइयां मनुष्य को शक्ति-सम्पन्न बनाती हैं।

* जागो क्योंकि जागरण ही जीवन है। जागो क्योंकि अब भी समय है। न सिर्फ जागो बल्कि उठकर बैठ जाओ। न सिर्फ उठकर बैठ जाओ बल्कि खड़े हो जाओ बल्कि सरपट भागो। क्योंकि समय की रफ्तार बहुत तेज है। समय भागा जा रहा है और तुम्हें कदम मिलाकर चलना है। तभी तुम दुनिया को जीत सकते हो। समय के पैर नहीं पंख होते हैं। वह चलता नहीं उड़ता है। तुम भी अपनी रफ्तार बढ़ाओ वरना पिछड़ जाओगे।

* जिंदगी में तीन चीजों का अर्जन जरूर करें-बचपन में ज्ञान का, जवानी में सम्पत्ति का और बुढ़ापे में पुण्य का। बचपन अध्ययन के लिए है, जवानी अर्जन के लिए है, बुढ़ापा आत्म-चिंतन के लिए है। किसी छात्र ने पूछा- कितने घंटे पढ़ना चाहिए? जिस क्लास में है, स्कूल की पढ़ाई के अलावा उतने घंटे। १० वी में हो तोा १० घंटे, १२ वीं मे हो तो १२ घंटे। एक बार सी.ए. कर लो तो जिंदगी ए.सी. में कटेगी। आषाढ़ का चूका किसान, डाल का चूका बन्दर, पेड़ से टूटा पत्ता और स्कूल से भागा विद्यार्थी एक दिन जरूर पछताता है।

* दुनिया में रहते हुए दो चीजों को कभी नहीं भूलना चाहिए। न भूलने वाली चीज एक तो परमात्मा तथा दूसरी अपनी मौत। भूलनेवाली दो बातों में से एक है- तुमने किसी का भला किया तो उसे तुरन्त भूल जाओ और दूसरी किसी ने तुम्हारे साथ अगर कभी कुछ बुरा भी कर दिया तो उसे तुरन्त भूल जाओ। बस, दुनिया में ये दो ही बातें याद रखने और भूल जाने जैसी हैं।

* एक सार्वजनिक कर्त्तव्य को सम्पन्न करते समय व्यक्तिगत विचार कदापि बाधक नहीं होना चाहिए।

* कल्पना आत्मा का नेत्र है।

* तर्क ही कानून का जीवन है, यही नहीं, सामान्य कानून स्वयं ही तर्क के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

* क्योंकि हमारा कारण (पक्ष) न्याय-संगत है, अत: ईश्वर हमारी सहायता करे।

* जिस समय क्रोध उत्पन्न होनेवाला हो, उस समय उसके परिणामों पर विचार करो।

* विश्व एक सुन्दर पुस्तक के समान शिक्षापूर्ण है, किंतु उसके लिए इसका रंच-मात्र भी उपयोग नहीं जो इसको पढ़ नहीं सकता।

* जीवन कर्म का ही दूसरा नाम है। वह जो कि कर्म नहीं करता, उसका अस्तित्व है किंतु वह जीवित नहीं।

* कापुरुष डगमगा जाते हैं किंतु साहसी बहुधा आपदाओं पर विजय प्राप्त कर लेते हैं।

✻ विनाश के समय अकल उल्टी हो जाती है।

✻ ढालू पर्वतों पर आरोहण के लिए पहले धीमी गति की आवश्यकता है।

✻ बूढ़ा वो है जो जीवन की चुनौतियां छोड़ देता है। वही जवान है जो जीवन की सारी चुनौतियों को स्वीकार करता है। चुनौती को स्वीकार करने की मात्रा ही जवानी की मात्रा है। तब कोई आदमी मरते दम तक जवान रह सकता है और कोई आदमी पहले से ही बूढ़ा हो सकता है।

✻ हमारे पास ज्ञान तो बहुत है, पर निर्णय लेने की क्षमता कम है। हमारे पास दवाएं बहुत हैं पर शरीर स्वस्थ नहीं है। हम बातें ज्यादा करते हैं, प्यार थोड़ा और नफरत अधिक। हम लोग चांद पर तो हो आए परंतु सड़क के पार पड़ोसी के घर जाना कठिन लगता है। हमने अंतरिक्ष पर तो विजय हासिल कर ली, परंतु अपनी अन्तर्रात्मा तक नहीं पहुंच सके।

✻ अपने दु:खों का हिसाब करने की बजाए दूसरों के दुखों की गिनती करें ताक तकदीर से शिकायत नहीं रहेगा।

✻ डरना है तो उस इल्म से डरो जो तुम्हें कोई फायदा नहीं पहुंचाएगा। डरना है तो उस दुश्मन से डरो जो दोस्त के रूप में तुम्हारे पास है।

✻ दूसरों का बद्दुआएं देने से अपनी अच्छाइयां कम पड़ जाती हैं।

✻ अगर आज हम किसी के बुढ़ापे का ख्याल करेंगे तो आनेवाले वक्त में कोई हमारा ख्याल करेगा।

✻ एक दूसरे की मदद से ही सबकी मुश्किलें दूर होती हैं इसे मेहरबानी जैसा सस्ता नाम न दो।

✻ जिंदगी हमें वह कुछ करने पर मजबूर कर देती है जिसकी हमने कभी कल्पना भी नहीं की।

✻ हम किसी को तब तक मजबूर नहीं कर सकते जब तक उसकी किसी कमजोरी से वाकिफ न हो।

✻ हंसी के साथ रोना भी जरूरी है कि यहीं जिंदगी का चलन है।

✻ लड़ाई के लिए वजह जरूरी नहीं होती।

✻ आदमी बडा ही गुमराह है कि वह बाहर वालों को खुश करने की कोशिश में लगा है और घरवालों की खुशी-नाखुशी के प्रति लापरवाह है।

✻ यदि तुम किसीको ऊँचा उठाना चाहते हो तो स्वयं का उच्च स्तर पर होना आवश्यक है।

✻ सबसे कठिन तीन वस्तुएं हैं- एक रहस्य को अप्रकट रखना, कष्ट को भूल जाना और अवकाश का सदुपयोग करना।

✻ वो दुनिया के सबसे बेचैन लोग हैं जो दूसरों का बुरा सोचते हैं। जो व्यक्ति कम खाता है उसका दिमाग रोशन रहता है।

✻ तअज्जुब है उन पर जो अन्न तो ईश्वर का खाते हैं मगर काम शैतान का करते हैं।

✻ नेक बंदों का साथ हो तो अनचाही मुसीबतें पास नहीं आतीं।

✻ मनुष्य होकर ऐसा काम न करो जो मानवता के दामन में दाग लगा दे।

✻ शंका एक ऐसी बीमारी है जिसकी दवा दुनिया के किसी भी हाकिम के पास न है न होगी।

✻ अगर हम मुसीबत में किसी के काम आते हैं तो उस पर अहसान नहीं करते। यह तो मनुष्य का फर्ज है।

✻ सबसे ज्यादा मोहताज वह है जिसने भलाई छोड़ दी।

✻ दिल राजों का संदूक, होंठ ताले और जबान चाबी है।

✻ आचरण इन्सान की सबसे बड़ी पूंजी है।

✻ हमदर्दी वह जबान है जिसे जानवर भी समझ लेते हैं।

* प्रार्थना नहीं करनेवाले को किसी कर्म का फल नहीं मिलेगा।

* बुरे ख्याल शरीर और आत्मा पर बुरा असर करते हैं, इसलिये कभी बुरे ख्यालों का समर्थन न करो।

* किसी से सामने होते वक्त इतनी गुंजाइश जरूर रखो कि वापस आना पड़े तो रास्ता कठिन न हो।

* दूसरों की पसंद के आगे अपनी पसंद का बलिदान करना नेकी है। इसके बिना दर्द हासिल नहीं होता और दर्द हासिल किये बिना कृपा की दौलत नहीं मिलती।

* जो अपने दोस्त को छुपकर नसीहत करे वह उसका मोहताज है।

* ईश्वर की कृपा से नाउम्मीद होना सबसे बड़ी मुसीबत है।

* सबसे बुरा ईमान वह है जिसमें शंका, सन्देह अधिक हो।

* विद्वान की संगत में बैठना एक साल की पूजा करने से बेहतर है।

* लालची व्यक्ति हमेशा फकीर और मोहताज रहेगा अगर उसे दुनिया की सारी दौलत भी मिल जाए।

* सबसे अच्छा अनुभव वह है जिससे तुम्हें उपदेश मिल जाए।

* मनुष्य जब भी उद्योग करेगा तो उससे भूल होना स्वाभाविक है।

* चन्द्रमा चांडाल के घर से अपनी किरणों को हटा नहीं लेता। महात्मा व साधु सज्जन पुरुष गुणहीन साधारण जीवों पर भी अपनी कृपा, दया बिखेरते है।

* जो कायर है, पराक्रमी नहीं वही दैव का भरोसा करता है।

* हमारे जीवन का आदर्श ऊंचा होना चाहिये विशेषकर उन लोगों का जो सभ्य कहलाते है।

* हर विपत्ति जिन्दगी में कुछ सिखाती है।

* अपेक्षाओं से भरा हुआ चित्त निश्चित ही दु:खी होता है।

* जहां सम्पत्ति नही होती वहां अन्याय नहीं होती।

* अहम और वहम छोड देने चाहिये।

* अच्छा होना अपने आप में बहुत अच्छा है।

* आपका अस्तित्व सब प्रकार के मंगलों से परिपूर्ण है। यहां कभी कुछ अशुभ तो है ही नहीं। किसी चीज को अशुभ मान लेने पर ही अडचन शुरू हो जाती है। यह सब मान्यता की बातें है।

* अगर डर मन की एक अवस्था हैं, तो साहस भी मन की दूसरी अवस्था है। यह आप पर निर्भर है कि आप क्या चुनते हो। चेतन या अचेतन मन में असफलता का डर क्षणिक सपने साकार करने की क्षमता को कम कर देता है।

* आपके पास नसीब जितना लेकर आता है, उसे पाने के उतने ही अवसर आपके पास होते हैं। जैसे आप सोचते हैं वैसे ही आप बन जाते हैं। अगर आप हमेशा भयंकर के बारे में सोचते हैं, तो भयंकर ही घटित होगा।

* जो बीज आप बो देते हैं, वहीं से सब शुरू होता है। जो भी मेहनत आप डालते हो, वैसे ही परिणाम आप पाएंगे। थोड़ी देरी हो सकती है। धीरत रखना आपको सीखना होगा। कई बार जल्दबाजी में होने का दृष्टिकोण आपको कतार में सबसे आखिरी में रख देता है। इसलिए छोड़ो नहीं। प्रयास करते रहो। डर पर जीत हासिल करने का सबसे बेहतर तरीका है कि निरंतर आगे बढ़ना चाहिए। अपने डर के कारण कामों को अधूरा न छोड़ो। हालात कभी भी निराशावादी नहीं होते। आप उस पर निराशा से सोचते हो।

* आप अभी जहां पर है और जो भी हैं, वह आपने जो किया या जो किया नहीं, उसके कारण हैं इसलिए दूसरों को दोष देना या हमेशा सहानुभूति और ध्यान पाना बंद करना चाहिए। ऐसा करना खुद को मूर्ख बनाना है और मात्र समय की बर्बादी है।

* सामान्य ज्ञान के बिना सिर्फ किताबी ज्ञान बहुत कम उपयोगी है और कई बार यह घातक भी सिद्ध होता है। सही शिक्षा चरित्र बनाने में मदद करती है और अधिक अच्छे इन्सान बनने की वृद्धि को बढ़ावा देते हैं। अच्छा व्यक्तित्व और निर्मल हृदय उच्च शिक्षा से भी कई ज्यादा उपयोगी हैं।

* तू दुनिया में रहने के लिए सामान जमा कर रहा है और दुनिया तुझे निकालने में लगी है।

* संसार एक सराय है जहां इंसान मुसाफिर होता है। संसार एक शतरंज की बाजी है जहां सब अपने अपने मोहरे बदलने में तत्पर हैं। संसार एक ऐसा ख्वाब है जो इंसान जागती आंखों से देखता है।

* गुनाहों से बचे रहना जिन्दगी का सौन्दर्य है और जिन्दगी का हासिल नेकी कमाना है। नेकी कमाने के लिए अपनी हर ख्वाहिश दूसरों की भलाई की खातिर कुर्बान कर दो। नेकी करने के लिए इंतजार न करो।

* जिंदगी हमारे बस में नहीं लेकिन दूसरों को खुश रखना हमरे बस में है।

* इतना सच भी नहीं बनना चाहिए कि दूसरे आपके सामने मैले नजर आएं।

* स्वयं का ख्याल करो, अंजाम खुद ब खुद बेहतर हो जाएंगे।

* ऐसा व्यक्ति गुनाहगार है जो किसी से कुछ सुने, और बगैर जाँच किये, वो बात किसी दूसरे के आगे बोल दे।

* यह दुनिया का रिवाज है कि अगर आदमी स्वयं अच्छा हो तो लोग बुरे होते हैं और अगर वह खुद बुरा हो तो लोग अच्छे मिलते है। बुरे लोगों की वजह से खुद बुरे बन जाओ, यह ठीक नहीं है।

* बात शब्द की नहीं बल्कि लहजे की होती है।

* दुनियादारी की वासनाओं से धीरे-धीरे उपराम होना चाहिये। सांसारिक विषयों से किनारे होते चलो। हम जो कुछ कमाते हैं जो कुछ कमा चुके हैं, ये कुछ भी टिकाऊ नहीं है। इसलिये इसधन को नष्ट होने से पहले किसी न किसी शुभ कार्य में लगावो और संसार के नश्वर पदार्थों के पीछे इस अमूल्य मानव जीवन जो है, इसको बरबाद मत करो।

* आत्म विचार इसके दो भाव है। एक तो ये कि मैं शरीर नहीं हूं आत्मा हूं मेरा इस शरीर से शरीर के संबंधियों का किंचित् भी सम्बन्ध नहीं है। दूसरा आत्मनिरीक्षण करते रहिये, सबेरे जब से जगा हूं तब से रात में सोने तक आज मेरे से कोई गलत काम तो नहीं हुआ है। मेरे मन वचन कर्म से कोई ऐसी क्रिया तो नहीं हुई। जिससे किसी को तो कुछ नहीं हुआ? कदाचित् कहीं कोई गलत कर्म हो गया हो तो उसका मार्जन करो उसका प्रायश्चित करो। प्रतिदिन आत्मनिरीक्षण करो आत्म विचार करो।

* प्रयोजन सिद्ध करनेके लिए यदि बड़ा अपनेसे छोटेका पांव छूये तो असंगत नहीं हैं केवल आयुसे कोई बड़ा नहीं होता, व्यक्ति विद्यासे बड़ा होता है।

* असलमें जो सकाम भावसे भगवान्की आराधना करते हैं, वे भगवानकी बुद्धिको अपनी बुद्धिसे बड़ी नहीं समझते। वे समझते हैं कि हमारी बुद्धि बड़ी है और हम जो चाहते हैं उसीमें हमारा कल्याण है। उन्हें तो ऐसा कहना चाहिए कि भगवान तुम जो चाहो, वह करो, लेकिन वे कहते हैं यह हैं कि हे भगवान्, तुम जो चाहे वह करो, लेकिन वे कहते यह हैं कि हे भगवान, जो हम चाहते हैं वही तुम करो वस्तुत: जो भगवानकी बुद्धिपर अपनेको छोड़ देते हैं, निष्काम होते हैं, वही स्वार्थकुशल होते हैं। भगवान्से कोई भी चीज माँगना बेवकूफी है। जो अपने आपको ही देनेके लिए तैयार हो और कहे कि

चलो मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ, दिन-रात तुम्हारे सामने हाथ जोड़े खड़ा रहूँगा, उसको तो माँगनेवाला छोड़ दे और उससे कानी-कौड़ी माँगकर ले आये, उसकी समझके बारेमें क्या कहा जाये? जो ऐसा समझते हैं कि हमारे लिए तुम्हारा विधान ही ठीक है, हमको तुम्हारे सिवाय दूसरी कोई चीज नहीं चाहिए, वे ही बुद्धिमान है।

* विजय खरगोश के पैरों मे, मर्द के दिमाग में, औरत की जबान में होती है।
* इस दुनिया में प्यार कम नहीं देखने की नजर चाहिए।
* महान् है वह दिल जिसमें दूसरों के दर्द का एहसास हो।
* अच्छे बर्ताव में वो ताकत है, जो दौलत में भी नहीं होती। अच्छे व्यवहार के बिना आदमी की बेहतरी के रास्ते कठिन हो जाते हैं।
* आज मनुष्य आसमानों के दरवाजा खोलने लगा है लेकिन उसने अभी तक दिल का दरवाजा नहीं खोला।
* बुजुर्गों की याद मनाने की बजाय उनके बताए रास्तों पर चलना चाहिए।
* जिसकी प्रार्थना की जाती है वो ही प्रार्थना को स्वीकार करता है।
* दरिया और जिंदगी पर मजबूत बांध बांधना पड़ता है ताकि दोनों बर्बाद न हों।
* प्यार, मुहब्बत उनसे करो जो नेकी करके भूल जाते हैं। अच्छी बातें लोगों तक पहुंचाओ, बहस से दूर रहो।
* ईश्वर ने जो कुछ शख्स की तकदीर में लिख दिया है, उस पर खुश रहने का हुक्म ईश्वर अपने भक्तों को देता है।
* किसी से नेकी करते वक्त बदले की उम्मीद मत रखो क्योंकि अच्छाई का बदला मनुष्य नहीं बल्कि ईश्वर देता है।
* बुराई अक्सर कामयाब हो जाती है लेकिन कभी जीत हासिल नहीं कर सकती।
* जबान खोलने से पहले यह सोच लो कि दुनिया में ऐसे लोग भी मौजूद हैं जो तुमसे ज्यादा अक्मलंद हैं।
* जो व्यक्ति कुर्बानी करता है वह मर कर भी जिन्दा रहता है।
* हे ईश्वर, तुमने मुझे भरी-पूरी जिंदगी दी, खाने के लिए रोटी और प्यार करने के लिए परिवार दिया। मेरा जन्म तुम्हारी मर्जी से हुआ, मेरी मौत भी तुम्हारी मर्जी से होगी। मैं इस जिंदगी की सुख-सुविधाओं के लिए तुम्हारा धन्यवाद अदा करता हूँ। हम ईश्वर से आते हैं और ईश्वर के पास लौट जाते हैं।
* तीन चीजें इन्सान को तबाह कर देती हैं- लालच, ईर्ष्या और गम। अगर दुनिया में भलाई पानी है तो माता-पिता की सेवा करो।
* आदमी पढ़ने से बेदार होता है, संवाद से उसमें तमीज आती है और लिखने से उसकी प्रतिभा निखर जाती है।
* दूसरों के खिलाफ साजिश करने से दूसरे को तो नुकसान पहुँचता ही है, खुद अपनी जान को भी खतरा बना रहता है।
* भले इन्सान के करीब रहो क्योंकि भलों के मुँह से जो अच्छी बात निकलती है, उसकी हरेक को कहीं ना कहीं जरूरत पड़ती हैं।
* झूठ दुनिया के हर धर्म में मना है।
* गम और इन्सान दोनों जुड़वां पैदा हुए हैं।
* जिंदगी लगातार संघर्ष और हिम्मत का नाम है।
* वक्त किसी का इंतजार नहीं करता, उसकी कद्र करो।
* जिस पर उपदेश असर न करे वह जाने कि ईमान से मेरा दिल खाली है।

❊ हर चीज की एक सुन्दरता होती है और नेकी का सौन्दर्य यह है कि फौरन की जाए।

❊ जिस इन्सान का कोई मकसद नहीं है वो चलता तो रहता है, मगर उसका रास्ता कभी खत्म नहीं होता। इसलिये जिंदगी में मकसद जरूरी है।

❊ **शब्द, स्पर्श, रूप, रस गंध। इन बिषयण कीन्हों जग अंधा।।** एक मात्र शब्द स्पर्श, रूप, रस और गंध इन्होंने जीव को अंधा कर दिया है औरजीव इनके अन्दर खोया है वह सोया है। जब भी जिसको संसार के विषय कुछ फीके-फीके लगने लगें तो उसको ऐसी मान्यता अपने अन्दर रखनी चाहिए कि अब नींद पूरी हो चुकी है। अब जागृति शुरू हो रही है। दुकान का आकर्षण कम हो जाये, धर्म के प्रति दृढ़ आस्था होती चली जाये। तब समझना चाहिए हम जाग रहे हैं। यह संतों की वाणी है। जब विषयों के राग से और भोग-राग से रहित स्थिति होने लगे तब समझना चाहिए कि अक हम जाग रहे हैं और किसी अच्छी राह पर तो जागा हुआ व्यक्ति ही विवेक पूर्ण स्थिति में चल सकताहै। जो अच्छी राज पकड़ेगा; उसकी मंजिल स्वाभाविक ही अच्छी होगी। अगर हम सो रहे हैं, सोते-सोते चल रहे हैं, तो उसकी राह भी ठीक नहीं होगी।

❊ सब बंधनों से बड़ा बंधन राग का बंधन, लगाव का बंधन, स्नेह का बंधन है। जिसको काटने की शक्ति होते हुए भी जीव इसको काटता नहीं है। उसी में बंधा रहता है। पशुओं को बांधने के लिए जंजीर/रस्सी की आवश्यकता पड़ती है, परंतु मनुष्य किस बंधन में बंधे हुए हैं? ये केवल लगाव के बंधन में बंधे हुए हैं। भ्रमर लकड़ी में छेद कर सकता है पर कमल की कोमल पंखुड़ियों में नहीं क्योंकि कमल से भँवरे को प्यार है। पतंग नाम पतंगे का (क्रीड़ा विशेष) है। पतंगे की कमजोरी यह है कि यह रूप का दीवाना होता है। कहीं लौ जलती दीख जाये तो उसके ऊपर कुर्बान होने को लपकता है। पंख जलते हैं, शरीर जलता है, झुलसता है, लेकिन उसका प्यार इतना ज्यादा है कि फिर बार-बार जब तक मौत के मुँह में नहीं पहुँच जाता, तब तक उसके ऊपर चक्कर लगाता रहता है। इस मनुष्य का क्याकरें, जिसके पीछे स्पर्श, शब्द, रूप, रस, गंध ये पाँचों विषय लगे हुए हैं। इनको कैसे जीतना चाहिए? केवल एक ही उपाय में ये पाँचों विषय भजन के बल पर कमजोर होते हैं।

❊ अपेक्षाएं तो स्वार्थ का प्रतिक है।

❊ माँगनेवाला स्वार्थी, बुद्धिहीन और अन्धा होता है। वह देनेवाले की कठिनाइयों को नहीं जानता और देनेवाला भी माँगनेवाले की विपत्ति पर विचार नहीं करता।

❊ हमारे पूर्वज सृष्टि के लिए भगवान की आराधना करते थे। जिससे उनकी सन्तान धार्मिक, तेजस्वी तथा भगवद्भक्त होती थी। उससे सबका कल्याण होता था और देश भी निरापद हो सुख-समृद्धि से पूर्ण रहता था। आधुनिक स्वेच्छाचारी इसके विपरीत स्वयं धर्म-कर्म से विहीन रहते हैं। इसलिए उनकी सन्तान अधार्मिक, आचारहीन तथा भगवद्वेषी होती है। वह भगवद्द्वेषी ही नहीं उपद्रवों से अशान्ति रहने के कारण सबको किसी न किसी प्रकार का क्लेश होता है एवं देश की भी सुख-सम्पत्ति का विनाश होता है।

❊ पूर्व पुण्य पाप कभी भी व्यर्थ नहीं जाते, अत: शास्त्रीय सिद्धान्त है कि पुण्यकर्म करते हुए भी हमें सुख न मिले तो समझना चाहिये, इसका फल हमें अगले जन्म में मिलेगा, इसके विपरीत पाप कर्म करते हुए वृद्ध-सी दिखाई दे तो समझ ले यह बुद्धि पाप का फल नहीं है, कोई पूर्व पुण्य उदय हुआ है, इन पापों का फल तो हमें अवश्य ही भोगना पड़ेगा। पुण्य पाप प्राय: संग दोष से होते है। जैसा संग होगा, वैसे संस्कार बनेंगे, जैसे संस्कार जम जायँगे वैसे ही कार्य करने लग जायँगे, अत: सदा सर्वदा साधु पुरुषों का संग करना चाहिये। कामिनियों का तथा कामियों का कभी भूलकर भी संग न करना चाहिये।

❊ तृष्णा की पूर्ति कभी नहीं होती है। तृष्णा के कारण मनुष्य अनेक प्रकार के कर्मों को करते हुए संसार चक्र में पड़ा

रहता है। संसार के सभी मनुष्य कर्मों को करते हुए दु:खों को भोगते रहते हैं। आत्मा सुख स्वरूप है उसको न समझ पाने के कारण वह सदा सांसारिक सुखों को प्राप्त करने का प्रयास करता है।

* कर्मसे विमुख पौरुषहीन व्यक्तिको संसारमें किसी प्रकारकी उन्नति नहीं प्राप्त हो सकती। समग्र उन्नतियोंका मूल कर्म में है।

* क्या बोलना, क्या नहीं बोलना और क्या करना, क्या नहीं करना इसी विवेकका नाम धर्म है। जब मनुष्य अनुचित बोलने लगता है, अनुचित करने लगता है तब उसके जीवनका रस मिट जाता है। इसलिए वाणी और क्रियामें उचित, अनुचितका विचार अवश्य होना चाहिए। नही तो इन्द्रियोंकी मर्यादा टूट जाती है और मर्यादा टूट जानेपर वे मनुष्यको चाहे जहाँ ले जाती है।

* जैसे कपड़े मैले होनेपर आदमी चाहे जहाँ बैठ जाता है, वैसे ही जब उसका चरित्र भ्रष्ट हो जाता है तब वह अपने बचे-खुचे आचरणका भी नाश कर देता है। इसलिए जीवनमें नियन्त्रण, नियमन और अनुशासन आवश्यक है। यदि जीवन वासनानुसारी न होकर अनुशासनासारी हो तो उससे सुख-शान्तिका उदय हो जाता है।

* धर्मात्मा पुरुष का यश कपूर की सुगन्धि के समान सर्वत्र व्याप्त हो जाता है। धन कौन छाती पर ले जाता है। आज तक यह धन किसका हुआ है, झूठे ही लोग इसमें अपना ममत्व स्थापित करते हैं। भाग्यवश जिसे धन प्राप्त हुआ है, उसने उस धन से धर्म नहीं कमाया, कीर्ति नहीं फैलाई तो उसका धन व्यर्थ है। केवल वह उसका पहरेदार मात्र ही है। जब तक जीता रहेगा, बिना सोये खाये उसकी रक्षा करेगा, मरने पर सर्प होकर उसके ऊपर बैठा रहेगा। जिसने धन पाकर धर्म किया, यश कमाया, कीर्ति फैलाई उसी ने धन का यथार्थ उपयोग किया। जिसकी कीर्ति शेष है, वह मरकर भी जीवित ही है, जिसकी अपकीर्ति फैल गयी, वह जीता हुआ भी मृतके समान है।

* प्राणी कैसा भी क्रूर हो, निन्दित हो, हिंसक हो, सभी किसी-न-किसी से प्यार करना चाहते हैं। सभी के भीतर प्रेम करने की एक स्वाभाविक स्पृहा होती है। जो स्वार्थी है, कामी है, विषयासक्त है, वह कभी किसी का मित्र हो ही नहीं सकता, उसकी मित्रता तो काम से है, स्वार्थ से है। यही सब अनुभव करते-करते युवावस्था बीत जाने पर मनुष्य किसी से प्रेम नहीं करता। वास्तव में कोई प्रेम करने योग्य है ही नहीं, जो क्षणभंगुर विषयों से प्रेम करता है उसकी मित्रता कितने दिन चल सकती है, उसके साथ किया हुआ प्यार कितने दिन स्थाई रह सकता है। प्रेम करने योग्य या तो वृक्ष हैं, जो न बोलते हैं, न गाली गलौज करते हैं और न तुम्हारे किसी काम में अवरोध करते हैं।

* ज्ञानी की दृष्टि में तो जय-पराजय, सुख-दु:ख, जीवन-मृत्यु, अपना पराया आदि द्वन्दवाली वस्तुएँ है ही नहीं, वह तो निर्द्वन्द हो जाता है।

* सबल पाप निर्बल उपायों से नष्ट नहीं होता।

* परिस्थिति सर्वथा जिनके प्रतिकूल हो और दैव उनके अनुकूल हो तो भी कठिन परिस्थिती में भी बच जाते हैं। संसार में दैव का अनुकूल होना महान सौभाग्य का सूचक है।

* समझदार लोगोंके समाजमें मौन रहना भी एक धर्म है, बोलते जाना ही धर्म नहीं है। जो लोग समझते हैं कि बस, सच बोलते जाओ, माँकी बात जाकर पत्नीको कह दो, पत्नीकी बात जाकर माँको कह दो अथवा अपनी बात दुश्मनको कह दो तो यह धर्म नहीं होता। कई प्रसंग होते हैं, जहाँ मौन भी धर्म होता है। असलमें उद्देश्य है जीवनकी रक्षा। उसके लिए यथायोग्य, यथास्थान सत्य और अनृत बोलना चाहिए।

✻ सच-झूठ मिलाकर बोलनेको कहा वह वाणिज्य है। केवल सच-सच, अथवा झूठ-झूठ बोलना वाणिज्य नहीं होता। जैसे गृहस्थाश्रममें वाणिज्य है, वर्णधर्ममें वैश्य है, वैसे ही जीवनमें भी सत्य और असत्यका भी मिश्रण है। गृहस्थों और वैश्योंको वही धर्म करना चाहिए, जिससे धनमें, भोगमें, यशमें और जीविकामें बाधा न पड़े।

✻ प्रारब्ध कर्मों का भोग तो सभी को भोगना ही पड़ता है। अन्तर इतना ही है कि बुद्धिमान पुरुष विवेक के साथ सुख-दु:ख में समवृत्ति रखकर, अवश्यम्भावी समझकर उसे निर्लेप भाव से भोगते हैं और अज्ञानी पुरुष कष्ट से रोते हुए दुखपूर्वक भोगते हैं। भोगना तो सभी को पड़ता है।

✻ असन्तुष्ट व्यक्ति के लिये सभी कर्त्तव्य नीरस होते हैं। उसे तो कभी भी किसी वस्तु से संतोष नहीं होता। फलस्वरूप उसका जीवन सफल होना स्वाभाविक है।

✻ पराई सम्पत्ति पर कभी लालच मत करो। संसार की समस्त सम्पत्ति ईश्वर की है। संसार की सम्पत्ति की लालसा में रावण और कंस का निर्वंश हो गया। त्याग एवं संतोषपूर्ण जीवन जीनेवाले भरत एवं युधिष्ठिर आदि का जीवन बन गया। वे मानते थे कि यह सम्पत्ति भगवान की है।

✻ जो दुराग्रही होगा, उसका अभिमान अवश्य टूटेगा। विनयसे मनुष्यके स्वमानकी रक्षा होती है और अभिमानसे उसका तिरस्कार होता है। बुद्धिमत्ताकी पहचान यही है कि जब मनुष्यकी समझमें कोई बात आजाय तब वह उसको मान ले। लेकिन यदि समझमें आजानेपर भी मनुष्य कोई अच्छी बात न माने, जिद करे, दुराग्रह करे तो उसके जीवन में बड़े-बड़े दोष आ जाते हैं। मनुष्यके दुराग्रह और विग्रह ही उसके जीवनमें ग्राह हैं। अन्य ग्रह रहते हैं- आसमानमें, लेकिन दुराग्रहमें विग्रहरूपी ग्राह रहते हैं मनुष्यके हृदयाकाशमें।

✻ जो विघ्न बाधासे डरकर काम छोड़ देता है, उसको सफलता नहीं मिलती। सफलता उसके बारेमें यह सोचने लगती है कि जब यह एक काम शुरू करके विघ्न-बाधाके डरसे उसको छोड़ देगा तब इसके द्वारा शुरू किये गये दूसरे कामका भी यही हाल होगा और फिर वह उसके समीप नहीं जाती। इसलिए उत्तम गुणवाले पुरुष जब किसी कामको प्रारम्भ कर देते हैं तब उसको बीचमें नहीं छोड़ते।

✻ हम भगवान को याद नहीं करते, ऐसी बात नहीं है। बहुत याद करते हैं, लेकिन कब याद करते हैं? जब संकट आता है। हम लोग सुखी रहते हैं तब भूल जाते हैं, भगवान की विस्मृति हो जाती है और दु:ख में याद करते हैं। **दु:ख में सुमिरन सब करें, सुख में करहिं न कोय। जो सुख में सुमिरन करें, तो दुख काहे को होय।।**

✻ धन के लिए गीध मत बनो, संसार में धन किसका हैं। भोग सम्बन्धी निर्णय यह है कि त्याग का भाव रखो। अर्थ सम्बन्धी निर्णय यह है कि उसे रोको मत, सद्कार्य में बहने दो, मोक्ष सम्बन्धी निर्णय यह है कि सब कुछ परमात्मा का है। धर्म सम्बन्धी निर्णय है धर्मानुष्ठान करते रहो।

✻ स्त्रियों के लिये साष्टांग प्रणाम करना ही निषेध है।

✻ सेवक यदि राजा की आज्ञा नहीं मानता तो वह राजा का वध है। पत्नी को अपनी शैयासे पृथक् कर देना उसका वध ही है। अपने से बड़ों की उनके मुख पर ही निन्दा करना, उन्हें तू कहकर पुकारना यह उनका अशस्त्र वध ही है।

✻ परम ध्येय चरमगति को प्राप्त होने के लिये जन्मों से प्रारम्भ हुई यात्रा में स्वजीवन के प्रतिकूल बाधक तत्वों में संघर्ष करना अनिवार्य हो जाता है। भक्त, ज्ञानी एवं संत व महापुरुषों को भी स्वजीवन के प्रतिकूल परिस्थिति से बिना संघर्ष किये उस परमानंद की प्राप्ति नहीं हो सकी है। प्राणी मात्र का भिन्न भिन्न जगत हुआ करता है क्योंकि भिन्न रुचिर्हिलोक: इस उक्ति के

अनुसार प्रत्येक प्राणी के विचार, भावना, कामना, रुचि, स्वभाव, स्वार्थ, परिस्थिति और वातावरण भिन्न भिन्न हुआ करते हैं। सारा संसार इस प्रकार मत-वैचित्र्य और विषमता से भरा हुआ है क्योंकि भिन्नता, अपूर्णता एवं अस्थिरता यह तो प्रकृति का ही स्वभाव है। प्रत्येक व्यक्ति का स्वजीवन न्यूनाधिक मात्रा में अवश्य ही सुख-दु:ख, आशा-निराशा और अनुकूलता प्रतिकूलता से भरा रहता है। कदाचित् ही कोई संसारी प्राणी ऐसा होगा जिसका स्वजीवन अपने मनोनुकूल एवं पूर्ण रूपेण संतुष्ट हो।

आत्मोन्नति की ओर अग्रसर होनेवाले प्रत्येक जीव को अपने स्वीकृत पथ को निष्कंटक बनाने के लिये संघर्ष अनिवार्य हो जाता है। इसके लिये आवश्यक क्षमता, दृढ़ता, धैर्य, आत्मविश्वास एवं भगवद्श्रद्धा आदि गुण जिनमें होते हैं वे ही स्त्री अथवा पुरुष संसार में विजयी होकर अपने मानव जन्म को सार्थक करते हैं और सदा के लिये विश्व में अपनी कीर्ति छोड़ जाते हैं।

संसार में किसी महान् उद्देश्य को लेकर आगे बढ़नेवाले प्रत्येक महत्वाकांक्षी पुरुष को पद पद पर प्रतिकूलता, बाधा आदि विरोधी तत्वों का सामना करना पड़ता है। इस दृष्टि से कभी कभी तो माता-पिता, मित्र-मित्र, पति-पत्नी, बंधु-बंधु, गुरु-शिष्य एवं राजा-प्रजा इत्यादि में से एक का दूसरे के प्रति विरोध करना भी कर्त्तव्य हो जाता है। इसके अतिरिक्त संसार में ऐसे व्यक्तियों की भी कोई कमी नहीं जो तेजोद्वेषी, विघ्नसंतोषी एवं अकारण बैरी हुआ करता है।

* संघर्ष के मूल में जिस पक्ष में न्याय, धर्म, लोकहतकारिणी भावना एवं महान् पवित्र उद्देश्य हो वही पुण्यमय सत्याग्रह इस न्यास से अन्त में सफल होकर ही रहता है। संघर्ष के २ प्रकार हैं- हिंसामय और अहिंसामय। जिसमें शारीरिक शक्ति, सत्ता, मनुष्य और शस्त्रबल से प्रतिगामी तत्वों से जूझना होता है वह हिंसामय और जिसमें बुद्धि, युक्ति, दृढ़ता, विवेक, आत्मबल, त्याग, संयम और शांति आदि सात्विक गुणों का अवलम्ब लेकर अन्याय पक्ष के सन्मुख अडिग रह कर जो सत्याग्रह किया जाता है वह अहिंसामय संघर्ष है। साधु-संत, त्यागी-वैरागी, यती-सती, योगी-मुनि, सिद्धमहात्मा, ज्ञानी-विवेकी, भक्त-तपस्वी एवं आत्मोन्नति के इच्छुक श्रद्धावान व मुमुक्षु साधकों के लिए तो प्रलोभक एवं बाधक तत्वों के प्रतिकार के लिये आवश्यकता पड़ने पर अहिंसामय सत्याग्रह का प्रयोग ही एक मात्र हितकर एवं प्रशस्त साधन है।

* मनुष्य की शक्ति, उसकी दौलत उसकी सेवा सभी व्यक्तियों के काम आने के लिये है।

* कोई भी वस्तु किसी विशेष दिन के लिए न रखें, क्योंकि आपका प्रत्येक दिन एक विशेष दिन है। ज्ञान की खोज करें, अधिक से अधिक अध्ययन करें, अपनी आवश्यकताओं पर से ध्यान हटाकर प्राकृतिक छटा को निहारें। अपने परिवार के साथ अधिक से अधिक समय व्यतीत करें। अपना मनचाहा आहार करें और अपने मनप्रसन्न की जगह पर घूमने जाये। जिंदगी सिर्फ जीवन ही नहीं खुशी के क्षणों की श्रृंखला है। आपका हर दिन, हर घंटा और हर पल अत्यंत महत्वपूर्ण है। सूर्योदय से पहले बिस्तर छोड़ देना चाहिए। प्रात: उठकर ईश्वर का स्मरण करें। अच्छे तथा शुभ संकल्प के साथ दिनचर्या आरम्भ करें। सदा प्रसन्नचित्त रहे, चिंता तथा तनाव से मुक्त रहें। मन में हमेशा सभी के लिए शुभ विचार रखें क्योंकि ईर्ष्या, द्वेष, लोभ, क्रोध आदि का स्वास्थ्य पर विपरीत तथा अशुभ प्रभाव पड़ता है। हर परिस्थिति में शात, संतुलित तथा सहज बने रहें। कोई भी कार्य जल्दबाजी तथा हड़बड़ी न करें, इनसे स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है।

* हमारी आमदनी तो अधिक है पर नैतिकता कम होती जा रही है। हमें स्वतंत्रता अधिक है पर खुशियां कम हो रही है। भोजन तो अधिक है पोषण हमारा कम हो रहा है। आज घर में पति-पत्नी की दो तनख्वाहें तो आती हैं परंतु आपसमें सामंजस्य कम हो रहा है। आज मकान तो अच्छे बन रहे हैं परंतु घर टूट रहे है।

* प्यार और सहकार से भरापूरा परिवार ही धरती का स्वर्ग होता है।

* जो जैसा सोचता है और करता है, वह वैसा ही बन जाता है।

* परमेश्वर का प्यार केवल सदाचारी और कर्त्तव्य परायणों के लिए सुरक्षित है।
* कुकर्मी से बढ़कर अभागा कोई नहीं, क्योंकि विपत्ति में उसका कोई साथी नहीं रहता।
* अपने को मनुष्य बनाने का प्रयत्न करो, यदि इसमें सफल हो गये, तो हर काम में सफलता मिलेगी।
* जीवन का अर्थ है समय जो जीवन से प्यार करते हों, वे आलस्य में समय न गँवायें।
* पाप अपने साथ रोग, शोक, पतन और संकट भी लेकर आता है।
* अपनी प्रशंसा आप न करें, यह कार्य आपके सत्कर्म स्वयं करा लेंगे।
* ईमानदार होने का अर्थ है, हजार मनकों में अलग चमकनेवाला हीरा।
* मनुष्य का जन्म तो सहज होता है, पर मनुष्यता उसे कठिन प्रयत्न से प्राप्त करनी पड़ती है।
* गृहस्थ एक तपोवन है, जिसमें संयम, सेवा और सहिष्णुता की साधना करनी पड़ती है।
* जो बच्चों को सिखाते हैं, उन पर बड़े खुद अमल करें, तो यह संसार स्वर्ग बन जाए।
* मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं, वह उनका निर्माता, नियंत्रणकर्ता और स्वामी है।
* बड़प्पन अमीरी में नहीं, ईमानदारी और सज्जनता में सन्निहित है।
* आलस्य से बढ़कर अधिक घातक और अधिक समीपवर्ती शत्रु कोई और नहीं।
* अपना मूल्य समझो और विश्वास करो कि तुम संसार के सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हो।
* सभ्यता का स्वरूप है- सादगी, अपने लिए कठोरता और दूसरों के लिए उदारता।
* ईर्ष्या आदमी को उसी तरह खा जाती है, जैसे कपड़ों को कीड़ा।
* सबसे बड़ा दीन-दुर्बल वह है, जिसका अपने ऊपर नियन्त्रण नहीं।
* दूसरों के साथ वह व्यवहार न करो, जो तुम्हें अपने लिए पसन्द नहीं।
* प्रसन्न रहने के दो उपाय-आवश्यकताएँ कम करें और परिस्थितियों से तालमेल बिठायें।
* कार्य की अधिकता से नहीं, व्यक्ति उसे भार समझकर अनियमित रूप से करने पर थकता है।
* कायर मृत्यु से पूर्व अनेकों बार मरता है, जबकि बहादुर को मरने के दिन ही मरना पड़ता है।
* आय से अधिक खर्च करनेवाले तिरस्कार सहते और कष्ट भोगते हैं।
* उन्हें मत सराहो, जिन्होने अनीतिपूर्वक सफलता पाई और सम्पत्ति कमाई।
* असफलता केवल यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयत्न पूरे मन से नहीं हुआ।
* अनजान होना उतनी लज्जा की बात नहीं, जितनी सीखने के लिए तैयार न होना।
* सज्जन अमीरी में गरीब जैसे नम्र और गरीबी में अमीर जैसे उदार रहते हैं।
* सार्थक और प्रभावी उपदेश वह है, जो वाणी से नहीं, अपने आचरण से प्रस्तुत किया जाता है।
* पढ़ने योग्य लिखा जाय, इससे लाख गुना बेहतर यह है कि लिखने योग्य किया जाय।
* वर्तमान के इस निराशावादी युग में अधिकांश युवाओं की मानसिक स्थिति चिंतनीय होती जा रही है। सभी स्वयं को खोज पाने में असमर्थ हैं। अपने आसपास के व्यक्तियों के व्यक्तित्व को समझने की उधेड़बुन में लगे हुए हैं। आजकल उदासीन रहना अब उन युवकों के लिए फैशन सा बनता जा रहा है। आजकल के युवक किसी भी व्यक्ति की परेशानी को सुनकर उस व्यक्ति की परेशानी उसे खुश करके कम करने की कोशिश नहीं करते जबकि स्वयं भी उसकी परेशानी से

परेशान हो जाने की मानसिक स्थिति बनाये जा रहे हैं। आधुनिक फैशन से बनता युवकों का ये बेबुनियादी व्यक्तित्व युवाओं को अंधकारमय पथ की ओर ढकेलता जा रहा हे। किसी अन्य की परेशानी को सुनकर परेशान होना उस व्यक्ति की परेशानी का हल नहीं है जबकि उसकी परेशानी का हल निकालकर उसमें जोश और स्फूर्ति भरनी चाहिए। यदि आप उस व्यक्ति की परेशानी का हल नहीं निकाल पाते हैं या किसी कारणवश असमर्थ हैं तो आपका दायित्व उसकी परेशानी को सुनकर उसे हल्का कर देना ही काफी है न कि उसकी परेशानी में खुद परेशान हो जाना। बेहतर है कि आप दूसरों के व्यक्तित्व को समझने से पहले खुद के व्यक्तित्व को पहचानें। जो चाहिए देखना न देखा हमने, हर शै पे किया है गौर क्या हमने, औरों को समझना तो बहुत मुश्किल है, खुद क्या हैं इसी को कुछ ना समझा हमने।

❊ बढ़ती उम्र के साथ मनुष्य की समझ भी बढ़ती है। लेकिन इस समझ से क्या हमारे जीवन में कोई फर्क पड़ता है? हो सकता है, हम अपने व्यवहार, अपने कामकाज को लेकर थोड़ा सचेत हो जाएं। लेकिन बुनियादी रूप से कुछ नहीं बदलता। हम वही सब कुछ करते रह जाते हैं, जो पहले से कर रहे होते हैं। पहले हम नासमझ होकर वो काम कर रहे होते थे, अब समझकर कर रहे होते हैं। जैसे दोस्ती। किशोरावस्था में इस बात का जरा भी अहसास नहीं होता कि कोई आदमी हमारे साथ छल भी कर सकता है। इसलिए हम हर किसी से जुड़ना चाहते हैं। लेकिन अधेड़ावस्था में यह समझ विकसित हो जाती है कि किसी पर भरोस नहीं करना चाहिए। लेकिन यह समझकर भी आदमी दूसरे से जुड़ने की कोशिश करता है क्योंकि यह मनुष्य का मूलभूत स्वभाव है। अगर पूरी तरह अपने को ज्ञान के हवाले कर दिया जाए तो जीना मुश्किल हो जाएगा। इसलिए इंसान समझकर भी नहीं समझना चाहता है।

❊ कोई वस्तु किसी ने सुखकर मान ली है, किसी ने दु:खकर। ज्ञानी के लिये दोनों समान हैं, उसके लिये सुख दुख दोनों बराबर हैं। अभिमान से हमने सुख-दु:ख की कल्पना कर ली है।

❊ अपने से कोई जान में अनजान में अपराध बन जाय तो तत्क्षण् बड़ों के समीप जाकर ज्यों-का-त्यों उसे निवेदन कर देना चाहिये। पढ़ लेना पृथक् बात है और अनुभूति दूसरी वस्तु है। वृद्धपुरुष सभी विषयों का अनुभव रखते हैं। किस समय कैसा कार्य करने से कैसा परिणाम होगा, इसका अनुभव वृद्धों को होता है। इसलिये कहा गया है कि वह सभा, सभा ही नहीं है, जिसमें वृद्ध न हों। केवल बाल पक जाने मात्र से ही कोई वृद्ध नहीं होता। अवस्था के परिपक्व होने के साथ ही जिनकी बुद्धि भी परिपक्व हो गई हो। ऐसे पुरुष जो उपाय बतायेंगे उससे सदा कल्याण ही होगा। अत: सभी को विशेषकर युवकों को वृद्धसेवी होना चाहिये।

❊ एक बड़ा हुआ सद्गुण सभी छोटे दुर्गुणों को दबा लेता है। गुरुभक्ति, गुरु सुश्रूषा सब दुर्गुण दब जाते हैं।

❊ हमने इमारतें तो ऊंची बना ली हैं परंतु दिल छोटा कर लिया है। रास्ते तो चौड़े कर लिए हैं परंतु देखने का नजरिया तंग हो गया है। हमारे पास बड़ा मकान तो है परंतु उसमें रहनेवाला परिवार छोटा है। हमारे पास समय की कमी है इसीलिए समझौते ज्यादा हैं। हमारी आदमनी तो अधिक है पर नैतिकता कम। हमें स्वतंत्रता तो अधिक है पर खुशियां कम। भोजन तो अधिक है पर पोषण कम। आज घर में दो तनख्वाहें तो आती हैं परंतु सामंजस्य कम हुआ है। आज मकान तो अच्छे बनते हैं परंतु घर टूट रहे हैं।

❊ दूसरों के हक के बारे में सोचनेवाले और दूसरों के हक की लड़ाई लड़ने वाले लोग ही दुनिया में नाम कमाते हैं।

❊ तितिक्षु पुरुष क्या नहीं सह सकते। उदार पुरुष क्या नहीं दे सकते। दुष्ट पुरुष क्या बुरा नहीं कर सकते। जो व्यक्ति समर्थ होकर भी इस नश्वर शरीर से अनश्वर यश का संग्रह नहीं करता, वह शोक करने योग्य है, निन्दनीय है। हरिश्चन्द्र,

रन्तिदेव आदि नरेशों ने दान के प्रभाव से ही, विपुल यश और दिव्य गति की प्राप्त की थी। शरीर-दान की महिमा के कारण ही व्याध और कपोत इस संसार में सादर स्मरण किये जाते हैं।

* कभी-कभी गुरुजनों के संकोच से हमें अप्रिय कार्य भी विवश होकर करना पड़ता है। बड़े लोगों के समीप छोटों को ही जाना चाहिये जब इसके विपरीत बड़े लोग छोटों के यहाँ स्वयं जायँ तो समझ लेना चाहिये कुछ दाल में काला है; ये हमसे कोई ऐसा कार्य कराना चाहते हैं, जिसे हम स्वेच्छा से करना न चाहते हों। जाकर यदि वे अपना अधिकार जताकर हमसे आग्रह करते हैं, तब तो मना करने को स्थान ही नहीं रह जाता। तब तो हमें हाथ जोड़कर उनके सम्मुख सिर झुकाना ही पड़ता है। आपकी जैसी आज्ञा इसके अतिरिक्त और कुछ कहा ही नहीं जा सकता।

* संसार में सब पर सब वस्तुएँ नहीं होती। हमारे अनुकूल जो वस्तुएं हैं, वे दूसरे पर हैं, जो हमारे अनुकूल नहीं हैं, वह हम पर हैं। इसलिये संसार में आदान-प्रदान की प्रथा है। इस आदान-प्रदान को ही व्यवहार या व्यापार कहते हैं। आत्मानन्द में प्रवेश करने के अतिरिक्त जितने भी कार्य हैं सभी में कुछ-न-कुछ वणिक वृत्त है, सभी व्यापार है।

* सबल पाप निर्बल उपायों से नष्ट नहीं होता।

* विधिहीन यज्ञ का कर्त्ता शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

* कोई भी मनुष्य आनेवाली विपत्ति को पुरुषार्थ से टालने में समर्थ नहीं। दैव की गति दुर्निवार है।

* सरलता-से बिना आशा निराशा की प्रतीक्षा की जो वस्तु प्राप्त हो जाती है उसकी प्राप्ति में उतना सुख नहीं प्राप्त होता जो वस्तु जितनी ही प्रतीक्षा के पश्चात् प्राप्त होती है, उतनी ही आनन्द वर्धक मानी जाती है।

* प्राणों के मोह से कायरों की भाँति रण छोड़कर भागना उचित नहीं।

* सोये हुओं पर, प्रमत्तों पर, उन्मत्तों पर, स्त्रियों पर, युद्ध से अनभिज्ञों पर, भागते हुओं पर, शरण में आये हुओं पर और वाहन शस्त्र से रहित सैनिकों पर प्रहार करना पाप बताया गया है।

* प्रिय की स्मृति में कितना सुख है, इसे प्रेमी के अतिरिक्त कोई दूसरा जान नहीं सकता। अपने प्रिय का जहाँ स्मरण हुआ, तहाँ चित्त तन्मय हो जाता है। यह दृश्य प्रपंच भूल जाता है। प्यारे का नाम सुनने से, उसके सम्बन्ध की चर्चा चलने से, उसके समीपवर्ती वस्तु के दर्शन से, उसके अनुरूप अन्य किसी वस्तु के साम्य से प्यारे की छबि नैनों में छा जाती है। फिर मन अपने आपे में रहता नहीं। बाह्य सभी व्यापार विस्मृत हो जाते हैं, संसारी सभी कार्य छूट जाते हैं। अपने पराये का भेद मिट जाता है। बस वे ही वे दिखाई देते हैं।

* जो धन सम्पत्ति हमें विषयों की ओर ले जाकर प्रभु से हटाती है, उसमें एक नहीं अनेक दोष हैं। कहना चाहिये दोष ही दोष उसमें भरे हैं। धन सम्पत्ति से सदा चित्त में उद्वेग बना रहता है। धनी सदा उद्विग्न रहते हैं। उन्हें मानसिक शान्ति नहीं रहती। मानसिक पीड़ा और उद्वेग का कारण ये सांसारिक सम्पत्तियाँ ही हैं। भोगों की प्राप्ति में एक सबसे बड़ा दोष यह है, कि भोग सामग्रियों की प्रचुरता में अभिमान बहुत बढ़ जाता है। ज्ञान ढक जाता है, अज्ञान आकर अन्त:करण में अड्डा जमा लेता है। धन के मद में उन्मत्त हुआ ऐश्वर्यशाली पुरुष समझता है मैं सब कुछ कर सकता हूँ, मैं ईश्वर हूँ, मैं भोगी हूँ, मैं धनी हूँ। मेरे समान कौन है, मैंने अमुक शत्रु को मारा, उसे ललकारा, इसे पछारा, इतने बड़े-बड़े यज्ञ किये, इतने भारी-भारी दान दिये। मैं इतनों का पालन करता हूँ, इतने व्यक्ति मेरे आश्रय में रहकर आजीविका प्राप्त कर रहे हैं। इस प्रकार वह अनेक मिथ्याभिमान करके भगवान से दूर हटता जाता है। जितने भी बुरे व्यसन होते हैं, इस धन के ही कारण होते हैं। धनी लोग ही धन के मद में भरकर बड़े-बड़े पाप करते हैं। जुआ खेलते हैं, व्यभिचार करते हैं, सुरापन के व्यसनी बन जाते हैं,

मादक वस्तुओं का सेवन करने लगते हैं। धन के लिये नित्य मानसिक श्रम करते रहते हैं, उसी की रात्रि दिन चिन्ता करते रहते हैं। विषय भोगों की वस्तुएँ आज हैं कल नहीं हैं। इनमें सुख नहीं, शान्ति नहीं। इस शरीर का ढाँचा ऐसा बना है कि जिस स्थिति में रहता है वैसे ही रहने का इसे अभ्यास हो जाता है।

❊ संसार में जितने सुख हैं वे सब प्रियतम के प्रेम के ऊपर उनकी कृपा कटाक्ष के ऊपर वारे जा सकते हैं, हमें प्यारे का प्रेम प्राप्त हो इसके अतिरिक्त हमें और कुछ न चाहिए। शरीर के सुख दुख भाग्य के अनुसार आते हैं, जाते हैं वे अनित्य हैं, विस्मरणशील हैं। स्मरणीय तो स्नेही का अनुपम स्नेह है। इष्टि की कृपा भरी दृष्टि हमारे ऊपर पड़ जाय, तो यह जीवन सफल हो जाय, सभी शुष्कता धुलकर स्निग्धता का जीवन में संचार हो जाय।

❊ यदि पुरुषार्थ से ही कुछ किया जा सकता, तो संसार में कोई रोगी न होता, किसी का अपयश न होता, कोई मरता नहीं। स्वेच्छा से रोगों को, अपयश को, मृत्यु को, कौन चाहता है? किन्तु बिना चाहे भी प्राणियों को नाना रोग होते हैं। न चाहने पर भी ज्वर आ जाता है, सिर में पीड़ा होने लगती है। कोई भी अपना अपयश नहीं चाहता, सभी चाहते हैं, सर्वत्र हमारी प्रशंसा हो, सभी हमारा सत्कार करें, सबसे हम श्रेष्ठ समझे जायँ, किन्तु यश कितनों को मिलता है? बड़े-बड़े लोगों की अपकीर्ति फैल जाती है। जब काल विपरीत होता है तब रोग, शोक, जरा, मृत्यु, अपयश आदि इच्छा के प्रतिकूल वस्तुएँ प्राप्त होती हैं, जब वही काल अनुकूल होता है, तो इच्छानुसार यश, ऐश्वर्य, भोग, विभव, आयु, लक्ष्मी और कीर्ति की प्राप्ति होती है। इसलिये बुद्धिमान पुरुष को प्रतिकूल वस्तुओं की प्राप्ति में न तो विषाद करना चाहिये न अनुकूल पदार्थों की प्राप्ति में फूलकर कुप्पा ही हो जाना चाहिये। सुख-दु:ख, यश अपयश, जय-पराजय, जीवन मरण आदि में सर्वदा समान भाव से रहना चाहिये।

❊ युद्ध तो एक प्रकार का जुआ है, इसमें कभी किसी का दाव लग जाता है, कभी किसी का। कभी कोई हार जाता, कभी कोई जीत जाता है।

❊ सुख-दु:ख, जय-पराजय, अनुकूल प्रतिकूल ये सब तो समयानुसार आते-जाते रहते हैं। बुद्धिमान इन बातों से मोहित नहीं होते। आप जैसे अज्ञानी ही दु:ख में दुखी होते हैं और सुख में मारे अभिमान के आपे से बाहर हो जाते हैं। ज्ञानी अज्ञानी दोनों को ही कर्म में प्रवृत्त होते देखा गया है, किन्तु उनकी भावना में बहुत अन्तर हैं, भावना के अनुसार ही फल भी होता है, अत: ज्ञानी अज्ञानी के एक समान दीखने वाले कर्मों में फल में बड़ा अन्तर हो जाता है। अज्ञानी पुरुष तो आसक्ति के सहित फल की इच्छा से कर्म में प्रवृत्त होता है, किन्तु ज्ञानी योगी आसक्ति को छोड़कर आत्म शुद्धि के निमित्त कर्म करना ही चाहिए इस बुद्धि से- कर्मों को करते हैं।

❊ प्रारब्ध कर्मों का भोग तो सभी को भोगना ही पड़ता है। अन्तर इतना ही है कि बुद्धिमान पुरुष विवेक के साथ सुख-दु:ख में समवृत्ति रखकर, अवश्यम्भावी समझकर उसे निर्लेप भाव से भोगते हैं और अज्ञानी पुरुष कष्ट से रोते हुए दुखपूर्वक भोगते हैं। भोगना तो सभी को पड़ता है।

❊ गृहस्थी की शोभा बाल-बच्चों से ही है। वे बड़े भाग्यशाली-गृहस्थ हैं, जिनके घर में छोटे-छोटे फूल से हँसते हुए बाल-गोपाल इधर-से-उधर किलकारियाँ मारते हुए घूमते हैं। जैसे कमल के बिना सरोवर की शोभा नहीं, जैसे पति के बिना स्त्री की शोभा नहीं, जैसे सिन्दूर के बिना सुहागिन की शोभा नहीं, जैसे छत्र-चँवर के बिना राजा की शोभा नहीं, जैसे विद्या बिना ब्राह्मण की शोभा नहीं, जैसे चन्द्रमा के बिना रात्रि की शोभा नहीं, जैसे दीपक के बिना अँधेरे-घर की शोभा नहीं- इसी प्रकार बिना बालक के गृहस्थी की शोभा नहीं होती। जिनके धन-सम्पत्ति अटूट है और घर में उसे आगे

भोगनेवाला कोई पुत्र नहीं तो उन्हें या तो भगवान को अपना पुत्र मानकर रात्रि-दिन उसी के लाड़चाव में लगे रहना चाहिये या धन को धर्म के काम में व्यय करके वन में चले जाना चाहिये जो दो में से एक भी नहीं करता- धन को संग्रह करके, जोड़कर रखता जाता है- न स्वयं खाता है न दूसरों को खाने को देता है, तो वह जीते जी नरक भोगता है तथा मरकर भी प्रेत बनकर उसी धन पर मँडराता है और अन्त में नरकों की अग्नि में पचता है। पुत्र बिना गति नहीं, शान्ति नहीं, सुख नहीं।

* काल क्रम से जीव कभी इकट्ठे हो जाते हैं, समय आने पर वे बिछुड़ भी जाते हैं- अलग-अलग हो जाते हैं। बिना संस्कार के संयोग वियोग होता नहीं। जिनसे अपना संस्कारवश सम्बन्ध हो गया है उनके मिलरे पर हर्ष और बिछुड़ने पर शोक होता ही है।

* जो वस्तु एक के लिये सुखकर है वही दूसरों के लिये दुख देनेवाली होती है। चन्द्रमा की चाँदनी सब लोगों को सुखकर है, किन्तु चोरों को और विरहियों को वह दु:ख देनेवाली हो जाती है।

* जैसी भवितव्यता होने की होती है वैसी होकर रहती है। लाख प्रयत्न करो भवितव्यता अन्यथा नहीं होती। जैसा होने को होता है, वैसा ही बानिक बन जाता है, वैसे ही सब साज सामान जुट जाते हैं। सभी कार्य किसी कारण से ही होते हैं। सभी जीव प्रारब्ध के वशीभूत होकर कार्य करते हैं। सभी का संयोग निश्चित है। अत: किसी घटना को देखकर न तो सोच करना चाहिये। न विस्मय में पड़ना चाहिये।

* दासता से बढ़कर कोई पाप नहीं। आश्रितों को सदा अपने आश्रयदाता का रुख देखकर बातें करनी पड़ती हैं। उसे प्रसन्न करने के लिये भाँति-भाँति की चेष्टायें करनी पड़ती हैं।

* प्रेम और द्वेष तो घर से ही आदमी सीखता है। जो पिता का, कुल का, परिवार का, हितैषी नहीं, पक्षपाती नहीं, वह देश का, धर्म का पक्षपाती क्या होगा।

* सहज में जो वस्तु प्राप्त हो जाती है, उसका लोग आदर नहीं करते। जो वस्तु कुछ परिश्रम से प्राप्त होती है, उसका महत्त्व अधिक होता है।

* हँसने का परिणाम रोना है- सुख का पर्यवसान दुख में है। उत्थान का अन्त पतन में है।

* यह सम्पूर्ण संसार गुण दोषमय है। जिनमें अधिक गुण होते हैं, उन्हें हम लोग गुणवान कहते हैं और जिनमें अवगुण अधिक होते हैं उन्हें निर्गुण कहते हैं। वास्तव में तो जैसे कोई भी ऐसा अक्षर नहीं जो मन्त्र न हो, कोई भी ऐसी वस्तु नहीं जो किसी की औषधि न हो। इसी प्रकार कोई भी ऐसा पुरुष नहीं जिसमें कुछ-न-कुछ गुण न हों यह दूसरी बात है कि अवगुणों के कारण किसी के गुण प्रकट न होते हों या अधिक गुणों के कारण या स्नेह के कारण किसी में दोष दिखाई ही न देते हों, नहीं तो गुण दोष से रहित कोई भी नहीं है। केवल एकमात्र श्रीहरि ही सम्पूर्ण सद्गुणों के आश्रय हैं। ब्रह्म ही निर्दोष है। उन निर्दोष ब्रह्म को ही उनकी नित्य शक्ति लक्ष्मी भज सकती है। श्रीहरि के अतिरिक्त उनका और कोई पति हो ही नहीं सकता। ऐसी लक्ष्मीजी को जो मोहवश अपना बनाना चाहते हैं, उन पर सर्वथा अधिकार चाहते हैं, उन्हें अन्त में निराश होना पड़ता है। अत: शक्तिमान के सहित उन्हीं की शक्ति का मातृभाव से चिन्तन करना चाहिये। इसी में सुख है, यही कल्याण का प्रशस्त पथ है।

* अधर्म से- पाशविक बल से जो सम्पत्ति प्राप्त होती है, उसे प्राप्त करते समय ही क्षणिक सुख होता है, परिणाम उसका दुखद ही होता है। यदि अधर्म से उत्पन्न धन से किसी की समृद्धि होती, तो सभी चोर श्रीमान हो जाते। बहुत-से राज-कर्मचारी जो अभियोग होने पर नित्य ही प्रजा से बहुत-सा धन अनुचित रूप से ले लेते हैं, यदि वह सुकृत में लगता तो, वे सब-के-सब धनी हो जाते। किन्तु प्राय: देखा गया है, इस प्रकार अधर्म तथा अन्याय से धन लेनेवालों का पेट भी नहीं भरता। उनका वंश

नहीं चलता। जिस प्रकार से धन आता है, उसी प्रकार से चला जाता है। जैसा धन आता है वैसे ही काम में व्यय होता है। दूसरों के साथ विश्वासघात करके बलपूर्वक जो धन छीन लेते हैं वे प्राय: उसका उपभोग नहीं कर सकते।

* स्नेह में सन्देह को स्थान नहीं।

* सच्ची दया का भाव कभी बदल नहीं सकता, भले ही सामनेवाला आपसे दुर्व्यवहार कर रहा हो।

* सभी सपने सच में तब्दील नहीं हो सकते। लेकिन वे हमारे शानदार भविष्य की नींव रख सकते हैं।

* भावी होकर रहती है, कोई कितना भी प्रयत्न क्यों न करे प्रारब्ध को मेंटने की सामर्थ्य किसी में नहीं है। जिसका जिसके साथ संयोग होना होता है, उसके साथ उसका अवश्य संयोग होता है।

* बुद्धिमान पुरुष को चाहिये कि जहाँ सर्वस्व जाता है वहाँ आधे पर ही सन्तोष कर लेना चाहिये।

* धनमद, यौवनमद, रूपमद तथा अधिकार आदि के मद पुरुष के विवेक को नष्ट करके उसकी बुद्धि को भ्रष्ट कर देते हैं। अधिकार ऐश्वर्य पाकर काममद अत्यधिक बढ़ जाता है। जिससे मनुष्य अपने कर्त्तव्य के विवेक को खो बैठता है। कामी पुरुष न करने योग्य काम को कर डालता है उसकी अपकीर्ति को वह स्वयं तो भोगता ही है, अपनी वंश परम्परा के लिये भी उसे छोड़ जाता है। बड़े हों चाहे छोटे बुरे कामों की बुराई तो सबकी होती है। बड़ों के मुख पर संकोच वश न भी कहें पीठ पीछे कहेंगे। समर्थ के दोष को समाज चाहे क्षमा भले ही कर दे, किन्तु दोष तो दोष ही रहेगा उसे गुण तो कोई कह ही नहीं सकता। वंश परम्परा के कुछ-न-कुछ गुण तो आगामी पीढ़ियों को प्राप्त होते ही हैं।

* मनुष्य का ऊपर से नीचे को पतन काम और क्रोध के ही कारण होता है।

* मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही हो जाता है। यदि वह धर्म को छोड़कर कामिनी का कामवश सेवन करता है तो वह तद् रूप बन जाता है उसी के गुणों वाला हो जाता है, यदि वह धर्म की रक्षा करते हुए अर्थ और काम का सेवन करता है तो धर्म उसकी रक्षा करता है। जब मनुष्य काम के वश हो जाता है तो अपनी पद प्रतिष्ठा सभी को खो बैठता है। शील, संकोच, लज्जा तथा विनय आदि सद्गुण मनुष्यों में तभी तक रहते हैं, जब तक वे किसी के नयन-धनुष से छोड़े कटाक्ष-बाण द्वारा घायल न हुए हों। कामाधीन होकर पुरुष गुरुजनों की आज्ञा का उल्लंघन करके कुल परम्परा के विरुद्ध भी कार्य कर बैठता है, इससे वह स्थान भ्रष्ट होकर च्युत हो जाता है। कामियों के वचनों का क्या विश्वास। काम के वेग में आकर वे शपथपूर्वक जो चाहें प्रतिज्ञा कर लें, किन्तु काम मद शिथिल होते ही वे सब कुछ भूल जाते हैं, अपने वचनों पर स्थिर नहीं रह सकते।

* सब अनर्थ की मूल यह युवावस्था है। यौवन के उठान में न जाने मनुष्य क्या-क्या अनर्थ कर डालता है। उस समय युवक और युवतियों को विवेक नहीं रहता। काम का प्राबल्य होने से वे मनमाना आचरण करने के लिये बाध्य हो जाते हैं। इसलिये इस अवस्था को गुरुजनों के अधीन रहकर बड़ी सावधानी के बितानी चाहिये। माता-पिता अनुभवी होते है। वे युवावस्था को भोग चुके हैं, तज्जन्य अनर्थों से वे पूर्णतया परिचित है। अपने पुत्र-पुत्रियों के प्रति उनका ममत्व होता है वे सदा उसकी मंगल कामना करते हैं, अत: युवक और युवतियों का कल्याण इस में है कि वे अपने माता, पिता, ज्येष्ठ भ्राता तथा अन्यान्य गुरुजनों का सम्मान करें, उसकी आज्ञा का पालन करें, उनकी इच्छा के विरुद्ध कोई कार्य न करें, ऐसा करने से वे अनेकों अनर्थों से बच जायँगे और अपनी पद-प्रतिष्ठा तथा कुल परम्परागत सदाचार की भी भली-भाँति रक्षा कर सकेंगे।

* जिसका मन जिससे मिल जाता है, जिसका मोह जिससे हो जाता है, वह असमान होने पर भी समान हो जाया करता है। इच्छा और आवश्यकत ही एकता स्थापित कर देती हैं। मन की अभिलाषा प्रतिकूलता में भी अनुकूलता का बीजारोपण कर देती है।

❋ यह पृथ्वी तो वीरभोग्या है। यदि क्षत्रिय है और उसमें बल पुरुषार्थ नहीं, तो वह राज्य का अधिकारी नहीं। जो स्वयं अपनी रक्षा करने में समर्थ नहीं, वह प्रजा की भला क्या रक्षा करेगा। इसके विपरीत जिसकी बाहुओं में बल है, प्रजा पालन करने की शक्ति है, वह चाहे जो हो वही अपने पुरुषार्थ से राजा बन सकता है।

❋ समाज में शिष्टाचार से रहना पड़ता है, सभ्यता से व्यवहार करना पड़ता है। समाज की दृष्टि से बर्ताव करना पड़ता है किन्तु एकान्त में अपने समवयस्क और सगी-साथियों के साथ मनुष्य स्वच्छन्द हो जाता है।

❋ वीरता के पुरस्कार में जो वस्तु प्राप्त होती है, उसका महत्व अत्यधिक होता है। वस्तुओं में न कुछ छोटापन है न बड़ापन। जिसके पीछे जितना ही अधिक परिश्रम वीरता का इतिहास है, वह वस्तु उतनी ही अधिक महत्वशालिनी है। वस्तु तो सभी पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश इन पाँचों भूतों की ही बनी हैं। किसी में किसी भूत की अधिकता है, किसी में किसी की। किन्तु जो वस्तु श्रम से प्राप्त है, दुर्लभ है, सब जिसे प्राप्त नहीं कर सकते उसका मूल्य अधिक है।

❋ विशुद्ध मन में किसी के दोष दिखाई देते ही नहीं वह तो सब में तीनों गुणों को वर्तने देखता है। हृदय में पाप होगा तभी दूसरा पापी दिखाई देगा। हृदयहीन हिंसक ही छिपकर दूसरे की हिंसा करेगा। शूरवीर तो शत्रु को सावधान करके समर में ललकारता है। असावधान पुरुष पर जो प्रहार करता है, वह पापी है, पाषाण हृदय है। पापी पर द्वेषी पर तो उसका प्रहार भले ही सफल हो जाय किन्तु निरपराध भगवद्भक्त पर उसका प्रहार कभी सफल न होगा। करनेवाले का स्वयं नाश हो जायगा। जो समस्त भूतों में आत्मबुद्धि रखकर बर्ताव करता है, सबको अपना सुहृद समझता है। ऐसे सम बुद्धि पुरुष का जो अनिष्ट सोचता है, उसका स्वयं ही अनिष्ट हो जाता है। अत: श्रेयार्थी पुरुष को कभी किसी का मन से भी अनिष्ट न सोचना चाहिये।

❋ जब अपने में बल है सर्वत्र अधिकार का ही बोलबाला है, जिसके अधीन धन, सम्पत्ति तथा पृथ्वी है उसका छोटे-बड़े सभी आदर करते हैं। आप अपने बल पौरुष से पृथ्वी के पूर्ण शासक बन बैठिये। किसी के अधीन रहने से तो मृत्यु ही श्रेष्ठ है। परतन्त्रता, दासता, अधीनता सबसे बड़ा अभिशाप है। न्याय और धर्म की दुहाई तो निर्बल पुरुष ही दिया करते हैं। स्वयं तो उनमें शक्ति नहीं, बल नहीं। कोई उन पर अन्याय करता है तो स्वयं उसका प्रतिकार करने में समर्थ नहीं होते, तब चिल्लाते हैं- हमारे साथ अन्याय हो रहा है, यह अधर्म है, पाप है। ऐसे निर्बलों की कौन सुनता है। परमात्मा भी उसकी रक्षा नहीं करता जो अपनी रक्षा नहीं कर सकता।

❋ लोभ बड़ी बुरी वस्तु है। धन, सम्पत्ति तथा अधिकार आदि की तृष्णा मनुष्य के विवेक को खो देती है। स्वार्थ धर्म बुद्धि को नष्ट कर देता है।

❋ यह शरीर नश्वर है, उत्पन्न होता है, नष्ट हो जाता है, ८४ लाख योनियां बतलाई जाती हैं। नित्य प्रति सभी योनियों में कितने प्राणी जन्म लेते हैं, कितने मरते हैं। जो शरीर पैदा हुआ है उसका नाश अवश्यम्भावी है किन्तु शरीर न रहने पर भी जिनकी कीर्ति संसार में उनके पश्चात् भी गाई जाती है, जिनके पुण्यश्लोक चरित्र प्रेमपूर्वक पढ़े जाते हैं, वे ही सुकृति धन्य हैं। सुयश ही उनका शरीर है, उस शरीर से वे सदा अजर-अमर हो जाते हैं। जो धन धर्म में व्यय होता है वही धन यथार्थ धन है, वही यश को फैलाता है नहीं तो कितना भी सुवर्ण जोड़ो, कितना भी चाँदी एकत्रित करो, कितने भी भवन बनाओ ये सब यहीं-के-यहीं रह जाते हैं। मिट्टी, मिट्टी में मिल जाती है, उस कृपण को कोई मानता नहीं, जानता नहीं। जिनके चरित्रों को आज हम पढ़ते हैं, पढ़कर रोते हैं, हँसते हैं, उत्साहित होते हैं, उनमें से एक गुण भी हमारे जीवन में आ जाय तो हमारा पढ़ना सार्थक है नहीं तो केवल व्यसन मात्र ही है।

❋ यह जीवन एक प्रकार का सतत संग्राम है। इसमें कभी जय है कभी पराजय। घोड़े से वही गिरेगा जो घोड़े पर चढ़ेगा।

जो कभी घोड़े पर चढ़ता ही नही उसके गिरने का प्रश्न ही नहीं। जो पृथ्वी से ऊँचे पलंग या तखत पर सो रहा है उसी के गिरने की सम्भावना है, जो पृथ्वी पर ही सोता है, वह और नीचे कहाँ गिरेगा। जीवन में कभी-कभी ऐसे धर्म संकट के अवसर आते हैं कि जिन कामों को हम कदापि करना नहीं चाहते। प्रारब्ध वश वे हमें हठपूर्वक करने पड़ते हैं। कैसी यह विधि की विडम्बना है। जहाँ एक समान दो विरोधी धर्म आ जाते हैं और उनमें हम निर्णय नहीं कर सकते कौन-सा कार्य करने से हम धर्मच्युत न होंगे ऐसे अवसर को धर्म संकट कहते हैं धर्मसंकट में दो प्रतिकूल प्रतिज्ञाओं में बलाबल देखना पड़ता है, उसे ही स्वीकार करना पड़ता है। ऐसे ही अवसर पर धर्म की परीक्षा होती है।

* संयुक्त परिवार एक वट वृक्ष की तरह होता है। जिसकी छाँव में हर छोटे-बड़े रिश्ते फलते फुलते हैं, परंतु कभी-कभी इस बरगद की कुछ शाखाएँ इतनी अधिक बड़ी हो जाती हैं कि वो उस वृहद पेड़ से टूटकर अलग हो जाती है वे धूप में अलग-थलग पड़े होकर अपना अस्तित्व खोती जाती है। यही कुछ रिश्तों के साथ भी होता है रिश्तों का आनंद भी संयुक्त परिवार में ही है। जब यह परिवार बिखरता है तब दुखों की धूप में रिश्ते भी अपना दम तोड़ते जाते हैं। कुछ नासमझी व कुछ कही-सुनी बातें इस प्रकार के विवादों में कड़वाहट से लगाकर रही सही कसर भी पूरी कर देती है। रिश्तों का आनंद संयुक्त परिवार में ही है। कई बार रिश्तेदारों में विवादों की वजह मनमुटाव होता है और इस मनमुटाव का प्रमुख कारण कोई छींटाकशी या कहीं सुनी बात होती है। यह मनमुटाव तब अधिक बढ़ जाता है। जब हम बातचीत बंद कर सब कुछ भाग्य के भरोसे छोड़ देते हैं। बातचीत बंद करने से रिश्तों में प्यार भी खत्म हो जाता है और रह जाती है तो बस औपचारिकता, जो हमें बेमन से रिश्ते को निभाने पर मजबूर करती है।

* मनुष्य की रोजी रोटी दूर नहीं है क्योंकि आदमी तब तक नहीं मर सकता जब तक रोजी उसके मुकद्दर में लिखी हुई है और तब तक उसको न मिल जाये। ईमानदारी की रोजी कमाओ और हराम रोजी को छोड़ दे।

* नशेवाली चीजें शरीर को नुकसान पहुँचाती हैं और दिमाग पर बुरा असर करती है।

* शास्त्रानुसारी कर्म धर्म है और वासनानुसारी कर्म अधर्म है। वासना-वासित मन संसारका हेतु है और निर्वासन मन मुक्तिका।

* यह मानव जीवन एक पहेली है। निर्धन समझते हैं धनी सुखी हैं किन्तु धनियों के लिये धन अभिशाप बन जाता है, क्योंकि उनकी लालसा और अधिक बढ़ती जाती है। कुरूपा कन्यायें समझती हैं सुन्दर कन्यायें परम सुखी होंगी, किन्तु कभी-कभी सुन्दरता अभिशाप के रूप में दुखदाई हो जाती है। सुन्दरी को अपने अनुरूप पति न मिले तो दुख और जिसे वह चाहती हो, वह न चाहे तो दुख। इस प्रकार संसार में सुख नहीं। चिन्ता, ग्लानि, दुख इन्हीं से मानव प्राणी सदा घिरा रहता है। जीवन आशा के आधार पर टिक सकता है। निराशा में जीवन नहीं, गति नहीं, संचलन नहीं, क्रिया नहीं, वर्धन नहीं। मानव जीवन बड़ा अमूल्य है। इसे यों ही न खो देना चाहिये। मनुष्य यदि जीता रहेगा तो सैकड़ों कल्याणप्रद कार्यों को देखेगा। कभी-न-कभी तो उसका भाग्य बदलेगा।

* सरिता की गति में कितना उत्साह है, कितनी उमंग से कितनी प्रसन्नता के साथ यह दौड़ी जा रही है, उसके हृदय में कितनी अभिलाषायें हैं। इसे अपने पति समुद्र से मिलने की आशा है, उसी आशा से यह बिना ठहरे दौड़ी चली जा रही है। यह सरिता स्त्री है, नारी जाति की अभिलाषा को यह जानती है, नारी की पीड़ा को ये कठोर हृदय पुरुष क्या अनुभव कर सकते हैं। ये पुरुष कितने निष्ठुर होते हैं। नारी हृदय की पीड़ा को ये अनुभव नहीं कर सकते। जिनका जीवन उनकी कृपा के ही ऊपर अवलम्बित है उसकी ये कितनी निष्ठुरता से उपेक्षा कर सकते हैं। आत्मगौरव ही मनुष्य को सदय और निर्दय

बना देता है। स्त्री-पुरुष कोई भी निष्ठफर नहीं यह दैव ही निष्ठुर है। आत्म गौरव के लिये सब कुछ करना पड़ता है।

* भाग्य को मेंटने की शक्ति किसी में नहीं है। भाग्य के सम्मुख सबकी प्रतिज्ञायें व्यर्थ हो जाती हैं।

* परिस्थिति ही प्राणी को जैसा चाहती है वैसा बना देती है। नहीं तो पुरुष-स्त्री को चाहता है, स्त्री पुरुष को, दोनों के ही हृदय में प्यार है, अनुराग है। मिलन की उत्कट इच्छा है किन्तु भाग्य मिलने नहीं देता। समय से पहिले किसी का संयोग हो नहीं सकता।

* जब तक प्रतिज्ञा रहती है, तब तक तो मनुष्य प्रतिज्ञा के बन्धन में बंधकर धैर्य धारण किये रहता है। जब प्रतिज्ञा शिथिल हो जाती है, तो उसके धैर्य का बाँध टूट जाता है।

* भारतीय क्षत्रिय युवक और चाहे सब कुछ सहन कर ले किन्तु वह अबला का अपमान कभी सहन नहीं कर सकता। स्त्रियाँ सब काल में सर्वदा अवध्या मानी गई हैं। उनका जो कोई अपमान करता है, उन्हें त्रास देता है वह वध्य है, दण्डनीय है। प्राण देकर भी युवक उसके दु:ख को दूर करता है।

* आर्य शास्त्रों में कर्त्तव्य की बड़ी महिमा है, कर्त्तव्य के सम्मुख माता, पिता, स्वजन, बन्धु, बान्धव तथा सुहृद् कोई कुछ नहीं। जो हमें कर्त्तव्य से पराङ्गमुख करे वह सगा सम्बन्धी भी त्याज्य है। जो हमें कर्त्तव्य सिखावे वह शत्रु भी माननीय है। शुक्राचार्य बलि को कर्त्तव्य से डिगाना चाहते थे, उससे झूठ बुलवाना चाहते थे, गुरु होने पर भी बलि ने उन्हें त्याग दिया उन्हें त्यागकर शाप और सन्ताप सभी सहर्ष सहन किया। कैकेयी भरत की जननी थी, किन्तु वह अधर्म का पाठ पढ़ा रही थी, भरत को लोभ देकर फुसला रही थी। महामना भरत ने उनका त्याग कर दिया। कैकेयी अपने पति से अनुचित कार्य कराना चाहती थी। बड़े बेटे के रहते छोटे को सिंहासन पर बिठाना चाहती थी, राजा को धर्मपाश में बाँध लिया था, राजा ने सत्य का त्याग नहीं किया। स्त्रभ को त्याग दिया और प्राणों का भी परित्याग किया। प्रह्लाद का पिता अपने पुत्र को प्रभु से पराङ्गमुख कर रहा था, उसे भगवत भजन से रोक रहा था। जीव के प्रधान कर्त्तव्य को करने से मना कर रहा था। प्रह्लादजी ने उसकी बात नहीं मानी। माता को मारना, भाइयों को मारना पाप है, किन्तु पिता की आज्ञा श्रेष्ठ समझकर परशुराम ने यह भी किया। जिसने जिसे अपना प्रधान कर्त्तव्य समझ रखा है, उसके सम्मुख वह अन्य गौण कर्त्तव्यों को छोड़ देता है। कर्त्तव्य पर सब कुछ निछावर कर देता है।

* जो पुत्र समर्थ हो गया है उसका स्वयं भी कुछ कर्त्तव्य होता है। समर्थ होकर भी जो पिता की कमाई हुई सम्पत्ति पर ही निर्भर रहता है स्वयं कुछ कमाता नहीं, वह सम्पत्तिशाली श्रेष्ठ पुत्र नहीं। जो पिता के बल से संकट से मुक्ति पाता है, वह बलवान नहीं। जो पिता के नाम से ख्याति पाता है, वह प्रख्यात पुरुष नहीं। योग्य पुत्र ही पिता की सम्पत्ति का अधिकारी होता है। जो स्वयं ही अपने पुरुषार्थ से धनोपार्जन में समर्थ है, जो स्वयं ही अपने गुणों से ख्याति प्राप्त कर सकता है, वही सच्चा पुत्र है।

* जो सामर्थ्य रहते शरणागत की रक्षा नहीं करता उसकी शूरवीरता, सामर्थ्य, बल, पौरुष, कुलीनता, सभी को धिक्कार है।

* यदि कदाचार अभिचार बीच में अन्तराय न हो जाय तो वंश परम्परा के गुण आगामी सन्तानों में अवश्य आते हैं। माता-पिता के रज-वीर्य में जीवन कण ही नहीं होते, उनमें सद्गुणों के समस्त संस्कार भी निहित रहते हैं। जो पशु ऋतुगामी होते हैं, सदाचार का पालन करते हैं, उनकी सन्तानें भी ऐसी ही होती हैं। ऐसा ही सुना है कि सिंह जीवन में सिंहनी के साथ एक ही बार समागम करता है। इसीलिये सिंह के सिंह ही होती है। यदि द्वितीय बार वह करता है तो फिर सिंह नहीं होता। प्राचीन काल में रज-वीर्य शुद्धि का सबसे अधिक ध्यान रखा जाता था कुल मर्यादा बनी रहे, वंश का गौरव नष्ट न हो, स्त्रियों में कदाचार न फैलने पावे इसके लिये सतत प्रयत्न किया जाता था, इसलिये शूरवीरों के शूरवीर ही

पुत्र होते थे। सम्राट का पुत्र भी सम्राट ही होता था।

* वंश वृद्धि और कुल की कीर्ति बनाये रखने के निमित्त गृहस्थी पुत्र की इच्छा करते हैं। पुत्री पर घर में जाकर दूसरे गोत्रवाली हो जाती है किन्तु कोई पुत्री ऐसी यशस्विनी होती है कि उसके कारण पतिकुल, पिताकुल दोनों ही कुलों की प्रसिद्धि होती है।

* अनर्थ सदा चांचल्य से ही होता है। चंचलता वैसे तो सभी अवस्था के लोग करते हैं, किन्तु युवावस्था तो चंचलता का घर है। युवावस्था में प्राय: सभी युवक-युवतियों के मन में अत्यधिक चंचलता आ जाती है। नूतन-नूतन वस्तुओं की जानकारी के लिये कुतूहल होता है। चलन में, उठन में, बैठन में, बोलने में तथा सभी प्रकार की वार्ताओं में चंचलता का साम्राज्य छा जाता है। जिन युवकों के जीवन में चंचलता नहीं, वे या तो अलौकिक महापुरुष हैं या निवीर्य नपुसंक है। कभी-कभी युवावस्था की चंचलता से बड़ा अनर्थ हो जाता है। इसीलिये तो गुरुजन युवकों के प्रति बड़े सचेष्ट रहते हैं और उनकी गति विधि को शंका और भय के साथ बड़ी सावधानी से निहारते रहते हैं।

* व्यवहार में आदान प्रदान है, तुम यह दो इसे बदले में हम यह देंगे। जहाँ देन लेन है वहाँ व्यवहार है। जहाँ व्यवहार है वहाँ थोड़ा देकर अधिक पाने की कामना है, जहाँ कामना है, वहाँ क्रोध है। जहाँ दोनों ओर क्रोधी हैं, वहाँ बलवान क्रोधी की विजय है। निर्बल का मान मर्दन है। यह सम्पूर्ण जगत् व्यवहार से चल रहा है। मनुष्य देवताओं को बलि प्रदान करते हैं, उसके उपलक्ष्य में देवता उनके सुख के साधन जुटाते हैं। पिता पुत्र का पालन पोषण करते हैं, पुन: उससे आशा रखते हैं वृद्धावस्था में वह हमारी सेवा करे। आजीविका आदान-प्रदान पर ही अवलम्बित है। यदि आदान प्रदान न हो तो बुद्धिजीवी भूखों मर जायँ और श्रमजीवी जड़ हो जायँ। एक वृत्ति वाला दूसरे को सुख सम्बन्धी सामग्री देकर स्वयं उससे अपनी सुविधा की वस्तु लेता है। इसीसे सबका जीवन-निर्वाह हो रहा है।

* व्यवहार में इसी का नाम सत्य है, जिससे जो कह दें, जिससे जिस बात के लिये प्रतिज्ञा कर लें, उसे शक्ति रहते अवश्य पालन करना। जो कार्य करने के समय तो विनीत बन जाते हैं और कार्य हो जाने पर फिर बोलते भी नहीं। ऐसे स्वार्थी लोग व्यवहार में सफल नहीं होते। व्यवहार साख पर चलता है। जिसकी लोगों में साख बनी हुई है, वह बिना पैसे के भी धनी है, जिसकी साख बिगड़ गई है, वह धनी होकर भी निर्धन है। साख तभी बनती है, जब हम जिससे जो कह दें, उसका यथावत् पालन करें।

* किसी की वस्तु को कोई किसी अन्य व्यक्ति को दे जाय तो वह दान अवैध है।

* जो इस जन्म में दरिद्री ही होकर जन्मे हैं और जिन्हें धन की, संसारी भोगों की कभी स्पृहा ही नहीं हुई है, जो जीवन भर धन और विषय भोगों से पृथक ही रहे हैं, उनके विषय में तो कहना ही क्या है। वे तो पुण्य पाप से परे प्राणी हैं, किसी विशेष कारण वश उन्होंने लोक में जन्म ग्रहण कर लिया है, वास्तव में तो वे अलौकिक महापुरुष हैं। उनकी बातें छोड़ दो, किन्तु जो धन वैभव, संसारी भोगों की समस्त सामग्रियों के रहते हुए भी, उनकी ओर आँख उठाकर नहीं देखते, उन्हें स्वप्न के समान, गन्धर्व नगर के सदृश समझकर सदा भगवत् परिचर्या में ही निमग्न रहते हैं, वे बड़े ही भाग्यशाली पुण्यात्मा और अद्वितीय महापुरुष हैं। वे भगवान के परम अनुग्रह भाजन हैं। नहीं तो धन वैभव का मद तो प्राणियों को मदोन्मत्त बना देता है। वे स्वार्थ परमार्थ सभी को भूलकर विषयों के गहन वन में भटककर पथभ्रष्ट हो जाते हैं।

बुजुर्गी का ताल्लुक सिर्फ उम्र बढ़ने से नहीं है, बल्कि समझदारी और इज्जत हासिल करने से है।

* यदि मनुष्य कुछ सीखना चाहे तो उसकी छोटी-सी-छोटी गलती भी उसे कुछ शिक्षा दे सकती है।

* मनुष्य झूठ से मेल करके जीवन की कितनी महती सम्पदा नष्ट कर देता है।

✻ मुल्क की प्रतिभा को जगाना जरूरी है। मुल्क के खोये प्राणों को फिर से गति देना जरूरी है, मुल्क के मन में फिर एक मंथन पैदा करना जरूरी है। अगर मंथन पैदा हो जाये, अगर चिंतन पैदा हो जाये, अगर विचार पैदा हो जाये तो हम हजारों साल के अंधकार को मिटाने में समर्थ हो जायेंगे। एक छोटे से दीये से हजारों साल का अन्धकार मिट जाता है। अन्धकार यह नहीं कहता कि मैं हजार साल पुराना हूं इसलिए इस छोटे- से दीये से कैसे मिटूंगा, नहीं मिटता। एक दिन का दीया है उससे मैं कैसे मिटूंगा, मैं हजारों साल पुराना हूं। विचार का दीया जले इस देश के प्राणों में तो हजारों साल का अन्धकार पलभर में मिट सकता है।

✻ प्रियतम की स्मृति भक्तों का परम धन है जो ज्ञान उन्हें इस धन से वंचित करता हुआ रस शून्य बनाने की प्रेरणा देता है उनकी दृष्टि में वह सर्वथा घातक है।

✻ पराजय से सत्याग्रही और अहिंसक की आत्मा को निराशा नहीं होती। उससे तो कार्य-क्षमता और लगन बढ़ती है और सत्य से मनुष्य की बुद्धि परिष्कृत होकर उसका मार्गदर्शन करती है।

✻ किसी को अपना परिचय देना बुरा नहीं है, बुरा तभी है जब वह किसी स्वार्थ या अहंकार से दिया जाता है।

✻ जीवन और रूप, बिजली की चमक की तरह चंचल हैं।

✻ जीवन अशाश्वत ही है। यौवन चले जले पर नहीं लौटता।

✻ कामनाओं की शान्ति कभी भी काम के उपभोग से नहीं हो सकती।

✻ अपना पेट तो सभी भरते हैं। जीना तो उसी का जीना है, जो दस का पेट भरकर अपना पेट भरे।

✻ करुणा जिसके जीवन में है, वही मानव सार्थक जीवन जी रहा है।

✻ जो शास्त्र की विधि है, उसका पालन शास्त्राज्ञा समझकर करना चाहिये। कुछ लोग कहते हैं, एकादशीव्रत करने से पेट ठीक रहता है, पाचन शक्ति नहीं बिगड़ती, इसलिये पक्ष में एक दिन उपवास करना उत्तम है। किन्तु यह कथन भौतिकवादियों का है, उपवास से पाचन क्रिया का ठीक होना यह उपवास का मुख्य फल नहीं है। आनुसंगिक गौण फल है। मुख्य फल तो भगवान् में भक्ति का होना है, पापों का नाश है, आयुर्वेद शास्त्र में गद, ज्वर, अघ, पाय ये सब रोग के पर्यायवाची शब्द हैं। पूर्व जन्म के किये हुए पाप ही इस जन्म में व्याधि रूप होकर बाधा पहुँचाते हैं। पापों के नाश से रोग रहित होना तो अनिवार्य ही है, किन्तु शास्त्रों में तो एकादशी का महान् माहात्म्य हैं, जो उस महान् माहात्म्य को न मान कर केवल स्वास्थ्य की दृष्टि से ही एकादशी व्रत की उपयोगिता मानते हैं, वे कभी व्रत नहीं कर सकते। अत: एकादशी व्रत को शास्त्राज्ञा मान कर विधिविधान पूर्वक़ नियम से करना चाहिये।

✻ दुनिया में रहते हुए दो चीजों को कभी नहीं भूलना चाहिए। न भूलने वाली चीज एक तो परमात्मा तथा दूसरी अपनी मौत। भूलने वाली दो बातों में से एक है- तुमने किसी का भला किया तो उसे तुरन्त भूल जाओ और दूसरी किसी ने तुम्हारे साथ अगर कभी कुछ बुरा भी कर दिया तो उसे तुरन्त भूल जाओ। बस, दुनिया में ये दो ही बातें याद रखने और भूल जाने जैसी है।

✻ नम्रता में यीशु और सुकारता के समान अनुकरण करो।

✻ इस सनातन नियम को याद रखो- यदि तुम प्राप्त करना चाहते हो तो अर्पित करना सीखो।

✻ आज आदमी अपनी सेहत को ढूंढ रहा है। कभी अस्पताल में, कभी मनोरंजन में, कभी यौन में, कभी बड़े पदों में और कभी दौलत के ढेर में। जो धरती के अनंत भंडार से केवल अपने हिस्से के तत्त्व लेते हैं बाकी तत्त्वों को स्पर्श भी नहीं करते। आदमी कभी जंगल के प्राणियों की तरफ नहीं देखता जो खाने, सोने और बच्चा पैदा करने में कुदरत के सारे

नियमों का पालन करते हैं। दुनिया में आज ऐसे लोग भी हैं जो सांस भी छान कर लेते हैं, पानी भी छानकर पीते हैं। आज मानव जीवन अनेक प्रकार के नकार से घिरा है। जबकि केवल स्वाभाविक जीवन और प्राकृतिक जीवन ही मानव को सच्चा सुख दे सकता है। आदमी खुद नशा करना चाहता है तो भगवान को भी नशेड़ी बना देता है। मनुष्य ने शिव को गांजा, भांग, धतूरा खिला दिया ताकि खुद शराब या कोकीन ले सके। अपने गम को मिटाने के लिए आदमी दम मारने को बेताब रहता है। कहते हैं शरीर कभी पूरी तरह स्वस्थ होता ही नहीं। ज्यादा से ज्यादा इतना ही कि यह स्वस्थ दिखाई पड़ सकता है, चिंतकों ने शरीर को व्याधि मंदिर, रोगों का निवास आदि कहा है। कभी शरीर की व्याधि है, कभी मन की व्याधि है। असल में आदमी की तृष्णा ही आदमी को शांत नहीं रहने देती। लोग उपवास करते हैं- शरीर के लिए नहीं, धर्म के लिए करते हैं। दवाओं पर निर्भर होकर जीने का आनंद नहीं मिलता। आदमी के पास जो है वो उसमें आनंद नहीं ढूंढता, जो उसके पास नहीं है, उसमें आनंद ढूंढता है। इसीलिए वो दूसरे की संपत्ति को देखकर जलता है। अनेक लोगों ने मानव जीवन को पापों का फल कहा है, मगर ऐसा नहीं है, असल में मानव जीवन परमात्मा का प्रसाद है, उपहार है, उसकी अभिव्यक्ति है।

*** बात करना भी एक कला है-** यदि हम चाहते हैं कि हमारा जीवन सुख शांति से व्यतीत हो तो हमें अपनी वाणी मधुर बनानी होगी। जीवन में स्वास्थ्य और हंसी का जितना महत्त्व है, उससे कहीं अधिक महत्त्व वाणी का है। यश-अपयश, सफलता-असफलता सब हमारे बोलने के ढंग पर ही निर्भर है। मीठी वाणी बिगड़े हुए काम भी बना देती है तो कटु वाणी बने हुए काम भी बिगाड़ सकती है।

कैसा हो हमारा वाणी व्यवहार- बात करना भी एक कला है। अगर हम इतिहास के पन्ने पलटा कर देखें तो पायेंगे कि बात करने के ढंग से पहाड़ जैसी कई समस्याएं हल हो गई और छोटी-छोटी बातों ने महायुद्ध का रूप ले लिया। द्रौपदी के वचन कि अंधे की औलाद अंधा- इस कटु वचन ने महाभारत जैसे युद्ध को जन्म दे दिया। वहीं कवि की शब्द शक्ति ने भारत में आए नादिरशाह से कत्ले आम रुकवा दिया।

हमारे दैनिक जीवन में बातचीत का बड़ा महत्त्व है। हमें प्रतिदिन घर और बाहर न जाने कितने लोगों से बातचीत करनी पड़ती है। कई बार दिन ठीक नहीं होता तो हम पाते हैं कि हमारी बात कोई नहीं मानता या हमारी बात सुनकर वह कुछ गलत शब्द बोल देता है या दुकान में ग्राहक से कुछ ऐसी बात हो जाती है या दफ्तर में अपने मालिक के साथ तकरार हो जाती है तो सारा दिन मन में क्लेश ही चलता रहता है। ऐसे समय पर वाणी में जरा-सी भी कड़वाहट या रूखापन आया तो बनती हुई बात कई बार बिगड़ जाती है। यदि हम चाहते हैं कि हमारा जीवन सुख-शांति से गुजरे तो हमें अपनी वाणी मधुर बनानी होगी।

पहले तोलें, फिर बोलें- कुछ लोग सच्ची बात कहने में देरी नहीं लगाते। हम ये नहीं कहना चाहते कि झूठ बोलना चाहिए। लेकिन अपनी बात को कुछ इस ढंग से कहना चाहिए जो सामनें वाले को बुरी न लगे। बात कोई भी हो, वह न तो मीठी होती है, न ही कड़वी। हमारे बुजुर्गों ने सोच-समझकर ही इस कहावत को जन्म दिया है कि पहले तोलो, फिर बोलो। कहते हैं कि कमान से निकला हुआ तीर और जुबां से निकली बात कभी वापस नहीं आते, इसलिए इंसान को बोलने से पूर्व कई बार सोचना चाहिए।

जीवन को खुशहाल बनाने के लिए अपनी वाणी पर काबू रखें। अपनी बात कहें, दूसरों की बात को भी गम्भीरता से सुनें। यदि किसी की समस्या का समाधान आपके पास है तो बताएं, अन्यथा खामोश रहें। अपनी वाणी से दूसरों को वैसा ही सम्मान दें, जैसा दूसरों से आप अपने लिए चाहते हैं। न तू कहें, न कहलवाएं। इन बातों को आज से नहीं बल्कि अभी से अपने व्यवहार में लायें तो पायेंगे कि आपका जीवन ही बदल गया है। सारी दुनिया सुन्दर लगने लगेगी आपको। सब

अपने लगेंगे। आप सुख-शांति से अपनी जिन्दगी व्यतीत करने लगेंगे।

✻ मन में अनेक प्रकार के संकल्प और विकल्प आते हैं। उन भले-बुरे संकल्प-विकल्पों के वश होकर मनुष्य भले-बुरे काम कर बैठता है। तो, जिस मन में ये सारी चीजें आती हैं, उसीका निरोध करें। यह मन ही अनेक प्रकार के भेद पैदा करता है। इसलिए मन को ही काबू में रख लें।

✻ मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षा- ये चार प्रकार बताया गए हैं। दु:खी जनों के लिए करुणा, सुखी जनों के साथ मैत्री, पुण्यवानों को देखकर आनंद या प्रेम और पापियों की उपेक्षा यानी दूसरों के पाप की तरफ ध्यान न देना। सारांश सुख, दु:ख, पाप, पुण्य ये चार विषय बताकर उनके लिए चार प्रकार की भावनाएँ करने पर चित्त प्रसन्न होगा।

✻ सबसे कठिन घाटी घरकी चौकट है। एक बार घर की देहली को लाँघ लिया, तो फिर सब आसान है। उससे ऊँची कोई घाटी है ही नहीं।

✻ आर्थिक विषमता और सामाजिक विषमता मिटनी चाहिए।

✻ ईश्वर रहित धर्म अकिंचित्कर है। धर्मका ही एक रूप निवृत्ति है। केवल विवाह या वंशवृद्धि धर्म नहीं है। अत: धर्मका यज्ञ-यागादि प्रवृत्तिरूप न होनेपर भी धर्मकी सिद्धि होती है।

✻ कुपुत्र होना श्रेष्ठ है, क्योंकि सुपुत्रसे मोह हो जाता है और मनुष्य संसारमें ही फँसा रहता है। कुपुत्रसे मुक्ति प्राप्त करनेके लिये वैराग्य होता है।

✻ जितने भी वेद, शास्त्र, पुराण, दर्शन हैं, वे मनुष्यके इसी जीवनके लिए हैं। शास्त्रोंकी व्याख्याका यह मूल आधार है जैसे स्वर्गका वर्णन करते हैं, यह संदेहास्पद है कि स्वर्ग है या नहीं इसमतें विवाद हो सकता है। जब नरकका वर्णन करते हैं तो नरक है या नहीं इसमें विवाद हो सकता है। पुनर्जन्मका वर्णन करते हैं तो पुनर्जन्म है कि नहीं, इसमें विवाद हो सकता है। परन्तु स्वर्ग-नरक और पुनर्जन्मके जिन कर्मोंका करनेका वर्णन हैं इसमें कोई विवाद नहीं। वे सबके सब अच्छे कम हैं, सत्कर्म हैं, लोगोंकी भलाईके कर्म हैं। नरकसे बचनेके लिए हमको जैसा करना चाहिए, नरक है कि नहीं उन कर्मोंसे बचना मनुष्यके जीवनके लिए आवश्यक हे। पुनर्जन्म हों कि न हो, उसके बारेमें लोग लड़ें, विवाद करें, परन्तु पुनर्जन्मसे बचनेके लिए जिस ज्ञानका, भक्तिका, भगवान्का निरूपण है, वह हमारे जीवनमें धारण करने योग्य है। यही सत्कर्म और सद्गुण है। हम जितना भी वेद, शास्त्र और पुराण का वर्णन करते हैं, वह मनुष्य जीवनमें अच्छे-अच्छे कर्ममें प्रवृत्ति होनेके लिए करते हैं। यदि मनुष्यके इस जीवनको हम शुभ कर्ममें न लगा सकें, तो जितना भी गोलोकका, वैकुण्ठका, स्वर्गका, नरकका वर्णन हैं वह सब व्यर्थ हो जायेगा। प्रत्येक बात मनुष्यके जीवनको कोई-न-कोई प्रेरणा देनेके लिये होती है। दुष्कर्मसे बचनेके लिए और सत्कर्ममें लगनेके लिए। यही शास्त्रोंका सिद्धांत है।

✻ मनुष्यको उसके बोलने का जो ढंग होता है, किसीको लोभ देकर अच्छे काममें लगाना पड़ता है, किसीको भय दिखाकर अच्छे काममें लगाना पड़ता है, किसीको प्रेम समझाकार, आत्मीयतासे अच्छे काममें लगाना पड़ता है, किसीको विवेकसे, बुद्धिसे, युक्तिसे समझाकर अच्छे काममें लगाना पड़ता है, किसीको आज्ञा देकर। यह नहीं कि सब लोभसे काम करें, कि सब भयसे काम करे, कि सब समझाने-बुझानेसे काम करें, कि सब आज्ञा देनेसे काम करें। सबके लिये एक ही रीति नहीं हो सकती। मनुष्योंकी अलग-अलग प्रवृत्ति होती है, अलग-अलग स्वभाव होता है, किसीको डाँटकर काम लेते हैं तो किसीको दुलारसे-प्यारसे काम लेते हैं। ऐसे ही हमारे शास्त्र सम्पूर्ण प्राणियोंको, हर तरहके प्राणियोंको अच्छे काममें लगानेके लिए, अलग-अलग भाषामें बोलते हैं, अलग-अलग युक्ति देते हैं। कभी भय दिखाते

हैं, कभी लोभ देते हैं, कभी आत्मीयतासे बोलते हैं, यह उनके बोलनेकी कहनेकी प्रणाली है।

❋ सृष्टिमें कहीं भी शान्ति नहीं है। न गरीबीमें शान्ति है, न अमीरीमें शान्ति है। न विद्यामें शान्ति हैं, न तपस्यामें शान्ति हैं। न तीर्थोंमें शान्ति हैं, न पर्वतोंपर जानेपर शान्ति है। न नदियोंके तटपर शांति है। सर्वत्र अशांति का दर्शन होता है।

❋ संकल्प अर्थात् सम्यक कल्पना। आप जो काम करना चाहते हैं, उसको सूझ-बूझके साथ ठीक-ठीक अपने हृदय में बैठा लें, यह काम कब करना, कहाँ करना, किस तरह करना, इसका फल क्या होगा और इसको करने के लिए कितने लोग चाहिए, सामग्री कौन-सी चाहिए, पूरी-पूरी कल्पना किसी कर्मके सम्बन्धमें पूरी योजना; सम्पूर्ण योजनाका नाम संकल्प होता है।

❋ लोग चाहते हैं कि सुख की प्राप्ति और दु:ख का परिहार हो। सुख मिले और दु:ख टले। इसी उद्देश्य से भिन्न-भिन्न कर्म शुरू कर देते हैं। लेकिन होता क्या है? परिणाम उलटा ही दिखता है। उनसे दु:ख ही मिलता है और सुख खोया जाता है। कर्म का आरम्भ किया था सुख के लिए। सांसारिक कार्य किया, घर बनाया, खेतीबारी शुरू की, नौकरी की। सब कुछ दु:ख निवारण और सुख-प्राप्ति के लिए किया। लेकिन परिणाम विपरीत आया। विषयासक्त पुरुषों द्वारा सुखार्थ किये गये सभी प्रयत्नों के परिणाम कल्पना से विपरीत होते हैं।

❋ अरहण की चोरी करी सुई का दान किया। दुनिया में हमारा जीवन अच्छा चले, इसलिए बड़ी चोरी करके पूँजी कमायी और परलोक में अपना स्थान कायम रहे, इसलिए सुई भर का दान दिया। दोनों बाजू अपना स्थान कायम करने की कोशिश की। पर होड़, ऊँच-नीच भाव और नश्वरता लोक और परलोक में भी हे। परलोक यहाँ जीवन का विस्तारमात्र है इससे अधिक कुछ नहीं। जो बुराइयाँ, भलाइयाँ यहाँ हैं वे वहाँ भी होंगी। जो लोग स्वर्ग के लिए तरह-तरह के काम करते हैं, वे अपनी सकामता में ही वृद्धि करते हैं। इस दुनिया के लिए तो हम कामना करते ही थे, अब उसके साथ स्वर्ग के लिए भी कामना करने लगे। स्वर्ग का, संसार में धन आदि प्राप्त करने का और सुख-प्राप्ति के लिए किये जानेवाले तरह-तरह के कामों का, यानी सांसारिक काम, सांसारिक प्राप्ति और परलोक में होनेवाली प्राप्ति, तीनों का निषेध किया गया है।

❋ जहाँ स्वच्छता होती हैं, वहाँ चित्त एकदम प्रसन्न हो जाता है और चित्त प्रसन्न होता है, तो बुद्धिमें विचार भी उत्तम सूझते हैं।

❋ आत्मा और ईश्वर को सर्वत्र देखने का अभ्यास होना चाहिए। अपना रूप और परमेश्वर का रूप सर्वत्र भरा हुआ है। यही देखने के लिए हमने समाज में जन्म पाया है न कि एक-दूसरे के विरुद्ध काम करने के लिए। दुनिया में केवल हम ही हैं। सामने अनेक लोग दीखते हैं फिर भी सर्वत्र हम ही हैं। दुनिया मानो एक दर्पण है। दर्पण में दीखनेवाला रूप हमारा ही होता है। वैसे ही यह सारी दुनिया हमारा प्रतिबिम्ब है। जैसे हम हैं, वैसी दुनिया है। सारी जिम्मेदारी हमारी ही है। हम ही दुनिया में व्यवहार कर रहे हैं। इसी का नाम है कैवल्य।

❋ संसार में स्त्री हठ बड़ा प्रसिद्ध है स्त्रियाँ जब अपने हठ पर अड़ जाती हैं, तो सूर्य चन्द्रमा चाहे टल जायँ, किन्तु ये अपने वचनों से नहीं टलतीं। इनका मुख कमल के समान होता है, वाणी मिश्री से भी मीठी होती, किन्तु हृदय तो कभी-कभी छुरी की धार से भी तीखा हो जाता है।

❋ अतिथि- प्राचीन सदाचार यह था कि अपने घर पर भोजन के समय कोई भी अतिथि जा जाय, तो गृहस्वामी उसकी भगवद् बुद्धि से पूजा करता था। अतिथि किसी वर्ण अथवा किसी आश्रम का क्यों न हो, उसकी यथोचित यथाधिकार पूजा की जाती थी। जब तक अतिथि भोजन नहीं कर लेता था। तब तक घर का स्वामी जल भी नहीं पीता था। इसीलिये प्राचीन काल में हजारों लाखों यात्री पैदल यात्रा करते थे और उन्हें घर-घर बिना माँगे, बिना मूल्य दिये भोजन और विश्राम के लिये स्थान मिल जाता था। जिसकी कोई आने की तिथि निश्चित न हो जो अपने गाँव से दूर का हो वही अतिथि कहलाता था।

यदि कोई पूजनीय प्रतिष्ठित पुरुष किसी के यहाँ अतिथि हो जाते, तो वह पुत्रोत्सव की भाँति प्रसन्नता मनाता, उस दिन अपने पितरों का विशेष श्राद्ध करता। आर्य संस्कृति में अतिथि सेवा का सर्वोत्तम स्थान था। इन पाश्चात्य अनार्य धर्महीन दस्यु के संसर्ग से अतिथि सत्कार इस पुण्य भूमि से नष्ट प्राय: हो चला नहीं तो पहिले सर्वस्व त्याग करके भी अतिथि की सेवा करते थे। महाराज शिबि, मोरध्वज, दधीचि आदि ऐसे असंख्यों उदाहरण हैं।

* लोक में यह देखा गया है कि मनुष्य अपने अपमान को तो चाहे सह ले, किन्तु अपने सगे सम्बन्धी और आश्रित के अपमान को नहीं सह सकता। हमें चाहे कोई मरने की, दुखी होने की, बुद्धिहीन होने की गाली दे, तो उसे मन मसोसकर एक बार सह भी लेते हैं, किन्तु जहाँ वह बहिन बेटी की गाली देने लगा तहाँ वह असह्य हो जाती है। किसी मनुष्य को कोई मार दे तो उसे एक बार सह लेगा, किन्तु यदि उसके सामने घर की स्त्रियों का अपमान करदे, तो उसका रक्त खौल उठेगा और शक्ति रहते उस अपमान करनेवाले से बदला लेगा।

* प्रेमका बर्ताव करनेवाले के साथ तो साधारणतया सभी प्रेम करते हैं, किन्तु जो अपकारी के साथ भी उपकार करे, द्वेष करनेवाले से भी स्नेह करे, वही वास्तव में धीर वीर भगवद् है। वही पुरुषों में सर्वश्रेष्ठ है।

* यदि किसीको सम्मान न दे सको तो किसी का अपमान भी मत करना।

* विद्वान होते हुए जो चरित्रवान नहीं होता वही रावण है।

* जीव जब धन का उपयोग बुद्धि के द्वारा करता है तो व्यवस्था बनी रहती है। परन्तु मन यदि मनमाना उपयोग करता है तो बुद्धि उसे छोड़ देती है। जो धन का उपयोग मनमाना करता है, नीति के विरुद्ध करता है वह शीघ्र दरिद्र हो जाता है। जीव यदि अपनी शक्ति का उपयोग मनमाना करता है तो शीघ्र बुद्धा हो जाता है।

* सत्य और न्यायकी जो प्रीति है, यही सर्वश्रेष्ठ गुण है।

* जो परहित के निमित्त प्राणों का परित्याग करते हैं वे पुण्यात्मा प्राणी परमपद की प्राप्ति के अधिकरी होते हैं। स्वधर्म पालन करने में यदि पुत्र परिवार और प्राणों का भी उत्सर्ग करना पड़े, तो मनस्वी पुरुष तनिक भी संकोच नहीं करते। वे हँसते-हँसते प्राणों का परित्याग करते हैं। जिस एक के कारण अनेकों कष्ट होता है, उस एक का वध करने वाले पुरुष को अक्षय लोकों की प्राप्ति होती है। और संसार में उसका नाम अजर अमर हो जाता है।

* जो बात होनी नहीं होती है, उसमें अनुकूल परिस्थितियाँ भी प्रतिकूल बन जाती हैं और जो बात होने वाली होती है वह बहुत से विघ्नों के रहते हुए भी बड़ी सुगमता से सम्पन्न हो जाती है। इसीलिये देवबल को ही प्रधान बल कहा है। अल्पज्ञ पुरुष का बल तुच्छ है व्यर्थ है। जिस बात को सभी लोग असम्भव बताते हैं, दैवेच्छा से वह सम्भव हो जाती है जिसे स्वाभाविक और असम्भव बताते हैं, वह क्षण भर में ही बदल जाती है। इसीलिये तत्परता के साथ कर्म करते हुए, उनके फलों को भगवान के ऊपर छोड़ देना चाहिये। क्योंकि प्रभु प्रेरणा से कर्म करने में ही हमारा अधिकार है, उसका फल क्या होगा इसे फल दाता ही जाने।

* जो लोग काम नहीं करते, सिर्फ आराम करते हैं, वे दूसरों के मोहताज होते हैं। बुराइयाँ फैलाने में ये ही लोग सबसे आगे होते हैं।

* एक साथ ही लक्ष्मी और सद्विवेक का वरदान प्राय: मनुष्यों को कम ही मिलता है।

* एक ही जीने का ढंग है दुनिया में- निर्भय होकर जीयो, और जो निर्भय होकर जीता है, परमात्मा उसका पुरस्कार है।

* मनुष्य अपने आपको धोखा देने में कितना बुद्धिमान है। देखो एक मूर्ख से भी अधिक आशा की जा सकती है, किन्तु

उस व्यक्ति से नहीं।

✻ प्रेम के शब्द चाहे कितने ही विलंब से और किसी प्रकार भी व्यक्त किए जाएं, सदैव सर्वश्रेष्ठ होते हैं।

✻ ऐसे भी व्यक्ति हैं जो अपने पास सब कुछ बताते हैं; फिर भी उनके पास कुछ नहीं है। ऐसे भी हैं जो स्वयं को विपन्न बताते हैं, फिर भी उनके पास अतुल सम्पदा है।

✻ कठिनाइयों और हानियों को सहन करने के पश्चात मनुष्य विनीत और बुद्धिमान् हो जाता है।

✻ रिश्तेदारों से सम्बन्ध नहीं रखनेवाला कोई भी मनुष्य अकलमन्द नहीं हो सकता।

✻ सज्जनों का साथ हो तो अनचाही मुसीबतें पास नहीं आतीं।

✻ वृद्ध मनुष्य इस पृथ्वी का सबसे बड़ा शिक्षालय है क्योंकि उसे देखकर उगते सूरज की डूबती कहानी का ज्ञान होता है।

✻ नारी पर सबसे बड़ा हक उसके पति का है और पुरुष पर सबसे बड़ा हक उसकी माता का है।

✻ मन को विषाद ग्रस्त नहीं बनाना चाहिए। विषाद में बहुत बड़ा दोष है। जैसे क्रोध में भरा हुआ सांप बालक को काट खाता है, उसी प्रकार विषाद व्यक्ति का नाश कर डालता है।

✻ वृक्ष अपने सिर पर गर्मी सह लेता है लेकिन अपनी छाया से औरों को गर्मी से बचाता है।

✻ विपत्ति आती है और चली जाती है, वीर वही है जो धीर रहे और न्याय, सच्चाई का त्याग न करे।

✻ प्राणों का मोह त्याग करना वीरता का रहस्य है।

✻ उस धन से बचो जो नष्ट हो जाएगा, उस भार्या से क्या जो मर जाएगी, उस यौवन से क्या जिसे बुढ़ापा समाप्त कर देगा।

✻ क्षुद्र मस्तिष्क दुर्भाग्य द्वारा दमित और क्षीण हो जाते हैं किन्तु विशाल मस्तिष्क दुर्भाग्य से भी ऊपर उठ जाते हैं।

✻ वे कितने निर्धन हैं जिनके पास धैर्य नहीं है। क्या आज तक कोई जख्म बिना धैर्य के ठीक हुआ है।

✻ दान स्वयं को समुद्र बनाता जाता है, लालसा विपन्नता का संचय करती चलती है। इससे पूर्व की धन तुम्हें लोभी बनाए, दानी बन जाओ।

✻ महत्वाकांक्षी के लिए प्रसिद्धि खारे जल के समान हे। जितनी ही व पीता है उसकी पिपासा उतनी ही बढ़ती है।

✻ एक मनुष्य को उससे अधिक विश्वास नहीं करने चाहिए जितने वह निभा सके।

✻ भले ही यत्नपूर्वक़ पीसने पर रेत से भी तेल प्राप्त हो जाए, मृगतृष्णा में प्यासा व्यक्ति भले ही जल पी ले, कभी भ्रमण करता हुआ मनुष्य भले ही खरगोश का सींग भी पा ले, किंतु हठी मूर्ख के चित्त का समाधान कर पाना कभी भी संभव नहीं है।

✻ कितना भी पांडित्य हो, थोड़ी सी रसज्ञता की कमी से वह निरर्थक हो जाता है।

✻ हितकर किंतु अप्रिय वचन को कहने और सुननेवाले, दोनों दुर्लभ हैं।

✻ काम करनेवाला मरने से कुछ घंटे पूर्व ही वृद्ध होता है।

✻ हम बात ऊँची से ऊँची करते हैं किन्तु आचरण उतना ही घटिया। त्याग की बात करते हैं किंतु पैसों के पीछे पागल हो जाते हैं। ईमानदारी की बात करते हैं। आचरण बेईमानी का करते हैं। शाश्वत की बात करते हैं किंतु निरर्थक को पकड़ते हैं। जगत को माया कहते हैं, किंतु मायाजाल में स्वयं फँसते हैं और दंभ धार्मिकता का भरते हैं। आवश्यकता है मानसिक बदलाव की, नैतिक मूल्यों के पुनर्स्थापन की, शिक्षा में बदलाव की, सकारात्मक सोच की, सदाचार की भावना विकसित करने की, इसके लिए आत्मिक क्रांति की आवश्यकता है।

✻ सच्चरित्रता के अभाव में केवल बौद्धिक ज्ञान सुगन्धित शव के समान है।

❋ हम इस प्रकार जीवन व्यतीत करें कि हमारे मरने पर हमें दफनानेवाले भी दो आंसू बहा दें।

❋ जिसे सत्य ने स्वाधीन बना दिया केवल वही स्वाधीन है, शेष सभी दास हैं।

❋ यदि मृत्यु के पश्चात् ही कीर्ति प्राप्त होती है तो मुझे इसके लिए कोई शीघ्रता नहीं है। पहाड़ सरीखा ऊंचा होना मुझे सुखकर नहीं लगता। मेरी मिट्टी आसपास की भूमि पर फैल जाए, इसी में मुझे आनन्द हैं।

❋ इन कंकालों के दुख से ही विश्व-वेदना का उद्‌भव होता है और उन्हीं के नि:श्वासों से संसार की दु:खमयी भावना उद्‌भव होती है।

❋ महत्ता के सुमन में नम्रता का सौरभ ही शोभा पाता है।

❋ जहां नियमों के विपरीत आचरण होता है, वहीं क्रूरता का आरम्भ होता है।

❋ बिना देखे कभी किसी वस्तु का पान न करो, और बिना पढ़े कभी कहीं हस्ताक्षर न करो।

❋ महानता से बढ़कर और कोई सरलता नहीं वस्तुत: सरलता ही महानता की पथदर्शिका है।

❋ अलादीन के खजाने की भाँति और भी कई खजाने हैं, जो केवल शब्दों की कुंजी द्वारा खुल सकते हैं।

❋ आज की पीढ़ी अपने माता-पिता की सोच को पीढ़ियों का अंतर कहकर नकार रही है। तो दादा-दादी, नाना-नानी के तो कोई मायने नहीं रह गए हैं। शहरों में संयुक्त परिवार गिने-चुने ही रह रहे हैं। बुढ़ापा ऐसा समय होता है, जब इंसान को सबके साथ की जरूरत होती है, सम्मान की जरूरत होती है। बुढ़ापे में जब उनकी उपेक्षा की जाती है, उन्हें यह जताया जाता है कि अब उनकी परिवार में जरूरत नहीं है, स्वयं उनके लिए बुढ़ापा बोझ बन जाता है। मां-बाप को बचपन में ही बुजुर्गों के लिए सम्मान की भावना बच्चों में डालनी चाहिए। आज का युवा वर्ग इस बात का ध्यान रखे कि यदि वह अपने मां-बाप की उपेक्षा करेंगे तो आगे आनेवाली पीढ़ी भी उसके साथ वही व्यवहार करेगी। हमें अपने बुजुर्गों का सम्मान करते हुए संयुक्त परिवारवादी ही बने रहना है एकल परिवारवादी या नारी-पुरुषवादी नहीं। जो लोग सभी को त्याग देते हैं, उन्हें भी एक दिन परिवार की जरूरत बेहद महसूस होती है।

❋ धैर्य और परिश्रम से हम वह प्राप्त कर सकते हैं जो शक्ति और शीघ्रता से कभी नहीं।

❋ सम्पूर्ण विश्व मेरा देश है, सम्पूर्ण मानवता मेरा बन्धु है और भलाई करना ही मेरा धर्म है।

❋ अच्छे बच्चों के निर्माण का सर्वश्रेष्ठ उपाय है उन्हें प्रसन्न रखना।

❋ **सदाचार-** आचार परम धर्म है, आचार से आयु बढ़ती है। इसके अनुसार यदि आयु की वृद्धि चाहते हों तो प्रत्येक मनुष्य को आचार का पालन करना चाहिए। आचारहीन पुरुषों को षडङ्ग सहित वेदों का अध्ययन भी पवित्र नहीं कर सकता, मृत्यु के समय वेद उसे त्याग देते हैं, जैसे पक्षी अपनी घोंसले का त्यागकर चला जाता है। परम्परागत श्रेष्ठ पुरुषों का आचरण ही सदाचार कहलाता है। सर्वप्रथम ब्रह्ममुहूर्त में ४ बजे उठने का अभ्यास करें अथवा सूर्योदय के पहले प्रात:काल की निद्रा पुण्य का क्षय करती है और वह पुरुष प्रायश्चित्त का भागी हो जाता है। ब्रह्ममुहूर्त में लक्ष्मी और सरस्वती दोनों ही वर देने को बैठी रहती हैं जो जगा रहता है उनका ध्यान करता है उस व्यापारी को लक्ष्मी और विद्यार्थी को विद्या प्राप्त होती है। प्रात:काल सोनेवाला पुरुष दोनों से हीन होकर संसार में कष्ट का अनुभव करता है। आयुर्वेद के अनुसार प्रात:काल का उठना स्वास्थ्य के लिए भी अत्यन्त लाभदायक है। शौच दोनों समय जाना चाहिए। शौच में विलम्ब नहीं करना चाहिए। रात्रि का भोजन आठ बजे तक लेना चाहिए। १० बजे तक स्वाध्याय कर फिर शयन करना चाहिए। यह प्राचीन परम्परा है। इसका पालन करने से मनुष्य का अभ्युदय होता है। इससे स्वास्थ्य ठीक रहता है।

गृहस्थ को त्रिवर्ग का उपार्जन करना चाहिए। उससे दोनों लोगों में सुख की प्राप्ति होती है। अपनी आय का चतुर्थांश परलोक साधन के लिए संग्रह करें। आधे भाग से नित्य नैमित्तिक कार्य करते हुए अपने परिवार का भरण-पोषण करें तथा एक चौथाई भाग मूल पूँजी के रूप में रखकर उसे बढ़ायें। इससे धन सफल होता है। बुरी बातें झूठ कठोर वचन बोलना तथा नास्तिकवाद का अपनाना छोड़ दे। क्षमता होनेपर सायं प्रात: कठोर वचन बोलना तथा नास्तिकवाद का अपनाना छोड़ दे। क्षमता होने पर सायं प्रात: हवन करें। इससे इन्द्र की प्रसन्नता होती है और वह यथा समय वर्षा करते हैं अत: प्रतिवर्ष मिलकर सबको इन्द्र के निमित्त यज्ञ करना चाहिए। उदय और अस्त के समय सूर्यमण्डल का दर्शन न करें। बाल काटना, दर्पण देखना, दन्तधावन और देवतर्पण यह कार्य पूर्वाह्न में ही करना चाहिए। मार्ग में जाते हुए खेत में गोशाला में मल-मूत्र का त्याग न करें। अपनी विष्ठा पर दृष्टिपात न करें। परायी स्त्री को नग्न न देखें। रजस्वला स्त्री का दर्शन स्पर्श तथा उससे भाषण भी वर्जित है। पानी में मलमूत्र का त्याग तथा मैथुन न करें। रस्सी, वस्त्र तथा केवल पृथ्वी पर और मार्ग में न बैठे। बीच मार्ग में खड़े होकर बातचीत न करें। मार्ग को रोककर खड़े न होवें अन्यथा नरक में जाते है।

अतिथि अभ्यागत का अनादर न करें। उसे अवश्य कुछ न कुछ देना चाहिए अन्यथा अदाता का पुण्य लेकर और उसे अपना पाप देकर चला जाता है। भोजन के लिए उत्तर या पूर्व मुख करके आसन पर बैठें और हाथों को घुटनों के भीतर रखकर मौन भाव से भोजन करें। अत्यन्त उष्ण और अत्यन्त ठण्डा भोजन न करें। खड़े होकर या चलते-चलते मल-मूत्र का त्याग या कुछ भी भक्षण न करें। जूठे मुँह वार्तालाप तथा स्वाध्याय भी वर्जित है। जूठे हाथ से गौ ब्राह्मण अग्नि और अपने मस्तक का भी स्पर्श न करें। जूठी अवस्था में सूर्य, चन्द्रमा और तारों की ओर भी जान बूझकर न देखें। दूसरे के आसन शय्या और वर्तन का भी स्पर्श न करें। गुरुजनों के आने पर उन्हें बैठने को आसन दें आदर सत्कार करें जाते समय उनके पीछे जायँ, उससे आयु बढ़ती है। एक वस्त्र धारण करके भोजन तथा पूजन न करें। ब्राह्मणों से बोझा न ढुलायें। नग्न होकर स्नान तथा शयन न करें। दोनों हाथों से सिर न खुजलायें। सिर से स्नान कर फिर किसी अंग में तेल न लगायें। अनध्यायों में स्वाध्याय बन्द कर दें। ब्राह्मण गौ और सूर्य की ओर मुख करके पेशाब न करें। दिन में उत्तर की ओर और रात्रि में दक्षिण की ओर मुँह करके मल-मूत्र का त्याग करें। असुविधा होने पर इच्छानुसार करें। गुरु और छात्र (शिष्य) का परस्पर सापेक्षरूप अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है, वे कभी एक दूसरे से अलग नहीं हो सकते। छात्र माता-पिताका त्यागकर अध्ययन के लिए गुरु की शरण में आता है इसके माता-पिता सब कुछ गुरु ही हैं। माता-पिता, भाई-बन्धु सबसे बड़ा दर्जा गुरु का बताया गया है। विद्या प्राप्ति के लिए गुरु की सेवा मुख्य हैं।

ब्राह्मण राजा रोगी विद्या वृद्ध गर्भिणी स्त्री बोझा से लदा हुआ पुरुष गूँगा, अन्धा, बहिरा यदि ये सामने से आते हों तो किनारे हटकर उन्हें मार्ग दे दे। वृद्ध गुरु और देवता इनको दाहिने करके चलें। दूसरों के धारण किये हुए जूते वस्त्र स्वयं न पहने। दूसरों के उपयोग में आये यज्ञोपवीत आभूषण और कमण्डलु का भी त्याग कर दें। चतुर्दशी अष्टमी पूर्णिमा तथा पर्व के दिन तैलाभ्यङ्ग एवं स्त्रीसहवास न करें। पैर को पैर से न धोयें। किसी को चुभती बात न करें। निन्दा और चुगली करना छोड़ दें। लूले, लँगड़े और अन्धे की खिल्ली न उड़ायें। आसन को पैर से खींचकर न बैठें। पूर्व या उत्तर को मुँह करके दाँतुन न करें। उस समय मौन रहें। उत्तर और पश्चिम की ओर सिर करे कभी न सोयें। दक्षिण या पूर्व दिशा की ओर ही मस्तक करके सोयें। लाल रंग-बिरंगे और काले रंग के कपड़े न पहने। कुत्ते की दृष्टि पड़ी हो किसी ने चाट लिया हो सार भाग निकालने से दूषित हो ऐसे अन्न को न खायें। बासी भात को न खायें। दूध की बनी हुई वस्तुएँ भी यदि बहुत दिनों की हों तो उन्हें न खायें। सूर्य के उदय और अस्त के समय शयन न करें। बिना नहाये, बिना बैठे शय्या पर बैठकर या सोकर

केवल पृथ्वी पर बैठकर, किसी देखते हुये को बिना देकर कदापि भोजन न करें।

एक साथ अग्नि और जल को न लें। गुरु, देवता, पिता तथा ब्राह्मणों की ओर पैर फैलाकर न बैठें। बछड़े को दूध पिलाती गाय को न छेड़ें। अंजलि से पानी न पियें। शौच के समय में विलम्ब न करें। मुख से अग्नि न फूँके। तवे की पहली और पिछली रोटी न खायें। पहली गोग्रास के लिये, पिछली कुत्ते आदि के लिये है, बचे हुए परथन से यह रोटी बनाई जाती है। कुछ लोग इस आटे को शु द्ध आटे में डाल देते हैं कुछ अग्नि में यह बहुत ही अनुचित है। पराई स्त्री से समागम न करें। इससे बढ़कर आयुविघातक दूसरी चीज नहीं है। हाथ धोने के मिट्टी स्वच्छ हो। जल के भीतर की घर की बाँबी की चूहे के बिल की और शोच से बची हुई यह पाँच मिट्टियाँ सर्वथा त्याज्य है। मुण्डन करा देना, धन छीन लेना, स्थान से निकाल देना यह ब्रह्महत्या कहलाती है जिसका कोई प्रायश्चित नहीं। अत: भूलकर भी ऐसा काम धन के मद से नहीं करना चाहिये अन्यथा घोर कुम्भीपाक नरक में जाता है। वहाँ से निकलकर नीचयोनि में जाकर महान कष्ट का अनुभव करता है।

भूल करके भी ब्राह्मणों से द्वेष न करें अन्यथा वह लक्ष्मी और आयु दोनों से हीन हो जाता है। ब्राह्मणों का सर्वदा सम्मान करना चाहिये। ब्राह्मण गाली दें मारे तुम उनको नमस्कार ही करना, जो ऐसा नहीं करेगा उसको दण्ड मिलता है।

जो धन से परिपूर्ण समर्थ होते हुए भी भागवतधर्म जैसे शुभकार्य में धन का विनियोग करने में लोभ से अपनी असमर्थता प्रकट करता है वह लोभी मरकर दूसरे जन्म में धनहीन रोगग्रस्त होता है। अत: धर्म के कार्य में श्रीमानों को कृपणता त्यागकर मुक्तहस्त से दान करना चाहिए।

बाजार की चाय न पियें। यदि पीना ही है तो कुल्हड़ से पियें चीनी के प्लेट या शीशे के गिलास में नहीं, वे सब उच्छिष्ट रहते हैं इन पात्रों से पीनेवाले और पिलानवाले दोनों ही इस अनाचार से अपमृत्यु शिकार बनकर कालान्तर में श्वानयोनि में जाते हैं।

वैदिक ब्राह्मण या कथावाचक मुँह में पान रखकर वेदपाठ, प्रवचन या अनुष्ठान न करें। पहले या बाद में खा सकते हैं। मुँह के छींटे पड़ने से देवता कुपित होते हैं व अपना भाग ग्रहण नहीं करते। कालान्तर में वे मुख सम्बन्धी गलगण्ड आदि रोग से ग्रस्त रहते हैं। बाजार से पान खाने पर भी हाथ धो लेना चाहिए। मुख में सरस्वती का निवास रहता है। मुख में लहशुन, प्याज, मदिरा जैसी गन्दी वस्तु नहीं रखना चाहिये अन्यथा वह नीचयोनि में जन्म लेता है। अत: शुद्ध सात्त्विक पदार्थों का ही विशेष रूप से सेवन करना चाहिये।

यह सब पुराणों के आधार पर महत्त्वपूर्ण सदाचार के गुण है। इससे आयु की वृद्धि होती है, अपमृत्यु का निराकरण होता है। इसलोक के धन-धान्य से पूर्ण होकर मनुष्य परलोक में सद्गति को प्राप्त होता है।

* यदि तुम सुखी होना चाहते हों तो दूसरों को सुख पहुँचाओ। दूसरे को दु:ख देनेवाला कभी सुखी नहीं रह सकता।
* क्षुद्र मस्तिष्क दुर्भाग्य द्वारा दमित और क्षीण हो जाते हैं किन्तु विशाल मस्तिष्क दुर्भाग्य से ऊपर उठ जाते हैं।
* अच्छा आदमी बनने के लिये सबसे पहले अपने घर वालों से अच्छा बर्ताव करें। वरना आप हमेशा इस भ्रम में रहेंगे कि आप अच्छे आदमी हैं।
* कभी बेकार मत बैठो। काम करो, क्योंकि काम से ही गलती और गलती से अनुभव और अनुभव से ही बुद्धि आती है।
* मूर्ख किसान का भी बीज अच्छे खेत में पड़ जाए तो उसे अच्छी फसल प्राप्त हो जाती है।
* निस्संदेह दान की बहुत प्रशंसा हुई है, पर दान से धर्माचरण ही श्रेष्ठ है।
* सज्जनों की संगति होने पर दुर्जनों में भी सुजनता आ ही जाती है।
* बहुत बार भोजन करने से शरीर की पुष्टि, कीर्ति, उत्साह, प्रयोग और बल में कमी आती है।

✻ यदि तुम अपवित्रता और संसार-भर के पापों से बचना चाहो तो अपना कार्य खूब परिश्रम और चुस्ती से करो। चाहे तुम्हारा काम कितना ही छोटा हो।

✻ जब तक तुम स्वदेश-प्रेम को मानवता से बाहर नहीं खदेड़ देते, तब तक तुम कभी भी एक शान्तिमय विश्व का निर्माण नहीं कर सकते।

✻ प्राणिमात्र के हृदय में प्रेम करने की एक स्वाभाविक शक्ति होती है। वह किसी से बिना प्रेम किये रह नहीं सकता। जिनसे प्रेम हो जाता है, उनमें अपनापन हो जाना स्वाभाविक ही है।

✻ मनुष्य जिससे अधिक बचना चाहता है प्रारब्धवश होकर भी उसे उसी में फँसना पड़ता है। इस पापी मन का रहस्य समझ में नहीं आता, ऊपर से तो यह वासना हीन दिखाई देता है, किन्तु कभी-कभी अत्यन्त भीतर की छिपी वासना प्रकट होकर बलवती बन जाती है।

✻ शास्त्रकारों ने ८-१० वर्ष की लड़की को ही कन्या कहा है। उसे योग्य वर को दान करने का पिता को स्वयं अधिकार है। यदि कन्या की इससे बड़ी अवस्था हो जाय, वह बाल्यावस्था को पार करके युवावस्था में प्रवेश कर जाय तब पिता को उसकी सम्मति से विवाह करना चाहिए।

✻ किसी को मार देना ही हिंसा नहीं है और किसी को जीवित छोड़ देना ही अहिंसा नहीं है। यदि किसी को धर्म भ्रष्ट करके उसे जीवित छोड़ भी दिया, तो वह मरण से भी अधिक दुखदायी है वह अहिंसा सबसे बड़ी हिंसा है। और कोई गाँव में आग दे रहा है, कूओं में विष डाल रहा है, शस्त्र लेकर मारने आ रहा है या स्त्रियों के सतीत्व को नष्ट कर रहा है, तो शक्ति रहते इन पापों का बिना विरोध के चुपचाप सहन करते रहना, उसे इन पापों को करते देखना बड़ी हिंसा है, उसे बिना बिचारे मार देना ही परम धर्म है। ऐसे दुष्टों का वध कर देना अधर्म नहीं परम धर्म है। पाप पुण्य का सम्बन्ध भावना से है।

✻ तप करना कोई पाप नहीं है। अध्ययन करना पाप नहीं है, किसी के धन को बलपूर्वक छीन लेना भी पाप नहीं है। यदि ये ही काम स्वार्थ से प्रेरित होकर अधर्म भावना से किये जायँ तो पाप है।

✻ यदि गृहस्थ में रहकर गृहस्थ सम्बन्धी सभी सुख है, अर्थात धन की कमी नहीं, नित्य किसी न किसी व्यवसाय से धन आता है, घर पर आये हुए अतिथि सुखपूर्वक आश्रय पाते हैं, कोई लौटकर निराश होकर नहीं जाते। शरीर सुन्दर और निरोग है। घरवाली सुन्दर सुशीला, पति परायण और मधुर भाषिणी है, वह वन्ध्या नहीं पुत्रवती है, पुत्र भी सुन्दर सुशील और आज्ञाकारी है, कन्यायें सुन्दरी और कुल परम्परा की मर्यादा में रहनेवाली हैं, घर में नित्य गौ का दूध होता है, किसी के सामने दीन होकर याचना नहीं करनी पड़ती। शत्रुओं से कोई भय नहीं, निंदक लोग निंदा करने में संकोच करते हैं। अपनी बुद्धि धर्म में निरत है। परधन परदारा की ओर चित्त भूलकर भी नहीं जाता। घर में नित्य सुस्वादु भोजन बनता है, दूध-दही-घृत की कमी नहीं। अनुकूल और आज्ञाकारी दास-दासियाँ हैं, सुन्दर लिपे-पुते स्वच्छ भवन, फल फूल वाले वृक्ष, सुन्दर सरोवर हैं, सभी परिवार वालों में परस्पर में प्रेम है, बड़े छोटों से हार्दिक स्नेह करते हैं, छोटे लोग बड़ों का आदर करते है। अन्न, वस्त्र, तथा भोग सामग्रियों की प्रचुरता है, यदि ऐसा गृहस्थ है, तब तो उसमें कुछ सुख का आभास भी मिलता है। और यदि सूकर कूकर की भाँति जैसे तैसे पेट भर लिया दिन रात्रि स्त्री की कर्कशवाणी सुनते-सुनते चित्त सदा खिन्न बना रहे, सन्तान मूर्ख हों नित्य भोजन की चिन्ता बनी रहे, तो ऐसे गृहस्थ से तो जंगली पशुओं के साथ घास फूंस खाकर जीवन बिताना ही श्रेष्ठ है।

✻ जो बिना अनुभव किये सुनकर वैराग्य हो जाता है वह स्थाई नहीं रहता। अवसर आने पर वह नष्ट भी हो जाता है

और जो भली भाँति अनुभव करके, सब ऊँच नीच स्वयं झेलने के अनन्तर वैराग्य होता है, यह स्थाई होता है वह फिर कभी नष्ट नहीं होता।

* विषयों को जितना ही भोगो उतनी तृष्णा बढ़ती जाती है। इसमें सांसारिक सुखों का खोखलापन प्रत्यक्ष दिखाई देता है।

* जिसने कभी मिश्री का स्वाद चख लिया हो और भाग्यवश कुछ दिन के लिये गुड़ खाना पड़े और पुन: उसे मिश्री की स्मृति आवे तब उसे गुड़ तुच्छ प्रतीत होने लगेगा। उसे अपनी भूल पर पश्चात्ताप होगा और पुन: मिश्री प्राप्त करने के लिये प्रयत्न करेगा। नि:स्सङ्गता यतियों के लिये मुक्ति देनेवाली बताई गई है। संसारी लोगों का संग करने से उन्हीं की सी बुद्धि हो जाती है, उन्हीं के से आचरण करने की इच्छा हो जाती है। विषयासक्ति ऐसी प्रबल है, कि योगारुढ़ पुरुष भी इनमें फँस जाता है, फिर साधारण लोगों की तो बात ही पृथक है।

* पदार्थों में सुख या दुख थोड़े ही है। यह तो अपने मन के मानने के ऊपर है। जो स्त्री अब तक प्राणों से भी अधिक प्रिय प्रतीत होती थी, वही यदि अपने प्रतिकूल हो जाय, अनुचित हठ पर अड़ जाय, तो डायन-सी लगने लगती है।

* राजर्षियों के वंश में राजर्षि ही उत्पन्न होते हैं किन्तु कभी-कभी इसका अपवाद भी देखा गया है। फिर भी वंश परम्परा का बड़ा प्रभाव होता है। अधर्म के बाहुल्य से विशुद्ध वंश परम्परा लुप्त हो जाती है स्त्रियाँ स्वैरिणी हो जाती हैं। क्षेत्र की विशुद्धता नष्ट हो जाती है और प्राय: सभी अधर्म परायण पाप करनेवाले, इन्द्रियलोलुप तथा स्वार्थी हो जाते हैं। जब तक वंश की शुद्धि पर ध्यान रखा जाता है, तब तक तो वंश परम्परागत सदाचार चला आता है, जब वंश की विशुद्धि की ओर से लोग उदासीन हो जाते हैं तो प्राय: सभी एक से बन जाते हैं। अपवाद तो सब में ही होता है।

पुत्र के प्रति पिता का कितना प्रेम होता है। इसे पिता के अतिरिक्त अन्य पुरुष अनुभव कर ही नहीं सकते। जो गृहस्थ होकर भी पुत्र-पौत्रवान नहीं है उसका गृहस्थी होना व्यर्थ हैं। और पुत्रवान होकर भी जिनके पुत्र का जीवन सन्देहास्पद है उसका भी जीवन व्यर्थ है। पुत्र हो, स्वस्थ हो, निरोग हो, तथा गुणी और सुशील हो, तभी पिता अपने को कृतकृत्य समझता है तभी उसे पुत्रवान होने का सुख प्राप्त होता है।

* धैर्य की परीक्षा विपत्ति में होती है, सहन शीलता की परीक्षा क्रोध और अपमान के समय होती है और त्याग की परीक्षा दरिद्रता के समय होती है। ये संसारी धन वैभव आते जाते रहते हैं, जिनकी दृष्टि में इन धातुओं के ठीकरों का धर्म की अपेक्षा कुछ भी महत्व नहीं, जो धर्म के लिये सब कुछ त्यागने को तैयार रहते हैं, संसार में उनकी कीर्ति अक्षय रहती है, जो नाना प्रकार के अन्यायों द्वारा इस शरीर का ही पालन-पोषण करते-करते मर जाते हैं, उनके जीवन का क्या महत्त्व। जैसे कमड़, पत्थर, कीट, पतङ्ग, पशु, पक्षी पैदा होते हैं, मरते हैं, वैसे ही वे हैं। धर्म रक्षा के लिये जो दु:ख सहा जाता है वह दु:ख होते हुए भी सुख है। उस वेदना में भी मिठास है और सर्व अभाव में भी आत्मसंतोष है।

* प्राण देकर भी सत्य की रक्षा करनी चाहिये। ब्राह्मण को वचन देकर उसका पालन करना चाहिये, जिस बात की प्रतिज्ञा की हो, उसे सामर्थ्य रहते पूरी करनी चाहिये।

* आदमी में आत्मविश्वास की कमी उसकी योग्यता को बेअसर करती है।

* मस्तिष्क के लिए अध्ययन की उतनी ही आवश्यकता है जितनी शरीर को व्यायाम की।

* पति-पत्नी जब समान होते हैं, प्रेम तभी हुआ करता है, पति धनिक हो, कन्या किसी कङ्गाल घर की हो, या पति दरिद्र का पुत्र हो, पत्नी बहुत धनिक घर की हो तो परस्पर में मनोमालिन्य रहता ही है। पति बहुत पढ़ा-लिखा हो, पत्नी मूर्खा हो, या पत्नी पूर्ण विदुषी हो पति गोबर गणेश हो, तो भी उनमें अनबन रहती है। पति अत्यन्त सुन्दर हो पत्नी कुरूपा

हो अथवा पत्नी अप्सरा के समान सुन्दरी हो और पति भौंड़ा कुरूप हो तो भी पटरी नहीं बैठती। पति अत्यन्त तेजस्वी हो पत्नी सीधी सादी तेजहीन हो, तब भी मन नहीं मिलने पाता। इसलिये सम्बन्ध समान कुल में करना चाहिये। जो लालचवश लड़कियों को बड़े घरों में देते हैं उन बड़े घरों में निर्धनों की लड़कियों का पग-पग पर कैसा तिरस्कार होता है, इसे उन लड़कियों के अतिरिक्त कौन अनुभव कर सकता है। जो विद्वान वर के लोभ से अपनी अनपढ़ पुत्री का बहुत बड़े तेजस्वी विद्वान के साथ विवाह कर देते हैं उन्हें पति से किस प्रकार दूर-दूर रहना पड़ता है, किस प्रकार कभी-कभी सम्बन्ध विच्छेद तक की नौबत आ जाती है। ऐसी घटनायें सनातन से होती आई हैं।

* बड़े पुरुषों से छोटी वस्तु माँगना उनका अपमान करना है, किन्तु यदि माँगनेवाला कपटी हो और उँगली पकड़कर पहुँचा पकड़ने का प्रयत्न करे, तो बड़े लोग संकट में पड़ जाते हैं, उनकी गति साँप छछुन्दर की-सी हो जाती है, न निगल ही सकते हैं और न उगल ही सकते हैं। इसी प्रकार कहकर वचन देकर-न वे हाँ ही कर सकते हैं और न नाहीं कर सकते हैं। किन्तु जो ज्ञानी मनस्वी होते हैं, वे प्राण रहते पण को नहीं छोड़ते, तभी तो उनकी कीर्ति संसार में अमर हो जाती है, वे पराजित होने पर भी विजयी समझे जाते हैं। माँगना सबसे निकृष्ट कार्य है।

* एक तो विशुद्ध धर्म है, जिसमें कुटुम्बियों का, प्राणों का कुछ भी लोभ नहीं। जो यथार्थ छल कपट रहित धर्म है उसी का पालन करना। दूसरा व्यावहारिक धर्म है, हाथ पाँव को बचाना मूँजी को टरकाना। विशुद्ध धर्म में कर्त्तव्य ही प्रधान होता है। हरिश्चन्द्र ने सत्य पालन को ही धर्म समझा था, इसके पीछे उन्होंने राज्य छोड़ दिया, देश छोड़ दिया, स्त्री बेच दी, बच्चा बेच दिया, स्वयं बिक गये, किन्तु धर्म को नहीं छोड़ा। जो व्यावहारिक धर्म का पालन करते हैं, वे तब तक धर्माचरण करते हैं जब तक अपने योग क्षेम में किसी प्रकार का अन्तराय उपस्थित नहीं होता। यदि अपने जीवन पर या अपनी वृत्ति पर व्याघात देखते हैं, तो वे धर्म से कुछ हट भी जाते हैं। नीतिकारों ने उसी धर्म का आश्रय लिया है। उनका मत है कि मनुष्य यदि जीता रहेगा, तो जीवन में सैकड़ों मङ्गलमय धर्म कार्यों को करेगा, देखेगा।

* जो कष्टों से डरता है, वही धर्म को छोड़ता है। जिस सत्य की सदा विजय होती है, जिसे इस बात पर दृढ़ विश्वास नहीं है वही असत्य का आश्रय लेता है। जीव जब प्राणों का सर्वथा मोह छोड़ देगा, जब अपने सिर को सदा हथेली पर रखेगा तभी यथार्थ धर्म का पालन कर सकेगा। यह नश्वर शरीर तो किसी-न-किसी दिन नष्ट होगा ही। स्त्री, पुत्र, बन्धु-बान्धवों से किसी-न-किसी दिन वियोग होना अवश्यम्भावी है। अर्थ संसार में किसके साथ गया है। लोगों ने असंख्यों मुद्रायें एकत्रित की हैं, सबको यहीं छोड़कर चले गये हैं। कुबेर भी कल्पान्त में बदल जाते हैं। काम की सामग्रियों के उपभोग से आज तक कौन सर्वथा तृप्त हुआ है। यश भी संसार में किसका स्थायी रहा है, न जाने कितने ब्रह्मा, कितने इन्द्र बदल गये। इस कल्प के इन्द्रों को छोड़कर अन्य असंख्यों कल्पों के इन्द्रों का कौन नाम जानता है। आजीविका की रक्षा मनुष्य स्वत: करना चाहे तो कैसे कर सकता है।

* नास्तिक किसी बात को संयोग की बात आकस्मिक घटना कहते हैं। आस्तिक इसे भाग्य प्रारब्ध कहते हैं। वास्तविक बात यह है कि भगवान जीवमात्र की आजीविका का स्वयं ही प्रबन्ध करते हैं। जब यही बात है तो अर्थ, काम, यश तथा आजीविका के निमित्त मनुष्य झूँठ क्यों बोले, अधर्म का आचरण क्यों करें?

* परोपकार के कारण प्राप्त हुआ कष्ट, युद्ध क्षेत्र में सम्मुख लड़ते हुए शत्रु के शस्त्र द्वारा हुआ घाव, सुरति के कारण हुई शिथिलता, प्रेम और हर्ष के कारण आये हुए अश्रु ससुराल में दी हुई गालियाँ, पुत्र प्रसव जन्य पीड़ा तथा दान के कारण हुई निर्धनता, यद्यपि ये सब अन्य के देखने में दु:ख से प्रतीत होने पर भी वास्तव में सुख देनेवाले हैं।

* संसार में भावी बड़ी प्रबल है, भवितव्यता होकर ही रहती है। मनुष्य करता किसी उद्देश्य से है फल उसका विपरीत ही हो जाता है।

* जो विपत्ति में अपने साथ रहे वही बन्धु है, वही स्वजन और आत्मीय है। प्राय: परिवारवाले तभी तक साथ देते हैं, जब तक ऐश्वर्य हो। ऐश्वर्यहीन होने पर सभी परित्याग कर देते हैं।

* सच्चा सेवक वही कहलाता है जो अपने स्वामी के सुख में सुखी हो, दुख में दुखी हो। उसके लाभ में अपना लाभ समझे, उसकी हानि में अपनी हानि समझे। उसके हित के लिये प्राणों का मोह परित्याग करके सतत प्रयत्न करता रहे। स्वामी की सेवा में यदि प्राण भी अर्पण करने हों, तो उनका मोह परित्याग करके प्राणों को अर्पण कर दे, स्वामी के शत्रु को अपना शत्रु समझकर सदा उससे युद्ध करने के लिये उद्यत रहे।

* बन्धन दु:ख का कारण है। यदि बन्धन सत्य धर्म का बन्धन है, तो उससे एक प्रकार का सुखद आत्म सन्तोष होता है। संसार में यदि सत्य धर्म के कारण जो दुख होता है, यदि वास्तव में वह दु:ख होता, तो धर्म के लिये युधिष्ठिर, हरिश्चन्द्र, शिवि तथा दधीचि आदि राजर्षि महर्षि इतने दु:ख क्यों सहते। अवधकुलमण्डल दूर्वादल श्याम भगवान राम करुणा की दुखद सरिता क्यों बहाते। कमल से कोमल अपने नग्न चरणारविन्दों को एक वन से दूसरे वन में पैदल ही घूमकर उन्हें कंटकाविद्ध क्यों बनाते। धर्म के लिये सहन करनेवाले कष्ट में भी सुख है, उसमें यश कीर्ति पारलौकिक सुख और सन्तोष सन्निहित है।

* बन्धु वह कहलाता है, जो हमारे सुख-दुख में उन्नति-अवनति में साथ रहे। अपने कुल में उत्सव, मंगल अभ्युदय होने से कुल परिवार वालों को बड़ा हर्ष होता है। इसी प्रकार कुल में कोई दुखद घटना घट जाने पर दुख भी होता है। जिनके सुख-दुख में भली भाँति हम बँधे हों, यही सम्बन्ध का लक्षण है। सम्बन्ध दो प्रकार का होता है। एक देह सम्बन्ध दूसरा पारमार्थिक सम्बन्ध, देह सम्बन्ध तो माता-पिता के सम्बन्ध से हमारी देह माता और पिता दोनों के रजवीर्य से बनी है, अत: माता के सम्बन्धी नाना-नानी, मामा-मामी, मौसी-मौसा तथा इन सबके बाल-बच्चे तथा सम्बन्धी भी सम्बन्धी कहाते हैं। इसी प्रकार पिता के सम्बन्ध से दादा, दादी, भाई, भाभी, बहिन, बहनोई तथा बाल-बच्चे और सम्बन्धी भी परिवार कुटुम्बी होते हैं। अपने देह से जिनका सम्बन्ध है जैसे स्त्री, पुत्र, पौत्र आदि।

* संसार में चार काम अत्यन्त निन्दित बताये हैं। अधर्म पूर्वक द्यूत,ख अधर्म पूर्वक सुरापान, अधर्म पूर्वक मैथुन और अधर्म पूर्वक हिंसा। इन चारों से बढ़कर कोई पाप नहीं। जूए में कोई विशेष दोष नहीं है, किन्तु इसमें एक बड़ा दोष है कि जुआरी सत्य का पालन नहीं कर सकता। उसे झूठ बोलना ही पड़ेगा असत्य ही सब पापों का मूल है। सुरापान में एक ही दोष है उससे मद होता है, मनुष्य मदिरा के मद में अंड-संड बकता रहता है। अपने आपे को भूल जाता है। मैथुन में यही सबसे बड़ा दोष है, कि उससे काम तृष्णा अधिक बढ़ती है। तृप्ति नहीं होती, उपभोग से अधिकाधिक इच्छा प्रबल होती जाती है। शरीर को पुष्ट करने से, माँस के लिये प्राणियों का वध करने कराने से रजोगुण बढ़ता है। मांसाहारी पुरुष सात्विक नहीं रह सकता।

* द्यूत, मदिरापान, कामिनी सेवन और हिंसा इन चारों व्यसनों में क्रम से झूठ, मद, काम और रजोगुण ये एक-एक दोष है, किन्तु ये चारों दोष एकत्रित धन में हैं इन चारों से भी एक अधिक सबसे बड़ा दोष धन में और है, वह यह कि धनी पुरुष मन-ही-मन सब पर सन्देह करता है, लोग भी उससे वैर करने लगते हैं। धनी पुरुष धन को एकत्रित करने में सत्य की रक्षा नहीं कर सकता। उसका उद्देश्य तो धनोपार्जन है, यदि असत्य बोलकर धन मिल जाय, तो वह असत्य भाषण में कभी न चूकेगा। धनी पुरुष प्राय: सुरापी कामी और हिंसक होते हैं। वे किसी से हृदय खोलकर प्रेम नहीं कर सकते। उनके प्रेम में

स्वार्थ छिपा रहेगा, उनके दान में कीर्ति की वासना छिपी रहेगी, यह भावना भी रहेगी, कि इस मेरे दान को दस आदमी जाने, जिससे मेरा व्यापार बढ़े। उनका दान विज्ञापन के लिये है। साधु पुरुषों के समीप ही जायेंगे, तो इसी आशा से कि एक रुपये के फल चढ़ा दें, हमें लाख रुपये मिल जायँ। इतने दिन के साधु के किये जप तप को पैर छूकर एक दिन भोजन कराकर ले लें। उनकी श्रद्धा उन्हीं साधुओं पर होगी, जो पैसा न लेते होंगे। केवल पैर छूने पर ही धन-धान्य, पुत्र-पौत्रों का आशीर्वाद दे दें। उनके सम्मुख जाकर वे अपनी उदारता प्रकट करते हैं।

* क्षत्रिय और ब्राह्मण दोनों मिलकर धर्मकी रक्षा करते हैं, तब धर्मकी रक्षा होती है। ब्राह्मणके बिना क्षत्रियकी वृद्धि नहीं होती और क्षत्रियके बिना ब्राह्मणकी वृद्धि नहीं होती। जब एक दूसरेके साथ अन्याय करने लगते है तब उनमें संघर्ष हो जाता है। संघर्ष होनेसे धर्मकी हानि होती है।

* जहाँ कोई त्रुटि होती है, वहाँ दिखावा ज्यादा होता है। आदमी जब ज्यादा दिखावा करे तो समझ जाना चाहिए कि उसमें कहीं-न-कहीं कोई खोट जरूर है।

* दुष्टको आप चाहे कितना भी दो, वह कभी आपसे प्रसन्न नहीं होगा और आपको अपनी मुट्ठीमें रखेगा।

* संसार में जितना धन-धान्य है, सोना है, स्त्री है, पशु है वह मनको प्रसन्न करनेमें समर्थ नहीं, क्योंकि काम मनको बारम्बार घायल करता रहता है। विषयभोग के द्वारा कामनाकी शान्ति नहीं होती।

* दुष्ट और विश्वासघाती लोग समाज में स्वतन्त्रता के साथ रहेंगे, तो सम्पूर्ण समाज को भ्रष्ट कर देंगे।

* सूकरी वर्ष में तीन-चार बार प्रसव करती है और एक साथ उसके कई बच्चे होते हैं। वे बुरी वस्तुएँ खाकर जीवन बिताते हैं। कोई उन्हें छूता नहीं, सब उनसे घृणा करते हैं। पैदा होते हैं, मर जाते हैं या मार दिये जाते हैं। इसके विरुद्ध सुनते हैं, सिंहनी सम्पूर्ण आयु में एक ही सिंह पुत्र को जनती है, जो जन्मते ही बड़े-बड़े मत्त गजराजों के मस्तकों को विदीर्ण करने का साहस करता है, बिना बनाये वन का राजा बन जाता है। सभी का शिरोमणि बनकर रहता है। आकाश में कितने तारे होते हैं, टिमटिमाते रहते हैं, इतने अधिक होने पर भी वे अन्धकार को दूर करने में समर्थ नहीं होते। जहाँ एक चन्द्रमा उदय हुआ कि सर्वत्र प्रकाश-ही-प्रकाश फैल जाता है, समस्त तारे फीके पड़ जाते हैं। इसलिये चाहे माता एक ही पुत्र को उत्पन्न करे, किन्तु वह दानवीर, ज्ञानवीर, धर्मवीर, शूरवीर या प्रेमवीर हो, यदि इनमें से कोई नहीं है और जो पशु-पक्षी, कीट पतङ्गों की भाँति ही आहार निद्रादि में ही जीवन बितानेवाला हो, तो ऐसे सहस्त्रों पुत्रों को जनने वाली मानव माता में तथा सूकरी कूकरी में कोई अन्तर नहीं हैं।

* दुर्बलों के ऊपर अत्याचार कुछ ही दिनों चल सकता है। जहाँ कोई अपने से बली मिल गया कि सब अमिान नष्ट हो जायगा। क्योंकि संसार में बली-को-बली कहीं-न-कहीं मिल ही जाता है।

* यथार्थ पुत्र वही है जो पिता के प्रारम्भ किये कार्य को पूर्ण करने का सतत प्रयत्न करे। पुन्नामक नरक से पितरों का उद्धार पुत्र ही कर सकते हैं, इसलिये पितर सदा ऐसी मनोकामना करते रहते हैं कि हमारे वंश में ऐसे लोग उत्पन्न हों, जो कभी वंश विच्छेद न होने दें। वंश परम्परा को अक्षुण्य बनाये रखें। इसीलिये सभी सद्गृहस्थ सत्पुत्र की कामनायें करते हैं और पुत्र प्राप्ति के लिये शक्ति भर प्रयत्न करते हैं।

* सब कार्य समय आने पर ही होते हैं। सबका काल निश्चित है। काल भगवान का एक रूप है। प्रयत्न कोई भी कभी भी किसी का भी व्यर्थ नहीं जाता, किन्तु उसका परिणाम अवसर पर ही प्रकट होता है।

* हम सब बातों को प्रत्यक्ष नहीं कर सकते। विश्वास पर श्रद्धा पर ही संसार का कार्य अवलम्बित है। रोगी पग-पग पर

यहाँ तक कि पहिले औषधि के गुणों को मुझे प्रत्यक्ष करके दिखा दो तो मैं सेवन करूँगा। तब तो सम्भव है उसका रोग कभी जाय ही नहीं। रोग जाने के लिये उसे चिकित्सक पर विश्वास करना पड़ेगा। वह जो औषधि दे उसे श्रद्धापूर्वक खाना होगा जैसे पथ्य सेवन को कहे उसे विश्वासपूर्वक सेवन करना होगा। पुत्र माता से आग्रह करे कि पहिले मुझे इस बात को प्रत्यक्ष करा दो कि यही मेरे पिता हैं, तो माँ कैसे प्रत्यक्ष करा सकती है। मैं ही माँ हूँ इसे भी वह तर्क से स्वयं कैसे सिद्ध कर सकती है। पुत्र को माता-पिता और गुरुजनों के वचनों पर विश्वास ही करना होगा। जिसे माँ कहने को कहे वह माँ हैं, जिनको माँ पिता कहलावे वे पिता हैं। गुरु अक्षरारम्भ कराता है। हम बड़े लोगों के विश्वासनीय आप्त पुरुषों के वचनों पर ही विश्वास करके संसार यात्रा में अग्रसर हो सकते हैं। यदि पग-पग पर हम तर्क का ही अवलम्ब लेते रहे, तब तो हम एक पग भी नहीं बढ़ सकते।

✻ विद्या एक ऐसी वस्तु है, जो सबके छोड़ने पर भी नहीं छोड़ती। धन साथ छोड़ देता है, स्त्री भी छोड़कर चली जाती है, स्वजन विजन बन जाते हैं, ऐश्वर्य नष्ट हो जाता है, शक्ति क्षीण हो जाती है, प्रतिष्ठा धूलि में मिल जाती है, सब धन से घट जाता है, किन्तु विद्या धन ऐसा धन है, जो देने से बढ़ता है। विद्या प्राप्त करने के तीन ही उपाय बताये हैं। प्रथम तो विद्या गुरु सुश्रूषा से प्राप्त होती है, गुरु की सेवा करके जो विद्या मिलती है वह फलवती और सर्वश्रेष्ठ समझी जाती है। दूसरा विद्या प्राप्त करने का उपाय यह है कि गुरु को यथेष्ट विपुल धन दे दे। इतना पर्याप्त धन दे कि जिससे उनकी समस्त आवश्यकतायें पूर्ण हो जायँ, यह शारीरिक सेवा न होकर धन द्वारा सेवा है। एक तीसरा विद्या प्राप्ति करने का यह भी उपाय है कि तुम हमें एक विद्या दो, उसके परिवर्तन में हम तुम्हें दूसरी विद्या सिखावें। इस प्रकार आदान-प्रदान से भी विद्या प्राप्त की जा सकती है। इन तीनों के अतिरिक्त विद्या प्राप्त करने का कोई साधन नहीं। छल से प्राप्त की हुई विद्या सफल नहीं होती।

✻ शत्रु बाहर नहीं होता, वह माता के पेट से साथ ही उत्पन्न होता है, सहोदर भाई ही धन और राज्य के लोभ से शत्रु बन जाता है।

✻ **भविष्यता- होनहार-** कभी-कभी सर्वज्ञ मुनियों को भी भ्रम हो जाता है दो प्रकार के सर्वज्ञ होते हैं, एक तो ऐसे होते हैं, जिन्हें सर्वदा ही अखण्ड ज्ञान बना रहता है। दूसरे ऐसे होते हैं जो जब वे बाह्य व्यवहार में लगे रहते हैं, तो उनका ज्ञान सर्वसाधारण पुरुषों के समान होता है, किन्तु जब वे चित्त को समाहित करके ध्यान मग्न होते हैं, तब होनेवाले भूत, भविष्य तथा वर्तमान का समस्त ज्ञान स्थानान्तरण होने लगता है। यह जो शापाशापी होती है ऐसे ही सर्वज्ञ मुनियों द्वारा होती है, जैसा होनहार होता है, वैसे ही बुद्धि बन जाती है, वैसे ही उनके मुख से अकस्मात् शाप निकल जाता है पीछे ध्यानस्त होकर उसके विषय में विचार करते हैं, तो उसके प्रतीकार की अवधि या उपाय भी बता देते हैं। कोई न किसी को शाप दे सकता है न असमय पर अनुग्रह ही कर सकता है। जिसका जैसा समय होता है, उसके वैसे ही सब संयोग जुट जाते हैं। भविष्यता चलकर स्वयं नहीं जाती, उसे ही घेर-फिरकर आ जाती है।

✻ पेट भरने पर धर्माचरण सूझता है। भूखा पुरुष धर्म कर्म सब भूल जाता है।

✻ जिसे जिलाने की सामर्थ्य नहीं, उसे किसी को मारने का भी अधिकार नहीं।

✻ पुत्र यदि योग्य हुआ तो अपने कुल की ही कीर्ति बढ़ावेगा, किन्तु कन्या यदि योग्य पतिव्रता हुई तो वह मातृकुल पितृकुल और पतिकुल तीनों ही कुलों की कीर्ति को विमल बनाती है। इसलिये सभी सद्गृहस्थ भाग्यवती कन्या की इच्छा रखता है।

✻ पिता तो कन्या का पालन दूसरे के निमित्त ही करता है। युवावस्थापन्न कन्या को अधिक दिन घर में रखना उचित नहीं।

✻ यौवन की सफलता इसी में है कि युवती को रतिप्रिय पुरुष प्राप्त हो और पुरुष को सर्वाङ्ग सुन्दर सुलक्षणा, अनुरूपा स्थिर यौवन पत्नी प्राप्त हो।

❋ पुण्य कार्य जितना भी शीघ्र हो सके उतना ही शीघ्र उसे सम्पन्न कर देना चाहिये।

❋ असत् पात्र को दान देने से मनुष्य अग्रिम जन्मों में दरिद्री होता है। दरिद्रता के कारण गृहस्थियों को कितने-कितने दु:ख झेलने पड़ते हैं। जब पेट भरता नहीं तो मनुष्य इस पापी पेट के लिये बड़े-से-बड़े पाप करता है। पापों का फल नरक है ही, पाप करके पुरुष नरक में जाता है, नरक भोगकर फिर किसी अधम योनि में मनुष्य का जन्म होता है, वहाँ फिर पाप करता है, फिर नरक जाता है। इस प्रकार पुन: दरिद्री होकर जन्मता है। पुन: पाप करता है, पुन: नरक जाता है। इस प्रकार यद्यपि दरिद्रता पाप का चिन्ह है, किन्तु पुण्य कार्यों के करते-करते जो दरिद्रता आती है, वह परम पुण्य का फल है। जिस दरिद्रता में तृष्णा, असन्तोष, दु:ख, ग्लानि और अशान्ति है, वह दरिद्रता पाप मूलक है। जिस दरिद्रता में सन्तोष है, किसी प्रकार का दु:ख नहीं, मन में ग्लानि नहीं और एक प्रकार का अपने सुकर्मों पर गर्व है आत्म शान्ति है ऐसी दरिद्रता तो परम पुण्य का फल है।

❋ महत्-पुरुषों के चरित्र महान ही होते हैं। वे जिस कार्य को भी करते हैं उसे सुचारू रूप से करते हैं। उनका हर्ष और कोप दोनों ही व्यर्थ नहीं होते। वे निग्रह-अनुग्रह दोनों में ही समर्थ होते हैं। परोपकार के लिये सब कुछ कर डालना यह साधुओं का स्वभाव होता है। हर्ष-शोक में सर्वत्र समभाव से अवस्थित रहना यही ज्ञानियों का चिन्ह होता है। पति के पीछे, पुत्र प्राण सभी का मोह त्यागकर उन्हीं के पथ का अनुसरण करना, उन्हीं के शरीर के साथ भस्म हो जाना, यह पतिप्राण-पतिव्रताओं का स्वभाव होता है।

❋ हम भोगोंको नहीं भोगते हैं भोग ही हमको भोगते हैं। भोग उतना ही भोगना चाहिए जितनेसे जीवन का निर्वाह हो। भोग तो अपना नाश करनेके लिये है। इन्द्रियाँ कभी भोग से तृप्त नहीं होती। यदि केवल स्वादकी दृष्टि से हम भोग करें, तो जीभ थोड़ी-थोड़ी खुश होती जायगी और पेट नाराज होता जायगा। फिर तो नाड़ी भी नाराज होगी, रक्त भी नाराज होगा, फिर तो प्राण भी नाराज होंगे। जीभको खुश करनेमें हम अपने सारे परिवारको दु:खी कर देते हैं। जैसे कोई परिवारके एक व्यक्तिको प्रसन्न करनेके लिए सबको दु:खी कर दे। इसी प्रकार किसी एक इन्द्रियको प्रसन्न करनेके लिए जब हम भोग भोगते हैं, तो हमारी सारी इन्द्रियोंकी जो शक्ति है, वह क्षीण हो जाती है और वे नाराज हो जाती हैं। तो भोग भोगनेका यह अर्थ नहीं है कि हम अपनी इन्द्रियोंको प्रसन्न करें। मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति विषयों की ओर है। जो मनुष्य सर्वप्रथम अपने वैषयिक प्रकृति को मार नहीं लेता तब तक वह कोई भी महत्वपूर्ण कार्य कर नहीं सकता। अत: प्रकृति पर विजय पाना यह पुरुष का प्रथम कर्त्तव्य है।

❋ मनुष्य धन लुटने से उतना क्रोधित नहीं होता, अपने अपमान से उतना क्रोधित नहीं होता जितना स्त्रियों के वध से, उनके अपमान से क्रोधित होता है।

❋ भूल करना मनुष्य का स्वभाव है। की हुई भूल को स्वीकार कर लेना एवं वैसी भूल फिर न करने का प्रयास करना वीर एवं शूर होने का प्रतीक है।

❋ द्वेष बुद्धि को हम द्वेष से नहीं मिटा सकते, प्रेम की शक्ति ही उसे मिटा सकती है।

❋ बाधाएं व्यक्ति की परीक्षा होती हैं। उनसे उत्साह बढ़ना चाहिए, मंद नहीं पड़ना चाहिए।

❋ दुष्ट को, मूर्ख को और बहके हुए को समझा पाना बहुत कठिन है।

❋ संसार में कोई ऐसी शक्ति नहीं जो उच्च, सरल, सत्य एवं कर्मण्य जीवन के प्रभाव को कम कर दे।

❋ कोई वस्तु सर्वथा हमारी उसी समय हो सकती है, जब वह हमारी प्रसन्नता की वस्तु हो।

❋ काम वासना की इच्छानुसार पूर्ति नहीं होती, तो क्रोध आ ही जाता है।

* प्रेम में धैर्य नहीं। निश्चिंतता नहीं। प्रेमी पग-पग पर शंकित ही बना रहता है। वह न तो पूर्ण आशान्वित ही होता है न सर्वथा निराश ही होता है। आशा निराशा के बीच में वह गोता लगाता रहता है। जब अपना प्रेमी प्राप्त हो जाता है, प्रतीक्षा सम्मिलन में परिणित हो जाती है।

* निर्बल निस्तेज तो बली तेजस्वी के सम्मुख नत हो ही जाता है।

* धर्मसंकट के समय में भी जो विचलित नहीं होते, सब साधन होने पर भी जो विषयों का आदर नहीं करते, अपने गुरुजनों को संकोच में पड़ा देखकर जो संग्रह की इच्छा नहीं करते, वे ही पुण्य श्लोक हैं। संसारी विषयों में आग्रह करना मरण है, अमर कीर्ति के लिये प्रयत्न करना जीवन है। नश्वर की अपेक्षा अविनाशी को ग्रहण करना ही अमरता है।

* भवितव्यता के सम्मुख किसी की कुछ चलती नहीं।

* जो हिजड़े हैं; नपुंसक हैं, अकर्मण्य हैं, आलसी हैं, पुरुषार्थहीन हैं वे ही भाग्य का भरोसा करते हैं।

* कर्त्तव्य परायण वीर पुरुष भाग्य को स्वयं बनाता है। पुरुषार्थ के सम्मुख भाग्य कोई वस्तु नहीं। संसार के प्राणी पुरुषार्थ न करें तो पेट नहीं भर सकता। यों सभी स्वार्थियों के सम्मुख सिर झुका दें सभी की उचित अनुचित बात मान लें, तब तो जीवन एक दिन भी असम्भव हो जायगा।

* आदर्श में और व्यवहार में बड़ा अन्तर होता है। जीवन में पग-पग पर संकट हैं। दुष्ट लोग सर्वत्र शिष्ट पुरुषों को कष्ट देने के लिये तुले रहते हैं, वे अवसर देखते रहते हैं। धन और स्त्री ये दो ऐसी वस्तुएँ हैं कि इन पर सभी का मन चल जाता है।

* यह संसार आकर्षण से ही चल रहा है आकर्षण नहीं तो संसार नहीं। सूर्य पृथ्वी को अपनी ओर खींचते हैं। पृथ्वी सूर्य को अपनी ओर खींचती है, इस खिंचाव में ही दोनों का अस्तित्व है, दोनों स्थिर हैं एक का भी आकर्षण कम हो जाय तो न सूर्य रहे न पृथ्वी और न पृथ्वी पर रहनेवाले प्राणी ही। विश्व का प्रलय हो जाय। पुरुष का स्त्री के प्रति और स्त्री का पुरुष के प्रति आकर्षण स्वाभाविक है, सनातन है, प्राकृतिक है। वैसे तो संसार की सभी वस्तुएँ हमें अपनी ओर आकर्षित कर रही हैं, किन्तु जो शुचि हैं, मेध्य हैं, उज्ज्वल हैं, सुन्दर हैं, वे हमें अत्यधिक आकर्षित करते हैं। जो वस्तु जितनी ही अधिक सुन्दर होगी, उसमें उतना ही अधिक आकर्षण होगा। सौन्दर्य में आकर्षण स्वाभाविक है।

* प्रात:काल का भूला सायंकाल को घर लौट आवे तो उसे भूला हुआ नहीं कहा जा सकता।

* जिसका जिस पर सत्य स्नेह होता है वह उसे निस्सन्देह मिल जाता है। धैर्य चाहिये। सब भाग्य का खेल है। अच्छी सुन्दर स्त्री, आज्ञाकारी सेवक, अच्छे पशु-पक्षी ये सब प्रयत्न से नहीं मिलते। जैसा प्रारब्ध होता है वैसे ही मिलते है।

* विषय भोगों के रहते हुए भी उनका त्याग अनाड़ी-बुद्धिहीन-सनकी लोग करते हैं। आनन्द से खाओ पीओ मौज करो, यही तो जीवन का रस है, इसी में तो आनन्द है। मनुष्य जो भी भोजन, श्रृङ्गार, परिश्रम, विचार करता है स्त्री के लिये उसे प्रसन्न रखने के लिये करता है। स्त्री भी इसके बदले में दर्शन, स्पर्श, सेवा, सत्कार, हँसी विनोद से पुरुष को अपूर्व सुख पहुँचाती है।

* मनुष्यों का मन बड़ा चंचल होता है और विशेषकर एकान्त में युवती स्त्री को देखकर तो दुर्जय शत्रु के समान बन जाता है। कामातुर हुआ मनुष्य बहिन बेटी तक का विचार नहीं करता। ये पुरुष कुत्तों के समान कामी होते हैं। बन्दरों के समान चंचल इनका चित्त होता है। जनसमाज में सबके सम्मुख तो इनका साहस होता नहीं। एकान्त में स्त्री को देखकर ये आत्मविस्मृत हो जाते हैं। ऊपर से माताजी बहिनजी कहते रहते हैं, किन्तु मन में इनके छुरी चलती रहती है। ये सोचते हैं स्त्री अबला है। सीधे से न मानेगी टेढ़े से मानेगी। एकान्त में पुरुष स्त्री के सम्मुख अत्यन्त ही निर्बल बन जाता है।

* जिसने संकल्प पूर्वक़ सब कुछ छोड़ दिया, वही प्रसन्न रह सकता है। भिखारी कभी प्रसन्न नहीं होगा, क्योंकि उसने

छोड़ा नहीं है। वह तो अभाव में ही जीवन जी रहा है। अभाव का जीवन जीनेवाला प्रसन्न नहीं रह सकता। उसे चिंताएं हर क्षण घेरे रहती हैं। जिसने जानबूझ कर छोड़ा है, वह प्रसन्न रह सकता है। ये दो बातें हैं- एक छोड़ना और एक छूटना। जिसे पदार्थ प्राप्त नहीं हैं, वह त्यागी नहीं है। त्यागी वह होता है, जो अपने स्वतंत्र मन से त्याग कर दे। वही प्रसन्न रह सकता है। अभावग्रस्त प्रसन्न नहीं रह सकता। साधन, सुविधा संपन्न व्यक्ति भी प्रसन्न नहीं रह सकता। उसे पैसे की सुरक्षा की चिंता सताती है। वे हमेशा भयभीत रहता है। अभय वही हो सकता है, जिसने स्वेच्छा से त्याग किया है।

❋ साम, दाम, दण्ड, भेद इन उपायोंको बरतिये भी और भगवानका भरोसा भी रखिये। स्वयं तैयारी भी कीजिये और ऐसे मित्र भी बनाइये जो आपके ही सरीखे उद्देश्यवाले हों। ऐसा करनेसे आपको बड़ा प्रोत्साहन मिलेगा और अनायास ही आपका उद्देश्य पूरा हो जायगा। किससे कब सन्धि करनी चाहिये और किससे कब विग्रह, कब काम-क्रोधादि शत्रुओंको बिल्कुल नष्ट किया जा सकता है और कब उनके एक-एक अंग धीरे-धीरे क्षीण किये जा सकते हैं।

❋ भगवान के अवतार का कारण खोजते हैं, तो क्रीड़ा करके अपने जनों को सुख देने के अतिरिक्त कुछ पाते ही नहीं। जो गम्भीर बना बैठा-बैठा आदेश देता रहे, उससे काम तो भले ही हो जाय जनमनोरञ्जन नहीं हो सकता। भगवान को काम तो करना नहीं काम को तो और छुड़ाना है। उन्हें तो हँसना है, हँसाना है, सरसता का प्रभाव बढ़ाना है। इसलिये वे नानावतार लेकर लोगों को शिक्षा देते हैं तुम सदा हँसते रहो, सुखी रहो, निश्चिन्त रहो, घर को बन को एक-सा समझो। अपनी मुसकान की रक्षा करो। विषाद को अपने पास फटकने मत दो। रोने की ही इच्छा हो तो प्रेम के लिये रोओ। इन्हीं बातों को अवतार लेकर भगवान प्रत्यक्ष दिखाते हैं।

❋ जप, तप, संयम सदाचार तो परिश्रम हैं, जो जितना परिश्रम करेगा उसे उतना फल मिलेगा।

❋ संसार में कोई भी ऐसा अक्षर नहीं जो मन्त्र न हो, कोई भी ऐसी वस्तु नहीं है जो औषधि न हो। कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसमें कुछ-न-कुछ योग्यता न हो, किन्तु इन सबको नियमन करना सबसे योग्यतानुसार काम लेना यही कठिन कार्य है। संसार में सब सुलभ है, एकमात्र योजक ही दुर्लभ है। कुछ-न-कुछ काम तो सभी कर सकते हैं। काम कर लेना यह कोई महत्व की बात नहीं है। दूसरों से प्रसन्नतापूर्वक उनकी रुचि रखते हुए काम कराना यही कठिन कार्य है।

❋ इस संसार की स्थिति सहयोग पर मैत्री पर परस्पर के स्नेह पर ही निर्भर है। संसार में सभी सबका सहयोग चाहते हैं। सब काम को सभी नहीं कर सकते। श्रम जीवी श्रम करें, अन्न वस्त्र तथा अन्य जीवनोपयोगी वस्तुओं को उत्पन्न करें, बुद्धि जीवी उन्हें सदुपयोग की शिक्षा दें। उन्हें व्यवहार में सुचारु रीति से वर्तने की शिक्षा दें, इस प्रकार परस्पर के सहयोग से ही समाज का कार्य चल सकता है। यदि समाज में मैत्री भाव न हो, परस्पर में एक दूसरे की सहायता न करें। तो सृष्टि का कार्य ही रुक जाय। सबल दुर्बलों को रहने ही न दें। यदि कोई अपने से अधिक बलवान है, तो पहिले उसे समझावें, ऊँच नीच परिस्थिति का ज्ञान करावें। जब वह अपने से बली की सम्मति को भी न माने तो फिर उसका भेद नीति से भी वध करा देना अन्याय नहीं। क्योंकि ऐसे अभिमानी हठी का वध के अतिरिक्त और कोई उपाय ही नहीं।

❋ काम के फन्दे में फँसकर प्राणी राम को भुला ही देता है। जहाँ काम है, वहाँ राम रहते ही नहीं।

❋ यात्रा वही सफल समझी जाती है जिसमें किसी भगवद्भक्त महात्मा का दर्शन हो जाता है।

❋ एक कायर लाखों को कायर बना देता है, एक वीर लाखों के मन में वीरता के भाव भर देता है।

❋ पुत्र रूप में भी शत्रु उत्पन्न हो जाते हैं, जो राज्य तथा धन के लोभ से पिता तक की हत्या कर देते हैं।

❋ प्रियमिलन में जो विघ्न डालता है, उस पर क्रोध आना स्वाभाविक है। इष्ट की प्राप्ति के लिये किया हुआ क्रोध

अत्यधिक प्रेम का द्योतक है। मनोविकार नहीं। वह स्थाई भी नहीं होता, उसमें हठ भी नहीं, द्वेष भी नहीं। वह एक दूध का-सा उबाल है। जहाँ प्रिय मिलन की आशा दिखायी दी तहाँ वह आवेश समाप्त हो जाता है।

* संसार में सभी कृतज्ञ हों सभी दूसरों के सुख दुख को अपना सुख-दुख समझकर यथाशक्ति सहायता करने की चेष्टा करते रहें, तो ये लड़ाई झगड़े, कलह तथा दण्डादि के व्यापार क्यों हों। जब घर में रहकर भी मनुष्य घर वालों से विरोध रखता है। जाति में रहकर भी जातिवालों की उन्नति नहीं चाहता। देश में रहकर भी जो देश के साथ द्रोह करता है, स्वदेश को अपना देश न समझकर उसकी उन्नति में बाधा डालता है। विश्व में रहकर भी जो विश्व का कल्याण नहीं चाहता ऐसे पुरुषों को समर्थ पुरुष दण्ड देते हैं। उसे बलपूर्वक विवश करके अपना कार्य सिद्ध करा लेते हैं। यह पृथ्वी वीर भोग्या है, जो निर्बल हैं, शक्तिहीन हैं ऐसे पुरुषों के लिये कोई गति नहीं। दुर्बल पुरुष पृथ्वी के भार हैं। दुर्बलों की क्षमा नपुंसकता है। दुर्बल कभी क्षमा कर ही नहीं सकता। जो प्रहार करनेवाले से डरता है वह उसे क्षमा क्या करेगा। क्षमा समर्थ पुरुष ही कर सकते हैं। जिसको दण्ड देने की हममें शक्ति है, उसी को क्षमा किया जा सकता है। अत: संसार में निर्बलों के लिये स्थान नहीं। बली अपनी बात विनय से, नीति से, रोष से, भय दिखाकर तथा डरा-धमकाकर जैसे चाहता है करा लेता है। बली के सामने सभी सिर झुका देते हैं सभी उसे उपाय बता देते हैं, सभी उसकी कर्म सिद्धि में सहायक बन जाते हैं। अकृतज्ञों से प्रीति बिना भय के होती ही नहीं।

* बिना काम के बैठना निवीर्य आलसी लोगों का काम है। जिसके हृदय में कार्य करने का उत्साह है उसे यदि बिना कार्य के बिठा दिया जाय, तो यह मृत्यु से भी बढ़कर है।

* वैद्य अगर रोगी के बुलाने पर नहीं जाता तो उसे पाप लगता है।

* मूल के नष्ट होते ही शाखा प्रशाखा तो स्वयं ही नष्ट हो जाती है।

* वीर पुरुष अपने शत्रु वीर का भी सम्मान करते हैं। वीरता ऐसा महान गुण है, कि वह शत्रु मित्र की अपेक्षा ही नहीं रखता। वीरता में जो बड़ा है वह छोटा होने पर भी बड़ा है और वीरता में जो छोटा है, वह बड़ा होने पर भी छोटा है। वीर को जो जीत ले वह तो विजित है ही, किन्तु वीर के पराजित होने में भी अप्रतिष्ठा नहीं। एक वीरता का गुण सभी अवगुणों को ढक लेता है और एक कायरता का अवगुण सभी गुणों पर पानी फेर देता है।

* संकट के समय आपस में ही वाद-विवाद न करना चाहिये। क्या हुआ उसका विचार न करके अब क्या करना चाहिये इसी का विचार करना है।

* घर में सभी से मतभेद हो जाता है। भाई-भाई में पति-पत्नी में पिता-पुत्र में तथा सुहृद्-सुहृद् में छोटी-छोटी बात पर मतभेद सदा से होते रहते हैं मतभेद होना आश्चर्य नहीं, न होना ही आश्चर्य है किन्तु इसका यह अर्थ तो नहीं कि मतभेद होनेपर हम कुल का परित्याग कर दें। कुल वाले ही नीचता पर उतर आते हैं तो कुल का नाश करा देते हैं। हाथी तब तक नहीं पकड़ा जाता जब तक पालतू हाथी उनमें मिलकर उनके साथ छल नहीं करता या बनावटी हथिनी खड़ी नहीं होती।

* जिस घर में सर्प रहते हो उसमें क्या कोई अपने घर के लोभ से रह सकता है। जिस घर के कूएँ में विष पड़ा हो, तो यह अपना ही कूआ है यह जान बूझकर कोई उसका पानी पी सकता है। अपने ही खेत में विष के वृक्ष उत्पन्न हो गये हों तो उनके फलों को अपने खेत के हैं इस सम्बन्ध से कोई खा सकता है।

* संसार में तीन ही सबसे बड़े पाप हैं, अपने भोजन के लिये परधन और पर स्त्री का छल बलपूर्वक अपहरण और मित्रों के साथ विश्वासघात।

* नीच, दस्यु, आततायी, पर स्त्रियों पर बलात्कार करनेवाले उन्हें अपहरण करनेवाले जितने भी नीच हो उन्हें अपहरण

करनेवाले जितने भी नीच हो उन्हें मार डालना चाहिये।

❋ जीव संसारी व्यवहार में फँसकर पुरानी बात भूल जाता है, फिर भी प्रियजन का संयोग संसार में सबसे श्रेष्ठ सुख है और उनका सदा के लिये वियोग सबसे बड़ा दु:ख है।

❋ वीरों की कभी मृत्यु नहीं होती। वीर तो सदा अजर-अमर बने रहते हैं। वीर की मृत्यु का सोच भी न करना चाहिये। सोचनीय तो वे पामर हैं, जो कायरतापूर्वक खाट पर पड़े-पड़े कष्ट से मरते हैं। जिन्होंने शत्रु का सामना करते हुए वीरतापूर्वक युद्ध करते-करते प्राणों का परित्याग किया है वे तो श्लांघनीय हैं।

❋ जिस वस्तु की अपने को उत्कट अभिलाषा हो वह वस्तु प्राप्त हो जाय तो यही सुख है। मनुष्य अनेक वस्तुओं की अभिलाषा करता है, उनमें से अधिकांश असफल होती है। बहुत-सी वस्तुओं की इच्छा होती है। कुछ दिनों में वह इच्छा निवृत्त हो जाती है। फिर हम सोचते हैं अच्छा हुआ वह वस्तु हमें नहीं मिली नहीं तो उससे बड़ा अनर्थ हो जाता। इस प्रकार बहुत-सी वस्तुओं की इच्छा होती है, कालान्तर में वह निवृत्त हो जाती है, किन्तु जो इच्छा निवृत्त न होकर दिनोंदिन बढ़ती ही जाती हो, जिसकी प्राप्ति की अधिकाधिक अभिलाषा उत्कट ही होती जाती हो, वही इष्ट है। उसी की प्राप्ति के लिये किये हुए प्रयत्न को साधन कहते हैं। साधक को साध्य वस्तु की प्राप्ति की आशा ही परम सुखकर है।

❋ प्रिय स्मरण, प्रिय दर्शन, प्रिय मिलन, प्यारे के साथ सम्भाषण, प्रिय की सन्निधि में निवास और प्रिय की पल-पल की प्रतीक्षा इन सबमें प्रतीक्षा ही श्रेष्ठ है। मिलन तो उसका फल है। प्रतीक्षा बीज है। उत्कंठा से वह सींची जा सकती है। चिरकाल तक सींचते-सींचते जब उसमें मिलन का मधुर फल लग जाता है तो तृप्ति होती है। जिस जीवन में प्रतीक्षा नहीं, उत्कंठा नहीं, मिलने के लिये व्याकुलता नहीं, दर्शनों के लिये छटपटाहट नहीं, हृदय-से-हृदय सटाकर बाहुपाश में बाँधने के लिये सिहरन नहीं, वह जीवन, जीवन नहीं, वह तो जड़ता है। उत्कंठा ही साधन है, प्रतीक्षा में ही समय की सार्थकता है। प्रतीक्षा में स्फूर्ति है, मिलन में शिथिलता है।

❋ विवाह के समय लिए जाने वाले सात फेरे, सात जन्मों तक का सफर साथ-साथ तय करने का वचन दिलवाते हें। विवाह का यह सुखद बंधन मात्र अग्नि के इर्द-गिर्द घूमने की औपचारिकता नहीं, बल्कि एक-दूसरे के साथ कुछ अनकही, अनलिखी बातों का प्रण लेना भी होता है जिसमें जीवन संघर्ष में, सुख-दु:ख में साथ निभाने की, समर्पण से एक-दूसरे का सम्मान करने की, आपस की भावनाओं को समझने की, सबसे महत्वपूर्ण अपने-अपने अहं को त्याग मैं-तू का वाद छोड़ हम शब्द को आत्मसात करने की आवश्यकता होती है। सात जन्मों के सफर का फलसफा पहले ही जनम में बोझ न बन बैठे, रिश्तों में बिखराव न आए व संबंध सतत ऊर्जावान बने रहे।

❋ प्रेम को सर्वोपरि समझ उस पर किसी चीज को हावी न होने दें। पति या पत्नी से नहीं, संपूर्ण परिवार से जुड़ने का मन बनाएँ। यदि संभव हो तो दूसरे की आदतों व व्यवहार से समझौता करने की कोशिश करें।

❋ कभी-कभी स्वयं की गलती मानने का बड़प्पन भी दिखाएँ। एक-दूसरे के दोषों को नजरअंदाज करना भी सीखें।

❋ अपने साथी के गुणों की कद्र करें। छोटे-छोटे कार्यों की प्रशंसा कर प्रोत्साहन बढ़ाएँ। हर समस्या का समाधान चार्च से ढूँढे। एक दूसरे से व्यर्थ की अपेक्षा काम करें। अपने साथी की दूसरे किसी से भी तुलना न करें। एक-दूजे पर भरपूर विश्वास करें। आपसी प्यार व आकर्षण में कमी न आने दें। प्यार में छोटे-मोटे झगड़े होते रहते हैं। उनकी उम्र यथासंभव घटाकर फिर प्रेम से एक होना ही सफल वैवाहिक जीवन का राज है। आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए इच्छाव आकांक्षाओं को सीमित रखें। हर बात में एक-दूसरे की राय लेना व समान महत्व देकर निर्णय लेने की कोशिश करें। इन

सतर्कताओं के साथ सात फेरों के साथ प्रारंभ हुआ सफल सात जन्मों तो क्या प्रत्येक जन्म में इसी साथी की चाह रखेगा। यदी हमारी संस्कृति व सभ्यता का अभिन्न अंग हैं।

* जो हमारे साथ उपकार करे, उसके प्रति कृतज्ञ होना तो स्वाभाविक ही है। जो उपकारी के प्रति कृतज्ञता प्रकट नहीं करते वे तो कृतघ्न तथा अधम कहलाते हैं, किन्तु जो अपकारियों के प्रति भी प्रेम प्रदर्शित करें और उनके अपकारों की ओर ध्यान ही न दें वे ही महान हैं। महापुरुष सदा अपकारी का सम्मान करते हैं। वे सोचते हैं, मेरे कारण इसे दु:ख न हो। इसलिये वे उसका अधिक ध्यान रखते हैं। जैसे अपकारी अपकार करने को विवश है वैसे ही उपकारी उपकार करने के लिये बाध्य है। साधुओं से किसी का दु:ख सहा ही नहीं जाता। अपने कारण कोई संकुचित न हो इस कारण वे हँसकर प्रेम प्रदर्शित करके उसके समोच को छुड़ा देते हैं।

* वस्तु में गुण नहीं होता, उसके द्वारा जो ख्याति और प्रसिद्धि होती है उसी का मूल्य है। मान का पान भी भला।

* प्रजा का रंजन करने से तथा अपनी कीर्ति द्वारा शोभित होने से नृपति अथवा भूपति को राजा कहा गया है। राजा प्रजा के पाप-पुण्य का प्रतीक है। जैसा राजा होगा, वैसे ही प्रजा हो जायेगी। कलि के आरम्भ में सदा राजाओं की श्री नष्ट हो जाती है। वे साधारण मनुष्यों की भाँति परमुखापेक्षी बन जाते हैं। कलि की वृद्धि होने पर शनै: शनै: राजा नष्ट हो जाते हैं। जो अधिक वाकदूक, कूटनीतिज्ञ तथा प्रपंची होता है वही अधिपति बन जाता है। कुछ काल में कोई उससे भी बड़ा धूर्त आ जाता है। वह जनमत की आड़ लेकर उसे हटाकर स्वयं अधिनायक बन जाता है। इसमें धर्म भावना नहीं, गुण ग्राहकता नहीं, परमार्थ का भय नहीं, कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा नहीं। केवल पद प्रतिष्ठा तथा विषयों की लोलुपता से यह सब बातें करते हैं। प्राचीन काल में तो जैसे माता को पुत्र के पालन-पोषण करने का व्यसन होता है, वैसे ही राजाओं को अपनी प्रजा के रंजन का व्यसन होता था, प्रजा की प्रसन्नता के निमित्त वे सब कुछ करने को तत्पर रहते थे। प्रजा को सुखी बनाने के लिये सर्वस्व बलिदान करने को उद्यत रहते थे। तभी तो राजा को नरदेव, नरपति, भूपति, प्रजेश तथा पालक कहते थे। त्रिदेवों में से पालन करना विष्णु का कार्य है। इसीलिये सभी राजाओं में हम विष्णु का अंश मानते थे। भगवान की भाँति उनकी पूजा प्रतिष्ठा करते थे, तथा उनके सुख के लिये सर्वस्व समर्पित करने को उत्सुक रहते थे। प्रजा के ये भाव तो सर्व साधारण राजाओं के प्रति थे। फिर जब साक्षात परब्रह्म परमात्मा ही राजा बनकर अवनि पर अवतरित हो, अपनी महालक्ष्मी के सहित स्वयं ही सिंहासन पर विराजमान होकर प्रजा का रंजन करता हो तो उसके न्याय, धर्म, सदाचार तथा प्रभाव आदि के विषय में तो कहा ही क्या जा सकता है।

* जिनके प्रति हमारा प्रेम होता है, उनकी सुविधाओं के लिये हमें सदा चिन्ता बनी रहती है। इसीसे माता-पिता अपने पुत्र-पुत्रियों से अत्यधिक प्यार करते हैं, उन्हें अत्यन्त लाड़-चाव से पालते-पोसते हैं, उनकी सुविधाओं और मनोगत भावों को जानने के लिये सदा समुत्सुक रहते हैं। बहुत-सी बातें हैं जिन्हें लज्जा तथा संकोच के कारण हम अपने गुरुजनों तथा पूज्य पुरुषों के सम्मुख साक्षात् प्रकट नहीं कर सकते। वयस्क पुत्र-पुत्रियों से विवाह के लिये माता-पिता स्वयं तो चिंतित रहते ही हैं, साथ ही वे उनके स्नेहियों, साथी-सङ्गियों, सखी-सहेलियों के द्वारा यह जानने की चेष्टा भी करते हैं कि इनका झुकाव किस ओर है। हमारे मत से सहमत हैं या नहीं। इस प्रकार वे अपने आश्रितों को सुख भी पहुँचाते हैं और आत्मसमीक्षा भी करते रहते हैं।

* राजाओं के पास प्रजा के मनोगत भावों को जानने का एकमात्र साधन चर ही हैं। सेवक और गुप्तचरों के द्वारा ही वे प्रजा के भावों को जानकर कार्य करते हैं। किन्तु जो सदाचारी सज्जन, राजा प्रजा के प्रति अत्यधिक अनुराग रखते हैं उन्हें केवल चरों की बातों से सन्तोष नहीं होता। वे स्वयं भी छिपकर, वेष बदलकर, प्रजा के लोगों में घुल-मिलकर उनके

मनोगत भावों को जान लेते हैं। उनके भावों को जानकर वे उनकी समीक्षा करते हैं और उसके अनुसार अपने कार्यों में संशोधन परिवर्तन तथा परिवर्धन करते हैं। ऐसे राजा विरले ही होते हैं वे ही प्रजा के सच्चे पिता हैं, वे ही यथार्थ पालक हैं, वे ही प्रजावत्सल हैं। जिसके हाथ में अनेक का सुख-दु:ख जीवन-मरण निर्भर है, उसे इस बात की चिन्ता रखनी चाहिये कि लोगों के मेरे प्रति क्या भाव हैं। लोग मेरे किन कामों को अच्छा समझते हैं। किन कार्यों के कारण उनकी मेरे प्रति अश्रद्धा है। उन्हें सुनकर, समझकर आग्रह और मोह छोड़कर जो अपना सुधार करते हैं, अपने सुख को छोड़कर दूसरों को सुखी करने में प्रयत्नशील रहते हैं वे ही आदर्श हैं, वे ही वन्दनीय, पूजनीय तथा अमर यशवाले पुण्यश्लोक पुरुष हैं।

* जगत् में दुष्ट पुरुष न हों तो सज्जन पुरुषों की सज्जनता प्रकट ही न हो। दुष्ट पुरुषों की उसी प्रकार आवश्यकता है, जिस प्रकार परीक्षार्थियों के लिये परीक्षक की। जैसे कितना भी सुन्दर शरीर क्यों न हो, उसमें कितने भी सुगन्धित पदार्थ क्यों न लेप किये गये हों, मक्खी पहिले उसी स्थान पर बैठेगी जहाँ घाव होगा, मावद लगा होगा। मक्खी को दुर्गन्ध नहीं आती, विष्ठा का क्रीड़ा विष्ठा में ही रमण करता है।

* दुष्ट पुरुष सदा दूसरे के गुणों में भी दोष ही देखा करते हैं। सन्तपुरुषों की बात तो छोड़ दीजिये। नहीं तो जैसे लोक में व्यवसाय, आमिष तथा इन्द्रिय सुखजन्य पदार्थों के प्रति स्वाभाविक झुकाव होता है, उसी प्रकार दूसरों के दोष देखने की प्रवृत्ति मनुष्यों में स्वाभाविक है। परचर्चा में कुछ हासिल नहीं होता, न जाने क्यों वह ऐसा है, वह वैसा है, उसने ऐसा काम क्यों किया, उसे ऐसा न करना चाहिये। इन बातों के करने में मनुष्यों को रस आता है। जो नौकर स्वामी के सम्मुख झुक-झुककर प्रणाम करता है, बात-बात पर श्रीमान्, अन्नदाता, माई-बाप, कहता है उसे ही पीछे देखिये, अपने स्वामी की कैसी आलोचना करेगा- वे बड़े होंगे तो अपने घर के होंगे। हमें उनके बड़प्पन से क्या लेना। वे समझते हैं हमने इसे खरीद लिया है। बुद्धिमान पुरुष इन साधारण लोगों की बातें सुनकर हंसी में टाल देते हैं, उपेक्षा कर देते हैं। इनकी बातों में भी कोई ग्रहण करने योग्य बात होती है तो उसे ग्रहण कर लेते हैं। गुणग्राही सर्वत्र गुण ही देखते हैं और दोषदर्शियों को सब बातों में दोष-ही-दोष दिखाई देते हैं।

* अधिकारों के लिये सभी लड़ते हैं। प्रतिष्ठित बनने की, सुखी रहने की आकांक्षा सभी को है।

* जो कुल के कलह को मिटाने के लिये, शारीरिक सुखों को ठुकराने के लिये महान-से-महान त्याग कर सकता है, वही महापुरुष कहलाता है।

* प्रेम के वियोग का दुख तो प्रेम को और बढ़ानेवाला ही होता है। प्रतीक्षा से, उत्कण्ठा से स्नेह और भी अभिवृद्धि को प्राप्त होता है।

* जो व्यक्तिगत स्वार्थों को आत्मसुखों को सदा त्यागने को उद्यत होता है वही महान् है, वही पूजनीय, वन्दनीय और अनुकरणीय है। उसी का यश अमर होता है। उसी की कीर्ति संसार में सदा के लिये छा जाती है त्याग ही चरित्र को महान् बनाता है।

* कोई भी बात को वैधानिक रूप देकर दबाने की चेष्टा करता हो तो ऐसी बातें दबाने से और भी महत्त्वपूर्ण बन जाती है और दबाने के स्थान में उनका और भी अधिक प्रचार होता है। दमन से उनके प्रचार तथा प्रसार में बल आ जाता है। सत्य बात तो कभी छिपती नहीं, वह तो कभी-न-कभी प्रकट हो ही जाती है। किन्तु त्याग से उसका गौरव और बढ़ जाता है।

* बन्धन तो बन्धन ही है। स्वतंत्रता के समान कोई वस्तु नहीं। स्वतन्त्रतापूर्वक रूखा-सूखा आधा पेट भी आहार मिले तो वह अति उत्तम है और दासता में रहकर चिकनी चुपड़ी भी मिले, ५६ प्रकार के व्यंजन ही क्यों न हो तो भी वे सुखकर नहीं।

* सौन्दर्य को देखकर ही सुखी होना चाहिये। जो सौन्दर्य की सीमा में बाँधकर हठपूर्वक उसे अपनाना चाहता है, उसे सबकी दृष्टि से ओझल करके एकमात्र अपनी ही स्वत्व उस पर जमाना चाहता है, वह लोभी है। लोभ पाप का मूल है। प्रेम में सुख है, मोह में दु:ख है।

* चरित्र सर्वत्र प्राणी की रक्षा करता है।

* हाय, यह संसार कैसा विचित्र है। इसमें विष और अमृत का अद्‌भुत ढंग से सम्मिश्रण है। बहुत से अपने प्रेम से हमें खरीद लेते हैं। आत्मसमर्पण करके मन-से-मन और तन-से-तन मिलाकर एक हो जाते हैं। हमें अपने में अन्तर्भूत कर लेते हैं। दो तन होने पर भी उनमें एक ही क्षण संचार करते हैं। इसके विपरीत कुछ ऐसे भी मिल जाते हैं, जिन्हें हमारा यह प्रेम अखरने लगता है। वे दो हृदयों को एक में मिलने देना नहीं चाहते।

* लोकरंजन कितना क्रूर कठिन कार्य हैं। इसमें आत्मा का ही हनन नहीं करना पड़ता अपितु सर्वस्व बलिदान करना होता है। लोकापवाद करनेवाले नहीं सोचते, जिनकी हम निन्दा कर रहे हैं उनके हृदय में इन बातों को सुनकर कितनी ठेस लगेगी।

* संसार में जिनकी अपकीर्ति फैली है वह जीवित ही मृतक के समान है।

* यश ही जीवन है। संसार में जिसका अपयश है, जिसे सब लोक धिक्कारते हैं, जिसकी सब निन्दा करते हैं, जिस पर सब थूकते हैं उसका जीवन धिक्कार है।

* जब मनुष्य पर विपत्ति आती है तो अकेली नहीं आती। सभी बातें उसके विरुद्ध हो जाती है। अपने पराये बन जाते हैं।

* यह राज्य सिंहासन ऐसी दूषित वस्तु है कि इसकी रक्षा के लिये मनुष्य को सबको छोड़ना पड़ता है।

* जिसके कारण सभी लोगों को त्रास हो, जिससे धर्म की तथा सदाचार की हानि ही श्रेयस्कर है।

* छोटों का धर्म है, वे बड़ों के बीच में बोले नहीं। जो पूछे उसका उत्तर दें, वे जो आज्ञा दें, उसका पालन करें। जो चंचलता वश बुद्धिमानी दिखाने को या किसी अन्य कारण से बड़ों के बीच में बोलकर अपना प्रभाव जताते हैं, वे पीछे पछताते हैं। बड़े लोग अपने छोटों पर वात्सल्य स्नह रखते हैं और शक्ति भर उनकी इच्छा को रखते हैं। बड़ों का बड़प्पन इसी में है कि छोटों की इच्छाओं की पूर्ति करें और छोटों का कर्त्तव्य यही है कि बड़ों की बातों को बिना वाद-विवाद के मानें। तभी संसार का कार्य सुचारू रीति से चल सकता है। तभी आर्य मर्यादा का पालन हो सकता है।

* मत्त, प्रमत्त, उन्मत्त, असावधान, विरथ, रण से भागते हुए, सोते हुए, शस्त्रविहीन तथा दूसरों के साथ समर में संलग्न ऐसे सैनिकों के साथ शूरवीर समर नहीं करते। यह छल युद्ध है। आर्य लोग ऐसे युद्ध की निन्दा करते हैं। अधर्म से युद्ध करना निन्दनीय कार्य है।

* सभाओं में वृद्धों का सम्मान किया जाता है। वह सभा, सभा ही नहीं मानी जाती, जिसमें वृद्ध पुरुष न हों और वे वृद्ध, वृद्ध ही नहीं माने जाते जो सभा में आकर भी लोभ, मोह अथवा संकोचवश सत्य बात को नहीं कहते।

* स्वामी तो केवल आज्ञा दिया करते हैं। युद्ध सेवक करते हैं और उसके फल-भोगी स्वामी होते हैं। सेना-रूपी विशाल वृक्ष की राजा जड़ है, सेनापति स्कन्ध हैं, छोटे सेनापति छोटी डालियाँ हैं और सैनिक फूल-पत्ते हैं। विजय उसका फल है, जड़ भूमि में छिपी रहती है, उसे कोई नहीं देख सकता। भूमि में छिपी-छिपी ही उसके द्वारा समस्त वृक्ष का पालन-पोषण होता है। स्कन्ध-शाखा तथा फूल-पत्तों के कट जाने पर उसमें से दूसरी नई निकल आती है और सघन बन जाता है, किन्तु जड़ के कटने से तो सम्पूण वृक्ष ही नष्ट हो जाता है।

* जो परिवारका श्रेष्ठ पुरुष होता है, वह परिवार के सभी स्त्री पुरुषों का समान रूप से ध्यान रखता है। मुखिया होकर जो

विषम बर्ताव करता है, न्यायाधीश होकर जो भेदभाव करता है, वह श्रेष्ठ नहीं, सर्वमान्य नहीं। जैसे मुख खाता तो अकेला है, किन्तु पालन समस्त अंगों-प्रत्यङ्गों का करता है इसी प्रकार परिवार का प्रधान लोक दृष्टि में तो सभी सम्मान का वह स्वत: ही उपभोग करता है किन्तु वह वास्तव में अपने लिये कुछ भी नहीं रखता। सभी परिवारवालों को उचित ढंग से सब बाँटकर स्वयं उससे पृथक् रहता है।

* युद्ध में वीरता ही वीर का प्रत्यक्ष परिचय करा देती है।

* कालस्वरूप भगवान का विधान पहिले से बना रहता है। कब तक इस प्राणी को पृथ्वी पर रहना है कब इसका किस स्थान में, किसके द्वारा, कैसे किस समय पर अन्त होना है। ये बातें सहसा नहीं हो जाती। जन्म से पहिले प्रारब्ध बन जाता है। प्रभु भी अवतार लेने के पूर्व ही निश्चय कर लेते हैं, कितने दिन अवनि पर रहना है कहाँ-कहाँ पर क्या कार्य करना है। कब अपनी लीला को संवरण करना है। ये सब तो उनकी सुनिश्चित योजनायें हैं। जैसे बड़े आदमियों का भोजन का, शयन का, भजन-पूजन का सब समय बँधा रहता है। उन्हें स्मरण रहता है, फिर भी सेवकों का यह कर्त्तव्य होता है वे स्वामी को स्मरण दिलाते रहें। क्योंकि सेवा करना तो सेवक का धर्म है। सेवक आज्ञा नहीं देता, शिक्षा नहीं देता, आग्रह नहीं करता।

* मनुष्य ईर्ष्या, धन और प्रतिष्ठा के लिये ही किया करता है। अच्छी कुलीन स्त्रियाँ हमारे ही वर्ग के लोगों को मिलें, सम्पूर्ण भूमि के उपभोक्ता हम ही हों, सबसे श्रेष्ठ हम ही समझे जायँ। ये भाव प्रभावशाली व्यक्तियों के होते हैं। जो इनमें विघ्न डालता है, भाग बटाना चाहता है, अपना भी अधिकार जमाना चाहता है तो दूसरे दल के लोग उसका अन्त कर देना चाहते हैं। उन्हें पकड़कर कारावास में बन्द कर देते हैं। बहुतों के प्राण ले लेते हैं। जिसने दीनता धारण कर ली है, अपन को चराचर का सेवक माने बैठा है, उससे कौन विरोध करेगा। इसलिये भगवद्भक्ति में सभी का अधिकार है। सब काल में सब दशाओं में सभी लोग सदा भगवद्भक्ति कर सकते हैं। स्वर्ग तो एक प्रकार की प्रतिष्ठा है। वह भी बन्धन है। भगवान तो बन्धन को काटनेवाले हैं। भगवान के सभी कार्यों में सभी का हित छिपा रहता है।

* **काम-** मनुष्य जब काम वश हो जाता है तो अपना हित अनहित कुछ भी नहीं सोचता। जिस पर आसक्ति हो जाती है, उसे पाने का प्रयत्न पुरुष प्राणों का पण लगाकर करता है। पतंग का दीपक की लौ से कोई कल्याण थोड़े ही होता है, किन्तु उसकी इसमें आसक्ति है। प्राणों का मोह छोड़कर उसका आलिंगन करता है और अपने आपको भस्म कर देता है।

काम के वश होकर किस कामी ने सुख पाया? रावण काम के अधीन होकर सीताजी को हर ले गया इसके फलस्वरूप वह कुल सहित नष्ट हो गया। इन्द्र ने काम वश होकर अनुचित कार्य किया, जिससे उसका पद अस्थाई हो गया, शरीर विकृत बन गया, न जाने क्या दुर्दशा हुई। नहुष काम वश होकर स्वर्ग के साम्राज्य से च्युत होकर सर्प बन गया। चन्द्र काम वश होकर कुष्टि हुआ। ब्रह्माजी को कामवस हरिन बनना पड़ा। शिवजी को लाज छोड़कर मोहनी के पीछे दौड़ना पड़ा, विष्णु को पाषाण बनना पड़ा। भगवान ने इस काम को उत्पन्न करके प्राणियों को काल के अधीन कर रखा है। यदि काम को जीत ले तो उसका काल कुछ कर ही नहीं सकता। विन्दुपात ही मरण है, विन्दुधारण ही जीवन है। काम-वेग ऐसा प्रबल होता है कि उस समय बुद्धि ठिकाने नहीं रहती। इन्द्रियाँ परवश-सी हो जाती हैं। चित्त इतना प्रबल वेगशाली बन जाता है कि विवेक कुछ काम नहीं देता। प्राणी विवश हो जाता है, आत्म विस्मृत बन जाता है। इन्द्रियों का विषयों के साथ जहाँ संसर्ग हुआ कि फिर मन खो जाता है। जो आदमी जितना शक्तिशाली होता है वह उतना साहस का कार्य कर सकता है, योगी जब योग से भ्रष्ट होकर काम के चक्कर में फँसता है तो वह जितनी निर्लज्जता से कामोपभोग करता है, उतनी निर्लज्जता से साधारण आदमी नहीं कर सकता। विद्या, धन, योग, सामर्थ्य तथा अन्य शक्तियों से युक्त पुरुष साधारण

आदमियों से अधिक साहस का कार्य करता है। ऐसे पुरुषों को दण्ड भी अधिक से अधिक देना चाहिये।

* एक आदमी है, जो नियम विधान नहीं जानता, उससे यदि अपराध हो जाय तो वह क्षमा भी किया जा सकता है किन्तु, जो स्वयं विधान विशारद है, सभी नियम सदाचार को जानता है, यदि वह कोई अनुचित साहस करता है तो उसे अधिक-से-अधिक दण्ड देना चाहिये।

* दो समान शील व्यक्ति मिलते हैं तो परस्पर के सत्संग से बोध उत्पन्न होता है, दोनों को ही सुख होता है। ज्ञानी, ज्ञानी की खोज करता है, व्यसनी, व्यसनी को। समान धर्म हुए बिना सत्संग सुख नहीं होता। इष्ट और मन के बिना मिले, अपनापन नहीं होता वाद-विवाद में भले ही कड़े शब्दों का प्रयोग हो जाय, किन्तु भावना दोनों की ही शुद्ध रहनी चाहिये। क्योंकि ज्ञानी पुरुष और वीणा छेड़ने से आघात करने से-ही सुख देते हैं। छेड़ते-छेड़ते वे मिल जायँ एक स्वर हो जायँ, तो ब्रह्मानन्द की प्राप्ति हो जाती है।

* गुणग्राहिता एक ऐसा गुण है कि वह सबमें नहीं होता। जिसमें गुण ग्रहण करने की प्रवृत्ति होगी वह संसार में किसी से द्वेष न करेगा। अज्ञानवश जब हम असत वस्तु को सत् समझकर इसमें मिथ्याभिनिवेश कर लेते हैं, तभी किसी को शत्रु मान लेते हैं किसी को मित्र। जिसके प्रति हमारे मन में शत्रुता हो जाती है तो उसके गुण भी दोष ही दिखाई दने लगते हैं, द्वेषवश हम उसके शुभ कार्यों में भी सम्मिलित नहीं होते।

* आततायी शत्रु का वध कर देना धर्म संगत है।

* व्यक्ति की पूजा उसके गुणों से होती है। रूप, धन, ऐश्वर्य, कुल आदि से क्षणिक प्रतिष्ठा भले ही हो जाय, किन्तु आदरभाव गुणों के ही द्वारा होता है। अपने पास कोई किसी वस्तु की याचना के निमित्त आवे, उसकी इच्छा पूर्ण करना सबसे बड़ा शुभ कार्य है, किन्तु सांसारिक इच्छा पूर्ति से भी बढ़कर सर्वश्रेष्ठ कार्य है अभयदान। यह प्राणी मृत्यु के भय से भयभीत हुआ। इधर-उधर भटकता रहता है। मृत्यु का भय अज्ञान से होता है, जो इस अज्ञान को मेटकर ज्ञान दान देता है, वही सच्चा दानी है। जिस कुल में, जिस वंश में ऐसे ज्ञानी हो गये हैं, वह कुल धन्य है, वह वंश सर्वश्रेष्ठ है। उस वंश में उत्पन्न होनेवाले सभी पुरुष पूजनीय हैं, आदरणीय हैं और श्लांघनीय है।

* एक बीज से बहुत-से बीज उत्पन्न होते हैं और उन सब बीजों में से प्रत्येक बीज में भी उतने ही बीज उत्पन्न करने की शक्ति होती है। यह बात नहीं है कि एक बीज से १०० बीज उत्पन्न हुए तो वह शक्ति १०० स्थानों में बँट जाय। शक्ति सर्वत्र परिपूर्ण है। एक अग्नि की चिनगारी से बहुत सी अग्नि हो गई। उससे उत्पन्न प्रत्येक चिनगारी में उतनी ही शक्ति है। एक दीपक से सहस्र दीपक जलाये गये। उन जले हुए दीपकों में से प्रत्येक में सहस्रों दीपकों को जलाने की शक्ति विद्यमान है। शक्ति अनादि है, उसकी उत्पत्ति नहीं, नाश नहीं। काल, कर्म और गुणों के सम्बन्ध से केवल आविर्भाव और तिरोभाव होते रहते हैं। किस बीज से कौन बीज उत्पन्न हुआ- किस जल-तरंग से कौनसी तरंग उत्पन्न हुई- इसका निर्णय कठिन हैं।

* भोजन, भजन और रति का सुख स्वाद एकान्त में ही मिलता है।

* जहाँ सर्वस्व नाश हो रहा हो वहाँ पण्डित जन आधे पर ही संतोष कर लेते हैं।

* दूसरे आदमी के सम्मुख अपने आन्तरिक गम्भीर रहस्यमय भाव व्यक्त नहीं किये जा सकते।

* जो लोग मनुष्य का शरीर पाकर किसीका सत व धर्म बिगाड़ देवें उनको अनेक जन्म नरक भोगना पड़ता है।

* जिसके कुपूत सन्तान उत्पन्न होती है उसका संसार में यश व धर्म नहीं रहता।

* लोग चाहते हैं सुख की प्राप्ति आर दु:ख का परिहार हो। सुख मिले और दु:ख टले। इसी उद्देश्य से भिन्न-भिन्न कर्म शुरू

कर देते हैं। लेकिन परिणाम उलटा ही दिखता है। उन कर्मोंसे दु:ख ही मिलता है और सुख खोया जाता है। कर्म किया था सुख के लिए, सांसारिक कार्य किया, घर बनाया, खेतीबारी शुरू की, नौकरी की। सब कुछ दु:ख-निवारण और सुख प्राप्ति के लिए किया। विषयासक्त पुरुषोंद्वारा सुखके लिये किये गये सभी प्रयत्नों के परिणाम कल्पना से विपरीत होते हैं।

❋ शान्ति घर ढूंढने के लिये निकली पर उसे कहीं जगह नहीं मिली। जहां भी वे जाती तो उसे अशान्ति देखने को मिलती है।

❋ विवेक के समान गुरु नहीं और चित्त के समान चतुर शिष्य नहीं।

❋ जो लोग हमसे नीचे हैं, उनके लिए सामान्यत: तिरस्कार होता है। उनके लिए दयाभाव हो। जो अपनी बराबरी के हैं, साथी हैं, उनके लिए स्पर्धा रहती है। उनके साथ मैत्री होनी चाहिए। जो लोग हमसे आगे बढ़ चुके हैं, बढ़े हैं, उनके लिए मत्सर होता है। उनके लिए प्रथम यानी आदर होना चाहिये।

❋ जहाँ स्वच्छता होती है वहाँ चित्त प्रसन्न होता है और चित्त प्रसन्न होनेपर बुद्धिमें उत्तम विचार आते हैं।

❋ कष्ट सहन करने की आदत बच्चोंमें डालनी चाहिए। जो पिता अपने बच्चों के दुश्मन होते हैं वो पैसा कमाकर बच्चों के लिए रख देते हैं। उससे बच्चा बेवकूफ बन जाता है। बच्चेको विरासत में एक कौड़ी भी नहीं देनी चाहिए। बल्कि उन्हें अच्छी विद्या और शिक्षा देनी चाहिये। उन्हें कष्ट पाने का मौका देना चाहिए। जो कष्ट करके विद्या प्राप्त करता है वह जीवन में कभी नहीं हारता। उदाहरण- जयप्रकाश नारायण विद्या प्राप्ति के लिए अमेरिका गये। वो साथ में पैसा लेकर नहीं गये थे। उन्होंने मजदूरी की, होटल में काम किया, खेतों में काम किया, पैसा कमाया और फीस देकर अध्ययन किया। उनके जीवन में पुरुषार्थ की प्रेरणा पायी जाती है।

❋ बुद्धिमान को चाहिए कि जिस भाँति भी हो सके उस समय मृत्यु के अवसर को टाल दे। अपनी अनेक युक्तियों का प्रयोग करे। यदि फिर भी मृत्यु न टले तो प्रयत्न न करने का दोष नहीं रहता है।

❋ जीवन से प्यारी जीविका होती है। यह लोकोक्ति सत्य है। जीविका के लिये प्राणी जीवन को हथेली पर रखकर कार्य करते हैं। अगाध समुद्र में जाते हैं, जहाँ कि हमें कुछ आये हो, वहाँ पग-पग पर मृत्यु का भय है। जीविकोपार्जन के लिये सहस्त्रों हाथ नीचे खानों में जाकर काम करते हैं, जहाँ साक्षात् मृत्यु मुख फाड़े ही खड़ी रहती हैं। धनिकों को प्रसन्न करन के निमित्त मतवाले साँड़ों से, सिंहों और हाथियों से मनुष्य लड़ता है। इसीलिये कि ये धनी प्रसन्न होकर कुछ दे देंगे। धन के लिये पुरोहितों को यजमानों की किस प्रकार हाँ-में-हाँ मिलानी पड़ती है, उनके पीछे दौड़ना पड़ता है, जीविका को प्राण जीवन से श्रेष्ठ समझते हैं, जहाँ जीविका का प्रश्न आ जाता है, वहाँ प्राणी लड़ मरते हैं पात हो जाते हैं।

❋ सृष्टि का नियम है कि जन्म, मरण के लिये होता है, उन्नति, अवनति के लिये और संयोग, वियोग के लिए।

❋ कोई बहुमूल्य प्यारी वस्तु हमारे समीप है, उसके सेवन से नित्य ही हम अनुभव करते हैं। वह कदाचित् खो जाय, उसकी प्राप्ति के लिये प्रबल प्रयत्न करते रहें और फिर वह मिल जाय तो उसकी प्राप्ति में पहिले से कई गुना आनन्द आता है। खोई वस्तु के मिल जाने के एक अनिर्वचनीय सुख होता है।

❋ यह कैसी कठोर क्रीड़ा है। विधि की कैसी विचित्र विडंबना है। जिसे हम हृदय से प्यार करते हैं, उससे परिस्थितियों के कारण मिल नहीं सकते। दो हृदय भाग्यवश पृथक्-पृथक् तड़पते रहते हैं। दो प्रेमी मिलकर एक साथ नहीं रह सकते। काल-चक्र एक दूसरे से पृथक् करके दोनों को दु:खी बनाता रहता है।

❋ तेज तभी तक रहता है, जब तक उसके मन में कोई चाह न हो। चुड़ैल की चाह तेज का सर्वनाश कर देती है। एक

प्रबल काम सभी सद्गुणों को नष्ट कर देता है। कोई स्त्री है, उसने सभी शास्त्र पढ़े हैं, बड़े-बड़े विद्वान उससे शंका समाधान कराने आते हैं, बड़ी भारी तपस्विनी हैं, यथेष्ट दान भी देती है, निरन्तर शास्त्रों का अभ्यास करती हैं, सर्व संग छोड़कर एकान्त में वास करती है, मौन रहती है। इतना सब करने पर भी यदि उसका चित्त किसी युवक में फँसा है तो उसके सभी साधन व्यर्थ हैं। इसी प्रकार कोई भी साधक, कितना भी बड़ा गुणी, पण्डित, कलाकार, तपस्वी, विद्वान, एकान्तसेवी तथा मौनी क्यों न हो, यदि उसका चित्त किसी चंचला-चपला मदिरेक्षणा ने चुरा लिया है तो उसके साधन-भजन उसी प्रकार व्यर्थ हैं, जिस प्रकार बुझी अग्नि की राख में हवन करना व्यर्थ है।

* असत् में कभी सत् रह सकता है? मिट्टी के पात्र में सिंहनी का दूध ठहर सकता है क्या? कोई कहे कि हम इस शरीर से प्रेम करते हैं, इसमें सौहार्द्र रखते हैं तो यह मूर्खता है। शरीर बनता है भौतिक पदार्थों से; जो क्षणभंगुर है, नाशवान है, परिणामी है। प्रेम, सौहार्द्र, आदि दिव्य अलौकिक हैं। देह में ये कैसे रह सकते हैं? कोई कामिनी समझे, अमुक स्त्री के मुख में अत्यन्त सौहार्द्र है तो यह सबसे बड़ी मूर्खता है। जिस प्रकार तिमिर और प्रकाश साथ नहीं रह सकते, उसी प्रकार दुर्गंधि और मल-मूत्र से भरा शरीर और प्रेम साथ नहीं रह सकते। प्रेम अप्राकृतिक वस्तु है, अलौकिक है; उसका शरीर से क्या सम्बन्ध? यह सब अविद्या के कारण ही ऐसा होता है।

* महापुरुषों के चरणों का आश्रय ग्रहण करने से प्राणी सभी दु:खों से छूट जाता है। मनुष्य क्रुद्ध हो गया हो; भूत, प्रेत, पिशाच, पितर अथवा देवता क्रुद्ध हो गये हो, औरों की तो बात ही क्या, भगवान भी यदि क्रुद्ध हो गये हों, और प्राणी महापुरुषों की शरण में जाय तो सभी का क्रोध शान्त हो जाता है, सभी प्रकार के शापों का अन्त हो जाता है।

* क्षमा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं निर्बल में क्षमा नहीं होती। बलवानों का भूषण क्षमा ही है। समर्थ होने पर भी अपकारी का जो मन से भी अपकार न सोचे, वही क्षमावान है।

* कभी-कभी मनुष्य बड़े धर्म-संकट में पड़ जाता है। जो अपने पूज्य हैं, माननीय आदरणीय हैं; वे ही अपने समीप आकर कोई अनुपयुक्त अनुचित प्रस्ताव करें तो न तो उनसे हाँ कहते बनता है, न ना। किसी युक्ति द्वारा उन्हें गोल मटोल उत्तर देना पड़ता है यदि वे ऐसे ही सट्ट-पट्ट हुए, तब तो उस उत्तर के चक्कर में पड़कर चुप हो जाते हैं और यदि सामर्थ्यवान बुद्धिमान् हुए तो सब कुछ समझकर उस असंभव बात को भी संभव करके अपने अद्भुत सामर्थ्य का परिचय देते हैं। उनसे छल नहीं चलता, और उनके सामने सिर झुका ही देना पड़ता है।

* पहले देखने या सुनने से मन दूषित होता है, मन के दूषित होने से भाव दूषित होते हैं, भाव दोष से इन्द्रिय संसर्ग की इच्छा होती है। अवैध अंग-संग होता है, जिससे अवैध सन्तति होती है। अवैध सन्तति की प्रवृत्ति सदा व्यभिचार और कदाचार में ही बहुत बड़े पाप समझे जाते थे। मानसिक पापों के भी बड़े कठिन प्रायश्चित होते थे। पूर्वकाल में मानसिक व्यभिचार शारीरिक व्यभिचार से कम नहीं समझा जाता था।

* मनुष्य को अपने मन पर विश्वास नही करना चाहिये। सदा सावधानी से सदाचार पर दृष्टि रखनी चाहिये। मनुष्य निर्लज्ज और सा ही प्राय: रूखे स्वभाव का होता है।

* जिसके हाथ में क्षमा-रूपी शस्त्र हैं, उसका शत्रु कभी कुछ बिगाड़ ही नहीं सकते। क्षमा ही क्षमाशीलों का सर्वोत्तम अमोघ अस्त्र है। जो अपराध को क्षमा न करके उसका बदला लेते हैं, वे अपराध की श्रृंखला को और सुदृढ़ बनाते हैं। हिंसा से हिंसा ही बढ़ती है। इसी से, हिंसा से क्षमा को श्रेष्ठ कहा है। किन्तु क्षमा सबलों का भूषण है, निर्बलों के लिये तो वह दूषण है। जैसे निर्बल आदमी शस्त्र चला नहीं सकता, उसके शस्त्र से शत्रु ही लाभ उठाते हैं, उसी प्रकार निर्बल क्षमा नहीं कर

सकता। उसकी क्षमा कायरता है। उससे दूसरे लाभ उठावेंगे और उसे मूर्ख बनाकर हँसेंगे, शान्त-स्वभाव, सर्वसमर्थ, ज्ञानी ब्राह्मण ही क्षमा का आश्रय ले सकते हैं। युद्धोपजीवी क्षत्रिय को तो शठे शाठ्य समाचरेत् की नीति का अवलम्बन करना ही श्रेयस्कर है। यदि क्षमा कोई कर सके, तब तो सर्वश्रेष्ठ ही है। उपकारी के प्रति तो सभी प्रेम प्रदर्शित करते हैं। अपकारी के अपराध की ओर कभी ध्यान न देना ही क्षमा है।

* बलाबल करनेवाला काल ही है। काल जिसके अनुकूल होता है, सभी परिस्थितियाँ उसके अनुकूल बन जाती हैं। जब काल प्रतिकूल होता है, तब अनुकूल भी प्रतिकूल हो जाते हैं। कार्यकाल बीतने पर वस्तु का महत्त्व भी चला जाता है।

* जब तक कोई अधिकारी अधिकार के पद पर प्रतिष्ठित रहता है, तब तक उसका सभी बड़ा मान करते हैं, उसका स्वागत सत्कार करते हैं। जहाँ वह उस पद से पृथक हुआ कि फिर वहाँ उसकी कोई बात भी नहीं पूछता। प्रभाव सब समय एक सा नहीं रहता। इसीलिये विवेकी पुरुष प्रभाव देखकर किसी के बड़प्पन छोटेपन का निर्णय नहीं करते। बड़प्पन में तो सदाचार ही प्रधान है।

* अध्यवसायी, सच्ची लगनवाले व्यक्ति के लिये संसार में असम्भव कुछ नहीं। जो अपने संकल्प में दृढ़ है, जो किसी से डरता नहीं, विपत्तियों से घबराता नहीं, विघ्नों के आने पर निराश-निरुत्साह नहीं होता, कार्य सिद्ध न होने पर हताश नहीं होता, जो अपने कार्य की पूर्ति तक प्रयत्न से पराङ्मुख नहीं होता, सफलता उसकी चेरी बन जाती है, विजय उसके पैरों में आकर लोटती है। वह कभी पराभव को प्राप्त नहीं होती। उद्योगी पुरुषसिंह को ही विजय श्री वरण करती है।

* संसार में और वस्तुएँ तो सुलभता से प्राप्त हो सकती हैं, किन्तु उत्तम अतिथि की प्राप्ति बड़े सौभाग्य से होती है। वे ही आश्रम धन्य हैं, जिनमें अतिथियों का निरन्तर स्वागत-सत्कार होता है और जहाँ श्रेष्ठ-श्रेष्ठ पुरुष आतिथ्य ग्रहण करते हैं।

* शास्त्रों में पिता कई प्रकार के बताये हैं। उत्पन्न करनेवाले, पालन करनेवाले, विद्यादान करनेवाले तथा अभयदान देनेवाले अनेक प्रकार के पिता हैं। इन सबमें प्राणों की रक्षा करनेवाले सर्वश्रेष्ठ हैं। कोई मर रहा हो और उसे मृत्यु-मुख से बचा ले, जीवनदान दे दे, तो वह भी सर्वोत्तम पिता है। अपनी ओर से तो मृत्यु ही आ गई थी। उन्होंने हमें मृत्यु मुख से निकाल कर पुन: जन्म दिया। अत: वह जन्मदाता से भी श्रेष्ठ पिता है। ऐसे पिता के प्रति जो कृतघ्नता प्रकट करते हैं, उनका उपकार नहीं मानते हैं, वे सबसे बड़े पापी समझे जाते हैं। इसके विपरीत जो उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं, पिता के सदृश उनका आदर करते हैं, उन्हें इस लोक में यश और वैभव प्राप्त होता है और मरने पर उन्हें अक्षय लोकों की प्राप्ति होती है।

* अक्षर-ज्ञान का नाम ही शिक्षा नहीं है। पुस्तक विद्या को ही विद्या नहीं कहते। यथार्थ विद्या तो वही है, जो हमें मुक्ति पथ की ओर ले जाय।

* शत्रु के सम्मुख दीन होकर आत्म समर्पण करना कायरता है, नीचता है, दुर्बलता है, हृदय की क्षुद्रता तथा नपुंसकता है।

* आयी हुई बात टल जाती है और गयी हुई हुई बात फिर वापस लौट आती है। जंगलमें लगनेवाली आगसे पासके पेड़ बच जाते हैं और दूरके पेड़ जल जाते हैं।

* जो अपने प्राणोंको पुष्ट करनेवाले, प्राणपोषी राजा होते हैं, वे अपने माता-पिता भाई बन्धुओंको भी मार देते हैं। अपने स्वार्थको ही सब-कुछ समझनेवाले स्त्री-पुरुष कभी किसीके नहीं होते। लोभी पत्नी अपने पतिका धन भी चुरा लेती है और लोभी पति अपनी पत्नीके लिए भी कुछ नहीं छोड़ता। यह लोभ ऐसा दुष्ट है कि इसके वशीभूत लोग अपना-पराया कुछ नहीं समझते।

* जब मनुष्यको सुख होता है तब उसकी मुट्ठी ढीली पड़ जाती है। जो मुट्ठीको कसकर रखता है, वह दुखी है। वह

सोचता है अगर यह नहीं रहेगा हमारे हाथमें तो हम खायेंगे क्या?

* दुष्ट लोगोंका स्वभाव ऐसा होता है कि वे किसी भी हालतमें अपना दोष स्वीकार नहीं करते, वे किसी-न-किसी दूसरेके सिरपर अपने दोषोंको सिरपर डाल देते हैं। अपना दोष स्वीकार करो तो उसके निवारणका उपाय भी मिल सकता है। जब तुम दोष स्वीकारते नहीं हो, तो उसका परिणाम जैसा होनेवाला होगा, वैसा ही होगा।

* संसारके प्राणी हमेशा साथ नहीं रहते। कभी-कभी रह भी जायँ तो साथ-साथ नहीं होते। इनकी स्थिति तो ऐसी है कि जैसे हवामें बहुत सारी वस्तुएं उड़ती हैं, मिट्टीसे बनी हुई चीजें बदलती रहती हैं परन्तु मूल वस्तु मिट्टी नहीं बदलती, इसीप्रकार देह का संयोग-वियोग सब अज्ञानीयोंके लिये है।

* कई पदार्थ समयसे शुद्ध हो जाते हैं और कई स्नान आदिसे शुद्ध होते हैं। शरीरमें कुछ लग गया हो तो उसको धो लेनेमें शुद्धि होती है। गार्भिक दोषोंको अर्थात यदि पिताके वीर्यमें अथवा माताके गर्भमें कोई दोष हो तो संस्कार करनेसे उसकी निवृत्ति होती है। इन्द्रियोंकी शुद्धि तपस्यासे होती है। ब्राह्मणादिकी शुद्धि यज्ञसे होती है। वनकी शुद्धि दानसे होती है। मनकी शुद्धि संतोषसे होता है। किन्तु आत्माकी शुद्धि कैसे होती है? आत्मा तो नित्य-शुद्ध-बुद्ध मुक्त है। उसको नित्य-शुद्ध-बुद्ध-मुक्त न जानना ही अशुद्धि है। जहाँ उसको नित्य-शुद्ध-बुद्ध-मुक्त जान लिया कि वह तो ज्यों-का-त्यों है ही। बालक पैदा हो तो संस्कार करके उसको पवित्र जरूर करना चाहिए।

* आशा अप्राप्त वस्तुकी प्राप्ति होती है कि वह कब, कहाँ और कैसे प्राप्त होगी? ज्ञात नहीं रहनेपर ही आशा रहती है। किन्तु जब यह ज्ञात हो जाता है कि अमुक वस्तु कहाँ और किस समय प्राप्त होगी; तब उसके लिए प्रतीक्षा होती है। प्रतीक्षा ज्ञात देश, ज्ञात काल, और ज्ञात प्राप्तव्य वस्तुके लिए होती है।

* अपना दु:ख दूसरेको सुनानेका अर्थ ही यह है कि हम तो दु:खी हैं ही, तुम भी दु:खी हो जाओ। इस तरह बात करनेका तरीका अच्छा नहीं है।

* मनुष्यकी निष्ठा अदृष्टमें हैं। उसकी परिसमाप्ति भी अदृष्टमें ही है। अदृष्टके आश्रयमें ही वह रह रहा है। जीवनका रहस्य अदृष्ट है। जैसे पर्देपर वही दिखायी देता है जो फिल्ममें भरा हुआ होता है वैसे ही काल-फिल्ममें जो भरा हुआ है, वही बारम्बार क्रमश: प्रकाशित होता जा रहा है। जीवनके इस रहस्यको जो समझ लेता है, वह कभी मुग्ध नहीं होता।

* राजपुत्र पूर्वजन्मोंके पुण्योंसे किसी राजाके घरमें जन्म लेता है पर सुखोपभोग और भोगोंमें लगा है। वह आत्महत्यारा है, उसको आगे सुख नहीं मिलेगा। दूसरा जो ऋषिपुत्र है। बड़ी कठिन तपस्या करता है, यहाँ तो उसको कष्ट मिलता है, पर आगे सुख मिलेगा। तीसरा, भगवानका भक्त है। जो साधु है, वह यहाँ भी आनन्दमें है, आगे तो भगवान मिलेंगे। आगे भगवान की प्राप्ति होगी वह यह सोचकर बड़े आनन्दमें है। चौथा जो कसाई है वह यहाँ भी दु:ख पाता है और परलोक में भी दु:ख भोगता है।

* दु:खी मनुष्य की बात सुन लेना भी बहुत अच्छा स्वभाव है। दु:खी जीव की बात लोग सुनना नहीं चाहते औरोंकी बात सुन लेते हैं; पर दु:खी व्यक्ति की बात सुननेका समय नहीं मिलता लोगोंको।

* जो कोई भी आदमी आत्म-कल्याण चाहता है, अपना भला चाहता है, अपना सुख चाहता है, मंगल चाहता है, उसके लिये कर्त्तव्य है कि किसी भी प्राणीसे, किसी भी जीवसे द्वेष न करे, विरोध न करे, बैर न करें। उसमें उसकी बड़ी भारी हानि हो सकती हैं। उसको अपना बैरी बनानेसे जीवनभर आशंका रहेगी, भय रहेगा। प्रेम करनेपर तो यह आश्वासन रहेगा कि वह हमारी रक्षा करेगा, बैर करनेपर भय रहेगा कि वह हमें मार देगा। जीवनमें शत्रुसे भयभीत रहना पड़ेगा। मरते समय भी बैरभावका याद रहेगा और भयभीत रहेगा। इसीलिये किसी भी प्राणीसे किसी भी कर्मको लेकर लोभसे, क्रोधसे,

कामसे और किसी प्रकारसे भी विरोध नहीं करना चाहिये।

* जहाँ स्वार्थ मनमें आता है, वहीं मनमें पिशाच बैठ जाता है उस समय आदमी अपना-पराया नहीं देखता है। उसके मनमें दयाका भाव उदय नहीं होता। स्वार्थ उसको क्रूर बना देता है।

* जहाँ मनमें लोभ पैदा हो जाये और अपने ही प्राणोंके पोषण के लिये चिंता रहे कि यह विषयभोग हम भोगें और सारे-के-सारे मरे तो मर जाये इसप्रकार की वृत्ति जब मनमें पैदा होती है तब ये लोभी, राजा, माता-पिता, भाई-बन्धु, सगे-सम्बन्धी कोई भी हो किसी की भी हत्या करनेमें नहीं हिचकते। इसलिये जीव का अपना कोई नहीं है। जीव अकेला है।

* जिस मनुष्यने अपने जीवनमें क्रूरताका व्यवहार किया वह तो जीवित रहने योग्य नहीं है। जिसके जीवनमें अत्यन्त निर्दयता है वह मनुष्य तो जीवित रहनेपर भी मृतक ही है। जो क्रूरताका व्यवहार करेगा वह घोर नरकोंमे जायेगा। क्रूरता करनेवालेकी लक्ष्मी, आयु तथा कीर्तिका नाश हो जाता है और जीवित रहते हुए ही मर जाता है।

* आँसू के भी कई भेद होते हैं जैसे दु:खके आँसू, शोकके आँसू, क्रोधके आँसू और प्रेमके आँसू। इन आँसुओंमें हृदयमें एक विगलित भाव आता है। किसी वस्तुके आवेशमें हृदय पर आघात होनेपर हृदय विगलित और द्रवित होता है। उस विगलित हृदय से जल, रसकी एक धारा निकलती है। वह धारा रुक नहीं पाती और वह उर्ध्वमुखी होकर आँसूके रूपमें बाहर निकला करती है। शोकके आँसूमें जलन होती हैं और प्रेमके आँसूमें शान्ति मिलती है।

* जो सत्पुरुष होते हैं वे कभी कहीं भी स्वार्थवश नहीं जाते। यदि स्वार्थ है तो सत् नहीं है। किसी अपने व्यक्तिगत स्वार्थको लेकर सत्पुरुष कहीं जायँ तो उनका सत्पना नहीं रहता। सत्पना स्वार्थमें सनकर मलिन हो जाता है। अगर ये लोग कही जाते भी हैं तो किसीका कल्याण करने ही जाते हैं।

* जीवनमें सावधान होकर भगवानको कभी जीवनसे न निकलने दो। भगवान्‌को जीवनसे निकाल देने पर ठग आयेंगे, चोर आयेंगे, लोभ आयेगा, काम आयेगा, क्रोध आयेगा। ठग, चोर और डाकू- यह तीन होते हैं। एक जो भुलावेमें डालकर मीठी-मीठी बातें बनाकर लोभमें डालकर सम्पत्ति ले जाता है उसे कहते हैं ठग; और दूसरा चुपकेसे घरमें घुसकर बिना बताये चुराकर सम्पत्ति ले जाता है उसे कहते हैं चोर और तीसरा जो जबरदस्ती घरमें घुसकर, मारकर या मारनेका भय दिखा, लूटकर सम्पत्ति ले जाता है उसे कहते हैं डाकू। तीन प्रकारसे ये तीनों ही धनका अपहरण करते हैं। इसी प्रकार यह तीन प्रधान शत्रु हमारे अन्दर रहते हैं- काम, क्रोध और लोभ। एकको कहा मोहिनी सम्पत्ति, एकको कहा आसुरी सम्पत्ति और एकको राक्षसी सम्पत्ति। काम मोहिनी है, लोभ आसुरी है और क्रोध राक्षसी है। ये हमारे अन्तरके धनको हमेशा लूटा करते हैं सम्पत्तिको छीना करते हैं।

* तात्कालिक लाभको देखनेसे मनुष्य भविष्यपर विचार नहीं कर सकता; क्योंकि लोभके कारण उसकी विचार करनेकी शक्ति कुण्ठित हो जाती है, दब जाती है। लोभके कारण वह अपना वास्तविक हित सोच ही नहीं सकता।

* जीवन में धर्म की प्रधानता नहीं है भौतिक पदार्थों की प्रधानता है उसके जीवन रूपी शकट (गाड़ी) पर काम और लोभ सवार हो जाता है। कामी और लोभी प्रवृत्तिवाले दूसरे की दृष्टि से गिर जाते हैं। वृक्ष से गिरा व्यक्ति बच सकता है किन्तु सज्जन जनों की दृष्टि से गिरा व्यक्ति नहीं बच सकता है।

* समझदार प्राणियों का धार्मिक कर्त्तव्य है कि परिवार-समाज में ऐसा वातावरण उत्पन्न करें जिससे बच्चों का संस्कार उचित बने। जो प्राणी अपने जाति-धर्म मर्यादा का पालन करते हुए भगवान में एवं सन्त-ब्राह्मणों में श्रद्धा-निष्ठा रखता है उस पर भगवान की कृपा अवश्य ही होती है।

* भारतीय संस्कृति यही है कि माता अपने संतान की सेवा स्वयं करे। इससे बालक संस्कारवान् बनता है।

* बचपन से ही बालक को अच्छे संस्कार न देनेवाले संरक्षक उसके वैरी हैं।

* हिंसक अपने पापके हाथों मारा जाता है। साधु अपनी समतासे ही सम्पूर्ण भयोंसे मुक्त हो जाता है।

* दुनियामें कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो अपनेको भी बुरा समझते हैं और दूसरेको भी बुरा समझते हैं; उनको सब बुरा-ही-बुरा दीखता है। कुछ लोग ऐसे होते हैं कि अपनेको तो बुरा समझते हैं और दूसरेको अच्छा समझते हैं। अन्य कुछ ऐसे होते हैं जो अपनेको और सबको अच्छा-ही-अच्छा समझते हैं। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिन्हें अच्छे-बुरेका भेद ही नहीं दीखता। सब कुछ परमात्मा ही दीखता है। जिसके लिए सब कुछ बुरा है, वह पामर है। जिसके लिए दूसरा बुरा है, वह विषयी है। जिसके लिए अपना-आपा बुरा है, वह साधक है और जिसके लिए सब कुछ अच्छा है, वह सिद्ध है। जिसके लिए सब परमात्मा है, वह स्वयं परमात्मा है।

* जो दूसरोंको कष्ट पहुँचाकर अपना जीवन चलाना चाहता है, उसका विनाश अवश्यम्भावी है। हिंसा कभी टिक नहीं सकती। उससे किसीका जीवन सफल नहीं हो सकता।

* आनन्दके अवसरपर जिसकी मुट्ठी नहीं खुले तो समझना चाहिए कि उसके हृदयमें कोई आनन्द ही नहीं हुआ। आनन्द तो सारे तनावोंको ढीला करके मनुष्यको उन्मुक्त कर देता है।

* जब किसीसे मिलना हो तो तब उसके सामने केवल अपनी-ही-अपनी नहीं हाँकनी चाहिए, बल्कि सामनेवालीकी परिस्थिति देखकर उसके अनुरूप बात करनी चाहिए।

* जो दुष्ट श्रीमद से अन्धे बन गये हैं उनकी आँखों में ज्योति डालने के लिए दारिद्र्य ही सर्वोत्तम अंजन है। दरिद्र ही यह देख सकता है कि दूसरे प्राणी भी मेरे जैसे हैं। जिसके शरीर में एक बार काँटा गड़ जाता है वह नहीं चाहता है कि दूसरे के भी शरीर में काटा गड़े। दरिद्र अहंकार रहित होता है। उसमें किसी भी प्रकार का अभिमान नहीं होता है। दरिद्र हिंसा नहीं करता है।

* जो विद्यार्थी परीक्षा से डरता है वह कभी पढ़ नहीं सकता। जो परमार्थी परीक्षा से डरता है, वह कभी आगे बढ़ नहीं सकता। जितनी बड़ी कक्षा, उतनी बड़ी परीक्षा। परीक्षा देते-देते ही विद्यार्थी आचार्य की योग्यता के बराबर पहुँच जाता है। उसी प्रकार परमार्थी, भक्त और संत भी परीक्षा देते-देते ईश्वर को प्राप्त कर लेते हैं।

* जो गलत आदमी है उनकी विचारधारायें भी गलत ही होती हैं। उनका निर्णय भी गलत ही होता है।

* देश की शिक्षा में धर्म की भावना बहुत जरूरी है।

* धर्म की सापेक्षता में ही ईमानदारी सत्यता आदि हैं। धर्म के माध्यम से लोग जुड़ते हैं। एक माँ है, एक बहन है, एक बेटी है, पत्नी है, है तो सभी नारियाँ ही पर धर्म इनमें फर्क करता है। पशुओं में धर्म होता ही नहीं इसलिए उनमें कोई माँ नहीं, कोई पत्नी नहीं, कोई बेटी नहीं। अगर इन रिश्तोंमें से धर्म निकाल दिया जाय तो नारी की सुरक्षा बहुत मुश्किल हो जायेगी। धर्म निरपेक्षता के कारण देश का बहुत बड़ा नुकसान भी हो सकता है। धर्म निरपेक्षता से अगर कोई चिकित्सक बनेगा, तो निरूपयोगीयोंकी नि:शुल्क सेवा नहीं करेगा, पैसे लेकर सेवा करेगा। इसलिए धर्म का जीवन में बहुत गहरा स्थान है। हमकाबे विदेशी नकल करके अपना जो मूलधन है, उसको खोना नहीं चाहिए। हमारी पहचान ऋषियों के कारण है। हम ऋषियोंकी सन्तान है, यह देश ऋषियोंका है। हमारे सप्तऋषि इस देश के संरक्षक है।

* मनुष्य धन पाने से परस्त्रीगमन और जीवहिंसा करता है, जुआ खेलता है। अपने शरीर को अमर जानकर यह नहीं समझता कि एक दिन इसका अवश्य नाश होगा और मरने के उपरान्त इस तन को कुत्ते व कीड़े खायँगे या जलाने से राख

हो जायगा। इसलिए धनवान् मनुष्य को अच्छे-बुरे और छोटे-बड़े का विचार रखना उचित है। गरीब मनुष्य को अभिमान नहीं होता, केवल पेट भरने से काम रहता है। कंगाल लोग परमेश्वर के भक्त होते हैं और धनपात्र से हरिभजन नहीं बन पड़ता। मूर्ख लोग संसारी माया-मोह में फँसकर अपना तन, धन और परिवार देखकर प्रसन्न होते हैं। बुद्धिमान व हरिभक्त मनुष्य धनवान-कंगाल, दु:ख व सुख को बराबर जानते हैं। जब तक मनुष्य दु:ख नहीं पाता तब तक उसको दूसरे का दु:ख देखकर दया नहीं आती। तरुणाई व धन की शोभा धर्म, शील व लज्जा है।

* संसार में बुद्धि को भ्रष्ट करनेवाला जैसा श्रीमद् है वैसा सत्कुल में जन्म तथा विद्या आदि का मद नहीं। लक्ष्मी की अधिकता होने पर मनुष्य में तीन व्यसन स्वाभाविक ही आ जाते हैं, मद्यपान, परस्त्रीगमन और द्यूतक्रीड़ा। ऐसा प्राणी अभिमानवश अपने स्वरूप को भूल जाता है। शरीर को अजर-अमर मानकर जीवों की हत्या करता है। अण्डे, मांस आदि घृणित भोजन करता है। दूसरों की पीड़ा का उसे अनुभव नहीं होता। निरन्तर पापकर्मों में ही उसकी प्रवृत्ति रहती है। जिस किसी को डाँटता है, फटकारता है, मारता है। यह सब श्रीमद् का ही बल है ऐसा समझना चाहिए। इसकी मुख्य औषध केवल दरिद्रता ही है। दरिद्र हो जाने से मनुष्य का दिमाग ठिकाने आ जाता है। अहंकार टूट जाता है। भूख के मारे इन्द्रियाँ सूख जाती हैं और हिंसा भी निवृत्त हो जाती है। महात्मा लोग भी प्राय: धनिकों के यहाँ न जाकर दरिद्रों के यहाँ ही भिक्षार्थ जाते हैं। उनके संग से कुत्सित प्रवृत्ति निवृत्त होकर उसकी शुद्धि हो जाती हैं।

* मदान्ध धनिकों के दरवाजे के बाहर बनी चबूतरे की बैठक अच्छी नहीं होती।

* विधि के विधान कैसे विचित्र बने रहते हैं? जीव उनके विषय में सोच नहीं सकता। सुख, दुख, आयु, जाति, सम्बन्ध, कीर्ति, यश, हानि, लाभ- ये सब पहले से ही निश्चित होते हैं। जैसा निश्चय होता है, उसी के अनुसार जीवों की प्रवृत्ति होती है और उसके अनुरूप ही जीव प्रयत्न करते हैं, वैसे ही सब बानिक भी बनते जाते हैं। जिसका जिसके साथ विवाह होना होता है, लाख प्रयत्न करने पर भी वह रुक नहीं सकता, जिसका संयोग जिसके साथ नहीं है, लाख प्रयत्न करने पर भी वह नहीं हो सकता। सबका सम्बन्ध सबके साथ पहले से ही निश्चित है। जब यही बात है, तब व्यर्थ आशा करनी अनुचित है।

* धन और प्रतिष्ठा को भी लोग लड़ाई का कारण बताते हैं।

* मनुष्य अपने शील और सदाचार के बल से चाहे तो देवता बन सकता है। वह जब तक सदाचार पर स्थित रहेगा, तब तक अविराम उन्नति की ओर बढ़ता जायगा। किन्तु जहाँ उसने सदाचार का अतिक्रमण किया, वह अभिमान के वशीभूत हुआ, वहाँ उसका पतन भी निश्चित है। जो सदा बड़ों का आदर-सम्मान करता है, उनसे आशीर्वादों को लेता है, वह आगे बढ़ता ही है। पर जब मनुष्य अपने को ही सब कुछ समझकर दूसरों को कुछ समझता ही नहीं, बड़ों का अपमान करता है, उनसे न करने योग्य कार्य कराता है, तब समझो कि वह अपने पतन के पथ को स्वयं ही परिष्कृत कर रहा है, उसकी ओर स्वत: ही बढ़ रहा है। अत: उन्नति-पथ के पथिकों को सर्वदा श्रेष्ठ पुरुषों को सम्मान और सदाचारानुकूल कर्म करते ही रहना चाहिये।

* प्रभुता पाकर मद हो जाना स्वाभाविक ही है।

* जब किसी शासन के प्रति जनता में असन्तोष हो जाता है, तब उसके विरुद्ध गुप्त समितियों का निर्माण होता है। लोग शासन के विरुद्ध गुप्त षडयन्त्र रचते हैं।

* संसार में यद्यपि कोई नूतनता नहीं। फिर भी प्राणी नित्य नूतनता चाहता है। सुलभता से जो वस्तु प्राप्त हो जाती है। उसका विशेष महत्त्व नहीं प्रतीत होता। जो वस्तु रहस्यमयी हो, दुर्लभ हो, उसी की ओर चित्त स्वत: ही आकर्षित होता है।

* अभिमान ही पतन का कारण है। अहंकार ही नीचे गिराता है।

* बेल के समीप कैसा भी वृक्ष हो, उसी के ऊपर बेल चढ़ जाती है, उसी प्रकार युवती स्त्री के समीप कैसा भी पुरुष रहे, उसके प्रति उसका अनुराग हो ही जाता है। यदि समीप रहनेवाला विनयी, सदाचारी और सरस हृदय का प्रेमी भी हो। अनुराग-अनुराग से बढ़ता है। शील-संकोच तथा मौन से उत्कण्ठा और बढ़ती है। अनुराग का भूषण है, भाव-गोपन। ज्यों-ज्यों अपने प्रति अनुराग रखनेवाले के भावों का अध्ययन किया जाता है, त्यों-त्यों अनुराग और बढ़ता जाता है।

* यौवन का उन्माद प्राय: सभी वयस्क एवं स्वस्थ युवक-युवतियों में होता है। यदि वे सम्पत्तिशाली, कुलीन, अधिकारारूढ़ या विशिष्ट वंश के हुए तो उनका उन्माद आवश्यकता से अधिक बढ़ जाता है। इसीलिए बढ़ती अवस्था के धनिक युवती-युवकों से साधारण स्थितिवालों को विशेष सम्पर्क नहीं रखना चाहिये। ये क्षण में तुष्ट हो जाते हैं, क्षण में ही रुष्ट। धन-मद और यौवन-मद दोनों मिलकर युवावस्था में अनर्थ उत्पन्न कर ही देते हैं।

* सरल चित्त के स्त्री-पुरुष पहले तो किसी पर क्रोध करते ही नहीं। कदाचित् किसी के प्रति उन्हें क्रोध हो जाय तो कुछ देर में वह शान्त हो जाता है। उनका क्रोध पानी की लकीर के समान होता है। पानी में लकीर करते चलो, पीछे से मिटती चलेगी। कुछ ऐसे मध्यम श्रेणी के पुरुष होते हैं, जिनका क्रोध बालू के लकीर के समान होता है। कुछ देर तक बालू में लकीर दिखाई देती है, जहाँ वायु आई कि लकीर मिटकर बराबर हो जाती है। कुछ ऐसे क्रोधी प्रकृति के पुरुष होते हैं, जिनका क्रोध पत्थर की लकीर के समान स्थाई होता है, जो कभी मिटती ही नहीं। यदि किसी ने उनका कुछ तनिक-सा भी अपकार कर दिया तो वे प्रतिहिंसा की ज्वाला से जल उठते हैं और जीवन भर उसे स्मरण रखते हैं।

* कौन किसी को सुख-दु:ख दे सकता है? सब जीव स्वकर्म-सूत्र से आबद्ध होकर समस्त चेष्टायें करते हैं। संसार में सबसे बड़ा शत्रु क्रोध है। बुद्धिमान पुरुष को कभी क्रोध के वशीभूत न होना चाहिये।

* जो दूसरों की, की हुई निन्दा को सह लेता है, उत्तर में निन्दकों की निन्दा नहीं करता, जो पीड़ा पहुँचानेवाले से भी प्रेम करता है, दु:ख देनेवाले को भी क्षमा कर देता है, वह अक्षय लोकों का अधिकारी होता है। लड़के लड़की आपस में लड़ते ही रहते हैं। इसमें बड़ों को सम्मिलित न होना चाहिये।

* लाड़-प्यार जब पराकाष्ठा को पहुँच जाता है, तब वह अनर्थ की सृष्टि करता है। प्रेम में पक्षपात हो जाना स्वाभाविक है, किन्तु विवेकी पुरुष अधिक हठ नहीं करते। वे भाग्य-भरोसे मान-अपमान भूल जाते हैं। जिसका अपने शरीर के ही प्रति ममत्व है, अपने आपको ही जो सुखी बनाये रखना चाहता है, वह दूसरों से क्या प्रेम करेगा?

* बालकों से तो अपराध बन ही जाता है। बड़े लोग सदा उन्हें क्षमा करते रहते हैं।

* ब्राह्मण विष और अग्नि से भयंकर होते हैं। जो विष को खाता है, वह मरता है, अग्नि जल से शान्त भी हो जाती है, किन्तु कुपित हुआ ब्राह्मण सम्पूर्ण राष्ट्र को नष्ट कर देता है। **राजा योगी अग्नि जल, इनकी उल्टी रीति। बचते रहियो परशुराम जी, थोड़ी राखो प्रीति॥**

* धर्म प्राणियों की स्वाभाविक इच्छाओं को नियन्त्रण में रखता है। यदि इच्छाओं को उन्मुक्त कर दिया जाय, पुरुषों पर धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक नियन्त्रण न रहें तो पुरुष पशुओं से भी गये बीते हो जायँ। पशुओं में भी एक स्वाभाविक नियन्त्रण होता है। अऋतुमती गाय भैंस के निकट उनका नर न जायगा। एक पुरुष ही ऐसा जन्तु है, जो समस्त बन्धनों को तोड़कर उन्मुक्त होना चाहता है। इसी से इसके लिए, धर्मकी अत्यन्त आवश्यकता है। अनेक बन्धनों से छूटने के लिए, अनेक भयों से पार होने के लिए नियम के बन्धनों को बाँधता है। सुखी होने के लिए वह भाँति-भाँति की प्रतिज्ञा करता है। किन्तु अन्त में नियमों को तोड़ने में ही उसे परम सुख प्रतीत होता है। प्रतिज्ञायें पालन करने के लिये की

जाती हैं, किन्तु मनुष्य विवश होकर वासना के वशीभूत होकर, धर्म-संकट उपस्थित होने पर उन्हें तोड़ता है और परिणाम में दु:ख पाता है। इसे दिष्ट, प्रारब्ध, दैवेच्छा, भाग्य, होनहार तथा कर्मगति- कुछ भी कह लें। जब मनुष्य के सामने दो ऐसे विरोधी धर्म आ जाते हैं, जो दोनों ही आवश्यक होते हैं, तब मनुष्य उसी ओर लुढ़क जाता है, जिस ओर उनके मन की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। इसे मानसिक दुर्बलता कहें या विधि का विधान?

* मनुष्य काम के अधीन न हो, तो उसे जरा-मृत्यु का भी भय न हो। मन में विकार होने से ही शरीर में विकार होता है। मनुष्य काम के वश होकर ही शील सदाचार खो बैठता है। हृदय की प्रबल कामना दुस्साहस उत्पन्न करती है। दुस्साहस से जो अनर्थ होता है, उसे छिपाने को छल, झूठ, कपट तथा मिथ्या व्यवहार का आश्रय लेना पड़ता है। इसीसे देह में जरा-मृत्यु आती है।

* अनुचित कार्य जब कोई करने लगता है, तो उसका भय भी मिटता जाता है। एक बार जो प्रतिज्ञा भंग कर देता है, उसके आगे प्रतिज्ञा निभाने की आशा करना वृथा है। जब हम कोई प्रतिज्ञा कर लेते हैं, तब प्रतिज्ञा विरोधी कार्य करने की बार-बार इच्छा होती है, मन अनेक प्रकार की युक्तियाँ सुझाता है। जब बुद्धि सबका निराकरण कर देती है, तब अन्त में मन कहता है, अच्छा, एक बार इसे कर लें, फिर न करेंगे। अब तो प्रतिज्ञा टूट ही गई। इस प्रकार प्राणी प्रतिज्ञा से भ्रष्ट होकर मिथ्याचारी बन जाता है।

* कामवश होने से मनुष्य को क्रोध आता है, क्रोध से सम्मोह होता है, कर्त्तव्याकर्त्तव्य का ज्ञान नहीं रहता, चिन्ता होती है, चिन्ता से जरा आती है, जरावस्था में कामवासना प्रबल हो उठती है। उससे आदमी की मृत्यु हो जाती है। वासना कर्त्तव्य का, धर्म का, रूप रखकर आती है। इसीसे धर्मात्मा पुरुष भी उसके चक्कर में फँस जाते हैं।

* अर्थी के संकल्प को पूरा करना धर्म है। प्राणी जब धर्मपूर्वक अपनी वासनाओं की तृप्ति होते नहीं देखता, तब अधर्म का आश्रय लेता है। यह उसका पतन है।

* राम नाम के जप-कीर्तन से आधि, व्याधि, दु:ख, शोक, ग्लानि और सभी प्रकार के मनस्ताप दूर हो जाते हैं। सब सुखों का एकमात्र साधन भगवन्नाम है और सब अनर्थों का आय एक मात्र काम है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश- इन पंचभूतों से निर्मित यह शरीर है। शब्द, रूप, रस, गन्ध और स्पर्श ये पांच इसके विषय हैं। कान, आँख, रसना, घ्राण और त्वचा इन पंचेन्द्रियों द्वारा प्राणी इन विषयों का उपभोग करता है। विषयों को भोगते-भोगते वीर्य और रक्त का नाश होता है। वीर्य, रक्त तथा मल में ही प्राण रहते हैं। जब शरीर में वीर्य और रक्त का अभाव हो जाता है, तब यह शरीर खोखला बन जाता है। विषयों में आसक्त हुआ मन इधर-उधर भटकता रहता है। इन्द्रियों की शक्ति क्षीण होने से विषय भोगे तो जाते नहीं, किन्तु उनमें तृष्णा बनी रहती है। कामवासना को सब अनर्थों की जड़ कहा गया है। शरीर में जीर्णता आने से ही जरावस्था का आक्रमण होता है।

* संसार स्वार्थ से भरा है। सभी सम्बन्ध स्वार्थ से भरे हैं। हम स्वार्थ के वशीभूत होकर दूसरों से न माँगने योग्य प्यारी से प्यारी वस्तु की याचना कर बैठते हैं। जिससे हम जिस वस्तु की याचना कर रहे हैं, उसको उसे देने में क्या कष्ट होगा, इसे याचना करनेवाला अनुभव नहीं करता, क्योंकि अर्थी को दोष नहीं दीखता। याचक का पद तो छोटा होता ही है, किन्तु याचक से भी छोटा वह है, जो वस्तु के रहते और दान देने की क्षमता होने पर भी, ना कर देता है।

* पुरुषों को एकान्त में एक आसन पर अपनी माता, बहिन तथा पुत्री के साथ भी न बैठना चाहिये, क्योंकि ये इन्द्रियां अत्यन्त ही प्रबल होती है। ये विचारवानों को भी विचलित कर देती है।

* प्राणी आकर्षण से ही क्रियायें करता है। जीवन में कुछ भी आकर्षण न हो तो वह क्रिया क्यों करें। कुछ काम परलोक के सुख के आकर्षण से किये जाते हैं, कुछ इस लोक के सुख के आकर्षण से। परलोक का सुख तो श्रुतमात्र है। स्वर्ग में नन्दनवन है, कल्पवृक्ष है, पीने को अमृत है, अत्यन्त सुन्दरी अप्सरायें हैं तथा चढ़ने को दिव्य विमान हैं। ये बातें कानों से सुनी जाती है। शास्त्रों में ऐसा वर्णन है, इसलिये श्रद्धा से, आस्तिक बुद्धि से इन पर विश्वास किया जाता है। वैसे साधारण लोगों ने इन सबको देखा तो है नहीं। कोई इनके आकर्षण से आकर्षित होकर परलोक-सम्बन्धी काम करता है, कोई नहीं भी करता। कोई कह देता है, हम शास्त्रों या परलोक को मानते ही नहीं तो उनके सम्मुख देवता आकर कहते भी नहीं कि तुम हमें मानों ही। किन्तु इस लोक के भोग तो प्रत्यक्ष हैं। सुन्दर शब्द को सुनकर कर्णेन्द्रिय स्वत: ही उसकी ओर आकर्षित हो जाती है। इसके लिये किसी बाहरी प्रमाण की आवश्यकता नहीं। दूर से ही सुगन्धित वस्तु को सूँघकर घ्राणेन्द्रिय सुख का अनुभव करती है। आँखें रूप को देखकर स्वत: गड़ जाती हैं। सुखद स्पर्श से अंग के रोम-रोम खिल उठते हैं। मधुर-स्वादिष्ट वस्तु का जिह्वा से स्पर्श होते ही वह लपलपाने लगता है। नारी में पाँचों ही विषय जन्य सुख विद्यमान हैं। अत: ऐसा कौन वीर्यवान् पुरुष है जिसका एकान्त में अपने अनुकूल कामिनी को देखकर चित्त चंचल नहीं होता।

* वंश परम्परा को अक्षुण्य बनाये रखना पितृऋण से उऋण होने के लिए अत्यावश्यक है। पितरों की आशा लगी रहती है कि हमारे वंश में कोई ऐसा तेजस्वी, तपस्वी, यशस्वी तथा भगवद्भक्त होगा, जो स्वयं तो तरेगा ही, अपने आगे-पीछे की पीढ़ियों को भी तार देगा। पृथ्वी पर, जितने दिनों तक जिसका यश रहता है, वह उतने ही दिनों तक स्वर्ग में रहकर सुखों का उपभोग करता है। जिसे यहाँ कोई नहीं जानता, उसे स्वर्ग में रहने का स्थान कैसे मिल सकता है? जिनके नाम से वंश विख्यात होता है, जिनका नाम नित्य पुरुष लेते हैं, वे तो अपने यश-शरीर से सदा अमर ही बने हुए हैं। पंचभौतिक शरीर न रहने पर भी उनकी कीर्तिमय देह सर्वत्र व्याप्त रहती है।

* अभिमान बचाता नहीं, गिराता है और शरणागति गिराती नहीं बचाती है।

* चर्चायें चार प्रकार की है- पापचर्चा, परचर्चा, स्वार्थचर्चा और चौथी भगवत्चर्चा। पापकी बुरी बात सुननेमें रस आवें और कहनेमें रस आवे तो वह पाप चर्चा है। यह सर्वथा त्याज्य ही है। दूसरी है परचर्चा- दूसरेमें गुण-दोष देखना, रात-दिन इसीकी चर्चा करना, लोग इसे समालोचना कहते हैं। दूसरेकी चर्चा होनेमें दूसरेका नाम, रूप, कर्म, मनमें आता है और वह मनमें आ करके हमारे जीवनको वैसा ही ढ़ाल देता है। परचर्चा बुरी है। जो इसको करता है उसे स्वहितकी चर्चा करनेका भी अवकाश नहीं मिलता। परचर्चासे वह अपना अहित कर बैठता है। उसे निंदा करना, दूसरेके दोष बताना, दूसरेके दोष देखकर अधिक प्रिय लगता है, उतना अधिक प्रिय गुण बताना नहीं लगता। उसके गुण सुनकर मनमें डाह-ईर्ष्या होती है। मनमें दोषदर्शनकी भावना होती है। गिरे हुए मनुष्यका स्वभाव है कि दूसरेके दोषोंको सुनकर प्रसन्न होते है और गुण सुनकर जलते हैं। मनमें पराये पापोंको भर लेते हैं। इसलिये परचर्चा कहना और सुनने बुरी है। स्वार्थचर्चा- अपने कामकी बात, घरकी बात, व्यापार की बात पर वह भगवानसे रहित है। प्रभु आधार पर नहीं होती है यह भी एकतरह पापचर्चा ही है। भगवानकी पूजाके लिये, भगवानकी सेवा के लिये जो चर्चा होए वह चर्चा मनुष्यको पवित्र बनाती है, घरको पवित्र बनाती है और जो घर चर्चा विषय-भोगके अर्जनके लिये होती है वह चर्चा, स्वार्थचर्चा न होकर पाप चर्चा बन जाती है। भगवत्चर्चा में कानोंमें दूसरी बात आये नहीं और आये तो सुहाये नहीं।

* खल या दुष्ट किसी कारणवश, किसी भयमें आकर या किसी अच्छे संगमें आकर- क्षणभरके लिये साधु बन जाया करते हैं। उनके मनमें भी सद्भाव आ जाया करता है और जब वहाँसे हटकर अपने विषयके क्षेत्रमें आते हैं तो फिर वैसे ही हो जाते हैं।

* जब किसीको रोग हो जाता है तो इलाज कराना पड़ता है। पहलेसे रोगका उन्मूलन न करे और रोग जड़ जमा ले तो असाध्य हो जाता है। इसलिये रोग पैदा होते ही उसकी जड़ काट दे। यह बुद्धिमानी है। शत्रु कहीं अपना पैर जमा न ले। यदि शत्रुके पैर जम गये तो उनका उखाड़ना मुश्किल हो जायेगा। शत्रुके पाँव जमने ही न पाये इसके पहले ही उखाड़ देना चाहिये।

* ब्राह्मण भगवानके शरीर हैं। ब्राह्मणके साथ गाय भी लगी हुई है। गाय रहेगी तो ब्राह्मण रहेगा कैसे? गाय और ब्राह्मणका अविच्छेद सम्बन्ध है। गाय है तो ब्राह्मण है और ब्राह्मण है तो गाय है। ब्राह्मण तथा गायकी रक्षा करनेवाला है वेद। वेदके बिना गो-ब्राह्मणकी रक्षा हो नहीं सकती। वेद रहता है इन आठ जगहों पर- जहाँ तप है, जहाँ श्रद्धा है, जहाँ दया है, जहाँ सहनशीलता है और जहाँ यज्ञ है। अतएव यदि कोई भगवानको रखना चाहे तो इन चीजोंकी रक्षा करे। सब चीजें जा करके भी अगर ये रह जाती हैं तो भगावन रहते हैं और भगवान रहते हैं तो उनके साथ-साथ लक्ष्मीजी भी रहती हैं। लक्ष्मीजी चाहें दीखें नहीं परन्तु जहाँ भगवान होंगे वहाँ तमाम लक्ष्मियाँ एक दो नहीं तमाम- स्वर्गकी लक्ष्मियाँ, वैकुण्ठकी लक्ष्मिया जितनी श्री हैं सब की सब वहाँ पर आ विराजती हैं। जब भगावन नन्दके यहाँ आये तो वहाँ जाननेको मिलेगा कि तमाम लक्ष्मियाँ भगवानकी सेवाके लिये आ गयी। वे कहती हैं कि अब अपनेको सार्थक करो। कोई अपने जीवनमें सुख चाहे, जीवनको पवित्र करना चाहे, आगेके लिये भी पवित्र होना चाहे तो लक्ष्मीकी सेवा करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है, लक्ष्मीको तो भोग्या बनानेवाला पाप करता है। माँ है लक्ष्मी, इसलिये लक्ष्मीकी चर्चा न करके भगवान विष्णुको रखे।

* जब मनमें अन्ध:कार छा जाता है तब बुद्धि में सारी बातें उलटी दीखती हैं। यह तमोगुणवाले चित्तका स्वभाव होता है।

* नूतन जलसे अशुद्ध भूमिकी शुद्धि होती है, स्नानसे शरीरकी शुद्धि होती है, धोनेसे वस्त्रादिकी, संस्कारसे गर्भादिकी, तपस्यासे इन्द्रकी, यज्ञसे ब्राह्मणोंकी, दानसे धनकी और संतोषसे मनकी शुद्धि होती हैं। धन शुद्ध करना हो तो दान करें। सब तरह की शुद्धि इसी प्रकार होते हैं।

* कोई जातिसे अच्छा हो, कुलसे अच्छा हो, आचरणसे अच्छा हो, खानपानसे अच्छा हो या स्वभाव अच्छा हो तो उनको ले करके किसीकी भलाई होना सम्वभ है।

* अन्नका अपना असर होता है। जिस प्रकार का अन्न, भोजन हम खाते हैं, जिस प्रकार की चीज हम खाते हैं उसी प्रकारकी हमारी बुद्धि बनती हैं। खान-पानमें सात्त्विक वस्तुओंका ग्रहण करना और तामसीका त्याग करना बड़ा आवश्यक है। क्योंकि खायी हुई चीजसे ही रक्त, मांस, मेद, मज्जा इत्यादि बनते हैं। बहिर्मुख जीव खान-पानमें किसी प्रकारका कोई संकोच नहीं करते। जो मनमें आता है वो खा जाते हैं।

* दूसरों की वृत्ति को विच्छेद करना तो सबसे बड़ा पाप है।

* वंश का उच्छेद होता हो, तो धर्मपूर्वक काम-भाव से रहित होकर द्विज द्वारा वंश-परम्परा को बनाये रखने की प्राचीन परिपाठी थी। दोष भाव से होता है। एक ही कार्य है, यदि वह शुद्ध भाव से किया जाय, तो ऊपर से अनुचित-सा भी दीखता हो, किन्तु वह उचित ही है। यदि अशुद्ध भाव से किया जाय, तो उचित और उत्तम काम भी हेय है।

* तप श्रेष्ठ कार्य है, किन्तु दम्भ से, द्वेष से, प्राणियों को कष्ट देने को किया जाय, तो वह उत्तम कार्य होने पर भी अधम है। बलपूर्वक दूसरों का धन छीनना, निन्द्य काम है, किन्तु दिग्विजय में यज्ञ के लिये दूसरे राजाओं पर चढ़ाई करके, उनके धन को बलपूर्वक छीन लेना निन्दनीय नहीं कहा जा सकता। अत: सुख-दु:ख में भाव ही प्रधान कारण है।

* जो विषयों का बिना अनुभव किये क्षणिक आवेश में आकर या किसी के द्वारा उत्तेजित किये जाने पर वैराग्य धारण

कर लेते हैं, उनमें से अधिकांश का पतन होनेवाला है। भावी सब कुछ करा लेती है। जैसी भवितव्यता होती है, वैसे ही सब बानिक बन जाते है।

* एक बार जिस सुख का अनुभव किया है, वह तीव्र वैराग्य के बिना भुलाया नहीं जा सकता।

* हममें श्रद्धा और विश्वास की कमी है। मनुष्य जो चाहे, सो कर सकता है। उसमें योग की अनन्त शक्तियाँ हैं। उसमें असम्भव के लिये स्थान नहीं, सभी कुछ सम्भव है। असम्भव यदि कुछ हो सकता है, तो यही बात है कि अविश्वासी पण्डित मानी मूर्खों पर विश्वास करना। श्रद्धा के सम्मुख विश्वास के आगे कुछ भी असम्भव नहीं।

* प्राचीन प्रथा थी कि एक पुरुष बहुत विवाह कर सकता था। राजाओं के यहाँ तो सहस्रों रानियाँ होती थीं। तब वैसी शक्ति सामर्थ्य थी विवाह करना एक परम धर्म माना जाता था। धर्मपूर्वक ही कामोपभोग की आज्ञा थी। कामवश होकर भी राजा विवाह कर लेते थे, किन्तु विद्वानों में उसकी प्रशंसा नहीं थी। धर्मपूर्वक निज पत्नी से उत्पन्न हुआ पुत्र ही पिता का उत्तराधिकारी माना जाता था। धर्महीन काम व्यभिचार है।

* पिता के अनुरूप ही पुत्र होता है। वीर्य का, कुल का, संस्कारों का बालक के ऊपर प्रभाव पड़ता है। धर्म के तत्व को जाननेवाले मनीषियों ने पुत्र को पिता की आत्मा ही बताया है। यदि पुत्र पिता के अनुरूप नहीं तो उसमें संस्कार, अदृष्ट तथा माता का दोष है। कुलागत सदाचार का पालन करते, धर्मपूर्वक जो पुत्र होता है, वही वीर्यज पुत्र श्रेष्ठ और पिता के अनुरूप होता है।

* धर्म में दम्भ करना दोष है। हम स्वार्थ-वश अपनी प्रतिज्ञा का कुछ-का-कुछ अर्थ लगावें, तो यह तो छल है, प्रवञ्चना है। इसलिये नियमों में शिथिलता न होनी चाहिये। शिथिलता होते ही नियम बिगड़ जाता है।

* शास्त्रकारों का कथन है कि बहुत से पुत्र पैदा करने चाहिये; जिनमें कोई भगवद्भक्त, कोई वीर, कोई वंशधर हो जाय। क्षत्रिय समर में जाते समय जीवित लौटने की आशा नहीं रखते। वे हथेली पर सिर रखकर और सिर पर कफन लपेटे ही समर में जाते हैं। इसीलिये वीर क्षत्रिय अपने वीरपुत्र की सदा मंगलकामना करते रहते हैं, पुत्रवान् होने पर अत्यन्त प्रसन्न होते हैं।

* जिस कन्या का कुल-शील मालूम न हो, उसके साथ विवाह न करना चाहिये।

* अपने इष्ट की प्राप्ति उन्हीं को होती है, जो अपने बड़े-से-बड़े सुख को क्षण भर में तिलाञ्जलि दे सकते हैं। जो संसारी सुख चाहते हैं, उन्हें पारलौकिक सुख मिलना अत्यन्त ही कठिन है। शारीरिक सुखों का बिना त्याग किये गुरुजनों की सेवा होती नहीं। माता, पिता, आचार्य तथा गुरुजनों की प्रसन्नता के लिये जो जितना ही बड़ा त्याग करेगा, संसार में वह उतना ही बड़ा यशस्वी होगा। समस्त त्यागों में स्त्री-सुख का त्याग करना बड़ा ही दुष्कर है। मनुष्य एक बार प्राण त्यागने को तत्पर हो सकता है, किन्तु जीवन भर स्त्री सुख के त्याग की प्रतिज्ञा करना बड़े ही शूरवीर, जितेन्द्रिय, दृढ़प्रतिज्ञ तथा संयमी पुरुष का काम है, जिस पुरुष ने ऐसी भीषण प्रतिज्ञा करके उसका निर्वाह किया है, वह विश्ववन्दनीय है, देवता भी उसकी पदरज के लिये लालायित बने रहते हैं, भगवान भी उसे स्वयं दर्शन देते हैं।

* पिता पुत्री को दूसरे के ही निमित्त पालता है। पुत्री ज्यों-ज्यों कन्यापने को त्यागकर युवती होती जाती है, त्यों-त्यों पिता की चिन्ता बढ़ती जाती है। युवती कन्या के पिता को रात-दिन चिन्ता बढ़ती जाती है। युवती कन्या के पिता को रात दिन यही चिन्ता लगी रहती है कि मेरी पुत्री को कोई योग्य वर मिल जाय, जहाँ जाकर वह सुखी रहे।

* ब्राह्मण बालिकायें कहती हैं कि उन्हें विद्वान, यशस्वी-तपस्वी तथा धर्मात्मा पति प्राप्त हो। वैश्य-कन्यायें चाहती हैं,

हमारा पति श्री-सम्पन्न वैभवशाली हो। शूद्र-कुमारियाँ चाहती हैं, हमें सेवा-परायण, संयमी, धर्मात्मा पति मिले और क्षत्रिय-कुमारियों की एकमात्र इच्छा शूरवीर, बलि पति प्राप्त करने की होती है। सभी कुमारियाँ सुन्दर-स्वरूपवान्, स्वस्थ युवा पति की इच्छा रखती हैं। इसीलिये राजाओं के यहाँ प्राचीन प्रथा थी, सभी कुलीन प्रतिष्ठित राजकुमारों को किसी नियत तिथि पर एक साथ सत्कारपूर्वक बुलाया जाता था वे सब वस्त्राभूषणों से सुसज्जित होकर कन्या के पिता के नगर में आते। उनकी एक सभा लगाई जाती, वहाँ विवाह के योग्य कन्या को बुलाया जाता और सभी राजाओं का कुल-गोत्र उनसे बताया जाता फिर कन्या को स्वतन्त्रता दे दी जाती, इनमें से वह जिसे चाहे, वर ले। तब कन्या एक-एक के समीप जाती, उसके कुल गोत्र सुनती, उसके बल की प्रशंसा सुनती। स्वयं उसके रूप को निहारती। फिर उन आगत राजकुमारों में से एक के गले में विजय माला डाल देती। उसी समय वह उसकी पत्नी मान ली जाती अर्थात् सगाई पक्की हो जाती। फिर शास्त्रीय विधि से दोनों का विवाह हो जाता। कभी-कभी कोई बलवान राजकुमार बलपूर्वक कन्या को हर ले जाता। यह भी शास्त्रीय विधि के ही अनुसार राक्षस-विवाह है। क्षत्रियों में गान्धर्व और राक्षय-विवाह की प्रशंसा की जाती है। क्षत्रियों में कन्याहरण शूरवीर, बली और साहसी राजा ही करता है।

* जब समर्थ युवती कन्या ने मन से किसी योग्य वर को आत्म समर्पण कर दिया है, तब उसे विवश करना उचित नहीं। मन कहीं रहे, शरीर कहीं रहे तो ऐसे दाम्पत्य में सुख नहीं होता।

* व्यर्थ किसी पर क्रोध नहीं करना चाहिये। सुख-दु:ख का देनेवाला तो भाग्य है।

* धर्म की गति बड़ी सूक्ष्म है। धर्म प्राणियों की स्वाभाविक प्रवृत्तियों के त्यागने को नहीं कहता, उन्हें संयमित नियमित करना चाहता है। मैथुन सृष्टि में मैथुन की इच्छा स्वाभाविक है, अपरिहार्य है। विषय-भावना से ही तो प्राणी पैदा होते हैं। अत: उसके लिये कामना होनी ही चाहिये। किन्तु कामना से उसकी तृप्ति नहीं। उपभोग से कामना उसी प्रकार बढ़ती जाती है, जिस प्रकार अग्नि ईंधन डालने से। इसीलिये सर्वज्ञ ऋषियों ने काम की एक व्यवस्था बाँध दी है। यों अव्यवस्थित रूप से कामोपभोग की स्वतन्त्रता दे दी जाय तो फिर पशुओं और मनुष्यों में अन्तर ही क्या रह जाय। अत: शास्त्रकारों ने कहा है- ऋतुकाल में अपनी ही भार्या में गमन करे। यह सामान्य नियम है। कभी-कभी इस व्यवस्था में समयानुसार कुछ छूट देनी पड़ती है। उसे आपद्धर्म कहते हैं। केवल विषय-तृप्ति के लिये जो कार्य किया जाता है, वह धर्म नहीं कहा जा सकता। आपत्तिकाल में मर्यादा रहती नहीं। मर्यादा-हीन धर्म का ही नाम आपद्धर्म है। जब-जब आपत्ति आई है, तब-तब ऐसे धर्मों का पालन करना पड़ा है।

* जिन सन्तानों को पिता ने पैदा किया है या पुत्र-पुत्री मानकर पालन-पोषण किया है, उन्हें विवाहित देखने की माता-पिता की स्वाभाविक इच्छा होती है। जिसमें मनुष्य स्वयं सुख का अनुभव करता है, उसी को अपने प्रिय को देना चाहता है। गृहस्थ का सबसे बड़ा सुख है, मिथुन हो जाना एक से दो बन जाना। माता-पिता योग्य वधू और पुत्री के लिये योग्य वर के लिये निरन्तर चिंतित रहते हैं। विवाह होने से सम्बन्धियों और वंश की वृद्धि होती है। अत: गृहस्थियों का सबसे श्रेष्ठ महोत्सव, सबसे सुखप्रद कार्य विवाह ही होता है।

* मैथुन का समय प्राणिमात्र के लिए अत्यन्त हितकर, सुखकर तथा प्रिय है। उसमें जो विघ्न डालता है, उसे पाप लगता है।

* भगवान के विधान को जीव समझ ही नहीं सकता। यदि उसे समझ ले तो फिर उसकी जीव-संज्ञा ही न रहे, वह शिवरूप हो जाय। जिस वस्तु को हम व्यर्थ समझकर फेंक देते हैं, कालान्तर में वही अमूल्य हो जाती है, जिसे बहुमूल्य

समझकर बड़ी सावधानी से रखते हैं, समय पर वह दो कौड़ी की भी नहीं सिद्ध होती। विधि के विधान से मृतक जीवित हो जाते हैं, भगवान की इच्छा से ही जीवित प्राणी पलभर में मृतक बन जाता है। इस लिये दैव-बल ही यथार्थ बल है।

* बड़ों के प्रति सम्मान प्रकट करना आर्य-संस्कृति का सर्वश्रेष्ठ सदाचार है। बड़ों के सम्मुख उच्चासन पर न बैठना, बड़ों के सम्मुख अभिमानपूर्वक न बैठना, बड़ों से शिष्टाचार-रहित व्यवहार न करना, बड़ों के रहते स्वयं सम्मान को ग्रहण न करना, ऐसी प्राचीन परिपाटी है। बड़े भाई के संस्कार जब तक न हुए हों, तब तक छोटे भाई को संस्कार कराने का विधान नहीं है। बड़े भाई का विवाह या अग्निहोत्र-सम्बन्ध न हुआ हो और छोटा अपने संस्कार करा लेता है तो शास्त्रकारों ने उसकी परिवेत्ता संज्ञा बताई है और उस बड़े भाई को परिविवित्ति कहा है। बड़े भाई के रहते, छोटे भाई को पिता के राज-सिंहासन पर बैठने का अधिकार नहीं है। यदि बड़ा भाई अयोग्य हो, महाव्याधि-ग्रस्त हो, या सदाचारहीन हो तब छोटे के राजा होने में कोई दोष नहीं।

* जो कार्य देखने में हमें अप्रिय और अहितकर प्रतीत होता है, उसके भीतर हित सन्निहित रहता है। किस कारण यह घटना घटित हुई, उसके मूल को जान लेने से पुन: क्लेश नहीं होता। इस बात का दृढ़ निश्चय हो जाय कि मंगलमय श्रीहरि के समस्त विधान मंगल के ही निमित्त होते हैं तो मनुष्य शोक, मोह और चिन्ता से सदा के लिये निर्मुक्त-निर्द्वन्द्व हो जाय। हमारे उदर के भीतर विकार एकत्रित हो गया है, वह व्रण बनकर बाहर निकलना चाहता है तो व्रण होने में मंगल है। वह व्रण देह को स्वस्थ बनाने के लिये है। तत्क्षण की क्रिया देखकर जीव सुखी-दु:खी हो जाता है। यदि उसे इसके मूल कारण का ज्ञान हो जाय तो फिर उसके सुखी-दु:खी होने का कोई कारण ही नहीं रह जाता।

* बहुधा प्राणी अनुचित कार्य करके भी अपनी पत्नी को प्रसन्न करते हैं। नारी को प्रसन्न करने को नर अगाध जल में गोता लगाता है और उसका हार बनाकर अपनी प्रियतमा के कण्ठ में पहनाता है। बड़े-बड़े समुद्रों को पारकर, प्राणों का पण लगाकर वह समुद्र पार जाता है, वहाँ से धन कमाकर अपनी प्राणप्रिया को सुवर्ण और रत्नों के आभूषणों से लाद देता है। बड़े-बड़े बलवान गजों के मस्तकों को विदीर्ण करके, उनसे मुक्ता निकालकर अपनी मनोरमा के मस्तक को वह सजाता है। यदि मनुष्य को अपनी प्रिया को प्रसन्न करना न हो, मन में द्रव्य का लोभ न हो, केवल भिक्षान्न से या वन्य फल मूल या शाक से ही इस उदर-दरी को पूर्ण करके, भगवत्चिन्तन में ही समय बिताना हो तो वह अनुचित कार्य नहीं करेगा।

* सहस्त्र गौएँ खड़ी हों, उनमें बछड़े को छोड़ दो। गो सब चाहे एक रंग-रूप की ही क्यों न हों, बछड़ा उनमें से अपनी माँ का ही स्तन-पान करने लगेगा। दूसरी गो के नीचे न लगेगा। इसी प्रकार सच्चरित्र कुलीन वंशोद्भव पुरुषों का चित्त उसी की ओर आकर्षित होगा, जिससे अपना सम्बन्ध निश्चित हो। जिनका रजवीर्य शुद्ध है, जो सद्कुल में उत्पन्न हुए हैं, उनका मन अधर्म की ओर जाता ही नहीं। इसीलिये मनीषियों ने कहा- सन्देहास्पद वस्तुओं के विषय में सज्जनों की अन्त:करण प्रवृत्ति ही परम प्रमाण है। जिनकी अधर्म करने की प्रवृत्ति ही नहीं, यदि उनसे भूल से भी कोई ऐसा-वैसा कार्य हो जाय तो उसका सम्बन्ध पूर्वजन्मों का ही समझना चाहिये।

* विवाह के पूर्व कन्या का कुल, गोत्र जान लेना आवश्यक है।

* काम से क्रोध शान्त हो जाता है। सुन्दरता के आकर्षण के सम्मुख क्रोध चूर-चूर हो जाता है।

* **विवाह-** विवाह एक धार्मिक सम्बन्ध है, उससे धर्म की भी प्राप्ति होती है और काम-सुख भी मिलता है। धर्म हीन काम नरक ले जानेवाला होता है, धर्म-सम्मत काम सुखकर है। उससे स्वर्ग और अपवर्ग तक की प्राप्ति होती है। धर्म से अविरोधी अर्थ और काम ही परलोक में सुख पहुँचाते हैं। धर्म से रहित अर्थ और काम इस लोक में क्षणिक सुख भले ही पहुँचावे, किन्तु उनका परिणाम दु:खद ही है। काम-भोग में प्राणियों की प्रवृत्ति स्वाभाविक है। इसे कोई रोकने में समर्थ

नहीं- होंगे भी तो कोई विरले ही। इसीलिये स्मृतिकारों ने धार्मिक बन्धन मनुष्यों के लिये ही बताये है। पशु-पक्षी तो प्रकृति के अनुसार व्यवहार करते ही हैं। काम-प्रवृत्ति अनिवार्य तथा स्वाभाविक है, यही सोच कर ऋषियों ने विवाह के ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, असुर, गान्धर्व, राक्षस और पैशाच- ये आठ भेद बताये हैं। इनमें कुछ उत्तम हैं, कुछ मध्यम और कुछ अधम। कन्या को वस्त्राभूषणों से अलंकृत करके योग्य वर को घर बुला, जो विधिपूर्वक कन्या दी जाती है, उसे ब्राह्म-विवाह कहते हैं। यह सर्वश्रेष्ठ विवाह है, आजकल यही विवाह प्रचलित है। यज्ञ के समय, अपनी कन्या को अलंकृत करके दक्षिणा में जो कन्या ऋत्विज को दी जाती है, उसे दैव-विवाह कहते हैं। अब यह नहीं होते। हम दोनों साथ रहकर धर्माचरण करेंगे- ऐसी प्रतिज्ञा करके जो विवाह किया जाता है, वह प्राजापत्य है। आज कल यह होता ही है। कन्या को, कन्या के जाति वालों को, धन देकर, जो विवाह किया जाता है, वह आसुर विवाह है। इस विवाह का आजकल निर्धनों में बहुत चलन है। यह अत्यन्त नीच विवाह माना गया है। वर और कन्या दोनों की इच्छा हो जाने पर जो स्वेच्छा से विवाह कर लिया जाता है, वह गान्धर्व (प्रेमविवाह) है। इसके मूल में काम है, विद्वानों ने इसकी प्रशंसा नहीं की है। पढ़े-लिखे लड़के-लड़कियों में आजकल इसका बहुत प्रचलन है। घरवालों को मार कर लड़कर, घायलकर, जो रोती हुई कन्या को बलपूर्वक पकड़ ले जाय, वह राक्षस-विवाह है, कन्या की इच्छा हो चाहे न हो। आजकल ऐसे विवाह राजकीय नियम के विरुद्ध माने जाने से प्रत्यक्ष नहीं होते। यह अत्यन्त हेय विवाह है। जो सुप्त-प्रमत्त अवस्था में, एकान्त में कन्या के साथ गमन करता है, यह अत्यन्त नीच-पैशाच विवाह है। इनमें ब्राह्मणों के लिये अन्त के दो-राक्षस और पैशाच-विवाह निषिद्ध हैं। शेष छ: उत्तरोत्तर श्रेष्ठ हैं, अर्थात् गान्धर्व सब से अधम है। क्षत्रियों के लिये गान्धर्व विवाह निन्दनीय नहीं है। उनके यहाँ स्वयंवर होता है। कन्या एवं वर दोनों की अनुमति होने से ही यह विवाह हो जाता है।

* जो सदा व्यर्थ की झूठ-सच बात बोलते रहते हैं उनकी वाणी का कोई महत्त्व नहीं, मूल्य नहीं। लोग उनकी बातों पर विश्वास नहीं करते, उनके वाक्यों पर आस्था नहीं रखते। किन्तु जो मौन के द्वारा वाणी का संयम करते हैं, असमय में अनावश्यक असत्य बात नहीं बोलते, उनकी वाणी अमोघ हो जाती है। वे ही शाप और वरदान देने में भी समर्थ होते हैं।

* सयानी पुत्रियों को पिता के घर में अधिक दिन न रहना चाहिये। इससे संसार में अपवाद होता है, अकीर्ति फैलती है। पति चाहे धनी हो या दरिद्र, उसी के घर स्त्री की शोभा है। पति रहते सयानी कन्या तो घर में भारी हो ही जाती है। केवल पेट भरना ही तो पर्याप्त नहीं, गृहस्थ-धर्म का पालन भी तो होना चाहिये।

* पिता के घर, पति के घर, गुरु के घर तथा अपने मित्र के यहाँ बिना बुलाये जाने में भी कोई दोष नहीं।

* सम्भावित-प्रतिष्ठित पुरुषों को जान-बूझकर लोकसंग्रह के लिये, अपनी मर्यादा और प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिये, कभी-कभी कठिन कृत्य करने पड़ते हैं। जिनका जनता से सदा सम्पर्क रहता है, उन्हें उनके सम्मुख अपनी स्थिति स्पष्ट रखनी पड़ती है। वे ऐसा न करें तो जनमत उनके विरुद्ध हो जाय, जनता में उनका आदर न रहे और लोक की दृष्टि में वे गिर जायँ।

* संसार में जितनी सुखदा स्पर्श वस्तुएँ हैं, उन सबमें पुत्र के अंग का स्पर्श सर्वश्रेष्ठ है।

* धार्मिक संस्कार संग से ही पड़ते हैं। बाल्यकाल में बालक जैसे वायुमण्डल में पलेगा, वैसा ही प्रभाव प्राय: उसके जीवन पर पड़ेगा। माता-पिता के विचारों की तथा अपने आस-पास के संस्कारों की छाप बालक के कोमल स्वभाव पर अमिट पड़ जाती है। वह जीवन भर नहीं छूटती। इसीलिये बाल्यकाल से ही प्राचीन समय में पुत्र को गुरुकुल में छोड़ आते थे, जिससे वहाँ की धार्मिकता का निर्मल वायु मण्डल और सादगी का उस पर प्रभाव पड़े। जिन महापुरुषों का जन्म अरण्यों में, ग्रामों में होता है, वे पर पीड़ा को भली-भाँति समझते हैं, क्योंकि उसे वे सहन कर चुके हैं, उन्हें इसका अनुभव

है। सम्भावित पुरुषों को सबकी सम्मति, सहयोग और सहानुभूति को साथ लेकर चलना पड़ता है।

*** पति-पत्नी-** पति-पत्नी इस गृहस्थी रूप रथ के दो पहिये हैं। दोनों ही अपने-अपने स्थान पर सुन्दर हों, तब तो गृहस्थी का रथ झनझनाता हुआ आनन्दपूर्वक चलता है, किन्तु जब दोनों ही अपने-अपने कर्त्तव्य को भूलकर विपरीत आचरण करते हैं, तब रथ रुक जाता है। चलता भी है, तो अत्यन्त कष्ट से। पत्नी घर की स्वामिनी है, पति बाहर का। पत्नी का कार्य क्षेत्र छोटा, किन्तु महत्वपूर्ण है। पति का क्षेत्र विस्तृत है, किन्तु उसमें राग, द्वेष, ईर्ष्या, प्रतिस्पर्धा, चिन्ता आदि हैं। स्त्री गृह की स्वामिनी है, इसलिये उसे गृहिणी कहा गया है। पुरुष को पतन से बचाती है, इसलिये उसकी पत्नी संज्ञा है। पुरुष के सभी कामों में हाथ बँटाने से उसे अर्धाङ्गिनी कहा है। पत्नी का तथा उससे उत्पन्न संतति का पुरुष पालन करता है, इसलिये उसकी पति संज्ञा है, भरण-पोषण करने से उसे भर्ता भी कहते हैं। सत्पत्नी प्रेमपूर्वक व्यवहार करके पति को अपने वश में कर लेत है। पति-पत्नी के प्रेम-पाश में बँधकर उसके विरुद्ध आचरण नहीं करता। प्रेम के बन्धन में बड़ा सुख होता है। जो पत्नी प्रेम से नहीं, अभिमान में भरकर पति पर शासन करती है, उसे अपना क्रीड़ा मृग बनाये रखती है, अपनी इच्छानुसार नचाती है और वह पुरुष भी ऐसा नपुंसक है कि स्त्री के सामने भीगी बिल्ली बना रहता है, उसके क्रोध को देखकर थर-थर काँपता रहता है, अपने पुरुषत्व के अधिकार को एकदम खो बैठता है, तो उन दोनों का ही पतन होता है। ऐसे पुरुष का नाम है स्त्रीजित्। शास्त्रकारों ने स्त्रीजित् पुरुष को ज्ञान आदि देने का अनाधिकारी बताया है। ऐसे पुरुष से संभाषण करना भी उचित नहीं। ऐसी स्त्री के लिये तो कहना ही क्या, वह अपना इहलोक और परलोक- दोनों बिगाड़ रही है। जिस स्त्री का पति प्रेम से नहीं- भय से स्त्री को देखकर थरथर काँपने लगे, जो स्त्री सदा नौकर और दासों की भाँति उच्चासन पर बैठकर पति को उचित अनुचित आज्ञा देती रहे, उसके सर्वप्रथम तो सन्तान ही न होगी, यदि होगी भी, तो लड़कियाँ होंगी। यदि कदाचित पुत्र हुआ भी, तो वह पागल, मूर्ख, व्यभिचारी या नपुंसक होगा। सारांश यह है कि स्त्रीजित पुरुष संततिसुख नहीं भोग सकता। उसका जीवन सर्वदा भय-ग्रस्त बना रहता है। ऐसी स्त्रियाँ इस लोक में भी दु:खी रहती हैं और मर कर भी नरकों में जाती हैं। पतिव्रता पत्नी अपना सर्वस्व पति-चरणों में अर्पित करके अखिल सृष्टि की स्वामिनी बन जाती है। ऐसी पतिव्रता के विरुद्ध आचरण करने का साहस कौन कर सकता है? जो अपने पति को सर्वस्व न समझकर शारीरिक सुखों में फँसी रहती है, उसी की ओर पुरुष दृष्टि उठाकर देख सकता है, उसीसे बलात्कार या छल करने का साहस कर सकता है।

* एक पुरुष या स्त्री होने से ज्यादा महत्वपूर्ण है, एक अच्छा हृदय का होना, अच्छा व्यवहार करना, एक मनुष्य की तरह व्यवहार करना, मनुष्य को चाहिये जन्म लेनेका भरपूर आनंद उठाएं। कायरता के सामने कभी नहीं झुके। कायर व्यक्ति पशु के समान है, जब तक कायरता रहती है, किसी खतरे की आशंका बनी रहती है। जब खतरा गुजर जाता है तो वही व्यक्ति साहसी हो जाता है। दुनिया में जन्म लेना किसी खतरे से कम नहीं होता।

* वास्तविक ब्राह्मण वो ही है जो किसी दूसरेका दोष नहीं देखता, झूठ नहीं बोलता, दम्भ नहीं करता, ईर्ष्या नहीं करता, डाह नहीं करता, हिंसा नहीं करता, अभिमान और अहंकार नहीं करता। सत्यपरायण रहता है। उन सत्यशील ब्राह्मणोंका आशीर्वाद कभी भी विफल नहीं होता।

* जब बहिर्मुखता आती है तो कामना-वासनाजनित मैं और मेरासे मनुष्यके जीवनकी सारी इन्द्रियाँ और मन तथा चित्त भर जाता है। मैं और मेराके सिवाय कुछ नहीं रहता। भगवान्‌को भूल जाते हैं और मेरेकी आावजसे कान बहरे हो जाते हैं। संसारके सारे जीव मैं- मेरेकी आवाज करते हैं, मैं-मेरेको सुनते हैं। इस आवाजसे कान बहरे हो जाते हैं। शास्त्र और भगवान्‌की बात कानोंमें प्रवेश नहीं कर पाती और करती है तो इस शब्द-कोलाहलमें जाकर पता नहीं कहाँ खो जाती है।

* मनुष्य सोचता है कि वह अपने बल, पुरुषार्थ, चेष्टा, दुराग्रह, दुराचरणोंसे किसीका बुरा करने जाय परन्तु जो किसी दूसरेका बुरा करने जाता है उस दूसरेका बुरा तो तभी होता है जब होना होता है। मनुष्यको कर्मका फल प्राप्त होता है। कर्म पहले बनता है और फल पीछे होता है। पहले फल हो इसके बाद कर्म बने यह सम्भव नहीं। बीज पहले होता है फल उसके बाद होता है। मनुष्यको लौकिक फल, भोग, व्यक्ति, पदार्थ, परिस्थिति और प्राणी सभी पूर्वजन्मके अपने किये हुये कर्मानुसार ही मिलते हैं परन्तु यदि वह दूसरेका बुरा करने जाता है तो दूसरेका बुरा तभी हो सकता है जब वैसा कर्मवश होना विधेय होगा। लेकिन बुरा करने या चाहनेवाला अपना बुरा स्वयं ही तुरन्त कर लेता है जिसका फल भोगनेके लिये उसे बाध्य होना पड़ता है। दूसरेका बुरा करते समय उसके प्रति बुरी भावना जब हमारे मनमें पैदा हो तब तो यह समझ ले कि बुरा अवश्य हा जायेगा। इसलिये दूसरेका बुरा करनेकी बात कभी सोचे नहीं; और अपना बुरा किसीके द्वारा होता हो तो वहाँ यह समझे कि मेरा बुरा कोई कर नहीं सकता। मेरा बुरा होगा तभी जब वैसा मेरे कर्मवश होना होगा। दूसरा यदि मेरे बुरेमें निमित्त बनता है तो वह स्वयं अपना बुरा करता है। अपना बुरा जो अपने आप करता है वह मूर्ख और दयाका पात्र है। बहुत प्रयत्न लोग करते हैं दूसरेका अनिष्ट करनेकी और नहीं होना होता है तो नहीं होता है। किसी दूसरेका बुरा हम कर नहीं सकते और यदि हम करना चाहते हैं तो अपना बुरा करते हैं। ऐसे लोगोंके सम्बन्धमें मानना चाहिये कि यह बेचारा दयाका पात्र है। भगवान इस पर कृपा करे, इसकी बुद्धिको शुद्ध करें। किसीका बुरा करनेकी अपनी इच्छा हो तब यह सोचें कि इससे उसका नहीं हमारा ही बुरा हो जायेगा।

* रुपयों के अर्जन करने में, श्रम के साथ उपयोग शक्ति का संचार होने लगता है।

* अगर सच्ची लगन और समाज में कुछ कर दिखाने का जज्बा हो तो कोई कठिनाई, समस्यायें, गरीबी आडे नहीं आती। समाज बदल रहा है इसका पता जब चलता है जब सबसे पीछे रहनेवाले लोग ऊंची सत्ता धारण कर कुछ लोगों को अपनी प्रतिभा से चुनौती देते है अब ऐसा ही समय आ रहा है। जनता जागरूक हो चुकी है। यह बदलाव का चक्र अब किसी के रोके रुकनेवाला नहीं। सफल व्यक्ति और समाज वह है जो प्रतिकुलताओं में भरे नवनिर्माण के अवसर खोजता है। सफलता सड़क पर नहीं मिलती उसके लिये लक्ष्य निर्धारित करना पड़ता है और लक्ष्य प्राप्त करने के लिये कठोर श्रम की आवश्यकता है। सफलता आपके पास नहीं आयेगी आपको वहांतक जाना पड़ेगा। अविश्रान्त क्रियाशीलता ही पुरुषार्थ का लक्षण है।

* पुरुष विचारशील होता है, नारी भावुक होती है।

* विवाह का अर्थ है पुरुष ने अपनी प्रसन्नता बेच देना और नारी ने अपनी स्वतन्त्रता।

* ज्ञान का उपयोग मानव विकास के लिये है।

* इच्छा एक घना जंगल है जिसमें भटकते हुए पूरी आयु बीत जाती है मगर मंजिल तक पहुंचने का रास्ता नहीं मिलेगा।

* विषयोंको विषके समान छोड़ो। ये विषय विष हैं। जो विषय जो भोग भगवान्‌की सेवामें न लगकर भगवान्‌के स्थानको ग्रहण करके हमारे हृदयमें, जीवनमें आ जाते हैं वे तमाम विष हैं। वे वास्तवमें भोग नहीं है। यह विष जिसके हृदयमें रहता है वहाँ भगवान नहीं आते हैं। विषयानन्द सच्चा आनन्द नहीं है वह मिलता है और फिर चला जाता है और अन्तमें विषका काम कर देता है। जितने भी भोगके आनन्द हैं ये भोगकालमें ही अच्छे लगते हैं परन्तु पीछे उनका फल विषके समान होता है।

* हमारा क्रोध विकार होता है और जो विकारी क्रोध होता है वह नाश करनेवाला होता है। इसलिये उसका नाश कर देना आवश्यक होता है।

* बच्चेका लाड़ वहीं तक करना चाहिये जहाँ तक बच्चा बिगड़ता न हो और जहाँ बच्चा बिगड़ने लगे वहाँ लाड़ नहीं करना चाहिये। वहाँ बच्चेको डाँटना उचित है। बिना डाँटे वह सुधरता नहीं है।

* आजकल लोगोंका शौक बदल रहा है। स्वभाव (रुचि) बदल रही है। खानेका स्वाद, मकानका, मोटरका नया-नया ढंग बदलता है इसका अर्थ यही है कि भोग-वासनाका दासत्व बढ़ रहा है। व्यक्ति निरन्तर चाहता है कि नया जीवन मिले, नया बल मिले, नयी शक्ति मिले और नये-नये भोग प्राप्त हों। यही उसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य रह गया है। इन्द्रियोंके अर्थ भोगोंका संग्रह रह गया है। ये न्याय-अन्याय नहीं देखते, धर्म-अधर्म नहीं देखते और भोगोंमें लगे रहते हैं। कामना और कोई बीचमें आये तो क्रोध तथा लोभ बढ़ता ही रहता है। ये तीन नरकके द्वार है।

* विद्यामद होता है, धनका मद होता है, प्रभुत्वका मद होता है, अधिकारका मद होता है, जातिका मद होता है। हम ऊंची जातिके, नीची जातिका, हम ब्राह्मण यह चाण्डाल है, हम पुरुष है यह स्त्री है, हम घरके मालिक है यह घरके नौकर है, हम इनको आश्रय देनेवाले है यह हमारे आश्रित है, हम विद्वान है ये सब मूर्ख है, हम नेता है यह सब जनता। न जाने-कितने प्रकारकी मदकी परिभाषायें हैं। जो विद्या, धन और उच्चकुल इत्यादि के मद से लिप्त नहीं होता वही वास्तवमें असली विद्वान है, संत है। धनी लोग संतोंके पास नहीं आ सकते। संतोंका समागम उनके लिये दुर्गम है।

* धन होना चाहिये धर्म-नियन्त्रित। जो धन उच्छृंखल बना दे, धन जो असत् मार्ग पर ले जाय, बुरे मार्ग पर ले जाय वह धन किसी काम का नहीं। यदि धर्म नियंत्रित हो तो उसका फल मोक्ष है तो ही वह सही धन है, सही अर्थ है नहीं तो अनर्थ है।

* धनी आदमी के पास जायँ तो धनी आदमी के अनुकूल ही कहना पड़े और यदि वे घर में आ जायँ तो भी उसके बारेमें कहना पड़े। अपनी बात तो कह भी नहीं सकते। अधिकार सम्पन्न और धनसम्पन्न पुरुष के पास कोई जाय तब या तो लड़ाई मोल ले अथवा उनके मनके अनुसार ही बात कहनी पड़ती है।

* सन्तोंमें और हममें यही अन्तर है इन्द्रियां संतोंके अधीन नहीं होती और संसारी लोग इन्द्रियोंके अधीन होते हैं। संसारी लोग इन्द्रियोंके मनके गुलाम हैं सन्तोंका मन और उनकी इन्द्रियां संतोंके गुलाम रहती है।

* वाणीसे व्यर्थ शब्द एक भी न निकले और अनर्थ तो निकले ही नहीं। परचर्चा, परनिंदा, मिथ्या-भाषण, परदोष-कथन, स्वमहिमा-कथन यह सब वाणीके दोष हैं। वाणीको-जबानको भगवानके गुणकथनमें, नामकीर्तनमें लगाना चाहिये। जिससे अवकाश ही न मिले।

* भाग्य का पता नहीं चलता, जाने कब अस्त हो जाय, कब उदय। हम जिस बात को सम्भव समझते हैं, वह असम्भव हो जाती है, जिसे सर्वथा असम्भव समझते हैं, वही सम्भव।

* पार जानेवाले दो प्रकार के होते हैं- एक तो वे हैं, जो स्वयं एकाकी ही तरह जाते हैं, दूसरे वे होते हैं, जो स्वयं तो तरते ही हैं, साथ में बहुतों को लेकर तरते हैं। जैसे सर्प, सिंह स्वयं अपने बाहुबल से नदी पार हो जाते हैं, किन्तु नौका वाला मल्लाह स्वयं तो नौका-सहित उस पार हो ही जाता है, साथ में बहुत से ऐसे लोगों को भी पार ले जाता है, जो तैरना जानते ही नहीं। सृष्टि में दोनों की ही आवश्यकता है, दोनों ही श्रेष्ठ हैं। अभिमान में भरकर किसी की निन्दा न करनी चाहिये।

* बहुत से लोगों की दूर से तो बहुत प्रशंसा सुनते हैं, समीप जाने पर उनका निजी जीवन उन्नत दिखायी नहीं देता। बड़े-बड़े लेखकों की कृतियों को पढ़कर हम अनुभव करते हैं, वे कोई उच्च कोटि के महापुरुष होंगे, जब उनके समीप जाते हैं, तो प्रतीत होता है कि जो वे लिखते हैं, उसे अपने जीवन में परिणत नहीं कर सकते। उन्हें समझना चाहिये वे एक निर्जीव यन्त्र हैं। कुछ ऐसे होते हैं कि वे जो कहते हैं। उसे करते भी हैं जो उनके भीतर है, वही बाहर है, जैसे वे दूर से सुन पड़ते हैं, वैसे ही समीप आने पर दिखाई भी देते हैं। वे ही महापुरुष हैं, वे ही पूजनीय, वन्दनीय तथा आदरणीय हैं।

* सन्तानों पर माता-पिता के स्वभाव और सदाचार का बहुत प्रभाव पड़ता है। पति से पृथक् रहकर स्त्रियों का

स्वच्छन्द विहार करना अनर्थ का हेतु होता है। परमार्थहीन अनार्य जाति तो इस रहस्य को जान ही नहीं सकती। उनके यहाँ शारीरिक सुख ही सब कुछ है। किन्तु जो आध्यात्मवादी हैं, उन्हें तो रजवीर्य की विशुद्धता पर विशेष ध्यान देना चाहिये। पति से पृथक रहने पर युवती स्त्रियों में चांचल्य बढ़ ही जाता हैं

* विषयों के प्रति प्राणियों का सहज अनुराग है। जो इस जीव-जगत् का जनक है। वह स्वतंत्र है। अत: स्वभाव से सभी स्वतंत्र होना चाहते हैं। परतंत्रता में दु:ख और स्वतंत्रता में सभी को सुख का अनुभव होता है, किन्तु स्वतन्त्रता के सच्चे सुख का वही अनुभव कर सकता है, जो किसी बन्धन में रह चुका हो। जिसने बन्धन का अनुभव नहीं किया, वह विमुक्ति सुख का कैसे अनुभव कर सकता है। इसीलिये धर्म का बन्धन प्रेम का बन्धन-ही सुख का परम हेतु है। जो धर्म बन्धन में नहीं बँधा, वह परमात्मा को कैसे पकड़ सकता है। जिसने प्रेम बंधन में बँधकर अपना तन, मन, धन, समस्त शारीरिक-मानसिक चेष्टायें और अपना सर्वस्व अपने प्रेमास्पद को अर्पित नहीं कर दिया, वह प्रेम के रहस्य को क्या जाने।

* जो अवसरवादी पुरुष होते हैं, वे जैसा अवसर देखते हैं, वैसा ही काम व बात भी वैसे ही करने लगते हैं। स्वार्थी पुरुषों का भी यही सिद्धान्त होता है, जहाँ जैसा बनने से अपना स्वार्थ सधता हो, वहाँ वैसे ही बन जाते हैं। जहाँ रोना होता है, वहाँ बिना रुदन के आँसू बहा देते हैं, जहाँ हँसना होता है, बिना हँसी के हँस जाते हैं।

* महान पुरुषों का अनादर मनुष्यों की आयु, श्री, यश, धर्म, स्वर्गादि उच्च लोक, समस्त काम तथा सम्पूर्ण श्रेयों को नष्ट कर देता है, अत: श्रेय की इच्छा रखनेवाले को की भूलकर भी महान् पुरुषों का अनादर न करना चाहिये।

* किसी वस्तु में सुख नहीं, घटना में सुख नहीं, सब पूछा जाय तो प्रतीक्षा में ही सुख है। यों सामान्यतया शास्त्रकारों ने अनुकूल वेदना को सुख कहा है, प्रतिकूल वेदना को दु:ख कहा है। किन्तु वैसे ही सामान्य रीति से बिना प्रयत्न के बिना प्रतीक्षा के हमें इष्ट वस्तु प्राप्त हो जाय तो उसमें कोई विशेषता प्रतीत नहीं होती। सामान्य सुख होता है, उसका भी अनुभव नहीं होता। यद्यपि जल को जीवन कहा है। प्यास न हो तो कितना भी सुन्दर जल रखा रहे, हमारे लिये उसका कोई विशेष महत्व नहीं। प्यास जितनी ही अधिक तीव्र होगी, सुखानुभूति उतनी ही अधिक होगी। पपीहा के लिये वही स्वाति बूँद अमृत के सदृश है, क्योंकि उसने बहुत दिनों तक प्रतीक्षा की है।

* जिसकी जिसके द्वारा आजीविका चलती है, उसका वही इष्ट है, उसी की वह पूजा करते हैं। ब्राह्मण वेदों की पुराणों की पूजा करते हैं। क्षत्रिय शस्त्रों की, रथ और घोड़ों की पूजा करते हैं। बनिया अपने तराजू की डण्डी की पूजा करते हैं, किसान अपने हल बैल की पूजा करते हैं, मल्लाह अपनी नौका को जते इसी प्रकार गोपों की आजीविका गौओं से चलती हैं, अत: वे सब पर्वों पर, सब उत्सवों पर गौओं की पूजा करते हैं, उन्हें ही सजाते हैं। मनुष्य को अपनी प्यारी वस्तु को सजी-सजायी देखकर स्वाभाविक ही सुख हुआ करता है।

* गृहस्थी की चिन्ताओं की कोई गणना नहीं। कहना चाहिये गृहस्थी चिन्ताओं का पुञ्ज ही है। जिसने कभी गृहस्थ में पदार्पण नहीं किया है, वह अनुमान भी नहीं लगा सकता कि व्यक्ति को नित्य ही असंख्यों चिन्ताएँ कहाँ से आ जाती हैं। परन्तु कोई भी गृहस्थी ऐसा नहीं, जो इन चिन्ताओं से दबा न हो। इतनी चिन्ताओं से दबे रहने पर भी कोई गृहस्थी को छोड़ नहीं सकता। क्योंकि उसे समाज की सहानुभूति प्राप्त है, दूसरों को विवाह, पुत्रोत्सव तथा दूसरे उत्सव पर्वों पर सुख देता है। स्वयं भी उनके सुखों में सम्मिलित होता है और आशा करता है, कभी मुझे भी ऐसा सुख मिलेगा। मेरे सुख में भी समाज के सदस्य सहानुभूति प्रकट करेंगे। समाज की सहानुभूति से सुख-दु:ख बँट जाता है। दु:ख में सहानुभूति प्राप्त होने से दुख घट जाता है, सुख में सहानुभूति प्राप्त होने से वह बढ़ जाता है। हृदय की प्रसन्नता को प्रकट करने अपनी श्रद्धा-भक्ति सहानुभूति व्यक्त करने

हम कुछ वस्तुओं को ले जाते हैं। वास्तव में वस्तुओं में तो सुख है नहीं, हम उनके द्वारा अपने भावों को व्यक्त करते हैं।

❋ शास्त्र का ऐसा वचन है कि जब राजा के समीप जाना हो, किसी वेदपाठी-ब्राह्मण के पास जाना हो, अपने गुरुओं के समीप जाना हो, मुहूर्त दिखाने के लिये ज्योतिषी के समीप जाना हो, ओषधि आदि पूछने वैद्य के पास जाना हो अथवा अपने कुटुम्ब परिवार में मित्रों के यहाँ उत्सव आदि में जाना हो तो रिक्त-हस्त कभी भी न जाय, कुछ-न-कुछ लेकर ही जाय। उत्सव में सभी भेंट लेकर आते हैं। जिनसे अपना सम्बन्ध है, उत्सव-पर्वों में जिनके यहाँ आते-जाते हैं, वे लोग सभी परस्पर में सम्मिलित होते हैं।

❋ जो जिस भाव में भावित हो जाता है, उसमें उसकी लालसा अधिकाधिक बढ़ती ही जाती है। जैसे विषयी पुरुष विषयों का सेवन करते-करते तृप्त नहीं होते, वैसे ही भगवद् भक्त भगवान के चरित्रों को सुनते-सुनते उनकी रूप माधुरी का पान करते-करते कभी तृप्त नहीं होते। प्रगतिशील प्राणी का स्वभाव है, वह उत्तरोत्तर बढ़ता ही जाता है। हृदय में एक दुर्गुण आ जाय तो वह शनै: शनै: और दुर्गुणों को आमन्त्रित करता रहेगा। जब मनुष्यों को अपना एक दुर्गुण दिखाई दे जाय और उसे मिटाने का प्रयत्न करे तो फिर एक के पश्चात् दूसरा, दूसरे के पश्चात तीसरा इस प्रकार अवगुण-ही-अवगुण दीखने लगते हैं, अन्त में वह चिल्ला उठता है मोसम कान कुटिल खल कामी जिन्हें देने का व्यसन हो जाता है, उनकी दान देते-देते तृप्ति नहीं होती। जितना मिले उतना ही वे देने को लालायित बने रहते है। जिसकी तृप्ति हो गयी, उसकी प्रगति रुक गयी। नहीं तो चाहे सद्गुण हो अथवा दुर्गुण इहलौकिक भोग हों या पारलौकिक उनमें तृप्ति नहीं, तुष्टि नहीं, सन्तोष नहीं, अलम् नहीं जो भी आगे आ जाय वही स्वाहा है, पुन: आगे बढ़ो। बढ़ने की कोई सीमा नहीं, अन्त नहीं, पार नहीं। अनन्त, असीम और अपार पथ है। जो गया सो गया जो आवत इहि ढिँग बहुरि, जात नहीं रस खानि तृप्ति ही हो जाय तो रस ही समाप्त हो जाय। अतृप्ति ही तो रसोत्पादिनी है।

❋ लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिये लोग विविध भाँति के उपाय करते हैं। बहुत से भीड़ एकत्रित करने को लड़ने लगते हैं। कोई ऐसी अद्भुत आश्चर्य की बात कहकर मनुष्यों के मन को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। कोई विस्मयोत्पादक अद्भुत घटना घटाकर सबका मन उस घटना की ओर बलात् लगाते हैं। अत्यन्त हर्षयुक्त, अत्यन्त भयंकर, अपूर्व तथा विस्मयोत्पादक घटना को देखकर सबका मन उसे देखने को लालायित हो उठता है। सब उसका कारण जानने के लिये समुत्सुक बन जाते हैं। बड़े प्रभावशालियों के सम्मुख छोटे प्रभावशालियों का प्रभाव दब जाता है। बड़े दु:ख के आगे छोटा दु:ख भूल जाता है, इसी प्रकार बड़ी ध्वनि के सम्मुख उससे छोटी ध्वनियाँ उसी में विलीन हो जाती हैं, उस समय उन छोटियों का कोई महत्त्व नहीं रह जाता। वे बड़ी ध्वनियों में समा जाती हैं।

❋ जो घटना होनेवाली होती है, उसकी भूमिका पहिले से ही बँध जाती है। लक्षणों को देखकर बुद्धिमान पुरुष अनुमान कर लेते हैं कि अब यह घटना घटित होनेवाली है। वर्तमान को देखकर भविष्य का अनुमान करते हैं, किन्तु जो सर्वज्ञ हैं, उसके लिये तो भूत, भविष्य का कोई अर्थ ही नहीं। वह तो ऊँचे चढ़ा हुआ है, अत: भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों को देखता है। तीनों ही उसे लिये एक-से हैं। हम अपनी अल्प बुद्धि से कहते हैं, ऐसा सहसा क्यों हो गया? सहसा तो कुछ होता ही नहीं। सभी निश्चित रूप से होता है।

❋ पिता जब तक जीता है, सन्तान के लिये ही सोचता रहता है। सन्तान न होने पर जीवन अकर्मण्य उत्साहहीन तथा नीरस बन जाता है।

❋ प्रतीक्षा ही आनंदोत्साह की अधिकता में मुख्य कारण है। इष्ट वस्तु की जितनी ही अधिक प्रतीक्षा होगी, उतनी ही

अधिक उत्सुकता बढ़ेगी, जितनी अधिक उत्सुकता के अनन्तर उसकी प्राप्ति होगी, उतनी ही अधिक प्रसन्नता होगी।

* अच्छा और सब त्रुटियाँ तो सही भी जा सकती हैं, क्षम्य भी मानी जा सकती हैं, किन्तु सुहृद् जनों को पृथक करके जो वियोग की रचना ब्रह्माजी ने की है, वह तो असह्य है। जिस प्रेम में वियोगजन्य दुख नहीं ऐसा प्रेम देखने में नहीं आता। जितनी ही अधिक प्रतीक्षा के पश्चात् प्रिय का मिलन होगा उसमें उतना ही अधिक आनन्द आवेगा। दूर रहने पर जितनी उत्कण्ठा बढ़ती है, समीप रहने पर उतनी अनुभव नहीं होती।

* संसार में सुहृद् जनों का मिलना यही अत्यन्त कठिन है। सभी वस्तुएँ प्रयत्न करने से सफलतापूर्वक प्राप्त हो सकती हैं, किन्तु पृथक् हुए प्रेमियों का सम्मिलन बड़े सौभाग्य की बात है। सुहृदयों का एक-दूसरे से पृथक् होना मरण के समान हैं।

* विपत्ति के सिर पर पैर रखकर माता अपनी सन्तान की रक्षा करती है।

* मन में जो संकल्प उठता है, कभी-न-कभी अवश्य पूर्ण होता है।

* ऐसा कोई वास्तव में महान व्यक्ति नहीं हुआ जो वास्तव में सदाचारी न रहा हो।

* उस स्वाधीनता को तिलांजल दे दो जो पाप की अनुचरी हो।

* मस्तिष्क नश्वर है सम्पत्ति अचिरस्थायी है, जीवन अत्यंत लघु है और यौवन क्षणभंगुर है। पृथ्वी की सारी वस्तुएं नाशवान हैं, केवल विमल यश ही अविनश्वर है और चिरस्थायी।

* समय की कसौटी पर ही मनुष्य की आत्मा की परीक्षा होती है।

* एक युग विशाल नगरों का निर्माण करता है, एक क्षण उनका विध्वंस कर देता है।

* सत्य से स्वाधीनता मिलती है, केवल यही बात ठीक नहीं है। उसके साथ-साथ यह भी ठीक है कि स्वाधीनता हमें सत्य प्रदान करती है।

* इस विश्व में एकही बंधन है जिसे हर व्यक्ति स्वेच्छा से स्वीकारने को प्रस्तुत है। वह है प्रेम का बन्धन। स्नेह-रज्जु। शेष सारे रज्जुओं-रस्सियों को हर कोई नकारता है। तन का हो या मन का, बन्धन सदा अप्रिय होता है। प्रेम से मनुष्य तो क्या पशु-पक्षी भी बँध जाते हैं। तब एक वन्य व्याघ्र भी आपके पीछे-पीछे डोलने लगता है, प्रेम-पालित श्वान की भूमिका में। प्यार चाहे स्वरूप जो ले- प्रेयसी का, पत्नी का, माँ का, पिता, भ्राता अथवा गुरु-शिष्य का पर वह बाँध छोड़ता है और यह बन्धन स्वागत पाता है- स्वेच्छया ग्रहण किया जाता है पर प्रेमरहित बन्धन विस्फोटक होता है, विद्रोहकारी।

* जिस प्रकार श्रम शरीर को शक्ति प्रदान करता है, उसी प्रकार कठिनाइयां मनुष्य को शक्ति-सम्पन्न बनाती हैं।

* जो अपना कर्त्तव्य करने से चूकता है, वह एक महान लाभ से स्वयं को वंचित रखता है।

* सम्पूर्ण संसार को एकता के सूत्र में बांधने की योजनाएं बनाना सरल है, किन्तु अपने हृदय में रहनेवाले क्रोध पर विजय पाना अत्यंत कठिन है।

* अपमान सदा प्रतिशोध का भाव पैदा करता है और जब तक इस भाव की पूर्ति न हो जाय व्यक्ति भीतर-ही-भीतर ज्वालामुखी की तरह जलता रहता है।

* नीति की बातें एकान्त में ही करनी चाहिये जिससे सफलता सुनिश्चित होती है।

* हर बात व्यक्ति के अधिकार में ही होती है क्या? फूल क्या किसीसे पूछकर खिलते हैं? सुबह की मधु-बयार क्या किसीका आदेश लेकर बहती है? प्रपात से फूटती जलधारा किसकी आज्ञा की अपेक्षा करती हैं। किससे पूछकर चाँद-तारे आसमान में खिलखिलाते हैं।

❋ ममता बुरी होती है, वह बाँधती है और बंधन कष्टकारक है।

❋ जीवन में आधी गलतियां तो केवल इस लिए होती हैं कि जहां हमें विचार से काम लेना चाहिए, वहां हम भावुक हो जाते हैं और जहां भावुकता की आवश्यकता है, वहां विचारों को अपनाते हैं। वे केवल विचारों की तरल धाराएं हैं जो मनुष्यों और संसार को चलाती हैं।

❋ एक मनुष्य को उससे अधिक विश्वास नहीं करने चाहिए जितने वह निभा सके।

❋ द्वेष और कपट को त्याग दो। संगठित होकर दूसरों की सेवा करना सीखो, यही हमारे देश की महती आवश्यकता है।

❋ शिक्षा माता के चरणों से ही प्रारंभ होती है और शैशव की बातों में शिशुओं से कहा प्रत्येक शब्द उनके चरित्र का निर्माण करता है।

❋ जो शक्ति के बल पर विजय प्राप्त करता है वह अपने शत्रु पर अपूर्ण विजय ही प्राप्त कर पाता है।

❋ पुत्री के लिये संसार की अजब रीति है कि जन्म तो मायके में होता है और प्रीति ससुराल में करनी पड़ती है।

❋ क्या कृत है और क्या अकृत है कुछ भी विचार नहीं करके लोक लाज को छोड़कर नीच पुरुष कौनसा कुकर्म नहीं करते ऐसे मूढ़ मलिनमति वाले को धर्म में कहाँ प्रीति होती है।

❋ कानून तो जैसे मकड़ी के जाले हैं। छोटे-छोटे जीव उनमें फंसकर प्राण खो बैठते हैं जबकि बड़े जीव तो उन्हें भी फाड़ फेंकते हैं।

❋ वेदना और भय के समय कोई प्रकृति भी नास्तिक नहीं रहती- जो मस्तिष्क नहीं जानता कि कहां जाय, ईश्वर की शरण में पलायन करती है।

❋ समय पर ठीक तौर से काम करने की आदत का ख्याल रखो। जो कुछ करना हो शीघ्र कर डालो और काम कर लेने के बाद आराम करो, पहले आराम करने की चेष्टा मत करो।

❋ मनुष्य जब पशु बन जाता है, उस समय वह पशु से भी बदतर होता है।

❋ हरेक को अपने जीवन से प्रेम है? तो समय को व्यर्थ मत गंवाओ क्योंकि जीवन प्रेम से ही बना है।

❋ समय की कसौटी पर ही मनुष्य की आत्मा की परीक्षा होती है।

❋ पृथ्वी पर कोई ऐसा दु:ख नहीं है स्वर्ग जिसका निवारण न कर सके।

❋ बहुत से मनुष्य इतने अशक्त होते हैं कि छोटी-सी बात के लिए क्षमा कर देना उनकी शक्ति से बाहर होता है।

❋ एक साथ ही लक्ष्मी और सद्विवेक का वरदान प्राय: मनुष्यों को कम ही मिलता है।

❋ प्रेम ही स्वर्ग का मार्ग है, मनुष्यत्व का दूसरा नाम है। समस्त प्राणियों से प्रेम करना ही सच्ची मनुष्यता है।

❋ अपने प्रति बुद्धिमान बनने की अपेक्षा दूसरों के प्रति बुद्धिमान बनना सरल है।

❋ सभ्यता और धर्म की प्राचीनता की दृष्टि से कोई राष्ट्र आर्य सभ्यता की समता नहीं कर सकता।

❋ विश्वास और निर्दोषता शिशु के अतिरिक्त और किसी में नहीं पाये जाते।

❋ दिन मित्रों के वेश में हमारे सामने आते हैं और प्रकृति की अमूल्य भेंट लाते हैं। अगर हम उनका उपयोग न करें तो वे चुपचाप लौट जाएंगे।

❋ पुरुषों की त्रुटियों में उनकी स्वार्थपरता निहित रहती है, नारियों की त्रुटियों के मूल में उनकी दुर्बलता।

* सत्य से स्वाधीनता मिलती है, केवल यही बात ठीक नहीं है। उसके साथ-साथ यह भी ठीक है कि स्वाधीनता हमें सत्य प्रदान करती है।

* जो अपनी जिह्वा को वश में रखता है वह जीवन-भर नियंत्रण रखती है, किंतु जिसका जिह्वा पर वश नहीं, वह नाश को प्राप्त होता है।

* प्रतिरोध और सहनशीलता से हम प्रेम को ईश्वर के समकक्ष पहुंचा सकते हैं।

* सलाह तो अनेक प्राप्त करते हैं, किंतु उससे लाभ उठाना बुद्धिमानों को ही आता है।

* सभ्यता चरित्र का वह रूप है जो मनुष्य को कर्त्तव्य का मार्ग दर्शाता है।

* वही सफल होता है जिसका काम उसे निरंतर आनंद देता है।

* महान बनो और अन्य मनुष्यों में होनेवाली महानता तुम्हारी महानता से मिलने के लिए उठ खड़ी होगी।

* उनसे अधिक दयनीय दासता किसी की भी नहीं जो स्वयं इस भ्रम में रहते हैं कि वे स्वतंत्र हैं।

* वही सच्चा जीवन व्यतीत करता है जो अपनी जीवन-शक्ति भावी सन्तान के लिए व्यय कर देता है।

* सामग्री द्वारा नहीं अपितु नैतिकता के बल द्वारा ही मनुष्यों और उनके कर्मों पर अधिकार प्राप्त किया जा सकता है।

* भौतिक वीरता एक पाशविक प्रवृत्ति है, नैतिक साहस उससे कहीं अधिक सत्य, साहस और वीरता का द्योतक है।

* संसार में सफलता प्राप्त करने और उन्नत होने के केवल दो मार्ग हैं। एक तो स्वयं अपने श्रम द्वारा और दूसरा दूसरों की मूर्खता से लाभ उठाकर।

* सम्पदा तो बुरे सेवकों के समान है जो सदैव चलते रहते हैं और एक स्वामी के साथ अधिक नहीं ठहरते।

* संगीत और कला की उपासना भावना के धर्म को उन्नत करती है।

* उन सुकृति रससिद्ध कवि यशस्वी है उनकी की जय हो जिनके यश-रूपी शरीर को बुढ़ापे और मौत का भय नहीं है।

* यदि कानून केवल, शासकीय अधिकारियों के पास रहे तो कानून शब्द का शीघ्र अंत हो जाए।

* समाज तुम्हारे साथ तब तक नाता जोड़ेगा जब तक कुछ मिल रहा है। यदि व्यक्ति की कोई कीमत ही नहीं तो नाता जोड़ने की क्या जरूरत है।

* जिस प्रकार प्रात:काल दिन का द्योतक होता है, उसी प्रकार ही शैशव भी मनुष्य का परिचायक होता है।

* जीवन कर्म का ही दूसरा नाम है। वह जो कि कर्म नहीं करता, उसका अस्तित्व है किन्तु वह जीवित नहीं।

* हमारी आवश्यकताएं जितनी कम होती हैं, हम ईश्वर के उतने ही निकट होते जाते हैं।

* मनुष्य उन पर अधिक ध्यान देते हें जो अत्यन्त शीघ्रता से ऊपर उठे हैं जबकि धूल, भूसे और पंखों से अधिक शीघ्र कोई वस्तु ऊपर नहीं उठती।

* जो घृणा हम शत्रुओं के प्रति रखते हैं वह हमारी अपेक्षा उनकी प्रसन्नता को कम आघात पहुंचाती है।

* सबसे छोटे बच्चे ईश्वर के सर्वाधिक निकट होते हैं, जिस प्रकार कि सबसे छोटे ग्रह सूर्य के निकट होते हैं।

* समय मूल्यवान अवश्य है, किन्तु सत्य समय से भी अधिक मूल्यवान है।

* संसार में जो बात जैसी दीख पड़े, कवि को वही वैसे ही वर्णन करनी चाहिए। उसके लिए किसी भी रोक या पाबन्दी का होना अच्छा नहीं।

* लालच से कभी सुख नहीं मिलता।

✻ जिसमें फूट हो गई है और पक्ष-भेद हो गये हैं, ऐसा समाज किस काम का? आत्मप्रतिष्ठा और आत्मा की एकता की मूर्ति का समाज चाहिए। अलग रहकर जितना काम होता है, उससे सौ गुना संघ-शक्ति से होता है।

✻ जो बुद्धिमानों की संगति करता है, वह बुद्धिमान ही होगा।

✻ जितने महानगर होंगे, उतने नियम आ जाएंगे। जितनी भीड़ होगी, उतने नियम बनाने ही पड़ेंगे। अकेला आदमी बिना नियम के जी सकता है। जब आप दूसरे से जुड़ते हो तो नियम अनिवार्य हो जाता है। नियम अनिवार्य है, फिर भी व्यावहारिक है, पारमार्थिक नहीं है। उसकी कोई अंततोगत्वा सत्ता नहीं है, वह कोई सत्य नहीं है। जहां नियमों के विपरीत आचरण होता है, वहीं क्रूरता का आरम्भ होता है।

✻ सदा अपने ही अनुसार जीयो तो कभी हानि नहीं होगी भूलकर भी अनुकरण मत करना अनुकरण गड्ढे में ले जाएगा। दूसरों के अनुकरण में समय मत गंवाओ। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि किसी से प्रेरणा नहीं लेनी है। सच तो यह है कि अगर आप किसी का अनुकरण नहीं कर रहे हो तो आप आसानी से प्रेरणा ले सकते हो। अगर आप अनुकरण कर रहे हो तो आप मृततुल्य हो; तब आप प्रेरणा नहीं ले सकते। प्रेरणा खुलापन है; अनुकरण बंद होना है।

✻ जो जागते हैं, वे पा लेते हैं, जो सोये रह जाते हैं, वे खो देते हैं।

✻ सीमा तो अहंकार की है, समर्पण की कोई सीमा नहीं, तत्क्षण अहंकार के गिरते ही आप असीम हो जाते हो।

✻ अपने ही बुरे विचारों से डरो, क्योंकि जो अपने बुरे ख्यालों में आ जाता है, वो ईश्वर को भूल जाता है।

✻ अगर आप नीचेवाले पर जुल्म कर रहे हो तो ऊपर वाला आपको नहीं छोड़ेगा। इसलिए खुदा से डरकर रहने में ही फायदा है।

✻ आदमी की परेशानियां और उसके गमों को कम करने के लिये ही ईश्वर ने नारी जाति को बनाया है। इसलिये स्त्री की इज्जत करने में ही मनुष्य के लिये श्रेयस्कर है।

✻ हमेशा ईश्वर से डरकर रहो, इससे आपकी जान, माल और इज्जत हर तरह के भी नुकसान से सुरक्षा होगी।

✻ जीवन की क्रांति का अर्थ है- जागरण की क्रांति।

✻ विचार मौलिक होते नहीं- किसी के भी हो। अनुभूति मौलिक होती है।

✻ परम की ज्वाला में जब कोई अहंकार की आहुति देता है तब जो विस्फोट होता है, उसको कृपा कहते हैं।

✻ जीवन जीने में और जीने देने में है। इसलिए सारे धर्मों ने दान को धर्म का मूल सूत्र कहा है। दान का मतलब सिर्फ इतना ही होता है- बांटो। जो तुम्हारे पास हो, उसे बांटो, उसे उलीचो। इधर तुम देने लगोगे, उधर तुम पाओगे अज्ञात स्तोत्रों से तुम्हारे भीतर जल बहने लगा। कुआं देखते हो न, जितना पानी खींच लेते हो, उतना कुएं में पानी भर जाता है। नया पानी आ जाता है, नए जल के झरने फूट पड़ते हैं। कुएं से पानी मत खींचो, डरकर बैठे रहो, ढांक दो कुएं को, बंद कर दो कि कहीं पानी चुक न जाए, कभी समय पर काम पड़ेगा, तो कुआं सड़ जाएगा और धीरे-धीरे झरने जब बहेंगे नहीं, तो सूख जाएंगे, उन पर मिट्टी जम जाएगी, पत्थर बैठ जाएंगे, झरने अवरुद्ध हो जाएंगे। जीवन को जानना है तो जीयो, जीवन में ही जीवन है। जीने में जीवन है। जीवन को संज्ञा मत समझो, जीवन को क्रिया समझो और दो, बांटो।

✻ क्रोध- क्रोध में आदमी की बुद्धि ठिकाने नहीं रहती। क्रोधी भले-बुरे कामों को नहीं समझ सकता, उस समय जो मन में आता है, बिना सोचे समझे कर डालता है। इसीलिये उसको पीछे पछताना पड़ता है। उसका मन सदा दु:खी रहता है। उससे कोई मेल नहीं रखता और न किसी का मन उससे बात करने को चाहता है। जैसे बड़ी आंधी पेड़ों को जड़ से

उखाड़कर फेंकती है और भूकम्प बड़े-बड़े शहरों का सत्यानाश कर डालता है, वैसे ही क्रोधी का क्रोध अपने चारों ओर अन्धाधुन्ध मचा देता है। इसलिए जब क्रोध आवे, उसको रोको , बात को टाल दो, जिस पर क्रोध आया हो, उसके सामने से टल जाओ। मन तो नहीं मानेगा, पर हठ से उसे दूसरे काम में लगाओ, कोई और बात कहने लगो, खड़े हो तो बैठ जाओ, प्यास न भी हो, तो भी पानी पी लो, जिससे क्रोध शान्त हो जाय। क्रोध में गाली देना, कोई कड़ी बात कह बैठना, या हाथ चलाना बहुत बुरा है। जो तुमने किसी को गाली दी और उसने उलट कर तुमको बुरा भला कहा या तुमने किसी पर हाथ चलाया और वह भी लिपट पड़ा, तो भलमसी धूल में मिल गई। किसीके लिये और कभी भी क्रोध करना उत्तम नहीं है। क्रोध दुर्गुण है, वह अन्त:करण को कलुषित करता है।

* स्वप्न तो अज्ञानी जीवोंके लिए है। जो जागृत हो चुका है, उसके लिए कैसा स्वप्न और कैसी माया। जब तक शरीर है प्रतीति भी होती है प्रतीति बाधक है या बन्धन दातृ नहीं होती। वह तो स्वयं का ही विनोद है।

* सुकुमार काया स्त्रियोंको हो शोभा देती है। जिनके बाहुमें बल है, जिनके प्राणोंमें प्रबल ऊर्जा है, वे नियमोंमें आबद्ध नहीं रह सकते। उनके पद अपने प्रहारसे पर्वतोंको फोड़कर पथ बना लेते हैं। पुरानी संकड़ी पगडण्डियोंपर नहीं चल सकती।

* हमें उन वस्तुओंका अनुसरण करना चाहिये, जिनमें हमें शान्ति मिल सकती हो और जिनसे हम दूसरोंकी उन्नति कर सकते हों।

* राग-रोष दोनों ही दौर्बल्य हैं और दु:ख देते हैं।

* जो भी भोग-योनियाँ हैं, उनमें भोगोंकी क्षमता मनुष्यकी अपेक्षा बहुत अधिक है और अपने भोगोंमें वे बहुत अधिक स्वतन्त्र हैं। मनुष्य तो जब भोगोन्मुख होता है तो उनका दास हो जाता है। भोगासक्ति उसे परतन्त्रता देती हैं; क्योंकि मनुष्य भोगयोनि नहीं हैं। यह कर्म-योनि है- साधन करके कर्म-बन्धनसे मुक्त हो जानेके लिए परमात्मासे प्राप्त देह।

* मर्यादा पालन महान निष्ठुर होता है।

* बालक एक साथ खेलेंगे और परस्पर झगड़ेंगे भी। ये न झगड़े बिना रह सकते, न फिर मिलकर खेले बिना रहेंगे। इनके विवादमें बड़ोंका पड़ना भी मूर्खता है; किंतु अनेक बार हस्तक्षेप करना अनिवार्य हो जाता है।

* प्रेममें त्यागकी भावना प्रबल होती है और काममें स्वार्थकी भावना निहित होती है। प्रियतमके सुखमें अपनेको सुखी मानना। काम दूसरेके द्वारा अपनी तृप्ति चाहता है, परंतु प्रेम अपने द्वारा प्रेमपात्रकी तृप्ति चाहता है।

* मानव महान है, सृष्टि में सर्वोपरि है। सुरोंके सौंदर्य, सम्पत्ति, शक्ति, ऐश्वर्यसे भी आगे हैं। मानवोंमें जो श्रेष्ठ है वे जानते हैं कि अर्थ अनेक अनर्थोंका मूल है। भगवती लक्ष्मी उलूक-वाहिनी हैं। यदि सम्पत्तिके साथ भगवद् चरणोंमें श्रद्धा और प्रेम न रहा, तो अनिवार्य रूपसे सम्पत्तिशील, सद्गुण, सद्बुद्धिके विनाशका कारण बनता है। मदान्ध होकर व्यक्ति अनेक व्यसनोंका आखेट बन जाता है।

* सम्पत्ति के बिना सांसारिक भोग सुलभ नहीं होते। पिता के बिना परिश्रमके प्राप्त हुई सम्पत्ति पुत्रोंको मदान्ध कर देती हैं।

* आदित्यके उदय होनेपर अन्धकार रह नहीं सकता।

* मनुष्योंके अपकर्मसे धरा ऊसर होती है। मानवोंके अपराधसे बनश्री विदा हो जाती है। मनुष्य पापकर्मा हों तो मेघ समयपर वर्षा नहीं करते और लता-तरु सम्यक् फल-पुष्प प्राप्त नहीं कर पाते। मनुकी सन्तान जब सत्पथ त्यागकर कुपथका अवलम्बन करती है तब उसे आवास, आजीविका एवं आमोदके साधन अप्राप्त होते हैं।

* बड़े होनेका दायित्व भी बड़ा होता है।

* अन्धकारमें यात्रा बहुत आशंकाप्रद होती।

* ऐसे भी व्यक्ति हैं जो अपने पास सब कुछ बताते हैं, फिर भी उनके पास कुछ होता। ऐसे भी हैं जो स्वयं को विपन्न बताते हैं, फिर भी उनके पास अतुल सम्पदा है।

* शिशुओं के भोलेपन में सौंदर्य है।

* जीवन का आनन्द केवल उसने खो दिया है जो नए मित्रों पर विजय नहीं पा सकता।

* भूखे पेट कोई भी देशभक्त नहीं हो सकता।

* बिना देखे कभी किसी वस्तु का पान न करो और बिना पढ़े कभी कहीं हस्ताक्षर न करो।

* हमारे सभी वेद, शास्त्र, पुराण और सभी पूज्य ऋषि-महर्षि, साधु-संत-महात्मा यही कहते हैं तथा यही बतलाते हैं कि इस संसारमें दो ही चीजें पतनके कारण हैं- पहली चीज है सङ्ग और दूसरी भोजन। कुसङ्गसे सदा-सर्वदा बचते रहना चाहिये और भोजन सात्त्विक करना चाहिये। बढ़िया भोजन और बढ़िया कपड़ोंसे बचनाचाहिये, यही कल्याणमार्ग है। हमारा मन जबतक शुद्ध और पवित्र नहीं होगा, तबतक कल्याण नहीं होगा। शुद्ध और पवित्र मन तब होगा, जब हमारा भोजन शुद्ध तथा पवित्र होगा। भोजन शुद्ध और पवित्र तब होगा जब वह बेईमानीके पैसेका न होकर शुद्ध कमाईका होगा एवं उस भोजनको बनानेवाला भी मांसभक्षक तथा नीच, हृदयका पापी और पतित नहीं होगा।

* किसी भी जीवको नीचा मत समझो, किसीका भी अपमान मत करो और अपनेको तृणसे भी नीचा समझो। जबतक हमारे हृदयमें दीनता न होगी, तबतक कुछ नहीं होगा। इस संसारमें अभिमान ही सबसे बुरी चीज है। इससे घोर अध:पतन हो जाता है। प्राय: ऐसा देखा गया है कि बड़े-बड़े विद्वान और पण्डित औरोंको तो श्रीभगवन्नाम जप-कीर्तन करनेका उपदेश देते हैं, परंतु अभिमानवश स्वयं नहीं करते और कीर्तनमें चुपचाप खड़े रहते हैं। वे समझते हैं कि हम तो बड़े विद्वान हैं, हमें कीर्तन करके क्या करना है? कीर्तन तो छोटे मनुष्योंका काम है। यह अभिमान उन्हें कीर्तनके श्रेष्ठतम लाभसे वंचित कर देता है और घोर अध:पतन कर डालता है।

* जो कपटके खेल खेलता है, उसका मन सदा अशान्त रहता है। जिनका व्यवहार अति शुद्ध होता है, उनके पास कुछ न होनेपर भी उनको शान्ति मिलती है। पाप सदाके लिये छिपता नहीं है, एक-न-एक दिन वह जाहिर जरूर होगा। इसलिये यदि शान्ति चाहिये तो धर्मकी मर्यादाका पालन कीजिये।

* मनुष्य दिन-रात शरीरभोगार्थ ही दु:खसे सभी प्रकारके कर्म करता है। परंतु पुरुषसे देह भिन्न है; ऐसी स्थितिमें पुरुषसे क्या भोग भोगा जायगा। पिता, माता, पुत्र, भाई, पत्नी, बन्धु-बान्धव इन सबका संगम तो नदीमें एकत्रित काष्ठके समान चपल है। छायाके सदृश लक्ष्मी चंचल है और यौवन पानीकी लहरोंके समान अस्थिर है। स्त्री-सुख स्वप्नके सदृश है और मनुष्यकी आयु भी अल्प है, तथापि इनके प्रति आकर्षण-अनुरक्ति है। स्वप्नके समान अस्तित्ववाली यह संसृति सदा रोगादिसे परिपूर्ण है। यह न तो सत्य है, न शाश्वत ही। यह तो गन्धर्वनगरी है। फिर भी मूढ उसके पीछे दौड़ता है।

* जीवमें भावना होती है। भावनासे वह भगवान्‌को अपना बनाता है। मन जिस भाव-स्तरमें होता है, उसीके अनुसार भाव उठते हैं। उस भावका जागरण अन्तरमें होता है तो वहीं मन स्थिर होता है- दृढ़ होता है। अपने नित्य स्वरूप, नित्य सम्बन्धका बोध होता है। जो दुर्बल है; किन्तु छूटना चाहते हैं- आसक्ति कम है; पर भोगोंको, विषयोंको छोड़ नहीं पाते हैं, वे भक्तिके अधिकारी हैं। दुर्बल असमर्थको ही तो समर्थ सहायककी आवश्यकता है। ऐसे लोग अभागे हैं यदि उनमें भावना नहीं है। वे न योगके अधिकारी है, न ज्ञानके; क्योंकि उनमेंस्वयं चलनेकी शक्ति नहीं है। बिना श्रद्धाके, बिना विश्वास और

भावनाके दूसरे समर्थ-अदृश्यका करावलम्ब उन्हें कैसे मिल सकता है। भटकते रहना ही उनकी नियति है।

* जो स्वयं पाश-छेदनमें समर्थ नहीं है- उन्हें पाशछेत्ताकी सहायता लेनी चाहिये।

* सुख पानेकी कल्पना- आशा सबको भ्रान्त किये है और वह सुख-आनंद कहाँ हैं, इसके दिशा-निर्णयमें सब भटक गये हैं।

* अहं भी परिवर्तनशील है। नाम बदल जाता है और नये नाममें अहं स्थापित हो जाता है। आश्रम बदलता है तो अहं नया आश्रमी बन जाता है। यह अहंकी प्रकृति है। अहं भी प्रकृतिका ही पुत्र है। एक है जो नहीं बदलता। उसे शब्दसे समझाया नहीं जा सकता; किन्तु तुम जानते हो कि शैशवसे अन्त तक तुम बदले नहीं हो। नाम बदल जाय, आश्रम बदल जाय; किन्तु तुम बदलते नहीं हो। समाधिमें अहंका निरोध भले ही हो जाय; जिस समाधि में आप रहते हो। आप निर्विकार हो। यही अनिर्वचनीय निर्विकार परमतत्व है। समाधिमें अहंकारका निरोध हो जानेपर भी शरीर सड़ता नहीं- मरता नहीं। किन्तु यह चेतन जब शरीरको छोड़ देता है तो शरीर तत्काल सड़ने लगता है। इससे यह चेतन प्रति शरीर भिन्न हुआ और आवागमन जब इसमें है तो इसकी निर्विकारिता?

* आधुनिक जगत्में लौकिक सुखोंकी सर्वथा उपेक्षा कर केवल परमार्थके पथपर विचरण करनेवाले मनुष्य विरले ही हैं। अधिकांश लोगोंकी महत्त्वाकांक्षा और प्रयत्न सांसारिक सुख-सुविधाओंतक ही सीमित हैं। जिनके मनमें श्रेयके प्रति महत्त्वबुद्धि है, वे भी प्रेयको छोड़ना नहीं चाहते। प्रेय और श्रेय दोनोंको हस्तगत करना चाहते हैं। उनके मनमें लोक और परलोक दोनोंके लाभ उठानेकी इच्छा है। वे भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव कर देनेवाला उपाय ढूँढ़ते हैं। ऐसा कोई साधन है, जिससे स्वार्थ और परमार्थ दोनों सधें? प्रेय और श्रेय-भोग और मोक्ष दोनों प्राप्त हो सकें?

* धर्मके दो फल हैं- अभ्युदय और नि:श्रेयस। दूसरे शब्दोंमें प्रेय और श्रेय। इन्हींमें अन्य सारे फलोंका समावेश हो जाता है। इन्हीं दो फलोंके आधारपर धर्मकी परिभाषा निश्चित की गयी है। अभ्युदय अथवा प्रेय लौकिक सुखका नाम है। इसमें राज्य, धन, स्त्री, पुत्र, गृह, परिवार, दास, दासी, शय्या, वाहन तथा वस्त्राभूषण आदि सभी वस्तुओंका अन्तर्भाव है। नि:श्रेयस या श्रेय भगवत्प्राप्ति और मोक्षके ही नामान्तर हैं। यही मानव-जीवनका चरम एवं परम पुरुषार्थ है। इसे पाकर फिर और कुछ पाना शेष नहीं रहता।

* जिन सांसारिक विषयोंमें राग होता है, उन विषयोंका विनाश अवश्यम्भावी होनेसे विषयानुरागका परिणाम शोक ही होता है। केवल भगवद्-विषयक रागका ही परिणाम शोक नहीं होता है। फलत: केवल परमेश्वर विषयक प्रेमानुराग सुखप्रद है और जगद्विषयक राग दु:खप्रद है।

* सबके प्रति दयाका भाव रखा जाय, प्रेमका भाव रखा जाय, सबके साथ उदारताका व्यवहार किया जाय तथा वाणीमें कटुताका लेश भी समावेश न होने पाये तो इससे भगवत्प्रीति प्राप्त होती है। असली सुख शान्ति दूसरेके सुखमें ही सुखी होनेमें है।

* जो कार्य हमें अच्छा नहीं लगता है, वह दूसरोंको भी अच्छा नहीं लगता। इसलिये कोई ऐसा कार्य न किया जाय जो दूसरोंको अन्यथा प्रतीत हो।

* कठिनाइयों से लड़ने के संकल्प से ही मनुष्य में शक्ति का संचार होता है जिसके बूते वह सफलता हासिल करता है। मुसीबतों से लोहा लेकर ही मनुष्य का चरित्र चमकता है और उसमें देवत्व का विकास होता है।

* कुछ खराबियां आदमी के दिल में हैं और कुछ उसके बर्ताव में हैं। बुरा बर्ताव हमेशा तकलीफ ही पैदा करता है।

* हम जिसे भी प्रेम करते हैं, उस पर नियंत्रण करने लगते हैं। पति और पत्नी, मां और बेटें, भाइयों और बहनों, मित्रों के बीच जो संघर्ष होता है वह यही है। कौन किस पर आधिपत्य जमाएगा? कौन किसको परिभाषित करेगा? कौन किसका कद छोटा करके उसे एक वस्तु बनाएगा? कौन मालिक होगा और कौन दास होगा? प्रेम का अर्थ होता है: आदर, अत्याधिक सम्मान: प्रेम है किसी को बेहद पसंद करना; जिसको तुम प्रेम करते हो उसकी उपस्थिति में प्रेम विशुद्ध आनंद की प्रतीति हैं। प्रेम और क्या है?

* जीवात्मा राग या प्रेमसे सुख तथा द्वेषसे दु:खकी अनुभूति करता है। ये दोनों ही स्थिर नहीं हैं। दु:ख सुखमें और सुख दु:खमें परिवर्तित होता रहता है। न चिरस्थायी दु:ख है और न चिरस्थायी सुख। जीवात्मा जिस पक्षसे सुखप्राप्तिकी मान्यता निर्धारित करता है, उसके प्रति मित्रभाव या प्रेमभाव और जिस पक्षसे दु:खप्राप्तिकी मान्यता निर्धारित करता है, उसके प्रति इसका शत्रुभाव बन जाता है।

* धनकी अपेक्षा पुत्र प्रिय होता है, पुत्रसे प्रिय अपना शरीर और शरीरसे प्रिय इन्द्रिय, इन्द्रियसे प्रिय प्राण तथा प्राणसे भी परमप्रिय आत्मा होता है, जिसकी प्रियताके कारण ही सभी लौकिक वस्तुएँ प्रिय होती हैं।

प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय। राजा परजा जेहि रुचै, सीस देइ लै जाय।।
यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहिं। सीस उतारै भुइँ धरै, तब पैठे घर माहिं।।

प्रेम बलिदानकी भूमि है, उत्सर्गकी भूमि है तथा न्योछावरकी भूमि है। इसमें सिर्फ दान है। यहाँ ग्रहणकी कोई गुंजाइश नहीं है। प्रेम केवल नि:स्वार्थ होता है। जहाँ स्वार्थकी बात आयी, वहाँ सच्चा प्रेम नहीं रहता। वह तो सौदेबाजी हो जाती है। माताका शिशुके प्रति वात्सल्य, बहनका भाईके प्रति प्रेम या एक सच्चे देशभक्तका अपनी मातृभूमिके प्रति जो प्रेम होता है, वह नितान्त निष्कपट और स्वार्थहीन होता है। यहाँ सिर्फ देनेकी बात होती है, कुछ लेनेकी नहीं।

मिलनमें प्रेमकी तीव्रता नहीं होती है। इसमें अविच्छिन्नरूपमें निरन्तर बढ़ना नहीं होता है। यहाँ तो मानो उफनती नदियोंका समुद्रमें समा जानेपर अपना अस्तित्व गँवा देने-जैसी बात होती है।

विरहमें मिलनकी जो तीव्र इच्छा होती है, वही प्रेमकी वास्तविक स्थिति होती है। यह उत्कट अभिलाषा दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती है। यह मिलनकी इच्छाकी तीव्रता बढ़ते-बढ़ते व्याकुलताकी स्थितिमें बदल जाती है और इस विछोहके आनन्दमें प्रेमी-भक्त डूबता उतरता रहता है। प्रेमकी इदमित्थं कोई परिभाषा नहीं है। इसे किसीको समझाया-बुझाया नहीं जा सकता। इसका अनुभव तो उसीको होता है, जो इसमें पड़ा हो। इसीलिये प्रेमको अनिर्वचनीय कहा गया है। जैसे गूँगा गुड़ खाकर उसके मिठासका अनुभव स्वयं करता है। उसे किसीको बता नहीं सकता, ठीक उसी तरह प्रेमकी भी कोई व्याख्या या परिभाषा नहीं हो सकती है। सच्चे निश्छल और नि:स्वार्थ प्रेममें न तो प्रेमास्पदमें किसी विशेष गुणकी अपेक्षा होती है तथा न ही प्रेमी अपने प्रेमास्पदने किसी वस्तुकी कामना करता है। यदि गुणकी अपेक्षा और किसी वस्तुकी कामना की गयी तो वहाँ प्रेममें स्वार्थ आ जायगा। प्रेमके बीजके हृदयमें अमुरित होनेके बाद वह दिनों-दिन बढ़ता जाता है। यहाँतक कि विरहकी चरमावस्थाको प्राप्त करनेपर भी पिया-मिलनकी प्यास लगी रह जाती है। प्रेममें परितृप्ति नहीं होती। यहाँ प्रेमीका हृदय अपने प्रेमास्पदके लिये दिन-रात तड़पता रहता है। यह तड़प ही प्रेम है। यह विरह ही प्रेमको जीवित रखता है। जहाँ यह तड़प नहीं, प्रभुमिलनकी तीव्र इच्छा नहीं, वहाँ प्रेम कहाँ?

प्रेम खरीद-बिक्री या लेन-देनकी चीज नहीं है, यह तो भगवत्प्रदत्त है। कारण कि हमको संसारसे कभी भी प्रेम नहीं हो सकता और न ही संसार हमसे कभी प्रेम कर सकता है। जो संसारसे विमुख हो गये, जिनकी संसारसे सर्वथा आसक्ति हट

गयी ममता हट गयी है, वही प्रेम पानेका पवित्र पात्र हो सकता है।

मैं और मेरा है। मैं विद्वान हूँ, धनवान हूँ, गुणवान हूँ, बलवान हूँ, मेरा मकान है, मेरी सम्पत्ति है और मेरी गाड़ी है- ये सब प्रेमके बाधक हैं। प्रेममें अपना रहता ही नहीं-

ढूँढ़ा सकल जहान में पाया पता तेरा नहीं। जब पता तेरा मिला तो अब पता मेरा नहीं।।

इसी अनन्य प्रेमकी जिसे भी प्राप्ति हो जाती है, वह चाहे ब्राह्मण हो या चाण्डाल, स्त्री हो या पुरुष, संसार हो या वैरागी, पण्डित हो या मूर्ख, वही सचमुच कृतार्थजीवन जीता है। यह प्रेमपन्थ पावककी ज्वाला है। इसे देखते ही सर्वस्व स्वाहा हो जानेके भयसे लोग भा छूटते हैं। पर जो इस प्रेमाग्निमें प्रविष्ट हो जाते हैं, उन्हें जरा भी आँच नहीं लगती, वरं महान् सुखकी अनुभूति होती है। इस आनन्द प्राप्त करनेवालेको देखकर दुनियाके लोग अवश्य जलते-भुनते हैं।

१) वह प्रेम नहीं है, जिसका आधार किसी इन्द्रियका विषय है। २) नियमोंके सारे बन्धनोंका अनायास आप-से-आप टूट जाना ही प्रेमका एकमात्र नियम है। ३) जहाँतक नियम जान-बूझकर तोड़े जाते हैं, वहाँतक प्रेम नहीं है, कोई-न-कोई आसक्ति तुमसे वैसा करवा रही है, प्रेममें नियम तोड़ने नहीं पड़ते, परंतु उनका बन्धन आप-से-आप टूट जाता है। ४) प्रेममें एक विलक्षण मत्तता होती है, जो नियमोंकी ओर देखना नहीं जानती। ५) प्रेममें भी सुखकी खोज होती है, परंतु उसमें विशेषता यही है कि वहाँ प्रेमास्पदका सुख ही अपना सुख माना जाता है। ६) प्रेमास्पदके सुखी होनेमें यदि प्रेमीको भयानक नरक-यन्त्रणा भोगनी पड़े तो उसमें भी उसे सुख ही मिलता है; क्योंकि वह अपने अस्तित्वको प्रेमास्पदके अस्तित्वमें विलीन कर चुका है। ७) अपना सुख चाहनेवाली तो वेश्या हुआ करती है, जिसके प्रेमका कोई मूल्य नहीं। पतिव्रता तो अपना सर्वस्व देकर भी पतिके सुखमें ही सुखी रहती है; क्योंकि वह वास्तवमें एक पतिके सिवा अन्य किसी पदार्थको अपना नहीं जानती। ८) प्रेमास्पद यदि प्रेमीके सामने ही उसकी सर्वथा अवज्ञा कर किसी नवीन आगन्तुकसे प्रेमालाप करे तो इससे प्रेमीको क्षोभ नहीं होता, उसे तो सुख ही होता है, क्योंकि इस समय उसके प्रेमास्पदको सुख हो रहा है। ९) जो वियोग-वेदना, अपमान-अत्याचार और भय-भर्त्सना आदि सबको सहन करनेपर भी सुखी रह सकता है, वही प्रेमके पाठका अधिकारी है। १०) प्रेम जबानकी चीज नहीं, जहाँ लोक-परलोकके अर्पणकी तैयारी होती है, वहीं प्रेमका दर्शन हो सकता है। ११) प्रेमका दर्शन बड़े दुर्लभ हैं, सारा जीवन केवल प्रतीक्षामें बिताना पड़े, तब भी क्षोभ करनेका अधिकार नहीं। १२) प्रेमका आकार असीम है, जहाँ संकोच या सीमा है, वहाँ प्रेमको स्थान नहीं। १३) प्रेम, प्रेमके लिये ही किया जाता है और इसकी साधनामें बिना विरामके नित्य नया उत्साह बढ़ता है। १४) प्रेमका स्वरूप केवल प्रेमियोंकी हृदयगुफाओंमें ही छिपा रहता है। जो बाहर आता है सो तो उसका कृत्रिम स्वरूप होता है।

ऐसा कोई प्राणी संसारमें नहीं है, जो प्रेम न करता हो। सबका किसी-न-किसीसे प्रेम है। दूसरे किसीसे नहीं होगा तो अपने शरीरसे होगा।

प्रेम किया नहीं जाता, प्रेम होता है- हो जाता है। यह प्रेम कहीं आकाशसे टपका नहीं करता। यह आपके हृदयमें है।

संसारमें प्रीति स्थिर और अनन्य नहीं होती। वह बिखरी-बिखरी रहती है। हृदयकी रागात्मिका वृत्तिका नाम ही प्रेम है और जब संसारमें राग होता है, तब उसमें दो दोष अवश्य आ जाते हैं- १) वह बिखर जाता है। अनेक से होता है। कुछ तनसे, कुछ धनसे, कुछ मान-प्रतिष्ठासे, कुछ एक सम्बन्धीसे और कुछ दूसरेसे। २) वह स्थायी नहीं होता। जहाँ स्वार्थ या सम्मानपर आघात लगा या आघात लगनेकी शमा हुई, उसे द्वेषमें परिवर्तित होते भी देर नहीं लगती।

कुछ थोड़े अपवाद होते हैं। अतीतमें हुए हैं और कभी भी हो सकते हैं। लैलाके प्रति मजनूका प्रेम-लेकिन ऐसा प्रेम जब

स्थायी और अनन्य हो जाता है तो दिव्य हो जाता है। वह जिसमें होता है, उसकी देहासक्ति तथा समस्त क्षुद्र दुर्बलताओंको समाप्त कर देता है। उसमें केवल अविधिपूर्वक भ्रान्ति रहती है, जो किसी भी क्षण किसी संत-सत्पुरुषका अनुग्रह मिलते ही नष्ट हो जाती है।

* कर्म, ज्ञान और भक्तिको सरलतासे समझें तो सेवा, त्याग तथा प्रेम। कर्मयोगमें सेवा प्रधान है, ज्ञानयोगमें त्याग प्रधान है और भक्तियोगमें प्रेम प्रधान है।

* स्वभावत: किसी वस्तुकी अपेक्षा न करके जब आनन्द-सागरमें मग्न होना चाहता है और जब अपने प्रेमास्पदके लिये व्याकुल हो उठता है, तभी सच्चे प्रेमका उदय होता है। इस प्रेमका उदय हो जाना प्रेमयोग कहलाता है। प्रेममें इन्द्रिय-सुखकी इच्छाओंका अभाव रहता है। विशुद्ध प्रेम इन्द्रिय और उनके धर्मोंसे परेकी वस्तु है। प्रेमको रागके नामसे भी जाना जाता है।

* प्रियतमको सुख प्रदान करनेके लिये आत्मीय सुखका विसर्जन अनन्य प्रीतिकी कसौटी है।

* कर्ममें- करना प्रधान है, ज्ञानमें-जानना प्रधान है, पर भक्तिमें मानना प्रधान है जो कि सबसे सुलभ है।

* लौकिक प्रेम- शरीर, मन, बुद्धि, इन्द्रिय, परिवार, कुटुम्ब, समाज-मोह, ममता, स्नेह और अपने सुख-आरामको लेकर बनता है। जड़ वस्तु- पदार्थमें सुख खोजना लौकिक प्रेम है। मैं और मेरा प्रेम नहीं है, पुत्रैषणा, वित्तैषणा और लोकैषणा भी प्रेम नहीं है, यह तो तथाकथित प्रेमका खेल है।

* जीवन प्रेमकी पूँजी है। जिसके जीवनमें प्रेम नहीं है उसका जीवन मरुभूमिमें नाव चलाने-जैसा ही है अर्थात् उसका जीवन व्यर्थ ही है। प्रेम ही जीवनका सार है। आनन्द प्रेमका प्रकाश है। प्रेमकी झलकमात्र आनन्दसे परिपूर्ण कर देती है। इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि- सब तृप्त, शान्त, सुखमय हो जाते हैं तथा प्रकृति, प्रकृतिकार्य, गुण, स्वभाव- सब कुछ आनन्दमय हो जाता है। जब झलकमात्रसे आनन्दसुधामय झरना फूट पड़ता है।

* जीवनरूपी स्वप्नमें जगत्के वैभव व्यर्थ हैं, असार हैं

* चार प्रकारसे ही लोग बड़भागी माने जाते हैं- यशस्वी होनेसे, राजा होनेसे, गुणी होनेसे और योग्य संतान होनेसे।

* भगवत्प्राप्तिके लिये प्रेम-साधनाकी अत्यन्त आवश्यकता है। वह चाहे प्रेमी सेवकोंके द्वारा हो या मित्रभावान्वित अथवा शत्रुभावान्वित प्रेमी सहचरकी हो।

* मुझे लोकमें उन्नति-सफलता भी चाहिये और परमार्थ भी। जो एक साथ ऊपर-नीचे दोनों ओर दौड़ना चाहता है, वह गिरेगा। उसके नीचे ही लुढ़कनेकी सम्भावना अधिक है।

* काम और प्रेममें बड़ा ही अन्तर है। हम विषय-विमोहित जीव भ्रमवश कामको ही प्रेम मानकर पाप-पममें फँस जाते हैं। काम जहर मिला हुआ मधु है, प्रेम दिव्य स्वर्गीय सुधा है। काम थोड़ी ही देरमें दुखके रूपमें बदल जाता है, प्रेमकी प्रत्येक कसकमें ही सुख-सुधाका स्वाद मिलता है। काममें इन्द्रिय-तृप्ति-इन्द्रियचरितार्थता है, प्रेममें तन्मयता, प्रियतम-सुखकी नित्य प्रबल आकाङ्क्षा है। काममें इन्द्रिय तृप्ति सुखरूप दिखनेपर भी परिणाममें दु:खरूप है; प्रेम सदा अतृप्त होनेपर भी नित्य परम सुखरूप है। काम खण्ड है, प्रेम अखण्ड है। काम क्षयशील है, प्रेम नित्य वर्धनशील है। काममें विषय-तृष्णा है, प्रेममें विषय विस्मरण है। कामका लक्ष्य विषय है, आत्मतृप्ति है; प्रेमका विषय पूर्ण त्याग है और चरम आत्मविस्मृति है।

* काम और प्रेम में अत्यंत भेद है। अज्ञानी लोग काम को ही प्रेम समझते हैं। काम गरल से युक्त शहद के समान है। प्रेम रुचिर महान सुधारस है। काम मे सुख की प्रतीती है। लेकिन दुखरूप है। प्रेम अनुपम सहज सुखस्वरूप है। काम भव विषय का राग और तृष्णा है। प्रेम भव त्याग का पूर्ण स्वरति है। काम खंड है। दिव्य प्रेम अखंड है। प्रेम के अधिन ब्रह्माण्ड

का अधिश्वर भी है। काम मैं और मेरा रूपी आवरण है। प्रेम सहज केवल तू और तेरा है। साँच प्रेम में कुछ लेना नही है। प्रेम में सकल समर्पण देना ही देना है। प्रेम में निर्गुण भी लय है, सगुन भी लीन है। प्रेम सहज विकास है। प्रेम ब्रज भूषण प्रभु कृष्ण की ही एक चाह है। दूसरे सब कामनाओं के नाम हैं।

* जिसमें तुम्हारी प्रवृत्ति है, उसीमें लगे रहो। अपनी बुद्धि के मार्ग को मत छोड़ो।

* प्रकृति जब कठिनाइयां बढ़ाती है तो बुद्धि भी बढ़ाती है।

* एक सार्वजनिक कर्त्तव्य को सम्पन्न करते समय व्यक्तिगत विचार कदापि बाधक नहीं होना चाहिए।

* शिशु भी बड़ों के समान ही होते हैं, उन्हें भी दूसरों के अनुभवों से लाभ उठाना नहीं आता।

* सफलता सबसे मधुमती उनको लगती है जो कभी सफल नहीं होते।

* समय की कसौटी पर ही मनुष्य की आत्मा की परीक्षा होती है।

* अनवरत सफलता हमें विश्व का एक ही रूप दिखाती है जबकि आपत्तियां चित्र के दूसरे रूप को भी स्पष्ट कर देती हैं।

* पुरातनकाल के उच्च कोटि के महान व्यक्तियों के जीवन-चरित्रसे अनभिज्ञ रहने का तात्पर्य है : आजीवन बालकों के समान अबोध रहना।

* अत्यधिक विरोधी परिस्थितियों में ही मनुष्य की परीक्षा होती है।

* उस सुख का क्या महत्व जो थोड़ी या बहुत वेदना के मूल्य पर नहीं खरीदा गया।

* सांसारिकता निभानेके लिये सत्यसे परे जो मार्ग है उसपर चलकर मनुष्य लोभ, मोह, यश, वैभव, घर तथा परिवारके प्रपञ्चमें उलझकर रह जाता है। उस असत्य-मार्गपर भटकनेवालेको भौतिक और क्षणिक सुख तो कदाचित् मिल भी जाय, किंतु ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती। सत्य-मार्गपर चलकर दुनियादारी निभाना और असत्य-मार्गपर चलकर ईश्वरकी प्राप्ति दोनों ही असम्भव हैं।

* माँगनेवालोंसे सभी बचते हैं। यदि कोई यह समझ ले कि उसका साथी कुछ माँगेगा तो उसका साथतक छोड़ देता है, किंतु राम तो ऐसे दानी हैं कि वे माँगनेके पहले ही दे देते हैं। रावणने भगवान् शंकरको अपने सिर काटकर चढ़ाये जिससे प्रसन्न होकर भगवान् शंकरने रावणको लमाका राज्य दिया, किंतु उसी लमाके राज्यको भगवान् रामने विभीषणको बिना माँगे ही दे दिया और वह भी इस संकोचके साथ कि यह बहुत थोड़ा है।

* ममतामें बुराई पहचानी नहीं जाती। जिससे द्वेष होता है, उसका गुण नहीं दीखता और जिससे राग होता है- ममत्व होता है, उसका दोष नहीं दिखायी देता। वैसे तो गुण-दोष सबमें थोड़े बहुत होते हैं, लेकिन राग-द्वेष तो मनुष्यको अन्धा बना देते हैं।

* असल में नाट्य वही है, अभिनय वही है, जिसमें इतनी तन्मयता हो जाय कि परोक्ष भी अपरोक्ष और अपरोक्ष भी परोक्ष प्रतीत होने लगे।

* आपको कोई पुरस्कार मिले तो आप उसको बिना लिये ही अस्वीकार कर सकते हैं, परन्तु यदि दण्ड मिले तो उसे भोगे बिना छुट्टी नहीं मिलती।

* प्रतीक्षा की घड़ियाँ बड़ी कष्टदायक बताई गई हैं, विशेषकर तब जब वे अप्रत्याशित रूप से लम्बी खिंचती जाएँ। आशा जब निराशा की परिधि छूने लगती है तब विविध आशंकाओं और अटकलों के बीच मन पिंजड़े में बन्द पक्षी की तरह आकुल-व्याकुल होने लगता है। तब घड़ियाँ पल बन जाती हैं और पल दिनों के सदृश लम्बे हो जाते हैं। एक दिन का बीतना वर्षों की समाप्ति की तरह प्रतीत होता है। पर प्रत्येक नया सवेरा, एक नए सूरज के साथ आशा की नई किरणें लेकर

आता है किन्तु जब तक प्रतीक्षा की घड़ियाँ समाप्त नहीं होतीं तब तक सुबह-शाम और दिन-रात के रूप में चक्रायित होता समय, कष्ट के नए ताने-बाने बुनता जाता है।

* जीवन भी एक पहेली है। इसके सिवा कुछ नहीं।

* सत्य और अग्नि को बहुत देर तक ढँककर रखना कभी क्षेमकारी नहीं होता।

* वय प्राप्त करते ही पुत्रियों के लिए पिता व्यर्थ और प्रियतम सर्वस्व हो उठता है।

* यह जीव अपनी प्रकृति और स्वभाव के वश है। इसमें स्वभावजन्य दुष्टता आती है। सर्प अपने स्वभाव से किसीको भी दंशित करता है, बिच्छु किसी को डंक मारता है। शाखामृग (वानर) फलों को खाता-सो खाता है शाखाओं को भी नष्ट करता है। संसार भर की सरिताओं के मीठे जल को अपने अन्दर समेटकर भी सागर क्यों हमें खारा, अपेय जल प्रदान करता है यह सब स्वभाववश है।

* एक किशोर को प्रेरित करने के लिए, उसकी धमनियों के रक्त में ज्वार जगाने के लिए, भविष्य की महत्त्वाकांक्षाओं-आकांक्षाओं, प्रसिद्धि और प्रशस्ति की प्राप्ति की सान्त्वनाओं और सुअवसरों से अधिक उपयोगी थी एक समर्पिता और साध्वी किशोरी ही जिसकी अपरिमित बुद्धिमत्ता और त्याग भावनाओं की प्रबलता ठण्डे रक्त को भी तप्त कर मानव-तन से असाध्य को भी साध्य करा सकती है।

* दो करों (हाथों) को साथ लिए पैदा हुआ मनुष्य मूलत: कर्मवादी होता है। बुद्धि उसकी पथप्रदर्शिका होती है और उसके मार्गदर्शन में वह हर विपत्ति-बाधा को अपने कर्मों, अपने प्रयासों के द्वारा पराजित करने का आकांक्षी होता है। विपत्ति की घड़ियों में संघर्ष उसका स्वभाव है। जल में डूबता मनुष्य तिनके को भी जलयान समझ उसकी ओर प्राण पण से लपकता है। स्वभाव से नियतिवादी नहीं होता मनुष्य, न जन्म से ही। पर परिस्थितियों की प्रतिकूलता के थपेड़े उसे विवश कर देते हैं भाग्य के साथ समझौता करने का, नियति के अस्तित्व को स्वीकारने को, नियतिवादी बनने को।

* धारा के विरुद्ध तैरना आसान नहीं है। धारा के साथ ही चलना पड़ता है।

* चाँद तारों के अस्तित्व को नकार देने पर तारे चाँद की उपस्थिति को नकार नहीं पाएंगे।

शस्त्र, शास्त्र और शारीरिक बल तीनों की एक ही नियति है। इन्हें अनुपयुक्त छोड़ दो तो ये व्यर्थ हो जाएँ। सारी साधना मिट्टी में मिल जाए।

* पदार्थ सुविधा देता है पर सुख नहीं। सुख, जीवन की सरलता-सहजता में है लेकिन पदार्थ हमारे जीवन में अहम बनता जा रहा है।

* आसमान में उड़ना चाहिए पर थक जाओ तो लौट आने के लिए अपना घर भी होना चाहिए। दुनिया सुधारने से पहले चित्त और घर को सुधारना चाहिये नहीं तो हमारा प्रयत्न पाखंड से अधिक नहीं होगा। इसीलिए धर्म समाज के जीवन में नहीं व्यक्ति के जीवन में क्रांति पैदा करने का सूत्र है।

* भविष्य के गर्भ में क्या छिपा है, कोई नहीं जानता।

* जो केवल देना जानता है कि वह क्या कभी लेने की आकांक्षा कर सकता है? रत्न-गर्भा सागर ने अनेक को सम्पन्न बनाया पर नदियों के जल के सिवा उसने इस संसार से लिया क्या? स्वार्थ-प्रेरित होकर जो पराक्रम-प्रदर्शन में रत होते हैं वे रजोगुण के सिवा और किसके वश में होते हैं? नि:स्वार्थ हो श्रम करने और विपत्तियों से जूझने की आदत कुछेक मनस्वियों की ही होती है और इतिहास के पृष्ठों पर काल-देवता उन्हीं का नाम अमिट और स्वर्णांकित कर जाता है।

* सुख-दुख तो व्यक्ति के जीवन में प्रात: और संध्या की तरह आते ही जाते रहते हैं। सिंहासन भी नहीं रहा तो क्या? किसका होकर रहा है यह ऐश्वर्य? किसकी चेरी बनकर बैठी है लक्ष्मी? कौन राज्य कर सका है अनंत काल तक इस धरती पर?

* उत्तेजना में किया हुआ कोई कार्य उचित नहीं होता।

* राजाओं-महाराजाओं के मुख से निकले शब्द और उनके तूणीर से छूटे तीर पीछे नहीं लौटते।

* नदी का पानी तभी तक कूल-किनारों को नहीं तोड़ता जब तक पावस की अनुकूल ऋतु नहीं आती। उसके पूर्व उसमें जिसे स्वयं डूब मरना हो, मरता रहे।

* वीर बातों से नहीं अपने कर्त्तव्यों से जाने जाते हैं।

* जो गुड़ देने से ही मर जाय उसे विष देने की क्या आवश्यकता है?

* सुख सम्मान शीलगुणवालों में ही होता है। जिसे सांसारिक वस्तुओं का अभिमान है, कि मैं धनी हूँ, मानी हूँ, पंडित हूँ, यशस्वी हूँ, तपस्वी हूँ, तेजस्वी हूँ, प्रभावशाली हूँ, गुणी हूँ, सुन्दर हूँ, श्रेष्ठ हूँ, तथा सम्मानित प्रतिष्ठित अथवा और किसी कारण से बड़ा हूँ, वह किसी से प्रेम नहीं कर सकता। प्रेम सदा अभिमान शून्य ही कर सकेगा। प्रेम, प्रेम के लिये होता है, जो किसी कारण से प्रेम किया जाता है, यह प्रेम न होकर स्वार्थ है। निष्कपट सबल स्वभाव के प्रेम में प्राय: शिष्टाचार रहता नहीं।

* सख्य प्रेम में ऐश्वर्य का अभाव रहता है। सखाओं में जहाँ बड़े-छोटे का भेद भाव उत्पन्न हुआ कि फिर सख्य रस रहता नहीं, वह बिरस बन जाता है। बालकों में बड़े छोटे की भावना बड़े लोग ही भरते हैं। स्वत: बालकों में छोटा बड़ा ऊँच-नीच आदि का भेद भाव नहीं रहता।

* दु:ख में अपने सुहृद् सम्बन्धी बहुत याद आते हैं। वियोग में दर्शन की लालसा अधिक उत्कट होती है, वियोग के अनन्तर जो संयोग होता है, वह अत्यन्त ही सुखकर होता है।

* हम दुखी इसलिये होते हैं, कि खेल को यथार्थ समझकर चिन्तित और अशान्त बन जाते हैं। सब को खेलमाल समझ लें तो फिर चिन्ता शोक के लिये स्थान रह ही नहीं जाता।

* प्रथकता प्रेम में घातक है एकता ही स्नेह की जननी है।

* जब संसारी प्रेम में इतना अधिक आकर्षण है तो प्रभु प्रेम में तो न जाने कितना आकर्षण होगा।

* बिना आत्म समर्पण किये सख्य सौहार्द्र होता नहीं। अपने मित्र पर जब तक पूर्ण विश्वास न होगा, तब तक वह यथार्थ मैत्री नहीं कही जा सकती। हमारा सुहृद् जो भी करेगा, हमारे हित के ही लिये करेगा, यह भावना दृढ़ बनी रहे तब ही मित्रता में सुख है। जहाँ संदेह है, संशय है, विश्वास की कमी है, वहाँ मित्रता नहीं, सख्य नहीं, स्वार्थ है, व्यापार है, अदली-बदली है, व्यवहार है। अपने मित्र के ऊपर पूर्ण विश्वास होना यही मैत्री की पराकाष्ठा है। एक मित्र सदा सोचता रहे- मेरा मित्र सदा मेरा हित ही करेगा, उसके रहते मेरा अहित कोई कर ही नहीं सकता।

* यह जीव सुख के लिये-आनन्द के लिये- तड़प रहा है। प्रेम का प्यासा यह प्राणी चारों ओर आशाभरी दृष्टि से देख रहा है। यह जो भी जान में अनजान में चेष्टा करता है आनन्द प्राप्ति के लिये करता है।

* जिसमें साधिकार निजत्व है, उसमें तन्मयता नहीं होती। मिलन में जितना ही बाधायें होंगी, अनुराग उतना ही बढ़ेगा। जितनी ही अधिक प्रतीक्षा होती है, इच्छा उतनी ही प्रबल होती है।

* जहाँ नियम का साम्राज्य होता है, वहाँ छोटे-बड़े ऊँच-नीच का व्यवहार बना रहता हैं। कौन-कौन बैठेगा। किसे कहाँ स्थान मिलेगा, किन्तु जहाँ प्रेम का साम्राज्य है, वहाँ सब बराबर में बैठ जाते हैं।

✻ आकाश में कहीं भी जल क्यों न बरसे, वह घूम फिरकर समुद्र में ही आवेगा। क्योंकि जल का भण्डार समुद्र ही है।

✻ नैसर्गिक कला कृतित्वकी कृत्रिमतामें किसी प्रकार नहीं आ सकती।

✻ अहंकारकी शिलासे कठिन सृष्टिमें कुछ नहीं है।

✻ जो जितना बड़ा है, उसका व्यामोह भी उतना ही बड़ा होता है। जो बहुत शक्तिशाली है, उसे उतनी ही अधिक आशंकाएँ घेरे रहती हैं। जो विश्रुत विद्वान हैं, उसके अन्तरमें उतने ही सन्देह स्थान प्राप्त कर लेते हैं।

✻ विषयोंका प्रलोभन ही प्राणीको परम-पुरुषसे विमुख करके भवाटवीमें भटकाता है।

✻ जो दूसरोंको उद्विग्न करता है और दूसरोंसे उद्विग्न होता है, वह महात्मा नहीं है।

✻ प्राणीके लिए परमात्माने जो प्रकृति दी है, उसके अनुसार ही उसका आहार निश्चित कर दिया है।

✻ सुर प्राय: प्रमाद नहीं करते। वे शकुन, अपशकुनके द्वारा मानवको अग्रिम सूचना देकर सावधान करते रहते हैं।

✻ देहाध्यास- शरीर और शरीरके नामको ही अपना सब कुछ मानकर इसीके पीछे पड़े रहना, इसीके लिए समस्त श्रम समर्पित करते जाना अज्ञान है। यही गर्दभत्व मनुष्योंको खा लेता है। मनुष्य-जीवन ही इसके मोहमें नष्ट हो जाता है।

✻ प्रसिद्धिकी वासना बहुव विशाल एवं प्रबल होती हैं। लोकैषणा लुब्ध करके बड़े-बड़े साधकों-सिद्धोंका भी पतन करा देती है। साधनकी उच्चतम अवस्थामें भी यथेच्छा आकर्षित कर लेनेमें समर्थ है और नाम वासना देह-वासना का ही दूसरा रूप है।

✻ कपट-पाप स्वत:में ही शंकालु होता है।

✻ श्रेष्ठता न विद्यासे होती है, न यज्ञसे होती है और न जातिसे होती है। कुल, जाति आदिकी श्रेष्ठता तो स्थूल शरीरकी शोधक है। अत: भक्तिमूलक श्रेष्ठता ही वास्तवमें श्रेष्ठता है। भगवान्से प्रीति होनी चाहिए। किसी झूठे अभिमानको अपने साथ नहीं जोड़ना चाहिए। देशका अभिमान होता है। जाति का अभिमान होता है। कुलका भी अभिमान होता है। सम्पत्तिका भी अभिमान होता है। असली बड़प्पन तो तभी आवेगा, जब आपमें भगवान्की भक्ति आयेगी। भक्तिके बिना सारे बड़प्पन व्यर्थ है। भक्तिके साथ सम्बन्ध हो जानेपर श्वपच भी ब्राह्मणादिकी अपेक्षा श्रेष्ठ होता है।

✻ मनुष्य जाने-अनजानमें न जाने कितने कर्म करता हैं, जो समझ-बूझकर काम करते हैं, उनको सिद्धि मिलती हैं और जो नासमझीसे करते हैं उनको सिद्धि नहीं मिलती।

✻ कुछ न कुछ दुर्गुणका दोष भी सर्वत्र सम्मिलित रहता है।

✻ व्यक्तिको विद्या, उच्चकुलका जन्म, कर्मनिष्ठा रूक्ष एवं विवेक शून्य बना देता है।

✻ अतिथि स्वयं नारायणका स्वरूप होता है। गृहस्थके लिये पहिला धर्म अतिथि-सत्कार है।

✻ संसार में मनुष्य के जीवन की सार्थकता इसी में है कि वह प्राण से, धन से और वाणी से सबका कल्याण करे किसी का भी अनिष्ट चिन्तन न करे।

✻ जो लीक से हटकर चलता है वह अपना मार्ग स्वयं गढ़ता है और समाज उसे महान् मान लेता है- पथ-प्रदर्शक।

✻ नि:शस्त्र शत्रु से शस्त्र-धारण कर लड़ना नीति-विरुद्ध होता है।

✻ संसार में असफलता मिलने पर निराश नहीं होते। बार-बार प्रयत्न करने पर सफलता अवश्य मिलती है।

✻ सेवा अपने सुखका उत्सर्ग करके प्राप्त होती है।

✻ बहुत बोलना ठीक नहीं है। जितना आवश्यक हो उतना ही बोलना चाहिए। जब आदमी अधिक बोलने लगता है तो

उसके बारेमें यह शंका होती है कि कहीं यह पागल तो नहीं हो रहा है।

* संसारकी वासना भगवद्-वासनासे ही निवृत्त होती है।

* जिसने पारस पत्थर पा लिया हो उसे स्वर्ण की चाह नहीं रहती।

* धनमद बलमद तथा अधिकार आदि के मद में भरकर प्राणी बड़ों का अपमान करता है, अपने से बड़ों से भी भिड़ जाता है और अन्त में उसका पराभव होता है। यदि किसी भाव से भी जीव साधु शरण में आ जाय, उनके द्वार पर पड़ जाय, तो उस पर भगवान की कभी-न-कभी कृपा अवश्य ही होगी। सन्तों का समागम, सन्तों के समीप निवास कभी व्यर्थ नहीं जाता, स्वभाव न भी छूटे और संकल्पपूर्वक धाम में निष्ठा रखकर सन्तों का सामीप्य न छोड़े, संत पुरुषों का सान्निध्य क्या-क्या नहीं कर सकता।

* कोई प्राणी शक्तिभर अपना पराभव सहन नहीं कर सकता। जब प्राणी अवश हो जाता है तब वह आत्मसमर्पण करता है, तब दूसरों के सम्मुख नतमस्तक हो जाता है। जब तक कोई छल से, बल से, प्रभाव, प्रलोभन तथा प्रेम से हमें विवश नहीं कर लेता तब तक हम नवते नहीं, दीन नहीं होते, हाथ नहीं पसारते। स्वेच्छा से दीन कौन होता है।

* माधुर्य में ऐश्वर्य विलीन हो जाता है।

* मनुष्य कितना भी क्रोध में भरा हुआ हो यदि दीन होकर अश्रु विमोचन करती हुई स्त्री उसके सम्मुख आ जाय तो उसका क्रोध कर्पूर के सदृश उड़ जायगा। यदि उसकी गोद में नन्हें-नन्हें फूल से भोले-भाले बच्चे भी हों तो पाषाण हृदय भी बिना पिघले न रहेगा।

* स्त्रियों को साष्टाङ्ग प्रणाम करने का विधान नहीं है, प्रणाम करते समय उनके स्तन पृथ्वी से स्पर्श हो जायँ, तो यह दोष माना जाता है।

* जिनकी संस्कृति पृथक् है, ऐसे विदेशी आर्यभूमि पर आकर वहाँ के अन्न जल को ही दूषित नहीं करते, अपितु वहाँ के वायु मंडल को भी विषैला कर देते हैं। वहाँ के समाज में समरता दोष भी उत्पन्न कर देते हैं। अत: पृथक् संस्कृतिवालों को रखना ही आवश्यक हो, तो उन्हें अपनी संस्कृति में विलीन कर लेना चाहिये अपना पृथक आधिपत्य स्थापित करके वे वहाँ की विशुद्ध परंपरा को दूषित बना देंगे, अत: ऐसे लोगों का निष्कासन ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है। उनका यही दमन है, कि उन्हें अपने देश में लौटा देना चाहिये। ऐसे विष वमन करनेवाले व्यक्ति वायु मण्डल में विद्वेष तथा विग्रह का बीज वमन करके विद्रोह खड़ा कर देते हैं।

* चिरकाल के वियोग के अनन्तर प्राणांतक विपति के पश्चात् अपने प्रिय से भेंट होती है, उसमें अत्यन्त उत्कंठा तथा उत्सुकता सन्निहित रहती है। उस समय सभी अङ्ग चाहते हैं- हम उनके अङ्गों में मिल जायँ। नेत्र चाहते हैं हम इन्हें पी जायँ, रसना चाहती है हम इनके सौन्दर्य का स्वाद चखें। माता-पिता का प्रेम सन्तान के प्रति अत्यधिक होता है। हृदय रोता रहता है, वियोग में संयोग में सदा संतान के निमित्त अश्रु बहते रहते हैं, अन्तर केवल इतना ही होता है, कि वियोग में जो आँसू निकलते हैं, वे शोक के होते हैं और संयोग में जो अश्रु आते हैं, वे हर्ष तथा प्रेम के आते हैं। सन्तान किसी भारी दु:ख से छूट जाय तो माता-पिता को इतना हर्ष होता है, कि उस हर्ष में वे धन रत्न को तुच्छ समझते हैं और उसकी मंगल कामना के निमित्त उसे दोनों हाथों से लुटाते हैं।

* रूप का आकर्षण तो होता ही है, स्वर का, शब्द का, ध्वनि का, संगीत-का भी एक प्रबल आकर्षण है, यदि उस ध्वनि का उद्गम स्वयं भी आकर्षक हो, तब तो कहना ही क्या? विष देकर तो सभी मार सकते हैं। अमृत पिलाकर जो

मृतक बना दे उसी की विशेषता है। अस्त्र-शस्त्रों से तो सभी घायल कर सकते हैं, जो सुखद शब्द सुनाकर मूर्छित कर दे वही सच्चा शूरवीर है।

* प्राणिमात्र की इच्छा प्रेम प्राति की है, जीव प्रेम के बिना भटक रहा है, प्रेम बिना ही प्राणी विकल हो रहा है। यह जीव किसी से प्रेम करना चाहता है, किन्तु जिनका प्रेम स्थायी नहीं, आज हममें कोई गुण देखा, प्रेम करने लगे। कल वह गुण न रहा द्वेष करने लगे, यह प्रेम नहीं गुणों के प्रति आकर्षण है। प्रेम ऐसा हो कि वह कभी मिटे नहीं घटे नहीं, दिन दूना बढ़ता जाय। प्रतिक्षण वर्धमान ही प्रेम का स्वरूप है।

* जो आत्मतोष के लिये किया जाय, आमोद-प्रमोद के लिये सुख-संतोष के लिये किया जाय वही विहार है।

* विलम्ब करने से अघटित घटना घटने की सम्भावना हो सकती है।

* कभी असत् पुरुषों का साथ न करना चाहिये। विषयों की चर्चा न करनी चाहिये, कामियों से संसर्ग न रखना चाहिये। किसी को स्पर्श न करना चाहिये। सदा सावधान होकर भगवत् चिन्तन और भगवद् गुण श्रवण में लगे रहना चाहिये। जो लोग रात्रि दिन संसार में ही फँसे रहते हैं, उनका चित्त तो स्त्री, बच्चे, व्यापार, पशु, भवन, भूमि तथा अन्यान्य पचासों बातों में बँटा रहता है।

* चराचर विश्व का संचालन काम से ही हो रहा है। काम से ही बन्ध है काम से ही मोक्ष है किन्तु काम में कुछ अन्तर है। काम कहते हैं कामना को, संसार में बिना किसी कामना के कोई काम होता नहीं। हमें जीवन की कामना है, इसलिये साँस लेते हैं हमें परिचय की कामना है इसलिये देखते हैं। हमें पेट भरने की शरीर पोषण की कामना है इसलिये खाते हैं। हमें संसार को चलाये रखने की कामना है इसलिये सन्तानोत्पत्ति करते हैं। अकेली सांसारिक कामनायें हमें पुन:- पुन: संसाार में घसीट-घसीटकर लाती है। धर्महीन काम ही संसार में बाँधता है स्वर्ग नरक ले जाता है, जो काम कृष्ण के समीप ले जाय- संसारी कामों को छुड़ा दे- उसमें और कृष्ण में कोई अंतर नहीं। जो ऐसे काम को हृदय में उत्पन्न कर दे वही सद्गुरु है।

* उदारवाद कुछ नहीं होता। लोग खुद ही छूट ले लेते हैं।

* खड़े होकर मरना बेहतर है, घुटनों के बल जिंदा रहने से।

* हर किसी को सख्त होना सीखना होगा लेकिन नरमी खोए बिना।

* ऐसे शब्दों का कोई मोल नहीं है, जो करनी से मेल न खाते हों।

* अतिथि सेवा में धन, जन, पत्नी, पुत्र, यहाँ तक कि अपने प्राणों को भी आहुति देनी पड़े तो बुद्धिमान् पुरुष को इसमें भूल न करनी चाहिये।

* जो वस्तु जितनी ही अधिक प्रतीक्षा के पश्चात् जितनी ही उत्कंठा के अनन्तर प्राप्त होती है, उसकी प्राप्ति में उतना ही अधिक आनन्द आता है।

* श्रेष्ठता न विद्या से, न जाति से, न यज्ञयागादि से होती है। श्रेष्ठता भगवत्-प्रेम से सम्बन्धित है। भक्ति बिना सारे बड़प्पन व्यर्थ हैं।

* धरती के जीवों को तृप्त करना सबसे बड़ा यज्ञ है।

* एक मनुष्य की जिंदगी धरती पर मौजूद सबसे धनवान आदमी की सारी दौलत से लाखों गुना ज्यादा कीमती है।

* पुराने क्रूर नेताओं को सिर्फ इसलिए बदला जाता है ताकि नए नेता उनकी जगह लेकर क्रूर बन सकें।

* मनुष्य गिरने से कोई फर्क नहीं पड़ता, बशर्ते कोई दूसरा बंदूक उठाकर गोलियां दागना शुरू नहीं कर दे।

* क्रांति कोई सेब नहीं है, जो पकने पर गिर जाए। इसे गिराना पड़ता है।

* हम ऐसी किसी भी चीज को पाने के लिए आश्वस्त नहीं हो सकते, जिसके लिए हम मरने को तैयार न हों।

* दोस्त न होना दुखद है लेकिन दुश्मन न होना और भी दुखद है।

* पूरी जिंदगी में जितना सोना जमा कर सकते हैं, उससे ज्यादा कीमती है किसी व्यक्ति से धन्यवाद पाना।

* सच्चा क्रांतिकारी प्यार की भावना से प्रेरित होता है।

* जीत की खुशियां मनाते हुए नहीं, अपनी हार पर जीत हासिल करते हुए जिंदगी जिओ।

* ज्ञान हमें जिम्मेदर बनाता है।

* मनुष्य सारी जिंदगी लडता है अपनी परिस्थिति सुधारने के लिए। काश, थोड़ा प्रसाद वह अपनी प्रकृति सुधारने के लिए करता। यदि वह ऐसा करता तब परिस्थिति सुधरते देर नहीं लगती। प्रकृति सुधरेगी सात्विक भोजन से, प्रकृति सुधरेगी सत्संग, स्वाध्याय, मनन से, प्रकृति सुधरेगी योग और अभ्यास से जितना हो जाए करो।

* भूत का शोक और भविष्य का भय नहीं करता वही वर्तमान का आनन्द उठा सकता है इसलिए भूत की याद न कर, भविष्य की फर्याद न कर और वर्तमान बर्बाद न कर।

* मनुष्य के हृदय में देवता कभी-कभी जागता है और पशु तो हर समय जागता ही रहता है।

* महत्व इसका नहीं है कि तुम अपनी यात्रा कहाँ से आरम्भ करते हो, बल्कि इसका है कि तुम जा कहाँ रहे हो।

* जब संदेह का सांप सिर उठाता है तो अमृत भी जहर लगता है और जब श्रद्धा जगती है तो पत्थर भी भगवान हो जाते हैं।

* प्रेम करने का अर्थ अधिकार नहीं, बल्कि अपने आप को सौंप देना है। प्रेम का ही दूसरा नाम आत्म समर्पण है। भय से भी समर्पण हो सकता है परन्तु प्रेम में अन्तर्आत्मा से समर्पण होता है, जिसे आत्म समर्पण कहते हैं।

* धर्म कोई पगड़ी नहीं है, जिसे मन्दिर-मस्जिद में जायें तो सिर पर पहन लें और घर-दुकान पर आयें तो उतार दें। धर्म तो उस चमड़ी की तरह है जो सदैव तुम्हारे साथ रहती है। धर्म जब तक स्थाई रूप से जीवन में प्रकट नहीं होगा तब तक आपका कल्याण नहीं होगा।

* दूध में मक्खन है, दूध में मक्खन है। इस तरह चिल्लाते रहने से कुछ नहीं होगा? पहले दूध जमाओ, दही बनाओ और मथो, तब कुछ होगा। साधना से सफलता का रहस्य भी यही है।

* जो चाहते हो वह होता नहीं, जो होता है वह भाता नहीं और जो भाता है वह रहता नहीं। यही प्रकृति का नियम है।

* आजकल के माता-पिता बच्चे की परवरिश नहीं करते। केवल उन पर पैसा खर्च करके अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं।

* दुश्चरित्र आदमी से न दोस्ती करो, न जान पहचान। गर्म कोयला हाथ जलाता है एवं ठंडा हाथ काला करता है।

* कम खाने वाले का शरीर स्वस्थ रहता है एवं गम खानेवाले का मन स्वस्थ रहता है। तत्वत: कम और गम खाने वाला कभी दु:खी नहीं होता।

* रोग के डर से आदमी खाना तो बन्द कर देता है, पर दण्ड और मरण के भय से वह पाप करना नहीं रोकता, कैसा आश्चर्य?

* जीवन में प्रथम हमारी प्रसन्नता नष्ट होती है और तब हमारी आशा, भय भी चले जाते हैं। इनके समाप्त होते ही धरा अपना ऋण मांगती है और हम भी चिरनिद्रा में लीन हो जाते हैं।

* हम दुर्ग तभी छोड़ते हैं, जब उसकी रक्षा के लिए एक भी व्यक्ति शेष नहीं रह जाता।

* क्षुद्र मस्तिष्क अपनी क्षुद्र सीमा से परे किसी भी वस्तु को उचित नहीं समझते।

* दयापात्र बनने की अपेक्षा ईर्ष्या का पात्र बनना कहीं श्रेयस्कर है।

* धैर्य और परिश्रम से हम वह प्राप्त कर सकते हैं जो शक्ति और शीघ्रता से कभी नहीं।

* इस सनातन नियम को याद रखो- यदि तुम प्राप्त करना चाहते हो तो अर्पित होना सीखो।

* विवाह एक जुए के समान है जिसमें पुरुष को अपनी स्वतंत्रता और स्त्री को अपनी प्रसन्नता दांव पर लगानी पड़ती है।

* असली गरीब वह है, जिसके लालच का कोई अंत नहीं।

* बुराई करने का अवसर तो दिन में सौ बार आते हैं, पर भलाई का अवसर वर्ष में एक बार आता है।

* अज्ञानता ही मोह और स्वार्थ की जननी है, अत: अज्ञानी ही दुष्ट या कापुरुष होते हैं

* तुम अपने जीवन को इतना पवित्र रखो कि कोई तुम्हारी निंदा करे फिर भी लोग उसका विश्वास न करें।

* यदि नेत्रहीन व्यक्ति को नेतृत्व करनेवाला भी नेत्रहीन ही हो तो दोनों कूप में गिर पड़ेंगे।

* युवावस्था में हम शिक्षण प्राप्त करते हैं और वृद्धावस्था में उस ज्ञान की वास्तविकता की थाह पाते हैं

* निन्दा से बचने का अचूक एवं शीघ्र इलाज स्वयं को सुधार लेना ही है।

* हम न कभी उतने सुखी होते हैं और न कभी उतने दु:खी जितना कि हम स्वयं को समझते हैं।

* एक निंदाशील वह व्यक्ति है जो मूल्य तो सभी वस्तुओं का जानता है, किंतु महत्व किसी का भी नहीं।

* यदि नेत्रहीन व्यक्ति का नेतृत्व करनेवाला भी नेत्रहीन ही हो तो दोनों कूप में गिर पड़ेंगे।

* कोई वस्तु सर्वथा हमारी उसी समय हो सकती है, जब वह हमारी प्रसन्नता की वस्तु हो।

* दर्शन कभी भी सम्भावनाओं से आगे नहीं बढ़ पाता और उसकी प्रत्येक धारा में संदेह सुरक्षित रहता है।

* आकाश के अन्य सुन्दर लोकों की भांति हमारा विश्व भी सुन्दर है। यदि हम अपने कर्त्तव्य-मात्र को कर पाते तो यह भी उन्हीं की भांति प्रेम से परिपूर्ण हो जाता।

* जो उन्मत्त होता है मदसे, वह मस्तक झुकाना नहीं चाहता।

* जब मनुष्यमें निर्वेद आता है, जब मनुष्यके सारे साधन शक्तिबल कुण्ठित हो जाते हैं तब वह किसी विशेष शक्तिका सहारा ढूँढ़ता है। खास करके जो लोग सांसारिक भोगोंका अधिकार, अर्थ, बल इत्यादिको प्राप्त करके उसके मदमें चूर्ण रहते हैं, उनका मल जबतक चूर्ण नहीं होता तबतक तो वे समर्थ भगवान्‌की ओर देखते नहीं। वह देखते हैं निरन्तर अपने भौतिक बलकी ओर। अबकी बार हम कर लेंगे- इस बार हम कर लेंगे इस कलासे, इस कौशलसे, इस विद्यासे, इस शिक्तसे। न मालूम किस-किस भौतिक साधनका वह स्मरण करते हैं और निरन्तर उसीका आश्रय करते हैं और भौतिक बलका आश्रय करनेवालोंके पास बच जाती है दो ही चीज- असुरभावापन्न जो प्राणी होते हैं जिनके जीवनका सम्बल होता है केवल सांसारिक प्राणी पदार्थ ही, वे लोग भगवान्‌का आश्रय नहीं करते। भगवान्‌की ओर देखते नहीं बल्कि भगवानको भी अपने बुद्धि कौशलसे अपने छल-बलसे परास्त कराना चाहते हैं। भगवानका नाम भी मिटा देना चाहते हैं, यद्यपि उनके मिटाये मिटता नहीं है। पर जब भगवान्‌की महती कृपासे उनका बल-दर्प-चूर्ण होता है तब उनके हृदयमें एक सुअवसर आता है।

✻ जब मनुष्यमें गर्व भर जाता है उस समय यह भूल जाता है कि क्या करना है क्या नहीं करना है। भूला हुआ हमेशा दयाका पात्र होता है।

✻ क्रोध पैदा होता है कामसे, लोभ पैदा होता है कामसे। जहाँ कामना नष्ट हुई वहाँ सारे दुर्गुण, दुराचार नष्ट हो गये।

✻ जिसकी बुद्धि कामाभिभूत होती है- काम, क्रोध, लोभसे जिसकी बुद्धि ढ़की होती है वह अपना भला आप नहीं जान सकता। बहुत बार आदमी भलेके नामपर अपना बुरा कर बैठता है और कहता है कि हमने भला किया। मनुष्यका अभिमान, मनुष्यकी मूर्खता, मनुष्यका काम, मनुष्यका क्रोध, लोभ, मोह यह उसकी बुद्धिको विकृत कर देते हैं। उस समय वह अपनी भलाई मानकर बुराई कर बैठता है। सारी कामनाओंका परित्याग करो और सारी स्पृहा, प्रतीक्षाका परित्याग करो। ममता छोड़ो, अहंता छोड़ो तब शान्ति मिलेगी। भगवान्‌के सौहार्दमें जहाँ विश्वास हो गया वहीं शान्ति मिल गयी।

✻ जैसे लोभी के पास कितना भी धन आ जाय, उसकी तृप्ति ही नहीं होती। नित्य ही उससे अधिक प्राप्त करने की अभिलाषा उसके हृदय में बनी ही रहती है।

✻ इच्छा होना अपूर्णता का चिन्ह है।

✻ शरीर परवश है, प्रारब्धवश है। वह अभिभावकों के अधीन है, किन्तु मन तो अपना है। मन जहाँ फँस जाता है, वहाँ से उसका निकलना कठिन हो जाता है। ऊपर से वेष किसी का मन से ध्यान किसी का यह तो कुछ अनुचित-सा है, किन्तु करें क्या, कोई बलवान बलपूर्वक मन को चुरा ले, उससे किसका वश चलता है। जिसकी लाठी उसकी भैंस। विष का कीड़ा विष को ही खाने में सुख मानता है। चकोर को अग्नि खाने में ही सुख है। सुख तो मन की वस्तु है। मन ने जिसको मान लिया वही सुख है।

✻ जो जिस पर अपना अधिकार समझता है, उसके अपने विरुद्ध उत्तर को सहना नहीं चाहता। वह सदा यही आशा रखता है, मेरा आश्रित मेरे संकेत पर चले, मेरी इच्छा के विरुद्ध आचरण न करे, मेरी आज्ञा का उल्लंघन न करे।

✻ विषय कभी भी भोग से शान्त नहीं होते। जैसे प्रज्वलित अग्नि में घृत डालने से वह और अधिक बढ़ती है ऐसे ही जारों के समीप कभी किसी को शान्ति नहीं, तृप्ति नहीं और अधिक अशान्ति बढ़ती है। अतृप्ति होती है।

✻ प्रियता आत्मा में ही। आत्मीयता में ही प्रीति होती है। प्रीति का कारण सौंदर्य, धन, विद्या, यश तथा कुलीनतादि गुण नहीं हैं। कोई कितना भी सुन्दर है, उसमें हमारी आत्मीयता नहीं है, हमारे लिये वह सर्वसाधारण के समान है। इसके विपरीत कोई अत्यन्त कुरूप है, उसमें हमारी आत्मीयता हो गयी है तो वह प्रिय से भी प्रिय हैं। इसी प्रकार कोई कितना भी धनी हो, यशस्वी अथवा कुलीन हो, जब तक उसमें ममत्व नहीं, अपनापन नहीं तब तक उसके धन, यश, विद्या और कुलीनता से क्या प्रयोजन?

✻ ये संसारी माता, पिता, भाई, पति, मित्र, बन्धु-बान्धव तथा कुटुम्ब परिवारवाले तभी तक प्रिय लगते हैं, जब तक सर्वान्तर्यामी-सबके आत्मस्वरूप-प्रभु में प्रेम नहीं होता।

✻ उसको तो मार दें और खुद मरें नहीं। यह जो सोचता है कि दूसरेको मार दें और हम नहीं मरें, वह तो वहींपर मर गया। उसके मरनेका उपक्रम हो गया। जो चाहता है कि दूसरोंको दु:ख दें और हम सुखी रहें उसका दु:ख आरम्भ हो गया।

✻ जब कोई दु:खके बाद सुख आता है तो वह सुख बहुत प्यारा लगता है। जो सुखमें सुख आता रहता है वह सुख भी वहाँका दूसरा है। किसी भी सुखसे कभी चित्त उबता नहीं है। नित्य नव सुख ही दीखता है वहाँपर। हमारे सुखमें-विषयसुखमें और प्रेमसुखमें यह बड़ा अन्तर है। विषय सुख बार-बार मिलता रहे तो मन उसकी तरफ आकर्षित नहीं होता।

हमारे मनमें किसी विषयकी चाह हो और वह न मिले तब तक बड़ी उत्कण्ठा रहती है और मिलनेके बाद कुछ समयतक उसमें मन बड़ा रमता है, बड़ा प्रिय मालूम पड़ता है। वह चीज अगर हमेशा पास रह गयी तो फिर उसकी उपेक्षा होती है। उसकी तरफ मन खिंचता नहीं। चाहे वह चीज पहले कितने ही प्रलोभनकी रही हो, कितनी ही लुभानेवाली रही हो। मिलनेके बाद कुछ दिनोंमें उसकी उपेक्षा हो जाती है। परन्तु यह प्रेमराज्यमें नहीं होता है। प्रेमराज्यमें प्रेमास्पद, कभी भी, कुछ भी पुराना होता ही नहीं। यह प्रेमराज्यका नियम है। जहाँपर विशुद्ध प्रेम है वहाँपर अनुरागकी सामग्रीका सौन्दर्य कभी भी घटता नहीं, निरन्बर बढ़ता रहता है चाहे अवस्था कुछ भी बदल जाय। वहाँ यह बात थी नहीं तथापि लोकदृष्टिमें कहनेके लिये। सुखमें सुख आता है तो उसकी कोई परवाह नहीं होती है पर भयानक दु:खके बाद जब सुख आता है तो वह सुख बड़ा प्रिय मालूम होता है। दु:खमें नशा उतरता है। सुखमें तो समझता है कि मेरे समान है कौन?

* जहाँ भी प्रिय भाव होता है वहाँ आदमी जल्दी अनिष्ट सोच लेता है। न मालूम कुछ हो तो न गया हो।

* जो अपनेको सुखी करनेमें दूसरोंको भूल जाता है वह कामी-स्वार्थी है। जहाँ दूसरेके सुखकी कल्पना नहीं होती और स्वाभाविक रसकी धारा दूसरेको सुखी बनाती है प्रेमीको, वह है प्रेम।

* अविश्वास काम करने नहीं देता।

* हमारे मनका जो चिन्तन किसी फलको उत्पन्न ना करे वह तो है व्यर्थ मनोरथ और जो बुरा फल उत्पन्न करे वह है अनर्थ मनोरथ। हम जितनी-जितनी भी क्रोधके, कामके, लोभके वशमें होकर पाप चिन्तायें करते हैं वह सबके सब हमारे अनर्थ मनोरथ हैं। वे मनोरथ भी हमें नरकोंमें ले जानेवाले हैं।

* जब मनुष्यमें हिंसा जाग उठती है उस समय विवेक तो पहले ही नष्ट हो जाता है और उसके अन्दर राक्षस भाव और ज्यादा भर जाता है। तीन भाव होते हैं। एक मोहिनी है, एक आसुर है और एक राक्षसी भाव। मोहिनी, आसुरी और राक्षसी यह आसुरी सम्पत्तिके तीन भेद बताये हैं। जहाँ कामकी जागृति है वहाँ मोहिनी सम्पत्ति है और जहाँ लोभकी जागृति है वहाँ आसुरी भाव है और जहाँ क्रोधकी जागृति है वहाँ राक्षसी भाव है।

* मनका काम है संकल्प-विकल्प करना और चित्तका काम है संकल्पित विषयका चिन्तन करना तथा बुद्धिका काम है निश्चय करके तदनुसार संचालन करना।

* सहसा कोई वस्तु प्राप्त हो जाती है तो उसकी प्राप्ति में उतना सुख नहीं होता, जो अत्यन्त उत्कण्ठा के साथ, चिरकाल का प्रतीक्षा के साथ प्राप्त की हुई वस्तु की प्राप्ति में सुख होता है।

* जिस खेत में आक, धतूरा, एरण्ड, करील, बबूर ये उत्पन्न होते हैं, उसमें संभावना हो सकती है, गेहूँ भी पैदा हो जायँगे, किन्तु जो सर्वथा ऊसर भूमि है। जिसमें कुछ पैदा होता ही नहीं, उसमें क्या संभावना की जा सकती है।

* रस शास्त्रकारों ने मद में और गर्व में भेद किया है। मद तो यौवन के अधिक उफान में और मधुपान से होता है। उसमें विवेक नहीं रहता, हृदय में उल्लास अधिक होता है। बाणी स्खलित हो जाती है। कुछ-का-कुछ बकने लगता है। उसमें कोई हँसते गाते हैं, चिल्लाते हैं, गाली देते हैं तथा रोते-पीटते हैं आदि।

* चिरवियोग के अनन्तर जो मिलन होता है, उसमें अत्यधिक मिठास होता है।

* मनुष्य अपने जीवन में बड़े-बड़े मनोरथों के पुल बाँधता है किन्तु दैव की इच्छा का उसे कुछ पता नहीं है। दैव के अनुकूल होने पर उसका प्रयत्न सफल हो जाता है तो उसे प्रसन्नता होती है और दैव के प्रतिकूल होने पर वह अपने कार्य में असफल हो जाता है।

* जब जीव जीभ के वश में होता है, लौकिक सुख के वश में होता है तब वह अलौकिक और दिव्य सुख नहीं पा सकता। चिकित्सक भी कहते हैं, यदि रसेन्द्रियों पर नियंत्रण नहीं किया गया तो रोग से मुक्त नहीं हो सकते।

* कामना की पूर्ति के बिना अथवा त्याग के बिना वासना का क्षय नहीं होता। विधि के बनाये हुये विधान के अनुसार संसार-परिवार के साथ रहना भी साधना है। स्वधर्म की साधना पूर्ण होते ही भगवान की प्रेरणासे सद्गृहस्थ को संन्यास का अविरल भाव उत्पन्न होता है और वह परिजन, पुरजन, स्वजन की चिन्ता न करते हुए लोकधर्मों का त्याग करके भगवान की ओर उन्मुख हो जाता है।

* शिक्षक विद्यार्थी की परीक्षा वर्ष में एक बार लेता है किन्तु भगवान भक्तों की परीक्षा पग-पग पर लेते हैं।

* पूर्णकाम पुरुष और वासनाविहीन परस्त्रियों के मिलन में कोई दोष नहीं होता है।

* जो जितना ही बड़ा होता है, उसका आवेग भी उतना ही बड़ा होता है। छोटे की भावना भी छोटी होती है। छोटों का आकर्षण भी छोटा होता है। बड़े लोग पहिले तो किसी की ओर आकर्षित नहीं होते। यदि कदाचित् हो जाते हैं, तो फिर उनका वह आकर्षण सहज में हटता नहीं। बड़ों की सभी बातें बड़ी होती हैं। बड़े हों चाहे छोटे जो जिस मार्ग पर पैर रखेंगे, उन्हें उनके सुख-दु:ख सहने ही होंगे।

* ऐसे शास्त्र विरुद्ध जहाँ आचरण देखें, वह चाहे कितना भी प्रभावशाली व्यक्ति हो, उससे शक्ति भर दूर रहने की चेष्टा करें। जो परमार्थ के पथिक हैं और किसी भ्रमवश भूल से ऐसे धर्मविरुद्ध आचरण करनेवालों के फन्दे में फँसे गये हैं, उन्हें पुन: स्वस्थ चित्त होकर अपने आचरण पर विचार करना चाहिये। भूल तो सबसे ही हो जाती है, बड़ों से हो जाती है, किन्तु उस भूल को भूल समझकर उसके लिये पश्चात्ताप करना-प्रायश्चित्त करना- यह उन्नति का लक्षण है। पाप करके उसे छिपाना, गर्व करना और अनेक युक्तियों से उसका समर्थन करना, यही पतन का निष्कंटक राजमार्ग है।

* स्नेह समानशीलों में ही होता है। जहाँ छोटे-बड़े का, धनी-निर्धन का, पंडित मूर्ख का, उच्च नीच का भेद-भाव है वहाँ प्रेम नहीं रह सकता। शिष्टाचार भले ही रह सकता है।

* एक ही पथ के पथिक हों। दोनों का एक ही उद्देश्य हो। एक-सी ही स्थिति हो तब स्नेह बढ़ता है, तब मिलकर उद्देश्य प्राप्ति के लिये सम्मिलित साधन हो सकती है। तब संघशक्ति संगठित होती है। तब पुकार में बल आता है।

* जिस वस्तु का प्रेम के साथ संस्पर्श हो जायगा वह सुखद हो जायगी, सरस हो जायगी मनोज्ञ हो जायगी और हो जायगी अत्यन्त आकर्षक हृदय हारिणी तथा अनुराग विवर्धिनी।

* लोक में देखा गया है, जो जिसका निरन्तर चिन्तन करता रहता है, वैसा ही बन जाता है। विचारों का प्रभाव मन के ऊपर बहुत पड़ता है। मनुष्य जैसा संकल्प करता रहेगा वैसा ही हो जायगा। यह संसार ही संकल्प के अधीन है। हमारे विचार ही आकृति का निर्माण करते हैं। भीत पर, पाषाण की शिला पर, कागद पर चित्रकार वैसी ही आकृति बनावेगा जैसी कि वह कल्पना करेगा। इसीलिये वेदों में बार-बार कहा गया है। हमारे संकल्प शिव हों, सुन्दर हों कल्याणकारी हो।

* प्रेम की भाषा संकेत लिपि में लिखी जाती है। संकेत सैनों में होता है, नैनों में होता है और बैनों में होता है। सैनों में जो संकेत होता है, वह स्वीकृति और अस्वीकृति का होता है। नैनों में जो संकेत होता है वह अनुराग और कोप का होता है तथा बैनों में जो संकेत होता है, वह चलने का और रुकने का होता है। संकेत शास्त्र बड़ा गहन शास्त्र है।

* लोक में रहकर लोक व्यवहार की अवहेलना तो खुलकर नहीं की जा सकती।

* अपनी मान्यता को बलपूर्वक दूसरों पर लाद देना उचित नहीं। हम जो मानते हैं, दूसरा भी वैसे ही माने। हम जिसे

जैसा समझते हैं, दूसरा भी उसे वैसा ही समझे ऐसा आग्रह करना उचित नहीं। श्रद्धा कुछ दूसरे के करने से तो होती नहीं। वह तो अन्त:करण की प्रेरणा से होती है।

* दूसरों की बुराई वही देखेगा जिसके भीतर बुराई भरी होंगी। जिन्हें बुराइयों की आवश्यकता होगी। संसार में तो सदा से अच्छे-बुरे रहे हैं, सदा रहेंगे। पंसारी की दूकान पर विष भी है, रसायन भी है, हमें मरना होगा तो विष की खोज करेंगे। कायाकल्प करना होगा तो विष की ओर ध्यान नहीं देंगे।

* जब पुरुष स्त्री के अधीन हो जाता है तो उसमें पुरुषत्व रहता ही नहीं। उस समय तो वह काठ की पुतली बन जाता है। जब तक पुरुष काम के अधीन नहीं, तब तक तो स्त्री दीन बनी रहती है।

* दुष्ट प्रकृति के लोगों को अधिक आदर देना किसी गूढ़ षडयंत्र का पूर्वाभास है।

* संसार में देहधारियों के बीच में जन्म लेने पर देहवाले के देह की सफलता इसी में है कि वह अपने प्राणों से, धन से, बुद्धि से, तथा वाणी से सदा श्रेय का ही आचरण करता रहे। सबका जितना हो सके भला करता रहे। कभी किसी का मन से भी अनिष्ट न चाहे।

* जिसका हम निरन्तर चिंतन करते हैं, उसके आने का कोई सम्वाद देता है, तो हृदय प्रफुल्लित हो जाता है। इसके सम्बन्ध की कोई कथा कहता है, तो कान कृतार्थ हो जाते हैं। वे उत्सुक होकर उसी की चर्चा सुनना चाहते हैं, नेत्र उसके दर्शनों के लिये छटपटाने लगते हैं। अङ्ग उनके सुखद स्पर्श के लिये लालायित हो उठता है। प्रेम में पदे पदे गोपन होता है।

* सज्जन पुरुष गुणों के कारण ही सबके परिचित बन जाते हैं। जो सत्कर्म करते हैं, उससे सभी आशा रखते हैं। जो परोपकार करते हैं, उनमें सभी की आत्मीयता होती है।

* भीख माँगने जब जाय, तो मान-अपमान को घर की खूँटी पर ही टाँगकर जाना चाहिये। भीख माँगने जाय, तो पहिले ही सोचकर जाय कि जिसके समीप माँगने जाते हैं, वह मना करने में स्वतन्त्र है। किस माँगने वाले का तिरस्कार नहीं हुआ। समय और परिस्थिति का भी याचना पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। मनस्वी और कार्यार्थी को सुख दुख की, मान अपमान की चिन्ता नही करनी चाहिये।

* धरती के जीवों को तृप्त करना सबसे बड़ा यज्ञ है।

* सज्जन पुरुष जिसे एक बार अपना लेते हैं, उसे जीवन पर्यन्त छोड़ते नहीं।

* लोगों की धारणा भ्रममूलक है कि अनुराग या प्रेम अङ्गसङ्ग से ही होता है, अङ्गसङ्ग तो अत्यन्त निकृष्ट क्षणभर का सुख है, अन्त में उससे दु:ख-ही-दु:ख होता है।

* संसार में न कोई किसी पर अनुग्रह कर सकता है, न शाप दे सकता है। ये सब तो पूर्व जन्मों के संस्कारों के अनुसार प्रारब्ध के वश होता है। किया हुआ कर्म बिना भोगे समाप्त होता ही नहीं। कर्मों के भोग तो भोगने ही होंगे।

* मन से जो बात न मानी जाय, ऊपर से विवश करके हाँ हूँ करायी जाय, तो वह मान्यता चलती नहीं।

* कृतार्थ हुए पुरुष से जो सम्बन्ध रखता है, वह भी कृतार्थ हो जाता है।

* संसार में तीन ही प्रकार के लोग होते हैं। शत्रु, मित्र और उदासीन। जो अपने सुख-दु:ख में सदा साथ रहते हैं अपना सदा भला चाहते हैं, वे तो मित्र कहाते हैं, जो अपने से द्वेष रखते हैं, अपना अनिष्ट चाहते हैं, वे शत्रु कहलाते हैं। जो न इष्ट चाहते हैं न अनिष्ट सामान्य रीति से रहते हैं वे उदासीन कहाते हैं। अहंता ममता से शून्य समदर्शी साधु पुरुष तो सबके साथ समान व्यवहार करते हैं, उनके लिये किसी के सम्मुख कोई बात छिपाने योग्य नहीं रहती। सबके सामने अपने

मनोगत भावों को व्यक्त कर देते हैं।

❋ मनुष्य जो भी कार्य करता है, उसका कुछ-न-कुछ तत्व समझकर तब करता है। कोई-कोई ऐसे भी काम होते हैं, जिनके विषय में कुछ समझत्ते-बूझते तो है नहीं, वैसे ही कर लेते हैं। पाप और पुण्य कर्म चाहे समझकर किये जायँ, अथवा बिना समझे बूझे फल तो दोनों का ही कुछ-न-कुछ होगा, किन्तु समझकर किये हुए कर्मों का जैसा फल होता है वैसा बिना समझे किये हुए कर्मों का नहीं होता।

❋ सुख, दुख, भय, शोक, हानि, लाभ, यश, अपयश, क्षेम तथा मान प्रतिष्ठा ये सभी सबको कर्मानुसार प्राप्त होती है।

❋ संसार में ऐसा कोई प्राणी नहीं दिखायी देता, जिसे अपनेपन का अभिमान न हो छोटे-से-छोटे को, दरिद्र-से-दरिद्र को, दुखी-से-दुखी को देखो पूछो। चींटी को दबाओ वह भी क्रोध करके काटती है, वह भी अपमान से क्रुद्ध हो जाती है। क्रोध का कारण है मिथ्याभिमान। क्रोध करते हैं, दुखी होते हैं। यही अज्ञान है, यही भ्रम है। संसार में क्रोध किया जाय, तो यह बन्धन का कारण है, यदि वही क्रोध भगवान के साथ किया जाय, तो बन्धन मुक्ति का हेतु हो जाता है।

❋ अभिमान के वशीभूत होकर जब कोई व्यक्ति अपनी मिथ्या हठ पर अड़ जाता है, तो उसका सब विवेक विलीन हो जाता है। वह सभी उचित अनुचित उपायों से अपने हठ को पूरा करना चाहता है।

❋ संसारी वस्तुएँ तो नाशवान हैं, क्षणिक हैं, इसके आने न आने में क्या कष्ट? विपत्ति तो उसी का नाम है, जब भगवान भूल जायँ और सम्पत्ति वही है, जब भगवान याद आवें। भगवान को भूलकर संसारी विषयों में आसक्त होना यह सुख नहीं महान दुख है। भक्त को जिसमें अधिक आसक्ति होती है भगवान उसी से उसका विछोह करा देते हैं।

❋ मन की शांति आध्यात्मिक विकास से प्राप्त होती है। यह सत्य है कि मन की शांति एक आंतरिक प्रक्रिया है तथा आध्यात्मिक जीवन एक भीतरी जीवन है परन्तु यह भी समान रूप से सत्य है कि इस प्रकार के विकास को बाह्य समर्थन से बहुत अधिक संबल मिलता है जबकि बाह्य बुराइयों से इसमें अत्यधिक अवरोध आते हैं। इसलिए विद्वानों द्वारा सात्विक आहार, सात्विक परिधान, सात्विक अध्यापन, सात्विक संग, सात्विक पर्यावरण तथा सात्विक रुचियां अपनाने के लिए कहा जाता है। इसीलिए प्रार्थना, तीर्थयात्रा, स्वाध्याय और सत्संग व्रत एवं उत्सवों की सीख दी जाती है। इन शक्ति सम्बलों का परित्याग न करें। आत्मोत्थान के लिए जीवन में अपनाएं।

❋ हमारे सोच का हमारी परिस्थितियों पर सीधा असर पड़ता है। हमारे विचार सकारात्मक और आशावादी होंगे, तो हमारे लिए अच्छी परिस्थितियां निर्मित होंगी। अच्छी परिस्थितियां हमारे जीवन में सुख-समृद्धि, आरोग्य और दीघायु लेकर आती हैं। नकारात्मक विचार इसके विपरीत कार्य करते हैं। वे न केवल हमारे स्वास्थ्य को हानि पहुंचाते है, बल्कि सुख-समृद्धि और अच्छे संबंधों का भी लोप कर देते है।

❋ जब तक मनुष्य जीता रहे तब तक कोई खोटा काम उपहास का न करे। कदाचित् उसका मन अशुभ कर्म करने के लिये चाहे तो भी ज्ञान की राह अपने मन को रोके जिसमें कोई उसे बुरा न कहे।

❋ गुरु के या बड़ों के समक्ष पैर फैलाकर कभी नहीं बैठना चाहिए।

❋ जिस व्यक्ति को अपने परिवार में परमात्मा का दर्शन नहीं होता उसको मंदिर की मूर्तियों में भी प्रभु का दर्शन नहीं होगा।

❋ इस सृष्टि में जो कुछ मिल रहा है वह तो सीमित है, हमारी मांगे असीमित है, बढ़ती जाती है।

❋ किसी के पतन पर हंसो मत। आदमी का क्या भरोसा है कब गिर जाए। चलते-चलते ठोकर लग जाए और नीचे गिर जाए फिसल कर, तो दर्द के कारण उसकी आंख में आंसू नहीं आते, बल्कि आंसू इस बात से आते हैं कि किसी ने गिरते

हुए देख तो नहीं लिया। रूप का अहंकार कभी नहीं करना चाहिए। ये गन्धर्व लोग तो रूप का अहंकार कर रहे हैं। किसी के अज्ञान पर भी मजाक नहीं उड़ानी चाहिए।

* किसीके आते ही अपना सुख-दु:ख सुनाने नहीं बैठ जाना चाहिए। पहले समागतकी भूख-प्यासका निवारण करना चाहिए, उसको सब तरहकी सुख-सुविधा देनी चाहिए और उसके बाद उसकी कुशल-मंगलकी चर्चा करनी चाहिए।

* वस्तु एक ही होती है स्थिति और भावना के अनुसार उसमें भेद हो जाता है। यह सम्पूर्ण संसार प्रेम के ही ऊपर अवलम्बित है। न्याय शास्त्र का सिद्धान्त है संसार में सबके पृथक्-पृथक् परमाणु हैं। जब वे परमाणु परस्पर में घुलमिल जाते हैं आपस में प्रेम करने लगते हैं, तब सृष्टि हो जाती है। जब वे एक दूसरे से पृथक् हो जाते हैं, परस्पर में प्रेम करना छोड़ देते हैं, तो प्रलय हो जाती है।

* सृष्टाकी सृष्टिका कोई प्राणी-वह ऋषि-मुनि-तपस्वी कोई भी हो, कैसा भी हो, काम के सम्मोहन-शरके शरणापन्न न हो जाय, यह सम्भव नहीं।

* जो बिना किसी हेतु के निश्छल भाव से मैत्री को निभाता है, वही पुरुष धन्यतम है। जो मैत्री स्थापित करके कपट करता है, वह स्वार्थरूपी पट से आच्छादित लम्पट नटमात्र है। उसे धिक्कार है।

* सामान्य वस्तु का बिछोह भी मनुष्य के लिए शोकप्रद हो जाता है, फिर जहाँ देह और आत्मा का बिछोह होता हो वहाँ सुख कैसे हो सकता है?

* दूसरे के दिये हुए अन्न से जीनेवाले पुरुषों के जीवन को धिक्कार है।

* प्रयत्न सदा ही सफल नहीं होते, उसमें तो भाग्य की प्रधानता ही होती है। मनुष्य बड़ी-बड़ी इच्छायें करता है। किन्तु प्रारब्ध उनको पूर्ण नहीं होने देता। जब कभी भाग्य अनुकूल हो जाता है तो भ्रम से उस सफलता को प्रयत्न का फल समझने लगते हैं। और सफल होने पर बड़े प्रसन्न होते हैं तथा बिफल होने पर बड़ा शोक करते हैं।

* गीदड़ यदि सिंह का चर्म ओढ़ ले तो वह सिंह तो नहीं हो सकता? धोबी राजा के वस्त्रों को पहिन ले तो वह राजा तो नहीं हो सकता? धतूरा अपना कनक नाम रख ले तो उससे कनककुंडल आदि आभूषण तो नहीं बन सकते?

* जैसी होनहार होती है, उसके लक्षण पहिले ही दीख जाते है। वैसे ही सब बानिक बन जाते हैं। बुरा होना होता है तो कितने भी उत्तम उपाय सोचो, सब व्यर्थ बन जाते हैं। अच्छा होने को होता है तो साधारण उपाय भी उत्तमोत्तम हो जाते हैं। प्राणी अपनी बुद्धि से तो जो भी कार्य करता है, सुख के ही निमित्त करता है, यदि उससे दुख होता है तो यह प्रारब्ध कर्मों का दोष है। चोर चोरी भी करता है या जार जारी भी करता है, तो उसे भी वह सुख के ही निमित्त करता है। इन कार्यों को लोग बुरा बताते हैं, इसीलिये वह छिपकर करता है पर उनका बुरा परिणाम होता है। जिस कार्य में दु:ख मिलने की सम्भावना हो, उसे प्राणी कभी करेगा ही नहीं।

* नीच पुरुषों का क्रोध उतना भयमर नहीं होता, जितनी उनकी नम्रता भयमर होती है। उन्हें किसी से कोई अत्यन्त गुरुतर कार्य होता है तो वे उसके सम्मुख नम्रता प्रकट करते हैं और सब प्रकारसे उसे वश में करके अपना स्वार्थ साधन करना चाहते हैं। जो उनके अधीन हैं, आश्रित हैं, उन्हें तो उसकी बातें माननी ही पड़ती हैं। प्रेम से न माने तो क्रोध से मनवा लेते हैं। जिनके आश्रय में रहना है उनकी उचित-अनुचित सभी बातें माननी पड़ती हैं।

* संसारी भोगों में यही विशेषता है कि इनमें शान्ति नहीं होती। भोगों को कितना भी भोग लो उनसे तृप्ति नहीं होती, लालसा अधिकाधिक बढ़ती ही जाती है। हमारे विषय भोग जो हैं वे स्थायी बने रहें और अधिकाधिक बढ़ते रहें, हम सदा

जीवित रहें, इन्हीं के लिये प्राणी प्रबल प्रयत्न करता रहता है। भाँति-भाँति के उपाय सोचता है।

* मिलन में उतना सुख नहीं होता जितना मिलने की इच्छा में होता है। इच्छा जितनी ही अधिक बलवती होगी उतना ही सुख बढ़ेगा। मिलन का सुख तो क्षण भर का होता है। चिन्तन का सुख स्थायी होता है। विरह के बिना सुख नहीं। वियोग के बिना यथार्थ रस का आस्वादन मिलता नहीं। उत्कण्ठा रस की अभिवृद्धि करती है। उत्कण्ठा दो प्रकार की होती है, अयोगजन्य उत्कण्ठा और वियोगजन्य उत्कण्ठा।

* संसार में कितनी भी बड़ी-से-बड़ी सम्मान सूचक उपाधियाँ प्राप्त हो जायँ, किन्तु जो भगवान के आदरपात्र नहीं हुए, प्रभु ने जिन्हें अपना कहकर स्वीकार नहीं किया, उनके जीवन को धिक्कार है। उनका मान, सम्मान, पद, प्रतिष्ठा तथा कीर्ति सभी व्यर्थ हैं।

* अत्यन्त शोक में, अत्यन्त भीड़ा भड़क्का में, अत्यन्त हर्षोल्लास में तथा अत्यन्त मांगलिक कार्यों में उतनी लोक लज्जा का विचार नहीं किया जाता। वहाँ महिलायें अपनी नारी-सुलभ लज्जा का परित्याग कर देती हैं। इन सबमें भी अत्यन्त शोक में तो शरीर की सुधि-बुधि नहीं रहती। कभी-कभी तो मर्यादा का भी उल्लंघन हो जाता है। शोक में यह भान ही नहीं रहता क्या कहना चाहिए क्या न कहना चाहिये? आवेग में आकर जो मुँह से निकलता है वही कह देते हैं।

* दुख में कोई किसी का साथी नहीं होता।

* अगर संसार में तीन करोड़ ईसा, मुहम्मद, बुद्ध या राम जन्म लें तो भी तुम्हारा उद्धार नहीं हो सकता जब तक तुम स्वयं अपने अज्ञान को दूर करने के लिए कटिबद्ध नहीं होते, तब तक तुम्हारा कोई उद्धार नहीं कर सकता, इसलिए दूसरों का भरोसा मत करो। उद्धार वही कर सकते हैं जो उद्धार के अभिमान को हृदय में आने नहीं देते।

* दुष्चरित्र आदमी से न दोस्ती करो न जान पहचान। आज के युग में बहुत से मनुष्यों के पास लक्ष्मी का अच्छा आवागमन हो जाता है वे मनुष्य समाज में सफेद पोशिये बनकर रहते हैं। समाज की दृष्टि में ऐसे मनुष्य बड़े विद्वान, सज्जन प्रतीत होते हैं। समाज ऐसे मनुष्यों का चयन करके, उनको समाज का मुखिया नियुक्त करते हैं। ऐसे आदमी महाघोर पापी होते हैं, ऐसे मनुष्य दुष्चरित्र होते हैं। इनसे बचकर रहें।

* व्यक्ति का व्यस्त रहना ही श्रेयस्कर है, क्योंकि खाली दिमाग शैतान का घर होता है।

* चित्त की बहिर्मुखता ही कुमार्ग है।

* बिना विनय के विजय नहीं मिलती।

* नदी की भांति जीओ, सरोवर की भांति नही। सरोवर गृहस्थ है तो सरिता सन्यासी।

* उत्तम विचार और महान चरित्रबल ही सबसे बड़ा धन है।

* अधर्म का अनुभव ही मनुष्य को धार्मिक बना सकता है, जैसे जब तक योग का अनुभव नही होगा तब तक मनुष्य योगी नही बन सकता। बिना भोग को जाने उसका योग नही ठहर सकता।

* किसीपर विपत्ति आ पड़ने पर भी दुष्ट व्यक्ति तमाशा ही देखना चाहते है।

* सारे संसार पर विजय पाने से अधिक आवश्यक है कि अपने मन पर विजय पाओ।

* जिसे वैराग्यमय जीवन बिताना है, उसके लिये आश्रम का बन्धन पतन का कारण होता है।

* प्रेममार्ग सरल है, स्वाभाविक है, सर्वोपयोगी है। प्रेम सिखाना नहीं पड़ता वह अपने आप ही हो जाता है, संसार में ऐसा कोई भी नहीं है जो किसी से प्रेम न करता हो, जो जिससे प्रेम करता है वह उसी का ध्यान चिन्तन करता रहता है। उसी के

विषय में सोचता रहता है। जैसे कामी पुरुष है तो मनोऽनुकूला कामिनी का ध्यान चिन्तन करता रहेगा। क्रोधी है तो अपने शत्रुओं का चिन्तन करेगा, लोभी है तो किसी प्रकार धन आवे धन आने के उपायों को सोचता रहेगा, उन्हीं के ध्यान में मग्न रहेगा। जो मोही है, वह जिससे अधिक मोह होगा, उसका चिन्तन करेगा, मत्सरी है तो काम से बचने के उपाय सोचता रहेगा।

* सुख-दु:ख का देनेवाला कोई दूसरा नहीं। मनुष्य अपने किये कर्म का ही फल भोगता है। जब अपने जैसे कर्म उदय होते हैं तब तैसा ही निमित्त बन जाता है।

* जो दूसरों के दोषों का चिन्तन करेगा, वह दोषी हो जायगा, दूसरों के गुणों का निरन्तर चिन्तन करता रहेगा वह गुणी हो जायगा।

* प्रिय के सम्मिलन में कितना सुख है, इसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है, यह सुख तो अनुभव गम्य है।

* सामर्थ्यवान बड़े लोगों के कोई आचरण धर्म विरुद्ध भी दिखाई दें, तो उनकी निन्दा न करनी चाहिये, उनके तेज के प्रभाव से- उनके संसर्ग से बुरा भी अच्छा हो जाता है। जो धर्म के विपरीत से कर्म दिखाई दें, उनका कभी अनुकरण न करो। समर्थ पुरुषों के विधि वाक्य ही मानने योग्य हैं। जिन बातों को करने की वे आज्ञा दें, उन्हें तो करना ही चाहिये और जो धर्मानुकूल आचरण करें, उनका अनुकरण भी करना चाहिये, किन्तु उनका कोई कार्य धर्म विरुद्ध-सा दिखाई दे और उसे करने की वे आज्ञा न दें, तो उसे कभी न करना चाहिये।

* सुख हमारे ही भीतर है, भीतर से हम जिसे सुख समझ लें वही सुख है, जिसे दुख समझ लें वही दुख है। बाहरी वस्तुओं में सुख नहीं है सुख तो प्रेम में ही है।

* संसार में अभिमान ही सबसे अधिक पतन का कारण है, जिसे जिस वस्तु के कारण अभिमान होगा उसका उसी के कारण अवश्य पतन होगा, यह निश्चित सिद्धान्त है। जो अपने धन के गर्व में दूसरों का अपमान करेगा, वह निर्धन होगा। जो अपनी प्रतिष्ठा के पीछे दूसरों का तिरस्कार करेगा, वह संसार में कभी-न-कभी प्रतिष्ठा से हीन होगा। जो सदाचार के अभिमान में सबको तुच्छ समझेगा वह अवश्य एक दिन व्यभिचारी होगा, जो त्याग के अभिमान में सबको तुच्छ समझेगा वह अवश्य एक दिन संग्रही होगा। यह निश्चित सिद्धान्त है, इसमें हेर-फेर नहीं हो सकता। संसार में जिसका भी पतन हुआ है, अभिमान से हुआ है, दर्प से हुआ है। जब तक त्याग, ग्रहण, सत्य, असत्य तथा धर्म अधर्म दोनों ही प्रकार के अभिमानों का त्याग न होगा, तब तक भगवान की प्राप्ति दुर्लभ है। संसार में जिसे भी गर्व हुआ उसी के गर्व को भगवान ने चूर्ण किया। जहाँ अभिमान आ जाता है, वहाँ भगवान नहीं रहते। अभिमान के भगवान शत्रु हैं। भक्त के हृदय में किसी प्रकार का जहाँ अभिमान आया कि वे उसे तुरन्त माया रचकर चूर्ण कर देते हैं। धन का, ऐश्वर्य का, सदाचार का, प्रभुत्व का तथा और भी कैसा अभिमान मन में आते ही मद मढ़ जाता है। भगवान देखते हैं, यह तो मेरे भक्त को गिरा देगा अत: वे उसके अभिमान को नष्ट कर देते हैं।

* किसी की विवशता देखकर उसकी हँसी न उड़ानी चाहिए। न उस पर व्यङ्ग करना चाहिये। जो ऐसा करता है, वह चाहें साक्षात् ब्रह्मा ही क्यों न हो, अपूज्य हो जाता है। संसार में उसकी कीर्ति नष्ट हो जाती है।

* मानव जीवन का लक्ष्य आध्यात्मिक उन्नतिमें ही निहित है।

* यह प्राणी परिवर्तन शील है, इसीलिए नित्य नूतन परिवर्तन चाहता है। एक-सी परिस्थिति में या तो पराधीन पशु रह सकता है या देहाभिमान शून्य ब्रह्मज्ञानी। नहीं तो प्राणी प्रति बात में प्रतिदिन नूतनता चाहता है। नया तो कुछ है ही नहीं, फिर भी नूतनता में उत्सुकता है, आकर्षण है।

* अपनी मनमानी और अपने मनचाही से काम करोगे तो नाकामयाबी ही हाथ लगेगी क्योंकि दुनिया आपकी गुलाम नहीं। दुनिया के हिसाब से चलकर ही इंसान अपनी मंजिल तक पहुंचता है।

* दुख इन्सान के मरने से नहीं होता बल्कि अपनी, मुहब्बत और नजदीक के रिश्तों के टूट जाने का होता है।

* कोई गुनाह यशकीर्ति के लिए मत करना क्योंकि यशकीर्ति खत्म हो जाएगी, गुनाह बाकी रह जाएगा और कोई नेकी तकलीफ की वजह से मत छोड़ना क्योंकि तकलीफ खत्म हो जाएगी नेकी बाकी रह जाएगी।

* दोस्ती, भरोसा, दिल, रिश्ता, वादा और प्यार कभी मत तोड़ना क्योंकि जब यह टूट जाते हैं तो आवाज नहीं आती लेकिन दर्द बहुत होता है।

* मनुष्य पूर्णता का प्रयासी है यह पूर्णता की ओर क्रमिक विकास और आत्मा की क्रमिक अभिव्यक्ति की धारा में निरन्तर अग्रसर होता है। प्रत्येक मानव अपने विकास के क्रम में निरन्तर आगे बढ़ना चाहता है।

* स्वार्थ और संकीर्णता के इस काल में मनुष्य स्तर पर स्व की संकीर्ण सीमा से परे हटना चाहिये और मनुष्य को सामाजिकता की ओर राष्ट्रीय स्तर पर अग्रसर होना चाहिये।

* जन सेवा का कार्य एक तपस्या है, यज्ञ है। जनहित के कार्यों में अपना योगदान देना भी बलिदान है और उसे इस यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

* खुद के फायदे के लिये दूसरों को परेशानी और मुसीबत में डालना अपराध है। इससे ईश्वर की नाराजगी बढ़ती है।

* जिंदगी के हर मोड़ पर भले आदमी की जरूरत होती है, यहाँ तक कि बुरे आदमी को भी भले आदमी ही अच्छे लगते हैं।

* प्रेम में मनुष्य स्वप्नों में खोया रहता है, किन्तु विवाह होते ही उसके नेत्र खुल जाते हैं।

* सलाह तो अनेक प्राप्त करते हैं, किन्तु उससे लाभ उठाना बुद्धिमानों को ही आता है।

* गुस्सा जो एक मिनट के लिए आता है पर पूरी जिंदगी को चौपट कर जाता है। दो लोगों के गुस्सा होने पर खून-खराबे का डर होता है, इसलिए गुस्सा होनेवाले के साथ तुम कभी क्रोध मत होना।

* मांग होना चाहिए। थोड़े से लोग होंगे जो किसी के दबाव और प्रलोभनों में नहीं आते होंगे। आज तो हालात यह है कि ऊँचे लोग- ऊँची बेईमानी। अगर हम इन तथाकथिक ऊँचे लोगों को सुधार दे तो समाज का कल्याण होगा।

* जब कोई बात आदमी अपने दिल में छुपाये रहता है, तो जबान से उसके इशारे मिल जाते हैं और चेहरे के हाव-भाव भी बहुत कुछ बता देते हैं।

* अगर तुम नीचेवाले पर अत्याचार कर रहे हो तो ऊपर वाला तुमको नहीं छोड़ेगा। इसलिए खुदा से डरकर रहने में ही फायदा है।

* बहुत हैरानी की बात है, एक आदमी क्रोध के बीज बोए और शांति पाना चाहे। एक आदमी घृणा के बीज बोए और प्रेम की फसल काटना चाहे। आदमी चारों तरफ शत्रुता फैलाए और चाहे कि सारे लोग उसके मित्र हो जाएं। एक आदमी सबकी तरफ गालियां फेंके और चाहे कि शुभाशीष सारे आकाश से उसके ऊपर बरसने लगें। यह असम्भव है। पर आदमी ऐसी ही असम्भव चाह करता है।

* प्रेम यह कभी नहीं मानता कि मैं पूरा हो गया। कभी इसमें पूर्णता आती नहीं, यह प्रेमका स्वरूप है। प्रेम का पथ बड़ा ही अटपटा है। प्रेम मनके अनुकूल मार्ग है संसार में ऐसा कोई नहीं है, जो प्रेम न चाहता हो, जिसके मन में प्रेम करने की अभिलाषा न हो। प्रेम कोई अपरिचित वस्तु नहीं है। प्रेम को सभी जानते हैं। पशु-पक्षी, कीट-पतंग प्रेम करना तो सभी

जानते हैं। अन्तर इतना ही है, एक नित्य से प्रेम एक अनित्य से प्रेम। एक बिम्ब से प्रेम एक प्रतिबिम्ब से प्रेम। एक सत्य से प्रेम एक असत्य से प्रेम। सत्य से किया प्रेम भी सत्य होता है और असत्य से किया हुआ प्रेम असत्य होता है। उसे ही मोह भी कहते हैं। सत्य से किया प्रेम मुक्ति का कारण है। असत्य से किया हुआ मोह बन्धन का कारण है। प्रेम करने से नहीं होता वह दैवेच्छा से, पूर्व-जन्मों के संस्कारों से हो जाता है। लोक में भी सभी से प्रेम थोड़ा ही हो जाता है। जिनसे मन मिल जाता है उन्हीं से प्रेम होता है। मन न मिलने पर पास में रहने पर भी प्रेम नहीं होता। जो प्रक्रिया प्रेम की संसार में है वही परमार्थ में भी है। अन्तर इतना ही है कि संसारी प्रेमास्पद नाशवान अनित्य है, परमार्थ पथ का प्रेमास्पद नित्य है, शाश्वत है। प्रेम किसके हृदय में उदय होगा, कब उदय होगा, किस कारण उदय होगा, कहाँ उदय होगा इन बातों का कोई नियम नहीं। प्रेम का स्वरूप है एक स्थिति में सन्तुष्ट न रहना। प्रेम नित्य नवीनता चाहता है। प्रेम प्रतिक्षण बढ़ने वाला होता है। प्रेम और मोह की यही पहिचान है। प्रेम तो बढ़ता ही जाता है। उसमें ऱ्हास कभी होता ही नहीं। उसकी कोई सीमा नहीं, निस्सीम है, उसका पार नहीं। बढ़ता ही जाता है, बढ़ता ही जाता है। बढ़ते रहना ही उसका स्वभाव है, धर्म है, प्रकृति है। प्रेम को सदा एकाङ्गी कहा है और अन्धा भी। प्रेम किसी गुणों की अपेक्षा नहीं रखता। जो गुणों की अपेक्षा रखकर प्रेम होता है उसका नाम है श्रद्धा। प्रेम में पग-पग पर गोपन होता है। प्रेम का गोपन असत्य नहीं। प्रेम में भावगोपन तो एक स्वाभाविक प्राचीन परिपाटी है।

हम किसी से प्रेम करते हैं, जब तक वह ढका रहता है, आँखों और संकेतों में ही होता है, तभी तक उसमें स्वारस्य अधिक रहता है। जहाँ वाणी से व्यक्त किया, तहाँ उसका वह स्वारस्य चला जाता है। प्रेम कहने की वस्तु नहीं वह अनुभव की है। प्रेम की वस्तु बनाई नहीं जाती। प्रेम तो बहुत बड़ी वस्तु है। स्वाभाविक प्रेम में अवगुण दिखायी ही नहीं देते। प्रेम की यह मोटी पहिचान है, जिसमें भी अवगुण दिखायी दे, उसमें प्रेम का अभाव ही समझना चाहिये। यह नहीं प्रेम में अवगुण भी गुण ही दिखायी देते हैं। प्रेममार्ग कितना अटपटा है, प्रेमी की सम्बन्धित कोई भी वस्तु मिल जाय, वही उद्दीपन हो जाती है। प्रेम जड़ चेतन सुन्दर असुन्दर नहीं देखता। उसे तो प्रियतम चाहिये और उनसे भी अधिक चाहिये उसकी प्यारी-प्यारी मधुर-मधुर स्मृति। प्रिय स्मृति जिससे निरन्तर बनी रहे, यही प्रेम पथ के पथिक की सबसे अन्तिम और एकमात्र इच्छा है। इसी के लिये उसके तन-मन की समस्त चेष्टायें हैं।

अपना प्रेमी जिससे प्रसन्न हो, जिससे उसका अधिक स्पर्श हो उसमें अधिकाधिक सुख होता है। उसके कुछ नियम हैं तो सही किन्तु वे नि:सीम हैं, अमर्यादित हैं। उनकी सीमा नहीं, मर्यादा नहीं, इयत्ता नहीं। जिससे रसवृद्धि हो वही वहाँ कर्त्तव्य है। दो चार दिन का प्रेम तो सभी, सबसे निभा लेते हैं किन्तु हर हमेशा का प्रेमनेह निभाना बड़ा कठिन माना गया है, उसे तो कोई-कोई ही भगवद् कृपा होने पर ही निभा पाते हैं।

परिवार के लोग प्रेमपूर्वक न रहें तो सम्मिलित परिवार रह सकता नहीं। संसार में जो कुछ हो रहा है, प्रेम के ही सम्बन्ध से हो रहा है। खाना पीना, मिलना, जुलना उठना बैठना, बोलना चालना, व्यापार, खेती-बारी, पठन-पाठन, यज्ञ अनुष्ठान, शासन सेवा तथा यावन्मात्र व्यवहार है प्रेम के ही सहारे चल रहा है। अन्तर इतना ही है कि देश, काल, पात्र, परिस्थिति तथा भावना के अनुसार प्रेम के भेद हो जाते हैं। उत्कृष्ट प्रेम, स्वार्थ जन्य प्रेम, निस्वार्थ प्रेम यही अन्तरहै। जो प्रेम प्रेम के लिये किया जाता है वही प्रेम है, वही नित्य है वही स्थाई है उसी को हरि, कृष्ण ईश्वर, परमात्मा कुछ कह लो। जो प्रेम संसारी स्वार्थ साधन के लिये हैं। उसे ही अज्ञान मोह, विषयानुराग, संसारी तथा नश्वर कहते हैं। जिनके हृदय में प्रेम के लिये प्रेम उत्पन्न हो गया है वे प्रेमी हैं ऐसे प्रेमियों के पादपद्मों की पराग से विश्व पावन बन जाता है। ऐसे प्रेम के साकार स्वरूप श्रीनंदनन्दन हैं और उनकी अनन्य उपासिका श्री ब्रजाङ्गनायें। संसार में गोपियों ने जैसा प्रेम का आदर्श उपस्थित

किया है वैसा और कहाँ मिलेगा। उन्होंने किसी संसारी व्यक्ति से प्रेम नहीं किया, परमात्मा से प्रेम किया सो भी जार भाव से। सभी प्राणी प्रेम के भूखे हैं। जीव प्रेम के लिये भटक रहा है। प्रेम पिपासा से पिपासित हुआ प्रेम पथ की खोज कर रहा है। संसार में सभी एक दूसरे से प्रेम करते हैं प्रेम के बिना व्यवहार चल ही नहीं सकता। जो लोग अपेक्षा रखकर प्यार करते हैं अर्थात् उससे हमारा यह काम निकल जाय, वह सोचे उससे मेरा यह काम निकल जाय। इस दृष्टि से जो परस्पर में प्यार करते हैं। वह केवल स्वार्थ का प्यार है। उसमें विशुद्ध धर्म नहीं है व्यापार है, आन्तरिक सौहार्द नहीं, काम चलाने का उपाय है। संसार में सर्वत्र ऐसा स्वार्थ जन्य प्रेम देखने को मिलता है। गाय भैंस जब तक दूध देती हैं, स्वामी उन्हें दूध के लोभ से खली भूसा बड़े प्रेम से खिलाता है। जहाँ दूध देना बन्द किया तहाँ ध्यान भी नहीं देता। बैल जब तक हृष्ट-पुष्ट हैं हल में अच्छी तरह से चलता है तब तक किसान उसे दाना भी देता है नमक भी देता है। जहाँ बूढ़ा हुआ, कि फिर सूखा भूसा भी नहीं डालता घर का नौकर जब तक काम करता है, जब तक सब उससे प्रेम करते हैं। जहाँ बूढ़ा हुआ उसे निकाल बाहर करते हैं। नौकर भी स्वार्थवश वेतन लोभ से काम करता है, जहाँ उसका वेतन न मिला, गृह स्वामी दरिद्र हुआ तहाँ वह दूसरे स्थान पर जाकर नौकरी कर लेता है।

प्रेम ऐकान्तिक विषय है। उसका प्राकट्य एकान्त में निर्जन में होता है। सबके सम्मुख प्रेम की बातें नहीं कही जातीं। प्रेम को शक्ति भर सबके सम्मुख छिपाया जाता है। निर्मुक्त प्रेम तो एकान्त में ही होता है, सबके सम्मुख शिष्टाचार का पालन होता है, जहाँ एकान्त स्थल हो, एक भी ऐसा व्यक्ति आस-पास न हो, जिससे तनिक भी संकोच या झिझक हो। वहाँ प्रेम सागर में ज्वार भाटे आते हैं। ऐसा तूफान उठता है कि उठता ही जाता है, उसमें निरन्तर अतृप्ति ही बनी रहती है। दोनों के अंगों में कोई भेद-भाव नहीं रहता। छोड़े बड़े का अन्तर नहीं रहता।

प्रेम से जिस वस्तु का सम्बन्ध है वही प्रेम को उद्दीप्त करता है। जिस स्थञ्जन में प्रेमी से समागम हुआ हो, जिस वस्तु का उसने व्यवहार किया हो, जिस पर वह बैठा हो तो वे सब उन बातों को सदा सजीव करती रहती है। प्रेम की पुकार बड़ी सबल होती है। वह व्यवधानों को मिटा देती है। प्रेम की मधुर-मधुर स्मृतियों में इतना भी बल न हो, तो प्रेम एक दूसरे की मधुमयी स्मृति से इतने सुखी क्यों हो। क्यों कोई किसी को स्मरण करे। कारण जितना ही प्रबल होगा उतनी ही एकाग्रता बढ़ेगी। फिर वियोगजन्य दुख विलीन हो जायगा। अखण्ड प्रेम की समाधि लगेगी। ध्यान धारणा और समाधि इन तीनों का ही नाम तो संयम है। भाव की समाधि में क्या सुख है कैसा स्वारस्य है, इसे भावुक भक्त ही जान सकते हैं। ताली एक हाथ से नहीं बजती प्रेम की अग्नि दो हृदयों में एक साथ उत्पन्न होती है और दोनों ओर सुलगती रहती है।

प्रेमीके पास तो हृदय है और शास्त्रज्ञानीके पास शब्दकी सम्पत्ति है। शब्द-सम्पत्तिकी यह अवस्था है कि एक विद्वान दूसरे विद्वानकी बात नहीं मानता। वे आपसमें मतभेदकी ही बात करते हैं। मतमेलकी बात तो करते ही नहीं। यदि कहीं पाँच-छ: विद्वान इकट्ठे हों तो उन सबके मत बिल्कुल अलग-अलग होंगे। वे कभी समन्वयकी बात नहीं करेंगे, आपसमें लड़ जायेंगे। विद्वान दोषज्ञके रूपमें ही प्रकट होते हैं गुणज्ञके रूपमें नहीं। वे शास्त्रोंकी खटपटमें ही लगे रह जाते हैं। उन्हें बताना तो यह चाहिए कि न्याय और सांख्य, सांख्य और योग तथा दूसरे शास्त्र किस-किस स्थानपर मिलते हैं एवं कहाँ-कहाँ नहीं मिलते। भेदवाली बात तो विद्वानोंकी जीभकी नोकपर रहती है, लेकिन उनमें मेल क्या है- यह वे नहीं जाते। शास्त्रार्थसे पाण्डित्य नहीं होता, पाण्डित्य तो सहृदयतासे होता है। विद्या वह है, जिससे मुक्ति मिले। विद्या वह है जिससे भगवानमें बुद्धि लगे। प्रेम के सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक स्थान पर ब्रह्म है और यदि वही ब्रह्म भक्तों के प्रेम में मिलकर स्वयं प्रेम स्वरूप बन जाये तो सरस हो जाता है। शुष्क नहीं रहता है। घी की तरह नीरस नहीं रहता है। उसमें प्रेम की चीनी मिल

जाती है। मिठास मिल जाती है। फिर वह आनन्दमय हो जाता है।

प्रेमियों और पागलों की एक-सी ही दशा होती है। कभी वे अप्रसन्न हो जायेंगे, फिर तनिक-सी ही देर में अनुनय विनय करने लगेंगे। कभी निराश हो जायँगे, फिर प्रियमिलन की आशा से आनन्दित हो उठेंगे। कभी किसी को दुतकार देंगे, फिर प्यार करने लगेंगे। उनमें दृढ़ता नहीं रहती उनका ध्यान अपने वचनों पर अपने विचारों पर तथा अपनी क्रियाओं पर नहीं रहता। उनकी तो समस्त चेष्टायें प्रियतम के ऊपर केन्द्रित हो जाती हैं। किसी तरह प्यारे प्रसन्न हो जायँ, कैसे भी उनका दर्शन हो जाय, यही उनका एकमात्र लक्ष्य है। उन्हें कोई छोटा कहे, मोटा कहे, खरा कहे, खोटा कहे, इस ओर वे ध्यान देते ही नहीं। उनका ध्यान तो निरन्तर प्यारे की मनमोहिनी मूरत में ही लगा रहता है।

प्रेम में उपदेश नहीं दिया जाता, प्रेम में साधन नहीं, अनुष्ठान नहीं कर्त्तव्य नहीं, नियम नहीं केवल एकमात्र आत्मसमर्पण है। अपने को सर्वात्मभाव से प्यारे को सौंप देना है। निरन्तर चित्त प्यारे का स्मरण करता रहे, कान प्यारे के ही सम्बन्ध में सुनते रहें, यही प्रेम की पराकाष्ठा है। जिस दशा में निरन्तर प्यारे की ही स्मृति बनी रहे, पलभर भी वह न बिसरे वह प्रेम की परमोत्कृष्ट दशा है। विरह में ऐसी ही दशा होती है।

* धन संपदाओं में विद्या उत्तम है, औषधियों में गिलोय, अंगों में उत्तम अंग सिर, सुखों में सबसे उत्तम सुख स्वास्थ्य, इन्द्रियों में नेत्र, तृप्तियों में आहार तृप्ति उत्तम है। स्त्रियों में माता का स्थान उत्तम और देवताओं में गुरू, संरक्षकों में पिता का स्थान उत्तम माना जाता है। सर्वोत्तम वही है जो सभी कार्यों और कर्त्तव्यों का पालन निष्काम भाव से करता है।

* कर्जा लेते समय राहत महसूस होती है और चुकाते समय कष्ट। इसी प्रकार दुष्ट के साथ मित्रता करना भी कष्टदायक होता है।

* जो लोग बिना आगा पीछा सोचे या देखे कोई भी काम करते हैं, उसका फल कष्टदायक होता है।

* जो लोग अपने काम के साथ दूसरों का काम संवारते हैं, वे सज्जन पुरुष होते हैं। जो अपने काम को भूल कर दूसरों की सेवा करते हैं वे महापुरुष होते हैं। जो अपना काम संवारने के लिए दूसरों का काम बिगाड़ते हैं, उनसे बढ़कर स्वार्थी कोई नहीं होता।

* जिसमें संतोष है, वह सुखी है, जो ऋणग्रस्त नहीं, वह प्रसन्न है।

* समाज में अपनी प्रतिष्ठा वे लोग खोते हैं जो दूसरों की उन्नति में प्रसन्न नहीं होते, बिना पूछे राय देते हैं और पीठ पीछे निंदा करते हैं। घर आए अतिथि का अपमान करते हैं

* हंसी मजाक में कही गई गलत बात कभी-कभी ऐसी चुभ जाती है कि अनर्थ हो जाता है, अत: हंसी मजाक करने से पहले विचार जरूर कर लें। जो आपात् काल में, अकाल पड़ने पर, रोगी होने पर काम आए, वही बन्धु है।

* जिस परिवार में कलह नहीं होती, पति पत्नी दो तन एक प्राण होकर रहते हैं, जहां से याचक खाली हाथ नहीं लौटता, वहां लक्ष्मी का वास होता है। जो लोग धैर्य और विवेक नहीं छोड़ते, जो दूसरों के दु:ख को अपना दु:ख समझते हैं और परोपकार के लिए सदा तैयार रहते हैं, ऐसे मनुष्य का जन्म लेना सफल हो जाता है।

* यदि आप सुखी रहना चाहते हैं तो सभी काम ऊपर वाले की इच्छा समझकर धर्म का पालन करते हुए करें। उसका जो फल होगा, वो भला ही होगा और उसे स्वीकार करें तो आपसे सुखी और कोई नहीं होगा।

* जीवन संघर्ष का नाम है और संघर्ष ही जीवन है, फिर संघर्ष से घबराना कैसा।

* शत्रु, रोग और ऋण, इनको कभी छोटा नहीं समझना चाहिए। इनसे जल्दी से जल्दी छुटकारा पा लेना ही समझदारी है।

* संसार में कोई पदार्थ बुरा नहीं है। उसका उपयोग ही उसे बुरा या भला बनाता है।

❋ सफलता और असफलता जीवन के दो पहलू हैं। सफलता मिलने पर खुश जरूर होना चाहिए।

❋ आगे बढ़ने का प्रयास करते रहना चाहिए। असफलता मिलने पर निराश न होकर उसे चुनौती समझ दुगुनु उत्साह से जुट जाना चाहिए।

❋ जो लोग धर्म को त्याग देते हैं, धर्म उन्हें त्याग देता है। जो समय नष्ट करते हैं, उन्हें समय नष्ट कर देता है, इसलिए दोनों का पालन करना मनुष्य का कर्त्तव्य है।

❋ सबसे मुश्किल काम है, खुद को धोखा न देना

❋ आपकी गलतियां कबूल करने का तभी कोई अर्थ है, जब वह आगे कभी दुहराई न जाए।

❋ आपको नापसंद करने वाले शख्स से मेलजोल बढ़ाने के लिए आपको मिलनसार होने के साथ-साथ व्यवहारकुशल भी होना पड़ेगा।

❋ उन सभी चीजों को जो कर्मकांड हो, को पूरी तरह छोड़ना होगा, क्योंकि वे जल्द ही सड़ जाती हैं।

❋ हमारी देखने की दृष्टि चीजों को हमारे लिए प्रिय और इस तरह कीमती भी बनाता है।

❋ प्रेम इंसान का सबसे बड़ा सुख है।

❋ चतुराई की ऊसर पहाड़ियों पर रुक जाने की बजाय मूर्खता की हरी-भरी घाटियों में विचरण करना कहीं अच्छा हैं।

❋ अगर सपने हमारी नींद की सुरक्षा करते हैं तो वही सपने कभी-कभी हमारी नींद को हराम भी कर देते हैं।

❋ प्रतिभा का पैमाना तो चरित्र है, हालांकि चरित्र अपने आपमें प्रतिभा नहीं बन जाता।

❋ ज्ञानी इंसान के लिए झूठ बोलना बेहद मुश्किल हो जाता है।

❋ शक्ति और संपत्ति एक ही चीज नहीं है। भले ही संपत्ति हमें शक्ति भी दिलाती हो।

❋ छुट्टी का दिन केवल आराम और मनोरंजन का दिन नहीं होता। इस दिन हमें अपने कार्यों की गहरी समीक्षा करनी चाहिए।

❋ सबसे उदास लोग होते हैं, खुशी का ढोल पीटने वाले

❋ जब आप कोई बात दिल से कहते हैं तो दिमाग को ऐतराज करने में हिचक होती है।

❋ प्यार एक किस्म का इंतजार है, जब मिलता है तो लगता है अपने ही खो चुके अधूरे हिस्से को पाया हो।

❋ सत्ता में बैठे लोगों को भूलने की आदत होती है। उसके खिलाफ आदमी की लड़ाई इसीलिए भूल जाने की आदत के खिलाफ याद दिलाते रहने की जिद है।

❋ हमें अपने आनेवाले कल को यादों के बोझ से दबने से बचाते रहना चाहिए।

❋ शर्मिंदगी की सबसे बड़ी वजह यह नहीं कि हमने कोई गलती की है। वह उस अपमान से पैदा होती है, जो दूसरे करने से नहीं चूकते।

❋ उस जीवन का कोई मतलब नहीं जो जीवन कैसा हो इसकी अभ्यास बनकर रह जाए।

❋ खुद को दरकिनार कर दिए जाने के लिए हम अक्सर दूसरों को कोसते हैं। सच यह है कि उसके जिम्मेदार हम खुद होते हैं।

❋ हमें अपनी उम्र का खयाल कुछ खास लम्हों में ही आता है, ज्यादातर वक्त हम उम्र से बाहर जीते हैं।

❋ एक ऐसी दुनिया में रहना जहां किसी को कोई माफी न मिले, नरक में बसर करने जैसा है।

❋ सबसे बचकाने लगनेवाले सवाल ही सबसे संजीदा सवाल होते हैं।

* मेहनत नहीं करनेवालों की जिंदगी परेशानियों से भरी रहती है और मेहनत करनेवालों की घर और बाहर दोनों जगह इज्जत बढ़ती है।

* संसार रूपी विष-वृक्ष के दो फल अमृततुल्य हैं- काव्यामृत के रस का आस्वादन और सज्जनों की संगति।

* अपने पिता और अपनी माता का आदर और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना चाहिए।

* दरिद्रता प्रकट करना दरिद्र होने से अधिक दुखदायी है।

* दिलचस्पी ही जीवन है और इसका अभाव मृत्यु।

* समझदार मनुष्य वर्तमान की घटनाओं को पिछली घटनाओं के आधार पर आंकते हैं।

* वास्तव में वे ही लोग श्रेष्ठ हैं जिनके हृदय में हमेशा दया और धर्म बसता है, जो अमृतवाणी बोलते हैं और जिनके नेत्र नम्रतावश नीचे रहते हैं।

* सत्पुरुषों की संपत्ति का सार्थक उपयोग आपत्ति में पड़े हुए मनुष्यों की पीड़ा हर लेने में ही है।

* जिस वृक्ष को आकाश की ऊंचाई छूनी हो, उसे अपनी जड़ें पाताल की गहराई तक भेजनी पड़ती हैं। अगर वृक्ष डरता हो कि अंधेरी जमीन में कहां जड़ों को भेजूं। तो फिर उसकी शाखाएं भी आकाश में न जा सकेंगी। जितनी ऊंचाई वृक्ष की ऊपर होती है, उतनी नीचाई वृक्ष की नीचे होती है, समान होता है। जड़ें उतनी ही गहरी जानी जरूरी हैं, जितना वृक्ष को ऊपर उठना हो, जो वृक्ष चार-चार सौ फीट ऊपर उठते हैं आकाश को छूने की आकांक्षा से, वे चार सौ फीट नीचे जमीन में अपनी जड़ों को भी भेजते हैं।

* जिसकी अभिलाषाएं नहीं मरतीं, वह मरकर भी भटकता है। अभिलाषाओं से मुक्ति ही प्रभु में विलय है।

* जिस प्रकार फूल के रंग या गंध को बिना हानि पहुंचाए भौंरा रस को लेकर चल देता है, उसी प्रकार मुनि ग्राम में विचरण करे।

* संपन्न होने पर भी जो असंतुष्ट रहता है, वह सदा निर्धन है। धन से रहित होने पर भी जो संतुष्ट रहता है, वह सदा धनी है।

* वह विजय महान होती है जो बिना रक्तपात के मिलती है।

* पुरुष अहंकार से मरे जाते हैं और स्त्रियां ईर्ष्या से।

* अपना सुख अगर आस-पास सभी का सुख बनता हो तो ही आनंद है। उसे फिर कोई भी छीन नहीं सकता।

* जिंदगी में आपको अधिकांश समय अपने साथ ही बिताना होता है, इसलिए खुद को जितना संभव हो उतना दिलचस्प बनाएं।

* कभी किसी का हक मत छिनो, क्योंकि इसकी क्षमा ईश्वर के यहाँ भी नहीं है।

* कुछ खराबियां आदमी के दिल और दिमाग में है, कुछ उसके बर्ताव में हैं। बुरा बर्ताव हमेशा कष्टदायक ही होता है।

* अपनी सख्त वाणी से लोगों पर हुकूमत करने का प्रयत्न मत करो, क्योंकि वाणी का जोर ताकत नहीं कमजोरी है।

* शर्मोहया बड़ी जरूरी चीज है, लेकिन उम्र के चौथेपन में ऐसा लगने लगता है कि यह भी और दूसरी कई बुराइयों जैसी ही है। हम शर्म या संकोच को अपने दैनिक जीवन में कुछ ज्यादा ही महत्व देते हैं। ऐसी आदतों से हमें छुटकारा पाने की कोशिश करनी चाहिए।

* दुख जिनसे उबर पाना हमारे लिए मुमकिन नहीं होता, वे हमारे सपने में भी दिल पर बूंद-बूंद गिरते और चोट करते हैं।

* कानून का पहला दंड यह है कि अपने हृदय के फैसले में वह किसी दोषी व्यक्ति को बेदाग न छूट जाने दे। अपनी

जीविका के बारे में जो फैसला करते हैं, अंतत: वह आपके जीवन के बारे में लिया गया निर्णय साबित होता है। आपका फैसला सिर्फ यहीं तक सीमित होना चाहिए कि कोई व्यक्ति दोषी है या निर्दोष है। किसी के भोलेपन का पता लगाना आपका काम नहीं है। एक बुद्धिमान व्यक्ति का फैसला सभी मूर्खों की राय पर भारी पड़ता है।

* बहुत सी ऐसी बदनामियां हैं, जिनके समक्ष भोलापन भी साहस छोड़ देता है।

* अपने अहंकार पर विजय पाना ही प्रभु की सेवा है।

* प्रेम करनेवाला पड़ोसी दूर रहनेवाले भाई से कहीं उत्तम है। प्रेम के कारण कड़वी वस्तुएं मीठी हो जाती हैं। प्रेम के स्वभाव के कारण तांबा भी सोना बन जाता है। मनुष्य के अस्तित्व का पवित्र और संतुष्टिपूर्ण जवाब सिर्फ और सिर्फ प्यार है। स्वार्थी आदमी दूसरों से प्यार करने लायक नहीं होता लेकिन वह खुद से भी प्यार करने लायक नहीं होता।

* प्राप्त हुए धन का उपयोग करने में दो भूलें हुआ करती हैं, अपात्र को धन देना और सुपात्र को धन न देना।

* वैरी भी अद्‌भुत कार्य करने पर प्रशंसा के पात्र बन जाते हैं।

* जैसे-जैसे हम बाह्य रूपों की विविधता में उलझते जाते हैं, वैसे-वैसे उनके मूलगत जीवन को भूलते जाते हैं।

* सेना आदमियों को कानून और दर्शन से भी ज्यादा तेजी से बूढ़ा बना देती है। यह उन्हें कहीं ज्यादा आसानी से ऐसे कीटाणुओं के संपर्क में ला देती है, जो उन्हें कमजोर और बर्बाद कर देते हैं, और उससे भी ज्यादा संपूर्णता में उन्हें उन विचारों से अलग रखती है, जो मनुष्यों को प्रेरणा देते हैं और उन्हें संरक्षित रखते हैं। संस्कृतिहीन सेना निर्बुद्धि होती है और निर्बुद्धि सेना कभी दुश्मन को परास्त नहीं कर सकती। ऐसी सेना से ज्यादा डरो जो सौ भेड़ों की हो, लेकिन जिसका नेतृत्व एक शेर कर रहा हो, बनिस्बत उसके, जो सौ शेरों वाली सेना हो, पर जिसका नेतृत्व एक भेड़ कर रही हो। विजेता सेना पहले जीतती है, फिर युद्ध खोजती है, पराजित सेना पहले युद्ध करती है, फिर विजय खोजती है।

* अपरिपक्व प्यार कहती है कि मैं तुमसे प्यार करता हूं क्योंकि मुझे तुम्हारी जरूरत है। परिपक्व प्यार कहता है कि मुझे तुम्हारी जरूरत है क्योंकि मैं तुमसे प्यार करता हूं।

* ऐश्वर्य का भूषण सज्जनता, शूरता का मित-भाषण, ज्ञान की शांति, कुल का भूषण विनय, धन का उचित व्यय, तप का अक्रोध, समर्थ का क्षमा और धर्म का भूषण निश्छलता है। यह तो सबका पृथक-पृथक हुआ, परंतु सबसे बढ़कर सबका भूषण शील है।

* प्रेम की रोटियों में अमृत रहता है, चाहे वह गेहूं की हों या बाजरे की।

* मन का दुख मिट जाने पर शरीर का दुख भी मिट जाता है।

* जो तुम देते हो वही तुम पर लौटकर आता है और कई गुना होकर लौटता है। हर किसान यह नियम जानता है, मानता है और इस पर काम करता है। वह खेत में अच्छे व बेहतरीन बीज बोता और परिणाम देखता है। फल आने का इंतजार करता है। संसार तो एक प्रतिध्वनि मात्र है जो आज संसार को दोगे, संसार वही आपको वापिस लौटा देगा। फूल-फूल ले आते हैं और कांटे, कांटे। बटोरने से काम नहीं चलेगा। जो आपको चाहिए वह बांटना शुरू कर दीजिए।

* कष्ट हृदय की कसौटी है। कृतज्ञता हृदय की स्मृति है। कृतज्ञता एक कर्त्तव्य है जिसे लौटाना चाहिए किंतु जिसे पाने का किसी को अधिकार नहीं है।

* जिस गुण का दूसरे लोग वर्णन करते हैं उससे निर्गुण भी गुणवान होता है।

* महान की उपासना करना स्वयं महान होने के बराबर है।

❋ गुण ही गुण को परखते हैं जैसे हीरे की परख जौहरी ही करते हैं।

❋ एक मूर्ख हर स्थिति में अपनी तारीफ के लिए खुद से बड़ा मूर्ख ढूंढ लेता है।

❋ कीर्ति वीरोचित कार्यों की सुगंध है।

❋ मनुष्य के संपूर्ण कार्य उसकी इच्छा के प्रतिबिंब होते हैं।

❋ अस्तित्व सिर्फ वर्तमान का होता है और जिंदगी भी सिर्फ वर्तमान में ही होती है। वर्तमान यानी अभी के बारे में सोचो। इससे तुम अपनी नकारात्मक सोच के असर से बच सकते हो। वर्तमान से भागने की कोशिश मत करो। सच का सामना करो। वर्तमान का सामना करने से ही सूझ-बूझ के साथ हकीकत का सामना किया जा सकता है।

❋ अपनी नकारात्मक सोच के कारण हम अपने आनेवाले समय को लेकर डरने लगते है।

❋ एक मूर्ख व्यक्ति एक महिला से यही कहेगा कि बातें बंद करो। लेकिन उसकी जगह एक बुद्धिमान व्यक्ति कहेगा कि आपका चेहरा कितना सुंदर दिखता है, जब आपके होंठ बंद रहते हैं। मूर्खता दरअसल बदमाशी की सगी बहन है।

❋ युद्धों में कुल जितनी जानें गई हैं, उससे कहीं ज्यादा जिंदगियां चिकित्सा शास्त्र और कृषि विज्ञान में हुई नई खोजों से बचाई गई हैं।

❋ जो ईश्वर घाव भेजता है, वही उसका इलाज भी भेजता है। ईश्वर उपचार करता है और चिकित्सक फीस लेता है।

❋ ऐसे चिकित्सक के पास कभी न जाओ, जिसके दफ्तर के पौधे मर चुके हों।

❋ ज्ञान इस्तेमाल न किया जाए तो ज्ञान का कोई फायदा नहीं है।

❋ अच्छी परवरिश यह नहीं है कि आप मेज पर सॉस न गिराएं, बल्कि यह है कि किसी दूसरे के गिराने पर आप उस पर ध्यान न दें।

❋ चिकित्सक और वकील एक जैसे ही होते हैं। दोनों ही आपको लूटते हैं। फर्क बस यह है कि चिकित्सक लूटने के साथ-साथ आपकी जान ले सकते हैं।

❋ हमें यह सीखना चाहिए कि हम बिना पत्तों के पेड़ों की भी तारीफ कर सकें और उन पर लगनेवाले फलों का इंतजार कर सकें।

❋ विश्वास अंदर से आता है। दरअसल, यह एक जन्मजात काबिलियत है।

❋ प्यार, दोस्ती और इज्जत लोगों को उस तरह नहीं एकजुट कर सकते, जिस तरह किसी चीज के लिए नफरत।

❋ शराब की तरह दौलत भी लोगों को सनकी बना देती है।

❋ जो समझ न आए, उसे समझने का ढोंग नहीं करना चाहिए क्योंकि सिर्फ मूर्ख और कपटी ही सब कुछ जानते हैं और समझते कुछ नहीं हैं।

❋ जो जितना ज्यादा परिष्कृत होगा, वह उतना ही दुखी होगा।

❋ जिसके पास ज्यादा है, वह रईस नहीं है, बल्कि रईस वह है, जो ज्यादा होता है। असली समृद्ध वह है, जो उससे ज्यादा नहीं चाहता, जो उसके पास है।

❋ लालच एक ऐसा गड्ढा है, जिसका कोई तला नहीं होता।

❋ साधारण आदमी को अगर असाधारण शक्तियां मिल जाएं तो वह समाज के लिए सबसे बड़ा खतरा होता है।

❋ नाकाम होने की आजादी के बिना आजादी के कोई मायने नहीं हैं।

❋ जब तक इंसान का पूरी तरह जन्म होता है, उससे पहले ही उसकी मृत्यु हो जाती है।

❋ आदमी का उद्देश्य अपनी क्षमताओं का पूरा इस्तेमाल करना होना चाहिए। उसकी कोशिशों का सबसे अच्छा उत्पाद उसका अपना व्यकित्व होता है।

❋ सामाजिक सीढ़ी जैसे-जैसे ऊपर जाती है, क्रूरता मोटा मुखौटा पहनती जाती है।

❋ आशा का मतलब हर पल उसके लिए तैयार रहना है, जिसका अभी जन्म भी नहीं हुआ है और अगर आपकी जिंदगी में जन्म न हो, तो भी निराश न हों।

❋ ईमान ईश्वर की देन है। किसी के दिल में ईमान को डाला नहीं जाता, वह तो अपने-आप पैदा होता है।

❋ बुद्धिमानी तीन तरीकों से सीख सकते हैं- पहला, चीजों के बारे में अपनी राय जाहिर करके, जो कि सबसे अच्छा है; दूसरा बुद्धिमान लोगों की नकल करके, जो कि सबसे आसान है; और तीसरा, अपने तजुर्बे से, जो कि सबसे तीखा और कड़वाहट भरा है।

❋ एक अच्छा सवाल आधी अक्लमंदी के बराबर है। अक्ल के दांत इंसान में तब उगने शुरू होते हैं, जब पहली बार वह इतना बड़ा कौर काटता है कि उसे चबाना उसके बूते से बाहर हो। जिसे हम दुनियादारी वाली अक्लमंदी कहते हैं, उसका हर हिस्सा कभी न कभी ऐसे बुद्धिमानों का मत था, जिसे बोलने में भी लोग थर्राते थे।

❋ चतुराई का अर्थ बुद्धिमानी नहीं होता।

❋ मेघ वर्षा करते समय यह नहीं देखता कि भूमि उपजाऊ है या ऊसर। वह दोनों को समान रूप से सींचता है। गंगा का पवित्र जल उत्तम और अधम का विचार किए बिना सबकी प्यास बुझाता है।

❋ वैरी भी अद्भुत कार्य करने पर प्रशंसा के पात्र बन जाते हैं।

❋ आज हर व्यक्ति सिर्फ अपनी सफलता की बात करना चाहता है। वह यह साबित करने के लिए उतावला रहता है कि वह भी कुछ खास है। दरअसल इसके पीछे प्रतिस्पर्द्धा का भाव काम कर रहा होता है। लोगों को यह डर सताता रहता है कि कहीं वे चुनौती में पीछे न रह जाएं। इस कारण वे अपनी एक असाधारण प्रतिबिंब बनाने की कोशिश करते रहते हैं। लेकिन इस कोशिश में कई बार वे हास्यास्पद भी हो जाते हैं। वे ऐसे दावे कर बैठते हैं जिन पर यकीन करना मुश्किल होता है। इस खेल में हर व्यक्ति एक नकली और असहज वातावरण रच रहा होता है। क्यों न अपनी कमजोरियों पर बात करनी चाहिए, अपनी शिकस्त की चर्चा की जाए जिससे हम ज्यादा ईमानदार दिखेंगे। हमारी यह सहजता सामनेवाले को भी अपने खोल से बाहर आने को प्रेरित करे। तब समाज में कहीं ज्यादा सार्थक संवाद हो सकेगा और जीवंत रिश्ता बन सकेगा।

❋ सच और सच- हमें समझ में नहीं आता कि आखिर अपनी-अपनी बात पर लोग इस तरह क्यों अड़ जाते हैं। ऐसी स्थिति प्राय: अपने घर में ही देखने को मिलती है। हम माता-पिता को भी किसी बिंदु पर एक-दूसरे से असहमत होते देखते हैं। तटस्थ होकर सोचने पर लगता है कि दोनों अपनी-अपनी बात पर सही हैं। सहमति-असहमति में हमेशा एक पक्ष पूरी तरह सही और दूसरा पक्ष पूरी तरह गलत नहीं होता। चीजें सही-गलत या काला और सफेद में बंटी नहीं होतीं। दरअसल विवाद सच और सच के बीच ही हो रहा होता है। एक सच दूसरे सच से टकरा रहा होता है या कई सच एक-दूसरे से उलझे होते हैं। इसमें किसका पलड़ा कब भारी हो जाएगा, यह कई कारकों पर निर्भर करता है। तालमेल, सामंजस्य, सौहार्द वगैरह की अवधारणाएं इसलिए हमें कई सच के साथ जीना पड़ता है।

❋ दुनिया में करने और नहीं करने लायक कार्यों का जो विभाजन समाज ने अपने आप किया, इस बारे में उससे आगे

बढ़कर कुछ बातें संतों और दार्शनिकों ने की हैं। कहीं-कहीं उन्होंने करने से ज्यादा महत्वपूर्ण और गौरतलब नहीं करने को ठहराया है। मसलन आपको क्रोध नहीं करना चाहिए, दूसरों की संपत्ति पर नजर नहीं डालनी चाहिए आदि। पर इसी के साथ यह बात भी सही पाई गई कि दुनिया का जितना भी विकास हुआ है, वह करने से हुआ है। सेब पेड़ से गिरता और न्यूटन उस पर विचार करके कुछ न करने का फैसला करते तो दुनिया आज वहां न होती, जहां वह है। पर इस करने से इतनी महान तब्दीलियां हुईं, जो न करने से हरगिज न होतीं। पर आज दुनिया जहां हैं वहां करने से ज्यादा उपयोगिता नहीं करने की जान पड़ती है। उकसावे के कोशिशों के बाद भी कोई ताकतवर देश युद्ध न छेड़े, तो यह कुछ भी करने से हजार गुना श्रेष्ठ बात है। जरूरत इस बात की नहीं है कि अब इस नहीं करने को उतने ही सम्मान और पुरस्कार लायक माना जाए, जितना अब तक करने को माना गया है?

* हम कहीं दूर की यात्रा से लौटते हैं, तो वहां की कई चीजें हमारी स्मृति में दर्ज हो जाती हैं और लंबे समय तक बनी रहती हैं। कुछ इस तरह कि हम उनके बारे में बहुत कुछ बता सकें, लिख सकें। हम कहीं यात्रा करनेवाले इसी लक्ष्य के साथ जाते हैं कि वहां की चीजों को जानें-पहचानें। लेकिन अपने परिवेश में हम अनेक तरह की बातों में मशगूल रहते हैं कि हमें पता भी नहीं चल पाता कि हमारे इर्द-गिर्द क्या है। कैसी विडंबना है कि हम दूर की चीजों को तो जानते हैं पर नजदीक की चीजों से अनजान रहते हैं।

* मनुष्य के श्रम की सीमा है, इसीलिए यन्त्र जब तक सम्पत्ति पैदा न करे तब तक कोई मुल्क अमीर नहीं हो सकता।

* एक निर्दोष चित्त सदैव खुला होता है।

* संपूर्ण विश्व में राजनीति, धर्म और समाज तीनों के नाम पर सैकड़ों सालों से भयानक अत्याचार, शोषण, छल-कपट व बेइमानियां होती रही हैं। इन सबके खिलाफ हर युग में कोई न कोई संबुद्ध, प्रबुद्ध, प्रज्ञावान महापुरुष उठकर खड़ा होता रहा है। सत्य कभी आसान नहीं रहा, उससे लड़ने असत्य हजार हथियारों के साथ खड़ा हुआ है।

* हमारा संकल्प होना चाहिए कि हम अंधेरों के शहर में रोशनी पैदा करेंगे, हम चेहरे पर मुस्कुराहट लायेंगे और कोई जरूरतमंद हाथ फैलाए इससे पहले हमारे हाथ उसके सहयोग के लिए उठ जायेंगे। आज सब ओर एक आदर्श समाज के निर्माण की बात कही जा रही है, लेकिन इसके लिए हर चेहरे पर मुस्कुराहट लाना जरूरी है। आज हमारे चेहरे से मुस्कुराहट ऐसे गायब हो गई है जैसे चुनाव जीतने के बाद नेता गायब हो जाता है।

* कोई समाज तभी समृद्ध होता है जब वह जीवन को स्वीकार कर लेता है। जीवन के बहुरंगी रूप को। वस्त्र भी सुंदर है, देह भी सुंदर है, देह का स्वास्थ्य भी सुंदर है, देह का जीवन भी सुंदर है। भोजन में भी रस है, संगीत में भी, साहित्य में भी। जब जीवन सब रंगों से भरा होता है तो जीवन समृद्ध होता है।

* बंधन है क्या? नीचाइयों के बंधन हैं। जंजीरें हैं क्या? नीचाइयों की जंजीरें हैं। मुक्ति है क्या? ऊंचाई पर यात्रा ऊंचे पर यात्रा, ऊंचे से ऊँचे उठ जाने की, रोज स्वयं को अतिक्रमण कर जाने की, रोज स्वयं को अतिक्रमण कर जाने की, रोज स्वयं को ऊंचाई की यात्रा पर जाने की, ऊंचाई की यात्रा विद्या है।

* मंदिर जरूर जाओ। लेकिन, ईंट-चूने के ढांचों में मंदिर नहीं है। मंदिर है मन में, मंदिर है भीतर, अपने भीतर जाना मंदिर में जाना है।

* प्रार्थनागृह का धर्म से कोई संबंध नहीं है। किसी पूजा किसी अर्चना का धर्म से नाता नहीं है। सभी मूर्तियां पत्थर हैं और सभी प्रार्थनाएं दीवारों से की गई बातचीत से ज्यादा कुछ नहीं है।

* कोई इस झूठ में जीता है कि धन मिल जाएगा तो बड़ा सुख होगा, जबकि यह झूठ है। किसी को कभी धन मिलने से सुख नहीं हुआ, मगर फिर भी यह झूठ चलता है। पद मिल जाएगा तो सुख होगा, मगर यह भी झूठ है। पूरी मनुष्य जाति का इतिहास निरपवाद रूप से सिद्ध करता है कि पद मिलने से किसी को कभी सुख नहीं मिला। नहीं तो गौतम बुद्ध सिंहासन छोड़कर क्यों जाते? नहीं तो भगवान महावीर राजमहल छोड़कर जंगलों में क्यों भटकते? अगर पद में सुख होता, तो सिकंदर, नेपोलियन और चंगेजखां, नादिरशाह और स्टेलिन आदि सारे के सारे सुखी प्राणी हो गये होते, मगर ऐसा नहीं हुआ। पद से कहीं कोई सुख नहीं मिलता, मगर फिर भी झूठ जारी है, झूठ हमारे रग-रग में फैल गया है। आदमी की भीड़ झूठ से ही जीती है।

* लुकमान से किसी ने पूछा था, ऐसी कौन सी चीज है दुनिया में जिसे सभी देते हैं और कोई भी नहीं लेता? लुकमान ने उत्तर दिया, सलाह। सलाह दी खूब जाती है, लेता कोई भी नहीं।

* हमेशा अपने दोस्तों और परिवार के नजदीक रहें, क्योंकि जब आप बीमार होंगे तो परिवार के लोग और दोस्त ही आपके काम आएंगे।

* क्या तुमने कभी ख्याल किया कि चित्रकार, कवि, मूर्तिकार, नर्तक यौन का दमन किए हुए लोग नहीं हैं। दरअसल, वे कुछ ज्यादा ही यौन से प्रभावित होते हैं, वे बहुत अधिक प्रेम करते हैं। वे बहुत से लोगों से प्रेम करते हैं। शायद उनके प्रेम को चुकाने के लिए एक व्यक्ति काफी नहीं होता। सदियों-सदियों से पुरोहितों ने उनकी निंदा की है, ये कवि, चित्रकार, मूर्तिकार, संगीतज्ञ अच्छे लोग नहीं हैं, ऐसा ही पुरोहितों ने कहा है। मगर सच ये है कि यही वे लोग हैं जिन्होंने मानवता को सुंदर बनाया है, जिन्होंने इस दुनिया को आनंद के फूलों से, संगीत के फूलों से और सुंदर नृत्यों से भर दिया है। जीवन के आधारभूत नियमों में से एक यह भी है कि जब तक तुम सृजन नहीं करते, तब तक आप अपनी पूर्ण गरिमा को उपलब्ध नहीं होते।

* भयभीत आदमी हमेशा कल की तरफ देखता है, अभय से भरा आदमी आज को जीता है। भयभीत आदमी के कारण- कर्म का पूरा सिद्धांत विकृत हो गया। कर्म का सिद्धांत सीधा साफ है कि तुम करो, तत्क्षण फल है। एक क्षण का भी फासला नहीं है- कर्म में और फल में। तुम दान करोगे और अभी आनंद से भर जाओगे। चोरी करोगे, अभी पीड़ा पा लोगे। क्रोध करोगे, अभी जलोगे, झुलसोगे। ईर्ष्या से भर जाओगे, अभी जहर तुम्हारे भीतर फैल जाएगा। तुम्हारा जीवन एक फफोले, फोड़े की तरह हो जाएगा। तुम मवाद से भर जाओगे अभी।

* वासनाग्रस्त आदमी और संयमी आदमी में बुनियादी भेद है। वासनाग्रस्त हजार दिशाओं में एक साथ दौड़ता है। इसलिए वासनाग्रस्त धीरे-धीरे विक्षिप्त हो जाता है। जिसके जीवन में दिशा न हो वह पागल हो ही जाएगा, क्योंकि वह हजार काम साथ-साथ करना चाहता है। इधर बैठकर भोजन करता है, वह भी पूरा नहीं कर पाता, तब इसके मन में दुकान चलती रहती है। दुकान पर बैठ कर वह हजार दूसरे काम मन में करता रहता है। उसके हजार हाथ होते हैं, हजार पैर होते हैं, हजार शरीर होते हैं। तुम उसकी असली स्थिति देख पाते तो देखते वह हजार तरफ एक साथ चला गया है। मगर दोबारा उन हजार आदमियों का कभी मिलना भी नहीं होता।

* पति-पत्नी को अगर कोई तनाव नहीं होता तो समस्याओं का भी ऐसा बहाव नहीं होता प्यार की आंच को बचाना भी मुश्किल था अगर उनके भीतर वो लगाव नहीं होता।

* दुनिया वही है, दुनिया हमेशा वही है, सिर्फ आदमी बदल जाते हैं और जब आदमी बदल जाता है तो दुनिया बदल जाती है।

* सातों रंग हमारे हैं। सातों स्वर हमारे हैं। इस पृथ्वी पर जितने भी बुद्धपुरुष हुए, सब हमारे हैं और सारे मंदिर-मस्जिद

हमारे हैं। ऐसा कोई कानून बने किसी मंदिर-मस्जिद में किसी के लिए कोई रोक-टोक न हो। अगर हिंदू किसी दिन ईसाई के चर्च में जाना चाहे तो रोका न जा सके, क्योंकि हिंदू के ईसा उतने ही हैं जितने कि राम, जितने कि कृष्ण। ऐसा कुछ नियम बने, वह धर्म-स्वातंत्र्य का विधेयक होगा, कि जिसमें कोई ईसाई अगर जैन-मंदिर में जाकर ध्यान करना चाहे तो कोई रुकावट न डाली जा सके।

✻ यह सारी पृथ्वी इकट्ठी है, कहीं से भी बँटी नहीं है। कहीं कोई दरार नहीं है। जहां एक देश दूसरे देश से अलग हो जाता हो? सब संयुक्त हैं। पृथ्वी ही संयुक्त नहीं है, चांद-तारे भी संयुक्त हैं। यह सारा अस्तित्व ही इकट्ठा है।

✻ सलाहें एक-दूसरे का अपमान हैं, सलाह का मतलब यह होता है कि मैं जानता हूं, तुम नहीं जानते; मैं ज्ञानी हूं, तुम अज्ञानी हो।

✻ लोग खिलौनों से ही खेलते रहते हैं, जीवनभर, बचपन में छोटी सी कार से खेलते है, चाबी भरकर चलाते हैं, फिर बड़े हो जाते हैं, तो बड़ी कार पर खेल जारी रहता है। बचपन में छोटे गुड्डे-गुड़ियों की शादी करते हैं, बड़े हो जाते हैं, तो रामलीला करते रहते हैं, राम-सीता की बारात निकालते हैं, खेल जारी रहता है। छोटे बच्चे होते हैं तो कंकड़-पत्थर इकट्ठे करते हैं, बड़े हो जाते हैं, तो हीरे-जवाहरात इकट्ठे करते हैं, छोटे बच्चे धूम्रपान सिगरेट व माचिस के डिब्बे या टिकटें इकट्ठी करते हैं, बड़े हो गए तो नोट इकट्ठे करते हैं, मामला एक ही है, सारा संसार खेल खिलौनों का है।

✻ सैनिकों को हम ढीले वस्त्र नहीं पहनाते; दुनिया में कोई जाति नहीं पहनाती, पहनाएगी तो हार जाएगी। सैनिक को ढीले वस्त्र पहनाना खतरनाक सिद्ध हो सकता है। सैनिक को हम चुस्त वस्त्र पहनाते हैं- इतने चुस्त वस्त्र, जिनमें वह हमेशा अड़चन अनुभव करता है। इससे तनाव पैदा होता है और वह आसानी से गोलियां चला सकता है, हिंसा कर सकता है। चुस्त वस्त्र झगड़ालू आदत पैदा करते हैं। चुस्त वस्त्र में बैठा आदमी लड़ने को तत्पर रहता है। ढीले वस्त्र का आदमी थोड़ा विश्राम में होता है। सिर्फ सम्राट ढीले वस्त्र पहनते थे, या संन्यासी, या फकीर।

✻ अंधकार को निकाल नहीं सकते, प्रकाश ला सकते हैं- जैसे इस कमरे में अंधकार भरा हो और हम सारे लोग अंधकार को निकालने की कोशिश करें, तो क्या हम अंधकार को निकाल पाएंगे? हम कितनी ही गठरियां बांधें, गठरियां बाहर चली जाएंगी, अंधकार यहीं रह जाएगा। हम कितने ही धक्के दें और पहलवानों को लिवा लाएं। पहलवान थक जाएंगे और अंधकार यहीं रहेगा। अंधकार को निकाला नहीं जा सकता। अंधकार को न निकाला जा सकता है, न लाया जा सकता है। अगर हम सारे लोग निकल पड़ें कि चलो आज थोड़ा-थोड़ा अंधकार ले आएं इस कमरे में भरने को, सांझ को हम खाली हाथ वापस लौट आएंगे, अंधकार कोई भी ला नहीं सकेगा। न अंधकार लाया जा सकता, न निकाला जा सकता। अंधकार है ही नहीं, उसका कोई अस्तित्व नहीं है, उसकी कोई सत्ता नहीं है। वह केवल दिखाई पड़ता है, है नहीं। प्रकाश लाया जा सकता है और प्रकाश आ जाए, तो अंधकार विलीन हो जाता है।

✻ जहां तुम्हारी आंखें भर जाएं, वहीं झुक जाना। जिससे तुम्हारे नेत्र तृप्त हों, वहीं झुक जाना। जिससे तुम्हें सुख की झलक मिले, वहीं झुक जाना। जहां शांति का आकाश खुले वहीं झुक जाना।

✻ हर व्यक्ति स्वतंत्रता चाहता है लेकिन प्राय: समझ नहीं पाता कि उसे कितनी स्वतंत्रता चाहिए और किन चीजों से स्वतंत्रता चाहिए। व्यक्ति को जब थोड़ी स्वतंत्रता मिलती है तो वह और की अपेक्षा करने लगता है। लेकिन स्वतंत्रता भी सापेक्ष होती है। हो सकता है हम सभी मामलों में स्वतंत्र हों लेकिन भावनात्मक रूप से बंधे हों, सामाजिक दायित्वों से बंधे हों। मगर स्वतंत्रता की तलाश में कई बार लोग इन चीजों से भी मुक्ति की चाह रखने लगते हैं। उन्हें लगता है कि इन सबसे अलग

होकर वह जीवन में कुछ खास हासिल कर लेंगे। लेकिन होता उलटा ही है। जो लोग अपने ऊपर किसी तरह का बंधन नहीं स्वीकार करते, वे प्राय: कोई बड़ा लक्ष्य हासिल नहीं कर पाते। वह अपने लिए सुख की चाह में बहुतों को दुखी कर डालते हैं। लेकिन दबाव या बंधन को स्वीकार कर उसके बीच रहनेवाले लोग अपने सीमित अवसर का ही सर्वोत्तम इस्तेमाल करने की कोशिश करते हैं और इस क्रम में कई बार असाधारण उपलब्धियां हासिल कर लेते हैं। ऐसे लोग दूसरों को भी सुखी बनाते हैं।

* आज की बड़ी जरूरत है कि प्रेम, उदारता, भाईचारा और देश की उन्नति के लिए मिल-जुलकर काम करने का सहयोग का जज्बा पैदा किया जाए। आपसी लड़ाई-झगड़े, नफरत, आतंकवाद, नक्सलवाद देश के विकास के रास्ते के रोड़े हैं। शांति, एकता और कड़ी मेहनत से देश की आर्थिक और सामाजिक उन्नति होगी। हमें अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए लोकतांत्रिक तरीकों को अपनाना होगा। लोकतांत्रिक तरीका अपनाने से भारत हमेशा विश्व में अग्रणी रहा।

* सशक्त परिवार राष्ट्र को सुदृढ़ एवं सक्षम बनाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। सशक्त परिवार व्यवस्था सदा से राष्ट्र की उन्नति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। यह वर्तमान जीवन को स्थायित्व प्रदान करती है और भविष्य के लिए सुरक्षा का भाव जगाती है। इसी में शैशवावस्था की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, चाहे वह माता-पिता और दादी-दादा की स्नेहसिक्त गोद हो या जीवनोपयोगी गुणों का विकास, यहीं से बाल्यकाल में कुछ ऐसे संस्कारों का बीजांकुरण होता है जो बड़े होने पर उसके समक्ष अपने राष्ट्र को सुदृढ़ एवं सक्षम बनाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। परिवार में ही व्यक्ति एक आदर्शोन्मुख जीवन जीता हुआ गृहस्थ एवं वानप्रस्थ काल में अपने कर्तव्यों का वहन करता हुआ राष्ट्र के लिए समर्पित नागरिकों का निर्माण करता है। हमारे भारतीय परिवारों में बच्चे अनुशासन, समरसता, त्याग और प्रेमभाव आदि गुणों को स्वाभाविक रूप से ग्रहण करते हैं। परंतु आज के युग में एक ओर परिवार व्यवस्था चरमरा रही है तो दूसरी ओर कभी जगद्गुरु कहलाने वाला यह भारतवर्ष मानों बारूद के ढेर पर बैठा हुआ है। इसके समक्ष विभिन्न प्रकार की समस्याएं मुंह बायें खड़ी हैं। जन-जन के हृदय में संवेदनशीलता की कमी आयी है, अराष्ट्रीय तत्व सिर उठा रहे हैं। आज शासकों और प्रशासकों के मन में कर्तव्यभाव का अभाव हो रहा है, स्वार्थ एवं पदलोलुपता बढ़ रही है। यदि हमें एक सुदृढ़ एवं समर्थ राष्ट्र का निर्माण करना है तो विद्यालयी शिक्षापर निर्भर न रहकर घर-परिवार में ऐसे नागरिकों का निर्माण करना होगा जो परिवार से प्राप्त गुणों को राष्ट्र निर्माण में साधन बनाएं।

* हीरा बहुमूल्य है। हीरे के मूल्य के पीछे मनुष्य की शाश्वत खोज है। इस जगत् में हीरा सबसे स्थिर है। सब चीजें बदल जाती हैं; हीरा बिना बदला हुआ बना रहता है। करोड़ों-करोड़ों वर्षों में भी वह क्षीण नहीं होता। इस बदलते हुए संसार में हीरा न बदलते हुए अस्तित्व का प्रतीक है। इसलिए हीरे का इतना मूल्य है, अन्यथा वह पत्थर है।

* जहाँ का राजा निर्दयी व अधर्मी हो वहाँ की प्रजा सुख से नहीं रहती।

* ध्यान संतोष है, संतुष्टि है। आशा असंतोष है, अधैर्य है।

* केवल ज्ञानी बनना ही महत्व नहीं रखता। विद्वान की शोभा उसके आचरण में है।

* हर आदमी अपने बचपन या किशोरावस्था को अक्सर याद करता है। सिर्फ इसलिए नहीं कि हमें अतीत प्यारा होता है और हम वर्तमान के तनावों से दूर जाना चाहते हैं। यह भी एक वजह है लेकिन मूल बात यह है कि हम अतीत को नए सिरे से जीना चाहते हैं। दरअसल हम अतीत को वर्तमान की आंखों से देख रहे होते हैं। जैसे प्रौढ़ होने के बाद बचपन या किशोरावस्था की कई बातों को हम अपनी गलती के रूप में देखने लग जाते हैं। हमारे अचेतन मन में यह भाव रहता है कि काश एक बार वे पल हमें फिर से जीने को मिलें ताकि हम अलग व्यवहार करें। हम वह सब करें जो वर्तमान में सोचते हैं।

हम वह सब कुछ न दोहराएं जो पहले कर चुके हैं। उदाहरण के तौर पर कई लोग सोचते हैं कि अगर अतीत में उन्होंने व्यर्थ समय न गंवाया होता तो आज वे बेहतर हालत में होते। अब अगर उन्हें फिर से पुराना समय मिल जाए तो वे खूब मेहनत करेंगे। यह अपने जीवन को हमेशा बेहतर बनाने की इच्छा का एक प्रमाण है।

* आजकल उपयोगितावादकी लहर बह रही है, इस कारण महत्त्वपूर्ण दयावृत्ति और कर्त्तव्य-पालनके प्रति लोगोंकी उपेक्षा होने लगी है। वे कहते हैं- जो प्राणी हमारे किसी उपयोगमें नहीं आते, जो न दूध दे सकते हैं और न खेती-बारीके ही काम आते हैं, ऐसे निकम्मे पशुओंके पेटका गड्ढा भरते रहना मूर्खता नहीं तो और क्या है? प्रकृति स्वयं निरुपयोगी बनाकर जिनका अन्त कर देना चाहती है, उनको बचानेमें अपनी शक्ति, समय और धनका उपयोग करना उनका दुरुपयोग ही तो है। मतलब यह कि आजके इस जडयुगमें मनुष्यकी दृष्टि सब ओरसे हटकर केवल अर्थपर ही आकर टिक गयी है। इसीसे प्रत्येक काममें उसके सामने केवल उपयोगिताका प्रश्न रहता है; और इसीसे वह आज अपने वृद्ध और बीमार सगे माता-पिता एवं आत्मीय स्वजनोंकी भी उपेक्षा- उनसे घृणा करने लगा है और उनके भरण-पोषणमें समय, शक्ति और अर्थका अपव्यय मानकर उससे अपनेको बचाने लगा है। अर्थपरायणताने उपयोगिताके नामपर आज मनुष्यको केवल देवत्वकी ओर जानेसे ही नहीं रोक दिया है, वरं मानवतासे भी उतारकर उसे दयाशून्य असुर बना दिया है। इसीसे आज वह सहानुभूति, सेवा और दूसरोंके सुख-शान्तिकी कुछ भी परवा न करके अपनी पवित्र सात्त्विकी वृत्तियोंको मारकर केवल अर्थके पीछे उन्मत्त हो रहा है और उन्नतिके नामपर दिनोंदिन पतनके गहरे गड्ढेमें गिरता जा रहा है। मनुष्यके जीवनका ध्येय जब एकमात्र धन ही बन जाता है, तब उसमें एक ऐसा मोह पैदा होता है जो उसे अपने सुख-शान्तिके साधनोंसे भी विमुख कर देता है; यहाँ तक कि उससे वह ऐसे कर्म करवाता है जिनसे उसके अपने ही ऐहलौकिक और पारलौकिक जीवनकी सुख-शान्तिका स्त्रोत भी चिरकालके लिये सूख जाता है और जब मनुष्य अपने सुख-शान्तिको ही नहीं देखता, तब दूसरेकी सुख-शान्तिकी चिन्ता तो उसे क्यों होने लगी?

* मनुष्य सारी जिंदगी लड़ता है अपनी परिस्थिति सुधारने के लिए। काश, थोड़ा प्रसास वह अपनी प्रकृति सुधारने के लिए करता। यदि वह ऐसा करता तब परिस्थिति सुधरते देर नहीं लगती। प्रकृति सुधरेगी सात्विक भोजन से, प्रकृति सुधरेगी सत्संग, स्वाध्याय, मनन से, प्रकृति सुधरेगी योग और अभ्यास से जितना हो जाए करना चाहिये।

* महत्व इसका नहीं है कि तुम अपनी यात्रा कहाँ से आरम्भ करते हो, बल्कि इसका है कि तुम जा कहाँ रहे हो।

* जब संदेह का सांप सिर उठाता है तो अमृत भी जहर लगता है और जब श्रद्धा जगती है तो पत्थर भी भगवान हो जाते हैं।

* भय से भी समर्पण हो सकता है परन्तु प्रेम में अन्तर्आत्मा से समर्पण होता है, जिसे आत्म समर्पण कहते हैं।

* आग से जलते हुए एक ही सूखे वृक्ष से सारा वन जिस प्रकार जल कर भस्म हो जाता है, उसी प्रकार एक कुपुत्र सारे कुल के लिए संताप और विनाश का कारण होता है।

* जो चाहते हो वह होता नहीं, जो होता है वह भाता नहीं और जो भाता है वह रहता नहीं। यही प्रकृति का नियम है।

* केवल जुटावेंगें तो बोझ बढ़ेगा, केवल लुटावोगे तो खोखले हो जाओगे। दोनों का सन्तुलन ही स्वस्थ जीवन है।

* दुश्चरित्र आदमी से न दोस्ती करो, न जान पहचान। गर्म कोयला हाथ जलाता है एवं ठंडा हाथ काला करता है।

* कम खानेवाले का शरीर स्वस्थ रहता है एवं गम खानेवाले का मन स्वस्थ रहता है। तत्वत: कम और गम खाने वाला कभी दु:खी नहीं होता।

* रोग के डर से आदमी खाना तो बन्द कर देता है, पर दण्ड और मरण के भय से वह पाप करना नहीं रोकता, कितना

बड़ा आश्चर्य है।

❋ धीरज के बिना धारणा नही हो सकती। श्रद्धा के बिना सेवा नहीं हो सकती। सेवा के बिना मेवा नहीं मिलती। गुरु के बिना ज्ञान नहीं मिल सकता। कर्म के बिना पूजा नहीं हो सकती। स्त्री के बिना गृहस्थ बेकार है। स्वर्ग-नरक कर्मों के द्वारा प्राप्त होते हैं। भाग्य की रचना कर्मों के द्वारा बनती है। उद्योग व प्रारब्धता में निरन्तरता जरूरी है।

❋ संसार में ऐसा कोई भी नहीं है जो नीति का जानकार न हो, परंतु उसके प्रयोग से लोग विहीन होते हैं।

❋ विपत्ति में प्रकृति बदल देना अच्छा है, पर अपने आश्रय के प्रतिकूल चेष्टा करना अच्छा नहीं।

❋ शील की सदृशता पहले कभी न देखे हुए व्यक्ति को भी हृदय के समीप कर देती है।

❋ प्राप्त हुए धन का उपयोग करने में दो भूलें हुआ करती हैं, अपात्र को धन देना और सुपात्र को धन न देना। दरिद्र कौन है? भारी तृष्णा वाला और धनवान कौन है? जिसे पूर्ण संतोष है।

❋ जरूरत में मनुष्य जो वादा करता है बहुत कम पूरा करता है।

❋ काम को जल्द अन्जाम देने से पहले उसे बेहतर अंजाम देने की कोशिश करो। लोग यह नहीं पूछेंगे कि कितने समय में यह काम किया बल्कि वह तुम्हारे काम की बेहतरी को देखेंगे।

❋ सब अपने अपने हिसाब से सही होते हैं। यही तो सबसे बड़ी तकलीफ है।

❋ जरूरी नहीं कुएं के अंदर फेंके गए पत्थर की धमक बाहर तक सुनाई दे। यह तो कुएं की गहराई पर है कि वह कहां तक आवाज को अपने अंदर समा सकता है।

❋ मनुष्य की जिंदगी में दो लोगों की अहमियत होती है। एक दोस्त की, एक दुश्मन की।

❋ अहम् वह चीज है जो हमें अपनों से अलग कर देती हैं।

❋ विजयाभिलाषी जब तक जीवित रहता है तब तक बुद्धिमानों के उपदेश का पात्र होता है।

❋ जिसमें यह चार परम श्रेष्ठ गुण नहीं हैं- सत्य, धर्म, धृति और त्याग, वह शत्रु को नहीं जीत सकता। जीतता वह है जिसमें शौर्य होता है, धैर्य होता है, साहस होता है, सत्व होता है, धर्म होता है।

❋ ऊंची स्थिति में होने पर भी उच्च आचरण न हो तो वह श्रेष्ठ नहीं होता। नीची स्थिति में होने पर भी निम्न आचरण न हो तो वह नीचा नहीं होता।

❋ कांच का कटोरा, नेत्रों का जल, मोती और मन, यह एक बार टूटने पर पहले जैसी स्थिति नहीं होती।

❋ हर मन एक माणिक्य है, उसे दुखाना किसी भी तरह अच्छा नहीं।

❋ राम नाम के बल पर अधर्म मत करो। रामनाम स्मरण के साथ-साथ शुद्ध कर्म भी करना आवश्यक है।

❋ जीवन-सत्य को कभी भी सीमित मत करो न एक गीत में, न एक रंग में, न एक ढंग में, न एक शैली में। यह मनुष्य की हिंसात्मक प्रवृत्ति है, जो चाहती है कि दूसरे भी मेरे ढंग से चलें; जो चाहती है, जैसे मैं जगत को देखूं वैसे ही दूसरे भी देखें। यह कोई अच्छे आदमी का लक्षण नहीं है।

❋ स्वस्थ व्यक्ति कभी किसी की निंदा में संलग्न नहीं होता और जब दूसरे उसकी निंदा करते हों, तो वह उन पर दया ही अनुभव करता है।

❋ जितना दिखाते हो, उससे अधिक तुम्हारे पास होना चाहिए, जितना जानते हो उससे कम तुम्हें बोलना चाहिए।

❋ जीव का अपवित्र मन ही प्रधान नरक है, एवं उस मन की वेदना-चिंता और भय-अशांति ही नारकीय यातना है।

* जहां स्थूल जीवन का स्वार्थ समाप्त होता है, वहीं मनुष्यता प्रारंभ होती है।

* बिना किसी के गुण-दोष की ओर ध्यान दिए परोपकार करना सज्जनों का एक व्यसन होता है।

* जितने से काम चल जाए उतना ही शरीरधारियों का अपना है।

* वैरी भी अद्‌भुत कार्य करने पर प्रशंसा के पात्र बन जाते हैं।

* दुर्जनों के साथ मैत्री और प्रेम कुछ भी नहीं करना चाहिए।

* जब चित्त में कोई द्विधा नहीं होती तब समस्त पदार्थ- ज्ञान विश्राम लेता है और दिव्य ज्ञान की प्राप्ति होती है।

* सभी गीत विलाप हैं। सभी नृत्य विडंबना हैं। सभी आभूषण भार हैं और सभी काम दुखदायी हैं।

* अभीष्ट फल की प्राप्ति हो या न हो, विद्वान पुरुष उसके लिए शोक नहीं करता।

* वृद्ध व्यक्ति जो झुककर चलता है, वह धरती में क्या खोजता चलता है? उसका जो यौवन रूपी रत्न खो गया है, उसे ही खोजता है कि शायद धरती पर गिरा हुआ हो।

* यह मेरा बंधु है और यह नहीं है, यह क्षुद्र चित्त वालों की बात होती है। उदार चरित्र वालों के लिए तो सारा संसार ही अपना कुटुंब होता है।

* जीवन में जो भी महत्वपूर्ण है उसे पाने में जितना आनंद है, उससे अनंत गुना आनंद उसे बांटने में है।

* जब आपके अपने द्वार की सीढ़ियां मैली हैं तो अपने पड़ोसी की छत पर पड़ी हुई गंदगी का उलाहना मत दीजिए।

* मनुष्य के सारे व्यवहारों में ज्वार-भाटा का सा चढ़ाव-उतार होता है। यदि मनुष्य बाढ़ को पकड़े तो भाग्य की ड्योढ़ी पर पहुंच जाए।

* अनुभव प्राप्ति के लिए काफी अधिक मुल्य चुकाना पड़ा है, परंतु उससे जो शिक्षा मिलती है वह किसी अन्य साधन द्वारा नहीं मिल सकती।

* पैसा जिंदगी जीने के लिए जरूरी है लेकिन कुछ लोग पैसे को ही जिंदगी का उद्देश्य मान लेते हैं। पूरी जिंदगी कंजूसीपूर्ण जिंदगी गुजारना समझदारी नहीं है। घर की रोशनी यानि बल्बों को बंद कर अंधेरे में बैठने से पैसा बचाने की कोशिश मात्र मूर्खता है। अंदर रोशनी हो और बाहर अंधेरा कौन आपकी दहलीज लांघ कर अंदर आएगा। पैसे के आवरण में हर वक्त मुंह पर अहंकार का पर्दा नफरत पैदा करता है। फिर ईमानदारी पूर्ण पैसा कमानेवाले व्यक्ति के चेहरे की रौनक अलग ही नजर आती है। प्रत्येक व्यक्ति का पैसा अपने लिए होता है न कि दूसरों के लिए। अत: परस्पर संबंधों में धन की झूठी चादर उतार देनी चाहिए।

* जो दिन हमें प्रसन्नता प्रदान करते हैं, वे हमें बुद्धिमान बनाते हैं।

* प्रवीणता और आत्मविश्वास अविजित सेनाएं हैं।

* हितकारी और मनोरम बात दुर्लभ होती है।

* कुल के कारण कोई बड़ा नहीं होता, विद्या ही उसे पूजनीय बनाती है।

* बहुत बोलने और बहुत खाने से जीभ बिगड़ती है। जिसकी जीभ सुधर गई समझो उसका जीवन सुधर गया। जीवन में जीभ मुख्य है। आंखें सुधरने से मन सुधरता है और जीभ सुधरने से जीवन सुधरता है।

* सब जगह पुरुष ही पंडित (बुद्धिमान) नहीं होता। जिस-तिस विषय में विलक्षण स्त्रियां भी पंडित होती हैं।

* निरंतर परिश्रम करनेवाले भाग्य को भी परास्त कर देते हैं।

* बुराई को रोकना और अच्छाई का प्रचार करना भी मनुष्य के उद्देश्य में शामिल है।

* बिना कार्य ज्यादा न बोलना, किसी के बीच में न बोलना, बिना पूछे अभिमानपूर्वक सलाह न देना, ताना न मारना, शाप न देना। अपने को भी बुरा-भला न कहना, गुस्से में आकर अपने को भी शाप न देना, न सिर पीटना।

* धन की जरूरत एक बात है; धन की पकड़ दूसरी बात है। धन की जरूरत तो पूरी हो जाती है; धन की पकड़ कभी पूरी नहीं होती। धन को जितना पकड़ा, उतनी पकड़ बढ़ती जाती है। जरूरतें सब पूरी हो जाती हैं, पागलपन कोई पूरा नहीं कर सकता।

* किसी की चुगली या निंदा नहीं करें। किसी के सामने किसी भी दूसरे की कही हुई बात को न कहें, जिससे सुननेवाले के मन में उसके प्रति द्वेष या दुर्भाव पैदा हो।

* श्रेष्ठ मनुष्य वह है जो अपना नाम स्वयं पैदा करता है। उसे किसी के सहारे की कोई जरूरत ही नहीं पड़ती। वह केवल अपने ऊपर भरोसा करता है।

* प्रतिभावान व्यक्ति का हर काम उत्साह से भरा होता है। उसकी प्रत्येक कृति उत्साह की होनी चाहिए। उसमें निराशा के लिए कोई जगह नहीं।

* अगर हमारे भीतर उत्साह का संचार हो जाए तो कठिन से कठिन काम भी आसान बन जाता है। इसके साथ से आप अकेले होकर भी अकेले नहीं रहते। यह सच्चा साथी है।

* न कोई किसी का मित्र है और न कोई किसी का शत्रु। स्वार्थ से ही मित्र और शत्रु एक-दूसरे से बंधे हुए हैं।

* महान लोगों की पराजित शत्रुओं से स्थायी शत्रुता नहीं होती।

* गुप्त या प्रकट रूप से, बहुत या थोड़ा, स्वयं या दूसरे के द्वारा किया गया शत्रुओं का अपकार बहुत आनंद देता है।

* अहिंसा अच्छी चीज है इसमें कोई शक नहीं, लेकिन शत्रुहीन होना उससे भी बड़ी बात है।

* नम्रता कठोरता से, जल चट्टान से और प्रेम बल से अधिक शक्तिशाली है।

* सच्ची संस्कृति मस्तिष्क, हृदय और हाथ का अनुशासन है।

* वैरी भी अद्भुत कार्य करने पर प्रशंसा के पात्र बन जाते हैं।

* दूसरों को प्रसन्न रखने की कला स्वयं प्रसन्न होने में है। सौम्य होने का अर्थ है स्वयं से और दूसरों से संतुष्ट होना।

* जीवन की गहराई की अनुभूति के कुछ क्षण ही होते हैं, वर्ष नहीं।

* अविश्वास से अर्थ की प्राप्ति नहीं हो सकती और जो हो भी सकती है, तो जो विश्वासपात्र नहीं है उससे कुछ लेने को जी ही नहीं चाहता। अविश्वास के कारण सदा भय लगा रहता है और भय से जीवित मनुष्य मृतक के समान हो जाता है।

* जाति से कोई पतित नहीं है। पतित वह है जो चोरी, व्यभिचार, ब्रह्महत्या, भ्रूण-हत्या आदि दुष्ट कृत्यों को करता है और उनको गुप्त रखने के लिए झूठ बोलता है। कभी किसी महात्मा से यह न पूछो कि तुम्हारी जाति क्या है। क्योंकि भगवान के दरबार में जाति का बंधन नहीं रह जाता। संपूर्ण विश्व में केवल एक ही जाति है- मानव जाति। एक ही भाषा है- प्रेम की भाषा।

* वह मुख जो शीघ्र न खिले, देखने योग्य नहीं है। वह अक्षर जिसमें कोई तात्पर्य नहीं, न सुनने के ही योग्य है।

* लोकमान्य और विचारशील मनुष्यों द्वारा की गई प्रशंसा खास महत्व रखती है। यह सुवासित तेल की तरह हर जगह तुरंत फैल जाती है।

* कृतज्ञता एक कर्त्तव्य है जिसे लौटाना ही चाहिए किंतु इसे पाने का अधिकार किसी को नहीं है।

✻ जब तुम क्रोध में हो तब यह विचार करो कि मानव-जीवन कितना क्षणिक है।

✻ प्राय: दूरी मित्रता को प्रिय बना देती है और विरह उसे मधुर बना देता है।

✻ विषयों का सुख और आत्मा की शांति- इन दोनों में से किसी एक को हमें चुनना है। अगर संसार में रहकर आत्मिक शांति प्राप्त करनी है, अगर दिव्य जीवन तक पहुंचना है, अगर मृत्यु के इस संसार से मुक्त होना है, तो भौतिक जीवन के फलों को नहीं चखना चाहिए।

✻ ब्राह्मण घर में पैदा होने से कोई ब्राह्मण नहीं होता। ब्राह्मण वही है जो ब्रह्म को जाने। शुद्र-घर में पैदा होने से कोई शूद्र नहीं होता। शुद्र वही है जो ब्रह्म को न जाने।

✻ सुख सम्पत्ति व परिवार आदि सब अच्छी वस्तुएँ अपने धर्म व कर्म से मिलती है।

✻ विषयों के संयम से हीन लोभ आदि से परिपूर्ण जीव पाप कमाता है। विषयों के आकर्षण के कारण ही पाप पर पाप करता जाता है अथवा अपने किसी तुच्छ गुण के अहंकार में दूसरों का अपमान करने लगता है और जब असुर प्रकृति का व्यक्ति ऋषि मुनियों को त्रास देता है तो उनसे श्राप के द्वारा महान कष्ट पाता है।

✻ मनुष्य का छिपा हुआ भाग्य न जाने कब उदय हो जाये, इसीलिये अपनी लज्जा का नाश नहीं करना चाहिये, सदा लज्जा की रक्षा करनी चाहिये।

✻ पुरुष तो अपनी साधुता से ही संकट से बच जाता है और असाधु दुष्ट पुरुष अपनी असाधुता से ही दुख पाता है। इस संसार में जो कोई जैसा कर्म करता है, वह निश्चय वैसा ही फल पाता है।

✻ हमारे आसपास फैली हुई ईश्वर की दुनिया शानदार है, मगर हमारे अंदर रहनेवाली ईश्वर की दुनिया उससे भी ज्यादा शानदार है।

✻ शांत स्वभाव स्वस्थ चित्त की निशानी है।

✻ गौरव और गरिमा से जीना ही जीवन है।

✻ लालच का अंत बुरा होता है।

✻ कुत्तों के भौंकने पर भी शेर खामोश ही रहते हैं।

✻ झूठे आदर-सम्मान का कोई अर्थ नहीं होता।

✻ भक्ति धन से नहीं, मन से होती है।

✻ उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम, इन सद्गुणों को जीवन में धारण करो और अपना दायित्व निभाओ।

✻ जो लोग गलतियों को याद रखते हैं और उनको दोहराते नहीं सफलता उन्हीं को मिलती है।

✻ अपनी संतान को भलाई का पाठ पढ़ाना दान देने से बढ़कर है क्योंकि जो भलाई से वंचित है, वो हक और न्याय से भी वंचित हो जाते हैं।

✻ अपने आपको वैसा ही दिखाओ जैसे तुम हो, या फिर जैसा दिखा रहे हो वैसा बनने की कोशिश करो।

✻ कुछ लोग सारी उम्र दोस्ती के नाम पर धोका देते हैं और शर्मिंदा भी नहीं होते। कुछ लोग अपने सर की बलाएं दूसरे के सरों पर थोपकर कितने शान्त हो जाते हैं। कुछ लोग इतने बामुरव्वत होते हैं कि एक ही जगह से धोके खाकर भी वहीं पलटते हैं। कुछ लोग सारी उम्र किसी से मुहब्बत करते रहते हैं और उसे बताते भी नहीं। कुछ लोग इतने दिलनशीन होते हैं कि जिस राह से गुजरते हैं लोगों को अपना बना लेते हैं।

* दुनिया में दो ही लोग आपको सबसे ज्यादा जानते हैं। एक वह जो आपसे बेपनाह प्यार करते है और दूसरा वह जो आपकी सबसे ज्यादा तारीफ करता है।

* हर व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके कर्म के लिहाज से है।

* प्रार्थना बुराई से बचायी रखती है इससे व्यक्ति के दिल के अंदरूनी शक्ति बढ़ती है। प्रार्थना व्यक्ति को ईश्वर के करीब लाती है और व्यक्ति का ईमान सुरक्षित रहता है।

* बूढ़े आदमी का दिल दो चीजों के बारे में हमेशा जवान रहता है। एक- दुनिया की मुहब्बत, दूसरी- बड़ी-बड़ी उम्मीदें।

* अगर कोई तुम्हें अच्छा लगे तो अच्छा वो नहीं तुम तो क्योंकि तुम उसमें अच्छाई देखते हो और अगर कोई बुरा लगे तो बुरा वो नहीं तुम हो कि तुम उसमें बुराई देखते हो। बुराई को देखकर चुप रहनेवाला भला नहीं। जरूरी है कि अपनी ताकत से इसको भलाई में बदले। और अगर इसकी ताकत नहीं तो जबान से उसका विरोध करो। यह भी नहीं कर पाओ तो दिल से इसे बुरा मानकर बुराई से दूर रहो।

* जो अपने बाप को अपमानित करता है और किसी दूसरे व्यक्ति को बाप का दर्जा देता है उस व्यक्ति पर लानत है। इसी तरह अपने भाई को छोड़कर दूसरे को भाई मान लेना या अपनी बहन को नजरअंदाज करके दूसरे को अपनी बहन मान लेना ईश्वर को मंजूर नहीं।

* दुनिया में जिन्दगी की सांसें बहुत कम हैं और कब्र की जिन्दगी बहुत लम्बी है।

* भलमान जिसके नसीब में आई जिसने अपनी कामना को छोड़ा और मरा वही है जिसने दुनिया के मुकाबले में आखिरत से मुंह मोड़ा।

* असली कमाल तो ज्ञान और कर्म दोनों का होनेमें है।

* हर सांस एक खजाना है। ऐसा न हो कि तुम्हारी कोई सांस बेकार जाए और कयामत के दिन अपने खजाने को खाली देखकर तुम्हें शर्मिन्दगी उठानी पड़े।

* स्वयं को संभालने के लिए मस्तिष्क का उपयोग करना चाहिए और दूसरों से पेश आने के लिए दिल।

* नादानों की बात पर जब्त अक्ल का दान है।

* सब्र सबसे बड़ा सुख है और बेसबरी सबसे बड़ा दुख।

* सोच विचार मुहब्बत करने और मरने की तरह है, यह काम हर व्यक्ति को खुद अन्जाम देना पड़ता है।

* अगर दिल में सच्चाई हो तो हर किरदार में हुस्न पैदा होता है और किरदार में हुस्न हो तो घर में खुशगवार माहौल पैदा होता है।

* जब दिलों में फर्क आ जाए तो रवय्यों में फर्क आ जाता है।

* स्वाभिमान की आवाज पर कान न धरनेवाले बड़े-बड़े महलों में रहने के बावजूद अपने पीछे वीरानियां छोड़ जाते हैं।

* किसी के चेहरे पर मत जाओ क्योंकि हर मनुष्य बन्द किताब होता है जिसका शीर्षक पृष्ठ कुछ और होता है और अन्दर का लेखन कुछ ओर होता है।

* अपने प्रिय की जात बयान करने की बजाय उसके अहसानात बयान करो।

* पाव गीले किए बिना समन्दर तो पार किया जा सकता है मगर आंसू बहाए बिना जिन्दगी नहीं गुजारी जा सकती।

* ईश्वर ने आदमी को बिना मकसद पैदा नहीं किया इसलिये हमारा कोई भी काम बिना मकसद न हो।

* कुदरत के राज अब तक कोई समझ नहीं पाया।

* जो कुछ तुम इच्छा करते हो यदि तुम वह कर नहीं सकते तो वही इच्छा करो जो तुम कर सकते हो।

* ईश्वर ही सर्वज्ञान, सम्पन्न है, महान प्रेमी और संकल्प स्वरूप है।

* जिस परिवार में स्त्रियों का सम्मान नहीं होता, वह पतन और विनाश के गर्त में लीन हो जाता है।

* अपना बुरा बर्ताव बदल लो, फिर देखो कि भाग्य खुद-ब-खुद बदल जायेगा।

* जो दिल इंसानी मोहब्बत से खाली है वो वीरान है। मोहब्बत का फूल न हो तो बुलबुल भी गीत गाना छोड़ दे और जमाने के बाग में कलियों की मुस्कुराहट भी दिखाई न दे। मोहब्बत आत्मा का गुलाब है जो अपराधों की धूप से मुर्झा जाती है।

* नारी सिर्फ मर्द का जज्बाती सहारा ही नहीं है बल्कि एक ऐसी रूहानी ताकत है, जिसके सहारे मर्द बड़ी से बड़ी मुसीबत झेल सकता है।

* दिल के फैसले को कभी स्वीकार मत करो क्योंकि वो हमेशा गलत और जज्बाती होते हैं।

* आप का काम ही आप की पहचान है, अपने काम को बेहतरीन तरीके से अंजाम देने की कोशिश करें, अच्छे शिष्टाचार को अपनी आदत बनायें।

* बात को देखो बात करने वाले को न देखो।

* हमारी एक गलत निगाह पूरी जिन्दगी को नरक बना देती है।

* अपने हाथ की लाठी उस बन्दूक से बेहतर है जो गैर के पास हो।

* बेहतरीन स्मरणशक्ति वो है जिसमें मनुष्य अपनी भलाईयों और दूसरों की ज्यादतियां (अत्याचार) भूल जाता है।

* जब किसीके घर जायें तो सबसे पहले चुप रहना, दूसरे की बात ध्यान से सुनना, याद रखना और उसपर अमल करना। अपने ज्ञान को फैलाना, सबसे पहले दरवाजे के बाहर से अभिवादन करे, उत्तर मिलने पर अन्दर जाने की इजाजत माँगे। इजाजत मिलनेपर ही अन्दर जायँ। अन्दर आनेकी अनुमति नहीं मिलने पर बिना किसी शिकवा-शिकवे के वापस लौट जाये।

* बुराई को रोकना और अच्छाई का प्रचार करना भी मनुष्य के उद्देश्य में शामिल है।

* शास्त्र कहता है कि बुद्धिमान पुरुष को सभासदों के दोषों को जानते हुए सभा में जाना ठीक नहीं है। वहाँ जाकर उन अवगुणों को कहना, चुप रह जाना अथवा मैं नहीं जानता ऐसा कह देना- ये तीनों ही बातें मनुष्य को दोष का भागी बनाती हैं।

* वास्तव में अच्छे लोग वही होते हैं जो प्रेमपूर्वक अपने-आप ही किसीके घर जाते है।

* प्रीति जब विकसित होती है तब वह मनमें ही समाकर नहीं रह जाती। प्रियतमको देखकर ऐसा खयाल आता है कि आँखोंसे इनका रूप पी जायँ, जीभसे चाट लें, नासिकासे सूँघ लें और बाहोंसे इनका आलिङ्गन कर लें।

* दुर्बल के साथ प्रबल का युद्ध करना बहुत अन्याय है।

* जिन्हें हम अपना समझते हैं वे ही पराये हो जाते हैं। जिनसे हम हृदय से प्यार कना चाहते हैं वे पहिले प्रेम दिखाते हैं, फिर निष्ठुर बन जाते हैं जिसको हम सदा हृदय से सटाये रखना चाहते हैं, दूर भाग जाते हैं, जिन्हें हम आँख की पुतलियों में रखना चाहते हैं, वे आँखों से ओझल हो जाते हैं। उत्तम तो यही है कि किसी से प्यार किया ही न जाय, किन्तु यह होता नहीं, मन मानता नहीं। कोई बलपूर्वक हृदय को पकड़ लेता है। पकड़कर वह तो चला जाता है, छोड़ जाता है अपनी मधुर-मधुर स्मृति। उस स्मृति में ऐसी मादकता होती है, कि वह हृदय को मथती रहती है। प्रेम का फल रोना-धोना है, विलाप-प्रलाप है, छटपटाना और बिलबिलाना है, शरीर को सुखाना और आँसू बहाना है। प्रेमियों की ऐसी दुर्दशा देखकर

भी लोग उनसे शिक्षा नहीं लेते, प्रेम करना छोड़ते नहीं। यही भगवान की माया है।

* किसी विशेष प्रयोजन से किसी नवीन स्थान की यात्रा करनी पड़ती है, तो यात्री के मन में दो ही विषय घूमते रहते हैं। वह प्रदेश कैसा होगा, उसकी शोभा कैसी होगी, वहाँ जाकर मैं अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर सकूँगा या नहीं। वहाँ जाकर मुझे क्या करना चाहिये। इस प्रकार के विचारों में मग्न हुआ यात्री चला जाता है। जब उस नवीन स्थान को देखता है, तो उसे कुतूहल होता है और वह प्रत्येक वस्तु को आश्चर्य, उत्सुकता और संभ्रम के साथ निहारता है।

* चिरकाल में अपने स्नेही आते हैं, तो मन न जाने कैसा हो जाता है। हृदय भर आता है, अश्रु अपने आप लुढ़क जाते हैं। चित्त चाहता है इसे हृदय से सटाये रखें। क्या इसे खिला दें, क्या पिला दें उन्हें देखकर भूख नींद भाग जाती हैं। बात करते-करते चित्त भरता ही नहीं। अपने हृद्‌गत भावों को उनके सम्मुख प्रकट करने में एक प्रकार का अनिर्वचनीय सुख होता है। संसार में सब वस्तुएँ सुलभ है, किन्तु प्रेमी का दर्शन ही दुर्लभ है। प्रेमी की बात तो पृथक् रही, जिससे अपने प्यार का सन्देश मिलता है, जिससे प्यारे के सभी समाचार मिलने की आशा होती है, उसे देखकर ही महान आनन्द होता है। प्यारे के दर्शन हो जाने या उसके समाचार मिल जाना इससे बढ़कर संसार में दूसरा कोई सुख है ही नहीं। यही परम लाभ है, महान सुख है और सर्वोत्कृष्ट लाभ है। जिसे यह प्राप्त हो गया उसे सब कुछ मिल गया। जिसे यह प्राप्त नहीं उसे मिला ही क्या? संसारी भोग तो सूकर कूकर योनियों में भी प्राप्त हो जाते हैं। प्रिय दर्शन रूप अमृत ही संसार में दुर्लभ है।

* सहसा कोई आशायुक्त घटना दिखाई दे जाती है या कानों में भनक पड़ जाती है, तो उस विषय में हृदय में ऊहापोह होना स्वाभाविक है। हृदय तो आशा से ही भरा रहता है। प्रेमी का जीवन आशा के आधार पर ही टिका रहता है, किन्तु प्रेम शमाशील है। हमारा प्रेमी हमें भी उतना ही प्यार करता है, जितना हम उसे करते हैं इस विषय में प्रेमियों का हृदय निर्णय नहीं कर पाता। डाँवाडोल-सा बना रहता है। कभी तो मन मान लेता है, कभी सन्देह करने लगता है। हमारा प्रिय हमारे लिये चिन्तित होगा यह निर्णीत विषय नहीं है। शमास्पद है। फिर भी घटनाओं को देखकर तर्कना किये बिना रहा ही नहीं जाता। प्रथम प्रेम में अनिष्ट की ही शमा होती है। इन्हीं सब भावों से प्रेम निरन्तर बढ़ता रहता है। प्रेम की वृद्धि की कोई सीमा नहीं, इयत्ता नहीं। वह बढ़ता ही जाता है, बढ़ता ही जाता है।

* वाणी के शब्द से मृग, स्पर्शदोष से हस्ती, रूप से पतङ्ग, रस से मत्स्य, गन्ध से भङ्ग ये सब के सब स्पर्शास्पर्श सम्बन्ध के कारण काल के गाल में चले जाते हैं।

* संयम खान-पान और जगत् व्यवहार जीवन का पारसमणि है। यह जिसे छू देती है वही सोना बन जाता है।

* संयम, सदाचार से मैत्री करनेवाले की बुद्धि विलक्षण होती है।

* स्वजनों के अतिरिक्त जो अन्यों के साथ मैत्री की जाती है, वह किसी-न-किसी स्वार्थ को सम्मुख रखकर की जाती है। वह मैत्री नहीं। प्रयोजन की प्रीति हैं स्वार्थ का स्नेह है अदले-बदले का व्यवहार है। प्रेम का स्वांग हैं। जब तक अपना प्रयोजन निकलता है, तब तक तो प्राण देने का ढोंग रचते है। जहाँ स्वार्थ सिद्ध हुआ, प्रयोजन पूर्ण हुआ, तुम अपने घर हम अपने घर। कहाँ की प्रीति कैसी मैत्री?

* संसार में जिधर देखो उधर ही स्वार्थ का प्रेम दीखता है। जीवन भर जिस वन में मृग रहते हैं, जहाँ उसमें आग लगी कि उस वन को छोड़कर भाग जाते हैं। पत्नी अपने स्वार्थ के लिये पति की हत्या कर देती है। राज्य के लिये भाई-भाई का गला काट देता है। सम्पत्ति के लिये पुत्र पिता को जहर देता है। स्वार्थ सिद्धि के लिये मनुष्य स्वाभाविक प्रेम को भी तिलाञ्जलि दे देते हैं। जार पुरुष परनारी के प्रति कितना प्रेम प्रदर्शित करता है, किन्तु अपना स्वार्थ सिद्ध होने पर वह उस

अनुरागिणी स्त्री का तनिक भी ध्यान नहीं करता। स्वार्थ साध के चला जाता है।

* चरित्र गया तो सारा का सारा अनर्थ हो गया। वृक्ष से गिरा हुआ प्राणी बच सकता है किन्तु किसी की दृष्टि से गिरा हुआ प्राणी नहीं बच सकता। आचरण ही प्रथम धर्म है।

* हमें उपदेश देने की वासना तभी तक रहती है, जब तक हम दूसरों को अज्ञानी समझते हैं, उन्हें भूला भटका पथ भ्रष्ट मानते हैं। हमारा यह भाव दूर हो जाय और हम किसी भी प्रकार किसी अनन्य प्रेमी के दर्शन पा जायँ, तो हमारा समस्त अभिमान धूलि में मिल जायगा। हमारा सब मोह दूर हो जायगा। समस्त ज्ञानमद उतर जायगा। ज्ञान प्राप्त कर लेना यह बड़ी बात नहीं, किन्तु प्रेम की प्राप्ति बड़े भाग्य से होती है। प्रेम के दर्शन से ही हृदय भर जाता है और हम उसके सम्मुख अपने ज्ञान ध्यान को तुच्छ समझने लगते हैं। प्रेमियों के दर्शन हो जायँ और उनका कुछ काल सत्सङ्ग प्राप्त हो सके, तो जीव में नम्रता विनय अवश्य ही आ जायगी। प्रेमियों का सत्सङ्ग पाकर भी जिनका अभिमान बना रहा, तो समझना चाहिये या तो ये प्रेम ग्रहण करने में उपयुक्त पात्र नहीं या इन्हें जिन प्रेमियों का सत्सङ्ग हुआ है, वे यथार्थ प्रेमी नहीं।

* व्याख्यान देना ही शिक्षा नहीं है। उपदेश, व्याख्यान तथा प्रवचनों का तब तक प्रभाव नहीं पड़ता जब तक कहनेवाला स्वत: वैसा आचरण न करता हो। कहने का उतना प्रभाव नहीं पड़ता जितना करके दिखाने का पड़ता है।

* जिसको जिस वस्तु का व्यसन पड़ जाता है, उसके लिये उसे छोड़ना असम्भव हो जाता है। मादक वस्तुओं के व्यसनी इच्छा होने पर भी उन व्यसनों को नहीं छोड़ सकते, किन्तु उनमें कुछ ऐसे साहसी होते हैं, जो चिरकाल के व्यसन को क्षणभर में छोड़ देते हैं। घर-द्वार, कुटुम्ब-परिवार तथा पदप्रतिष्ठा का त्यागना अत्यन्त कठिन है, किन्तु वैराग्यवान पुरुष इन सबको तृण के समान त्यागकर परिव्राजक बन जाते हैं और फिर इनकी ओर आँख उठाकर भी नहीं देखते।

* हमारे साथ कोई दुख में सहानुभूति प्रकट करनेवाला हो, हमारी मन की बातों को उदारतापूर्वक कोई सुननेवाला हो तो हमें आन्तरिक शान्ति मिलती है। उसे मनोव्यथा कहने से हृदय हलका हो जाता है। समय सुखपूर्वक कट जाता है। उनके सम्मुख बातें करते-करते ऐसा प्रतीत होता है मानों हमारे इष्ट हमारे सम्मुख उपस्थित होकर हमारी सब बातों को सुन रहे हैं। एक प्रकार के संयोग सुख का अनुभव होने लगता है। ऐसे सहृदय पुरुषों का सत्सङ्ग कुछ दिन मिल जाय तो विरह दुख कुछ-कुछ शान्त हो जाता है। चित्त स्वस्थ होकर आनन्द का अनुभव करने लगता है।

* कभी किसीको भी भावावेष व उन्माद में किसी प्रकार का वादा मत करो व किसी प्रकार का वचन मत दो और क्रोध व आवेश में किसी प्रकार का निर्णय मत लो।

* जिसको जैसा संयोग मिलता है, वह वैसा ही बन जाता है। बुरी संगत से गुण भी दोष हो जाते हैं और अच्छी संगत से दोषी भी गुणी बन जाता है।

* समर्थ होने पर भी जो अपने सगे सम्बन्धियों की सहायता नहीं करता वह नरक का अधिकारी होता है। अत: हमें अपनी बुआ और उसके पुत्रों की सहायता करनी चाहिये।

* दुख में जब कोई आकर हमारे प्रति सहानुभूति दिखाता है, तो हृदय भर आता है और करुणा का स्रोत उमड़ने लगता है।

* रोकर अश्रुविमोचन करके अपने दुखों को स्वजनों के सम्मुख कहने से चित्त में शान्ति सी आ जाती है। इसीलिये दु:ख में स्वजन घर पर जाते हैं। और सान्त्वना देते हैं। यदि सान्त्वना देनेवाले साक्षात् सर्वेश्वर हों, उनकी स्तुति करने से ही कल्याण होता है। हमें यह विश्वास बना रहे कि भगवान हमें देख रहे हैं, उन्हें हमारे दु:खों की चिन्ता है तो दु:ख-दु:ख नहीं। कोटि सुखों से भी बढ़कर है और भगवान को भुलाकर उन्हें कारावास में बन्द करके- हम सुखोपभोग करना चाहें तो

वे सुख चिन्ता, ग्लानि व्याकुलता, भय और क्रोधादि के कारण असंख्यों दु:खों से भी बढ़कर है। इसीलिये भगवान दुख पड़ने पर साधुस्वभाव के गुरुजनों को भेजकर इस बात का स्मरण दिलाते हैं कि तुम साहस को मत त्यागना हमें तुम्हारा स्मरण हैं तुम्हारे साथ हम हैं। भगवत् भक्त इसी आशा के सहारे बड़े-से-बड़े कष्टों को हँसते-हँसते झेल लेते हैं। दु:ख उन्हें दु:ख प्रतीत ही नहीं होता। निरन्तर भगवत् कृपा का अनुभव होते रहने के कारण वे ऐसी विपत्तियों की निरन्तर याचना करते रहते हैं।

* मरे हुए मनुष्य का प्रेतसंस्कार मात्र कर देने से उसके बांधवों मका कर्त्तव्य पूरा हो जाता है और वे उसके लौकिक ऋण से उऋण हो जाते हैं। चिता पर अन्तिम संस्कार कर देने से मृतक उत्तम गति प्राप्त कर लेता है।

* जो मनुष्यों के वियोग, मिलन, सुख-दु:ख, शोक और मंगल आदि हैं, उन सब का कर्ता काल ही है।

* जो व्यक्ति हर समय मृत्यु को ध्यान रखकर जीवनयापन करता है वह भला इंसान बन जाता है।

* बहुत कुछ गंवाकर भी अंत में यदि कोई मनुष्य संभल जाए तो वह बुद्धिमान ही माना जाता है।

* अपने मित्र को प्रीति से, शत्रु को नीति से, लोभी को धन से, ब्राह्मण को आदर से, गुरु को बारम्बार प्रणाम से तथा रसिक को रस से वश में किया जाता है, परन्तु निर्मोही को कोई कैसे वश में कर सकता है?

* जो अवसर का उपयोग करने से पहले चूक जाते हैं, वे खाली हाथ ही रहते हैं।

* दीपक की लौ का आधार तेल होता है। जितना तेल होता है, उतनी ही लौ प्रखर या क्षीण होती हे। किसी भी दीपक में तेल भरा हुआ नहीं रहता।

* नि:स्वार्थ भाव से किया गया एक कार्य भी स्वार्थ भाव से किए गए परोपकार के अनेक कार्यों से बढ़कर होता है।

* सिद्धि को प्राप्त करने का मूल आधार वाणी का संयम है। जो लोग अपनी वाणी का संयम नहीं कर पाते, वे अनर्गल बोलते हैं। अर्थहीन शब्द विग्रह और द्वेष को जन्म देते हैं। वाणी का असंयम हमारी प्राणशक्ति को चूसता रहता है। वह व्यक्ति को खोखला कर देता है।

* पैसे का लालच बहुत बड़ा और बुरा होता है, वह आदमी को शैतान बना देता है।

* जिस दिन सुंदरता का मूल्यांकन खरीद-फरोख्त तक सीमित रह जाएगा, उस दिन कला मर जाएगी, उसके साथ कला का भी अंत हो जाएगा। कला का उद्गम ही सुंदरता में है।

* अशक्त की सेवा करने से बड़ी तीर्थयात्रा और कोई नहीं है।

* आसक्ति के रहते आदमी परिपक्व नहीं हो पाता। शरीर और अहंकार के बंधन से परे होकर वह सुख और दु:ख के द्वंद्व से पार हो जाता है।

* परिवार वह अंगीठी है जिसमें प्रतिभाएं संयुक्त रूप से तपती हैं। व्यक्तिगत प्रतिभा का अहंकार न टिकता है, न फलित होता है। परिवार के साथ रहने में ही वास्तविक बल है।

* जो सोता है, उसका भाग्य सोता है, जो बैठता है, उसका भाग्य बैठता है और जो चलता है, उसका भाग्य चलता है।

* पैसे का लालच बहुत बड़ा और बुरा होता है, वह आदमी को शैतान बना देता है।

* मानवीय भावों में निंदा और प्रशंसा के कारण ही इंसान मृत्यु को नहीं जीत पाता और जब तक जीवन है तब तक उसमें निंदा और प्रशंसा के भाव आते ही रहेंगे और मृत्यु का सिलसिला भी अनवरत चलता ही रहेगा।

* ज्ञान ऊँच-नीच की किसी पिटारी में बंद नहीं रहता। ज्ञान ही वह वस्तु है जो कभी समाप्त नहीं होती। ज्ञान हमेशा स्थिर रहता है। इसके सहारे व्यक्ति कुछ और भी प्राप्त कर सकता है।

❋ संसार में हर किसी ने सीमित समय का सदुपयोग करके ही सब कुछ हासिल किया है।

❋ ईश्वर में अटूट श्रद्धा रखनेवाले गांधीजी मानते थे कि इन्सान की रक्षा के लिए हथियार का कोई मूल्य नहीं है। जिसे परमात्मा मारना चाहता है, उसे दुनिया की कोई शक्ति नहीं बचा सकती और जिसे परमात्मा बचाना चाहता है, उसे कोई भी शक्ति नहीं मार सकती।

❋ आड़े समय में एक दूसरे की सहायता करना मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है।

❋ एक इच्छा अनेक इच्छाओं को जन्म दे देती है। सबसे अच्छी व मन को संतोष देनेवाली इच्छा तो आत्मसंतुष्टि है।

❋ व्यक्ति चाहे जैसी विपत्तिमें घर छोड़े- मातृभूमिसे उसके हृदयका लगाव होता है; किंतु जहाँ जाकर वह रहने लगता है, वहाँ उसके नवीन सम्बन्ध बन जाते हैं। नया व्यवसाय जम जाता है। इस सबको सहसा समाप्त कर देना उनके लिए सरल नहीं होता।

❋ मनुष्यको पदार्थ पुष्ट नहीं करते। मनुष्यकी अपनी आवश्यकता बहुत थोड़ी होती है। उसे सम्मान मिले, उसको यश, कीर्ति दें तो वह अत्यल्पमें भी संतुष्ट हो जायेगा।

❋ जब विचारवान वृद्धोंका चिन्तनशील मस्तक चिंतासे झुक जाता है, जब उनकी अनुभव-पक्व मेधा कोई मार्गे नहीं पाती, तभी तरुणोंके सबल रक्तकी उत्तेजना प्रज्वलित वाडवाग्नि-सी फुंकार करती पथ प्रशस्त कर देती है। युवकोंका आवेश ही निराशाके अन्धकारमें प्रदीप्त प्रकाश लाता है।

❋ जीवन में सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास करनेवाले अपने जीवन को सही ढंग से नहीं जी सकते।

❋ यदि पुत्र होने मात्र से पूर्णता होती तो कुसंस्कारी बेटों से माता-पिता परेशान नहीं होते।

❋ आशावाद का दूसरा नाम संकल्प है। मन में आशा जगेगी तभी संकल्प करोगे और संकल्प में ही मनुष्य की ताकत छुपी हुई है।

❋ एक स्थान-एक वर्गका दु:ख बहुधा दूसरेका सुख बनता है।

❋ अपने साथ जो जैसा बर्ताव करता है उसके साथ वैसा ही बर्ताव करना धर्मनीति है। मायावी के साथ मायावी और साधु के संग साधुता का व्यवहार करना चाहिए।

❋ छोटा सा कांटा चरण को उद्विग्न कर देता है।

❋ समाज की अनुचित मर्यादा को तोड़ना ही धर्म है।

❋ अगर हममें शक्कर का गुण है तो समाज में हम ऐसे विलीन हो जाएंगे जैसे समुद्र में नदी या सिंधु में बिंदु। सिंधु में विलीन होने पर बिदु स्वयं ही सिंधु हो जाता है, बिंदु नहीं रहता।

❋ सबसे सुखी समाज वह है जहां परस्पर सम्मान का भाव हो।

❋ कोई भला आदमी कभी अचानक ही धनी नहीं बन गया।

❋ यदि मनुष्य कुछ सीखना चाहे तो उसकी छोटी-से-छोटी गलती भी उसे कुछ शिक्षा दे सकती है।

❋ जिसने अपने आपको वश में कर लिया है, उसकी जीत को देवता भी हार में नहीं बदल सकते।

❋ प्रत्यक्ष में अनुमान करना व्यर्थ है।

❋ सभ्यता चरित्र का वह रूप है जो मनुष्य को कर्त्तव्य का मार्ग दर्शाता है।

❋ जीवन का आनन्द केवल उसने खो दिया है जो नए मित्रों पर विजय नहीं पा सकता।

* जो आहार मस्तिष्क को मिलता है उसी के आधार पर वह विकसित होता है।

* शांति की विजय भी युद्ध की विजयों से कम महत्वपूर्ण नहीं है।

* संसार में आज तक अच्छा युद्ध और बुरी शांति कभी नहीं हुई।

* कभी कोई गुप्त कार्य किया मत करो अथवा गुप्त रूप से मत करो।

* ऋण लेना भी भिक्षावृत्ति से अच्छा नहीं है।

* मनुष्य सोचता है कि उसके जीवन में कोई कष्ट न आये। लेकिन जीवन में कोई कष्ट न आये, तो जीवन जड़ हो जाता है। भगवान हमारी परीक्षा लेते हैं जिससे कि हम अपने गुण और शील को संस्कारित कर उन कष्टों का सफलता के साथ सामना कर सकें और भगवान का अनुग्रह प्राप्त कर सकें।

* जो मिट्टी से भी सोना बनाते हैं वही व्यवहारकुशल हैं।

* आश्चर्य ही उपासना का आधार है।

* किसी उपदेशक के दोषों पर प्राय: जल्दी ही ध्यान आकर्षित होता है।

* शिक्षा प्राप्त करने के तीन आधारस्तम्भ हैं- अधिक निरीक्षण करना, अधिक अनुभव करना एवं अधिक अध्ययन करना।

* कोई भी व्यक्ति जब किसी वस्तु के लिए श्रम नहीं करेगा, वह वस्तु उसे प्राप्त नहीं हो सकती।

* महान विचार जब कर्म में परिणत हो जाते हैं तो महान कार्य बन जाते हैं।

* जो प्रसन्नता तुम्हें कल दंशित करनेवाली हो उसे ठुकरा दो।

* हमेशा भाग्य के धागों को कौन देख सकता है। क्षण भर के लिए हितकारी अवसर आता है, हम उसे खो देते हैं और महीनों तथा वर्षों का नाश हो जाता है।

* अमरत्व की भावना ही मनुष्य के जीवन को सौंदर्य तथा माधुर्य से पूर्ण बनाती है। यह भौतिक स्वर्ग या उस पार का बहिश्त, एक ही भावना हैं। चिरसुख की इच्छा ही उनमें पाई जाती है।

* पुरुषों की त्रुटियों में उनकी स्वार्थपरता निहित रहती है, नारियों की त्रुटियों में मूल में उनकी दुर्बलता।

* जिस श्रम से हमें आनंद प्राप्त होता है, वह हमारीं व्याधियां के लिए अमृततुल्य है, हमारी वेदना की निवृत्ति है।

* अपार जलराशि से भी प्रेम की पिपासा शांत नहीं हो सकती और न ही भयानक बाढ़ इसे डुबो सकती है।

* यदि आप चाहते है कि दूसरे आपके रहस्य को गुप्त रखें, तो प्रथम आप स्वयं ही इसे गुप्त रखो।

* किसी राष्ट्र के लिए इससे अधिक दुर्भाग्य और क्या हो सकता है कि वहां के व्यक्तियों में उपासना का अभाव हो।

* कला अति सूक्ष्म और कोमल है, अत: अपनी गति के साथ यह मस्तिष्क को भी कोमल और सूक्ष्म बना देती है।

* सबसे अच्छा यही है कि आप अपना कर्त्तव्य कर और शेष ईश्वर के अधीन छोड़ दे।

* शिशुओं के केवल सौंदर्य और भोलेपन को निरखिए, उनकी सुनिए मत।

* मस्तिष्क का अपना विशेष स्थान है और वह स्वत: ही स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग में परिणत कर सकता है।

* जो व्यक्ति भलाई से प्रेरित होकर भलाई करता है, वह न तो प्रशंसा का आकांक्षी होता है, न पुरस्कार का, यद्यपि दोनों स्वत: ही उसे अंत में प्राप्त हो जाते हैं।

* क्षुधित जनता को कितनी मात्रा में भी राजनैतिक स्वतंत्रता संतुष्ट नहीं कर सकती।

* निराशावादी कितने सुखी हैं। उनको उस समय कितनी प्रसन्नता होती होगी जब वे यह सिद्ध कर देते हैं कि प्रसन्नता कुछ है ही नहीं।

* जो व्यक्ति अपने रहस्य को छिपाए रखता है वह अपनी कुशलता अपने हाथ में रखता है।

* बर्तन तभी सबसे अधिक ध्वनि उत्पन्न करते हैं, जब वे रिक्त होते हैं।

* कभी कीचड़ मत उछालो। हो सकता है कि तुम अपने लक्ष्य से चूक जाओ, किंतु तुम्हारे हाथ तो गंदे ही हो जाएंगे।

* ज्यों-ज्यों मनुष्य बूढ़ा होता जाता है। त्यों-त्यों जीवन से प्रेम और मृत्यु से भय होता जाता है।

* अनंत आलोकवान नक्षत्र तभी चमकाते हैं जब अंधकार पर्याप्त घनिभूत होता है।

* हर एक आपत्ति अभिशाप नहीं होती जीवन की प्रारम्भिक आपत्तियां अनेक बार आशीर्वाद सिद्ध होती हैं।

* मोर्चा लगकर नष्ट होने की अपेक्षा घिस-घिसकर मिटना कहीं श्रेयस्कर है।

* जिस प्रकार कीट वस्त्रों को कुतर डालता है, उसी प्रकार ईर्ष्या मनुष्य को नष्ट कर देती है।

* शिक्षा नहीं अपितु चरित्र ही मनुष्य की सर्वोच्च आवश्यकता है और उसका सर्वाधिरक्षक।

* जीवन की असंख्य चिन्ताओं के संतुलनस्वरूप ईश्वर ने हमें आशा और निद्रा भी प्रदान की हैं।

* सबसे सुंदर किरीट पृथ्वी पर सदैव कण्टकों का रहा है और कण्टकों का ही रहेगा।

* प्राप्त करने की अपेक्षा दान करना कहीं अधिक सौभाग्य का द्योतक है।

* जब मनुष्य उपासना प्रारम्भ करते हैं, तभी वे बढ़ने लगते हैं।

* जो अपना कर्त्तव्य करने से चूकता है, वह एक महान लाभ से स्वयं को वंचित रखता है।

* यदि आकांक्षाएं घोड़े बन पातीं तो भिखारी भी उन पर सवार हो जाते।

जो कुछ नहीं करता, केवल वही आलसी नहीं, आलसी वह भी है जो अपने काम से भी अच्छा काम कर सकता था।

* बिना शारीरिक उन्नति के आध्यात्मिक उन्नति असम्भव है।

* स्वर्ग का श्रृंगारपूर्ण विश्राम अवश्य है, किन्तु पृथ्वी का वरदान तो श्रम ही है।

* जो आहार मस्तिष्क को मिलता है उसी के आधार पर वह विकसित होता है।

* भोजन के समय कभी विवाद मत करो।

* यह आधुनिक व्यापार का छल नहीं है जिससे हम भयभीत होते हैं, अपितु यह तो ईमानदार आदमी की अनभिज्ञता है कि वह क्या कर रहा है।

* बीस वर्ष की अवस्था में हमारी अभिलाषा प्रधान होती है, तीस की अवस्था में बुद्धि औरचालीस में निर्णय प्रधान होता है।

* आदमी की खुशहालियां उसकी सच्चरित्रता का फल है।

* हमारा दु:ख जितना ही तीव्र हो जिह्वा उतना ही कम व्यस्त रहेगी।

* जो कुछ मैंने दिया था वह मेरे पास अब भी है, जो कुछ व्यय किया वह विद्यमान था, जो संचित किया था वह मैंने खो दिया।

* दर्शन कलाओं की नानी और स्वर्ग की पुत्री है।

* मृत्यु और कर के अतिरिक्त इस विश्व में कुछ भी निश्चित नहीं है।

* अनंत आलोकवान नक्षत्र तभी चमकते हैं जब अंधकार पर्याप्त घनीभूत होता है।

❋ वैरी भी अद्‌भुत कार्य करने पर प्रशंसा के पात्र बन जाते हैं।

❋ मित्र द्रोही, कृतघ्न, स्त्री हत्यारे और गुरु घाती- इन चारों का प्रायश्चित नहीं होता।

❋ बिना अमरत्व की भावना से प्रेरित हुए आज तक किसीने अपने देश के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग नहीं किया है।

❋ अज्ञानी रहने की अपेक्षा उत्पन्न ही न होना कहीं श्रेयस्कर है, क्योंकि अज्ञानता ही दुर्भाग्य का मूल है।

❋ अपवित्र कल्पना भी उतनी ही बुरी है जितना बुरा अपवित्र कमी संयमित इच्छा ही सर्वोच्च परिणाम पर ले जाती है।

❋ जो घृणा हम शत्रुओं के प्रति रखते हैं वह हमारी अपेक्षा उनकी प्रसन्नता को कम आघात पहुंचाती है।

❋ जब मनुष्य उपासना प्रारम्भ करते हैं, तभी वे बढ़ने लगते हैं।

❋ उन सुकृति रससिद्ध कवियों की जय हो जिनके यश-रूपी शरीर को बुढ़ापे और मौत का भय नहीं है।

❋ निर्मल अंत:करण को जिस समय जो प्रतीत हो वही सत्य है। उस पर दृढ़ रहने से शुद्ध सत्य की प्राप्ति हो जाती है। जिस प्रकार दीपक दूसरी वस्तुओं को प्रकाशित करता है और अपने स्वरूप को भी प्रकाशित करता है, उसी प्रकार अंत:करण दूसरी वस्तुओं को भी प्रत्यक्ष करता है और अपने आपको भी। संदेह की स्थिति में सज्जनों के अंत:करण की प्रवृत्ति ही प्रमाण होती है। जब तक अंत:करण मलरहित, पापरहित नहीं होगा, तब तक वास्तविक दृष्टि का उदय नहीं होगा।

❋ संगठित होकर हम खड़े रह सकते हैं, विभाजित होते ही गिर पड़ेंगे।

❋ जब तुम सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने की आकांक्षा रखते हो, उस समय दूसरे या तीसरे स्थान तक पहुंच जाना भी पर्याप्त श्रेयस्कर है।

❋ चाहे घनिष्ठता घृणा न भी उत्पन्न करे, किन्तु प्रशंसा को खो बैठती है।

❋ चरित्र के लिए उतनी घातक कोई वस्तु नहीं जितने अपूर्ण कार्य।

❋ किसी उपदेशक के दोषों पर प्राय: जल्दी ही ध्यान आकर्षित होता है।

❋ कानून कभी-कभी निद्रालीन हो जाते हैं, मरते नहीं।

❋ उपदेष्टाका युक्ति-दौर्बल्य है यदि श्रोताका अन्त:करण उसकी बात ग्रहण करके उसके अनुकूल नहीं हो जाता।

❋ वियोग तो अज्ञानसे उत्पन्न भ्रम है।

❋ जो व्यक्ति अपने रहस्य को छिपाए रखता है वह अपनी कुशलता अपने हाथ में रखता है।

❋ प्रतिरोध और सहनशीलता से हम प्रेम को ईश्वर के समकक्ष पहुंचा सकते हैं।

❋ वह मूर्खों में भी भारी मूर्ख है जो मानता है कि संसार में सुख है।

❋ संसार के इतिहास में कभी भी काफी सुलझे हुए आदमी सभी जगहों पर नहीं हुए।

❋ कानून हमको गैर-कानूनी आचरण से रोक सकता है, लेकिन ऐसे अनाचार से नहीं रोक सकता जो कानून के दायरे से बाहर हो।

❋ घनिष्ठता एक जादूगर है जो कुरूपता के प्रति तो दयालु है, लेकिन सौन्दर्य के प्रति कठोर।

❋ किसी एक चीज में नाकामी का मतलब हार नहीं है। उससे निराश हुए बिना दूसरे क्षेत्र में अपनी सफलता का दरवाजा खोलना चाहिए।

❋ ऐसे कोई वास्तव में महान व्यक्ति नहीं हुआ जो वास्तव में सदाचारी न रहा हो।

* जो व्यक्ति भलाई से प्रेरित होकर भलाई करता है, वह न तो प्रशंसा का आकांक्षी होता है, न पुरस्कार का, यद्यपि दोनों स्वत: ही उसे अंत में प्राप्त हो जाते हैं।

* अपयश का जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा सादर मृत्यु प्राप्त करना कितना सुन्दर है।

* मस्तिष्क का अपना विशेष स्थान है और वह स्वत: ही स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग में परिणत कर सकता है।

* पृथ्वी पर ये तीनों व्यर्थ हैं- प्रतिभाशून्य की विद्या, कृपण का धन और डरपोक का बाहुबल।

* प्रिय कठिनाई से प्राप्त होता है। फिर कठिनाई से वश में होता है। फिर जैसा हृदय है, वैसा नहीं होता, तो वह प्राप्त होकर भी अप्राप्त ही है।

* जिसका भाग्य हर मोड़ पर धोखा दे रहा हो, वह भाग्यवादी नहीं बनेगा क्या? नियति जिसके हर प्रयास पर पानी फेर दे उसे नियति के अस्तित्व को स्वीकारने से कौन और कोई भी रोक नहीं पाएगा।

* एक साथ ही लक्ष्मी और सद्विवेक का वरदान प्राय: मनुष्यों को कम ही मिलता है।

* जो यह कहता है कि ईमानदार व्यक्ति नाम की कोई वस्तु है ही नहीं, वह स्वयं धूर्त है।

* किसी काम को करने से पहले इसे करने की दृढ़ इच्छा अपने मन में कर लें और सारी मानसिक शक्तियों को उस ओर झुका दें। इससे आपको अधिक सफलता प्राप्त होगी।

* यदि हमारी इच्छाशक्ति ही कमजोर होने लगेगी तो मानसिक शक्तियां भी उसी तरह काम करने लगेंगी।

* प्रलोभनों के प्रतिरोध का प्रत्येक क्षण ही एक महान विजय है।

* शिशु भी बड़ों के समान ही होते हैं, उन्हें भी दूसरों के अनुभवों से लाभ उठाना नहीं आता।

* यदि अपना भाई भावावेश में कोई त्रुटि कर डाले तो उसका उस समय प्रतिकार करना उचित नहीं बल्कि समट से उबारने के लिये साथ देना चाहिये।

* रामायण के श्रीसीता-रामजी को विवाह काल और वनवास काल में सम्पत्ति कम आशीर्वाद अधिक मिला। परिणामस्वरूप उनका कण्टकमय जीवन मङ्गलमय बन गया। गन्धर्व विवाह करनेवालों को माता-पिता का आशीर्वाद नहीं मिलता है।

* स्वार्थी अपने स्वार्थवश सत्य पथानुगामी के प्रति बाधक बन जाता है किन्तु यदि जीव प्रपन्न है, ईश्वरनिष्ठ है तो भगवान उसके समट को अपना ही समट मान कर मोचन करते हैं।

* देव हो या दानव, इन्सान हो या भगवान किसी के जीवन में समानता नहीं देखी जाती है।

* भाई कैसा भी हो साध्वी बहिन के मन में भाई के प्रति अगाढ़ प्रेम रहता है।

* मोहासक्त जीव को ममता अपने जाल में आबद्ध कर लेती है।

* उदार मनवाले विभिन्न धर्मों में सत्य देखते हैं, संकीर्ण मनवाले केवल अंतर देखते हैं।

* लोगों के छिपे हुए दोष जाहिर मत करो। इससे उनकी इज्जत घट जाएगी पर तुम्हारा तो विश्वास ही उठ जाएगा।

* कमजोरी कभी न हटनेवाला बोझ और यंत्रणा है।

* प्रशंसा एक अत्यंत क्षणभंगुर उत्तेजना-मात्र है, जो इसके पात्र से निकटता प्राप्त करते ही शीघ्र नष्ट हो जाती है।

* पृथ्वी पर कोई ऐसा दु:ख नहीं है स्वर्ग जिसका निवारण न कर सके।

* पानी जैसी चंचलता से मनुष्य महान नहीं बनता।

* जो नैतिकता में अनुचित है, वह राजनीति में कभी उचित नहीं हो सकता।

❋ जीवन में बुद्धि का नहीं, लक्ष्मी का साम्राज्य है।

❋ सभी महान वैज्ञानिक आविष्कारों की खोज में संयम कल्पना का वास रहा है।

❋ सबसे कठिन तीन वस्तुएं हैं- एक रहस्य को अप्रकट रखना, कष्ट को भूल जाना और अवकाश का सदुपयोग करना।

❋ काननू एक ऐसे गढ़े के समान है जिसकी कोई थाह नहीं।

❋ अनीतिपूर्वक प्राप्त धन विष से भी अधिक विषैला माना गया है। इस विषम विष से परिवार में अपनी बुद्धि में विषमता उत्पन्न हो जाती है और यही अशान्ति दु:ख का मूल है।

❋ सभी जाति, कुजाति और नीच प्रवृत्ति के लोगों को प्रणाम नहीं करना चाहिये। योग्य धर्मनिष्ठ व्यक्ति को अभिवादन करना प्रणाम करना श्रेयस्कर है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम ने भी कृतघ्ननिपुण रावण को कभी प्रणाम नहीं भेजा। समरभूमि में मात्र वीरोचित प्रणाम किया। भगवान श्रीकृष्ण ने न तो कृपाचार्य को प्रणाम किया और न द्रोणाचार्य को, केवल पाण्डव-परिवार को सम्मान दिया।

❋ काजल से भी काली कोई चीज है, वो व्यक्ति का कलंक है।

❋ दुखों का सीधा संबंध व्यक्ति के अपने कर्म से है। लेकिन यह निश्चित है कि जो अपने जीवन के हर क्षण के प्रति जागरूक रहता है, उसके कष्ट स्वयं कम हो जाते हैं। जितने भी कष्ट आते हैं, हमारी जागरूकता की कमी से आते हैं। साधक जहां-जहां प्रमाद में जाता है, वहां-वहां उसकी कष्टानुभूति तीव्र हो जाती है।

❋ अध्ययन हमें आनन्द प्रदान करता है, अलंकृत करता है और योग्यता प्रदान करता है।

❋ किसी को भी अनुपस्थित व्यक्ति की निन्दा करने को उत्सुक नहीं होना चाहिए।

❋ नौका जल में रह सकती है किन्तु जल नौका में नहीं रहना चाहिए। उसी प्रकार साधक संसार में रहे, किन्तु संसार का माया मोह साधक के मन में न रहे।

❋ दुर्भाग्य सदैव उसी द्वार से आते हैं जो हम स्वयं उनके लिए अनावत छोड़ देते हैं।

❋ बहुत-से व्यक्ति यदि महान आकांक्षाओं से पूर्ण न होते, तो छोटी बातों में सफल हो जाते।

❋ एक पवित्र हृदय भक्ति का मन्दिर होता है, वहां साधक त्याग की पवित्र अग्नि प्रज्ज्वलित करता है, जो अदृश्य होती है, किन्तु फिर भी अनुभव-योग्य होती है।

❋ एक शताब्दी का दर्शन ही दूसरी शताब्दी का सामान्य ज्ञान होता है।

❋ शिक्षित व्यक्ति वह आलसी है जो कोरे अध्ययन द्वारा समय का नाश करता है।

❋ संसार की सर्वश्रेष्ठ और सर्वाधिक ज्ञान की रचनाएं प्राय: ब्रह्मचारी लेखकों की लेखनी से ही नि:सृत हुई हैं।

❋ वह मनुष्य परम सुखी है, जिसे सुबुद्धि प्राप्त है और जिसके पास विवेक का वास है।

❋ उस स्वाधीनता को तिलांजलि दे दो जो पाप की अनुचरी हो।

❋ यह आधुनिक व्यापार का छल नहीं है जिससे हम भयभीत होते हैं, अपितु यह तो ईमानदार आदमी की अनभिज्ञता है कि वह क्या कर रहा है।

❋ मित्र के लिए जीवनदान देना उतना कठिन नहीं है जितना कठिन कि ऐसा खोजना जिसके लिए जीवनदान किया जा सके।

❋ मनुष्य की सच्चाई का एक मात्र प्रमाण यह है कि अपने सिद्धांत के लिए वह अपना सब कुछ स्वाहा कर देने को तत्पर रहे।

* अपने प्रति दूसरों के जिस व्यवहार को तुम पसंद नहीं करते, वैसा व्यवहार स्वयं भी दूसरों के प्रति मत करो।

* शांति की विजय भी युद्ध की विजयों से कम महत्वपूर्ण नहीं है।

* दूसरों के दुर्भाग्य से बुद्धिमान व्यक्ति यह शिक्षा ग्रहण करते हैं कि उन्हें किस बात से बचना चाहिए।

* संसार में कोई ऐसी शक्ति नहीं जो उच्च, सरल, सत्य एवं कर्मण्य जीवन के प्रभाव को कम कर दे।

* हमारी आवश्यकताएं जितनी ही कम होंगी हम उतने ही देवताओं के निकटतम होंगे।

* जीवन के केवल दो स्थल ही दु:खमय होते हैं- प्रथम तो इच्छाओं की पूर्ति हो जाना और द्वितीय इच्छाएं अपूर्ण रहना।

* सुधारक चाहे कितना भी श्रेष्ठ पंक्ति का क्यों न हो, जब तक जनता उसे ठीक तरह से परख नहीं लेगी, उसकी बात नहीं सुनेगी। उपहास और विरोध तो किसी भी सुधारक के लिए पुरस्कार जैसे होते हैं। जो सुधारक अपने संदेश के अस्वीकार होने पर क्रोधित हो जाता है, उसे सावधानी, प्रतीक्षा और प्रार्थना सीखने के लिए वन में चले जाना चाहिए।

* गुप्त पाप करनेवाले व्यक्ति शंका मात्र से प्रकाश में आ जाते हैं।

* कायर लोग अपने जीवन काल में कई बार मरते हैं, लेकिन वीर लोग केवल एक बार मरते हैं। संसार में कायरों के लिए कहीं स्थान नहीं है। हम सबको किसी न किसी प्रकार कठोर परिश्रम करने दुख उठाने और मरने के लिए तैयार रहना चाहिए। कायर व्यक्ति जीवन में हरदम चापलूसी करता रह जाता है और निर्भीक अपने श्रम के बल पर अपनी जगह बना लेने में सफल हो जाता है।

* चुनौतियों को स्वीकार करनेवाले लोग ही असली बहादुर होते हैं। बहादुरों को परिणाम की फिक्र कभी नहीं करनी चाहिए।

* बिना अमरत्व की भावना से प्रेरित हुए आज तक किसी ने अपने देश के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग नहीं किया।

* हमारी अमरत्व की मधुर आशा किसी धर्म से उद्‌भूत नहीं होती, अपितु सारे धर्म इसी से उद्‌भूत होते हैं।

* यदि तुम सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने के आकांक्षी हो तो सबसे नीचे से चढ़ना शुरू करो।

* जहाँ आत्मीयता होती है, वहाँ अनिष्टकी आशमा हो ही जाती है।

* जुआ कितने बड़े अनर्थका हेतु है और उसके कारण कैसी-कैसी विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

* कभी-कभी चुप हो जानेसे भी झगड़ा आगे नहीं बढ़ता, वहीं खत्म हो जाता है।

* भगवान चाहते हैं कि सबमें सद्भाव, चिद्भाव और आनन्दभाव प्रकट हों। इसलिए जो वाणी त्रिगुणमय जीवोंके लिए हितकारी और उनमें सच्चिदानन्द भाव प्रकट करनेवाली होती है, उसीको भगवान्‌की वाणी कहा जाता है। जिस वाणीमें थोड़ा भी दलवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद मिले और यह भावना प्रतीत हो कि अमुक पन्थवाले तो भगवान्‌के धाममें जायेंगे और अमुक पन्थवाले नरकमें जायेंगे, तो यह समझना चाहिए कि वह भगवान्‌की वाणी नहीं है। भगवान तो अपने सब बन्दोंका, बच्चोंका भला चाहते हैं।

* किसी भी वस्तुका दान दो बार करना अधर्म है और मनुष्यको उसका फल भोगना पड़ता है।

* राजाको न्याय करनेमें विलम्ब नहीं करना चाहिए।

* जिनका धन, कुल, ऐश्वर्य, सौन्दर्य और आय अपने समान होती है- उन्हींसे विवाह और मित्रताका सम्बन्ध करना चाहिये। जो अपनेसे श्रेष्ठ या अधम हों, उनसे नहीं करना चाहिये।

* हर बातका जवाब नहीं देना चाहिए। कोई अंट-संट बोलता हो तो बोलने दो। यह समझकर उपेक्षा करो कि बाबा, तेरा मुँह है। तुझे जो बोलना है, तो बोल ले। कभी-कभी जीवनमें ऐसा अवसर आता है, जब कुछ न बोलना ही अच्छा रहता है।

❋ दहेजकी प्रथा पहले भी थी, लेकिन वह आज जैसी नहीं थी। पहले लड़कीको अचल सम्पत्तिमें हिस्सा न देकर चल सम्पत्तिमें-से बहुत अधिक दे देते थे और आजीवन तीज-त्यौहारोंपर देते जाते थे। लड़कीको देना उसपर दया करना नहीं है, भीख देना नहीं है। जैसे सम्पत्तिमें भाई-भाईका हिस्सा होता है, वैसे ही बहनका भी हिस्सा होता है।

❋ छेड़-छाड़से प्रेम और ताजा हो जाता है। रूठने-मनानेसे हर गृहस्थीका प्रेम बढ़ता है।

❋ अच्छे वेशमें बुरे लोग छिप जाते हैं। रावण साधुका वेश धारण करके आया और सीताजी को हर ले गया। आजकल तो चोर-डाकू साधुओंका ही नहीं, पुलिसका भी वेश धारण कर लेते हैं। इसीसे कहते है कि- **तुलसी देखि सुवेष भूलहिं मूढ़ न चतुर नर।** वेशको देखकर कभी मोहित नहीं होना चाहिए।

❋ जो राजा न्यायको लटकाकर लोगोंके हृदयमें अशान्तिकी स्थापना करते है, वे शान्ति-दाता, प्रजाका एजन करनेवाले राजा नहीं हैं।

❋ भवितव्यता सब करा लेती है, उसके सम्मुख मनुष्य की कुछ भी नहीं चलती।

❋ अपमान को आगे करके और सम्मान को पीछे ढकेलकर बुद्धिमान पुरुष को अपना कार्य साध लेना चाहिये। जैसे बने तैसे अपने कार्य को साध लेना ही बुद्धिमत्ता है और थोड़े अभिमान के वशीभूत होकर स्वार्थ का नाश कर देना यही सबसे बड़ी मूर्खता है।

❋ सन्देह अल्पज्ञता में है। दु:ख अपूर्ण में है। जो सर्वज्ञ है उसके सभी-के-सभी कार्य सन्देह रहित हैं, पूर्ण काम को सदा सुख ही सुख है, उसके लिये न कोई बुरा काम है न अच्छा। वह सबके परिणाम को जानता है, सबके प्रारब्ध को जानता है, सबके कारण, प्रारब्ध और भाग्य से परिचित है, वह जो भी करेगा उचित करेगा, वही करेगा जो होनवाला होगा।

❋ हम कोई शुभ संवाद सुनने को समुत्सुक बैठे हों, क्षण-क्षण पल पल उसके लिये गिन रहे हों और उसी समय आकर कोई हमें जैसा हम चाहते हों वैसा ही समाचार सुना दे तो चित्त चाहता है इसे अपना सर्वस्व दे डालें। उस समय जो प्रसन्नता होती है, वह वर्णनातीत है। उसका वर्णन वाणी से नहीं हो सकता। वह तो अनुभव की वस्तु है। प्यारे के मिलने के सम्वाद से बढ़कर संसार में दूसरा कोई सुखद सम्वाद है ही नहीं। जिन आँखों ने प्यारे के दर्शन कर लिये वे आँखें धन्य हैं, जिस क्षण में प्यारे के शुभागमन का शुभ सम्वाद सुनाई पड़े वह क्षण धन्य है। जिन कानों ने प्रियतम के पधारने का वृत्तान्त सुना वे ही कर्ण वास्तव में कर्ण है, हितैषी है, शुभचिन्तक और आत्मीय है। ऐसे पुरुष का जीवन भर प्रत्युपकार हो नहीं सकता। उसके सम्मुख तो सदा आँखें झुकी ही रहती हैं।

❋ आशा सम्भव असम्भव का विचार नहीं करती। अर्थी दोष की ओर ध्यान नहीं देता।

❋ अनन्य उपासना का अर्थ यह नहीं कि किसी अन्य देवी देवता को माने ही नहीं। मानना सभी को चाहिये। पूजा सभी की करनी चाहिये, किन्तु उनसे वर यही माँगे कि हमारा इष्ट में अनुराग हो। जैसे पतिव्रता का इष्ट तो पति ही है, किन्तु वह सास, ससुर, देवर, जेठ तथा अन्यान्य घर के सभी लोगों की सेवा करती है, उनके प्रति आदर भाव प्रदर्शित करती है, किन्तु वह सब करती है पति के ही लिये। ये सब मेरे पति के सगे सम्बन्धी हैं, इनकी सेवा करना मेरा धर्म है। जब मेरे पति ही इनकी सेवा करते हैं तो मुझे भी करनी चाहिये। इससे मेरे पति परमेश्वर प्रसन्न होंगे। इसी प्रकार समस्त देवी देवताओं की पूजा करना मानों इष्ट की पूजा है, सब अनुकूल होंगे तो हमारे इष्ट भी प्रसन्न हो जायँगे। जो इष्ट की तो प्रेम से पूजा करते हैं, अन्यों की द्वेषवश उपेक्षा करते हैं, वे उत्तम भक्त न कहकर प्राकृत भक्त कहलाते हैं।

✻ बक बक करना शूरवीर का काम नहीं। जो बड़बड़ाते हैं, वे पुरुषार्थ नहीं दिखाते। जो बहुत गर्जते-तर्जते हैं, वे कोरे ही होते हैं।

✻ अभिमान होता है ऐश्वर्य के कारण, कला-कौशल के कारण। मेरा इतना भारी राज्य है, मैं इतने बड़े प्रदेश का अधीश्वर हूँ, इतनी पृथ्वी मेरे अधीन है। मेरे पास इतना विपुल धन है, मेरे यहाँ बड़ी रूपवती सुकुमारी कुलवती स्त्रियाँ हैं, मेरा सर्वत्र इतना मान-सम्मान है। मैं ऐसा तेजस्वी और प्रभावशाली हूँ। इसी प्रकार के और भी ऐसे ही अनेक कारणों से प्राणी अपने बन्धु-बान्धवों और सगे सम्बन्धियों का तिरस्कार कर दिया करता है।

✻ जैसे विद्या का फल विनय है, यज्ञ का फल स्वर्ग है, पाप का फल दु:ख है। वृक्ष का फल, फल है उसी प्रकार विवाह का फल पुत्र है। विवाह होने पर भी जिसने पुत्र का पुनीत मुख नहीं देखा, उसका विवाह करना व्यर्थ है। पुत्रोत्पन्न करना अत्यन्त पुण्य का कार्य है। पिता पितामहों के द्वारा जो शरीर न्यास रूप से प्राप्त होता है पुत्रोत्पन करके उनके ऋण से उऋण हुआ जाता है। जो पुत्रोत्पन्न किये बिना ही मर जाता है, वह पितरों का ऋणी रहता है। अपुत्री की गति नहीं, उसे स्वर्ग की प्राप्ति नहीं होती। पुन्नाम नाम का नरक है, उससे पुत्र ही पार करा सकता है। पुत्र अपनी आत्मा ही है, अपना ही एक अंश है, स्वयं पति ही पत्नी के उदर में प्रविष्ट होकर बालक बनकर उत्पन्न होता है। इसीलिये पुत्रवती पत्नी की जाया संज्ञा है।

✻ कोई मातृ-पितृ दोष न हो तो प्राय: पुत्र पिता के ही अनुरूप होता है। पुत्र प्राप्ति होना यह विवाह का परम सुख है। विवाह से भी अधिक आनन्द घर में पुत्रोत्पत्ति के समय होता है। पुत्रोत्पन्न होने पर पृथ्वी के ही स्वजन प्रसन्न नहीं होते अपितु पितृलोक में बैठे पितृगण भी आनन्द में विभोर होकर नाचने लगते हैं। वे भी सोचते हैं, हमारा श्राद्ध तर्पण करने को एक अधिकारी आ गया।

✻ अपनी वस्तु कहीं भी क्यों न हो वह अपने को अवश्य मिल ही जाती है। जो हमारे भाग्य की वस्तु है, वह दूसरे की हो ही नहीं सकती और जो हमारे भाग्य में नहीं है वह लाख प्रयत्न करने पर भी हमें प्राप्त नहीं हो सकती।

✻ जहाँ अभिमान हो जाता है, वहीं से पतन आरम्भ होता है। जब तक नम्रता रहती है, तब तक प्राणी अपने स्वरूप में रहता।

✻ जिसकी मृत्यु आई नहीं है उसे चाहे काल के मुख में भी डाल दो, तो भी वहाँ से भी बच आवेगा और जिसकी मृत्यु आ गई है, वह कहीं चला जाय, अवश्य मर जायगा।

✻ मनुष्य जहाँ से उत्पन्न होता है, जिन कारणों से उत्पन्न होता है, उसमें उसके संस्कार कुछ-न-कुछ शेष रह ही जायँगे। हमारे पिता, पितामह, प्रपितामह सभी ने विवाह किया है, सभी के पुत्र उत्पन्न हुए हैं सभी को पुत्रोत्पन्न होने में प्रसन्नता हुई है सभी ने बड़े उल्लास से इन उत्सवों को मनाया है। उन सबके संस्कार हमारे भीतर सूक्ष्म रूप से विद्यमान रहते हैं। इसीलिये प्राणिमात्र की स्वाभाविक इच्छा विवाह करने और पुत्रोत्पन्न करने की होती है। जीवमात्र की इन कामों में स्वत: प्रवृत्ति होती है।

✻ लोभी से कोई पैसा भी माँगे, तो उसके प्राण सूख जाते हैं।

✻ मनुष्य जैसा होता है दूसरों को भी वैसा ही समझता है। युग के प्रभाव से लोगों के मन मलीन हो गये हैं। उसके मन में काम, क्रोध तथा लोभ की भावनायें अधिक बढ़ गई हैं। कोई किसी के धर्मात्मा होने की, सत्यवादी होने की, भगवद्भक्त तथा गुणी होने की सच्ची भी प्रशंसा करे तो हमें विश्वास नहीं होता। इसके विपरीत किसी सत्पुरुष की झूठी भी निंदा कोई करे, तो हमें तुरन्त विश्वास हो जाता है। जिनके मन में पाप बसा रहता हैं, वे सर्वत्र पाप को ही देखते हैं। स्वयं दोषी होने से दूसरों के दोषों पर तुरन्त विश्वास जम जाता है। किसी में कोई दोष हो और उसको कोई

कहे तो भी बुरा लगता है। फिर बिना दोष के जो मिथ्या दोषारोपण करते हैं, वह कितना बुरा लगता होगा। किन्तु निन्दा करनेवाले स्वार्थियों को इतना अवकाश कहाँ कि वे सत्यासत्य की छान-बीन करें, वे तो किसी घटना को देखकर अनुमान लगाते हैं फिर एक दूसरे से सुनकर कहने लगते हैं, उसको सत्य मानकर उसका प्रचार करते हैं। यही प्रवाद है। यह अपयश भी किसी पूर्व जन्मकृत दोष के ही कारण प्राप्त होता है।

* जितनी भी घटनायें होती हैं, इन सबमें पूर्व जन्म के संस्कार विद्यमान् रहते हैं। बिना पूर्व जन्मों के सम्बन्ध से न तो प्रेम ही होता है न द्वेष। हम मन से बहुत चाहते हैं उससे प्रेम न करें, किन्तु चित्त बलात् उसकी ओर खिँच जाता है। इसी प्रकार हम नहीं चाहते किसी से शत्रुता करें किन्तु किसी को देखते ही ऐसा क्रोध आ जाता है कि चित्त चाहता है, इसके प्राण हरण कर लें।

* कलह कामिनी और कांचन के ही कारण हुआ करती है। कांचन में भूमि, धन, अन्न तथा अन्य सभी जीवनोपयोगी वस्तुओं का समावेश है। एक वस्तु को दो चाहते हैं, दोनों उस पर अपना स्वत्व समझते हैं, इसी पर विवाद होता है, मारपीट होती है और प्राणों तक की नौबत आ जाती है। जहाँ धन होगा, सुन्दरी स्त्री होगी वहाँ मनोमालिन्य, कलह, मारपीट अवश्य होगी। प्राचीन अर्वाचीन सभी इतिहासों में युद्ध के ही कारण मिलेंगे। हम जिस वस्तु को चाहते हैं, उसे यदि कोई दूसरा ले जाता है, तो हमारे मन में ईर्ष्या होती है। शक्ति होने पर हम उससे उस वस्तु के छीनने का प्रयत्न करते हैं। शक्ति न रहने पर उसका कुछ-न-कुछ अनिष्ट करने की बात सोचते हैं। किसी को कुछ देने को कह दो और फिर उसे न दो, तो वह शत्रु हो जाता है। ब्राह्मण को भोजन के लिये निमंत्रित कर दो और फिर उसे भोजन न कराओ तो वह शत्रु के समान आचरण करने लगेगा। शापा-शापी होगी, कलह होगी। इसीलिए शास्त्रकारों ने कहा है- न तो किसी के धन पर मन चलाना चाहिये न किसी की वस्तु को अन्याय से लेने का ही प्रयत्न करना चाहिये। धन उपद्रव ही तो कराता है। जहाँ जायगा वहीं कलह करायेगा।

* मन में जब द्वेष उत्पन्न हो जाता है तो मनुष्य को कर्त्तव्याकर्त्तव्य का विवेक रहता नहीं। जो न करने योग्य काम होता है, उसे भी कर डालता है। उसका परिणाम यह होता है कि अन्याय करनेवाले का तुरन्त नाश हो जाता है। अत्युग्र पाप और अत्युग्र पुण्य का फल तीन दिन में, तीन पक्ष में, तीन मास या तीन वर्ष में यहीं मिल जाता है। पाप कर्म छिपता नहीं और पापी के साथी भी समय पर उसे छोड़कर चले जाते हैं। अधर्म करके यदि कोई सुखी होता तो इतने बड़े-बड़े विद्वान् लोग कष्ट सह-सहकर धर्मोपार्जन नहीं करते।

* अभ्युदय में और शोक के समय सम्बन्धियों को सहानुभूति प्रकट करने के लिये जाना अत्यावश्यक है। अभ्युदय में एक बार न भी जाय किन्तु शोक के अवसर पर जाना तो अत्यावश्यक है।

* जब जिसकी मृत्यु आ जाती है, तब तिसके सभी साधन वैसे ही बन जाते हैं। प्रारब्ध को कोई मेंट नहीं सकता। होनी होकर ही रहती है।

* मूर्ख और शफदूसरों की फूँक से बजते हैं।

* यह धन इतनी बुरी वस्तु है कि अच्छे अच्छे लोगों का मन डिग जाता है। इसका परिणाम चिन्ता, दु:ख, कलह और अशान्ति है। धन आने पर उसकी रक्षा में दु:ख होता है, न आने पर उसके अभाव में दु:ख होता है तथा प्राप्त करने में भी नाना भाँति के दु:ख उठाने पड़ते हैं। जो वस्तु बिना भगवान के अर्पण किये व्यवहार में लाई जाती है, उसका परिणाम अच्छा नहीं होता। उसको देखकर सबका मन चञ्चल हो जाता है।

* पापी के साथी चिरकाल तक साथ नहीं देते। अवसर आने पर भय, लोभ या अन्य स्वार्थ समुपस्थित होने पर वे

उसका साथ छोड़कर चले जाते हैं। इस लोक में चाहे पापी का कोई साथ दे भी दे, किन्तु परलोक में तो अपने किये पाप का फल स्वयं ही भोगना पड़ता है।

❋ इस संसार में किसी के मन का पता नहीं चलता कब कैसा हो जाय। हृदय में निरन्तर सात्विक, राजस और तामस तीन प्रकार के भाव उठते रहते हैं। जैसे समुद्र में निरन्तर हिलोरें उठती हैं वैसे ही त्रिगुणात्मिका असंख्यों उर्मियाँ हृदय सागर में उठती रहती हैं। जिनका जीवन भर पुत्र मानकर पालन किया है, कभी उनके प्रति द्वेष के भाव उत्पन्न हो जाते हैं। जिनके लिये सदा पानी की भाँति सुवर्ण बहाया है, कभी उनके लिये एक पैसा व्यय करने में कष्ट प्रतीत होता है। जिनको जीवन भर माता, बहिन, पुत्री की भाँति माना कभी उनके प्रति मन में बुरे भाव उठने लगते हैं। जिस धन को सदा हेय और तुच्छ समझते रहे हैं, कभी उसके प्रति आसक्ति हो जाती है कि प्राणों से हाथ धोना पड़ता है। जिनके चरणों को सदा चूमते रहे हैं, देवता के समान जिनकी नित्य पूजा करते रहे हैं, जिनके सम्मुख कभी हमने सिर नहीं उठाया है, उनके प्रति कभी ऐसा क्रोध आ जाता है कि मुख पर हम उनका अपमान करने को उद्यत हो जाते हैं। इसीलिये शास्त्रकारों ने बार-बार इस बात पर बल दिया है कि इस दुष्ट पापी चोर मन का कभी विश्वास न करे, न जाने कब धोखा दे जाय। निरन्तर अपने को भगवान् की ही शरण में समझना चाहिये। भगवान की जो वेद शास्त्ररूपी आज्ञा है, उसी का यथाशक्ति, यथा सामर्थ्य सदा अव्यग्रभाव से पालन करते रहना चाहिये।

❋ चोर का हृदय तो साहसपूर्ण होता है जो रात में इतने लोगों के रहते घर में घुस जाता है, किन्तु उसके पैर कच्चे होते हैं, तनिक सन्देह होते ही उसके पैर उखड़ जाते हैं और वह भाग खड़ा होता है।

❋ जो भी वस्तु, जो भी घटना, जो भी देश, जो भी काल हमें भगवत् स्मृति करावे वह पुण्य है, इसके विपरीत जो हमें अधिकाधिक संसारी विषय भोगों की ओर प्रवृत्त करे वह पाप है। विष्णु स्मरण ही सम्पत्ति है और विष्णु विस्मरण ही विपत्ति है।

❋ नाश के पूर्व व्यक्ति अहंकारी हो जाता है, किन्तु सम्मान सदैव व्यक्ति को नम्रता प्रदान करता है।

❋ केवल जीवन की असफलताएं ही सद्गुणों से वंचित रखती हैं।

❋ जो कुछ तुम इच्छा करते हो यदि तुम वह कर नहीं सकते तो वही इच्छा करो जो तुम कर सकते हो।

❋ जो व्यक्ति अपने मस्तिष्क में उपजे विचारों को बदल सकने में अक्षम हो और न ही विषय में बदलाव चाहता हो, वह उन्मादी है, वह कट्टरपंथी है। मनुष्य का मस्तिष्क बंजर खेत की तरह है। जब तक इसमें बाहर से मसाला नहीं डाला जाएगा, तब तक इसमें कुछ भी पैदा नहीं हो सकता। मस्तिष्क किसी तरह के बंधन को स्वीकार नहीं करता। यहां तक कि अपने स्वामी की पराजय को भी।

❋ जब तक आप स्वदेश-प्रेम को मानवता से बाहर नहीं खदेड़ देते, तब तक आप कभी भी एक शान्तिमय विश्व का निर्माण नहीं कर सकते।

❋ जो व्यक्ति उच्च विचारों की संगति में रहते हैं, वे कभी भी एकाकी नहीं हो सकते।

❋ जीवन में सबसे महान सुख किसी वस्तु को त्याग कर चले जाने में है। उसकी प्राप्ति किसी वस्तु के मिलने में नहीं, उसके त्याग में है।

❋ धर्म का आचरण करो, लोक धर्मों को छोड़ दो, साधु पुरुषों की सदा सेवा करो, काम तृष्णा को त्याग दो। अविलम्ब अन्यों के दोष गुणों की चिन्तना छोड़कर एक मात्र भगवत् सेवा और कथा का रस-पान करो

❋ राजनीति की उत्पत्ति कलह के ही कारण हुई है। संग्रह ही इसकी उत्पत्ति में कारण है अत: राजनीति में कलह होगी

ही। कलह होना, मतभेद होना एक दूसरे के मत का खंडन करना राजनीति में दूषण नहीं भूषण है। किन्तु जब स्वार्थ सिद्धि के लिये अधर्म अन्याय का आश्रय लिया जाता है तो कहते तो उसे राजनीति ही हैं, किन्तु वह कूटनीति बन जाती है और अधर्म प्रधान देशों में कलियुग जैसे काल में उसी का बोलबाला होता है।

❊ उत्तम, मध्यम और अधम तीन प्रकार के मनुष्य बताये हैं। अधम पुरुष तो वे हैं जो धन को ही आगे रखकर शासन में प्रवेश करते हैं, कि वहाँ जायेंगे तो इतना पैसा पैदा कर लेंगे। उनकी दृष्टि धर्म पर न रहकर पैसा पर रहती है। आजकल शासक पैसे लेकर कैसे-कैसे घृणित कार्य करते हैं यह बड़ी नीचता है। मध्यम पुरुष वे होते हैं जो धन भी चाहते हैं किन्तु सम्मानपूर्वक। जो सदाचार हीन है उसका सम्मान तो समाज में होगा ही नहीं ऐसे लोगों का जो सम्मान करते हैं वे या तो लोभवश या भय वश। इसलिये मान सहित धन की कामना भी बहुत अच्छी नहीं। उत्तम पुरुष उनको बताया है जो केवल अपनी कीर्ति को विमल करने को मान-सम्मान की वृद्धि के लिये धर्मपूर्वक कार्य करते हैं। क्योंकि बड़े लोगों का सम्मान ही धन है। कवि का, शासक का, विद्वान का, धर्मपत्नी का तथा अतिथि आदि का सम्मान न हो तो इनका मन मर जायेगा। ये सम्मान के पात्र हैं। किन्तु झूठ बोलकर सदाचार को छोड़कर जो मान चाहता है वह चाहे साक्षात् ब्रह्मा भी क्यों न हो अपूज्य बन जाता है।

❊ शरीर को बनाये रखने की चिन्ता ही अज्ञान है, भौतिकता है। कुछ लोग कल के लिये फल रखने लगे। प्राणी तो भावमय है जैसी भावना करता है वैसा हो जाता है।

❊ हमारे यहाँ अपने गुण का स्वयं बखान करना तथा दूसरों के दोषों को प्रकट करना सबसे बड़ा पाप है। अपने आप अपनी प्रशंसा करना मृत्यु के सदृश है और जो दूसरों के अवगुणों का बखान करता फिरता है उसे बड़ा पाप लगता है।

❊ स्वार्थ के वशीभूत होकर मनुष्य का कहाँ तक पतन हो सकता है इसका नग्नचित्र देखने को मिलता है। पहिले लोग धर्म से डरते थे, अब तो धर्म को राजनीति से निकालकर फेंक दिया है। धर्म भावना विहीन राजनीति का ऐसा परिणाम होता है। इस धर्म प्रधान देश की सरकार ने अपने को धर्महीन या धर्म निरपेक्ष घोषित कर दिया है। उसका जो भयमर परिणाम होगा, उसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

❊ केवल राजाज्ञा राज्यविधि-काननू-के सहारे कोई न तो सुधार हो सकता है न शासन और न सदाचार का पालन। लोगों में सहानुभूति नहीं रही, मनुष्यता नहीं। धर्मभावना नहीं रही। नीचे से ऊपर तक सब अर्थ लोलुप हो गये हैं। बिना पैसा के कोई बात नहीं करता। पैसा दे दो झूठ को सच और सच को झूठ सिद्ध करा लो।

❊ भाग्यशाली जहाँ जाता है, वहीं इष्ट वस्तु को प्राप्त कर लेता है, रिक्त हस्त कभी लौटता ही नहीं। एक वस्तु के लिये सहस्र जन उत्सुक हैं, उनमें से केवल एक को वह वस्तु प्राप्त होती है शेष सब देखते के देखते ही रह जाते हैं, यह भाग्य नहीं तो और क्या है। भाग्यवान् के प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी अनुकूल बन जाती हैं इसके विपरीत भाग्यहीन पुरुष के समस्त उपयोगी साधन भी व्यर्थ बन जाते हैं।

❊ अमोघतीक्ष्ण यन्त्र से उभारा हुआ आदमी चाहें एक बार चंचल न भी हो, किन्तु स्त्री का उभारा हुआ पुरुष शान्त बैठ सके, उसे उत्तेजना न हो यह असम्भव है।

❊ मनुष्य जब जान बूझकर भी अनजान बन जाता है। यह जानता भी है, इस काम के करने से मेरा पतन होगा, यह कार्य मेरे वर्ण, आश्रम, पद, प्रतिष्ठा, सदाचार तथा कुल के विरुद्ध है फिर भी उसे बार-बार करता है। जान-बूझकर करता है। पिछली की हुई प्रतिज्ञाओं को भूल जाता है।

❊ जहाँ धन का मद हुआ तहाँ मनुष्य कामी बन जाता है। कामी पुरुष को कर्त्तव्या कर्त्तव्य का विवेक नहीं रहता।

* मनुष्य का जीवन इसलिए है कि वह अत्याचार के खिलाफ विजय मिलने तक लड़ता रहे। मनुष्य जीवन का उद्देश्य आत्मदर्शन है और उसकी सिद्धि का मुख्य उपाय परमार्थिक भाव से जीव मात्र की सेवा करना है। मनुष्य को चाहिए कि वह अपने जीवन को समय के किनारे पर पड़ी हुई ओस की भांति हलके हलके नाचने दे।

* मांगना लज्जा का काम है। अपनी मेहनत से ही कोई चीज हासिल करना सच्चे इंसान का काम है।

* जहां मेहनत नहीं, वहां सुख नहीं हो सकता। जिस देश से मेहनत चली गई समझ लो उस देश को घुन लग गया। जिस घर में मेहनत की तालीम नहीं होती, उस घर के बच्चे जल्दी ही घर का नाश कर देंगे।

* कोमल हाथ से स्पर्श करो क्योंकि वनों में भी आत्मा है।

* **दान देते ही रहो -** अपनी डायरी में, एक विनम्र लोहार ने निम्नलिखित पद्य लिख लिया था- क्या, फिर से देना होगा? मैंने घबराहट में पूछा,

ओह, नहीं, देवदूत ने मुझे देखते हुए कहा, तब तक देते ही जाओ, जब तक मालिक तुमको देना बन्द नहीं कर देता।

ईश्वर कभी भी हमें प्यार करना बंद नहीं करता, वह समान रूप से हम पर अपने दानों की वर्षा करता रहता है। चाहे हम कितनी ही बार उसे अस्वीकार करें, वह सदा खुले हाथों हमारा स्वागत करने के लिए और सही रास्ते पर हमें उत्साहित करने के लिए तैयार रहता हैं।

उसी तरह हमें भी दूसरों के साथ व्यवहार करना चाहिए। दूसरा आदमी चाहे कोई भी क्यों न हो, तुम उसके प्रति वही प्रेम प्रकट करो जिसे ईश्वर तुम्हारे और उसके प्रति प्रकट करता है। चाहे जीवन में उसकी स्थिति, विश्वास, धर्म, जाति, रंग, प्रतिभा कुछ भी हो, वह कितना ही अच्छा या बूरा क्यों न हो, उसे भी हम सबके पिता ने बनाया है। लगातार उसे अपना विचार, समय और भौतिक उपहार देते रहकर, तुम केवल परमपिता का अनुकरण करते हो, जो तुम्हें कभी देना बंद नहीं करता। एक आदमी था और लोग उसे पागल कहते थे। मगर वह जितना ज्यादा देता था, उसका भंडार ही ज्यादा भरता जाता था।

* संसार को दु:खमय बनानेवाली अधिकांश दुष्टताएं शब्दों से ही उत्पन्न होती हैं।

* सभी व्यक्ति सत्य, पवित्रता व स्वार्थहीनता की उपासना करते हैं, केवल इसी कारण उन्हें इसका तनिक भी अनुभव नहीं। काश, वे इन्हें जान-भर पाते।

* यदि नेत्रहीन व्यक्ति का नेतृत्व करनेवाला भी नेत्रहीन ही हो तो दोनों कूप में गिर पड़ेंगे।

* कठिनाइयों में ही सिद्धांतों की परीक्षा होती है। बिना विपत्तियों में पड़े मनुष्य नहीं जान सकता कि वह ईमानदार है या नहीं।

* क्षुद्र आत्मा कभी भी महान आशा का आवास नहीं बन सकती।

* जिसका उद्देश्य ऊंचा है, उसे आरामतलबी और हरदिल- अजीजी से खौफ खाना चाहिए।

* द्वेष और कपट को त्याग दो। संगठित होकर दूसरों की सेवा करना सीखो, यही हमारे देश की महती आवश्यकता है।

* ऐसे भी व्यक्ति हैं जो अपने पास सब कुछ बताते हैं, फिर भी उनके पास कुछ नहीं है। ऐसे भी हैं जो स्वयं को विपन्न बताते हैं, फिर भी उनके पास अतुल सम्पदा है।

* दर्शन कभी भी सम्भावनाओं से आगे नहीं बढ़ पाता और उसकी प्रत्येक धारा में संदेह सुरक्षित रहता है।

* पूर्व जन्म संस्कार उदय होने पर असंभव-सी लगनेवाली बात संभव हो जाती हैं। पाप पुण्यों में प्रवृत्ति पूर्वजन्मों के संस्कार वश ही होती है। जैसे प्राणी जहाँ-जहाँ भी जाता है, वहीं-वहीं उसकी छाया भी साथ-साथ जाती है उसी प्रकार जीव जिस योनि में जाता है उसके संस्कार तो उससे लिपटे ही रहते हैं। बिना भले बुरे संस्कारों के सम्बन्ध होता ही नहीं।

❊ कभी-कभी असंभव आशा भी संभव हो जाती है। जिनकी हम आशा खो चुके हैं, जिनके लिये हृदय के कोने में कहीं क्षीण-सी आशा है, वे यदि कहीं सहसा आ जायँ, तो प्रथम तो विश्वास ही न होगा। यदि कोई विश्वास करा दे, तो उन्हें पाकर कितनी प्रसन्नता होगी उसे शब्दों द्वारा व्यक्त करना असंभव है। जो वस्तु सुगमता से बिना श्रम के स्वत: प्राप्त है उसकी प्राप्ति में उतनी प्रसन्नता नहीं होती, चिरकाल की प्रतीक्षा के अनन्तर जो वस्तु प्राप्त होती है उसकी प्राप्ति में अवर्णनीय सुख होता है। जितना ही उसके आने में विलम्ब होता है, जितनी ही अधिक उसकी प्रतीक्षा की जाती है उतनी ही उत्कण्ठा बढ़ती है, जितनी अधिक उत्कण्ठा बढ़ती है उतना ही आनन्द आता है।

❊ जब धर्म से कार्य नहीं चलता तो लोग अधर्म का आश्रय लेते हैं।

❊ दीपक सबको प्रकाश देता हुआ चुप-चाप स्थिर रहता है। बुरे काम करनेवाले की निन्दा नहीं करता, अच्छे काम करनेवाले की प्रशंसा नहीं करता। सभी को समान भाव से प्रकाश प्रदान करता है।

❊ जहाँ शील संकोच निभाना पड़ता है, वहाँ खुलकर हँसी हो ही नहीं सकती।

❊ बड़ों का जीवन मूर्तिमान साकार उपदेश है।

❊ वैद्य जहाँ पहुँच जायगा, वहाँ रोगी न भी होंगे तो लोग रोगी हो जायँगे। स्फुट वस्तुओं का बेचनेवाला पहुँच जायगा, तो स्त्रियों को आवश्यकता न भी होगी, तो वे वस्तुएँ ले लेंगी। दही बड़े रसगुल्ले तथा अन्यान्य मिठाइयाँ व स्वादु वस्तुएँ आने पर भूख न होने पर भी लोगों को भूख लग जायगी, इसी प्रकार ब्राह्मणों के पहुँचने पर उत्सव पर्व न होने पर भी छुन-छुन होने लगेगी, कुछ दान धर्म की प्रवृत्ति हो जायगी।

❊ कोई वस्तु सर्वथा हमारी उसी समय हो सकती है, जब वह हमारी प्रसन्नता की वस्तु हो।

❊ संसार की कटुताओं के सम्पर्क में आकर हृदय या तो सदा के लिए भग्न हो जाता है या फिर सदा के लिए कड़ा।

❊ प्रत्येक को अपनी उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

❊ किसी भी कार्य के आरम्भ से पूर्व सुसम्मति प्राप्त कर लो और जब करने का निश्चय कर लो, तो पूर्णत: उसमें लग जाओ।

❊ जहां अज्ञानता ही वरदान हो वहां बुद्धिमानी दिखाना भी मूर्खता है।

❊ आदतों को यदि रोका न जाए तो वे शीघ्र ही जरूरत बन जाती है।

❊ कानून हमको गैर-कानूनी आचरण से रोक सकता है, लेकिन ऐसे अनाचार से नहीं रोक सकता जो कानून के दायरे से बाहर हो।

❊ जो घृणा हम शत्रुओं के प्रति रखते हैं। वह हमारी अपेक्षा उनकी प्रसन्नता को कम आघात पहुंचाती है।

❊ <u>जड़ता ही अज्ञान है। बही दु:ख की जननी है</u>।

❊ आश्चर्य की बात है कि पारा पचता नहीं, किन्तु उसे भी वैद्य युक्ति से शुद्ध करके पचाने योग्य बना लेते हैं। विज्ञ पुरुषों का कहना है सर्प के सर्वाङ्ग में विष नहीं होता। उसे फण में हीं होता है। फण को छोड़कर उसके शरीर के मांस को तो लोग खा लेते हैं, किन्तु उसके फण में जो विष की थैली है उसे खाने से कोई जीवित नहीं रह सकता, किन्तु उसे युक्तियों द्वारा निकाल कर उसकी गुटिका बनाकर लोग खाकर पचा जाते हैं।

❊ जिस कर्म का परिणाम कटु होता है, पण्डितजन उसे अच्छा नहीं कहते।

❊ जिसकी वस्तु खो जाती है उसका सन्देह अनेक मनुष्यों पर होता है।

❊ संसार में मायारूपी स्त्री व द्रव्य दोनों बहुत बुरी हैं, स्त्री-पुरुष और पिता-पुत्र में विरोध करा देती हैं, इसलिए ज्ञानी

मनुष्य को इन दोनों से अधिक प्रीति नहीं रखनी चाहिए।

* जैसे रात्रि के बिना चन्द्रमा की शोभा नहीं होती वैसे ही पुरुष बिना स्त्री अच्छी नहीं मालूम होती।

* क्रोधावेश में कुछ भी बक जाना एक बात है और उसे कार्यरूप देना दूसरी बात।

* मनुष्यका स्वभाव ही है कि वह अपनेको, अपने कुलको, अपने गोत्रको, अपने स्थान, प्रान्त, भाषा, भूषा, आहार-व्यवहार को सर्वश्रेष्ठ मानता है। यह अहंकारका रूप- यह दुर्बलता है मानवकी।

* शत्रुसे जो सावधान न रहता हो, वह शासक तो अयोग्य होगा।

* सुरोंमें शैशव नहीं होता। उत्पन्न होते ही किशोरावस्था आ जाती है और वह स्थायी होती है। तारुण्य या वार्धक्य नहीं आता।

* सिद्धियोंमें सब या कोई भी एक-दो किसीको जन्मसे प्राप्त होती है। किसीको औषधिसे- विज्ञानसे किसी प्रयोगसे, किसीको तपस्या से अथवा मन्त्र-जपके द्वारा इष्टदेवताकी कृपासे और किसीको समाधि-मनकी अत्यन्त एकाग्रतासे प्राप्त हो जाया करती है।

* प्रेम में कोई भय नहीं है। संपूर्ण प्रेम आपके सारे भय हर लेता है।

* अपने समान जिनका धन, आयु-जाति, रूप, ऐश्वर्य हो, उनमें ही विवाह और मित्रता उचित है। अपनेसे उत्तम या निम्नमें यह सुखद नहीं होती।

* नियम चाहे जितना सामान्य हो- वह पुरुषकी कसौटी कर लेता है। उस कसौटीपर जो खरा उतरे, उसका महामंगल सुनिश्चित है।

* सब अपवाद मानना दुर्बलता है।

* मनुष्य कितना भी श्रेष्ठ हो, शक्ति या धन का मद उसे उन्मत्त कर देता है और तब उससे मर्यादायें टूटने लगती हैं। महत्पुरुषोंकी अवमानना होती है। बुद्धिभ्रष्ट हो जाती है।

* लड़की पराये घर की सम्पत्ति है। लड़की अपने पति-गृहमें ही सुखी होती हैं। माता-पिताको स्वजनोंको कितना भी कष्ट हो, कन्याको विदा तो करना ही पड़ता है।

* जीवन वैसा सरल नहीं है जैसा युवावस्थाके आवेशमें समझ लिया जाता है। युवावस्थाकी भावनायें चाहे जितनी भव्य हो, जीवनको तो व्यवहारकी कठोर शिलापर अपने पद स्थापित करके खड़ा होना है। अत: युवावस्थाके अनेक स्वप्नोंको भंग होना ही पड़ता है। जीवनको परिस्थितिसे पाले पड़ना पड़ता है। उसे समझौता करके चलनेवाला ही सुखी बना सकता है।

* वियोग तो अज्ञानसे उत्पन्न भ्रम है।

* कर्मका विस्तार प्राय: अनर्थकारी होता है। असत् कर्म तो अनर्थकारी है ही, उत्तम सत्कर्ममें भी यदि उसका बहुत विस्तार हो तो प्रमादवश मानवकी सहज दुर्बलता वश कुछ-न-कुछ दोषका आना सम्भव रहता है और ऐसी अनजानमें हुई भूल भी बहुत अनर्थकारी हो सकती है। अत: उत्तम यही होता है कि कर्मका बहुत विस्तार न किया जाय।

* मनुष्यकी किसीमें दोष-दृष्टि हो जाय तो उसे बिना हुए भी उस व्यक्तिमें दोष दीखने लगते हैं।

* प्राणीके रोग-शोक, यश-अपयश, जन्म-मृत्यु ऐश्वर्य-दरिद्रता अपने पूर्वकृत कर्मसे मिलती है।

* बलका बहुत अधिक गर्व व्यक्तिको विवेक वंचित कर देता है। अत्यधिक निकटतासे गौरव-बुद्धि घट जाती है।

* जो विवाह धर्मकी मर्यादाका उल्लंघन करके होते हैं, उनसे उत्पन्न सन्तान उस कुलकी धर्म सन्तति नहीं होती।

* जुआ अधर्मका आश्रय है। इसमें असत्य, छल, कलह एवं विनाशका निवास है।

* प्रत्येक कालमें, समाजमें कुछ प्रथाएँ चलती हैं। उनमें सभी अच्छी नहीं होती; किन्तु सत्पुरुष भी उन प्रथाओंका विरोध नहीं कर पाते। वे भी समाजके अनुकूल ही चलते हैं।

* अनेक बार शक्तिका उन्माद व्यक्तिसे बुद्धिहीनताके कार्य करवाता है।

* विधि बलवान है। कुछ भी हो जाना कभी असम्भव नहीं रहता।

* जब मनुष्य व्याकुल होता है, न ढूँढ़नेके स्थानपर भी जाता है।

* अभिमान सबसे बड़ा अवगुण है क्योंकि वह व्यक्तिके विवेकको आच्छादित कर लेता है और तब उससे मर्यादाका अतिक्रमण होता है। बड़ोंका अपमान होता है।

* श्रीमद के कारण ही मनुष्य बँध जाता है।

* सोते को जगाना, कथा में विघ्न करना, स्त्री-पति के प्रेम में फूट करना, माता-पुत्र में भेद डालना यह सब ब्रह्महत्या के सम कहे जाते हैं।

* प्रश्न जिज्ञासापूर्वक कुछ जाननेके लिए, श्रद्धा, विनय सहित किया जाना चाहिए। विवादके लिए अथवा उत्तरदाताकी परीक्षाके लिए प्रश्न करना अशिष्टता तो है ही, अवमानना भी है।

* सबको बड़ोंका संरक्षण एवं उनकी आपत्तिमें सहायता चाहिए किन्तु बड़ोंका सदा सन्निकर्ष वांछित होता है क्योंकि गुरुजनोंके समीप अपनी स्वतंत्रतापर अंकुश रहता है और अपने व्यवहारको बहुत कुछ नियन्त्रित रखना पड़ता है। इसलिए बड़ोंको भी उचित होता है कि अनुगतोंके सदा सिरपर ही सवार न रहें।

* जिसके बालक रोते हैं, घर वर्षा से चूता है, आंगन जिसका कीच से भरा है, खाट जिसकी खरखरी चुभती है, रुक्ष जिसका भोजन है, जिसका घर धुएँ से भरा रहता है, स्त्री जिसकी कटु भाषिणी है, स्वामी सदा क्रोध में रहता है, स्नान-निमित्त सदा शीतल जल मिलता है, ऐसे गृहस्थाश्रम को धिक्कार है।

* दूसरों की मान्यता बदलने की झंझट में मत पड़ो, जगत् को तुम नहीं बदल पाओगे। तुम अपने आप को बदल लो।

* कर्त्तव्य बहुत निष्ठुर होता है और व्यक्ति कर्त्तव्यनिष्ठ हो तो उसको कर्त्तव्यकी प्रेरणा मरते समय भी आवश्यक कर्त्तव्यको पूर्ण करनेकी शक्ति दे देती है।

* जब उत्सुकता अभीप्सा बन जाती है केवल लालसा बनकर रुक नहीं जाती तो कोई मार्ग भी मिल ही जाता है।

* जहाँ अभीप्सा है, जहाँ उत्कण्ठा है, स्थिर आस्था है वहाँ प्राणी प्रतीक्षा ही कर सकता है।

* विविध वासनाएँ विपत्तियों का घर है।

* स्त्री-पुरुष का सामान्य वियोग भी अत्यन्त दारुण होता है।

* विनाशकाल समीप आने पर बुद्धि मलिन हो जाती है। अन्याय भी न्याय के समान दीखने लगता है। वह बात हृदय में इतनी बैठ जाती है कि मनुष्य अनर्थ को स्वार्थ और स्वार्थ को अनर्थ देखने लगता है तथा मर मिटता है। काल डंडा मारकर किसी का सिर नहीं तोड़ता। उसका बल तो इतना ही है कि वह बुद्धि को विपरीत करके भले को बुरा और बुरे को भला दिखलाने लगता है।

* युद्ध में तो सर्वदा कलह ही रहता है और प्राण भी संकट ग्रस्त रहते हैं।

* जो दोष अवध्य का वध करने में है, वही वध्य का वध न करने में भी है।

* जो पुरुष काम और क्रोध का दास है तथा मूर्खतावश गुणवालों से विरोध और द्वेष करता है उसी को अधम कहते हैं।

* लोभ से रहित होने पर ही प्रेम हुआ करता है। माँगने पर प्रेम नहीं ठहरता।

* यदि अन्त्यजसे भी परम धर्मका ज्ञान प्राप्त होता हो तो उससे प्राप्त करना चाहिए।

* श्रेष्ठ पुरुषों ने राजाओं के चार व्यसन बहुत बुरे बतलाए हैं- शिकार, शराब, जूआ और स्त्री प्रसंग में आसक्ति। जुए से बिना समय के ही धन-सम्पत्ति का विनाश हो जाता है। बार-बार खेलने की ऐसी सनक सवार हो जाती है कि उसकी लड़ी टूटती ही नहीं। स्त्रियों से हेलमेल, जुआ खेलना, शिकार का शौक और शराब पीना- ये चारों बातें प्रत्यक्ष दु:ख है। इनसे मनुष्य भी भ्रष्ट हो जाता है। यों तो चारों बातें बुरी हैं, परन्तु उनमें जुआ सबसे बढ़-चढ़ कर है। जुए से एक दिन में ही सारी सम्पत्ति का नाश हो जाता है। मनुष्य बुरी आदत मे फँस जाता है। धर्म, अर्थ आदि का बिना भोगे ही नाश हो जाता है और इसके कारण मित्रों में भी गाली-गलौज होने लगती है।

* जो धर्मज्ञ पुरुष सभा में जाकर किसी के प्रश्न का उत्तर नहीं देता, उसको आधा झूठा बोलने का पाप लगता है। जो झूठी बात कहता है उसके सम्बन्ध में तो कहना ही क्या है?

* मरणासन्न पुरुष को हिताहित का ज्ञान ही नहीं होता। किसी को मर्मवेधी पीड़ा नहीं पहुँचानी चाहिए। कठोर और उद्वेगकारी वचन का प्रयोग नहीं करना चाहिए। यह सब अध: पतन का हेतु है। कड़वी बात निकलती तो मुँह से है, पर जिसके लिए निकलती है, उसके मर्म स्थान में चुभकर रात दिन विह्वल किया करती है। इसलिए ऐसा कभी नहीं करना चाहिए।

* सबकी प्रकृति (स्वभाव) एक-सी नहीं है और प्रकृति पर विजय पाना असम्भव भी है।

* मनुष्य-शरीर भोग के लिये नहीं बल्कि योग के लिए मिला है। लेकिन कामी पुरुष मानता कहाँ है?

* संग का प्रभाव पड़ ही जाता है। कैसा भी भला आदमी हो यदि वह निरंतर नीचों के संग में रहेगा, तो उसके मनमें नीचता आ ही जायगी। कैसा भी सदाचारी हो यदि वह व्यभिचारी नर-नारियों का संग करेगा, तो उसका चित्त चंचल हो ही जायगा, कैसी भी सती साध्वी सदाचारिणी पतिव्रता हो, यदि वह निरंतर कुलटाओं और चरित्र हीनों के संग रहेगी, तो उसका मन डिग ही जायगा। यह मन ऐसा भूत है, कि बड़े-बड़े आरूढ़ योगी भी संग के प्रभाव से पतित हो गये हैं। भगवान का संग होने के अनन्तर भी अधिक विषयों का संग होने से मन उसमें फँसा हुआ देखा गया है। इसीलिए ऋषियों ने बारम्बार इस बात पर बल दिया है, कि या तो किसी का संग करना ही न चाहिये। करना ही हो तो अपने से ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, गुणी और भगवद्भक्तों का ही संग करना चाहिए। नीचों के सङ्ग से नीचता आ ही जाती है।

* आशा ही निराशा होने पर अति दु:खदाई होती है। आशा पूर्ण होने पर सुख मिलता है तथा निराशा होने पर कष्ट मिलता है। इसलिए आशा निराशा दोनों को ही त्याग करना चाहिये।

* बड़े लोग जहाँ तक होता है, झगड़े को बचाते हैं। वे चाहते हैं, दोनों पक्षों एक सम्मान पूर्ण समझौता हो जाय। जब साम उपायसे किसी भी प्रकार उपद्रव शान्त नहीं होता, तब वे दण्ड का प्रयोग करते हैं। वे शक्तिभर युद्ध से बचना चाहते हैं, किन्तु जहाँ आत्मसम्मान को ठेस लगती हो, तहाँ वे संघर्ष से डरते भी नहीं निर्भय होकर अपने बलको प्रदर्शित करते हैं और विपक्षी के सिर पर पैर रखकर अपने सम्मान की रक्षा करते हैं। मनस्वी पुरुषों के लिये आत्मसम्मान की रक्षा करना सबसे प्रधान कार्य है।

* यह सौन्दर्य ऐसी प्रज्वलित अग्नि है, कि इसकी ज्वाला में न जाने कितने जल जाते हैं। अति सुन्दरी स्त्री की रक्षा करना बड़ा कठिन हो जाता है। अति सुन्दर पुत्र को वश में रखना दुस्साध्य हो जाता है।

* जब मनुष्य ऐश्वर्य के मद में मतवाला बन जाता है, तो अंट संट बकने लगता है। किन्तु जब उसका कोई मद चूर्ण

करनेवाला मिल जाता है, तब उसकी आँखें खुलती हैं। तब उसे अपने किये पर पश्चात्ताप होता है। तब उसकी बुद्धि ठिकाने आती है और विनयावनत होकर अपने अपराधोंके लिये क्षमा याचना करता है। अपराध स्वीकृति भगवान्‌की कृपाके बिना हो नहीं सकती। जिन्हें धन, जन, विद्या, बुद्धि, कला, कौशल, अधिकार तथा तपका अभिमान है, वे अपने अपराधको भी उचित ही बताते हैं। उनमें अपराध को अपराध मानने की क्षमता ही नहीं रहती। जिनमें आत्मदोष दर्शनकी भावना जितनी ही अधिक होगी, वे भगवत् कृपा का उतना ही अधिक अनुभव करनेवाले होंगे, दिखावे के लिये नहीं, भय अथवा दम्भादिसे नहीं सच्चे हृदयसे अपने कृत्यपर पश्चात्ताप होना यही भगवत् कृपाका लक्षण है।

* कुत्ते को भूँकना सिखाओ वह स्वामी को ही काटने दौड़ता है।

* जन्मान्तरीय संस्कार बड़े प्रबल होते हैं।

* दूसरोंका आकर्षण हमें अपनी ओर खींचता है।

* बड़े लोगों को जितनी ही शीघ्रता से क्रोध आ जाता है, उतनी ही शीघ्रता से वह शान्त भी हो जाता है। जो उनके सामने अकड़ता है, ऐंठ दिखाता है, उसके सामने वे वज्र के समान बन जाते हैं, जो उनके सामने गिड़ गिड़ाता है- दीन बन जाता है, उसके लिये वे मोम से भी अधिक कोमल बन जाते हैं। यही महान् पुरुषों की महत्ता है। अभिमान वश अज्ञानी पुरुष उनसे जो कटु वचन कह देते हैं, उन्हें वे मन में नहीं रखते। उनकी अज्ञानता को स्मरण करके क्षमा कर देते हैं।

* कितने भी अन्तरंग व्यक्तिसे, कितने भी रहस्यपूर्ण ढंगसे, कितना भी गुप्त रखनेका आग्रह करके ऐसी बात कही जाय- जो बात आप स्वयं अपने भीतर नहीं पचा सके, वह दूसरेके भीतर पचे नहीं? ऐसी चर्चा अपने आप प्रचारित होती है- बहुत शीघ्र प्रचारित होती है। लोकमानस ही ऐसा है कि दूसरेकी दोष-चर्चा बहुत उत्सुकतासे-आग्रहसे सुनता और कहता है। सब दूसरेसे कहते हैं- किसीसे कहना मत, तुमसे कहता हूँ और सब इसी प्रकार दूसरेसे कहते हैं।

* वृद्ध वही नहीं है जिसके बाल पक गये हों। जो उचित और युक्ति-युक्त बात कहे वही वृद्ध है। बालक भी यदि धर्मयुक्त श्रेष्ठ बात कहता है तो वह ग्राह्य है इसके विपरीत यदि वृद्ध भी हो और वह धर्म विरुद्ध बात कहे तो उसे कभी भी न मानना चाहिये।

* स्नेही का हृदय रात्रि-दिन जलता रहता है। विधाता ने नर-नारियों के हृदय में स्नेह रूपी ऐसा जाल लगा दिया है कि उसे छोड़ना बड़ा कठिन है। साधारण लोगों की बात तो पृथक् रही हम देखते हैं, स्नेह के फन्दे में बड़े-बड़े योगी फँस जाते हैं। घर से स्त्री, बच्चों का, कुटुम्ब परिवार का मोह छोड़कर आते हैं, फिर किसी के प्रेम पाश में फँस जाते हैं। सज्जन पुरुष तो अपनी सज्जनता से ही दूसरों को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं, किन्तु यदि उन सज्जनों ने किन्हीं के साथ महान उपकार भी किया हो तो फिर हम जैसा कैसा भी कृतघ्न क्यों न हों, उसकी आँखें ऊँची उठ ही नहीं सकती। सज्जनों का तो परोपकार करना स्वभाव ही होता है, वे उसे कुछ भी नहीं समझते किन्तु जो अत्यन्त कृतघ्न नहीं हैं, वे उनके उस परोपकार को जीवन पर्यंत नहीं भूल सकते।

* कल्याण की कामना करनेवाले पुरुष को धन वैभव के लोभ में कभी न फँसना चाहिये।

* राजा, ऋत्विक, जामाता तथा राजपुत्र ये छोटे होने पर भी अर्घ्य के अधिकारी माने जाते हैं।

* ये कामनायें प्राणियों को विवश कर देती हैं। कामनायें मन को व्याकुल बना देती हैं, इन्द्रियाँ विवश बना देती हैं।

* समान शीलों में प्रेम हो जाना स्वाभाविक है। जब भक्त और भगवान दोनों प्रेम भरित हृदय से परस्पर में मिलते हैं तो एक अपूर्व आनन्द होता है, एक अवर्णनीय सुख होता है।

* व्यग्रता और विपत्ति में कोई सहानुभूति दिखाता है तो उसके प्रति आत्मीयता हो जाना स्वाभाविक है।

* वस्तुओं में गुण दोष नहीं, वे पात्र को पाकर अच्छी-बुरी बन जाती हैं। मुख्य तो पात्रता है।

* जिनके राज्य में ब्राह्मण धन के बिना दुखी हों, जिनकी स्त्रियों की, बच्चों की रक्षा का समुचित प्रबन्धन न हो, वह राजा, राजा कहलाने योग्य नहीं है।

* स्त्रियों के लिये साष्टाङ्ग प्रणाम करना निषेध है।

* अपने प्रिय पदार्थ के विषय में कोई कुछ कहता है, गाता है, स्मरण करता है अथवा प्रकारान्तर से अनुमोदन करता है, तो उसके प्रति स्वाभाविक अनुराग हो जाता है। संसार में प्रिय स्मरण ही सार है और सभी निस्सार है। अपने प्रिय पदार्थ को पाने के लिये पुरुष परदेश जाते हैं, समुद्रों के वक्ष:स्थल को चीरकर देशान्तरों में पहुँचते हैं। संसार में लोग इधर-से-उधर घूम रहे हैं, दौड़ रहे हैं, तथा भाँति-भाँति की चेष्टायें कर रहे हैं, सब प्रिय की प्राप्ति के ही निमित्त कर रहे हैं। अन्तर इतना ही है, किसी ने इन नाशवान अनित्य पदार्थों को ही प्रिय मान रखा है, किसी ने परमार्थ को प्रिय मान रखा है, चाहते हैं सब प्रिय को ही।

* संसार में जितने प्राणी हैं, सब बटोही हैं, सभी लक्ष्य प्राप्ति के निमित्त यात्रा कर रहे हैं। कोई जान में कर रहे हैं, कोई अज्ञान में, किसी को तो विदित है कि हम यात्री हैं, अपने गन्तव्य स्थान की ओर बढ़ रहे हैं, कोई ऐसे हैं, जिन्हें ज्ञात ही नहीं कि हम यात्री हैं वे चल तो रहे हैं पर उन्हें जाना कहाँ है?

* जिनमें अपनापन है उनकी सेवा करने में बड़ा सुख होता है।

* संसार में स्त्री का विधवा होकर जीना और पुरुष का स्त्री-हीन विधुर होकर जीना व्यर्थ है। जिस घर में घरवाली ही नहीं, तो उससे अच्छा तो अरण्य है। प्राणी किसी न किसी आशा से जीवित रहता है। कोई धनकी आशा से, कोई संतान की आशा से, कोई विवाह की आशा से, कोई वैभव ऐश्वर्य तथा पद-प्रतिष्ठा की आशा से जीता है। जिसकी पत्नी ही नहीं रही उसका शून्यगृह में जीना न जीने के सदृश है।

* हम लोग जो इन्द्रियों के अधीन हैं, वे विषयजन्य सुख को ही सुख मानते हैं। हमारी ऐसी धारणा हो गयी है कि भोग सामग्रियाँ जितनी ही प्रचुर मात्रा में हमारे पास होंगी, उतने ही हम सुखी होंगे। किन्तु यह भावना सर्वथा मिथ्या है। यदि भोग सामग्रियों में ही सुख होता तो बड़े चक्रवर्ती राज्य पाट को छोड़कर वन को क्यों जाते। सुख विषयों के ग्रहण में नहीं विषयों के त्याग में है। तृष्णा का अन्त नहीं। आशा में सुख नहीं, आशा के परित्याग में सुख है। भोग में सुख नहीं, सुख तो योग में है। जो जितना ही संग्रही होगा, वह उतना ही भीरु होगा, जो जितना ही त्यागी होगा, वह उतना ही निर्भय होगा। त्याग से ही शान्ति होती है, वैराग्य से ही निर्भयता आती है। अनासक्त को ही सुख होता है। सरसता में ही आनन्द है। निष्कपटता ही स्व-स्वरूप सन्धान में सहायक है।

* निस्पृहता का अर्थ रूक्षता नहीं है। यथार्थ बात यह है कि बिना निस्पृहता के सरसता आती ही नहीं। जो इन संसारी विषयों में फँसे हुए हैं, जो धन को ही सर्वस्व समझते हैं, उनमें सरसता कैसे आ सकती है। विषयासक्त पुरुष कभी प्रेम कर ही नहीं सकता। प्रेम तो विषयों से विरक्त निस्पृह पुरुष ही करना जानते हैं, क्योंकि प्रेम कोई लौकिक वस्तु नहीं।

* मनुष्य में दीनता संग्रह के कारण आती है। जो जितना ही अविश्वासी होगा, वह उतना ही चिन्तित रहेगा। भोगों की तृष्णा हमें अधिकाधिक संग्रह करने को विवश करती है। अधिक संग्रह होने से अधिक चिन्ता बढ़ती है। चिन्ता में सुख नहीं, शान्ति नहीं, तृप्ति नहीं। निश्चिन्तता में ही सब वस्तुएँ अच्छी लगती हैं। निश्चिन्तता होती है अभय से, अभय की प्राप्ति होती है वैराग्य से और वैराग्य होता है त्याग से। वास्तविक त्यागी अपरिग्रही ही हो सकता है।

* टूटी फूटी वस्तु को कितना भी जोड़ दिया जाय, जोड़ के स्थान पर वह निर्बल हो ही जाता है।

❋ हृदय में निष्काम भाव के बिना भजन व्यर्थ है। शांती के बिना सुंदर घर व्यर्थ है। अहंकार से युक्त सब प्रकार का त्याग व्यर्थ है। समर्पण के बिना अनुराग व्यर्थ है। फल फूल के बिना सुंदर बाग व्यर्थ है। कलह से युक्त बड़ा परिवार व्यर्थ है। अच्छी पत्नि के बिना मित्रों का समुदाय व्यर्थ है। निश्चिंतता के बिना भरोसा व्यर्थ है। दान के बिना धन का कोष व्यर्थ है। निश्चय के बिना विश्वास व्यर्थ है। प्रभु प्रसन्नता के बिना अभिलाषा व्यर्थ है। सत्संग के बिना सब प्रकार का संग व्यर्थ है। प्रभु रंग के बिना सब प्रकार का रंग व्यर्थ है। दया रहित सब प्रकार का सद्कर्म व्यर्थ हैं। बैर से युवत सब प्रकार का धर्म व्यर्थ है। प्रभु भक्ति के बिना ज्ञान की कोई शोभा नहीं, प्रभु को अर्पण किए बिना सब कृति क्षोभप्रद है। सभी पदार्थ नश्वर है। संतोष के बिना कहीं भी सुख नहीं है। विश्वास के बिना मंत्रजप व्यर्थ है। पूजा के बिना उपवास व्यर्थ है। गुरु के बिना ईश्वर की आराधना व्यर्थ है। प्रेमरस के बिना सभी साधन व्यर्थ है। दान के बिना यज्ञ व्यर्थ है, शम दम के बिना वैराग्य के ज्ञान का विधान व्यर्थ है। वेद मंत्रो के बिना ब्राह्मण व्यर्थ है। भाव और दैन्यता के बिना भक्ति व्यर्थ है। पतिप्रेम के बिना नारी व्यर्थ है। निराभिमानता के बिना उपकारी व्यर्थ है। प्रभु भजन के बिना समस्त जीवन काल व्यर्थ है। क्योंकि जगत का सब विषय दुखदायी एवं जंजालमय है। अद्वैत भाव के बिना सब प्रकार का योग व्यर्थ है। अगर रसचाव नही है, तो सब प्रकार का भोग व्यर्थ है। जो सत्य हितकारी न हो ऐसा सत्य व्यर्थ है। जो सेवा बिकार से युक्त हो ऐसी सुंदर सेवा व्यर्थ है। जिस प्रकारसे थोड़े से जल में मछली को सुख नहीं होता उसी प्रकार जीव को भव विषयों से सुख नहीं होता।

❋ सब पापों का घर, धनरूप मदिरा है, अथवा धन और मदिरा यह पापों का घर है, जिस पुरुष ने इनका थोड़ा सा भी पान किया, फिर उससे भगवत-ध्यान और निरोधरूप समाधि नहीं बन सकती है, वह पुरुष मर कर नरक-रूप घर में ही जाता है।

❋ अरे जीव, जब तक तूँ धन कमाने में लगा हुआ है तभी तक तेरा परिवार तुमसे प्रेम करता है। जब जराग्रस्त (बूढ़ा) होगा तो घर में कोई बात भी नहीं पूछेगा। जब तक प्राण शरीर में है तब तक ही लोग घर में कुशल पूछते हैं। प्राण निकलने पर शरीर का पतन हुआ कि फिर अपनी स्त्री भी उससे भय मानती है।

❋ जब तक कामना है तब तक दीनता है।

❋ ऐश्वर्य उस सर्वेश्वरत्व या सर्ववशीकारिता- शक्ति को कहते हैं, जो सब पर अबाध गति से अपना प्रभुत्व स्थापित कर सकती है। धर्म उसका नाम है जिससे सबका धारण, सबका मंगल तथा सबका उद्धार होता है। यश अनन्त ब्रह्माण्ड व्यापिनी मंगल कीर्ति को कहते हैं। श्री सब प्रकार की सम्पत्तियों की जो एक मूल सत्तारूपा महान शक्ति है, उसे कहते हैं। समस्त सम्पत्तियों में (साम्राज्य सम्पत्ति, यश: सम्पत्ति, शक्ति सम्पत्ति, वैराग्य सम्पत्ति आदि सभी में) जो स्वाभाविक अनासक्ति है, उसे वैराग्य कहा जाता है और पूर्ण ज्ञान तो भगवान का स्वरूप ही है।

सर्वकाल की समस्त वस्तुओं के साक्षात्कार को ज्ञान कहते हैं। अघटित घटना या असम्भव मानी जानेवाली घटना सम्पन्न करने की सामर्थ्य का नाम शक्ति है- इसी से भगवान को कर्तुमअकर्तुमन्यथाकर्तुम् समर्थ कहा जाता है। अनायास ही सबके धारण करने की शक्ति को बल कहा जाता है। सबको नियंत्रित करने-अधीन रखने और सब पर शासन करने की शक्ति का नाम ऐश्वर्य है। विश्वब्रह्माण्ड के कारण होने पर भी सहज विकारहीन रहना वीर्य है और सबको सहज ही अभिभव-पराभूत करने का नाम तेज है।

❋ वास्तव में न कोई युद्ध कुशल हैं, न पराक्रमी है न विद्वान हैं। विधाता जिसे जीवन में सफलता दे देता है उसी को लोग श्रेष्ठ कहने लगते हैं।

❋ तपस्या और बल से रहित पुरुषों की क्षमा वास्तविक क्षमा नहीं, निर्बलता है। अत: जिस राष्ट्र को अपना अस्तित्व

बनाये रखना है, उसे सर्वप्रथम शक्ति संचय करना चाहिये। जिस राष्ट्र में क्षात्र धर्म जितना ही न्यून होाग, वह राष्ट्र उन्नति की दौड़ में इतना ही अग्रणी समझा जायगा। समस्त राष्ट्र का संगठन, बिगठन उसके क्षात्र धर्म पर ही अवलम्बित है।

* अर्थी दूसरों की विवशता की ओर ध्यान नहीं देता। उसे तो अपने काम को सिद्ध करने की चिन्ता रहती है। वह बार-बार एक ही बात को कहता है।

* सीधे-सादे लोगों को बनाने में कुछ लोगों को बड़ा आनन्द आता है, विशेषकर चंचल प्रकृति के युवक और युवतियों को यदि कहीं कोई सरल सीधा आदमी मिल जाये तो ये उसकी हँसी बहुत उड़ाते हैं।

* जो सज्जन पुरुष हैं, उनका हृदय तो दूसरों की उन्नति देखकर प्रसन्न होता है। वे सुखी लोगों को देखकर आह्लाद के साथ मिलते हैं, दुखियों को देखकर दया से द्रवित हो जाते हैं, किन्तु जो दुष्ट प्रकृति के होते हैं, वे दूसरों के अभ्युदय को देखकर जल जाते हैं। किसी का बढ़ता हुआ धन वैभव देखते हैं तो उन्हें ईर्ष्या होती है। कैसे इसकी अवनति हो यही वे सोचते रहते है। यद्यपि दूसरों की अवनति होने में उनका कोई लाभ नहीं, फिर भी इतने कलुषित हृदय के होते हैं कि सदा दूसरों का अनिष्ट सोचते रहते हैं पीठ पीछे अपने सगे सम्बन्धी और कुलवालों की भी ऐसी निन्दा करते हैं कि उन बातों से उनके हृदय की द्वेषाग्नि की तीव्रता जान पड़ती है। दूसरों को दु:ख में देखकर उन्हें आन्तरिक सुख होता और अपने सम्बन्धी साथियों तक की उन्नति से उन्हें पुत्र शोक से भी बढ़कर शोक होता है।

* मनुष्य में और पशुओं में इतना ही अन्तर है कि पशु अपने लिये नयी मर्यादा बना नहीं सकते, पिछली मर्यादा को स्वत: तोड़ नहीं सकते। मनुष्य अपने लिये नई सामाजिक-धार्मिक मर्यादा देशकाल के अनुसार स्थिर कर सकता है, प्राचीन परिपाटियों का उल्लंघन भी कर सकता है। जो बात किसी समय अविहित है, वही दूसरे समय विहित हो जाती है, होलिका के दिन श्वपच स्पर्श विहित है। कुलवती नव वधुओं के लिये सामान्यतया परदे में रहने का नियम है किन्तु विवाह के समय, मृतकादि शोक के समय, पर्व और उत्सवों के समय यह नियम शिथिल हो जाता है, वे सबके सम्मुख निकलती हैं। उत्सव-पर्वों पर होली के समय तथा अन्यान्य मङ्गल कृत्यों में सरसता का प्रवाह स्त्रियों के ही द्वारा बहता है। वे अपने देवरों के साथ सुन्दर सरस क्रीड़ा करके स्वयं भी प्रसन्न होती हैं तथा समस्त दर्शकों के हृदय में भी एक प्रकार की सुखद सरसता का संचार करती हैं।

* भगवान ने इस संसार को चित्र-विचित्र बनाया है, इसलिये प्राय: सभी की प्रकृति भिन्न-भिन्न होती है। संसार में एक-सी कोई वस्तु है ही नहीं। कैसे भी प्रेमी से प्रेमी हों, उनमें कुछ-न-कुछ रुचि की भिन्नता होगी ही। आकृति, प्रकृति, रूप, रङ्ग, वाणी सभी में कुछ-न-कुछ अन्तर रहता ही है। रेखाशास्त्र के जानने वालों का कथन है कि अँगूठे की रेखा सबकी भिन्न-भिन्न होती हैं। जैसें सबके हस्ताक्षर एक से नहीं हो सकते, वैसे ही अँगूठे की लकीरें सबकी एक-सी नहीं होतीं। इसीलिये जो हस्ताक्षर करना नहीं जानते उनके अँगूठे के चिह्न लगाये जाते हैं सबकी आँखों की रेखाये एक-सी नहीं होती सूक्ष्म रूप से देखा जाय तो सब-की-सब वस्तुएँ ही भिन्न होती हैं।

* जिसके साथ जीवन काटना है, उसकी बात अपने अनुकूल न भी हो तो भी उसे मान लेना चाहिये। पति यदि पत्नी की बात मानकर उसकी इच्छानुसार काम कर देता है तो उसका प्रेम और अधिक बढ़ जाता है, उसे गर्व हो जाता है मेरे पति मेरी बात मानते हैं।

* मनस्वी पुरुष एक बार आपत्ति विपत्ति पड़ने पर अपरिचितों से याचना भले ही कर ले किन्तु परिचितों के सम्मुख हाथ फैलाने का उसका साहस नहीं होता। मान-अपमान की रक्षा तो परिचितों में ही की जाती है। जहाँ हमारा परिचय नहीं, वहाँ

हमारा अपमान भी कर दे तो भी कोई बात नहीं, किन्तु परिचित कोई कड़वी बात कह दे तो उसें भी अपना बड़ा अपमान प्रतीत होता है। सुख-दु:ख तो भाग्यवश मिलता है।

* उपदेश- परस्पर में दो वीर लड़ते हैं तो दोनों में से एक की जय दूसरे की पराजय होती ही है। जो लड़ने चलता है, वह अपने को सर्वश्रेष्ठ शूर समझता है। जिसे अपनी शूरता में सन्देह होगा वह दूसरे से युद्ध ही क्यों करेगा। कभी-कभी अपने बल पर पूर्ण विश्वास रहने पर भी, बली पुरुष साधारण शूरवीर से पराजित हो जाता है, किन्तु उस पराजय से भयभीत होकर पुन: लड़ने की इच्छा करे तो कायरता है, किन्तु जो पराजय को भी युद्ध का एक सामान्य अङ्ग समझकर उसकी उपेक्षा करता है और वीरता के साथ पुन: शत्रु के सम्मुख समर में आ डटता है, वही वीर है। ऐसे साहसी और निर्भीक वीर की कभी पराजय नहीं होती। वह जब तक जीवित रहता है, तब तक यश प्राप्त करता है और जब शत्रु के सम्मुख वीरता के साथ अस्त्र-शस्त्रों से मरता है तो मरकर स्वर्ग जाता है। वीरों का न कभी अपयश होता है, न उनकी मृत्यु ही होती है, वे तो सदा अजर-अमर बने रहते हैं।

* जिसको मित्रता निभानी हो तो उसे दो बातों का सदा ध्यान रखना चाहिये, एक तो कभी मित्र से धन की याचना न करे, एक उसकी स्त्रियों से एकान्त में बातें न करें। ये दो बातें ऐसी हैं कि इनसे कभी-न-कभी मन मुटाव हो ही जाता है।

* जिन दुष्टोंको अपनी कुलीनता, बलपौरुष और धनका घमंड हो जाता है, वे शान्ति नहीं चाहते। उनको दमन करनेका, रास्तेपर लानेका उपाय समझाना-बुझाना नहीं, बल्कि दण्ड देना है।

* महापुरुषों की जितने प्रयत्न होते हैं, वे सब लोक कल्याण के ही निमित्त होती हैं। वे स्वयं तो पाप पुण्य से रहित होते हैं फिर भी यह धर्म है, यह अधर्म है इसे जताने के लिये वे धर्म का आचरण करते हैं और लौकिक दृष्टि से अधर्म-सा हो गया हो, उसका वे प्रायश्चित्त करते हैं। वास्तव में उन्हें धर्माधर्म स्पर्श भी नहीं करता फिर लोकसंग्रह के लिये वे वैसे आचरण करते हैं।

* जिस सभा में घोर अन्याय होता है, उसमें असमर्थ आदमी को एक क्षण भी नहीं बैठना चाहिये और समर्थ पुरुष को उस अन्याय का सामर्थ्यानुसार विरोध करना चाहिये।

* मनुष्य को उस समय बड़ा धर्मसंकट पड़ जाता है, जब लड़नेवाले दोनों पक्ष के लोग अपने सगे सम्बन्धी हों। एक कोई अन्य हो और एक अपना सगा सम्बन्धी हो तो यह स्वाभाविक ही है कि सगे सम्बन्धी का पक्ष लिया जाता है। जब दोनों ही समान रूप से अपने सम्बन्धी हों, तब मनुष्य किंकर्त्तव्यविमूढ़ बन जाता है। ऐसे समय कुछ लोग तो ऐसा करते हैं, जिनसे अधिक प्रेम होता है, उनकी ओर हो जाते। दूसरों से शत्रुता कर लेते हैं। कुछ ऐसे होते हैं कि दोनों में से किसी का भी पक्ष नहीं लेते, तटस्थ हो जाते हैं। किसी पक्ष का समर्थन न करके वे मौन हो जाते हैं। कुछ ऐसे होते हैं कि यह जानते हुए भी एक पक्ष अन्याय कर रहा है फिर भी लोभ, मोह, संकोच अथवा अन्य किसी कारण से अन्यायी पक्ष की सहायता करते हैं। मन से चाहे विपक्षियों का ही कल्याण चाहें, किन्तु सहायता इसी पक्ष की करते हैं। कुछ ऐसे न्यायप्रिय निर्भीक पुरुष होते हैं कि वे सम्बन्ध का, प्रेम का, लोभ मोह अथवा शील संकोच की कुछ भी अपेक्षा नहीं रखते। वे तो जिधर धर्म देखते हैं उन्हीं का पक्ष लेते हैं। उन्हीं की सहायता करते हैं। वे न्याय के लिये- धर्म के लिये- सब कुछ कर सकते हैं।

* उदारता उसे कहते हैं कि जो अपने से कोई याचना करे और उसे उससे भी अधिक प्रसन्नता से दे दे।

* जहाँ लज्जा, संकोच और भय है वहाँ रस का भली भाँति आस्वादन नहीं होता।

* जो जैसे प्रकृति का होता है, उसकी क्रिया ही वैसी होती है। कहीं भी चले जाओ किसी भी समाज में मिल जाओ। स्वभाव से व्यवहार बर्ताव से उनकी प्रकृति का पता चल जायगा।

* कोई अक्षर ऐसा नहीं जो मन्त्र न हो, कोई वस्तु ऐसी नहीं जो औषधि न हो। इसीप्रकार कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं जिसमें कुछ-न-कुछ गुण न हो।

* जिसके विधाता वाम हो जाते हैं, उसके जातिवाले, माता, पिता, भ्राता, सुत, सुहृद तथा सभी स्वजन भूल जाते हैं। कोई बात भी नहीं पूछता।

* दरिद्रता में जब अन्याय से धन आता हुआ प्रत्यक्ष दीखता है तो उस लोभ का संवरण करना असंभव हो जाता है।

* कैसा भी स्नेह क्यों न हो, जब परिस्थितियाँ विभिन्न हो जाती हैं तो छोटी परिस्थिति वाले पुरुषों को संकोच होने ही लगता है। अपनी अन्तरात्मा के साक्षी तो स्वयं ही है कहाँ रहने में स्वतन्त्रता है, कहाँ हृदय में खटका है। इसके लिये किसी अन्य से पूछना नहीं पड़ता। अपना हृदय साक्षी दे देता है।

* जो घड़ा कुछ रीता रहता है, मुख तक उसमें पानी नहीं भरा रहता वह छलकता है, जो मुख तक भरा रहता है वह नहीं छलकता। जिन मेघों में जल नहीं रहता या कम रहता है, वे ही बहुत गरजते-तरजते हैं। जो मेघ शान्त गम्भीर होते हैं, वे विपुल वर्षा करके चुपचाप चले जाते हैं। अपने दान का अपने गुणों का विज्ञापन नहीं करते।

* खेल में लाभ-हानि का विचार नहीं किया जाता। जहाँ हानि-लाभ का विचार होता है वह खेल नहीं ममता है। जो संसार की प्रत्येक घटना को खेल समझता है, वह सदा हँसता रहता है।

* जो जितना ही संग्रही होगा, वह उतना ही अधिक दु:खी होगा। संसार में केवल उपस्थ और जिह्वा का क्षणभर का सुख है वह भी परिणाम में दुखद ही होता है। जिसका परिणाम दुखद है उसे सुख अज्ञानी मूर्ख ही मान सकते हैं। संसार में जिधर देखो उधर दु:ख-ही-दु:ख है, चोर से दुख, राजा से दुख, शत्रु से दुख, कुटुम्ब से दुख, धन से दुख, रोगों से दुख, चिन्ताओं से दुख, कहाँ तक गिने शरीर जितना ही बढ़ता जाता है उतना ही उत्तरोत्तर दुख ही बढ़ता जाता है।

* किसी के प्रति हृदय में स्नेह उत्पन्न हो जाय तो फिर वह सम्मुख रहे या न रहे, दूर रहे या समीप रहे प्रतिक्षण उसका चिन्तन बना रहता है। उसके पीछे सभी तुच्छ दिखाई देते हैं। स्नेह होता है सरस हृदय में, जो नीरस हैं, पाषाण हृदय के हैं वे स्नेह नहीं कर सकते।

* जिसका चित्त बहुतों की ओर चलता है, उस चञ्चल चित्त पुरुष का मन कभी एकाग्र नहीं हो सकता।

* काम अन्धा होता है, यह पात्रता का विचार नहीं करता, गुण दोष नहीं देखता, रूप सौंदर्य भी इसमें विशेष कारण नहीं। हृदय जिसे भी पकड़ ले, मन जिधर भी झुक जाय।

* जिस वस्तु में आसक्ति हो जाती है, उसी की रक्षा के लिये उचित अनुचित सभी काम करने को लोग उद्यत हो जाते हैं। जिसमें अपनापन नहीं होता, उसे व्यवहार करते हुए भी उसकी उतनी चिन्ता नहीं करते।

* पराधीनता तभी तक है जब तक जीव विषय वासनाओं में फँसा है, इन्द्रिय लोलुप बना है। जब तक मन में विषयों के भोगने की इच्छा है तब तक दूसरों की अधीनता है, जहाँ जीव सम्पूर्ण विषयों से उपरत हुआ, तहाँ उसे अन्य किसी भी रक्षक या संरक्षक की आवश्यकता नहीं रहती। वह स्वयं ही अपने आप अपना रक्षक बन जाता है। हम रक्षा की आशा उसी से करेंगे जो स्वयं रक्षित हो। विषयों के प्रति झुकाव मनुष्य मात्र का स्वाभाविक है।

* विद्या विनय को देनेवाली है, विद्या से ज्ञान होता है, ज्ञान से मुक्ति होती है, किन्तु वही विद्या किसी कुपात्र के खल-के समीप चली जाय, तो वह उसका उपयोग केवल विवाद के ही लिये करेगा। धन श्रेष्ठ वस्तु है, धन से दान पुण्य आदि कर्म होते हैं, सभी कार्य धन से सिद्ध होते हैं, किन्तु वही धन किसी दुर्जन कृपण के समीप चला जाय, तो वह या तो उसे

जोड़-जोड़कर रखेगा, या उससे द्यूत, वेश्या, सुरा तथा मांस आदि का सेवन करेगा। धन के मद में मतवाला होकर नाना अनर्थ करेगा। इसी प्रकार शक्ति बड़ी दिव्य वस्तु है। संसार में सभी कार्य शक्तिशाली ही करते हैं। यदि शक्तिशाली बलवान न हों तो अशक्त पुरुषों को दुष्ट दु:ख देने लगेंगे। शक्तिशाली ही अशक्तों की दुर्बलों की रक्षा करता है। वही शक्ति यदि दुष्टों के पास हो, तो सब पर आतम जमावेंगे, सबको दुख देंगे। उसका उपयोग वे पर पीड़न के कार्य में करेंगे। वर्षा का एक ही जल है, वह समुद्र में गिरता है, तो उसके संसर्ग से खारा हो जाता है, नदियों में पड़ता है, तो मीठा होता है। जैसा कूआ होगा, वर्षा का जल उसमें पहुँचकर वैसा ही हो जायगा। खारे कूआँ में खारा हो जायगा, मीठे कुएँ में मीठा हो जायगा।

* साधु की जाति परीक्षा और मातृ योनि परीक्षा करना यह पाप है। साधु तो जाति-पाँति से परे होते हैं।

* स्वभाव को कितना भी छिपाओ, वह छिपता नहीं। बातचीत में व्यवहार में वह प्रकट हो ही जाता है।

* लाभ से लोभ बढ़ता है, लोभ का पाप मूल है।

* यथार्थ स्पर्श तो मन से होता है। जो हमारे मन में बसा है, वह चाहे शरीर से सात समुद्र पार क्यों न रहता हो मन से हम उससे मिले हुए हैं, उसका मानसिक स्पर्श कर रहे हैं। ब्रह्म का स्पर्श ऐसे ही हृदय से किया जाता है, योगी लोग ब्रह्म-संस्पर्श करते हैं। हम लोग भी अपने प्रियजनों का मनसे स्मरण करते हुए एकान्त में आँसू बहाते रहते हैं। यह तो मानसिक स्पर्श हुआ। लोभ, मोह, काम या अन्धपरम्परावश हठपूर्वक जानबूझकर जो सबका स्पर्श कर लेते हैं उनके भावों में सांकर्य हो जाता है। वे शुद्ध सात्त्विक भावना से परमार्थ चिन्तन नहीं कर सकते, लोक में चाहे जितनी ख्याति प्राप्त कर लें। युवावस्था बड़ी अविवेक की अवस्था है। यह तो स्त्री-पुरुष दोनों को ही अन्धा बना देती है। इसमें स्त्री परपुरुष को, पुरुष परनारी को कभी स्पर्श न करे।

* यह जगत् एक विशेष नियमों के आधीन होकर चल रहा है। संसार का नियम है जो जितना देगा वह उतना पावेगा। न्यायपूर्वक जितना श्रम करेगा उतना उसे प्राप्त होगा। जो इस नियम को न मानकर श्रम तो कम करते हैं और उसका पारिश्रमिक अधिक चाहते हैं तो उन्हें अन्याय का आश्रय लेना पड़ता है। अन्यायपूर्वक प्राप्त की हुई विद्या फलीभूत नहीं होती। जो अनियमित लाभ करते हैं, उत्कोच (घूँस) लेकर धन संग्रह करते हैं, वह आता हुआ तो अच्छा लगता है, किन्तु उसका परिणाम दु:खद ही होता है। कुछ लोग किसी की सरलता से उसके साधु स्वभाव से अनुचित लाभ उठाकर बड़े प्रसन्न होते हैं और मन-ही-मन प्रसन्न होते हुए कहते हैं- वे यह नहीं सोचते- अरे, उल्लू तो तुम स्वयं बन गया। कम परिश्रम करके उसने जो छल से अधिक वस्तु प्राप्त कर ली है वह छल ही उसके सर्वनाश का कारण होगा।

* वीर होने के लिए मनुष्य को अपने कर्त्तव्य से अधिक काम करना पड़ता है।

* कर्ज मनुष्य के लिए वैसा ही है जैसा पक्षी के लिए सर्प। उसके नेत्र लुभाते हैं, उसकी श्वास विषमय बनाती है। उसकी लपेट अस्थि व मांसपेशियों को चकनाचूर कर देती है।

* दुखियों की दशा वही जानता है, जो अपनी परिस्थितियों से दुखी हो गया हो।

* किसी बात को यों ही मानकर मत चलो।

* मधु स्वयं ही मत्त नहीं होता अपितु पान करनेवाले सभी जनों को मदमत्त कर देता है।

* माँ-बाप की सेवा करो, पड़ोसियों का ख्याल करो, बड़ों का आदर करो, ईमानदारों से दोस्ती करो, मुसीबतों से सब्र करो। गुनाहों से दूर रहो, अपने आप में सुधार करो, भगवान पर भरोसा करो, जिंदगी की कद्र करो, झूठ से बचा करो। नेक कामों में खर्च करो, हक के साथ न्याय करो, दूसरों के दोष छिपाया करो, सिर्फ भगवान के सामने झुका करो। कर्ज जल्दी

अदा करो, भगवान के डर से रोया करो, गरीबों पर दया करो, छोटों से मोहब्बत करो, बीमारों की पूछताछ करो, बुरे कामों से नफरत करो, मृत्यु को याद करो।

हमेशा सच बोला करो, अपने अंदर के बुरे आदमी को मारा करो, गलती करनेवालों को माफ करो, ख्वाहिशों में कमी करो, फिजूलखर्ची से परहेज करो, बुराई को रोका करो, मुसीबतों में मदद करो, नियमों पर अमल करो, ईमानदारी से मेहनत करो, गलत कामों से डरा करो, सभी के साथ अच्छा व्यवहार करो।

* जीवनसाथी की बात शांति से सुनें। पत्नी से अधिक की अपेक्षा न करें। आदतों को एकदम बदलने की कोशिश न करें। पत्नी को मित्र या फिर बहुत अहम साथी मानें। चुनौतियों को ऐसा अवसर मानें, जिसमें दोनों को साथ में आगे बढ़ने का मौका मिला है। गलतियों का आकलन कर उन्हें स्वीकारें। बहस करते हुए भी एक-दूसरे का सम्मान करें। पत्नी को अपमानित न करें। बहस के बजाय समस्या हल करने पर जोर दें। हंसी-मजाक नहीं छोड़ें और मिलकर आनंद लें।

* बोलना अगर चांदी है तो चुप रहना सोना। भाषा की मर्यादा रखनी चाहिए। वाणी में सुई भले ही रखो, पर उसमें धागा डालकर रखो ताकि सुई केवल छेद ही न करे वह आपस में जोड़कर भी रखे। भाषा बिगड़ती है तो जीवन में महाभारत हो जाता है। मनचाहा बोलोगे तो अनचाहा सुनना पड़ेगा। चार वर्ष की उम्र में आदमी बोलना सीख जाता है लेकिन दुर्भाग्य है कि चालीस साल की उम्र तक भी चुप रहना नहीं सीख पाता है। चुप रहना जीवन की एक बड़ी साधना है।

* मनुष्य अगर ईश्वर से डरकर रहे और धैर्य धारण करे तो वो सारी बुराइयों से बचेगा और भलाई का काम ही सोचेगा। अच्छे काम करना ही ईश्वर को याद करना है।

* अच्छी बातें हर कोई नहीं कर पाता क्योंकि यह एक मुश्किल कला है। अगर आप अच्छी बातें न कह पाएं, तो कम से कम मुस्कुराना न भूलें।

* आदमी के जहन में दु:ख सिर्फ नींद आने से पहले तक ही होता है, इस पूरी दुनिया में ऐसा कोई गम नहीं जिसे आदमी बर्दाश्त नहीं कर सकता।

* पूजा और प्रार्थना करनेवाले का भी बड़ा सात्विक अहंकार मजबूत हो जाता है और जब अहंकार सात्विक होता है, तो बहुत जहरीला हो जाता है।

* मनुष्य में आलस्य होना सबसे मनहूस आदत है। मनुष्य को बहुत सारी मुसीबतें आलस्य के कारण से ही झेलनी पड़ती हैं।

* वो इज्जतवाला कभी नहीं होता, जिसकी इज्जत लोग डर के मारे करते हैं।

* ऐसी कोई भी चीज जीवन में नहीं है जिसका उपयोग न हो सके। कामवासना ब्रह्मचर्य बन जाती है। क्रोध करुणा हो जाता है। भय प्रार्थना बन जाता है। दुख तपश्चर्या हो जाता है। कलाकार चाहिए, कुशलता चाहिए और नहीं तो जीवन जो महल बन सकता था, वही आपके लिए कारागृह बन जाता है। यह आप पर सब निर्भर है।

* आदमी उम्र से बड़ा नहीं बनता बल्कि बुद्धि और समझदारी से बड़ा बनता है। दौलतमंद होने से ज्यादा अच्छी दिल की दौलतमंदी है।

* अच्छी सम्मति स्वीकार करना अपनी योग्यता बढ़ाना ही है।

* सम्मान पाने का मार्ग यह है कि जो तुम प्रतीत होने की कामना करते हो, वैसा बनने का प्रयास करो।

* अपने सम्मान पर आघात पहुंचने की बजाय हजार बार मरना बेहतर है।

❋ पहनावा ऊपरी चीज है, जबकि ज्ञान और गुण आंतरिक संपन्नता है।

❋ जीवन का सबसे बड़ा पुरस्कार, जीवन की सबसे बड़ी सम्पत्ति है- किसी विशेष बात की प्रवृत्ति लेकर जन्म लेना। उसी की पूर्ति करने में मनुष्य को सुख मिलता है।

❋ कवि का सबसे बड़ा गुण नई-नई बातों का सूझना है। कवि का काम है कि वह प्रकृति-विकास को गहराई से समझे।

❋ प्रत्येक को अपनी उन्नति में संतुष्ट नही रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

❋ बुद्धिमानों की रचनाएं ही एकमात्र ऐसी अक्षय निधि है, जिन्हें हमारी संसति विनष्ट नहीं कर सकती।

❋ जो केवल विचारते हैं उनके लिए विश्व सुखमय है, जो अनुभव करते हैं उनके लिए दु:खमय।

❋ माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ कहीं गई है। इस महामहिमामयी मातृभूमि की सेवा सभी लोगों को करना चाहिए।

❋ जल से शरीर शुद्ध होता है, सत्य से मन, विद्या और तप से आत्मा तथा ज्ञान से बुद्धि शुद्ध होती है।

❋ आदमी में ठीक उतना ही दिखावटीपन होता है जितना उसमें समझ की कमी होती है।

❋ अपनी त्रुटियों के विषय में हम सदैव स्वयं को धोखा देते रहते हैं और अंत में उन्हें ही अपना सद्गुण समझने लगते हैं।

❋ एक बुद्धिमान पुरुष की प्रशंसा उनकी अनुपस्थिति में कीजिए। किंतु स्त्री की प्रशंसा उसके मुख पर।

❋ नाश से पूर्व व्यक्ति घमण्डी हो जाता है किंतु सम्मान सदैव व्यक्ति को नम्रता प्रदान करता है।

❋ घृणा करना शैतान का कार्य है, क्षमा करना मनुष्य का धर्म है, प्रेम करना देवताओं का गुण है।

❋ जो मिट्टी से भी सोना बनाते हैं वही व्यवहारकुशल हैं।

❋ व्यक्ति का जीवन त्याग और प्रेम के बिना पूर्ण नहीं होता।

❋ उन्नति के लिये प्रतिदिन आत्म निरीक्षण करना चाहिए कौन सा अच्छा कार्य नहीं हो पाया जो करना चाहिये था और कौन सा गलत हुआ जो नहीं करना चाहिए था।

❋ एक क्षण हमारे जीवन को नहीं बदल सकता, लेकिन उसी क्षण में लिया गया निर्णय हमारे जीवन को बदल सकता है। खूब सोच-समझकर निर्णय लेना चाहिए।

❋ कोई-कोई व्यक्ति के पास सुस्वादु भोजन उपलब्ध होता है पर उसके पास भोजन का अन्न लेने के लिए दांत नहीं होते, सुविधाएं उपलब्ध नहीं होती। किसी-किसी के पास सुविधाएं उपलब्ध है लेकिन उसके पास स्वादिष्ट भोजन का अभाव होता है। इसीको सहयोग कहते हैं भाग्य की विडंबना है। पूर्वजन्मों का फल ही व्यक्ति को संयोग या दुर्योग प्रधान करता है।

❋ किसी भी व्यक्ति का सुन्दर होना अच्छा है उसके साथ-साथ गुणवान भी हो तो उसकी सुन्दरता अधिक बढ़ जाती है। उसका यश चारों ओर फैलता है। कुल (वंश) घराना अच्छा होने के साथ व्यक्ति स्वभाव से शीलवान और व्यवहार कुशल हो तो कुलीन होने का फल कई गुना बढ़ जायेगा। ज्ञानी के साथ-साथ सिद्धिवान भी हो तो अत्यंत फलदायक है।

❋ मनुष्य जो भी छोटा-बड़ा कार्य करे उसे पूरी शक्ति लगाकर करें। आधे दिल व आधे उत्साह से किया हुआ कार्य कभी सफल नहीं होता। प्राणों की बाजी लगाकर काम करना शेरों से सीखना चाहिए। शेर जब अपना शिकार करता है तो पूरी ताकत लगा देता है। काम करके सफलता पाने का यही उपाय है जो भी कार्य करो मन से व पूरी लगन व शक्ति से करना चाहिए।

❋ मनुष्य को दुष्ट राजा के राज्य में कभी नहीं रहना चाहिए। दुष्ट मित्र का संग सर्वथा त्याग करना चाहिए। दुर्जन पुरुष को कभी भी शिष्य नहीं बनाना चाहिए। पत्नीविहीन रहना अच्छा है पर किसी दुराचारिणी को अपनी पत्नी बनाना कदापि उचित नहीं है, क्योंकि इन सबसे तो अपमान, अपयश और लोक निन्दा सहनी पड़ती है।

❊ मनुष्य के आंसू बड़े दुर्लभ है। एक तो वेदना के आंसू, विरह के आंसू और वंदना के आंसू। जब कोई पाप करने पर आंसू निकल आते है वे पश्चात्ताप के आंसू वेदना के आंसू कहलाते है। अपने किसी प्रिय व्यक्ति के खो जाने पर उसकी याद में आंसू बहते है वो विरह के आंसू होते है और ईश्वर को पुकारते-पुकारते भक्ति में जो आंसू निकलते है वे प्रार्थना, वंदना के आंसू होते है।

❊ हम सब इस संसार में यात्री है, हमारा सबसे सम्बन्ध नदी, नाव संयोग जैसा है। देर-सबेर सबको यहाँ से जाना ही है। मिलन के क्षण में भी विदा होना मत भूलो, कल हमें इन सबसे अलविदा होना है। फूल खिले तो खिले, जीवन मिले तो मिले, जीवन में मिली मौत को कभी मत भूलना।

❊ **पिता-** जीवन में पिता एक गुमनाम अभिनायक है। माँ तो ईश्वर द्वारा रचित प्रस्तुति है। मां ही बच्चे को जन्म दे सकती है वह बच्चे की शिक्षा, स्वास्थ्य परवरिश कर सकती है। उसके देखभाल की भी जिम्मेदारी निभाती है। पिता एक पुरुष है जिसे ईश्वर ने ही बनाया है। वह गृहस्थी संभालने ही समझौता शुरू कर देता है। वह परिवार के लिए अपनी जरूरतों को बलिदान कर देता है। पुरुष अपने माता-पिता के चेहरे पर मुस्कान देखने हेतु अपने सपनों की बलि चढ़ा देता है। वह अपनी युवावस्था अपनी पत्नी, बच्चों के लिए बिना कोई शिकायत के दांव पर लगा देता है। अपने बच्चों का भविष्य बनाने के लिए जीवनपर्यंत ऋण लेकर अपने परिवार की गाड़ी चलाता है। वह सदैव प्रयास करता है कि उसके बच्चे अच्छी-से अच्छी शिक्षा प्राप्त करे, विदेशों में पढ़े, पदोन्नति करें। इसके लिए वे उन्हें सक्षम बनाता है। स्वयं अभाव की जिन्दगी जीता है पर अपने बच्चों को चिकित्सक व अभियांत्रिक बनाना चाहता है। वह सारे खर्चों का चुपचाप वहन करता है। पिता सभी समस्याओं का हल निकालने की कोशिश में लगा रहता है। शारीरिक, मानसिक व आर्थिक परेशानियों के बावजूद विपरित परिस्थितियों में काम करता है। पिता के रात्रिभर जागरण, चिंता में अंधेरी रात में करवटें बदलने के आदि पर किसी ने गौर नहीं किया। माताओं की तो रोनेकी बात सबके सामने आती है पर पुरुष कभी रोवें तो वह व्यक्ति कायर माना जाता है। उसे अपने आंसू बहाने के लिए एक अंधेरे कोने की तलाश होती है। बच्चे प्राय: पिता के त्याग को पैसे से तोलने की बात करते है पर पिता जो बच्चों के लिए करता है उसका तो कोई मूल्य ही नहीं होता। पिता ने हमेशा त्याग किया है परदे के पीछे एक गुमनाम अभिनायक की तरह।

❊ जीवन का सबसे बड़ा खतरा कोई जिम्मेदारी न उठाना। हर पल, हर क्षण जोखिम उठानी चाहिए, नये काम की कोशिश करनी चाहिए। अगर आप जोखिम उठाने से डरेंगे तो कोई नया कार्य नहीं कर पाएंगे। अगर इसमें असफल हो गये तो कुछ भी नहीं बिगड़ेगा और अगर सफल हो गये हो तो कितना अच्छा होगा। जोखिम न उठानेवाले लोग जीवन में कुछ भी नहीं कर पाएंगे। ऐसे लोग खुलकर हंस भी नहीं सकते, उन्हें लगता है कि यह उनकी स्थिति के लिए ठीक नहीं है। वे अपने प्यार का इजहार भी नहीं कर पाते, उन्हें हमेशा डर बनाये रहता है कि सामनेवाला उनका हर प्रस्ताव इनकार कर देगा और वो शायद अपनी मित्रता भी खो बैठेंगे। जोखिम उठाने से ऐसे लोगों की जिंदगी बदल सकती है एक नयी उपलब्धि हासिल कर सकते है और एक बेहतरीन पल अपनी यादों में जोड़ सकते हैं। कोशिश करने से प्रेम, संकल्प और जोखिम उठाने का साहस करें। बिना जोखिम उठाये आप कभी आगे नहीं बढ़ सकते, न ही अपनी समस्याओं को सुलझा सकते है। हंसना मूर्ख दिखने का जोखिम है। रोना जज्बाती दिखने का जोखिम है। किसी दूसरे की मदद करना उलझने का जोखिम है। अपनी भावनाओं को प्रदर्शित करने के लिए जोखिम उठाना ही पड़ता है। जनता के सामने वह विचार और अपने लक्ष्य रखना उन्हें गंवाने का जोखिम उठाना पड़ता है। जीना मौत का जोखिम उठाना है, विश्वास करना निराशा का

जोखिम उठाना है, कोशिश करना असफलता का जोखिम उठाना है, जोखिम उठाये बिना जीवन में सबसे बड़ा खतरा है कोई जोखिम न उठाना। जो लोग जोखिम नहीं उठाते उनके पास कुछ नहीं होता, वे कुछ नहीं बनते। वे सिखने, महसूस करने से वंचित रह जाते है।

❋ महापुरुषों के कुछ अजीब दास्तां होती है, विभूति चली जाती है पर यादें अमिट रह जाती हैं।

❋ समय, स्वास्थ्य और संबंध इन तीनों पर कीमत का विज्ञापन नहीं होता पर जब हम इन्हें खो देते हैं तब इनकी सही कीमत का अहसास होता है।

❋ परिश्रमी कभी निर्धन नहीं रह सकता। उद्यम करनेवाले को प्रारब्ध में लिखा हुआ मिलता है। सोते हुए सिंह के मुख में पशु अपने आप नहीं चले जाते। परिश्रम के बिना तो उसे भी भूखा ही मरना पड़ता है।

❋ उत्तर का प्रत्युत्तर देना अर्थात् ईंट का जवाब पत्थर से देना ही झगड़े का मूल कारण है। किसी ने यदि अपशब्द कहें और बदले में दूसरे ने भी ऐसा ही किया तो झगड़े की शुरूआत हो जाती है, क्योंकि प्रत्युत्तर सदैव उग्र होता है और उग्रता झगड़ा बढ़ानेवाली होती है, झगड़े का निराकारण मात्र मौन ही है।

❋ मनुष्य का जीवन विचारों से चलता है। यदि विचार अच्छे हैं, तो जीवन भी अच्छा बनेगा। यदि विचार ही खराब हो तो जीवन भी खराब हो जायेगा।

❋ सार्वजनिक हित के लिए हम जो कर सकते थे वह नहीं करते। इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि चारों ओर फैली गिरावट में हमारा भी हाथ है, चाहे जान-बुझ कर या भूल-चूक से या पाप से। इसलिए न्याय की मांग यह है कि इस प्रवृत्ति को बदलने के लिए अब हमें पूरी कोशिश करनी चाहिए।

यदि स्वस्थ मूल्य वाले काफी लोग समस्याओं से जुट जायें और मनुष्य जाति में शांति और बुद्धिमत्ता लाने के लिए जी-जान से कोशिश करें, तो अब भी हम अपनी सभ्यता को विनाश से बचा सकते हैं। मनुष्य अपने विचारों की उपज मात्र है, वह जो कुछ सोचता है, वैसा ही हो जाता है।

❋ अगर आप टाल-मटोल करने में माहिर हैं तो आप खुद ही अपने दुश्मन हैं। आप खुद अपनी ही तरक्की नहीं कर पाते हैं तभी तो तरक्की से बचने के लिए टाल-मटोल करते हैं। किसी भी अच्छे काम को कल पर मत टालिए। इसमें नुकसान आखिर आप का ही होगा। कल का काम आज और आज का काम अभी कर डालिए। पता नहीं कल क्या होगा? और अगर हर काम को कल पर टाला तो बहुत बुरा होगा।

❋ मनुष्य द्वारा किया जानेवाला कोई भी कार्य असंभव नहीं होता। लेकिन उसे करने के लिए एकाग्रता के साथ-साथ उचित मार्गदर्शन भी आवश्यक है। आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच जरूरी है। योजनाबद्ध तरीके से काम करके ही सफलता प्राप्त कर सकते हो। मन से यह निश्चय कर ले यह काम करना है तो बस करना है। धैर्य इसका सबसे बड़ा संबल होता है।

❋ दुनिया में कोई भी संतुष्ट नहीं है। गरीब अमीर होना चाहते हैं, अमीर सुन्दर होना चाहते हैं। कुंवारे शादी करना चाहते हैं और शादी-शुदा मरना चाहते हैं। यहाँ हर आदमी दु:खी है। इसका कारण इतना ही है कि यहाँ कोई अपने होने में खुश नहीं है। हरेक आदमी दूसरे जैसा होना चाहता है। जबकि सुखी होने का सूत्र है- तुम अपने होने में खुश हो जाओ क्योंकि तुम्हारे जैस सिर्फ तुम ही हो। तुम्हारे जैसा दुनिया में दूसरा कोई नहीं है। तुम बेजोड़ हो। इसलिए दूसरे जैसे बनने की कुचेष्टा मत करो। क्योंकि वह तुम भी नहीं हो सकते। आखिर वह भी तो बेजोड़ है।

❋ सत्य के बिना संसार नहीं चलता। मगर झूठ के बिना भी संसार नहीं चलता। हमारे सभी रिश्ते-नाते झूठ की बुनियाद

पर टिके हुए हैं। पर्दे के पीछे की जिन्दगी का सच अगर हम ईमानदारी से सार्वजनिक कर दें तो सब भेद खुल जाएंगे। लोग एक-दूसरे की पीठ-पीछे जो कहते हैं अगर मुँह के सामने कहें तो दुनिया में दो दोस्त भी नहीं बचेंगे। हम भीतर के सच को दबाकर बाहर के झूठ से संसार चलाते हैं। संसार झूठ से चलता है, धर्म में झूठ बिल्कुल भी नहीं चलता।

* अपने दु:ख से दु:खी होकर तो हर कोई आंसू बहा लेता है पर जो दूसरों की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझ कर जीता है, धर्मात्मा और ज्ञानी तो वही है जिसकी आंखें दूसरों के दु:ख और पीड़ा को देखकर छलछला उठती हैं। वास्तव में मनुष्य तो वही है जो दूसरों के दु:ख-दर्दों को पहचानता है और उन्हें दूर करने का प्रयत्न करता है। जो दूसरों के दर्द को नहीं पहचाने और दूसरों की पीड़ा और कष्ट देखकर सुख का अनुभव करे वह तो नर कहलाने योग्य ही नहीं है, वह तो नराधम है।

* पुत्रहीन व्यक्ति के लिए उसके स्वयं का घर भी सूना है। उसके घर में उसका अकेलापन उसे काटता है। जिसके कोई सम्बन्धी नहीं उसे अपना घर पराया, परदेस जैसा सूना-सूना लगता है। निर्धन व अभावग्रस्त व्यक्ति के लिए हर तरफ सूना-सूना रहता है, क्योंकि वे जहां भी जाता है लोग उससे दूरी कर लेते है। मूर्ख व्यक्ति दूसरे के दु:ख से न तो द्रवित होता है न ही सहानुभूति वश किसीकी सहायता करता है। मूर्ख व्यक्ति का हृदय उदार भावों से सर्वथा शून्य होता है। अत: रिश्ते-नातेदार विहीन व्यक्ति व मूर्ख व्यक्ति का जीवन निरर्थक है।

* अच्छी योजना बनाना बुद्धिमानी का काम है पर वो ठीक से पूरी धैर्य और परिश्रम से ही होती है।

* सफलता उन्हीं लोगों को मिलती है जो स्वयं पर विश्वास करते हैं। वे अबूझ परिस्थितियों से जूझने का जज्बा रखते हैं।

* जो ज्ञान केवल पुस्तकें पढ़कर नहीं हो पाता उस ज्ञान को व्यावहारिक ढंग से समझने के लिए गुरु का मार्गदर्शन आवश्यक है। गुरु के द्वारा ज्ञान प्राप्त करने से ज्ञान में जो गहराई और निखार आता है वह स्वयं पुस्तक पढ़ने से नहीं आता। गुरु मनुष्य का सच्चा मार्गदर्शक होता है। गुरु के बिना कोई भी व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। राहु की तरह राह में आनेवाले रहस्यों की विवेचना करके उन्हें सुलझा देता है।

* स्वर्ग भूमि सुन्दर है पर उपजाऊ नहीं है पर मानव जिस भूमि पर रहता है वह उपजाऊ है। देवता यद्यपि ऊपर रहते हैं पर उनके विचार बड़े संकीर्ण होते है। जबकि मनुष्य नीचे रहता है पर उच्च विचारों से मरकर ऊपर जाता है। अगर मनुष्य अपने काम और आचरण को ऊंचा नहीं रखे तो फिर भी वह मरकर नीचे ही आयेगा।

* महान व्यक्ति महत्वाकांक्षा के प्रेम से बहुत अधिक आकर्षित होते है।

* लाड़-प्यार बच्चे में दोष उत्पन्न करते है और उसे बिगाड़ देते है। प्रताड़ना सुधार का प्रतीक है। जो माता-पिता अपने पुत्र को व गुरु अपने शिष्य को केवल लाड़-प्यार करते हैं और गलत काम करने पर नहीं रोकते अथवा दण्डित नहीं करते ऐसे पुत्र और शिष्य बिगड़ जाते है। बच्चे का भविष्य देखते हुए माता-पिता का यह दायित्व है उन्हें अच्छा करने के लिए प्रोत्साहित करें, स्नेह दे, पर गलत काम करने पर उन्हें प्रताड़ित करें इसीसे उनका विकास होगा।

* इस संसार में दु:ख और श्रम से प्यार करना चाहिए। दु:ख के बिना हृदय निर्मल नहीं होता और श्रम के बिना मनुष्यत्व का विकास नहीं होता।

* कानून अंधा होता है, लेकिन कानून का शासन चलाने वाले को अपनी आंखें खुली रखनी होती है। कानून की कोई भी धारा यदि यदि नागरिक के जनतांत्रिक अधिकारी का हनन करती है तो उस पर पुनर्विचार होना चाहिए। कानून को हाथ में लेने का अधिकार किसी को नहीं है, इसी तरह किसी के अधिकारों पर अंकुश लाना भी विवेक की मांग करता है। विवेक और जनतांत्रिक मूल्यों का तकाजा है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा हो। अपने मन की

बात न कहना भी गुलामी ही है। इसलिए मन की बात कहने पर बंदिश लगाना किसी को गुलाम बनाना है। हमें स्वतंत्र रहना है। यह हमारा अधिकार है, दायित्व भी।

❋ राज को राज ही रहने दो- इंसान अपने मन की बात किसी को बताना चाहता है। वह सुख-दुख ही नहीं अपने स्वप्न भी बांटना चाहता है। वह सब भी बताते हैं जो हम नहीं हैं लेकिन होना चाहते हैं। जैसे कोई अपने गरीब पूर्वज को अमीर बताता है। इस झूठ के जरिए वह धनवान होने का सपना बांटता है। कुछ लोग अपनी बात हर किसी को बताते हैं। लेकिन ज्यादातर अपनी सबको नहीं बता पाते। कुछ बातें लोग अपने खास दोस्त को बताते हैं तो कुछ अपनी पत्नी को। जिसे हम सबसे ज्यादा करीबी मानते हैं उससे कुछ भी छुपाना नहीं चाहते पर सब कुछ बता चुकने के बाद भी कुछ बातें ऐसी होती हैं जो किसी को बताई नहीं जा सकतीं। हमारे मन के भीतर एक अंधेरा कोना होता है जहां वे राज छुपे रहते हैं। उन्हें उजागर करने पर अपने बेहद करीबी व्यक्ति को खो देने का खतरा भी रहता है। ऐसे में सत्यवादी बनने से अच्छा है राज को राज ही रहने देना।

❋ सफल होने के लिए अच्छे मित्रों की आवश्यकता होती है लेकिन सर्वोच्च सफलता प्राप्त करने के लिए अच्छे शत्रुओं की आवश्यकता होती है, इससे व्यक्ति सिर्फ अपने सफलता पर ध्यान एकत्रित कर पाता है।

❋ एक साल में ५० मित्र बनाना आसान है मगर ५० साल में एक सच्चे मित्र से मित्रता बनाये रखना बहुत कठिन है।

❋ हंसमुख व्यक्ति वह फुहार है जिसके छींटे सबके मन को ठंडा करते हैं।

❋ आप सफल होना चाहते है तो गोपनीयता सीखनी चाहिए। किसी कार्य सफल होने के लिये योजना बना रहे हो तो उसके क्रियान्वित होने तक उसे गुप्त रखना चाहिए। ऐसा न करने पर आपकी योजना विफल भी हो सकती है। यह कटु सत्य है जो व्यक्ति गोपनीयता नहीं रख सकता उसे नुकसान उठाना पड़ता है।

❋ सदाचार का परीक्षा काल सदा ही संकट का होता है। संकट उपस्थित होने पर सदाचार की सुरक्षा में तत्पर व्यक्ति दूसरोंकी दृष्टि में निश्चित रूप से ही ऊपर उठ जाता है। उसका महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है, लोग उसका विशेष आदर करने लगते है। उसे अन्य मित्रों का सहयोग सुलभ होने लगता है। उसके समक्ष संकट अधिक दिनों तक स्थिर नहीं रह सकता।

❋ आत्मकल्याण का काम आकांक्षिक हो जीवमात्र को अभय दान के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए, इसीमें उसका कल्याण है।

❋ अपने अभ्यास से मनुष्य अनेक गुणों को प्राप्त कर सकता है पर कुछ गुण ऐसे भी है जो स्वाभाविक होते है जैसे दानशीलता, मधुर वचन बोलना, शौर्यता, पांडित्य यह सीखने नहीं पड़ते स्वभाव से ही मनुष्य में आ जाते है। मनुष्य में दो प्रकार के गुण यत्नज और सहज, जिन्हें मनुष्य अपने प्रयत्न द्वारा प्राप्त करता है वे यत्नज होते हैं, और जो ईश्वर द्वारा प्रदत्त होते हैं वे जन्मजात कहलाते हैं।

❋ जो काम घड़ों जल से नहीं होता उसे दवा के दो घूँट कर देते हैं और जो काम तलवार से नहीं होता वह काँटा कर देता है।

❋ सबसे उत्तम विजय प्रेम की है। जो सदैव के लिए विजेताओं का हृदय बांध लेती है।

❋ मनुष्य मन की शक्तियों का बादशाह है। संसार की समस्त शक्तियां उनके सामने नतमस्तक हैं।

❋ मनुष्य का शरीर, धन-सम्पत्ति सभी चीजें नाशवान हैं। धर्म ही एक ऐसी चीज है जो अजर-अमर हैं। हर व्यक्ति को धर्म-संग्रह में प्रवृत्त रहना चाहिए। बुद्धिमान व्यक्ति को यह निश्चित समझना चाहिए कि उसका शरीर नाशवान (सदा न रहनेवाला) है। इसी प्रकार वैभव, धन-सम्पत्ति भी सदा किसी के पास नहीं रहती। मृत्यु निश्चित है, अर्थात् यह सत्य है कि जो प्राणी पैदा हुआ है, वह एक दिन अवश्य मरेगा। मृत्यु का दिन कब आयेगा - इस चिन्ता में रहनेवाला व्यक्ति मृत्यु को

सदैव अपने समीप समझता है और समझना भी चाहिए। इस स्थिति में मनुष्य को सांसारिक उलझनों को छोड़कर धर्म-संग्रह में लगे रहना चाहिए, क्योंकि धर्म ही हमारा सच्चा मित्र है। मृत्यु के पश्चात् केवल धर्म ही हमारे साथ जाता है। बाकी सारा वैभव यहीं रह जाता है।

* केवल जन्म देने के कारण ही पिता अपनी सन्तान का हितैषी नहीं बन जाता। अपनी मृत्युपरांत अगर वह कर्ज का भार छोड़ जाये तो सन्तान का शत्रु ही कहा जायेगा। माता होने से ही स्त्री सती-साध्वी नहीं बन जाती। यौन सुख को अन्यत्र खोजनेवाली स्त्री भी सन्तान की शत्रू होती है।

पत्नी रूपवती हो तो कामांध लोगों का आकर्षण बन जाती है। काम तृप्ति के लिए वह भी परिवार की शत्रु बन जायेगी और पुत्र मूर्ख हो तो वह परिवार का अहित करते हुए शत्रु ही कहा जाता है। अभिप्राय यह है कि उद्यमी पिता, पतिव्रता मां, निरहंकारी स्त्री तथा विद्यावान पुत्र ही आदर्श रूप लिये होने से आदरणीय एवं वांछनीय होते हैं।

* बुजुर्गों की संगति करनी चाहिए। बुजुर्गों के चेहरे पर हजार-हजार अनुभव लिखे होते हैं। जो भी शुभ करना है, वह आज, अभी और इसी वक्त कर लो। कल कुछ नहीं कर पाओगे। बूढ़ा इंसान इस पृथ्वी का सबसे बड़ा शिक्षालय है उसे देखकर उगते सूरज की डूबती कहानी का बोध होता है।

* व्यक्ति को सीखने की ललक होनी चाहिए। ललक हो तो कई शिक्षाएं क्षुद्र से क्षुद्र प्राणी चींटी से भी सीख सकता है नही तो कोई महागुरु भी कुछ सीखा नहीं सकते। प्रयत्न और पुरुषार्थ चींटी से सीखना चाहिए। चींटी अपने से कई गुना वजन लेकर बार-बार दीवार पर चढ़ती है और गिरती, फिसलती है मगर हिम्मत नहीं हारती। फिर कोशिश करके सफल हो जाती है इसलिए व्यक्ति को संघर्ष और प्रयत्न करना चाहिए इससे अवश्य सफलता प्राप्त होगी। महावीर से लेकर महात्मा गांधी तक, गौतम बुद्ध से लेकर बिरला, बजाज तक, किरण बेदी, शंकराचार्य, तुकाराम सभी संघर्ष करके अपनी मंझिल तक पहुंचे है।

* जो सच्चा हो वही कहो, जो अच्छा हो वही करो, जो मीठा हो वही बोलो, जो गीता का पाठ हो वही सुनो और जो सत्यं शिवम् सुन्दरम् हो वही देखो। प्रभु का प्रसाद पाओ जो दिव्य और भव्य हो। पिओ वही, जिसमें अमृत का स्वाद हो, चाल वही चलो जिसमें सच्चरित्र हो, कार्य वही करो जो पवित्र हो, अध्ययन वही करो जिसमें चिंतन हो, थोड़ा बोलो सुनो अधिक, कम बोलो और काम का बोलो, जो अपने जीवन में नपा-तुला बोलता है, उसके बोल दुनिया हमेशा याद रखती है।

* अगर तुम किसीसे सन्मान चाहते हो तो तुम अपने बड़ों की इज्जत करना सीखो, छोटे तुम्हारी इज्जत करेंगे। इज्जत करने में ही इज्जत पाने का राज छुपा है।

* आपने जो कमाया है इस बात पर कभी अभिमान मत करना क्योंकि आप भूल रहे है शतरंज की बाजी समाप्त होने पर राजा और अन्य मोहरे एक ही डिब्बे में बंद करके रखे जाते है।

* जो मित्र आपके सामने चापलूसी की बातें करता हो और पीठ पीछे आपके काम को बिगाड़ देता हो ऐसा मित्र तो त्याग देने योग्य है।

* जीत और हार व्यक्ति की सोच पर निर्भर है मन से मान लो तो हार और ठान लो तो जीत है।

* यदि हमारा मन ईर्ष्या-द्वेष से रहित बिल्कुल शुद्ध हो तो दुनिया की कोई वस्तु हमें नुकसान नहीं पहुंचा सकती।

* सच्चाई से जिसका मन भरा है, वह विद्वान न होने पर भी बहुत देश सेवा कर सकता है।

* क्षमाशीलता की भावना के साथ हुए अनुचित व्यवहारों में विचरण करने के स्थान पर उन सब को भूल जायें और वर्तमान में जीये।

❋ आपत्तियों में घबराना नहीं चाहिए, आपत्तियों में भगवान का सहारा है, आपत्तियों में ही तो आप परिश्रम करके विकास कर पाते है।

❋ जीवन कोई समस्या नहीं है, इसको सुलझाया जा सकता है, बल्कि जीवन तो सच्चाई है, जिसको आनन्द से अनुभव करना चाहिये।

❋ वह भाग्यवान होगा जिसका साथी बुद्धिमान हो और उसके सब अच्छे कार्यों में सहयोग देता हो।

❋ खुश रहने के लिये हमें बहुत सी चीजों को भूलना पड़ता है और हमें भूलने की कला सीखनी चाहिये।

❋ कर्म, ज्ञान और भक्ति ये तीनों जहां मिलते हैं वहीं सर्वश्रेष्ठ पुरुषार्थ जन्म लेता है।

❋ अपने को संकट में डाल कर कार्य संपन्न करने वालों की विजय होती है, कायरों की नहीं।

❋ अपने कर्त्तव्य पथ का निश्चय न कर सकनेवाले व्यक्ति को न तो घर में सुख मिल सकता है और न बाहर। घर उसे आसक्ति के कारण काटता है और बाहर परिवार को छोड़ने और अकेलेपन की पीड़ा से व्यथित करता है। सच्चा सुख न गृहस्थ में है और न ही गृह परिवार के त्याग में, सच्चा सुख तो कर्त्तव्य पालन में है।

❋ किसी व्यक्ति का सुन्दर होना अच्छा है सुन्दरता के साथ-साथ गुणवान भी होना उसकी सुन्दरता बढ़ा देती है। उसकी हर तरफ सराहना होगी, उसका यश चारों तरफ फैलेगा।

❋ धन की सार्थकता उसका उपयोग करने में है। यदि मनुष्य अपने द्वारा संचित धन का सदुपयोग नहीं करे तो उसका धन संचित करना निरर्थक ही है। उच्च कुल के साथ, शील, स्वभाव, ज्ञान, संचित धन का सदुपयोग इन चारों के समन्वय से व्यक्ति का जीवन बहुत ही प्रशंसनीय होता है और ऐसे महापुरुषों की ख्याति चारों ओर फैल जाती है।

❋ वह व्यक्ति अविश्वसनीय होता है जो क्रुद्ध होने पर आपके सब भेद उगल देता है। ऐसा व्यक्ति कदापि मित्रता के योग्य नहीं है। ऐसा व्यक्ति निकृष्ट श्रेणी का होता है, ऐसे व्यक्ति को कभी मित्र नहीं बनाना चाहिये वह सदैव धोखा देते रहता है। गुण और दोष का आंकलन करने के बाद ही व्यक्ति के साथ मित्रता करनी चाहिए।

❋ प्रार्थना कुछ समय के लिये करो व पूरे मन से करो। अगर प्रार्थना में प्राण नहीं जूड़े तो प्रार्थना अधूरी रहती है। जहां मन पलभर के लिए नियमित हो जाएं तो प्रार्थना सार्थक हो जाती है।

❋ विश्वास जीवन है जिनका विश्वास मर गया है वे सब मरे हुए है। जिनका अपने ऊपर से भरोसा उठ गया है फिर उसे दुनिया से उठने में देर नहीं लगती। यदि आदमी का मनोबल टूट जाएं तो फिर आदमी के टूटने में वक्त नहीं लगता।

❋ दीपक की ज्योति अंधकार का नाश करती है। सात्विक आहार करनेवाले की संतान में सात्विक संस्कार आते है। सात्विक अन्न को खानेवाले की संतान सद्‌गुण संपन्न होती है। तामसिक आहार करनेवाला छल-कपट, बेईमानी से धन पैदा करनेवाला उसकी संतान भी वैसी ही होती है, दुर्गुणों का भंडार होती है।

❋ विद्या द्वारा ज्ञान प्राप्त करने में व्यक्ति को कभी भी प्रमाद नहीं करना चाहिए। विद्या से संसार की सभी वस्तुएँ सुख, वैभव, ऐश्वर्य, वैभवशाली जीवन प्राप्त हो सकता है। अत: विद्या ही वांछनीय है। विद्वान का संसार में यश चारों ओर व्याप्त होता है।

❋ सत्य और ईमान का रास्ता स्वर्ग में जाता है। सच्चाई के दिन कभी नहीं लदते। टेढ़ी-मेढ़ी लकड़िया हमेशा चूल्हे जलाने के काम में आती है। टेड़े-मेढ़े वृक्षों को कोई नहीं छेड़ता सीधे-सपाट वृक्ष ही हमेशा काटे जाते हैं।

❋ जब पैसा बोलता है तब सत्य चुप रहता है।

❋ कोशिश करनेवाले कभी असफल नहीं होते।

❋ प्रसिद्ध होने के लिए मनुष्य को निरंतर उन्नतिशील बने रहना पड़ता है।

❋ अधिकतर लोगों को यह पता नहीं कि वो जीना क्यों चाहते है, पर जिन्दगी की हकीकत तो यही है पेट भरने के लिए जीते है। पैसा कमाना चाहते है, पैसा किसलिए कमाना चाहते है क्योंकि पेट भरना पड़ता है। पैसा नौकरी मिलने पर मिलता है, नौकरी प्रमाणपत्र से मिलती है, प्रमाणपत्र के लिए शिक्षा में उत्तीर्ण होना पड़ता है इसलिए पढ़ना पड़ता है। मनुष्य को यह पता नहीं है कि वो क्या और किसलिए कर रहा है।

❋ उद्योग, सम्मति, तप, पाप, मौन, शांति तथा सावधानी-भय से बचने के लिए निश्चित है।

❋ यदि किसी को गाली का उत्तर नहीं दिया जायेगा तो उसका क्रोध शान्त हो जायेगा। इसीलिए मौन को सबसे बड़ा वरदान और सुख माना गया है। जागरूक तथा सावधान व्यक्ति को किस प्रकार के भय की आशंका नहीं रहती। प्राय: रोग, शत्रु तथा चोर-डाकू आदि असावधान और सोते व्यक्ति पर ही आघात करते हैं, जागते को देखकर तो सभी भाग जाते हैं।

❋ जैन धर्म में अपरिग्रह का पाठ पढ़ाया जाता है लेकिन इसकी अनुयायी ठाठ में रहते है। श्रमण-संस्कृति आज वाणिज्य संस्कृति बन गई है। महावीर स्वामी के तन पर वस्त्र की एक चिंदी भी नहीं है उनके अनुयायी महावीर वस्त्र भण्डार चला रहे हैं। जीवन को दोहरा जीवन जी रहे हैं। एकान्त में मदिरापान का सेवन करते हैं और समाज में दिखाने के लिए पानी छानकर पीते हैं।

❋ आज कहीं भी नजर दौड़ाकर व्यक्ति अपने कर्त्तव्य-पालन से निरंतर भटकता जा रहा है। उसे जो दायित्व सौंपे गए हैं या सौंपे जाते हैं उन कर्त्तव्यों के पालन में वह कहीं भी ईमानदार और निष्पक्ष नहीं है। वह पूर्ण जिम्मेदारी और निष्ठा से अपने दायित्वों का निर्वाह नहीं करता। आप पाएंगे कुछ लोगों के भरोसे ही किसी संस्थान का कार्य-संचालन होता है। बहुत सारे लोग तो ऐसे हैं जो नौकरी पा जाने के बाद अपने आपको ईश्वर ही समझने लगते हैं।

व्यक्ति अपने दायित्वों को पूर्ण नहीं करता तो उसे ईश्वर भी माफ नहीं करता। आपको इस ईश्वर ने पृथ्वी पर भेजा है तो विशेष दायित्वों की संपूर्ति के लिए ही। नहीं तो वह आपको मनुष्य योनि के अतिरिक्त कुछ भी गधा, घोड़ा या अन्य जीव भी बना सकता था। यह निश्चित मानिए जब आप मनुष्य जन्म में हैं तो अपने इस जीवन को सार्थक और पूर्ण बनाइए। कुछ लक्ष्य और उद्देश्य रखिए कि क्या-क्या काम आप करेंगे। यों ही समय नष्ट नहीं करें ताकि सिर्फ पश्चाताप ही आपके पास शेष रहे। व्यक्ति सोचता है कि हमें कोई नहीं देख रहा है, हम चाहे जब अपने कार्यस्थल स्कूल, ऑफिस या दुकान प्रतिष्ठान पर उपस्थित हों। उसे लगता है कि चाहे काम में लापरवाही, मक्कारी करें, हमें कोई नहीं देख रहा। लेकिन यह सच नहीं है। ईश्वर आपके समस्त कृत्यों पर अपनी दृष्टि बनाए हुए है। आपके सत्कर्मों के लिए आपको पुण्य मिलता है तो गलत कार्यों के लिए पाप भी आपको मिलेगा।

❋ दिनचर्या लगातार बदलते रहें। बदलाव न लाने से आप जीवन को उदास, हताश बना सकते हैं।

❋ शिक्षा को नजरअंदाज न करें। हर दिन खुद को कुछ नया करने की चुनौती दें। कोर्स या क्लास जॉइन करना मुश्किल है। तो अपने काम से संबंधित किताबों को पढ़ लें।

❋ दोस्तों और रिश्तेदारों को बदलने की कोशिश न करें। जो जैसा है उसे वैसे ही अपनाएं।

❋ आप वही बनते हैं जो आप चुनते हैं। अपनी काबिलियत और विशेषताओं को पीछे न रखें उन्हें अहमियत दें।

❋ समय एक बैंक की तरह है और आप एक ग्राहक हैं। हर रोज बैंक आपके खाते में २४ नए घंटे डालता है। अब ये आप पर निर्भर करता है कि आप इस समय को कहां खर्च करते हैं। कुछ सीखने में या फिर नकारात्मक विचार रखने में।

❋ आपके साथ कोई गलत व्यवहार करता है तो करने दें। आप उनके स्तर पर न उतरें। खुद का एक स्तर बनाएं।

❋ कोई व्यक्ति कितना भी मजबूत हो, उसमें कोई न कोई कमजोरी होती ही है। इसलिए किसी कमजोरी के आधार पर लोगों को दरकिनार करने के बजाय उनकी बात सुनें।

❋ जब कुछ गलत हो जाए तो उस वक्त उन सभी बातों के लिए धन्यवाद अदा करें जो सही हो रही हैं।

❋ हर चीज को नाम देने की जरूरत नहीं है। इसी तरह से हर काम फायदे के लिए नहीं होहता है। कुछ बातें सिर्फ होने के लिए होती है। इसलिए हर चीज पर ज्यादा दिमाग लगाने की जरूरत नहीं होती।

❋ प्यार और इज्जत के लिए भीख न मांगे। खुद के साथ दोस्ती करें। अपने अच्छे दोस्त बनें। अपनी सोच से दोस्ती करें। इससे आप अच्छा महससू करेंगे।

❋ सच्चा धर्म वही है जिसमें दया, करूणा का भाव हो। विद्या निपुण व्यक्ति गुरु बनाने के योग्य होता है। शान्त और सहनशील पत्नी ही पत्नी बनाने के योग्य होती है और दु:ख में जो द्रवित हो वो ही बन्धु-बान्धव संबंध रखने लायक होते है। जिस धर्म में दया नहीं, वह धर्म धर्म नहीं हो सकता, ऐसे धर्म को अपनाये रखना कोई फायदा नहीं। जिस गुरु के पास ज्ञान नहीं, उसकी सेवा करने से कोई लाभ नहीं। निरन्तर झगड़ा करनेवाली पत्नी को घर में रखने का कोई लाभ नहीं उसका त्याग देना ही श्रेयस्कर है। जिन बन्धु-बान्धवों के मन में आपके प्रति कोई स्नेह न हो तो उनसे सम्बन्ध विच्छेद करना ही बेहतर है।

❋ पर्वतों और वनों में वनचरों के साथ विचारना श्रेष्ठ है, परन्तु मूर्खों के साथ स्वर्ग में भी रहना बुरा है।

❋ जैसे पके हुए फलों को गिरने के अतिरिक्त दूसरा कोई भय नहीं होता, उसी प्रकार उत्पन्न हुए मनुष्य को मृत्यु के सिवा अन्यत्र कोई भय नहीं है।

❋ अपनी इन्द्रियां ही अपनी शत्रु हैं, परन्तु यदि वे जीत ली जाएं तो वे मित्र हैं।

❋ जो माता-पिता, ब्राह्मण और आचार्य का अपमान करता है, वह यमराज के वश में पड़कर उस पाप का फल भोगता है।

❋ कायर अपने जीवन-काल में अनेक बार मरते हैं, वीर लोग केवल एक ही बार मरते हैं।

❋ दुष्ट के उदय होने से संसार को उस प्रकार दु:ख होता है, जैसे पाप-ग्रह केतु के उदय होने से लोगों को कष्ट होता है।

❋ जब तक किसी के पास धन नहीं होता, तब तक उसका कोई मित्र नहीं होता।

❋ धन केवल भोग की वस्तु नहीं है, उससे यश और कीर्ति भी मिलती है।

❋ अभागा वह है जो संसार के सबसे पवित्र धर्म कृतज्ञता को भूल जाता है।

❋ अवगुण नाव की पेंदी के छेद के समान है जो चाहे छोटा हो या बड़ा, एक दिन उसे डुबो देगा।

❋ जीवन पथ में एक बार उल्टी राह चलकर फिर सीधे मार्ग पर आना कठिन है।

❋ जिस मनुष्य में तेज नहीं रहता है, उसकी सब अवहेलना करते हैं। आग बुझ जाने पर राख को सब लोग छूते हैं।

❋ धन की कमी होने पर निरन्तर घी, नमक, तेल, चावल, वस्त्र तथा लकड़ी की चिन्ता से बड़े-बड़े बुद्धिमानों की भी बुद्धि नष्ट हो जाती है।

❋ जैसे उल्लू को सूर्य नहीं दिखाई पड़ता उसी प्रकार दुष्ट को भगवान नहीं दिखाई पड़ते।

❋ न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती है नचाती है।

❋ संसार में हमारा जन्म तभी तक एक सार्थक है, जब तक हम विश्व से अनुराग रखते हैं।

* कोई कुप्रथा या उपेक्षा या निर्दयता से नहीं मिटती। उसका नाश शिक्षा, ज्ञान और दया से होता है।

* जो सैकड़ों मनुष्यों को अन्न-भोजन देनेवाली गौ को पालता है, वह अपने संकल्पों को पूरा करता है।

* शिशु का भाग्य सदैव उसकी जननी द्वारा निर्मित होता है।

* जो भाग्यवान है, वह दानशीलता अपनाता है और दानशीलता से ही आदमी भाग्यवान होता है।

* काम से ज्यादा काम के पीछे की भावना का महत्व होता है। जो काम शुद्ध हृदय से होता है, देखने में छोटा भले ही हो परंतु उसका फल बड़ा ही महत्वपूर्ण होता है। बड़े से बड़ा काम अगर हीन आदर्श लेकर किया जाए तो उसकी कोई बड़ी कीमत नहीं हो सकती।

* भाव की एकाग्रता अंतश्चेतना का वह द्वार खोलती है जिसमें सत्य सार्थक होकर बसता है।

* धैर्य से कई बार असंभव लगने वाले कार्य भी संभव हो जाते हैं।

* जो आदमी सत्य को झुठलाता है, वह हमेशा घाटे में रहता है। सत्य को झुठलाने का परिणाम अच्छा नहीं होता। जब सत्य का पता चलता है, तब वह झूठ उसे ही सालने लगता है, असत्य की उत्पत्ति के चार कारण बताए गये हैं- क्रोध, लोभ, भय और हास्य। आदमी झूठ नहीं बोलना चाहता। वाणी का असत्य भी नहीं चाहता, किंतु जब ये चार आवेश प्रबल होते हैं, तब सच्चाई नीचे चली जाती है और असत्य उभरकर सामने आ जाता है।

* वेदना और बेइज्जती के मुकाबिले दुनिया में ऐसी कोई चीज नहीं है जो मनुष्य की सच्ची रूह को खींचकर बाहर ला सके।

* अन्याय, असत्य और कपट की बुनियाद पर स्थायी शक्ति स्थापित करना असम्भव है।

* अनाथ बच्चों का हृदय उस चित्र की भांति होता है जिस पर एक बहुत ही झीना परदा पड़ा हुआ हो। पतन का साधारण झकोरा भी उसे हटा देता है।

* अपरिचित होने से देवता को भी तिरस्कृत होना पड़ता है।

* शरीर को रोगी और दुर्बल रखने के समान दूसरा कोई पाप नहीं है।

* देश तथा समाज की सच्ची खिदमत वही करता है जो बदले तथा यश की आशा न रखकर नि:स्वार्थ भाव से खिदमत करता है।

* तुम्हें कब क्या करना है यह बताना बुद्धि का काम है, पर वह कैसे करना है यह अनुभव ही बता सकता है।

* जो आदमी मुसीबत में साथ न दे, वह दुश्मन है। उससे दूर रहना ही अच्छा है।

* गरीब वह नहीं है जिसके पास कम है, बल्कि धनवान होते हुए भी जिसकी इच्छा कम नहीं हुई है, वह सबसे गरीब है।

* जो शत्रु तुम पर आक्रमण करते हैं, उनसे तुम मत डरो, उन मित्रों से डरो जो तुम्हारी चापलूसी करते हैं।

* संसार में सबसे दयनीय है वह व्यक्ति जो धनवान होकर भी कंजूस है।

* बुराई आदमी को पहले अज्ञानी व्यक्ति के समान मिलती है और हाथ बांधकर नौकर की तरह उसके सामने खड़ी हो जाती है। फिर मित्र बन जाती है और करीब आ जाती है। फिर मालिक बनती है और आदमी के सिर पर सवार हो जाती है और उसे सदा के लिए अपना दास बना लेती है।

* दूसरों में दोष न निकालना, दूसरों को उतना उन दोषों से नहीं बचाता, जितना अपने को बचाता है।

* दुनिया में ऐसी कोई शक्ति नहीं जो अभय को डरा सके। सब डरनेवाले को डराते हैं। आदमी भी डराता है और क्या, चूहा भी डरा देता है। जो अभय बन गया, भयमुक्त बन गया, उसे डराने की किसी में भी ताकत नहीं होती। जिस व्यक्ति

को बंधन व वध का भय नहीं होता वह कभी भी बाहरी नियंत्रण से नियंत्रित नहीं होता।

* बड़प्पन सिर्फ उम्र में नहीं, उम्र के कारण मिले हुए ज्ञान और चतुराई में भी है।

* लज्जा तो दुर्बल स्वभाव का लक्षण है। बहुत से व्यक्ति अपने पिता का परिचय देने में भी लज्जा का अनुभव करते हैं।

* लोकाचार और हमारे हृदय में जमें हुए विचार हमारे जीवन में आकस्मिक परिवर्तन नहीं होने देते।

* संसार में व्यवहारों के लिए धन ही सारवस्तु है। अतएव मनुष्य को युक्ति एवं साहस के साथ उसकी प्राप्ति के लिए काम करना चाहिए।

* हर अवसर और हर अवस्था में जो अपना कर्त्तव्य दिखाई दे, उसी को धर्म समझकर पूरा करना चाहिए। अन्य किसी धर्म की ओर नहीं जाना चाहिए।

* चित्त के प्रसन्न रहने से सब दु:ख दूर हो जाते हैं। जिसे प्रसन्नता मिल जाती है, उसकी बुद्धि तुरन्त स्थिर हो जाती है।

* मनुष्य की चमत्कारिक शक्तियां कठिन कार्य करने से नहीं प्राप्त होतीं बल्कि इस कारण प्राप्त होती हैं कि वह कार्य शुद्ध हृदय से करता है।

* धर्म के रहने की जगह होने के कारण शरीर तीर्थ जैसा पवित्र है।

* शिक्षा जीवन की परिस्थितियों का सामना करने की योग्यता का नाम है।

* सन्त लोग भौंरे के समान गुणग्राही होते हैं।

* शिक्षा की उपयोगिता के अनेक पहलू हैं, जिन्हें एक श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

* कभी भी संभावनाओं को देखते हुए अपनी व्यवस्था को नहीं खत्म करना चाहिए।

* दुर्जन मीठा बोले तब भी उस पर विश्वास न करो, क्योंकि उसकी जबान पर शहद रहता है और दिल में जहर।

* यदि आप अपनी आय से कम में निर्वाह कर सकते हो, तो निश्चय जानो कि पारस पत्थर आपके पास है।

* मन बड़ा चंचल है। यदि काम न हो तो इधर-उधर भटकने लगता है और अपने ही मालिक को विनाश के मार्ग में फंसाकर मार डालता है।

* भारत समग्र विश्व का है और सारी वसुंधरा इसके प्रेम पाश में बंधी है। अनादि काल से यह ज्ञान और मानवता की ज्योति फैला रहा है।

* जो बातें विचार पर छोड़ दी जाती हैं, वे कभी पूरी नहीं होतीं।

* आंख के आंसू अमूल्य हैं। जीवन का बगीचा विविध भावों के समय उपजे आंसुओं से ही पनपता है।

* प्रकृति की सबसे आश्चर्यजनक वस्तु नेत्रों की एक झलक है। यह वाणी से भी श्रेष्ठ होती है। यह एकता का शारीरिक चिन्ह है। आंखों में जादू पैदा करनेवाली वैज्ञानिक कला होती है।

* आंख न होने भर से देखना न हो पाए, ऐसा नहीं है। सत्य नजर उसी को आता है जो ज्ञानी होता है।

* जो बात हमारी वाणी नहीं कह पाती, वह हमारी नजरें आसानी से कह जाती हैं।

* शरीर से पाप तभी होते हैं जब मन में होते हैं। छोटे बच्चे के मन में काम नहीं हेाता। वह युवतियों के वक्षस्थल पर खेलता है, उसके शरीर में कोई विकार नहीं होता।

* मनुष्य जब एक बार पाप के नागपाश में बंधता है, तब वह उसी में और लिपटता जाता है। उसी के गाढ़ आलिंगन में सुखी होने लगता है। पापों की श्रृंखला बन जाती है। उसी के नए-नए रूपों पर आसक्त होना पड़ता है। जिस काम में

आत्मा का पतन हो वही पाप है।

* दाता का दोष उसी तरह छिप जाता है जिस तरह चन्द्रमा के किरण-जाल में उसका कलंक।
* विद्या से विभूषित होने पर भी दुर्जन का परित्याग ही उचित है। मणि धारण करनेवाला सांप भयंकर होता है।
* जो घृणा हम शत्रुओं के प्रति रखते हैं। वह हमारी अपेक्षा उनकी प्रसन्नता को कम आघात पहुंचाती है।
* निर्धन व्यक्ति तो केवल कुछ ही वस्तुओं का इच्छुक है, परंतु लोभी तो हर वस्तु का मुहताज है।
* आदमी की खुशहालियां उसकी सच्चरित्रता का फल है।
* प्रेम का नाता संसार के सभी संबंधों से पवित्र और श्रेष्ठ है।
* मनुष्य जितना छोटा होता है उसका अहंकार उतना ही बड़ा होता है।
* अनुपस्थिति में हृदय की जिज्ञासा और भी तीव्रतर हो जाती है।
* असफलता का प्रधान कारण प्राय: धनाभाव नहीं, अपितु शक्ति और सामर्थ्य का अभाव होता है।
* दंभ का अन्त सदैव नाश होता है और अहंकारी आत्मा सदैव पतित होती है।
* बिना किसी दूसरे से तुलना किए हुए ही अपने जीवन का उपभोग करो, यही परम संतोष हैं।
* राजनीति और धर्म दो वस्तुएं हैं जिनमें प्राय: कम ही सामंजस्य होता है।
* जिस प्रकार महान नदियों का उद्गम अत्यंत छोटा है, उसी प्रकार महान घटनाओं का कारण भी अत्यंत क्षुद्र होता है।
* आप क्रोध की दशा में ही अत्यंत निर्बल एवं क्षीणकाय रहते हैं। कारण यही है कि क्रोध का अस्त्र स्वयं चालक को ही घायल करता है।
* पानी जैसी चंचलता से मनुष्य महान नहीं बनता।
* जिन्दगी एक भव्य जागरण है। जागा हुआ हर आदमी राम, कृष्ण, बुद्ध और महावीर है और सोया हुआ हर आदमी कंस, कमठ और रावण है। मनुष्य की चिता जल उठे इससे पहले ही अपनी चेतना जगा लेनी चाहिए।
* जिन्दगी कितनी लम्बी है, उम्र कितनी बड़ी है इसका महत्व नहीं है। महत्व है जिन्दगी की गहराई का कि आपके भाव, दशा और सुकून को लेकर जिएं। महावीर स्वामी, संत ज्ञानेश्वर, भगत सिंह, शंकराचार्य और स्वामी विवेकानंद का जीवन तो बहुत ही छोटा रहा है लेकिन जो उन्होंने थोड़े समय में कर दिखाया वो सौ-सौ साल जिंदा रहनेवाले लोग भी नहीं कर पाते। किसी की चार दिन की जिन्दगी सौ काम करती है और किसी से सौ बरस की जिन्दगी में कुछ भी नहीं होता।
* किसी भी मनुष्य की वर्तमान स्थिति को देखकर उसके भविष्य का उपहास मत उड़ाओ। काल में इतनी शक्ति है कि वो एक साधारण से कोयले को भी हीरे में बदल देता है।
* सुख और दुख जीवन के पहलु हैं। हर व्यक्ति के जीवन में इनका आना-जाना लगा रहता है। जिन लोगों का भाग्योदय हो जाता है उन्हें दु:ख और परेशानियों से मुक्ति मिल जाती है। हम सभी के जीवन में भाग्योदय का क्षण आता है। संसार में ऐसा कोई नहीं है, जिसके जीवन में भाग्योदय का अवसर न आया हो पर मनुष्य उसका स्वागत करने को तैयार न हो तो वह उल्टे पैर लौट जाता है।
* मन जब विस्तृत होता है और समुद्र, पर्वत भी उसके लिए छोटे हो जाते हैं। मन जब सिमटता है एक चींटी भी हाथी की तरह दिखाई देने लगती है। जैसे एक छोटे से दीपक का प्रकाश बहुत दूर तक फैलता है। इस बुरी दुनिया में भलाई बहुत दूर तक चमकती है। भलाई का परिणाम अत्युत्तम होता है। प्रसन्नता तो ईश्वर द्वारा प्रदत्त औषधि है।

✻ भय सदैव अज्ञानता के कारण पैदा होता है। भय पतन और पाप का निश्चित कारण है। भय से ही दु:ख आते है और भय से ही मृत्यु होती है। भय से ही बुराई आती है।

✻ संसार में वही मनुष्य सफल होते है जो परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाये लेते है और अगर यदि बना नहीं सकते तो अनुकूल परिस्थितियां पैदा कर लेते है।

✻ महापुरुष पूजा के लिए नहीं पैदा होते उन्हें पूजा की कोई लालसा नहीं होती।

✻ विद्या विनय देती है, नम्रता से योग्यता आती है, योग्यता से धन, धन से धर्म की उपलब्धि होती है जिसके पास विद्यारूपी आंखें नहीं है वह अंधे के समान है।

✻ ईश्वर की कृपा तभी मिलती है जब हम यथाशक्ति अपने निर्धारित कर्त्तव्य का पालन करते है। अभाव, असहाय, स्थितियाँ घोर संकट के समय कर्त्तव्य का पालन भी कठिन हो वही ईश्वर सहायता करता है। लोकसेवा के साथ-साथ स्व-सेवा भी आवश्यक होती है।

✻ मानव को स्वयं को बेहतर बनाने के लिए निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। आत्मविकास व्यक्ति को समाज के अनुकूल बनाता है और उसमें स्वास्थ्य की प्रवृत्तियां विकास करता है। कोई भी व्यक्ति अपनी सेवा तभी कर सकता है जब उसे अपने दोषों का आंकलन हो। सेवा का अर्थ विचार और आचरण की शुद्धि से है। स्वयं को स्वच्छ करे, मन और तन से स्वस्थ रहने का उपाय करें।

✻ हमारे विचारों और आचरण में अगर निर्मलता नहीं है तो केवल मंदिर, मस्जिद और गिरजाघर में जाकर या तीर्थयात्रा करने से कोई लाभ नहीं है। इन सबसे तभी लाभ हो सकता है जब हम वहां जाकर अपनी बुराईयों का त्याग करें। चरित्र ही ईश्वर है, चरित्र ही धर्म है। अध्ययन करना बड़ा सुलभ है पर उसे करना बड़ा कठिन है। तपस्या का वर्णन करना बड़ा आसान है।

✻ जो अहंकारपूर्वक सुबह का जलपान करता है उसको रात का भोजन तिरस्कार से मिलता है।

✻ सभी मनुष्यों में बुद्धिगत कोई ऐसा दोष नहीं जिसका प्रतिकार उचित अभ्यास के द्वारा न हो सकता हो। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए जैसे अनेक तरह के व्यायाम हैं, वैसे ही मानसिक रुकावटें दूर करने के लिए अनेक प्रकार के अध्ययन हैं।

✻ किसी अन्वेषक में दृढ़ निष्ठा होनी जरूरी है, विश्वास नहीं।

✻ अपमान पूर्वक हजार साल जीने की अपेक्षा सम्मान के साथ एक घड़ी भर जीना बेहतर है।

✻ अपराध खामोश नहीं रहता। वह जीभ के बगैर भी बोलेगा।

✻ जिसकी जीभ सुधर गयी उसका जीवन सुधर गया। जीवन में जीभ मुख्य है। आंखें सुधरने से मन सुधरता है और जीभ सुधरने से जीवन सुधरता है।

✻ जीवन में जो कुछ नहीं मिला है उसके लिए ईश्वर से कभी कोई शिकायत मत करो, बल्कि जो कुछ मिला है उसके लिए धन्यवाद अवश्य दो।

✻ हाथी और शेर की तरह चिंघाड़ और दहाड़ चाहिए। अगर वैद्य, संत और सचिव भी मीठा बोलने लगे तो समाज और देश का सत्यानाश होना निश्चित है।

✻ जिस तरह से घिसने, पीटने, काटने, तपाने से सोने के खरे खोटेपन का परिक्षण हो जाता है, उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में उसके ऊंचेपन की श्रेष्ठता की जांच त्यागवृत्ति, शील, गुण तथा सत्कर्मों से की जाती है।

* थोड़ी सी वायु से आग भड़क उठती है वैसे ही थोड़े से परिश्रम से किस्मत चमक उठती है।

* सपने हमेशा सच नहीं होते पर जिंदगी तो उम्मीद पर टिकी होती हैं।

* व्यक्ति अपने विचारों से निर्मित एक प्राणी है, वह जो सोचता है वही बन जाता है।

* गरीबी में जितना धैर्य रखा जाए सहनशक्ति उतनी बढ़ती है।

* साधारण वस्त्रोंकी शुद्धता, अन्न की क्षुद्रता और गुण (सदाचार) कुरुपता का आवरण (पर्दा) है।

* व्यक्ति के जीवन में हर दिन नया दिन होना चाहिए और दूसरों की बुराई करने से बचना चाहिए।

* जीवन खुद की तलाश नहीं है, बल्कि यह स्वयं का निर्माण है। आप जीवन को नजरअंदाज करके शांति नहीं पा सकते।

* भारतीय धर्मशास्त्र पुनर्जन्म की पुष्टि करते है। आवश्यकता, पूर्ति, भोजन की सुलभता, भोग-विलास की उपलब्धता, धन-सम्पदा का मिलना एवं सुन्दर तथा गुणी पत्नी का मिलना पूर्वजन्मों के फल पर निर्भर करता है।

* जिस व्यक्ति के पास सुन्दर पत्नी होती है उसमें संभोग शक्ति का अभाव हो सकता है, जिस व्यक्ति के पास धन है, उसमें दानवृत्ति नहीं हो और जिस व्यक्ति के पास दानवृत्ति होती है उसके पास धन का अभाव हो सकता है। इसलिए भाग्य और पुनर्जन्म के कर्मों का भी बहुत बड़ा महत्व है।

* जिसने छोटे-छोटे रसों को जीतने का प्रयत्न नहीं किया, उसे ऐन मौके पर वे दगा दे जाते हैं।

* मनुष्य बराबर के लोगों की हंसी नहीं सह सकता क्योंकि उनकी हंसी में इर्ष्या, व्यग्य और जलन होती है।

* उत्साही इंसान के लिए संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

* जिस व्यक्ति ने अपने आपको ऊंचा उठा लिया, उस तक निंदा या प्रशंसा की बात पहुंच ही नहीं पाती। उसमें कैसे अहंकार आएगा और कैसे हीनभावना जागेगी? ऊंचा उठाने का तात्पर्य है- मस्तिष्क को इस प्रकार से साध लेना कि वह दोनों स्थितियों में एक रूप रह सके। अनुकूलता और प्रतिकूलता के संवेदन को जन्म देनेवाले घटक तत्व है। अनुकूलता और प्रतिकूलता की परिस्थितियां तनाव पैदा करनेवाली हैं। पूरा समाज इन परिस्थितियों के कारण तनाव भोग रहा है। मानसिक तनाव क्यों पैदा होता है। भावनात्मक तनाव क्यों पैदा होता है? इनका कारण अनुकूल और प्रतिकूल द्वंद्व हैं। हमारा दृष्टिकोण बदल जाए, तो समस्या का समाधान सामने दिखाई देगा।

* अपने विचारों को दूसरों के मुकाबले हमेशा तत्पर रखना फायदेमंद साबित होता है।

* अगर आप आज कुछ भी बन सकते हो तो इसका पूरा श्रेय आपके साथ खड़े उन लोगों को जाता है जिन्होंने आपमें लगातार बेहतर करने का जज्बा बनाए रखा।

* किसी भी व्यापार की पहली सही और ईमानदार सीख है कि उसमें सबकी मदद को हमेशा तैयार रहें।

* किसी मददगार व्यक्ति को कभी इंतजार नहीं करना पड़ता, जब तक कि उसे ऐसा करने को कहा न जाए।

* तुच्छता और दरिद्रता का माप धनहीनता न होकर विद्याहीनता है। अत: हर मनुष्य को धन की अपेक्षा विद्या प्राप्ति के लिए ही प्रयत्नशील रहना चाहिए। विद्याहीन व्यक्ति धन को भी खो बैठता है जबकि विद्वान अपनी विद्या की शक्ति से पर्याप्त धन अर्जित कर लेता है।

* दान दिये बिना सोना शुद्ध नहीं होता। सम्पत्ति को धर्मकार्य में समर्पित कर दो तो अक्षय हो जाती है। न्याय और नीति से कमाया हुआ धन तथा जरूरतमंद लोगों की सेवा करना तो जीवन सफल है नहीं तो गले में पड़ी सोने की सांकल भी फांसी का फंदा बन सकती है। सम्पत्ति के साथ यश कमाना चाहिए।

❋ परायों के साथ जीना आसान है पर घर-परिवार के लोगों के साथ जीना मुश्किल है। घर में जीने का अर्थ सिर्फ यह नहीं है कि हम ईंट-पत्थर और चूने से बने घरों में जीएं। घर में जीने की पहली शर्त है कि हम अपने अंदर आत्मीयता और स्नेह का विस्तार करें जिसमें घरके सब सदस्य एकसाथ बैठकर भोजन और भजन करें। वैसा ही घर धरती पर साक्षात स्वर्ग है। अध्यात्म का आरंभ धर्म से होता है, धर्म का आरंभ घर से होता है, घरवाली के बिना घर नहीं होता वह तो सिर्फ ईंट, पत्थर की चार दीवार ही है।

❋ हम सभी इक्कीसवीं सदी के परिपक्व और विवेकशील लोग हैं। हमें धर्म और मजहब के नाम पर कोई बरगला नहीं सकता। हमारा विश्वास सिर्फ भाईचारे में है। ऐसे विश्वास के कारण ही हमारा देश भारत विश्व के महाभारत से बचा है। जिसका अंजाम आर्थिक विश्व शक्ति के रूप में उभर रहे देश को सौ साल पीछे धकेलना था।

❋ उच्च कुल व धनी घराने में पैदा होकर भी विद्याहीन व्यक्ति को कोई लाभ नहीं। छोटे कुल में उत्पन्न व्यक्ति यदि विद्वान है तो अपनी विद्वता द्वारा दूसरे व्यक्तियों को लाभ पहुंचाते हुए देवताओं द्वारा पूजित हो सकता है। इसलिये महत्व विद्या का है वंश का नहीं। विद्या सम्पन्न व्यक्ति ही आदरणीय है।

❋ गलत व्यक्ति वह है जिसके पास अत्यधिक कामनाएं होती है। ठीक व्यक्ति वह है जिसके पास कोई कामनाएं ही नहीं है और जब कोई कामनाएं नहीं होती हर चीज स्वयं में पूरी हो जाती है।

❋ बड़े लोगों की बातें बड़ी अनुभवी और प्रेरणास्त्रोत होते हैं। उनका अनुभव कहता है अच्छा व्यक्ति वही है जो अपनी प्रगति के लिए सबसे अधिक परिश्रम करता है। अपने कार्य के नियम स्वयं का आत्मविश्वास है। आप कोई भी काम कर सकते है इस विचार में शक्ति है। जो लोग सचमुच बुद्धिमान है वे असफलताओं से कभी घबराते नहीं। इस दुनिया में कुछ भी स्थायी नहीं है, हमारी समस्याएं भी नहीं। ज्ञान एक ऐसा दीपक है जो आपको सही राह दिखाता है यह अनुभव किया हुआ है।

❋ घर हमारे जीवन का वह कोना है जहां हम स्वर्ग-सुख महसूस करते है। अपने घर को अपने चाहत के अनुसार आरामदायक बनाना चाहिए। प्रशंसा करना हमारे व्यक्तित्व का सबसे खूबसूरत पहलू है जो हर कोई नहीं कर पाता। यह भी स्वयं में एक कला है जो धीरे-धीरे अर्जित होती है। हम दूसरे की तारीफ करने में प्राय: कंजूस रहते है। अपने आस-पास के हर अच्छे काम की दिल खोलकर प्रशंसा करनी चाहिए। इससे दूसरों के चेहरे पर आयी मुस्कान आपको ताजगी से भरेगी।

❋ जीवन उतार चढ़ावों से भरा है परंतु आपका आपसी सहचर्य आपके जीवन की खुशियों का केंद्र बिन्दु है। आपके साथी के साथ भरोसे और प्रेम का व्यवहार, एक-दूसरे के प्रति समझ आपको निराशा के घने अंधकार से बाहर निकाल सकता है इसलिए अपने करीबी को ठीक से समझने का प्रयास करे।

❋ खुश रहने के लिए सबसे पहले हमें अपनी पहचान करनी होगी, स्वयं को जानना होगा। हमारे पास जो जितना है उसे स्वीकार करना होगा। यह हमारी संतुष्टि के लिए जरूरी है। जो नहीं है उसे लेकर पीड़ा और सन्ताप का अनुभव करते रहना हमें मानसिक रूप से बीमार बना देता है। सदैव यही दृष्टिकोण रखना चाहिए कि ईश्वर का दिया हमारे पास बहुत कुछ है यही सोच प्रसन्नता की कुंजी है।

❋ हममें से प्रत्येक को अपने जीवन को अपनी तरह से जीने की जिम्मेदारी समझनी चाहिए। हम यह निर्णय ले कि हममें परिस्थितियों को बदलने की क्षमता है तो हमारे आसपास का परिवेश वास्तव में बदल सकता है।

❋ जीवन में जो बांटोगे, बदले में वही आपको वापस मिलनेवाला है। जब कभी आपको एकाकी पन महसूस हो तो अपने खालीपन को दूसरों के बीच भरने का प्रयास करे। इसी श्रृंखला में किसी जरूरत मंद की मदद, किसी अस्पताल में

रोगी को दी गई सांत्वना, हल्की सी थपकी आपके चेहरे की मुस्कान उसे ठीक होने का कारण बन सकती है। चीजों को दार्शनिक अंदाज से देखना और जिन्दगी को बहते पानी की तरह समझने वाले लोग अपने जीवन को भी अधिक आनन्दित बना पाने में सफल होते है।

* हम चारों ओर खुशियों की तलाश में भटकते रहते है और समय व्यर्थ कर देते हैं। खुशियां तो हमारे मन में बसी हुई होती है बस जरूरत है इसे उजागर करने की। खुशियां आपके दर पर स्वयं दस्तक नहीं देती यह तो ईश्वर की तरफ से प्रत्येक को दिया हुआ अनमोल उपहार है, जरूरत है इस खजाने को खोजने की। स्वयं को हमेशा ऊंची नजर से देखो और अपने भीतर अपनी प्रतिष्ठा स्वयम् बनाने का प्रयास करना चाहिए। इसीसे हमारी जीवनशैली बेहतर बनेगी। हमे अपनी भीतर की शक्ति और कमजोरियां दोनों को स्वीकार करना चाहिए। स्वयम् को हमेशा दूसरों के मुकाबले बराबरी का दर्जा देते रहना चाहिए। हमें अपनी उस ऊर्जा के स्रोत को पहचानकर निखारना चाहिए जो हमको दूसरों से अलग और विलक्षण बनाती है।
* समाज व्यक्ति ही से बनता है और व्यक्ति को भूलकर हम किसी व्यवस्था पर विचार नहीं कर सकते हैं।
* बिना निराश हुए पराजय को सह लेना पृथ्वी पर साहस की सबसे बड़ी परीक्षा है।
* मानव का अन्त:करण उसके आकार, संकेत, गति, चेहरे की बनावट, बोल-चाल तथा नेत्र और मुख के भावों से विदित हो जाता है।
* अनाथों का क्रोध पटाखे की आवाज है, जिससे बच्चे डर जाते हैं और असर कुछ भी नहीं होता।
* भगवान गरीब को गरीब रखकर परिक्षण करता है कि वह हिम्मत रखता है या नहीं।
* कानों के दुरुपयोग से मन बहुत अशान्त और कलुषित हो जाता है।
* जो कर्म यज्ञ के लिए किए जाते हैं, उनके अतिरिक्त अन्य कर्मों से इस लोक में बंधन पैदा होता है।
* मायावी मनुष्य संसार को धोखा दे सकता है, परन्तु अपने आप को धोखा नहीं दे सकता।
* शरीरधारियों को ऐसा सुख स्वर्ग में भी नहीं मिलता, जैसा कि दरिद्र होने पर भी अपने देश, गांव और घर में मिलता है।
* ठग किसी संबंध का ख्याल नहीं करते, वे सभी को ठग लेते हैं।
* चित्त के प्रसन्न रहने से सब दु:ख दूर हो जाते हैं। जिसे प्रसन्नता मिल जाती है, उसकी बुद्धि तुरन्त स्थिर हो जाती है।
* एक समाज में प्राणदंड देना भेदभाव पूर्ण व्यवहार है और इससे अपराध पर असर नहीं पड़ता।
* तीन शक्तिशाली संसाधन इस दुनिया में हरेक इंसान के पास होते हैं- प्रेम, प्रार्थना और क्षमा।
* कामनाएं समुद्र की भांति अतृप्त हैं। पूर्ति का प्रयास करने पर उनका कोलाहल और बढ़ता है।
* यदि मार्ग कांटों भरा हो और आप नंगे पांव हो तो रास्ता बदल लेना चाहिए।
* जैसे सूर्य आकाश में छुप कर नहीं विचर सकता, उसी प्रकार महापुरुष भी संसार में गुप्त नहीं रह सकते।
* ऐसे देश को छोड़ देना उचित है, जहां धन तो है लेकिन सम्मान नहीं।
* प्रत्येक का उपदेश सुनना चाहिए लेकिन अपना उपदेश कुछ ही लोगों के लिए सुरक्षित रखना चाहिए।
* एकांत में अपने मित्रों को भला बुरा कहो लेकिन उनकी प्रशंसा सबके सामने करो।
* दुनिया भर में सबसे अच्छा उपदेश चींटी देती है। वह मौन रहती है।
* इंसान दूसरे इंसानों के साथ भलाई करके ही अपने को देवतुल्य बनाते हैं।

❋ दूसरे का उपकार करनेवाला मनुष्य दूसरे का ही नहीं, अपना भी उपकार करता है। अच्छा कर्म करने का भाव ही सबसे बड़ा उपकार है।

❋ बिना विवेक के ग्राह्य- अग्राह्य का विचार नहीं होता।

❋ कुछ लोग फल तो चाहते हैं, परंतु बीज बो कर वृक्ष बनाना नहीं चाहते। उनकी दृष्टि दूसरों के लगाए पेड़ों पर रहती है और जब अवसर मिलता है नोच-खसोट लेना चाहते हैं। कुछ लोग संयम और उपवास को निरर्थक बताकर उच्छृंखलता को बढ़ावा देते हैं। दूसरी ओर ऐसे लोग भी हैं, जो बिना ज्ञान के उपवास व्रत आदि साधनों को ही साक्ष्य मान कर जीवन भर उन्हीं में उलझे रहते हैं।

तप के मार्ग को सामान्य मत समझिए। तप का मतलब है अपने को तपाना। तपाने से अशुद्ध वस्तु शुद्ध होती है और शुद्ध वस्तु को और अधिक दीप्ति मिलती है। लकड़ी अग्नि में तपने से राख हो जाती है और मनुष्य के कर्म तप के अबल में जल जाते हैं। इंद्रियों का दमन करना और इच्छाओं का निरोध करना तप है। संसार में इच्छाओं का कोई अंत नहीं है। तप इन इच्छाओं पर नियंत्रण करने में सहायक है। बिना नियंत्रण के यह जीवन वैसा ही है जैसे बिना ब्रेक की मोटरगाड़ी। ऐसी गाड़ी अपने लिए तो खतरा है ही, पर दूसरों को भी दुख में डाल सकती है।

❋ बीमार दिल की चार निशानियां- इबादत में मिठास महसूस न करे। उसमें खुदा का डर न रहे। दुनिया की चीजों को नसीहत की निगाह से न देखे। जो ज्ञान सुने उसे समझने की कोशिश न करे।

❋ आपका दैनिक जीवन ही आपका मन्दिर, पूजा, धर्म और कर्म है। अपना कार्य मन से करनेवाला ही धर्म-कर्म निभाता है। काम ठीक से करने से मन में खुशी रहती है और सन्तोष आता है। कर्म करना आवश्यक है सिर्फ प्रार्थना ही काम में नहीं आती।

❋ आँख के अंधे को दुनिया नहीं दिखती, काम के अंधे को विवेक नहीं दिखता, मद के अंधे को अपने से श्रेष्ठ नहीं दिखता और स्वार्थी को कहीं भी दोष नहीं दिखता।

❋ वे आदमी दु:खी बनते है जो केवल वर्तमान को देखते है, भविष्य को नहीं देखते। वर्तमान को देख भी लेते है पर परिणाम को नहीं सोचते, न देखते है कि परिणाम क्या होगा ऐसे ही आदमी दुखी होते है।

❋ बोलने से पहले अपने आपको पूछो- क्या आप बोल रहे हो वो सत्य है? क्या यह जो बोल रहे हो क्या वह आपके लिए आवश्यक है? जो आप बोल रहे हो इससे किसीका हृदय तो विदीर्ण नहीं होगा अर्थात् किसी का दिल नहीं दुखायेगा।

❋ किसी भी कार्य को करने से पहले सोचना चाहिए कि उसका प्रतिफल क्या मिलेगा। यदि प्राप्त लाभ से बहुत अधिक परिश्रम करना पड़े तो ऐसे परिश्रम करना ही निरर्थक है। जिनका जो व्यवसाय है उसे ही वह कार्य करना शोभा देता है।

❋ मूर्ख व्यक्ति को शिक्षा देने से कोई अर्थ नहीं निकलता। वह तो शिक्षा का विपरीत ही अर्थ लगाएगा।

❋ दु:खी व्यक्ति अपने ही दु:ख या स्वार्थ में निहित रहता है। उसमें विवेक का अभाव होता है। वह दूसरे का हित सोच ही नहीं सकता। इसलिये उसका संग सदैव कष्टकारी होता है।

❋ दुष्ट और कुल्टा पत्नी स्त्री का पालन करने से भी व्यक्ति दु:ख ही पाता है। वैसी स्त्री सदैव धर्म विरुद्ध आचरण करेगी उसे सदाचार से कोई प्रयोजन नहीं, विदुषी स्त्री ही धर्मपरायण भी होती है ओर वांछनीय भी।

❋ तत्वज्ञान ब्राह्मणों की वास्तविक शक्ति है। पराक्रम, सेना और राजाओं का वास्तविक बल है। सुन्दरता, यौवन और

मधुर व्यवहार गृहिणियों, नारियों की सच्ची प्रशस्त शक्तिका साधन है ऐसी स्त्रियों की सबसे अच्छी शक्ति उनकी सुन्दरता, मिठास और यौवन है। वे बड़े-बड़े योद्धाओं और तपस्वियों को भी विचलित कर देती है। ब्राह्मणोंकी शक्ति ब्रह्मकी अनुभूति है। प्रत्यक्ष को कोई प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती।

* जो प्रचुर और पर्याप्त होने पर भी तृप्त नहीं है, जिसकी इच्छाएं बढ़ी हुई हों, वह सचमुच गरीब है।
* लोभ की पूर्ति कभी नहीं होती, इसलिए लोभ के साथ क्षोभ सदा लगा रहता है।
* स्वर्ग और पृथ्वी हमारे ही अन्दर हैं। हम पृथ्वी से परिचित हैं, पर अपने अन्दर के स्वर्ग से बिलकुल अपरिचित हैं।
* डरपोक डगमगाते हैं, परन्तु खतरे से प्राय: वही पार होते हैं जो साहस से उसका सामना करते हैं।
* छिपकर किया गया अपराध जीवन-पर्यन्त हृदय में कांटे की तरह चुभता रहता है।
* भयभीत व्यक्ति तप और संयम की साधना छोड़ बैठता है। भयभीत किसी भी गुरुतर दायित्व को नहीं निभा सकता।
* जब तक हम स्वयं निरपराध न हों, तब तक दूसरों पर सफलता के साथ कोई आक्षेप नहीं कर सकते।
* प्रकृति अपनी प्रगति और विकास में रुकना नहीं जानती। हर अकर्मण्यता पर वह अपने शाप का ठप्पा लगाती है।
* संदेह की स्थिति में सज्जनों के अन्त:करण की प्रवृत्ति ही प्रमाण होती है।
* सिर्फ विचार से तत्वज्ञान नहीं मिलता, उसके लिए साधना करनी चाहिए।
* जो आदमी मुसीबत में साथ न दे वह दुश्मन है। उससे दूर रहना ही अच्छा है।
* वे धनी आपसे भी अधिक अन्यायी और धनहीन हैं, जो गरीबों को आलसी और कामचोर कह कर पुकारते हैं।
* चित्त के प्रसन्न रहने से सब दु:ख दूर हो जाते हैं। जिसे प्रसन्नता मिल जाती है, उसकी बुद्धि तुरन्त स्थिर हो जाती है।
* मनुष्य की अच्छी बात तो दब जाती है, किन्तु बुरी और बदनामी की बात जेठ की लू की भांति चारों ओर फैल जाती है।
* ब्रह्मज्ञान प्राप्ति हो जाने पर मनुष्य शीघ्र ही परमानन्द का अधिकारी होता है।
* जिस श्रम से हमें आनन्द प्राप्त होता है, वह हमारी व्याधियों के लिए अमृततुल्य है, हमारी वेदना की निवृत्ति है।
* भूल करना मनुष्य का स्वभाव है। की हुई भूल को स्वीकार कर लेना एवं वैसी भूल फिर न करने का प्रयास करना वीर एवं शूर होने का प्रतीक है।
* कीर्ति का नशा शराब के नशे से भी तेज होता है। शराब छोड़ना तो आसान है, लेकिन कीर्ति छोड़ पाना आसान काम नहीं है।
* बुरे कर्मों का परिणाम कभी अच्छा नहीं हो सकता। बुरे कर्मों के लिए पीड़ा और क्लेश अवश्य भोगना पड़ेगा।
* कुरीति के अधीन होना कायरता है, उसका विरोध करना पुरुषार्थ है।
* कुटिल लोगों के प्रति सरल बर्ताव करना अच्छी नीति नहीं है।
* भगवान जिसको कठोर दु:ख देते हैं, उसकी बुद्धि का पहले ही विनाश कर देते हैं।
* मित्र, मंत्री और आपस के लोग जब दृढ़ शुभचिन्तक हों और शत्रुओं के विपरीत हो जाएं, तब लड़ाई करनी चाहिए।
* धनहीन प्राणी को जब कष्ट-निवारण का कोई उपाय नहीं रह जाता, तो वह लज्जा को त्याग देता है।
* अज्ञानी साधक जब कभी असत्य विचारों को सुन लेता है, तो वह उन्हीं में उलझ कर रह जाता है।
* किसी को अपनी सराहना करने के लिए विवश कर देने का सिर्फ एक ही उपाय है कि आप शुभ काम करें।
* अपने उच्च आदर्शों के प्रति हमेशा सच्चे बने रहो, उत्तम विचारों से ही व्यक्ति का विकास होता है।

* यश की अपेक्षा योग्यता अधिक महत्वपूर्ण है।
* महत्वकांक्षा प्रचंड धारा के समान कभी पीछे मुडकर नहीं देखती।
* नौजवानी तन से नही मन से होती है।
* मनुष्य के गुण और गौरव तभी तक रहते है जब तक वह दूसरों से याचना नहीं करता।
* अकेला व्यक्ति यदि सर्वज्ञ भी हो तो भी उसके निर्णय में दोष हो सकते है।
* अपनी समस्त त्रुटियों को दूर करने का प्रयास ही सच्ची साधना है।
* शास्त्रों में सबकी दवा है पर मूर्खों की नहीं।
* युवकों के उत्साह के ताप में यदि उनका तप भी सम्मिलित हो जाये तो वह बहुत निर्माणकारी बन जाता है।
* मन शुद्ध होने से सारा जगत शुद्ध प्रतीत होता है।
* हर काम की सफलता के लिये दिल, दिमाग और आत्मा की पूरे मन से आवश्यकता है।
* धर्म से कमाया हुआ धन ही सच्चा धन है।
* श्रद्धा और विश्वास मनुष्य के धन और सम्पत्ति है।
* उचित समय पर आरम्भ की गई नीतियां अवश्य ही फलप्रदान करती है।
* मनुष्य की सम्पन्नता मन से होती है, धन से नही।
* द्वेष बुद्धि को द्वेष से नही मिटाया जा सकता, प्रेम की शक्ति ही उसे मिटा सकती है।
* अपनी समस्त त्रुटियों को दूर करने का प्रयास ही सर्वाधिक कठिन और वास्तविक साधना है।
* दुनिया में असंभव जैसा कार्य कुछ भी नहीं है, अगर उसे पाने का दृढ़ निश्चय कर लिया जाए तो वह अवश्य प्राप्त होता है। छोटे-छोटे नियम एक दिन बहुत बड़े हो जाते है। कार्य जितना बड़ा होगा श्रम, सब्र और समय भी उतना अधिक लगेगा। हम अपने लक्ष्य में इस कारण से सफल नहीं हो पाते कि हमारे सपने तो बहुत बड़े-बड़े होते है लेकिन उन सपनों को साकार करने के लिए न तो हम कठोर श्रम करते है, न समय देते है और न ही हममें सब्र होता है।
* लूट, खसोट करनेवाला, छीनकर खानेवाला, दूसरे का हक मारनेवाला, अनीति पर चलनेवाला ही सिर्फ दोषी नहीं है दोषी हर वो मनुष्य है जो इस कार्य में सहभागी बनता है।
* जो जैसा करता है उसे वैसा ही भुगतना पड़ता है। यह एक कठोर सच्चाई है जिसे हम झुठला नहीं सकते। हम बारिकी से चीजों पर नजर नहीं रखते और हमसे गलतियां होती चली जाती है। कई दिनों बाद, कई वर्षों बाद अपनी गलतियों का हमें अहसास होता है। मनुष्य अपनी गलतियों को अक्सर नजर अंदाज कर देता है और दूसरों की छोटी-छोटी गलतियों पर भी कड़ा रुख अपना लेता है। यदि हम अपनी गलतियां स्वीकार करना सीख जाएं तो शायद ही हमारे जीवन में पछताने का अवसर आएं। हमें कोई भी कार्य ऐसा नहीं करना चाहिए जिससे किसी के हृदय में चोट पहुंचे, दर्द महसूस हो, अपने आपको अपमानित महसूस करें, कोई आहत हो, किसीके सपने बदरंग हो जाए और न ही किसी के रास्ते में अवरोध बनें। किसी को अपने कर्मों से सुख देंगे तो हमें सुख वापस मिलेगा और किसी को दु:ख-दर्द देंगे तो वो भी हमें वापस मिलेगा। कुदरत हमारे कर्मों को वापस कर देती है।
* जो हम अपने लिये चाहते है वही दूसरों को दीजिये। प्रेम चाहिये तो प्रेम बांटे, सुख चाहिये तो सुख बांटे। कुदरत ही संसार में सच्चा न्याय करती है। बड़ी-बड़ी बातें तो जीवन में घटते ही रहते है। जीवन की असली परीक्षा छोटी-छोटी

बातों से ही होती है। जिन बातों को हम छोटी कहकर खालिज कर देते है वही बातें किसी के जीवन में बड़ा स्थान भी रखती है। ऊसूलों की परख छोटी-छोटी बातों से ही होती है। अपना व्यक्तित्व बढ़ाने में वही बातें महत्वपूर्ण होती है। इसलिये कोई अनीति कार्य न करे और न ही इसका हिस्सा किसी रूप में बने।

* आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है और उद्यम सबसे बड़ा मित्र, इसके साथ रहनेवाला कभी दुखी नहीं होता।

* जीवन में कोई चीज इतनी हानिकारक और खतरनाक नहीं होती जितना डाँवाडोल स्थिति में रहा जाता है।

* उदार मन वाले विभिन्न धर्मों में सत्य देखते हैं और संकीर्ण मनवाले केवल अंतर देखते हैं।

* फल के आने से वृक्ष झुक जाते हैं, वर्षा के समय बादल झुक जाते हैं, संपति के समय सज्जन भी विनम्र हो जाते हैं यही परोपकारियों का स्वभाव है।

* दुनिया में दुख है यह सत्य है कहीं वियोग का दु:ख है तो कहीं संयोग का दुख है, कहीं दोनों का दु:ख। कहीं तृप्ति का दु:ख तो कहीं अतृप्ति का। अनेक कारण मनुष्य को संतप्त बनाते हैं, दुखी करते है यही सत्य है।

* मनुष्य के जीवन की सफलता विद्वान, तपस्वी, दानी, शीलवान, गुणवान अथवा धर्मात्मा होने में है। इनमें से किसी भी गुण के अभाव में वह व्यक्ति मनुष्य नहीं पशुतुल्य है।

* नारी को दूसरों के घरों में नहीं रहना चाहिए। नारी किन्हीं भी कारणों से दूसरों के घर रहती हो तो वह सदैव लांछित होती है क्योंकि उसके सतीत्व की रक्षा कठिन हो जाती है।

* सत्संग के प्रवचन सिर्फ घर-गृहस्थ में रहकर पेट पालने के लिये नहीं होते बल्कि उनसे कुछ सीखकर कुछ बनना है। मुश्किलों के बावजूद सिद्धांतों पर टिके रहना है। प्रवचन न तो समय बीताने के लिये न मनोरंजन के लिए होते है। प्रवचन समय को हमसफर बनाने की साधना है।

* जब हर दिल में श्रद्धा, हर आँख में प्रेम और हर वाणी से अमृत छलकेगा तो धरती स्वर्ग बन जायेगी। अपनी खुशी के लिये थोड़ा कम खाओ, जिससे शरीर स्वस्थ्य रहेगा। कभी कभार गम खाओ जिससे मन स्वस्थ्य रहेगा। थोड़ा विनम्र बन जाओ जिससे जीवन स्वस्थ रहेगा।

* मनुष्य की जिन्दगी चार दिन की है। दो दिन किसी की चाहत में और दो दिन इंतजार में कट जाते है। इस दो दिन की जिंदगी में एक दिन मौत का भी है। जिन्दगी की एहसियत एक मुट्ठी राख से कुछ भी नहीं है। इसलिये जीवन राख बने इसके पहले ही सत्य की पहचान कर लो।

* मनुष्य यही सोचता है हर युग में कि लोग क्या कहेंगे और यह सोचकर आदमी कुछ नहीं करता। न हँसता है, न रोता है। दुनिया तो यूं ही कहती रहेंगी कहनेवालों का क्या। आप नीचे देखकर चलेंगे तो लोग कहेंगे किसी के सामने देखता तक नहीं। ऊपर देखकर चलेंगे तो कहेंगे कैसे अकड़कर चलता है। चारों ओर देखकर चलेंगे तो कहेंगे इसकी आँख घूमती है। आँखे बन्द करके बैठोगे तो लोग कहेंगे बड़ा ज्ञानी, मौनी बन रहा है बगुलाभगत है। दुनिया क्या कहती है इसकी चिन्ता कभी मत करो और अपने कार्य को करते चलो।

* दृष्टिकोण बदलने पर सब कुछ बदल सकता है अगर दृष्टिकोण ही सही नहीं है तो बारबार प्रयत्न करने पर भी नैतिकता का विकास नहीं हो सकता। जब दृष्टिकोण सही नही होता तो अर्थ में भ्रान्ति पैदा होती है। भ्रान्ति में सम्यक ग्रहण नहीं होता।

* आपका कोई भी काम महत्वहीन हो सकता है पर महत्वपूर्ण यह है कि आप कुछ करें।

* उड़ने की अपेक्षा जब हम झुकते हैं तब विवेक के अधिक निकट होते हैं।

* विद्या ऐसा धन है जो अनजाने देश में भी विद्वान को सच्चा सहारा देता है, मित्र बनाता है। नारी का सतीत्व ही घर में उसके आदर का कारण बनता है। रोगी का सच्चा मित्र उसकी औषध है। मृत्यु के बाद आत्मा को सद्‌गति देनेवाला मनुष्य का सच्चा मित्र केवल धर्म है। जीवन में धर्माचरण करनेवाला व्यक्ति मृत्यु के बाद शान्ति और मोक्ष की प्राप्ति करता है।

* हर पदार्थ में अपने-अपने गुण होते है। तुण्डी के सेवन से बुद्धि नष्ट हो जाती है पर इससे शरीर में असीम ताकत की वृद्धि होती है। इसके विपरीत वचा के सेवन करने से शीघ्र ही बुद्धि विकसित हो जाती है। यह आयुवर्द्धक, वात, पित्त, नाशक होती है। नारी पुरुष की शक्ति का शीघ्र ही क्षरण करनेवाली होती है और नारी का अत्यधिक संग करने से शीघ्र ही बुढ़ापा आ जाता है। दूध के पीने से तत्काल खोयी हुई शक्ति वापस लौट आती है।

* कन्या और कर्ज वालों की नींद हमेशा उड़ी ही रहती है। ऐसे ही दुनिया में दो तरह के व्यक्ति दु:खी माने गये है। कन्या और कर्ज को बड़ा होने में वक्त नहीं लगता। ये दोनों देखते ही देखते बड़े हो जाते हैं। मनुष्य जभी संतोष लेता है जब कन्या के हाथ पीले हो जाए और कर्ज अदा करके हाथ ढीले हो जाए वह आदमी चैन की नींद सोता है। कन्या किसीकी अमानत है देनी ही पड़ती है, कर्ज लेनेसे हमेशा डरना चाहिए।

* दुनिया में बिना क्रान्ति के शांति संभव नहीं। इस मुल्क को हरित-क्रान्ति की अत्यन्त आवश्यकता है एक ऐसी क्रान्ति जो इंसानियत को प्रतिष्ठा दिलाए और मरणासन्न मानवता में नई-चेतना, नया जीवन फूंक दे। यदि हम इस क्रान्ति को नही कर पाते है तो यह निश्चित है कि कल हमारा अस्तित्व व भविष्य खतरे में होगा।

* अपनी असलियत को समझें, आप जैसे हैं वैसे ही अच्छे हैं और अपना प्रदर्शन वैसा ही करे। दूसरों की नकल पर उन जैसे बनने की कोशिश मत करो।

* ईश्वर भी आपके अन्दर है और खुशी भी आपके अन्दर है। दोनों भी आपको अपने अन्दर ही मिलेंगे।

* सब काम आप नहीं कर सकते। आप कुछ विशेष कामों के लिए बने हैं, इसलिए आपके कामोंको प्राथमिकता दे।

* खुशी तलाशने से नहीं मिलती। जो काम आप करना पसंद करते हैं वह खुद-ब-खुद खुशी लायेगा।

* यह हकीकत है कि मनुष्य भगवान से ज्यादा भरोसा इन्सान पर करता है क्योंकि उसने भगवान को कभी देखा नहीं और देखा भी तो इंसान के रूप में। इन्सान वही है जो अपने को तपा कर एक दिन भगवान बना लेता है। इन्सान एक सुषुप्त देवता है जरूरत है उसे जगाने की और जगने की।

* यदि कोई इंजीनियर या डॉक्टर भ्रष्ट हो जाए तो कुछेक लोगों की अकाल मृत्यु हो जाती है, पर यदि कोई शिक्षक भ्रष्ट हो जाएं या भटक जाएं तो आनेवाली समूची पीढ़ी बर्बाद हो जाती है क्योंकि देश का भविष्य आज के शिक्षक के हाथ में है।

* हमारी किसी से नहीं बनती, यह सोच ले तो मन की शांति खत्म होगी और मन का तनाव बढ़ जायेगा, हम अकेले पड़ जायेंगे। हम अवसाद और रक्तचाप से गिर जायेंगे। इसलिये आवश्यक है कि सभी के साथ संतुलन बनाएं और कुशलता के साथ समझौता करे। कभी अहम्, ना-समझी तथा व्यावहारिक सूझबूझ से कमी पेश न आए। चाहे घर हो या दफ्तर, रिश्तेदार हो या महौल्ला पड़ोस सभी जगह अपने आपको व्यवस्थित करना पड़ता है।

* जीवन में अक्सर ऐसे मोड़ आते है जभी स्थिति बहुत ही जटिल हो जाती है जरा सी ढीली पकड़ के अच्छा खासा बखेड़ा खड़ा हो जाता है। आज कल भाग-दौड़, तनाव और विभिन्न प्रकार की समस्याएं पहले ही रहती है बुद्धिमानी इसीमें है कि व्यर्थ की मुसीबतें पैदा न की जाएं और आनेवाली परेशानियों को विवेक और धैर्य से हर लिया जाए।

✻ आनन्द से बढ़कर एक और आनन्द भी है और वह उसे ही प्राप्त होता है जो स्वयं को भूलकर दूसरों को आनन्दित करता है।

✻ ज्ञान की कठिन मार्ग पर चलते वक्त आपके सामने भारी कष्ट एवं दु:ख आयेंगे यह सुख का ही द्वार है, क्योंकि इस मार्ग में कष्ट और दुख ही नित्यानंद प्राप्त करने के निमित्त बनते है।

✻ निष्कपट व्यक्ति छल रहित होता है पर मूर्ख कदापि नहीं। दूसरों की इच्छाओं, भावनाओं, विचारों का सम्मान करना कपट रहित व्यक्ति की विशेषता होती है। जो जैसा है उसे उसी रूप में स्वीकार करना, नम्रता से दूसरों की संवेदनाओं को स्वीकार करना उसकी विशेषता होती है, पर आज के इस प्रगतिशील युग में स्व-प्रेरित प्रगति पाने के लिए लोग अपने सब रिश्तों को बेच देते है।

✻ अधिक सीधा-साधा होना भी सदैव अच्छा नहीं है क्योंकि सीधे सपाटे वृक्ष ही सबसे ज्यादा काटे जाते हैं और जो टेढ़े मेढ़े वृक्ष होते है, वो यूं ही खड़े रह जाते है।

✻ भगवान के लिए वह इंसान बड़ा नहीं है जिसके पास अत्यधिक धन हो, बल्कि वो इंसान बड़ा है जो करोड़ों का दिल जीतने का प्रयास अपने दिल से करता है।

✻ किसी को देना ही चाहते हो तो अच्छा वक्त दो क्योंकि आप हर दी हुई चीज वापस ले सकते हो लेकिन किसी को दिया हुआ वक्त कभी वापस नहीं लौटाया जा सकता।

✻ परायों के साथ जीना आसान है पर घर-परिवार के साथ जीना मुश्किल है। घर में जीने के लिए अपने अंदर आत्मीयता और सहज स्नेह होना चाहिए। जिस घर में तीन पीढ़ियां एक साथ रहती है वह घर तो धरती पर स्वर्ग है। वही से उस घर में अध्यात्म का प्रारम्भ धर्म से होता है, धर्म का प्रारंभ घर से होता है और घर में गृहिणी हो तो घर है बिना गृहिणी के तो घर ईंट पत्थर की चार दिवारी है।

✻ ऐसी बातें तो पंडित और पुरोहित, साधु-संत समझाते है कि पहले का आदमी सुखी था। पहले सतयुग था, पहले स्वर्ण-युग था और आगे स्वर्ण-युग आनेवाला है। यह सब बेहोशी की बातें है। हिंदुओं का, मुसलमानों का, जैनों का, बौद्धों का, अधार्मिक, कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट। एक स्वर्ण युग आगे आयेगा, एक स्वर्ण युग पीछे बीत गया। दोनों ही भुलावे के रस्ते है।

✻ यदि गहराई और सच्चाई से विचार किया जाये, तो परमेश्वर न काष्ठ (लकड़ी) में है न पत्थर की मूर्ति में है। ईश्वर तो मानव-मन की भावना में है। हर मनुष्य के हृदय की सच्ची श्रद्धा भावना में ही परमेश्वर का निवास है। श्रद्धापूर्वक कोई भी कल्याणकारी कार्य किया जाये, ईश्वर कृपा से उसमें अवश्य सफलता मिलती है। मनुष्य की श्रद्धा भावना ही प्रतिमा में देवता का वास मानती है और भावना का अभाव ही प्रतिमा को साधारण जड़ पदार्थ बना देता है।

✻ दु:ख बड़ा ही हठी मेहमान है वह आपके घर अवश्य आयेगा। आप घर का दरवाजा बन्द भी कर लोगे तो यह पीछे के दरवाजे से आयेगा। पीछे का दरवाजा बन्द है तो खिड़की से आयेगा, खिड़की भी बन्द है तो छप्पर फाड़कर नहीं तो फर्श उखाड़कर आ जायेगा। इसलिये जीवन में सुख की तरह दु:ख का भी स्वागत करो। जैसे सुख सदा नहीं रहता वैसे ही दुख भी सदा नहीं रहनेवाला।

✻ समय चलता नहीं स्थिर रहता है केवल हम चलते हैं, समय हमेशा जवान रहता है, बदलते रहता है।

✻ मूर्ख मनुष्य विद्वानों को अपशब्द कहकर और उनकी निंदा कर दु:ख पहुंचाते हैं। अपशब्द कहनेवाला पाप का भागी होता है व क्षमा करनेवाला पाप से मुक्त हो जाता है।

✻ स्वयं को जीवन में नमक की तरह बनकर रखना चाहिए। जो खाने में तो रहता है मगर दिखाई नहीं देता और अगर खाने में नमक ना हो तो उसकी कमी महसूस होती है।

✻ लगातार हो रही असफलताओं से कभी निराश नहीं होना चाहिए। क्योंकि कभी-कभी झुमके की आखिरी चाबी भी ताला खोल देती है। इसलिए सदैव सकारात्मक सोचना चाहिए।

✻ सफल होने की लिए अच्छे मित्रों की आवश्यकता होती है लेकिन सर्वोच्च सफलता प्राप्त करने के लिए अच्छे शत्रुओं की भी आवश्यकता होती है।

✻ जिंदगी में तीन चीजों का अर्जन आवश्यक है- ज्ञान का, सम्पत्ति का और पुण्य का। बचपन अध्ययन के लिए होती है। जवानी कमाने के लिए होती है, बुढ़ापा आत्मचिंतन के लिए होता है। आषाढ़ का चूका किसान, डाल का चुका बन्दर, पेड़ से टूटा पत्ता और स्कूल से भागा विद्यार्थी को एक दिन अवश्य पछताना पड़ता है।

✻ थोड़े समय की खुशी चाहिए तो एक झपकी ले। एक दिन की खुशी चाहिए तो पिकनिक मनाए। एक महीने की खुशी चाहिए तो पत्नी के साथ जीवन बितायें। एक साल की खुशी चाहिए तो सम्पत्ति अर्जित करें और जिन्दगी भर की खुशी चाहिए तो हर हाल में मस्त रहने की आदत डालें। धर्म और अध्यात्म का संग करने से आप कभी तनावग्रस्त नहीं होंगे।

✻ चिन्ता झूलनेवाली कुर्सी के समान है जो आपको व्यस्त तो रखती है पर आप पहुँचते कहीं नहीं।

✻ यदि आपके दिल में पवित्रता, सच्चाई और विश्वास है तो आपकी दृष्टि लोहे के पर्दे को भी चीर कर जा सकेगी।

✻ परिस्थितियां कितनी भी विपरीत क्यों न हों। अभ्यास छोड़ देना समझदारी नहीं है। स्थितियां सामान्य होने पर आपका अभ्यास और आपका प्रयास ही काम आयेगा।

✻ अच्छे लोगों को अपना दोस्त बनाओ, बुरे काम करनेवालों की संगति से दूर रहो क्योंकि आदमी अपने साथियों से पहचाना जाता है।

✻ जबान के जख्म बहुत गहरे होते है जो कभी नहीं भरते अगर वो भरे जा सकते है तो पछतावे की आंसूओं से सच्चे मन से क्षमा मांगनी चाहिए।

✻ अगर हम एक-दूसरे के लिए आसानियां पैदा न कर सके तो दूसरे के लिये परेशानियां भी नहीं करनी चाहिए, इसीसे हमारी जिन्दगी का सही अर्थ है।

✻ छोटे से छोटा कारोबार करना किसीके आगे हाथ फैलाने से तो बेहतर है।

✻ दुनिया मुहब्बत करने के लिए नहीं वरना् उसे इस्तेमाल करने के लिए होती है। दुनिया से अपना हिस्सा उतना ही लो कि जिससे किसी दूसरे का हक नहीं मारा जायें। अपने आप में इतनी आजादी भी मत हासिल करो कि दूसरों के अधिकार और हकों को नष्ट कर दे।

✻ जिसको ईश्वर का नाम मधुर लगता है उसका दिल खुशियों से भर जाता है।

✻ अच्छी सूरत के मुकाबले में अच्छे चरित्र का दर्जा बुलंद रहता है।

✻ जिन्दगी की किताब में सबसे अच्छा पृष्ठ माँ-बाप की मुहब्बत है।

✻ किसी से सच्ची मुहब्बत का इजहार उसकी तारीफ से नहीं बल्कि उसकी खिदमत से किया जाता है।

✻ जो व्यक्ति मेहनत और साफ हृदय से काम करता है उसके लिये हर वक्त उन्नति का रास्ता खुला रहता है।

✻ जिन लोगों के दिल में अच्छे विचार रहते है वो कभी तनाह (अकेले) नहीं होते।

✻ जो व्यक्ति अपने मुंह से अपनी बड़ाई करता है, अपने को महान बताता है वह कभी महान नहीं हो सकता।

✻ दौलत के लालची को कभी, कहीसे भी राहत नहीं मिलती।

✻ ज्ञान आदमी की सुरक्षा करता है और धन की हिफाजत आदमी को खुद करनी पड़ती है।

✻ विवेक जीवन का नमक है और कल्पना उसकी मिठास। एक जीवन को सुरक्षित रखता है और दूसरा उसे मधुर बनाता है।

✻ स्वयं को अन्य लोगों की आँखों से देखना, अपने वास्तविक स्वरूप को न देखकर अपना निरीक्षण अन्य लोगों की दृष्टि से करना, यह जो स्वभाव है वही हमारे सब दु:खों का कारण है।

✻ समृद्धियां पराक्रमी के साथ रहती हैं, अनुत्साही के साथ नहीं। भविष्य की श्रेष्ठता वर्तमान पर निर्भर होती है।

✻ उस जीवन को नष्ट करने का हमें कोई अधिकार नहीं जिसको बनाने की शक्ति हममें न हो इसलिये आत्महत्या करना महापाप है।

✻ इस संसार में हर मनुष्य के लिए जीवन के कुछ सिद्धांत और नियम निश्चित है। अपने कुल या परिवार की रक्षा के लिए किसी का त्याग करना पड़े तो तुरंत करना चाहिए। पूरे गांव की रक्षा के लिए अपने स्नेही जनों को भी त्यागना पड़े तो छोड़ देना चाहिए। पूरे देश के लिए गांव छोड़ना पड़े तो नि:संकोच छोड़ देना चाहिए और अपने अंतरात्मा की सच्चाई की रक्षा के लिए सर्वस्व भी छोड़ना पड़े तो छोड़ दे। सत्य की रक्षा करना सबसे महान कर्त्तव्य है।

✻ पुत्रहीन व्यक्ति के लिए उसका अपना घर भी सुना होता है। उसे घर में अकेलापन सालता रहता है। जिसके कोई सम्बन्धी नहीं उसे अपना घर परदेश जैसा पराया (सूना-सूना) लगता है। मूर्ख व्यक्ति दूसरे के दु:ख से न तो द्रवित होता है और न ही सहानुभूतिवश किसी की सहायता ही करता है। इस प्रकार मूर्ख का हृदय उदार भावों से सर्वथाशून्य होता है। निर्धन व अभावग्रस्त व्यक्ति के लिए सब कहीं (हर तरफ) सूना-सूना सा होता है, क्योंकि वह जहाँ कहीं भी जाता है लोग उससे किनारा करते हैं। अत: पुत्रहीन व्यक्ति, रिश्ते-नातेदार से विहीन व्यक्ति व मूर्ख व्यक्ति व निर्धन अभावग्रस्त व्यक्ति का जीवन निरर्थक है।

✻ धर्म रहित प्राणी जीवित होते हुए भी मृतक के समान है। इसके विपरीत धर्मात्मा मर जाने पर भी दीर्घजीवी रहता है, अर्थात् उसका यश अनन्त काल तक इस संसार में व्याप्त रहता है। इसमें लेशमात्र भी संशय अथवा अतिशयोक्ति नहीं है। शरीर नाशवान् है, धन-सम्पत्ति भी सदा साथ देनेवाली नहीं होती। मृत्यु हर समय सिर पर सवार रहती है। अत: धर्म का संग्रह करना चाहिए। धर्म ही सबसे बड़ी वो सम्पत्ति है जो आपके साथ हर समय रह सकती है। धर्मपरायण प्राणी परलोक में भी जीवित रहता है क्योंकि उसका यश अजर-अमर है। ऐसे धार्मिक प्राणी का जीवन ही सफल कहलाता है।

✻ उस मनुष्य पर प्रभु की अपार कृपा है, जिसका आदर्श है सत्य, ध्येय है सुन्दरता, उद्देश्य है ज्ञन, धर्म है सेवा और प्रेम है उसकी पूर्णता।

✻ जीवन में रत्नों का संग्रह करना सबसे बड़ी सम्पत्ति है। आत्मज्ञान से बढ़कर अन्य कोई उपलब्धि नहीं होती। जिसने सम्यक ज्ञान प्राप्त कर लिया उसने सब कुछ पा लिया। हमारे जीवन का लक्ष्य सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र के धन को बटोरना है।

✻ वह लोग जिनके स्पष्ट, लिखित लक्ष्य होते हैं, वह कम समय में दूसरे लोग जितना सोच भी नहीं सकते उससे कहीं ज्यादा सफलता प्राप्त करते हैं।

* मनुष्य को सभी मनुष्यों और प्राणियों में सभी जीवों के प्रति अपने जैसा प्रेम व व्यवहार रखना चाहिए। यदि कोई विवाद हो तो उसका शांतिपूर्ण समाधान होना चाहिए। यदि कोई दुष्टता पर उतारु हो जाए और समाज में मनुष्य का दमन करने लगे या अन्याय-अत्याचार करने लगे तो धर्मयुद्ध करके ऐसे दुष्टोंका दमन करना चाहिए। गीता हमें यही संदेश देती है।

* जो मनुष्य प्रेम करता व प्रेम पाता है, उसके लिए हमेशा शीतकाल बसंत ऋतु है और यह संसार ईश्वर का उपवन।

* यदि आप अपनी असफलताओं का परीक्षण करेंगे, तो उन्हीं में आप को कुछ ऐसे बीज मिलेंगे, जो आप की असफलताओं को सफलताओं में बदल देंगे।

* धन के साथ पुण्य भी कमाना चाहिए जिससे मृत्यु के बाद भी जिन्दा रह सके। इसके लिए जीते जी कुछ सत्कर्म करने पड़ते है जो इतिहास में अमिट छाप छोड़ जाते हैं। ऋषभदेव और महावीर स्वामी बड़े-बड़े महापुरुष जिन्दा नहीं है फिर भी उनका नाम, यश और कीर्ति जिन्दा है। उसीका नाम जिंदगी है।

* भाग्य के भरोसे बैठे रहने पर भाग्य सोया रहता है पर हिम्मत बाँधकर खड़े होने पर भाग्य भी उठ खड़ा होता है।

* अमीर वह नहीं, जिसके पास अथाह सम्पत्ति है, जो रोज हजारों-लाखों में खेलता है, जो आलिशान बंगले में मुलायम गद्दों पर सोता है, बल्कि वह है जिसके पास माँ-बाप की सेवा करने के लिये समय है, जो बच्चों के साथ बच्चा होकर खेलता है, जिसे रात में सोने के लिए नींद की गोली और सुबह जागने के लिए घड़ी के अलार्म की जरूरत नहीं पड़ती, जो संतुष्ट है, जिसकी पत्नी सुशील और बच्चे आज्ञाकारी है, जो सेहतमंद, अक्लमंद है वही वास्तव में धनवान है।

* आप जिस किसी से प्रभावित होते हैं आपका मन करता है कि आप उससे बार-बार मिले, उसके साथ ही रहे। यदि मिलने की संभावना न भी बन पाती हो तो भी आपका मन करता है कि उसके बारे में ज्यादा से ज्यादा बातें करें। ऐसे व्यक्ति तो आपके दिल में अपने छोटे-छोटे घर बनाकर हमेशा-हमेशा के लिए अपनी जगह बना लेते है और आपको अच्छा लगता है। आपके ऊपर इन लोगों का इतना अधिक प्रभाव पड़ता है कि लोग आपसे प्रभावित होने लगते है। जिस तरह के विचार हमारे दिमागे में उठते हैं उसी तरह की तरंगों को हमें अपनी ओर आकर्षित करने लगते है। अच्छे विचार अच्छी तरंगों का स्वागत करते हैं बुरे विचार बुरी तरंगों का।

* जिन दफ्तरों में माहौल खराब होता है वहां के कर्मचारी न तो गुणवत्ता वाला कार्य कर पाते है और न ही उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है। आप अपने अधिकारियों से डरे नहीं, बल्कि उनके साथ अपने हृदय की बात मनस्थिति के अनुरूप कीजिये। इससे न कि केवल आपको उनका सहयोग मिलेगा बल्कि आपके कार्य की सराहना भी होगी। आपकी तालमेल जिन्दगी की नीरसता और उदासी को मिटाता है और कार्य करने की नई क्षमता पैदा करता है।

* शर्मीला होना कोई गुण नहीं है यह एक ऐसा अवगुण है जो उम्मीदों के सपने संजोनेवाले व्यक्तियों की सफलता में बाधा उत्पन्न करता है। हम सभी किसी न किसी परिस्थितियों में थोड़ी शर्म या संकोच का अनुभव करते है। कुछ लोग सभी क्षेत्रों में संकोच का अनुभव करते हैं। दूसरे लोगों से संपर्क, बातचीत की शुरूआत करने में सकुचाते है। सबके बीच में सामान्य और सहज नहीं बन पाते ऐसे व्यक्ति निश्चित नहीं कर पाते किसीके साथ कैसे परिचय किया जाए। उनसे परिचय प्राप्त करने और अपना परिचय देने में झिझक और परेशानी महसूस करते है। लोगों से मुस्कुराते मिलना भी उन्हें अजीब लगता है। उन्हें हमेशा सदैव अपमानित होने या उपहास उड़ाने का भय बना रहता है। उन्हें लगता है कि लोग उनके बारे में क्या सोचेंगे, क्या कहेंगे। ऐसे व्यक्ति में कोई-न-कोई हीन भावना पहले से ही विद्यमान रहती है। शर्मीले व्यक्ति में आत्मविश्वास की कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति बाहर की अपेक्षा अपनी अंदर की

दुनिया से अधिक जुड़ा रहता है। शर्मीला व्यक्ति सामान्य हंसी मजाक की बातों को गंभीरता से लेकर उत्तेजित और विचलित हो जाता है फिर उसे सामान्य बनने में कठिनाई होती है।

* व्यक्ति स्वयम् महान नहीं होता बल्कि उसका चरित्र (किरदार) उसे महान बना देता है। मनुष्य का चरित्र इतना बुलंद होना चाहिए कि वो इस दुनिया में रहे तो लोग उससे दुबारा मिलने की तमन्ना करे अगर वो इस दुनिया से चला जाये तो लोग उसे अच्छे लफ्जों में याद करे।

* किसी विकसित और तरक्की वाले देश का स्तर का पैमाना न तो जनसंख्या है न बड़े-बड़े शहरों का अस्तित्व, न वहां की पैदावार और न धन-सम्पन्नता की अधिकता बल्कि उसका सही स्तर है कि वो देश किस किस्म के संस्कृति के मनुष्य पैदा करता है।

* न्याय की एक घड़ी वर्षों की पूजा से सदा के लिये बेहतर है।

* दुनिया परलोक की खेती है, जो बोओगे वही काटोगे।

* बुरे शख्स के लोग उसके भय से उसकी इज्जत करते है।

* अपने मां-बाप के साथ अच्छा सुलूक करो तो तुम्हारी संतान भी तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार करेगी।

* ईश्वर उन लोगों को अपना मित्र बनाता है जो दूसरों पर दया करना जानते है, अहसान करते है, उनको क्षमा करते है और उनकी भलाई, कल्याण सदा चाहते है।

* जनता कल्पवृक्ष है, जो भावना आप लेकर जनता के पास जायेंगे वही उनसे भी पाएंगे। जनता जो कुछ भी सीखती है, वह घटनाक्रम की पाठशाला में सीखती है। दु:ख दर्द ही उसका शिक्षक है। जनता और कुछ नहीं कर सकती फिर भी हमदर्दी तो करती है, साथ देती है।

* जागरण का अर्थ है कर्मक्षेत्र में अवतीर्ण होना और कर्मक्षेत्र है जीवन का संग्राम।

* जो लोग अपने अधिकारों को पाने के लिए खुद खड़े नहीं हो सकते उनके लिये तो गुलामी बर्दाश्त करना ही जीवन की असलियत बन जाती है।

* गर्भावस्था में मां को प्रसन्न रहना चाहिए जिससे गभर्थ शिशु के विकास पर अच्छा असर पड़ता है। जन्म के बाद भी माँ के मनोभावों का बच्चे पर गहरा असर पड़ता है। बच्चे को स्तन पान के दौरान महिलायें यदि प्रसन्न रहती है, हंसती है, मुस्कुराती है तो बच्चे के शरीर में स्थित अंर्तस्त्रावी ग्रंथियां सक्रिय होकर हार्मोन्स उत्सर्जित करते है जो माँ के दूध में मिलकर बच्चे को पाषण के साथ-साथ एलर्जी तथा अन्य रोगों से सुरक्षा प्रदान करने में सहायक करते है।

* जिन लोगों के दिलों में दुनिया की मुहब्बत बसी हुई है वो सिर्फ धन से ही खुश होते है। दीन और ईमान, अच्छे कर्मों और ईश्वर के रास्ते पर चलने पर उन्हें इन बातों से खुशी नहीं होती कि ईश्वर ने उनको ईमान की दौलत से मालामाल किया है बल्कि दुनिया की मुहब्बत की वजह से वो हमेशा धन-दौलत के इन्तजार में रहते है। जो ईश्वर ने दिया है उसपर अधिक खुश रहे, प्रसन्न रहे और उसका धन्यवाद अदा करे तो ईश्वर उनकी स्वयंकी योग्यता से भी अधिक देगा।

* किसी की पीठपीछे उसकी बुराई मत करो। हर ईमानदार के लिये जिस चीज से परहेज करना बताया है उसे परहेज करो और अपनी तकदीर से जो मिला है उससे खुश रहो।

* कोई भी दुर्घटना छोटी या बड़ी नहीं होती बल्कि किसी अन्य की तुलना में सापेक्षता से छोटी या बड़ी होती है।

* सुख-दुख भी हमारी क्षमता पर निर्भर है। हमने सुख ही सुख देखे है दु:ख नहीं तो सुखोंकी मात्रा कम होनेपर हमेशा

दु:ख प्रतीत होंगे। मुश्किलों से राहत मिल जाना ही प्राय: हमारे आनंद का कारण है। जब कोई मुश्किलें ही नहीं तो फिर राहत भी नहीं, जब राहत नहीं तो आनंद भी नहीं। वास्तविक आनन्द समस्या विहीन होने में नहीं, समस्याओं के हाल होने में है।

❋ जीवन में दुख, कठिनाइयां अथवा विषम परिस्थितियां न हो तो सुख की कल्पना भी नहीं की जा सकती। दु:ख का अभाव ही सुख है जो दु:ख जाने के बाद मिलता है। जिसे दु:ख की अनुभूति नहीं हुई उसके लिये सुख आविर्भूत नहीं होगा। सुख की अनुभूति के लिये आवश्यक है कि आदमी दु:ख का स्वाद जाने। हमें जीवन में जाने कितने दुख और कष्ट झेलने पड़ते है। अवमानना सहनी पड़ती है। उनकी तीव्रता से जूझना पड़ता है। उन्हें दूर करने के उपाय करने पड़ते है। कुछ कष्ट कोई खास कष्ट हमें जीवन में सबसे ज्यादा पीड़ित करता है। एक बड़े कष्ट के कारण हम असंख्य छोटे-छोटे कष्टों को भूल जाते है। हर कष्ट अपने से छोटे कष्टों को गौण कर देता है। हर परेशानी दूसरी परेशानियों का एहसास समाप्त कर देती है। जिसे हम बड़ी परेशानी मानते हैं, कभी छोटी परेशानी कम कष्टदायक होती है। बड़ी परेशानियों के कारण ही छोटी परेशानियों से उबर जाते है, जो हमारे आनंद के लिये नहीं उन्नति के लिये आवश्यक है। जितना बड़ा दु:ख होगा उतनी ही बड़ी मनुष्य की कष्ट सहने की क्षमता होगी। कष्टों से जूझने का क्षमता का विकास होगा। हम कष्टों और समस्याओं से भागकर खुद ही अपने सुखों से दूर हो जाते है।

❋ असीमित उपभोग द्वारा भी हम अपने सुखों को कम कर देते है। शरीर को हम जितना अधिक आराम और सुविधाएं देंगे वह उतना ही निष्क्रिय और जड़ होते जायेगा। परिश्रम या उद्योग करने पर कष्ट तो अवश्य होता है पर स्वस्थ शरीर को सुख भी उपभोग करने को मिलता है।

❋ जीवन में जितना कष्ट आयेगा उतना ही कष्टों को सहते-सहते जीवन धैर्यवान होते जायेगा। धैर्य एक ऐसा गुण है जो व्यक्ति की कार्यक्षमता में वृद्धि करता है, उसे आगे बढ़ने में प्रोत्साहित करता है, सम्पूर्णता प्रदान करता है, बड़े दु:ख का उपचार करता है और सभी छोटे-छोटे दु:खों को भी। असंख्य छोटे-छोटे दु:खों के उपचार से प्राप्त सुख असीम सुख में परिवर्तन होकर आनंद प्रदान करता है।

❋ जिन घरोंमें लालच और वासना प्रवेश कर जायें वहां दिलों में दरारे पड़ जाती है। कई स्केअर फूट का घर, कई लाखों का कीमती फर्नीचर, हजारों के परदे किसी भी घर को मकान तो बना सकते है पर घर नहीं। आरामदायक जिन्दगी अवश्य गुजारनी चाहिए पर झूठी शान और दिखावे से दूसरों के एहसास में कभी भी तुलना नहीं करनी चाहिए। आपके किसी भी काम से किसी का दिल न दुखे ताकि जिस घरमें आप रहो उसमे आपकी पत्नी, बच्चे और घरवाले आराम और शांति से रह सके। वास्तव में तो घर के अन्दर की खुबसूरती और सजावट घरके अंदरवालों के व्यवहार, शिष्टाचार और चरित्र से होती है। जिस घर में एक-दूसरे के लिये मुहब्बत का जितना जज्बा अधिक होगा उस घरमें वातावरण की पवित्रता और शांति होगी। दूसरों के लिये अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं की बलि देनेवाला हमेशा सब्र करनेवाले व शुक्र करनेवाले, अपने घरके लोगोंको अपने मुहब्बत की छांव में बसाये रखते है। केवल घर में रहने से कोई गृहस्थ नहीं होता, पत्नी के साथ में रहने से मनुष्य गृहस्थ कहलाता है। जहां भार्या है, वहीं घर है भार्याहीन गृह तो वन-तुल्य है।

❋ घर प्यार मुहब्बत की ईंटों और मुहब्बत के गारे से बनी वो चार दिवारी है जिसमें राजी, खुशी, सब्र, सादगी, बर्दाश्त की खूबियां रखनेवाले लोग रहते हैं। जो एक-दूसरे की हर बुराई, कमजोरी, दोषों को सब्र के साथ बर्दाश्त करते है। घर और मकान में यही फर्क है कि मकान ईंट-गारों का बेजान चीजों का बना ढांचा है जिसमें लोग तो रहते है मगर एक-दूसरे से बेपरवा, बे-मुरव्वती, बे-ताल्लुक और स्वार्थ की प्रतिमा की तरह जिन्हें एक-दूसरे से कोई वास्ता नहीं अपनी-अपनी दुनिया में मगन

ऐसे मकानों में रहते है जहाँ दम घुटने लगता है। देखने में तो वह घर खुबसूरत और सजाया हुआ रहता है। दुनियादारी के सभी ऐशों आराम हर समय उसमें मौजूद रहते है। पर उसमें जाते ही वापस आने को दिल चाहता है उसका नाम मकान है।

* बुरा वो व्यक्ति है जो असभ्य है, क्योंकि सभ्य व्यक्ति में शिष्टाचार के गुण-ही-गुण होते है।

* वो झूठ जिसमें कोई गुण छुपा हुआ हो उस सच्चाई से बेहतर है जिससे लड़ाई-झगड़ा की आशा हो।

* अगर आप कामयाबी हासिल करना चाहते हो तो सदैव उद्यम करना चाहिए।

* व्यक्ति को अपनी प्राथमिकता समझनी चाहिए और उसी अनुसार उसे समय व महत्व देना चाहिए। अपने ऊपर इतना बोझ भी न लें कि आपकी हिम्मत बीच में टूट जायें। अपने आपको परखे आपसे क्या काम नहीं हो सकता और क्या हो सकता है और ऐसे कौन से काम है जो आपके सिवा कोई अन्य नहीं कर सकता। बाकी के काम आप किसी और को सौंपे अन्यथा आपकी शांति व समय बिना कारण व्यर्थ हो जायेंगे।

* अपने आस-पास के लोगों से, सहयोगियों से सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध रखें व मदद मांगने में कभी हिचकिचाना नहीं चाहिए और स्वयं भी दूसरों की मदद करने में पीछे नहीं हटे। घंटों की एक समस्या को लेकर ही उलझना नहीं चाहिए। अगर कोई कार्य मुश्किल लग रहा हो तो उसे छोड़ दे और कुछ अन्य कार्य करें। समय का महत्व समझकर उसका सही ढंग से नियोजन करे जिससे समय की बचत होती है और आप मानसिक परेशानी व तनाव से बचते है। अपने लिये वास्तविक सीमायें निर्धारित करने का प्रयास करें और अपने जिम्मेदारियों के बीच सामंजस्य बिठाये।

* जो चौकी पर बैठता है वह चौकीदार है और जमीन पर बैठनेवाला जमीनदार होता है।

* प्रसन्नता इस बात पर निर्भर नहीं करती कि हम पर क्या गुजरती हैं बल्कि इस बात पर कि हमारी प्रतिक्रिया क्या होती है।

* रिश्ते जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्तमान परिदृश्य में रिश्तों में कड़वाहट घुलती जा रही है। कुछ रिश्ते इतने नाजुक होते हैं कि उन्हें विशेष तवज्जो की जरूरत होती है। कई बार अनजाने ही हमसे ऐसी गलतियाँ हो जाती हैं कि रिश्ते या संबंध टूट जाते हैं।

* छोटी-छोटी बातों को नजरअंदाज करना सीखिए। क्षमा करना अपने व्यवहार में शामिल कीजिए। अपने से बुजुर्ग से हमेशा आदर से बात कीजिए। वे क्या कहना चाह रहे हैं पहले उसे सुनिए, बाद में अपनी बात रखिए। हमेशा आलोचक बनने की बजाए सामने वाले की अच्छाई भी देखें। व्यवहार में विनम्रता शामिल कीजिए। समय कभी लौटकर नहीं आता। अत: समय रहते आपके अपनों को खुशी देने का कोई अवसर मत छोड़िए।

* सभा-समारोह में हँसना, बोलना, उठना-बैठना, मुस्कराना, अभिवादन करना आदि की आपकी प्रस्तुति सभ्य तथा संतुलित होनी चाहिए, तभी आप असल अर्थों में खूबसूरत कहे जाएँगे, क्योंकि खूबसूरती महज रूप की पहचान नहीं, वरन शालीनता से भी जुड़ी होती है। अपनी शान को बनाए रखने के लिए जब भी समारोह में शामिल हों शिष्टाचार से रहना चाहिए। समारोह के बीच किसी से अभिवादन करते समय बाहों को ठीक से मोड़कर हाथ जोड़ें। यदि हेलो करते हुए हाथ बढ़ाएँ तो बड़ी नजाकत से हाथ मिलाएँ। हाथ मिलाकर जोर-जोर से न झटकें। समारोह के बीच कोई पत्रिका कोई जानकारी का कागज आया है तो उसे पढ़ने के लिए न झपटें, धीरज रखें वह स्वयं अपने आप तक आ जायेगा। समारोह के बीच शांति से बैठें। जिस समारोह में आये हैं उसका आनन्द लें। वहाँ बैठकर घर या बच्चों का लेखाजोखा या जिक्र न करें। जोर-जोर से किसी बात पर ठहाका मारकर न हँसे, कुर्सियाँ गद्दे जहाँ भी बैठना हो शालिनता से बैठे, धम्म से न बैठें। समारोह के बीच किसी परिचित से मिलना चाहते हो तो उसके पास जाकर मिलें। दूर से उसका नाम पुकार कर चिल्लाकर

हाथ न हिलाएँ। समारोह के बीच जिससे भी मिलें, चेहरे पर मुस्कान के भाव लाएँ कभी भी किसी को देखकर मुँह न बनाएँ। समारोह के बीच किसी के कंधे या पीठ पर धप्प से हाथ मारकर न मिलें। समारोह के बीच खाने-पीने का इंतजाम हैं तो धीरे-धीरे खाएँ। अपने चलने का तरीका ठीक रखें। चप्पलें या जूतों को घसीट कर या अस्वाभाविक रूप से तन कर न चलें। समारोह के बीच प्रसन्न रहें, क्योंकि प्रसन्नचित चेहरा मोहनी सूरत दर्शाता है।

* बुराई की ओर एक गलत कदम का परिणाम भी सर्वनाश की ओर ले जाता है। अगर गलती की शुरुआत कर दी तो यह सिलसिला जारी रहेगा, इसे शुरू में ही रोक लेना चाहिए। कई बार हम लोग छोटी-छोटी गलतियां यह सोचकर करते हैं कि एक बार की तो बात है, अगली बार सुधार लेंगे, पर अगली बार इसे सुधारने का मौका न मिले इसलिये संभव हो सके प्रयत्न करना चाहिए कि गलती का एक कदम भी आगे ना बढ़े।

* पड़ोसी से ईर्ष्या जैसी छोटी-छोटी चिंगारी को इंधन मिलता है। उससे पाप बढ़ता है। बुराई की ओर बढ़ता कदम सर्वनाश की ओर ले जाता है।

* अपने किसी प्रिय को खोने जैसे सदमे से तो कोई व्यक्ति मनोवैज्ञानिक तौर पर टूट जाता है। छोटे ट्रॉमा या आघात के बाद व्यक्ति और मजबूत होता है।

* दूसरों की कद्र करना सीखो यह तकनीक आपको एक अच्छा इन्सान बनने में मदद करेगी। आप दूसरों की भावनाओं को बेहतर तरीके से समझ सकेंगे। चीजों को दूसरे के नजरिये से समझने का प्रयत्न करें। यह बहुत अच्छा तरीका है लोगों को समझने का और सफलता प्राप्त करने का।

* परेशानियाँ, गलतियाँ असफलताओं से घबराना नहीं चाहिए। उनसे सबक लेकर आगे बढ़ना चाहिए। यह सब चीजें आपको मजबूत बनाती है। आप अपने किस्मत को कोसना छोड़ें, आप असफलता इसलिए नहीं है कि आप गरीब हैं या आपमें कोई कमी हैं। अगर आप असफल है इसलिए कि आपने हार स्वीकार कर ली है।

* अपने चरित्र को दर्पण के समान सहेज कर रखो, जिससे दूसरों को भी उसमें अपना प्रतिबिम्ब देखने की आकांक्षा हो।

* चरखा भूखे की रोटी, अन्धे की लकड़ी और विधवा का सहारा है।

* सभ्यता में उस मनुष्य के लिए स्थान नहीं है जो उदास, खिन्न और निराश हो।

* जैसे बुढ़ापा सुन्दर रूप-रंग का नाश कर देता है, उसी प्रकार अधर्म से लक्ष्मी का नाश हो जाता है।

* छिपकर किया गया अपराध जीवन-पर्यन्त हृदय में कांटे की तरह चुभता रहता है।

* मनुष्य का आचरण ही यह बताता है कि वह कुलीन है अथवा अकुलीन, शूर अथवा भीरु, पवित्र है अथवा अपवित्र है।

* जब घर में धन और नाव में पानी आने लगे, तो उसे दोनों हाथों से निकालने में बुद्धिमानी है क्योंकि धन की अधिकता कभी सुखी नहीं बनाती।

* अपरिग्रह से मतलब यह है कि हम किसी ऐसी चीज का संग्रह न करें जिसकी हमें आज आवश्यकता नहीं है।

* केवल मनुष्य ही रोता हुआ जन्मता है, शिकायतें करता हुआ जीता है और निराश मरता है।

* अनासक्त भाव से कर्म करने वाला पुरुष मोक्ष पाता है। इच्छाओं को रोकने से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।

* लक्ष्य को ही अपना जीवन - कार्य समझो। हर समय उसी का चिन्तन करो, उसी का स्वप्न देखो। उसी के सहारे जीवित रहो।

* एक कायर कुत्ता उतनी तीव्र से काटता नहीं, जितनी तीव्रता से भौंकता है।

* कला के लिए आवश्यकता बुद्धि और हृदय की है, रुपये की कदापि नहीं।

* जुगनू तभी तक चमकता है जब तक उड़ता है, यही हाल मन का है। जब हम रुक जाते हैं तो अंधकार में पड़ जाते हैं।

* सामर्थ्यशाली तेजस्वी पुरुष भी अकेला क्या कर सकता है? देखिये, वायुरहित स्थान में प्रज्वलित अग्नि अपने आप शान्त हो जाती है।

* सदैव प्रसन्न रहो। इससे मस्तिष्क में अच्छे विचार आते हैं और चित्त शुभ कामों की ओर लगा रहता है।

* धनी को अपने धन का मद रहता है, घमंड रहता है, परन्तु गरीब के झोपड़े में क्रोध और अहंकार के लिए स्थान नहीं रहता है।

* जीवन उम्र में बड़े होने की बजाय जीवन में महान बनना ही श्रेयस्कर है।

* चरित्रहीन शिक्षा, मानवता विहीन विज्ञान और नैतिकता रहित व्यापार सदा नुकसानदायक होते हैं।

* व्यक्ति के गुणों का सम्मान हर जगह होता है, गुणी के वंश का नहीं। लोग वासुदेव कृष्ण की ही वंदना करते हैं, उनके पिता वसुदेव की नहीं।

* जब भी परेशान हो तो दर्पण के सामने जाकर अपना प्रतिबिंब देखिये आपको ऐसा एक व्यक्ति नजर आएगा, जो आपकी हर समस्या को हल कर सकता है।

* यदि आप क्रोधित और अहंकारी है तो आपको अपना दुश्मन बनाने की कोई जरूरत नहीं। आपको बर्बाद करने के लिये ये दोनों ही काफी है। अगर जिंदगी में बदलाव चाहिये तो इन दोनों से परिवर्तन लाईये अपने आप सब ठीक हो जाता है।

* लोग कभी भी इसकी परवाह नहीं करते हैं कि आप कितना जानते हैं, वो तो ये चाहते है कि आप उनका कितना खयाल रखते हैं।

* जो जाति जितनी ही अधिक सौंदर्य प्रेमी होती है, उसमें मनुष्यता भी उतनी ही अधिक होती है।

* जब लगातार प्रयासों के बाद भी सफलता नहीं मिले तो हार नहीं माननी चाहिए। शांति से सोच-विचार कर फिर प्रयास शुरू करना चाहिए सफलता अवश्य मिलेगी।

* वह पुरुष धन्य है जो काम करने में कभी पीछे नहीं हटता। भाग्यलक्ष्मी उसके घर की राह पूछती हुई वहाँ चली आती है।

* ख्याति वह प्यास है जो कभी नहीं बुझती पूरे सागर को पीकर भी जैसे प्यास शांत नहीं होती।

* मनुष्य मन की शक्तियों के बादशाह हैं, संसार की समस्त शक्तियां उनके सामने नतमस्तक है।

* दरिद्र व्यक्ति कुछ वस्तुएं चाहता है, विलासी बहुत सी और लोभी सभी वस्तुएँ चाहता है।

* विद्वान पुरुष का आहार तो उसके जन्म लेते ही उत्पन्न हो जाता है। परमेश्वर ने जिस प्राणी को जन्म दिया है आहार तो उसके भाग्य का उसे मिलता ही है। दाने-दाने पर लिखा होता है खानेवाले का नाम। धर्म-ध्यान से ही मानव का इस लोक में कल्याण हो पाता है।

* स्नेह, सहयोग, समर्पण, सहनशीलता व सेवा इन पांच मूल्यवान गुणों से ही, परिवार के सहयोग से ही घर की दीवारें मजबूत बनती है।

* बुद्धिमान मनुष्य को अपने लोगों को छोड़कर दूसरों का सहारा लेने की मूर्खता नहीं करनी चाहिये।

* छोटी छोटी चीजों के प्रति सतर्क रहना चाहिए और अवसर मिलते ही उनका उपयोग करना चाहिए। आपको हमेशा डटे रहना चाहिए हर दिन हमें सफलता के अनेक अवसर मिलते है अक्सर हम उन्हें महत्वहीन समझकर छोड़ देते है। कोई

भी स्थिति महत्वहीन अथवा छोटी नहीं होती है। हमें उसे ठीक से समझ लेना चाहिए, उसका उपयोग लेना चाहिए। आत्मिक रूप से अगर हम सतर्क है तो जीवन हमारे सनातन लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है। जो लोग प्रसन्नचित्त और नम्र होते हैं उनके लिए हर चीज में सफलता है।

* जिस व्यक्ति पर दवा काम कर जाती है वह आदमी जीना चाहता है। जीने की आकांक्षा ही जीवेष्णा है और किसी अन्य व्यक्ति पर औषधि काम नहीं करती, वही बीमारी है, वही अवस्था है पर वह जीना नहीं चाहता, वह उदास हो गया, वो थक गया, उसने आशा छोड़ दी, फिर औषधि काम नहीं करती। जो लोग मन से रुग्ण है वे ही ऐसे मनुष्य है जिनको जीवन में सुख का कोई सुराग नहीं मिला, उन्होंने आशा छोड़ दी और हताश हो गये। उन्हे जबरन खींच-तानकर खड़ा भी कर दो, धक्काबुक्की देकर चला भी जा सकता है, बैसाखियां देकर उनमें किसी तरह गति लायी जा सकती है पर उन्हें बैसाखियोंसे नचाया नहीं जा सकता।

* सोचने का तरीका विकसित किया जा सकता है, परंपराओं में सुधार किया जा सकता है। मूल्यों पर भी पुनर्विचार किया जा सकता है, ताकि मानवीयता जीवित रह सके।

* जीवन में भी ऐसा ही होता है। शिखर पर पहुंचकर लोग अति आत्मविश्वास का शिकार हो जाते हैं इसलिए उनके शिखर से गिरने की आशंका अधिक होती हैं। जबकि शिखर पर भी विनम्र रहनेवाले कभी नहीं गिरते।

* बार-बार असफल होने के बाद भी जो सफलता की तलाश में लगे रहते हैं उन्हें सफलता जरूर मिलती है।

* जैसे घोंसला सोती हुई चिड़ियों को आश्रय देता है, वैसे ही मौन आपकी वाणी को आश्रय देगा।

* बुद्धि का नाश ही मोह है, वह धर्म और अर्थ दोनों को नष्ट करता है। इससे मनुष्य में नास्तिकता आती है और वह दुराचार में प्रवृत्त हो जाता है।

* सच्चे हृदय से निकला हुआ वचन कभी असत्य नहीं होता।

* हर आपत्ति एक को दृढ़ता सौंपती है तथा दूसरे को निर्बलता एवं शिथिलता।

* जीवन कथाओं के अतिरिक्त और कुछ सत्य इतिहास नहीं है।

* बचपन में अविवेक, जवानी में क्रोधोन्मद और बुढ़ापे में विकलता-इस प्रकार मनुष्य के पीछे सर्वदा एक न एक उपद्रव लगा ही रहता है।

* जो आदर्श सत्य की हत्या करके पला हो, वह आदर्श नहीं, चरित्र की दुर्बलता है।

* जिस तरह जौहरी ही असली हीरे की पहचान कर सकता है, उसी तरह गुणी ही गुणवान की पहचान कर सकता है।

* जिस समाज की प्रगति महिलाओं ने हासिल की है उसके अनुसार उस समाज की प्रगति नापी जाती है।

* लोगों को यह सिखाने की जरूरत नहीं है कि वे मानवीय कैसे बनें। बस उन्हें यह बताने की जरूरत है कि वे अमानवीयता किस तरह छोड़ें।

* अब्राहम लिंकन ने कहा है, करीब-करीब सभी लोग विपत्ति का सामना कर सकते हैं। लेकिन किसी के चरित्र को परखना हो तो उसे सत्ता दे दीजिए।

* प्रतिभा भगवान ने दी है, विनम्र रहें, प्रसिद्धि मनुष्य ने दी है, कृतज्ञ रहें। अहंकार स्वयं की ही देन है, इसलिए सजग रहें।

* हमारी जीभ कतरनी के समान सदा स्वछंद चला करती है उसे यदि दबा कर काबू कर लिया तो क्रोध आदि बड़े-बड़े अजेय शत्रुओं को बिना प्रयास के ही जीतकर अपने वश में कर सकते है।

* मनुष्य को सुनना सीखना चाहिए। इससे यह लाभ होगा कि वह उनसे भी सीख सकेगा जो बातचीत करना तक नहीं जानते।

* यदि तुम इच्छा करते हो कि दूसरे तुम्हारे रहस्य को गुप्त रखें, तो प्रथम तुम स्वयं ही इसे गुप्त रखो।

* सुयोग के अभाव में योग्यता का मूल्य बहुत कम रह जाता है।

* मनुष्य को कभी भी अपनी मनुष्यता को नहीं छोड़ना चाहिए।

* काम आरंभ करने में देर न करो। और अगर काम शुरु कर दिया है तो उसे पूरा कर के ही छोड़ो। वैरी भी अद्‌भुत कार्य करने पर प्रशंसा के पात्र बन जाते हैं।

* सबसे ज्यादा दौलतमंद वह है जिसकी खुशी सबसे सस्ती है।

* कष्ट और विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देने वाले श्रेष्ठ गुण हैं। जो साहस के साथ उनका सामना करते हैं, वे विजयी होते हैं।

* हर इंसान का भाग्य एक बार अवश्य उदय होता है। यह बात अलग है कि वह उसका कितना लाभ उठाता है।

* पापियों में भी आत्मा का प्रकाश रहता है और कष्ट पाकर जागृत हो जाता है। यह समझना कि जिसने एक बार पाप किया वह पुण्य कर ही नहीं सकता, मानव-चरित्र के एक पहलु का अपवाद करना है।

* नम्रता, प्रेमपूर्ण व्यवहार तथा सहनशीलता से मनुष्य ही नहीं देवता भी वश में हो जाते है।

* लोभी को धन से, अभिमानी को हाथ जोड़कर, मूर्ख को उसका मनोरथ पूरा करके और पंडित को यथार्थ बात कहकर वश में करना चाहिए।

* मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चांद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है।

* जो अपने पौरुष से दैव (भाग्य) को विवश कर देने में समर्थ हैं, वे मनुष्य दैवी आपदाओं से कदापि दुखित नहीं होते।

* आदमी की दुर्भावना उसके दुश्मन की बजाय उसे ही अधिक दु:ख देती है।

* धनवानों का हृदय धन के भार से दबकर सिकुड़ जाता है, उसमें उदारता के लिए स्थान नहीं रहता।

* अभिमानी अपने अहंकार में चूर होकर दूसरों को सदा परछाई के समान तुच्छ मानता है।

* समय और सागर की लहर किसी की प्रतीक्षा नहीं करती।

* जो लोग भीरु और आलसी होते हैं, वे पुरुषार्थ नहीं करते, बल्कि भाग्य के भरोसे पड़े रहते हैं।

* पति-पत्नी पक्के और सच्चे साथी हैं। वे दोनों धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष- इन चारों पदार्थों की प्राप्ति के लिए सामूहिक प्रयत्न करते हैं।

* गीली मिट्टी से ही रचनात्मक कार्य कर सकते हो।

* जब मनुष्य के बुरे दिन हों, तब उसे अत्यधिक उपदेश देने की अपेक्षा उसकी थोड़ी सहायता कर देना ज्यादा अच्छा है।

* आपत्तियां हमें आत्मज्ञान कराती हैं, वे हमें दिखा देती हैं कि हम किस मिट्टी के बने हैं। केवल आत्मज्ञान ही ऐसा है जो हमें सब जरूरतों से परे कर सकता है।

* दर्शन के अभाव में धर्म केवल अंधविश्वास-मात्र बनकर रह जाता है और धर्म का बहिष्कार करने पर दर्शन शुष्क नास्तिकवाद बना रहता है।

* व्यावहारिक जीवन में यह आवश्यक है कि हम अहंकार को मिटाकर शुद्ध हृदय से आवश्यकतानुसार बार-बार प्राणियों को क्षमा प्रदान करें। यह भावना हमारे हृदय में सदैव बनी रहेगी।

* पदार्थ के अभाव से उत्पन्न दुख को सद्भाव से मिटाया जा सकता है, श्रम से मिटाया जा सकता है, किंतु पदार्थ की

आसक्ति से उत्पन्न दु:ख नहीं मिटाया जा सकता। इसके लिए दृढ़ व्रत, संयम और चरित्र की आवश्यकता है।

* अहिंसा अपरिग्रह और अनेकांत से ही जीवन जिया जाता है जिससे काल से निरपेक्ष, जाति और संप्रदाय से मुक्त चेतना का आविर्भाव होता है।

* परिवर्तन संसार का नियम है, इस संसार में प्रतिक्षण नित नये परिवर्तन होते रहते है। परिवर्तन के साथ उस पूर्वकाल में हुये कार्यों की प्रासंगिकता समाप्त हो जाती है और नवीनता निरन्तर बढ़ती जाती है।

* यदि व्यक्ति क्षमा करने की शिक्षा व्यावहारिक जीवन में उतारे तो फिर क्रोध और अहंकार मिश्रित जो दुर्भावना उत्पन्न होती है जिसके कारण व्यक्ति घुट-घुट कर जीता है वह समाप्त हो जाती है। महानता कभी भी भौतिक पदार्थों, सुख-सुविधाओं, संकीर्ण सोच एवं स्वार्थ मनोवृत्ति से प्राप्त नहीं की जा सकती उसके लिये सत्य का आश्रय लेना पड़ता है।

* अच्छा हृदय और अच्छा स्वभाव, दोनों चाहिये। अच्छे हृदय से कई रिश्ते बनेंगे और अच्छे स्वभाव से वे रिश्ते जीवन भर टिकेंगे।

* उद्योग, प्रतिष्ठान व दफ्तरों में कोई न कोई समस्याएं, मुश्किलें तो आती ही है। इससे परिवारवालों का क्या लेना देना। जिन झंझटों और समस्याओं से आप परेशान है उन्हें लेकर अपने घर में मत प्रवेश करो। घर में सुख शांति का जीवन व्यतीत करो।

* अपने जीवन को कष्टमय और तनावयुक्त बनाने का सबसे बड़ा कारण है दूसरों से ऐसी आशाएं रखना कि वे आप की इच्छानुसार सब कार्य करेंगे।

* सुन्दरता का आधार है उच्च चरित्र व आकर्षक व्यक्तित्व, न की शरीर की गठन और गोरी त्वचा।

* प्रत्येक मनुष्य कुछ न कुछ काम करता है, किंतु ऐसे बहुत कम हैं, जो अपने काम को भरसक उत्तम तरीके से करते हैं और वो ही सफलता पाते हैं। जो व्यक्ति बहानें बनाकर पीछे नहीं लौटता, कठिनाइयों से पूरा संघर्ष करता है, सफलता उसके कदम चूमती है।

* सरलता, उदारता और प्रसन्नमुखता से कृपया कहना घंटों अनुनय-विनय करने से बेहतर है। निष्कपट भाव से और बिना दिखावे के दिया धन्यवाद घंटों के गुणगान से बेहतर है। आपका व्यवहार गणित के शून्य की तरह है। वह स्वयं तो बहुत कीमत नहीं रखता किन्तु हर चीज का मूल्य बढ़ा देने में वह समर्थ है।

* अति आत्मविश्वासी होना उचित नहीं, हर कदम सोच-समझकर उठाना चाहिए।

* दूसरे लोगों के साथ मिलकर अपने आप पर हंसना सीखो। किसी के प्रति द्वेष नहीं होना चाहिए। सबके प्रति दया का भाव हो।

* एक नेता आशा का व्यापारी होता है।

* एक रचनाशील व्यक्ति कुछ पाने की इच्छा से प्रेरित होता है ना कि औरों को हराने के लिए।

* महापुरुषों का जीवन एक खुली किताब होती है जिसमें न कोई रहस्य और न ही वो कोई रहस्यों को प्रश्रय देते है।

* चीजें खुद नहीं होती, उन्हें करना पड़ता है।

* सत्याग्रह की लड़ाई हमेशा दो प्रकार की होती है। एक जुल्मों के खिलाफ और दूसरी स्वयं की दुर्बलता के विरुद्ध।

* पहले राजनीतिक पार्टियाँ सरकारी व्यवस्था में सुधार करने की लड़ाई लड़ती थी। सत्ता में आकर सर्वोपरि सत्ता पाना उनका मकसद नहीं था बल्कि एक समतापूर्ण समाज का निर्माण करना, मानवीय व्यवस्था के लिए संघर्ष करना उनका पहला कर्त्तव्य था। पर आज देश में सत्ता, धन-दौलत और भोग की बाढ़ में सारी राजनीतिक पार्टियां अपना मूल उद्देश्य

भूल गई और उनको सिर्फ सत्ता व अधिकार चाहिये उसके लिये वे कोई भी कीमत चुकाने को तैयार रहते है।

* आज आदमी शर्म से नहीं मरता न सम्मान से जीता है। वो केवल पाखंड में जीता रहता है। उसकी संवेदनशीलता खो गयी। वो भावनाशून्य होकर जिंदगी का खेल खेल रहा है। आत्महत्या जिंदगी को त्यागपत्र देने जैसा ही है व क्रूरकर्म और महापाप है। पैदा होने के बाद जीने का साहस ही आदमी का सबसे महान कार्य है।

* यदि हृदय में प्रेम है, तो मनुष्य किसी को चोट नहीं पहुँचा सकता।

* दुनिया में तीन चीजें है, जो मृत्यु के बाद भी पीछा नहीं छोड़ती। एक पुण्य। पुण्य मृत्यु के बाद व्यक्ति को स्वर्ग ले जाता है। दो-पाप। पाप मृत्यु के बाद व्यक्ति को नरक ले जाता है। तीन- गुरुमंत्र। समर्थ- गुरु के द्वारा प्रदत्त गुरु-मंत्र को अगर श्रद्धा-भक्ति से जपा जाये तो वह ईश्वर के पास ले जाता है। वह कार्य जो मन को स्थायी प्रसन्नता दे, पुण्य है। वह कार्य जो मन को स्थायी पश्चाताप दे, पाप है और महापुरुष के जिस शब्द या वाक्य से तुम्हारी जिन्दगी बदल जाये, बस। वह शब्द और वाक्य ही गुरु मंत्र है।

* आप बूढ़े नहीं बड़े बनें। इस बदलाव को परिवर्तन को स्वीकार तो करना ही पड़ता है पर अवसर की तलाश करें। आपको युवा बना रहना है और लगातार कुछ न कुछ करते रहने की आदत डालनी चाहिए।

* निकम्मे पादरियों, पुजारी, मौलवी, पंडित और साधुओं को दान के अन्न पर पला हुआ ईश्वर चिन्तन, अंत में पाप, आल्य और भ्रष्टाचार में परिवर्तित हो जाता है। जिन देशों में हाथ और मुंह पर मजदूरी की धूल नहीं पड़ी वह देश धर्म और कला-कौशल में कभी उन्नति नहीं कर सकता।

* अगर हम हल का हिस्सा नहीं हैं, तो हम समस्या हैं।

* शारीरिक, मानसिक, नैतिक व आध्यात्मिक ये सब पीड़ाएँ वेदान्त के अनुभव करने से तुरंत दूर होती हैं और कोई आत्मनिष्ठ महापुरुष का संग मिल जाये तो वेदान्त का अनुभव करना कठिन कार्य नहीं है।

* चीजे हमेशा वैसी होती है जैसे आप सोचते हो। कुछ भी करने के लिए खुद पर भरोसा करना बेहद जरूरी है।

* उस पर डटे रहो, जो आप हो। सच्ची सफलता वही से निकलती है, जैसे आप हो। विश्वास के रास्ते में कोई असफलत नहीं होता। एक मजबूत इच्छा शक्ति ही कामयाबी दिलाने के लिए काफी होती है। बिना विचारे किया गया काम कभी सफल नहीं होता। इसलिए जरूरी है कि आप जो भी करें, पहले उसकी योजना कर लें।

* अगर आप अपने परिवार में सुख-शांति चाहती हैं तो बहू और बेटी में कभी फर्क मत करना। कभी बहू से कहासुनी हो जाए तो बहू के मायके वालों को कभी भी भला-बुरा नहीं कहना चाहिए। इससे बहू कभी बर्दाश्त नही करेगी और मनमुटाव बढ़ेगा और कोई अन्य स्थानों पर बैठकर दूसरों के पास अपनी बहू की बुराई कभी मत करना नही तो सुलह के सारे दरवाजे बन्द हो जायेंगे क्योंकि बहू की चाहत हमेशा रहेगी कि मेरी सास भी कभी बहू थी।

* अतीत के बंधनों में बँधना छोड़िएं और अपने भविष्य के निर्माता बनिए।

* बच्चा कोई जन्म से हिंदू, मुसलमान, सिख-ईसाई नहीं होता। हिंदू घर में पैदा हुआ बच्चा भी वेद की ईश्वरीय वाणी नहीं बोलेगा, वास्तव में हिंदू खून था। पर खून कोई हिंदू होता है, हड्डियां हिंदू होती है, मुसलमानी होती हैं। हिंदू-मुस्लिम सिख-ईसाई यह तो एक प्रचार है, हमारी बनायी हुई व्यवस्था है। बच्चा अगर हिंदू घर में पलता है तो हिंदू हो जायेगा, मुसलमान परिवार में पलेगा तो मुसलमान हो जायेगा, ईसाई परिवार में पलेगा तो ईसाई हो जायेगा। पर यह सब धर्मगुरु बच्चों को अपने-अपने धर्म का पाठ पढ़ाने में बहुत उत्सुक होते है क्योंकि यही तो अपने धर्म का प्रचार करने का अवसर

है। जहां प्रचार को दिमाग में डाला जा सकता है और जीवनभर के लिये बच्चों को गुलाम बना सकता है। इस धरती पर एक भी ऐसा स्कूल नहीं है जो धर्म की सच्ची शिक्षा देता हो। जब तक जमीन पर बहुत बड़े पाव चलते रहेंगे बच्चों को जकड़ने की, गुलाम बनाने की जो व्यवस्थाएं, योजनाएं चलायी जा रही है वो धर्म सिखाने के लिये नहीं है।

❋ कोई भी उपलब्धि व्यक्ति की आकांक्षाओं व अपेक्षाओं के स्तर को लगातार बढ़ाने का ही प्रतिफल है।

❋ परमात्मा ने जो जीवन दिया है उसे मनुष्य धन्य हुआ, कृतार्थ हुआ। उसे प्रभु से प्रार्थना करनी चाहिए- हे प्रभो, मुझमें जरा भी पात्रता हो तो मुझे बार-बार तेरी दुनिया में वापस भेज देना, तेरी दुनिया बहुत सुन्दर है और अगर कोई कुरूपता दिखती होगी तो वो मेरी दृष्टि का ही दोष होगा या मेरी ही कोई गलती होगी। अगली बार आऊं तो समर्थ होकर आऊं ताकि तेरे जीवन के आनंद को पूर्ण रूप से जी सकूं और अनुभव कर सकूं।

❋ अहंकार से पड़ी चोट को इंसान बर्दाश्त नहीं कर सकता।

❋ तैयारी करने में असफल होने का अर्थ है असफल होने के लिये तैयारी करना।

❋ बड़े-बड़े महल गिरकर बता रहे है हे मानव तेरी काया तो कच्ची मिट्टी से बनी है यह तो एक दिन अवश्य गिरनेवाली है। आपका किया-कराया सब यहीं रह जाएगा केवल अच्छे कर्म ही साथ जाएंगे।

❋ कला हमें उच्च स्तर पर ले जायेगी। परन्तु उत्तम चरित्र ही हमें उस उच्च स्तर पर टिकाये रखेगा। कृपया अपना चरित्र उत्तम बनायें।

❋ धैर्यवान मनुष्य आत्मविश्वास की नौका पर सवार होकर आपत्ति की नदियों को सफलतापूर्वक पार कर जाते हैं।

❋ धैर्य, धर्म, मित्र और पत्नी इन चारों की पहचान संकट के समय में होती है। जो सच्चा होता है, वही संकट के समय हमारे साथ खड़ा होता है।

❋ मनुष्य तब समझदार नहीं होता जब वह बड़ी-बड़ी बातें करने लगे, बल्कि समझदारी छोटी-छोटी बातें समझने में हैं।

❋ असफल कार्यों में हुई गलतियों का सुधार ही हमारे लिए सफलता का रास्ता बनाता है।

❋ अनुभव की कोई कीमत नहीं होती, इसे परिस्थिति से सीखा जाता है, जिससे जीवन बेहतर बनता है।

❋ जिस समाज में विद्वानों का आदर नहीं होता वहां उन्नति होने के अवसर भी बहुत कम ही होते हैं।

❋ एक औंस कार्य एक टन बात के बराबर है।

❋ जो लोग वचन देने में देर लगाते हैं, वे वचन का पालन करने में विश्वास करने के योग्य होते हैं। जल्दी वचन न दें, और दें तो पूरा करें।

❋ यदि आप स्वयं प्रसन्न रहना चाहते हैं तो दूसरों को प्रसन्न करें।

❋ किसी की हवेली देखकर अपनी झोपड़ी को मत कोसो। फुटपाथ वाले पर नजर रखो तो बहुत सुख पाओगे। बड़े पर नजर रखें तो दुख ही होगा। ऊपर की ओर देखने से आँखों की ओर जोर पड़ेगा, गर्दन दुखेगी और दिल भी दुखेगा। सुख की घड़ियां कितनी जल्दी बीत जाती है जबकि दु:ख की रातें कटे नहीं कटती। पत्नी के संग रात कब गुजर जाती है पता भी नहीं चलता, मुर्दे के संग रात गुजारनी पड़े तो क्षण-क्षण भारी होता है।

❋ अपनी धारणाओं व कल्पनाओं पर नियंत्रण रखो उनमें चुम्बकीय शक्ति है। आपकी आज की कल्पना आपका भविष्य निश्चित करती है।

❋ जीवन के किसी भी दौर में घृणा, कुंठा और नकारात्मक भावनाओं को स्थान नहीं देना चाहिए। सृजनशील व्यक्ति

बहुत विशेष होते है और अनपेक्षित के लिये तैयार रहना पड़ता है।

✻ जो लोग दूसरों की समृद्धि देखकर आनंदित होते है उन्हें स्वयं समृद्ध होते देर नहीं लगती। जो प्रभावशाली व्यक्तित्व से सम्पन्न व्यक्ति को देखकर उनके गुणों की प्रशंसा करते है, उन्हें अपने जीवन में उतारने की कोशिश करते है वे एक दिन स्वयं भी प्रभावशाली व्यक्तित्व के स्वामी बन जाते है। यदि आपके किसी गुणों के कारण आपका व्यक्तित्व विकसित और प्रभावशाली बन जाता है। आपके गुणों की वृद्धि हो रही है तो यह बात निश्चित है जो लोग इन गुणों से वंचित है या कमजोर है वे आपकी उपेक्षा करेंगे पर उन्हें किसी भी दशा में उलट जवाब न दें नहीं तो वे स्वयं के विकास को अवरुद्ध करना है। ईंट का जवाब पत्थर से देने का प्रयास करने में हो सकता है आप सफल हो जाएं लेकिन बाद में आप भी अवगुणों के शिकार बन जाएंगे। आप अपनी उच्च स्थिति से नीचे गिर जाएंगे। उपेक्षा और अपमान को सहन कर लेने पर धैर्य, सहिष्णुता और क्षमा जैसे गुणों का विकास होगा। आप सद्गुणों के स्वामी बन जाएंगे। अत: अपनी अमूल्य जीवन निधियों को नष्ट न करें।

✻ नई-नई धारणायें बनाइये और जीवन की प्रयोगशाला में उसे प्रमाणित करके दिखाइये चाहे कैसा भी समय आये अपना धैर्य, साहस व आस्था न खोयें।

✻ अगर दुनिया में धर्म निर्माण करने की ठीक-ठीक व्यवस्था और स्वतंत्रता हो तो जितने आदमी हैं, उतने ही धर्म होंगे। इससे कम धर्म नहीं हो सकते क्योंकि धर्म पालन में स्वतंत्रता नहीं है। सब धर्म के अनुयायी पहले आदमी हैं फिर धर्म के नाम पर विभाजित होते है- कोई हिंदू, कोई सिख, मुसलमान, कोई ईसाई।

✻ कलाकार को उसकी कला के प्रदर्शन पर पुरस्कार या पारितोषिक तो दिया जा सकता है, लेकिन दक्षिणा नहीं।

✻ अहिंसा को किसी के ऊपर थोपना नहीं चाहिए और सत्य को ऊपर से ओढ़ना नहीं चाहिए।

✻ मन के हारे हार है और मन के जीते जीत। कमजोरियों, मुश्किलों और समस्याओं के बावजूद जो पूरी कोशिश करता है, वही जीतता है, इसके लिए जरूरी है बुराई में भी अच्छाई खोज लेनेवाली दृष्टि होनी चाहिए।

✻ हम भी तो वर्तमान की सारी खुशियां छोड़ भविष्य के शांति की आस में कोल्हू के बैल की तरह जुते रहते हैं, पर शांति का वह समय आने से पहले ही अनेक बीमारियाँ और चिंताएं लग जाती हैं।

✻ जिनसे आप प्यार करते हैं जिनका साथ चाहते हैं, उनके लिए अच्छा सोचें, उनसे कुछ अच्छा कहें, तारीफ करें, प्रेम का इजहार करें। सकारात्मक बात बताएं और देखें कि जिंदगी कितनी हसीन हो जाएगी।

✻ सद्भावना या दुर्भावना हमारे मन से होती हैं। बाहर की परिस्थितियों से नहीं। हमारा आचरण परिस्थिति के अनुरूप और सही है तो उसे लेकर दुर्भावना मन में नहीं लानी चाहिए।

✻ हमें अपने गुस्से पर काबू रखना चाहिए क्योंकि एक बार गुस्से में कुछ कर गुजरने के बाद चाहे लाख क्षमा मांगे उसका कोई उपयोग नहीं होता। इसलिए गुस्से की बजाये सोच विचार कर ही काम करना चाहिए।

✻ किसी को देखकर बहुत जल्दी उसके बारे में अनुमान नहीं लगाना चाहिए। उस पर आधारित प्रतिक्रिया तो बिल्कुल नहीं करनी चाहिए। कोई भी टीका टिप्पणी करने से पहले पूरी बात को जरूर समझ लेना चाहिए।

✻ बुरी आदतों से जितना जल्दी पीछा छुड़ाएंगे उतनी आसानी होगी, क्योंकि पुरानी आदतें जल्दी नहीं जाती। समय रहते संभलना जरूरी है अन्यथा कहीं इतनी देर न हो जाए कि घातक परिणामों का सामना करना पड़े।

✻ परिवार के प्रत्येक सदस्य की अपनी भूमिका होती है। जीवन का शाश्वत सत्य यह है कि हर व्यक्ति को बचपन,

जवानी और बुढ़ापे से सामना करना पड़ता है। इसलिए हमेशा बड़ों का सम्मान करना चाहिए क्योंकि जैसा हम बोएंगे वैसा ही काटेंगे।

❋ मनुष्य को सपनों में नहीं यथार्थ में जीना चाहिए।

❋ किसी में जुनून हो तो वो अपनी मंजिल जरूर पा जाता है। ऐसे लोगों के काम में समस्याएं कभी बाधक नहीं बनती।

❋ हमारे अपने विचार और विचारों से उत्पन्न कर्म ही हमारे जीवन की दशा और दिशा तय कर सकते है।

❋ बुराई से बुराई को समाप्त नहीं किया जा सकता, बैर से बैर कभी शांत नहीं होता। नकारात्मक वृत्तियों से नकारात्मकता का समापन नहीं किया जा सकता। वैर से वैर, क्रोध से क्रोध, घृणा से घृणा अथवा हिंसा से हिंसा कभी नहीं मिट सकता। बुराई से बुराई को जीतना असंभव है। बदले की भावना या बदला लेने की इच्छा स्वयं ही हानिकारक है।

❋ सत्य को पाने के लिए हमेशा सत्य का आश्रय लेना चाहिए और सत्य का आचरण करना चाहिए।

❋ किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह विचार से ग्रस्त होकर कोई भी कार्य न करे।

❋ बुराई को यदि समाप्त करना है या किसीमें रूपांतरण व परिवर्तन करना है वह श्रेष्ठ आचरण से ही किया जा सकता है इससे बढ़कर कोई अस्त्र नहीं।

❋ बिना साहस के मंजिल नहीं मिलती और बिना विश्वास के संकट से उबरा नहीं जा सकता। संघर्ष में ही सफलता का रहस्य है। महापुरुषों ने संकट को जीवन की पाठशाला बतायी है। इस पाठशाला में व्यक्ति जितना अधिक सबक याद कर देता है उतना ही सफल होता है। संकट का मुकाबला करके नया जीवन जीनेवालों के अनुभवों की किताबें प्रेरणा की किरण है।

❋ विचार की शक्ति अणु से भी महान होती है। विचार ही तो है जो मनुष्य को संकट में डालता है या फिर उससे उबारता है। विचार ही मनुष्य को नैतिक या अनैतिक बनाता है और पतित कर देता है। विचार पहले होता है क्रिया बाद में।

❋ संकटों के बिना जीवन का वास्तविक आनंद नहीं प्राप्त होता। इतिहास में उन्हीं को जगह मिलती है जिन्होंने चुनौतियां स्वीकार करने का साहस दिखाया और जीवन जिया। नैतिक बल के सहारे संकटों का मुकाबला किया।

❋ अनैतिक लोगों के हाथ लगी सफलता तात्कालिक होती है जबकि नैतिक बदल से प्राप्त सफलता स्थायी होती है। आलस्य उन्माद इंसान को गतिशील नहीं बनने देते। मार्ग में अवरोध भी आते है पर उन्हें उत्साह और साहस के साथ पार करना पड़ता है। इस रास्ते में कहीं आशा मिलती है तो कहीं निराशा सामने आती है। इन्हीं स्थितियों को सहन करने से ही सफलता का मार्ग प्रशस्त होता है।

❋ जब विचारों का दीया जलेगा तो इस देश में व्याप्त अंधकार समाप्त हो जायेगा।

❋ जो लोग आपसे बातें करना बन्द कर देते है वे ही लोग आपके बारे में बातें कर रहे होते हैं।

❋ मनुष्य कमजोर इतना है कि छोटी-छोटी चीजों से डर जाता है और बहादुर भी इतना है कि वह भगवान से भी नहीं डरता।

❋ जब हम बोलते हैं तब हम वही दोहराते हैं जो हमने सुना है, जो हमें मालूम है ऐसा बहुत कुछ सुनते है जो हमें मालूम भी नहीं रहता।

❋ अभिमान किसी को उपर उठने नहीं देता और स्वाभिमान किसीको नीचे गिरने नहीं देता।

❋ जिन्दगी का इम्तिहान बहुत कठिन है इसमें दूसरे की नकल कर के नहीं जिया जा सकता क्योंकि सबके जीवन के प्रश्नपत्र अलग-अलग है।

✻ तोता बहुत बोलता है पर उड़ान उसकी छोटी है जबकि गरुड़ चुप रहता है पर उसकी उड़ान आसमान को चीरकर भी ऊंची उड़ती है।

✻ चाहे जो भी हो जीवन में हथियार नहीं डालना चाहिए यही सोच रखनेवाले बहुत कम है। दुनिया झुकनेके लिये ऐसे लोगों का इंतजार करती है।

✻ सत्य कभी भीड़ में नहीं मिलता, बल्कि सदा व्यक्ति के एकाकीपन में ही मिलता है।

✻ चिकनी अच्छी सड़कें कभी भी अच्छे वाहनचालक तैयार नहीं करती, स्वच्छ आकाश कभी अच्छे विमान चालक तैयार नहीं करता। जब समस्याएं ही नहीं रहेंगी तो चरित्र उज्ज्वल नहीं बनेगा। जीवन में कभी भी यह न सोचिए कि मैं ही क्यों हमेशा अपने आप से पूछिए मैं क्यों नहीं ?

✻ जिन्दगी में चाहे कितने ही कठिन या कष्टकर निर्णय लेना पड़े अगर उस रात आप ठीक से सो पाए तो समझ लो कि आपने बिल्कुल सही निर्णय लिया है।

✻ जैसे खौलते पानी में अपना प्रतिबिम्ब नजर नहीं आता वैसे ही क्रोध की मनस्थिति में सत्य नजर नहीं आता।

✻ मंदिर में हाथ जोड़कर वन्दन किया जाता है। मस्जिद में हाथ उठाकर दुआएं मांगी जाती है पर दोस्ती ऐसा मजहब है जहां हाथ मिलाएं जाते है।

✻ किसी को तकलीफ देकर आपको खुशी नहीं हो सकती लेकिन किसी को खुशी देकर आपको कभी तकलीफ नहीं होगी।

✻ मुश्किलें हमेशा बेहतरीन लोगों के पास आती है क्योंकि वे बेहतरीन तरीके से उनको अंजाम देनेका जज्बा रखते है।

✻ हमारे देश में इन्कलाब नहीं होता इसका कारण है गरीबों में हिम्मत नहीं होती, मध्यम वर्ग को फुर्सत नहीं मिलती और अमीर को जरूरत नहीं रहती।

✻ आपको जब सलाह-मशविरा की जरूरत पड़ती है तब सब मदद करते हैं लेकिन जब मदद की जरूरत पड़ती है तो सब सलाह देते है।

✻ जो भी कोई मुस्कुराता हुआ दिखायी पड़े उसे खुशियों से सराबोर मत समझ लेना हो सकता है वो भी जिन्दगी के रंगमंच पर कोई शानदार अभिनय कर रहा हो।

✻ अगर दो दोस्तों के बीच में कभी कोई मतभेद न हो तो उनमें से एक दोस्त दिल से दोस्ती निभा रहा है और दूसरा दिमाग से।

✻ दिल से उपजाऊ और कोई जगह नहीं होती यहां कुछ भी बोया जाए वह बढ़ता अवश्य है चाहे प्यार हो या नफरत।

✻ सफलता आपके हस्ताक्षर है वही जब आटोग्राफ बन जाए और पब्लिक चाहने लगे इसीका नाम सफलता है।

✻ अपने चरित्र और साख की रक्षा करने से ही वे आपसे भी अधिक उम्र में जिन्दा रहते है, जिन्दगी में हर जगह हम जीत ही चाहते है।

✻ आप दूसरों से जो पा रहे हैं, उससे अगर खुश नहीं हैं तो मालूम करिए कि दूसरों को आप क्या दे रहे है।

✻ उस काम का ही चयन करना चाहिए जिसे आप पसंद करते है फिर आपको पूरी जिन्दगी में भी एक दिन भी काम नहीं करना पड़ेगा।

✻ जीतो ऐसे जैसे कि आपको उसकी आदत हो, हारो ऐसे कि आनंद उठाने के लिए एक बदलाव किया हो।

✻ जीवन में हर व्यक्ति सफल ही हो यह जरूरी नहीं कभी-कभी मेहनत और काबिलियत के बावजूद किस्मत धोखा दे

जाती है पर इससे व्यक्ति की अहमियत में कोई फर्क नहीं पड़ता।

✻ हर सफल इन्सान के पीछे संघर्ष और अर्थ की कमी छिपी है। जिस किसी ने अपनी नाजूक स्थिति देखी है वही उसे कमाने के लिए जान से जुटा सकता है।

✻ अपने बच्चों को हर चीज बड़ी आसानी से न दें। उन्हें उस वस्तु के लिए संघर्ष करना सिखाएं। हर चीज तुरंत देकर आप उसको बिगाड़ रहे है और उसकी उन्नति को रोक रहे है।

✻ समय बड़ा कीमती है इसे आज तक कोई खरीद न पाया। समय धन है पर हम समय का उतना सम्मान नहीं करते है जितना धन का करते है। कुछ लोग मिनटों को बचाने के लिये घंटों का समय बर्बाद करते है। इसी तरह कुछ लोग पैसे को बचाने के लिए अपनी जिन्दगी को खत्म कर देते है। समय किसी को नहीं मिलता और समय मिलेगा भी नहीं। समय में से समय निकालना पड़ता है। संत महात्मा समय के सबसे ज्यादा पाबन्द होते है। आसमान का सूर्य अपने वक्त से उदय होता और अस्त होता है।

✻ जिन्दगी में हमेशा दो ही रास्ते है एक सही और दूसरा गलत। अगर आप गलत रास्ते पर चलोगे तो शुरु-शुरु में सफलताएं मिल सकती है, लोग आपकी इज्जत भी करेंगे लेकिन अंत में आपको असफलताका मुंह देखना होगा। आपका अपयश होगा, बदनामी होगी। इसके विपरीत यदि आप सही रास्ते पर चलोगे तो शुरु-शुरु में आपको असफलता प्राप्त होगी, लोग आपके बारेमें बातें करेंगे, बहुत मुश्किल पेश आयेगी और अंत में आप कामयाब होंगे और जीत आपकी होगी।

✻ ख्वाहिशात का हमला मनुष्य को कमजोर बना देता है।

✻ अगर आप सीखना चाहते है तो आपकी हर गलती आपको सबक सिखा सकती है।

✻ दुनिया में कई अजूबे और आश्चर्य है मगर मनुष्य से बढ़कर कोई दूसरा अजूबा नहीं है।

✻ वो लोग बेईमान है जो दूसरे लोगों की बुराइयां तो प्रकट कर देते है मगर उनके अच्छाइयां और नेकियों को छिपाएं रखते है।

✻ बेकार है वो कौम जिसमें एकता न हो, बेकार है वो कमाई जिसमें दान न हो।

बेकार है वो आँख जिसमें शर्म न हो, बेकार है वो मनुष्य जिसमें मनुष्यता न हो।

बेकार है वो दिल जिसमें दर्द न हो, बेकार है वो संतान जो मां-बाप की सेवा न करें, उनकी आज्ञा नही माने।

बेकार है वो ज्ञान जो कर्म से खाली हो।

✻ सबसे ज्यादा बुद्धिमान वह है जो अपराधों को छोड़ देता है। सबसे ज्यादा अधिक होशियार वो है जो किसी चीज से परेशान न हो। सबसे ज्यादा धनी वो है जो जरूरत के समय ही खर्च करता हो और सबसे ज्यादा मोहताज वो है जो बिना दान किये अधिक खर्च करनेवाला हो।

✻ हमारे जज्बात वक्ती तौर पर भले ही मजबूत बनाते हो मगर बादमें इनकी वजह से हमेशा के लिए कमजोरी का सामना करना पड़ता है।

✻ किसी से मुहब्बत करो तो ऐसे करो जैसे धीरे-धीरे बहती नदियां क्योंकि तूफानी मुहब्बतें सबकुछ बहा ले जाती है। मुहब्बत, चाहत, खुलूस और भरोसे के जज्बों से घर बन सकते हैं और आपस के अरमान फलते-फूलते है।

✻ मनुष्य अगर मेहनत करे तो दुनिया की बड़ी-से-बड़ी चीज हासिल कर सकता है। जो वक्त का उपयोग जानकर ईश्वर की खुशी प्राप्त करने में लग जाते है वो न सिर्फ दुनिया को हासिल कर लेते है बल्कि परलोक में स्वर्ग जैसे सौगात भी पा जाते है लेकिन जब लोग वक्त को सिर्फ ऐश और मनोरंजन, मस्तियों में बर्बाद करते है तो दुनिया भी नहीं पा सकते अंत

में बर्बाद ही हो जाते है। स्वास्थ्य और वक्त ईश्वर की एक ऐसी देन है जो किसी-किसी को ही तकदीर से मिलती है। समय का उपयोग और महत्व बहुत बड़ा है। दिनभर मोबाईल, दूरदर्शन, क्रिकेट मैच या धारावाहिक और दूसरे कार्यक्रम देखते रहते हैं, या फिर संगणकीकरण पर फिजूल के कामों में वक्त बर्बाद करते हैं। वक्त बर्बाद करके न सिर्फ अपना नुकसान करते है बल्कि अपनी किस्मत के दरवाजे खुद अपने हाथों से अपने लिए बन्द कर देते है। इसलिए वक्त और स्वास्थ्य का सही इस्तेमाल करो। उन्नति का सही अवसर सही वक्त पर ही मिलता है।

* गुस्से को सहन कर लेना और गुस्सा दिलानेवाली बातों पर गुस्सा न करना बल्कि उसे टाल-मटोल कर जाने की सहनशक्ति को ही श्रेष्ठ आदत कहा गया है। इस आदत वाले को ईश्वर ने दोनों जहां में बड़े ऊँचे दर्जे प्रदान किये है। गुस्से को पी जानेवाले और लोगों को क्षमा कर देनेवालों इस तरह के अच्छे-अच्छे काम करने वालों को ईश्वर अपना प्रिय बनाता है। अपने को ऐसी आदत में ढाल लेना चाहिए कि कोई कितनी ही सख्त बात कह दे मगर उसे हंसते-हंसते सहन करना चाहिए। यदि गुस्सा आ भी जाये तो उसी क्षण गुस्से को पी लेना चाहिए। उस वक्त होश व हवास से काम लेकर उसका हल निकालना चाहिए। कभी भी अपने गुस्से का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए, क्योंकि गुस्सा इंसान की कमजोरी है। यदि आप गुस्सा पी जाने की आदत डाल देंगे तो आप ईश्वर और उसके परिकर में शामिल होंगे और ईश्वर की मदद मिलेगी तथा आपका उत्थान होगा। क्रोध की तीव्रता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि एक क्षण में क्रोधित होनेवाले व्यक्ति के पूरे हाव-भाव बदल जाते हैं। गुस्सा एक तीव्र गति से चलनेवाला आवेश है। जो भी व्यक्ति उसे देखता है वह आश्चर्यचकित हो जाता है कि इस व्यक्ति को एकाएक गुस्सा क्यों आ गया। क्रोध के इन क्षणों में संयम रखना व्यक्ति के आत्मनियंत्रण की पराकाष्ठा होती है।

* जिंदगी की पाठशाला में ज्ञान की कई शाखें सिखाई जाती हैं लेकिन जो जीवन का दर्शनशास्त्र सिखाया जाता है उसीसे सबसे बढ़कर कामयाबी होती है। वो तकदीर के साथ दोस्ती करने का राज है।

* सच्ची अच्छाइंया समुंदर की तरह है, जो जितना ज्यादा गहरा होता है, कम शोर करता है, जिस तरह से भरे बर्तन में आवाज नहीं आती।

* दंड द्वारा प्रजा की रक्षा करनी चाहिए लेकिन बिना कारण किसी को दंड नहीं देना चाहिए।

* संयम संस्कृति का मूल है। विलासिता निर्बलता और चाटुकारिता के वातावरण में न तो संस्कृति का उद्‌भव होता है और न विकास।

* आप जितनी देर तक सांसें ले सकते हैं, उतनी देर हंसें और जब तक जीवित रहते हैं, तब तक प्यार करें।

* साहित्य का कर्त्तव्य केवल ज्ञान देना नहीं है, एक नया वातावरण देना भी है।

* लोकतंत्र के पौधे का, चाहे वह किसी भी किस्म का क्यों न हो तानाशाही में पनपना संदेहास्पद है।

* मनुष्य अपनी आस्था व निष्ठा के बल पर जीवनयापन करता है। तर्क-वितर्क के सहारे नहीं।

* जो बेचारा जन्म से अन्धा है, अर्थात माँ के गर्भ से ही अन्धा उत्पन्न हुआ है, वह किसी भी उपचार से देखने में समर्थ नहीं हो सकता। विषय वासना में डूबा हुआ व्यक्ति भी अन्धा होता है। वह भी नहीं देख पाता अर्थात् निर्लज्ज होता है। ऐसा व्यक्ति पूज्य पुरुषों को सामने देखकर भी काम वासना से विह्वल होने के कारण लज्जा, संकोच, शालीनता और मर्यादा का पालन नहीं कर पाता। मदिरापान से उन्मत व्यक्ति भी अन्धे हो जाते हैं। मदिरा के प्रभाव से विवेकहीन हो जाने के कारण वे नेत्र रखते हुए भी अन्धे हो जाते हैं। किसके सामने क्या कर रहे हैं, इसका उन्हें कतई ध्यान नहीं रहता। इसी प्रकार

आवश्यकता से पीड़ित व्यक्ति भी अपने स्वामी के दोषों को देखता हुआ भी अनदेखा कर देता है, क्योंकि उसकी आवश्यकता उसे अन्धा बना देती है।

❋ यह है कि हम किसका है इसी पचड़े में पड़े रह गये। किसका है किसने दिया इसी की खोजबीन करते रह गये। ऐसा लगता है कि आज के संसार की यही स्थिति हो रही है। हम सत्य को समझकर सोचकर नहीं पढ़ते। मूल चीज को छू भी नहीं रहे और बाहर की बातों में उलझकर रह गये है।

❋ जो व्यक्ति स्वयं संतुष्ट होता है, मन से प्रसन्न होता है, वह अपने आस-पास के लोगों को भी खुश रखता है। उसके शरीर से निकलने वाली सकारात्मक ऊर्जा वातावरण में उत्साह, उमंग जोश का संचार करती है।

❋ स्वयं के बारे में सोचना तो स्वार्थ है, ग्रंथों में परमार्थ के लिए जीने की बात कही गई है। नि:संदेह यह सत्य ही है लेकिन स्वयं का भी खयाल रखना उतना ही जरूरी है यह स्वार्थी होना नहीं है। निरोगी काया के लिये प्रयत्नरत रहना मतलबपरस्ती नहीं है। यह तो ईश्वर की दी हुई अनुपम जिंदगी को बेहतर ढंग से जीने के लिये यह एक सार्थक पहल और देन है।

❋ घर में सभी का खयाल रखनेवाली स्त्री यदि स्वयं में स्वस्थ और खुश रहे तो पूरे परिवार में खुशहाली बनी रहती है।

❋ भावना का स्थान मनोकामनाओं ने ले लिया। जैसे-जैसे बुद्धि का विकास हुआ वैसे-वैसे वासनाएं और आकांक्षाएं बढ़ती गयी।

❋ घर में खोयी हुई वस्तु जंगल में ढूंढने से नहीं मिलती।

❋ जो लोग किसी न किसी काम में अपने शरीर और मन को लगा सकते है वे जीवन खुशी-खुशी व्यतीत करते है। इसके विपरित कामचोर, लापरवाह, स्वार्थ से निकम्मे आदमी, तरह-तरह की शारिरीक और मानसिक बिमारियों के शिकार होकर अकालीन मृत्यु के ग्रास बनते है।

❋ लोग धर्म को जानते है पर उसके नियमों पर नहीं चलते, उसपर आचरण नहीं करते फिर धर्म कैसे निभ सकता है। धर्म के उत्पादनों की यदि उपेक्षा की गयी तो धर्म कभी भी आचरण में नहीं उतरेगा। धर्म के मूल कारणों में क्षमा और सहनशीलता शामिल है जो कि अपने आपमें एक बड़ी शक्ति है। इसलिये सबसे अपेक्षा है कि जीवन के आरंभ में ही बदलाव आये। तो अवस्था के साथ-साथ स्वभाव और वृत्तियों में सकारात्मक परिवर्तन आयेगा।

❋ सुखी जीवन के लिए क्रियाशील बनो- आजकल की भागदौड़ की जिंदगी में यों तो सारा संसार सक्रिय व सचेत नजर आता है किंतु यह विनाशकारी चेतना है। यह दौड़धूप मात्र शिश्नोदर पूर्ति तक सीमित है। आज का आदमी अपने आप से असंतुष्ट है। इसलिये अपने मन-मस्तिष्क को शुभ एवं लाभकारी विचारों से भर देना चाहिए। आपके अंदर परमात्मा की शक्ति का आनन्द भंडार भरा हुआ है। आप समर्थ पिता के संतान है। यह शरीर नाशवान है, इसलिये इसकी रंगाई-पुतायी में ज्यादा ध्यान न कर इसको स्वस्थ और बलिष्ठ बनाने का प्रयास करना चाहिए। आजकल अधिकांश लोग मुफ्त का माल उड़ाने में ही अपनी शान समझते है पर यह भ्रष्ट आचरण है। कुछ-न-कुछ काम हरेक को अवश्य करना चाहिए भले उसमें नगद न आता हो पर रूपया ही सबकुछ नहीं होता, शरीर की सामर्थ्य भी कोई चीज है। बिना काम के शरीर कोई मजबूत नहीं बन पाता। इसलिये आपको आपके स्तर के अनुरूप काम अवश्य करना चाहिए।

❋ दुनिया में जितने भी महापुरुष, नेता, विचारक, महात्मा एवं सफल पुरुष हुए है वे सभी के सभी विपरीत परिस्थितियों और बदहाली में पैदा हुए है किन्तु वे अपनी क्रियाशीलता के बल पर नया इतिहास बना गये। आप भी उनकी तरह सक्रिय और सचेत होकर जागृत और जीवित बन जाएं।

✻ सकारात्मक जीवन दृष्टि और आंतरिक उत्साह के कारण सफलता प्राप्त होती है। बदलते हुए मौसम का समां आपके जीवन में नया रंग लायेगा, आपका जीवन खुशियों से भर जाता है। मनुष्य का मूल स्वभाव है खुशी और आनंद। सब लोग हर पल हर घड़ी आनंद में ही तो जीना चाहते है। हर पल आनंद की ही तो खोज में लगे रहते है पर जितना आनंद पाने के लिए भागदौड़ करते है, छटपटाते है आनन्द उनसे उतना ही दूर भागता है। हम बाहर की दुनिया में खुशियां तलाशते है। चीजों में सुख ढूँढ़ते है। धन-दौलत, पद-प्रतिष्ठा में आनंद खोजते है। हमारी खुशी, हमारी मनचाही वस्तु या घटना पर आधारित है, वरना हमारे दुखों की सीमा नहीं रहती। जिन लोगों की आंखें है वे सचमुच बहुत कम देखते है। इस दुनिया के अलग-अलग सुन्दर रंग उनके संवेदना को नहीं छूती। मनुष्य की दृष्टि में भी एक अद्वितीय क्षमता है जिससे वह अपने जिन्दगी को खुशियों के रंगों में सरोबार कर सकता है। पर वह उन चीजों में खुशियां तलाशता है जो उसके पास नहीं है। खुशी को बाहर तलाशने की बजाय अन्दर तलाशनी चाहिए क्योंकि आनंद का वास्तविक स्रोत हमारे अंदर है। हमारा मन तथा हमारे मन के भाव ज्यादा महत्वपूर्ण है।

✻ अच्छे विचारों से भरा मन ही सच्चा आनंद उदार करने में सक्षम है। हम प्राय: खुश होने के लिये भविष्य का इंतजार करते रहते हैं। जीवन में एकमात्र बड़ी खुशी या आनंद के इंतजार में, जो एकदम अनिश्चित और असंभव है, असंख्य छोटी-छोटी खुशियों को नजरअंदाज कर देते है।

✻ व्यवहार कुशल व्यक्ति ही सज्जन माना जाता है जो हमेशा समाजसेवा और सहयोग के लिये तत्पर रहता है।

✻ मनुष्य का दृष्टिकोण यह कठिनाई, वह कठिनाई इस प्रकार सोचनेवाला कोई काम नहीं कर सकता। कौन-सा ऐसा काम है जिसे संपादित करने में कठिनाई न हो।

✻ जब तक आप जीवन की भौतिक प्रक्रिया का हिस्सा है तब तक यहाँ सब कुछ परिवर्तनशील है। अगर हम इस परिवर्तन का विरोध करते है तो वास्तव में हम जिंदगी की मौलिक क्रिया का विरोध करते है। बदलाव तो होता ही रहेगा जिंदगी आपके हिसाब से चलेगी अपने आप ही अपने ढंग से बदलती जायेगी। यह जिस तरह भी बदले जड़ता से तो बेहतर ही होगी। मनुष्य जीवन जड़ता के साथ नहीं जी सकता। हर दिन, हर पल जीवन में बदलाव होना आवश्यक है। पर आप इस बदलाव को देख नहीं पाते है। यहाँ कुछ भी स्थायी नहीं है बाहर और अंदर चीज निरंतर बदलाव की प्रक्रिया से गुजर रही है। अगर आप जीवन के साथ जुड़ाव महसूस करते है तो आपको कभी भी नहीं लगेगा कि वह मुसीबतों से भरा है पर आप अपने भावों और विचारों के साथ जुड़ाव महसूस करते है इसलिये आपको मुसीबत नजर आती है। इस समय आपको यह मुसीबत खालीपन महसूस हो रहा है वह पूरी तरह से आपके दिमाग और भावनाओं की उपज है। इस मुसीबत को प्रकृति, सृष्टि या सृष्टिकर्ता ने पैदा नहीं किया है, इसका हमने अपने आप ही निर्माण किया है। अगर आप इसे समझ नहीं पा रहे हो तो अपने लिये एक-से-एक अनेक मुसीबतें पैदा करते रहोगे।

✻ आस्था वह प्रकाश है जिससे मनुष्य का अस्तित्व जगमगा उठता है और फिर वह प्रेम करने वालों और तपस्वियों में शामिल हो जाता है। उत्साह के आवेश में उन पर ऐसा समय भी आता है, जिसमें अगर उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाए तो भी उन्हें बिल्कुल खबर नहीं होती।

✻ प्रेम, शान्ति, करूणा, आनन्द यह आत्मिक गुण भ्रष्टाचारी लोगों के हृदय में प्रवेश नहीं कर सकते क्योंकि उनके हृदय में लोभ, लालच ने ही पूरी जगह घेर ली है। भ्रष्टाचार की जड़ है कभी न मिटनेवाला लोभ। यह लोभ बहुत बड़ी भूख पैदा करता है, ऐसा आदमी अंदर से बहुत दुखी और दरिद्र होता है। उसे जिंदगी में प्रेम नहीं मिला, आत्म सम्मान नहीं मिला। वह अपने गहरे

स्रोत से ही कट गया। अपने अस्तित्व से बिछुड़ गया। जब कोई मनुष्य खुद को आत्मा से जुड़ता है तो वह भर जाता है। उसके भीतर इतनी संतुष्टि आती है जितनी कि बाहर से कोई भी उतनी संपदा उसे नहीं दे पाता। कितना ही ऊंचा पद क्यों न पा जाएं उसे वह प्रतिष्ठा नहीं प्राप्त होती जो हृदय के सिंहासन पर विराजमान होने से मिलती है। इस अंधविश्वासी अध्यात्मिक परंपरा वाले देश में इतने भौतिकवादी लोग है जो धन को ही ईश्वर मानते है और शीर्ष की ऊंचाई पर पहुंच जाते है। पूरी दुनिया के सामने हमारी आत्मिक दरिद्रता का प्रदर्शन कर देती है। हम बातें करते है आध्यात्मिक की और जीवन जीते है अनैतिक।

❋ प्रेम मे विश्वास होता है पर धोखा किसीसे नहीं।

❋ सपने वे नहीं होते जो नींद में आते है, पर सपने वो होते है जो नींद नहीं आने देते।

❋ अनुकूलता में हर्ष होता है और प्रतिकूलता में शोक होता है। हर्ष-शोक, राग और द्वेष ये सब हमारी मति के धर्म हैं। यह मति बदल जाती है, हर्ष-शोक बदल जाते हैं, फिर भी हर्ष-शोक के समय उनको जो देखता है, हर्ष-शोक का जो साक्षी है, उस परमात्मा में स्थिति करना- यह ईश्वर की शरण है।

❋ बाधाएं व्यक्ति की परीक्षा होती हैं। उनसे उत्साह बढ़ना चाहिए, मंद नहीं पड़ना चाहिए।

❋ किसी भी लड़ाई-झगड़े का समाधान दोनों तरफ की कड़वी सच्चाई को समझने से ही हो सकता है, एकतरफी सच्चाई बयान की गयी किसी काम की नहीं होती।

❋ कुटिल लोगों के प्रति सरल व्यवहार अच्छी नीति नहीं।

❋ अधिक अनुभव, अधिक सहनशीलता और अधिक अध्ययन यही विद्वत्ता के तीन महास्तम्भ है।

❋ सही स्थान पर बोया गया सुकर्म का बीज ही महान फल देता है।

❋ केवल पैसे के पीछे भागने से संतोष नहीं मिलता अपितु दूसरों की संवेदनाओं और सुख-दुख में भागी होनेपर ही मानव जीवन समृद्ध बनेगा।

❋ जो दीपक को अपने पीछे रखते हैं वे अपने मार्ग में अपनी ही छाया डालते हैं।

❋ जीवन का एक-एक पल अमूल्य हैं। इसे व्यर्थ की निन्दा और आलोचना में नहीं गँवाना चाहिए, न बहानेबाजी में कि आज दफ्तर की छुट्टी है, आज बाजार बंद है, कहीं बाहर चलें या किसी होटल में चले, क्लब में चले, या सिनेमाघर, या नाच-गाना देखने जाएं। यह सब बहाने तो समय की हत्या है। इससे तो घर में बैठकर ईश्वर का भजन करो, स्वाध्याय में मन लगाओ पर किसी की निंदा, बुराई या आलोचना मत करो।

❋ धर्म परंपरा नहीं, परम है। धर्म आवरण नहीं, आचरण है। धर्म बला नहीं, जीने की कला है। धर्म क्रूरता नहीं, करुणा है। आज धर्म के नाम पर संसार में जो हत्याएं और युद्ध हो रहे हैं, वह धर्म नहीं, धर्म की लाश है और जब तक इस लाश को घर से बाहर नहीं निकाला जायेगा, तब तक देश और दुनिया में सुख-शांति नहीं होगी। हिन्दुस्तान में २० लाख देवी देवता हैं जिनकी सभी लोग पूजा करते हैं। देवी-देवता सिर्फ पूजा के लिए नहीं हैं, वरन् उनसे प्रेरणा भी लेनी चाहिए।

❋ वह दिन व्यर्थ हो गया जिस दिन हमने किसी के लिये कुछ नहीं किया।

❋ खुशी बांटोगे तो बढ़ेगी, वरना इसे गंवा दोगे।

❋ धर्म का अर्थ तोड़ना नहीं बल्कि जोड़ना है। धर्म एक संयोजक तत्व है। धर्म लोगों को जोड़ता है।

❋ मन जो भटकता रहता है, अनेक प्रवृत्तियों में संलग्न रहता है, बहुत अधिक सक्रिय और गतिशील है, उस पर हम कुछ नियंत्रण करें। मन की सक्रियता को कम करें।

* चित्त के प्रसन्न रहने से सब दु:ख दूर हो जाते हैं। जिसे प्रसन्नता मिल जाती है, उसकी बुद्धि तुरन्त स्थिर हो जाती है।

* बड़प्पन सिर्फ उम्र में नहीं, उम्र के कारण मिले हुए ज्ञान और चतुराई में भी है।

* सुन्दर हाथों से परोसा हुआ भोजन, चाहे म्लेच्छ का अन्न ही क्यों न हो, दैवता का भोग हो सकता है।

* अभागा वह है जो संसार के सबसे पवित्र धर्म कृतज्ञता को भूल जाता है।

* अवकाश को बुद्धिमत्ता के साथ भरने में समर्थ होना सभ्यता की अन्तिम देन है।

* संभव असम्भव से पूछता है- तुम्हारा निवास-स्थान कहां है? उत्तर मिलता है- निर्बलों के स्वप्नों में।

* मुर्गा समझता है कि सूरज उसकी बांग सुनने के लिये ही उगता है।

* सत्य एक ही है, विद्वान उसका अनेक प्रकार से वर्णन करते हैं।

* गरीबदास कहते हैं कि हमें कबीर दास सत्गुरु मिले जिन्होंने सुरति और निरति के तार को जोड़ दिया।

* हर ठीक कदम पर सफलता चलती है।

* स्नेह जो नित्य नया नहीं उभरता, निश्चय ही समाप्त हो जाता है।

* कुल-मर्यादा संसार की सबसे उत्तम वस्तु है। उस पर प्राण तक न्यौछावर कर दिए जाते हैं।

* भगवान गरीब को गरीब रखकर आजमाता है कि वह हिम्मत रखता है या नहीं।

* अपने विषय में कुछ कहना प्राय: बहुत कठिन हो जाता है। अपने दोष देखना अपने आपको अप्रिय लगता है और उनको अनदेखा करना औरों को।

* आवेश और क्रोध को वश में कर लेने पर शक्ति बढ़ती है। आवेश को आत्मबल के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है।

* ईर्ष्या तमाम पापों की जड़ है और दूसरे को धकेल कर स्वयं सत्तारूढ़ होने की महत्वाकांक्षा व्यक्ति को नीचे गिराती है।

* दरिद्र इंसान कुछ वस्तुएं चाहता है। विलासी बहुत सी वस्तुएं चाहता है, लेकिन लालची सभी वस्तुएं चाहता है। इसीलिए उसकी जिंदगी बड़ी नहीं होती।

* लाचार तो वह होता है जो जड़ हो, जो चेतन हैं, वे अपना वातावरण स्वयं बनाते है।

* जिस इंसान में लोभ घर कर गया है, उसके लिए उससे बड़ा दुर्गुण कोई नहीं हो सकता।

* जिस मनुष्य को अपने मनुष्यत्व का भान है वह ईश्वर के सिवा और किसी से भय नहीं करता।

* मौन सर्वोत्म भाषण है। अगर बोलना ही हो, तो कम से कम बोलो।

* रिश्वत का पैसा देह फुला देता है, बिना हराम की कौड़ी खाए देह फूल ही नहीं सकता।

* यदि गुरु भी अभिमान में आकर कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का विवेक खो बैठे और खराब रास्ते पर चलने लगे तो उसे भी दंड देना जरूरी हो जाता है।

* जो वस्तु आनंद नहीं दे सकती, वह सुंदर नहीं हो सकती और जो सुंदर नहीं हो सकती वह सत्य भी नहीं हो सकती। जहां आनंद है वहीं सत्य है।

* रूढ़ियां कभी धर्म नहीं होतीं। वे एक समय की बनी हुई सामाजिक श्रृंखलाएं हैं, वे पहले की श्रृंखलाएं जिनसे समाज में सुथरापन था, मर्यादा थी पर अब वो जंजीरें बन गई हैं।

* लगन को कांटों की परवाह नहीं होती।

* जो दूसरों का दु:ख दर्द समझते है वही धार्मिक है।

* जिंदगी में हमारे छोटे-छोटे निजी दुख किसी भयानक आपदा से ज्यादा महत्वपूर्ण होते हैं।

* अपने विकास की दूसरों के विकास से तुलना न करें। हम सभी को अपनी दूरी तय करने में अपना समय चाहिए होता है।

* मनुष्य की प्रतिष्ठा उसकी छाया की तरह है। जब वह मनुष्य के आगे चलती है तो बहुत बड़ी ही हो जाती है। लेकिन जब वह उसके पीछे चलने लगती है तो उसकी तुलना में बहुत छोटी हो जाती है। अच्छी प्रतिष्ठा पाने का मार्ग अपने को वैसा बनाने का प्रयत्न करना है जैसा तुम दूसरों की नजर में दिखना चाहते हो। प्रतिभा वही काम करती है जो वह करने के लिए बाध्य है, लेकिन गुणी व्यक्ति वह काम करता है जो वह कर सकता है। प्रतिभा अपना मार्ग स्वयं निर्धारित कर लेती है। प्रतिभाशाली व्यक्ति यदि नष्ट होता है तो प्राय: अपने ही द्वारा नष्ट होता है।

* अगर आप संसार के लोभों और प्रलोभनों, धमकियों से नहीं डिगते है तो आप संसार को अवश्य ही हिला देने में समर्थ होंगे

* मृत्यु को एक दिन अवश्य आना है और अपने निर्धारित समय पर ही। फिर भी पूरा संसार मृत्यु से निरन्तर भयभीत रहता है।

* प्रतिभा वही कार्य करती है जो वह करने के लिए बाध्य है। गुणी वही काम करता है जो वह कर सकता है।

* प्रसिद्ध रहने का यह एक दंड है कि मनुष्य को हरदम उन्नतिशील बने रहना होता है।

* किसी को अपने से छोटा समझकर उससे घृणा न करो। अपने में बड़प्पन का अभिमान कभी न आने दो।

* सुनना सीखो। तुम्हें उन्हीं लोगों से लाभ होगा जिन्हें ठीक तरह से बातचीत करना नहीं आता।

* जो अपने को बुद्धिमान समझता है वह सबसे बड़ा बेवकूफ है।

* हम मनुष्य भी बड़े अजीब होते है अपनी पूरी जिंदगी दूसरों के अवगुणों को देखने में निकाल देते है जबकि दूसरों में बुराई देखने से हमें कुछ भी लाभ नहीं होता। हमें सिर्फ अपने अंदर बुराई देखनी चाहिए जिससे हम अपने आपको सुधार सकें और दूसरों को अपना प्यार दे सके।

* हमारे कारण कितने लोगों को खुशी मिलती है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आपमें असाधारण होता है। हमें उसके गुणों को देखना चाहिए और उनसे सबक लेना चाहिए। जिससे हम अपने जीवन को बेहतर बनाना सीखें। दूसरों के गुणों को खुले मन से प्रशंसा और स्वागत करना चाहिए। इससे हम छोटे नहीं बन जाते बल्कि अपने बड़प्पन का परिचय देते है। तो सामनेवाले के चेहरे पर खुशी की झलक देखकर हमें भी प्रसन्नता मिलती है। उस आनन्द को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। बस उसे तो केवल महसूस किया जा सकता है। अगर हम सच्चे हृदय से दूसरों के गुणों की तारीफ नहीं करते तो हममें ईर्ष्या, द्वेष, जलन, नफरत और घृणा जैसी बुरी भावना भरी हुई है।

* एक दूसरे के लिए कुछ जज्बा जब दिल में तड़प पैदा करता है तो व्यक्ति की वही तड़प दूसरे की जिंदगी आसान बनाती है।

* अच्छे नेता अच्छे नेता बनाने का प्रतीक रखते है, बुरे नेता कभी भी अच्छे नेता बनाने के लिये तैयार नहीं होते बल्कि अपने मार्ग के पीछे चलनेवालों को तैयार करते है।

* व्यक्ति अपने विचारों से निर्मित एक प्राणी है, वह सोचता वही बन जाता है।

* जंजीरे चाहे सोने की हो या लोहे की वे समान रूप से गुलाम बनाती है।

❋ जिन चीजों का अस्तित्व बहुत पहले समाप्त हो गया हो उन्हें बार-बार दोहराने से कोई फायदा नहीं। अतीत की सफलताओं की चर्चा, यश वर्णन करने से कुछ भी हासिल होनेवाला नहीं होता है। अतीत के अनुभवों का इतना ही लाभ है कि जो कुछ सिखा है उसका अपने वर्तमान को सुव्यविस्थत बनाने में उपयोग किया जाएं इसके अलावा भविष्य चिंतन आधार पर वर्तमान की गतिविधियों को सुनियोजित किया जाये। भूत या भविष्य में उलझे रहनेवाले मस्तिष्क के लिए वर्तमान पर गौर करना बड़ा मुश्किल हो जाता है। कल्पनाएं, भावुकताएं इस हद तक बढ़ जाती है कि अपने चिंतन, मनन को वर्तमान पर केंद्रित कर सकना संभव नहीं हो पाता। अतीत मर्यादा उतनी ही रहनी चाहिए जो वर्तमान से तालमेल रखती हो, अपने आज को ही अधिक अच्छा बनाने का प्रयत्न करने में ही सार्थकता है। तत्परता और तन्मयता जैसे सद्गुणों का अभ्यास करना यही उचित है जिससे अपने वर्तमान को दोषमुक्त बनाएं और कलापूर्ण वर्तमान में जीएं ताकि आगे-पीछे की बातों को बहुत महत्व न दें।

❋ जो अखंड है उसकी कीमत है, जो टुकड़ों में बँट गया उसे कोई पूछनेवाला भी नहीं होता।

❋ जिनको पद, मान, यश, प्रतिष्ठा के मद का नशा चढ़ गया उसे फिर बहकने के लिये किसी अन्य नशे की आवश्यकता नहीं पड़ती।

❋ सपने देखने के लिये जाति, धर्म और पैसा कोई मायना नहीं रखता अगर हिम्मत और लगन हो कुछ कर दिखाने का जज्बा हो तो विपरीत हालात होने पर भी मंजिल पायी जा सकती है, आंधियों से भी लड़ा जा सकता है।

❋ जिंदगी जीने के नियम आवश्यकतानुसार निर्धारित किये जाते है।

❋ चरित्र यदि सन्देहास्पद होने से तो बेहतर उसका हास्यास्पद होना है।

❋ यदि आप स्वयं की तुलना दूसरों से करोगे तो हमेशा दु:खी ही रहोगे। हर व्यक्ति अपना भाग्य लेकर आया है उससे ईर्ष्या की भावना कभी नहीं रखनी चाहिए उससे सन्मानपूर्वक स्वीकार करना चाहिए।

❋ आप स्वयं अपने कर्मों का खयाल करें और स्वयं को बेहतर बनाएं। यदि आप दूसरों से अपने आपकीउ तुलना करोगे तो आपके अंदर ईर्ष्या पैदा होगी वो आपको नुकसान पहुँचाएगी। दूसरा आपसे बेहतर है यह सवाल करना भगवान को सवाल उठाना है। इर्ष्या की भावना दूसरे को तो नुकसान नही पहुँचाती पर अपने आपको जरूर नुकसान पहुँचाती है। आपके अंदर यह भावना आ जाती है कि दूसरा कही मुझसे आगे नहीं निकल जावें और मैं कही पीछे न रह जाऊं। इससे आपका आत्मविश्वास डिग जाता है। यह सारी चीजें आपको कमजोर बनाती है। यह संसार न आपको खुशी देता है और न ही किसी प्रकार की सजा। अगर आप किसीके प्रति नकारात्मक सोचेंगे तो आपके साथ ही बुरा होगा।

❋ घोर मानसिक आघात की स्थिति से हर उस व्यक्ति को गुजरना पड़ता है जिसके रिश्ते या तो असमय मौत के मुँह में समा जाते है या किसी कारणवश अपनी मंझिल तक नहीं पहुँच पाते। कोई व्यक्ति अपने आपको दु:ख से कितनी जल्दी बाहर निकाल पाता है यह तो उसकी इच्छाशक्ति पर निर्भर करता है। मानसिक आघात अक्सर महिलाओं को ही ज्यादा होता है और उन्हें ही इस स्थिति से गुजरना पड़ता है।

❋ सपनों का आशियाना जब ढहने लगता है तो इसका सदमा बहुत गहरा लगता है। इस वेदना को वही समझ सकता है जिसने इसे महसूस किया। पुरुष तो फिर भी किसी तरह यह सदमा सहन कर लेते है लेकिन महिलाओं के लिए इसे सहन करते हुए जीना बहुत ही दुर्लभ है।

❋ हर व्यक्ति के जीवन में अपनी अलग अलग प्राथमिकताएं है। कोई प्रेम को महत्व देता है तो कोई जिंदगी में कुछ कर

दिखाने को ही महत्व देता है पर साथ में ही हर व्यक्ति को व्यावहारिक सोच बनाएं रखने की जरूरत है। सपनों को अपने ऊपर कभी भी हावी नहीं होने देना चाहिए क्योंकि जब सपने टूटते है तो बहुत दु:ख-दर्द तकलीफ होती है। किसी भी परिस्थिति में हिम्मत नहीं हारनी चाहिए और मंझिल तक पहुँचने के लिये हमेशा प्रयास करते रहना चाहिए।

* कभी-कभी महिलाएं किसी लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल हो जाते है और अंदर से टूट जाते है। वह अवसाद और नकारात्मक सोच से गिर जाते है। असफलता उनकी आत्मविश्वास को डांवाडौल तो करती है पर उनको अपनी हिम्मत बनाई रखनी चाहिए। जब भी असफलता मिलें अपने आपको भावनात्मक रूप से कमजोर न पड़ने दे न ही अपने आपको भाग्य के सहारे छोड़े। हर व्यक्ति सपने देखता है पर यह आवश्यक नहीं कि वे पूरे हो। यदि आपमें हिम्मत हो तो सपनों का आशियाना अगर तिनका-तिनका करके बिखर जाएं तो फिर बनाया जा सकता है।

* अपना ध्येय रचनात्मक कार्यों में अधिक लगाएं जैसे कुछ लिखने का प्रयास करें। अपने भावनाओं को व्यक्त करें। लेखन सर्वश्रेष्ठ माध्यम है। प्रयास करें कि घर में कभी अकेले न रहें। ऐसे में घबराहट बढ़ जाती है। समय सबके घाव भर देता है। इसलिये संयम से काम लेना चाहिए। स्वयं पर विश्वास रखें। आत्मविश्वास ही सफलता की कूँजी है।

* भावनाएं प्रदर्शित करने के लिए होती है इसलिये उन्हें छुपाना नहीं बल्कि प्रकट करना चाहिए। बिना प्रयास किये हारने से कोशिश करके हारना बेहतर है।

* अतीत को याद कर कुछ भी लाभ नहीं होगा। जो गुजर गया सो गुजर गया। गुजरे वक्त और बीतें जमाने की याद में जीना, उसके गमों और दु:खों को याद करते रहना और उनपर रंजीदा होना बेवकूफी के अलावा कुछ नहीं है। इससे इरादे पस्त और मौजूदा जिंदगी दुशवार हो जाती है। जो गुजर गया सो गुजर चुका न गम करने से वापस आयेगा न अपने आपको हलाकान करने से वो चीज लौटेगी। जो छूट गया उसकी परछाइयों से पीछा छुड़वाना चाहिए। दरिया को पीछे तरफ सूरज को पूरब की तरफ बच्चे को मां के पेट में दूध को छाती में और आँसूओं को आँख में वापिस नहीं लाया जा सकता। मौजूदा जिंदगी के बारे में ही सोचना चाहिए। भूतकाल की किताब पढ़ने से वर्तमान का नुकसान होता है और वक्त की बर्बादी है। गड़े मुर्दे उखाड़ने और इतिहास के पन्ने पीछे की तरफ पलटने से कुछ भी हासिल नहीं होगा। हमेशा आगे की तरफ कदम बढ़ाना चाहिए। हौसलामंद लोग पीछे की तरफ नहीं देखते। हवा आगे की ओर बहती है, पानी आगे की ओर बहता है, कारवां आगे चलता है यही जिंदगी के तरीके और उसूल है। अतीत के लिए रोओ मत, भविष्य के लिये प्रार्थना करो। अतीत के लिये पछताओ मत, क्योंकि उस पछतावे में भी गंवाया गया समय फिर लौटकर नहीं आता। पछताने में गया समय भी व्यर्थ जायेगा। व्यर्थ के कामों में समय जाता है मूल तो गया तो गया व्याज भी व्यर्थ में गंवाना बेवकूफी है। अतीत के लिये पछतावा नासमझी है। अतीत का अर्थ जो हमारी सीमा मर्यादा के बाहर हो गया, जो तीर छूट चुका उसे तरकश में वापिस नहीं लौटाया जा सकता। अतीत किसी ने कामनावश गवाया है, किसीने क्रोधवश, किसीने लोभवश गवाया है।

* तौबा करना आसान है लेकिन गुनाह छोड़ना मुश्किल है।

* जो अपनी वाणी पर नियंत्रण नहीं रखता वो सबके सामने शर्मिंदा होता है।

* जो कार्य आपकी क्षमता के बाहर है उसकी करने की जिम्मेदारी हरगिज अपने सिर पर न ले।

* जल्दबाजी हिमाकत है और ये बदतरीन इंसानी कमजोरी है।

* हमेशा यह प्रयत्न करना चाहिए कि बुरे कर्मों का खयाल हमारे दिल पे न आएं।

* पीठ पीछे बुराई करना, किसीको ताना देना, व धन-दौलत की लालच करना यह सबसे बड़े गुनाह और पाप है इनसे

बचना चाहिए। जो लोग इनमें लगे हुए है उनके लिए नरक की आग के समान बड़ी सजा है।

* एक दिन सारा संसार फना और बर्बाद हो जाएगा उस समय न कोई दोस्त काम आएगा और न ही कोई शिफारिस। वह दिन आने के पहले हमें अपने कर्मों को सही इस्तेमाल करने की चिंता करनी चाहिए।

* गलती जिंदगी का एक पृष्ठ है और रिश्ते जिंदगी की किताब है। जरूरत पड़ने पर गलती का पृष्ठ फाड़ देना, पर एक पृष्ठ के लिये पूरी किताब मत खो देना।

* उस व्यक्ति पर भरोसा करो जो आपकी मुस्कुराहट के पीछे का दु:ख, गुस्से के पीछे का प्यार और आपके चुप रहने की वजह जान सके।

* जो व्यक्ति आपकी गलती न होनेपर भी आपसे क्षमा मांगता हो तो समझ लेना चाहिए कि उस व्यक्ति को या तो आपसे कोई उम्मीद है या वो व्यक्ति आपको किसी कीमत पर खोना नहीं चाहता।

* जो होश में होते है वो कभी घमंड नहीं करते।

* तनहाई से ज्यादा किसी भी परिस्थिति में शांति नहीं है।

* जो व्यक्ति बीच की रफ्तार में चलता है वो कभी गरीब नहीं हो सकता।

* वह व्यक्ति बड़ा ही महान है जो अपना गम सीने में छुपाये रखता है और जिन्दगी भर मुस्कुराहट से खेलते रहता है। (मेरा नाम जोकर)

* बुद्धिमान वो व्यक्ति है जो दूसरों से सबक हासिल करें न कि दूसरों के लिये सबक की वजह बनें।

* क्रोध, आवेग कभी-कभी काबिल से काबिल मनुष्य को भी बेवकूफ बना देता है।

* मनुष्य को बचाना अस्तित्व के महानतम सृजन को बचाना है। यह सृजन इतना मूल्यवान है और भविष्य इसका कही अधिक मूल्यवान हैं। भविष्य के लिये कुछ करना हो तो यही समय है अन्यथा अस्तित्व का, यह चेतना का सर्वश्रेष्ठ विकास खो जाएगा।

* जीवन में सबसे कठिन बात है स्वयं को असाधारण न समझना। हर व्यक्ति यही सोचता है कि वह असाधारण है। असाधारण होने की भावना सबसे साधारण है।

* कभी भी अपनी तुलना किसी दूसरे के साथ मत करो क्योंकि सभी तरह की तुलना मूर्खता है। प्रत्येक व्यक्ति स्वयं की तरह ही होता है।

* घमंड हमेशा खोखला रहता है और गलत कारणों से होता है। घमंड एक बुखार की तरह है इसके रहते आप कभी स्वस्थ नहीं रह सकते। यह एक तरह का तापमान है। जो आपसे अधिक अज्ञानी है, आप अकस्मात तिरस्कार अनुभव करते हो इस तिरस्कार की अनुभूति न करना बहुत कठिन है। जब आप किसीको अपने से अधिक विद्वान देखते हो तो आपको ईर्ष्या होने लगती है। जो आपके पीछे है उनका तिरस्कार और जो आपके सामने है उनसे ईर्ष्या। यह तिरस्कार और ईर्ष्या सिर्फ यही दिखाते है कि आप स्वयं को दूसरों से तुलना करते हो। इसलिये कभी तुलना मत करो। किसी भी प्रकार की तुलना मूर्खता है।

* आपके विचार सकारात्मक हो तो आप शान्तिपूर्वक जी सकेंगे और आपके आसपास का माहौल मुस्कुराता रहेगा।

* जीवन में हमेशा आशावादी बनना चाहिए और जीवन को हमेशा आशा की दृष्टि से देखना चाहिए। निराशा की आदत छोड़ देना चाहिए। संसार में सुख से अधिक दु:ख, स्वर्ग से अधिक नरक है। ज्ञानी तो वह है, जो दु:ख में सुख और नरक में स्वर्ग खोज लेता है।

❋ दूसरों से मदद मांगने से बेहतर है दूसरों की मदद करना और जो काम आप स्वयं कर सकते हो उसके लिए दूसरों से कभी भी मदद मत लो।

❋ जो वक्त गुजर गया उससे सबक लेकर आनेवाले समय का सही उपयोग करो। बुद्धिमान लोग वक्त की कद्र उसकी मौजूदगी में करते है और नादान समय खोकर पछताते है।

❋ जो विद्वानों से बहस करें, मूर्खों पर रोब जमाएं और लोगों को अपनी तरफ ध्यान आकर्षित करें उसका ऐसा ज्ञान तो उसे नरक का भागीदार बनाता है। ज्ञान और शिक्षा हासिल करने का असली उदेश्य यह है कि मनुष्य अच्छाई और बुराई का फरक करना सीखें, अच्छाई को अपनाकर जिंदगी बसर करें बुराई से अपने आपको दूर रखें तो ही जिंदगी का सही मकसद प्राप्त होगा।

❋ लोगों का दिल जीतने के लिये हमेशा उनके साथ आदब से पेश आओ उन्हें नमस्कार करो। सभा में उठकर जगह दो और उनके व्यक्तिगत पसंद के नाम से पुकारो।

❋ गुनाह भी ऐसी जगह करना चाहिए जहाँ ईश्वर की मौजूदगी ना हो और अगर गुनाह करने का इरादा हो तो ईश्वर की दुनिया से बाहर निकलना चाहिए। मौत के फरिश्ते से अवसर और वक्त मत माँगो। इसलिये गुनाह नहीं करना चाहिए।

❋ कला प्रभावोत्पादक मानवीय व्यवहार, पशु जैसा व्यवहार नहीं करता। छल-कपट, बेईमानी नहीं, अभिमानी जैसा व्यवहार नहीं, मनुष्य को शोभा दे ऐसा व्यवहार करो। कर्मों की गति गहन है, इसलिए ऐसे कर्म करो जिससे ईश्वर की प्रीति जगे।

❋ दूसरों के महत्व को भी स्वीकार करना सीखों, दूसरों के अंदर भी गुण समाएं हुए है। अपने द्वारा उनका विकास हो तो अच्छा है नहीं तो उनका अंदर से कम से कम कल्याण तो चाहो। मन में मंगल की भावना उत्पन्न हो।

❋ आनंदित रहो, प्रसन्न रहो, मित्र भावना से संपन्न रहो। आत्मसंयम से जो नहीं खाना चाहिए, जो नहीं करना चाहिए उससे अपने को बचाएं। अपना उद्देश्य निश्चित कर परमात्मा को पाने का प्रयत्न करो जिसका पाना सहज है। अभागा मन, अभागी बुद्धि परमात्मा की ओर नहीं चलती और इसको पाये बिना दुर्भाग्य का अंत नहीं होता और जिसको पाने से कोई कमी नहीं रहती उसके लिये प्रयत्न करो।

❋ दूसरों के लिए हित की भावना और अपने लिए मितव्यय। अपने लिए बहुत ख्वाहिश और लालसा अधिक मत रखो। अपने लिए अधिक ऐशो आराम भी अच्छा नहीं। अधिक खर्च न करें और लोगों के हित का व्यवहार करें। हित, मिल और प्रिय वाणी आपके हृदय को उन्नत करेगी।

❋ संतुलित मनोरंजन हो, विनोद हो, नियंत्रित हो, मनोरंजन की सीमा हो। आत्मसाक्षात्कार के लिए अमिट उत्साह हो। यह सब गुण प्राप्त होने पर हजारों-लाखों लोग आपके पदचिन्हों पर चलेंगे।

❋ जिसके पास दूसरों के लिए मुस्कान की कमी है वही सचमुच में गरीब है।

❋ सफल और विफल व्यक्ति में अंतर, ज्ञान या साहस का नहीं, इच्छाशक्ति का होता है।

❋ चिल्ला-चिल्लाकर और झल्ला-झल्लाकर बातें, बिना सलाह मांगे सलाह देना, किसी की मजबूरी में अपनी अहमियत दिखाना, ये काम दुनिया का सबसे कमजोर व्यक्ति का है, जो खुद को शक्तिशाली समझता है और जीवन भर घृणा का पात्र बनकर दर-दर की ठोकरे खाते रहता है।

❋ बेवकूफी और बुद्धिमत्ता में फर्क यही है कि बुद्धिमान की अपनी कुछ सीमाएं होती है और मूर्ख की नहीं।

❋ कौन सी बात कहां कहनी चाहिए, जिसको यह सलीका आ जाएं तो उसकी हर बात सुनी जाती है।

❋ वक्त में कल तो कुछ भी नहीं किया जात सकता। जो भी किया जा सकता है- अभी और यहां, आज और इसी क्षण।

जिस कल की हम बात करते हैं, वह कल्पना के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। वह कभी नहीं भी आ सकता है, कल कभी नहीं आता है, जो आता है, वो आज है, अभी है।

* आप जो कुछ भी करें, भरसक उत्तम रीति से करें। यह आपका भगवान के प्रति समर्पण है।

* आदमी एक ऐसे घोड़े पर चढ़ा हुआ है, जिसकी लगाम उसके हाथ में नहीं है। वह घोड़ा है मन। जो नटखट है, तेज दौड़नेवाला है और किसीके वश में होनेवाला नहीं।

* अगर हम अपने शरीर में पीछे की तरफ लौटें तो प्रत्येक व्यक्ति के शरीर में इस जगत का पूरा इतिहास छिपा है।

* अपना कर्त्तव्य पूरा करना, अपने चरित्र निर्माण करने का सर्वोत्तम तरीका है।

* परीक्षा व कष्ट, खतरे व मुश्किलें सच्ची मित्रता की कसौटी है।

* आपके विचार हमेशा सकारात्मक हो, तो आप शान्तिपूर्वक रह सकेंगे और आपके आसपास का संसार मुस्कुराता रहेगा।

* वह मनुष्य वास्तव में महान है जो अपने शत्रु के प्रति भी सहानुभूति रखता है।

* हम वह नहीं जहाँ हम रहते हैं, बल्कि वह जहाँ हमारा प्यार हैं। प्रेम भगवान का एक विशेषण या गुण नहीं, भगवान स्वयं प्रेम है।

* सदा कुछ भी नहीं रहता वर्तमान की खुशी या गम का समय भी शीघ्र बीत जाता है।

* नष्ट किया गया धर्म ही हमें नष्ट करता है, रक्षित धर्म ही हमारी रक्षा करता है इसलिए कभी भी धर्म का नाश नहीं करना चाहिए, ताकि नष्ट हुआ धर्म हमारा विनाश नहीं करता।

* पर स्त्री को माता के समान तथा पराये धन को लोहे के समान समझना ही ज्ञान है। सब प्राणियों में एक ही आत्मा का वास है ऐसा माननेवाला मनुष्य विद्वान कहलाता है।

* जो सदा संतुष्ट है वही सदा हर्षित एवं आकर्षण मूर्ति है।

* अश्व, हाथी और सिंह इनकी बलि कभी भी नहीं दी जाती। बलि सिर्फ बकरे की चढ़ती है। दुर्बलों की मदद भगवान भी नहीं करते।

* अश्व की विशेषता है वेग, हाथी की विशेषता है मदचाल। नारियोंकी विशेषता है चातुर्य और पुरुष की विशेषता है कर्म करना।

* हंस भी सफेद होता है, बगुला भी सफेद होता है। फिर भी दोनों में अंतर है। हंस मे दूध को अलग करने का विवेक है और बगुले में नहीं। कौअे का रंग काला और कोयल का रंग काला होता है। पर वसंत समय में पता चलता है कि कौन कौआ और कौन कोयल है।

* वृक्षों के जिन शाखाओंपर फल है वो नीचे की ओर झुक जाते है, इसी तरह गुणी लोग भी नम्र रहते है। पर मूर्ख व्यक्ति उस सूखी डाल के समान है जो कभी नही झुकता।

* शाम का दीपक चंद्र है, सुबह का सूर्य, धर्म तीनों लोकों का दीपक है, और सुपुत्र तो पूरे कुल का दीपक है।

* जिसको न चोर चुरा सकते है न राजा छीन सकता है न भाइयों में बटता है, ना ही अपने कंधे पर बोझ है, जितना खर्च करो उतना ही बढ़ता है वह है ज्ञान जो सबसे श्रेष्ठ धन है।

* जहाँ मूर्खों की कोई इज्जत नहीं की जाती, जहाँ पर्याप्त धन-धान्य जमा किया जाता है। जिस घर की गृहस्थी में

दम्पति कलह नहीं होता वही सदैव लक्ष्मी का वास होता है।

❋ इस जगत में सभी को सम्भव है यदि दृढ़ इच्छा हो तो वह निश्चय में ढल जाती है और ऐसा पुरुष कांटों में से भी राह निकाल लेता है।

❋ बड़ा आदमी बनना अच्छी बात है पर अच्छा आदमी बनना उससे भी बड़ी अच्छी बात है।

❋ भले ही आपस में लड़ाई-झगड़ा कर लेना, मारपीट कर देना पर कभी भी किसीसे सम्वाद, बोलचाल बन्द नहीं करना चाहिए।

❋ व्यायाम से स्वास्थ्य, दीर्घायु, शक्ति और सुख प्राप्त होता है पर अच्छा आरोग्य तो भाग्य से मिलता है फिर भी स्वास्थ्य ही सबकुछ है।

❋ मनुष्य का आभूषण रूप है, रूप का आभूषण अच्छे गुण है, अच्छे गुण गृहण करना ही ज्ञान है और ज्ञान का आभूषण क्षमा है।

❋ बुजुर्ग, वृद्ध इस पृथ्वी के सबसे बड़े शिक्षालय है उन्हें देखकर डूबते सूरज की कहानी का बोध होता है। चाहे कोई व्यक्ति कितना भी बुरा हो उसमें कोई न कोई गुण तो अवश्य होता है।

❋ जिस मनुष्य के पास न विद्या है, न तप है, न दान है, न ग्यान है, न गुण है और न धर्म है ऐसा मनुष्य धरती पर बोझ ही है, वह वन में विचरण करनेवाले पशुओं के समान है।

❋ अपने मन के भाव अपने वचन से प्रतिबिंबित होने चाहिये, कर्म के अनुसार वचन होने चाहिए।

❋ यदि किसी भूल के कारण बीते हुए कल का दिन संकट में बीता तो भी उसे याद कर आज का दिन व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए।

❋ परीक्षा की घड़ी मनुष्य को महान बनाती है पर विजय की घड़ी नहीं।

❋ जो स्वयं को हर परिस्थिति के अनुसार ढालना जानता है उसे जीवन जीने की कला आती है।

❋ वृक्ष परोपकार के लिये फल देते है, नदियाँ परोपकार के लिए बहती है, गाय परोपकार के लिए दूध देती है ऐसे ही मनुष्य शरीर भी परोपकार के लिये बना है।

❋ शोक धैर्य का नाश करता है, वह सोचने की शक्ति का नाश करता है। शोक हर सतगुण का नाश करता है, शोक मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है।

❋ ऐसा कोई अक्षर नहीं जो मंत्र नहीं हो, ऐसी कोई वनस्पती नहीं जो औषधि न हो। ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसमें किसी प्रकार की प्रतिभा न हो, दुर्लभ तो वो निर्देशक है जो इनकी क्षमता को पहचाने और उभारे।

❋ कोई भी कार्य बिना किसी परिश्रम से सफल नहीं होता, जैसे बिना शिकार किये किसी सोते हुए सिंह के मुँह में स्वयं कोई शिकार प्रवेश नहीं करता।

❋ सौ लोगों में कोई एक शूरवीर होगा, हजार लोगों में कोई एक विद्वान होगा। दस हजार लोगों में कोई एक अच्छा वक्ता मिलेगा, पर एक सच्चा दाता मिलना बहुत-बहुत दुर्लभ है।

❋ अन्नदान सबसे श्रेष्ठदान है, विद्यादान उससे भी श्रेष्ठ है। अन्न क्षणिक तृप्ति देता है जबकि विद्या जीवनभर आदमी को सुखी बनाती है।

❋ विद्या के समान कोई दृष्टि नहीं, सत्य के समान कोई तप नहीं। राग के समान कोई दु:ख नहीं और त्याग के समान कोई सुख नहीं।

❋ धन की इच्छा करें वो अधम इन्सान है, धन और मान की इच्छा करनेवाला मध्यम इंसान है पर उत्तम मनुष्य वही है जो सिर्फ मान की इच्छा करता है।

❋ समुद्र पर बरसात का होना व्यर्थ है, भरपेट को खाना देना व्यर्थ है, धनवान को दान देना व्यर्थ है, दिन में दीप जलाना व्यर्थ है।

❋ जिस तरह एक बछड़ा गायों में अपनी माँ के साथ-साथ चलता है उसी तरह अपने पिछले जन्म के कर्म अपने साथ-साथ चलते हैं और अपने भाग्य का निर्माण करते है।

❋ आलसी को ज्ञान नहीं मिलता, अज्ञानी को धन नहीं मिलता। बिना धन के मित्र नहीं मिलते और बिना मित्र संसार में सुख नहीं मिलता।

❋ आकाश से वर्षा का पानी, जमीन पर कहीं भी पड़े आकर सागर में मिल जाता है। इसी तरह सर्व देवोंको किया गया नमस्कार विष्णु को ही मिलता है।

❋ कुछ कर गुजरने के लिए मौसम नहीं मन होना चाहिए। साधन सभी जुट जाते हैं, मन में संकल्प का धन चाहिए।

❋ ईश्वर से कभी कुछ मांगने पर न मिले तो उससे कभी नाराज नहीं होना चाहिए। ईश्वर आपको वह नहीं देता, जो आपको अच्छा लगता है बल्कि वह देता है जो आपके लिए अच्छा है।

❋ दूसरों को खुशी देना सर्वोत्तम दान है।

❋ ज्ञान और समझदारी परस्पर भिन्न है समझ के बिना ज्ञान व्यर्थ है।

❋ ना किसी को सताओ और ना ही किसी की आह लो हो सके तो भलाई करो वर्ना अपनी राह पर चलो।

❋ यादें और वादे में सिर्फ इतना ही फर्क है यादें हमें तोड़ देती है और हम किए हुए वादों को तोड़ देते है।

❋ अधिकतर कामयाब लोगों में देखा गया है कि उनका पेशा ही उनका शौक है। जिसमें उनकी कुदरती प्रतिभा और हुनर प्रदर्शित होती है। जिंदगी में कुछ ऐसे काम है जिन्हें करने पर मनुष्य को दिली खुशी होती है और वो ही उसका शौक बन जाता है। इससे उसके व्यक्तित्व में काफी निखार आता है। अपने शौक को ही अपना व्यवसाय बना लेना चाहिए क्योंकि इसके कारण जिंदगी में बोरियत नहीं आती। अपना काम पूरी दिलचस्पी और समर्पण के साथ खुश होकर किया जाता है। इससे आपकी भवितव्यता में शीघ्रता से उन्नति भी होगी और अल्प समय में ही आप शीर्ष स्थान पर पहुँच पाते है। आपको अपने काम में दिलचस्पी पैदा करने के लिए अतिरिक्त प्रयास या समय लगानेकी आवश्यकता नहीं पड़ती।

❋ स्पर्श एक अभिव्यक्ति का सशक्त साधन है, स्पर्श अनेक अवसरों पर शाब्दिक भाषा के प्रभाव से भी अधिक प्रभाव डालता है। भावनाओं का संप्रेषण करता है। पति-पत्नी की व्यस्तता भरी जिंदगी में भी स्पर्श की क्रिया बहुत अहमियत रखती है। वैवाहिक जीवन को सुमधुर बनाये रखने के लिये जिंदगी में खुशी भर देना का रंग स्पर्श का ही विशेष महत्व है। जो दम्पत्ति स्पर्श के महत्व को नहीं जानते और स्पर्श की क्रियाओं से दूर रहते है उनके दाम्पत्य जीवन में प्रेम की अविरल बहती हुई नदी दिन-प्रतिदिन सूखती जाती है और वैवाहिक जीवन में दरार पड़ने लगती है।

❋ इस दुनिया में जो कुछ भी बुरा-भला होता है उसको ईश्वर उसके होने से पहले से ही जानता है और उसने अपने इसी ज्ञान के अनुसार भला-बुरा लिख दिया है मनुष्य की तकदीर इसी का नाम है। जैसे होनेवाला था और जो जैसे करनेवाला

था उससे पहले ही ईश्वर ने अपने ज्ञान से जाना और उसने वैसा ही लिख दिया। जैसा उसने लिख दिया मजबूरन हमें वैसा ही करना पड़ता है।

* किसी के दिल में ईमान और ईर्ष्या एकसाथ नहीं ले सकते। ईश्वर किसी की शक्ति की क्षमता से अधिक बोझ कभी नहीं डालता।

* नेकी, बुजुर्गी और महोबत का निचोड़ ये है कि मनुष्य दूसरों की भलाई के लिए स्वयं तकलीफ उठाएं।

* गरीब तो वो मनुष्य है जिसका खर्च उसके आमदनी से ज्यादा हो।

* झूठ एक ऐसी कैंची है जो दोस्तों के सम्बन्धों को काट देती है और ऐसी दीमक है जो मनुष्य की सच्चाई को खा जाती है।

* बदलाव ही जीवन है। ऐसा कुछ भी नहीं जो हमेशा एक जैसा बना रहे। ऐसे ही जीवन के पड़ाव बदलते रहते है। पहले बचपन, फिर जवानी उसके बाद प्रौढ़ावस्था और अंत में वृद्धावस्था। हर अवस्था में व्यक्ति का अपना अलग-अलग अधिकार होता है और वह अलग-अलग ढंग से पेश आ जाता है। बड़े का बड़प्पन तभी होता है जब वह हवा के रूख को देखकर बात करें अन्यथा हवा के विपरीत बहने पर नुकसान ही होता है।

* कोई यह कहे मुझे किसी की जरूरत नहीं तो यह बात असंगत है। जहाँ जीवन है वहाँ पदार्थों की आवश्यकता होती है और व्यक्तियों की भी। यह एक-दूसरे के परस्पर अवलंबन है। हर व्यक्ति में हर तरह की क्षमता नहीं होती, सबमें अलग-अलग क्षमता होती है। अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार दूसरों को सहयोग देना है जीवन में सार्थकता लाती है।

* सेवा निष्काम भाव से करनी चाहिए। सेवा देकर वापस कुछ पाने की आकांक्षा न हो, उससे कुछ प्राप्त करनेकी भावना न हो, सेवादायी व्यक्ति सेवाग्राही व्यक्ति को अपने से भी अधिक ध्यान रखे। जहाँ इतनी आत्मीयता होगी वही सेवा का श्रेष्ठ प्रकार होगा। ज्ञानी व्यक्ति और ध्यानी व्यक्ति दोनों ही महान होते है किंतु सेवापरायण मुनि उन सबसे भी महान होते है। आदमी में ज्ञान अधिक न भी हो पर सेवा की भावना हो तो कम ज्ञानवाला व्यक्ति भी सबका प्रिय बन जाता है।

* जब कोई बात किसी से बिगड़ जाये, कोई आपसे रूठ जाये या आपकी कोई बात किसी को बुरी लग जाये, तो भी वाद-सम्वाद उसके साथ बन्द नहीं करनी चाहिए। उस रास्ते को समझौता करने के लिए मनुष्य को उस व्यक्ति के साथ एक चाय की प्याली जरूर पीनी चाहिए यही सफलता का मंत्र है, सम्बन्धों को ठीक करने का उपाय है, उन्हें मजबूत करने का तरीका है। ऐसी कोई समस्या नहीं जो इस चाय के आतिथ्य से सुलझाई नहीं जा सके। जब किसी भी व्यक्ति से झगड़ा या बहस हो तो उसे सम्वाद करना, बात करना न छोड़े नहीं तो रिश्तों में गाँठ बन जायेगी। झगड़े को सुलझाने का बेहतरीन तरीका यही है कि अच्छे माहौल में जाकर उसके साथ स्वस्थ मुद्दों पर बात की जाएं।

* अपना हौसला सदैव बुलंद रखना चाहिए ताकि आप उन्नति के शीर्ष पर पहुँच सके।

* उन अतीत के ख्वाबों को भूलना नामुनकिन है जो आपके साथ आपके आत्मा में रचे पचे है।

* ईमानदार व्यक्ति को सबके साथ न्याय करना चाहिए और न्याय पर दृढ़ रहना चाहिए, चाहे खुदा के लिए भी सच्ची गवाई देनी पड़े, चाहे गवाही अपने रिश्तेदारों के खिलाफ ही क्यूं ना हो।

* जिंदगी सिर्फ तीन साँसों पर निर्धारित है एक तो वो साँस जो गुजर गया, एक आप लेनेवाले हो जिसका यकीन नहीं और एक अभी ले रहे हो तो सिर्फ जिंदगी एक ही साँस की है।

* अन्धेरे में अपना साया भी साथ छोड़ देता है, रोशनी में भी साया साथ नहीं देता। गरीबी में लोग हमें छोड़ देते है और

अमीरी में हम लोगों को छोड़ देते है।

✻ जिन्दगी का गुजरता हुआ लम्हा एक ऐसा नगमा है जिसकी फरमाईश भी की जाएं तो दोबारा नहीं मिलता।

✻ जो व्यक्ति गुरुर में रहता है वह मुंह के बल गिर जाता है।

✻ मौन रहो या ऐसी बात कहो जो खामोशी से अच्छी हो।

✻ जो व्यक्ति अपने को बार-बार गरीब बताता है वो आखिर में गरीब ही हो जाता है इसलिए कभी भी दूसरों के सामने अपनी गरीबी का जिक्र नहीं करना चाहिए।

✻ किया हुआ अपराध हर हाल में मनुष्य को बेचैन बनाता है।

✻ फिजूल खर्ची करने से गरीबी आती है, दूसरों के साथ बेअदबी से पेश आने से बदनसीबी आती है और बड़ों के सोबत में रहने से अक्ल आती है।

✻ जो खुद का सम्मान नहीं करता वह दूसरों को भी प्यार नहीं कर सकता।

✻ दूसरे लोग तुम्हें क्या देते हैं, इससे आपको संतुष्टि नहीं प्राप्त हो सकती। संतुष्टि भिखारी बनने में नहीं, राजा बनने में है। प्यार जब तुम देते हो तो राजा का दर्जा हासिल कर लेते हो।

✻ जो मनुष्य मन, वचन या कर्म से दूसरों को कष्ट देता है उसके उस पर-पीड़ा रूप बीज से ही उसके लिए बुराई पैदा होती है।

✻ नैतिकता समय और समाज की सापेक्ष होती है इसलिये वह हमेशा श्रेष्ठ कहलाती है, सराही जाती है, विवाद की स्थिति में विजय प्राप्त करती है। सहज नैतिकता हारती है, दुख भोगती है और अपमानित होती है। पर नैसर्गिक वही है। जो सभी प्राणियों पर समान रूप से लागू हो जाती है। नैतिकता से शेर और बकरी एक ही घाट पर पानी पीते है ऐसा वातावरण सहज नैतिकतावाला व्यक्ति ही बना सकता है।

✻ आंखें खुली हों तो पूरा जीवन ही विद्यालय है और जिसे सीखने की भूख है, वह प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक घटना से सीख लेता है। जो इस भांति नहीं सीखता है, वह जीवन में कुछ भी नहीं सीख पाता।

✻ सच्चा व्यक्ति न तो पंडित पुरोहितों और राजनीतिज्ञों से प्रभावित होता है। पंडितों के पास सुंदर व्याकरण होगी, भाषा होगी, शास्त्रों के उदाहरण होंगे लेकिन आत्मा का कोई अनुभव नहीं और राजनीतिज्ञ तो इस पृथ्वी पर सर्वाधिक क्षुद्र, बुद्धिहीन, हीनताग्रस्त व्यक्ति है, वह अपनी हीनता को छिपाने को हर तरह की चालबाजियां खेलता है। बुद्धिमान आदमी चालबाज नहीं होता। उसमें जितनी प्रतिभा होती है उतना ही आदमी साफ-सुथरा होता है।

✻ मन चंचल है। वह शीघ्र एकाग्र नहीं होता। मन जब शुभ और पुण्य की ओर जाने लगता है तो उसे ढीला छोड़ देना चाहिए। बुराई और पाप की ओर जाने लगे तो उसे तुरंत खींच लेना चाहिए। मन जब सत्संग में बैठता है तो सीधा हो जाता है, बाहर गया तो उसपर कामनाएं, वासनाएं, लालसाएं सवार हो जाती है। इसलिए मन पर अंकुश रखना आवश्यक है।

✻ संकट के वक्त सब्र, संयम, धैर्य रखना जरूरी है। क्योंकि परेशानियां, संकट तकदीर से नहीं आते बल्कि खुद के व्यवहार से ही आदमी मुसीबतें खड़ी करता है।

✻ लोकप्रियता से बचना चाहिए इसमें बहुत से फंदे है मगर कोई भी सच्चा नहीं है।

✻ जो वर्तमान की उपेक्षा करता है वह अपना सब कुछ अपने आप ही खो देता है।

✻ जिसके हृदय में सेवा का स्रोत बह रहा हो उसमें वासनाओं के लिए कोई स्थान नहीं रहता।

* वे व्यक्ति कभी अकेले नहीं होते जिनके साथ सुन्दर विचार रहते है।

* विपत्ति वह हीरक रज है जिससे ईश्वर अपने रत्नोंद्वारा चमकाता है।

* यदि मनुष्य में कुछ कर गुजरने का जज्बा हो तो उसे कोई भी संकट आगे बढ़ने से नहीं रोक सकता। उसका जीवन सही मायने में त्याग, मेहनत, ईमानदारी, लगन, प्रतिकूल परिस्थितियों में जुझने की दृढ़ इच्छाशक्ति, ज्ञान साधना, उत्कट शिक्षा, प्रेम और कुछ कर गुजरने के जज्बे पैदा हो जाते है।

* सदाचार मनुष्य का सबसे अच्छा आभूषण है और श्रम उसकी श्रेष्ठ पहचान, उसका ज्ञान ही उसका सबसे विश्वसनीय साथी है।

* मनुष्य प्यार करने पर ही अपने आपको जिन्दा महसूस करता है।

* हमें कभी हार नहीं माननी चाहिए, बेशक समय कठिन हो हमें प्रयत्न करते रहना चाहिए।

* एक झूठ किसी शक से बेहतर है वह प्रेम से अधिक उपयोगी साबित हो सकता है और सच्चाई से ज्यादा उम्र पा सकता है।

* जान है तो जहान है। खुदकशी अपनी समस्याओं का समाधान नहीं।

* जीवन के लिए उपयोगी ज्ञान और अनुभवों की अवहेलना करना समाज की उपेक्षा करना है।

* कोशिशें कभी व्यर्थ नहीं जाती, आसमान में भी सुराख हो सकता है बस एक बार आसमान में एक पत्थर उछालकर तो देखो।

* कुछ लोगों के द्वारा धर्म और मजहब के नाम पर, जाति और भाषा के नाम पर, देश और दुनिया को बाँटा जा रहा है। वे कुदरत को देश धर्म के बीच नहीं बाँट सकते।

* आनन्द से बढ़कर भी आनन्द उसे ही प्राप्त होता है जो स्वयं को भूलकर दूसरों को आनंदित करता है।

* देश में जो पहले महाभारत हुआ था वे तख्त और ताज के लिए हुआ था। पर अब जो महाभारत होगा वो सत्य और अहिंसा के आवाज के लिए होगा। जीव हिंसा और मांस निर्यात हमारा इतिहास नहीं है। कत्लखाने खोलना हमारी संस्कृति नहीं है लेकिन दुर्भाग्यवश अहिंसा का पुजारी यह देश आज हिंसा के बुखार में तप रहा है।

* हमें बहुत सी बातों का ज्ञान नहीं है फिर भी यह बेहतर है कि अपने थोड़े-बहुत ज्ञान का बेहतर उपयोग करें।

* जो न खुद खाता है न दूसरों को खिलाता है वह मक्खीचूस है। जो खुद तो खाता है मगर दूसरों को नहीं खिलाता, वह कंजूस है जो स्वयं भी खाता है, अतिथि को भी खिलाता है वह उदार है तथा जो स्वयं न खाकर किसी भूखे को खिला देता है वह दाता है। जिन्दगी की वैतरणी पार करना है तो वितरण करना सीखे। खुद खाना तन का सुख है। दूसरों को खिलाना मन का सुख है।

* सच और झूठ- सच्चाई के मार्ग पर चलना ही अति उत्तम और कल्याणकारी है। इस राह पर चलनेवाले का कभी पतन नहीं होता। यह उन्नति की डगर है। इस सड़क पर चलने से दुर्घटनाएं नही होती है। इस रास्ते पर चलनेमे भीड़-भाड़ भी कम होती है। सत्य का मार्ग तो वो राजपथ है जिसपर चलने से मनुष्य कभी लड़खड़ाता भी नहीं और न ही कभी भटकता है। इसपर चलते हुये वो निश्चित तौर पर अपनी मंझिल को पा जाता है। सत्य न तो कभी परेशान हो सकता है और न कभी पराजित। सत्य तो सत्य ही है। वह न तो अपने अस्तित्व हेतु संघर्ष करता है और न ही अपना वर्चस्व कायम

करने के लिए उसे किसी कार्य व्यवहार का सहारा ही लेना पड़ता है। वह तो जहां है, जैसा है वहां, वैसा ही निश्चल एवं निश्चिंत भाव से स्थित रहता है।

जो तमाम झूठ हम बोलते है वो आखिर हमें ही आहत करते है इसलिये उनसे बाहर निकलना जरूरी है। हम सब झूठ बोलते है न जाने कहां-कहां झूठ का कारोबार चलते रहता है। कभी-कभार तो हम बिना कोई अर्थ के झूठ बोल जाते है। हम पूरी तरह सच बोल ही नही सकते। यह हम जानते है कि छोटा-मोटा झूठ हमें परेशान नहीं कर सकता और शायद वो परेशानी से निकाल भी देता होगा। इस किस्म के झूठ तूर्तफूर्त के लिए ठीक है। वहां तक तो झूठ चल जाता है पर हम उसे अपनी जिंदगी का सच बना लेते है। तब हमें दिक्कतें महसूस करनी पड़ती है और उसके साथ जीना कष्टदायक होता है। ऐसे जीवन की हम कल्पना ही कर सकते है। छोटे-छोटे झूठ बोलते बोलते उसकी हमें आदत हो जाती है। जहां वापस लौटना नामुमकीन है। किसी एक खास मौके पर झूठ बोलकर हम अपना काम तो निकाल लेते है लेकिन हम खुश होंगे इसका कोई आश्वासन नहीं। कोई जाने या न जाने लेकिन हम तो जानते ही है जो कुछ हुआ उसके पीछे झूठ की भूमिका ही है। इसलिए बेहतर जिंदगी के लिये उस आहत भाव से निकलना जरूरी होता है।

* किसी के जीवन की लम्बाई अर्थात उम्र कोई मायने नहीं रखती पर उसके जीवन की गहराई मायने रखती है।

* अपने अन्दर के परमेश्वर को प्रसन्न करने का प्रयास करो। जनता एवं बहुमति को आप किसी प्रकार से संतुष्ट नहीं कर सकते। जब आपके आत्मदेवता प्रसन्न होंगे तो जनता आपसे अवश्य संतुष्ट होगी।

* मूर्खों से कभी तर्क नही करना चाहिए क्योंकि पहले तो वो आपको अपने स्तर पर लायेंगे और फिर अपने अनुभवों से आपकी बेइज्जती कर देंगे।

* अगर आप किसी को कुछ देना ही चाहते है तो उसे अच्छा वक्त दीजिये आप दी हुई हर चीज वापस ले सकते हैं पर किसी को दिया हुआ अच्छा वक्त वापस नहीं ले सकते।

* जीवन मिलना भाग्य की बात है मृत्यु होना समय की बात है, पर मृत्यु के बाद भी लोगों के दिलों में जीवित रहना ये कर्मों की बात है।

* जिन्दगी दो दिन की होती है एक दिन आपके हक में, एक दिन आपके खिलाफ। पर जिस दिन आपके हक में हो गरूर मत करना और जिस दिन आपके खिलाफ हो उस समय सब्र से काम लेना।

* दुनिया में कोई भी चीज अपने आपके लिए नहीं बनी होती है। नदियां खुद अपना पानी नहीं पीती। वृक्ष अपना फल स्वयं नहीं खाते। फूल अपनी खुशबू अपने लिये नहीं बिखरते इसलिए दूसरों के लिए जीना ही असली जिंदगी है।

* दुनिया की बहुत सारी समस्याएं खत्म हो सकती है अगर लोग दूसरों के बारे में बात करना बन्द कर दे और दूसरों से बात करना शुरू कर दे।

* जब कोई भी व्यक्ति अपराध या गलती करे और दिल से क्षमा मांगे उसे क्षमा कर देना चाहिए। उसपर उसी विश्वास के साथ दोबारा जिम्मेदारी सौंपनी चाहिए और उसको शक नहीं करना चाहिए।

* गलती हर इंसान से होती है जिसके लिए वह सजा भी भुगतता है। जब अपराध का मार्जन हो गया तो फिर उसे दोबारा जीने का मौका क्यों नहीं देना चाहिए।

* बोलनेवालों की भाषा बदल गयी, सुननेवालों का मन बदल गया। युग के साथ वाणी भी बदल गयी। महावीर ने भी वही कहा जो वेदों ने कहा है पर उसकी भाषा बदल गयी है। बोलनेवाला बदल गया, सुननेवाला बदल गया। शब्दों और

भाषा की बदलाहट इतनी हो गयी कि दो अलग-अलग युगों में प्रकट सत्य विपरीत और विरोधी मालूम पड़ने लगा। मनुष्य जाति के इतिहास में दुर्घटना पैदा हुई इस्लाम, ईसाईयत या हिंदू या बौद्ध या जैन। जो आपस में एक-दूसरे के विरोधी है। इन सबके सत्य अलग-अलग हो गए। इन सबके युग अलग-अलग है। इन सबके बोलनेवाले अलग-अलग है। भाषाएं अलग-अलग है, पर सत्य अससे जरा भी अलग नहीं है। धार्मिक व्यक्ति वही है जो इनके कहे शब्दों का अर्थ पहचाने, सत्यकी एकता को पहचान पाएं अन्यथा जो व्यक्ति इन सबमें परस्पर विरोध देखता है वह व्यक्ति धार्मिक नहीं हो सकता वह अधार्मिक है।

* श्राद्ध की परंपरा एक मान्यता है जो परंपरा से चली आ रही है। सनातन धर्म जो विश्व सभ्यता का प्रथम और सर्वकालिक मानव धर्म है, उससे ज्ञात होता है कि ज्ञानी या ब्राह्मण वह है जो जप, मंत्र, पाठ, होम, स्वाध्याय, वेदाध्ययन द्वारा ज्ञान रूपी नौका का निर्माण करने में समर्थ है। उसका दायित्व स्वयं तरने के साथ समाज के सभी वर्गों को तारना है। उत्तम व ज्ञानी ब्राह्मणों से ही श्राद्ध तर्पण या यज्ञ कराना चाहिए। तथा उन्हें उत्तम भोजन और दक्षिणा देकर संतुष्ट करना चाहिए। जो अपवित्र है, घृणित रूप हो, जिसके रंग और शरीर अपवित्र दिखें, कपटी, गंवार, कोढ़ी, वर्णसंकर या हिंसात्मक प्रवृत्ति का ब्राह्मण त्याज्य है। अंधे गूंगे बहरे व असहाय को श्राद्ध में भोजन कराना ब्रह्म भोज से भी अधिक पुण्य देनेवाला है। ऐसे पुण्यात्मा को श्राद्ध का फल मिलता है और उसकी कही पीढ़ियां जीवनरूपी नौका से तर जाती है। असहाय, गरीबों व अतिथियों को भोजन कराना ही कार्यधर्म है। बाहर से आये अतिथियों को जल भोजन प्रकाश की व्यवस्था और उचित आश्रय देनेपर ही उत्तम श्राद्ध का फल मिलता है।

* नींद में देरी से जागनेवाले लोगों को अवसाद और तनाव अधिक होता है।

* हर छोटी बात पर अपनी प्रतिक्रिया देना जरूरी नहीं होता। अपनी ऊर्जा बड़े व अच्छे कामों के लिए संभालकर रखनी चाहिए। कम बोलना चाहिए।

* यदि आप गुस्सा न करने के वादे को कुछ दिन निभा पायेंगे तो आप अपने अंदर एक बड़ा बदलाव महसूस करेंगे। आपकी कार्यक्षमता भी बढ़ जायेगी।

* ईश्वर ने हमे कान इसलिए दिए हैं कि अच्छी बात सुन सकें। वाणी इसलिए दी है कि हम सच का इजहार कर सके। जो बात समझ में न आवें तो पूछ ले। दिल व दिमाग इसलिए दिया है कि जो कुछ सुना है उससे लाभकारी नतीजे हासिल करें। जिन लोगों ने कान, जबान अक्ल और फिक्र से काम नहीं किया वो तो बिलकुल गये-गुजरे और घटिया लोग है।

* इतराने और गुस्सा करनेवाले की गिनती ज्ञानियों में नहीं हो सकती। ज्ञान बिना कीमत किसी को भी देना चाहिए और बिना पूछे नहीं देना चाहिए। ज्ञान की कीमत यह है कि ऐसे व्यक्ति को देना चाहिए जो अपने पास अच्छी तरह से रख सके, दूसरों तक पहुँचाए और ज्ञान का बोझ उठा सकें।

* ईर्ष्या ऐसी बुरी चीज है जो इंसान के ईमान को कमजोर बना देती है और ईश्वर की कृपा से दूर कर देती है।

* यदि आपमें मर्द का जज्बां है तो प्रवाह के विरुद्ध बहना सीखो। डूबना तो हर किसीके लिये आसान है।

* करुणा स्वाभिमान की विवशता से फूटती है।

* आलस्य मनुष्य के शरीर में रहनेवाला सबसे बड़ा शत्रु है।

* जिंदगी में सांस और साथ हमेशा टूटने के लिए और छूटने के लिए होता है। सांस टूटने से व्यक्ति एक बार मरता है पर किसी का साथ टूटने से व्यक्ति पल-पल मरता है।

❋ मनुष्य की एक बुनियादी भ्रांति है वह दोष अपने पर नहीं लेता दूसरोंपर डाल देता है। ऐसे लोगों की जिंदगी में कभी सवेरा नहीं होता।

❋ निंदा जिस जगह होती है खुशी वहां से भाग जाती है। लोग बेवजह या स्वार्थ से प्रेरित होकर दूसरों को दु:खी करने के लिए छोटी-से-छोटी बात पर भी झूठ बोलकर लाभ या लालच से दूसरों का नुकसान करने से नहीं चूकते। ऐसे दुष्कर्मों से समाज के विनाश का पथ प्रशस्त होता है और ऐसे व्यक्ति में नकारात्मक ऊर्जा आती है। जब भी हम अपने परिचित मित्र या सगे सम्बन्धी के बारे में कोई गलत बात सुनें, तो बिना परीक्षण किए उसपर विश्वास नहीं करना चाहिए। ऐसे व्यक्ति दूसरों की निंदा करके सुख का अनुभव करते है। ऐसे व्यक्ति की बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। जिस तरह सूरज को पीठ की ओर करने से सूरज छिप नहीं जाता उसी तरह निंदा करने से उस व्यक्ति के सद्‌गुण धूमिल नहीं हो जाते।

❋ निंदा के बीज बोनेवाला निंदा की ही फसल काटता है, निंदा का किला बहुत छोटा होता है। निंदा घूम-फिर कर निंदा करनेवाले के दरवाजे पर ही पहुँच जाती है। जिन्हें खुशियां चाहिए उन्हें निंदा को त्यागकर खुशियों के लिये अपने मन में जगह बनाना चाहिए।

❋ उदास चेहरा कोई भी देखना पसंद नहीं करता। हमारे मन की मुंडेर पर आयी खुशी ऐसा पंछी है अगर हमने उसका स्वागत नहीं किया तो वह पड़ोसी के घर चली जायेगी। खुशी किसी पिंजड़े में बांधकर नहीं रखी जा सकती। खुशी बाँटने की चीज है। जितना आप उसे बाटेंगे उतनी ही प्रसन्नता बढ़ती जायेंगी।

❋ हरेक के जीवन में हरपल यह स्थिति आती है कि उसे किस राह का चुनाव करना है। लक्ष्य निश्चित हो, रास्ता परिचित हो तो दुविधा का सवाल नहीं उठता। पर जब रास्ता अपरिचित हो तब उसे भटकना पड़ता है। मनुष्य सदैव भटकने की जगह सीधे रास्ते पर चलना पसंद करता है पर यह सदा संभव नहीं होता। जब जीवन में निर्णय की घड़ी आती है, उस समय जीवन के सब फैसले उसे बड़े बुजुर्ग उसे सुनने का अवसर देने में आशंकित रहते है। उन्हें चिंता रहती है कि उसका चुनाव सही होगा या नहीं। हमें अपना रास्ता स्वयं तय करना है। पास पड़ोस के लोग भी बिना मांगे सलाह देने से नहीं चूंकते। जब ढेरों विकल्प उपस्थित हो तो चुनाव और भी कठिन हो जाता है। अपने आप चुनाव करने की स्थिति में व्यक्ति उससे जुड़ी संभावना और अवसरों के कारण खुद को ताकतवर महसूस करने लगता है। हमारे चुनाव पर संस्कृति, समाज, क्षेत्र विशेष के पर्यावरण, वंशानुगतता आदि बहुत से तत्वों का प्रभाव पड़ता है। हमारे चुनाव पर समाज, परिवार यहां तक की सरकार भी अपना प्रश्नचिन्ह लगाकर हमें भ्रांति में डाल देती है। इसलिए व्यक्ति चुनाव करें तो पूरी निष्ठा के साथ करें। अपनी गलतियों का कही पता चल जाएं तो उसे पकड़कर रखने और रोने से ज्यादा छोड़कर नहीं पहल करें।

❋ जिन्दगी में दो चीजें बहुत महत्वपूर्ण है एक प्यार और दूसरा वक्त। वक्त किसी का नहीं होता और प्यार हर किसीसे नहीं होता।

❋ समय स्थिर रहता है कभी चलता नहीं, केवल हम चलते है, समय हमेशा जवान रहता है।

❋ इस तरह न कमाओ कि पाप हो जाए, इस तरह न खर्च करो कि कर्ज हो जाए, इस तरह न खाओ कि मर्ज हो जाए, इस तरह न बोलो कि क्लेश हो जाए, इस तरह न चलो कि देर हो जाए, इस तरह न सोचो कि चिन्ता हो जाए।

❋ चिंता करोगे तो भटक जाओगे, चिंतन करोगे तो भटके हुए को रास्ता दिखाओगे।

❋ जिस मनुष्य में आत्मविश्वास नहीं है वह शक्तिमान होकर भी कायर है और पण्डित होकर भी मूर्ख है।

❋ काल पर हम विजय प्राप्त करते हैं अपनी सुकीर्ति से, यश से, व्रत से। परोपकार ही अमरत्व प्रदान करता है।

❋ अपने कर्त्तव्य में लगे रहना और चुप रहना बदनामी का सबसे अच्छा जवाब है।

❋ आदमी पहले तो अमीर होने के लिए बड़े पाप करता है और फिर अमीर होकर अपनी अय्याशी पर पाप करता है।

❋ हर मनुष्य अपने जीवन को तीन तरह से जीता है- सार्वजनिक जीवन, निजी जीवन और गोपनीय जीवन। सार्वजनिक जीवन में खुद को वह ऐसे प्रस्तुत करता है मानो उस जैसा कोई दूसरा है ही नहीं। दूसरों के बीच अपनी यह छवि वह हमेशा बनाए रखना चाहता है। पर वो जैसा दिखाता है, असल जिंदगी में वैसा होता नहीं है। निजी जिंदगी घर-परिवार की होती है। और गोपनीय जिंदगी वह है, जिसे वह परिवार में भी नहीं बताता। जीवन में कोई भी काम करने के पीछे दो मूल आकांक्षाएं और अपेक्षाएं होती हैं। यौन की आकांक्षा और महान बनने की आकांक्षा। सामान्यत: मनुष्य भोजन, स्वास्थ्य, नींद, पैसा, लोक-परलोक सुधारने और यौन आदि की अपनी इच्छाओं की संतुष्टि जैसे-तैसे पा लेता है। लेकिन वह आकांक्षा जो इतनी गहन और प्रचंड होती है, जितनी भोजन या नींद की आकांक्षा और जो शायद ही कभी संतुष्ट होती है।

❋ जिसमें धीरज है और जो मेहनत से नहीं घबराता, कामयाबी उसकी दासी है।

❋ जो लोग घर छोड़कर बाहर नहीं जा सकते, वे दुनिया नाम की किताब का एक ही पन्ना पढ़ पाते हैं।

❋ दिलचस्पी ही जीवन है और उसका अभाव ही मृत्यु है।

❋ हर आदमी से कुछ न कुछ सीखा जाता है क्योंकि वह आपसे बेहतर है।

❋ कुछ कुकर्म बहुत से दुर्गुणों को दूषित करने के लिए काफी हैं।

❋ क्रांति बनाई नहीं जाती, वह स्वयं आती है।

❋ कभी भी कामयाबी को दिमाग और नाकामी को दिल में जगह नहीं देनी चाहिए क्योंकि कामयाबी दिमाग में घमंड और नाकामी दिल में मायूसी पैदा करती है।

❋ अपनी सोच कभी भी नकारात्मक नही होने दे। आशावादी होकर ही आप हर मुश्किल से जूझ सकते है, उस पर विजय प्राप्त कर सकते है। अपने अतीत और वर्तमान को आंकलन करना भी तनाव कम करता है और सही सोच में दिशा देता है। दूसरों के संदर्भ में जानना कम करें। अपने आप पर भरोसा रखें। सबसे अच्छा कहलाने के फेर में अपने आपको नहीं मिटा दे। इससे कुछ हासिल नहीं होगा। मसीहा बनने की कोशिश व्यर्थ है। पहले अपना घर रोशन करें फिर मंदिर को। अपने आपको स्वीकार करना सीखें। अपनी कमजोरियों सहित अपनी शर्तों पर जीना जीएं। कभी-कभी समझौता भी करना पड़े तो हर्ज नहीं है। आप अपने को इस काबिल बना ले कि आपकी बातों पर सब कायल। जीवन में व्यवस्थित रहकर अपनी प्राथमिकताएं तय करें और जीयें।

❋ सफलता उन्हीं को मिलती है, जिन्होंने टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडियों पर चलते-चलते राजमार्ग का निर्माण किया है। जिन्होंने सीधा रास्ता खोजा है या दूसरों के बनाए हुए मार्ग पर चले हैं, वे कहीं कुछ नहीं कर पाये। साधक को पुरुषार्थ पर विश्वास और कठोर जीवन जीने में विश्वास होना चाहिए। यह केवल साधना का ही मार्ग नहीं है, यह जीवन जीने की समग्र सफलता का मार्ग है।

❋ भौतिक वासनाओं की तृप्ति जिससे होती है उसे काम कहते है। मानसिक कामनाओं की तृप्ति को अर्थ कहते है। जिनसे मानसिक संतुष्टि मिले वो अध्यात्म है उसको धर्म कहते है और आत्मिक तृप्ति को ही मोक्ष कहते है।

❋ मनुष्य जाति के शरीर और मन में अनेक सीमाओं के रूप में बंधन है। इनमें से कुछ कालगत है, कुछ देशगत है और

कुछ व्यक्तिगत है। इन बंधनों से छुटकारा पा लेनेका नाम ही मुक्ति है। शारीरिक और मानसिक बंधनों के क्षेत्रोंमें कभी भी बंधन नहीं हो सकता।

* जिज्ञासा इन्सान को सत्य तक पहुँचानेवाला मार्ग है।

* ज्ञान की आराधना सत्य की आराधना है।

* धर्म और विज्ञान संपूरक है। मनुष्य को गति विज्ञान से मिलती है जबकि धर्म उसे दिशा प्रदान करता है। धर्म के पास दिशा है, पर गति नहीं। विज्ञान के पास गति है पर दिशा नहीं। यदि जीवन में गति न हो तो जड़ता आ जाएगी और दिशा के अभाव में गतिशीलता जीवन में संकट कर देगी। अत: जीवन में धर्म और विज्ञान का संतुलित समन्वय आज की सर्वोपरि आवश्यकता है।

* हमारे सोचने और समझने की एक निश्चित सीमा है और सत्य उससे कही विस्तृत और बहुरंगी है।

* जो आत्मसंयमी है वही सर्वशक्तिमान है।

* इस पृथ्वी पर कामयाबी ही अच्छे बुरे की निर्णायक है।

* लोगों मे उत्साह बढ़ाने की योग्यता ही सबसे बड़ी सम्पत्ति है।

* मनुष्य के भीतर जो सर्वोत्तम है उसका विकास प्रशंसा और प्रोत्साहन द्वारा ही किया जा सकता है।

* समय कभी बूढ़ा नहीं होता। समय के चेहरे पर न कभी कोई झुर्रियां पड़ती हैं और न ही कोई उसे सुस्ती आती है। समय औरों को जरूर बूढ़ा कर देता है, समय बहुमूल्य है। जो समय एकबार हाथसे निकल गया वह दोबारा लौटकर नहीं आता। समय का सम्मान करने से समय तुम्हें सम्मानित कर देगा। तुम समय नहीं काट रहे हो, समय ही अपने आपकी जिंदगी को पल-पल काट रहा है।

* स्वयं कष्ट तकलीफ का स्वाद चखे बिना किसी दूसरे की विपत्ति का अहसास नहीं हो सकता।

* बुराइयां ग्रहण करना आसान है जबकि सद्‌गुण और अच्छाइयों को ग्रहण करने के लिए यह अनिवार्य है कि व्यक्ति को उचित शिक्षा प्रदान की जाए। उचित शिक्षा व संस्कारी परिवेश से बच्चों का एक अलग व्यक्तित्व विकसित होता है जिससे वे भविष्य में सफलता प्राप्त करते है। जिन बच्चों को संस्कार और शिक्षा नहीं दी जाती वे अधिकतर बुराइयों में लिप्त हो जाते हैं। उनका जीवन स्तर गिर जाता है। इसलिए बच्चों को शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि वे अच्छे भविष्य का निर्माण कर सके।

* असफलता राह का एक मोड़ होता है न कि यात्रा की समाप्ति।

* आपकी असली तुलना केवल अपने आप से है अगर आप स्वयं को बीते कल से बेहतर पाते है तो यह आपकी बहुत बड़ी उपलब्धि है।

* जब हम अपने लक्ष्य से अपनी निगाह हटा लेते है उस वक्त हमारी आंखों के सामने जो कुछ आ खड़ा होता है वह सबसे डरावनी चीज होती है।

* घृणा और नफरत को हजार अवसर दो ताकि वो प्रेम में परिवर्तित हो जाएं लेकिन प्रेम को एक भी मौका ऐसे ना दो कि वो नफरत में बदल जाएं।

* जिंदगी एक खुशी है किसी की सेवा करने में ही खुशी है।

* आपके पास जो कुछ भी हो किसी को भी बढ़ाचढ़ाकर मत बताना और ना ही किसी दूसरे से ईर्ष्या करना। जो दूसरों से ईर्ष्या करता है उसे कभी भी मन की शांति नहीं मिलती।

❋ कभी भी यह न सोचे कि आपको सब कुछ आता है और दूसरे लोग आपसे अधिक मूर्ख है। दिखावट के आधार पर किसी के ज्ञान का अंदाज नहीं लगाएं।

❋ यदि आप अपनी जीवन की मूलभूत जड़ों को विकसित नहीं कर रहे है, उसे प्रेम और विश्वास में फैलने नहीं देते है तो आप विकसित नहीं हो पाओगे बौने ही रह जाओगे। न कभी आप सारभूत मनुष्य और आधारभूत मनुष्य बन पाओगे। जब आपकी जड़ें विकसित होकर गहराइयों में पहुँचेगी, तब आपकी शाखाएं विकसित होकर ऊंचाई की ओर बढ़ेगी। गहराई और ऊंचाई मनुष्य की जीवन में दोनों साथ-साथ बढ़ती है।

❋ हमारे वचन जीवन में कितने श्रेष्ठ क्यों न हो, परन्तु दुनिया हमें हमारे कर्मों से ही पहचानती है।

❋ जनता एवं बहुमत आपको किसी प्रकार से संतुष्ट नहीं कर सकते। आपकी आत्मा में अपने परमेश्वर को प्रसन्न करने का प्रयास करो, स्वयं प्रसन्न रहो। तभी आत्मदेवता प्रसन्न होंगे तो सभी लोग आपसे अवश्य संतुष्ट हो जाएंगे।

❋ जो हाथ से छूटे उसका नाम त्याग है और जो मन से छूट जाएं उसका नाम वैराग्य है। त्याग से वैराग्य बड़ा है। जो अपने तन, धन संभालने को लगा हुआ है वह तो संसारी है। जो मन और जीवन को संभालने में लगा है वह सन्यासी है। अपना मन ईश्वर के सिवा किसी को मत देना। दुनिया को मन दिया तो मन खट्टा हो जाएगा। मन पर मर्जी सिर्फ ईश्वर की चलती है।

❋ हे भगवान, हम अगर वो न कर सकें जो आप चाहते हैं तो हमें इतनी समझ जरूर देना, कि हम वो कभी न करें जो आप नहीं चाहते है।

❋ ईश्वर के घर का दरवाजा किसी के लिए बंद नहीं होता। अगर वो बन्द हो जाएं तो वह ईश्वर ही नहीं है।

❋ ऐसी कोई वस्तु नहीं जो अभ्यास से न पायी जा सकती हो।

❋ वह अभागा है जो संसार के सबसे पवित्र धर्म कृतज्ञता को नहीं पहचानता और भूल जाता है।

❋ असल सम्पत्ति वही है जिससे दूसरे लोगों का भला होता हो।

❋ मनुष्य को शक्तिशाली बनने के लिए संयम रखना सबसे आवश्यक है।

❋ समय-समय पर प्रयत्न करना आगे की बहुत सी मुश्किलों को बचा लेता है।

❋ ईर्ष्या करनी है तो ईश्वर से करो पड़ोसी से और भाई से ईर्ष्या करने से क्या फायदा। जब तुम ऊंचे उठोगे तो तुम्हें दुनिया देखे। जब तुम दुनिया में न रहो तब भी लोग आपको आदर्श मानें और सम्मान की दृष्टि से याद करे।

❋ वक्त गतिशील है बदलते रहता है। आदमी जन्मता है, जीता है, मर जाता है। वक्त को बदलने में देर नहीं लगती। वक्त गुजर जाता है। बुरा वक्त भी कभी नहीं थमता। कभी वक्त किसी का हुआ है जो आपका होगा।

❋ गरीब का कोई मित्र नहीं होता। लोग सीरत नहीं सूरत देखते हैं। इज्जत मनुष्य की नहीं पैसों की होती है। जिसको सबसे ज्यादा प्रेम करते हैं वही सबसे ज्यादा दु:ख देता है।

❋ जिस राहपर आप नफरत बोते जाएंगे आपकी अगली पीढ़ी भी उसी राहसे आयेगी।

❋ यदि आपके रिश्ते में पूरी तरह से विश्वास, ईमानदारी और समझदारी है तो इन्हें निभाने के लिए वचन, कसम, शपथ, नियम और शर्तों की कोई आवश्यकता नहीं।

❋ जब आपको लगे कि आपकी दूसरों के साथ नहीं बनती तो दोष उनका नहीं है अपने में दोष ढूंढो।

❋ खुश रहने के लिए हमें बहुत सी चीजों को भूलना पड़ता है हमें भूलने की कला सीखनी चाहिए।

❋ प्रेम सदा देता ही है, बदले में कुछ खोता नहीं और बदले में किसी से कुछ माँगता नहीं और उसे किसी बात का भय नहीं।

✻ अपना कर्त्तव्य हमेशा उत्तम रीति से करना चाहिए, अंत में आप पूर्णता पर पहुँच जाएंगे।

✻ करुणा में शीतल अग्नि होती है जो क्रूर से व्यक्ति का हृदय भी आर्द्र कर देती है।

✻ कामयाबी बड़ी नहीं होती उसे पानेवाले बड़े होते है। जख्म बड़े नहीं होते उसे भरनेवाले बड़े होते है, रिश्ते बड़े नहीं होते उसे निभानेवाले बड़े होते है।

✻ कोई अगर आपका अपमान करके आपको नीचा दिखाना चाहता हो तो इसका अर्थ है कि आप उससे कही गुना ऊपर है।

✻ माँगो तो ईश्वर से माँगो जो देवे तो कृपा और न देवे तो किस्मत। लेकिन इस संसार में कभी कुछ मत माँगना देवे तो एहसान और न दे तो शर्मिंदगी।

✻ लोगों मे कमी निकालने का काम हमारा नहीं है हमारी दृष्टि है। हमारी दृष्टि रुचि, विचार और नजरिए की दृष्टि है। इसे बदलना चाहिए। आसपास के लोगों में गलती निकालना बन्द करना चाहिए यह अपनी सोच होती है हर व्यक्ति अच्छा होता है उसमें उसकी खूबियां तलाशनी चाहिए।

✻ ऊँचे पहाड़ पर पहुंचने के लिए धीरे-धीरे चलना चाहिए। विश्वास में बड़ी शक्ति है। भरोसा हमेशा कामयाबी तक पहुँचाता है। मेहनत और लगन से काम करनेवाला नामुमकिन बातों की हंसी उड़ाता है दुनिया में कुछ भी नही नामुमकिन। कदम बढ़ाते रहना चाहिए एकदिन नामुमकिन भी मुमकिन हो जाता है और कामयाबी की दौलत प्राप्त करता है।

✻ योग्यता वो है जो आप कर सकते हैं। प्रेरणा बताती है कि क्या करना है और आपकी दृष्टि बताती है कि आप उसे कितनी अच्छी तरह से कर सकते हैं।

✻ मेहनत करने से दरिद्रता नहीं आती, धर्म करने से पाप नहीं होता, मौन रहने से कलह नहीं होती और जागते रहने से भय नहीं लगता।

✻ संत और गृहस्थ- संत का भोजन नीरस होता है मगर उसका जीवन सरस होता है। गृहस्थ का भोजन सरस होता है लेकिन जीवन नीरस होता है। गृहस्थ जीवन में सुविधाएँ तो पूरी है मगर सुख थोड़ा भी नहीं। संतों के जीवन में सुविधाएं तो कुछ भी नहीं है मगर सुख भरपूर है। गृहस्थ साधनों में जीता है और संत साधना में जीता है। वासना का विनाश उपासना से होता है और उपासना का जन्म साधना से होता है। साधना से सिद्धि मिलती है और सिद्धि से प्रसिद्धि प्राप्त होती है। जो स्वाद और स्वार्थ से भरा हुआ है वह गृहस्थ है और जो स्वाद और विवाद से परे है वह संत है।

✻ आपका भरोसा तैतीस करोड़ देवी-देवताओं पर तो है लेकिन आपको खुद पर विश्वास नहीं तो आप किसी भी काम के नहीं। खुद पर विश्वास करना सीखो, अड़िग रहो, मजबूत बने रहो। स्वयं में इसीकी जरूरत है।

✻ जगह बदलने से कुछ नहीं होता। स्वभाव बदलने की आवश्यकता है। स्वभाव बदला जायेगा तो फिर जगह बदलने की जरूरत नहीं होगी। आप परिस्थिति को नहीं बदल सकते अपनी मनस्थिति को बदलना पड़ता है।

✻ अपनी बात कहने के लिए अपनी भलमनसाहत छोड़ने की आवश्यकता नहीं। भलमनसाहत कोई कमजोरी नहीं है। अच्छा होने का मतलब यह नहीं कि आप कोई काम ही नहीं कर पा रहे है। अच्छे होने का मतलब यह भी नहीं की कोई हमें कहीं भी हांककर ले जाए। अगर जो काम हम कर रहे वो सही हो तो हमें किसी तरह की झिझक भी नहीं। भलमनसाहत का मतलब यह है कि हम कोई गलत काम करेंगे नहीं और कोई भी काम करते हुए मानवता का खयाल रखेंगे। मानवीय पहलू को नजरअंदाज नहीं होने देंगे। यह करते हुए सही और गलत की समझ हमेशा बनी रहेगी। हम किसी बुरी भावना के तहत कोई काम नहीं करेंगे।

* काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकार से भरे दु:खी मनुष्यों को जो लोग अपनाते है और उनको ऐसे मनुष्यों में बदल देते है, जो अहिंसा, पवित्रता, नम्रता, सच्चाई को प्रेम से भरे हो। वे सब यह दिव्य प्रेम की शक्तियों से करते है।

* माता-पिता के प्रेम के द्वारा एक बच्चा बोलना और चलना सीखता है, अध्यापक के प्रेम से बच्चा पढ़ना सिखता है, एक प्रशिक्षक प्रेम के द्वारा हम कही हुनर, प्रतिभा कौशल सीखते है। एक अध्यात्मिक गुरु के दिव्य प्रेम से हम अध्यात्मिक बन जाते है।

* जब कोई व्यक्ति अपनी मर्यादा की सीमा रेखा को तोड़कर आगे बढ़ने की कोशिश करता है तभी विवाद और क्लेश उत्पन्न होता है। संसार में रिश्तों की डोर का निर्माण मर्यादा की रक्षा के लिए किया गया है। यही सामाजिक जीवन का आधार भी है। जब कोई मर्यादा का उल्लंघन करता है तब सामाजिक व्यवस्था बिगड़ने लगती है और उसका अपमान होता है। जब कोई किसी के साथ अमर्यादित व्यवहार करता है तो उसे भी अमर्यादित व्यवहार ही प्राप्त होता है।

* संस्कार ही जीवन की नींव और आधार है। नींव को मजबूत बनाकर बच्चों को संस्कारी, आदर्श नागरिक व सच्चा व्यक्ति बनाया जा सकता है। इसके लिए बड़े बूढ़ों का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

* व्यक्तियों में आध्यात्मिकता की भावना प्रबल होती है, उनमें जीवन के प्रति निराशा कम हो जाती है। इनमें अवसाद कम पाया जाता है और शीघ्र मौत की कामना नहीं करते। विश्वास की तुलना में जीवन के सार्थक होने का विश्वास, जीवन के अंतिम दिन गुजार रहे लोगों में व्याप्त निराशा को मिटाने में ज्यादा कारगर होता है।

* धर्म करते हुए मर जाना अच्छा है पर पाप करते हुए विजय प्राप्त करना अच्छा नहीं।

* जिसका निश्चय दृढ़ और अटल है वह दुनिया को अपने सांचे में ढाल सकता है।

* जब तक मन नहीं जीता जाता और राग द्वेष शान्त नहीं होते, तब तक मनुष्य इन्द्रियों का गुलाम बना रहता है।

* साहस के बिना विद्या उस मोम के पुतले के समान है जो देखने में तो सुन्दर लगता है मगर किसी वस्तु के छूते ही पानी हो जाता है।

* लोग जल्दी से इसलिये विकास नहीं कर पाते क्योंकि बाहर की विचारधाराओं का बहुत बड़ा बोझ हिमालय की तरह उनकी पीठ पर लदा होता है।

* प्रतिकूल या विषम परिस्थिति ही मनुष्य की प्रतिभा को उजागर करती है और समृद्धि में प्रतिभाओं का लोप हो जाता है। सफल व्यक्ति विषमताओं में भी अवसर खोज लेता है। यदि मनुष्य, समाज या राष्ट्र चाहे तो विनाश को विकास में तथा अकाल को भी कला में बदल लेना उसके लिए असंभव नहीं है। रोजगार और कलाओं की उन्नति के साथ विज्ञान भी समस्याओं के समाधान के लिए आगे बढ़ता है। समस्याएं या कठिनाइयां जीवन का स्वाभाविक कर्म है। यह प्राकृतिक भी हो सकती है मनुष्य निर्मित भी। अकाल, बाढ़, भूकंप, महामारी, जंगलों की आग, ज्वालामुखी का विस्फोट, तूफान और सूनामी इस तरह की न जाने कितनी प्राकृतिक आपदाओं से मनुष्य अपने अस्तित्व के आरंभिक काल से ही झेलते आया है। आज के वैज्ञानिक युग में असावधानी और यांत्रिक गड़बड़ीयों के कारण भी अनेक तरह की आपदाएं आती है। न जाने कितनी तरह की दूसरी दुर्घटनाएं घटित होती रहती है। जीवन की हर समस्या किसी बड़े लाभ के लिए अवसर प्रस्तुत करती है। केवल व्यक्ति के लिए ही नहीं, लेकिन समाज, राष्ट्र तथा विश्व के संदर्भ में भी उतनी ही सही है। आपदाएं हमारी सामूहिक सोच का परिणाम होती है। जब सामूहिक सोच अपनी विकृतियों के साथ संलग्न हो जाती है तब प्रकृति व्यग्र होकर इस प्रकार की आपदाओं को अंजाम देती है। यदि इच्छाशक्ति हो तो कठिनाइयों में भी विकास हो सकता है।

❋ किसी-किसी समय जब हमारे सद्भाव पराजित हो जाते हैं, तब दुष्परिणाम का भय ही हमें कर्मच्युत होने से बचा लेता है।

❋ दुर्दिन में मन के कोमल भावों का सर्वनाश हो जाता है और उनकी जगह कठोर पाशविक भाव जागृत हो जाते हैं।

❋ शम, विचार, सन्तोष और सत्संग यह मोक्ष के चार द्वारपाल है।

❋ आत्मविश्वास जैसा दूसरा मित्र नहीं है। आत्मविश्वास ही भावी उन्नति की प्रथम सीढ़ी है।

❋ साहसहीन और आलसी मनुष्य दैव के भरोसे रहता है, परिश्रम नहीं करता।

❋ जब तक मन अस्थिर और चंचल है, तब तक अच्छे गुरु और साधु लोगों की संगति मिल जाने पर भी किसी को कोई लाभ नहीं होता।

❋ आज का मनुष्य पहले तो अपनी इच्छाएं बढ़ा लेता है और फिर उसे पूरा करने के लिए दौड़ता है। इच्छा को जितना बढ़ाओगे उतनी वह बढ़ती जायेगी। जो लोग समझदारी से चलते है उनकी मंझिल नजदीक होती है और जो लोग अंधाधुंध दौड़ते है वह अक्सर कही न कही गिर जाते है। कुछ भी किसीके साथ नहीं गया है सब यही कही धरा रह गया। इच्छाओं को पनपने देना ठीक नहीं होता है। दुनिया के पास तो बहुत कुछ है लेकिन इच्छाओं की पूर्ति कोई नहीं कर सकता। इच्छाएं अच्छे भले इंसान को भी भोगी बना देती है भोगी के बाद व्यक्ति रोगी बन जाता है। मनुष्य को अपनी चादर देखकर ही पैर पसारनी चाहिए इच्छाओं को अपने नियंत्रण में रखो तभी जीने का आनंद आयेगा। मनुष्य गुजरते लम्हों के साथ अपने दिल में हजारों ख्वाहिशें पैदा कर लेता है, जिसका वक्त गुजर जानेपर भी पूरा होना मुश्किल ही नहीं बल्कि नामुमकिन होता है। अक्सर छोटी-छोटी ख्वाहिशें जिंदगी को इस कदम उलझा देती है कि उनसे बाहर निकलना बहुत मुश्किल होता है। इसकी वजह से उसकी जिंदगी का हकीकी मकसद ही खत्म हो जाता है। उम्मीदें या आरजूएं इन्सानी जिंदगी की सीढ़ी है जिनपर कदम रखकर वो अपनी मंझिल तक पहुंचता है।

❋ अधिक सांसारिक ज्ञान अर्जित करने से अहंकार आ सकता हजै, परन्तु आध्यात्मिक ज्ञान जितना अधिक अर्जित करते हैं उतनी ही नम्रता आती है।

❋ मनुष्य की सबसे बड़ी दौलत उसका शिष्टाचार है। महिला की सबसे बड़ी सम्पत्ति उसकी इज्जत है। ज्ञानी की सबसे बड़ी दौलत ईश्वर को पहचानना है और विद्यार्थी की सबसे बड़ी दौलत उसका ज्ञान और उसकी शिक्षा है।

❋ किसी भी राज को दुश्मन से छुपाना हो तो उस राज को अपने कोई करीबी दोस्त के सामने बयान मत करो।

❋ हर व्यक्ति अपना सुधार खुद करे तो समाज और परिवार खुद ब खुद सुधर जायेगा।

❋ जो क्षमा का सबक जानता है उससे ईश्वर भी खुश रहता है।

❋ जो व्यक्ति मुसीबत का बोझ आसानी से उठा सकता है वही सबका प्रिय है।

❋ अपनी हद से ज्यादा किसी से उम्मीद मत करो। कम की आशा रखना और ज्यादा खयाल करना सफलता की कुंजी है।

❋ जो व्यक्ति बिना श्रम किये किसी वस्तु को प्राप्त कर लेता है वह वस्तु के वास्तविक मूल्य को नहीं समझ सकता। श्रम के जरिए प्राप्त उपलब्धि स्थायी होती है और बिना श्रम के प्राप्त होनेवाली उपलब्धि अस्थायी होती है। व्यक्ति बिना श्रम उन्नति नहीं कर सकता। श्रम के प्रति निष्ठा नही होने का परिणाम है यह आतंकवाद, घोटाले, भ्रष्टाचार बढ़ रहे है। हर व्यक्ति किसी भी तरह बिना श्रम किये अधिकाधिक धन चाहता है। श्रमशील व्यक्तियों को न बाधा सताती है और न भाग्य का भय होता है। ऐसे व्यक्ति आत्मविश्वास के पुण्यकार्य करते है। श्रमहीन व्यक्ति न प्रगति कर सकता है और न किसीको सुख दे सकता है।

❋ जो दूसरों के जख्मों पर मरहम लगाता है उसके खुद के जख्मों के भरने में देर नहीं लगती। यदि कोई किसी को किसी

भी प्रकार की पीड़ा से मुक्त करता है तो पीड़ित को बड़ी राहत मिलती है। वह पीड़ा कम करनेवाले के प्रति कृतज्ञता से भर उठता है और आशीर्वाद दुआयें देने लगता है। दूसरों के जख्मों पर नमक छिड़कने या उन्हें कुरेदने की अपेक्षा उनके जख्मों पर मरहम लगाते रहना चाहिए इससे आप स्वस्थ्य और सुखी बने रहेंगे।

* सकारात्मक विचार लोककल्याण और परमार्थ के भाव व्यक्ति जीव रासायनिक संरचना को परिवर्तित कर देते है।

* कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी विवेकशील व्यक्ति संकट से उभर सकता है।

* बदलते सामाजिक ढांचे एवं भागमभाग की जिन्दगी के चलते अधिकांश व्यक्ति तनावग्रस्त एवं किसी न किसी समस्या से ग्रस्त नजर आते हैं। तनाव और समस्याओं से ग्रस्त अनेक लोग मनोविकारों से ग्रस्त हो जाते हैं। कुछ लोग तो आत्महत्या तक कर लेते हैं। तनाव और समस्याएं काफी सीमा तक स्वयं व्यक्ति द्वारा उत्पन्न होती हैं। किसी समस्या का समाधान ढूंढने के लिए मनुष्य को अपने स्वविवेक का प्रयोग करना चाहिए। यदि किसी कारणवश वह स्वयं समस्याओं का समाधान करने में सक्षम सिद्ध नहीं होता है तो उसे किसी योग्य एवं बुद्धिमान व्यक्ति से राय अवश्य ले लेनी चाहिए। किसी समस्या के समाधान के लिए किसी व्यक्ति से सलाह-मशविरा करने में हीन भावना उत्पन्न नहीं होनी चाहिए।

* कुछ बनकर दिखाना चाहिए किसीपर बोझ बनकर नहीं बल्कि बहादूर बनकर जीना चाहिए। कभी भी अपने को असहाय, कमजोर और किसी से कम नहीं समझना चाहिए। स्वावलंबी बनो और परिस्थितियों का सामाना करो। हिम्मत और मेहनत से सबकुछ हासिल हो जाता है।

* नशा डाकू की तरह है जो पकड़ लेता है वह छोड़ता नहीं। डाकू तो लूटकर ही जायेगा नशा भी लूटेरा है। सिगरेट का नशा बुरा है। सिगरेट का जलना जिंदगी का जलना है। इसका हर कश जिंदगी को छोटा करता है।

* हौसला कामयाबी का प्रतिक है।

* ख्वाबों के अंदर जिंदा रहना मत सीखो बल्कि अपने ख्वाबों को जिंदा देखो।

* समझदार लोग फिजूल की बातोंपर ध्यान नहीं देते और मूर्ख हमेशा अपनी ही हांकते रहता है।

* अच्छी बातें ऐसा फूल है जिसकी सुगंध चारों ओर फैलती है और कभी नहीं मुरझाती।

* मौन गुस्से का बेहतरीन राज है।

* शोहरत व काबिलियत कभी भी खत्म हो सकती है। आपकी दौलत आपसे कभी भी छीनी जा सकती है पर आपका सच्चरित्र आपका साथ हमेशा निभायेगा।

* बुरे साथी के साथ बैठने की उपेक्षा अकेलापन बेहतर है और अच्छे साथी के पास बैठना तन्हाई से बेहतर है। अच्छी बात जबान से निकालना खामोशी से बेहतर है और बुरी बात जबान निकलने से खामोश रहना बेहतर है।

* सच बोलने का आनंद जब ही है जब मनुष्य में सच बात सुनने की बर्दास्त हो।

* जब नाखून बढ़ जाते हैं, तब नाखून ही काटे जाते हैं उंगलियां नहीं। उसीप्रकार रिश्ते में दरार आ जाए तो दरार को मिटाना चाहिए रिश्ते को खत्म नहीं करना चाहिए।

* अपना कर्त्तव्य उत्तम रीति से निभाना चाहिए, इससे आपको पूर्णत: प्राप्त होती है।

* खुश रहने के लिये हमें बहुत सी चीजों को भूलना पड़ता है, त्याग करना पड़ता है हमें भूलने की कला आनी चाहिए।

* हमें बहुत सी बातों का ज्ञान है किंतु उससे बेहतर है कि अपने थोड़े बहुत ज्ञान का हम उत्तम प्रयोग करें।

* सबसे बड़ा दीन-दुर्बल वह है, जिसका मन अपने नियंत्रण में नहीं है।

* स्वर्ग का साम्राज्य आपके भीतर ही है पुस्तकों में, मंदिरों में, तीर्थों में, पहाड़ों में, जंगलों में आनंद की खोज करना व्यर्थ है। खोज करना ही हो तो उस अन्तस्थ आत्मानंद का खजाना खोल देनेवाले किसी तत्ववेत्ता महापुरुष की खोज करो।

* यदि कहीं सुख है जीवन में तो बचपन में या सोने में, बाकी जिंदगी तो बीत जाती है कभी हंसने में कभी रोने में।

* जब हम ईश्वर से विमुख होते हैं तब हमें कोई मार्ग नहीं दिखता और घोर दु:ख सहना पड़ता है जब हम ईश्वर में तन्मय होते हैं तब योग्य उपाय, योग्य प्रवृत्ति, योग्य प्रवाह अपने-आप हमारे हृदय में उठने लगता है।

* मनुष्य का जीवन एक महानदी की भाँति है जो अपने बहाव द्वारा नवीन दिशाओं में राह बना लेती है।

* जब दूसरों की मौजूदगी से तुम ऊब जाओ, परेशान हो जाओ तो उचित है कि आंख बंद कर लो और अपने में खो जाओ। वहां से पाओगे ताजगी।

* यदि तुम ईश्वर को अपने विचारों और उद्देश का एकमात्र केंद्र रखोगे, तो तुम सर्वोच्च लक्ष्य प्राप्त करोगे।

* सौंदर्य व्यक्त भी है और अव्यक्त भी है। साकार की सीढ़ियां चढ़कर ही आप निराकार सौंदर्य को देख सकते है।

* हर चुनौती में हमारा पहला संघर्ष स्वयं से होता है। जब हम खुद इस बात पर समझ लेते है कि हम ये कर सकते है तो फिर जीत आसान हो जाती है।

* अपने विषय में कुछ कहना वह बहुत कठिन हो जाता है क्योंकि अपने दोष देखना अपने आपको अप्रिय लगता है और उनका अनदेखा करना औरोंको।

* विश्वास वो शक्ति है जिससे उजड़ी हुई दुनिया में भी प्रकाश किया जा सकता है।

* उत्तम विचार यूं ही नहीं आ जाता है उनके लिये गम्भीर चिंतन करना पड़ता है।

* जैसे अंधे के लिए जगत अंधकारमय है और आँखों वाले के लिए प्रकाशय है वैसे ही अज्ञानी के लिए जगत दुखदायक है और ज्ञानी के लिए आनंदमय।

* अनुभव, ज्ञान उन्मेष वयस्क मनुष्य के विचारों को बदलते हैं।

* नेकी से विमुख हो जाना और बदी करना नि:संदेह बुरा है, मगर सामने हंसकर बोलना और पीछे चुगलखोरी करना उससे भी बुरा है।

* मनुष्य क्रोध को प्रेम से, पाप को सदाचार से लोभ को दान से और झूठ को सत्य से जीत सकता है।

* जय उसी की होती है जो अपने को संकट में डालकर कार्य संपन्न करते हैं। जय कायरों की कभी नहीं होती।

* मित्रों का उपहास करना उनके पावन प्रेम को खंडित करना है।

* कोई आदत महत्वपूर्ण नहीं होती है, महत्वपूर्ण तब बन जाती है जब वह मालिक बन जाएं तब बहुत खतरनाक भी हो जाती है।

* त्यौहार साल की गति के पड़ाव हैं, जहां भिन्न-भिन्न मनोरंजन हैं, भिन्न-भिन्न आनंद हैं, भिन्न-भिन्न क्रीड़ास्थल हैं।

* अपने बच्चों को सुरक्षित भविष्य देने के लिए सिर्फ पैसे मत बनाएं, उनके रहने लायक देश भी बनाएं।

* मुस्कान और जोश जिन्दगी के दो जबर्दस्त डेबिट कार्ड हैं, भुगतान अभी करो, इस्तेमाल बाद में। क्रोध और अहंकार जिन्दगी के दो जबर्दस्त क्रेडिट कार्ड हैं, इस्तेमाल अभी करो भुगतान बाद में।

* जिन्दगी का सबसे बुरा लम्हा वो हैं, जब कोई अपना आपको इतना दु:खी कर दे कि आंखें भर आएं, और जब वो ही पूछे कि क्या हुआ, तो आपको मुस्कराकर कहना पड़े कुछ नहीं।

HHH(३००)HHH

✻ रिश्ते पानी जैसे होते है, कोई आकाश नहीं, कोई आयतन नहीं, मगर पानी नहीं, तो जीवन नहीं, इसी तरह रिश्ते भी नहीं, तो जीवन नहीं।

✻ जिसे जीत लिए जाने का भय होता है उसकी हार निश्चित होती है।

✻ कोई अच्छा कार्य करो तो उसका श्रेय अपने पास नहीं रखना। उसका श्रेय अपने माँ-बाप को देना, अपने प्रभु, अपने गुरु को दे देना। श्रेय अपने पास रखोगे तो इससे अहंकार पैदा होगा और कभी कोई काम बिगड़ जाये तो उसकी जिम्मेदारी खुद अपने ऊपर ले लेना। इससे भूल सुधार तो हो ही जायेगी, एक बड़े पाप से भी बच जाओगे। लेकिन तुम इतने बेईमान हो कि कुछ भी अच्छा हुआ तो कहते हो मेरी वजह से हुआ है और कभी कुछ बुरा हो तो उसके लिए कभी पत्नी को, कभी बच्चों को तो कभी किसी और को जिम्मेदार ठहराते हो। यह नाइंसाफी है।

✻ अच्छी योजना बनाना बुद्धिमानी का काम है पर उसको ठीक से पूरा करना धैर्य और परिश्रम का।

✻ कहने को शब्द हवा में उठती तरंग के सिवा कुछ नहीं। वातावरण में उनका अस्तित्व नहीं पर कानों द्वारा हृदय में उतरकर वे स्थापित हो जाते हैं। शब्द में बहुत ताकत है। शब्द ही मारे, शब्द ही तारे, शब्द संवारे। हमारी जुबान को सिर्फ दो वर्ष लगते है बोलना सीखने में, पर कहां, कब, कैसे और कितना बोलना है, ये सीखने में एक उम्र निकल जाती है। बिना सोचे समझे दिये गये शब्द पर कभी-कभी हम जीवनभर पछताते हैं, जवाबदेह होते हैं। हमें भगवान ने कर्म और शब्द दोनों के लिये मुक्त नहीं बनाया। दोनों का बीज सृष्टि में पड़ते ही फलता है। हमारे द्वारा बोले गये शब्द ही हमें ऊपर या नीचे बिठाते हैं। सभा में व्यर्थ ही बकबक करनेवाले की बजाय जो सबकी सुनकर, विचारकर अपनी राय अंत में देता है, सब उसकी राय की राह देखते हैं, महत्व भी देते हैं। द्रौपदी ने कहा अंधे का बेटा अंधा और वंश का नाश हो गया। हमारे बोल कभी किसी के हृदय में घाव कर देते हैं, कभी किसी को उकसा देते हैं। किसी महापुरुष का वचन वर्षों तक ठंडक पहुंचाता है, किसी के ममता भरे शब्द मरहम का काम करते हैं। अच्छा बोलिए पर असत्य नहीं। कबीर ने कहा है ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय। औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय। ये दो वाक्य जो व्यक्ति चरित्र में उतार ले उसका उद्धार हो जाएं।

✻ सफलता के नशे में मनुष्य अपना विवेक खो देता है और स्वयं को संकट में डाल लेता है।

✻ दुनिया में हर कोई दुखी है। बेहतर है कि दुखों से संघर्ष करके सुख की खोज की जाए।

✻ ईश्वर ने आप सब में भी यह योग्यता दी है कि आप एक छोटे से प्रयास से रोज किसी न किसी के जीवन में छोटा सा अंतर ला सकते हैं। जैसे किसी भूखे पशु या मनुष्य को भोजन देना, किसी जरूरतमंद की नि:स्वार्थ सहायता करना इत्यादि। आप अपनी किस योग्यता से इस समाज को, इस संसार को क्या दे रहे हैं? क्या दे सकते है।? आपको यही आत्मनिरीक्षण करना है और फिर अपनी उस योग्यता को पहचान कर रोज किसी न किसी के मुख पर मुस्कान लाने का प्रयास करना है। ऐसा करने से सबसे अधिक लाभान्वित आप ही होंगे। ऐसा करने से अधिक अंतर आपको अपने भीतर महसूस होगा। ऐसा करने से सबसे अधिक अंतर आपके ही जीवन में पड़ेगा।

✻ मनुष्य अपनी दृष्टि के अनुसार ही जीवन के किसी प्रसंग की व्याख्या करता है और उसी के अनुरूप कार्य करता है और उसी के मुताबिक फल भी भोगता है। दृष्टि से ही मनुष्य के स्वभाव का भी पता चलता है।

✻ किसी महापुरुष के विचारों को अपने आचरण में जीना ही उसके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होती है। इससे उस महापुरुष के ज्ञान की ज्योति चारों तरफ फैलती है और इसका लाभ न सिर्फ उसके अनुयायियों को बल्कि समाज के हर व्यक्ति को मिलता है।

✻ आपको जीवन के मूलभूत गुणों का ज्ञान है, लेकिन मात्र ज्ञान से काम नहीं चलता। उन गुणों को अपने जीवन में भी उतारना चाहिए।

✻ देश का दु:ख किसी भी दु:ख से बड़ा होता है। जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं।

✻ जो गरीबों का खयाल नहीं रखतें, वे स्वयं भी भोजन के अधिकारी नहीं है।

✻ वही व्यक्ति जीवन में सफल हो सकता है जो सबसे ज्यादा अपने ऊपर विश्वास करता हो।

जीवन का एक-एक क्षण बहुमूल्य है, पर लोग उसे वासना और तृष्णा के लिए कोड़ी के मोल गंवाते हैं।

✻ जो सोता है, उसका भाग्य सोता है, जो बैठता है, उसका भाग्य बैठता है और जो चलता है, उसका भाग्य चलता है।

✻ केवल प्रकाश का अभाव ही अन्धकार नहीं, प्रकाश की अति चमक और उजाला भी आंखों के लिये अंधकार है।

✻ इस दुनिया में इतना कोई धनी नहीं हुआ जो अपने अतीत को खरीद सके इसलिये जीवन का हर क्षण आनन्द से जीओ, कहीं अवसर हाथ से न निकल जाये।

✻ व्यक्तित्व को परिष्कृत करने के लिये शिक्षा बहुत जरूरी है।

✻ अनुभवों की पाठशाला में जो पाठ सिखाये जाते है वह पुस्तकों और शिक्षालयों से नहीं सीखे जाते।

✻ जैसे जल और अग्नि एक साथ नहीं रह सकते वैसे ही धर्म और क्रोध एक साथ नहीं रह सकते।

✻ जीवन को आदर से जीना, खुशी से जीना, आनन्द से जीना, सौन्दर्य से जीना ही आस्तिकता व धार्मिकता है।

✻ बिना पतवार के तो नाव भी पार नहीं ले जा सकती।

✻ हर कोई अपनी प्रशंसा सुनना चाहता है, हमें अपनी आलोचना सुनना कभी भी पसन्द नहीं।

✻ विपरीत परिस्थितियों में भी ईमान, साहस, धैर्य को बरकरार रखना चाहिए।

✻ उद्यमी व्यक्ति योग्य न होने पर भी योग्य बन जाता है।

✻ जिन्दगी जब नियमों में बंध जाती है तो चमत्कार होते हैं।

✻ उजाला एक विशस है, ये हमें साहस और निर्भयता भरता है।

✻ सफलता का राज है जब भी अवसर आये तो उसके लिये तैयार रहे।

✻ जब तक पानी में गिरते नहीं तब तक तैरना नहीं आता।

✻ आप अपनी जिंदगी जीने के लिये स्वयं उत्तरदायी है, किसी अन्य पर इसका दोषारोपण न करें।

✻ मनुष्य का लक्ष्यविहीन जीवन व्यर्थ है।

✻ मनुष्य की सबसे बड़ी गलती यही है कि अपनी किसी गलती को नहीं मानता।

✻ सफल नेतृत्व के लिये साहसी व ईमानदार व्यक्ति की आवश्यकता होती है।

✻ जो सत्य विषय है वे तो सब एक से है, झगड़ा तो सिर्फ झूठे विषयों का होता है।

✻ समय के साथ सामाजिक मान्यताओं का बदलना निश्चित है।

✻ कर्म तो सभी करते हैं लेकिन इतिहास राजकुमार ही रचते है।

✻ कोई समाज तभी समृद्ध होता है जब वह जीवन को स्वीकार कर लेता है, जीवन के बहुरंगी रूप है, पोषाख भी सुन्दर है, शरीर भी स्वस्थ और सुन्दर है, जीवन भी रंगीन और सुन्दर है, भोजन में भी रस है, संगीत भी कर्णप्रिय है, साहित्य में भी रस है, जब जीवन सब रंगों से भरा होता है तो जीवन समृद्ध होता है।

* जीवन और रूप सौन्दर्य बिजली की चमक की तरह चंचल होते हैं।
* अविश्रान्त क्रियाशीलता ही पुरुषार्थ का लक्षण है।
* दु:ख एक शिक्षा है और सुख एक परीक्षा है।
* परिस्थिति नहीं दृष्टि और सोच महत्वपूर्ण होती है।
* विश्व का इतिहास केवल महापुरुषों का जीवन चरित्र है।
* सच्चरित्र और निस्वार्थ लोक सेवा ही किसी राष्ट्र को उन्नत कर सकती है।
* भविष्य से डरो मत और अतीत पर रोओ मत।
* आप यह कभी न भूलें कि आप कहां से आये है लेकिन यह हमेशा जान ले कि आप कहां जा रहे है।
* सिर्फ किस्मत पर भरोसा करनेवालों से कामयाबी कोसों दूर रहती है।
* हालात से कभी समझौता मत करो बल्कि उठकर पुरुषार्थ करो।
* कामना सरलता से लोभ बन जाती है और लोभ वासना बन जाती है।
* चातक भी उन्हीं बादलों का स्वागत करता है जिनमें पानी भरा होता है।
* समस्या चाहे कैसी भी हो उसे परीक्षा समझकर समाधान करना चाहिए।
* लोकसेवा की भावना पद व सत्ता तक ले जाती है और पद व सत्ता मिलनेपर लोकसेवा की भावना समाप्त हो जाती है।
* मनुष्य की प्रामाणिकता ही उसका सच्चा सौंदर्य है।
* टूटे हाथों से काम तो हो सकता है पर टूटे दिल से नहीं।
* विज्ञान धर्म के बिना लंगड़ा है और धर्म विज्ञान के बिना अंधा है।
* ईश्वर नजर नहीं आता सिर्फ वो ही नजर आता है जब कुछ नजर नहीं आता।
* अपने पूर्वजों को अमर बनानेवाली किताबें अमर होती है।
* मनुष्य का जीवन एक नदी की भांति है जो अपने बहाव द्वारा नई दिशाओं में राह बना लेती है।
* अकेले की कोई बात नहीं सुनता, समूह में आवाज उठानी चाहिए।
* झूठ के कई मुखौटे होते है, सच का केवल एक ही रूप होता है।
* नेतृत्व उसी व्यक्ति को मिलता है जो खड़ा होकर सही ढंग से अपने विचार व्यक्त कर सके।
* जब तक मनुष्य प्रयास करता है उसके लिये कुछ भी असम्भव नहीं है।
* साकारात्मक विचार और उचित अपेक्षायें ही सही लक्ष्य को पा सकती है।
* हर व्यक्ति यदि सन्तुलित तरीके से आचरण करे तो समाज में सुख-शांति बनी रहेगी।
* जीवन बहुयामी होना चाहिये उसे विभिन्न रंगों में जीना पड़ता है।
* गुलामों की तरह जीवन जीना मृत्यु के समान है।
* कला का कोई धर्म और भाषा नहीं होती।
* तेज सफर व्यक्ति अकेले ही कर सकता है किसी के साथ दौड़ा नहीं जाता।
* सुख यहां मिलेगा इसी भांति का नाम संसार है।
* परिवर्तन के साथ समझौता करके चलनेवाला मनुष्य सदा सुखी रहता है।

❋ जागरूक चिंतन ही जीवन की परिपूर्ण अनुभूति है।

❋ समस्यायें या कठिनाइयां जीवन का स्वाभाविक क्रम है। यह प्राकृतिक भी हो सकती है या मनुष्य निर्मित भी।

❋ वास्तविकता को स्वीकार करनेवाला मनुष्य ही सफलता को प्राप्त करता है।

❋ ओजस्वी प्रवचनों के श्रवण से मनुष्य की अन्तरात्मा प्रसन्न होती है।

❋ सबको स्नेह करनेवाला कभी किसी का अहित नहीं कर सकता।

❋ सफल नेतृत्व की पहचान विपरीत परिस्थितियों में ही होती है।

❋ मानवता की सेवा ही आध्यात्मिक जीवन की पहली सीढ़ी है।

❋ अन्धकार मेंधैर्य रखनेवाले ही प्रकाश को देख पाते है।

❋ महानता ऊंची पदवी, धन-दौलत से नहीं बल्कि सच्चाई, नेक नियत काबलियत और इन्सानियत से आती है।

❋ लोग नग्न सत्य देखना नहीं चाहते बल्कि उन्हें ढका हुआ असत्य ही अधिक पसन्द है।

❋ रात के भय से सूरज अपनी रोशनी देना बन्द नहीं करता फिर असफलता के डर से हम क्यों अपना काम करना बन्द कर दे।

❋ निडरता स्वतंत्रता की पहली सीढ़ी है।

❋ अनुचित बातों पर आग्रह करनेवाला प्राय: मूर्ख ही होता है विद्वान नहीं।

❋ जीवन में चुनौतियां स्वीकार करने पर ही जीत की खुशी हासिल हो सकती है।

❋ जिसकी बुद्धि ही खोटी हो उसे शास्त्र भी भला बुरा कुछ नहीं सिखा सकते।

❋ अत्याचारी से बढ़कर कोई अभागा नहीं, आपत्ति-विपत्ति के समय उसका कोई मित्र नहीं होता।

❋ आस्था विश्वास और सत्य का मार्ग ही सबसे श्रेष्ठ मार्ग है। पाप तो अपने साथ रोग, दोष, भय, शोक, संकट और पतन लेकर आता है।

❋ जीवन का सार भोग नहीं त्याग है।

❋ सफलता आपका परिचय दुनिया से कराती है और असफलता आपको दुनिया से परिचित कराती है।

❋ पत्थर और लोहे पर कुल्हाड़ी नहीं चलती उसका प्रयोग तो लकड़ी पर ही होता है।

❋ मनुष्य के गुण और गौरव तभी तक रहते हैं जब तक वह दूसरों से याचना नहीं करता।

❋ किसी चिराग का अपना मकां नहीं होता वो जहां भी रहेगा रोशनी लुटाएगा।

❋ धूर्तता तो निर्बलों का हथियार है, बलवान कभी भी नीच नहीं हो सकता।

❋ अपनी मान्यताओं और अपने विश्वास पर दृढ़ रहना या अड़िग रहना नासमझी है क्योंकि आप कभी गलत भी हो सकते है।

❋ माया को छोड़नेवाला व्यक्ति सभी सिद्धियों का राजा बन जाता है।

❋ प्रतिभा के अपने गुण होते है इसलिये प्रतिभाशाली व्यक्ति शीघ्र ही पहचाना जाता है।

❋ सादगी से रहनेवाला और जीनेवाला व्यक्ति कभी किसी पर बोझ नहीं बनता न स्वयं किसी प्रकार के बोझ तले दबता।

❋ यश की अपेक्षा योग्यता अधिक महत्वपूर्ण है।

❋ धर्म की शिक्षा साहस, विवेक और शान्ति की शिक्षा है।

❋ प्रेम, करुणा, दया, सहानुभूति और समझ जीवन की सकारात्मक शक्तियां है।

* मनुष्य धर्म, सम्प्रदाय, पंथ, समूह समुदाय, समाज, देश आदि का निर्माण करता है और इनमें अपने स्वयं को बांट लिया है।
* समाज के नियम अपने बनाये हुये होते हैं वो परिस्थिति के अनुसार हमेशा बदलते रहते है।
* आदमी में शुभ गुण तभी तक हैं जब तक वह तृष्णा से दूर है। तृष्णा का स्पर्श होते ही सब गुण गायब हो जाते हैं।
* वही जीविका श्रेष्ठ है जिसमें अपने धर्म की हानि न हो और वही देश उत्तम है जहां कुटुम्ब का पालन हो।
* ठग किसी संबंध का ख्याल नहीं करते, वे सभी को ठग लेते हैं।
* उपासना के द्वारा विवेक उत्पन्न होता है, विवेकी होने से क्षणिक वस्तुओं से शोक और आनन्द ये दोनों नहीं होते।
* जिस वस्तु का अस्तित्व नहीं है, उसे हम विश्वास से उत्पन्न नहीं कर सकते।
* विषयों के संबंध में सोचने से उनसे सम्पर्क हो जाता है।
* सत्य कोई ऐसी सुलभ वस्तु नहीं है, जिसे मूल्य चुकाए बिना सुगमता से हर व्यक्ति प्राप्त कर सके।
* नि:स्वार्थता की मात्रा के अनुपात में ही सफलता की मात्रा रहती है।
* सहनशील होना अच्छी बात है, परन्तु अन्याय का विरोध करना उससे भी उत्तम है।
* वास्तविक तथ्यों के कारण सिद्धान्तों में व्यावहारिक दृष्टि से परिवर्तन हो जाता है।
* मूर्खता दुखदायी है, जवानी भी दुखदायी है, लेकिन इससे कहीं ज्यादा दुखदायी है किसी दूसरे के घर जाकर उससे अहसान लेना।
* बिना कारण कलह करना मूर्ख का लक्षण है। इसलिए बुद्धिमत्ता इसीमें है कि अपनी हानि सह लें, लेकिन विवाद न करें।
* धर्म प्रेम सिखाता है बैर नहीं। हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह अपने अलावा दूसरे धर्मों को भी जाने। अधिक से अधिक धर्मों के विषय में जानकर हम एक अच्छे इंसान बन सकते हैं।
* अपराधी अपने सिवाय और सबको दोष देता है। हम सब ऐसे ही है। मानव प्रकृति ऐसे ही काम करती है।
* किसी की आलोचना मत करो ताकि कोई भी तुम्हारी आलोचना न करे।
* भय से पैदा हुई उम्मीद सबसे उत्तम होती है।
* क्रोधी इंसान को एक बार फिर क्रोध तब आता है जब वह अपने क्रोध को समझ जाता है।
* उत्तरदायित्व से बल हासिल होता है। जहां कहीं उत्तरदायित्व होता है, वहीं विकास होता है।
* जब आप सफलता की सीढ़ी चढ़ते है तो आपके ऊपरवाले आपको नहीं खींचते बल्कि आपको आपके नीचेवाले सहारा देते है और आपको ऊपर उठाते है। अर्थात् जो लोग आपके साथी है और आपके नीचे काम कर रहे है वे ही आपको सबसे ज्यादा सहयोग देते है।
* सुधारने का काम डर से नहीं, प्रेम से होता है। प्रेम का बल डर के बल से बहुत अधिक होता है।
* सिद्धि को प्राप्त करने का मूल आधार वाणी का संयम है। जो लोग अपनी वाणी का संयम नहीं कर पाते, वे अनर्गल बोलते हैं।
* जिस व्यक्ति में काम करने की क्षमता और ईमानदारी होगी, उसके रास्ते में कभी कोई बाधा आ ही नहीं सकती।
* किसी दूसरे व्यक्ति को अपने से बड़ा बताना सबके वश की बात नहीं। ऐसा काम तो कोई विशाल हृदय व्यक्ति ही कर सकता है।
* दीपक की लौ का आधार तेल होता है। जितना तेल होता है, उतनी ही लौ प्रखर या क्षीण होती है। किसी भी दीपक में तेल भरा हुआ नहीं रहता।

❋ अर्थहीन शब्द विग्रह और द्वेष को जन्म देते हैं। वाणी का असंयम हमारी प्राणशक्ति को चूसता रहता है। वह व्यक्ति को खोखला कर देता है।

❋ मानव हो या दानव, प्राणशक्ति सब में होती है, किसी में कम किसी में अधिक, किंतु असीम प्राणशक्ति किसी में नहीं होती। इस प्राणशक्ति को कितना संचित करना है, कितना उसका व्यय करना है, वह व्यक्ति के विवेक पर निर्भर करता है।

❋ वचोगुप्ति अर्थात् वाक् संयम। जो वाणी संयम नहीं रखता, उसकी जिह्वा बोलती रहती है। बहुत बोलनेवाली जिह्वा अनावश्यक बोलती रहती है और अनावश्यक शब्द प्राय: विग्रह और वैमनस्य पैदा करते हैं, जो हमारी प्राण-शक्ति को सोख डालते हैं। वचोगुप्ति से यह समस्त अनर्थ परम्परा दग्धबीज हो जाती है।

❋ नेतृत्व हासिल करने के लिए सबसे ज्यादा जरूरी है खुद को दूसरों की जगह रखकर सोचे।

❋ जिनके साथ आप काम करते है उनका आपको दिल जीतना चाहिए क्योंकि आप उनसे जबरन काम तो करवा सकते है लेकिन स्वयं को पसन्द नहीं करवा सकते।

❋ हकीकत जिन्दगियों में ईश्वर और धर्म का कहीं वजूद नहीं। यह जमीन और आसमान ऐसे मनुष्य को देखने के लिए तरसते है जो सचमुच ईश्वर से डरता हो और जिसे अपनी व्यावहारिक जीवन जिन्दगी में ईमानदारी से पेश आया हो।

❋ दूसरों के साथ अपनी तुलना करना या उनकी नकल करना मनुष्य की आत्मसम्मान के सबसे बड़ी विनाशक है। वे हमें अपनी मूल पहचान तक विमुख कर देते है। जिससे हमारा अस्तित्व स्तर गिर जाता है। अजूबे पन के एहसास से हमारे भीतर अपनी कमी-कमजोरी और गलतियों को स्वीकार करने का साहस निर्माण करना होगा।

❋ मानव अपने भाग्य का निर्माता स्वयं होता है। आजके वैज्ञानिक युग में अंधश्रद्धा और परंपरा का प्रभाव लोगों पर दिखाई देता है। इन शकुन अपशकुन का हमारे जीवन पर कुछ प्रभाव पड़ता है या नहीं क्योंकि वास्तव में यह बातें मानसिक दुर्बलता का संकेत करती है। ऐसे बातों से त्रस्त न होकर सकारात्मक दृष्टि से देखना चाहिए और समाधान करना चाहिए। शुभ-अशुभ विचारों के जाल में नहीं पड़ना चाहिए। कोई भी परिस्थिति कितनी भी बुरी हो उसमें भी अच्छी बात ढूंढनी चाहिए जिससे हमारे भविष्य में, हमारी सोच में उन्नति हो। किसी भी परिस्थिति को समस्या के रूप में न लेकर समाधान प्रवृत्ति रखकर जीवन पथ पर आगे बढ़ना चाहिए और वर्तमान में रहकर कर्म करने चाहिए। कर्म ही भाग्य बनाता है और वही व्यक्ति भाग्यशाली होता है जो हर समस्या को सकारात्मक दृष्टि से देखे। नकारात्मक दृष्टि से हमारा जीवन निराशाजनक बन जाता है। अत: अपनी भाग्य की तुलना किसी अन्य व्यक्ति के साथ कभी नहीं करनी चाहिए। संसारमें हर व्यक्ति विशेष होता है और हर व्यक्ति की विशेषता अलग-अलग होती है।

❋ सत्य की भेंट सबसे श्रेष्ठ उपहार और भेट है और वह सत्य प्रेम है। सत्य में ही गहरा विश्वास है। दुनिया में प्रेम से बढ़कर कुछ नहीं।

❋ असीम मुस्कान से गहरी से गहरी समस्याएं भी चली जाती है। मुस्कुराता हुआ चेहरा प्रत्येक को अपनी ओर आकर्षित करता है। मुस्कान केवल दूसरों को ही आकर्षित नहीं करती बल्कि खुद को भी एक खुबसूरत अहसास और ऊर्जा देती है। जो व्यक्ति मुस्कुराकर हर समस्या का समाधान करने में विश्वास रखते है उन्हे जीवन में अवश्य ही सफलता मिलती है। मुस्कान स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। जीवन और खुशियों के बीच सामंजस्य बिठाती है। मुस्कुराहट बनावटी और कृत्रिम नहीं होनी चाहिए, स्वाभाविक होनी चाहिए। सच्ची मुस्कान एक व्यायाम है। व्यक्ति के चेहरे पर चमक बनाये रखती है। सच्ची मुस्कान व्यक्ति के दिमाग को संकेत देती है कि वे सुरक्षित है। जब किसीसे मुस्कुराकर बात की

जाती है तो उस व्यक्ति को विश्वास हो जाता है और उसे सदिच्छा का संदेश प्राप्त होता है। मुस्कुराकर मिलनेवाले से मिलनसार, खुशमिजाज और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण से परिपूर्ण मानकर उससे बहुत प्रभावित होता है।

❋ प्रत्येक कवि, साहित्यकार, नेता सब दुनिया को बदलने लगे है पर वे स्वयं को नहीं बदलना चाहते। जब तक वृत्ति का मूल नहीं बदलेगा तब तक वास्तविक रूपांतरण घटित नहीं होगा। अपने मन को बदलने से पूरा संसार बदल जाता है।

❋ रिश्तेदारी में अगर कुछ गलत हो जाता है तब हम दोष दूसरे को देते है। इससे भविष्य में रिश्ते में विकास की सारी संभावनाएं खत्म हो जाती है। रिश्ते और प्रेम में आप हमेशा जिम्मेदार है और खुद को बदलना चाहिए। रिश्ते और प्रेम की दुनिया में दूसरा हमेशा सही होता है।

❋ जो किस्मत और ईश्वर को मंजूर होता है ज्यादातर वो ही चीजें होती है। हर व्यक्ति की उम्मीद है प्रियतम का सहचर्य, अतुल संपत्ति और अमरता। जिन्दगी का मायना भी यही है। जहां जिंदगी है वहां उम्मीद है और जहां उम्मीद ही नहीं है तो फिर इस जीवन का अर्थ क्या है? विचारों से अधिक विश्वास की शक्ति है और जिस चीज का हमें विश्वास है उसी की हम उम्मीद करते है। नाउम्मीदें सबसे पहले साहस और सामर्थ्य कम करते है फिर हमारा व्यक्तित्व संदेहशील और आशंकित बन जाता है। उम्मीद और सपने वो सब देते है जिसके लिए वह दुनिया में आया है। कोरी उम्मीद रखनेसे बात नहीं बनती।

❋ स्वस्थ मन का व्यक्ति सबसे अच्छा व्यवहार करता है। प्रतिकूल व्यवहार वही करता है जो मन से दुर्बल है, अस्वस्थ है।

❋ सच्चा सम्मान वही प्राप्त करते है जिसके पीछे मानवीय सद्गुणों, ईमानदारी, सच बोलने की आदत, एक-दूसरे का सम्मान करने की कला, अपने आपको समाज के सामने एक पात्र और आदर्श व्यक्तित्व पैदा करना, दूसरे के बारे में न सोचकर सबसे पहले पहल अपने आप में करें वो ही सफल व्यक्ति है। बोली में मिठास, विनम्रता, दूसरों के अच्छे गुणों की प्रशंसा करने की आदत, ईमानदारी, दूसरों को सम्मान देना और दूसरों की कही बातों को ध्यान से सुनना, स्वयं कम बोलना, अपने मुख से अपनी बड़ाई कभी न करना, दूसरों की सच्ची प्रशंसा के लिए कभी कंजूसी नहीं करना। लेन-देन के व्यवहार में खरा होना, छोटी-मोठी बातों में क्रोधित नहीं होना। अनायास बिना मतलब के बहस से बचना। अपना काम जो भी हो पूरे मनोयोग और निष्ठा से करे, काम को टालने की आदत से बचे। सही समय का अनुशासन पालन करना। उसी काम को हा करना जिसको आप कर सकते है अन्यथा स्पष्ट शब्दों में ना कर देना। दोस्तों से कुछ अपेक्षा नहीं रखना, न उनके साथ विश्वासघात करना। परिवार में सभी को साथ लेकर एक-दूसरे के सुख दु:ख में आगे होकर बढ़ना। समाजसेवाओं के लिए भी समय देना यह सब गुण एक सफल व्यक्तित्व के विकास के लिए अनिवार्य है।

❋ कभी अपने ऊपर घमंड हो तो अपने से ऊपरवाले की तरफ देखो, सारा घमंड चूर हो जायेगा और कभी अपने में हीनता महसूस हो तो अपने से नीचेवाले की तरफ देखो आत्मविश्वास आ जायेगा।

❋ यदि हम दूसरों की परवाह किये बिना अपनी जिम्मेदारी निभाने लग जाएं तो पूरे देश में ऐसा बदलाव आ जायेगा जिसकी आज हमें जरूरत है।

❋ धन का नशा, सत्ता का लोभ और सुन्दर नारी का भोग हर पुरुष को विचलित कर देता है। राजा नहुष, इन्द्र, रावण ऋषि और महर्षि विश्वामित्र इसके प्रत्यक्ष उदाहरण है।

❋ बहुत से ऐसे व्यक्तित्व भी होते है जिनके पास शब्द नहीं होते किन्तु मौन की भाषा में बहुत कुछ कह जाते है।

❋ दर्पण वो ही दिखाता जो है, कभी झूठ बोलने नहीं देगा, ज्ञान भयभीत नहीं होने देगा, अध्यात्म मोहभंग करने नही देगा। सत्य किसीको कमजोर नहीं होने देगा। प्रेम ईर्ष्या करने से रोकेगा, विश्वास कभी दु:खी नहीं होने देगा। कर्म

करनेवाले को कभी कर्म असफल नहीं होने देगा।

✻ जो जैसा करता है अंत में वैसा ही भरता है। इसलिये दूसरों के काम की बजाय अपने काम में ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

✻ कोई भी व्यक्ति को हर वक्त अपनी कमजोरी का प्रदर्शन किसीके सामने नहीं करना चाहिए।

✻ एक जगह एक ही काम करना चाहिए। दफ्तर के काम के समय घर-परिवार को याद नहीं करना चाहिए। आधे अधूरे मनसे किया कार्य मानसिक तनाव बनाता है और ऐसे मनुष्य कि दशा धोबी के उस कुत्ते के समान होती है जो न घर का होता है न घाट का।

✻ आजकल के दौर में रिश्ते-नातों का महत्व सिर्फ दिखाने के लिए रह गया है। आँखों के सामने मिलनेवाला सम्मान आंखें बंद होते ही भुला दिया जाता है। आज इस स्वार्थी सोच ने रिश्तों को बोझ समझ लिया है। घटता प्यार, बढ़ती दरार और कहने को कहलाता है रिश्तेदार यही रिश्तों की परिभाषा रह गयी है। पहले रिश्तों में गहरे प्यार की भावना होती थी पर अब नहीं।

✻ दंभ का अंत सदैव अहंकार होता है और अहंकारी आत्मा सदैव पतित होती है।

✻ अतिथि-सत्कार से इनकार करना ही सबसे बड़ी दरिद्रता है।

✻ जुगनू तभी तक चमकता है जब तक उड़ता है, यही हाल इस चंचल मन का है। जब हम रूक जाते हैं तो अंधकार में पड़ जाते हैं।

✻ सभी को अपने जीवन से प्रेम है। इसलिये समय को व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए क्योंकि जीवन प्रेम से ही बना है।

✻ संसार में न कुछ भला है न बुरा। केवल हमारे विचार ही उसे भला बुरा बना देते हैं।

✻ इस विश्व में हमारा राष्ट्र उसी प्रकार है जिस प्रकार बाल्टी में पानी की एक बूंद।

✻ निराशा का गहरा धक्का मस्तिष्क को शून्य बना देता है जैसे की लकवा शरीर को।

✻ अच्छे वक्त के दौरान हाथ मिलाने से रिश्ते मजबूत नहीं हो जाते। रिश्ते मजबूत होते हैं बुरे वक्त के दौरान हाथ थाम लेने से।

✻ जब तक हम लोगों के लिए कुछ करते हैं वो हमें कुछ भी नहीं कहते पर जब ऐसा नहीं हो तो कहेंगे कि आप बदल गए हैं।

✻ किसी भी रिश्ते में अगर आपस में भरोसा, विश्वास नहीं है तो वह रिश्ता ऐसा है जैसे बिना ईंधन की गाड़ी उसमें आप बैठ तो सकते है पर जा कहीं नहीं सकते।

✻ खुशियां आती हैं, तो संतोष थोड़े समय के लिए आ जाता है, लेकिन जब संतोष आता है तो खुशियां सदा के लिए आती है।

✻ अगर कोई व्यक्ति आपके ऊपर प्रभाव डालने की कोशिश करता है तो इसका अर्थ है कि वो व्यक्ति खुद ही आपसे प्रभावित है।

✻ किसीको अपना बनाने के लिये हमारी सारी खूबियां भी कम पड़ जाती है जबकि किसी को खोने के लिए सिर्फ एक कमी ही काफी है।

✻ यदि लोग तुम्हें नहीं समझते तो भी तुम्हें चिन्ता नहीं करनी चाहिए। चिंता तो तुमको तब करनी चाहिए जब तुम खुद को नहीं समझ पाते हो।

✻ जब आप किसी को चाहने लगते हो तो आप उसकी बुराइयाँ भूल जाते हो और जब आप किसीको नापसंद करने लगते हो तो उसकी खूबियाँ भी भूल जाते हो।

✻ जब श्रोता वक्ता के आशय को ठीक से समझ नहीं पाता तो श्रोता की दिलचस्पी चली जाती है। सुनना भी एक कला है

जिसे सुनने की कला आ जाती है उसका जीवन सुधार की तरफ चलने लगता है। नहीं सुनने के मसले से आपस की कलह माँ-बाप और बच्चों में, सास और बहू में कलह बनी रहती है। ठीक से सुननेवाला महापुरुष बन जाता है। व्यास से शुकदेव ने सुना परमहंस से विवेकानंद ने सुना, स्वामी गजानन से महर्षि दयानंद ने सुना, सुनने के लिए इंद्रियों का संयम, तत्परता और प्रज्ञावान होना अनिवार्य है। सुनने की कला, उसको ग्रहण करना, धारण करना, तत्व का विवेचन करना अर्थात तर्क-वितर्क, तथ्य का ज्ञान और रहस्य को जानना यह एक अच्छे श्रोता के गुण है। सुनने की साधना से सिद्धि प्राप्त होती है और सिद्धि से व्यक्ति के जीवन में सफलताएँ आती है। ठीक से सुनने और समझने का रिश्ता समाज के विकास के लिए है।

* भाषा सम्पूर्ण ज्ञान का आधार है।

* जिन कार्यों को करने की हृदय स्वीकृति दे, वही मनुष्य का कर्त्तव्य और धर्म है और जिन कार्यों के लिये अपना मन स्वीकृति नहीं दे वो नहीं करने योग्य है वो ही अधर्म है या अकर्त्तव्य है। जो मनुष्य अपने कर्मों का यथोचित रीति से पालन करता है, वो सदाचारी मनुष्य है, उसे कोई भी दु:ख सहन नहीं करना पड़ता क्योंकि वो ईश्वर की इच्छानुसार कार्य करता है। सदाचारी पुरुष प्राय: निर्धन और दु:खी होते है पर उनमें असाधारण दैवी शक्ति होती है फिर वो दु:खी नहीं हो सकता। सच्चा खजाना सदाचारी के पास ही होता है उसका यह खजाना कभी खाली नहीं होता खर्च करने में बढ़ता ही है। सदाचारी के पास न कोई दोस्त है, न दुश्मन। उसके लिये तो सारा जहाँ एक जैसा है। सदाचार के विचारों का चिंतन करने से आत्मा को अपार शांति और शीतलता प्राप्त होती है।

* दुनिया में रहना चाहिए, प्यार भी करना चाहिये मगर आसक्ति नहीं रखनी चाहिए। आसक्ति ही दु:खों की जड़ है, आसक्ति आ तो सकती है, पर जाती नहीं है।

* जिंदगी थोड़े समय की होती है। फटाफट उम्र का सफर तय हो जाता है और कुछ आभास होने से पहले ही बुढ़ापे के दिन आ जाते हैं। लेकिन जब मृत्यु की घड़ी करीब होती है और वे पीछे मुड़कर देखते हैं तो महसूस करते हैं कि केवल उन्हीं पलों में खुशी पाई थी, जब उन्हें किसी का प्रेम मिला था।

* अनेक लोग जीवन तो जीते हैं पर अपने असली कर्म और मकसद को भूल जाते हैं। वे इधर-उधर मामूली बातों में, नौंकझौंक में इतना उलझे रहते हैं कि उन्हें अपने जीवन का उद्देश्य ही क्या है पता नहीं।

* सामने वाले की तरफ भौंहें टेढ़ी करने पर भी दृष्टि और उत्सुक होकर उधर देखने लगती है, वाणी रुद्ध होने पर भी यह दग्ध मुख मुस्कराए बिना नहीं रह पाता, चित्त कठोर करने पर भी मन पुलकित हुए बिना नहीं रहता।

* संदेह हमारा शत्रु के समान है और वह हमारे दिल में भय पैदा करता है।

* सच हमेशा अनदेखा होता है, कहानी से भी ज्यादा अनोखा होता है।

* अगर कोई मनुष्य बहुत हँसता है तो अंदर से बहुत अकेला है अगर कोई मनुष्य बहुत सोता है तो मन से, अंदर से वो बहुत उदास है और यदि कोई मनुष्य स्वयं को बहुत मजबूत दिखाता है और रोता नहीं है तो यह समझना चाहिए कि वो अंदर से बहुत कमजोर है। और अगर कोई मनुष्य जरा-जरा सी बात पर रो देता है तो वह बहुत कोमल, मासूम, भावुक और नाजुक दिल का है। अगर कोई व्यक्ति बात-बात पर नाराज हो जाता है तो वह बहुत अकेला है और जिंदगी में प्यार की कमी महसूस करता है। इन्हीं सब बातों को लेकर लोगों को समझने की कोशिश करो।

* जिंदगी किसी का इंतजार नहीं करती, लोगों को अहसास कराना पड़ता है कि आप उनके लिये कितने खास है। अगर सभी अपने होते तो बेगाने कहाँ जाते। ना मिलता गम, तो बर्बादी के अफसाने कहाँ जाते।

* अपनी कमी को छुपाने के लिए लोग नसीब, किस्मत जैसे शब्दों का उपयोग करते है।

* यादों का कारवाँ हमेशा रहता है, हमेशा रहेगा और साथ चलता है।

* जिंदगी में यदि दु:ख न हो तो जिंदगी कुछ भी नहीं, नितांत, खालीपन, रीतापन, खोखली है। जिन्दगी ने बहुत कुछ सिखा दिया जाने कब हमको इतना बड़ा बना दिया।

* कोई अपने लिये रोटी छोड़ देता है और कोई-कोई तो रोटी के लिये अपनों को छोड़ देता है।

* तल्ख (अनुचित,गलत) लहजे से बात करने से इज्जतदार व्यक्ति टूट जाता है।

* गलती निकालने के लिए दिमाग चाहिए और गलती स्वीकार करने के लिए कलेजा चाहिए।

* मनुष्य का जोश और होश तराजू के दो पलड़ों के समान होते हैं जब एक बढ़ता है तो दूसरा उसी अनुपात में घटता है। परन्तु, सफलता का मूल दोनों में अच्छा संतुलन बनाना ही है।

* ऐशो-आराम और झूठ, इन दोनों को संजोकर रखने के लिए भारी कीमत चुकानी पड़ती है। जबकि सादगी और सत्य को संजोकर रखने की कोई कीमत नहीं चुकानी पड़ती।

* शिक्षक-चिकित्सक, संत और शासक पथभ्रष्ट नहीं होना चाहिए। वरना समाज का स्वास्थ्य और देश का स्वास्थ्य बिगड़ने लगता है। संतों की इच्छाशक्ति और शासक की कार्यशक्ति मिलकर एक हो जाए तो देश प्रगति की ओर अग्रसर होगा। इस देश में टोपी बदलने से क्या होगा दिमाग तो वही है हमें टोपी नहीं दिमाग बदलना है।

* उस मनुष्य पर प्रभु की अपार कृपा है, जिसका आदर्श सत्य, ध्येय है सुन्दरता, उद्देश्य है ज्ञान, धर्म है सेवा और प्रेम है उसकी पूर्णता।

* कृतज्ञता कोई सोच या दृष्टि नहीं है यह तो एक ऐसा झरना है, जो समय पर खुद-ब-खुद उत्स होता है, जब कुछ प्राप्त होने पर आप अभिभूत हो उठते हैं, कृतज्ञता से भरा एक क्षण भी आपके पूरे जीवन को बदल सकता है। इस संसार में जितने भी अस्तित्व है वे सभी आपको जीवित और सुरक्षित रखने के लिए आपस में मिलकर सहयोग कर पूरी व्यवस्था काम करती है। इसलिये आपको हर लोगों और चीजों के प्रति कृतज्ञ होना पड़ता है। कई व्यक्तियों का आपके जीवन में प्रत्यक्ष में कोई लेना-देना नहीं होता फिर भी आपके हर पल कितना कुछ देते रहते हैं। आप कृतज्ञ तभी है जब आप ग्रहणशील है। इससे आपकी सीमाओं का विस्तार होता है। अगर कोई भूखा है तो उसे खाना खिलाना कोई मुश्किल काम नहीं। लेकिन किसीके अंदर भूख जगाना मुश्किल काम है।

* जो अपने ऊपर विजय प्राप्त करता है वही सबसे बड़ा विजयी हैं।

* अनुराग, यौवन, रूप या धन से उत्पन्न नहीं होता। अनुराग, अनुराग से उत्पन्न होता है।

* कविता का बाना पहनकर सत्य और भी चमक उठता है।

* नशा आज घर-घर में घुसा हुआ राक्षस है। युवाओं के नशे की आदत से पूरे परिवार का विनाश होता है।

* जैसे जल द्वारा अग्नि को शांत किया जाता है वैसे ही ज्ञान के द्वारा मन को शांत रखना चाहिए।

* उत्साह मनुष्य को कर्मों हेतु प्रेरित करता है और उत्साह ही कर्म को सफल बनाता है।

* बुद्धिमत्ता और मासूमियत, दोनों इस संसार की सबसे कीमती वस्तुए हैं। ऐसे लोग हैं, जो समझदार हैं, लेकिन कुटिल हैं। कई मासूम हैं, लेकिन मूर्ख भी हैं। इसलिए जरूरत ज्ञान की है।

* अंधविश्वास का अर्थ है, बिना जाने अंधे की तरह जिसने मान लिया हो।

✻ सच तक पहुंचे बिना हमारी जिंदगी क्या होगी? उसकी हम कल्पना ही कर सकते हैं। आखिर वह कितनी ठोस हो सकती है? हमें अपने सच तक पहुंचने की कोशिश जरूर करनी चाहिए।

✻ प्रत्येक मनुष्य कुछ न कुछ काम करता है, किंतु ऐसे बहुत कम हैं, जो अपने काम को भरसक उत्तम तरीके से करते हैं।

✻ जीवन का महत्व तभी है जब वह किसी महान ध्येय के लिए समर्पित्त हो। यह समर्पण ज्ञान और न्याययुक्त हो।

✻ बेकार न बैठें अपनी योग्यता के अनुसार सर्वश्रेष्ठ कार्य करें।

✻ जिस देश का संत व सिपाही जागरूक और ईमानदार होगा वह देश कभी भी नष्ट-भ्रष्ट नहीं हो सकता। जागरूक संत और ईमानदार सिपाही ही देश को अमन चैन दे सकता है। संत सो जाए और सैनिक बेईमान हो जाए तो समाज व राष्ट्र की शांति का भंग होना तय है।

✻ प्रत्येक व्यक्ति हमेशा खुश रहे और दूसरों को भी खुश रखें। किसी पर अन्याय और अत्याचार न करें, न ही कोई अन्याय और अत्याचार को सहन करें इसीमें जीवन की सार्थकता है।

✻ यदि परिवार अपने बच्चों को सही संस्कार दे तो समाज और देश में स्वत: ही सुधार आ जायेगा और अगली पीढ़ी को गलत रास्ते पर भटकने से रोका जा सकता है।

✻ किसी की शोहरत से ही उसे लोग जानते हैं, लेकिन उसके चरित्र से उसकी पहचान भविष्य में बनी रहती है। बेदाग छवि का होना ऐसा ही है जैसे कोई नाजुक पेड़ सदा ही बढ़ता है।

✻ प्रतिभा कौशल अकेले में ही बढ़ता है लेकिन चरित्र दुनिया के थपेड़े सहकर ही अच्छा पनप सकता है।

✻ जिसने जिंदगी के क्षण बर्बाद होने की कोई परवाह नहीं की बेशक उसने जिंदगी की अहमियत को ही कभी नहीं समझा।

✻ जिस कुल में अपमानादि के कारण कुल वधुएं शोकाकुल रहती हैं वह कुल शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

✻ अत्याचारी से बढ़कर भाग्यहीन और कोई नहीं है, क्योंकि विपत्ति के समय उसका कोई साथी नहीं होता।

✻ आवेश और क्रोध को वश में करने पर आत्मशक्ति बढ़ती है और आवेश को आत्मबल के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है।

✻ जिस घर में सारे दिन दुर्व्यसन, जुआ इत्यादि खेला जाता हो, मदिरापान हो उस घर में बच्चे दु:शासन और दुर्योधन जैसे पैदा होंगे। इसलिये घर में संयम और मर्यादा का होना अत्यंत आवश्यक है तभी घर में राम, कृष्ण, महावीर और शिवाजी महाराज जैसे व्यक्तियों का जन्म होगा। अगर बेटा शराबी है, चोर उचक्का बन गया तो इसके लिए जिम्मेदार उत्तरदायी माँ-बाप ही है।

✻ असफलता का अर्थ है कि आप अभी तक सफल नहीं हुए है। सफलता का कोई नियम नहीं है लेकिन आप अपनी असफलता से बहुत कुछ सीख सकते है। यह कोई जिंदगी का आखरी पड़ाव नहीं है यह तो बस एक शुरूवात है। इससे कभी निराश नहीं होना चाहिए बल्कि दृढ़ता और आपका दृढ़ प्रयास आपकी निराशाजनक असफलता को सफलता में बदल सकता है। आगे बढ़ने की चाहत, हिम्मत और हौसला रखने में मंजिल पायी जा सकती है।

✻ जो शरीफ होता है वह नेता नहीं बन पाता और अगर गलती से बन भी गया तो टिक नहीं पाता। अच्छे और सच्चे लोग एकांतवासी होते जा रहे है उन्हें कोई नेतागिरी में दिलचस्पी नहीं इसीलिये बुरे और आपराधिक पृष्ठभूमि के लोग सत्ता पर कब्जा किये हुए हैं।

✻ मन की शांति ही स्वर्ग है। इसे जीते-जी भोगा भी जा सकता है और देखा भी जा सकता है। सुख और शांति कोई मन्दिर,

मस्जिद और गिरजाघर में नहीं मिलती अपने घर में ही प्राप्त की जा सकती है। स्वर्ग और नरक की सीढ़ियां अपने ही घरसे होकर गुजरती है एक ही सीढ़ी है जो स्वर्ग की प्राप्ति और नरक की प्राप्ति कराती है। जरूरत है अपना मन सुधारने की।

* जब कोई व्यक्ति अपनी मर्यादा की सीमारेखा को तोड़कर आगे बढ़ने की कोशिश करता है तभी विवाद और क्लेश उत्पन्न होता है। जैसे की बेटे ने पिता को घर से बाहर निकाला, बेटे ने बाप की सम्पत्ति हड़प ली, ससुर का अपनी बहू से अनैतिक सम्बन्ध बनाना, भाई ने बहन का अपमान कर देना, जब ऐसी घटनाएं हो जाए तो मर्यादा का हनन होने लगता है। संसार में रिश्तों की डोर का निर्माण मर्यादा की रक्षा के लिए किया गया है और यही सामाजिक जीवन जीने का आधार भी है। जब मर्यादा का उल्लंघन होता है तो सामाजिक व्यवस्था बिगड़ने लगती है।

* आंसू कायर लोग बहाते है। अत: जीवन में साहसी बनना चाहिए किसी अवसर के खो जाने पर किसी तरह का पछतावा करना या आंसू बहाना नहीं चाहिए।

* दूसरों की शिकायतें करनेवाला व्यक्ति हमेशा अशांत रहता है और जीवन में कभी सफल नहीं हो पाता। सफलता और शांति पाने के लिए बेहतर है कि स्वयं को बदल ले।

* स्वर्ग में जाकर गुलामी करने की अपेक्षा नरक में जाकर राजा बनना कही गुना बेहतर है।

* आपका जन्म भले ही सामान्य घर में हो पर आपके कर्मों से आपकी मृत्यु देश का इतिहास बन सकती है।

* हर अनोखी रात के बाद चमकीला सुबह अवश्य आता है।

* आँखों से देखा एक बार अविश्वसनीय हो सकता है किन्तु अनुभव से सीखा कभी अविश्सनीय नहीं हो सकता।

* कल की असफलता वह बीज है जिसे आज बोने पर आनेवाले कल में सफलता प्राप्त होती है।

* भूत इतिहास होता है, भविष्य रहस्य होता है और वर्तमान किसी की दी हुई नैमत, वरदान और दुवायें होती है।

* कोई भी कार्य सही या गलत नहीं होता, हमारी सोच ही उसे सही और गलत बनाती है।

* दूसरों की गलती निकालना बहुत आसान है पर स्वयं मे गलती ढूंढ़ना बहुत मुश्किल है।

* जिंदगी संघर्षों से भरी हुई है। उसमें एक के बाद एक खींचातान लगी रहती है। इसलिए वो क्षण बहुत ही कीमती है जिसमें आप मुस्कुरा रहे हो। कोई कितना भी अपमानित क्यों न कर दें, यदि आपमें हास्य, मुस्कान की मधुरता देने की कला है तो आप विषाद के क्षणों को सहज आनंद में बदल सकते हैं।

* आपको सम्पत्ति भी मिल गई, मनोकामनाओं के अनुसार मुकाम और पद भी पा लिया। संसार का कोई भी वैभव आपसे वंचित नहीं रहा और यह सब कुछ क्षणों में चला भी गया ये नियति का चक्कर चलते ही रहता है। पर इन क्षणों में मन की अशांत खुशी आपकी मुस्कान ला सकती है। आपका खुशमिजाज होना जरूरी है। प्रसन्नता सर्वोत्तम उपलब्धि है, धर्म-अर्थ और काम से सम्बन्धित सभी क्रिया-कलापों का लक्ष्य प्रसन्नता की प्राप्ति ही है। प्रसन्नता मौलिक है। हमारे भीतर प्रसन्नता का केंद्र मन है। मन कोई खरेदी बिक्री की वस्तु नहीं है। प्रसन्नता किसी से दान में नहीं प्राप्त हो सकती न ही किसी उपासना गृह में मिलती है और न ही संतों के उपदेश में। जिसको हँसने की कला आती है उसके ऊपर प्रसन्नता का फव्वारा स्वत: ही फूट पड़ता है। उसके लिए न कोई उम्र की सीमा होती है और न कोई लिंग भेद।

* हँसी के सहारे ही मनुष्य जीवन के तमाम थपेड़ों को झेल सकता है, मुश्किलों को शिकस्त दे सकता है। इसलिये हमेशा मुस्कुराना चाहिए लेकिन मन में कपट रखकर नहीं। सामनेवाला आपके चेहरे के भाव को देखकर

और आपकी बोली को सुनकर आपकी असलियत जान लेता है। इसलिये किसीको कुछ देने की इच्छा हो तो एक प्यार भरी मुस्कान अवश्य देनी चाहिए।

* प्रतिकार का विचार क्रोध को जन्म देता है। क्रोध के अधीन होकर मनुष्य उचित-अनुचित, सत्य-असत्य, भले-बुरे का अंतर नहीं कर पाता। क्रोध को त्यागकर अपने-अपने स्वभाव में रहना ही क्षमा है।

* इस संसार में सभी जीव एक-दूसरे पर निर्भर है। बिना परस्पर के सहयोग के जीवन कभी चल नहीं सकता। यदि आज आपने किसीके लिये कुछ किया है तो यह तयशुदा है कि कभी आपको भी उसकी जरूरत महसूस हो सकती है।

* हरेक व्यक्ति पर विश्वास करना चाहिए। सिर्फ ईश्वर पर नहीं सभी की भावनाओं का कद्र करते हुए विश्वास रखना चाहिए। विश्वास की डोर टूटते ही सम्बन्धों में दरार और दूरियां आ जाती है।

* अगर आपको लगता है कि आप अपने लक्ष्य को नही प्राप्त कर सकेंगे तो अपने लक्ष्य को नहीं बल्कि अपने प्रयासों को बदलना चाहिए।

* नम्रता और मीठे वचन ही मनुष्य के असली आभूषण है।

* सबसे बड़ा अपराध अन्याय सहना और गलत के साथ समझौता करना है।

* अपनी गलती अपने हाथों से सुधर जाएं तो अधिक बेहतर है कि कोई दूसरा उसे सुधारे।

* दूसरों को सहयोग देकर ही उसे हम अपना सहयोगी बना सकते है।

* सम्भव की सीमा असंभव से ही आगे निकल कर जानी जा सकती है।

* असत्य अगर विजयी भी हो जाएं तो उसकी विजय अल्पकालिक होती है।

* धन को बर्बाद करने पर तो आप केवल निर्धन होते हैं लेकिन समय को बर्बाद करने पर तो आप जीवन का एक हिस्सा गंवा देते हैं।

* कर्म को स्वार्थ से परमार्थ की ओर ले जाना ही मुक्ति है। कर्म का त्याग मुक्ति नहीं है।

* अपने दोस्त के लिए जान दे देना इतना मुश्किल नहीं है जितना मुश्किल ऐसे दोस्त को ढूंढना जिस पर जान दी जा सके।

* प्रत्येक कार्य अपने समय से होता है उसमें शीघ्रता ठीक नहीं, जैसे पेड़ में कितना ही पानी डाला जाए पर फल वह अपने समय से ही देता है।

* यशस्वियों का कर्त्तव्य है कि जो अपने से होड़ करे उससे अपने यश की रक्षा भी करें।

* मानव हृदय में घृणा, लोभ और द्वेष वह विषैली घास है जो प्रेम रूपी पौधे को नष्ट कर देती है।

* हम महानता के सबसे करीब तब होते हैं जब हम विनम्रता में महान होते हैं।

* संसार में शांति से ज्यादा बहुमूल्य और कोई वस्तु नहीं है। हर मनुष्य अंत में शांति ही चाहता है। मन में शांति हो तो ही दुनिया सुंदर लगती है।

* विचारकों को जो चीज आज स्पष्ट दिखती है दुनिया उस पर कल अमल करती है।

* विश्वविद्यालय महापुरुषों के निर्माण के कारखाने हैं और अध्यापक उन्हें बनानेवाले कारीगर हैं।

* सेवा के लिये पैसे की जरूरत नहीं होती, जरूरत होती है अपना संकुचित जीवन छोड़ने की, गरीबों से एकरूप होने की।

* हमेशा वो निर्णय लें, जिसके परिणाम का आप अनुमान लगा सकते हैं। जिसका परिणाम समझ में नहीं आता हो, ऐसे निर्णय परेशानी की ओर ले जाते हैं।

* जब किसी समस्या से आप परेशान हो जाएं तो हड़बड़ाहट करने की बजाए शांति से बैठकर सोचना चाहिए उस समस्या का हल उसी समस्या के भीतर से आपको मिल जायेगा।

* जब आप अगर कुछ गँवा बैठते हैं तो उससे प्राप्त शिक्षा को न गवाएं।

* सांप, राजा, बाघ, छोटा बच्चा, किसी और का कुत्ता, अज्ञानी मूर्ख और डंक मारनेवाला बिच्छु इन सातों को कभी भी नींद से नहीं जगाना चाहिए।

* दूसरों की गलतियों से सीखने की ललक भी उत्तम है उसको सीखने के लिये पूरी आयु भी कम पड़ेगी।

* अगर कोई सर्प जहरीला नही है तब भी उसे जहरीला दिखना चाहिए वैसे दंश भले ही न दो पर दंश दे सकने की क्षमता का दूसरों को अहसास करवाते रहना चाहिए।

* हर मित्रता के पीछे कोई स्वार्थ अवश्य होता है यह कड़वा सच है।

* कोई भी काम शुरू करने के पहले अच्छी तरह सोच लेना चाहिए कि यह काम मैं किसलिये कर रहा हूं? इसका परिणाम क्या होगा? और क्या मैं सफल हो पाऊंगा? तभी कोई कार्य करना चाहिए।

* भय को नजदीक मत आने दो। अगर यह नजदीक आये तो इस पर आक्रमण कर दो। भय से पलायन मत करो पर इसका सामना अवश्य करना चाहिए।

* दुनिया की सबसे बड़ी ताकत पुरुष का विवेक और महिला की सुन्दरता है।

* काम का निष्पादन करना चाहिए, परिणाम से मत डरो।

* सुगंध का प्रसार हवा के रूख का मोहताज होता है पर अच्छाई सभी दिशाओं में फैलती है।

* ईश्वर चित्र में नहीं चरित्र में बसता है अपनी आत्मा को मंदिर बनाओ। व्यक्ति अपने आचरण से महान होता है जन्म से नहीं।

* ऐसा व्यक्ति जो आपके स्तर से ऊपर या नीचे हो उन्हें दोस्त न बनाओ वह तुम्हारे कष्ट का कारण बनेगा। समान स्तर के मित्र ही सुखदायक होते है। आपकी संतति, घर-परिवार ही आपके सबसे अच्छे मित्र है।

* अज्ञानी के लिये किताबें और अन्धे के लिये दर्पण एकसमान उपयोगी है।

* जीवन में शिक्षा ही सबसे अच्छी मित्र है। शिक्षित व्यक्ति सदैव हर जगह सम्मान पाता है। शिक्षा की शक्ति के आगे युवा शक्ति और सौंदर्य दोनों ही कमजोर है।

* वहम सदैव हमें उल्टे विचारों की ओर ले जाता है। इसलिये वहम को अपने से दूर रखने की कोशिश करो। वहम अशुभ आशंकाएं, संदेह उत्पन्न करता है।

* आधुनिक अर्थप्रधान युग में धन-वैभव होने के बावजूद शांति, प्रेम और सहानुभूति नहीं है। तकनीकी अविष्कार इतने बढ़ गये है फिर भी इतनी अराजकता, कटुता का वातावरण है। इससे ज्ञात होता है कि बुद्धि का ही निरंकुश उपयोग है। भावपूर्ण बौद्धिक ऊर्जा एक संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण करती है। मानव जीवन का समस्त क्रियाक्षेत्र बुद्धि पर ही आधारित है। शारीरिक बल और भौतिक वैभव के बाद महत्वपूर्ण आवश्यकता है बौद्धिक कुशलता की। यह सब होते हुए भी मनुष्य एक खालीपन का अहसास करता है। वर्तमान विकास में चारों ओर तर्क-वितर्कों का जाल फैला हुआ है, धूर्तता, मनोरोग, कलह-क्लेश ही दिखाई पड़ते हैं। हम जिंदगी की सभी उलझनों को बौद्धिक क्षमता के द्वारा सुलझाने का प्रयत्न करते है।

✻ हर व्यक्ति के जीवन में उठाव और झुकाव का समय आता है।

✻ संघर्ष और प्रतिद्वंदिता से भरी इस दुनिया में अतीत में या यदाकदा चमत्कार दिखा कर आप बने नहीं रह सकते।

✻ प्रेम और दीवानगी के पीछे कोई तर्क नहीं होता।

✻ आदमी हर कीर्तिमान को ध्वस्त कर खुद उससे ऊपर उठना चाहता है।

✻ किसी भी व्यक्ति का सुन्दर होना अच्छा है किन्तु यदि वह सुन्दर के साथ-साथ गुणवान भी है तो उसकी सुन्दरता दो गुणा बढ़ जाती है। उसकी हर तरफ सराहना होगी। कुल (वंश) अच्छा होने के साथ यदि वह स्वभाव से शीलवान व व्यवहार कुशल हो तो कुलीन होने का फल कई गुना ज्यादा हो जायेगा। ज्ञानी के साथ-साथ सिद्धिवान भी हो तो अति फलदायक है। धन की तो सार्थकता ही उपयोग करने में है। यदि मनुष्य अपने द्वारा संचित धन का उपयोग न करके उस पर सांप की तरह बैठ जाता है तो उसका धन संचित करना निरर्थक हो जाता है।

✻ भगवान हाथों में लकीरें देता है लेकिन उससे किस्मत हमें ही लिखनी पड़ती है। हमारे कर्म ही भाग्य की दिशा तय करते है।

✻ किसी को धन तो वापस किया जा सकता है पर सहानुभूति के शब्द वे ऋण हैं जिसे चुकाना मनुष्य की क्षमता के बाहर है।

✻ क्रोध में मनुष्य को सोचने की शक्ति नहीं रहती। कठिन से कठिन परिस्थिति में भी हमें अपने विवेक से काम लेना चाहिए।

✻ जब तक हम पवित्र होकर अपने उद्देश्य पर डटे रहेंगे तो हम कभी भी अपने उद्देश्य पर निष्फल नहीं होंगे।

✻ मनुष्य एक पाठशाला खोलता है तो वह एक जेलखाना बन्द कर देना है।

✻ हमारी नैतिक प्रकृति जितनी उन्नत होगी उतना ही उच्च हमारे विचार और अनुभव होंगे, उतनी ही हमारी इच्छाशक्ति अधिक बलवती होती जाएगी।

✻ सतत परिश्रम, सुकर्म और निरंतर सावधानी से ही स्वतंत्रता का मूल्य चुकाया जा सकता है।

✻ पराजय से सत्याग्राही को निराशा नहीं होती बल्कि कार्यक्षमता की लगन और बढ़ती है।

✻ सृजनशील बने रहने के लिये प्रतिष्ठा का अस्वीकरण अनिवार्य है।

✻ सबसे श्रेष्ठ विजय प्रेम की है जो सदैव के लिये विजेताओं का हृदय बांध लेते है।

✻ पूर्णत्व के बिल्कुल विपरीत, चरित्र की एक कमजोरी होती है जिसे लापरवाही कहते हैं। जिस किसी में यह आदत पड़ जाती है वह कोई भी काम पूरे तौर पर या ढंग से नहीं करता और मामूली या फूहड़ तरीकों से किए गए काम पर सन्तोष कर लेता है। लापरवाही का मतलब सुस्ती या अमुक कामों को करने की मानसिक असमर्थता नहीं है।

✻ जिस किसी के पास विद्या रूपी धन है तो उसे सभी धन प्राप्त होते हैं, सभी धनों में विद्या रूपी धन ही सबसे बड़ा धन है। यदि धनवान होते हुए भी किसी के पास विद्यारूपी धन नहीं है तो उसे दीन समझना चाहिए। जो मनुष्य धन से तो दरिद्र है, लेकिन विद्या उसके पास है तो उसे दीन नहीं समझना चाहिए।

✻ अभिप्राय यह है कि तुच्छता और दरिद्रता का आधार धनहीनता न होकर विद्याहीनता है। अत: हर मनुष्य को धन की अपेक्षा विद्या प्राप्ति के लिए ही प्रयत्नशील होना चाहिए, क्योंकि विद्याहीन व्यक्ति धन को भी खो बैठता है। जबकि विद्वान अपनी विद्या की शक्ति से पर्याप्त धन एकत्रित कर लेता है।

✻ जो आस्था असत्य होगी, वह अंत में निष्फल ही सिद्ध होगी।

❋ वर्षा के जल के समान कोई जल नहीं। खुद की शक्ति के समान कोई शक्ति नहीं। नेत्र ज्योति के समान कोई प्रकाश नहीं। अन्न से बढ़कर कोई संपत्ति नहीं।

❋ विद्वत्ता युवकों को संयमी बनाती है। यह बुढ़ापे का सहारा है, निर्धनता में धन है और धनवानों के लिए आभूषण है।

❋ जैसे मोमबत्ती बिना आग के नहीं जल सकती, मनुष्य भी आध्यात्मिक जीवन के बिना नहीं जी सकता।

❋ मनस्वी पुरुष पर्वत के समान ऊंचे और समुद्र के समान गंभीर होते हैं। उनका पार पाना कठिन है।

❋ सच्ची मित्रता आनंद को दोगुना और दुख को आधा कर देती है।

❋ मनुष्य के लिए निराशा के समान दूसरा पाप नहीं है। इसलिए मनुष्य को पापरूपिणी निराशा को समूल हटाकर आशावादी बने रहना चाहिए।

❋ साफ सुथरे सादे परिधान में ऐसा यौवन होता है जिसमें अधिक उम्र छिप जाती है।

❋ प्रसिद्ध होने का यही उपाय है कि मनुष्य को निरंतर प्रगतिशील बने रहना चाहिए।

❋ क्रोध, लोभ और ईर्ष्या की आग से हमेशा बचना चाहिए। ये जब भी लगती है तो किसी को भस्म किए बगैर शांत नहीं होती।

❋ मानव जिस लक्ष्य में मन लगा देता है, उसे वह श्रम से हासिल कर सकता है।

❋ किसी भी मनुष्य की वर्तमान स्थिति देखकर उसके भविष्य का उपहास मत करो क्योंकि काल में इतनी शक्ति है कि वो कोयले को भी हीरे में बदल सकता है।

❋ शारीरिक, मानसिक, नैतिक व आध्यात्मिक ये सब पीड़ाएँ वेदान्त के अनुभव करने से तुरंत दूर होती हैं और कोई आत्मनिष्ठ महापुरुष का संग मिल जाये तो वेदान्त का अनुभव करना कठिन कार्य नहीं है।

❋ मन को कर्त्तव्य की डोरी से बांधना पड़ता है वरना उसकी चंचलता आदमी को न जाने कहां-कहां ले जाए।

❋ अगर अवसर दस्तक न दे तो स्वयं ही प्रगति का द्वार बना लें।

❋ जो सीधी, सरल बात करता है वह किसीको धोखा नहीं दे सकता और जिसके पास अधूरा ज्ञान है वह मीठे बोल बोल नहीं सकता। यह उसी प्रकार है जैसे कामना रहित व्यक्ति श्रृंगार नहीं करता।

❋ जब तक जीना तब तक सीखना, अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।

❋ मनुष्य के लिए निराशा के समान कोई दूसरा पाप नहीं है। इसलिए निराशा से उबरकर आशावादी बनना चाहिए।

❋ बड़प्पन अमीरी में नहीं ईमानदारी और सृजनता में निहित है।

❋ जब प्रलय होती है तो समुद्र भी अपनी मर्यादा त्यागकर किनारों का साथ छोड़ देता है। पर सज्जन मनुष्य प्रलय एवं विपत्ति में भी अपनी मर्यादा नहीं छोड़ते।

❋ जिस तरह से विभिन्न स्त्रोतों से उत्पन्न धाराएं अपना जल समुद्र में मिला देती हैं, उसी प्रकार मनुष्य द्वारा चुना हर मार्ग, चाहे अच्छा हो या बुरा भगवान तक जाता है।

❋ जीवन की दुर्घटनाओं में अक्सर बड़े महत्व के नैतिक पहलू छुपे हुए होते हैं।

❋ शक्तिशाली से शक्तिशाली मनुष्य भी एकदिन कमजोर हो जाता है और बुद्धिमान से बुद्धिमान व्यक्ति भी गलतियां कर बैठता है।

❋ चिंता से चित्त को संताप और आत्मा को दुर्बलता प्राप्त होती है। इसलिये कभी चिंता नहीं करनी चाहिए।

❋ समय एक ऐसी सम्पदा है जो चली जावें तो लौटकर नहीं आती। इसकी कीमत पर कोई भी कामयाबी हासिल की जा सकती है। समय का सदुपयोग करनेवाले लोग जीवन में कभी निराश नहीं होते। समय का पालन प्रकृति से मिले नियमों में से प्रमुख नियम है। जो समय का सदुपयोग नहीं कर पाते वे जीवन जीते नहीं बल्कि किसी तरह जीवन काटते है। सच्ची सफलता इसी में है कि जितने दिन जीयें उसका एक-एक पल सार्थक तरीके से व्यथित हो। जीवन में उतार-चढ़ाव तो अक्सर आते ही है लेकिन बुद्धिमान विवेकशील लोग उनसे प्रभावित नहीं होते। लोग जीवन के हर क्षण को मूल्यवान समझकर उसका सदुपयोग करते है। हर मेहनत संपत्ति तभी बनती है जब समय का सही उपयोग किया जाय। ठीक समय पर काम करने पर मनुष्य के शरीर और उसके इंद्रियों को उसकी आदत पड़ जाती है। उसको मन की सुख की भी अनुभूति होती है।

❋ आलस्य मनुष्य के जीवन में एक अभिशाप है। हम सभी को जीवन में एक से बढ़कर एक अवसर मिलते हैं। पर हम इन अवसरों को अपने आलस्य के कारण गँवा बैठते है।

❋ हर रोज एक नई चुनौती हमारे सामने होती है हम उन चुनौतियों पर विजय पाने की उम्मीद और कोशिश भी करते है।

❋ जब कभी कोई योग्यता में कमी हो तो हमारा उत्साह उसे पूरा कर देता है। पर हम आलस्य के कारण करते नहीं है। हमें सदा सोचना चाहिए कि वो काम अभी और आज ही क्यों न किया जाएं। परिस्थितियों का बहाना तो कमजोर लोग करते हैं पर जिनमें काम करने का दृढ़ निश्चय वह अवसर हर किसी को चाहे प्राप्त न हो पर जीवन में कुछ कर गुजरने की इच्छावाले व्यक्ति किसी कामको आनेवाले कल पर नहीं छोड़ता। कठिनाइयां समाप्त होने पर व्यक्ति आलस्य का शिकार हो जाता है। छोटे से भी विरोध और व्यवधान का सामना करने में वह स्वयं को नितांत असमर्थ पाता है।

❋ सुविधासंपन्न व्यक्ति अपना सामर्थ्य गँवा बैठता है और संघर्षशील व्यक्ति की क्षमता निरंतर बढ़ती जाती है। सफलता का कमल कठिनाइयों के कीचड़ के बीच खिलता है। तभी तक जीवन धारदार रहता है। तब तक वह प्रतिरोधी और चुनौतियों की सान पर चढ़ा रहता है।

❋ स्वयं को अच्छा समझनेवाले लोगों के पास नैतिकता होती है, उनके अपने उसूल होते हैं, ईमानदार नीतियां होती है, वे अपने उसूलों से चिपके रहते है तभी उनको अपने ऊंचे होने का अहसास होता है। जो स्वयं को अच्छा समझते है वे इस पूरी दुनिया को हमेशा नीचा ही देखते हैं।

❋ अच्छे लोग हर जगह होते हैं। उनके अपने उसूल हैं, अपनी मर्यादाएं होती है। वे बहुत नैतिक होते हैं। उनका अस्तित्व भी लम्बा होता है। वे अपनी अच्छाई के दायरे में अनछुए होते हैं उम्मीद के सहारे जीते हैं।

❋ आप अपनी नैतिकता, अपने उसूलों, अपनी ईमानदार नीतियों, अपनी मर्यादाओं के साथ जो कुछ भी करने की कोशिश कर रहे हैं, वह जीवन को आसान बनाने के लिए है, एक ऐसे स्थान में व्यवस्था ढूंढने के लिए है जहां नहीं समझ पा रहे हैं कि शुरू कहां से है और इसका अंत कहां। जीवन-प्रक्रियाएं इतनी अव्यवस्थित और असहनीय हैं कि आप अपनी स्वयं की मर्यादाएं, अपनी स्वयं की ईमानदार नीतियां और अपने खुद के उसूल बना कर एक मूर्खतापूर्ण व्यवस्था लाने की कोशिश कर रहे हैं। अस्तित्व स्वयं में एक संपूर्ण व्यवस्था है।

❋ अधिक लालसा इंसान को कमजोर बना देती है। भौतिक प्राप्तियां तो गिरगिट की तरह रंग बदलती है एक आवश्यकता पूरी नहीं हुयी कि दस और पैदा हो जाती है। तृष्णा इतनी अधिक है कि पूरे पर्वत को भी निगल जाती है। इसे नियंत्रित करना बहुत मुश्किल है।

❋ धन-सम्पदा हमारी सेवा के लिए है लेकिन जब संग्रह किया जाता है तो हम उसकी सेवा में लग जाते है। लोभ के

कारण उसकी वैभव, सम्पन्नता, कुलीनता, विद्वत्ता आदि विशेषताएं नष्ट हो जाती है।

✻ सफलता अपने दृष्टिकोण के उपर ज्यादा निर्भर है बल्कि प्रतिभा और कुशलता से। सफलता हमारी योग्यता नहीं बल्कि दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। सफलता का मानक दृष्टिकोण है। जैसा आपका दृष्टिकोण होगा वैसा ही जीवन प्राप्त होगा। आपका दृष्टिकोण सकारात्मक होना चाहिए वही आपकी जीत निश्चित है। हम घटनाओं, परिस्थितियों और व्यक्तियों को जिस दृष्टि से देखते है उसीसे हमारा दृष्टिकोण बनता है। किसी भी व्यक्ति, स्थिति और वस्तुके प्रति हमारा दृष्टिकोण या तो सकारात्मक होगा या नकारात्मक। अगर सकारात्मक होगा तभी हम लाभान्वित हो सकते है। हमारा दृष्टिकोण, हमारे विचारों द्वारा संचालित होता है। जैसे विचार वैसा दृष्टिकोण और जैसा दृष्टिकोण वैसी उपलब्धि। विचार ही हमारे जीवन को वास्तविकता प्रदान करते है। अगर हमें अभाव ही अभाव महसूस होते है तो हम अभावग्रस्त ही बने रहेंगे और दृष्टिकोण समृद्धि पर है तो समृद्ध होते देर नहीं लगती। एक सफल व्यक्ति वही है जो सफलता के विषय में सोचता है। चाहे व्यक्तिगत सम्बन्ध हो या व्यावसायिक सफलता का दोनों में हमारा साकारात्मक दृष्टिकोण बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

✻ विनम्रता ही व्यक्ति को बड़ा व महान बनाती है। इसके अभाव से मनुष्य पद और आयु में बड़ा होने के बावजूद अहंकार का ऐसा पुतला बनकर रह जाता है जो किसी के भी सम्मान का पात्र नहीं बनता।

✻ आवश्यकता से अधिक इच्छा रखना वासना है। उसकी पूर्ति में लगा इन्सान अच्छे-बुरे से भेद नहीं कर पाता है।

✻ हर व्यक्ति दूसरे को मूर्ख और अपने को बुद्धिमान मानता है जबकि वह जिस डाल पर बैठा हुआ है उसे ही काट रहा होता है।

✻ प्रतिभा किसी विशेष वर्ग और समुदाय, जाति, धर्म, क्षेत्र विशेष की बपौती नहीं होती। देश के हर बच्चे में गजब की प्रतिभा छिपी है आवश्यकता है इस प्रतिभा को उजागर करने की। मनुष्य के भीतर अनेक गुप्त शक्तियां सुप्त पड़ी होती हैं। हममें अपनी योग्यता नहीं है कि हम उनको जान पाएं।

✻ जो स्वयं पर दृष्टि डालने का प्रयत्न करता है वही महान बनता है। महापुरुष सदैव आत्मनिरीक्षण करते है, प्रत्येक भूल उन्हें नये सुधार की ओर प्रेरित करती है। अगर हमें खुद महान बनना है तो दूसरों को कमजोर समझने की भावना त्यागनी होगी। दूसरों में त्रुटियां ढूंढने की बजाय अपनी कमजोरियां तलाशनी चाहिए। अपनी शक्ति पहचानने में मनुष्य की शान है। हम अपने स्वयं का महत्व समझें, अपनी शक्ति पहचानें, समय का सदुपयोग करें। जीवन का हर क्षण बहुमूल्य है।

✻ मनुष्य में एक भीतरी व्यक्तित्व उसकी बाहरी व्यक्तित्व से कई गुना महान है। जिस पल मनुष्य अपनी इस अलौकिक गरिमा की झलक पा जाता है, उसके पांव मानव से महामानव बनने के मार्ग पर अग्रसर हो जाते हैं और आत्मनिरीक्षण से स्वयं की गरिमा पाते है।

✻ जो लोग यह सोचते है कि हम दूसरों का अस्तित्व मिटाकर ही रह सकते है, या अपनी सत्ता कायम कर सकते है तो पुराने इतिहास को देखना चाहिए। किस प्रकार हिंसक समाज अपना अस्तित्व खो बैठता है। जब एक नहीं रहेगा तो दूसरा कैसे रहेगा सभी एक-दूसरे से जुड़े है। बदलाव प्रकृति का नियम है।

✻ बिना किसी से मिले लोगों के बारे में अपनी राय बनाना उचित नहीं। लोगों को उनके कर्मों के आधार पर आंकना चाहिए न कि उसकी जाति, भाषा, प्रांत या रंग के आधार पर। हर व्यक्ति के कुछ पूर्वाग्रह होते हैं खासकर कुछ समुदायों और जाति के प्रति।

✻ दूसरों के लिए जीना, यह प्रकृति का नियम है। नदियां खुद पानी नहीं पीती, पेड़ स्वयं फल नहीं खाते। सूर्य का

प्रकाश सबके लिये होता है। फूल सुगंध अपने लिये नहीं बिखेरते फिर मनुष्य ही केवल अपने लिये कैसे जी सकता है। मनुष्य को कोई कार्य प्रकृति के विरुद्ध नहीं करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है कि वह यहाँ से कुछ लेकर नहीं जायेगा। फिर वह अपना जीवन सार्थक बनाने में क्यों नहीं सोचता। अपने परिवार, समाज, देश और सम्पूर्ण विश्व को कुछ देना चाहिए। सच्ची जिंदगी का अर्थ यही है। जो मनुष्य सिर्फ अपने लिये ही नहीं बल्कि दूसरों के लिये जीता है उसमें ही उसकी आत्मा का सच्चा सुख छुपा हुआ है।

* बिना ध्येय के तो आपकी जीवन नैया भी डूब सकती है।

* लक्ष्य बनाना अलग बात है और उस पर अमल करना अलग। लक्ष्य तभी पूरा होगा जब आप उस तक पहुंचने की योजना बनाएंगे और उसके अनुसार चलेंगे। आप जिस जगह पहुँचना चाहते है वहाँ तक पहुँचने का रास्ता तय करें। जीवन मूल्यवान है और सिर्फ तब तक चलता है जब तक जीवन के पास उद्देश्य के रूप में कुछ मूल्यवान हो, जीवन के ध्येय महत्वपूर्ण हो।

* किसी भी जीव को बाधारहित जीवन मिले तो उसमें स्वावलंबी होकर स्वतंत्र जीने की शक्ति नहीं आ सकती। जीवन के डगर पर बाधाएं मनुष्य की ऊर्जा बढ़ाती है उसमें विकास आयाम देती है। जब सब कुछ दाँव पर लगा हुआ होता है तभी मनुष्य की बुद्धि चमक उठती है और उसकी कार्यक्षमता कही गुना बढ़ जाती है।

* अधिक काम और तनाव की स्थिति का सकारात्मक पक्ष होता है। सीमित तनाव हमारे दिमाग को चेतन और जागरूक करता है, हमारे बोध और क्षमता को उच्चत्तम स्तर पर शक्ति देता है। दबाव में मनुष्य उच्चस्तरीय काम करता है। संसार में ऐसे बहुत से महापुरुष हुए है जिनकी दारुण परिस्थितियों में सबकुछ छिन लिया फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी और विपरीत स्थितियों को उपलब्धियों में बदल दिया। अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन एक इसके उदाहरण है।

* दु:ख मनुष्य को संवेदनशील बनाता है। भूखा रह चुका व्यक्ति ही किसी के पेट की पीड़ा का अनुभव महसूस कर सकता है। पैसे पैसे को मोहताज व्यक्ति ही गरीब की व्यथा समझ सकता है। समस्या ही जीवन में नये रास्ते दिखाती है।

* सिर्फ एक लफ्ज हमें जिंदगी के तमाम दर्द से आजादी दे सकता है और वह है-प्यार।

* मनुष्य गुणों से महान बनता है ऊंचे आसन पर बैठने से नहीं।

* जाति से कोई पतित नहीं होता, पतित तो वह है जो दुष्कर्म करता है।

* जो गर्व करता है उसका पतन निश्चित है।

* यदि तुम भूलों को रोकने के लिए द्वार बंद कर दोगे तो सत्य भी बाहर ही रह जाएगा।

* भावना ही मनुष्य का जीवन है। वही प्राकृतिक और नित्य है। उसके मामले में मनुष्य विवश है।

* प्रेम की रोटियों में अमृत रहता है, चाहे वह गेहूं की हों या बाजरे की।

* मनुष्य अपने विचारों की उपज मात्र हैं वह जो कुछ सोचता है, वैसा ही हो जाता है।

* हमेशा हल्की मुस्कान से मुस्कुरा देना चाहिए जो आपके मन की प्रसन्नता का अहसास कराता है। मुस्कुराकर किया गया अभिनंदन आपको और सामनेवाले को प्रसन्न और खुश रखेगा। इससे आप हीन भावना का शिकार होने से बचेंगे।

* किसी के पास रोने की आदत का परित्याग करना चाहिए। अवसादों, निराशाओं, आशंकाओं से घिरा हुआ मन आपके मुख-मंडल पर प्रसन्नता नहीं डालने देगा। इसलिये इनको दूर रखने का प्रयास करे।

* हमारे वचन चाहे कितने भी श्रेष्ठ क्यों न हों, परन्तु दुनिया हमें हमारे कर्मों के द्वारा ही पहचानती है।

* प्रकृति प्रसन्नचित्त एवं उद्योगी कार्यकर्ता को हर प्रकार से सहायता करती है।

* चाहे करोड़ों सूर्यों का प्रलय हो जाये, चाहे असंख्य चन्द्रमा पिघलकर नष्ट हो जायें परंतु ज्ञानी महापुरुष अटल एवं अचल रहते हैं।

* चुनौतियां जीवन को रुचिकर बनाती हैं और उनपर विजय जीवन को अर्थपूर्ण बनाता है। जीवन के कठिन निर्णय बुद्धिपूर्वक लें।

* खुशियाँ पाने के लिए कम से कम जरूरतें और अधिक से अधिक सामंजस्य की आवश्यकता है।

* जब आपको लगे कि आपकी दूसरों के साथ नहीं बनती तो उनको दोष न दें। अपने में दोष ढूंढ़ें।

* जब सबके साथ का सच साथ हो, तो झूठ का हाथ थामना नासमझी है।

* पागल बने बिना कोई महान नहीं हो सकता। यह अर्थ यह नहीं कि हर पागल महान व्यक्ति होता है।

* हमारे अपने बर्ताव से ही शत्रु भी मित्र बन जाता है और मित्र भी शत्रु में बदल जाता है।

* आवश्यकता उपयोगी कलाओं की जननी है और विलासिता ललित कलाओं की।

* इच्छा की प्यास कभी नहीं बुझती।

* प्रतिभावान की हर रचना उत्साह से भरपूर होनी चाहिए।

* जो धर्म करना चाहता है वह पोखर खुदवाए। पेड़ लगाना भी बहुत बड़ा धर्म है।

* एक बार धोखा खाया हुआ इंसान सच में भी विनाश का संदेह करता है।

* दो घोड़ों पर सवारी नहीं हो सकती। अपना घोड़ा पसंद कर लेना ठीक है।

* अच्छी और नेक सोच आदमी के जिस्म का खून साफ करती है और दूसरों पर जुल्म करने से रोकती है।

* आपने अपने जीवन का कोई लक्ष्य नहीं बनाया। आप किस दिशा में अपना कार्य कर रहे है, क्या आपका जीवन सफलता की ओर जा रहा है या यूं ही गुजर रहा है इसलिये जीवन में योजना सहित लक्ष्य बनाना निहायत जरूरी है।

* हार-जीत, अच्छे बुरे से दूर एक और दुनिया है। हर मन में और उस दुनिया में वैसा ही दिखता है जैसा हम देखना चाहते हैं।

* सफलता का अर्थ यह नहीं कि आप शिखर पर पहुंच जाएं पर सफलता का अर्थ यह है कि आप उस शिखर पर बने रहें। असफलता राह का एक मोड होता है न कि यात्रा की समाप्ति।

* कोई मनुष्य दूसरे मनुष्य को दास नहीं बनाता, केवल धन का लालच ही मनुष्य को दास बनाता है।

* सौभाग्य उन्हीं को प्राप्त होता है जो अपने कर्त्तव्य पथ पर अविचल रहते हैं।

* कुछ लोग दिल पर ऐसा असर कर जाते हैं, टूटे हुए शीशे में भी पूरे नजर आते हैं।

ऐसे लोग मिलते हैं कुछ पल के लिये पर जिंदगी भर के लिए दिल में उतर जाते हैं।।

* हँसना कला है। अति हँसना बला है और अकारण हँसना पागलपन है। हँसी स्वयं में एक चिकित्सा है। इतना अवश्य हँसो कि हँसते-हँसते पेट दुखने लगे। हँसने से सबकुछ दुखना बंद हो जायेगा। इतना हँसो की फेंफड़े पूरी तरह से खुल जाये।

* सारा संसार आदमी के मन का विस्तार है। आदमी का मन सारी चीजों को रंग डालता है। हम किसीको अपना कहते है तो किसीको पराया। किसी को मित्र समझते हैं तो किसीको शत्रु। कोई अच्छा लगने लगता है तो कोई बुरा। यह सब आदमी के मन का खेल है और आदमी यही सोचता है कि यही संसार है, जिसमें हम रहते है। यहाँपर जितने

मन है उतने संसार होंगे। एक आदमी में अनेक मन है। इसलिये मन से मुक्त होना ही संसार से मुक्त होना है। मन आदमी का कही जन्मों से भटक रहा है।

✻ अभिनय करनेवाले में और संगीतकार में सामंजस्य होना चाहिए। सामंजस्य होगा तो ही उस कहानी में रस आयेगा, मन झूम उठेगा। अगर आपस का तालमेल नहीं होगा तो संगीत महज शोरगुल बनकर रह जायेगा। इसीतरह सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये पति-पत्नी में सामंजस्य होना जरूरी है, समझ होना जरूरी है। दोनों के स्वभाव, विचारों और पसंद में सामंजस्य जरूरी है। अगर इनमें कुछ भी आपस में विपरीत रहा तो घर में महाभारत होना अनिवार्य है। पति-पत्नी का स्वभाव पानी की तरह होना चाहिए जो आपस में हर जगह घुल-मिल जाएं।

✻ संसार में सुखी रहना है तो सामंजस्य बिठाना सीख लेना चाहिए। सामंजस्य बिठानेवाला व्यक्ति कभी दु:खी नहीं हो सकता। दुनिया आपके हिसाब से नहीं चलेगी। आपको ही दुनिया के हिसाब से कदम-पे-कदम मिलाकर चलना पड़ेगा। अगर यह कला आपने जान ली तो तुम दुनिया को वश में कर सकोगे।

✻ यह शरीर एक मिट्टी के कच्चे घड़े की तरह है। जैसे कच्चे घड़े में पानी रखनेपर वह रिसते रहता है टिकता नहीं उसी तरह यह शरीर भी ज्यादा समय टिकनेवाला नहीं है। इसको बनने में नौ महीने लगते है लेकिन इसके मिटने में एक क्षण नहीं लगता। आज तुम बैठकर जहाँ हुकूम चलाते हो वहाँ कल कोई दूसरा हुकूल चलानेवाला होगा।

✻ जिंदा रहनेके लिये हवा सबसे जरूरी है। आदमी को आठ दिन भोजन नही भी मिले तो जिंदा रह सकता है, चार दिन पानी न मिले तो भी जिंदा रह सकता है लेकिन दो मिनट हवा न मिले तो उसकी हवा निकलने में देर नहीं लगती। हवा धर्मनिरपेक्ष है। हिन्दू हो, मुसलमान, जैन हो या बौद्ध हवा के लिये सब बराबर है कोई भेदभाव नहीं करती। गरीब के पास कोई नहीं जाता पर हवा जाती है। यह कुदरत की ओर से मनुष्य के लिये अनमोल तोहफा है।

✻ जिनको अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उचित मात्रा में धन है, पति-पत्नी एक-दूसरे से मधुर व्यवहार करते हैं, एक-दूसरे के प्रति दोनों समर्पित्त हैं। जहाँ हमेशा आनन्द की तरंगे उठती हों, पुत्र बुद्धिवान तथा पुत्री बुद्धिमती हो, सेवक आज्ञा पालन करनेवाले, भोजन आदि से अतिथि का सत्कार और भगवान शिव का पूजन होता रहता हो। घर में प्रतिदिन स्वादिष्ट भोजन और मधुर पेयों की व्यवस्था हो तथा निरन्तर श्रेष्ठ पुरुषों का आना-जाना लगा रहता हो, साधु-महात्माओं का सत्संग होता हो। ऐसे सद्पुरुषों का गृहस्थाश्रम वस्तुत: प्रशंसनीय और धन्य है।

✻ पड़ोसी का धर्म अवश्य निभाना चाहिए। आप भोजन अवश्य करें मगर इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि कही आपका पड़ोसी भूखा न रह जाएं। अच्छा पड़ोसी आशीर्वाद के समान होता है, पड़ोसी के साथ कभी लड़ाई झगड़ा नहीं करना चाहिए। हम मित्रों के बिना जी सकते है लेकिन पड़ोसी के बिना नहीं। पड़ोसी सुख-दुख में सहभागी बनता है।

✻ प्रेम के अभाव में ही लोग भटकते हैं और भटके हुए लोग प्यार से ही सीधे रास्ते पर लाये जा सकते हैं।

✻ जिसे सीखना हो उसे चारों तरफ से शिक्षा मिल सकती है। वृक्षों से सीख लो, पक्षियों से सीख लो, चांद-तारों, नदी-पहाड़ों से सीख लो। जिसे नहीं सीखना है, जो आँखें और कान बंद किये बैठा है वह बुद्धों का सत्संग भी करता रहे, तो भी कुछ न सीख पाएगा। वह तो वहाँ से भी खाली लौट आयेगा। अपने में सीखने की ललक और क्षमता होनी चाहिए। सीखने का मूल आधार है विनम्रता, झुकना और पारदर्शिता।

✻ हमारी प्रार्थना है ईश्वर से किसी का दिल न दुखे हमारे वजह से। ऐ खुदा कर दे कुछ ऐसी इनायत हम पे, कि खुशियाँ मिलें सबको हमारी वजह से।

* जो अपनी रोटी दूसरों के साथ बांटकर खाता है, उसे भूख की बीमारी कभी नहीं लगती।

* अगर किसी की किसी के प्रति आस्था है तो उसके बंद द्वार में भी रास्ता बन जाता है।

* बहाना बनानेके लिये अज्ञान ही आदमी का सबसे बड़ा सहारा है।

* प्रभु के आशीर्वादों की गणना करो, तो जीवन में कोई कमी नहीं होगी।

* मंजिलें उन्हीं को मिलती है जिनके सपनों में जान होती हैं। पंखों से कुछ नहीं होता हौसलों से उड़ान होती है।

* कुछ कर गुजरने की ख्वाहिशों को मुकाम जरूर मिलता है।

* बहुत मुश्किल होता है जब स्वयं का मन अपनी आँखों पर गलत नम्बर के चश्मे को लगाकर संसार को देखने की इच्छा रखना।

* किसी की खुशी में मुस्करा देना अच्छी बात है और किसी के आँसू पोंछना भी बहुत बड़ी बात है। पर यह बड़ा ही मुश्किल काम है।

* अगर सबको अपने दिल में बसा ले, सबके लिये अपनापन हो तो आदमी बेगानेपन से बच जाता है। मनुष्य अपनी फितरत से तबदीली कर पाएं तो संसार के सारे क्लेश मिट जाएंगे।

* प्रीत का और नेह का जन्म से रिश्ता जुड़ा है दौर खुशियों का चला तो वेदना रोने लगी।

* जो मिला, जिसको मिला, जैसा मिला उसका नसीब। चाहनेसे कभी कोई चीज मिलती नहीं।

* मंदिर में पुरुष ही पुजारी होते है इसलिये कि लोगों का ध्यान भगवान में लगे।

* चलता रहा चलता रहेगा कारवां ये जिन्दगी का। चुक रहा और चुकता रहेगा कारवां ये जिन्दगी का। जब कभी आयेंगे दिन गर्दिश भरे, पुण्य बनकर आयेंगे तब ढाल से।

* निर्मलता की बात किसीको नहीं सूझती, मन का कलुष मिटा ले तो कोई बात बनेगी।

* रेल्वे स्टेशन पर हजारों लोग होते है पर हर कोई अंजान है। संसार का सम्मान झूठा है। समाज की निगाहें बदलने को वक्त नहीं लगता। लोग जिस मुख से प्रशंसा करते है उसी मुख से निंदा भी करने लग जाते हैं। इसलिये दुनियापर बहुत अधिक भरोसा नहीं करना पता नहीं यह कब किस ओर लुढ़क जाय इसलिये गुरु जो रास्ता दिखाये उसीपर चलना। जिस सुई में धागा होता है वो सुई कभी नहीं खोती। वह शिष्य कभी नहीं भटकता जिसके जीवन में गुरु होता है।

* सर्वसाधारण जनता की उपेक्षा एक बहुत बड़ा राष्ट्रीय अपराध है। भय से ही दु:ख आते है, भय से ही मृत्यु होती है और भय से ही बुराईयां उत्पन्न होती है।

* पहले हर अच्छी बात का मजाक बनता है, फिर उसका विरोध किया जाता है लेकिन बाद में उसे ही स्वीकार कर लिया जाता है।

* आत्मविश्वास जैसा दूसरा कोई मित्र नहीं है। वही हमारी उन्नति में सबसे बड़ा सहायक होता है।

* कामनाएं समुद्र की भाँति अतृप्त होती हैं। पूर्ति का प्रयास करने पर वो तो पूरी नहीं होती पर कोलाहल ही अधिक बढ़ता है।

* जब तक मनुष्य स्वयं में विश्वास नहीं करता तो फिर वह परमात्मा में विश्वास नहीं कर सकता।

* जीवन का रहस्य भोग में स्थित रहना नहीं है वह केवल अनुभव द्वारा निरंतर सीखने से ही प्राप्त होता है।

* जो दूसरों से घृणा करता है वह स्वयं पतित होता है।

* हिंसा का आश्रय लेने से बलवान व्यक्ति भी सदा भय से प्रताड़ित रहता है। हमें आवश्यकता है अनुभव करने के लिये हृदय की, कल्पना करने के लिये मस्तिष्क की और काम करने के लिये हाथों की।

* मनुष्य की महानता उसके कपड़ों से नहीं बल्कि उसके चरित्र से आंकी जाती है।

* कोई भी व्यक्ति कितना भी महान क्यों न हो आँखें मूंदकर उसके पीछे नहीं चलना चाहिए। यदि ईश्वर को ऐसी ही बात स्वीकार होती तो वह हर प्राणी जीव को आँख, नाक, कान, मुँह, मस्तिष्क आदि क्यों देता।

* मौन क्रोध की सर्वोत्तम चिकित्सा है।

* महान कार्य महान त्याग से सम्पन्न होते है।

* जो स्वयं का आदर नहीं करता वह दूसरों को प्यार भी नहीं कर सकता।

* अभीष्ट पुरुष के मिलने पर शून्य स्थान भी भरा-भरा सा बन जाता है और विपत्ति भी उत्सव के तुल्य हो जाती है।

* शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य एक पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करना होता है जिससे एक जिम्मेदार व्यक्ति बन सकता है। शिक्षा का उद्देश्य भौतिक इच्छाओं की पूर्ति नहीं है बल्कि अपनी नैतिक जिम्मेदारियों के प्रति संवेदनशील होना है।

* नदी अपना मार्ग खुद बनाती है। दूसरे मार्ग से ले जाने पर वह अपने कुल और किनारे तोड़ देती है।

* समाज में चुप रहने की संस्कृति घातक है। सहन करना और किसी भी प्रकार का प्रतिकार न करने की वजह से असली अत्याचार और यौवन शोषण को बढ़ावा मिलता है।

* अभीष्ट पुरुष के मिलने पर शून्य स्थान भरा-भरा सा बन जाता है और विपत्ति भी उत्सव के तुल्य हो जाती है।

* धर्म वह संकल्पना है जो एक सामान्य पशुवत मानव को प्रथम इंसान और फिर भगवान बनाने का सामर्थ्य रखती है।

* इच्छारूपी समुद्र सदा अतृप्त रहता है उसकी मांगे ज्यों-ज्यों पूरी की जाती है, त्यों-त्यों और गर्जन करता है।

* आदर्श को पकड़ने के लिए सहस्त्र बार आगे बढ़ों और यदि फिर भी असफल हो जाओ तो एक बार नया प्रयास, अवश्य करो।

* लक्ष्य को ही अपना जीवन कार्य समझो हर समय उसका चिंतन करो उसी का स्वप्न देखो और उसी के सहारे जीवित रहो।

* जितनी हम दूसरों की भलाई करते हैं, उतना ही हमारा हृदय शुद्ध होता है और उसमें ईश्वर निवास करता है।

* धन से नहीं, संतान से भी नहीं अमृत स्थिति की प्राप्ति केवल त्याग से ही होती है।

* इस संसार में जो अपने आप पर भरोसा नहीं करता वह नास्तिक है।

* आप ईश्वर में तब तक विश्वास नहीं कर पाएंगे जब तक आप अपने आप में विश्वास नहीं करते।

* हमारे व्यक्तित्व की उत्पत्ति हमारे विचारों में है, आप क्या विचारते हैं, शब्द गौण हैं, विचार मुख्य हैं और उनका, असर दूर तक होता है।

* जिसने अकेले रहकर अकेलेपन को जीता उसने सब कुछ जीता।

* श्रद्धा का अर्थ अंधविश्वास नहीं है। किसी ग्रंथ में कुछ लिखा हुआ या किसी व्यक्ति का कुछ कहा हुआ अपने अनुभव बिना सच मानना श्रद्धा नहीं है।

* जब हर मनुष्य अपने आप पर व एक-दूसरे पर विश्वास करने लगेगा, आस्थावान बन जाएगा तो यह धरती ही स्वर्ग बन जाएगी।

✻ पीछे मत देंखो आगे देखो, अनंत उर्जा, अनंत उत्साह, अनंत साहस और अनंत धैर्य तभी महान कार्य किये जा सकते हैं।

✻ अपने सामने एक ही साध्य रखना चाहिए, जब तक वह सिद्ध न हो तब तक उसी की धुन में मगन रहो, तभी सफलता मिलती है।

✻ आपकी सफलता के लिए कई लोग जिम्मेदार होंगे मगर निष्फलता के लिए सिर्फ आप ही अकेले जिम्मेदार है।

✻ किसी भी मनुष्य के पास यह सोचने और बताने का समय नहीं है आखिर उसे जाना कहा है। बस दुनिया दौड़ रही है और उसे भी दौड़ते रहना है। मनुष्य चाहे किसी भी क्षेत्र का हो उसका मानना है कि इतने परिश्रम के बाद आज वो जहाँ पहुँच गया है वह हमेशा के लिये स्थायी नहीं है। कारण की दुनिया बहुत तेजीसे चल रही है। निरंतर आगे बढ़ रही है। वो हमारा इंतजार नहीं करेंगी। इस परिस्थिति ने तो मनुष्य का स्वभाव ही बदल दिया वह चिड़चिड़ा, असंतोषी और अधीर हो गया है। इसलिये सफलता की दौड़ में जुटे अधिकतर व्यक्ति किसी न किसी हद तक अपने को नाकामयाब समझने लगते है।

✻ आगे बढ़ने की आकांक्षा रखना कोई गलत नहीं है लेकिन दूसरों को गिराकर खुद आगे बढ़ने का दृष्टिकोण खतरनाक होता है। जो दूसरों को काटने का प्रयास करता है वह स्वयं कट जाता है। ईर्ष्या की मनोवृत्ति स्वयं अपने पैरोंपर कुल्हाड़ी चलानेजैसी है। दूसरों को भी विकास का अधिकार है। दूसरोंसे यह भी सीखे कि उनके कौनसे गुण सफल होनेमे साबित हुए और उनकी अच्छाइयों को अपनाये उनकी गलतियों से भी सबक लें।

✻ जीवन की समूची दौड़ ही शांति के लिये है। कोई धन से शांति खरीदना चाहता है तो कोई पद से। कोई सत्ता, अधिकार के बल पर शांति पाना चाहता है। शांति पाने के लिए इतने साधनों की जरूरत नहीं होती है। शांत और सुखी हर व्यक्ति बन सकता है पर धनवान हर कोई नहीं हो सकता। हर व्यक्ति में कुछ बनने की चाह होती है। हर किसीको दूसरे जैसा मकान, अधिकार, दूसरे के जैसे संसाधन चाहिए। इससे प्रतिस्पर्धा का भाव पनपता है। प्रतिस्पर्धा से संघर्ष पैदा होता है। संघर्ष असंतोष, अतृप्ति और दु:ख की अनुभूति को जन्म देता है। जो व्यक्ति भार से स्वयं को भरने का प्रयत्न करता है वह तो अशांत है। अर्थात जो पदार्थ विशेष में सुख की खोज करता है उसे तो सुख-दु:ख प्राप्त होते है। शांति की खोज भीड़ में नहीं एकांत में होती है, आचरण से नहीं, विचार से नहीं मन के निर्विचार होने से होती है। शांति भौतिक नहीं आत्मा के धरातल पर ही संभव है।

✻ जो पुरुषार्थ नहीं करते उन्हें धन, मित्र, ऐश्वर्य, सुख, स्वास्थ्य, शांति और संतोष प्राप्त नहीं होते।

✻ नियम के बिना और अभिमान के साथ किया गया तप व्यर्थ ही होता है।

✻ दुख को दूर करने की एक ही अमोघ औषधि है- मन से दुखों की चिंता न करना।

✻ सत्य से सूर्य तपता है, सत्य से आग जलती है, सत्य से वायु बहती है सब कुछ सत्य में ही प्रतिष्ठित है।

✻ बैर के कारण उत्पन्न होनेवाली आग एक पक्ष को स्वाहा किए बिना कभी शांत नहीं होती।

✻ जैसे जल द्वारा अग्नि को शांत किया जाता है वैसे ही ज्ञान के द्वारा मन को शांत रखना चाहिए।

✻ जैसे सूर्य आकाश में छुपकर नहीं विचर सकता उसी प्रकार महापुरुष भी संसार में गुप्त नहीं रह सकते।

✻ सत्य बोलना श्रेष्ठ है लेकिन सत्य क्या है, यही जानना कठिन है। जो प्राणिमात्र के लिये अत्यन्त हितकर हो, वही सत्य है।

✻ मनुष्य की इच्छाओं का पेट आज तक कोई नहीं भर सका है।

✻ जो प्राणिमात्र के लिये अत्यन्त हितकर हो, वही सत्य है।

❋ क्षमा असमर्थ मानवी का लक्षण और असमर्थों का आभूषण है।

❋ खूबसूरत लोग हमेशा अच्छे नहीं होते और अच्छे लोग हमेशा खूबसूरत नहीं होते।

❋ अपने भीतर सत्य का तत्व जागृत हो तो ईश्वर हर हाल में, हर परिस्थिति में मार्गदर्शन करता है और आपको किसी अन्य निर्देश की आवश्यकता नहीं पड़ती।

❋ किसी प्रिय वस्तु का त्याग एक तपस्या है ऐसे त्यागी निश्चय ही प्रशंसा का पात्र है। जीवन को कम से कम आवश्यकताओं से चलाना अच्छेपन का ही प्रमाण है।

❋ जिस मनुष्य का दुष्कर्म उसके सत्कर्मों से दब जाता है, वह इस लोक को मेघ से मुक्त चन्द्रमा की भांति प्रकाशित करता है।

❋ परमात्मा की भक्ति के बिना कोई दूसरी पावन वस्तु नहीं है जो हृदयों को धो सकती है और सबको एक बना सकती है।

❋ जब तक मनुष्य के मन में काम, क्रोध, अहंकार तथा लोभ की अल्पमात्रा भी शेष रहती है, तब तक पंडित और मूर्ख दोनों एक समान होते हैं।

❋ सत्य वह दौलत है जिसे पहले खर्च करो और जिंदगी भर आनंद पाओ। झूठ वह कर्ज है जिससे क्षणिक सुख पाओ पर जिन्दगी भर चुकाते रहो।

❋ जिसके जीवन को उसके इर्द-गिर्द की जनता चाहती है, वह सच्चा धनी है।

❋ धन पाकर फूलना नहीं चाहिए, विद्वान होकर अहंकार नहीं करना चाहिए।

❋ विद्या का अंतिम लक्ष्य चरित्र निर्माण होना चाहिए।

❋ बीज के बिना वृक्ष नहीं, मंत्र के बिना देवता नहीं और मातृका के बिना मंत्र नहीं।

❋ आज मित्र-मित्र पर विश्वास नहीं कर रहा। भाई अपने सगे भाई को शंका की दृष्टि से देख रहा है। पत्नी पति पर विश्वास नहीं करती। पति भी पत्नी पर अविश्वास करता है इसका कारण है कि व्यक्ति का स्वयं पर ही विश्वास नहीं रहा। व्यक्ति के पास विलक्षण क्षमताएं है वह समाज को बहुत कुछ दे सकता है पर लोग स्वार्थ में लगे हुए है। अपना उल्लू सीधा करने में संलग्न है। इन सबमें विश्वास की आवश्यकता है। विवाह भी उसी दम्पत्ति को करना चाहिए जिनका आपस में प्रेम और विश्वास हो।

❋ मानव जीवन भगवान का दिया हुआ अनुपम वरदान है। अगणित योनियों में भ्रमण करने के पश्चात मिला है। जो सुविधाएं इस शरीर में प्राप्त है वो अन्य किसी योनि के शरीर में नहीं। पेट पालने और सुख चैन की साधन जुटाने की सुविधा एवं प्रतिभा तो पशु पक्षियों को भी प्राप्त है। मनुष्य की विशेषता यह है कि वह विवेकमान, संयमी, सद्गुणी और धार्मिकहै। अपना आत्मिक स्तर ऊंचा उठाते हुए अपूर्णता से पूर्णता की ओर चले। जितनी इस दिशा में प्रगति होगी उतना ही उसका जीवन सार्थक बनेगा। आत्मिक सद्गुणों में आत्मसंयम और परोपकार प्रधान है। जो इन दोनों उपलब्धि में जितना अधिक निरत है, वह उतना ही अधिक मानव-जीवन के महत्व को समझकर उसे प्राप्त करने में आगे बढ़ रहा है। यह भावना मनुष्य को सन्मार्गगामी बनाती है और उसकी आंतरिक शक्तियों को विकसित कर पारमार्थिक लक्ष्य की ओर अग्रसर करती है।

❋ आनंद पाना चाहते हो तो उसकी ओर कदम बढ़ाओ। लंबी मंजिल के लिए एक-एक डग भरते चलने से उसकी समीपता का लक्ष्य पूरा हो सकता है। आनंद बालकों की भविष्य चिंतन जैसी कल्पना और बूढ़ों की तरह अतीत की स्मृतियों की चर्चा की चीज नहीं है उसके लिये कर्मनिष्ठ व्यक्तियों की आवश्यकता है। आनंद गहरे कुएं का जल है, जिसे निकालने के लिए प्रबल पुरुषार्थ करना पड़ता है। मोती लानेवाले समुंदर की गहराई में उतरते है और जोखिम उठाते है।

यदि संकल्प दृढ़ है वास्तव में आनंद में रहने की इच्छा है तो स्वयं प्रसन्न रहो और दूसरे को प्रसन्न रखो यही नीति अपनाकर आंतरिक संतोष प्राप्त करो।

* मस्तिष्क में विरोधी बातों को कभी मत उपजने दो। यह न जाने कब विद्रोह पैदा कर दे। परदोष-दर्शन, घृणा तथा द्वेष करके भी मन में प्रतिशोध की भाव न रहे। प्रत्येक व्यक्ति में अच्छाई ढूंढो। गुण-ग्राहकता से आपके सद्‌गुण बढ़ेंगे। किसी का अहित मत विचारो। अपने से बन पड़े तो उपकार करो। कोई अपराध भी करता हो तो उसे क्षमा करो। सद्‌गुणों और सद्‌विचारों की कीमत कई गुना अधिक होकर वापिस लौटती है पर मनुष्य के अंत:करण को शीतल बना देती है। यह सारा संसार परमात्मा से ही ओतप्रोत है। किसी के प्रति बैर भाव रखना परमात्मा से विद्रोह पैदा करना है। सद्‌भाव सारे वातावरण में फैलाकर आपके हृदय में पवित्रता, शांति तथा मैत्री का विस्तार करना चाहिए। इस तरह के कल्याणकारी की कभी दुर्गति नहीं होती वह चिरकाल तक सुखों और आनंद का उपभोग करता रहता है।

* आपके पास धन, जवाहर, हीरे-मोती, सोना-चांदी होते हुए भी आप सुखी नहीं है अशान्त है। आपके पास बंगले, कोठी, घर-गृहस्थी, पत्नी, बाल-बच्चे सभी कुछ है पर शांति संतुष्टि नहीं है। सुख की तलाश सबको है पर सुखी कोई नहीं। पर जिसे कुछ भी नहीं चाहिए वो ही सच्चा आनंद और सुख भोग सकता है।

* अपनी जिंदगी को आज बदलो आनेवाले कल पर दाँव मत लगाओ। बिना एक लम्हा गँवायें ही जिंदगी के आयाम बदलो। हमारी जिंदगी दूसरों से मिले प्यार, दोस्ती और देखरेख से अहम बनती है।

* सच का समर्थन कोई अपना फर्ज समझकर या ग्लानि कम करने के लिये नहीं करता वास्तव में ऐसा करना ही उसके लिये नाम है।

* हमारे समाज में औरत पैदा नहीं होती पर उसे औरत बनकर जीना पड़ता है।

* यह जुल्म है जिससे लड़ने-भिड़ने जैसे हालात पैदा होते हैं।

* जब किसी को अहसास-ए-कमतरी में धकेलने की कोशिश की जाती है ऐसे हालात में उस शख्स में हीन भावना पनप जाती है।

* औरत और मर्द के लिए प्यार शब्द का मतलब एक नहीं है और यही फर्क दोनों के बीच ज्यादातर गलतफहमी की वजह बनती है। अपने को एक ऐसी चीज में तबदील कर लेना जिसपर किसी बात का असर न हो दरअसल उसके जैसा हो जाना नहीं है।

* अपने बच्चों को अपने जैसा हो जाना उसकी इच्छा करना गलत है।

* कोई कितना भी प्रतिभासंपन्न क्यों न हो अगर वह प्रतिभा जिन हालातों में जी रहा है उसमें और विकास नहीं कर पाता तो यह समझना चाहिए कि उस व्यक्ति का होना न होना एक जैसा है।

* मेरी स्वप्न लीला के तुम मधुर स्पर्श हो और कलान्त जीवन में अमृत सुधा बरसाने वाले हो।

* हर खुशी में कोई कमी सी है, हंसती आंखों में भी नमी सी है।

* प्रेम निस्वार्थ होता है, किसी एक के लिये नही बल्कि सबके लिये एक जैसे होता है।

* जिन्दगी का असली रोमांच प्यार करने मे ही है।

* विद्याहीन व्यक्ति का जीवन सर्वथा निरर्थक है।

* नारी अगर किसी से नफरत करने लगे तो वो सभी दायरे, मर्यादा और बन्धनों को तोड अपना इन्तकाम लेती है।

✻ जिन्दगी में खूबसूरती ही सब कुछ नहीं होती, बुद्धिमत्ता, साहस और संकल्प जैसे गुण भी उससे अधिक महत्वपूर्ण है।

✻ जीत का जज्बा ही मनुष्य को आगे बढ़ने को प्रेरित करता है जीवन की दौड़ में महत्व सिर्फ उसी का नहीं होता जो जीतता है पर उसका भी होता है जो यह दौड़ हारता है।

✻ तू करता वही है जो तू चाहता है, पर होता वही है जो मैं चाहता हूं।

जब तू वही करेगा जो मैं चाहता हूँ तो वही होगा जो तू चाहता है।

✻ शासक या सरकार के प्रति यदि जनता का विश्वास डगमगा गया तो उसका पतन निश्चित है। विश्वास एवं विश्वसनीयता से बढ़कर किसी शासक के लिए सर्वोत्तम तत्त्व और कुछ हो ही नहीं सकता क्योंकि अन्य वस्तुएं जैसे आधुनिक शस्त्र, सर्वोत्तम साधन आदि तो रुपये- पैसों से खरीदे जा सकते हैं किंतु विश्वास को अपना सर्वस्व न्योछावर कर देने पर भी नहीं खरीदा जा सकता। विश्वास ही इस संसार में एक ऐसा तत्व है जो अपनी दृष्टि और आचरण से प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए आत्मा की शुद्धता आवश्यक है। यदि जनता का विश्वास किसी बड़े राजनेता पर से उठ जाए तो वह उसी क्षण आसमान से जमीन पर आ गिरता है।

यह तो सृष्टि का शाश्वत नियम है कि जो दूसरों का विनाश चाहता है, उसका विनाश सबसे पहले होता है।

स्वच्छता हमेशा समृद्धि लाती है, जबकि गंदगी दरिद्रता का द्वार खोलती है।

जिस शैक्षणिक संस्था के संचालकों का चरित्र महान और जीवन त्यागपूर्ण होगा, निश्चय ही वहां के विद्यार्थी भी महान होंगे

मनुष्य होकर जो मनुष्यता ही न जाने वह मनुष्य नहीं है। अगर किसी को कुछ दे नहीं सकते तो उससे छीनने का प्रयास भी न करो।

जीवन में सफलता के लिए उत्साह का होना बहुत आवश्यक है।

✻ अपना हठ तीव्रता को छोड़ने से हमारी शिकायत की तीव्रता कम होती है, उसके प्रति रुख नरम होता है। उसका दृष्टिकोण समझ आता है एवं सकारात्मक व्यवहार होने पर उसका भी रुख बदल जाता है। कठोर रुख में हम समस्या का रूप होकर रह जाते हैं, उसी के चिंतन में कार्यक्षमता क्षीण हो जाती है, नर्म रुख से मनुष्य समाधान स्वरूप हो जाता है। बीच में अवरोधों को पार करते हुए गंतव्य तक पहुंचना होता है। अवरोध के सामने खिलाड़ी यह नहीं सोचता कि अवरोध क्यों आया? वह तो बिना आउट हुए कैसे इसे पार करूं एवं जीत पाऊं, इसी चिंतन में रहता है। हमारी जीवन यात्रा भी गति-अवरोध को साथ-साथ लेकर गुजरती है।

✻ हर अच्छे काम के लिए पहल किसी एक को ही करनी पड़ती है। मगर हर कोई दूसरे के भरोसे बैठा रहे तो कभी अच्छे काम की शुरूआत होगी ही नहीं।

✻ अवसर हर मनुष्य के जीवन में आता है और उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है, मगर साधारण मनुष्य उसे पहचानते तक नहीं, इसलिए जो जहां थे वहीं पड़े रह जाते हैं, पर जो अवसर को पहचान लेता है, वही जीवन में कुछ खास काम कर जाता है। अवसर एक बार आकर चला जाता है तो फिर लौटकर कभी वापस नहीं आता।

✻ दुनिया भर को अपने अनुकूल करने से बेहतर व आसान है निजी बदलाव।

✻ नकल करने के लिए भी अकल चाहिए।

✻ कटुता प्रिय नहीं, विनम्रता सबको प्रिय है।

✻ यदि मनुष्य क्रोध, अहंकार, माया, लोभ आदि पर विजय प्राप्त कर ले तो वह शासक बन जाता है पर इन पर विजय

नहीं प्राप्त कर पाता तो वह गुलाम बन जाता है।

* उत्तम व्यक्ति भी दुष्टों के अपशब्द को सहन करते हुए अपने कार्य करता चलता है। स्वयं को वश में करनेवाले प्राणी से उत्तम कोई हो ही नहीं सकता।

* जिस दिन लोगों में यह समझ आ जाएगी कि लड़ने के पहले लड़ाई की जड़ जान लें तो कभी झगड़ा-फसाद होंगे ही नहीं।

* जीवन में कभी इतना तेज मत दौड़ो कि किसी को तुम्हें रोकने के लिए पत्थर उठाना पड़े।

* अंत:करण में विवेक और संतोष का भाव रखने से ही स्थायी सुख, शांति और प्रसन्नता मिलती है।

* इन्सान की रक्षा ले लिए हथियार का कोई मूल्य नहीं है। जिसे परमात्मा मारना चाहता है, उसे दुनिया की कोई शक्ति नहीं बचा सकती और जिसे परमात्मा बचाना चाहता है, उसे कोई भी शक्ति मार नहीं सकती।

* संसार का प्रत्येक काम सहयोग से होता है। हमारी एकता से ही शरीर का काम चलता है।

* किसी महापुरुष के विचारों को अपने आचरण में जीना ही उसके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होती है। इससे उस महापुरुष के ज्ञान की ज्योति चारों तरफ फैलती है। और इसका लाभ न सिर्फ उसके अनुयायियों को बल्कि समाज के हर व्यक्ति को मिलता है।

* दीन-दुखियों की सेवा ही सच्ची प्रार्थना है।

* धर्म ही वह मित्र है जो इस लोक और परलोक दोनों में साथ देता है। यह चिरस्थायी सुख-शांति प्रदान करता है।

* जो व्यक्ति नीति के मार्ग को छोड़ता है, उसका पतन अवश्यम्भावी है।

* ज्ञान ऊँच-नीच की किसी पिटारी में बंद नहीं रहता।

* मानवीय भावों में निंदा और प्रशंसा के कारण ही इंसान मृत्यु को नहीं जीत पाता और जब तक जीवन है तब तक उसमें निंदा और प्रशंसा के भाव आते ही रहेंगे और मृत्यु का सिलसिला भी अनवरत चलता ही रहेगा।

* स्वयं की परेशानियों को भूल कर दूसरों को आनंद पहुंचाने का प्रयत्न ही जीवन की हर सिद्धि और आनंद का राज है। यदि तुम स्वयं सुख और आनंद पाना चाहते हो, तो वही दूसरे को भी देना सीखो। तुम यदि यह साध सकोगे तो तुम्हारी सारी साधना हो जाएगी। जो लोग आध्यात्मिकता को किसी खास नियम और जीवन शैली में देखते हैं, वे उसके नैसर्गिक पक्ष से वंचित रह जाते हैं। खरा आध्यात्मिक जीवन दूसरों को सुख बांटने में होता है। उसमें आनंद और खुलेपन का अनुभव होता है।

* अपने लोगों से स्नेह किए बगैर परम तत्त्व के प्रति भी प्रेम नहीं हो सकता।

* प्रेम ऐसी चीज है जो बांटने से बढ़ती और देने से मिलती है। मांगो मत पाओ और पाने के लिये लुटाना होगा।

* किसी व्यक्ति को दुर्गुणों से दूर रखने के लिए हमें हर संभव उपाय करने चाहिए।

* मानव जीवन का चरम और सार्थक रूप मोक्ष है। उसे पाने के लिए व्यक्ति तप या पुरुषार्थ करता है।

* शुभ भावना जिस क्षण उठे, तत्काल उसे कार्यरूप दे दें। वह क्षण बीत जाए, अपने ऊपर भरोसा करते हुए कि कर लेंगे, तो शिखर से दूसरी तरफ नीचे आते-आते वही भावना दुर्भावना में बदल जाती है। बुरी भावना आए, तो उसे जरूर स्थगित कर दें।

* मनुष्य को कभी भी अपना अच्छा स्वभाव नहीं भूलना चाहिए।

* जो लोग साधन को ही साध्य समझने की ऐसी भूल करते हैं, वे सिद्धि का लक्ष्य कभी प्राप्त नहीं कर पाते। वे अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं और अपनी लक्ष्य प्राप्ति की राह से हटकर अन्यत्र चल देते हैं।

* जिसे अपने कर्म और पुरुषार्थ पर अविश्वास है, वह कभी कोई काम अपने बल पर नहीं कर सकता है। तन में शक्ति तो हो, लेकिन कर्म में भरोसा न हो, तो कोई काम नहीं हो सकता। शक्ति और कर्मण्यता का योग ही सफलता है।

* सभी जीव इस सृष्टि में एक दूसरे पर निर्भर है। किसी भी चीज को कम करना एक चक्र को तोड़ना होगा। इस पृथ्वी पर जो कुछ भी है, वह बेकार नही है और कही न कही एक चक्र से जुड़ा है। इसे नष्ट करने की कोशिश हमारे लिये खतरनाक हो सकती है।

* कर्म से ही मनुष्य की पहचान होती है कुल और गोत्र से नहीं।

* किसी के मन को दुखी करके तुम कभी सुखी नहीं रह सकते हो।

* अपनी गलती का अहसास ही किसी व्यक्ति के सुधरने का रास्ता है।

* निष्ठा, संकल्प और इच्छाशक्ति किसी में है तो उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है।

* मोक्ष सुख के समक्ष राज-सुख अत्यंत तुच्छ है। सांसारिक वैभव व विलासिता शरीर को तो सुख पहुंचा सकते हैं, किंतु आत्मा आध्यात्मिक संपन्नता में ही सुख का दर्शन कर पाती है और आत्मा के संतोष से बढ़कर और कोई सुख-संतोष नहीं होता है।

* यदि व्यक्ति में पूर्ण आत्मविश्वास है तो शारीरिक विकलांगता भी उसकी राह में बाधा नहीं बन सकती।

* विनम्रता, कोमलता मानव को उदात बनाती है। लोकप्रिय बनाती है। यह जीवन का एक सहज स्वाभाविक गुण भी है।

* अशक्त की सेवा करने से बड़ी तीर्थयात्रा और कोई नहीं है।

* दूसरों को शिक्षा देने का सर्वश्रेष्ठ तरीका स्वयं का सदाचरण है।

* समझबूझकर काम न करनेवाले लोग अवसरों को अपने हाथ से यों ही गँवा देते हैं। उनका लाभ नहीं उठा पाते।

* दुनिया भर को अपने अनुकूल करने से बेहतर व आसान है निजी बदलाव।

* दुश्मन की शुभकामनाओं पर भरोसा नहीं करना चाहिए।

* निर्णय अनुभव के आधार पर लिए जाते हैं। गलतियां न दोहराने का संकल्प ही अनुभव को आगे बढ़ाता है तथा अनुभव और कठोर परिश्रम ही सफलता पर पहुंचने का मार्ग सुनिश्चित करते है।

* जो लोग पेड़-पौधों और पक्षियों को स्नेह देते हैं वे उनसे बदले में उतना ही स्नेह पाते हैं।

* धन से व्यक्ति कभी सुखी नहीं होता। जिनके पास अधिक धन है क्या उनके पास कोई गम नहीं है? व्यक्ति वास्तव में खुश तो तभी हो पाता है जब वह अंदर से संतुष्ट हो।

* अगर हम कुदरत की हरेक वस्तु को सर्वश्रेष्ठ मान लें तो हमारी कई समस्याएं अपने आप हल हो जाएंगी। अच्छे-बुरे का भेद ही मिट जाएगा। प्रकृति में तो हरेक वस्तु को सुंदर बनाया गया है। हम उसमें भेद पैदा कर देते हैं। अगर हरेक चीज में श्रेष्ठता के दर्शन हों तो समाज के बहुत सारे विवाद अपने आप ही खत्म हो जाएंगे।

* बुरा काम करना जितना मुश्किल है, उससे कहीं अधिक मुश्किल है दूसरों के सामने अपनी बुराइयों को कहना।

* दूसरों के घरों को जलता देखकर अपने घर की फिक्र करनी चाहिए।

* छोटी-छोटी पगडंडियां भी राजपथ पर पहुंचा देती हैं और मनुष्य अपने गंतव्य स्थान पर पहुंच जाते है।

* मनुष्य को किसी पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। वही व्यक्ति जीवन में सफल हो सकता है जो सबसे ज्यादा अपने ऊपर विश्वास करता हो।

❋ जिसे पदार्थ प्राप्त नहीं है, वह त्यागी नहीं है। त्यागी वह होता है, जो अपने स्वतंत्र मन से त्याग कर दे। वही प्रसन्न रह सकता है। अभावग्रस्त प्रसन्न नहीं रह सकता। साधन, सुविधा संपन्न व्यक्ति भी प्रसन्न नहीं रह सकता। उसे पैसे की सुरक्षा की चिंता सताती है। वे हमेशा भयभीत रहता है। अभय वही हो सकता है, जिसने स्वेच्छा से त्याग किया है।

❋ लोभ के लिए व्यक्ति कुछ भी कर सकता है। इसी लोभ और तृष्णा के कारण दुनिया में सारे पाप होते हैं। यह लोभ ही पाप का सबसे बड़ा कारण है।

❋ उन दानियों की अपेक्षा जो दूसरों का धन लेकर दान देते हैं या उन व्यक्तियों की अपेक्षा जो दूसरों से दान मिलने की आशा में सबका मुंह ताकते रहते हैं, स्वयं परिश्रम कर अपना पेट भरनेवाला ज्यादा अच्छा है।

❋ शासक का धर्म तो सेवा और परोपकार करना है, सुख भोगना नहीं। सेवा और परोपकार का भाव ही व्यक्ति की स्थिति को सुदृढ़ बनाता है।

❋ छोटे के महत्व को कभी कम नहीं आंकना चाहिए।

❋ आदमी में शुभ गुण तभी तक हैं जब तक वह तृष्णा से दूर है। तृष्णा का स्पर्श होते ही सब गुण गायब हो जाते हैं।

❋ वही जीविका श्रेष्ठ है जिसमें अपने धर्म की हानि न हो और वही देश उत्तम है जहां कुटुम्ब का पालन हो।

❋ ठग किसी संबंध का ख्याल नहीं करते, वे सभी को ठग लेते हैं।

❋ उपासना के द्वारा विवेक उत्पन्न होता है, विवेकी होने से क्षणिक वस्तुओं से शोक और आनन्द ये दोनों नहीं होते।

❋ जिस वस्तु का अस्तित्व नहीं है, उसे हम विश्वास से उत्पन्न नहीं कर सकते।

❋ विषयों के संबंध में सोचने से उनसे सम्पर्क हो जाता है।

❋ सत्य कोई ऐसी सुलभ वस्तु नहीं है, जिसे मूल्य चुकाए बिना सुगमता से हर व्यक्ति प्राप्त कर सके।

❋ नि:स्वार्थता की मात्रा के अनुपात में ही सफलता की मात्रा रहती है।

❋ सहनशील होना अच्छी बात है, परन्तु अन्याय का विरोध करना उससे भी उत्तम है।

❋ वास्तविक तथ्यों के कारण सिद्धान्तों में व्यावहारिक दृष्टि से परिवर्तन हो जाता है।

❋ मूर्खता दुखदायी है, जवानी भी दुखदायी है, लेकिन इससे कहीं ज्यादा दुखदायी है किसी दूसरे के घर जाकर उससे अहसान लेना।

❋ बिना कारण कलह करना मूर्ख का लक्षण है। इसलिए बुद्धिमत्ता इसीमें है कि अपनी हानि सह लें, लेकिन विवाद न करें।

❋ धर्म प्रेम सिखाता है बैर नहीं। हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह अपने अलावा दूसरे धर्मों को भी जाने। अधिक से अधिक धर्मों के विषय में जानकर हम एक अच्छे इंसान बन सकते हैं।

❋ अपराधी अपने सिवाय और सबको दोष देता है। हम सब ऐसे ही है। मानव प्रकृति ऐसे ही काम करती है।

❋ किसी की आलोचना मत करो ताकि कोई भी तुम्हारी आलोचना न करे।

❋ भय से पैदा हुई उम्मीद सबसे उत्तम होती है।

❋ क्रोधी इंसान को एक बार फिर क्रोध तब आता है जब वह अपने क्रोध को समझ जाता है।

❋ उत्तरदायित्व से बल हासिल होता है। जहां कहीं उत्तरदायित्व होता है, वहीं विकास होता है।

❋ हमारे जीवन में बहुत सी ऐसी स्थितियां आती है कि हमारे संबंध दूसरों के साथ कैसे है? हमारे बातचीत का स्वरूप क्या है। हमारा दूसरों के साथ, मित्र, परिवार जनों या सहकर्मीयों के साथ कैसा बर्ताव और व्यवहार है। हम दूसरों के प्रति

कैसा दृष्टिकोण रखते है यह सब हमारी सोच का परिणाम है। हमारी ज्ञानशक्ति से जीना सीख लेते है तो हम किसी और को दोषी नहीं ठहरा सकते। आम आदमी के जीवन के संघर्ष की कहानी यही है कि वह अपने दोषों के बदले दूसरों को दोषी ठहराता है। जीवन संघर्ष का रास्ता कठिन है। जो इसे पार कर लेता है वह स्वयं में दृढ़ हो जाता है यही उसके जीवन की चुनौती है। जीवन की हर चुनौती एकदम नयी और रोमांचकारी होती है। कुछ लोग ऐसे होते है जो जीवन को खेल मानकर उसके सुख-दुख के दोनों पहलुओं को अंत तक खेल की तरह ही खेलते रहते है। हमारा जीवन सुख-दुख का संयोग है। जीवन में सुख और दुख धुप छाँव की तरह आते रहते है। कभी सुख की शीतल फँवारे उठती है तो कभी दुख की जलती बिखरती चिंगारियां फैलती है। सुख के पल यूं फिसल जाते है कि पता भी नहीं चलता। लगता है कि यह सब अभी-अभी घटित हुआ है और दुख के पल काटे नहीं कटते। सुख के पर होते है वो फुर्र करके उड़ जाता है। जो कोई सफलतापूर्वक दुख के सागर को पार कर लेता है वही सच्चा सुरमा है। कमजोर व्यक्ति तो इसमें डूब जाता है और बहादुर उसे पार कर जाते है।

❋ कोई भी समस्या सर्वाधिक रूप से वाणी से ही प्रभावित होती है। बुरे समय में व्यक्ति कितनी घुटन और असहजता का अनुभव करता है कि वह बोलकर अपनी पीड़ा प्रकट करना चाहता है। ऐसी पीड़ा सिर्फ अपनों के बीच ही बाँटनी चाहिए। खराब दौर से गुजर रहे व्यक्ति को कभी भी उसकी तकलीफों का उल्लेख नहीं करना चाहिए क्योंकि वह अपने कष्ट सुनकर आत्मविश्वास खो बैठता है और अवसादों में घिर जाता है। किसी दूसरे की परेशानी दूर करना मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है। जो तत्परता से संवेदनशीलता से, कुशलता से इस धर्म का पालन करता है वही श्रेष्ठ व्यक्ति है। दूसरों का दर्द अपने में महसूस करना ही उसका बड़प्पन है।

❋ व्यक्ति को सब तरफ देखकर विचार कर चलना चाहिए। सम्यक प्रकार से, सच्चे मन से व्यवहार करना, सोच-समझकर बोलना, बच-बचाकर कदम बढ़ाने चाहिए यही सब आचरण की शिक्षा है। ज्ञान के साथ जो आचरण किया जाता है वह आचार है, ज्ञान का अर्थ है सिद्धांत और व्यवहार की जानकारी। ज्ञान होनेपर उत्तम आचरण होगा। सही ज्ञान से विवेक होगा और जमीर सुधरेगा। विवेक का अर्थ है सही या गलत की पहचान, उचित-अनुचित की पहचान। यह जितनी सही होगी उतना ही यथार्थ जीवन होगा। जितना ही यथार्थ आचरण होगा हमारे आचार संहिता भी उतनी ही सही होगी और उसीसे बढ़कर नैतिकता होगी। नैतिकता वह गुण है जिसका जन्म विवेक और जमीर से होता है जो कागज पर उतरकर कानून बन जाती है जो भ्रष्टाचार का प्रतिरोध करता है। नैतिकता कानून की कठोरता और न्याय की नजाकत से अलग होती है। बहसबाजी और पक्षपात से अधूरी रहती है। हठ और उपजत से हठकर चलती है। नैतिकता किसी धर्म की पाबंद नहीं होती जबकी धर्म नैतिकता का पाबन्द होता है। नैतिकता अंतरात्मा की आवाज होती है। नैतिकता अनहद नाद है। नैतिकता से ही अमीर, गरीब, मालिक, मजदूर, नेता-जनता, आस्तिक-नास्तिक, ज्ञानी-अज्ञानी, बाल-वृद्ध, स्त्री पुरुष सबका मूल्यांकन हो सकता है।

❋ जीवन में संस्कारों की बड़ी उपयोगिता है जो अच्छे विचारों से अंकुरित होते है। हर व्यक्ति संस्कारों का पुतला है न कोई व्यक्ति अच्छा है न बुरा। अच्छे विचार अच्छे निमित्त पाकर अच्छा बनता है और कुसंग से, बुरे विचारों से निमित्त पाकर बुरा बनता है। सुसंस्कारों और कुसंस्कारों से ही वह स्वयं को सुखी या दुखी बनाता है। इसी दुनिया में ज्ञान का प्रकाश भी और अज्ञान का अंधेरा भी है। इसमें से उसको क्या चुनना है यह सब उसके अपने संकल्प पर निर्भर है। आचरण यदि नैतिक होगा तो व्यक्ति सुखी और निराकुर जीवन जियेगा।

❋ व्यक्तिकी सदैव अतृप्त रहनेवाली भौतिक इच्छाएं उसके सात्विक चित्त और अमूल्य चरित्र को पतन के गर्त में गिरा

देती है। रूपये पैसे के आधार पर खड़ा कृत्रिम जीवन जीने की अंधी लालसा से ही हमारे अंदर शांति लुप्त हो जाती है। कुछ प्राप्त हो गया तो प्रसन्न हो जाते है कुछ छीन गया, चला गया, नहीं मिला तो दु:खी और अशांत हो जाते है। ढ़ेर सारा पैसा कमाने से हम कोई सफल इंसान नहीं बन सकते। पैसा कमाने के साथ उसका नेक मकसद भी होना चाहिए। एक अच्छा नेक मकसद ही हमें वास्तव में धनवान और अमीर बनाता है। हम सच्चे अमीर तभी बनते है जब लोग हमारा सम्मान करते है, हमपर भरोसा और विश्वास करते है।

* वास्तविक आनंद की अनुभूति केवल वो ही लोग कर सकते है जिन्होंने व्यर्थ के आकर्षण से अपने को मुक्त कर लिया।

* संयम अपने आप नहीं आता उसके लिये साधना करनी पड़ती है। लालसाएं अपने आप कम नहीं होती उनके लिये प्रयास करना पड़ता है। जीवन की चिंता और पदार्थ के मोह से अपने आप मुक्ति नहीं होती। स्वयं को छोड़ना पड़ता है उससे मुक्त होना पड़ता है।

* इस संसार में मौजूद हर वस्तु और हर प्राणी हमारे भरण पोषण में सहयोग दे रहा है। इसलिये हमें इन सबके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। कृतज्ञता कोई नजरिया नहीं है यह एक ऐसा झरना है जो उस समय खूद-ब-खूद उत्स हो पड़ता है। जब आप कुछ प्राप्त होने या मिलनेपर अभिभूत हो उठते है तभी ईमानदारी कृतज्ञता से भरा एक क्षण भी आपके पूरे जीवन को बदलने के लिए समर्थ है। इस दुनिया में बहुत सारी चीजें जो हमको जीवित और सुरक्षित रखने के लिये आपस में मिल-जुलकर काम करते है। जिनका जिंदगी में तो कोई प्रत्यक्ष लेना देना तो नहीं है पर जीवन में हर पल कितना कुछ देते रहती है। जरूरत है आपको जिंदगी का असली चेहरा पहचाननेका। यदि आप कृतज्ञ है तो आप ग्रहणशील भी होंगे। जब आप किसी के प्रति आभारी होते है तो उसको आप आदरभाव से देखते है। अगर कोई चीज दी जाती है, तो उसे कोई लेनेवाला भी होना चाहिए।

* किसीके अंदर भूख जगाना बेहद मुश्किल काम है।

* हमारा डर कोई जंगल में पैदा नहीं होता बल्कि हमारे मन में ही पैदा होता है। हमें अपना अन्त:क़रण साक्षी देता है कि हमने सही या गलत किया है। हमें अपने पुण्य और पाप का मालूम होता है। हमें इनका अहसास होता है लेकिन लालच और तृष्णा के कारण हम उन्हें नजरअंदाज कर देते है। अच्छे और बुरे का अंतर समझते हुए उस ओर से आंखें मूंद लेते है। जो जैसा कर्म करेगा वह फल भी वैसा ही भोगेगा और हमारे बुरे कर्मों के दोष परमात्मा को देते है। जब अच्छे काम का श्रेय हम स्वयं लेते है तो बुरे कर्म और फल का दोष भी हमें स्वयं स्वीकारना चाहिए। यदि धृतराष्ट्र पुत्र मोह और सिंहासन के लालच में न फंसते तो दोनों परिवारों में कलह नहीं होती। महाभारत दुर्वचन और दुष्कर्मों की प्रतिध्वनि था। कटाक्षों और ईर्ष्याका ही प्रतिफल था। सभी अपना अपना कर्त्तव्य पहचानकर कर सद्भाव और प्रेम से एक-दूसरे से व्यवहार करें तो सही लोकतंत्र होगा। पर यहां तो सब अपने अपने स्वार्थ से बढ़ते है इसलिये विनाश अवश्यम्भावी है। ईश्वर का स्मरण करनेवालों के कर्म निर्मल होते है और निर्मल कर्म जब प्रतिध्वनित होते है तो सुख देते है।

* जब मानवता पर संकट आता है तब सज्जन पुरुष अपनी पूरी क्षमता के साथ लोगों के कष्टोंको कम करने के लिए आगे आते है। जो कुछ नया करना चाहते है या समाज के बने बनाये नियमोंमे, प्रथाओं, रिवाजों में बदलाव करना चाहते है तो इन्हें अनेक तरह की कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता है। बदलाव का, मजबूत इरादा रखनेवाले स्वयंसेवी कभी भी अपने पद से विचलित नहीं होते। वे दृढ़ता के साथ अपने कर्त्तव्य पथ पर आगे बढ़ते है। राक्षसी ताकतें हमेशा लोकहित के अनुष्ठान में बाधा डालती है लेकिन देवशक्ति सदा बिना विचलित हुए अपना कर्त्तव्य करती है। दानवी शक्तियां

लोकरंजन के कार्यों में रुकावटें पैदा करती है। हमारी खूबी बहने के साथ बाधाओं को पार करने में है। यदि समाज सेवा में लगा व्यक्ति विघ्न डालनेवालों से डर जाता है तो वह अपने अंदर निहित देवशक्तिको स्वीकार्य करता है और समाज के प्रति अपने दायित्व से पीछे हटता है। लोकसेवा का काम मान-अपमान, सुख-दु:ख, यश-अपयश की भावना से ऊपर उठकर स्थिर प्रज्ञ की स्थिति में किया जाता है।

❊ कोई भी राष्ट्र अपने संयमी नागरिकों में ही स्थिर रह सकता है। जिस राष्ट्र का नेतृत्व धैर्यवान और सेवाभावी नागरिकों के हाथों में होगा वह राष्ट्र तेजी से आगे बढ़ेगा। हम सब अपने ऊपर दायित्वों, जिम्मेदारियों से बंधे है। हम कोई पृथक ईकई नहीं जो दायित्वों को स्वीकार करते है वे रास्ते में बाधक बन जाते है। हममें से हर एक कोई आधुनिक दुनिया के नैतिक दिवालिएपन के लिए जिम्मेदार है क्योंकि सार्वजनिक हित के लिए जो कर सकते है वो हम नहीं करते। चारों ओर फैली गिरावटों में भी हमारा ही हाथ है चाहे जानबूझकर, या भूलचूक या पापसे। समय और ज्ञान की मांग है इस प्रवृत्ति को बदलने के लिए हमें पूर्णरूप से प्रयत्न करना चाहिए। यदि स्वस्थ मूल्यवाले समझदार लोग इन समस्याओंसे से जुट जायें तो मनुष्य जाति में शांति और बुद्धिमत्ता आयेगी और हम अपने सभ्यता को विनाश से बचा सकेंगे।

❊ उचित-अनुचित का ज्ञान रखकर बोलने से व्यक्तित्व प्रभावशाली बनता है। इसलिये हमेशा तोल-मोल के बोलना चाहिए। मनुष्य के व्यक्तित्व की पहचान उसके बातचीत करने के ढंग से होती है। भले ही मनुष्य कितना भी सुंदर हो पर यदि वाणी में कर्कशता या रुखापन हो तो वह कभी भी किसी को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकेगा और सबसे अपने सम्बन्ध बिगाड़ लेगा। इसके विपरीत सामान्य-सा दिखनेवाला व्यक्ति यदि सौम्य और वाणी में मधुर है तो वह सहज ही सबको अपनी ओर आकर्षित कर लेगा। उचित-अनुचित का ज्ञान रखकर ही बोलना चाहिए। कभी भी बहुत ऊंची स्वर में चिल्ला-चिल्लाकर नहीं बोलना चाहिए। जो चिल्ला-चिल्लाकर बोलना चाहते हो वह शांत रहकर भी बोला जा सकता है। बोलते समय विषय का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए। बिना सोचे समझे कभी नहीं बोलना चाहिए। समय, अवसर और स्थान का विशेष ध्यान रखना चाहिए। बाजार, अस्पताल आदि स्थलों में धीरे से बात करनी चाहिए। दो लोगों के बीच में कभी भी नहीं बोलना चाहिए न ही बिना मांगे अपनी कोई सलाह देनी चाहिए। दूसरों की बात ध्यान से सुनकर उनकी रुचि का खयाल रखकर तभी बोलना चाहिए। बोलते समय बेवजह अपने हाथों को अन्य मुद्राओं को, आँख मटकाने को या दूसरों को स्पर्श करना इत्यादि न करें। खाते हुए और पानी पीते हुए भी कभी न बोले, किसी दूर खड़े व्यक्ति से दूर से ही चिल्लाकर बुलाने का प्रयत्न न करें पास जाकर ही बोलना चाहिए। अपने अध्यापक, गुरुओं, बड़ों से शिष्टाचारपूर्वक बोलना चाहिए। अपने उच्च अधिकारी का मान करते हुए अपने मातहतों को कभी तुच्छ नहीं समझें। बच्चों के सामने उनके अध्यापक व रिश्तेदारों के लिए भी कभी कोई अपशब्द न कहें।

❊ सत्य से कोई बच नहीं सकता। सत्य कोई परिभाषित नहीं किया जा सकता। यदि आपके सामने कोई असत्य बोल रहा होता है तो आप अंदर ही अंदर क्रोधित हो पड़ेंगे और स्वीकार नहीं कर पाएंगे। आप अपेक्षा करते है कि सब सत्य बोले। जब आप जानते है कि यह सत्य नहीं बोल रहा तो आप स्तब्ध रह जाते है। जो सत्य आपके लिए एक क्षण में है हो सकता है वह किसी और के लिए सत्य न हो। आप किसी बात को सत्य मानते हो हो सकता है वो असत्य हो। इसलिये सत्य की सटीक परिभाषा नहीं की जा सकती।

❊ कई बार हम उनकी भावनाओं को समझ नहीं पाते जो हमारे दिल के बहुत करीब होते है। जैसे कोई पुस्तक आंखों के बहुत करीब लाकर पढ़ी जाती है तब धुंधला ही नजर आता है।

❋ सभी ऊंगलियां अलग-अलग लम्बाई की होती हैं, लेकिन जब वे मुड़ती है, तो सबकी लम्बाई एक-सी दिखाई देती है। जिन्दगी बहुत आसान हो जाती है, जब हम हर तूफ़ान में मुड़ना याने झुकना सीख लेते हैं।

❋ मन का मंदिर ही सच्चा मंदिर है। स्वयं में खोजे बिना चाहे हम किन्हीं मंदिरों की पूजा करें और किन्ही मस्जिदों में प्रार्थनाएं पढ़ें और किन्हीं शिवालयों में जाकर हम दीये जलाएं, न कोई शिवालय है और न कोई मस्जिद और न कोई मंदिर काम का आएगा, क्योंकि मंदिर तो एक है जो मनुष्य के भीतर है। पत्थर और ईंटों के मंदिरों ने मनुष्य को परमात्मा से जोड़ा नहीं बल्कि तोड़ा है। मंदिर और मस्जिद दुश्मन की भांति खड़े हो गए हैं। मस्जिद और मंदिर में जानेवाले लोग एक दूसरे के शत्रु होकर खड़े हो गए हैं। परमात्मा ने मनुष्य को तोड़ने के लिए दीवार नहीं बनाई है, ना ही कोई सीमा बनायी है जो एक-दूसरे को अलग कर दे। निश्चित ही जो मंदिर और मस्जिद मनुष्य को मनुष्य से अलग कर दे वे सब झूठे ही है। वे मंदिर मस्जिद पत्थरों से बनाए गए है और उनमें बैठे हुए भगवान भी पत्थरों से अधिक कुछ नहीं है।

❋ सीमाहीन सुविधा के लिए तो अतिरिक्त मूल्य देना पड़ता है। हम भी अपने जीवन में असीमित सुविधाएं चाहते है। अपनी सुविधाओं की सीमा नहीं तय कर, अपनी लालच को बेलगाम विस्तार देकर हम अपना नुकसान करते है और दूसरों के लिए भी अभाव पैदा करते है। परिस्थितिकीय असंतुलन जैसी सभी प्राकृतिक आपदाएं, भ्रष्टाचार, आर्थिक-सामाजिक विषमताएं, पारिवारिक विघटन, हिंसा और आतंक ये सब समस्याएं हमारी सुविधाओं के विस्तार का ही परिणाम है।

❋ जीवन चलाने के लिए धन की आवश्यकता जरूरी है पर हम उतना ही संग्रह नहीं करते जितना जीवन चलाने के लिए पर्याप्त हो। हमें चाहिए धन, सम्पत्ति, मकान, गाड़ी, बँक बॅलेन्स, संग्रह की लिप्सा तो लगातार बढ़ती जाती है और यही हमारे दु:ख का कारण है।

❋ सुख कोई बाहर से आनेवाली वस्तु नहीं है बल्कि हमारे अंदर ही मौजूद है। आज का मनुष्य जीवन अपनी मानी हुई असत्य मान्यताओं एवं भ्रमण में ही जी रहा है। उसकी सोच है मोटर गाड़ी के बिना वो सुखी नहीं है। बँक बैलेन्स उसे सुखी बना सकता है। उसके पास बंगला कोठी होनी चाहिए वही सुख का आधार है। यह उसकी भ्रांति है। सुख का आधार पदार्थ नहीं है बल्कि हमारे मन में, हमारे आत्मा में अंदर से आनेवाली वस्तु हैं। हमने सुख का आधार स्वयं को न मानकर बाह्य पदार्थोंको मान लिया है और अज्ञान के अंधकार में भटक रहे है। सुख का खजाना हमारे अंत:करण के अंदर है। जिसे हम झाँककर अंदर नहीं देखते बल्कि जीवनभर बाहर भटकते रहते है।

❋ विषय वासनाओं के त्यागी पुरुष भी क्रोध, मानादि का त्याग नहीं कर पाते हैं। व्यक्ति को अपने क्रोध पर नियंत्रण रखना अत्यंत आवश्यक है।

❋ अपने आश्रितों पर, नौकरों पर या परिवार के अन्य सदस्योंका तिरस्कार करते रहता है। घरोंमें पति अपनी पत्नी पर बच्चोंके सामने क्रोध करने मे संकोच नहीं करता। यह हमारे समाज के लिए शोभनीय नहीं है। काम-वासनाएं जितनी खतरनाक है उससे अधिक खतरनाक क्रोध होता है। काम-वासनाओं का क्षेत्र सीमित है। लेकिन क्रोध, बैर, विरोध एवं तिरस्कार का क्षेत्र विशाल है जो कही भी किया जा सकता है। जब क्रोध अंधकार का रूप ले लेता है तो कही अनहोनी घटना घट जाती है जो महाविनाशक है।

❋ कभी-कभी किसी कारणवश गलतफहमियां हो जाती है और हम एक-दूसरे के प्रति गलत धारणा बना लेते है और इसी कारण रिश्तों के बीच दरार आने लगती है। रिश्तों में मनमुटाव के कीटाणु पनपने लगते है। एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या के बीज बोने लगते है। गलतफहमी के चलते हम कई बार सच्चे मित्र, हितैषी या रिश्तेदारों को खो बैठते है। जब कभी भी कोई

किसी तरह की गलतफहमी हो जाए तो उसे मन में न रखकर परस्पर एक-दूसरे से खुलकर बातचीत करके दूर कर लेनी चाहिए। गलतफहमियां जल्द से जल्द दूर करना ही बेहतर होगा नहीं तो यह धीमा जहर है जो रिस-रिसकर बढ़ते रहेगा और व्यक्ति मन ही मन घुटते रहेगा और तनाव में आ जायेगा। यह तनाव मनुष्य को भीतर-ही-भीतर खोखला कर देता है।

* किसी काम को करने के लिए सोच-समझकर कदम बढ़ाने चाहिए। बगैर सोचे कोई काम करना बाद में परेशानी और शर्मिंदगी का कारण बनता है।

* आंख शरीर का दरवाजा है इसकी हिफाजत करनी चाहिए क्योंकि तमाम बुरी चीजें इसी राह से मन में प्रवेश करके आदमी के चरित्र को खराब करती है।

* दूसरों को असफल बनाने के प्रयत्न स्वयं को असफल बना देते है।

* सच्ची खुशी शरीर की ताकत और दौलत से नहीं मिलती बल्कि उसका राज चरित्र के बर्तन में छिपा है।

* मेहमान के आगे जरूरत से कम परोसना मेजवानी के खिलाफ है और हदसे ज्यादा रखना दिखावटी और झूठी शान है।

* किसी दुश्मन को छोटा समझना नादानी है, यह उसी प्रकार है जो एक छोटी चिंगारी को नुकसान पहुँचने के लिए काबिल न समझते हुए बगैर बुझाए हुए छोड़ देना। जो धीरे-धीरे सुलगकर तमाम घर को जलाकर राख कर देती है।

* आँख के यह आँसू दिल की वो जुबान है यह वो पानी है जो कभी-कभी आँख से निकलना चाहिए क्योंकि अंदर ही अंदर जमा होगा तो थोड़ी सी ठेस पहुँचनी पर ज्वालामुखी पहाड़ की तरह विस्फोट हो जाएगा और रोकने का नाम नहीं लेगा। यदि किसी के दिल में चोट लगी है तो उसके बोझ को हल्का करने के लिए खुलकर आँसूओं का बहना जरूरी है। आँसू पानी ही नहीं है बल्कि गमों को कम करने का एक आसान जरिया भी है।

* मनुष्य के चरित्र को बनाने और बिगाड़ने में उसके दिल का बड़ा महत्वपूर्ण अभिनय है। अगर दिल पाक और साफ हो और ईश्वर से डरनेवाला हो तो उसका चरित्र भलाइओं का प्रचारक बनता है। यदि मन ईश्वर के भय से खाली है, दूसरों से उपकार करने से कोसों दूर है ऐसा चरित्र आचरणवाला व्यक्ति दागदार बन जाता है। यदि व्यक्ति अपने चरित्र को नहीं सुधारता तो वह व्यक्ति गुनाहों के समुंदर में डूबते चले जाता है और उससे बाहर निकलना उसके लिए मुश्किल हो जाता है। बिगड़े हुए चरित्र से परलोक की जिंदगी के लिये वे नुकसानदेह साबित होता है। जो दिल भगवान के डर से भरा होता है वो मनुष्य के लिए दोनों जहां में भी कामयाबी और मुक्ति की राह पैदा करता है। ईश्वर के सामने अपने गुनाहों को कबूल करने और क्षमा मांगने से बुझे हुए दिल भी रोशन चिराग बन जाते है और दूसरों की हिदायत का जरिया बनकर ईश्वर का सही रास्ता बताते है।

* ईश्वर जिसको चाहता है उसकी धन-सम्पत्ति बढ़ा देता है और लोग तो दुनिया की जिंदगी पर खुश होते है और ऐश और खुशियों पर इतराते है हालांकि आखिर में उसे ज्ञान होता है कि दुनिया की जिंदगी एक बहुत थोड़ी देर के लिए अस्थायी खुशी है।

* हमारे अंदर दीन और ईमान की मजबूती बहुत कमजोर है। जैसी होनी चाहिए वैसी नहीं है। ईश्वर के प्रति मनुष्य को पूरी तरह से समर्पित होना चाहिए। गोरे लोग काले लोगों से श्रेष्ठ नहीं होते और न ही अमीर लोग गरीबों से श्रेष्ठ होते है। जाति और वंशवाद की लानत बीच में नहीं आनी चाहिए। ईश्वर के यहाँ तो सब बराबर है।

* बहुत से लोग तो ऐसे होते है जो अपने स्तरों को इतना ऊंचा उठा लेते है कि पहाड़ों की ऊंचाइयाँ भी छोटी पड़ जाती है लेकिन उनके चरित्र तो यह बताते है कि वो अभी तक अँधेरे में रेंग रहे है। जब तक आपका दिल ज्वालामुखी जैसा होगा तब तक आपको यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कोई आपके पास सुरक्षित रह पाएगा। क्योंकि आपकी सेहत और विमल

प्रकृति पर अज्ञान का पर्दा पड़ा हुआ है।

❋ निंदा और प्रशंसा दोनों ही व्यक्ति के लिए एक सीमित मात्रा के बाद उसी तरह घातक सिद्ध होती है, जैसे विष। कम मात्रा में लिया गया विष व्यक्ति के प्राणों को बचा सकता है, लेकिन अधिक मात्रा होने पर व्यक्ति का बचना मुश्किल हो जाता है। उसी तरह निंदा और प्रशंसा भी सीमित मात्रा तक व्यक्ति को नुकसान नहीं पहुंचाती। लेकिन इनकी अधिकता ले डूबती है।

❋ चापलूसी और प्रशंसा व्यक्ति के मिजाज को बदलते है और अपने नैसर्गिक स्वभाव, गुणों को भूलकर अहंकार के मद में चूर हो गलत मार्ग पर चला देते है इसलिये जीवन में सफलता पाने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति निंदा या प्रशंसा से प्रभावित न हो।

❋ यह मनुष्य की सामान्य प्रकृति है कि वह अपने भीतर सिर्फ गुण देखता है और दूसरे के गुणों को पहचान नहीं पाता। मनुष्य खुद को दूसरों से श्रेष्ठ मानने की भूल कर बैठता है। जिसे आप अयोग्य व्यक्ति मानते है उसमें कुछ न कुछ गुण तो अवश्य होते है। हमें उसकी गुणों को ग्रहण करने की कोशिश करनी चाहिए। उसमें भी आपको गुण दिखेंगे। आपकी दृष्टि में वह व्यक्ति सम्माननीय हो जाएगा मन से निरादर की भावना दूर होगी और आपके प्रेम में वृद्धि हो जाएगी। इसलिए बुराइयों को छोड़ दो और जहां कुछ अच्छाई दिखे उसे तुरंत ग्रहण करो।

❋ मनुष्य जन्म के बाद बहुत कुछ सिखता है कोई उसे सिखाता नहीं। अच्छी आदतें और बुरी आदते उसमें पनपती है। अपने आसपास के वातावरण और लोगों के व्यवहार को देखकर ही व्यक्ति सिखता है। इसके अलावा जीवन की बहुत महत्वपूर्ण बातें गुरु या शिक्षा के माध्यम से सिखता है। कुछ आदतें या काम ऐसे है जो व्यक्ति स्वयं सिखता है और स्वयं ही करना पसंद करता है। व्यक्ति का दानवीर रहना यह उसके स्वभाव में रहता है। किसी व्यक्ति की दानशक्ति को कम करना या बढ़ाना दूसरे किसी के हाथ में नहीं है यह आदत व्यक्ति के जन्म से ही साथ में आती है। यदि कोई व्यक्ति स्वभाव से कड़वा बोलने पर ही आमादा है तो उसे बहुत समझा लेनेपर भी मीठा नहीं बोलेगा। यदि वह मीठा बोलने का प्रयास भी करेगा तो उसका स्वभाव लम्बे अरसे तक उसे नहीं बदल सकेगा। इसलिये कड़वा बोलनेवाले व्यक्ति को मीठा बोलना सिखाया नहीं जाता यह आदत भी व्यक्ति के जन्म के साथ ही उसके स्वभाव में शामिल होती है। धैर्य धारण करना जो कि ऐसा गुण है कि व्यक्ति को हर विषम परिस्थिति से बचने लें मदद करता है विपरित परिस्थितियों में धैर्य धारण करके ही बुरे समय का सामना किया जाता है। यदि कोई व्यक्ति कोई कार्य जल्दबाजी में करता है, त्वरित निर्णय ले लेता है तो उसे बाद में हानि उठानी पड़ती है। ऐसे लोगों को धैर्य धारण करने की शिक्षा देना ही समय की बर्बादी है क्योंकि यह गुण भी व्यक्ति के जन्म के साथ ही स्वभाव में रहता है। सही समय पर उचित निर्णय लेने की क्षमता, किसी भी व्यक्ति को यह नहीं सिखाया जा सकता कि वह किस समय कैसा निर्णय ले। जीवन में हरपल पल अलग-अलग परिस्थितियां निर्माण होती है। ऐसे में सही या गलत का निर्णय व्यक्ति को स्वयं देना पड़ता है। जो भी व्यक्ति समय पर उचित और अनुचित निर्णय अपनी प्रज्ञा से ले लेता है वह जीवन में कोई उपलब्धियां हासिल करता है। उचित निर्णय लेनेका गुण भी व्यक्ति के जन्म के साथ ही आता है।

❋ जरूरत और चाहत में बहुत अंतर होता है इसमें तालमेल बिठाते-बिठाते जिन्दगी गुजर जाती है।

❋ हमेशा अपनी छोटी-छोटी गलतियों से बचने की कोशिश करो मनुष्य पहाड़ों से नही बल्कि छोटे पत्थरों से ठोकर खाता है।

❋ लगातार हो रही असफलताओं से कभी निराश नहीं होना चाहिए। कभी न कभी सफलता मिलती है जैसे ताले के झूमके में आखिरी चाबी ताला खोल देती है। सफलता मन की शीतलता से उत्पन्न होती है जैसे ठंडा लोहा ही गर्म लोहे को काट व मोड सकता है अर्थात आकार दे सकता है।

* जिस व्यक्ति के पास कोई विचार कल्पनाशीलता नहीं, उसके पंख कभी उड़ान नहीं भर पाएंगे।

* पूरा रात-दिन परिश्रम करके आदमी उतना नहीं थकता जितना क्रोध और चिंता से पलभर में थक जाता है।

* प्रकृति अपनी प्रगति और विकास में रुकना नहीं जानती। अकर्मण्य व्यक्ति पर वह अपने शाप का ठप्पा लगाती है।

* दरिद्रता मानव को सम्पूर्ण साहस और धर्म से हीन कर देती है।

* अनासक्त व्यक्ति ही ऐसा है जिसको जिन्दगी में दौरे नहीं पड़ते न वह विरक्त है न आसक्त है।

* भय को दूर भगाने के लिए ज्ञान व विवेक ही एकमात्र उपाय है।

* मनुष्य के दुखी होने का मूल कारण उन चीजों के पीछे भागना है जो उसके पास नहीं है और उन चीजों को अनदेखा करना है जो उसके पास है।

* रिश्तों की कहानी हर पल बदलती है चाहे राजा हो या रानी। इस बदलती दुनिया में हर पल बदलाव होता है।

* न जाने मनुष्य किस डगर पर चल रहा है रास्ता सामने है फिर भी भटक रहा है। पता नहीं मनुष्य कैसी-कैसी चालें चलता है। रात-दिन एक-दूसरे को छल रहा है।

* अपनी मुस्कान द्वारा किसी को अपना बना ले वो महान आदमी कहलाता है।

* निर्बल मनुष्य के लिए समस्याएं अवरोध है पर सबल के लिये आगे बढ़ने के लिये पत्थर की सीढ़ी है।

* हम वह नहीं जहाँ हम रहते हैं, बल्कि वह जहाँ हमारा प्यार है। प्रेम भगवान का एक विशेषण या गुण नहीं, भगवान स्वयं प्रेम हैं।

* शरीर कभी भी पवित्र नहीं हो सकता फिर भी हम उसको पवित्र रखने की कोशिश करते है। मन पवित्र हो सकता है पर हम उसका कोई प्रयत्न नहीं करते।

* दोस्ती का अर्थ एक प्यारा-सा दिल जो कभी नफरत नहीं करता, एक प्यारी सी मुस्कान जो कभी फीकी नहीं पड़ती, एक अहसास जो कभी दु:ख नहीं देता और एक रिश्ता जो कभी खत्म नहीं होता।

* दुनिया भर के लोगों की कमजोरी जानने की अपेक्षा अपनी कमजोरी का जानना ज्यादा विश्वसनीय है।

* यश हमारे कार्यों की प्रेरणा नहीं परिणाम है। अपने अपयश के लिए हम स्वयं जिम्मेदार होते है। अपमानपूर्वक हजारों वर्ष जीने से अच्छा है सम्मान के साथ भले ही कुछ घड़ी जिया जाये। हम यह सोचकर निश्चिंत हो जाते है कि अपयश समाप्त हो गया, पर दरअसल वह जीवन भर जीवित रहता है।

* सच्चा प्रेम सेवा से प्रकट होता है किसी कि चापलूसी और स्तुति करने से नहीं।

* चेहरा मन का दर्पण होता है व्यक्ति के मन की भावनाओं को उजागर करता है और चेहरे के भावों को पढ़कर व्यक्ति को अनिष्ठ की आशंका भी होती है।

* किसी दूसरे के द्वारा दिए गए दीपक के सहारे जो प्रकाश मिलता है वह वास्तविक प्रकाश नहीं होता असली प्रकाश तो वही है जो अंधकार में चलनेपर अपने अंदर स्वयं विकसित होता है। जो आपको केवल मार्ग ही नहीं दिखाता बल्कि आपके अंतर्मन के चक्षुओं को खोलकर एक नई दिशा देता है। जो व्यक्ति अपना प्रकाश स्वयं निर्मित करना जानता है वह अपना जीवन सर्वश्रेष्ठ बना लेता है।

* किसी के साथ मधुरवाणी में बोलना चाहिए क्योंकि शब्दों में जान होती है, इन्हीं से आरती, प्रार्थना और अजान होती है। यह सागर के वे मोती है जिससे इन्सानों की पहचान होती है।

✻ कोई भी कार्य करना कठिन नहीं है सिर्फ उसे करने के लिए कठोर परिश्रम की आवश्यकता होती है। श्रम करने पर किसी भी कार्य में सफलता पायी जा सकती है।

✻ भाग्य है तो सबकुछ है भाग्य नहीं तो बुद्धि, पुरुषार्थ, पराक्रम सबकुछ व्यर्थ है। उदाहरण के लिए कुंती जब पांडवों के साथ वनवास में थी तो कुछ महिलाओं ने कुन्ती से पूछा कि हमें कुछ सीख दीजिए। तो कुंती ने कहा- तुम नारी हो, भाग्यवान पुत्रों को जन्म देना। मेरे ही पुत्रों को देखो वे शूरवीर, धुरंधर, पराक्रमी हैं फिर भी जंगल में दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं क्योंकि उनका भाग्य अनुकूल नहीं है। इसलिए तुम सभी भाग्यवान पुत्रों को जन्म दे दो। भाग्य बड़ा बलवान होता है, यह राजा को रंक और गरीब को राजा बना देता है। धनी को निर्धन और निर्धन को धनी बनाने में कुछ समय नहीं लगता।

✻ मनुष्य कभी अपनी क्षमताओं की कद्र नहीं करता, वह हमेशा ऐसी चीज की आस लगाये रहता है जो उसके पास नहीं है।

✻ इस दुनिया में किसी से भी वफा की उम्मीद नहीं करना, क्योंकि समय-समय पर मनुष्य के माप बदलते रहते है पहले लोगों के मकान कच्चे और लोग सच्चे हुआ करते थे।

✻ आज के जीवन के दौड़ में पैसा-फॅशन, स्वार्थ व मूल्यहीनता ही हमारी पहचान है। दोस्ती के अर्थ बदल गये है, माता-पिता की सेवा करना हमें बोझ लगने लग गया, हम नग्नता की आधुनिकता को ही अपना पर्याय समझते है। हमें फरेब के जीवन से बाहर निकलना चाहिए तभी भारतीय संस्कृति की रक्षा हो सकती है।

✻ बहुत से लोग दूसरों की निंदा चुगली में ही अपना जीवन बिता देते है। अकारण ही दूसरों से ईर्ष्या कर जीवन में कुढते रहते है। आज जीवन में आवश्यकता है सादगी, बुद्धिमत्ता, योग्यता, ईमानदारी, कर्मठता पर प्रत्येक व्यक्ति में प्रत्येक गुण का होना आवश्यक नहीं है। जीवन अस्थायी है। दूसरों के आगे किसी की बुराई करने से आप सबकी नजरों में गिर जाते है। बुराई सुननेवाले भी गुणों के पारखी होते है। दूसरों में कमियां ढूंढने से पहले अपने स्वयं में कमियां ढूंढने का प्रयास करो। पीठ पीछे दूसरों को गाली गलौच की भाषा का प्रयोग, तुच्छ शब्दों का प्रयोग मनुष्य की निम्न प्रवृत्तियां व घटियापन को दर्शाती है।

✻ जो भी कुछ बंधा हुआ है वह पराधीन है। ऐसा मनुष्य कभी सुखी नहीं हो सकता। नीति से कमाया धन ही धनवान मनुष्य के पास लक्ष्मी के रूप में रहता है। ज्ञानियों के पास ज्ञान और सज्जनों के पास श्रद्धा यह भी लक्ष्मी का ही स्वरूप है।

✻ पैसे से भौतिक सुख के साधन ही जुटाएं जा सकते है पर सच्ची खुशी नहीं क्योंकि खुशी और आनन्द पैसे में नहीं है। यदि भौतिकता में सुख होता तो बड़े घरों और महलों में रहनेवाले कभी दुखी नहीं होते। इसलिए संतोष ही सबसे बड़ा गुण है। अधिक लालसा वासना को जन्म देती है। मनुष्य की सोच हमेशा ऐसी होनी चाहिए कि वह अपनी शक्ति का सदुपयोग करें। कर्म ही पूजा है, कर्म से ही ईश्वर की पूजा होती है। धन साधन जरूर है लेकिन साध्य नहीं।

✻ जो कुछ हमें प्राप्त है वह ईश्वर का दिया हुआ है। हम गलत समझते है कि हमने अपनी काबिलियत और बुद्धि से यह धन कमाया है पर हमारे प्रयत्नों में काबिलियत और अकलमंदी और बुद्धि होती और इसीसे हमने धन अर्जित किया है तो फिर हमसे भी ज्यादा पढ़े लिखे लोग अक्लमंद और योग्य लोग दुनिया में पड़े हुए है। अधिक पढ़े लिखे, अधिक काबिल फिर भी ऐसे लोग एक मूर्ख स्वामी के यहां नौकरी करते है। यह तो ईश्वर का इनाम और अहसान समझो कि हमें उसकी कृपा से सबकुछ मिला है। यह मनुष्य का अहंकार, गर्व, घमंड है कि यह उसका स्वयं का अर्जित किया हुआ धन है। जो ईश्वर देना जानता है वह लेना और छीनना भी जानता है। जब हमारे पास धन आ जाता है तो हम अपना स्तर गिनने लगते है। अपनी दोस्ती, यारी, उठ-बैठ यहां तक की रिश्तेदारी भी हम अपने स्तर के लोगों से करना चाहते है। गरीब के साथ उठने-बैठने में शर्म महसूस करते है। धन के नशे और घमंड में मनुष्य इतना गिर जाता है कि गरीबों से खून के रिश्ते भी परे

हो जाते है उसमें ऐब मालूम पड़ने लगता है। इस स्तर तक भी अपने सगे गरीब भाई के साथ भी रिश्तेदारी नहीं रखता उससे मिलना भी उसे बड़ा अजीब महसूस होता है। खास-खास रिश्ते गरीबी यह सबको खत्म कर देती है। जब पैसा पास होता है तो पराये और दूर के लोग भी अपने करीब हो जाते है बल्कि खून के रिश्ते उनके सामने फिकी पड़ते है। धन आनेपर जिसको गर्व नहीं हो और अपना रिश्ता कमजोर व्यक्ति उसे नहीं तोड़ता तो ईश्वर तमाम कामयाबियाँ उसके कदमों में डाल देता है। किसी भी गरीब व्यक्ति को गिरी हुयी नजरों से मत देखो ना ही उनको कभी झिड़को। उनकी आवश्यकताओं का हमेशा ख्याल रखो। अपना गरीब पड़ोसी चाहे किसी जात-पात का हो, चाहे जिस धर्म का हो उसके साथ व्यवहार और रिश्ता रखना चाहिए। आपके रिश्ते इससे और मजबूत बनेंगे।

❋ आज के युग में अपने कार्यक्षेत्र में या पारिवारिक परिवारों में संबंधों को देखते हुए यह आवश्यकता है कि हममें यह क्षमता और हिम्मत हो कि हम किसी कार्य को ना कह सकें। वर्तमान में हमें कहीं ऐसे काम करने पड़ते है जो हमें पसन्द नहीं, स्थान पसंद नहीं पर हमें मजबूरी से करना पड़ता है। हमें वहां जाना पड़ता है जहां हम जाना नहीं चाहते। यह सब इसलिए कि हमें ना कहने नहीं आता। ना कहने पर लोग हमें बदतमीज, अवज्ञाकारी कहेंगे। हमें प्यार और तारीफ नहीं मिलेगा इस डर की वजह से हम यह सब काम करने लगते है। हमें लोगों के प्यार का, अपनापन का, स्वीकृति का, तारीफ का नशा है। यह सब चीजें पाल लेने के बाद हम स्वयं को प्रसन्नचित महसूस करते है और सबको हां कर देते है। इसलिए हर चीज के लिए हां बोलना ठीक नहीं जो काम पसंद नहीं है उसे मना कर दे जबर्दस्ती किसी का काम नहीं करे। नहीं तो आपका स्वास्थ्य तनाव में बिघड़ जायेगा। इसलिए हमेशा हां कहना उचित नहीं और ना कहने की आदत डालें।

❋ अपनी कठिनाइयां हमें पर्वत के समान दुर्भेद्य, भयंकर और अंधकार के समान डरावनी मालूम होती है। परंतु यह सब यथार्थ में कुछ भी नहीं, केवल भ्रम की भावना मात्र है। हमारे पास समय अनंत है निरंतर प्रयास करने और कर्म करने से हम सफलता की ओर बढ़ते है। आज नहीं तो कल सफल होकर रहेंगे। कर्त्तव्य का निश्चित परिणाम सफलता है। जो कुछ भी भली-बुरी परिस्थितियां सामने है वो हमारी पैदा की हुयी है। अपना दृष्टिकोण बदलेंगे तो भय तिरोहित हो जायेगा।

❋ प्रेम और आनंद का उदगम आत्मा है। ईश्वर के साथ जोड़ने से अपरिमित स्थायी आनंद प्राप्त होता है। सांसारिक नाशवान वस्तुओं के साथ प्रेम करने पर नाशवान वस्तुओं में नाश होने की संभावना है। धन का नाश होनेपर, प्रियजन की मृत्यु होनेपर, अपयश मिलनेपर व्यक्ति दहाड़ मार-मारकर रोता है और जीवन को नष्ट होते हुए देखता है। जिस तरह वालू पर महल बनाकर उसे अजर-अमर रखने का स्वप्न देखता हो। भौतिक पदार्थ नाशवान है, उनसे प्रेम और रिश्ता जोड़ना अंधापन है जो कभी भी टूटकर गिर सकता है और गिरनेपर हृदय विदारक आघात पहुंचा सकता है। आत्मा से उपजा प्रेम आनंदमय है। इसलिए जड़ नाशवान पदार्थों से, भौतिक वस्तुओं से मन हटाकर अपना मन ईश्वर में लीन करो।

❋ जीवन में मनुष्य का पहला लक्ष्य लोगों से जुड़ना है सिर्फ यही एक चीज उसे सुरक्षा का आभास कराती है। अक्सर जो लोग अकेले होते है और रिश्तों की गहराइयों का शिकार हो जाते है ऐसे लोगों को लगता है की पीड़ा और परेशानी में उन्हें देखनेवाला कोई नहीं। नकारात्मक भावनाएं अधिकतर उन्हीं लोगों में होती है जो अकेलेपन से ग्रस्त होते हैं या किसीसे जुड़ना नहीं चाहते। लोगों के साथ जुड़ने पर जीवन में कम दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। जीवन को आनंदपूर्वक और सही तरीके से जीने का मार्ग यही है हर रिश्ते को पूरे समर्पण और ईमानदारी के साथ जिया जाये।

❋ कुछ काम ऐसे होते है जो करते समय तो अच्छे लगते है पर जब उसके परिणाम निकलते है तो पछतावा होता है और कुछ हाथ नहीं आता। इसलिए हर समस्या को उसके परिणाम के आधार पर आंकलन करना चाहिए।

* सच्ची शांति प्राप्त करने के लिए मन के दूषित विचारों को त्यागना चाहिए। दूषित विचार युद्ध और संघर्ष की जननी है। पारिवारिक, सामाजिक, जातिगत, व्यक्तिगत, धार्मिक और राजनीतिक युद्धों का मूल कारण ही दूसरे के हितों की परवाह नहीं करना और अपना स्वार्थ साधना है। जहां इसप्रकार की नीति होगी वहां कलह अवश्य होगा। संकीर्ण विचारवाले ही ऐसा करते है। उनकी प्रतिक्रिया बड़ी दुखदायी और अशांतिकारक होती है। समानता, एकता, प्रेम, सहयोग, उदारता और बंधुत्व भावना के आधार पर ही मनुष्य पूर्ण बन सकता है। हम सुखी रहें और अन्य लोग चाहे जैसे रहें यह नीति घातक नीति है और विघटन उत्पन्न करती है। सबके सुख में जो अपना सुख खोजता है वही सुख वास्तविक और स्थायी होता है।

* प्रेम ही एक ऐसी शक्ति है, जो प्रत्येक दिशा में मनुष्य की सहायता करती है। बिना प्रेम सम्वेदना के व्यक्ति पत्थर की तरह हो जाएगा। बिना प्रेम के किसी विचारों में परिवर्तन लाना असंभव है। विचार कोई तर्क-वितर्क तो है नहीं, विचार भावों से निर्मित होते है और भाव गुणों से आते है। समस्त गुण प्रेम से आते है। प्रेम की धारा हृदय में अनवरत बनी रहनी चाहिए। प्रेम के बिना कोई सहकार्य नहीं हो सकता। व्यक्ति दिन प्रतिदिन पशुता की ओर बढ़ रहा है। सिर्फ स्वयं का खाना-पीना, सोचना, स्वयं का सुख। जिन मानवीय मूल्यों को हमारे यहां आदर्श माना जाता था वे सब हमसे दूर होते जा रहे हैं। हमारी स्वार्थ की भावना कितनी प्रबल होती जा रही है। हम शांति की तलाश में भटकते है। जिस किसीमें प्रेम की सहस्त्रधारा का स्त्रोत बहता है वे ही मनुष्य कहलाने के योग्य है।

* जीतना एक घटना है विजेता की भावना रहती है कि जीत को अपने सिद्धांतों की तराजू में तोले। किसी का दिल दुखाकर, किसी को चोट पहुंचाकर पायी गयी जीत किसी काम की नहीं होती। सच्ची जीत वही है जिसे पाने के बाद किसी प्रकार की आत्मग्लानि नहीं हो।

* किसी के घर जाते समय अपनी ही नहीं बल्कि सामनेवाले की सुविधा असुविधा का खयाल रखना चाहिए। सदैव किसी को पूर्वसूचित करके जाना चाहिए। कई लोग सरप्राईज देने के चक्कर में सूचित नहीं करते है पर सामनेवाले को आपको देखकर असुविधाएं उठानी पड़ती है। सुबह-सुबह किसी के घर पर जानेसे परहेज करें और देर रात को भी किसी के घर जाएं जब बहुत आवश्यक हो पर दूरध्वनि द्वारा उसे अवश्य सूचित करें। किसी के घर जाकर उसे बातों में इतना मशगुल न कर दे कि सामनेवाले की खाने पीने और सोने की व्यवस्था आपके वापस जाने का इंतजार करती हो।

* स्त्रियां जो बातें पुरुषों में चाहती हैं एक सफल शादी पति-पत्नी के विवेक, धैर्य दूरदर्शिता के गुणों पर निर्भर रहती है। हर लड़की पत्नी बनना पसंद करती है। हर नारी में स्त्री यौन रहता है और पुरुष की नजर उसे पहचान लेती है। पर हर लड़की अपनी पसंद के पुरुष में यह ढूंढती है कि पुरुष पढ़ा-लिखा, आर्थिक तौर पर संपन्न और आत्मनिर्भर है। उसके पास आवास की व्यवस्था होनी चाहिए। एक-दूसरे की भावनाओं को समझनेवाला, सम्मान करनेवाला, समस्याओं में साथ देनेवाला है ना। सहनशीलता, धैर्य कर्त्तव्य परायणता का गुण उसमें विकसित रहें। उसके दिमाग में शक का किड़ा ना हो, इधर-उधर मंडरानेवाला न हो, दूसरी स्त्रियों में दिलचस्पी रखनेवाला नही हो, जिसका चारित्रिक बल सबल हो। कंजूस नहीं हो, ससुरालवालों की बुराई नहीं करता हो, दहेज की लालच का आकांक्षावाला नही हो। किसी प्रकार का दुर्व्यसन और नशे का सेवन नहीं करता हो। मधुरभाषी, व्यवहार में सादगी, स्पष्टता हो, घर की समस्याओं को जाननेवाला, लाभ-हानि की योजना बनाने में पत्नी को शामिल करें। पत्नी के जन्मदिन, विवाह की वर्षगांठ, करवा चौथ के अवसर, हर त्यौहार पर मधुर उपहार देनेवाला हो। परिवार में सहयोग, सहानुभूति, अनुशासन, सफाई रखनेवाला हो। पुरुष को हर मामले में दूरदर्शी व समझदार होना चाहिए। विवेक का साथ कभी नहीं छोड़े। हाजिरजवाब, हंसमुख, मिलनसार हो तभी

स्त्रियां उसको पसंद करेगी। पुरुष आत्मविश्वासी, आत्मनियंत्रण वाला, स्वभाव में नर्मी, पत्नी की हर छोटी-बड़ी जरूरत का ख्याल रखनेवाला, सकारात्मक सोचवाला हो, निराशावादी न हो। जिंदगी की हर क्षेत्र में समझदारी, बुद्धिमानी का सबूत देनेका प्रयास करें, हर कार्य सोच-विचार कर करें। ऐसे व्यक्ति के गुणवाले पुरुष को स्त्रियां बड़े मन से चाहती है।

* दुनिया से विरक्त हो जाओगे तो दुनिया तुम्हारी गुलाम बन जायेगी।

* सब्र सबसे बड़ी उम्दां दुआ है।

* अच्छे लोगों का गुण है मधुरवाणी, मीठे बोल। बुरी बातचीत तो जानवरों तक को पसंद नहीं आती।

* मनुष्य कथा का दूसरा नाम मुहब्बत है।

* किसी बेजान देवता के आगे सौ साल पूजा करने से भी बेहतर है कि कुछ पल नेक आदमी की संगति में गुजारा जाएं।

* जिंदगी में कामयाबी हासिल करना हो तो झरनों से सीखना चाहिए। स्वयं को ऊंचे पहाड़ों की तरह बुलंद करो ताकि लोग तुम्हारी महानता की मिसाल दें। अपने दिल को सागर की तरह गहरा बनाओ जिसमें दुनिया के तमाम दु:ख उसके अंदर समा सकें। उस फूल की तरह जो हाथों में अपनी खुशबू छोड़ दें। आप सुबह का झिलमिलाता हुआ सितारा बन जाओ, जो भटके हुए दिलों को मंजिल का रास्ता दिखाता है। उन कलियों की तरह मुस्कुराना सिखो क्योंकि दुनिया सिर्फ मुस्कुरानेवालों का साथ देती है।

* लोगों को सुनाने के लिए अपनी आवाज ऊंची मत करो, बल्कि अपना व्यक्तित्व इतना ऊंचा उठाओ कि लोग आपकी आवाज सुनने को बकरार रहें।

* अपनी नम्रता का घमंड करने से अधिक निंदनीय और कुछ भी नहीं है।

* उड़ने की अपेक्षा जब हम झुकते है तो हम विवेक के अधिक निकट होते है।

* दुख और हानि सहने के बाद मनुष्य अधिक नम्र और ज्ञानी हो जाता है।

* नेक बनने में सारी उम्र चली जाती है और बदनाम होने में एक दिन भी नहीं लगता।

* द्वेष बुद्धि को हम द्वेष से नहीं, प्रेम की शक्ति से मिटा सकते है।

* भूतकाल की व्यथा और कुर्बानी भविष्य के नेतृत्व के लिए हर हालत में अनुमति पत्र नहीं होता।

* माता-पिता को अपनी संतान को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए जिससे उनमें उत्तम चरित्र का विकास हो। गुणी व्यक्ति से ही कुल की शोभा बढ़ती है दूध और घी से नीम की जड़ को सींचे जाने पर भी नीम का वृक्ष मीठा नहीं हो सकता उसी प्रकार दुष्ट व्यक्ति को सज्जन नहीं बनाया जा सकता।

* लोभी व्यक्तियों के लिए मांगनेवाला, मूर्खों के लिए उन्हें समझानेवाला, दुराचारिणी के लिए उसका पति और चोरों के लिए चंद्रमा वैसा ही बुरा है इनका त्याग करना ही चाहिए।

* अगर कोई सांप जहरीला नहीं है, तब भी उसे अपना फन फैलाना चाहिए क्योंकि सांप से लोगों को भय रहता है। उसी तरह कमजोर व्यक्ति को कभी भी अपनी कमजोरी का प्रदर्शन किसी के सामने नहीं करना चाहिए।

* जो हमारे चित्त में होता है वह हमारे बहुत करीब होता है भले ही वह वास्तविकता में वह हमसे बहुत दूर हो लेकिन जो हमारे हृदय में नहीं है वो समीप रहनेपर भी हमसे बहुत दूर है।

* मनुष्य को अभिमान का ऐसा नशा होता है जो उसे भी पता नहीं चलता। मृत्यु के समय ही उसका सारा अभिमान काफूर हो जाता है वो अपने बुरे कामों के लिए पश्चाताप करता है। दुर्व्यसन नशा किया हुआ कुछ समय में उतर जाता है

लेकिन अभिमान का नशा अंतिम समय में ही छूटता है। अभिमान मनुष्य का आनंद, उसकी समझ, उसका ज्ञान, सब मिटा देता है। जिंदगी को दीमक की तरह खा जाता है। महाभारत युद्ध होने का कारण दुर्योधन का अहंकार और अभिमान ही था। हवा के झोंके से उठता हुआ सूखे पत्ते को जमीन पर गिरने पर ही यह एहसास होता है कि उसकी औकात क्या थी उड़ने की। मनुष्य के बाद अपना बल नहीं वो तो अलग ही चेतन शक्ति है जिसके कारण उसका अस्तित्व है।

❋ नसीहतें धीरे-धीरे ही अपना असर छोड़ती है। वे आसमान से गिरती रूई के समान है जो गिरती तो आहिस्ता-आहिस्ता है और जमकर इतनी मजबूत हो जाती है कि आसानी से टूटती नहीं। कोई न कोई नयी समस्या, नयी सीख की तरह जीवन में उतर जाती है और इसीसे अनुभव होता है। जीवन कभी पूर्ण नहीं होता। मनुष्य की आयु अवश्य पूर्ण हो जाती है। पर पूर्णत: कभी नहीं आती। जीवन में केवल लाभ या हानि नहीं देखी जाती इसे अन्य कर्त्तव्य की भावना भी होती है जो प्राणी को उद्देश्य प्रदान करती है। एक ऊंचाई तक पहुँच जाने के बावजूद भी जीवन में सीखने का अपना प्रयास रहता है।

❋ जीवन में कितने ही बंधन, ताले डाले जाएं पर इसमें कोई फर्क नहीं। इस संसार में जीवन चारों ओर सदा असुरक्षित है। मनुष्य का जीवन एक ऐसी यात्रा है जिसमें पड़ाव तो बहुत है लेकिन मंजिल कहीं भी नहीं। मंजिल तो जीवन के पास ईश्वर में ही है। जीवन हमें जो भी दे उसमें पूर्णत: संतुष्ट और पूर्ण अनुग्रह का अनुभव करें। जहां भी असंतोष फैला तो जो हमें जीवन देता है वो भी हमसे वो भी छीन लेता है। जितना जीवन में व्यक्तित्व होगा उतना ही सुरक्षित रहेगा। सुरक्षित तो सिर्फ मृत्यु ही हो सकती है।

❋ कल किसी के बस में नहीं है। इसलिए आज को ठीक रखना ही अच्छा है। यह न सोचो कल नहीं आएगा, कल तो आएगा ही। मगर हम होंगे या नहीं होंगे, कुछ पता नहीं। अगर दिशा सही है तो लोक-परलोक से डरने की जरूरत क्या है। जिसका आज अच्छा है, उसका कल भी अच्छा होगा। जो बीत गया उसे भूल जाना ही अच्छा है। आज का जो जीवन है, उसीको अच्छा बनाना चाहिए। कोई काम हमें ऐसा नहीं करना चाहिए जिसके लिए फिर पछताना पड़े।

❋ खाना खाने के लिए गरीब दूर तक चल सकता है, खाना पचाने के लिए अमीर मीलों दूरी तय करता है। किसी के पास खाने के लिए एक वक्त की रोटी नहीं है और किसी के पास खाने के लिए वक्त नहीं है। कोई लाचार है इसलिए बीमार है, कोई बीमार है इसलिए लाचार है। कोई अपनों के लिए रोटी छोड़ देता है और कोई-कोई तो रोटी के लिए अपनों को छोड़ देता है। ये दुनिया बड़ी निराली है। कभी छोटी चोट लगने पर रोते थे आज दिल टूट जानेपर भी अपने आप को सम्भाल लेते है। पहले हम दोस्तों के साथ रहते थे आज दोस्तों की यादों में रहते है। पहले लड़ना-मनाना रोज का काम था आज एक बार लड़ लेने से आपस के रिश्ते बिगड़ जाते है। सच है जिन्दगी ने हमें बहुत कुछ सिखा दिया जाने कब हमको इतना बड़ा बना दिया।

❋ जीवन में किसी भी बाधा या मुश्किल से निपटने के लिए एक बहुत अच्छा तरीका यह है कि आप अपने लिए कोई प्रेरणा स्रोत खोज लें। यह स्रोत किसी व्यक्ति का जीवन या आशीर्वाद, धर्म ग्रंथ का मंत्र, महापुरुष का कोई कथन, किसी व्यक्ति का चेहरा या चित्र, कोई कविता, भगवान की मूर्ति आदि कुछ भी हो सकता है। अवसाद, निराशा या किसी घोर संकट की घड़ी में इनमें से कोई एक भी आपकी बहुत मदद कर सकता है। केवल एक शब्द, पंक्ति या ख्याल से ही आपमें नई उमंग-तरंग का संचार हो सकता है। ऐसी न जाने कितनी ही चमत्कारी घटनाएं हो चुकी हैं जिनमें कोई व्यक्ति केवल इसलिए मौत के मुंह से लौट आया, क्योंकि संकट की उस घड़ी में भी हिम्मत टूटने लगी उसे अपने किसी प्रिय या देवता की याद आ गई और वह फिर से नए जोश के साथ उस मुसीबत से तब तक लड़ता रहा, जब तक जीतकर सकुशल नहीं बच गया। बहुत से लोगों को पर्वत उठाए उड़ते हनुमान या सुदर्शन चक्र उठाए विष्णु भगवान के चित्र इस तरह की प्रेरणा

देते हैं। कुछ लोगों के लिए जय मां भवानी, जय मां काली, हर-हर महादेव, या फिर या अली आदि जैसे शब्द नई ऊर्जा का काम करते हैं, तो कुछ लोगों के लिए अपने वरिष्ठ या घनिष्ठ का दिया हुआ कोई उपहार यह काम कर देता है। अगर आप भी अपने जीवन पर ध्यान दें तो ऐसी कोई न कोई प्रेरक ढाल या हथियार जरूर पा जाएंगे जिसकी मदद से किसी भी बाधा से लड़ना बहुत आसान हो जाएगा।

❋ हर कोई परेशान है, असुरक्षित है, सब लोग इतने स्वार्थी और क्रूर हो गये है कि किसीको किसीके दु:ख से कोई संवेदना नहीं। आज इन्सान एक बहशी बनते जा रहा है। जिसे सिर्फ क्रूरता करने में ही आनंद आता है। उसके अंदर की आत्मा मर चुकी है, जमीर मर चुका है। हमारे देश में पहले स्त्रियों को इज्जत की नजर से देखा जाता था, उनका सम्मान किया जाता था जो मनुष्य को जन्म देती है, कष्ट सहती है वह आज आधुनिक युग में नंगी दौड़ायी जाती है। इतना पतन हो गया हमारी संस्कृति का इसकी कोई सीमा भी नहीं। एक दीवार ढहती और ढहती जाती है। इन सबसे बढ़कर अपनी संस्कृति को अगर सुधारना है तो मानसिक सुख शांति जब ही मिलेगी जब आप किसीसे प्यार करना सीखोगे। पशु-पक्षियों तक को प्यार करना आना चाहिए। आपके अंदर दया के भाव जागृत होने चाहिए।

❋ प्रत्येक धर्म और सिद्धांत का अंतिम लक्ष्य नैतिकता और परोपकार बच्चे का प्रतिपादन करना रहता है। हमारी दिव्य चरित्रहीनता और अनैतिकता लगातार बढ़ रही है। शिक्षा मनुष्य के नैतिक एवं सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। गुरु या अभिभावकों को अपना आचरण सुधारना चाहिए और अपने बच्चों के सामने आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए तभी नैतिक शिक्षा सार्थक होगी।

❋ तृष्णा की अठखेलियां ही बड़ी निराली होती है। निर्धन इसलिए दु:खी है कि उसके पास कुछ नहीं है और धनवान के पास सबकुछ होते हुए भी वह परितृप्त नहीं है। तृष्णा का कोई अंत नहीं है इसपर उम्र का भी कोई असर नहीं पड़ता। तृष्णा ऐसी चीज है जो वृद्ध अवस्था में भी तरुणाई की ओर बढ़ती जाती है। पेट भरना मनुष्य की आवश्यकता है परंतु पेटी या खजाना भरना उसकी तृष्णा है। तृष्णा ही मनुष्य से गलत कार्य करवाती है। अगर इसपर नियंत्रित कर लिया जाएं तो सारे कष्ट और दु:ख दूर हो जाते है। मनुष्य के शरीर में जितने रोम होते है उनसे भी अधिक तृष्णाएं, इच्छाएं, वासनाएं होती है। इच्छाएं सागर की तरह उछलती-मचलती तरंगों के समान है। अनियंत्रित कामनाएं मनुष्यों को विपदाओं में डाल देती है। वह प्रतिक्षण बेचैन, तनावग्रस्त और बड़ी बीमारियों से घिर जाता है। उसे निकलने का मार्ग नहीं सूझता वह परिवार से कट जाता है। अपने प्यारे रिश्तों को नीरस कर देता है न सुख से मर जाता है न जी सकता है। आज का आदमी ऐसा जीवन जी रहा है भ्रम में जी रहा है जो सुख शाश्वत नहीं है, उसके पीछे मृगमरीचिका की तरह दौड़ रहा है। धन, दौलत, जर, जमीन, जायदाद इस नश्वर संसार में किसी के नहीं हुए है। पूरी दुनिया पर विजय पानेवाला सिकंदर भी मौत के समय अपने साथ कुछ भी लेकर नहीं गया। मनुष्य अपनी आसक्ति के चक्रव्यूह से नहीं निकल पाता फिर कामना-लालसाओं से सुख शांति कैसे मिल सकती है। यह तभी संभव है जब इच्छाओं पर नियंत्रण किया जाएं। आदमी को ऊंचे स्तर पर रहने की चाहत में गैर जरूरी चीजों की आवश्यकता हो गयी है जिसका न कोई ओर है न कोई छोर। पहले मनुष्य कुछ ही चीजें पाकर संतोष कर लेता था पर आज ऐसा नहीं है। आज का मनुष्य तनावपूर्ण जीवन जीने को विवश हो रहा है। सोया हुआ आदमी संसार को सिर्फ भोगता है, पर देखता नहीं। जबकि जागा हुआ आदमी संसार को भोगता नहीं सिर्फ देखता है।

❋ जिंदगी चलती रहे यह सबसे जरूरी है इसलिए खुद को माफ करना सीखें। कभी भी यह न सोचे मैंने सामनेवाले पर इतना भरोसा क्यों किया। जिंदगी बहुत ही सुंदर है।

❋ किसी को भूलना उतना आसान नहीं है आप अपने भूतकाल को कभी भूला नहीं सकते क्योंकि वह भी जिंदगी का वह हिस्सा है जो हमेशा साथ रहता है। पिछले दिनों की असफलता की वजह से अपने भविष्य की खुशी और सफलता को दांवपर न लगाएं।

❋ आध्यात्मिक उपदेशों से जीवन की सार्थकता, शांति और विश्वास को परखा जाता है।

❋ किसी की सहायता करना, किसी की सहायता लेने से बेहतर है।

❋ जरूरत की एक सीमा होती है पर लालच की कोई हद नहीं।

❋ किसी मनुष्य या हालात में कोई अच्छी बात नजर नहीं आती हो तो भी हमें उसे गहराई में तलाशना चाहिए।

❋ हर घटना के दो पहलू होते है अच्छा और बुरा। अगर आपको सफल होना है तो केवल अच्छा पहलू चुने। नुक्स निकालनेवाले लोग हर चीज में नुक्स निकाल सकते है। उन लोगों का तो काम यही होता है कि हर चीजों में नकारात्मक पहलू को देखना। वे लोग किसी के भी जोश को नुक्स निकालकर कमजोर कर सकते है। यह ऐसे पैसेवाले आलोचक होते है जो हर चीज में कमियां निकालते है। इसलिए हमें किसी भी व्यक्ति की गहराई में जाना चाहिए।

❋ शादी एक ऐसा बंधन है इस बंधन में बंधने के पहले शादी के पहले आंखें खोलकर देखें और शादी के बाद आंखें बंद कर लेनी चाहिए। कामयाब शादी का यही राज है। अपने साथी के चुनाव में ज्यादा अच्छा साथी बनने में ही फायदा है। एक महिला की जिंदगी में दो बड़े दौर होते है एक शादी से पहले का और एक शादी के बाद का। मुहब्बत अंधी होती है तब मनुष्य की आंखें बंद होती है और शादी के बाद उसकी आंखें खुलती है। शादी कभी नाकाम नहीं होती, लोग नाकाम होते हैं। शादी एक-दूसरे का रूप दिखाती है। शादी एक मुद्रा चलन की तरह है उसके दो हिस्से करके उसे खर्च नहीं किया जा सकता। सफल दाम्पत्य जीवन के लिए आपसी समझ होना बहुत जरूरी है। यदि दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं है तो जीवन में सारे कष्ट अपने आप पैदा हो जाते है।

❋ हर एक की जिंदगी में हमेशा दो रास्ते आते है एक सही और दूसरा गलत। अगर गलत रास्तेपर चलोगे तो हो सकता है शुरू-शुरु में ढेर सारी कामयाबियां मिल जाएं लोग तुम्हारी इज्जत करने लगे पर अंत में तुम्हें असफलता मिलेगी आपकी अपकीर्ति होगी। कामयाबी सही रास्ते पर चलने पर ही होगी।

❋ जो बिना स्वार्थ के दूसरों की मदद करता है, जो दूसरों के काम आता है उस आदमी से ईश्वर प्रसन्न रहता है। सूई नंगी रहकर भी दूसरों के तन ढांकने का काम करती है।

❋ आप अपनी वाणी को ऐसी प्यारी, मधुर औरा खूबसूरत बनाओ जो दूसरों को भी प्यारी और खूबसूरत लगे क्योंकि जबान ही इंसानी शीशी का ढक्कन है जिससे लोगों को आपकी पहचान हो जाती है।

❋ स्वर्ग अच्छे कर्मों से प्राप्त होता है उम्मीदों से नहीं।

❋ अगर प्यार करनेवाला दु:ख दे और आपकी आंखों में आंसू आ जाएं तो यकीनन आप अपने आंसू पोंछ लेना कि उस पल में वो आपसे कहीं ज्यादा रोया होगा।

❋ खूबसूरत कल कभी नहीं आता, जब भी वो आता है वो आज ही होता है। खूबसूरत कल की तलाश में आज के खूबसूरत दिन को मत गंवाओ।

❋ अच्छी बातें एक ऐसा हथियार है जिससे हर किसी का दिल जीता जा सकता है।

❋ अच्छे व्यक्ति का काम है कि वो हर नमस्कार का जवाब दें, अस्वस्थ व्यक्तियों का हाल पूछे, जनाजे के साथ जावें और हर एक का निमंत्रण कबूल करें।

❋ दूसरों की मदद करने का समय किसी के पास नहीं है पर दूसरों के कामों में रोड़ा अटकाने का समय सबके पास है।

❋ हमें अपनी गलतियां किसी दूसरे पर नहीं सौंपनी चाहिए। ऐसा करने से हमारी छबि दूसरों के सामने खराब हो जाती है। जब मनुष्य अपनी गलती मान लेता है तो वह सफलता की तरफ एक कदम और आगे बढ़ जाता है और जब गलती नहीं मानता है तब कई कदम पीछे रह जाता है। हम अपनी गलतियों को नजरअंदाज कर सकते है, अपनी गलती को मानने से इंकार कर सकते है पर अपनी गलती को मानकर फिर उसे कभी न दोहराने की सीख ले सकते है।

❋ न्याय और नीति से काम करोगे तो दोस्त अधिक और दुश्मन कम बनेंगे।

❋ यह दुनिया को एक सराय समझो और मौत को मेजबान समझो, जो मिला खा लो और जो ले लिया उसे फिर मत मांगो।

❋ सब्र करना बेहतरीन नेकी है।

❋ नेक चरित्र होना बुलंद दर्जे की खूबी है।

❋ कुछ मनुष्य ऐसे भी होते है जो चिकनी चुपड़ी बातें करके हमें बहकाते हैं, गंदा काम करने के लिए उकसाते हैं। ऐसे मनुष्यों से बचकर रहना चाहिए। वो इन्सान नहीं इंसाननुमा शैतान होते है।

❋ हर दौर में भलाई और ईमानदारी से जीवन जीनेवालों के रास्ते में कई कठिनाइयां आती है मगर जो लोग मुसीबतों से घबराकर भलाई और नेकी के रास्ते पर चलना नहीं छोड़ते आनेवाली तमाम तरह की मुसीबतों को झेलते है, जो लोग ईश्वर की परीक्षा में कामयाब होते है वास्तव में वही उसके भक्त है। जो मनुष्य मुसीबतों में घबरा जाता है अपना ईमान छोड़ देता है, गलत रास्तेपर चलने लगता है, गलत आदमी का साथ देता है वह ईश्वर की परीक्षा में असफल होता है। इसलिये भी दु:खों और मुसीबतों से नहीं घबराकर अन्याय का साथ कभी नहीं देना चाहिए। बल्कि सच के रास्ते में जो मुसीबत आये उसपर सब्र करना चाहिए।

❋ हमारा जन्मदिन हमारी जिंदगी का एक ऐसा एकलौता दिन है, उस दिन हमारे जन्मने पर हम रोये और हमारी मां मुस्कुरायी होंगी।

❋ बुद्धिमान बनना चाहते हो तो कम पढ़ो, ज्यादा सोचो, कम बोलो व अधिक सुनो।

❋ चापलूस इसलिए आपकी चापलूसी करता है क्योंकि वो आपको बेवकूफ समझता है और उससे सुनकर अपने आपमें खुश होते है।

❋ किसी भी बात से निराश नही हो निराश होने से, चिंता करने से आयु घटती है।

❋ जो कोई बात मालूम हो उसको बताने में किसी से शर्म मत करो।

❋ मनुष्य की जिंदगी बादलों की छांव की तरह आती-जाती है।

❋ प्रकृति परिस्थिति के अनुसार ऐसा मनुष्य पैदा कर देती है जिसकी वक्त और हालात को जरूरत है।

❋ सभी धार्मिक परम्पराएं समान रूप से एक ही संदेश देती है प्रेम, दया और क्षमा हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा होना चाहिए।

❋ सिर्फ खड़े-खड़े होकर पानी को देखने से आप नदी पार नहीं कर सकते।

❋ हमारी नैतिक प्रकृति जितनी उन्नत होती है, उतना ही उच्च हमारा प्रत्यक्ष अनुभव होता है और उतनी ही हमारी इच्छा शक्ति अधिक बलवती होती है।

✻ दौलत से आदमी को जो सम्मान मिलता है, वह उसका नहीं, उसकी दौलत का सम्मान है।

✻ आपको मानवता में विश्वास नहीं खोना चाहिए। मानवता एक सागर की तरह है, बूंदे खराब हैं तो पूरा सागर गंदा नहीं हो जाता है।

✻ सत्य, संघर्ष और पराक्रम के बाद मिली सफलता में, शरीर भले ही थका हो लेकिन मन अति उत्साहित होता है। छल से पाई गई सफलता में शरीर कितना भी प्रफुल्लित हो, मन हमेशा डरता ही रहता है।

✻ वाणी पर लगी चोट तो जल्दी ठीक हो जाती है, पर वाणी से लगी चोट जल्दी ठीक नहीं होती।

✻ कोई भी समस्या चेतना के उसी स्तर पर रहकर हल नहीं की जा सकती जिस पर वह उत्पन्न हुई है।

✻ ब्रह्माण्ड की सारी शक्तियां पहले से हमारी हैं। वो हम ही हैं जो अपनी आंखों पर हाथ रख लेते हैं और फिर रोते हैं कि संसार में कितना अंधकार है।

✻ दोस्त को अपना प्यार प्रेषित करना है तो उस तीर की तरह करो, जो उसके दिल तक पहुंचकर धंस जाए, उस गेंद की तरह नहीं जो लौटकर आपके पास आ जाती है।

✻ अमीर होना अच्छा है, ताकतवर होना भी अच्छा है, लेकिन इन दोनों से अच्छा है बहुत सारे दोस्तों का प्यार पाना।

✻ ज्ञान एक ऐसा लिबास है जो कभी पुराना नहीं होता। ज्ञान एक ऐसा सफर है जिसकी कोई मंजिल नहीं। ज्ञान की मुहब्बत और गुरु की इज्जत के बगैर कुछ हासिल नहीं होता। ज्ञान एक ऐसी खुशबू है जो मनुष्य के हृदय को हमेशा महकदार रखता है।

✻ चित्त के प्रसन्न रहने से सब दु:ख दूर हो जाते हैं। जिसे प्रसन्नता मिल जाती है, उसकी बुद्धि तुरन्त स्थिर हो जाती है।

✻ भूल करने में पाप तो है ही, परन्तु उसे छिपाने में उससे भी बड़ा पाप है।

✻ मूर्ख इंसान कितने ही कीमती कपड़े क्यों न पहन ले, वे रहेंगे मूर्ख के ही कपड़े।

✻ मनुष्य का सबसे बड़ा युद्ध अपने साथ होता है।

✻ वह मनुष्य बहादुर नहीं हो सकता जो दुख को सबसे बड़ा अभिशाप समझता है।

✻ सत्य के ऊपर कोई ईश्वर नहीं है। सत्य ही सबसे पहले खोजने की चीज होना चाहिए।

✻ जहां देवता भी पांव नहीं रखना चाहते, मूर्ख वहां टूट पड़ते हैं।

✻ जहां नियमों का पालन नहीं होता वहां कोई भी अनर्थ पांव फैला सकता है।

✻ अपमान का भय कानून के भय से कम नहीं होता।

✻ जिसने अपने आपको वश में कर लिया उसकी जीत तय है।

✻ अहं की भावना रखना एक अक्षम्य अपराध है।

✻ शक्तिशाली से शक्तिशाली मनुष्य भी एक दिन कमजोर होता है और बुद्धिमान से बुद्धिमान व्यक्ति भी गलतियां करता है।

✻ जिसने मन को जीत लिया, उसने जगत को जीत लिया।

✻ मित्रघात पाप नहीं महापाप है।

✻ रोग का निवारण मौत से नहीं, दवा से होता है।

✻ जब तक आप अपने अतीत को याद करते रहेंगे, भविष्य की योजनाएं नहीं बना पाएंगे।

✻ जितना कठिन संघर्ष होगा, जीत उतनी ही शानदार होगी।

* लगातार पवित्र विचार करते रहें बुरे संस्कारों को दबाने के लिए एक मात्र समाधान यही है।

* अपने से ही ज्यादा उम्मीद रखो दूसरों से नहीं, ऐसा करके आप निराशा से बच सकते हो।

* दूसरों को सहयोग देकर ही हम उन्हें अपना सहयोगी बना सकते हैं।

* हर मनुष्य को शादी करना चाहिए। अगर अच्छी पत्नी मिली तो आपकी जिंदगी खुशहाल रहेगी। अगर बुरी पत्नी मिलेगी तो आप दार्शनिक बन जाएंगे।

* प्रश्न कर पाने की क्षमता ही मानव प्रगति का आधार है।

* किसी के दिल को चोट पहुंचा कर माफी मांगना बहुत आसान है लेकिन खुद चोट खाकर किसी को माफ करना बहुत मुश्किल है।

* अपने आपको परिस्थितियों का गुलाम कभी मत बनाइये, आप खुद अपने भाग्य के निर्माता हो।

* कष्ट और विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देनेवाले श्रेष्ठ गुण हैं। जो साहस के साथ उनका सामना करते हैं, वे विजयी होते हैं।

* आदमी वह नहीं जो चेहरे से दिखता है, आदमी वह है जो सोच से दिखता है।

* हमारी खुशकिस्मती यह है कि हम भगवान को एक मानते हैं पर बदकिस्मती यह है कि हम भगवान की एक नहीं मानते।

* जंगली जानवर की अपेक्षा कपटी और दुष्ट मित्र से अधिक डरना चाहिए, जानवर तो बस शरीर को नुकसान पहुंचाता है, लेकिन बुरा मित्र बुद्धि को नुकसान पहुंचा सकता है।

* हास्य शरीर को तनावरहित करता है, बीमारी का कुदरती तौर पर इलाज करता है और सामाजिक रिश्तों को मजबूत करता है।

* असफलता राह का एक मोड़ होता है, न कि यात्रा की समाप्ति।

* हम वही हैं जो हमारे विचार हमें बनाते है, इसलिये आप क्या सोच रहे हैं, इसका खास ख्याल रखिए। शब्दों का इतना महत्व नहीं, लेकिन विचार हमेशा उद्वेलित करते हैं। वे दूर तक जाते हैं।

* संसार में न कोई तुम्हारा मित्र है और न शत्रु, तुम्हारे अपने विचार ही शत्रु और मित्र बनाने के लिए उत्तरदायी हैं।

* नीच बुद्धिवाले मनुष्य अपनी प्रतिष्ठा के लिए दूसरों के सम्मान को ठेस पहुंचाते हैं।

* शाश्वत शांति की प्राप्ति के लिए शांति की इच्छा नहीं बल्कि आवश्यक है इच्छाओं की शांति।

* प्रत्येक वस्तु की अधिकता जीवन में विष होती है।

* अच्छा व्यवहार और अच्छा दिल रखना बेहद जरूरी है। ऐसा करने से ही छोटी अवधि से लेकर लंबी मियाद तक आप खुद को और दूसरों को खुशियां दे सकते हैं।

* जो मन की पीड़ा को स्पष्ट रूप में नहीं कह सकता, उसी को क्रोध अधिक आता है।

* प्रेम घर की प्रतिष्ठा है। व्यवस्था घर की शोभा है।

* कोई भी कार्य जल्दी में करना अच्छा नहीं होता बल्कि उसके विषय में अच्छी तरह गहरा ज्ञान आपको अनुभवी बनाता है।

* सद्व्यवहार वही व्यक्ति अपना सकता है जो हर स्थिति में दुर्व्यवहार को बर्दाश्त करने की क्षमता रखता है।

* जीवन में कामयाबी तभी मिलती है जब व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को इतना मजबूत बना लेता है कि नकारात्मक टिप्पणियाँ या खराब व्यवहार भी उसे प्रभावित न कर सके।

* सच्चा सुख बाहर से नहीं मिलता, अंदर से आता है।

* संभाषण, संवाद एक अच्छी चीज है, परंतु उसमें भी आपका निर्णय मुख्य है।

* जो व्यक्ति अकेले चलते है वे व्यक्ति तेजी से आगे बढ़ते है।

* स्त्री और मदिरा नवयुवकों एवं वृद्धों को मदमत्त बना देती है।

* विपत्ति में हमारा मन अंतर्मुखी हो जाता है।

* आज का समाज- वर्तमान में हमारे समाज में पारस्परिक सौहार्द समाप्त होता जा रहा है। प्रत्येक व्यक्ति एक सीमित दायरे में संकुचित होकर रह गया है। हर व्यक्ति के अंत:करण में स्वार्थपरता की भावना जागृत हो रही है।

विकास और आधुनिकता के नाम पर प्राचीन इंसान आसमान में तो उड़ने लगा है लेकिन भूल गया है कि जमीन उसकी पहचान है। समाज को गहरी दृष्टि से देखें तो ज्ञात होता है समाज को पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण ने अपने बाहुपाश में जकड़ लिया है। हमारा रहन-सहन, लिबास, बोलने चलने का तरीका पश्चिमी रंग में रंग चुके हैं। बड़ों का आदर व छोटों का ख्याल जैसी बात तो समाज में दूर-दूर तक दृष्टिगत ही नहीं होती। हमारे रहन-सहन में भी पश्चिमी सभ्यता का असर स्पष्ट तौर पर झलकता है। गुरु और शिष्य का पवित्र रिश्ता ही अमर्यादित वार्तालाप से टूटता नजर आ रहा है। इसे पश्चिमी सभ्यता का असर कहें या प्रगति के नाम की दुहाई दें? अपनों से मिलने के लिए व्यक्ति के पास समय ही नहीं, इन्हीं का विपरीत असर आज के नौजवानों पर है। समाज के सौहार्द्र तथा आदर्शमय स्वरूप की विकृति का मूल कारण यही है इससे देश का भविष्य अंधकारमय होता जा रहा है। अत: सामाजिक सौहार्द्र प्रबल इच्छा, शांति, नैतिक विचारों को अपनाने पर ही संभव है।

* पुराण, रामायण और महाभारत हिंदुओं का प्राचीन इतिहास है पर धर्मग्रंथ नहीं। यदि जीवन को ढालना है तो इनकी शिक्षाओं के अनुसार ही ढालना चाहिए। इनको जानकर कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है। हर परिस्थिति में धैर्य बनाएं रखना, बदला न लेना, क्रोध आनेपर भी क्रोध न करना, उद्दंड नहीं होना, दूसरे की वस्तु हड़पने का विचार नहीं करना, आहार की शुद्धता और शरीर की शुद्धता रखनी चाहिए। इंद्रियों को विषयों (कामनाओं) में लिप्त नहीं होने देना, किसी बात को भलीभांति अच्छे से समझना। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का भलीभांति ज्ञान हो, झूठ और अहितकारी वचन कभी नहीं बोलना। क्षमा करने के बाद भी कोई अपमान करे तो भी क्रोध नहीं करना यही सब पुण्य की शिक्षाएं हैं। दूसरों का धन हथियाना, निषिद्ध कर्म करना जिन कर्मों की शास्त्र अनुमति न दें, अपने शरीर को ही सबकुछ मानना, कठोर वचन बोलना। सदा असत्य भाषण करना, हर किसीकी निंदा करना, बिना कारण बोलते रहना, चोरी करते रहना। तन, मन, कर्म से किसी को दु:ख देना, पर स्त्री या पर पुरुष से संबंध बनाना यह सब निषिद्ध कर्म है जो पापकर्म कहलाते है।

* वर्तमान युग में संयुक्त परिवारों के स्थान पर एकाकी परिवारों ने अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया है और व्यक्ति अकेला हो गया है। संयुक्त परिवार वो वटवृक्ष है जिसकी छांव में व्यक्ति विकास करता है, सुखी जीवन व्यतीत करता है और बेहद सुरक्षित रहता है। एकाकी परिवार की परंपरा शुरू होने में मानवीय विकारों मे काफी वृद्धि हुई है। संयुक्त परिवार सभी सदस्योंको ठोस सामाजिक पहचान देने का कार्य करता है। व्यक्ति की सबल शक्ति है। संयुक्त परिवार समाज में परंपराओं व सांस्कृतिक मूल्यों का नियंत्रित करते है और उच्छृंखल व्यवहार को नियंत्रित करते है। पति-पत्नी की कलह भी संयुक्त परिवार में जल्दी से खुलकर सामने नहीं आती और अगर ऐसा कुछ हो भी जाता है तो उसमें सुलह की गुंजाइश अधिक रहती है। बुजुर्गों के अनुभव से व्यक्ति अपने जीवन में रंग भर सकते हैं। धर्म, रीति, रिवाजों के पालन व धार्मिक त्योहारों के दौरान संयुक्त परिवार ही इसके चलते बच्चों में अपने देश के प्रति तथा अपने संस्कारों के प्रति रुचि जाग्रत करते है।

* देश, प्रेम, अर्थनीति और धर्म- मत भूमि-विशेष से जुड़े होते हैं और भी कई भावनाओं का जन्म भौगोलिक भावना

से होता है।

❋ धन से किताबें खरीद सकते हैं पर ज्ञान नहीं। धन से आभूषण मिल सकते है पर रुप नहीं। धन से सुख मिलता है पर आनन्द नहीं, धन से साथी मिलते है किन्तु सच्चे मित्र नहीं। धन से भोजन मिल जाता है किन्तु भूख नहीं। धन से दवा मिलती है पर स्वास्थ्य नहीं मिल सकता। धन से एकान्त मिल जाता है किन्तु शान्ति नहीं। धन से बिस्तर मिल सकता है किन्तु नींद नहीं।

❋ हमारी संस्कृति में खून के रिश्ते को हर जज्बे से बढ़कर माना जाता है और यही मामला जब राजा-रियासत या धनी लोग करोड़ों-अरबों रुपयों का हो, तो खून के रिश्ते को पानी बनते देर नहीं लगती। राजा-रजवाड़ों की कहानियां हमेशा से ही विश्वासघाती, साजिशों और रहस्यों की ओट में बुनी जाती रही है। यही इनके सम्मोहन का राज है।

❋ हर रिश्ते में कभी न कभी मतभेद हो ही जाता है। बेहतर यही है कि रिश्तों में अहंकार हावी न होने दे। विवादों या लड़ाई झगड़ों से दूर रहने का उपाय है कि अहंकार छोड़कर सामनेवाले से माफी मांग लेना। माफी मांगने में भी एक कला होती है जो हर किसीको नहीं आती। आपको सीखना चाहिए आपके दोस्तों, पति-पत्नी, मालिक, माता-पिता आदि से अपने सम्बन्धों को मधुर बनायें रखने के लिये यह बेहद जरूरी है। अपनी ओर से विवादों को बढ़ने का मौका कभी नहीं देना चाहिए। रिश्तों में नाराजगी आने के बाद जीवन नरक की तरह लगने लगता है। सम्बन्धों में कटुता बढ़ती जाती है लेकिन माफी मांग लेने से इसका समाधान हो सकता है। माफी मांगने से वास्तव में हममें कोई कमी नहीं आती बल्कि हम महानता की ओर बढ़ते है। सामनेवाले को यह लगे कि हमें अपनी गलती का अहसास हो गया।

❋ जहां पवित्रता है वहाँ सुख शांति स्वत: ही प्राप्त हो जाती है। पवित्रता अर्थात् मन, वचन, कर्म में स्वच्छता रखनी चाहिए। पवित्रता से ही संत महात्माओं को इतना ऊंचा स्थान मिला है और देवताओं तक का गायन और पूजन होता है। पवित्रता से सुख-शांति, सम्पत्ति अपार रहती है। पवित्रता का बल बहुत बड़ा होता है।

❋ राजनीति और धर्म दो वस्तुएं हैं जिनमें प्राय: कम ही सामंजस्य बैठता है।

❋ लक्ष्मी भी उन्हीं की सहायता करती है जिनका निर्णय विवेकशील होता है।

❋ सभ्यता चरित्र का वह रूप है जो मनुष्य को अपने कर्त्तव्य का मार्ग दिखाता है।

❋ ध्यान एक रहस्यमयी सीढ़ी है जो अवनि और अम्बर को मिलाती है एवं साधक को ब्रह्म के अमर लोक की ओर ले जाती है।

❋ जिनमें नम्रता नहीं आती, वे विद्या का पूरा सदुपयोग नहीं कर सकते। नम्रता का अर्थ है अहंभाव का आत्यन्तिक क्षय।

❋ नमस्कार द्वारा जीवन कल्याण से भर उठता है, सौन्दर्य से फूल जाता है। यह नमस्कार केवल निबिड़ माधुर्य ही नहीं है, प्रबल शक्ति भी है।

❋ मीठा अहसास ही जीने की वजह होता है।

❋ स्वयं से बड़ा दुनिया में कोई हमसफर नहीं होता। अपने ऊपर भरोसा, विश्वास करो दूसरों पर भरोसा नहीं किया जाता।

❋ वैसे तो जिंदगी में कई चेहरों का साथ मिलता है पर वही चेहरा याद रहता है जो दुख में साथ देता है।

❋ शब्दों का चयन सोचकर ही बोलें। शब्द ही आपके अंतर्मन, व्यक्तित्व, कृतित्व और विचारों का दर्पण है। शब्द क्रांति, शांति, प्रेम, घृणा, हास्य, व्यंग्य और अलगाव के भी प्रतीक होते हैं। द्विअर्थी संवाद कभी-कभी हँसाते है गुदगुदाते है, कभी रुलाते है तो कभी दंगा फसाद भी कराते है। कलम व मुख से निकले शब्द समाज का रुख बदल देते है। कई बार शब्द एक होता है, पर उसके अर्थ अनेक होते है। जिंदगी में शब्द बड़ा ही महत्व और शाश्वत है।

✻ प्रेम और नुक्स निकालना साथ-साथ नहीं हो सकता। जितना आप किसी से प्रेम करोगे उतना ही उसे आप कम परखोगे।

✻ खुशी बांटोगे तो बढ़ेगी, वरना इसे गंवा दोगे।

✻ प्यार एक ऐसी बीमारी है जिसकी कोई दवा नहीं होती और धोखा एक ऐसी दवां है जो एक बार खा ले उसे ये बीमारी दोबारा नहीं होती।

✻ खुशहाल जिंदगी जब ही जी जा सकती है उन्हें माफ कर दिया जाएं जिन्हें तुम भूल नहीं सकते और जिन्हें तुम माफ नहीं कर सकते उनको भूल जाओ। जो पसन्द है उसे हासिल करना सीख लो, जो हासिल है उसे पसंद करना सीख लो।

✻ यह कोई जरूरी नहीं कि हर व्यक्ति प्यार की मूरत हो, सुन्दर और बेहद खूबसूरत हो, अच्छा तो वही मनुष्य है वो तब भी आपके साथ हो जब आपको उसकी जरूरत हो।

✻ अव्यवस्थित जीवन, जीवन का ऐसा दुरुपयोग है, जो व्यक्ति के जीवन को दरिद्रता में बदल देता है।

✻ मासिक वेतन पूरनमासी का चाँद है, जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त होता है।

✻ अपने बच्चों को अमीर होने की शिक्षा मत दो, बल्कि खुश रहने के संस्कार दो। इससे जब भी वो बड़े होंगे तो हमेशा वस्तुओं की कदर करना सीखेंगे न कि उनकी कीमत की।

✻ यदि आप अमीर होने की चाहत रखते हैं तो आप उन वस्तुओं पर विचार करें जिन्हें पैसे से खरीदा नहीं जा सकता।

✻ अपने संबंधों को बरसात की तरह न बनाएं, जो आई और गई, बल्कि संबंध ऐसे बनाएं जो हवा की तरह हमेशा आपके साथ रहें।

✻ किसी से माफी मांगने से यह साबित नहीं होता कि हम गलत हैं और दूसरा सही। क्षमा का असली अर्थ है कि हम रिश्तों को निभाने की योग्यता उससे अधिक रखते है।

✻ आपको जीवन में हर कदम पर जोखिम उठानी चाहिए यदि आप जीत जाते हैं तो आप प्रसन्न होंगे और अगर आप हार जाएंगे तो आप समझदार माने जाएंगे।

✻ छोटों को देखकर जियें, बड़ों को देखकर आगे बढ़ें। अच्छे के लिए हमेशा प्रयास करें, बुरे का सामना करने के लिए तैयार रहें। अपनी सोच ऊंची व अच्छी रखें।

✻ जिन चीजों में आकर्षण नहीं होता वे उपेक्षित रह जाती है।

✻ अहंकार नशे का मुख्य रूप होता है।

✻ अगर हम निरपराध न हों तो दूसरों पर आक्षेप सफलता के साथ नहीं लगा सकते।

✻ भय पर आत्मा की शानदार विजय ही वीरता है।

✻ शक्ति तो भ्रष्ट करती है, लेकिन पूर्ण शक्ति पूरी तरह से भ्रष्ट करती है।

✻ मनुष्य अपनी सामर्थ्य तब तक नहीं पा सकता जब तक यह न समझ ले कि वह महान तत्व का एक अंश है।

✻ समझदार कम बोलता है मूर्ख ज्यादा।

✻ मूर्खता से ज्यादा आत्मविश्वास पैदा करनेवाली कोई चीज नहीं है। आदमी में जितनी समझदारी होगी, उतनी ही उसमें खुद पर शक करने की प्रवृत्ति होगी। सफलता के लिए आत्मविश्वास की जरूरत समझदारी के मुकाबले ज्यादा है, इसलिए यह भी प्रमाणित होता है कि सफलता के लिए मूर्खता ज्यादा जरूरी है। मूर्खता मनुष्य को समय प्रबंधन सिखाती है। समझदार व्यक्ति बहुत सारा समय जरूरत से ज्यादा सोचने-समझने में लगा देता है, जबकि आगे बढ़ने का सूत्र यह है

कि सोचो मत, आगे बढ़ जाओ। सोचनेवाले सोचते रहते हैं, मूर्ख लोग आगे बढ़कर झंड़ा गाड़ देते हैं। इसी क्रम में हम समझ सकते हैं कि मूर्खता आदमी को निर्णायक बनाती है, क्योंकि वह सोचता नहीं है। समझदार आदमी कम बोलता है, क्योंकि उसे यह डर लगता है कि कहीं उसकी मूर्खता उजागर न हो जाए। मूर्ख आदमी ज्यादा बोलता है, क्योंकि उसे डर लगता है कि कहीं उसकी समझदारी प्रकट होने से न छूट जाएं। जाहिर है, प्रभावशाली वक्ता वही होता है, जो ज्यादा बोलता है और वही विजेता होता है। इस सबके बावजूद अगर दुनिया में सारे मूर्ख सफल नहीं हो पाते, तो इसकी वजह यह है कि बचपन से उन्हें समझदार बनने की शिक्षा दी जाती है।

* यदि आप हालात या वस्तुओं को बदलना चाहते हो तो पहले स्वयं को बदलो।

* मनुष्य को अपनी भावनाओं को वश में करना चाहिए। फिर उसकी जीभ व आँखें, उसके कान व नाक वश में आ जायेंगे।

* लोहा गरम भले ही हो जाए पर हथोड़ा तो ठंडा रहकर ही काम कर सकता है।

* मनुष्य शक्ति या धन से सामर्थ्यवान नहीं हो सकता। विद्या ही उसे हर काम के लिए समर्थ बनाती है। संसार में ज्ञान के समान और कोई बल नहीं है।

* धार्मिक विश्वास उसी सीमा तक ठीक होते हैं जहां तक उनमें और जीवन की घटनाओं में साम्य होता है।

* जिसकी बुद्धि ने विश्व के व्यापार में नियम को नहीं पहचाना, वह जीवन के हर विषय में अशक्त, अकृतार्थ और पराभूत है।

* पत्थर के खम्भे के समान जीवन में कभी न झुकनेवाला अहंकार आत्मा को नरक की ओर ले जाता है।

* गुणों से ही मनुष्य महान होता है, ऊंचे आसन पर बैठने से नहीं। महल के ऊंचे शिखर पर बैठने से भी कौवा गरुड़ नहीं हो सकता।

* गायत्री वेदों की जननी है। गायत्री पापों का नाश करनेवाली है। गायत्री से बड़ा और कोई पवित्र मंत्र स्वर्ग में तथा पृथ्वी पर नहीं है।

* तप के द्वारा ही हमारी दुर्बलता शक्ति में और अविद्या ज्ञान में परिणत हो सकती है।

* बिना विश्वास के कोई सिद्धि प्राप्त नहीं होती और भगवान के भजन के बिना संसार का कष्ट नहीं कटता।

* महात्माओं का चरित्र विभिन्न होता है। वे धन-वैभव को तिनके के समान समझते हैं, किन्तु इसके प्राप्त होने पर बोझ से झुक जाते हैं।

* जिस राजा के राज्य में उसकी प्रजा दु:खी रहती है, वह राजा नरक का अधिकारी होता है।

* यदि मनुष्यों में पृथ्वी के समान क्षमाशील पुरुष न हों, तो उनमें कभी संधि हो ही नहीं सकती, क्योंकि झगड़े की जड़ तो क्रोध ही है।

* दुष्टों का बल है हिंसा, राजाओं का बल है दण्ड, स्त्रियों का बल है सेवा और गुणवानों का बल है क्षमा।

* जल से शरीर शुद्ध होता है, सत्य से मन, विद्या और तप से आत्मा तथा ज्ञान से बुद्धि शुद्ध होती है।

* डूबनेवाले के साथ सहानुभूति का अर्थ यह नहीं कि उसके साथ डूब जाओ, बल्कि तैरकर उसे बचाने का प्रयत्न करो।

* सभ्यता चरित्र का वह रूप है जो मनुष्य को कर्त्तव्य का मार्ग दर्शाता है।

* बिना किसी दूसरे से तुलना किए हुए ही अपने जीवन का उपयोग करो, यही परम संतोष है।

* बुद्धिमत्ता केवल सत्य में वास करती है।

* जो चीज जितनी सरल होती है, उसकी परिभाषा उतनी ही मुश्किल होती है।

* दो घोड़ों पर कभी सवारी नहीं हो सकती।

* हवा का रुख पहचानकर नेता कार्यक्रम सुधार नहीं करते तो जमाना आगे निकल जाएगा।

* आपका समय सीमित है, इसलिए इसे किसी और की जिंदगी जीकर व्यर्थ मत कीजिए। बेकार की सोच में मत फंसिए। अपनी जिंदगी को दूसरे के हिसाब से मत चलाइए औरों के विचारों के शोर में अपनी अंदर की आवाज को मत डूबने दीजिए।

* छोटी-छोटी बातों में आनंद खोजना चाहिए। क्योंकि बड़ी बड़ी बातें तो जीवन में कुछ ही होती है।

* आज आप जो भी हैं वह आपके पिछले विचारों का परिणाम है।

* हम अमन चाहते हैं जुल्म के खिलाफ फैसला अगर जंग से होगा, तो जंग ही सही।

* इस असार संसार में प्रभु-प्रेम ही सच्चा है। वह प्रेम ही अपने भक्तों को पार लगाता है, कभी मझधार में नहीं छोड़ता।

* आधुनिक राजनीति मूलत: मनुष्यों का नहीं अपितु शक्तियों का संघर्ष है।

* विनोद बातचीत का नमक है, भोजन नहीं।

* कष्ट और हानि के बाद मनुष्य अधिक विनीत और ज्ञानी हो जाता है।

* जिस प्रकार भौंरा फूलों की रक्षा करता हुआ मधु को ग्रहण करता है, उसी प्रकार मनुष्य को हिंसा न करते हुए अर्थों को ग्रहण करना चाहिए।

* मनुष्य का आचरण ही यह बताता है कि वह कुलीन है अथवा अकुलीन, शूर अथवा भीरु, पवित्र है अथवा अपवित्र।

* कानों के दुरुपयोग से मन बहुत अशान्त और कलुषित हो जाता है।

* निद्रा, तन्द्रा, भय, क्रोध और दीर्घसूत्रता इन अवगुणों को उन्नति के इच्छुक पुरुष को अवश्य त्याग देना चाहिए।

* दरिद्र प्राणी उस धनी से कहीं सुखी है, जिसे उसका धन सांप बनकर काटने दौड़े।

* सूर्य जैसे जल को खींचता और बरसाता है, उसी तरह हमें द्रव्य लेना और देना चाहिए।

* जिस जनतंत्र से न्याय नदारद हो, वहां संप्रभुता का मतलब संगठित लूट के कानूनी प्रबंधन के अलावा कुछ नहीं।

* एक वफादार मित्र एक हजार रिश्तेदारों से कहीं ज्यादा मूल्यवान होता है।

* जो सोचे कि उसे सब कुछ मालूम है, उसे दरअसल कुछ मालूम नहीं।

* दुनिया को देखने का हर व्यक्ति का अपना नजरिया होता है। गुलाब के पौधे में किसी को फूल नजर आता है। तो किसी को कांटे, कुछ लोगों को हर वक्त समस्या दिखती है। तो कुछ लोगों को हर ओर अवसर। जो व्यक्ति जैसा सोचता है उसे दुनिया वैसी दिखती है।

* अगर आपको देखना ही है तो हर एक की विशेषताएं देखिए। अगर आपको कुछ छोड़ना ही है तो अपनी कमजोरियां छोड़िए।

* हमें हर वह चीज प्यारी है जो विदेशी हो। चाहे वह कपड़े, खिलौने, मशीनरी, यंत्र, मोबाइल, टी.वी., फ्रीज, कार, ए.सी., चूल्हे, नेता, अभिनेता, खिलाड़ी या औरतें ही क्यों न हों। जापान से सबक लें और स्वदेशी से प्यार करें।

* नित जो रहे अपना उसे तो अंग कहते हैं। जब रोज बंटे ज्ञान तो सत्संग कहते हैं। अगर आ जाए कुछ बदलाव जीवन में, उसको तो दोस्त दोस्ती का ही रंग कहते हैं।

* लोगों से कभी भी गलत व्यवहार मत करो। दूसरों से सदैव विनम्रता से पेश आओ।

* दूसरों की समस्याको मन लगाकर ध्यान से सुनो। यदि आप उन समस्याओं का निराकरण कर सकते है तो उन्हें अवश्य मदद करे नही कर सकते तो उसका मजाक न उड़ाए और किसी को मदद करो तो खुश होकर करो अहसान जताकर नहीं।

* स्वयं कम बोलो दूसरों को बोलने का पूरा अवसर दो और उसको ध्यानपूर्वक सुनो।

* आप किसी को कुछ सिखा रहे हो तो अपने ऊपर क्रोध को हावी मत होने दो प्यार से सिखाओ।

* गलती होनेपर क्षमा मांगने में हिचकिचाहट नहीं करें और स्वीकार करें।

* दूसरों को माफ करने की प्रवृत्ति अपनानी चाहिए।

* घर आये मेहमानों का दिलों जानसे स्वागत करें। उन्हें बोझ न समझे।

* बड़ों का आदर-सत्कार और उनकी उचित देखभाल करें।

* मेहमानों के आगे अपने स्वयं का रोना न रोये नहीं तो आप उनकी नजरोंमें गिर जाएंगे।

* कभी किसी को अपमान की भाषा में मत बात करो।

* कभी किसी के सामने अपनी गरीबी को उजागर मत करो और न ही अपनी अमीरी का प्रदर्शन करो।

* अपने दोष दूसरों के कंधों पर नहीं थोपे।

* दाम्पत्य जीवन को मजबूरी का निर्वाह मत समझो बल्कि जिंदगी में आये हुए ठहराव को रोमांचक बनाओ। पति-पत्नी की छोटी छोटी बातों में ईर्ष्या, कलह, असंतोष की आग में बदल जाती है। उनका उल्हासमय जीवन खत्म हो जाता है। जब आपस में टकराव हो तो पिछले गड़े मुर्दे उखाड़ने से कोई लाभ नहीं ऐसे तो झगड़े की कोई सीमाएं भी नहीं होगी। जिस बात के लिए टकराव हुआ हो उसे मिल-बैठकर समाधान निकालें। जो बीत गया उसे भूल जाएं और वर्तमान को सुखद बनाने का प्रयास करें। झगड़ा चाहे कितना ही गंभीर क्यों न हो सम्बन्ध तोड़ने की धमकी देना बहुत बड़ी भूल है। जहाँ दो व्यक्ति साथ रहेंगे कभी न कभी टकराव तो अवश्य होगा। यह टकराव टूटन और बिखराव न बन जाए इसलिए कोई भी तरह की संवेदनशील बात किसी एक दूसरे को कहकर आपस में दिल न दुखाए। दाम्पत्य जीवन की गाड़ी एक-दूसरे के विश्वास पर चलती है। मनमुटाव होते रहना स्वाभाविक बात है। पर कभी भी किसीपर भी झूठा आरोप न लगाएं। दूसरे का विश्वास खोकर मन में बढ़ते विद्रोह को रोकना चाहिए। आज व्यक्ति रेडिओ, दूरदर्शन इत्यादि के मायाजाल मे फंसकर भौतिक आकर्षण की दौड़ में भाव-विहीन होता जा रहा है जिसकी आवश्यकता पूर्ति होने पर भी निराशा बढ़ रही है। ऐसे दम्पत्ति बिना अपने सामर्थ्य को आंके बिना हर वस्तु की इच्छा अंकुरित कर बैठते है। पति यदि हवा में किले बनाने लगे तो पत्नी को उसे धरती पर चलने की राय देनी चाहिए।

* किसी के अंदर अच्छाई या बुराई की तलाश मत करो बल्कि अपने अंदर की बुराई को दूर करो, अपनी खूबियों पर गर्व मत करो, वो ही सबसे अच्छा आदमी होता है जो दूसरों में खूबियां तलाशता है।

* आप कोई काम करते है तो ईश्वर उसे देख रहा होता है। जब किसी से बात करते हो तो ईश्वर इसे सुन रहा होता है, जब आप खामोश रहते हो तो ईश्वर यह भी जानता है कि आप चुप क्यों हो। अगर यह समझ है तो आप सही कदम उठाओगे और अपराधों से बच जाओगे।

* प्यार वो नहीं है जो जिंदगी भर साथ निभाएं प्यार तो वो है जो जिंदगी को कुछ लम्हों के लिए सही जिंदगी बना दे। प्यार उससे न करो जो खूबसूरत है बल्कि उससे करो जो तुम्हारी जिंदगी को खूबसूरत बना दे।

काम जो होता नहीं तलवार से, पल में हो जाता है प्यार से।

* जो व्यक्ति अपना राज छुपाकर रखता है वो अपना हथियार अपने हाथ में रखता है।

* बेपनाह हँसनेवालों का प्रभाव नहीं होता। मजाक और हँसी करनेवालों को लोग हल्का या बहुरूपिया समझ लेते है।

* आज की इस व्यस्त जिन्दगी में कोई भी अपने पड़ोसी से नहीं मिल पाता। रिश्तेदारों से मिलना तो कभी कभार ही होता है। बड़े समारोह में परिवार के सभी सदस्य एकसाथ मिलते है। आज कल दूरियां इतनी बढ़ गयी है कि कही लोग अपने परिवार के लोगों तक को नहीं पहचानते। शादी-विवाह के समारोह में सभी का एकसाथ मिलना हो जाता है। उस माहौल में उपहार देना या लेना पड़ता है। समस्या होती है कि किस तरह का उपहार लेकर जाया जाएं। उपहार शब्द का अर्थ होता है देनेवाला अपनी इच्छानुसार, हैसियत के अनुसार अच्छा व आकर्षक उपहार लेकर जाएं।

उपहार देने के लिए किसी उत्सव, त्यौहार या अवसर की जरूरत नहीं पड़ती उपहार किसी समय भी किसी को दिया जा सकता है मगर हर खुशी के मौके पर उपहार देने से उस खुशी में चारचाँद लग जाते है। विवाह के अवसर पर उपहार देना चाहिए जो रिश्तों में ताजगी और मजबूती पैदा करती है। आपके मुहब्बत में गर्मी बढ़ती है। उपहार सामनेवाले को अपनी हैसियत के मुकाबले दे और दिखावे से बचना चाहिए। किसी रिश्तेदार से मिलने के लिए आप उसके घर जा रहे है तो अपने यहाँ की कोई प्रसिद्ध वस्तु अवश्य उसके लिए लेकर जाएं। यदि आप अपने से किसी बड़े या बुजुर्ग से मिलने जा रहे है तो उनके लिए कुछ परिधान या मिठाइयाँ ले जायें। किसी परिचित व्यक्ति से मिलने जा रहे है तो फल का उपहार भी दे सकते है। समय-समय पर अपने मित्र रिश्तेदारों को बधाई के कार्ड अवश्य भेजें ताकि आपका सम्पर्क बना रहेगा। उपहार की कीमत रुपए पैसों से ना आंके बल्कि देनेवाले के प्रेम को देखें। उपहार को बोझ न समझे और उपहार देते समय कोई वापसी की उम्मीद भी नहीं रखे। उपहार देकर भूल जाना ही सबसे अच्छा है। उपहार लेकर मुस्कुराकर धन्यवाद जरूर दें जिससे देनेवाला यह समझे कि उसका उपहार खुशीपूर्वक स्वीकार कर लिया गया है।

* हमारी एक मुस्कुराहट किसी भी झगड़े को खत्म करा सकती है। हमदर्दी का एक बोल, मेहरबानी का एक कर्म भले ही वो किसी को कितना भी छोटा लगे, पर वो छोटा नहीं होता। यह सब कर्म एक कमजोर और खुशी से वंचित मनुष्य के दिल में वो असर छोड़ जाते है जो मुद्दतों तक नहीं भुलाया जाता। ये कर्म किसी एक मनुष्य तक नहीं रुकते, बल्कि रोशनी बनकर दूसरों तक पहुंचते है। एक व्यक्ति से दूसरा व्यक्ति सीखता है। यहाँ तक की पूरा समाज उसी राह पर चलने लगता है।

* पत्नी के लिये सबसे बड़ा हमदर्द उसका पति होता है जो हमेशा अपनी पत्नी को खुश करने के प्रयास में लगा रहता है। पत्नी की हर जरूरत को पूरा करता है। पति से खुशमिजाजी से मिलते रहना ऐसी पत्नी पाकीजा होती है। मुस्कुराहट से न सिर्फ घरेलू जिंदगी प्यार व मोहब्बत के खैर व बरकत से मालामाल होती है। ईश्वर इससे प्रसन्न होता है। बहुत से पुरुष पत्नी की बातें नहीं सुनते है क्योंकि महिलाओं के पास बात करने का मुद्दा ही या तो बच्चों की शिकायत या तो पड़ोसियों की निंदा जिससे पुरुषों को कोई खास मतलब और दिलचस्पी नहीं होती। पुरुष पत्नी की बातें तभी सुनना चाहते है जब उनका अपना मन होता है। पत्नी यदि उत्सुकता से कभी कोई बात बताना भी चाहती है तो पति बिना दिलचस्पी लिये उसकी बात अनसुनी कर देते है। आज तेज रफ्तार जिंदगी में पति-पत्नी को एक-दूसरे को सुनने, सुनाने का समय बहुत कम मिल पाता है। फिर भी यह आवश्यक है पति को अपनी पत्नी की बात सुननी चाहिए।

* कुशल गृहिणी- किसी ने सच कहा है कि गृहिणी घर की लक्ष्मी होती है। पारिवारिक जीवन की सफलता एवं सुखी जीवन गृहिणी के गुणों पर निर्भर करते हैं। गृहिणी ही किसी घर की आधार शिला है। दैनिक समस्याओं का समाधान करने के लिए व्यावहारिक बुद्धि का होना आवश्यक है। रोजाना घरेलू कार्यों को व्यवस्थित करने में, धन की व्यवस्था, घरेलू सामग्री

का चुनाव, रख-रखाव, बच्चों की देखभाल एवं उचित लालन-पालन के लिए तथा परिवार में उच्च स्वास्थ्य एवं स्वच्छता को बनाए रखने का सम्पूर्ण ज्ञान गृहिणी को होना चाहिए। विभिन्न परिस्थितियों की जानकारी, उचित और अनुचित का विवेक कर समस्याओं को सुलझाना, परिवार के लक्ष्यों का निर्माण करना आदि सभी कार्य कुशल बुद्धि पर निर्भर करता है।

❋ उत्साहपूर्वक कार्य करने से कार्य शीघ्रता से कुशलता से सम्पन्न किया जा सकता है। घर के कार्यों को रुचि, लगन, उत्साह से आरम्भ किया जाए तो उसके संतोषजनक परिणाम होते हैं। घरेलू नवीन उपकरणों की नई विधि अपनाकर गृह कार्यों को सुधारा जा सकता है।

❋ बच्चों का मार्गदर्शन कर उनका सर्वांगीण विकास नारी उत्साह से कर सकती है। एक अच्छी गृहिणी को अपने परिवार के सदस्यों के प्रति सहनशील बर्ताव रखना चाहिए। वे सहनशील रहकर ही सदस्यों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं, समस्याओं एवं कठिनाइयों को समझ सकेगी। परिवार के प्रत्येक सदस्य में भिन्नता होती है उनकी जरूरत एवं स्वभाव के अनुरूप गृहिणी को सहनशील रहकर ही सुगमतापूर्वक स्नेह से समझा सकती है। परिवार के सदस्यों की आवश्यकताएं, रुचियां, लक्ष्यों को ध्यान में रखकर सामंजस्य स्थापित करना पड़ता है। कुशल गृहिणी में मानव स्वभाव को समझने की क्षमता का होना आवश्यक है। गृहिणी को अपनी संवेगात्मक एवं भावनात्मक स्थितियों में भावनाओं पर आत्म नियंत्रण रखना चाहिए। परिवार के सदस्यों के व्यवहार एवं भावनाओं को समझकर उचित व्यवहार करना चाहिए। धन का उचित व्यय करने का दायित्व गृहिणी पर ही होता है। एक गृहिणी घर की आमदनी व खर्चे सम्बन्धी व्यवस्थाओं को संतुलित रखती है वह बुद्धिमत्ता से परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं को समझकर उचित धन खर्च कर सभी सुविधाओं की व्यवस्था कर सकती है।

❋ शिक्षा लेते समय इसका उद्देश्य दौलत कमाना नहीं है दौलत कमाकर तो कोई भी धनवान बन जाता है पर शिक्षा से खुशहाल जिंदगी जीने का सूत्र सिखना चाहिए।

❋ किसी की जरूरत और मजबूरी देखकर वो किसी प्रकार की मदद मांगे इससे पहले उसकी मदद कर देनी चाहिए तो ईश्वर तुम्हें हमेशा खुशहाल रखेगा।

❋ अपराध करनेवालों को शुरू में बड़ा मजा आता है फिर वह धीरे-धीरे आसानी से करने लग जाता है उसमें उसे खुशी प्राप्त होने लगती है। फिर वो उसकी आदतों में शामिल हो जाता है। आदमी गलतियां और अपराध करने में माहिर हो जाता है और ठान लेता है कि वह कभी भी पछताएगा नहीं और डरेगा नहीं। अपराध करते-करते वह तबाही की ओर चले जाता है और बर्बाद हो जाता है। अपराध दबे पांव, दिल और दिमाग से प्रवेश करता हुआ इस बुरे कर्म की दुनियामें प्रवेश करने लगता है और मनुष्य मनुष्य से हैवान बन जाता है जो उसके जीवन को बर्बाद कर देता है। जब मनुष्य अपराध करने पर प्रवृत्त होता है तो उसके विचारों के सामने सैकड़ों बचाव के तरीके उसके शुभचिंतक बनकर उसे अवगत कराते है पर फिर भी व्यक्ति गुनाह कर बैठता है। उस समय उसे हर तरफ से जंजीरों की आवाज सुनायी देती है।

❋ लोग जानते है हमें एक दिन मरना अवश्य है मगर काम ऐसे करते है जैसे कभी मरना ही नहीं है। यह भी कहते हैं कि परलोक दुनिया से बेहतर है पर रात-दिन दुनिया के लिए धन इकट्ठा करते है। यह भी मानते है कि जीविका ईश्वर देता है मगर दिल से संतुष्ट नहीं है। वे अपने आपको ईश्वर के बंदे मानते है पर उसके अधीन नहीं रहते। कर्म स्वच्छंदता से करते है।

❋ जिस व्यक्ति की कमाई और रहन-सहन हराम पर पला बड़ा हो ऐसे व्यक्ति की ईश्वर के पास दुवाएं कबूल नहीं होती। प्रार्थनाएं स्वीकार नहीं होती।

❋ विफलता अगली सफलता को प्रभावित करती है। मेहनत का कोई अन्य विकल्प न तो किसी जमाने में था, न अब है और न ही किसी जमाने में होगा। सफलता के लिए आपको स्वयं ही एड़ी चोटी का जोर लगाना होगा। कई बार देखा गया है अधिक मेहनती व्यक्ति सामान्य बुद्धिवाला होता है वो सफलता प्राप्त कर लेता है बल्कि कुशाग्र बुद्धिवाला उनके मुकाबले में होते है मेहनत कम करते है और सफलता तक पहुंच नहीं पाते। मेहनत की दिशा एवं दशा ठीक और समयानुकूल होनी चाहिए। फिर भी अगर सफलता नहीं मिले तो धैर्य खोने की आवश्यकता नहीं है। सफलता उन्हें ही मिलती है जो सफलता के दृढ़ संकल्प लेकर प्रयास करते है।

❋ अज्ञानता से कभी कोई समस्या नहीं सुलझती।

❋ नाश के पूर्व व्यक्ति अहंकारी हो जाता है, किन्तु सम्मान सदैव व्यक्ति को नम्रता प्रदान करता है।

❋ जिस प्रकार कीट वस्त्रों को कुतर डालता है, उसी प्रकार ईर्ष्या मनुष्य को नष्ट कर देती है।

❋ ईश्वर का भय ही ज्ञान का उदय है।

❋ ज्यों-ज्यों मनुष्य बूढ़ा होता जाता है। त्यों-त्यों जीवन से प्रेम और मृत्यु से भय होता जाता है।

❋ प्रत्येक मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता है।

❋ बुद्धिमत्ता केवल सत्य में वास करती है।

❋ बिना कर्म किसी ने सिद्धि नहीं पाई।

❋ जो आत्म संयमी नहीं है, वह स्वतंत्र नहीं है।

❋ लेन-देन के मामले में वादा पूरा न करना विश्वासघात है।

❋ नौका जल में रह सकती है किन्तु जल नौका में नहीं रहना चाहिए। उसी प्रकार साधक संसार में रहे, किन्तु संसार का माया मोह साधक के मन में न रहे।

❋ इच्छाओं का दमन करके सुख प्राप्त हो सकता है, पर उनकी पूर्ति द्वारा नहीं।

❋ जिसके पास स्वास्थ्य है उसके पास आशा है और जिसके पास आशा है उसके पास सब कुछ है।

❋ जो दूसरों को स्वतंत्रता से वंचित रखने की चेष्टा करते हैं, वे स्वयं भी स्वतंत्र होने के अधिकारी नहीं होते और ईश्वर की दृष्टि में वे अधिक दिन तक अपनी स्वतंत्रता कायम नहीं रख सकते।

❋ जिस प्रकार श्रम शरीर को शक्ति प्रदान करता है, उसी प्रकार कठिनाइयां मनुष्य को शक्ति-सम्पन्न बनाती है।

❋ जहां नियमों के विपरीत आचरण होता है, वहीं क्रूरता का आरम्भ होता है।

❋ क्षुद्र आत्मा कभी भी महान आशा का आवास नहीं बन सकती।

❋ कर्म करने में ही आपका अधिकार है, फल में नहीं।

❋ सब कुछ नष्ट हो जाने पर भी भविष्य बाकी रहता है।

❋ भलाई का मार्ग भय से पूर्ण है, परंतु परिणाम अति उत्तम है।

❋ मानव मात्र को एक करने के लिए भगवान की भक्ति से बढ़कर कोई साधन नहीं है।

❋ सिद्धांत सत्य और न्याय के लिए उत्कंठा का नाम है।

❋ वर्तमान काल ही साहित्य का चरम उच्च न्यायालय नहीं है।

❋ सुमति के बिना शक्ति केवल मूर्खता और पागलपन है।

❋ बीज बहुत ही धीमी गति से जमीन से फूटता है, फिर थोड़ी तेजी से अंकुरित होता है उसके बाद पत्तियां निकलती है, गति और तेज हो जाती है। फिर विकास पाते ही धीमा पड़ जाता है। पूरी प्रकिया में एक लयबद्धता है। धैर्य रखकर ही आपको कार्य करना चाहिए। उसकी पूर्णता के लिये सिर्फ पूरा करने के लिए ही नहीं यह समझ बेहतर परिणाम देगी। कोई भी अच्छा काम फटाफट, अति शीघ्र नहीं हो सकता। न्यूटन ने भी अपना प्रयोग करते समय यही कहा था श्रेय मेरी प्रतिभा से अधिक मेरे धीरज भरे प्रयासों को जाता है।

❋ जिंदगी की गणित ऐसी है कि उसमें प्यार जोड़ो, नफरत को घटाओ, दु:ख को बांटो और सुख सभी के साथ गुणित करो तभी आपकी जिन्दगी सुखमय व्यतीत कर सकेंगे।

❋ लोग उस वक्त हमारी कद्र नहीं करते, जब हम अकेले होते है पर जब वो अकेले होते है उस समय उनको हमारी आवश्यकता पड़ती है और हमारी कद्र करते है।

❋ शब्द ऐसी चीज है जो व्यक्ति के या तो दिल में उतर जाता है या व्यक्ति दिल से उतर जाता है।

❋ आज हर कोई बोलना चाहता है पर सुनने को कोई राजी नहीं। सुनाने को सब आतुर है। अधिक बोलना, बहस, विवाद, तनाव और कलह को निमंत्रण देता है। अच्छा बोलना पर अधिक नहीं बोलना चाहिए। वाणी का संयम है मौन। मौन जीवन की शक्ति है। मौन में जो शक्ति हैं, वे शब्दों में नहीं। जब सामनेवाला नहीं सुने तो चुप हो जाना ही बेहतर है।

❋ जिसका धन मात्र धन के लिए है, वह धन के तत्व को नहीं समझ सकता।

❋ इस दुनिया में अमीरों के लिए गैर लोग भी अपनों जैसा ही बर्ताव करते हैं।

❋ मनुष्य मनुष्य का नहीं, धन का सेवक होता है।

❋ ईमानदारी निश्चय ही एक नियामत है, सबसे अच्छी नीति है मगर ढिंढोरा पीटने का बायस नहीं। यह व्यक्ति विशेष का एक निजी जीवन मूल्य है। ईमानदारी होनी ही नहीं दिखनी भी चाहिए। उसे सायास दिखाने की जरूरत ही नहीं। और कोई व्यक्ति, सरकारी मुलाजिम सहसा ही ईमानदार नहीं हो जाता- यह एक वह जीवन मूल्य है जो संस्कार, पारिवारिक परिवेश और खुद की वंशाणुवीय संरचना के मेलजोल से उपजता है।

❋ अपनी मुस्कुराहट से दुनिया बदलो। यह नहीं कि दुनिया को अपनी मुस्कुराहट बदलने के मौके दो।

❋ गरीब मीलो चलता है भोजन पाने के लिए, अमीर मिलों चलता है उसे पचाने के लिए, किसी के पास खाने के लिए एक वक्त कि रोटी नहीं है, किसी के पास एक रोटी खाने का वक्त नहीं है।

❋ कितना बड़ा होता होगा उन लोगों का दिल, जो अंजान, अपरिचित और अजनबी इंसानों के लिए अपने प्राणों की भी परवाह नहीं करते हैं। हमें गर्व होना चाहिए उन वीर जवानों पर, उन माताओं पर जिन्होंने ऐसी संतानों को जन्म दिया। कोई भी इंसान जो ईश्वर को पाना चाहता है तो वह सबसे पहले भगवान के बनाए सभी सजीव प्राणियों से प्रेम करना सीखे, दूसरों के लिए जीना सीखे। सच्चा जीवन वही है जो इंसान दूसरों के लिए जीता है। हमारे बहुत से सूफी संतों ने भी यही कहा है कि प्रेम ही ईश्वर है और ईश्वर ही प्रेम है। केवल प्रेम ही एक ऐसी भावना है जो इंसान को लौकिक स्थूलता से हटाते हुए उसे प्रभु तक पहुंचाने में सक्षम है।

❋ सच्चाई के मार्ग पर चलनेवाले की हमेशा जीत होती है।

❋ प्रेम और आनंद का उद्‌गम आत्मा के अंदर है। उसे परमात्मा के साथ जोड़ने से ही अपरिमित और स्थायी आनंद प्राप्त हो सकता है। सांसारिक नाशवान वस्तुओं के कंधे पर यदि आत्मीयता का बोझ रखा जाए तो उन नाशवान वस्तुओं

में परिवर्तन होने पर या नाश होने पर सहारा टूट जाता है और उसके कंधे पर जो बोझ रखा था, वह सहसा नीचे गिर पड़ता है, फलस्वरूप बड़ी चोट लगती है और हम बहुत समय तक तिलमिलाते रहते हैं। धन-नाश पर, प्रियजन की मृत्यु पर, अपयश होने पर कितने ही व्यक्ति दहाड़े मारकर रोते-बिलखते और जीवन को नष्ट करते हुए देखे जाते हैं। प्रेम का आध्यात्मिक स्वरूप यह है कि आत्मा का आधार परमात्मा को बनाया जाए, चैतन्य और अजर-अमर आत्मा का अवलंबन सच्चिदानंद परमात्मा ही हो सकता है। इसलिए जड़ पदार्थों से, भौतिक वस्तुओं से, चित्त हटाकर परमात्मा में लगाना चाहिए।

✻ मानव जीवन ईश्वर की अमूल्य धरोहर है। हमारा यह जीवन अनेकानेक योनियों के बाद बड़े ही भाग्य से मिलता है किंतु मनुष्य उसे विभिन्न आसक्तियों में पड़े व्यर्थ ही नष्ट कर डालता है। इस संबंध में सबसे बड़ी आसक्ति है, धन के प्रति अनावश्यक मोह। यद्यपि धन से मनुष्य के जीवन की आवश्यकताएं पूर्ण होती हैं और धर्म-कर्म के अधिकांश कार्य भी उसकी सहायता से पूरे होते हैं किंतु समस्या तब पैदा होती है, जब मनुष्य धन को ही जीवन का सर्वस्व मानकर उसकी प्राप्ति के लिए नाना प्रकार के दुष्कर्म करने लगता है और अपने जीवन के वास्तविक लक्ष्य को भुला देता है।

✻ संसार में जितने भी छल-कपट, चोरी, बेईमानी, हिंसा, अविश्वास आदि दुष्कर्म हैं वे धन के ही कारण होते हैं। इसलिए धन को समस्त अनर्थों का मूल और पाप का बाप कहा गया है। प्राय: देखा गया है कि व्यक्ति धन को उपार्जित करने, उसे बढ़ाने या उसकी रक्षा करने की चिंता में लगे रहते हैं। इसी में उनका सारा जीवन व्यतीत हो जाता है। इससे उनमें तरह-तरह के तनाव पैदा हो जाते हैं, जिसके कारण अनेक रोगों का सामना करना पड़ता है। धन तो जीवन की सुख-सुविधा के लिए है। यदि उसे अर्जित, संचय या उसकी रक्षा करने में व्यक्ति का सुख-चैन, अमन समाप्त होता है, दिन-रात चिंता यदि व्यक्ति के जीवन को निरंतर परेशान किए रहती है तो फिर ऐसा धन किस काम का?

✻ दु:खी होने की बजाय दु:ख का उपचार करें।

✻ संसार में दु:ख ही दु:ख है। असफलता मिलने पर कई बार आप भी यही सोचते होंगे, जबकि वास्तविकता इससे भिन्न है। संसार में दु:ख इसलिए है, क्योंकि संसार में सुख है। अगर सुख नहीं होता तो दु:ख का अस्तित्व भी नहीं होता है। ईश्वर हमें दु:ख की अनुभूति इसलिए करवाता है ताकि हम सुख का एहसास कर पाएं, सुख के महत्व को समझें।

✻ हमारा हर कर्म सुख पाने के लिए होता है। इसके बावजूद भी जीवन में कई बार हमें दु:ख और कष्ट की अनुभूति होती है। सुख और दु:ख धूप-छांव एवं दिन और रात की तरह हैं। हम चाहें न चाहें दु:ख को आना है। भगवान राम, श्रीकृष्ण, बुद्ध और महावीर को भी दु:ख उठाना पड़ा, लेकिन इन महापुरुषों ने दु:ख को गले लगाकर नहीं रखा बल्कि दु:ख का उपचार किया।

✻ दु:ख रात के समान है। रात के अंधेरे को दूर करने के लिए सूर्य जिस तरह निरंतर प्रयास करता रहता है और नियत समय पर रात के अंधकार को पराजित करके दिन का प्रकाश ले आता है, इसी तरह हमें भी दु:ख को दूर करने के लिए निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। दु:ख से दु:खी होकर बैठने से दु:ख और बढ़ता है लेकिन जब हम समाधान के लिए प्रयास करने लगते हैं तो दु:ख का अंधेरा छंटने लगता है। दु:ख से हम जितना डरते हैं दु:ख हमें उतना ही डराता है। मृत्यु के बाद दु:ख का अंत हो जाता है, अगर मृत्यु के बाद जीव को और भी कष्ट उठाना पड़ता है, क्योंकि वहां तो शरीर भी नहीं होता है जिससे अपने दु:ख का उपचार किया जा सकता है। सीता का हरण करके रावण ने राम को दु:ख दिया। रामजी ने धैर्य से काम लिया और रावण जो उनके कष्ट का कारण था उसका पता लगाकर उसका अंत किया। पाण्डवों का सारा राज्य कौरवों ने छल से छीन लिया। पाण्डव अगर हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाते और दु:ख का उपचार नहीं करते तो इतिहास में उनकी वीरता और साहस का

बखान नहीं मिलता। इसलिए दु:ख से दु:खी होने की बजाय दु:ख का उपचार करना चाहिए।

❋ कोई भी इंसान अगर चाहे तो इस धरती पर ही स्वर्ग का सुख प्राप्त कर सकता है। बस उसे एक छोटा सा प्रयास करना होगा। उसे अपनी जिंदगी से नहीं शब्द को निकालना होगा। आप कोई भी कार्य करें उसे पूरे विश्वास के साथ करें। आपका विश्वास ही आपको आपकी मंजिल तक पहुंचाएगा। अपने मन में किसी भी तरह के अविश्वास को जन्म न लेने दें। उदाहरण के लिए अगर आप बीमार हैं तो अपने मन में विश्वास रखें कि मैं एक दिन बिल्कुल स्वस्थ होनेवाला हूं। मन में किसी भी तरह की शंका या संदेह आपका कार्य बिगाड़ सकता है। यही विश्वास अपने रिश्तों में भी रखें क्योंकि जो इंसान किसी पर विश्वास नहीं करता है वह न तो किसी का प्यार पा सकता है और न ही अपना प्यार किसी को दे सकता है। अगर आप किसी को सच्चे हृदय से प्रेम करते हैं तो सबसे पहले आपको अपने ऊपर विश्वास करना होगा। अपने अंदर छिपी प्रेम की शक्ति पर विश्वास करना होगा क्योंकि यह तो संसार का नियम है जो आप दूसरों को देते हो, वह किसी न किसी रूप में आपको अवश्य मिलता है। कुछ पाने के लिए पहले देना पड़ता है। खुशियां मांगने से नहीं देने से मिलती हैं। इसलिए लेने की भिखारीवाली प्रवृत्ति न पालें। बस सबको देने में प्रसन्नता का अनुभव करें। कुछ दिनों बाद आप महसूस करने लगोगे कि यह दुनिया कितनी सुंदर है। जहां भी दृष्टि डालोगे चारों तरफ सुंदरता ही सुंदरता नजर आएगी। तब आप महसूस करने लगोगे कि आपने इस धरती पर ही स्वर्ग के सुख को प्राप्त कर लिया है। आप एक अलग ही आनंद में रहने लगोगे।

❋ दुनिया का प्राय: हरेक प्राणी सुख चाहता है। उसे एकांत सुख चाहिए यानि बीच में कहीं कोई दु:ख न आ जाए। संपूर्ण ज्ञान के प्रकाश, अज्ञान और मोह के दूर होने और राग-द्वेष का क्षय होने से एकांत सुखमय मोक्ष प्राप्त होता है। संपूर्ण ज्ञान का प्रकाशन केवलज्ञान की भूमिका में ही हो सकता है। जिसको केवलज्ञान प्राप्त हो गया, उसके लिए दुनिया का कोई भी तथ्य, कोई घटना अज्ञात नहीं होती। किंतु केवलज्ञान की प्राप्ति तब तक संभव नहीं है जब तक अज्ञान और मोह दूर नहीं होता है। अज्ञान भी मोह से संबंधित है। मोह बढ़ने के साथ ही अज्ञान पैदा होता है। अज्ञान दूर हो जाए, मोह क्षीण हो जाए, राग-द्वेष नष्ट हो जाए तो संपूर्ण ज्ञान प्रकाशित हो सकता है। ज्ञान प्राप्ति के लिए पुस्तकों का अध्ययन किया जाता है और कभी-कभी ज्ञान का प्रकाश भीतर से भी फूटता है। आत्मज्ञान के अभाव में मात्र पुस्तकीय ज्ञान से कई बार अहंकार भी उत्पन्न हो सकता है। आचार्य भर्तृहरि ने नीति शतकम् में लिखा है- जब मुझे बहुत कम ज्ञान था तब मैं हाथी की तरह मदोन्मत्त हो गया था। सोचने लगा कि मैं तो सर्वज्ञ बन गया। जब महान व्यक्तियों के संपर्क में आया और उनसे कुछ जाना, तो लगा कि मैं तो कुछ नहीं जानता। अपनी अज्ञानता सामने आ गई। अज्ञानता को समझ लेना, ज्ञान प्राप्ति की दिशा में बहुत बड़ी उपलब्धि है। फिर ज्ञान और ज्ञान में भी बहुत अंतर होता है। सवाल है कि कौन सा ज्ञान कल्याणकारी है? दिगंबर साहित्य में कहा गया है कि जिस ज्ञान से साधक राग से विराग की ओर आगे बढ़े, कल्याण करने का मन बनाए, उसमें मैत्री भावना का विकास हो, उसी ज्ञान को ज्ञान कहा जाता है। मन जितना राग-द्वेष से मुक्त रहेगा, उतने ही सुखी बन सकेंगे, प्रसन्न रह सकेंगे। विकारों के नाश से ही एकांत सुख मिलेगा।

❋ जीवन की यात्रा भोग से त्याग की ओर चलती है। भोग और वैराग्य के बीच की अवस्था है त्याग। भोग का त्याग नहीं करना है, भोग में त्याग करना है। भोजन तो करना ही है, भोजन में स्वाद का त्याग करना है। खाने के लिए नहीं जीना है, जीने के लिए खाना है। निष्काम भोग ही त्याग है। त्याग में विकल्प है ग्रहण करने या छोड़ने का।

❋ त्याग में तकलीफ होती है। सुख चाहनेवाली बुद्धि वस्तु का त्याग करने नहीं देती। वह भोग में उलझाए रखती है।

भोग में क्षणिक सुख की आशा जीवन को ले डूबती है। तृष्णा को जर्जर करनेवाला व्यक्ति अंत में स्वयं जर्जर होकर तृष्णा का ग्रास बन जाता है।

❋ जैसे-जैसे भोग की असलियत खुलती जाती है, वैसे-वैसे त्याग की वृत्ति प्रबल होती जाती है। धीरे-धीरे त्याग व्रत बन जाता है और वैराग्य तक ले जाता है। त्याग क्रमगत होता है। जब सत्संग से विवेक जगने लगता है तब धन अर्थहीन लगने लगता है। मंजिल तक पहुंचने के लिए सीढ़ियों का त्याग करना ही होगा। छोड़ने का अभ्यास मुगदर भांजने जैसा है। शुरू में वह उठाए नहीं उठता। अभ्यास करते-करते भारहीन लगने लगता है। ऐसी साधना करते रहने से त्याग से वैराग्य की यात्रा पूरी हो जाती है। कर्म सहित सब कुछ त्यागने के अभ्यास का नाम वैराग्य है। त्याग सायास होता है और वैराग्य अनायास होता है। त्याग के आगे है वैराग्य। संसार से पलायन नहीं करना है, साहस के साथ उसका मुकाबला करना है। त्याग करते-करते वैराग्य हो जाता है। पाप कर्म बंधनकारी है। पाप कांटा है। वीतरागी ही संन्यासी है। उसके जीवन में परम शांति आ जाती है और उसके चित्त में जमे हुए बुरे विचार धुल जाते हैं। मन निष्कंप हो जाता है और अखंड समाधि लग जाती है। यही वैराग्य की महिमा है।

❋ समय बड़ा महत्त्वपूर्ण एवं बलवान होता है। दुनियां की सारी दौलत खर्च करके भी बीते समय को वापस नहीं खरीदा जा सकता। समय को हीरे, मोती, चांदी व सोने से भी कहीं अधिक मूल्यवान आंका गया है मगर फिर भी समय को महत्वपूर्ण न मानते हुए लोग इसकी बर्बादी करते हैं। काल की महिमा का कोई भरोसा नहीं है। जो लोग सफल हुए हैं उन्होंने समय को साधा है। १६ घंटे अपने काम के प्रति समर्पित रहे हैं, तब कहीं मंजिल पर पहुंचे हैं। लोग एक-दूसरे की बुराई करने में, पर दोषों का बखान करने में, अपनी प्रशंसा करने में और स्वयं की छोटी-सी बात को बड़ी उपलब्धि बताने में व्यर्थ समय गंवा देते हैं। यदि यही समय नया सीखने में, संपर्क बनाने में या नई तकनीक की जानकारी लेने में लगाएं तो उन्हें समय की वास्तविक कीमत मालूम पड़ सकती है।

❋ सफलता को पाने के लिए धैर्य, आत्मसंयम, परिश्रम, दृढ़विश्वास, लगन, कार्य के प्रतिनिष्ठा, त्याग, तपस्या, सूझबूझ, बुद्धिमत्ता, दूसरों के प्रति सम्मान की भावना, कृतज्ञता, ईश्वर में विश्वास आदि का होना नितांत आवश्यक है। आलस्य का परित्याग एवं निरंतर क्रियाशीलता के बिना जीवन में किसी व्यक्ति को बड़ी सफलता नहीं मिली है।

❋ सच्चे दोस्त जीवन में बड़ी मुश्किल से मिलते हैं और वो लोग भाग्यशाली है जिन्हें ऐसे दोस्त मिल जाएं। दोस्त बनाने चाहिए पर सोच-समझकर। हर व्यक्ति अच्छा दोस्त बनना और बनाना पसंद करता है। क्योंकि जीवन में दोस्ती का बहुत महत्व है। दोस्ती की आवश्यकता हर मोड़ पर पड़ती है। एक अच्छा दोस्त सुख-दु:ख में सहायक बनकर स्नेह देता है। दोस्त की परेशानियों में कमियों को पूरा कर उसको सुरक्षित भी करता है मगर कभी कभी बिना सोचे समझे मित्र बनाने का नतीजा भी बहुत भयानक और नुकसानदायक होता है। वह दोस्त वास्तव में दोस्त न बनकर उसके लिये भारी मुसीबत बन जाता है। इस दुनिया में दोस्त के लिए जहां अपनी जान कुर्बान करनेवालों की कमी नहीं है, वही ऐसे लोगों की भी कमी नहीं हैं जो अपनी मामूली सी स्वार्थपूर्ति के लिए अपने दोस्त की जान ले लेते है। आज के दौर में आपको बेशक अधिक से अधिक दोस्त बनाने चाहिए मगर सोच समझकर क्योंकि जहां दोस्त आपकी जड़े मजबूत कर सकते हैं, वहीं आपकी जड़ें काट भी सकते हैं। निस्वार्थ दोस्ती ही सच्ची दोस्ती होती है। अत: आपसे जिसका कैसा भी स्वार्थ सिद्ध होता हो, उससे दोस्ती न करें। जो आपके दु:ख की घड़ी में आपके साथ नहीं रहता, आपके दुख से दुखी नहीं होता, वह दोस्ती के लायक नहीं है। दोस्त के तीन लक्षण है। हित सोचना, अहित से बचाना तथा दुख और मुसीबत में साथ न

छोड़ना। जीवन में अगर ऐसा दोस्त मिल गया आपसे बढ़कर खुशनसीब कोई नहीं। जिन लोगों को आज दुनिया महापुरुषों के रूप में याद करती हैं उनके पास उनकी असली पूंजी उनके दोस्त ही थे। लिहाजा यह कहना गलत न होगा कि सोच-समझकर बनाए गए अच्छे दोस्त के बल पर ही व्यक्ति ऊंचा उठता है। अच्छे दोस्त ही जीवन की सफलताओं में सहायक होते हैं। दोस्ती के बहाने गलत काम करने का प्रचलन आजकल महानगरों में खूब है। जहां दोस्तों को बहला फुसला कर उनके पैसे उड़ाने से लेकर उनका अपहरण और फिर हत्या करना आम बात हो गई है। अपराधी किस्म के युवा ऐसे दोस्त की तलाश में रहते हैं जिन पर वे अपना हाथ साफ कर सके। ऐसा भी नहीं है कि सिर्फ लड़के ही दोस्ती के नाम पर दगाबाजी करते हैं, लड़कियां भी इस मामले में आज काफी आगे बढ़ गई है। पैसेवाले युवक को देखते ही वे उससे दोस्ती बढ़ाने लग जाती है और फिर मौका मिलते ही हाथ साफ कर जाती हैं। इसलिए किसी को भी दोस्त बनाने से पहले गुपुचप तरीके से उसके बारे में पूरी छानबीन कर लें कि वह किस प्रकृति का है। इसके बाद ही खूब गंभीरतापूर्वक सोच विचार कर उसे अपना दोस्त बनाइए। तभी आपको दोस्ती की सच्ची खुशी मिलेगी।

❊ सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए सबसे पहली और सबसे बड़ी आवश्यकता होती है एक-दूसरे पर विश्वास करने की, क्योंकि विश्वास ही सुखी जीवन की सबसे पहली सीढ़ी है जिसके सहारे चलकर आप अपनी सुखी दीर्घकालिक गृहस्थी की शुरूआत कर सकते हैं और अपने सारे सपने साकार कर सकते हैं।

वैवाहिक जीवन के दौरान दोनों का एक-दूसरे से मतभेद होना वैवाहिक जीवन में दरार डालने में आग में घी का काम करने जैसा है। इसलिए इस आग से बचने के लिए आप एक-दूसरे के प्रति मतभेद न रखते हुए संयुक्त रूप से जीवन जीना सीखें। सामने आनेवाली नित नई परेशानी से बिना मतभेद के दोनों सुलझा सकते हैं।

घर में बार-बार पुरानी बातों का जिक्र कर अनावश्यक बहस में उलझे न रहें इससे दोनों का समय और शक्ति का व्यर्थ उपयोग होगा, जिससे आपका तनाव और बढ़ेगा। इससे आपका जीवन नीरसतापूर्ण हो जाएगा और वह एक बोझ ढोने के समान लगने लगेगा। आपका यह बंधन एक जन्म का नहीं बल्कि जन्म-जन्मान्तर तक का है और इसीलिए दोनों एक दूसरे का हमेशा ध्यान रखें। स्थायित्व और स्वतंत्रता दोनों को साथ-साथ लेकर चलें इससे आपका जीवन जीने का तरीका और आसान हो जाएगा। एक-दूसरे का ध्यान रखते समय आपसी सम्मान की भावना अपने मन में हमेशा बनाए रखें। दोनों साथ-साथ हो तब एक-दूसरे में पूरी तरह दिलचस्पी लें। इससे आपके संबंध दीर्घकालीन बने रहेंगे तथा आपको सुखी जीवन का अहसास होगा। अपनी अपनी रुचियाँ और गतिविधियाँ भिन्न हो तब भी एक दूसरे में दिलचस्पी बनाए रखें। यही बात आपके संबंध को मजबूती प्रदान करेगी।

❊ जीवन प्रेम के बल पर ही चलता है। प्रेम ऐसी चीज है कि बांटने से बढ़ती और देने से मिलती है। मांगो मत, पाओ और पाने के लिए लुटाना होगा। यह जीवन प्रेम और विश्वास की नींव पर ही खड़ा है। हर संबंध में प्रेम और विश्वास से चल रहा है। चाहे संबंध गुरु-शिष्य का है, चाहे भक्त-भगवान का, चाहे मालिक-नौकर का, चाहे भाई-भाई का और चाहे पति-पत्नी का। यदि माता-पिता बच्चों में विश्वास न रखें और उनसे प्रेम न करें, हमेशा उन्हें शक की दृष्टि से देखें तो वे गलत करना शुरू कर देंगे।

विश्वास की जड़ों को श्रद्धा और प्रेम से सींचते चलो। इससे वह और मजबूत होगी। जीवन फिर आनंद से भर जाएगा। आज हर संबंध प्रेम और विश्वास पर खड़ा है। शक से तो बुनियाद हिल जाएगी। हमें तो बुनियाद पक्की करनी है। इसके लिए जरूरी है कि सबसे पहले तो हमें स्वयं से प्रेम और खुद पर विश्वास करना है।

यदि हमें खुद से प्रेम नहीं तो दूसरों से कैसे होगा? अपने अंदर श्रद्धा, प्रेम, विश्वास जैसे गुण पैदा करने हैं। हमारा अपना विश्वास ही हमें आगे बढ़ाएगा।

भगवान ने जीवन में जो समय दिया है उसे बेकार की उधेड़बुन में, तर्क-वितर्क में व्यर्थ न करो, उससे कुछ हासिल नहीं होगा। विश्वास और प्रेम को बढ़ाते चलो। अनमोल समय और शक्ति का सदुपयोग करो, आपके जीवन में उमंग और आनंद बढ़ जाएगा। किसी भी काम को करने में कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ेगा। कठिनाइयां आएंगी जरूर, पर आपका विश्वास आपका रास्ता आसान कर देगा।

इधर-उधर भटकना छोड़ निराशा को पास न आने दें। निराशा हर किसी के जीवन में जहर घोल देती है। जीवन में आशा और प्रेम बढ़ाएं। विश्वास और प्रेम का प्रकाश चारों तरफ फैलाते चलें।

❋ जब संसार में आए हो तो कर्म करना ही होगा, वर्णाश्रम धर्म का पालन करना ही होगा, शरीर की जरूरतें पूरी करने के लिए धन भी कमाना ही पड़ेगा। बस इनमें उलझना नहीं। पशु अपनी किस्मत नहीं बदल सकता। देवता अपना भाग्य नहीं बदल सकते। परंतु मनुष्य अपना भाग्य बदल सकता है। देवता केवल वही सुख ले सकते हैं, जो उन्होंने अपने मनुष्य जन्म में कमाए। पशु-पक्षी भी केवल उन्हीं कर्मों के फल पाते हैं, जो उन्होंने अपने मनुष्य जन्म में कमाए। इसलिए अब यह मनुष्य पर निर्भर करता है कि वह अपने कर्मों द्वारा देवता से श्रेष्ठ बनता है या पशु से भी निम्न हो जाता है।

यह संसार दुखों का घर है। लेकिन विडंबना यह है कि इस दुख से भरे घर में हम सब सुख ढूंढ रहे हैं। हमारा यह जीवन, इस जीवन का सारा सुख- यह सब उसी की कृपा से हासिल है। इससे मन में अहंकार नहीं पैदा होता। सुख दरअसल कहीं और से नहीं आता। वह हमारे आसपास ही होता है। जरूरत बस उसे पहचानने की होती है। जरा सी कोशिश से ही वह करीब खिंचा चला आता है।

❋ किसी झूठ को अगर बार-बार बोला जाए तो वह भी सच लगने लगता है और अगर सच को बार-बार बोला जाए तो वह दिल में घर कर जाता है।

❋ भजन हमें निराभिमानी बनाता है। यह हमें कृतज्ञ होना सिखाता है। यह हमें ग्रहणशील बनाता है।

❋ कोई इन्सान अपनी संगति से जाना जाता है। अगर हम अमीर बनना चाहते हैं, तो हमें धनवान लोगों की सोहबत करनी चाहिए। ऐसा करके हम उनके जैसा सोचने और उनके जैसा कार्य करने लगेंगे और हो सकता है, हम भी अमीर हो जाएं। अगर हम धावक बनना चाहते हैं, तो हमें धावकों के साथ समय बिताना चाहिए।

❋ जीवन का परम आधार प्रेम है। जीवन में प्रेम का वही स्थान है जो जल में शीतलता का है। इसके अभाव में बड़ी-बड़ी बातें भी अपना अर्थ खो देती हैं। आज संसार में ऐसे लोगों की संख्या ज्यादा है जो अपने लिए ही सोचते हैं- मैं सुखी कैसे बनूं। दूसरों के भले और सुख के बारे में सोचनेवाले बहुत थोड़े हैं।

पहले व्यक्ति व्यक्ति को चाहता था, आंखों में शर्म थी, लोग मिलते-बैठते थे, सुख-दु:ख की चर्चा होती थी। आज इतना परिवर्तन आ गया है कि उसकी कल्पना भी मुश्किल है। आज ऐसे मनुष्य कम है जो सोचते है कि दूसरे भी उनके समान सुख से जीना चाहते हैं। मनुष्य अपने अधिकारों की रक्षा करें और दूसरे के अधिकारों का हनन न करे। पारस्परिक सहयोग से ही समाज बदल सकता है।

❋ धर्म अपने मूल रूप में डराने धमकाने का नहीं, मानव मात्र में प्रेम और सद्भाव बढ़ाने का सबसे खूबसूरत जरिया है। उससे किसी भी तरह का व्यवसाय नहीं किया जा सकता। नफा-नुकसान के लिए धर्म में कोई जगह नहीं है।

* जिस किसीसे भी बात करो वह किसी न किसी कारण से दुःखी है। धनी भी, गरीब भी। पढ़ा-लिखा भी, अनपढ़ भी। आदमी भी, औरत भी। गांव में रहनेवाला भी और शहर में रहनेवाला भी। सुख पाने उसी के पास जाना होगा, जिसके पास वह है।

* जब किसी समाज का मनोबल कमजोर पड़ जाता है, तब वह अंधविश्वासों, ताबीजों, मंत्रों-तंत्रों की शरण में पहुंचता है। जिंदगी के सवालों से घिरा वक्त जीवन के सच को ढूंढने की कोशिश करता है। यह कोशिश अतीत से वर्तमान तक निरंतर चलती रहती है। अनेक महापुरुषों ने इसके लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। हम चाहकर भी अपनी जिंदगी का सच नहीं ढूंढ पाते? जो इस सच से रू-ब-रू कराने की कोशिश करते हैं, हम उन्हें क्रूरतापूर्वक नष्ट कर देते हैं। बलिदान ही मूल्य है समाज के लिए और बलिदान ही मूल्य है सुधार के लिए। एक लेकर पुजारी बनता है, दूसरा देकर पूज्य हो जाता है।

* परिग्रह के साथ लिप्सा का गठबंधन होता है। लिप्सा भय को जन्म देती है और भय निश्चित रूप से हिंसा और संघर्ष का आमंत्रण है। जब संग्रह का स्थान त्याग लेता है, शक्ति की अपेक्षा शांति लक्ष्य बनती है, तब अपरिग्रह, अभय और अहिंसा का पूरा वृत्त बनता है। तभी जीवन को दृढ़ और शुभ आधार मिलता है। मनोबल और संकल्प की वह शक्ति है, जो किसी भटके हुए व्यक्ति को लक्ष्य तक पहुंचाती है। डरे हुए व्यक्ति को हाथ पकड़कर उठा देती है। अंधेरे में रोशनी दिखाती है। विपरीत स्थितियों में भी मनुष्यता को कायम रखती है।

* हमें अपनी देह से शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। अपना सिर झुकाकर देखिए पूरा अभिमान मर जाएगा। आंखें झुकाकर तो देखिए सामनेवाला पत्थरदिल हो तो पिघल जाएगा। हाथों को काम देकर देखो चारों ओर उजियाला पसर जाएगा। हर वक्त खाते नहीं रहना चाहिए, दांतों को कुछ देर आराम देकर देखो स्वास्थ्य सुधर जाएगा। जिह्वा पर विराम लगाकर देखो क्लेश का कारवां गुजर जाएगा। अपनी ख्वाहिशों को कम करके देखो खुशियों का संसार नजर आएगा। भटकते कदमों को राह पर लाकर देखो सीना गर्व से तन जाएगा। पीठ को छलनी करनेवाला छुरा फेंककर देखो दुश्मन भी जिगर का टुकड़ा बन जाएगा। परमात्मा में मन लगाकर तो देखो आत्मा से अज्ञानता का पर्दा हट जाएगा। भावनाओं को तलाश कर देखो जीवन खुद-ब-खुद संवर जाएगा।

* अगर किसी को कुछ देना ही चाहते हो तो लोगों को दिखाकर मत दो। जीना चाहते हो तो अच्छी जगह जाना सीखो। किसी से कुछ लेना है तो माँ-बाप का आशीर्वाद लो। सौदा तौलना है तो बोलने से पहले बात को तौलो। और बोलना ही चाहते हो तो मीठी जुबान से बोलो।

* अच्छे दोस्त और अच्छे कर्म में बढ़ोत्तरी करो।

* एक बार हार कर वह जानेवाला उम्रभर हारते रहता है।

* हर हाल में ईश्वर से डरो चाहे खुला हो चाहे छिपे हुए हालात में।

* खुशी और नाखुशी के हर हाल में न्यायप्रिय बनो।

* हुस्न बिना श्रृंगार के ही दिल मोह लेता है।

* सच्ची खुबसूरती दिल में होती है अगर दिल काला हो तो चमकती आंख भी काम नहीं देती।

* दोस्त को दोस्ती करने से पहले परखो वरना बाद में दोस्ती के मुजरिम बन जाओगे।

* जब तुमने हवा को ही अपना राज बता दिया और अगर हवा ही उसे पेड़ों को बता दे तो तुम हवा को दोष नहीं दे सकते।

* सच बात सुननेवाला सच बात कहनेवाले से कुछ कम नहीं होता।

* जिस चीज को हम प्राप्त करना चाहते है अगर वो हमें नहीं मिलती तो वो हमारे दिल को उससे ज्यादा प्रिय होती है जो हमारे पास है।

* जो बात आप नहीं जानते उसे मुंह से मत निकालो और जो अच्छी बात आपको मालूम है उसे योग्य आदमी को बताने में देरी ना करो।

* जो मनुष्य किसी पर रहम नहीं करता उसपर रहम नहीं किया जा सकता।

* हर व्यक्ति से इतनी मुहब्बत करो जितनी खुद से करते हो।

* हर मुसीबत की जड़ मनुष्य की बातचीत है।

* गरीब इन्सान वो है जिसका कोई दोस्त नहीं है।

* बुरी बात मनुष्य को तबाह कर देती है।

* लालच मनुष्य को बेइज्जत करा देता है।

* वो मनुष्य मनुष्य नहीं जिसकी जिंदगी का कोई मकसद नहीं।

* रास्ता पूछने से जो शर्माता है वह रास्ता भटक जाता है।

* सच्ची इज्जत ज्ञान से हासिल होती है दौलत से नहीं।

* कुछ ऐसे काम करो कि मरने के बाद भी आपकी तारीफ हो और लोग आपको याद करें।

* दौलत से बिस्तर खरीदा जा सकता है नींद नहीं, दौलत से किताबें खरीदी जा सकती है पर ज्ञान नहीं।

* दूसरों को मदद करने से एक दिन तुम्हारी भी कोई मदद करेगा।

* मरते दम तक किसीका अहसान मत भूलो।

* अपने दोस्त को अपनी उतनी ही जानकारी दो कि अगर कभी वो तुम्हारा दुश्मन हो जाये तो तुमको नुक्सान न पहुंचा सके।

* कोई व्यक्ति तब तक नहीं मर सकता जब तक ईश्वर ने रोजी-रोटी उसके मुकद्दर में लिखी है।

* प्रेमभरे किसी भी रिश्ते में अलगाव का कोई कारण होता ही नहीं। छोटी-छोटी बहस या तकरार रोज का हिस्सा है। एक दूसरे की पसंद नापसंद का एकदम भिन्न होना, धैर्य खो देना, शक करना, प्रेम की कमी महसूस करना इत्यादि अलगाव के कारण बनते है। आपके सम्बन्धों में वो पहले जैसी उष्मा नहीं रहती और दरार आ जाती है। एक दूसरे का साथ अब आपको बोझ लगने लगता है। इन आपसी सम्बन्धों में दरारें आने का कारण ढूंढना चाहिए। यह होता है कि कभी-कभी आप किसी व्यक्ति को जाने बिना भावुकता में ही उसके साथ जिंदगी बिताने का गलत निर्णय ले लेते है। इसलिए रिश्तों में दरार न आयें कभी सबको गुंजाइश मत दो।

* जीवन में उतार चढ़ाव आते रहेंगे पर अपने आपको कभी परेशान मत करो। जो पसंद है उसे हासिल करो या फिर जो हासिल है उसे पसंद करने लग जाओ।

* किसी भी बात पर अपना दिमाख खराब नहीं करे कोई घटना हो गयी हो तो उसमें आत्मचिंतन करे, सदा प्रसन्नचित रहने का प्रयास करें।

* जब आप घर में हो तो बच्चों के साथ खूब उछलकूद मस्ती करें, उन्हें समय दें यह क्रिया आपको ताजगी देगी मन प्रफुल्लित रहेगा। अपनी संतान के साथ शारीरिक तनाव दूर हो जाते है।

* हर व्यक्ति अपने जीवन में किसी न किसी संस्थानों से जुड़ा होता है। आप भी किसी खेल कूद की संस्था से जुड़ जाए

या किसी सामाजिक संस्था से जुड़ें, उनके लिये अपना समय निकाले, उनके कार्य में भाग ले। अध्यात्म और धर्म के लिए कुछ समय निकालें इन सबसे आपका मन प्रफुल्लित हो जाएगा कुछ समय अपने स्वयं के लिए निकाले अर्थात अपनी पसंद का कोई काम करें।

✻ परेशानी और उलझनों के बारे में जितना सोचते है वे उतना ही परेशान करती है और दिमागी रूप से मानव को कमजोर कर देती है। स्वयं भी खुश रहें और दूसरों को भी खुश रखें।

✻ अपने गुस्से पर नियंत्रण रखें। कारण गुस्सा मनुष्य को खा जाता है। व्यक्ति का नाश करता है और समाज में नीचा देखना पड़ता है। जब आप किसी बात पर गुस्सा हो जाएं तो अपने आपको किसी अन्य काम में व्यस्त कर लें। गुस्से के स्थल से बाहर निकल जाएं। सम्बधित विषयों से हट जाएं। कई तरीके है गुस्से पर नियंत्रण पाने के लिए। जब आप गुस्से पर काबू पा जाएंगे तो आपका व्यक्तित्व चमकने लगेगा।

✻ हर बात को दिल पर लेने की बजाए अनदेखी करना सीखिए। जीवन में ताजापन आ जाएगा।

✻ यह देश हमेशा महान आत्माओं का निवास रहा है।

✻ बुरे साथी के पास बैठने से अकेलापन अच्छा है। और अच्छे साथी के साथ बैठना अकेलेपन से अच्छा है। अच्छी बात जुबान से निकालना खामोशी से बेहतर है और खामोश रहना बुरी बात जुबान से निकालने से बेहतर है।

✻ हर बर्तन से वही रिसता है जो उसके अंदर होता है।

✻ सच पहचाननेवाला कुत्ता उस आदमी से बेहतर है जो इन्साफ को नहीं पहचानता।

✻ शेर के साथ पंजा लड़ाना और तलवार पर मुट्ठी मारना बुद्धिमानी का काम नहीं।

✻ नादान के लिए खामोशी से बेहतर कोई चीज नहीं, पर उसे अगर यह बात मालूम होती तो वह नादान ही क्यों होता।

✻ ईश्वर के नजदीक बेहतरीन दोस्त वो है जो अपने दोस्त का शुभचिंतक हो। हर व्यक्ति सच्चा दोस्त तलाश करता है मगर कभी सच्चा दोस्त बनने की कोशिश नहीं करता। हमेशा सच्चा दोस्त मिलना मुश्किल है लेकिन कम से कम एक आदमी जरूर ऐसा हासिल कर लेना चाहिए जो आपके जजबात को समझता हो।

✻ अच्छे कामों में देर न करो क्योंकि मौत घात में लगी हुई है।

✻ अगर किसी प्रश्न का उत्तर मालूम न हो तो अज्ञानता का इकरार आधा ज्ञान है।

✻ जो व्यक्ति आपसे दूसरों के दोष, निंदा बताता है तो यकीनन मानिये कि दूसरों के सामने भी वो आपकी बुराई करता होगा।

✻ सब्र के साथ इंतजार करना सीखो, मुहब्बत के साथ पूजा करना सीखो, इज्जत के साथ झुकना सीखो, कायदे-नियम का पालन करो। फुर्सत के साथ खेलो। ध्यान से लोगों की बातें सुनो। वस्तुओं के साथ जिंदा रहो। नफे के साथ दुकानदारी करो। घाटे का सौदा कभी नहीं करना चाहिए।

✻ अगर मनुष्य धैर्य धारण करना सीख लें तो बड़ी से बड़ी परेशानियां और दुनिया के इम्तेहान में कामियाब हो सकता है। ऐसा मनुष्य भाग्यशाली है जिसके हाथ में सब्र की डोर है। इस दुनिया में रंज, दु:ख, शोक, परेशानी, खुशी व राहत तथा चोली-दामन का साथ रहा है। हर आदमी को इस दुनिया की जिंदगी में तकलीफ, कष्ट, आराम से पाला पड़ना जरूरी है। बड़े-बड़े दरख्त धूप और साये में ही पलकर बड़े हुए है। कोई भी नेमत और राहत ईश्वर से मिलती है उस समय ईश्वर का अहसान न भूलें। सब्र का फल हमेशा मीठा होता है। इसलिए सब्र का दामन कभी न छोड़ें।

* जो लोग मौज-मस्ती के लिए समय नहीं निकाल पाते वो देर-सबेर बीमारी के शिकार हो जाते है और बीमारी के लिए समय निकाल लेते हैं।

* जब आप कुछ गंवा बैठते हैं तो उसे मिलनेवाली शिक्षा को न गंवाएं।

* जीवन की उम्र लम्बी होने की बजाय गंभीर और महान होनी चाहिए।

* अपनी पत्नी को मित्र बनाकर रखना चाहिए न की उसका मालिक बनकर।

* अपने उद्देश्य में कामयाब होने के लिए आपको अपने लक्ष्य के प्रति एकचित्त निष्ठावान होना चाहिए।

* जब तक हम जान पाते हैं कि जिन्दगी क्या है तब तक आधी जिंदगी गुजर जाती है।

* नम्रता और मीठे वचन ही मनुष्य के वास्तविक आभूषण हैं।

* जनता का अधिकार व कर्त्तव्य है कि न्यायोचित आशंकावाले हरेक मामले में वह लोकसेवकों से सख्ती से हिसाब मांगे, उन्हें बर्खास्त कर दिया जाए, अदालत में उन पर मुकदमा चलाया जाए।

* लोगों को भारत को जागृत करने की इच्छा हो तो अपने अंदर मरने की इच्छा प्रबल होनी चाहिए।

* मूर्खता दुःखदायी है, जवानी भी दुःखदायी है लेकिन इन सबसे ज्यादा दुःखदायी किसी के घर जाकर उससे अहसान लेना है।

* उस व्यक्ति को जीने का कोई अधिकार नहीं जो राष्ट्र और लोकहित के लिए कोई बलिदान करना नहीं चाहता।

* जीवन का रहस्य भोग में नहीं बल्कि अनुभव के द्वारा शिक्षा प्राप्त करने में है।

* दहेज के मांग की शर्त अपनी शिक्षा, संस्कृति और देश को बदनाम करना है और वह स्त्री जाति का भी अपमान करता है।

* अन्याय और अत्याचार करनेवाला उतना दोषी नहीं है जितना उसे सहनेवाला है।

* मनुष्य शक्ति या धन से सामर्थ्यवान नहीं हो सकता। विद्या ही उसे हर काम के लिए समर्थ बनाती है। संसार में ज्ञान के समान और कोई बल नहीं है।

* हम कितने समय तक जिएंगे, हम कहां रहेंगे उसका कोई ठिकाना नहीं, निश्चित नहीं, कहाँ होंगे इसकी भी कोई जानकारी नहीं है। सिर्फ एक ही बात स्थिर है कि हमारा अर्जित पुण्य ही हमारे साथ होगा।

* मुस्कान की कोई कीमत नहीं होती, यह पानेवाले को खुशहाल करती है और देनेवाले का भी कुछ घटता नहीं।

* मनुष्य में शक्ति की कमी नहीं होती, संकल्प की कमी होती है।

* आपको मानवता में विश्वास नहीं खोना चाहिए। मानवता एक सागर की तरह है, यदि सागर की कुछ बूंदे खराब हैं तो पूरा सागर गंदा नहीं हो जाता है।

* सब्र एक ऐसी सवारी है जो अपने सवार को गिरने नहीं देती है न किसी के कदमों में और न किसी की नजरों में।

* छाले पर मक्खन लगाने से एक क्षण के लिए कष्ट कम हो जाता है, किन्तु फिर ताप की वेदना होने लगती है।

* उस काम का करना अच्छा नहीं है, जिसे करके पीछे पछताना पड़े और जिसके फल को रोते हुए भोगना पड़े।

* मिलने पर मित्र का सम्मान करो, पीठ पीछे उसकी प्रशंसा करो और आवश्यकता पड़ने पर उसकी सहायता करो।

* खुशनसीब वो नहीं जिनका नसीब अच्छा है, बल्कि खुशनसीब तो वो हैं जो अपने नसीब पर खुश हैं।

* जब तुम प्रयास करना छोड़ देते हो, तो तुम शिथिल हो जाते हो, विश्रांत हो जाते हो, सौम्य हो जाते हो। विश्रांत

अवस्था में तुम्हारे वातायन, तुम्हारे झरोखे खुल जाते हैं और तुम खुलकर फैल जाते हो। ऐसे में चीजें खुद-ब-खुद साफ और स्पष्ट हो जाती हैं।

* हम उसे देखकर घबराते हैं जो हमसे कम बुद्धि होते हुए भी ज्यादा समझ रखता है।

* बड़े कामों के लिए प्रेरणा की जरूरत होती है।

* लज्जा से बचो, लेकिन महिमा के पीछे मत दौड़ो। महिमा जैसा महंगा कुछ नहीं।

* अगर आप सचमुच खुश रहना चाहते हैं तो आज ही अपनी इच्छाओं, रिश्तों, कर्मों और बेइमानियों के लिए एक सीमा निर्धारित कए लीजिए।

* जीतने के लिए है तो प्रेम, पीने के लिए क्रोध, खाने के लिए गम, देने के लिए दान, दिखाने के लिए दया, लेने के लिए कोई चीज है तो ज्ञान, बोलने के लिए कोई चीज है तो सत्य, छोड़ने के लिए कोई चीज है तो मोह, मन से निकालने की कोई चीज है तो ईर्ष्या, रखनेके लिए कोई चीज है तो किसी की इज्जत। इन सबका पालन करनेवाला ही श्रेष्ठ है।

* बड़ों की सेवा करना, उनकी आज्ञा का पालन करना, सबको सहयोग देना, बच्चों से प्यार करना, सभी संस्कार घर के बड़े बूढ़ों से मिलते है। जिस घर में बड़े बूढ़े नही हो वो घर पूरी तरह से घर ही नहीं होता। घर में बुजुर्गों का होना अत्यंत आवश्यक है। आजकल क्षमतावान सक्रिय बुजुर्ग परिवार के लिए उपयोगी होता है। कम सक्रिय होने पर भी बुजुर्ग की उपयोगिता कम नहीं होती। एक कम सक्रिय बुजुर्ग परिवार की देखभाल तथा आर्थिक उन्नति में सहयोग करता है। बुजुर्ग घर के सभी सदस्योंको भावनात्मक सुरक्षा देकर उन्हें एक कड़ी में पिरोकर एकत्र रखता है। बुजुर्गों से परिवार में अनुशासन बना रहता है जो कि परिवार की सभी सदस्यों के हित में है। बच्चे आज्ञाकारी व बड़ों का आदर करना सीखते है। अक्सर खराब परिस्थितियों में बुजुर्गों के अनुभव काम आते हैं। जहां पति और पत्नी दोनों व्यस्त रहते है वहां बुजुर्गों की उपस्थिति बड़ी सहायक होती है। उनके सहयोग से छोटे बच्चों का पालन-पोषण और भावनात्मक विकास अच्छी तरह से हो जाता है। बुजुर्ग ज्यादा व्यावहारिक होते है। यह सहज ढंग से उनके विकास में सहायक होते है, घर में तनावपूर्ण स्थिति होने पर बुजुर्ग उसे आसानी से सम्भाल लेते है। उनके होने से पड़ोसियों से भी परिवार के अच्छे सम्बन्ध विकसित हो जाते है।

* जैसे बच्चे होते है वैसे ही बड़ों को बन जाना चाहिए। बच्चे कभी रोजी-रोटी का गम नहीं करते। इकट्ठे मिल बांटकर खाते है, लड़ते झगड़ते है तो भी दिल में ईर्ष्या नहीं रखते। लड़ाई के बाद जल्दी सुलह कर लेते है। अपने बड़ों से डरते है, उनका सम्मान करते है। जरा से डर धमकी से रोने लगते है। वर्तमान दुश्मनी को भविष्य उसमें नहीं ले जाते। जबकि बड़े तो ईश्वर से भी नहीं डरते है। ईश्वर की धमकी का भी उनपर कोई असर नहीं होता। मौसम में बदलाव और बारिश की मार, भूकंप यह सब ईश्वर का ही डर है।

* आईना (दर्पण) कभी झूठ नहीं बोलता, किसी को भी गलत नहीं बताता खूबसूरत हो या बदसूरत। दर्पण कितना ही साफ क्यों न हो झूठे लोग उसमें अपनी शक्ल नहीं देख सकते क्योंकि दर्पण में रोशन चीज ही नजर आती है अंधेरा नहीं।

* मेहनत में ही कामयाबी है।

* वक्त एक लहर है जिसको व्यर्थ मत गंवाओ।

* किसी के आगे कुंआ मत खोदो, शायद तुम भी कभी उसमें गिर जाओगे।

* अमीर हो तो गरीबों की इज्जत करना सीखो। परिस्थितिवश तुम भी कभी उस हालात में आ सकते हो।

* एक ज्ञानी की कीमत एक लाख मूर्खों से भी अधिक होती है।

* जो ईश्वर से डरता है उससे सब डरते हैं।

* उस चांदनी की तरह रहो, जो अमीरों के महल पर ही नहीं गरीब की झोपड़ी पर भी बरसती है।

* ऐसा कुछ अच्छा काम करो कि नाम मरकर भी जिंदा रहे।

* शर्म ईमान का आभूषण है।

* व्यर्थ बोलने से मुंह बंद रखकर मौन रहना बेहतर है।

* इन सबका रिश्ता पेट से नहीं दिल से होता है। मां, मजहब, मुल्क और मातृभाषा।

* आप किसी के रास्ते का पत्थर नहीं हटा सकते तो आप स्वयं भी किसी दूसरे के लिए रुकावट मत बनो। मनुष्य का दूसरों के काम आना है न कि दूसरों के रस्ते में अवरोध करना।

* शेर जब चिंघाड़ता है तो अपनी भाषा में कहता है हे ईश्वर, मेरे लिए उन लोगों को शिकार मत बना जो दूसरों की भलाई करते है।

* ईश्वर पर यकीन करनेवाला और सच्चे मन से उसकी भक्ति करनेवाला ही उसका प्यारा भक्त है। जिस मनुष्य का इस दुनिया में नाम है, इज्जत है, दौलत है और जिसे लोग शराफत का पुतला समझते है पर नास्तिक है, ईश्वर को नहीं मानता वो ईश्वर का प्यारा कभी नहीं हो सकता। ईश्वर के पास उस गरीब आदमी की अधिक अहमियत है जो उसपर यकीन रखता है, डरता है भले ही उसका नाम दुनिया में ना हो। भले ही दुनियावाले उसका इज्जत न करते हो अर्थात् दुनिया के खातिर अर्जित किए गए नाम धन, दौलत, शौहरत और इज्जत किसी को भी ईश्वर की निकटता प्रदान नहीं कर सकती। ईश्वर का नाम भजनेवालों के कारण ही दुनिया का अस्तित्व है।

* प्रेम, समर्पण, धीरज, सहयोग जैसी बातों को लेकर जीवन जिया जाएं तो जीवन आराम से चल सकता है। यह बहुत मुश्किल नहीं है। हर जिंदगी एक नयी सुबह लेकर आती है। जीवन को तड़ख भड़क से दूर रखें। मन में किसी प्रकार की उलझन हो तो परस्पर बातचीत सें दूर कहें। चुप्पी साधी हुई कभी कभी गम्भीर गलतफहमियां पैदा कर सकती है। गृहस्थी को जीवन का जंजाल नहीं माने।

* बात चाहे कितनी भी कड़वी हो उपदेश को मान लेना ही अच्छा है। अपना दिल न भी गवारे भाई पर आपत्ति मान लेनी चाहिए। दोस्त का उपहार कितना ही कमतर हो उसे स्वीकार करना चाहिए। गरीब की निमंत्रण में चाहे कष्ट ही हो उसे स्वीकार करना चाहिए। माँ-बाप की आज्ञा चाहे मंजूर न हो तो भी मानना चाहिए।

* कम इच्छावाला व्यक्ति सदा सुखी व इतमीनान से रहता है और लालची व्यक्ति हमेशा परेशान रहता है। महिलाओं के लिए अपने पतियों की तरफ से जो कुछ मिल जाएं उसमें संतोष कर लेना चाहिए। दूसरे महिलाओं की तरह देखादेखी लालच में न फँसे। इस तरह की जीनेवाली महिलाएं बड़ी खुशी से जियेंगी। न स्वयं परेशान होगी न अपने पति को परेशान करेगी।

* महिला का आभूषण उसका शील है जो नारी का पाक दामन का आधार है और नारी की जान है। जिस नारी में शर्म हया होगी उसमें लगनेवाले सभी दोष ढक जाएंगे, सभी बुराइयों से दूर रहकर अच्छे-अच्छे कामों की आभूषणों से सुशोभित हो जायेंगी। शर्म इमान के पेड़ की एक बहुत बड़ी शाखा है।

* सभी के साथ अच्छा बर्ताव करो। इसीमें आपकी मुक्ति है।

* बेटियों की परवरिश करना, उनको शिक्षा दिलाना, भले-बुरे का ज्ञान कराना, ईश्वर में मन लगाना, शैतानी चालों से बचना सिखाना चाहिए ऐसे लोगों से ईश्वर भी प्रसन्न रहता है।

* ईश्वर से कुछ मांगने पर न मिले तो उससे नाराज ना होना क्योंकि ईश्वर वह नहीं देता जो आपको अच्छा लगता है बल्कि वह देता है जो आपके लिए अच्छा होता है।

* शान्त समुद्र में अच्छे नाविक पैदा नहीं होते। शान्त समुद्र में तो नाविकों के बच्चे भी छोटी नाव लेकर समुद्र में मीलों दूर घूम-घामकर घर आ जाते हैं उन्हें केवल चप्पू भर हिलाना होता है। खतरों से उनका कभी पाला पड़ा ही नहीं जब समुद्र उफान पर होता है और लहरें २० फीट ऊंची उठती हैं तब पता लगता है कि गुस्साया समुद्र क्या होता है। ऐसे हालातों का सामना अनुभवी व वीर मल्लाह ही कर सकता है, आम नाविक नहीं। बिना तपे तो सोना भी कुन्दन नहीं बनता बिना गलाये सोने से श्रेष्ठ जेवर नहीं बनते। पत्थर नदियों में हजार बार लुढक कर ही गोलाई धारण करता है। भगवान शंकर बनता है, बिना तराशे ही हीरे का कोई मूल्य नहीं। व्यक्ति या मानव के साथ भी ऐसा ही होता है, जिसके जीवन में बाधाएं व संकट नहीं आये, उसका सही जीवन से सामना नहीं होता, तब तक वह अधूरा ही मानव होता है। बाधाओं व असफलताओं से बड़ी स्कूल आज तक नहीं बनी। बाधाएं मनुष्य को प्रबल आत्मविश्वासी, दृढ़ निश्चयी बनता है। आत्म निर्भर भी मनुष्य बाधाओं का सामना करने पर ही बनता है। सरल जीवन में मनुष्य को सीखने के लिए कुछ नहीं होता है। राम, कृष्ण, बड़े ऋषि, संत पुरुष गुरुकुलों में कठोर अनुशासन का जीवन जीकर ही निखरे हैं। श्रम ही सारी सफलताओं का आधार है। बैठ-बिठाये बिना श्रम किये नाकामी जरूर मिल सकती है। इससे ज्यादा कुछ नहीं। वास्कोडीगामा ने जब अमेरिका की खोज की, तो बरसों समुद्र में घूमता रहा। साथी एक-एक करके साथ छोड़ गये। खाद्य सामग्री नहीं बची तो जहाज में घूमनेवाले चूहों से काम चलाया, तब जाकर कही अमेरिका तट नजर आया। मुहम्मद गजनबी बार बार असफल हुआ और १७ वीं बार सोमनाथ मंदिर से सोना ले जाने में कामयाब रहा। नेपोलियन बोनापार्ट एक ऐसा सेना नायक था, जिसने सेना को सीधे अल्पस पर्वत पर चढ़ने के आदेश दे दिये। स्वयं आगे रहा और सारी सेना को उस पर्वत पर सीधा चढ़ा दिया, तब जाकर इतिहास में नाम कर गया।

* मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन शैतान है।

* अपनी बुराइयों को रोकते रहो, अच्छे काम करते रहो इसी में नेकी है। शैतान हमें अच्छे कामसे हटाकर बुरे काम की ओर प्रवृत्त करता है।

* इस दुनिया में अपना ईमान कायम रखो इसीमें असल कामयाबी है।

* शुक्र और सब्र करनेवालों के साथ ईश्वर है।

* बातचीत में विनम्रता ही दूसरे लोगोंपर असर डाल सकती है।

* अपनी नेकियों का विस्तार करो और बुराइयों की जड़ उखाड़ दो और उधर से अपनी आंखें मोड़ लो।

* धन से अधिक वाणी की सुरक्षा मुश्किल है।

* गरीब लोगों पर एहसास करना चाहिए, क्योंकि स्वयं को गरीब होने में कोई वक्त नहीं लगता।

* आप गुनाह तो हर वक्त करते हो पर ईश्वर से क्षमा याचना हर बार नहीं करते हो।

* पुरुषों के झूठ बोलने की तमाम जिम्मेदारी महिलाओं पर होती है। जब वह इतने सारे सवाल करती है तो पुरुष को झूठ बोलना ही पड़ता है।

* ईश्वर ने इंसान को कमाल का हौसला दिया है। उसे अगले पल का भरोसा भी नहीं मगर वादें बरसों बाद के भी करते रहता है यह सोचकर की उसे यह वादे कौनसे निभाने है।

* किसीका दिल मत तोड़ो क्योंकि आपके सीने में जो दिल है उसे भी कोई दुखा सकता है।

✻ अपनी वाणी पर नियंत्रण रखो क्योंकि लापरवाही से निकल जानेवाली बात वापिस लौटकर नहीं आती।

✻ तरसे हुये लोगों से कभी नफरत मत करो। यह लोग मुहब्बत के काबिल होते है। इनके होठों पर हमेशा मुस्कुराहट रहती है। आप उनकी मुस्कुराहट को खुशी मत समझो वह अपने गम को मुस्कुराहट के पर्दे में छिपाये हुए रहते है। आप उन लोगों से थोड़ी मुहबत से मिलोगे तो आपको अटूट प्रेम देंगे। इतनी निष्ठा और मुहब्बत देंगे कि आपको उनके प्रेमपर फक्र होगा। अगर आप उनसे नफरत करेंगे तो उनका दिल टूट जाएगा। ऐसे मनुष्य को पहचानना भी एक कला है। (मेरा नाम जोकर)

✻ अपनी पत्नी पर ऐसा ऐतबार करो, जिसे आप तमाम उम्र चाहने की कसम खाई हो। उन होठों का ऐतबार करो जिनपर हरपल आपका नाम रहता है। उन आंखों का ऐतबार करो जो हरपल आपको देखने के लिए तरसती है। उन सासोंका ऐतबार करो जिनमें सिर्फ आपकी खुशबू बसती है। उस दिल का ऐतबार करो जो आपके बिना कहीं भी नहीं लगता। उन धड़कनों पर ऐतबार करो जो सिर्फ आपके नाम पर धड़कती है। उस पत्नी पर ऐतबार करो जो सिर्फ आपको अपनी जिंदगी मानती है और जानती है।

✻ सभी को मिलजुलकर काम करना चाहिए और साथ-साथ में तरक्की करना चाहिए। गलाकाट स्पर्धा से कभी किसी को कुछ हासिल नहीं हुआ है। अगर आज आप किसी के लिए मुसीबत खड़ी कर देंगे तो कल वो आपके लिए कर देगा। यदि आप इस स्पर्धा में शामिल होकर चलने में समय गवाएंगे तो अपना काम ठीक से न कर पाएंगे। बेहतर है सिर्फ अपने काम पर दृष्टि रखें। सभी एक-दूसरे से आगे निकलने की सोच रहे है और दौड़ रहे है।

✻ हौसलापस्त लोग जीवन में न कभी आगे बढ़े है न भविष्य में आगे बढ़ पाएंगे। वे दूसरों के लिए भी बोझ ही है। इस प्रवृत्ति पर आस्था रखनेवाले लोगों को नाकाम होना पड़ता है। जीवन में कितनी भी कठिन से कठिन समस्या या उलझनें आ जाएं परन्तु यदि आपका हौसला बुलंद है तो आप उसपर विजय पा सकते है। उस हौसले को आपको उसके अनुकूल ढालना पड़ेगा अर्थात सच्ची लगन और परिश्रम से हर रास्ता मिलेगा। आज मनुष्य से कौनसा ऐसा क्षेत्र जो अछूता बचा है हर क्षेत्र में मानव अपनी धाक जमा रहा है।

✻ मुहब्बत एक अंधेरे जंगल की तरह होती है एक बार उसके अंदर जो चला गया वो फिर बाहर नहीं आने देती। आंखे अंधेरों की इतनी आदी हो चुकी होती है कि रोशनी में भी उन्हें कुछ नहीं देख पाता। वो भी नहीं जो बिलकुल साफ, स्वच्छ, जाहिर और रोशन होता हो। जो चुक तुम्हें खुशी में याद आये तो समझो की तुम्हें उससे मुहब्बत हो गई है। और जो आपको गम में याद आयें तो समझो वो तुमसे मुहब्बत करता है। यादें मुहब्बत करनेवालों से ज्यादा वफादार होती है। मुहब्बत करनेवाले तो छोड़ के चले जाते है, मिट जाते है पर यादें हमेशा के लिए साथ रहती है। मुहब्बत सबसे करो जिसके दिल में तुम्हारे लिए तुमसे मुहब्बत है। जिस दिन आपको आपके दिल में ईश्वर की निकटता आ गयी तो यह समझना कि आप ईश्वर के समीप है।

✻ जो जान-पहचान शीघ्र हो जाए वो अंत में पछतावे का कारण बनती है।

✻ बदसूरत चेहरा हमेशा बदसूरत दिमाग से बेहतर होता है।

✻ अच्छा सवाल पूछना आधा ज्ञान है दूसरों में दिलचस्पी रखकर बातचीत करोगे तो आपको इज्जत प्राप्त होगी।

✻ आशाएं जिंदगी का लंगर है इसका सहारा छोड़ देने से मनुष्यता की कश्ती गहरे पानी में डूब जाती है।

✻ वो लोग कभी गरीब नहीं होते जिनके हौसले और इरादे मजबूत होते है।

✻ जिंदगी हीरे की तरह है जिसको तलाशकर खूबसूरत स्वर्ग बनाना आपका काम है।

✻ वाणी में भी अधिक शक्ति होती है कड़वा बोलनेवाले का तो शहद भी नहीं बिकता और मीठा बोलनेवाले की मिर्ची भी बिक जाती है।

✻ ताकतवर इंसान वह नहीं है जो बहादुर है, बल्कि वह है जो क्रोध के समय खुदपर नियंत्रण रख सके।

✻ मनुष्य को दोस्ती वफादारी के साथ करनी चाहिए। मुहब्बत निष्कपटता के साथ करना चाहिए। नारी को पर्दा शर्म के साथ करना चाहिए। किसी भी चीज का निर्णय न्याय से करना चाहिए। किसी पर एहसान करना हो तो खामोशी के साथ करें। निकटता ईश्वर से रखें। करुणा बच्चों के साथ और अच्छे बातचीत माता-पिता के साथ।

✻ जो ज्ञान मनुष्यों को पशु से मनुष्य बनाता है, भले बुरे का ज्ञान सिखाता है और ईश्वर की पहचान कराता है वो ज्ञान तो लोगों ने सिखा नहीं। लोगों को अपने सामने की चीज नजर आती है पर उन्हें उनकी वास्तविक मंजिल क्या है ये पता नहीं। पुरुषों को ही महिलाओं का रक्षित बनाया है और वे ही आज महिलाओं को गलत निगाहों से देखने लग गये। उन सब साधनों को साफसुथरा करना होगा जो इन्सानी भावनाओं को भड़काकर उसे जानवर बनाते हैं। मनुष्य जब ईश्वर से डरेगा तो उसकी आज्ञा का पालन करेगा पाप से खुद ही दूर हो जायेगा। मनुष्य चाहे जितनी भौतिक उन्नति कर ले पर उसकी यह उन्नति फायदेमंद नहीं हो सकती जब तक मनुष्य मनुष्य नहीं बनता और जानवरों की तरह व्यवहार करता है। जिसका मकसद खाना पीना, शारीरिक सुख मनुष्य ईश्वर की सबसे सुंदर रचना है और एक खूबसूरत मकसद के लिए पैदा किया गया है। जब तक उसे यह बात समझ में नहीं आती। तब तक वे पशु ही है।

✻ ईर्ष्या नेकियों को इस तरह खा लेती है। जैसे दीमक वस्तुओं को और आग लकड़ी को। ईर्ष्या इंसान को अंदर और बाहर से खोकला कर देती है।

✻ लोग अपनी जरूरत का तो ख्याल रखते है पर अपनी काबलियत का नहीं।

✻ शान्ति चाहने के लिए अपने आंख, कान, खुले रखना चाहिए मगर अपनी जुबान बन्द रखो।

✻ तकदीर, नसीब ईश्वर बनाता है पर उसे रोशन या अन्धेरा बनानेका कर्म मनुष्य के हाथों में है।

✻ अच्छी किताबें, अच्छे दोस्त, अच्छे काम में दिलचस्पी लेनी चाहिए। हमेशा क्रोध, धन दौलत और औरत पर काबू रखो। जुल्म, गुरुर बेवफाई से नफरत करो। आलस्य, फिजूलखर्ची, व्यर्थ की बातों को छोड़ दो।

✻ हम किसी की भलाई उसे दौलत देकर नहीं बल्कि उसके दौलत रूपी गुणों की जानकारी लेकर कर सकते है। यह हम तभी कर सकते है जब हमें अपनी योग्यता पता हो तो दूसरों को भी वैसी दृष्टि दे सकते है। अपने आसपास के लोगों की छुपी प्रतिभाओं को पहचाने, उन्हें उजागर करें, उन्हें इस तरह की जानकारी दें, केवल उन्हें ही नहीं इससे हम खुद को भी ऊपर उठाते है।

✻ किसी भी काम को न करने का बहाना नहीं बनाना चाहिए। किया हुआ बहाना आपको कहीं लेकर नहीं जायेगा आप वहीं के वहीं रह जाओगे इसलिए कार्य करना ही बेहतर है।

✻ हम चाहते तो है परिस्थितियां बदले इसके लिए पहले आपको खुद बदलना होगा। काम के दौरान वक्त निकालना पड़ता है। कोई भी चीज अपने आप नहीं सुधरती।

✻ दुनिया में इस तरह रहना पड़ता है जैसे एक मुसाफिर सराय में रहता है। एक अजनबी आदमी रहता है। कारण की यह दुनिया सफर की एक मंजिल है आपका घर नहीं। यह दुनिया उस व्यक्ति का घर है जिसका कोई घर-बार न हो। असली घर अपना वही होता है जिसमें आना और जाना बेफिक्रीसे हो।

* हरेक की बुराई करना और खुद आराम से रहने की उम्मीद रखना सबसे बड़ी गलती है, अपना राज किसीको बताकर उसको छिपाकर रखने की नसीहत देना भी सबसे बड़ी खतरनाक गलती है। लोगों की तकलीफ परेशानी में मदद नहीं करना और उनसे हमदर्दी की उम्मीद रखना भी गलत है। जो काम अपने से नहीं हो और दूसरे से उसकी उम्मीद रखना भी गलत है।

* यहाँ कोई अपना नहीं है यहाँ तक की यह शरीर भी अपना नहीं है। सेवा करने के लिए पूरा संसार अपना है। सबके लिए सुख चाहने से अपने लिये सुख जल्दी मिलता है। अपने लिए सुख लाभ की चाहत हो तो दूसरों का भला करते चलो।

* फकीर के हाथ में धन, चलनी में पानी, श्रावक का मन, संत मुनि के पैर यह चीजें कभी एक जगह टिकती नहीं। लोभ का गड्ढा, पानी का समुद्र, मनुष्य का मन, गांव का श्मशान कभी भरता नहीं। संसार स्वप्न है और सन्यास अंत है।

* निषेध में आकर्षण होता है, मन के लिए कोई भी निषेध निमंत्रण बन जाता है।

* भारत में वैज्ञानिक प्रतिभा पैदा नहीं हो पा रही है। हम विज्ञान नकल से सीख रहे है। हम पश्चिम की नकल कर रहे है। पर नकल से कभी विज्ञान पैदा नहीं होता। पर हम बुनियादी बात भूले बैठे है। हमारे पास वैज्ञानिक चिंतन नहीं है और वैज्ञानिक चिंतन न होने के कारण हमने जगत और जीवन की जो वास्तव सच्चाई है उसे ही जानने से इन्कार कर दिया है।

* पृथ्वी एक अखंड दीप है। फिर इसमें इतने अधिक राष्ट्र क्यूं है। कारण की इसमें बहुत से लोगों की अहंकार की दौड़ पूरी हो रही है। यह धरती अतिरिक्त आबादी के नीचे दबी जा रही है। यदि एक ही विश्व शासन हो और राष्ट्र के टुकड़े न हो तो व्यक्ति बिना मूढ़तापूर्ण शर्तों के इधर से उधर जाने की स्वतंत्रता रखेगा और सभी समस्याएं सरलता से हल हो सकती है।

* गाँव का शहर में परिवर्तन होना बहुत बड़ी घटना है। केवल ऊंचे-ऊंचे मकान सड़कों का चौड़ा होना उसका विस्तार ही शहर का बदलना नहीं होता है तवायफों और दलालों की बढ़ती मांग से जरुर कुछ लगने लगता है। मगर असली बदलाव तो ये है कि सीमेंट रोड से भी कठोर हमारे पड़ोसी का दिल बन जाये या मय्यत की अर्थी में केवल नजदीकी रिश्तेदारी हो और बेमन से शामिल होवें इन सब संवेदनाओं के कम होने से मालूम पड़ता है कि यह कोई बड़ा शहर आया है। जब हमें घरों से ज्यादा लोग घर के बाहर सोते हुए दिखें, शहर में वृद्धाश्रम या भिखारियों की संख्या बढ़ जाये और गुंडे-लफंगे मवालियों की हिम्मत बढ़ जाये, तो समझ लेना चाहिए कि हमारा शहर बदल गया है और जब मनुष्य के व्यवहार में क्रूरता आ जाये और जब मानवतावादी संस्थाएं खंडहर बनते दिखें और जब शहर कभी सोए ही नहीं, तो समझ लेना चाहिए कि अब हमारा शहर महानगर में बदल गया।

* दुनिया का एक सीधा-सा नियम है। यहां इंसान को कुछ मिल सकता है। जोर लगाओ तो कुछ-कुछ भी मिल सकता है। किस्मत साथ दे तो बहुत-कुछ भी मिल सकता है। लेकिन सब-कुछ कभी भी और किसी को नहीं मिलता। इसलिए सब कुछ पाने और सब कुछ होने के पीछे पागल मत बनो। जो तुम्हारे पास है उसका आनंद लो, जो पड़ोसी के पास है उसे देखकर दु:खी मत होओ। दु:खी होने से आखिर पड़ोसी तुम्हें कुछ दे तो नहीं देगा।

* लेना ही लेना लोभ है। देना ही देना त्याग है। लेना भी देना भी सहयोग है। लेना ही लेना- पशु धर्म है। लेना देना- मनुष्य धर्म देना ही देना- यह संत धर्म है। दुनिया का नियम है जो लुटाओगे वही लौटकर आयेगा। जो ठगता है, वह खुद भी ठगा जाता है। जो देता है, वही पाता है। मांगने पर देना अच्छा है लेकिन जरूरत समझकर बिना मांगे देना और भी अच्छा है। जरूरत पाप नहीं है, जरूरत से ज्यादा रखना पाप है। गंजे का गंजापन तो जा सकता है लेकिन परिग्रह से मनुष्य का मन तृप्त नहीं हो सकता। ठगाने से ही ठाकुर कहलावोगे।

* स्वर्ग-नरक परमात्मा के हाथ में नहीं हैं आपके स्वयं के हाथ में हैं। हर समय अपने साथ स्वर्ग-नरक लेकर घूम रहे

हो। जब आप किसी से सहयोग करते हो तो स्वर्ग में होते हो। जब किसी की निंदा करते हो तो नरक में होते हो। क्रोध में जल रहे हो तो नरक में हो। साधु याचना और आलोचना से दूर रहता है। उसका स्वर्ग यही है। मन शांत है और श्मशान में भी बैठे हैं तो आप स्वर्ग में हैं। मन में उथल-पुथल है और आप मंदिर में भी बैठे हैं तो भी नरक ही भोग रहे हो।

❊ दिगम्बर मुनि के मन में कोई खोट नहीं है, इसलिए उसके तन पर लंगोट भी नहीं है। वस्त्र तो विकारों को ढंकने के लिए होते हैं। जो विकारों से परे है ऐसे शिशु और मुनि को वस्त्रों की क्या जरूरत है? दरअसल इस कलियुग में दिगम्बर-मुनि होना आश्चर्यों में आश्चर्य है जो समाज की नग्नता को ढंकने के लिए अपने तन के वस्त्र तक उतार फेंकता है वही होता है दिगम्बर जैन मुनि।

❊ दीनता, दरिद्रता भारत की समस्याएं, सब मिट सकती हैं। सिर्फ भारत का उन्हें मिटाने की सम्यक दृष्टि देने की जरूरत है। भारत की समस्याएं हमारी अपनी बनायी हुए समस्याएं हैं, इसलिए मिटाना आसान है। आज दुनिया में इतनी यांत्रिक प्रगति हुई है कि अब भारत को गरीब रहने की कोई जरूरत नहीं है। अगर हम गरीब हैं तो शायद हम रहना चाहते हैं इसलिए गरीब हैं। हमारे सोचने-समझने के ढंग मूढ़तापूर्ण हैं, इसलिए गरीब हैं। हमारे पास सुन्दरतम भूमि है, सुन्दरतम आकाश है। हमारे पास प्रतिभाओं की भी कमी नहीं, लेकिन हम प्रतिभा का सम्मान भूल गये हैं। हमने जैसी परिस्थितियां है उसको स्वीकार कर लिया है उसे हम बदलना नहीं चाहते।

❊ जीवन में जो महत्व श्वास का है आराधना में वही महत्व विश्वास का है। दुनिया चरित्र विश्वास पर टिकी है। श्रद्धा और विश्वास ही जीवन की नींव है, चरित्र की रीढ़ है। श्रद्धा ही मनुष्य का सृजन करती है और उसे आत्मकल्याण के पथ पर अग्रसर करती है। कंकर को शंकर तथा नर को नारायण बनाती है। वही परमात्मा की छवि को निहार सकता है।

परमात्मा दुनिया से जा सकता है लेकिन भक्तों के दिलों से नहीं। हृदय ही श्रद्धा का स्थान है। श्रद्धा भक्ति के साथ सच्चरित्र के पैरों पर चलकर ही उस मंजिल पर पाया जा सकता है। जिसके आगे और कोई मंजिल नहीं होती है। श्रद्धा बड़ी चीज होती है। अगर दिल में सच्ची श्रद्धा व लगन हो तो कठिन से कठिन साधना और सिद्धि भी सुलभ हो जाती है।

❊ संध्या के सौंदर्य को वे ही जान पाएंगे जिन्होंने प्रभात का सौंदर्य भी जाना है और भर-दोपहरी का आनंद भी। जो पल-पल घड़ी-घड़ी उसके नृत्य को पहचानते चले, वे संध्या में उसका महारास देख सकेंगे। लेकिन जिन्होंने पूरा दिन ही सोये-सोये बिता दिया, संध्या भी उनकी व्यर्थ हो जाएगी। अधिक लोगों की जीवन की यात्रा तो व्यर्थ है ही, मृत्यु की मंजिल भी व्यर्थ हो जाती है। अधिकांश लोग मृत्यु से डरे हुए होते है। लोग सोचते है अभी तो जीवन जिया ही नहीं कहीं मौत न आ जाएं। अभी तो फल पका ही नहीं कहीं डाल से गिर न जाए। अभी तो वृक्ष फूला ही नहीं कभी सूख न जाए। अभी वसंत तो आया ही नहीं और यह पतझड़ आने लगा और ये पत्ते सूखने लगे और झरने लगे। कल का भरोसा नहीं है। मनुष्य सोचता है मृत्यु अपने से कल छीन लेगी और क्या छीनेगी जो आज जिया है पर मृत्यु आज नहीं छिन सकती मौत सिर्फ भविष्य छीन सकती है वर्तमान नहीं। भविष्य तो है ही नहीं और वर्तमान मृत्यु छिन नहीं सकती इसलिए वर्तमान में जीने का आनंद लो।

❊ नम्रता के कारण मनुष्य संसार में प्रिय बन जाता है। चूंकि प्रतिष्ठा के भव्य भवन का निर्माण विनम्रता की बुनियाद पर ही निर्भर हे। जीवन के गगन में विनम्रता का अकेला सूरज ही अपनी अनगिनत किरणों से समस्त गुणों को प्रसारित करने में समक्ष है। विनम्रता के गुण में सबको अपना बना लेने का राज छिपा है क्योंकि विनम्रता सर्वत्र प्रेम और आदर पाती है। भय, प्रलोभन और स्वार्थ रहित कोमल व्यवहार ही विनम्रता है। अक्सर ऐसा दिखाई देता है कि जीवन की देहरी पर प्रतिष्ठा का आगमन होते ही प्राय: लोगों की निगाहें बदल जाती है उनके पैर जमीन पर नहीं टिकते हैं। इतना ही नहीं उनका रंग रूप और चाल ढाल बदल

जाने से वे किसी को पहचानना नहीं चाहते। नम्रता विहीन प्रतिष्ठा विनाशकारी फ्लैग के समान है वह जिसे स्पर्श करती है उसे भ्रष्ट कर देती है। जिसके पास शोहरत की दौलत है वे यदि पलकें झुकाकर चलते हैं जो दुनिया उन्हें पलकों पर उठा लेती है और उनके स्वागत सम्मान में नयन पट बिछा देती है। जो जितना झुकता है संसार उसे उतना ही उपर उठा देता है।

* आनेवाले पल के बारे में किस को पता नहीं पर हर कोई भविष्य के बारे में जानने के लिए उतावले, आतुर और व्यग्र रहते हैं। इस उत्सुकता और ललक को भुनाने के लिए ज्योतिषियों और भाग्य बांचनेवालों की अच्छी खासी संख्या समाज में मौजूद है। जिंदगी की रफ्तार तय है। उस रफ्तार और उसके मिजाज को भुनाने चलेंगे तो गड़बड़ी होगी ही। उतार-चढ़ाव एक निश्चित क्रम से आते हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि विज्ञान इन्हें ग्रह नक्षत्रों के बजाय बायोरिद्म का नाम दे रहा है यानी जिंदगी की लय-ताल। इन नतीजों के अनुसार शरीर की सामान्य गतिविधियां भी लयताल के अनुसार एक निश्चित अन्तराल के बाद अपने आपको दोहराती हैं। ग्रहनक्षत्रों के वार्षिक चक्र से मनुष्य स्वाभाविक ही संचालित होता है।

* दुनिया में पंडित और मौलवियों ने जितने उपद्रव किए हैं, बड़े से बड़े पापियों ने नहीं किए हैं और न करवाएं हैं। यह कौन लड़ाता है मस्जिद मंदिर को? यह कौन लड़ाता है हिंदू और जैन को, मुसलमान और ईसाई को, मुसलमान और हिंदू को? कौन लड़ाता है? पंडित, मौलवी। ये सब उनके मस्तिष्क से निकले हुए फितूर हैं। शैतान ने बहुत दिन पहले ही पंडित-मौलवियों को राजी कर लिया है और उसने बड़ी होशियारी की, अपने पंडितों को भगवान का पुजारी बना दिया है। इसलिए मामला बहुत आसानी से चल रहा है शैतान का, क्योंकि पहचान में ही नहीं आता। मंदिर तो भगवान का है, पुजारी शैतान के हैं और जब तक दुनिया पुजारियों से मुक्त नहीं होगी, दुनिया में धर्म नहीं हो सकता। क्योंकि पुजारी धर्म की हत्या करते रहे हैं। वे शास्त्र के समर्थक हैं, सत्य के वे समर्थक नहीं हैं। क्योंकि सत्य आएगा तो न मंदिर टिक सकता है, न मस्जिद, न यह पूजा, न यह धंधा, न यह सब पाखंड, यह कुछ भी नहीं टिक सकता, दुनिया बहुत और तरह की होगी। इसलिए वे कहेंगे कि शास्त्र में सब कुछ हैं, शास्त्र ही सत्य है और फिर इसको प्रचारित करते हैं।

* मंदिरों की कोई कमी नहीं है, मस्जिद की कोई कमी नहीं है, गुरुद्वारे बहुत हैं। लेकिन गुरुद्वारों, मस्जिदों और मंदिरों की भाषा और आज के आदमी के बीच कोई संबंध नहीं रह गया है। ऐसा नहीं कि मंदिर जो बोलते हैं वह गलत बोलते हैं, और ऐसा भी नहीं कि मस्जिद में जो कहा जाता है वह गलत है ऐसा भी नहीं कि गुरुद्वारा जो संदेश लिए बैठा है वह गलत है। वे संदेश सब ठीक है, लेकिन भाषा उनकी इतनी पुरानी पड़ गई है कि उससे आज के आदमी का कोई संबंध नहीं है। आज कोई संबंध हो भी नहीं सकता। आज के आदमी की सारी शिक्षा की व्यवस्था वैज्ञानिक है और मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारों के सोचने के सारे ढंग पूर्व-वैज्ञानिक हैं, उनसे आज के आदमी का कहीं भी कोई तालमेल नहीं हो पाता।

* अब बेटियां बेटों से कम नहीं हैं। मां-बाप के लिए तो बेटियाँ वरदान हैं। आजकल बेटों से ज्यादा मां-बाप का ख्याल बेटियां रखती हैं। बेटी ससुराल में रहकर भी मां-बाप का ख्याल रखती है। लेकिन बेटे घर में रहकर भी मां-बाप का ख्याल नहीं रखते। ससुराल में बेटी को कोई भला-बुरा कह दे तो चुपचाप सह लेगी लेकिन मां-बाप को कोई कुछ कह दे तो वह झांसी की रानी की तरह सामने आ जाती है और इधर बेटों के सामने ही बहू मां-बाप को गालियां देती रहे तो भी निकम्मे बेटे की चुप्पी नहीं टूटती। बेटियां ससुराल जाकर दूसरे की दुनिया आबाद करती हैं मगर मां-बाप की दुनिया को नहीं भूलती और बेटे?

* आज स्तर बड़ी चीज है। पहले लोग अपनी प्रतिष्ठा दिखाने के लिए दरवाजे पर हाथी पालते थे। फिर घोड़े पालने लगे। आज-कल कुत्ते पाल रहे हैं और कल गधे पालेंगे। कुत्ता आज स्तर-प्रतीक बन गया है। पहले घर में कोई कुत्ता न घुस आये इसके लिए घर में कोई आदमी रख लेते थे। आज घर में कोई आदमी न घुस आये इसके लिए एक कुत्ता रख लेते

हैं। लोग कहते हैं- कुत्ते ने हमेशा इंसान का साथ दिया है। जब पांडव स्वर्ग की ओर चले तो उनके साथ एक कुत्ता भी गया था। काश दुनिया के सभी कुत्ते उनके साथ चले गये होते तो आज घर-घर में गाय की पूजा हो रही होती।

✻ ईश्वर ने हमें दो कान दिए हैं और दो आंखें, लेकिन जीभ केवल एक दी है। इसलिए हम बहुत अधिक सुनें और बहुत अधिक देखें, लेकिन बोलें कम, बहुत कम।

✻ जब किसी मनुष्य का युद्ध अपने आप के साथ शुरू होता है, तब उसका कुछ मूल्य होता है।

✻ अगर अपने जीवन से प्रेम है? तो अपना समय बेकार मत गंवाओ। क्योंकि जीवन उसी से बना है।

✻ जब ज्ञान इतना घमंडी हो जाए कि रो भी न सके, इतना गंभीर बन जाए कि हंस न सके और इतना आत्मकेंद्रित बन जाए कि अपने सिवा और किसी की चिंता न करे, तो वह अज्ञान से भी ज्यादा खतरनाक होता है।

✻ व्यापार में नुकसान हो जाये तो जी मत जलाना। सोचना- अन्याय का धन घर में आया होगा, अच्छा हुआ चला गया। घर-गृहस्थी में कुछ ऊंच-नीच हो जाय, बिल्ली दूध पी जाये, कुत्ता रोटी खा जाये, कोई टूट-फूट हो जाये तो जी मत छोटा करना। सोचना-जिसके भाग्य का था ले गया। कोई कुछ कड़वा कह दे तो बुरा मत मानना। सोचना- बड़े हैं, अपना समझकर ही तो कह रहे हैं। कोई बुराई कर दे तो दिल को छोटा न करना। सोचना शब्द कहाँ चिपकते हैं। वे तो आकाश में उड़ जाते हैं सामनेवाला गुस्से में हो तो आप चुप रहिए। वह थोड़ी देर फूँ-फाँ करके खुद ही ढीला पड़ जायेगा।

✻ लोग जीवित सद्गुरु से भागते हैं और जब सद्गुरु मर जाता है तब उसकी पूजा करते हैं। अजीब रिवाज है। अजीब ढंग है। ईसामसीह जब थे तो सूली लगाई और जब मर गए तो सारी दुनिया ईसाई हो जाती है। मोहम्मद जब थे तो उन्हें एक गांव में शांति से नहीं बैठने दिया। मोहम्मद की जिंदगी एक गांव से दूसरे गांव में भागने में ही बीती और जब मोहम्मद मर जाते हैं, तो लाखों मस्जिदें बनायी। करोड़ों लोग मोहम्मद के चरणों में सिर झुकाते हैं। करोड़ों लोगों के लिए मोहम्मद हृदय की गहरी से गहरी धुन हो जाते हैं, यह सब अभी भी कर रहे हो, और जब तक यह करते रहोगे, तब तक धर्म से अपरिचित रहोगे। जिसको धर्म समझते हो, वह धर्म नहीं है। वह तो धर्म के ऊपर जम गई राख है। अंगारा तो दब गया बहुत। राख सुविधापूर्ण है, राख जलाती नहीं; छुओगे तो फफोले भी नहीं उठते। इसीलिए तो राख को विभूति मानने लगे हो, राख के ही टीके लगा रहे हो, राख ही आत्मा पर भी जम गई है। राख से बचो, अंगारा तलाशो, विभूति अगर कहीं है, तो अंगार में होगी। राख में नहीं होगी?

✻ भारत एक ठहरा हुआ समाज है और ठहरा हुआ समाज समृद्ध नहीं हो सकता। क्योंकि ठहरा हुआ समाज किसी भी आयाम में, किसी भी दिशा में संपत्ति को, ज्ञान को प्राप्त करने का कोई प्रयास नहीं करता। ठहरा हुआ समाज जो भी उसके पास है, उसी में ही तृप्त हो जाता है। अगर तृप्त न हो, तो ठहर नहीं सकता। उसकी आधारशिला है, संतोष कर लो। संतुष्ट ठहर जाता है, असंतुष्ट गति करता है। अगर भारत को आगे गति करनी है तो उसको अपने पुराने संतोष के मानसिक ढांचे को तोड़ देना पड़ेगा। एक असंतोष चाहिए ही। जो है, उससे तृप्त होना गलत है। क्योंकि जो हो सकता है, अगर हम तृप्त हैं, तो वह कभी नहीं होगा। जो है उसके अतिरिक्त होना जरूरी है ताकि जो हो सके, उस तरफ गति होती रहे, हम आगे बढ़ते रहें। भारत तृप्त है। गरीबी है तो उससे तृप्त है। गुलामी आए तो उससे तृप्त है।

✻ क्षमा मांगना आजकल बड़ा मुश्किल है। क्षमा के लिए झुकना पड़ता है। यह झुकना कुछ लोगों के लिए बेईज्जत होने जैसा है। मनुष्यता का तकाजा है यदि आपसे गलती हो गयी है तो उसका आपको अहसास होना चाहिए और जिस किसीके साथ ज्यादती हो गई है तो उसे स्वीकार करके क्षमा मांग लेनी चाहिए। अक्सर हम अपनी गलती मानने में आनाकानी करते है जो हमारी मानसिकता पर बुरा असर डालती है।

❋ जब समझ कम होती है तो ज्ञान भी पूरा नहीं होता और आदमी का आचार भी सही नहीं होता। आचार सही नहीं होने से उसका व्यवहार भी सही और अच्छा नहीं होता।

❋ आज की जीवनशैली में रिश्तों में तनाव आना एक साधारण बात है। कलह हर रिश्ते में होती है। अपने रिश्ते को बचाने का प्रयास हमेशा करना चाहिए। किसी भी रिश्ते की नींव विश्वास पर टिकी रहती है। आपको अपने रिश्तेदार पर विश्वास करना चाहिए। कोई तीसरा व्यक्ति आपके रिश्ते के बीच दरार नहीं डाल सकता। किसी दूसरे के भड़काने पर बेवजह अपने रिश्तेदारों पर शक नहीं करे बात की तय तक जाने की कोशिश करें। कई बार दूरियां भी रिश्तों में दरार पैदा कर देती है। आप अपने रिश्तेदारों की भावनाओं को समझे। एक-दूसरे का सम्मान करना सीखे। इससे आपके रिश्तोंमें गहराई बढ़ेगी। एक-दूसरे की कार्यशैली को न समझना और उसको महत्ता न देना आपके रिश्तोंमें खटाई पड़ जाती है। किसी भी रिश्ते को बचाने के लिए आपसी सम्वाद जरूरी है इसे कभी नहीं छोड़ना चाहिए। एक-दूसरे के सुख दुख में पूरे भागीदार हो इससे आप अपने बीच की कड़वाहट को दूर कर सकते है।

❋ जिंदगी का अनुभव है नशा आपकी जागरूकता को कम कर देता है। अगर आप पूरी तरह जागरूक हो जाए तो आपका अस्तित्व इस जगत में हाड़-मांस के शरीर के रूप में न रहेगा आप अपने भाग्य के स्वामी बनकर जी सकते है। अगर आप भाग्य के स्वामी बनना चाहते है तो आपको जागरूकता अधिक बढ़ानी होगी, आपका तनाव, उदासी, घबराहट और शराब यह सभी चीजें जागरूकता कम करती है।

❋ सुखी जिंदगी और अर्थपूर्ण जीवन यह दो बहुत ही आयाम है। खुश होने का मतलब है कि इच्छाओं का पूरा होना जो एक अस्थायी सुख है। जो जिंदगी में अनचाही घटनाओं से खाली हो सकता है। ये अतीत का आंकलन है और वर्तमान के साये में पलते है। अर्थपूर्ण जिंदगी एक जटिल सोच है और लम्बे समय की चीज है। यह अतीत और भविष्य को जोड़ती है। ऐसी जिंदगियों में उद्देश्य की अहम भूमिका होती है। जिंदगी का अर्थपूर्ण होना एक स्थायी भाव है। दोस्त और परिवार जिंदगी को खुश और अर्थपूर्ण बनाने में अहम् योगदान देते है। किसी को मदद करने से जीवन में अर्थपूर्णता आती है लेकिन खुशी देने में उसकी भूमिका बहुत सीमित हो जाती है। कोई जीवन में जितनी ज्यादा बहस करता है और भरोसा करता है उसकी जिंदगी उतनी अर्थपूर्ण तो होती है पर खुशी उससे उतनी ही दूर चली जाती है।

❋ किसी के पास यह सोचने और बताने का समय नहीं है कि उसका लक्ष्य क्या है। दुनिया तेजी से आगे दौड़ रही है इसलिए हमें भी दौड़ना है। लोग जल्दी में है। वे सोचते है अगर वो धीमे पड़ गए तो आगे बढ़ने की दौड़ में पीछे न रह जाएं। जीवन ने हर व्यक्ति को अस्त-व्यस्त बना दिया है। न सोने का समय है, न जागने का और न खाने का। हमें अस्त-व्यस्त हमारी सोच ही करती है। व्यस्तता किसी के लिए बुरी नहीं होती खाली दिमाग तो शैतान का घर है। पर अति व्यस्तता भी हानिकारक है। उतावला पन व अधीरता इस युग की महामारी है जो व्यक्ति को अतिव्यस्तता में रखती है। हर व्यक्ति अपना काम जल्दी जल्दी निपटाना चाहता है चाहे उसके लिए रिश्वत देनी पड़े या उसके लिए गलत राह पर चलना पड़े। वह प्रतीक्षा करना नहीं जानता। जहां इतनी अधीरता होगी वहाँ आदमी निश्चित रूप से अस्त-व्यस्त हो जायेगा। आज मनुष्य जितना बेचैन व अधीर है हर समय दौड़-धूप और हर काम में उतावला पन ने उसके मन-मस्तिष्क को खोखला बना दिया है। वह कठिन और प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने से डरता है। दुनिया तेज रफ्तार की दीवानी है। इस जीवनशैली ने लोगों का चैन, आराम छीन लिया है जिससे अनेक रोगों का जन्म हुआ। ऐसे लोग स्वयं तो तनावग्रस्त रहते है दूसरों के लिए भी समस्या पैदा कर देते हैं। अस्त-व्यस्त जीवनशैली को व्यवस्थित और संतुलित करने के लिए जीवन

में प्रवृत्ति के साथ निवृत्ति की आदत डालें हर समय काम नहीं अनुशासन का पालन करें। जिससे जीवनशैली व्यवस्थित होगी तथा जीवन को नई दिशा व नया आलोक मिलेगा। हमारी जिंदगी का कोई भी लम्हा मामूली नहीं है। स्वस्थ और संतुलित जीवनशैली के लिए दोनों के बीच संतुलन होगा जरूरी है।

❋ इस संसार में वही मनुष्य अपने कार्य में सफल होते हैं जो अपनी परिस्थितियों को अनुकूल बना लेते हैं। यदि वे ऐसा नहीं कर पाते तो अपने अनुकूल परिस्थितियां पैदा कर लेते हैं।

❋ दूसरे की मूर्खता पर किए गए व्यंग्य पर हम हंसते हैं, लेकिन खुद पर किए गए व्यंग्य पर हम रोना भूल जाते हैं। इंसान का स्वभाव ही ऐसा होता है कि उसे अपनी मूर्खता का भान नहीं होता।

❋ अविश्वासी के उत्तम विचार से विश्वासी की भूल अच्छी है।

❋ विश्वासघात प्रारंभ में बहुत सावधान होता है किंतु अंत में स्वयं को धोखा देता है।

❋ जिंदगी में कभी भी सिर्फ अच्छा या सिर्फ बुरा नहीं होता। जिंदगी एक संतुलन बनाएं रखती है जितना अच्छा होगा उतना बुरा भी। जीवन में जितनी सुंदरता खो देंगे उतने आप सकारात्मक ऊर्जा से भरते जाएंगे।

❋ हमारी नेकियां ही हमारे कीमती वस्त्र है। ऊपरवाले के यहां तो कोई वस्त्रालय है नहीं।

❋ यदि सब लोग अपनी आवश्यकतानुसार संग्रह करें तो किसीको तंगी ही नहीं रहेगी और सब लोग संतोष से रहेंगे।

❋ यह सच है कि दु:ख दर्द देता है पर कभी-कभी सुख भी तकलीफ देह होता है। पुरुष बली नहीं होता समय बड़ा बलवान होता है।

❋ हम रोज दर्पण के सामने खड़े होते है और हमारा खुद से कभी सामना नहीं होता।

❋ लोगों को लेकर अपनी राय बना लेते है तो हमारे पास उनसे मुहब्बत करने का वक्त नहीं होगा।

❋ हमारा समय सीमित है इसे किसी और की जिंदगी जीकर व्यर्थ मत करें। बेकार की सोच में नहीं उलझना चाहिए। अपनी जिंदगी को दूसरे के हिसाब से नहीं चलाएं। औरों के विचारों के शोर में अपने अंदर की आवाज को अनसुना नहीं करें।

❋ इस दुनिया में दोस्ती करना आसान है पर उसे निभाना मुश्किल है। प्यार करना आसान है पर प्यार पाना मुश्किल है। किसी का भरोसा तोड़ना आसान है पर निभाना मुश्किल है। किसी चीज को याद करना आसान है पर उसे भूल पाना मुश्किल है। झूठ बोलना आसान है, पर सच कहना मुश्किल है। किसी को रुलाना आसान है पर किसीको हंसाना मुश्किल है।

❋ आदमी अपनी किस्मत खुद लिखता है अगर यह सच है तो किस्मत में दर्द कौन लिखता है।

❋ हमने कल के लिए क्या और कैसी योजना बनायी रखी है इसमें हमारा भविष्य नहीं है। भविष्य तो हमारा यह है कि आज के दिन हमने अपना क्या सर्वश्रेष्ठ कर दिखाया जो आज किया जाता है वही आगामी कल का निर्माण करता है।

❋ अगर तुम किसीका बुरा करने जाओगे सम्भव है इसके पहले आपका बुरा हो जायेगा। किसी दूसरे का हंसी मजाक करने जाओ तुम स्वयं ही मजाक का विषय बन जाओगे।

❋ लक्ष्यहीन जीवन की जिंदगी तकलीफ देह है। ऐसे जीवन की बदकिस्मती यह है कि उसका लक्ष्य हमेशा बदलता रहता है। जिंदगी की पहचान उसके मकसद से होती है। लोगों के बारे में राय उनकी उपलब्धियों से नहीं बनाती बल्कि उसके जीवन के झुकाव से है। हम उसे इस बात से नहीं आंकते कि हम क्या है। जिंदगी में जो किसी नेक और ऊंचे मकसद को अपनी नेक बनाता है वही नेक और ऊंचा है। साधारण जीवन और ऊपर उठे जीवन में फर्क है। जिस मनुष्य में शुरू से लेकर आखिर तक बुलंद लक्ष्य की प्रेरणा रहती है वह चाहे कितना ही नाकाम क्यों न हुआ हो चाहे उसमें

प्राकृतिक प्रतिभाओं की कितनी कमी क्यों न हो पर वही सबसे बुलन्द जीवन जीता है।

* सच्चे आध्यात्मिक व्यक्ति के हृदय में प्रेम, ईमानदारी, सत्यता, उदारता, दया, श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के भाव उत्पन्न होते हैं। ये सब आत्मा के स्वाभाविक गुण हैं। ये ही मनुष्य की स्थाई शक्तियां हैं। इनको प्राप्त करने का उस समय तक प्रयत्न करते रहना चाहिए, जब तक कि समस्त जीवन पूरी तरह इनमें रंग न जाए, जिस आदमी में ये सब गुण मौजूद हैं, वास्तव में वही आध्यात्मिक व्यक्ति है। इसी सत्य के आधार पर वह परमात्मा से मिल सकता है। ईश्वर भक्ति का मार्ग किसी धर्म विशेष या किसी कर्मकांड में सीमित नहीं है, यह तो आत्मा की गंभीरता में विद्यमान है।

केवल ईश्वर ईश्वर रटने वाले धर्मात्मा नहीं होते, वरन् वे ही व्यक्ति धर्मात्मा होते हैं, जो परमात्मा के आदेशों पर अथवा उनके बताए हुए मार्ग पर चलते हैं। धन्य हैं वे आदमी जो परमात्मा का उपदेश सुनते हैं और उसके अनुसार आचरण करते हैं। जो आत्मा इस सुंदर जीवन में पदार्पण कर चुकी, उसके लिए अंतर्ज्ञान का दरवाजा खुला हुआ है। शुद्ध हृदयवाले आदमी धन्य हैं, क्योंकि वे ही परमात्मा का दर्शन करेंगे। इस दर्शन में जो आनंद है, उसका वर्णन कौन कर सकता है।

* संयुक्त परिवार- भारतीय समाज में संयुक्त परिवार की परम्परा रही है। पहले पूरा परिवार हिल-मिलकर रहता था। परंतु आज के इस बाजारवाद के युग में ये परिवार टूट रहे हैं। आज का युवा वर्ग अपने ढंग से जीना चाहता है। घर के बड़े-बुजुर्गों की सलाह को पुराना और रूढ़िवादी समझता है। आपसी प्रेम प्यार हमारे रिश्तों को मजबूत बनाता है। रिश्तों की अवहेलना करना ही संयुक्त परिवार के टूटने का प्रमुख कारण है, घर परिवार के सभी सदस्यों को माता-पिता, भाई-बहन ननद। भाभी जैसे रिश्तों को महत्व दिया जाना चाहिए। घर में कोई भी कार्य करते समय छोटे-बड़े सभी की राय ली जाये।

* आज का आदमी- यूं तो जिंदगी की भागदौड़ का अहम हिस्सा है आदमी। जीना चाहता है आदमी। पर जी नहीं पाता ढंग से आदमी। आदमी और जिंदगी का मेल है बेजोड़। मगर कदम-कदम पर टूटता जा रहा आदमी। जिंदगी उसकी अपनी। नहीं फुर्सत के पल जुटा पाता आदमी। इतना थक चुका है आदमी। पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण में बंट गया आदमी। अब आदमी की पहचान नहीं आदमी। आदमी से मेलजोल बढ़ाता पर कितना निभाता है आदमी। बहुत कुछ करना चाहता है आदमी। करता भी है कुछ-कुछ। फिर भी अधूरा कहलाता है आदमी। ख्वाहिशों से सराबोर है भावी इच्छुक आदमी। कभी तृप्त-संतुष्ट नहीं हो पाता। लालसा से भरा आदमी। किसके लिए जुटाता आदमी? क्या-क्या हजम कर जाता आदमी। ब्याज, रिश्वत, धक्का, धोखा खा जाता जीते जी आदमी। फिर भी नहीं संभल पाता आदमी। नहीं समझ पाता नासमझ आदमी। मुड़-मुड़ जोखिम उठाता है आदमी। जुएं के दांव में गर्क होता आदमी। कौड़ी के भाव गिर जाता आदमी। अपने मतलब तक सीमित आदमी। तमाशे में खोया आदमी। किसके क्या काम आता आदमी। जिंदगी ने जाल बिछाया। जिसमें उलझा-जकड़ा आदमी। तुच्छ सोच के दायरे से। कब उबर पा रहा कुंठित आदमी। स्वयं दूषित हो गया आदमी। दोष जिंदगी पर मढ़ रहा आदमी। उड़ नहीं पाता फिर भी लड़ता। जीत नहीं पाता पराजित आदमी। वहशी, दहशी, जुआरी, बलात्कारी, दुराचारी। यह कैसा कहलाता आदमी। पूछेगा जब ईश्वर आदमी से। कितना जनम संवार आया आदमी? क्या मुंह दिखा पाएगा आदमी।

* मुंह से अच्छी बात बोलो अच्छी बात के सिवा कुछ मत कहो।

* अच्छे लोगों को जन्नत की सौगात मिलती है और बुरे लोग जहान्नुम की आग में जलेंगे इसलिए नेक काम करना चाहिए और ईश्वर से डरना चाहिए। इस फरेबी दुनिया और शैतान से कभी धोखा मत खाओ। वे आपके दुश्मन है तो आपको उसके कामों से भी नफरत होगी और इसीमें आपकी कामयाबी है।

* दूसरों के लिए मजलिस के लिये जगह खाली करना और किसी को भी उसके बेहतर नाम से पुकारना यह सब चीजें उससे मुहब्बत बढ़ाने का जरिया है।

* इन्सान पूरी जिंदगी धन, दौलत की चाह में लगा रहता है। रात-दिन मेहनत करता है अधिक दौलत कमाना चाहता है। धन अर्जित करना कोई अपराध नहीं है। यह तो उसका फर्ज है कि वो अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए ज्यादा-से-ज्यादा धन कमाएं। ईमानदारी की रोजी कमाएं। इसके लिए प्रयत्न करें और अगर उसे दौलत की ढेर खजाने मिलते है तो उसे स्वीकार करने से इनकार नहीं करे। क्योंकि ये उसकी जायज मेहनत का बदला है। इन्सान दुनिया में सिर्फ धन कमाने के लिए नहीं आया है बल्कि उसे नेकियां कमानी चाहिए। ईश्वर ने उसे रोज आगे बढ़ने के लिए नेकियां भी दी है और धन-दौलत भी दी है। अपने समाज में गरीब और जरूरतमन्द लोगों का भी उसके धन में हिस्सा है। उन्हें वह हिस्सा ईमानदारी के साथ अदा करना चाहिए। हकदारों को उनका हक देते हुए मनुष्य अगर धन सम्पत्ति अर्जित करता है तो यह दौलत उसके लिए दुनिया और परलोक में खुशी बन जायेगी। नहीं तो इस दौलत की वजह से वे हर जगह अपमानित होगा।

* जो ज्ञान दुनिया में यश कमाने की गर्ज से प्राप्त किया जाता है तो ज्ञान उसके दिल में नहीं रह पाता।

* आपके साथ कोई नेकी करे या बदी लेकिन आप सबके साथ अहसान करो।

* अगर मुर्ख को ज्ञान सिखाओगे तो बेकार होगा और अक्लमंद को नहीं सिखाओगे तो यह आपके ऊपर जुल्म होगा।

* मनुष्य को जीवन में पश्चात्ताप करना चाहिए कि हुई गलतियों को छोड़ने का पक्का इरादा होना चाहिए। उस अपराध को फिर कभी न करना यह ध्येय होना चाहिए।

* कमजोर पर हमला करना कायरता है। बराबर वाले के ऊपर हमला करना बुरी आदत है और जबर्दस्त बेहयाई है।

* परलोक का काम आज करो। दुनिया का कलपर छोड़ दो।

* बच्चों से प्यार करना ही ईश्वर को प्रसन्न करना है।

* दुनिया में आराम चाहनेवाला बेवकूफ और कम बुद्धिमान है।

* अच्छे कामों में लगे रहो जिससे लोगों की भलाई हो वही श्रेष्ठ है।

* जिस तरह मोम अपने आपको जलाकर दूसरों को रोशनी पहुंचाता है उसी तरह आप अपने आपको रोशन करो।

* दिल को अपने नियंत्रण में रखो, जिससे नाजायज ख्वाहिशों से बचोगे वही पौरुष है।

* दुनिया ख्वाब है और परलोक में जागा हुआ आदमी अगर ख्वाब में रोये तो जागने के बाद वो हंसता है अगर दुनिया में रो ले तो परलोक में हंसेगा।

* वो आदमी सबसे ज्यादा बेहतरीन जिंदगी गुजारता है जो अपनी आवश्यकताओं के लिए किसी गैर पर भरोसा नहीं रखता।

* रोटी का टुकड़ा और मामूली पहनने के कपड़े इज्जत के साथ मिलते है तो यह हमेशा उस ऐश से बेहतर है जिसके बाद पछतावा और शर्मिंदगी का सामना करना पड़े।

* कपटचारी दोस्ती से खुली दोस्ती बेहतर है।

* बदले की भावना की ताकत रखते हुए भी गुस्से को पी ले जाना बहुत बड़ी बात है।

* जब दिल में किसी दूसरे की नेअमत देखकर दिल में जलन और ईर्ष्या पैदा हो यह ठीक नहीं है। अकेलेपन में बैठकर ईश्वर से उसके लिए प्रार्थना करें यह नेअमत जो उसको दी है उसको उससे भी ज्यादा दें और साथ-साथ मुझे भी दे और मेरे मन में जो इस नेअमत की वजह से कूढ़न, चुभन, जलन पैदा हुई है अपनी दया से इसको खत्म कर। जिन गुनाहों का सम्बन्ध ईश्वर

से है उन गुनाहों का इलाज तो आसान है। ऐसे गुनाह भी माफ हो जाएंगे लेकिन जिन लापरवाहियों और गुनाहों का तालुक व्यक्ति की हकीकतों से है, उसके अधिकार में है वो कभी माफ नहीं होते। वो तो जिसके प्रति किया गया वो ही माफ कर सकता है।

* स्वर्ण के पात्र भी यदा-कदा चमकाने की जरूरत पड़ती है। रखरखाव के अभाव में इसकी सतह पर भी धूल कण और गंदगी पड़ जाती है और इसकी चमक फीकी पड़ जाती है। इस बदलती दुनिया में एक अच्छे व्यक्ति को भी देखभाल की उचित जरूरत पड़ती है। बदलाव अच्छे के लिए चाहिए। परिवर्तन हमेशा उच्च मूल्यों के प्रति होना चाहिए। अच्छी संगति एकीकृत विकास के लिए अनिवार्य है। बुरी संगति आत्मा से शरीर के बंधनों को मजबूत करती है। जब की अच्छी संगति उन बंधनों से मुक्त करती है। इसलिए परिवर्तन हमें उच्चतर स्तर और बेहतर लक्ष्य की ओर आगे बढ़ाता है। बुरी संगति मोहमाया में फँसाती है। आंतरिक सत्संग ईश्वर का सत्संग कराती है।

* जिस सत्य को खोजते हो वह तुम्हारे अंतस में छिपा है। न वह वेद में है, न कुरान में न बाइबल में न ध्यान में उस सत्य को खोजना चाहिए जो तुम्हारे पास है पर आज तो सबको अपनी-अपनी पड़ी है। उस सत्य से किसी का कोई लेना-देना नहीं पर सत्य तो एक ही है।

* उपहारों के माध्यम से हम जिन भावनाओं का संप्रेषण करते है वे हमेशा-हमेशा के लिए हमारे अपनों के दिल को छू लेते है और पारस्परिक रिश्तों को अधिक गहरा और मजबूत बनाती है। अपना अथाह प्रेम शब्दों में व्यक्त करने की बजाय उपहारों के माध्यम से प्रकट किया जाता है। उपहार का मूल्य एहसास कराने के लिए कोमल भावनाएं होना आवश्यक है जो कुदरत ने हमें बिना मांगे दिया है।

* हम सफलता के उच्च शिखर पर बैठना चाहते हैं तो उसके लिए हमें फौलाद का मनोबल बनाना होगा और यह केवल मूल्यों को आत्मसात करके ही संभव होगा। लहरों से डरकर कभी नौका पार नहीं की जा सकती। कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती। हमारे जीवन की सफलता में कई बार समस्यारूपी लहरें आ जाती है तो बड़े-बड़े तूफान भी जब आते हैं इन बिकट परिस्थिति में हमें अपने मनोबल का सहारा लेना पड़ता है और साहस से कोशिश करते हुए आगे बढ़ना पड़ता है। जीवन में किये जानेवाला हर छोटा बड़ा प्रयास उपयोगी होता है। हमारे जीवन में चाहे कितनी भी असफलता क्यों न आये परंतु अपना दृढ़संकल्प मजबूत बनाये रखना है और अपना लक्ष्य सदैव मंजिल पर केंद्रित रखना है क्योंकि सफलता आज नहीं तो कल मिलनेवाली है। हमारे इतिहास के दिग्गज नायक भी दृढ़संकल्प और इच्छाशक्ति द्वारा पहाड़ रूपी समस्याओं को पार कर आनेवाली पीढ़ी के लिए रास्ता बनाया।

* आत्मसम्मान से अधिक अपने से सहानुभूति हमारी कामयाबी में खास भूमिका निभाती है। तब हम खुले दिमाग से सोचते है हम अपनी गलतियों का पूरी सहानूभूति से विचार करते है तो हममें एक आत्मसम्मान या स्वाभिमान होता है। पर फिर भी अपने सम्मान को ज्यादा तरजीह देने के बजाय हमें खुद को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। उससे हम अपने खुलेपन से कभी दूर नहीं होते। कभी-कभी हम जिद पकड़ लेते है और यह जिद हमें सच से दूर ले जा सकती है। हम अपने हालात पर दोबारा नहीं सोचते जो कहा है वो ही करते है। उसको लेकर ही हम फँसे रहते है उसके आगे हम सोच ही नहीं पाते। ऐसा अडियल पन हमारी कामयाबी में बहुत बार आड़े आ जाता है और किसी संकट के समय उबारने की बजाय डूबोने में मदद करता है।

* भारतीय संस्कृति में जीवन की कुछ क्रियाएं बड़ी अद्‌भुत है। हमने जीवन के हर कृत्य को संस्कार नाम दिया है। जिस इरादे से हम काम करते है वो बड़े महत्वपूर्ण है पर परिणाम क्या होगा इसमें हमारे प्रयास ईश्वरीय शक्ति को जोड़कर

रखा है। मनुष्य के शरीर में जीवन ऊर्जा तो होती है उससे सांसारिक कर्म पूरे होते है साथ में संतानोत्पत्ति भी इसी जीवनऊर्जा का परिणाम है। संतानोत्पत्ति ऊर्जा का नाम काम ऊर्जा कहा गया है और जब यह अमर्यादित हो जाती है तो इसके भीतर की अग्नि मनुष्य के शरीर पर विपरीत असर डालती है। जीवन शक्ति का प्रभाव बड़े से बड़ा पराक्रम कर सकता है और इसी के भीतर की अग्नि कामपीड़ा में भी पटक देती है। काम ऊर्जा से शरीर में जो गर्मी आती है उसके कारण शरीर की कहीं आवश्यक धातुएं जलने और पिघलने लगती है। शरीर में जो आवश्यक तत्व है उसका संतुलन कामाग्नि के कारण बिगड़ने लगता है। इसके संतुलित उपयोग से बुद्धि, विचार, हृदय तीनों ही अद्‌भुत परिणाम देते है। इसका असंयमित आचरण शरीर को खोखला बना देता है। शरीर की अतिरिक्त कामाग्नि सबसे अधिक घातक असर मस्तिष्क पर डालती है इसके प्रभाव से आदमी की स्मरणशक्ति चली जाती है उसके विचारों में विस्फोट हो जाता है। उसके संकल्प क्षीण होने लगते हैं। कामुक आदमी को किसी भी समय अपने पराये का बोध नहीं होता। कामऊर्जा को जीवन ऊर्जा से जोड़कर सृजन की ओर मोड़ना चाहिए न कि विध्वंस की ओर।

* दुर्जन लोग ऊंचे पद या स्थान पर पहुंच जाते हैं, परन्तु दूसरों का ऐश्वर्य नहीं देख सकते।

* धन से कुल की प्रतिष्ठा बढ़ती है और धन से धर्म की वृद्धि होती है।

* कुमंत्र से राजा का नाश हो जाता है, दुष्टों के साथ से साधु का नाश हो जाता है, बहुत प्यार करने से पुत्र नष्ट हो जाता है और न पढ़ने के कारण ब्राह्मण का नाश हो जाता है।

* आप किसी को सीख देना चाहेंगे। तो वह शायद ही उसका स्वागत करे। जिनको उसकी सबसे ज्यादा जरूरत होती है, वे ही इसे सबसे कम पसंद करते हैं।

* जो मनुष्य खूब व्यस्त रहता है, वह कभी दुखी नहीं होता।

* मनुष्य के जीवन का सुख वासनाओं में नहीं, उन पर शासन करने में है।

* अगर इस धरती पर सुख पाना है तो अच्छे गुणों को अपनाना होगा।

* वह अच्छा शल्य चिकित्सक है जो किसी अंग को काट सकता है, परंतु वह शल्य चिकित्सक उससे भी अच्छा है जो उस अंग को बचा सकता है।

* जिस मनुष्य में तेज नहीं रहता है, उसकी सब अवहेलना करते हैं। आग बुझ जाने पर राख को सब लोग छूते हैं।

* दुर्जन को देखने और उसकी बातों को सुनने से ही दुर्जनता का आरम्भ हो जाता है।

* अवतारी पुरुष देश के प्राण हैं, वे समाज में चेतना उत्पन्न करते हैं और अपने पवित्र आचरण तथा उपयोगी उपदेशों से देश का कल्याण-साधन करते हैं।

* जो सचमुच का मनुष्य है, वह अन्याय के विरुद्ध विद्रोह करेगा।

* नींव के पत्थर भवन को देख नहीं पाते, लेकिन भवन उन्हीं के भरोसे खड़ा होता है।

* करुणा करनेवालों का शरीर परोपकार से शोभा पाता है, चंदन से नहीं।

* कुछ बुरी सोच रखनेवाले मित्र इतने डरपोक और बेजुबान होते हैं कि वे अपना विरोध जताने के लिए आपके दुश्मनों का समर्थन करने लगते हैं ऐसे मित्रों को दूर ही रखना चाहिए।

* स्वयं को दूसरे के हाथों में अर्पित करना, अपने प्रेमी पर भरोसा कर उसे अपनी जिंदगी सौंप देना, श्रद्धा और सब्र रखना, प्रार्थना करना, दृढ़ संकल्प लेना, दिल से प्यार करना और तन-मन-धन से समर्पित होना ये सब विश्वास के ही

अलग-अलग रूप हैं। लौकिक जीवन में भी सच्चे विश्वास की आवश्यकता है। विश्वास को प्राप्त करने का पहला साधन है व्यक्तिगत अनुभव और उससे उभरता भरोसा। यह भरोसा किसी वस्तु या व्यक्ति में भी हो सकता है। विश्वास रूपी गुण को उजागर करने से शारीरिक और आध्यात्मिक शक्तियों की अनुभूति होती है। ये शक्तियां मनुष्य को अनुशासित और धैर्यवान बनाती हैं। इन्हीं के बल पर वह इन्सान ईश्वरत्व के समीप पहुंचता है। लौकिक वस्तुओं की चिंताएं कम होने लगती हैं। पारलौकिक आनंद का अनुभव ज्यादा होने लगता है। सिर्फ धार्मिक अनुष्ठानों एवं रीति-रिवाजों से कोई विश्वास की शक्ति नहीं प्राप्त कर सकता। लेकिन इन अनुष्ठानों से उसकी राह पर चलना आसान जरूर हो जाता है।

❋ अकेला होनेपर किसी भी उम्र में लोगों को दु:ख होता है लेकिन बुजुर्ग लोगों के बीच दु:खी होना यह एक आम कारण है इससे उनकी उम्र कम हो सकती है। अकेलापन खलने से कार्य में गिरावट और प्रतिदिन की कार्यक्षमता में भी कमी आती है। बुजुर्ग व्यक्तिओं में अकेलापन एक सामान्य बात है। अकेलापन से स्वास्थ्य खराब हो सकता है। कार्यक्षमता की गिरावट के साथ-साथ अकेलापन से मौत भी हो सकती है।

❋ गौतम बुद्ध ने शराब को दुराचार की जननी कहा था और उसे आग, तलवार, हिंसक जानवर और पहाड़ से कूद पड़ने से भी अधिक भयकारी बताया था। शराब पीने-पिलाने के प्रति वातावरण इतना सामान्य बनाया जा रहा है कि स्कूलों में पढ़नेवाले बच्चे-बच्चियां भी १८ वर्ष की होने का इंतजार कर रही हैं, क्योंकि तब उन्हें पीने की अनुमति मिल जाएगी। पर सवाल यह है कि जब वातावरण ऐसा दुष्प्रेरक बन रहा हो, तो क्या वह तब तक रुकी रहेगी? यह बदलता, बिगड़ता वातावरण मुख्य चिंता का विषय होना चाहिए। क्या अनेक दार्शनिकों ने यह नहीं कहा कि कल्पना में भी यदि किसी स्त्री के प्रति व्यभिचार का विचार आए, तो वह भी व्यभिचार ही है?

❋ अनासक्त रहकर कर्म करनेवाला पुरुष परम पद को प्राप्त होता है।

❋ जहां धर्म, ईश्वर और सन्तों की निन्दा होती है, वहां बैठकर उसे सुनना भी अपराध है।

❋ अन्धानुकरण से आत्मविश्वास के बजाय आत्म-संकोच पनपता है।

❋ मदिरापान करना अवगुण की अपेक्षा बीमारी अधिक है।

❋ दुखियारों को हमदर्दी के आंसू भी कम प्यारे नहीं होते।

❋ जो अपने मुख और जिह्वा पर संयम रखता है वह अपनी आत्मा को संतापों से बचाता है।

❋ पृथ्वी पर कोई ऐसा दु:ख नहीं है स्वर्ग जिसका निवारण न कर सके।

❋ हमारी आवश्यकताएं जितनी ही कम होंगी हम उतने ही देवताओं के निकटतम होंगे।

❋ विश्व में एक मूल्यवान वस्तु केवल आत्मा है।

❋ कर्म करने में ही तुम्हारा अधिकार है, फल में नहीं।

❋ समाज में लैंगिक संबंधों को आधुनिक और विवेकसम्मत बनाने के लिए धर्मग्रन्थों अथवा स्मृतियों या शरीयत का हवाला नहीं देना चाहिए न उनको आदर्श मानना चाहिए। इसके लिए ऐसे कानून बनाने चाहिए जो आधुनिक समाज में स्त्री को सम्मान सहित जीना सिखा सकें।

❋ भौतिकवाद ने व्यक्ति को खुदगर्ज बनाया जिसका नतीजा संयुक्त परिवार के विघटन के रूप में सामने आया। अपने ऐशोआराम के रास्ते में बच्चे न आएं। आवास की समस्या ने बहुमंजिला इमारतें खड़ी कर दीं। कबूतर के दड़बे जैसे बंद मकानों में अलग संस्कृति पनपने लगी। मानसिक रूप से लोग बीमार हो गए। जिन तीज त्यौहारों, अनुष्ठानों, रीति रिवाजों

को पाश्चात्य संस्कृति के दीवाने दकियानूसी, फिजूल, वाहियात बातें कहकर उनका मखौल उड़ाते हैं वो ही जीवन के खालीपन में ये रंग भरते हैं। इनके अभाव में जीवन कितना नीरस व फीका हो जाता है। लेकिन आज आम आदमी अपना खालीपन भरता है। दूरदर्शन, सिनेमा से और ऐशो आराम की चीजों के ढेर लगाकर, जिनके रख रखाव में ही वह जिंदगी का काफी हिस्सा गुजार देता है। अब न उनकी जरूरत महसूस होती है, न दिलों में वह खुलूस प्यार ही बाकी बचा है। संगणक युग में सभी कुछ तो यंत्रवत हो गया है। सिर्फ पैसे का जोड़ तोड़ है और कैसे किसी को कितना काम में लाया जा सकता है, खिंचा जा सकता है, उसी मानसिकता के तहत संबंध बनाये जाते हैं। अनियंत्रित भोगवाद हमें कहीं नहीं ले जाएगा? लालच और परिग्रह की कोई सीमा नहीं है। ऐशआराम, जो सिर्फ पैसे से खरीदा जा सकता है, की ललक ने आज व्यक्ति को कहां से कहां पहुंचा दिया है। सादगी, सुकून, सरलता, उन्मुक्त हास्य, निर्मल आनंद आज ढूंढने से भी नहीं मिलेगा। जिस नकली सुख की मरीचिका के पीछे आज लोग पागल हुए जा रहे हैं, वह उन्हें बदले में सिर्फ बेचैनी, अशांति और तनाव दे रहा है। दिखावा और उसके लिए पैसे की हवस और पैसा प्राप्त करने के लिए काले धंधे, झूठ, छल, कपट, अपनों का गला काटना, यही है आज के जीवन का ग्राफ और यह है भोगवादी संस्कृति।

❊ किसी जंगली जानवर की तुलना में कपटी और दुष्ट मित्र से ज्यादा डरना चाहिए जानवर तो बस आपके शरीर को नुकसान पहुंचा सकता है, पर एक बुरा मित्र बुद्धि को नुकसान पहुंचा सकता है।

❊ कामवासना- आपके सब संकल्प, ब्रह्मचर्य के नियम, कसमें, प्रतिज्ञाएं पड़ी रह जाती है और काम की वासना जब वेग पकड़ती है, तो लगता है कि आप आविष्ट हो गए, कोई बड़ी धारा खींचे लिए जा रही है और आप बहे जाते हैं। बुरे से बुरा आदमी भी, अनैतिक आदमी भी, कामुक आदमी भी कामवासना के संबंध में कुछ न कुछ करता रहता है। रोकने की कोशिश करता है, संभालने की कोशिश करता है। इस सारी कोशिश में वासना विकृत हो जाती है। सुधरती नहीं, बदलती नहीं- और कुरूप हो जाती है। सारी दुनिया कुरूप काम वासना से भरी है। हजारों रूपों में कामवासना विकृत रोगों का रूप ले लेती है। यह ऐसी है, जैसे जो बिजली के संबंध में कुछ भी न जानता हो, वह बिजली के किसी उपकरण को सुधारने में लग जाए। वह उसे और बिगाड़ देगा। ठीक समझकर ही भीतर चलना, अन्यथा जिस शक्ति से आत्मा का जन्म हो सकता था, उसी से आत्मघात भी हो सकता है। आदमी की सौ बीमारियों में निन्यानबे की वजह काम वासना की विकृति होती है। स्वाभाविक काम वासना को अस्वाभाविक मत होने दें। जो स्वाभाविक है, उसे स्वीकार करें। स्वाभाविक काम वासना को सिर्फ भोगना ही मत, भोग के साथ-साथ उस पर ध्यान भी करना। भोग में उतरना, लेकिन होशपूर्वक उतरना। यह पहचानने की कोशिश करना कि उसमें कौन से सुख की, कौन से आनंद की उपलब्धि हो रही है। खोज भी जारी रखना कि जो सुख या शांति की झलक मिलती है, वह वस्तुत: काम वासना के कारण मिलती है या कारण कोई और है। स्वाभाविक वासना हो काम वासना के कारण सुख और आनंद की प्रतीति नहीं होती है। काम की तृप्ति में जो सुख मिलता है, उसका मौलिक कारण काम नहीं है। यौन के शिखर पर पहुंच कर एक क्षण को मन शून्य हो जाता है। इस शून्य में आपको सुख की झलक मिलती है। आप उसमें इतने तल्लीन हो जाते हैं, जितने और कभी भी नहीं होते। उस तल्लीनता के ही कारण मन शांत हो जाता है।

❊ इंसान एक दूकान है और जुबान उसका ताला। ताला खुलता है, तभी मालूम होता है कि दुकान सोने की है या कोयले की।

❊ आपका उद्देश्य आपका अपना है, उसे दूसरों के लिए मत बदलिए लेकिन आपका चरित्र आपके लिए नहीं है, उसे दूसरों के लिए बदल दीजिए।

❊ सत्य, संघर्ष और पराक्रम के बाद मिली सफलता में, शरीर भले ही थका हो लेकिन मन अति उत्साहित होता है। छल से पाई गई सफलता में शरीर कितना भी प्रफुल्लित हो, मन हमेशा डरता ही रहता है।

❊ अगर आप छोटे-छोटे कामों में लापरवाह रहेंगे तो बड़ा काम करने का मौका आपको कभी नहीं मिलेगा। हिमालय की चोटी पर चढ़ने के अवसर कम ही आते हैं, लेकिन हाथ के काम को कुशलता से करने का मौका तो हर समय सामने रहता है। काम छोटा हो या बड़ा उसे इस तरह करें, जैसे कि यह आपका अपना काम हो और उस काम से आपका भविष्य तय होनेवाला हो। सबसे जरूरी तो यह कि कभी भी इस बात का इंतजार न करें कि आपके पास कोई बड़ा काम आयेगा या बड़ी जिम्मेदारी आयेगी, तो आप सभी को अपनी क्षमताओं से परिचित करा देंगे। अगर आप छोटे-छोटे कामों में लापरवाह रहेंगे तो ऐसा मौका कभी नहीं आयेगा, इसलिए मौका कैसा भी मिले, सबसे अच्छा देने की कोशिश करें। शुभ काम में देरी नहीं करनी चाहिए और अशुभ काम के लिए समय व्यतीत करना चाहिए।

❊ आत्मविकास जितना अधिक होगा उतनी ही धीमी-से-धीमी आवाज हमें सुनायी पड़ेगी। हमारी आत्मा करुणा से भरपूर है। जितने हम आत्मा के अनुरूप बनते जाते है इतनी ही यह करुणामय बनती जाती है। जिस व्यक्ति में परमार्थ की चेतना जाग गयी उसमें करुणा व्याप्त हो गयी। फिर वह किसी का अनिष्ट नहीं कर सकता। किसी को परेशान नहीं कर सकता। करुणा का विकास बहुत सारी समस्याओं का समाधान है। अध्यात्मिक शिक्षा हमारे अंदर के नैसर्गिक भाव को जगाती है। अपने स्वार्थ के लिए किसी दूसरे प्राणी को कष्ट में नहीं डाल सकते। करुणा के साथ-साथ विवेक का विकास हमें दैवत की श्रेणी में ले जाता है।

❊ प्रत्यक्ष ज्ञान के द्वारा जो कुछ भी जाना गया वह सत्य नहीं पर जो परोक्ष ज्ञान से जाना गया उसमें सत्य होने की पूरी संभावना नहीं असत्य भी हो सकता है। लेकिन एक ज्ञान वह है जो सभी को एक जैसा नहीं होता, वह है निमित्त ज्ञान, अनुमान ज्ञान। यह ज्ञान सर्वथा परोक्ष है। साफ नहीं दिख रहा, बल्कि अनुमान लगाया जा रहा है। हमें धुंआ दिख रहा है तो अनुमान लगाया कि आग होनी चाहिए। लेकिन कभी ऐसा भी तो होता है जो दूर से धुंआ दिख रहा है, वह धुंआ न हो कोहरा हो, राख का बवंडर हो और कुछ अनुमान सही भी हो जाते हैं। पर जो निमित्त ज्ञान कहा गया है- लक्षणों को देखकर, चिन्हों को देखकर, आवाजों को सुनकर इन निमित्तों को देखकर भविष्य का जो ज्ञान लगाया जाता है या उसके साथ होनेवाली घटनाओं को जाना जाता है- वह अलग-अलग भी हो सकता है।

❊ **रूढ़िवाद-** बालक में जिद ज्यादा होती है। उसे पता नहीं होता कि इस बात में लाभ होगा या हानि। किंतु वह जिस बात की जिद पकड़ लेता है, उसे छोड़ता नहीं। एक परिवार में दस-बीस लोग साथ रहते हैं। उनमें से कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जिनकी पकड़ मजबूत होती है, वे अपनी बात को छोड़ना नहीं चाहते। इसी मनोवृत्ति से आपसी सामंजस्य में बाधा पैदा होती है। साधना के क्षेत्र में सबसे पहली बाधा है मिथ्या दृष्टिकोण। एक व्यक्ति जानता है कि यह बात सही नहीं है, पर वह आग्रहपूर्वक उस बात को पकड़ लेता है, उसे छोड़ता नहीं। यह आभिग्रहिकी मनोवृत्ति है। एक पकड़ होती है अज्ञान के कारण। वह व्यक्ति यह नहीं जानता कि ऐसा करना अच्छा नहीं है। इसलिए करता चला जाता है। यह अज्ञानजनित आग्रह है, आनाभिग्रहिकी मनोवृत्ति है। यह आग्रह चेतना बहुत भयंकर होती है। व्यक्ति इसमें उलझ जाता है। यह तथ्य है- सबमें समझ समान नहीं होती, सबका ज्ञान समान नहीं होता। सब में चिंतन धारा समान विकसित नहीं होती। कुछ ऐसे भी होते हैं जिनका मस्तिष्क अविकसित होता है। ऐसी स्थिति में जिद का होना, जिद्दी स्वभाव का होना स्वाभाविक है। जो व्यक्ति जितना ज्यादा नासमझ है, जितना ज्यादा चिंतन शून्य है, जितना ज्यादा अज्ञानी है, उसमें उतना ही ज्यादा आग्रह

होता है। जैसे-जैसे उसमें बुद्धि और चिंतन का विकास होता है, समझने की क्षमता बढ़ती है, वैसे-वैसे आग्रह की वृत्ति छूटती चली जाती है। फिर अनाग्रह का भाव विकसित होता चला जाता है। आज धार्मिक व्यक्ति में भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास की बहुत जरूरत है। धार्मिक कहलाने वाले लोग भी ऐसे हैं, जो एक बात को पकड़ लेते हैं तो, उसे छोड़ना नहीं चाहते। वे नई बात तो स्वीकार करने के लिए तैयार ही नहीं होते। हम थोड़ी सी बातों को जानकर धर्म के ठेकेदार बन जाते हैं। जैसे बंदर के हाथ में हल्दी की एक गांठ आने पर वह अपने को पंसारी मान बैठे। यही सचाई है। हमारा यह अज्ञान और आग्रह सबसे बड़ा विघटनकारी तत्व है। सामाजिक बिखराव का भी यही कारण है। जो बात पकड़ ली जाती है, उसके संदर्भ में लोग दूसरी बात सुनने की तैयार ही नहीं होते। वैज्ञानिक युग में भी अनेक रूढ़ियां चल रही हैं। जिस परंपरा या प्रणाली की उपयोगिता समाप्त हो गई अर्थहीन परंपराओं से चिपके रहने का अर्थ है रूढ़ि। इससे काफी समस्याएं पैदा होती है। व्यक्ति रूढ़ियों से इतना जकड़ा हुआ है कि उसका चिंतन सुलझा हुआ नहीं रहता। वह यह नहीं सोच पाता कि देश काल के बदल जाने पर परंपरा को भी बदल देना चाहिए। इसका कारण है आग्रह। आज बहुत सारी ऐसी स्थितियां हमारे सामने हैं। मृत्यु भोज की परंपरा, दहेज का प्रचलन कभी रहा होगा। कभी इनकी उपयोगिता को माना गया होगा, पर आज इन्हें मात्र रूढ़ि ही माना जाता है। लेकिन इनकी पकड़ इतनी मजबूत है कि समाज के मुखिया इसे छोड़ना नहीं चाहते।

✻ आज हर इंसान सुखी, संपन्न और शक्तिशाली बनना चाहता है। इसके लिए जरूरी है जीवन में पवित्रता और मन में शुद्धता। व्यक्ति की दिशाएं विपरीत हों तो वह अपना चाहा हासिल नहीं कर पाता। पवित्रता और शुद्धता के भाव से इंसान जो चाहता है, उसे हासिल कर सकता है। इस तरह वह जो हासिल करता है, उससे जीवन सफल और सार्थक बन जाता है। मन बाह्य पदार्थों में लगता है, उसको भीतर लगा दें। मन की गति बदल जाए, दिशा बदल जाए। सारा परिवर्तन दिशा का ही होता है। दिशा बदलो, सब कुछ बदल जाएगा। मन को श्वास के साथ जोड़ दो, मन की दिशा बदल जाएगी।

जो इंसान पेट के प्रति जागरूक रहता है, वह स्वस्थ रह सकता है। प्रकृति का एक नियम है- ग्रहण और विसर्जन। यह नियम सर्वत्र लागू होता है।

संकल्प करो- मुझे यह काम करना है। संकल्प के अनुसार शक्ति जागृत होती है। शक्ति के विकास में बाधाएं भी बहुत हैं। जिसने अपनी इंद्रियों पर विजय नहीं पाई वह संकल्पशक्ति का विकास नहीं कर सकता। वह संकल्प करता है पर टूट जाता है। सह न पाना भी एक बाधा है। जो समर्थ नहीं है, वह कष्ट आने पर विचलित हो जाता है। जिसने चित्त की चंचलता को कम नहीं किया उसका संकल्प मजबूत नहीं रह सकता। दृढ़ वही रह सकता है जिसमें भय नहीं है, जिसमें क्षोभ नहीं है, चित्त की चंचलता नहीं है, जो कष्टों से घबराता नहीं है।

शक्ति जागरण का एक मार्ग है शुद्ध भाव में रहना। केवल जागरूकता के साथ संकल्प करें कि मेरा मन शुद्ध हो रहा है, भाव शुद्ध हो रहा है, परिणाम शुद्ध हो रहा है। शक्ति का जागरण स्वत: हो जाएगा। हमें जागरूक रहना है कि मन में बुरे विचार न आएं, बुरी कल्पना न आए, बुरे भाव न आएं। यह जागरूकता बढ़ जाए तो शक्ति अपने आप जाग उठती है।

✻ ईश्वर आपकी संपन्नता से प्रभावित नहीं होता वह आपके प्रेम और भावनाओं से प्रभावित हो सकता है। वह सृष्टि का मालिक है उसको आपके धन से क्या लेना देना।

✻ एक दिन में चौबीस घंटे होते है। सोमवार हो, मंगलवार या कोई और वार, दिन का नाम बदल जाता है, घंटा नहीं बदलता। हर आदमी के दिन में चौबीस घंटे ही होते है। हर समाज के दिन में चौबीस घंटे ही होते है। हर देश के दिन में चौबीस घंटे होते है। देश विकसित होवे या अविकसित, घंटा विकसित या अविकसित नहीं होता। वो चौबीस ही होता है।

शहर में चौबीस होता है, गांव में चौबीस होता है। जानवर लोग घड़ी नहीं देखते लेकिन जंगल में भी दिन चौबीस घंटे का ही होता है। कुछ लोग ईश्वर को बहुत मानते है। आप कितने भी बड़े भक्त हो दिन में चौबीस घंटे से ज्यादा पूजा नहीं कर सकते। कोई ईश्वर दिन में चौबीस घंटे से अधिक नहीं देता।

जो ईश्वर को नहीं मानते, उसको कुदरत चौबीस घंटे देता है। यानी घंटे के मामले में सभी इंसान समान है। कोई ईश्वर, कोई धर्म, कोई समाज आपको वास्तव में समान नहीं बनाता- खुद अपना धर्म या समाज भी नहीं। ये आपका चौबीस घंटा तय करता है।

आपका स्वभाव अलग हो सकता है, पर समय अलग नहीं हो सकता। संस्कार अलग हो सकते है, पर समय अलग नहीं हो सकता। आपका इतिहास अलग हो सकता है, पर समय अलग नहीं हो सकता। विजेता का समय भी वो ही होता है, जो पराजित का। आपके समय में आपका व्यवहार तय करता है कि आप क्या है। आपकी बुराई करता है, तो भला नहीं हो सकता। बदतमीजी करता है, तो शरीफ नहीं हो सकते। रुआब मारता है, तो विनम्र नहीं हो सकता। तोड़फोड़ करता है, तो रचनात्मक नहीं हो सकता। कारण सबके पास एक समय होता है। एक समय में आप नकारात्मक और सकारात्मक दोनों नहीं हो सकते। समय स्थिर नहीं होता। समय कभी पीछे नहीं जाता। समय आगे बढ़ता है। जो समय के साथ आगे नहीं बढ़ता है वो पिछड़ जाता है वो पीछे रह जाता है।

आपके आगे बढ़ने या पिछड़ने में समय का कोई हाथ नहीं होता। उसके जिम्मेदार खुद आप ही है। जो पिछड़ जाता है, वो खुद को पिछड़ा नहीं मानता। महत्व इस बात का है कि समय आपको क्या मानता है। समय की सबसे बड़ी खासियत ये है कि वो कुछ और नहीं होता। वो कुछ और बनना भी नहीं चाहता। समय की कोई इच्छा नहीं होती। कोई अनिच्छा भी नहीं होती।

उसको न आपकी अच्छाई से कुछ लेना है, न बुराई से। न आपका सच से कुछ लेना है, न झूठ से। समय किसी से कुछ नहीं लेता। वो सिर्फ देता है- एक दिन में चौबीस घंटा। ये चौबीस घंटे, चौबीस ही रहते है। आप अपने आपको श्रेष्ठ मानते है। अपने धर्म को, अपने देश को, अपने ईश्वर को श्रेष्ठ मानते है आपकी श्रेष्ठता, आपका धर्म, आपका देश, आपका ईश्वर, कोई आपको चौबीस घंटे से ज्यादा नहीं दे सकता। भले ही आपका ईश्वर सर्वशक्तिमान होवे, भले ही वो जो चाहता है कर सकते हो, लेकिन वो आपके दिन का घंटा नहीं बढ़ा सकता। चौबीस का पच्चीस भी नहीं कर सकता। तो फिर आपके पास बस चौबीस घंटे है। वो चौबीस घंटे में क्या करना है, ये भी आपको ही सोचना है।

अगर आप सोचने का काम किसी और को करने देंगे, तो फिर आपका चौबीस घंटा आपका नहीं रहेगा। अगर अपना चौबीस घंटे में आपने किसी के साथ कुछ किया और उसने भी पलट कर आपके साथ वो ही किया, तो आपको कैसा महसूस होगा। आपको अच्छा महसूस होवे या बुरा, समय को कुछ महसूस नहीं होगा। समय कभी भी कुछ महसूस नहीं करता। समय निष्पक्ष है। समय परमहंस है। समय स्थितप्रज्ञ है।

* भारत लोकतांत्रिक देश कहलाता है। इस लोकतंत्र में विभिन्न धर्म के लोग रहते हैं। सभी लोगों के लिए चाहे वह किसी भी धर्म, जाति का क्यों न हो, मानव धर्म के अनुयायी ही कहलाएंगे। धर्म तो एक ही है, वह है मानव धर्म, मानव को इस संदर्भ में ही अपने-आपको मानव कहलाने का हक है। सभी धर्मों के धर्म गुरुओं ने भी सभी समुदायों के लोगों को मानव बने रहने की शिक्षा दी है। मानव में मानवता नहीं रह गयी है। आज आवश्यकता है, तो केवल दानवी प्रवृत्ति को मानवी और दैवी प्रवृत्तियों में बदला जाये। इन प्रवृत्तियों को बदलने के लिए मानव को दृढ़ संकल्प लेने की जरूरत है। अपने-आप में, अपनी सोच में तत्काल बदलाव लाने का प्रयास करना चाहिए। हमें दया, करुणा, ममता, धैर्य,

सहिष्णुता, प्रेम-सद्भाव आदि सद्गुणों को अपने दिलो-दिमाग में स्थान देना चाहिए वरना देश व संसार में बढ़ रहे असमानता से मानव, मानव का दुश्मन बनता जायेगा। तब मानवता कहीं नहीं रहेगी।

* धर्मज्ञानी की संगति से, धर्मग्रंथों को सुनने से जिंदगी खुशहाल हो सकती है।

* किसी चीज का लालच नहीं करें। जब बिना मांगे कोई कुछ दें तो स्वीकार करें। स्वीकार करने में उसे जमा न करें लोगों में बांटे।

* जब तुम किसी नियत समय के लिए आपसमें उधार लेन-देन करो तो उसे लिख लेना ही बेहतर है।

* अपने बैरों को कोई खट्टा नहीं बताता अर्थात अपनी चीजों को कोई खराब नहीं बताता।

* जब अपने दाम खोटे हो तो परखनेवाले का क्या दोष। अर्थात् अपनी चीज में ही बुराई हो तो बुराई निकालनेवाले का क्या दोष।

* ज्ञान एक ऐसा बादल है जिससे कृपा ही कृपा बरसती है।

* उम्मीद की शमा हमेशा रोशन रखना। उसकी जरा सी भी रोशनी कामयाबी की वजह बन सकती है।

* अपना आचरण अच्छा रखो, बुरे आचरण का तोहफा भी अपनी कद्र खो देता है।

* अपने दिल में ऐसे व्यक्ति की मुहब्बत पैदा करो जो तुम्हें ईश्वर के करीब कर दे।

* अपने आप से वादा करो कि मैं हराम और नाजायज तरीके से संसार को प्राप्त नहीं करूंगा। इस दुनिया की चाहे कोई भी चीज हो रुपया, पैसा, सामान, साधन नाजायज तरीके से हासिल नहीं करना है। न सूद के जरिये, न ब्याज के जरिये, न रिश्वत, न जुआं खेलकर, या झूठ बोलकर, किसीको धोखा देकर, किसी का दिल तोड़कर, या किसीका दिल दुखाकर, फरेब, छलकपट कर, बल्कि जो कुछ कमाऊंगा न्याय से कमाऊंगा।

* नेकी और विपत्तियों में एक दूसरे की मदद करनी चाहिए पर बुराई में किसी का साथ मत दो। बुराई बुराई होती है और नेकी नेकी होती है। नेकी सदा बुराई पे हावी हो जाती है।

* जब तक अच्छे काम करके दुनिया को पाठ नहीं पढ़ावोगे तो दुनिया तुम्हें अच्छा और ईमानदार व्यक्ति नहीं समझेगी।

* लोग देखनेपर ज्यादा यकीन करते है सुनने से दिल को दिल को जल्द यकीन आना मुश्किल है। जिंदगी के हर लम्हे के बारे में सबक अपने कर्म और आचरण से होता है। तभी आपके दुश्मन भी आपको सज्जन पुरुष कहेंगे।

* लोग दुनिया के फायदे के पीछे दौड़ते है और दूसरों से आगे बढ़ने की फिक्र में रहते है वो लोग ईश्वर और परलोक पर विश्वास रखते है, जो नेकी और दीन के कामों में आगे बढ़नेवाले होते है वो ही लोग वास्तव में कामयाबी हासिल करते है।

* सुख हासिल करना चाहते हो तो इत्मीनान से रहना चाहिए इत्मीनान में सबसे बड़ा सुख है।

* अक्लमंद बिना भूख के खाना नहीं खाता।

* बहुत अधिक बोलना कम अक्ल की निशानी है।

* शांति पाने के लिए हम जीवन भर प्रयत्न करते हैं। हममें से अधिकतर लोग निरंतर व्यग्रता और अशांति की स्थिति में रहते हैं। जब हम दूसरों की बातों में दखल देते हैं तो अपने लिए समस्याएं खड़ी कर लेते हैं। जो हमारे विचारों से मेल नहीं खाता, उसकी हम आलोचना करते हैं। हम सोचते हैं कि जिस दिशा में हम चलें, लोग भी हमारे पीछे चलें। कोई भी दो मनुष्य न एक समान सोच सकते हैं और न एक समान कार्य कर सकते हैं। सभी अपने-अपने ढंग से कर्म करते हैं। ईश्वर की उपस्थिति हर जगह है और वे सब कुछ देखते हैं। सब अपना काम करते रहें, बिना किसी के काम में दखल

दिए। सब तरफ शांति रहेगी। एक बहुत ही उपयोगी और सशक्त हथियार है- भूलो और क्षमा कर दो। कभी किसी ने एक बार कुछ बुरी बात कही, चोट पहुंचाई, हम उस बात को हमेशा के लिए अपने अंदर जहन में पाल लेते हैं। इससे मन अशांत होता है। इसलिए अच्छा यही है कि भूल जाएं, क्षमा करें और शांत रह कर आगे बढ़ते चले। संसार स्वार्थी लोगों से भरा है। प्राय: बिना स्वार्थ के कोई किसी की प्रशंसा या मदद नहीं करता। कोई प्रशंसा करता है, क्योंकि आज हमारे पास धन है, शक्ति है या कोई विशेष गुण है। परंतु जैसे ही यह सब कुछ मेरे पास नहीं रहेगा, जो मुझसे प्राप्त किया था, वे भूल जाएंगे। हो सकता है कि मेरी आलोचना भी करें। कोई किसी की प्रशंसा के कुछ शब्दों के लिए लालायित रहते हैं। लेकिन प्रशंसा के शब्दों का प्रभाव ज्यादा देर नहीं टिकता। इससे अच्छा है कि हम अपना कर्त्तव्य सदाचार के अनुसार करते रहें और अपना मन शांत रखें। ईर्ष्या भी एक भयानक रोग है, जिससे हमारे मन की शांति नष्ट हो जाती है। कभी हमें यह लगता है कि मैं अपने दफ्तर में दूसरे साथियों से ज्यादा काम करता हूं, परंतु उन्हें उन्नति मिलती है और मुझे नहीं। हम जितना चबा सकते हैं, उससे बड़ा ग्रास नहीं लेना चाहिए। कई बार हम इतनी जिम्मेदारियां ले लेते हैं, जिन्हें निभा नहीं पाते। शायद ऐसा हम किसी अहंकार की संतुष्टि के लिए करते हैं, हमें अपनी सीमाएं पता होनी चाहिए। कुछ समय हमें ईश्वर की उपासना में देना चाहिए। ऐसा करने से बुरे विचार कम होंगे, जिसके कारण हमारा मन अशांत होता है। खाली दिमाग शैतान का घर होता है। इसलिए हमें भी अपने बुद्धि, विचार और मन को कभी खाली नहीं रखना चाहिए। किसी न किसी सकारात्मक काम में अपने आप को लगाए रखना चाहिए।

❋ गलतियां निकालने की कला सीखें- हर कार्यस्थल पर कर्मचारी तथा अफसर एक-दूसरे में कमियां या मीन-मेख निकालते रहते हैं लेकिन ऐसी लापरवाही करने पर तनाव तथा झगड़े का माहौल बन जाता है जिससे कोई लाभ हासिल नहीं होता है।

जहां कर्मचारी कुछेक सहकर्मियों के समझ खिझानेवाली या कटु बातें करने की हिम्मत नहीं दिखा पाते हैं, वहीं अपने अफसर के सामने तो ऐसा करने की किसी की भी हिम्मत नहीं पड़ती है। गलतियां निकालने की कला का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है कि सामनेवाले को महसूस हो कि ऐसा करने का मकसद उसका भला करना है। किसी को बेवजह दु:ख पहुंचाने से किसी का भला करने के मकसद से उसकी गलतियों को सामने लाना ही इसका असली मकसद होना चाहिए। गलती करनेवालों को गलती का एहसास कराना जरूरी है लेकिन इसके बारे में उनसे सीधे सख्ती से बात करना सही नहीं होगा। वे अपनी गलती पर बात कर सकेंगे और उन्हें लगेगा कि आप सच में उनकी मदद करना चाहते हैं। कुछ अधिकारी क्रोध या जल्दबाजी में प्रतिक्रिया देते हैं। वे गलती करनेवाले को सजा देने की कोशिश करते हैं जबकि किसी भी मामले से निपटने का यह सही तरीका नहीं है। कई बार तो गलती खुद अधिकारी की भी होती है लेकिन सारा दोष अधीनस्थ काम करनेवालों पर डाल दिया जाता है जबकि वे अधिकारियों की गलती को सामने लाने की हिम्मत ही नहीं जुटा पाते हैं।

समझदार अधिकारी जानता है कि अपने अधीनस्थ काम करनेवालों की गलतियों को उजागर करने का सही तरीका है कि इसके बारे में उनके साथ अकेले में बातचीत की जाए। वे अन्य कर्मचारियों के सामने उनकी तारीफ करते हैं जबकि गलती बतानी हो तो उन्हें अकेले में बुलाते हैं और वह भी उपयुक्त परिस्थितियों में। इस कला में महारत हासिल करने के लिए शुरूआत सामनेवाले की प्रशंसा कर करना चाहिए। उसके बाद उनकी गलती उजागर करें और अपनी बात खत्म करने से पहले फिर से उनकी प्रशंसा कर दें ताकि उन्हें आपकी बातें कटु प्रतीत न हों और वे अपनी गलतियां सुधार कर अपने प्रदर्शन को बेहतर करने के लिए प्रेरित भी हो सकें।

सहकर्मी से गलती होनेपर गुस्सा करने का कोई भी लाभ नहीं होता। इस तरह से वह सुधरेगा नहीं बल्कि स्थिति और खराब होगी। अन्य कर्मचारी भी बीच में दखल दे सकते हैं जिससे मामले में तनाव काफी बढ़ सकता है। गलती निकालने की कला सिखाती है कि अपना आपा खोने के स्थान पर खुद को शांत रखा जाए और सटीक टिप्पणी की जाए। जैसे कि मैंने तुम जैसे प्रतिभाशाली नौजवान से ऐसी गलती की अपेक्षा नहीं की थी।

* कई बार लोग बिना कारण ही दूसरों से ईर्ष्या करने लगते हैं। ज्यादातर लोग दूसरे की तरक्की या उसकी तारीफ से जलते हैं। उन्हें अकारण ही ऐसा लगने लगता है कि उनकी जगह छीनी जा रही है। ऐसी सोच गलत है। दूसरों से ईर्ष्या करने का तत्काल नुकसान आपको ही भुगतना पड़ता है जिसका असर आपके कामपर पड़ता है।

* ज्यादा होशियारी कभी-कभी बहुत महँगी पड़ सकती है। कल्पनाओं की उड़ान में अगर वास्तविकता का समावेश ना हो तो कल्पनाएं धराशायी तो होती ही है साथ कल्पना करनेवाले को ही चोट लगती है।

* होशियार रहें, होशियारी भी दिखायें, लेकिन इतनी भी नहीं कि कुल्हाड़ी पर जाकर खुद पैर मार लें।

* शास्त्रों में कहा गया है कि मन संकल्प और विकल्प स्वरूप है। इसमें हर पल असंख्य विचार आते और जाते हैं और उनमें परिवर्तन होता है। इसमें परस्पर विरोधी विचारों का प्रवाह भी चलता रहता है। कभी अच्छे विचार तो कभी बुरे विचार। यह भी कहा गया है कि मन ही मनुष्य के बंधन और मोक्ष का कारण है। वह अत्यंत चंचल है, एक स्थान पर टिकता नहीं। भागता रहता है।

लेकिन कभी-कभी मन की यह चंचलता मनुष्य के हित में होती है। हमारे जीवन में कई बार विषाद और खिन्नता के क्षण भी आते हैं। ऐसे क्षणों में मन यदि दुख और पीड़ा पर ही एकाग्र होकर रह जाए तो हम उससे कभी उबर नहीं पाएंगे। लेकिन मन ऐसे अवसरों पर भी अपनी चंचलता से बाज नहीं आता और यही स्थिति मनुष्य के लिए उपयोगी सिद्ध होती है। जब मन पीड़ा देनेवाली मन:स्थिति से बाहर निकल आता है तो मनुष्य को दुख से मुक्ति मिल जाती है। वह अनेक मानसिक तथा शारीरिक व्याधियों से बच जाता है। यदि मनुष्य की सारी समस्याओं की जड़ मन की चंचलता है, तो उसकी समस्याओं के समाधान के लिए भी चंचलता ही जिम्मेदार है।

जब भी प्रतिकूल परिस्थितियों से दो-चार होना पड़े, विषाद अथवा खिन्नता से जीना दूभर हो जाए, मन की इसी चंचलता का इस्तेमाल प्रतिकूल परिस्थितियों से बाहर निकलने के लिए करें। मन को अन्यत्र स्थिर करने का प्रयास करें। दुखद स्थितियों के प्रभाव से बचने का इससे अच्छा उपाय नहीं हो सकता।

ध्यान का अर्थ ही है अनपेक्षित, अनुपयोगी घातक नकारात्मक मनोभावों से मुक्त होकर सकारात्मक उपयोगी मनोभावों से युक्त होना। जिस साधन या माध्यम से यह प्रक्रिया संपन्न हो जाए, वही ध्यान है। यदि साधना की प्रक्रिया में ऐसा नहीं होता, तो घंटों आंखें मूंदकर बगुला भगत बने बैठे रहना निरर्थक होगा। ध्यान परिवर्तन द्वारा मन का परिवर्तन और मन के परिवर्तन द्वारा तन का परिवर्तन अर्थात् ध्यान द्वारा ही संपूर्ण उपचार की प्रक्रिया संभव है।

यदि हम अपने मन को प्रतिकूल परिस्थितियों से हटाकर कहीं अन्यत्र लगाते हैं तो उससे दुखों से बचने में सहायता मिलती है। इस प्रकार ध्यान का परिवर्तन समस्याओं और चिंताओं से निकलने का अच्छा मार्ग है। इसमें ध्यान को अनचाही स्थिति से हटाकर अन्यत्र लगाया जाता है। ध्यान कहां लगाया जाए, ये भी कम महत्वपूर्ण नहीं। यदि ध्यान किसी दूसरी बड़ी समस्या या चिंता पर जा टिका तो ऐसे ध्यान का क्या लाभ?

सुख की कल्पना सुखी और दुख की याद या आशंका हमें दुखी बनाती है और धीरे-धीरे वही कल्पना वास्तविकता में

बदल कर हमारा स्थायी सुख या दुख बन जाती है।

* आजकल हर रिश्ता सच्चे प्यार के लिए तड़प रहा है। ज्यादातर वृद्ध माता-पिता की यह शिकायत रहती है कि हमारे बच्चे बदल गए हैं, उनके हृदय में पहले जैसे प्यार व सम्मान की भावना नहीं रह गई है। अक्सर बच्चों की भी अपने माता-पिता से यह शिकायत रहती है कि उनके माता-पिता के पास उनके लिए समय नहीं है। यह समस्या आजकल प्रत्येक रिश्ते में आ रही है। चाहे वे भाई-बहन हों, पति-पत्नी हो, दोस्त हो या अन्य कोई भी रिश्ता हो। भगवान ने प्रत्येक इंसान के हृदय में प्यार दिया है पर समस्या यह है कि उसे अभिव्यक्त करना हर किसी को नहीं आता। इसलिए रिश्तों में दरार पड़ती जाती हैं। अंतत: रिश्ते टूटने की कगार पर पहुंच जाते हैं। अंतत: रिश्ते टूटने की तरह अंदर ही अंदर फड़फड़ाता रहे। समस्या यह भी है कि हर इंसान सच्चा प्यार पाना तो चाहता है पर देने के बारे में सोचता तक नहीं है। अगर आप नीम का वृक्ष लगाएंगे और यह सोचेंगे कि उस पर आम का फल लगे, तो यह कैसे संभव है। इसलिए अपने हृदय के आत्मिक प्रेम को अपने अंदर छिपा कर मत रखो। उसे अपने प्रत्येक रिश्ते में अभिव्यक्त करो। प्यार को अभिव्यक्त करना भी एक कला है। अपने प्रत्येक रिश्ते को उदारता के साथ अपना प्रेम और अपनापन दें। जब आप अपने प्रत्येक रिश्ते को सच्चाई और निस्वार्थ प्रेम की भावना के साथ निभाते हैं तो किसी के ऊपर अहसान नहीं करते हैं बल्कि अपना ही भला करते हैं। निस्वार्थ प्रेम ही हमारे जीवन की असली खुराक है।

* वही व्यापार और उद्योग सबसे बेहतर है जिसमें झूठ और बेईमानी न हो। कारोबार बढ़ाने के लिए हमेशा सच्चाई की आवश्यकता है। झूठी शपथ, कस्मों से परहेज करना चाहिए।

* मनुष्यपर अधिकतर मुसीबतें उसकी ख्वाहिशों कामनाओं की वजह से आती है। उसे चाहिए कि उन पर नियंत्रण करें। इसके लिए मनुष्य के नेक काम और नेक इरादें होने चाहिए।

* हर काम करने से पहले सोचकर करना चाहिए जिसे करने के बाद कभी पछताना न पड़े।

* मनुष्य के लिए ऊंचे दर्जे की दौलत ईश्वर की भक्ति, वाणी से ईश्वर का नाम व ईश्वर का धन्यवाद करने का दिल है।

* महोब्बत एक बच्चे की तरह ही जो हर चीज की चाहत करती है जो भी उसके रास्ते में आ जाए।

* गरूर करनेवाला मनुष्य मुँह के बल गिरता है और घमंड उस मनुष्य की गर्दन भी तोड़ देता है जिसकी पीठपर उसने नाजायज कब्जा कर रखा हो।

* एक देवता की ताकत रखना बहुत अच्छा है। लेकिन उसका गलत इस्तेमाल करना अत्याचार है।

* जो बात अपने शत्रु से छुपाकर रखना चाहते हो वह अपने दोस्त से भी छुपाकर रखनी चाहिए।

* अगर मुसीबतों में मनुष्य धैर्य रखें और अपनी ईमान पर डटा रहे तो ईश्वर भी उसे अच्छा भाग्य देता है।

* खामोशी इबादत भी है और गम भी।

* कभी किसी को अपनी कमजोरियां बताकर अपना भ्रम नहीं खोना चाहिए।

* ज्ञान जाननेवाला अगर उसपर सही आचरण नहीं करें तो वह एक बीमार की तरह है, जिसके पास दवा तो है लेकिन उसका वो इस्तेमाल नहीं करता।

* दो भाइयों में कभी कलह नहीं डालनी चाहिए क्योंकि उनमें तो आपस में कभी भी सुलह हो जाएगी पर आप उन दोनों में बुरे बन जाओगे।

* अक्लमंद वो है जो कम बोले और ज्यादा सुनें और मुसीबत के वक्त तंगदिल हो परेशान न हो।

❋ हर मनुष्य को उसके कर्म का बदला मिलता है चाहे वो सजा के रूप में हो या पुरस्कार के रूप में। इस संसार में उसके अच्छे और बुरे कर्मों का फैसला होता है।

❋ इस दुनिया में ईमानवाले को ईश्वर ने खुशी और जन्नत में हमेशा रहनेवाली नेमतें दी है।

❋ किसी मनुष्य के आचरण पर जभी भरोसा करना चाहिए तब तक उसके गुस्से की परख नहीं कर ली जाएं। किसी पर भी ईमानदारी का भरोसा नहीं करना चाहिए जब तक की लालच के वक्त उसे आजमा न लिया जाएं। कम बोलना बुद्धिमत्ता है, कम खाना और कम सोना सेहत के लिए अच्छा है और अपने श्वसुरों से अपने जायज हक के लिए भी झगड़ना पड़े तो भी न्यायप्रिय रहना चाहिए। मनुष्य को कभी भी ईश्वर की रहेमतों से मायूस नहीं होना चाहिए।

❋ सुख-दु:ख की घड़ियां तो जिंदगी में आनी-जानी है, हंसी के बिना जिंदगी जीना जिंदगी से बेईमानी है।

❋ ईर्ष्या एक ऐसी आगरूपी बीमारी है जो धीरे-धीरे सुलगती है और मनुष्य की नेकियों को फना कर डालती है। मनुष्य को पता भी नहीं चलता कि उसकी नेकियां खत्म हो गयी है। यह कौनसे प्रकार की ईर्ष्या है, इसका कारण क्या है और इसके बचने के उपाय क्या है यह जानना बहुत जरूरी है। ईर्ष्या अद्‌भुत चीज है। यह कभी दुराचारी, या किसी पापी या अनाचारी, अत्याचारी व्यक्ति से उत्पन्न नही होती न कभी किसी सामान्य स्तर के व्यक्ति से होती है। यह होती है अपने लिये अधिक प्रतिभावान, गुणवान से, या अपने समकक्ष भाई-भाई से, पड़ोसी-पड़ोसी से ईर्ष्या करता है। अवगुणी से कोई भी ईर्ष्या नहीं करता। कोई भी व्यक्ति जैसी भावना पालता है उसका जीवन वैसा ही बन जाता है। ईर्ष्यालु के घर से लक्ष्मी चली जाती है और दरिद्रता को छोड़ जाती है। ईर्ष्या सुखी जीवन की शत्रु है।

❋ जो आप चाहते है उसके लिए अपने आपको समर्पित करना पड़ता है बिना इसकी परवाह किये ये होगा या नहीं। यही जीवन को जीने का सबसे सरल और अच्छा तरीका है।

❋ किसी राष्ट्र और संस्कृति की महानता उसके अतीत में नहीं होती, उस भविष्य में होती है जिसको हम संवारना चाहते है।

❋ धर्म का नशा अफीम के नशे की तरह होता है। इसलिए भगवान का स्वरूप पहचानना अति आवश्यक है। दुनिया में बहुत सारे लोग ऐसे है जो भगवान को ही ठगने की कोशिश करने में बाज नहीं आते। दुनिया के साथ ठगी, बेईमानी, धोखाधड़ी करते-करते भगवान के साथ भी सब वही करने लगे है। **देते हैं भगवान को धोखा, बन्दों को क्या छोड़ेंगे।**

❋ जिस व्यक्ति में नैतिकता नहीं हो वह व्यक्ति समाज को नेतृत्व नहीं दे सकता। समाज के प्रमुख लोग जैसा आचरण करते हैं, जन साधारण भी उसीका अनुकरण करता है। समाज की दुर्गति का कारण यह है कि समाज के प्रमुखों की आचरण में गिरावट, समाज के प्रमुख लोगों का ज्ञान और विचार जिस स्तर पर गिर गया है वह सोचनीय है। साधारण आदमी भी उसीका अनुकरण करता है। जिन्होंने किसी को कुछ सिखाने का दायित्व लिया है उन्हें ऐसा आचरण करना चाहिए जिससे उसकी अनुगामियों की प्रगति हो वे ही आचार्य कहलाने लायक होते है जिनका आचरण अच्छा हो। व्यावहारिक जीवन में यदि किसी आचार्य में कोई शूद्रता, दुर्बलता कम ही दिखाई पड़े तो उसे जन साधारण की हानि होती है। पिता का कर्त्तव्य अपने करनी तथा कथनी के द्वारा संतान को सुशिक्षित करना है आचार्य को भी अपनी करनी तथा कथनी से शिष्य को शिक्षा देना है।

❋ समता के अभाव का अर्थ है कि दूसरों के बारे में नहीं सोचना सिर्फ अपनी बात पर ही अड़े रहना अर्थात मानसिक संकीर्णता।

❋ सरकार नीतियों में बदलाव करके लोगों को आर्थिक अवसर उपलब्ध करा सकती है लेकिन किसी भी सरकार के

लिए यह संभव नहीं कि हर व्यक्ति का जीवन बदल सकें।

✻ दुनिया में हर कोई परिवार और सम्पत्ति के त्याग की बात करता है मगर अपने आपको छोड़ने की बात कोई नहीं करता। जिसके पास खोने के लिए कुछ भी नहीं रहेगा उसके मन में पकड़ने की अनुभूति भी समाप्त हो जायेगी। यह पकड़ना या परिग्रह करना सारे दु:खों की, सारे शांति की, सारे अविश्वास की जड़ है। अपहरण, लूटमार, अन्याय, शोषण यह सब परिग्रह के ही अलग-अलग रूप है। परिग्रह का मूल इच्छा और वासनाओं से होता है। आवश्यकताओं की मांग शरीर के स्तर पर होती है। इच्छा मन की चीज है। आवश्यकता की तो कोई सीमा भी नहीं होती। जब भी इच्छाएं अनंत होती है इस संसार में जितने भी खून-खराबे, दुष्कर्म हुए है उनके पीछे आवश्यकता की भूमिका नहीं है पर उनके पीछे इच्छा सक्रिय रहती है। ऐसी इच्छा जो अमर्यादित व असीमित रही है और इसी इच्छा ने अनैतिकता को पैदा किया। वैचारिक परिग्रह किसी दूसरे के विचार या दूसरे की सत्ता को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होता। दुनिया में आज दंगे फसाद हो रहे है यह इसी वैचारिक परिग्रह के परिणाम है। आदमी जब तक भीतर से बदल नहीं जाता, तब तक उसे बाहर की पीड़ा झेलनी ही होगी। जो भीतर से बदलेगा, उसके लिए इच्छा या परिग्रह का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा। तब न तो अपहरण की घटनाएं होंगी, न लूटमार। औरतें सुरक्षित रहेंगी।

✻ जिसकी तिजोरियां भरी रहती है उसे हमेशा भय बना रहता है। उसेही अपने धन की रक्षा के लिए चौकीदार रखने पड़ते हैं। जिसके पास संतोष धन है, उसपर कोई बैर ही नहीं। इस धन को प्राप्त करने में क्रोध, अहंकार, माया और लोभ बड़े अवरोधक है। क्रोध की आग में अच्छे से अच्छा व्यक्ति भी अपना विवेक खो देता है और वे क्रूरता का रंग भर देता है। वो तो यही सोचता है क्रोध मेरी सत्ता और शक्ति का प्रतीक है। इसीमें ही मेरा पौरुषत्व है। अन्याय और शोषण को सहना ही नहीं चाहिए बल्कि समाप्त करना है। असंतोष का दूसरा कारण है अहंकार। दूसरों को बौना समझना ही अहंकार का सिर है। माया में फँसकर मनुष्य का मन भ्रमित होता है। माया व्यक्ति की भाषा, क्रम और चिंतन में फरक ला देती है जिसे लोग अपनी चतुराई समझते है। संतोष का दुश्मन है लोभ। सबकुछ पा लेने की तृष्णा पाप की सीमा तक ले जाती है। वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति में जीवन के क्षणों को दांव पर लगा देता है जो क्षण उसके अमन और चैन के होते है। इसका जीता जागता उदाहरण महान सिकंदर है जिसने अनेक देश जीते, अपार संपत्ति इकट्ठी की पर जीवन का अंतिम क्षण आया देखकर उसे ज्ञात हुआ यह सब यहीं छूट रहा है और वह अकेला ही जा रहा है यही जीवन की सच्चाई है। ऐसी स्थिति के अनुभूति में संतोष ही आधारशीला है। वास्तव में संतोष मन की एक अवस्था है, जिसमें व्यक्ति संसार में रहते हुए भी उसके माया-जाल में फंसता नहीं। सारे बंधनों के बीच वैसे ही रहता है, जैसे कीचड़ के बीच कमल।

✻ आसमान की लिखाई हो या फैले हुए रेगिस्तान की यह किसी मनुष्य की नहीं हो सकती। सच्चा भक्त हर समय अपने मालिक ईश्वर की लिखावट पढ़ पाता है। इसे पढ़ने के लिए अक्षरज्ञान की आवश्यकता नहीं विश्वास की जरूरत होती है।

✻ हर बच्चा दुनिया में महान सृजनात्मकता लेकर आता है पर हम उसे पनपने का अवसर नहीं देते क्योंकि हमें सृजनात्मकता से डर लगता है। बच्चे जन्म से ही कलाकार होते है।

✻ जीवन में सभी तरह के सुख परिश्रम से ही मिलते है, बगैर कर्म किये कुछ भी प्राप्त करने की इच्छा या आकांक्षा गलत है। पर मनुष्य मेहनत और त्याग करना ही नहीं चाहता। वे तो ईश्वर को या भाग्य को ही कोसते रहता है। वह चाहता है कि बिना कष्ट उठाएं सारे सुख प्राप्त हो जाएं। वे अपने स्वार्थ के लिए जीने लगते है। इससे दूसरों से कटकर जीने से उनके भीतर निराशा, अवसाद, असुरक्षा आदि घर करने लगते है और जीवन कष्टमय हो जाता है। जो व्यक्ति दूसरों के भले के

लिए सोचता है उनके लिए अपनी संपदा त्याग करता है वह सदा सन्तुष्ट मानने योग्य है। सुख बांटने से बढ़ता है, स्वार्थ और अहंकार से ही समाज में शोषण अत्याचार और भ्रष्टाचार बढ़ता है।

❋ राम के जीवन से हम सीखते हैं व्यवस्था में बने रहो, मर्यादा का पालन करो और अन्याय से लड़ो। कृष्ण के जीवन से हम सीखते है सड़े गले नियमों को तोड़ो, व्यवस्था को बदलो और नयी व्यवस्था लाने में डरो नहीं चाहिए बदलाव की कोशिश करनी चाहिए।

❋ निष्कपट व्यक्ति छलरहित होता है पर मूर्ख कदापि नहीं। दूसरों की इच्छाओं, भावनाओं और विचारों का सम्मान करना कपटरहित व्यक्ति की विशेषता होती है। जो जैसा है उसे उसी रूप में स्वीकार करता है। नम्रता से दूसरों की सम्वेदनाओं को स्वीकार करता है पर आजके इस प्रगतिशील युग में सब अपने रिश्तों को ही ठगने लगते है। ईर्ष्या, द्वेष और छल से हम रिश्तों की सुन्दरता के सत्य को नकारते हुए स्वयं को कृत्रिम माहौल में ढालने लगे हैं और सद्भाव हमसे लुप्त हो जा रहे हैं। हम किसी की कोमल भावनाओं की ठेस पहुंचाने का प्रयास न करें।

❋ हमारे संकल्पों का पूरा न होने का एक कारण यह भी है कि हम अपने संकल्प के प्रति आश्वस्त ही नही है अर्थात् हमें विश्वास ही नहीं कि हमारा किया हुआ संकल्प पूरा भी हो जाएगा। जीवन में द्वंद्व या शंका के कारण हमारे भीतर परस्पर विरोधी विचार उत्पन्न होते हैं। विचार वास्तविकता का मूल है।

❋ खुशी का अर्थ सिर्फ अपना स्वार्थ पूरा करना नहीं है हम अपनी खुशी पाने के लिए जिन रास्तों पर चलते है, जिस तरह की सोच को विकसित करते हैं, जिस तरह की जीवनशैली अपनाते है वह हमे मंजिल की ओर नहीं भटकाव की ओर ले जाती है। हम अपनी खुशी हासिल करने के लिए उद्यम करना नहीं चाहते बल्कि दूसरों की खुशी से ईर्ष्या करते हुए अपने जीवन का एक बहुत बड़ा भाग बेकार कर दूसरों के बारे में सोचना, बहस करने में व्यथित कर देते है। दुनिया में सुख और दु:ख, अच्छाई और बुराई लगी रहती है। जब हमें सच की तलाश है तो खुशी भी मिल सकती है लेकिन जब हम सिर्फ खुशी की तलाश करते है तो हमें सच और खुशी दोनों में से कुछ नहीं मिलता।

❋ संसार में यदि कोई कठिन कार्य है तो वह है मनुष्य का जन्म पाकर इंसान बनना। यदि मनुष्य इंसान बन गया तो घराना खुद ही बन जाएगा। घराना कोई ऊंचे महल से नहीं बनता। यदि झोपड़ी में रहनेवाले का रहन-सहन और आचार-विचार अच्छा है, तो उसका घराना अच्छा है, यदि ऊंचे महलों में रहनेवाला भ्रष्ट है, व्यसनी है तो वह कुल कभी अच्छा नहीं हो सकता। एक बेहतर घराने को बनने में कई पीढ़ियां लग जाती हैं। यदि एक व्यक्ति खराब विचारों का पैदा हो जाए तो वह कुल को एक क्षण में नष्ट कर देता है। एक बच्चा गर्भ में ही मां के विचारों से संस्कारित होना शुरू हो जाता है। जीव का चरित्र ही संसार का धर्म है।

❋ संस्कार रहित विवेकहीन धर्म भी उपयोगी नहीं होता, न ही उसका कोई मूल्य है। ऐसी धर्मांधता से अनेक विकृतियों का जन्म होता है। अहिंसा और परोपकारिता की जगह अपने निहित स्वार्थों की जगह अपने निहित स्वार्थों की आपाधापी, परस्पर ईर्ष्या और आतंकवाद अपना प्रभुत्व स्थापित करते हैं। धर्म जड़ नहीं है, जिसकी सुरक्षा की जा सके। धर्म कोई जाति और संप्रदाय नहीं है। धर्म को हम खरीद नहीं सकते। धर्म एक चैतन्य परिणति है। जिसकी सुरक्षा हम उस चैतन्य परिणति के माध्यम से ही कर सकते हैं।

❋ आज हमारी शक्ति का एक महत्वपूर्ण भाग सामाजिक झगड़ों को निपटाने में लग जाता है। यदि इस शक्ति को हम आंतरिक विकास में लगाएं तो इतिहास में अपनी जगह बना सकते हैं। उपकार उस व्यक्ति पर करो जो आपत्तिग्रस्त है,

जिस पर संकट आया है। उसको जिस वस्तु की आवश्यकता है, उसे वह देकर उस पर उपकार कर सकते हैं लेकिन जैसे ही कोई व्यक्ति उपकार करता है तो उसकी गर्दन ऊंची हो जाती है। वह फिर नीचे नहीं देखता।

* अभयदान सबसे अच्छा दान होता है। हम दूसरे को तकलीफ दिए बिना, दूसरे की तकलीफ दूर करने का प्रयास करें।

* आज हर आदमी स्वार्थ में अंधा है। आपाधापी में लगा हुआ है। उसे जो भी चाहिए स्वयं के लिए चाहिए, अपने ही साथियों की कीमत पर चाहिए।

* कोई भी शास्त्र या सिद्धांत तब घातक और बेजान हो जाता है, जब वह जीवन से अलग-थलग कोई चीज बन जाता है।

* धर्म की दृष्टि सदा जीवन से जुड़ी रही है। मनुष्य का धर्मरूप उसे पूर्ण पुरुष बनाता है। दर्शन धर्म का ज्ञान रूप है, तो काव्य इसकी मार्मिकता।

* हकीकत खुद को मनवाती है मानी नहीं जाती।

* मुहब्बत एक दिल फरेब दास्तां का नाम है और सख्त से सख्त पत्थरों को भी मोम बना देती है। मुहब्बत एक मुकदस, अजीम और बहुत ही प्यारा रिश्ता है। मुहब्बत दिल के एक खूबसूरत एहसास का नाम है। मुहब्बत के लिए कोई वक्त नियत नहीं किया जाता। यह किसी भी व्यक्ति से कहीं भी, कभी भी किसी भी चीज से हो सकती है। मुहब्बत की जिंदगी में उतनी ही अहमियत है जीतना जीने के लिए सांसों की अहमियत है। मुहब्बत एक पवित्र बंधन है। मुहब्बत से इंसान की फितरत जाहिर होती है, जबकि हालात से इंसान की सच्चाई का पता चलता है।

* न्याय और नीति से कर्म करने से दोस्त अधिक और दुश्मन कम होंगे।

* गुस्सा बेवकूफी से शुरू होता है और पछतावे के साथ खत्म होता है। गुस्से की हालत में मनुष्य स्वयं नियंत्रण में नहीं होता। अगर किसी को कोई बात पर किसी बात पर गुस्सा आ जाय तो फौरन उसे नजरअंदाज करने का प्रयत्न करना चाहिए।

* नेकी एक ऐसा दीपक है जो दोस्त और दुश्मन दोनों के घर में उजाला करती है। ऐसी नेकी करनी चाहिए जिसे ज्यादा से ज्यादा लोग लाभान्वित हो।

* लिखावट एक खामोश आवाज है जो कलम और हाथ की जबान है।

* एक अच्छा मनुष्य दूसरों को तो कभी माफ कर सकता है लेकिन अपने आपको नहीं।

* किसी व्यक्ति को उसकी योग्यता से ज्यादा दुनिया में मिल जाता है तो उसका व्यवहार बर्ताव बुरा हो जाता है।

* नई बुनियादें वो लोग भर सकते हैं जो यह जानते है कि पुरानी बुनियादें क्यों अंत हो गयीं।

* अगर वृक्ष की जड़ें सलामत हो तो टूटे-फूटे पेड़ोंपर भी मौसम बदल जानेपर भी फूल आ जाते है।

* दिल पर आंख का नियंत्रण है और आँख बिगड़ने पर दिल की सुरक्षा मुश्किल है।

* अगर किसी ने तुम्हे तकलीफ देने के लिए तुम्हारी राहों मे कांटे बिछा दिये तो बदला लेने के लिए उसकी राह में आपको कांटे नहीं बिछानी चाहिए वरना दुनिया में हर तरफ कांटे ही कांटे हो जाएंगे।

* जिंदगी के विभिन्न पहलुओं को परखना और लोगों पर ऐतबार करना इसलिए नहीं छोड़े कि पहले आपको कुछ लोगों ने आपको मायूस किया है बल्कि उसमें से कोई न कोई ऐसा व्यक्ति भी होगा जो आपकी जरूरत रही होगी।

* ब्याज और हराम खानेवाले की प्रार्थनाएं कभी स्वीकारी नहीं जाती।

* ईश्वर की प्रसन्नता मां-बाप की प्रसन्नता में है।

* जो अपने ईश्वर से मांगता है वो कभी गरीब नहीं होता।

* जिस चीज का आपको ज्ञान नहीं हो उसे मत कहो और जिस चीज की जरूरत न हो उसकी खोज नहीं करनी चाहिए।

* किसीका बुरा चाहनेवाला स्वयं कभी खुश नहीं रह सकता।

* हर अच्छा काम करने से पहले असम्भव होता है।

* उन गरीब और परिश्रमी छात्राओं की मदद करके नेकी का काम करना चाहिए जिनकी माली हालत खराब होने से उनको अच्छे महाविद्यालयों में प्रवेश नहीं मिलता और वो जिन्दगी के लक्ष्य को हासिल करने से दूर रह जाते है।

* मनुष्य एक दूसरे से अन्जान हो गये है। मनुष्य को मिलाने और पुराने रिश्तों की याद दिलानेवाले एक रिश्ते का नाम दोस्ती है। दोस्त बनाए नहीं जाते बल्कि बन जाते है और दोस्त बनने के काबिल भी वो ही है जो लोग दिलों में बस जाते है। दिलों में वो ही लोग रहते है जो खुशमिजाज, नेक चरित्र और अच्छे किरदार वाले होते है।

* सच्चाई का मुकाबला दुनिया की कोई ताकत नहीं कर सकती।

* मनुष्य गुनाह उस वक्त करता है जब वह मौत को भूल जाता है।

* अगर आप लोगों से दौलत में नहीं बँट सकते तो अपने उष्ण और आचरण में ही बढ़ जाना चाहिए।

* अपने मकान की छत पर बारिश का आनंद लेनेवालों को उन गरीबों की घास-फूस से बनी झोपड़ियों का भी ख्याल करना चाहिए। जिनकी छतें मामूली बारीश में भी टपकती है।

* एक अच्छा दोस्त वो है जो दूसरों से अच्छी दोस्ती रखता हो और पड़ोसियों के लिए अच्छा पड़ोसी हो।

* चमकता हुआ दिन ही नहीं, काली रात भी हसीन होती है। एक काली रात में तारे कितने प्यारे लगते है।

* सीधी व साफ बात करने में नुकसान कम और फायदा अधिक होता है।

* किसी भी मनुष्य का यश, बड़ाई परखने के लिए यह देखना चाहिए कि उसका व्यवहार उन लोगों के साथ कैसा है जो उसे कुछ दे नहीं सकते।

* ज्ञानी उस पारस पत्थर की तरह होता है जो औरों को तो सोना बनाता है और स्वयं पत्थर बन जाता है।

* आदमी की उम्र कम और उसका काम लंबा है। चालाक आदमी वो है जो अपनी उम्र को जरूरी कामों में बिताए।

* पड़ोसियों से हमेशा अच्छा व्यवहार रखना चाहिए क्योंकि आप दोस्तों के बगैर तो रह सकते हो मगर पड़ोसियों के बिना नहीं।

* कठिनाइयों में आराम की खोज मुसीबत को और बढ़ाती है।

* तीन इंच की जुबान छ: फूट के आदमी को मारने की ताकत रखती है।

* आंसुओं का बह जाना ही अच्छा है क्योंकि यह गमों को मायूसियों में तबदील कर देती है। आंसू हर मौसम के साथी है। यह गर्मी की आग को पलभर में ठंडा कर देते है। जुदाई के क्षणों में आंसू ज्यादा गमनाक और तकलीफ वाले होते है। मुसीबत के पल में आंसू बहाना बहादुरी नहीं बल्कि बुजदिली है। यह संसार अक्लमंद की मौत पर और मूर्ख की जिंदगी पर हमेशा आंसू बहाता है। वे आंसू कितने कीमती है जो किसी की बेबसी पर निकलते है। दु:खी मनुष्य का एक आंसू खून के हजारों कतरे बहाने से बेहतर है। आंसू यह सोचकर मत बहाओ कि तुम्हारी ख्वाहिश पूरी नहीं हुई बल्किअपने अपराधों पर पश्चाताप करो कि हम कितने गुनहगार है और आंसू बहाओ।

* गुनाहों पर लज्जित होना गुनाह को मिटा देता है और नेकियों पर मगरूर होना नेकियों को बर्बाद कर देता है।

* यदि आप महान इज्जत, यश और बड़ाई कमाना चाहते है तो उन लोगों का संग करो जो ईमानदारी के साथ इज्जत व शोहरत रखते है।

* सब्र का दामन कभी नहीं छोड़ना चाहिए। सब्र और शुक्र बहुत बड़ी नेकियां है।

* मतदान की सार्थकता- लोकतंत्र में मतदान का उद्देश है- बहुमत की एक उत्तरदायी, सुयोग्य सक्षम, समर्पित्त और जनसेवी सरकार बने। सुशासन न्याय और समाजवादी व्यवस्था राजधर्म है। वास्तविकता तो यह है कि समाजकंटक छल, बल, धन और तकनीक के आधार पर विजयी होकर सत्ता हासिल कर लेते हैं और जनता देखती रह जाती है। भावुकता, जाति, वर्ग, भाषा आदि के आधार पर मतदान से बचना चाहिए अगर हम यह नहीं करते तो मतदान के योग्य नहीं है।

* कहने को तो विश्वास एक बहुत छोटा शब्द है। उसको पढ़ने को तो कुछ एक क्षण भी नहीं लगता। उसको सोचने में कुछ क्षण लगते है, समझो तो एक दिन लगता है पर किसी पर विश्वास जमाने में तो जिंदगी लग जाती है।

* दिन की रोशनी में अपनी रोजी रोटी की तलाश करो और रात के अन्धेरे में उसे तलाश करो जिसने तुम्हें रोजी रोटी दी है।

* मनुष्य का बेहतरीन गुरु उसका अपना अनुभव होता है और जिंदगी में ठोकरे मिलनेपर सर्वश्रेष्ठ शिक्षा मिलती है।

* सबसे अच्छा दोस्त वही है जो हमें अपने दोषों से परिचय करायें और सबसे बड़ा दुश्मन वो है जो हमारे मुंहपर झूठी तारीफ करें।

* जिनके साथ उम्रभर गुजारने का तय किया है उनके साथ जेहन और दिल से मिलना चाहिए।

* किसी व्यक्ति की शराफत और चतुराई परखने का एक ही उपाय है कि उसका रवैया उन लोगों के साथ कैसा है जो उसको कुछ नहीं दे सकते है।

* गम भुलाने का उपाय व्यक्ति को व्यस्त रहना चाहिए।

* अपने हर विचार और हर कर्म में अच्छाई बरतनी चाहिए।

* अगर सोच गहरी हो जाएं तो व्यक्ति के निर्णय कमजोर पड़ जाते है।

* वक्त सिर्फ उन लोगों से ही वफादारी करता है जो उसकी कद्र करना जानते है।

* उस तकलीफ को उसी समय भूल जाना चाहिए जिस किसी से आपको तकलीफ पहुँची हो। लेकिन उस तकलीफ को मत भूलो जो तुमने किसी को दी हो।

* लोग धर्म के लिए तू-तू-मैं-मैं करके झगड़ा और तकरार करते है। उसके लिए लेख और मजमून लिखे जाते है। उसके लिए मरते-मिटते है मगर उसके अनुसार व्यवहार नहीं करते।

* समाज में जितना गरीब पड़ोसी होता है उतना कोई भी नहीं। अच्छा पड़ोसी होने से अमन, शांति और प्यार मुहब्बत बढ़ेगी।

* गरीबी एक असाध्य रोग की तरह है, जिस पर कोई भी औषधि कारगर नहीं होती है, धन-ऐश्वर्य और शक्ति इसके दुश्मन होते हैं तथा भूख-पीड़ा और ग्लानि सहचर बनकर इसकी शोभा बढ़ाते है।

* व्यक्ति के उजले कर्म ही उसे सम्मानित करते है, लोकप्रिय बनाते हैं।

* बेशक बात कड़वी हो पर सच हो, तो उसे स्वीकार करने की हिम्मत रखनी चाहिए। जीवन खूबसूरती से भर जाएगा।

* आज सामर्थ्य थोड़ी है और काम कठिन है।

* शब्द जाल की उलझन से बचना चाहिए तो आचरण को मापदंड मानक बनाए।

* आदमी शहर में जाकर बुद्धिमान तो कम होता है पर चालाक जरूरत से अधिक हो जाता है।

❋ इन्तजार करनेवालों को उतना ही मिलता है जितना कोशिश करनेवाले छोड़ जाते है।

❋ वक्त के साथ एहसास मर जाते है इन्सान तो वो ही रहता है पर हालात बदल जाते है। वह अपने सपनों के साथ ही मर जाता है। वक्त के पहले श्मशान नहीं ले जाता कब तक सपनों की लाश के साथ अपनी भी लाश को ढोना पड़ता है।

❋ बीस वर्ष की आयु में व्यक्ति का जो चेहरा रहता है वह प्रकृति की देन है, तीस वर्ष का चेहरा व्यक्ति के जीवन के उतार-चढ़ाव की देन है, किंतु पचास वर्ष और उसके बाद का चेहरा व्यक्ति के अपने कर्मों की कमाई होती है।

❋ जीवन निर्वाह के लिए अपने व्यवसाय में इतने व्यस्त न हो जाएं कि जीवन जीना ही भूल जाएं।

❋ इतिहास रचने में बहुत परिश्रम और कठिनाई होती है।

❋ परिवर्तन संसार का अटल सत्य है।

❋ सच के सामने अत्याचार कभी टिक नहीं सकता।

❋ वक्त हमेशा हवाओं की तरह रूख बदलते रहता है।

❋ हद से अधिक बड़ी उलझनों की जिंदगी में सीधे रास्ते पर चलनेवाले कदम भी डगमगा जाते है।

❋ छोटे छोटे बच्चों की आँखों में भी खूबसूरत ख्वाब पलते है।

❋ दिलों से नफरत मिटाकर एक नया इतिहास नेह प्यार और दुलार का लिखें। अगर हम पंछी होते तो उड़-उड़कर यह संसार देख पातें।

❋ निंदक दूसरों को गिराने की कोशिश करता है और उसमें कभी-कभी सफल भी हो जाता है। लेकिन ऐसा करके वह अपने को उनकी ऊंचाई तक नहीं उठा पाता। वह ज्यादा से ज्यादा इतना ही कर सकता है कि उनको मिलनेवाली बरकतों को जो उसे खुद नसीब नहीं हो सकतीं उनसे छीन लेता। अगर आपका पैर फिसल जाए तो आप संभल सकते हैं। लेकिन अगर आपकी जबान फिसल जाए तो आप कभी उबर नहीं सकते।

❋ नैतिक, आध्यात्मिक व मानवीय मूल्यों को स्थापित किए बिना सच्ची स्वतंत्रता असंभव है।

❋ राजनीतिज्ञ अगले चुनाव के बारे में और कुशल राजनेता अगली पीढ़ी के बारे में सोचता है।

❋ छल और चतुराइयों के लिए हम राजनीतिज्ञों की तारीफ तो कर सकते हैं, लेकिन उनकी भक्ति नहीं कर सकते।

❋ राजशक्ति का स्थान जनशक्ति से ऊंचा नहीं हो सकता।

❋ जिंदगी में ढेरों अफसाने होते हैं और अफसाने को न तो अंजाम तक लाना मुमकिन होता है और न खूबसूरत मोड़ पर लाकर छोड़ सकते है।

❋ जिसकी आँखों में नया सवेरा हो, उमंग हो, उत्साह हो, उल्लास हो और जिसने खुद को खुशियों से सजा रखा हो, सही अर्थों में वही जिन्दादिल मनुष्य कहलाता है।

❋ क्रोध- क्रोध जीवमात्र के स्वभाव और जीवन से जुड़ा हुआ वह भाव है, जो अपनी असफलताओं, अतृप्त कामनाओं व अपनी दुर्बलताओं के कारण किसी दूसरे पक्ष के विरुद्ध उत्पन्न होता है। उग्रता की हद पार कर देनेवाले क्रोध पर यदि समय रहते काबू न पाया गया, तो उसके परिणाम अत्यंत घातक हो सकते है। क्रोध अधूरी कामना का वह भाव है, जो खुद को दूसरे से अधिक क्षति पहुंचाता है। नकारात्मक भावों के आने पर हम दूसरों के प्रति बुरा सोचते चले जाते हैं, यह खीज, निराशा और ईर्ष्या हिंसा में बदल जाती है। घटनास्थल छोड़ दें, खुद से इसका कारण पूछें और खुद को प्रकृति के हवाले कर दें, तो हम अनहोनी से बच सकते हैं। जो लोग जितना ज्यादा क्रोधी होते हैं, उनकी नींद उतनी ही उड़ जाती

है। क्रोध करना जीवन के लिए खतरे मोल लेना है, क्रोध नियंत्रण का प्रमुख तरीका यह है कि स्थिति को अपने नहीं, दूसरे के नजरिए से देखें। क्षमा करना सीखें, बीते को भूल जायें, किसी को चोट पहुंचाने की बजाय प्रशंसा से उनका मूल्यांकन करें, केवल कल्पनाओं में नहीं, वास्तविकता में जिएं।

* यदि हम अपने प्रति अत्याचार को नापसंद करते हैं तो हमें दूसरों के साथ हो रहे अत्याचार का विरोध करना चाहिए वरना एक दिन हम खुद को भी नहीं बचा पाएंगे।

* बहुत से काम खराब ढंग से करने की बजाय, थोड़े काम अच्छे ढंग से करना बेहतर है।

* अपने बच्चों को अमीर होने की शिक्षा न दें, बल्कि खुश रहने के संस्कार दें, इससे जब वो बड़े हो जायेंगे, तो वे हमेशा चीजों की कदर करना सीखेंगे, उनकी कीमतों की नहीं।

* अंतकाल में अपने पास यौवन, गांव और ठिकाना नहीं रहेगा। इस जग में केवल शुभ कार्य का यश ही रहेगा। इसलिए हमेशा परमार्थ के काम में लगे रहना चाहिए।

* हिंसा को आप सर्वाधिक शक्ति संपन्न मानते हैं तो मानें, लेकिन हिंसा का आश्रय लेने पर बलवान भी सदा भय से प्रताड़ित रहता है।

* जुनून आपसे वो करवाता है, जो आप कर नहीं सकते और हौसला आपसे वो करवाता है जो आप करना चाहते हैं। अनुभव आपसे वो करवाता है जो आपको करना चाहिए।

* सबसे अच्छा माफ करनेवाला वो है जो बदला लेने की क्षमता तो रखता है मगर बदला न लेकर माफ कर दे वो ही सबसे श्रेष्ठ है।

* यदि आप चाहते है कि सभी लोग नेक रास्ते पर चले तो इस रास्ते की तरफ चलने का पहला कदम आपको ही उठाना होगा।

* हमेशा रास्ता साफ नहीं दिखायी देता, लेकिन हमारा हौसला बुलंद है, हमारा लक्ष्य नेक और पवित्र है तो हम सही रास्ते पर चलने में अवश्य कामयाब होंगे।

* लोग जिस चीज को नहीं जानते नासमझी में वो उसके दुश्मन बन जाते है।

* थोड़ा सा काम हमेशा से उससे ज्यादा बेहतर है जो दिल की तंगी की वजह से पैदा हुए।

* अपने गुरुर को मिटाना चाहिए और मौत को याद रखना चाहिए।

* ईश्वर जिस बंदे को जलील और अपमानित करना चाहता है उसका ज्ञान और बुद्धि हर लेता है और उसे वंचित कर लेता है।

* सब्र करनेवाला इंसान जीत और कामयाबी से कभी भी महरूम नहीं होता चाहे उसे कितना भी समय लग जाएं।

* यादें एक मुस्कुराते हुए फूल की तरह है जिसे मनुष्य महसूस तो कर सकता है पर देख नहीं सकता। जो भी लम्हां गुजर जाता है वो ही हमारे लिए इतिहास बन जाता है। यादें मनुष्य को जीवन में भटकने पर मजबूर कर देती है। खूबसूरत यादें हमेशा काटने को तैयार रहती है। यादें कभी मनुष्य का साथ नहीं छोड़ती।

* न्यायवान शासक, अज्ञात दानी, नेक व अच्छा युवक ईश्वर से डरनेवाला, ईश्वर के लिए दोस्ती रखनेवाला, कुकर्म से बचनेवाला ऐसे व्यक्ति ईश्वर के निकट होते है।

* ईश्वर जिसको जलील, अपमानित करना चाहे तो उसे धन-सम्पत्ति की खोज में लगा देता है।

* जिससे तुमको सच्ची मुहब्बत होगी वो तुम्हें नाजायज और अमर्यादित कामों से रोकेगा।

❋ जब तक आपके अंदर गुरुर और गुस्सा है तबतक आप स्वयं को बुद्धिमान मत समझो।

❋ ज्ञानी धर्म और ईमान का चिकित्सक होता है। अगर चिकित्सक स्वयं रोग में फंस जाएं वो दूसरों का इलाज नहीं कर पाएगा।

❋ जो इन्सान स्वतंत्र और बेफिक्री, खुश है उसकी दिलचस्पी न दौलत में है न जमीन में।

❋ किसी की पीठ पीछे बुराई करना बड़ा अपराध है उसे कभी खुशी नसीब नहीं हो सकती।

❋ ईश्वर की भक्ति करने से संसार की परेशानियां दूर हो जाती है, बहुत सी आनेवाली बलाएं टल जाती है। चेहरे पर रौनक आती है, उम्र बढ़ जाती है। व्यापार धंदे में बरकत होती है, हर जगह मान-सम्मान मिलता है। बहुत से रोगों से मुक्ति मिलती है। आनेवाली नस्लों का फायदा होता है। इसलिए ईश्वर की आराधना में कभी लापरवाही नहीं करनी चाहिए।

❋ धन से भौतिक सुख साधन तो मिटाएं जा सकते है पर सच्ची खुशी, शांति और आनंद नहीं। यदि भौतिकता में ही सुख होता तो ऐशोआराम में रहनेवाले कोई भी व्यक्ति दु:खी नहीं होते। धन सम्पत्ति के पीछे यह गला काट अंधी दौड़ चल रही है वो सुख शांति के लिए ठीक नहीं। जीवन में धन साधन अवश्य है पर साध्य नहीं।

❋ जो भी मनुष्य किसी भी बंधन में बंधा हुआ है, पराधीन है वो कभी सुखी नहीं हो सकता।

❋ यदि व्यक्ति को काम करने में समय सीमा का डर न हो तो व्यक्ति के ऊपर आलस्य हावी हो सकता है और मानसिक तनाव बढ़ सकता है। यह स्वयं को एक चुनौती है। काम के पूरा करने के हल्के से तनाव में योग्यता की समझ विकसित होती है, स्वाभिमान बढ़ता है और प्रभुत्व का अहसास होता है।

❋ अपने को सफल होने के लिए अपने आपको जानना आवश्यक है और जो काम आप कर रहे है उसका मूल्यांकन करना और उसका लक्ष्य निर्धारित करना आवश्यक है तभी समस्या के निदान अवगत होंगे। आवश्यकता पड़ने पर बदलाव के लिए तैयार होना चाहिए। ऐसे अवसर को अपने भविष्य निर्माण के लिए उपयोगी समझना चाहिए। चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार होना चाहिए। संस्थान की परेशानियां गिनने के बजाय समाधान ढूंढने चाहिए।

❋ सच्चा संत, योगी, सद्गुरु मनपूर्वक परमात्मा के प्रकाश में विचरण करता है इसके अतिरिक्त वह न अन्य किसी वस्तु की इच्छा करता है और न ही किसीको जानता है। अपने अहंकारयुक्त विचारों, अनुभूतियों को शान्त कर लेता है और ईश्वरीय शक्ति से जगत के कार्य करता है। अनेक योगी तपस्या में लीन हो जाते है पर मुक्ति तो तभी मिलती है जब त्याग की भावना और लोकसेवा की भावना प्रबल हो। ईश्वर प्रेमरूप है और प्रेम की प्रदानता तब ही होती है जहां त्याग हो। हमारा अहंकार तो हमारी व्यक्तियों का समूहमात्र है जो हमें उस चैतन्य से दूर रखता है। आज जीवन कष्टमय हो रहा है। प्रेम और सम्वेदना एक दूसरे के प्रति खत्म हो रही है। मानव जाति के सेवा के मार्ग पर चलते समय हमें अपनी जाति-पांति, धर्म से ऊपर उठकर सोचना चाहिए और कार्य करना चाहिए। परमात्मा को खोजने की बजाय उसे अनुभव करने का प्रयास करना चाहिए। मनुष्य अपनी भौतिक तृष्णा की आवरण से जब जागता है तो ईश्वर के निकट होता है और उस ईश्वर को स्वयं में अनुभव करता है।

❋ घर में अधिक टोका टोकी क्लेश का कारण बनती है। अतिथि को बोझ न समझे और उसके आनेपर उसका स्वागत सत्कार मुस्कुराकर करें। उसे यह नहीं महसूस हो कि वो आपपर बोझ है वे बेसमय आकर आपके घरके मनोरंजन का समय बर्बाद कर दिया। जीवन में कुछ कष्ट आते जाते हैं समय के साथ समाप्त हो जाते है। उनमें समाधान की इच्छा निराशा दिलाती है। जिन बातोंपर आपका नियंत्रण नहीं उनसे समझौता, सामंजस्य करना सीखिए। हो सकता है किसी को प्रत्युत्तर देने से मन अधिक अशांत हो। इसलिए मन की शांति बनाएं रखने के लिए सुना-अनसुना कर देना ही बेहतर है। घर की समस्याओं का समाधान स्वयं को ही करना चाहिए। झिंकने और कूढ़ने की आदत छोड़नी चाहिए। छोटी छोटी

परेशानियों से विचलित नहीं होना चाहिए और उसे जीवन का एक हिस्सा मानकर आगे बढ़ते रहना चाहिए। छोटी-छोटी बातों से दु:खी होना, समस्याओं का निदान नहीं है। उनसे हंसकर मुकाबला करना ही जीवन नैया को पार लगाना है।

* कहीं ऐसे व्यक्ति होते है जो अपनी भावी सम्भावनाओं को देख नहीं पाते और जिसके चलते अपना वो अपने व्यापार का नुकसान कर बैठते है। यह तो किसी भी चीज में शीघ्रातिशीघ्र उसका फल ढूंढ़ते है। आपको दूरदृष्टि रखनी चाहिए और सफलता के लिए अपने भविष्य की योजनाओं की संभावनाओंपर दृष्टि रखनी चाहिए तो ही आपका विकास हो सकता है।

* भारत का इतिहास स्वर्णिम है पर आज भोगवाद में फँसकर देश की सभ्यता और संस्कृति खो रहा है। देश की रक्षा का भार वहन करनेवाले ही कानून की आड़ में भक्षक बने हुए है। धन धर्म पर जीत प्राप्त कर रहा है। आज भी गरीबों के घर रोशन नहीं है। वह तो गरीबी में ही पिसते जा रहा है। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीन संस्कृतियों में से एक है। भारतीय परिवेश में झलकता है संस्कृति का हर अंश हमारी अमूल्य धरोहर है। विश्व में इसी संस्कृति के कारण हमारी पहचान है। वर्तमान समय में हम उपभोक्तावाद, भौतिकवाद की चपेट में आकर अपने सांस्कृतिक मूल्यों को भूलते जा रहे है। हमारे आज की जरूरत है पुरानी संस्कृति और आधुनिकता का सही सामंजस्य दोनों का तालमेल बिठाना। युवा पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति की ओर बढ़ रही है। हमारे संस्कार, संस्कृति, सभ्यता परंपराओं को भूलते जा रही है और उन्हें मिटाने पर आमदा है। आज की युवा विलासितापूर्ण जीवन जीना पसंद करते है जो कि विकास के लिए सही नहीं है और न ही हमारी संस्कृति उजागर होनेवाली है।

* मनुष्य में देखने, सुनने, सूंघने, चखने और छूने में एक भी खूबी बेकाबू हो जाये तो मस्तिष्क में मौजूद तमाम खूबियां नष्ट हो जाती है।

* ऐसे फायदे से बचो जिससे किसी दूसरों का नुकसान हो।

* धन-दौलत जमा करना आसान है लेकिन उसको सम्भालना बहुत मुश्किल है। जहां तक मुमकिन हो धन-दौलत की कामना मत करो।

* दुनिया एक बगीचा है और ईश्वर उसका मालिक है। वो हर एक की खबर रखता है, उससे कोई वंचित नहीं होता।

* बुढ़ापा पूरी जिंदगी की खुशियों को खत्म कर देता है, पर हवस को और अधिक बढ़ा देता है।

* जो तुमसे नीचा हो उसे नर्मी से व्यवहार करो और जो अपने से ऊंचा हो उसका सम्मान, आदर करो।

* किसी की गलती को माफ कर देना कभी-कभी मुजरिम को अधिक खतरनाक बना देता है।

* जिस व्यक्ति ने अपनी इच्छाओं पर काबू पाया वो व्यक्ति उससे अधिक शक्तिशाली है जिसने एक शहर को अकेले जीत लिया।

* सबसे बेहतर व्यक्ति वो है जो ऐसे लोगों से अच्छा व्यवहार करें जिससे कोई आसान ना हो।

* बदला लेने की ताकत रखते हुए भी गुस्से को पी जाना सबसे ऊँचा संघर्ष है। जो गुस्से को बर्दाश्त कर जाता है वही श्रेष्ठ है।

* उस व्यक्ति पर अत्याचार करने से बचना चाहिए जिसका ईश्वर के सिवाय कोई नहीं।

* लोगों से बेवजह बहस नहीं करनी चाहिए वरना आपका मान सन्मान भी खत्म हो जायेगा।

* एक प्यार भरा स्पर्श हजार शब्दों से अधिक है। किसी को सहज भाव से छुआ भी दूसरे की निजी क्षेत्र में घुसपैठ करने जैसा है। स्पर्श सबसे पहली भाषा है जब हम सिखते है। बालक शब्दों की जटिल दुनिया में प्रवेश करने से पहले स्पर्श की भाषा सिखता है जो अपनी माँ से प्राप्त करता है। इसे कहते है प्रेम और सहायता की अशाब्दिक अंतर्धारा। महिलाओं को भी वासनारहित स्पर्श बहुत प्रिय लगता है। यदि पुरुष बिना वासना मस्तिष्क में लाये स्पर्श करता है तो

रिश्ते और मधुर बनते है। एक भावपूर्ण स्पर्श कहीं तरह के तनाव से मुक्त कर देता है।

✻ दूसरों का हम पर विश्वास होना हमारे आत्मविश्वास की प्रतिच्छाया है। जैसे आपका विचार होता है वैसा ही परिणाम मिलता है। हमारे मन की प्रवृत्ति ही वह साधन है जिसके द्वारा हम दूसरों का विश्वास जीत सकते है। हम अपने व्यक्तित्व को आत्मविश्वास के साथ दूसरोंपर प्रभाव डाल सकते है। यह वह गुण है जिससे मनुष्य की प्रतिष्ठा स्थापित होती है। ऐसे मनुष्य सृजनात्मक गुणों से लुप्त होते है और ऊंचे चरित्रवाले होते है। जब भी कोई काम हाथ में लेते है तो उन्हें पूरा करने की अपनी योग्यता पूर्णरूप से लगा देते है।

✻ किसी भी कार्य में असफल होने पर भाग्य को दोष मत दे। पूरी शक्ति व निष्ठा के साथ लक्ष्य की प्राप्ति में फिर से जुट जाना चाहिए। अपनी दृष्टि लक्ष्य पर केंद्रित रखनी चाहिए। एकाकीपन, भय, संकोच, भावुकता और हीन भावना जैसे अवगुणों को अपने में नहीं आने दे। एक बार लक्ष्य तय कर लेने के बाद उसे हासिल करके ही रहना चाहिए। सफलता पाने की इच्छा, लगन और इसके लिए परिश्रम पर निराशा या आलस्य की छाया न पड़ने दें। सही दिशा में मेहनत, लगन और एकाग्रता से बेहतर मंत्र कुछ भी नहीं। समय का महत्व समझे एक-एक पल को उपयोग में लाये और यदि पहले प्रयास में सफलता नहीं मिली और निराश होकर पछताना या रोकर समय बर्बाद नहीं करना। हर व्यक्ति के जीवन में अवसर कभी-न-कभी दस्तक देता है। उस क्षण को पहचानने की कोशिश करें, सफलता मिले या असफलता हमेशा नये अवसर की खोज जारी रखें। लक्ष्य निर्धारित करने के बाद उसे हासिल करने के लिए ठोस रणनीति बनाएं। ऐसा न हो कि आपकी रणनीति के ढुल-मुल होने की वजह से आप सफलता से वंचित रह जाएं। एक से अधिक लक्ष्य होने की स्थिति पर प्राथमिकता व लक्ष्य पहले निर्धारित करें उसे निष्ठा व लगन के साथ हासिल करने का पूरी समीक्षा के साथ प्रयास करे और कमियों को सुधारें। लक्ष्य तय करने पर दिग्भ्रमित न हो। व्यक्ति को सफलता तभी मिलती है जब लक्ष्य उसकी रूचि, योग्यता और क्षमता के अनुसार निर्धारित किया गया हो। लोगों से सम्बन्ध बनाना, उन्हें मजबूत रखना, संयोगी दल से सही काम लेना तभी इसका लाभ प्राप्त होता है।

✻ साक्षात्कार के समय वाणी और भाषा में सुधार होना चाहिए। जो भी आप बोलते है उसके वाक्यों, शब्दों के चयन, उच्चारण सही होना चाहिए। सिर्फ अंग्रेजी बोल लेना ही काफी नहीं है उसका उच्चारण, सही और समृद्ध शब्दावली होनी चाहिए। सम्वादकला में भी आपको प्रवीण होना चाहिए। आप जो कहना चाहते है उसे सही ढंग से कह पाते है और दूसरों से आसानी से समझ पाते है। दूसरे की बात धैर्य से सुनने की आपको अपने अंदर रखनी चाहिए। अपनी बातचीत पर किसी अनुभवी व्यक्ति से सलाह मांगनी चाहिए।

✻ जब कोई गम या दु:ख पड़े तो इंसान को घबराने, रोने-धोने की बजाय सब्र से काम लेना चाहिए और ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए।

✻ जहां तक संभव हो हर एक से नेकी करनी चाहिए भले वो अच्छा हो या बुरा।

✻ जिसने अत्याचारी को सहयोग किया वो सबसे बड़ा पापी और अपराधी है।

✻ केवल जागरूक और बलवान व्यक्ति ही इस दुनिया में आनंदमय जीवन के अधिकारी है।

✻ जरूरतें कम करोगे तो राहत मिलेगी।

✻ अपने धन दौलत पर ही संतोष करो, सब्र करो दूसरों के धन-दौलत पर बुरी नजर मत डालो।

✻ झगड़ा बढ़ने से पहले ही आप झगड़े के स्थान से निकल जाओ।

✻ क्रोध बुद्धि को खा जाता है। झूठ रोजी (जीविका) को खा जाती है।

✻ तमाम जीवों में सबसे कमजोर प्राणी मनुष्य का बच्चा होता है और मनुष्य पूरी मानवजाति में सबसे बड़ा गुणवाला होता है।

✻ क्रोध की आग बुझाना ही यथार्थ में मस्तिष्क के तापमान का नियंत्रण है।

✻ शतुर्मुर्ग के सामने जब भी कोई संकट आता है तो वह अपना सिर रेत के भीतर छुपा लेता है यह समझकर की वे सुरक्षित हो गया है पर यही गलतफहमी उसे शिकार बना देती है।

✻ जो महान बनना चाहते है उन्हें अपने काम से प्रेम करना चाहिए न कि स्वयं से।

✻ सिंहोंके वंशज गीदड़ से कभी विनती नहीं करते, उसी तरह यदि दुश्मन बलशाली हो तो भी युद्ध में उसकी प्रशंसा नहीं की जाती।

✻ ईश्वर अचल सत्य है, उसका विश्व कभी अराजक नहीं हो सकता।

✻ सिर्फ विचार से तत्वज्ञान नहीं मिलता, उसके लिए साधना करनी चाहिए।

✻ गुरु की ताड़ना पिता के प्यार से अच्छी है।

✻ जिन मनुष्यों को किसी चीज की आवश्यकता नहीं होती, वही बादशाह होते हैं।

✻ भूतकाल के ज्ञान और कष्ट के आधार पर भविष्य जाना जा सकता है।

✻ जिस मनुष्य को अपने मनुष्यत्व का भान है वह ईश्वर के सिवा और किसी से भय नहीं करता।

✻ यश का मार्ग स्वर्ग के मार्ग की भांति अत्यन्त कष्टमय है।

✻ जिसमें लोभ है, उसे दूसरे अवगुण की क्या आवश्यकता है।

✻ जो शरीर को काबू में रखता हुआ जान पड़ता है, किन्तु मन के विकार को पोषण किया करता है, वह मूढ़ मिथ्याचारी है।

✻ विधि सम्पत्तिवान के लिए सदैव उपयोगी है, जिनके पास कुछ भी नहीं है उनके लिए अप्रिय है।

✻ कोई तलवार इतनी बेदर्दी से नहीं काटती जितना कि व्यंग्य।

✻ स्वाभिमानी पुरुष शत्रुओं का समूल नाश किए बिना उन्नति नहीं प्राप्त कर सकते।

✻ मन ही संसार है। प्रयास करके उसी को शुद्ध करना चाहिए। जैसा मन होता है वैसा ही मनुष्य बन जाता है। यह सनातन रहस्य है।

✻ बिना अवसर प्राप्त हुई योग्यता से लाभ कम होता है।

✻ लज्जा का आकर्षण सौन्दर्य से अधिक होता है।

✻ उन कामों से सदा दूर रहो जिनसे न यश मिलता है न लाभ।

✻ राज्य पद हमें स्वाधीन नहीं बनाते बल्कि हमारी आध्यात्मिक पराधीनता को और भी पुष्ट कर देते हैं।

✻ मनुष्य जैसा अपने हृदय में विचारता है वैसा ही बन जाता है।

✻ जो कुछ मिले उसी में सन्तोष तथा दूसरों से ईर्ष्या न करना ही शांति की कुंजी है।

✻ किसी प्रिय लगने वाली किन्तु साथ ही अनिष्टकारी चीज को तजने का अभ्यास संयम है।

✻ सफलता में दोषों को मिटाने की विलक्षण शक्ति है।

✻ समाज को प्रसन्न करने के लिए बुद्धि के दोनों चक्षुओं को अधिक अंधा नहीं करना चाहिए।

✻ जो दूसरों की इच्छा का दास नहीं है, वह अत्यन्त सुखी है।

✻ लोग जाति और देश के सेवक तो बनना चाहते हैं, पर जरा भी कष्ट नहीं उठाना चाहते।

❋ सूरज से भी अच्छा स्वभाव को सुंदर होना चाहिए। बहुत से लोग प्रत्यक्ष रूप से सुन्दर नहीं भी दिखते वे आन्तरिक रूप से असीम सुन्दर होते है। अपने सुन्दर स्वभाव व आचरण के कारण वे सभी में लोकप्रिय होते हैं। सभी लोगों से बात करना, मिलना और मित्र बनाना पसन्द करते है। सुन्दर व्यक्तित्व के स्वामी होने के बाद समाज में वह अपनी छाप बना देते है। फिर भी अगर पहचान नहीं बना पाते तो लोग यही कहेंगे कि उस व्यक्ति का स्वभाव कितना बुरा है, बहुत घमंडी और क्रोधी स्वभाव का है। स्वभाव की सुन्दरता स्थायी सुन्दरता होती है जिसका प्रभाव अन्य लोगोंपर बहुत समय तक रहता है। शारीरिक सौन्दर्य का प्रभाव क्षणिक और अस्थायी होता है। मनुष्य वैसा ही बन जाता है जैसा अपने मन में विचार रखता है। मन को सुन्दर बनाने के लिए पवित्र विचारों का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

❋ वो मुस्कान खूबसूरत है जो दूसरों को खुश देकखर खिल जाए। खूबसूरत है वो दिल जो किसी के दुख में शामिल हो जाए।

❋ पहली पीढ़ी कमाती है, दूसरी जोड़ती है, तीसरी गंवाती है।

❋ इच्छाएं दुखों का कारण बन जाती है। व्यक्ति के परेशान और दुखी होने का कारण उसकी अधूरी और अपूर्ण इच्छाएं है। जिसने मन को नियंत्रण किया है वो अपनी इच्छाओं को पूरी करने के लिए इच्छाओं के पीछे नहीं भागता। मन का अपना कुछ नहीं होता, यह तो आसपास का वातावरण करता है। मन तो इच्छाओं को जगाने और उसको बढ़ानेवाला होता है। इच्छाओं को अपने दिल में कभी भी जगह मत दो यह बड़े जख्म देती है।

❋ आजकल हर व्यक्ति के अतिरिक्त कार्य है। कार्य को समय पर पूरा करने का दबाव भी और काम समय पर पूरा न होने पर मानसिक तनाव होना सामान्य बात है। व्यक्ति तनाव में घर जाता है और घर की परेशानी से और तनावग्रस्त हो जाता है। तनाव जीवन का नाश करता है, इससे दूर रहे तो ही अच्छा है।

❋ स्वयं को जाने व अपनी प्रतिभा, क्षमता व सीमाओं को पहचानें।

❋ हमेशा सकारात्मक चिंतन करें, नकारात्मक सोच से ऊर्जा नष्ट होती है।

❋ जो है उसमें संतोष करें व कर्म करने में पूर्ण विश्वास रखें।

❋ उत्साह एवं आत्मविश्वास के साथ काम करें। व्यवस्थित दिनचर्या की आदत डालें।

❋ सदैव वर्तमान में जीएं भूत व भविष्य की व्यर्थ चिंता न करें। सदैव प्रसन्नचित्त रहें और हंसते-हंसते जीना सीखें। साधा व सरल जीवन जीएं। जीवन में गुणवत्ता पर विश्वास रखें, दिखावें से बचें।

❋ अपने शौक को विकसित करें, समय की पाबन्दी का प्रबंधन करें और हमेशा वाणीपर संयम रखें। धैर्य व आत्मनियंत्रण रखें, परिवार के साथ हंसी-खुशी का माहौल बनाएं रखें।

❋ दूसरों से स्वयं की तुलना न करें, अच्छे और सच्चे मित्र बनाएं। इससे आप संतोषप्रद जीवन जीएंगे।

❋ स्वगुणों पर अच्छी पकड़, स्वत: दुर्गुणों का निष्कासन कर देती है। दूसरों के गुणों पर टिकना भी सहज हो सकता है। वर्तमान में समस्याओं का होना स्वयं से विचलित होने का परिणाम है। हमें पूर्ण ईमानदार और तटस्थ होना चाहिए। हमें अपने गुण नैतिक मूल्यों के साथ रखने चाहिए तो वास्तविक सही और सच्चे अनुभव होंगे और हमारे यही अनुभव देश, समाज के सकारात्मक विकास की आधारशिला बनेगी। इसलिए हमें स्वयं के प्रति निर्भीक और आत्मविश्वास के साथ ईमानदार बनना चाहिए।

❋ कुछ देर अपने आपके साथ रहो बाहर की दुनिया से हटकर कुछ देर अपने आपके साथ देखो। तब हम अपनी जिंदगी में प्रेम, आनंद, शाश्वत शांति और खुशी से भरी पाएंगे। हम सोचते है कि खुशी हमें बाहर मिलेगी। यह धन दौलत, नाम,

प्रसिद्धि, जायदाद और संबंधों से मिलेगी पर सच्ची खुशी तो आपके अंदर है। जब हम उसे अपने अंदर खोजेंगे तो अपनी जिंदगी प्रेम, आनंद, शाश्वत शांति और खुशी से भरी पाएंगे।

* शक्ति पतन की ओर ले जाती है। शक्ति से हमेशा सावधान रहना चाहिए। शक्ति के साथ जो रौब रुतबा आ जाता है उसके शिकंजे में कभी नहीं फँसना चाहिए।

* इस भागते समय ने मनुष्य ने मनुष्यता को छीन लिया है। हममें आज न तो ठहराव है और न ही कोमल भावनाओं के लिए हृदय में स्थान है। आज प्रेम, करुणा, संवेदना, तर्कबुद्धि और मानवीय एकता के सहज संबंध शिथिल पड़ गए। समाज में गुण और गुणों की कीमत घट गयी। सामाजिक, सांस्कृतिक विकास की कीमत पर अधिक पर अधिक भौतिक सुख साधन जुटाने की अंधी दौड़ शुरू हो गयी। व्यक्ति औरसमूह के द्वन्द्व में व्यक्ति पिछड़ गया। साहित्य अपना स्थायी भाव और आकर्षण त्यागकर समाज के लिए निरर्थक हो गया। आज की पीढ़ी ने सभ्यता और संस्कृति को अनावश्यक मानकर छोड़ दिया। अपनी महान परंपराओं को लेकर चलने की घोषणा के बावजूद भी हम मानवीय संवेदना में खाली होते गए। देश का बुद्धिजीवी वर्ग सुविधाभोगी बन गया। आज किसीको किसीपर विश्वास नहीं रह गया। प्रतिद्वंदिता के लिए अनवरत दौड़ है, प्रगति के लिए गति से दौड़ रहे है। किसीको विराम और विश्राम नहीं है। अमीर, गरीब, सभ्य-असभ्य, छोटे-बड़े, विद्वान-मूर्ख सभी भयभीत है, कुंठित है, असंतुष्ट है और शंकित है। इसलिए हमारी कथनी और करनी में भारी अंतर आ गया है। इसके फलस्वरूप अपराधों में, रिश्वतखोरी, कामचोरी, भाई भतीजावाद, अलगाववाद, ईर्ष्या, दाह और भ्रष्टाचार का बढ़ावा है। हर चीज में मिलावट है। मनुष्य की सोच में भी मिलावट है, व्यापार में मिलावट है और तो और हमारे चरित्र में भी मिलावट है। जब तब देश को सही सफल नेतृत्व करनेवाला नेता नहीं मिलेगा तब तक हम ऐसे ही पिछड़े रहेंगे। ज्ञान दौलत कमाना तो सिखा दे पर सही जिंदगी बिताना न सिखाएं तो बेकार है इसलिए सबसे पहले मनुष्य बनने और बनाने की चिंता करनी चाहिए ताकि समाज में शैतानी भेड़िएं समाप्त हो और मनुष्य का समाज फिर से प्यार, मुहब्बत, एकता और भाईचारे से महक उठे।

* धन-दौलत को बांटना दान नहीं है, बल्कि लोगों को भलाई के लिए कहना और बुराई से रोकना भी उत्तम दान है।
* आप जैसे भी है वैसा ही स्वयं को प्रकट करो वरना आपकी असलियत लोग प्रकट कर देंगे।
* किसी भी काम का परिणाम सोचकर करो क्योंकि हर परिणाम के पीछे अंजाम होता है।
* अमीरी लानत है यह ईश्वर से गाफिल करती है। गरीबी नेमत है उसको सब्र और शुक्र से स्वीकार करनी चाहिए।
* बुद्धिमान बिना भूख के कभी खाना नहीं खाता।
* जिस नेमत की कदर न की जाये वो नेमत ही खत्म हो जाती है।
* जिस काम को पूरा करने की क्षमता न हो उसे अपने जिम्मे मत लो।
* मनुष्य होकर शैतान का काम करना मनुष्यता की तौहीन है।
* जुबान ठीक हो जायें तो दिल भी ठीक हो जाता है। जितने भी अपराध होते है जुबान से ही होते है।
* ज्ञान से मनुष्य के अन्दर का सन्नाटा दूर हो जाता है।
* जो आशा आप दूसरों से रखते हो पहले स्वयं पर आजमाकर देखो।
* वफा एक ऐसा दरिया है जो कभी सूखता नहीं।
* किसी का दिल दुखाना बहुत बड़ा अपराध है।

HHH(४०४)HHH

* किसी के बारे में भी बुरा मत सोचो हो सकता है कि वो आपसे भी अच्छा हो।

* दुनिया की मुहब्बत हर भूल की जड़ है।

* दुनिया की इज्जत धन-दौलत सम्पत्ति से नहीं होती बल्कि अपने आचरण और कर्मों से होती है।

* हया के साथ सभी नेकियां और बेहयाई के साथ सभी बुराइयां जुड़ी होती है।

* आत्मा की गहराई से निकली हुई बात दिल की गहराई तक जाती है।

* नेक चलन से इज्जत और बदचलन से पतन होता है।

* गलतफहमी उस प्रकार होती है जैसे कश्ती के अंदर बूंद बूंद रिसता पानी आखिर में नांव को ले डूबता है।

* किसी के गम में शामिल होने से गम दूर होता है और मुहब्बत में शामिल होने से मुहब्बत बढ़ती है।

* तौबा करना आसान है पर गुनाह छोड़ना मुश्किल है।

* ऐसी खुशियों से हमेशा दूर रहो जो बाद में कांटे बनकर दुख देगी।

* आप बुराइयों से बचना चाहते हो तो अच्छे लोगों में बैठना-उठना सीखो उनकी संगति से आपके सारे काम अच्छे होंगे।

* आपकी जिंदगी का महत्व तभी बढ़ेगा जब आप जरूरतमंदों की तरफ अपना हाथ बढ़ाएंगे, कमजोरों का साथ देंगे और ताकतवरों के अत्याचार से बचाएंगे।

* ज्ञान से अनगिनत दोस्त बनते हैं जबकि दौलत से दुश्मन अधिक बनते है। ज्ञान की चोरी का डर नहीं, धन-दौलत चोरी हो जाती है। ज्ञानवाला इज्जतदार कहलाता है जब की धनदौलतवाला कंजूस। ज्ञान खर्च करने से बढ़ता है जब कि दौलत खर्च करने से खत्म हो जाती है। ज्ञान से मनुष्य में मनुष्यता बढ़ती है, दौलत से मनुष्य में लालच बढ़ता है। ज्ञान मनुष्य की सुरक्षा करता है जबकि दौलत की रखवाली आदमी को स्वयं करनी पड़ती है।

* झूठ बोलना एक घिनौनी और बुरी आदत है। झूठा दुनिया में भी अपमानित होता है। झूठों की बात पर लानत है और वह ईश्वर की रहमतों से वंचित हो जाता है। दुनिया में जलील और अपमानित होता है। झूठ बोलनेवाला बीमारियों का शिकार अधिक होता है। हर जो बात हकीकत के खिलाफ है वह झूठ है वह हर झूठ हराम है। आज के दिन कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसका झूठ बोले बिना दिन गुजरता हो। छोटे-बड़े सभी कभी न कभी अपनी बात रखने के लिए झूठ का सहारा लेते है और झूठे लोग बार बार कसम खाकर दूसरों को अपनी बात का यकीन दिलाते है। लगातार झूठ बोलने से मनुष्य उसका आदी हो जाता है और छोटी छोटी बातों में झूठ बोलने लगता है जो दिल के लिए खतरनाक है। गुनाह दिल को बेचैन रखता है और झूठ बोलना भी गुनाह है। झूठ अगर एक आदत बन जाए तो मनुष्य उसके शिकंजे में फँसते चले जाता है और बाहर नहीं निकल पाता और उसके सारे राज खुल जाते है। झूठ बोलने का पहला नुकसान है कि झूठ बोलनेवाले की सच्ची बातों का भी कोई विश्वास नहीं करता। झूठ एक ऐसी चीज है जो दोस्तों के सम्बन्ध को कांट देती है। ऐसी दीमक है जो मनुष्य के सच्चाई को खा जाती है। झूठ बोलनेवाला खुद को कभी भी खुश या संतुष्ट नहीं कर सकता। न ही अपने आपको कभी माफ कर सकता है। झूठ बोलनेवाला शैतान का दोस्त है। झूठ एक गुनाह है जो तमाम गुनाहों की जड़ है। झूठ एक ऐसा जहर है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व को खत्म कर देता है।

* छोटी छोटी बातों से ही रिश्ते बनते और बिगड़ते है।

* फुर्सत शब्द किसी काम को टालने का ही दूसरा नाम है। जब कोई काम करने की इच्छा न हो तब आप कहेंगे कि या तो अभी फुर्सत नहीं है और यह काम फुर्सत में करेंगे। हकीकत में यह फुर्सत कभी आती ही नहीं है।

✻ अकेले काम करने की बजाय अपने सहयोगी दल के साथ काम करें तो आपका काम जल्दी और आसन होगा।

✻ दुनिया बन्दों की बन्दगी से हर कदम पर राह मिलती है और अगर मंजिल की राह नहीं मिल पायी तो हमेशा आह मिलती है। नफरत की आंखोंपर पट्टियां बांध देना ही बेहतर है क्योंकि नफरत से खुबसूरत दुनिया भी काली स्याह लगती है।

✻ जमाना जब भी मुश्किल में डाल देता है तो ईश्वर उसके लिए हजारों रास्ते निकाल देता है।

✻ ईश्वर और धर्म के नाम के शब्द लोगों को बहुत भ्रमित करते है।

✻ कभी खुद पर घमंड नहीं करना चाहिए, क्योंकि जब ताश का खेल खत्म होता है तो बादशाह और गुलाम दोनों एक ही गड्डी में रख दिए जाते हैं।

✻ भाषा का प्रयोग आदमी की सोच दर्शाता है।

✻ कभी कभी आंखों से देखा और कानों से सुना भी झूठ होता है।

✻ लक्ष्य को पाने के लिए प्रतिस्पर्धा का माहौल अत्यंत आवश्यक है। एक-दूसरे के आगे निकलकर अपना मुकाम हासिल करने की इच्छा ही प्रतिस्पर्धा है। इससे तरह-तरह की ज्ञान और सूचनाएं खामियां हासिल होती है। प्रतिस्पर्धा किसी व्यक्ति को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। जज्बा पैदा करता है। जिंदगी में किसी भी मुकाम को हासिल करने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

✻ जीवन एक प्रकार का संघर्ष है। इसमें हर क्षण-क्षण में विपरीत परिस्थितियों से कठिनाइयों से जूझना पड़ता है। मनुष्य को अपरिमित विरोधी-तत्वों को पार करते हुए अपनी यात्रा करनी पड़ती है। उसका अपना जीवन कठिनाइयों से घिरा हुआ प्रतीत होता है। उसे लाचार होकर इसे स्वीकार करना ही पड़ता है। गरीब लोग अमीरोंद्वारा दुर्बल बलवानों द्वारा सताएं जाते हैं। अगर इनसे बचना है तो अपनी इस दुर्बलता को हटाकर इतनी शक्ति अवश्य संचय करनी चाहिए कि दूसरा कोई हमें चट न कर जाएं।

✻ हर व्यक्ति में कोई न कोई ऐब तो जरूर होता है। अक्लमंद मनुष्य अपना दोष स्वयं महसूस कर लेता है और उसे दूर करने का प्रयत्न करता है। जबकि मूर्ख व्यक्ति के ऐब को दुनियावाले महसूस करते है और उस व्यक्ति से दूर ही रहते है।

✻ अपनी वाणी को नियंत्रण में रखना चाहिए और बोलने में लापरवाही नहीं करनी चाहिए। लापरवाही से निकल जानेवाली बात कभी वापिस नहीं आती।

✻ हमारे जज्बात समय के तौर पर भले ही मजबूत बनाते हों, मगर बाद में इनकी वजह से हमें हमेशा के लिए कमजोरी का सामना करना पड़ता है।

✻ कुछ ऊंचे व्यक्तित्ववाले लोग उन गुलाब की तरह होते है उनका नाम लेते ही हमारे आसपास के माहौल में खुशबू फैल जाती है और कुछ लोग घटाओं की तरह होते है जो दूसरों पर इस तरह बरसते है कि जिन्दगी की कड़ी धूप नर्म छांव में बदल जाती है। कुछ लोग निगाहों की तरह होते है अगर वो साथ होते हैं तो अंधेरे में भी रास्ते मिल जाते है।

✻ जिंदगी बहुत खूबसूरत है जिसकी सुन्दरता छोटे-छोटे खुशियों में छुपी हुई है। वो खुशियां बारिश की बूंदों की तरह हमपर बरसती है। हम उन बूंदों को जमा करें तो यकीनन खुशी से भीगते चले जायेंगे। पर दु:ख है कि जिंदगी में बड़े-बड़े लक्ष्य मुकर्रर कर लिए हैं, जैसे बहुत पैसा आ जाए, कोई पद मिल जाएं, संतानें हो ये जरूरी नहीं कि हर खुशी पूरी हो। सच्ची खुशी के लिए दूसरों के काम आया जाएं। भलाई की असली सुन्दरता शिष्टता और आचरण में है जिन्हें आमतौर पर नजरअंदाज कर लिया जाता है। किसी दूसरे की परेशानी में दिलजोई और हौंसला बंधाना, अच्छा मशवरा देना यह सब

दिलीखुशी हासिल करने के जरिएं है जिनको अपना घर खुशी और शांति हासिल हो सकती है।

* आज लोग दूसरों की नजरों में अपने को बड़ा बनाने, अपनी शान, शौकत और दिखावे के लिए फिजूलखर्ची करते है। जिसकी वजह से अधिक दौलत कमाने के लिए लोग सीधे रास्ते पर चलने की बजाय टेढ़े रास्तों को अपनाने में डर व खौफ महसूस नहीं करते। क्योंकि आज दौलत ही समाज में स्तर का प्रतीक है। कम में गुजारा करने का सबक अब सिर्फ किताबों में ही रह गया है। धन की लालच ने मनुष्य की मनुष्यता और आपसी प्रेम को खत्म कर दिया है और एक दूसरे का प्रतिद्वंद्वी बना दिया है। एक दूसरे पर अपने दबदबे को कायम रखने के लिए धन को जरूरत से ज्यादा खर्च करना अपनी शान समझते है। यह मनुष्यता की गिरावट और सामाजिक मूल्यों का पतन है। जिसके पास दौलत नहीं है उसे समाज में कमतर समझा जाता है। इसके चलते समानता का भाव समाज से लुप्त होते जा रहा है। समाज में परेशान, भूखे गरीब लोगों की तरफ कोई ध्यान नहीं देता। समाज के कुछ लोगों के पास जरूरत से ज्यादा दौलत हो तो जरूरत मंद और गरीबों को देनी चाहिए और अमीरी-गरीबी की खाई पाटनी चाहिए। आज समाज में संतुलन पैदा करना आवश्यक है। अपनी ईमानदारी से कुदरती नियमों का पालन करना चाहिए। जरूरतमंदों को कभी भी अपनी चादर देखकर ही पांव पसारना चाहिए। अर्थात झूठी शानशौकत से दूर ही रहना चाहिए। फिजूलखर्ची और दिखावा छोड़ने से घर में खुशहाली आती है और शांति मिलती है। सामाजिक असंतुलन होने से हिंसा, लूटपाट, चोरी, डकैती, छीना झपटी और भ्रष्टाचार जन्म लेता है।

* रंगों का जीवन में बहुत बड़ा महत्व है यह सृष्टि का अनमोल तोहफा है। साहित्य में जो स्थान नौ रसों का है वही स्थान रंगों का हमारे जीवन से जुड़ा है। रंग हमारे व्यवहार और मिजाज को प्रभावित करते है और प्रदर्शित करते है।

* अपनी बात रखने के लिए मनुष्य कितने झूठ बोलता है, झूठ बोलकर जीत जाने से बेहतर है कि सच बोलकर हार जाना।

* मनुष्य का व्यक्तित्व उसके चरित्र से बनता है। चरित्र में दाग लग गया तो उसका पतन हो जाता है।

* जो अपने को शेर समझते है उनको हमेशा तैयार रहना चाहिए कहीं न कहीं उनको सव्वाशेर मिल जाएगा।

* रिश्ते अपना हक जताने से नहीं बनते बल्कि रिश्ते तो फर्ज निभाने से बनते है। कुछ रिश्ते तो ऐसे होते है कि एक-दूसरे के साथ नहीं रह सकते और तीसरे किसी को भी बर्दाश्त नहीं कर सकते।

* कामयाब और शांतिवाली जिंदगी के लिए ईमानदारी जरूरी है। ईश्वर में विश्वास और ऊंचे लक्ष्य हासिल करने की सच्ची लगन सफलता तक पहुंचाती है और शांतिवाली जिंदगी प्राप्त होती है।

* अपने जुबान से कोई ऐसी बात मत निकालो जिसको सुनकर किसी दूसरे को पीड़ा पहुंचे।

* रास्ते में तकलीफ देनेवाली चीजें हटाना नेक काम है। नेक और भलाई के कामों में हर किसीकी मदद करना चाहिए।

* अपनी जुबान से शिकायत करना बन्द करो तो खुशी की जिन्दगी हासिल होगी।

* मौत से मुहब्बत करोगे तो जिन्दगी ही मिलेगी।

* पढ़े लिखे और अनपढ़ में यही फर्क है जैसे जिन्दा व्यक्ति और मूर्दा व्यक्ति में है।

* हमारी यह जिम्मेदारी होती है कि हम अपने आपको लोगों के लिए फायदेमंद और कारगार साबित करें लेकिन अपनी इच्छा के अनुसार नहीं बल्कि उनकी इच्छाके अनुसार।

* कामयाब दोस्ती बनाने के लिए दोस्ती का कारण जानना चाहिए। किसी मतलब के लिए किसी को दोस्त मत बनाओ। स्वार्थ को बीच में मत आने दो। दोस्तों की मदद करनी चाहिए, लेकिन उसको अपना राज नहीं बताना चाहिए और न ही उसे अपने काम में आनेवाला यंत्र बनाना चाहिए।

❋ कोशिशों के साथ सब्र करना चाहिए वरना नुकसान हो सकता है। अक्सर सब्र से सामनेवाले की साजिशें बेकार हो जाती है किसी तरह अगर बुरे लोग कामयाब भी हुए तो आदमी के दिल और जमीर को जख्मी नहीं कर सकते।

❋ बदला लेने का बेहतरीन तरीका यही है कि आप उस दुश्मन जैसा बर्ताव न करे जिसने आपको जख्म दिए और उसे माफ कर देना चाहिए।

❋ बहुत सी छोटी-छोटी बातों में मनुष्य की बड़ी-बड़ी कमजोरियां झलकती है इसलिए कोई काम ऐसा नहीं होना चाहिए जिससे कोई बदगुमानी कायम हो। बदगुमानी से घर बर्बाद हो जाते है किसी के बारे में भी अपनी अच्छी सोच रखो, अच्छी राय रखो। जांच परख करके ही किसी की बात पर अपनी सोच बनानी चाहिए। बदगुमानी उस वक्त खतरनाक हो जाती है जब पति-पत्नी के बीच में यह आ जाएं तो दरार पैदा कर देती है। उनको लगने लगता है कि उनके खिलाफ ही कोई साजिश रची जा रही है। यह एक शैतानी हथियार है जो मनुष्य को मनुष्य से जुदा करने के लिए होता है। इस बदगुमानी से कभी-कभी राई का पहाड़ बन जाता है तो घास का बांस बन जाता है। हर एक को अपना किरदार साफ सुथरा रखना चाहिए जिससे कभी किसी के दरमियां बदगुमानी कायम न हो। निराधार प्रमाणों से कोई राय कायम नहीं करनी चाहिए। हरेक को अपना व्यक्तित्व इतना शानदार बनाना चाहिए कि उसमें वफादारी की खुशबू नजर आवें।

❋ हर चीज में सादगी अपनानी चाहिए। सादगी जिंदगी में अमीरी हो या गरीबी हर जगह हर हालात में राहत ही राहत है। ऐसी आदतवाला मनुष्य न किसी पर बोझ है और न स्वयं किसी बोझ के नीचे दबा होता है। वह तो सारे मनुष्यों के लिए एक आदर्श है। हर ईमानदार स्त्री पुरुष को चाहिए कि वे अपना जीवन सादगी से निभाएं।

❋ अपने बच्चों को हालात, परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए अकेला छोड़ें जिससे उनमें आत्मविश्वास होगा पर अकेले छोड़ने में रिश्तों का प्रेम मिट जाएगा।

❋ शहद बनानेवाली मक्खी भी डंक मारने से नहीं चूकती इसलिए उन लोगों से सावधान रहना चाहिए, मीठे बोलनेवाला भी आपको नुकसान पहुंचा सकता है।

❋ किसीसे भी नफरत मत करना। इतना ही कह देना कि अब तुम्हारी जरूरत नहीं। नफरतों का भी शुक्रिया अदा करना चाहिए उससे मिली ठोकरों से सम्भलना सीखना चाहिए।

❋ यह आँखें हमेशा कुछ न कुछ तलाशते रहती है लगता है जैसे उसने अपना कोई कीमती हीरा खोया है।

❋ लफ्ज से ज्यादा सलीकें की फिक्र करो। सलीकें से नजरिए की फिक्र हो जाती है।

❋ किसी से कोई सहारे की उम्मीद मत रखना। सहारे मनुष्य को छोड़ देते है।

❋ लोगों को दुतकारनेवाला, झिड़कियां देनेवाला, रोब जमानेवाला, धमकियां देनेवाला यह भूल जाता है कि वो भी मनुष्य है। उसे मनुष्यों पर रौब जमाने, झिड़कियां देनेका कोई हक नहीं। यह सारी बीमारियां बढ़ी हुई इच्छाएं और गरूर की वजह से होती है। यह बातें अपने आपमें एक धोखा है। बदनसीब मनुष्य में यह गरुर पैदा होता है और यह गरूर ही मनुष्य की तमाम अच्छाइयों को खा जाता है। किस्मतवालों में गरुर कभी पैदा होता ही नहीं। इसलिए वो हमेशा अजीज, गरीब और कमजोर होते है।

❋ कोई व्यक्ति अजीब या महान नहीं होता बल्कि उसका चरित्र, आचरण उसे खास बना देता है। मनुष्य का किरदार इतना बुलंद होना चाहिए अगर वो इस दुनिया में जिंदा है तो लोग उसे दोबारा मिलने की इच्छा करें और अगर दुनिया से चला गया तो लोग उसके अच्छे लफ्जों और चरित्र को याद करें।

❋ हमारी कितनी ही ख्वाहिशों ने हमें बर्बाद कर दिया है। वो कभी पूरी नहीं होती। मन का सुकून और शांति चाहते हो तो ख्वाहिशों का अंत करो और अपने पलकों के नीचे शर्म का बसेरा करो।

❋ उन सामूहिक विपत्तियों के खिलाफ मिलकर संघर्ष करो, जिसके कारण समाज पर डर व आतंक की घटाएं छायी हुई है और समाजी जिन्दगी की शान्ति भंग हो रही है।

❋ उन लोगों पर आश्चर्य करो जो यह जानता है कि दुनिया एक दिन खत्म हो जायेगी फिर भी वो दुनिया से मुहब्बत करता है, जो मौत को सच जानता है और हंसता है फिर भी उसकी तैयारी नहीं करता। जो ये जानता है कि हर चीज मुकद्दर से है फिर भी किसी की मौत के वक्त रोता है। जिसको यह मालूम है कि उसे अकेला ही जाना है फिर भी धन सम्पत्ति को इकट्ठा कर रहा है। जिसको नरक की आग का ज्ञान हो फिर भी गुनाह पे गुनाह किये जा रहा है। जो ईश्वर को जानता है फिर भी किसीसे आस लगाकर रखा है। जिसको स्वर्ग की खबर हो फिर भी किसी और चीज में राहत ढूंढना चाहता है।

❋ अनेक लोग जीवन जीते हैं लेकिन अपने असली मकसद को भूले रहते हैं। वे इधर-उधर की और मामूली बातों में इतना उलझे रहते हैं कि वे अपने उद्देश्य पर कोई ध्यान नहीं देते।

❋ हम यहां किसी स्थिर नगर में रहने नहीं आए हैं, बल्कि जो आगे आनेवाला है, हमें उसकी खोज करनी है।

❋ मनुष्य की पहचान बुद्धि से होती है शक्ल से नहीं। खूबसूरत जानवर को लोग भले ही पसंद कर ले लेकिन उसके आदत और सम्मान में खड़े होकर उसका सम्मान नहीं करते।

❋ बोलने का इस्तेमाल नापतौल कर करना चाहिए, इसका इस्तेमाल बेकार की बातों में नहीं करना चाहिए और ना ही फिजूल बातों में। इससे चेहरे की खूबसूरती चली जाती है और बुद्धि कमजोर हो जाती है।

❋ बेटी और बहनों को अच्छी शिक्षा देना, उनके साथ अच्छा व्यवहार करना और ईमानदारी से उनका हक दे देना एक अच्छे व्यक्ति का सुलूक है।

❋ जब मनुष्य स्वयं अपने खूनी रिश्तों से भलाई की आशा नहीं कर सकता तो फिर दूसरों से उम्मीद कैसे की जा सकती है।

❋ गैरों की बेरुखी और स्वार्थ का मनुष्य को इतना दु:ख नहीं होता जितना अपनेवालों से होता है इसलिए किसीसे उम्मीद नहीं करनी चाहिए। उसकी जरा सी बेरुखी गम और दु:ख का कारण बन जाती है। आशाएं रखना मनुष्य की आदत है। वो अपनों से ऐसा व्यवहार भी नहीं अपेक्षा करता। अगर कोई व्यक्ति खुदगर्ज होगा तो दूसरा नि:स्वार्थी भी हो सकता है। अंधेरे के साथ उजाला और बुराई के साथ अच्छाई भी होती है। हो सके जितना दूसरों का भला करना चाहिए। दूसरों से किसी प्रकार की अच्छाई की उम्मीद किये बिना अपनी तरफ से हमेशा अच्छा करें। वो जफा करते रहें और हम वफा करते रहें, अपना-अपना फर्ज दोनों अदा करते रहें।

❋ प्रेम में पूरी ईमानदारी और समर्पण की भावना की आवश्यकता है। यदि प्रेम में ईमानदारी नहीं है तो वह ज्यादा देर तक टिकनेवाला नहीं होता।

❋ लम्बी जिन्दगी जीने से छोटी उम्र की जिंदगी बेहतर है जो ईमान के साथ जीया जाये। महत्वपूर्ण यह नहीं है कि हम कितना जी रहे है बल्कि यह है कि हम कैसे जीते हैं।

❋ लोग अपने भविष्य को जानने के लिए अत्यंत उत्सुक रहते हैं। वर्तमान सामने होनेके बावजूद भी उसे नजरअंदाज किया जाता है। यदि मनुष्य अपने वर्तमान को सही दिशा पर ले जाए तो उसका भविष्य स्वयं ही उज्ज्वल बन जायेगा।

❋ कभी भी अपने पड़ोसी के साथ दुश्मनी मोल न लें। अगर उसके साथ दोस्ती नहीं की जाएं तो किसी तरह का

भेदभाव भी मत रखो। अपनी घरेलू बातें किसी पड़ोसी को नहीं बतानी चाहिए। अपनी तकलीफें प्रेमपूर्वक शांति से पड़ोसी को समझाएं। वे किसी दु:ख में हो तो फौरन उसकी मदद करनी चाहिए वे आपके दु:ख में साथ देंगे।

* आप बहुत ही सौभाग्यशाली हैं अगर आपका पड़ोसी मिलनसार है मगर यह सौभाग्य हर किसी की किस्मत में नहीं होता। अगर आप इस मामले में सौभाग्यशाली हैं तो आप अवश्य स्वयं को खुश, शांत और सुरक्षित महसूस करते होंगे, जो कि दुख-सुख में आपका साथ दें।

* क्रोध में लिये गये निर्णय कभी भी सही नहीं होते।

* सुखी दाम्पत्य जीवन का आधार ही है परस्पर प्यार और एक दूसरे के बीच कभी न टूटनेवाली मैत्री। यदि आप चाहते हैं कि पत्नी आपको आदर दे, आपको आंतरिक स्नेह दे तो अपनी पत्नी के मित्र बनिए और उसे अपनी मित्र बनाइए। उसके मालिक बनने की कोशिश न करें। घर के अन्य सदस्यों को भी मिलजुल कर कार्य करने को प्रेरित कीजिए।

* किसी के पास बहुत अधिक धन-दौलत है उसे बड़ा नहीं कहा जाता बल्कि सही तरीके से थोड़ा कमानेवाला मनुष्य भी बड़ा कहलाने के योग्य है।

* वो बात मत कहो जो कर नहीं सकते।

* मुसीबत की जड़ मनुष्य की बोली और बातचीत है।

* मूर्ख के लिए मौन रहना ही सबसे अच्छा है।

* झूठे के लिए सबसे अच्छा काम दिन में सोना है।

* हर किसी की अच्छी बात गौर से सुननी चाहिए कहनेवाला चाहे कोई भी हो।

* जिन्दगी का कोई भी अहम् फैसला करने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। जल्दबाजी में किया गया फैसला अंत में हमेशा के लिए पछतावे का कारण बन जाता है।

* किसी का दिल दुखाने से आपकी प्रार्थना का असर खत्म होता है।

* जो चीज आपके वश में नहीं हो उन्हें भुलाना ही बेहतर है।

* जिंदगी में अगर बिना ऐब के लोग तलाश करोगे तो आप अकेले ही रह जाओगे।

* किसी से कोई चीज की वापसी की उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। किसी से हम अगर सच्ची मुहब्बत करते है तो कुदरती तौर पर भी हम उससे थोड़ी मुहब्बत की उम्मीद रखते है।

* अच्छे लोगों का साथ एक सुगंध की तरह होता है जिससे आपको खुशबू मिल जाती है।

* दुखों से निजात चाहिए तो खुद को व्यस्त कर लेना चाहिए। वर्तमान में हर व्यक्ति किसी न किसी दु:ख से दुखी है। किसी दुख के बारे में हम जितना सोचेंगे उतना ही अधिक तनाव होगा। इसलिए अधिक तनाव की जिंदगी न जीकर स्वयं को किसी अन्य काम में व्यस्त कर लें ताकि आपका मन काम में लगा रहे।

* सकारात्मक सोच हर मर्ज की दवा है और हर तरफ अपना हुनर और प्रतिभा दिखाती है। इसलिए इतिहास की बुरी बातों को विस्मृत कर भविष्य के उजले रूप के बारे में सोचना ही लाभदायक है। रचनात्मक गतिविधियां एवं संगीत कला आदि में खुद को व्यस्त कर लेना इसका उपाय है।

* किसी आदमी को भीख देने की बजाय उसको रोटी कमाना, नौकरी देना चाहिए ताकि आप जीवनभर के लिए उसका पेट भरने का इंतजाम कर देंगे।

* कष्ट पड़ने पर साधु मलिन नहीं होते, जैसे सोने को जितना तपाया जाता है वह उतना ही निखरता है।

* जौहरी ही असली हीरे की पहचान कर सकता है उसी तरह गुणी मनुष्य ही गुणवान की पहचान कर सकता है।

* माता-पिता, पुत्र-भाई घर-घर में होते है यह सांसारिक नाते सभी जगह सुलभ है परंतु सद्गुरु की प्राप्ति हमेशा दुर्लभ है।

* सिर्फ ज्ञान की कथनी से कुछ नहीं होता जब तक आचरण में स्थिरता नहीं हो सब व्यर्थ है। जैसे कागज का महल देखते ही देखते गिर पड़ता है वैसे आचरणरहित मनुष्य का भी शीघ्रपतन हो जाता है।

* शिष्य उत्तम होने पर भी गुरुओं की भिन्न-भिन्न शैली होनेपर शिष्यों को कम ज्ञान प्राप्त होता है इसमें शिष्यों का कोई दोष नहीं।

* उत्कृष्ट कार्य करने व कार्य में कुछ नवीनता लाने के लिए उचित योग्यता होना बहुत आवश्यक है। कानून बनाने का दायित्व जिन लोगों पर है उनका सांसारिक ज्ञान, व्यावहारिक ज्ञान उच्चशिक्षित होना चाहिए।

* जीवन एक बहुमूल्य अवसर है। पर उसका मूल्य जीनेवाले पर निर्भर होता है। व्यक्ति जो अपने को बनाता है, वही बन पाता है। प्रत्येक स्वयं अपना निर्माण है। ईश्वर और शैतान दोनों की संभावनाएं हममें होती हैं। मनुष्य तो केवल बीच का सेतु-मात्र है। हम पीछे भी लौट सकते हैं और आगे भी जा सकते हैं। पीछे लौटना जीवन को व्यर्थ खो देना है। आगे बढ़ने में ही सार्थकता है।

* जो कुछ भी बोलें सोच समझकर बोले। गाली गलौज की भाषा में बात करना असभ्य होने की सबसे बड़ी पहचान है। अक्सर घरों में भी कुछ लोगों को आपसी बातचीत में गाली सूचक शब्दों का प्रयोग करते देखा जा सकता है। जिसका बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। सार्वजनिक स्थलों पर लोगों द्वारा किसी भी प्रकार के गाली-सूचक शब्दों या अभद्र भाषा का प्रयोग शर्मनाक है। आपस में इस तरह की भाषा का प्रयोग करनेवाले लोग सामनेवाले का मन खराब कर देते हैं। क्योंकि ऐसी शब्दावली उनके व्यक्तित्व का ऐसा हिस्सा बन जाती है इस कारण उन्हें इसका तनिक भी आभास नहीं होता कि सामनेवाले को इससे असुविधा हो रही है या उसका प्रभाव खराब हो रहा है। जो हो अशिष्ट भाषा हमारे कमजोर व्यक्तित्व और संस्कारों की कमी का द्योतक होती है। हमें ऐसे लोगों को शांतभाव से समझाना चाहिए। घरों में बड़े लोगों को बच्चों के सामने हमेशा ऐसे प्रेरणादायी शब्द इस्तेमाल करने चाहिए जो स्वस्थ समाज की नींव डालनेवाले हों।

* दूसरों में दोष नहीं निकालना, दूसरों को उतना उन दोषों से नहीं बचाता जितना अपनों को बचाता है।

* जवानी जोश है, बल है, साहस है, दया है, आत्मविश्वास है और वह सब कुछ है जो जीवन को पवित्र उज्ज्वल और पूर्ण बना देता है।

* हम महानता के सबसे करीब होते हैं जब हम नम्रता में महान होते है।

* हम कुछ लोगों से इसलिए नफरत करते है कि हम उनको जानते नहीं। नफरत से आंखों पर पर्दा और दिल पर गर्द सी पड़ जाती है जिससे हकीकत की पहचान नहीं होती।

* ज्ञान बहुत है पर मनुष्य सारा ज्ञान एक समा में सीख सकता, वहीं पूरे ज्ञान सिखने का उसका अधिकार है। उसे यह ज्ञान अवश्य है कि मनुष्य कैसे पैदा होता है और इसका मालिक कौन है और उससे वह क्या चाहता है।

* हर कीमती चीज की हिफाजत के लिए यह आवश्यक है उसे छुपाकर रखी जाए।

* दिल आंख के नियंत्रण में है अगर आंख बिगड़ेगी तो दिल भी बिगड़ेगा उसकी रक्षा करना मुश्किल है।

* जहां दवा की जरूरत हो वहां रोना-धोना और दु:ख करना काम नहीं कर सकता।

* दूसरों का आदर करोगे तो दूसरे तुम्हारा आदर करेंगे।

* आदत की जंजीरे देखने में तो मामूली लगती है पर धीरे-धीरे एकदम मजबूत हो जाती है कि पूरी जिंदगी तोड़े नहीं टूटती।

* लोहा सिर्फ लड़ाई के वक्त सोने से भी बेहतर समझा जाता है पर बुद्धि हर अवसर पर सोने से भी कीमती है।

* इर्ष्या एक अंदर की बीमारी है जिससे बचना बहुत मुश्किल है। किसीसे किसी कारण इर्ष्या रखना अर्थात जलन रखना, दुश्मनी के तौर पर है। इर्ष्या धन-दौलत, शान शौकत की वजह से हो बुरा है। इर्ष्या रखनेवाले की यह बीमारी उसको तबाह व बर्बाद कर देती है। इर्ष्या मनुष्य की नेकियों को खा जाती है जैसे आग लकड़ी या सूखी घास को जला डालती है। किसी व्यक्ति में इर्ष्या की बीमारी है तो वह उसके नेकियों को खा जायेगी।

* कठिनाई मुसीबत सबसे बेहतरीन कसौटी है जिस पर यार-दोस्त परखे जा सकते है।

* मनुष्य कभी-कभी तकलीफों पर बैठकर रोने लगता है। रोने के बजाय तकलीफों को दूर करने का उपाय करना चाहिए।

* किसी चीज को ठीक करने की प्रतिभा या कौशल न हो, जानकारी न हो तो उसे खराब भी मत करो।

* अपनी चीज को कोई भी बुरा नहीं कहता कौन अपने दही को खट्टा बतायेगा।

* अपने वक्त का सिकंदर अर्थात् समय का बादशाह बहुत खुशनसीब, वक्त का हाकिम।

* लाल बुझक्कड़ बनना अर्थात बेवकूफ मगर बुद्धि का प्रदर्शन करना।

* जो आपसे नीचा हो उससे नर्मी से व्यवहार हो और जो ऊँचा हो उसका सम्मान, आदर करो।

* ईश्वर की ओर ध्यान रखकर गुस्से को पी जाओ और उसे बर्दाश्त करो।

* कभी किसी की गलती को माफ कर देना अपराधी को अधिक खतरनाक बना देता है।

* वो अपराध सब अपराधों से सख्त है जिसे करनेवाला मामूली समझता हो।

* अगर ज्ञान से अर्जित धन-सम्पत्ति गलत जगह पर खर्च कर दे तो उसे मुसीबतें झेलनी पड़ती है। सिर्फ दुनिया के ऐश आराम में व्यस्त रहनेवाला भी दुनिया में मुसीबत और तकलीफों को झेलनेवाला बनेगा।

* हर व्यक्ति की महत्वाकांक्षा रहती है कि उसे मान सम्मान, यश, महत्व मिले। इसकी चाहत में वह इतना अंधा हो रहा है अगर ऐसा नहीं हुआ तो वह अपने आपको मायूस, कुंठित व अपमानित महसूस करने लगता है और वह क्रोधित हो जाता है। हर व्यक्ति अपने आपको प्रभावशाली बनाने की कोशिश करता है। सच्चा सम्मान प्राप्त करने के लिए मानवीय सद्‌गुण जैसे ईमानदारी, सहयोगी वृत्ति, सच बोलने की आदत, दूसरों को सम्मान देने की कला यही सब उस भूख को शांत करने का रास्ता है। आपको अपने समाज के सामने एक स्वच्छ, आदर्श व्यक्तित्व पैदा करना है, दूसरों के बारे में न सोचकर पहले अपने बारे में शुरूवात करनी पड़ेगी। अपने आप से संघर्ष प्राप्त करना पड़ेगा। अपने दोषोंको दूर कर अपने अवगुणों को निकालकर अपने व्यक्तित्व को ढालना पड़ेगा। जैसे कोई पत्थर सुंदर मूर्ति का रूप धारण करती है और वही मूर्ति संसार में पूजा व श्रद्धा के योग्य बन जाती है।

* सफल व्यक्तित्व के लिये आपकी बोली में मिठास व विनम्रता होनी चाहिए। दूसरे के गुणों की प्रशंसा करना सीखिए। ईमानदारी व स्वच्छ छबि, दूसरों की बात को ध्यान से सुनना व स्वयं कम बोलना, अपनी बड़ाई स्वयं न करना, दूसरे अगर प्रशंसा के पात्र हो तो दिल से प्रशंसा करना। लेन-देन के व्यवहार में खरा उतरना, किसीसे कुछ लिया हो तो मांगने से पहले देने की आदत डालना। अनायास ही छोटी-छोटी बातों में क्रोधित नहीं होना और बेमतलब की बहस नहीं करना,

अपना जो भी काम हो पूरे मनोयोग व निष्ठा से करे। काम को आगे टालने की आदत न रखें। किसी से मिलने का समय करो तो उसके साथ सही समय पर उपस्थित हो। उसी काम को करने की हां करना जिसको आप कर सकते हो अन्यथा स्पष्ट शब्दों में ना कर देना। किसीसे कुछ अपेक्षा मत करना, ना ही किसी को धोखा देना। परिवार के सभी सदस्यों को साथ लेकर एक-दूसरे के सुख दु:ख में आगे होकर आगे बढ़ना। समाज सेवाओं में योगदान देना। हंसमुख चेहरे से आनेवाले व मिलनेवाले का स्वागत करना। ईश्वर में विश्वास और निष्ठा रखना। स्वयं में विश्वास रखना। सदैव सकारात्मक सोच रखना व लोगों को भी विचार बदलने में सहयोग देना यह सब सफल व्यक्तित्व के गुण है।

* मित्रता उसी व्यक्ति से करनी चाहिए जो विश्वास के काबिल हो।

* आपसी संगति से दोस्त उबता ही नहीं बल्कि खुशी और राहत महसूस करता है।

* पेट भरे हुए मनुष्य में बुद्धि की बात नहीं बैठती।

* जो वक्त बीत गया उसपर पछताना नहीं चाहिए और जो वक्त आनेवाला है उसके बारे में सोचना नहीं चाहिए। जो वक्त मौजूद है उसीकी कद्र और हिफाजत करनी चाहिए।

* हर काम कहने के अनुसार करना चाहिए। बहुत से ऐसे लोग होते है जो कहते कुछ है और करते कुछ है।

* वही सच्चा मर्द है जिसका चरित्र उसकी बात के अनुसार हो।

* अगर किसी नेमत की कद्र न की जाएगी तो वह खत्म हो जाती है।

* मनुष्य की वाणी दिल की आवाज है और चेहरा दिल का दर्पण है।

* जो व्यक्ति हर अच्छी और बुरी चीजों से संगति रखता है वो कभी सुरक्षित नहीं हो सकता और जो अपनी बोली पर नियंत्रण नहीं रखता वो परेशान और शर्मिंदा होते रहता है।

* आश्चर्य उस व्यक्ति पर है जो नर्क का सच जानता है और फिर भी बुराइयां करते रहता है, आश्चर्य है व्यक्ति मृत्यु का सच जानता है फिर भी हंसते रहता है। वो ज्ञान बेकार है जिसपर आचरण न किया जाए ऐसे व्यक्तियों पर भी आश्चर्य है।

* यह दुनिया बड़ी जरूरत की चीज है इसका जरूरत के समय ही उपयोग करना चाहिए पर इसको दिल में कभी जगह नहीं देनी चाहिए। इसको अपने ऊपर हावी मत होने दो जिस दिन यह दुनिया आप पर हावी हो गयी उसी दिन यह दुनिया तुम्हें हलाक और तबाह कर देगी। इसकी हकीकत बयान नहीं की जा सकती। दिन रात इसमें मत फँसे रहो।

* जो राज अपने दुश्मन से छुपाना चाहते हो वो राज अपने दोस्त के सामने भी बयान मत करो।

* गलती कबूल करनेवाले से ईश्वर भी खुश होता है।

* हर व्यक्ति अगर अपना सुधार कर ले तो पूरा समाज खुद ब खुद सुधर जायेगा।

* उस ज्ञान का अध्ययन बेकार है जिस ज्ञान से दिल में हमदर्दी, दर्द, नमी, रंगीनी व रोशनी पैदा न हो।

* समय को बर्बाद मत करो उसकी कीमत को जानो।

* बच्चों का सुधार पाठशाला में ही हो सकता है, औरत घर में ही सुधरी हुई रह सकती है।

* सबके साथ धीरे-धीरे बराबर में चलना ही कामयाबी की निशानी है।

* अपनी नियत हमेशा साफ रखो और किसी की चीज को देखकर लालच मत करो।

* बच्चे कौम का भविष्य होते है। बच्चों के अन्दर अच्छे जज्बात और हौसले दिये जाय तो नाकामयाबियों में भी उन्हें कामयाबी की रोशनी दिखायी पड़ेगी।

* किसी तरह की कोई युक्ति लगानी हो तो खामोशी उसकी आवश्यकता है। सिर्फ जरूरत के अनुसार ही बात करनी चाहिए।

* खुशहाली अपने साथ गुरुर व घमंड लाती है।

* अगर स्वास्थ्य चाहते हो तो नेक व्यक्ति बनो। नेक व्यक्ति बनना चाहते हो तो बुद्धिमान बनो। ईश्वर का डर ही अक्लमंदी की जड़ है।

* हमारे अच्छे बर्ताव लोगों को उनकी बुराइयों से हटाकर अच्छाई और ईमानदारी के रास्तेपर लाते है।

* मनुष्य चरित्र से जाना जाता है और चरित्र भी व्यक्ति खुद ही बनाता है।

* जब तक वास्तविकता से कोई परिचय ना हो तब तक कोई निर्णय लेना गलत होगा।

* कभी भी अहंकार नहीं करना चाहिए। अहंकार करनेवाला उल्टे सिर के बल गिर पड़ता है।

* जिस रास्ते को नहीं जानते हो उसे पूछ लेना ही बेहतर है वरना जलील व अपमानित होना पड़ेगा और कठिनाई में पेश आओगे।

* बुद्धिमानों के साथ अपनी वफा से पेश न आनेवाले मित्रता के योग्य नहीं होते।

* अगर आपने हर हाल में खुश रहने की कला सीख ली है तो यकीन रखो कि आपने जिंदगी का सबसे बड़ा गुण सीख लिया है।

* खूबसूरती का चश्मा दिल है। अगर दिल काला है तो चमकती हुई भी आंख आपके लिए कुछ नहीं कर सकती।

* हमेशा सच बोलना चाहिए। सच बोलने में कोई झिझक नहीं होनी चाहिए। चाहे कितना भी बुरा नुकसान क्यों न हो सच बात ही करनी चाहिए। मुंह से निकली हर बात का जवाब ईश्वर को देना पड़ेगा क्योंकि ये ईश्वर की दी हुई अमानत है। बात हमेशा मुस्कुराते हुए मीठे बोल से करनी चाहिए। कोई बुरी बात कहकर, गाली निकालकर, बुरे शब्दों का प्रयोग कर अपनी जुबान को गंदा मत करो। किसी की बुराई और चुगली से परहेज करना चाहिए। किसी की शिकायत और नक्ल मत करिए न किसी से झूठा वादा कीजिये, न ही किसी की हँसी उड़ाएं, न ही किसीपर फबतियां और व्यंग कसे। न ही बात-बात पर कसम खाये, हमेशा नीति और न्याय की बात करें चाहे कोई अपना रिश्तेदार या दोस्त ही क्यों न हो। कुदरत की पशु-पक्षियों को भी सख्त जुबान पसंद नहीं है। इसीलिए ईश्वर ने जुबान में हड्डी नहीं दी है। हमेशा कम और मतलब की ही बात करनी चाहिए। बेमतलब बातों को लम्बा करना, बिना सिर प्यार की बातों का कोई अर्थ नहीं होता।

* एक लम्हे की सच्ची खुशी अनगिनत पल के दुख को सुख में बदल सकती है। जो कोई मूर्ख से लड़ता झगड़ता है वो अपने लिए इज्जत की उम्मीद नहीं रखे।

* वे इज्जतदार गरीब उन अमीरों से बेहतर है जिसमें अपमान और रुसवाई भरी हो।

* चरित्र जीवन की वो ग्रन्थि है जिसका एक मोती भी टूट जाएं तो पूरी माला बिखर जायेगी।

* अपने अंधेरे मन में रोशनी करो शायद आपके ही मन में छुपी हुई कोई दौलत मिल जाएं।

* समय वही गिनती में गिनने लायक है जो हंसी खुशी में गुजर जाएं। दौलत वही गिनी जाती है जो ईश्वर की राह में खर्च हो और संतान वही है जो बयान के काबिल हो, जिसमें नेक चलनी और बेहतरीन आदतें हो।

* बेहतरीन मनुष्य वही है जो दूसरों के दिल में उतरकर दूसरे के दु:खों को महसूस करें।

* काम करते रहने से बोरियत, गुनाह, गरीबी खत्म हो जाती है।

* दोस्ती और मुहब्बत बड़ी प्यारी चीजें हैं जो सर्वत्र हर वक्त मुस्कुराती रहती है।

* रोशनी की उम्मीद रखो पर उम्मीदों पर जिंदगी मत बिताओ।

✻ कामयाबी बाजारों में नहीं बिकती बल्कि मनुष्य अपने हौसले और लगन से हासिल करता है।

✻ ज्ञान से बड़ा कोई खजाना नहीं। बुरी आदतों से अधिक खतरनाक कोई दुश्मन नहीं और शर्म से बेहतर कोई लिबास, परिधान नहीं।

✻ उन लेागों के लिए हर वक्त अवसर होते हैं जो जागृत है और हर अवसर को महसूस कर पाते है।

✻ आपको अपनी अच्छाई का ख्याल है तो अच्छे लोगों से दोस्ती रखनी चाहिए क्योंकि बुरे लोगों की संगति से तो अकेलापन बेहतर है।

✻ किसी बड़े जिम्मेदारी को निभाने के लिए आवश्यक है कि शरीर में जान हो, दिमाग में ताकत और बुद्धि हो, इरादे मजबूत हो, हौसलों में बुलंदी हो, जिंदगी उमंगों और ऊंची भावनाओं से परिपूर्ण हो, स्वास्थ्य अच्छा हो। जिंदादिल लोगों से ही जिंदा, कौम और राष्ट्र बनता है। ऐसे ही लोग जिंदगी के मैदान में बड़ी-बड़ी कुर्बानिया देकर अपनी जगह बनाते है। तो यही जिंदगी का मकसद है। हमेशा हंसते-मुस्कुराते रहना, चाहत सम्बन्ध रहना, दिलचस्प और स्वस्थ रहना, गम, गुस्सा, रंज, चिंता, इर्ष्या असद, बुरा चाहना, संकीर्ण दृष्टि, मुर्दादिली, सौर दिमागी उलझनों से दूर रहना यह सब चीजें अपनी जहन पर बुरा असर डालती है। सादगी से रहना, हंसते-हंसाते रहना ही जिंदादिली है।

✻ बड़प्पन वह है जो हर व्यक्ति हमारे बारे में सोचते है और चरित्र वह है जो ईश्वर और फरिश्ते हमारे बारे में सोचते है।

✻ जो लोग बिना अपनी योग्यता और सामर्थ्य के किसी दूसरे के सहारे से ऊंचाई पर पहुँच जाते है वे एक हल्के से आघात से शीघ्र नीचे आ जाते है। ऊंचाई पर केवल वही लोग टिक सकते है जो दूसरों के सहयोग के साथ-साथ अपनी योग्यता और क्षमता का विकास करते है। मनुष्य कितना भी स्वावलम्बी क्यों न हो दूसरों के सहयोग के बिना उसका काम नहीं चल सकता। अपना यह जीवन हम एक-दूसरे के सहारे से ही गुजारते है। जहां दूसरों का सहयोग और सहारा हमें तेजी से आगे बढ़ने में मदद करता है वही हमारे स्वाभाविक क्षमता के विकास में बाधक भी बनता है कारण की हम उस सहारे के आदि हो जाते है। जब हम किसी और किसी का सहारा लेते है तो अपने पकड़ को मजबूत करने का प्रयास ढीला पड़ जाता है। जीवन में दूसरों का सहारा लेने के साथ-साथ स्वयं में भी अपेक्षित योग्यता और क्षमता का विकास करना जरूरी है।

✻ अच्छा और बुरा सिर्फ सामाजिक मान्यता हैं। वही मान्यता दूसरे समाज में बदल जाती है। ऐसी कोई मान्यता नहीं जो हर समाज के लिए उपयोगी हो और स्वीकार्य हो।

✻ हम अपनी गठरी को सम्भालने की जरूरत नहीं समझते। हमारी नजरें सदा दूसरों के झोले पर रहती है। यही हमारी सबसे बड़ी समस्या है कि हम अपनी स्वयं की गठरी टटोले और उसपर दृष्टिपात करें तो फिर हमें अपनी कमी समझ में आ जायेगी। और अगर यह समझ में आ गया तो जीवन में कही कभी कोई रुकावट नहीं आयेगी और न ही कोई उलझन होंगे।

✻ मनुष्य मूलभूत तत्वों का मिश्रण है। इच्छा अनुभव और ज्ञान जो हमारा व्यक्तित्व और स्वभाव बनाता है। हमारा स्वभाव क्रियाशील, भावुक और तर्कसंगत हो सकता है। तर्कसंगत अर्थात ज्ञानयोग भावुक व्यक्तित्व के लिये भक्तियोग, पूजा पाठ और भजन और क्रियाशील व्यक्ति के लिए कर्मयोग। जो जिसका जैसा स्वभाव है वह उसीके अनुसार उसी मार्गपर चलकर अपनी समस्याओं का समाधान खोजता है। व्यक्ति तीनों तरह के स्वभाव के तालमेल संतुलन से ही पूर्णत: के करीब पहुँच सकता है।

✻ जिस किसी को आप अपने पैमाने पर तौलते है वह भी आपको पैमाने पर तौल रहा होता है। उसकी भी अपनी कुछ अपेक्षाएं होती है। जो व्यवहार तुम्हें अपने लिये अच्छा नहीं लगता वैसा व्यवहार आप भी दूसरों के लिए मत करो। किसी

के साथ चलने के लिए स्वयं को बदलना पड़ता है। कोई भी मनुष्य स्वयंपूर्ण नहीं होता। हमारे सोचने और समझने की भी एक निश्चित सीमा होती है पर सत्य उससे कहीं विस्तृत और बहुरंगी है।

* समाज देह प्रदर्शन से नहीं गलत मानसिकता से बिगड़ता है और पाबंदी से मानसिकता नहीं बदलती न ही महिलाओं पर अत्याचार रोक सकते है। विकृत मानसिकता कहीं भी पनप सकती है। अति संपन्न या अति विपन्न दोनों वर्गों में यह मौजूद होती है। विकृत लोगों से बचने के लिए नारी को खुद होकर मर्यादा की रेखा खिंचनी पड़ेगी, इसके खतरे पहचानने पड़ेंगे।

* हमारी संस्कृति शर्मलिहाज को गरिमापूर्ण मानती है। कानून और नियम स्वच्छंद लोगों के लिये ही बनते है न की विकृत लोगों के लिए।

* इर्ष्या का भाव स्त्रियों में जन्मजात से होता है वह खाना-पीना छोड़ सकती है परंतु अपने आगे किसीकी प्रशंसा, बढ़ती कभी बर्दाश्त नहीं कर पाती। किसी की सुंदरता, किसी का ज्ञान, किसी की तरक्की, श्रृंगार देखकर इसे इर्ष्या होती है। दूसरों की तारीफ सुनकर वे आगबबूला हो जाती है और उसकी बर्बादी के लिए वे अपने अल्फाज और समय दोनों बर्बाद कर देती है। इसके चक्कर में वे अपनी जिम्मेदारी और सोच तक को भूल जाती है। इर्ष्या के कालेपन में वे अपने गुणों रूपी स्वर्ण की चमक को मटमैला कर देती है। ऐसा सभी महिलाओं के साथ होता है। इर्ष्या बहुत बुरी बला है इससे बचना चाहिए।

* दोस्ती एक ऐसा गुण है जो बिखरते रिश्तों को जुड़ने का काम करता है। सच्चे दोस्त अपने कीमती विचारों से आपको सुधारते है इसलिए उनपर जवाबी हमला करने के बजाय खुले दिल और अहसान के साथ उनकी अहमियत महसूस करते हुए उनका धन्यवाद अदा करें।

* आप अपने बड़प्पन व ओहदे के गुरूर में हमेशा सामनेवाले के झुकने का इंतजार करेंगे या बार-बार वाणी से उसका तिरस्कार करेंगे। आप बड़े होकर भी छोटे ही कहलाएंगे और धनवान होकर भी कंजूस कहलाएंगे।

* बीमारी में मर जाना अच्छा है पर किसी के अहसान की दवा खाना फायदेमंद नहीं है।

* सच बोलनेवाले की वजह से उसका भला चाहनेवाला कोई नहीं होता। सच्चे लोगों के मुंह पर बाहर की सी ताजगी और झूठों के मुंह पर पतझड़ की सी उदासी छायी रहती है।

* बुरे कामों पर शर्मिंदगी का प्रदर्शन न करना एक तरह का खराब माहौल पैदा करना है।

* दुनिया में आंधियां आयी और बड़े-बड़े पेड़ पौधों को उजाड़कर गुजर गयी, चिराग बुझाकर चली गयी लेकिन उम्मीदों का वे नन्हा सा पौधा हमेशा हरा-भरा रहता है। आदमी बीते हुए गमों को नजरअंदाज कर देता है और उम्मीद यह करते रहता है क्योंकि वो उम्मीद परस्त है कि पुराना चिराग भड़क गया पर नया चिराग फिर जल उठेगा।

* नि:संदेह प्रलय एक अटल सत्य है जो आकर रहेगा। जिस दिन प्रलय होगा सारी दुनिया बर्बाद हो जायेगी। जमीन-आसमान, सागर, पहाड़, सबके सब तहस-नहस हो जायेंगे। इसलिए मनुष्य को उसके आने के पहले ईश्वर की याद कर लेनी चाहिए।

* जो व्यक्ति बुरे कामों से जुड़ता है वो ही सबसे बड़ा बहादुर है और जो व्यक्ति मुसीबत का बोझ आसानी से उठा सकता है वही सबसे अच्छा काम करनेवाला है।

* अपनी योग्यता से ज्यादा की उम्मीद कभी नहीं करनी चाहिए और कम की उम्मीद रखकर उसका अधिक ख्याल रखना सफलता की सबसे बड़ी पूंजी है।

* काम शुरू कर देने पर खत्म तो अपने आप ही हो जाता है।

❋ चुपचाप रहनेवाला मनुष्य पानी की तरह गहरा होता है। खामोशी खुद ही एक राज है और राज रखनेवाला व्यक्ति खामोश रहना पसंद करता है। खामोशी अक्लमंद का आभूषण है और बेवकूफ का भ्रम।

❋ सिर्फ बुजुर्गों की याद मनाने से बुजुर्गों का अनुभव नहीं मिलता है बुजुर्गों के बताये रास्ते पर चलने से ही जीवन के अनुभव मालूम पड़ते है।

❋ नेकी की शमा दोस्त और दुश्मन दोनों के घर में उजाला करती है।

❋ लिखावट एक खामोश आवाज है और कलम हाथ की जुबान है।

❋ अंतरात्मायुक्त मनुष्य दूसरों को तो माफ कर सकता है लेकिन अपने आपको कभी माफ नहीं कर सकता।

❋ हमेशा ऐसी नेकी करनी चाहिए जिससे अधिक से अधिक लोगों को लाभ हो।

❋ अगर आपकी किसी गलती से कोई आहत हो गया हो तो यह क्षमा यातना करें, कोशिश करें की आप अपनी उन गलतियों को सुधार सके। अपनी गलतियां स्वीकार न करना, वैसा ही जैसे अधिक गलतियां करना इससे आपको नाकामी ही हाथ लगेगी।

❋ दिल के निर्णय को कभी स्वीकार नहीं करना चाहिए। वे गलत और जज्बाती हो सकते है।

❋ मुहब्बत आत्मा का फूल है जो गुनाहों की धूप में मुरझा जाते है।

❋ हमारी एक गलत निगाह हमारी पूरी जिंदगी को कड़वी बना देती है।

❋ अपने हाथ की लाठी उस बंदूक से बेहतर है जो किसी दूसरे के पास हो।

❋ बेहतरीन यादगार तो वो है जिसमें व्यक्ति अपनी नेकियां और दूसरों की जादतियां अत्याचार को भूल जाता है।

❋ मनुष्य प्रकृति के सामने विवश है। अपनी जिंदगी बनाने और बिगाड़ने के नियम ही मनुष्य को मिले हुए है। बिना प्रयत्न के कोई सफलता मिल जाए यह मुमकिन नहीं है। जीवन संघर्ष का हक अदा करने के बाद आप असफल हो यह सम्भव नहीं। सिर्फ ख्वाहिशों और आरजूओं की दुनिया में रहने से कुछ नहीं मिलता। स्वयं को झूठी तसल्लियां मिलने से किस्मत नहीं बदलती। किस्मत आपके प्रयत्न से बदलेगी। सिर्फ बातों से अपनी मंजिल नहीं पा सकते। कामयाबी तक पहुंचने के लिए आपके पास एक ही रास्ता है ईश्वर पर विश्वास रखते हुए मेहनत, लगन, कर्मठ होकर अपने लक्ष्य की मंजिल तक पहुंचे।

❋ सबसे प्यार मुहब्बत से, अच्छे बर्ताव से रहेंगे तो आपकी जिंदगी के गुलशन में बहार ही बहार आयेगी और जिंदगी खुशियों से भर जाएगी।

❋ अपनी नियत हमेशा साफ रखनी चाहिए किसी चीज का लालच नहीं करना चाहिए। उसकी नियत उसके कर्म से ज्यादा अहमियत रखते है।

❋ मनुष्य गलतियों का पुतला है और उससे गलती होती रहती है। लेकिन बढ़िया इन्सान वो ही है जो गलती के बाद उसे स्वीकार कर ले।

❋ दुनिया में वो ही मनुष्य बिल्कुल अकेला है जिसका कोई दोस्त नहीं हो। अकेले रहने से दोस्त बनाना बेहतर है। गलती से अगर आपने किसी बुरे मनुष्य को दोस्त बना लिया तो आपके व्यक्तित्व में गिरावट होगी। बुरे दोस्त के कर्मों का असर आपपर भी पड़ेगा और लोग आपको बुरा समझेंगे और गिरी हुई नजरों से देखेंगे। एक अच्छा दोस्त आपको अच्छाई के रास्ते पर ले जायेगा। आपके अंदर कोई ऐब और बुराई हो तो उसे दूर करेगा। अच्छे दोस्त तो किस्मत से ही मिलते है।

❋ दुनिया की मुहब्बत गुनाहों का सागर है जो आपको अंधा, गूंगा और बहरा बना देती है। अपनी जुबान को नियंत्रण में

रखो। अपने घर को सदा बड़ा समझो और अपनी गलतियों पर रोना सीखो।

* अच्छी बातें आप किसीसे भी सीख सकते हैं। गलतियां करके उसे जरा भी सुधारने का प्रयत्न नहीं करना ही सबसे बड़ी गलती है।

* इस दुनिया में रहते हमेशा सावधानी से रहो कि आपके पाँव की उडती धूल में किसी की मंजिल न खो जाएं।

* सच्ची मुहब्बत हासिल करने का एक ही तरीका है कि आप भी मुहब्बत बांटें और सच्ची मुहब्बत तभी हो सकती है जब स्वार्थ बीच में ना हो।

* असर करनेवाली और फायदेमंद दवा अक्सर कड़वी होती है।

* कपड़े को काटने से पहले सात बार उसका नाप कर लेना चाहिए क्योंकि काटने का अवसर एक ही बार मिलता है।

* घर में ईमानदारी से सिर्फ एक ही नौकर काम करता है वो है घरका मालिक।

* जो बात बुद्धि छुपाती है दुर्व्यसन और नशा प्रकट कर देता है।

* घमंड, लालच और ईर्ष्या से हमेशा बचना चाहिए।

* जो लोग नियम की पाबंदी नहीं करते वैसे व्यक्ति वादा खिलाफी गुनहगार है।

* असफलता सफलता की सीढ़ी है, क्योंकि सितारें अंधेरे में ही चमकते है।

* अगर दुनिया में मनुष्य को अपनी किस्मत बनाने का तरीका मालूम होता तो दुनिया में कोई भी बदकिस्मत नहीं होता।

* जो कोई ज्ञान से दुनिया कमाने का हौसला करता है ज्ञान उसके दिल में नहीं रह पाता।

* आपके साथ कोई नेकी करे या बदी आपको हर एक के साथ अहसान करना चाहिए।

* अगर आप मूर्ख को ज्ञान सिखाओगे तो वह बेकार जायेगा और बुद्धिमान को नहीं सिखाओगे तो यह अत्याचार होगा।

* संघर्ष करनेवाला हमेशा ऊंचा उठता है और आरामपसंदी व्यक्ति हमेशा नीचे ही रहता है।

* किसीसे वादा करो तो उसे पूरा करना चाहिए।

* आपस में कलह करना बहुत बुरी चीज है।

* बेहतर इसीमें है कि मिल-जुलकर रहो।

* ईश्वर से कभी नाउम्मीद मत हो। उसकी इस धरती पर कभी अकड़कर मत चलो।

* हर हालत में ईश्वर को याद करना चाहिए और तकलीफ में सब्र करनी चाहिए।

* असफलता इसलिए मिलती है कि हमारे लक्ष्य सार्थक नहीं होते और क्षमता से बाहर होते है। सार्थक लक्ष्य का अर्थ है कि समय-सीमा के अंदर पूरे होनेवाले लक्ष्य, मापने योग्य लक्ष्य हम जब भी कोई संकल्प और प्रण लेते है उसे हम गंभीरता से नहीं लेते। पहले रूकावट के बाद ही हम अपना दम तोड़ देते है और मनोबल टूट जाता है। हमें एक बढ़े प्रण और संकल्प को छोटे छोटे हिस्सों में बाँटकर करना चाहिए।

* दुनिया में सबसे अच्छा सवाल यह है कि मैं किसी से क्या नेकी कर सकता हूँ।

* जिंदगी में वफा का सिलसिला थोड़ा है और मुसीबत में यह काफी लम्बा हो जाता है।

* इस दुनिया में दिल लगाना और उसकी खूबसूरती पर आसक्त हो जाना बेवकूफी है।

* हर काम ईश्वर की मर्जी से होता है और ईश्वर किसीको नजर नहीं आता।

* यह जानते हुए की मौत जरूर आयेगी फिर भी उसकी तैयारी नहीं करते।

* अपने ऐबों से तो बाज नहीं आते और दूसरे में ऐब ढूंढते रहते हो।

* बीमारों का हल पूछने से आपसी सम्बन्ध बढ़ते है। एक दूसरे के लिए हमदर्दी और गम में शामिल होते है। तमाम घरवाले और रिश्तेदारों के दिल में मुहब्बत पैदा होती है।

* हमारे अच्छे बर्ताव लोगों को उनकी बुराइयों से दूर कर अच्छाई और ईमानदारी के रास्ते पर ला सकते है।

* दिल मनुष्य का खजाना है। अच्छा मनुष्य इस खजाने से अच्छी बातें पेश करता है और बुरा व्यक्ति इस खजाने से बुरी बातें पेश करता है। मनुष्य के दिल में जो कुछ भरा है वो ही उसकी जुबान पर छलकता है।

* ईमानदार व्यक्ति किसी को कष्ट नहीं देता। न्याय करता है, व्यर्थ में किसी का कत्ल नहीं करता। माता-पिता की सेवा करता है। उनकी आज्ञा पालन करता है। वह ईर्ष्या से दूर रहता है।

* अच्छे काम करते वक्त दिखावे को बाहर करो। किसी से बातचीत करो तो लालच को नजदीक मत आने दो। किसी की मदद करो तो मनमें अहसान जताने की इच्छा मत रखो। रूपये खर्च करो, कंजूसी से बचो और अच्छे काम के लिए खर्च करो।

* सिखना चाहते हो तो दुनिया से सीखो, हमदर्द चाहते हो तो दोस्त बनाओ। शिक्षा लेनी हो तो मौत से लो। यही फरिश्ते रात-दिन मनुष्य के साथ रहते है।

* मृतक के शव को अंतिम संस्कार करने में, किसी का कर्ज अदा करने में, अपनी गुनाहों को स्वीकार करने में, मेहमान को खाना खिलाने में जल्दबाजी करनी चाहिए।

* बच्चे को आजादी के साथ उसे जिम्मेदारियां भी सौंपनी चाहिए और उसे अच्छी तरह निभाने पर शाबासी भी देनी चाहिए जिससे उसके व्यक्तित्व का संतुलित विकास हो।

* जब भी बात करो सच बोलो, वादा करो तो उसे निभाओ, किसी की अमानत आपके पास रखी हो तो जबाबदारी के साथ वापिस करो। नजरों को नीचा रखो और हाथों को जुल्म, अत्याचार करने से रोको।

* एक पुरुष को शिक्षा देना सिर्फ एक व्यक्ति को शिक्षित करना है और एक स्त्री को शिक्षा देना पूरे खानदान को शिक्षित बनाना है।

* धीरज रखनेवाले की हकीकत मुसीबत आनेके बाद ही मालूम पड़ती है।

* वो ही लोग बेहतर है जो दुनिया और परलोक दोनों का हक अदा करते है।

* जुबान को दूसरों की शिकायत और शिकवाओं से दूर रखो, सुरक्षित रखो उससे राहत मिलेगी।

* दुश्मन से तो एक ही बार डर लगता है पर दोस्त से हजारों बार डरना चाहिए क्योंकि अगर दोस्त ही दुश्मन हो जाये तो आपको कष्ट देने के लिये उसे आपके हजार तरीके मालूम है। इसलिए कि वे तुम्हारे बारे में सब कुछ अच्छी तरह से जानता है।

* बुद्धिमान वो है जो अपनी कमियों को देखता है और मूर्ख वो है जो अपनी अच्छाइयों पर घमंड करता है।

* जिंदगी जब तक नेक कामों का जरिया ना हो तो तब तक अच्छी नहीं कही जा सकती।

* मूर्ख की जिंदगी और बुद्धिमान की मौत पर दुनिया हमेशा आंसू बहाती है।

* अपने मुलाजिम से अपना राज बताना उसे अपना मालिक बनाने की तरह है।

* गुमराह हुए व्यक्तियों को ईश्वर ही सुबुद्धि दे सकता है। उसके लिए एक तयशुदा सीमा दी जाती है।

✻ जौ की सूखी रोटी खाकर आजाद रहना बेहतर है बनिस्पत सोने का पटका बांधकर हाथ जोड़े किसी की गुलामी में खड़ा रहने से।

✻ जो अपने भाई से नफरत करता है और कहे कि मैं ईश्वर से मुहब्बत करता हूँ, तो वो झूठा और मक्कार है। क्योंकि जो आँखों से दिखायी देनेवाले मनुष्य से जो नफरत करता है और न दिखाई देनेवाली ईश्वर से किस तरह मुहब्बत कर सकता है। मनुष्य जाति से ही मुहब्बत ईश्वर से मुहब्बत है।

✻ किसी का दिल मत दुखाओ क्योंकि दुखी जीवों की हया आसमान का जिगर चीर लेती है। किसी का दिल तोड़ना उसको कत्ल करने के बराबर है। दिल में हमेशा नेक इरादों और नेक ख्वाहिशों को जगह दो। आप यह भी सोचे कि आपके सीने में भी एक दिल है।

✻ भलाई की फसल काटना चाहते हो तो बुराई की बीज बोने की गलती मत करो।

✻ आपसे छोटे आपकी इज्जत करे तो आप भी अपने बड़ों का सम्मान करना सीखो।

✻ मौत से बढ़कर कोई चीज सच्ची नहीं है और उम्मीद से बढ़कर कोई चीज झूठी नहीं है।

✻ इस दुनिया में एक मनुष्य भी दिल से चाहने लगे तो वो खुशकिस्मत है।

✻ जो दु:ख दे उसे छोड़ देना चाहिए मगर जिसे छोड़ दो उसे दु:ख मत दो।

✻ इंतजार के साथ सब्र करो। दलिलों के साथ अपनी बात पेश करो। अच्छे तरीकों से काम करो, सादगी के साथ जिंदगी बीता लो।

✻ कभी भी किसी के बारे में जाने बिना निर्णय मत लो और न ही किसी का मजाक उड़ाओ। कौन व्यक्ति किस परिस्थिति से गुजर रहा है यह उसका बाहरी रूप देखकर अंदाजा नहीं लगा सकते।

✻ हर व्यक्ति की परवरिश, आर्थिक स्थिति, दिमागी स्थिति, सोचने के तरीके अलग-अलग होते है। हो सकता है कोई चीज आपके लिए गलत हो पर उसके लिए सही हो इसलिए व्यक्ति को पहचानना अत्यंत आवश्यक है।

✻ कोई भी मूर्ख आलोचना, निंदा और शिकायत कर सकता है लेकिन समझदार और क्षमाशील बनने के लिये चरित्र और आत्मसंयम की आवश्यकता होती है।

✻ बड़प्पन बड़े आदमियों के संपर्क से नहीं, अपने गुण, कर्म और स्वभाव की निर्मलता से मिलता है।

✻ राह बनाना आवे तो मुश्किलें तो साथी है।

✻ दरियादिल पुरुष चेहरे की हंसी से हर गम को छुपाकर जीते है।

✻ जीवन जीने का मजा तभी है जब हम व्यस्त रहें अन्यथा शिथिलता हमपर हावी हो जाती है और संकीर्ण बना देती है इससे व्यक्ति आशातीत परिणाम नहीं प्राप्त कर सकता।

✻ यहां हर किसी को बंद दरवाजे की दरारों में देखने की आदत है, दरवाजे खोल दे तो कोई पूछने भी नहीं आयेगा।

✻ विश्व को एक नए धर्म की नहीं, एक नए सफल नेता की आवश्यकता है जो सभी धर्मों को जोड़े।

✻ अपराधों के दंड में उपयोगिता होनी चाहिए। मनुष्य को फांसी दे दी गई तो इससे कोई लाभ नहीं।

✻ जोश मनुष्य से कितनी शपथें कराता है। यह वह आग है जिसमें चमक बहुत है, गरमी कम है।

✻ बड़े आदमी ऐसी ज्योति छोड़ जाते हैं जो उनके बाद युगों तक जगमगाती रहती है।

✻ जीवन में कई बार हम गिरते है, उठते है, हारते हैं हमारे लिए हुए निर्णय हमें मिट्टी में मिलाने लगते है। पर आपके साथ चाहे

जो भी हुआ हो या भविष्य में जो हो जाए आपका मूल्य कम नहीं होता है। आप विशेष है। कभी भी बीते हुए कल की निराशा को आनेवाले कल के सपनों को बर्बाद मत होने दे। आपके पास जो सबसे कीमती चीज है वो है आपका जीवन।

* सागर के एक तट का मोह रखनेवाला कभी भी समुद्र पार दूसरे तट पर नहीं जा सकता।

* अच्छा सेनापति वो होता है जो अपने कुशल प्रशासन से विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी सेना का मनोबल बनाये हुए रखता है। इसीतरह परिवार का मुखिया भी परिवार का सेनापति होता है। उसे चाहिए कि वह परिजनों का मनोबल बनाएं रखें। कभी भी घरवालों का मनोबल टूटने न दे।

* जीवन में रोना भी आवश्यक है पर अपने आँसू स्वयं को पोछने पड़ते है। दुनिया में भीड़ बहुत है पर हर मनुष्य को अकेले ही जीना पड़ता है।

* ईर्ष्या और अहंकार छोड़ देना ही अच्छा होता है। यह हमारे लिए बहुत बड़ी आवश्यकता है।

* कुरूपता विधाता का ऐसा अभिशाप है, जिसे हम अपने सद्‌गुणों द्वारा दूर कर सकते हैं।

* दुष्ट के उदय होने से संसार को उस प्रकार दु:ख होता है, जैसे पाप-ग्रह केतु के उदय होने से लोगों को कष्ट होता है।

* आप हर कार्य खुशी से करें तो कोई भी कार्य मुश्किल नहीं लगेगा।

* किसी के दिल को चोट पहुंचाकर उससे क्षमा मांगना बहुत आसान है लेकिन स्वयं चोट खाकर किसी को क्षमा कर देना बहुत मुश्किल है।

* जरूरत के अनुसार जिंदगी जियो, अपनी ख्वाहिशों के मुताबिक नहीं, जरूरत तो फकीर की भी पूरी हो जाती है पर ख्वाहिशें बादशाह की भी अधूरी रह जाती है।

* जो चीज दिखती नहीं है उसपर विश्वास ही किया जा सकता है।

* गुस्सा एक आंधी है जो दिमाग के चिरागों को बुझा देती है।

* अत्याचारी लोग ऐसी जंजीरे आजतक नहीं खोज सकें जो मस्तिष्क और उसके सोच को आपस में जकड़ सकें।

* धार्मिक नियमों से उन्हीं को परेशानी होती है जिनका चलन उन नियमों के खिलाफ हो और वो अपना चलन बदलना नहीं चाहती बल्कि धार्मिक नियमों को अपने चलन के अनुसार बदलना चाहती है।

* इतने नर्म भी मत बनो कि कोई दूसरा तुम्हें निचोड़ लें, कोई इतने सख्त भी मत बनो कि तोड़ दिये जाओ।

* दुनिया में उन्हीं की इज्जत होती है जो अपने गुरुओं की इज्जत करते है।

* लालच, ईर्ष्या और गम मनुष्य को बर्बाद कर देते है।

* शिक्षा, तलवार, बम और बंदूक से अधिक शक्तिशाली है इसलिए अपने देश में अच्छे शिक्षकोंकी आवश्यकता है।

* आप किसी भी समस्या से उस वक्त तक नहीं निपट सकते जब तक उसके समाधान के लिए सही रास्ता न अपनाएं।

* जो होश में होते है वो कभी घमंड नहीं करते।

* तन्हाई से अधिक किसी भी हाल में अमन, चैन नहीं है।

* भूख को बर्दाश्त करनेवाला और हराम से बचना ईमानदार व्यक्तियों की निशानी है।

* आप किसीकी कमजोरियों की तलाश मत करो, न ही जासूसों की तरह किसी के ऐब मालूम करने की कोशिश करो।

* अपने आप से वादा करो कि गुजरी हुयी गलतियों को भूलकर आनेवाली कामियाबी को गले लगाओगे।

* जो व्यक्ति बड़ों का आदर नहीं करता और छोटोंपर दया नहीं करता वो अच्छे व्यक्तियों में से नहीं है।

* जो व्यक्ति ज्ञान की राह पर चलता है उसके लिए स्वर्ग का रास्ता अपने आप खुल जाता है।

* शिक्षा हासिल करना हर व्यक्ति का फर्ज है।

* अपने विरोधी को नर्मी और मुहब्बत से समझाना चाहिए क्योंकि हर मनुष्य की दिल की हालत ही ऐसी है कि वो प्यार से जल्दी समझता है।

* जो आपके साथ खराब व्यवहार करें तो भी आपको उसके साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए।

* जैसे स्वप्न में काटे गये सिर का दु:ख बिना जागे दूर नहीं होता, इसी प्रकार इस संसार का दु:ख बिना आत्मज्ञान हुए दूर नहीं होता।

* निर्धन मनुष्यों की सबसे बड़ी पूंजी और मित्र उनका आत्मविश्वास है।

* दाता के द्वार पर सभी भिक्षुक जाते हैं, अपना-अपना भाग्य है, किसी को एक चुटकी मिलती है, किसी को पूरा थाल।

* बेवकूफ पत्नी अपने पति को गुलाम बनाती है और फिर खुद ही गुलाम की पत्नी बन जाती है। समझदार पत्नी अपने पति को बादशाह बनाती है और खुद उसकी मल्लिका बनते रहती है।

*** बन सहारा बेसहारों के लिए बन किनारा बेकिनारों के लिए,**
जो जीये अपने लिए तो क्या जीये जी सको तो जीयो हजारों के लिए।

* जिसे अपने मनुष्यत्व की परख है वह किसी से नहीं डरता।

* प्रेम टेबल लैंप नहीं है कि प्लग जोडा, स्विच दबाया और रोशनी हो गई। हथेलियां रगड़ कर आग पैदा करनी होती है, तब प्रेम की तपिश आती है।

* महत्वाकांक्षा होना तो चाहिए लेकिन महत्वाकांक्षी की अति को न पालें।

* परेशानियों का कोई अंत नहीं। कोई न कोई परेशानी हर किसी को लगी रहती है। आप चाहें तो अपनी परिस्थितियों को बदल सकते है और अपनी परेशानियों से मुक्त हो सकते हैं। कुछ कोशिश करने पर इन्हें कम तो कर ही सकते है।

* हास्य हमारे चरित्र और संस्कारों को रेखांकित करता है। हम खुद चाहे कितने ही अनैतिक क्यों न हो लेकिन दूसरों की अनैतिकता हम कभी बर्दाश्त नहीं कर सकते।

* धूर्त लोग भी सीधे साधे लोगों को जीने नहीं देते। लोग जीवन में ही नहीं जीवन की हर क्षेत्र में आज कमोबेश ऐसी ही स्थिति देखने को मिलती है। कहीं आर्थिक शोषण तो कहीं सामाजिक विषमता या असमानता बेचैन किये देती है। कुछ लोग घटनाओं को अपने पक्ष में मोड़ने और अपना उल्लू सीधा करने में बड़े तेज होते हैं। जब कोई व्यक्ति अपनी धूर्तता से बाज नहीं आता या उसका आचरण समाज के नियमों के विरुद्ध होता है।

उम्मीद करना और उम्मीद रखना, दोनों महत्वपूर्ण है। खुद से उम्मीद रखना और दूसरों की उम्मीदों पर खरा उतरना जीवन का ध्येय होना चाहिए। यह वह चीज है, जो हमें अपनी सीमाओं से बाहर निकल कुछ कर गुजरने का मौका देती है। हर व्यक्ति तीन चीजों की उम्मीद जरूर लगाता है- प्रियतम का साथ, अतुल संपत्ति और अमरता। वह कहते हैं कि ये मिलें न मिलें, लेकिन जिंदगी के मायने यहीं है कि इनकी और इन जैसी अन्य चीजों की उम्मीद रखी जाये। जहां जिंदगी, वहां उम्मीद है और अगर आप उम्मीद नहीं रखते हैं, तो इस जीवन का क्या अर्थ? विचार से अधिक विश्वास की शक्ति है और जिस चीज का हमें विश्वास हो, उसकी हम उम्मीद करते हैं। यथास्थितिवाद बहुत से लोगों का स्वभाव बन जाता है। वे अभाव से छुटकारा पाने का प्रयत्न नहीं करते। ऐसा स्वभाव धीरे-धीरे शरीर का अंग बन जाता है और उसे छोड़ना

कठिन होता है। नाउम्मीदी सबसे पहले साहस और सामर्थ्य कम करती है और फिर हमारा व्यक्तित्व संदेहशील तथा आशंकित बना डालती है। आदमी जंग लगने के लिए पैदा नहीं हुआ। उसे उसकी क्रियाशीलता बनाए रखती है। उम्मीद और सपने उसे वह सब देते हैं जिनके लिए वह दुनिया में आया।

* अंधश्रद्धा हमेशा त्याज्य होनी चाहिए क्योंकि हमारा अस्तित्व व जीवन मूल्य इसी पर आधारित है।

* धर्म प्रेम सिखाता है, घृणा नहीं। धर्म पवित्रता है- दुष्कर्म नहीं, धर्म जीवन को गति, मति और शांति देता है उसे असहनीय नहीं बनाता। आज धर्म को पुनर्भाषित कर उसे परिमार्जित व संस्कारित करने की आवश्यकता है। धर्म आत्मिक व मानसिक विकास के रास्ते खोलता है।

* जीवन उद्देश्य रहित है। आश्चर्य मत करो। उद्देश्य का पूरा विचार ही गलत है- यह लालच के कारण ही होता है। जीवन तो महज एक आनंद है, खेलपूर्ण है, एक मजाक, एक हास-परिहास है, जिसका कहीं कोई उद्देश्य नहीं। जीवन स्वयं उद्देश्य ही है, उसका कोई दूसरा उद्देश्य नहीं। आनंदपूर्ण, खेलपूर्ण और जीवन के अंतिम छोर तक बिना किसी उद्देश्य के साथ, दृष्टि में भी बिना किसी लक्ष्य के साथ जीयों। समग्रता में जीयो।

* समाज के विकास में प्राकृतिक, भौतिक, मानसिक, सामाजिक और वित्तीय पूंजी अहम है। पर आजकल नैतिकता इनपर भारी पड़ रही है। हमारे नैतिक मूल्यों में कमी आ गयी है। जिसके कारण सामाजिक बुराइयां अपने जड़ें मजबूत हो रही है। भ्रष्टाचार, बलात्कार, हत्या, धोखाघड़ी आदि घटनाएं हमारे समाज में रोजाना की बात है। इसका कारण है हम मनुष्यों में नैतिक मूल्योंकी कमी है। एक स्वस्थ, सुंदर और सुरक्षित समाज की स्थापना के लिए हमें नैतिकता दृढ़ता से अपनाना होगा।

* भारतीय माताएं अपने बेटों की परवरिश इसतरह करती है कि यह बच्चा ही उसके जीने का सहारा हो। नतीजतन वह बच्चा ही अपनी मां का भाग्यविधाता बन जाता है और बड़ा हो जानेपर नारी को अबला समझकर उसका शोषण और बलात्कार करता है। इसीसे आज पवित्र रिश्ते कलंकित हो रहे है। सरे आम बलात्कार, हत्या, चोरी, डकैती का तांडव है।

* ईश्वर उन्हीं को दोस्त बनाता है जो दूसरों को दया और एहसान करना जानते है, क्षमा करते है, उनकी भलाई चाहते है।

* ज्ञान रोशनी है उसे फैलाना चाहिए। ज्ञान दौलत है उसे हासिल करना चाहिए। ज्ञान खजाना है बांटने के लिए, ज्ञान जिंदगी है, उसका सम्मान करना चाहिए। ज्ञान वो शक्ति है उसे बढ़ाना चाहिए।

* जो रास्ता अपने को मालूम न हो उसपर नहीं चलना चाहिए।

* जिस चीज का हमें ज्ञान नहीं उसके बारे में हमें कुछ नहीं बोलना चाहिए।

* यह बहादुरी नहीं है कि किसीके साथ बदला लिया जाए बल्कि ताकत होते हुए भी व्यक्ति को माफ कर देना सबसे बड़ी बहादुरी है।

* आजमाएं हुए को दोबारा आजमाना और मीठी मीठी बात करनेवाले को अपना हमदर्द समझ लेना बचपना है।

* मुसीबतें तो जिंदगी में आती रहती है और झेलनी भी पड़ती है। मौत ही ऐसी है जो तमाम मुसीबतों से छुटकारा दिला सकती है।

* नकारात्मक यादें दिमाग में हमेशा बरकरार रहती है। आप खुशी के क्षणों को कम याद रखते है, दु:ख के क्षण अधिक याद आते है। कोई भी घटना जो सकारात्मक नहीं है व लम्बे समय तक याद रहती है। अच्छे क्षण कम समय तक। भावात्मक पल भी लम्बे समय तक दिमाग में रहते है।

* कभी भी कोई जिम्मेदारी लेने से मुंह न मोड़े। कभी भी अपने काम को वेतन के साथ न तौले बल्कि आप बहुत काम कर

स्वयं को उस पद की योग्यता के लिए साबित करें जिसमें आपको सही तनख्वाह मिलें। संस्थाएं आपकी क्षमता देखती है।

* गरीबी के डर से अपने संतान की हत्या मत करो। ईश्वर ही सबका पालनहार है और सबके लिए रोटी-रोजी का इंतजाम करता है।

* बुलंद हिम्मती व्यक्ति की निशानी है।

* बात चाहे कड़वी हो हमेशा सच्ची बात ही कहनी चाहिए। न्याय के बारे में किसी जालिम बादशाह के सामने कहना बहुत बड़ा संघर्ष है।

* बेहतरीन लोग वो ही है जो अच्छे चरित्र, सदाचार के मालिक है।

* खामोशी अपनेआप में बहुत बड़ी ताकत है।

* बिना ज्ञान किया हुआ कर्म बबाल है और बिना ज्ञान किया हुआ कर्म तबाह कर देता है। जन्म से मौत तक ज्ञान हासिल करना चाहिए। ज्ञान हासिल करना हर व्यक्ति के लिए फर्ज अनिवार्य है।

* ईश्वर ने हर बीमारी का इलाज भी पैदा किया है।

* रिश्वत लेने और देनेवाला दोनों भी अपराधी है।

* जिस चीज से नशा आये वो चीज हराम है।

* जो झूठ बोलबोलकर लोगों को हंसाएं उसके लिए कठिन सजा है।

* अगर कोई बुरा काम देखकर भी उसे मना नहीं करे तो उसे ईश्वर की नाराजगी सहन करनी पड़ेगी।

* आत्मविश्वास की कमी एवं निराशा से पूर्ण मानसिक दशा का शरीर एवं स्वास्थ्य पर भी हानिकर प्रभाव पड़ता है जो कि मनोदैहिक विकारों के रूप में प्रकट होता है। नींद न आना, भूख न लगना, किसी काम में मन न लगना ये सभी स्थितियाँ आत्मविश्वास की कमी के कारण ही उत्पन्न हो जाती हैं। आत्मविश्वास के कारण सफलता मिलती है। सफलता आत्मविश्वास को बढ़ाती है। सफलता प्राप्त करने के लिए आत्मविश्वास का होना बहुत आवश्यक है। सफलता के लिए सुखद दशाएं आवश्यक होती है। सौंदर्य, स्वास्थ्य, भौतिक सुख-सुविधाएं, उपलब्धियाँ, शान्तिपूर्ण वातावरण इत्यादि। इसीप्रकार पारिवारिक स्थिति उच्च होने पर भी उपलब्धियों की प्राप्ति न होना सामान्य के स्थान पर ऋणात्मक मानसिक दशा के रूप में आत्मविश्वास की कमी उत्पन्न कर सकती है। व्यक्ति के लिये अपने आत्मविश्वास को बनाये रखने के दो मार्ग हैं। वह जो पाना चाहता है, उसे प्राप्त कर ले या वह अपनी आकांक्षाओं का स्तर कम कर दे। आत्मविश्वास मात्र एक मानसिक दशा के रूप में ही नहीं प्रकट होता है, बल्कि यह व्यक्ति के बाह्य व्यक्तित्व में भी परिलक्षित होता है। व्यक्ति की बातचीत का ढंग उसकी चाल-ढ़ाल एवं क्रियाकलापों से भी उसका आत्मविश्वास प्रकट होता है। उसके निर्णय पूर्ण विश्वास के साथ होते है। आत्मविश्वासहीन व्यक्ति अपने निर्णयों को बार-बार बदलते रहता है। आप स्वयं के व्यक्तित्व एवं उपलब्धियों को महत्व प्रदान करें लोगों के द्वारा दी गयी मान्यताएं आपमें आत्मविश्वास पैदा नहीं कर सकती।

* किसी का भी दिल मत दुखाओ। तुम्हारा भी दिल कोई दुखा सकता है।

* बुरी पुस्तकें ऐसी जहर होती है कि जो शरीर ही नहीं आत्मा को भी मार देती है।

* जीवन का असली मकसद ईमानदारी और सच्चाई को अपनाने से ही हासिल होता है।

* अपनी कामयाबी के लिए मेहनत से कभी जी नहीं चुराना चाहिए।

* विश्वास ही जिंदगी को हर कदम पर ताकत देनेवाली शक्ति है। विश्वास ही ताकत और जीवन है।

* चरित्र मनुष्य का दर्पण है।

* जिंदगी में बहुत सी मुश्किलें पेश आती है, हम किसी न किसी मोड़ पर जिंदगी की मुश्किलों से लड़ते रहते है। खासकर पति-पत्नी के रिश्ते में ऐसे में दूसरों के लिए अपने दिल में मुहब्बत की जगह देना जरूरी है। आज की व्यस्त जिंदगी के तमाम उलझनों के दरमियान भी मुहब्बत एक खुशहाल रिश्ते की बुनियाद है। प्यार के दो मीठे लफ्ज में वो जादू है कि आप दूसरों का दिल जीत सकते है। मीठे लफ्ज गुस्से को भी समाप्त कर देते है।

* ईश्वर के डर से उम्र बढ़ती है।

* खुशमिजाजी गमगीन लोगों की दवा है।

* मूर्ख अपने दिल की बात पहले ही प्रकट कर देता है जबकि बुद्धिमान व्यक्ति अपना राज आखिरतक छुपाएं रखता है।

* मनुष्य का कर्म ईश्वर की मर्जी के मुताबिक होता है और दुश्मनों के दिलों में भी अपना मुकाम पैदा कर लेता है।

* बुरे आदमी का ठिकाना नरक की दहकती हुई आग है अगर उसका संग करोगे तो आपको भी वही रहना पड़ेगा।

* झूठ से हमेशा बचना चाहिए। झूठ बोलनेवाले व्यक्ति की आदत उसे नरक तक पहुंचा देती है। झूठ बोलनेवाला व्यक्ति इसका आदी हो जाता है और उसका कोई मान-सम्मान नहीं करता।

* प्यार एक अद्‌भुत अनुभव है। स्वयं के खास होने का एहसास है। जब कभी भी प्यार में अधिकार आ जाता है और स्वतंत्रता नहीं होती, सम्मान, परवाह, आपसी समझ, एक-दूसरे पर विश्वास और संवेदनशीलता नहीं होती। प्यार एक बेहद खुशनुमा एहसास है।

* रिश्ता चाहे जो हो रिश्ते में विश्वास, सम्मान, स्वतंत्रता और समझ जैसी बुनियादी चीजें नहीं होगी तो वह रिश्ता बोझ होगा।

* मनुष्यता की मदद न करनेवाले व्यक्ति मनुष्य कहलाने के योग्य नहीं।

* दूसरों के गम से बेखबर रहनेवाला आदमी आदमी नहीं होता।

* बिना स्वार्थ के मनुष्यता की खिदमत या सेवा व्यक्ति को मनुष्यता के उच्चस्तर पर ले जाती है।

* जिस जगह अच्छी बातों की कद्र नहीं की जाएं वहां चुप रहना ही बेहतर है।

* वादा सिर्फ जुबानी ही नहीं होता उसे अंमल भी करना चाहिए।

* अपने कार्यक्षेत्र में ईमानदारी से पेश आना चाहिए। आपकी ईमानदारी आपको ऊंचाइयों तक पहुंचाएगी। झूठ बोलकर, धोखा देकर आप अपना ही नुकसान करते है।

* जो बाहर से कुछ और अंदर से कुछ और है उसके दोस्त भी कम ही होते है। वो दोस्त किस काम का जो आपकी मदद नहीं करे और तुम्हें उससे मांगना पड़े।

* आपको भी दूसरों के काम आना चाहिए। जैसे सूई नंगी रहकर भी दूसरों के तन को ढांकने का काम करती है।

* आजकल दिखावे के लिए शादी ब्यांह में बेधड़क पैसा खर्च करते है और पैसा पास में नहीं होने की परिस्थिति में उधार लेकर खर्च करते है ऐसी बातों से बचना अत्यंत आवश्यक है। इससे घर-गृहस्थी परेशानी और गरीबी में गुजरती है और बुढ़ापा निराशा में।

* जीवन में सफलता और असफलता लगी रहती है पर इससे घबराकर किसी तरह का आत्मघाती कदम उठाना अपराध है। जिंदगी में कई बार अनचाहा भी मिल जाता है जिसकी हमने कल्पना भी नहीं की। जिंदगी में महत्वपूर्ण है लगातार प्रयास करना और कर्मशील सोच रखना। परिणाम देर सबेर जरूर मिलते है। जीवन के कई मुकाम पर हमें आशातीत सफलता नहीं

मिल पाती इससे हमें अपने प्रयासों में और तेजी बढ़ानी चाहिए। कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती।

* जिंदगी में सफलता के लिए सही रवैया अपनाना जरूरी है भले ही आप कितने भी प्रतिभाशाली हो आप कामयाबी का वह शिखर नहीं छू सकते, जिस शिखर पर आपका नजरिया है। अगर आप जो कुछ भी चाहते हो वह ठान ले तो मुश्किल कुछ भी नहीं है। आप यह सोच ले कि आप यह कर सकते है तो मंजिल इससे दूर नहीं है। हर काम का अपना मूल्य और अहमियत होती है। इसीसे आपकी पहचान बनती है इसलिए जो भी काम आप करें दिलचस्पी और गर्व के साथ करें। किसी काम को छोटा नहीं समझना चाहिए। कार्यस्थल पर हर व्यक्ति महत्वपूर्ण होता है।

* अगर अपनी उन्नति चाहते हो तो आराम कम करना चाहिए और मुसीबतों को झेलने की क्षमता रखनी चाहिए। यह आदतें ही आपको सफलता तक पहुंचाएगी।

* कितने भी मुसीबतें, तकलीफें और कठिनाई आ जाएं पर मौत की तमन्ना करना अपराध है। जिंदगी कठिन हो जाए रंज व गम भयानक सूरत बना लें। जिंदगी बोझ लगने लगे तब भी मौत की इच्छा कभी नहीं करना।

* मनुष्य को हर गंदे काम से बचना चाहिए। चुगली भी एक गंदगी है। बुराइयां करने से रिश्तेदारियां और समाज टूट-फूट जाते हैं, परिवार बिखर जाते हैं। इसलिए चुगली, निंदा से बचना चाहिए।

* जिद, हठधर्मी, अड़ियलपना बहुत बुरी आदत है और बुरा स्वभाव है जिसकी वजह से मनुष्य सही और सच्चे रास्ते को छोड़कर गुमराह होकर अपराध करते रहता है।

* जो व्यक्ति अत्याचार करता है उसे बदला न लेकर उसे माफ कर देना चाहिए और उसको नेक काम का रास्ता दिखाना चाहिए।

* बड़ा बनने के लिए पहले छोटा बनना चाहिए क्योंकि बड़ी-बड़ी इमारतों की बुनियाद छोटी-छोटी ईंटों से बनी होती है।

* अगर आप हँसते हो तो सारी दुनिया आपके साथ हँसेगी लेकिन रोओगे तो आपको अकेला रोना पड़ेगा।

* व्यर्थ बोलने से खामोश रहना हमेशा बेहतर है। जुबान बंद रखना एक इबादत है।

* धन-दौलत खर्च करने के लिए मिली है, अच्छे कामों के लिए मिली है और जो खर्च न करे वो दौलत पाने का अधिकारी ही नहीं है।

* अगर सही आदमी सही जगह हो तो सफलता खुद चलकर उसके पास आती है। व्यक्ति वो काम करें जो उसका शौक हो और वो बेहद कामयाब होता है।

* हरेक कर्मचारी को सफल होने के लिए अनेक स्तर पर पारंगत होना चाहिए। अपने ज्ञान में नयी-नयी खूबियां तलाशते रहना चाहिए। यह उसपर निर्भर रहता है कि वो अपने आपको कैसे पेश करता है।

* दुनिया की मुहब्बत हर गलती की जड़ है।

* बुरे लोगों से दोस्ती मत करो वरना लोग आपको भी बुरा समझेंगे।

* बेहतरीन कदम वो है जो नेकी की तरफ उठे।

* ईश्वर उसपर भी कृपा नहीं करता जो जरूरतमंदो पर भी कृपा नहीं करता।

* आप सबमें से वो लोग अच्छे है जो आचरण में अति उत्तम व श्रेष्ठ हो।

* जहां कभी भी रहो ईश्वर से डरो। अगर अपने हाथसे कोई बुराई हो जाए तो भलाई के कार्य करो ताकि बुराई मिट जाएं। यह लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करने से ही होगा। भूखे को खाना खिलाना, बीमार का हाल पूछने जाना और कैदी को

छुड़ाना भी नेक काम है। मजदूर के साथ अच्छा व्यवहार करो। उसकी मजदूरी उसका पसीना सूखने के पहले ही दे दो।

* या तो अच्छी बात कहो, या फिर चुप रह जाओ। अपने पड़ोसी को कभी भी तकलीफ मत दो और मेहमानों का आदर करना सीखो।

* शैतान को कुकर्म करने से रोको वरना ईश्वर अपना प्रकोप कर देगा।

* जिस घर में सास-बहू के सम्बन्ध अच्छे ना हो, एक-दूसरे पर शक करें, इल्जाम लगाएं वहां जिंदगी शांति से व्यतीत नहीं हो सकती। हमें अपनी आपसी रिश्तोंकी अहमियत और विश्वास का भरोसा होना चाहिए। दिलों को साफ रखना और हमदर्दी का बर्ताव रखना मुश्किल तो बहुत है पर यह आवश्यक है।

* जो लोगों को तो नेकी करना सीखाएं और स्वयं न करें उस पारस पत्थर की तरह है जो दूसरों को तो सोना बना देता है और स्वयं पत्थर का पत्थर ही रहता है।

* अपना हर काम कहने के अनुसार ही करो क्योंकि आजकल बहुत से ऐसे लोग है जो कहते कुछ है और करते कुछ है। ऐसे लोगों का कोई नाम और इज्जत नहीं होती।

* शेर घास नहीं खाता, चाहे भूखा ही मर जाएं, शरीफ आदमी रिश्वत नहीं लेता चाहे जितनी बड़ी रक्कम हो। बुद्धिमान बिना भूख के खाना नहीं खाता चाहे व्यंजन कितने ही लजीज हो। नेक आदमी पराया माल नहीं चुराता, चाहे किसीको खबर ना हो। बुलंद हिम्मतवाला भीख की रोटी नहीं खाता चाहे आसनी से मिले।

* ज्ञान का मतलब सिर्फ दुनिया का ज्ञान ही नहीं ईश्वर का ज्ञान भी होना जरूरी है। जिसे इस संसार का ज्ञान तो है पर ईश्वर और धर्म का ज्ञान नहीं उसके लिये तो वह घाटे का सौदा है। हमारा व्यक्तित्व अधूरा रह जाएगा और बहुत थोड़ी सी जिंदगी के लिए हम हमेशा के लिए अपनी जिंदगी का सुकून और आराम खो बैठेंगे।

* अगर हम खुशगवार है तो हम अपनी मुश्किलों पर काबू पाने में कामियाब होंगे, खुशी के झरने हमारे अंदर फूटेंगे। खुशी ऐसी दौलत है जो हमें बाहर से नहीं मिलती।

* किसी के शुक्रगुजार होने से जिंदगी खुशहाल हो जाती है अर्थात् परिस्थिति अपने पसंद और मर्जी के मुताबिक न होनेपर शिकायत न करते हुए हम उसे स्वीकार कर लें तो हमें ईश्वर का धन्यवाद अदा करना चाहिए। शुक्रगुजारी अच्छे व्यक्ति की पहचान है।

* दुनिया में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसे कोई तरह का रंज और गम नहीं हो। अगर खुशियों का लुफ्त उठाना है तो गम को बर्दाश्त करना सीखो। गम आये तो होश मत खो बैठो और खुशी आएं तो अपनी पिछली जिंदगी को मत भूलो। दुनिया में मनुष्य के ऊपर जो कुछ बीतता है या गुजरता है वो ईश्वर के हुकुम के बिना नहीं होता। इस धरती पर मनुष्य के लिए जिंदगी एक इम्तिहान है और यह सुख दुख उस इम्तिहान का हिस्सा है। मनुष्य को सदा के लिए इस दुनिया में नहीं रहना है। इसलिए जिंदगी में हर सुख-सुविधा तलाश करते रहना और उसको जमा करने की फिक्र बेकार है। जो नैतिक है, ईमानदारी है उसीपर चलते हुए खुशियां हासिल करो और उसीमें खुश रहो। हमें अपनी असली मंजिल पर पहुंचने की फिक्र होनी चाहिए न कि इस सराय में। इस दुनिया को अपनी मंजिल समझकर गुमराह नहीं होना चाहिए। इसमें सब्र और शुक्र से जिंदगी गुजारने का प्रयत्न करना चाहिए।

* दुनिया में हर व्यक्ति खुश रहने के लिए हजारों प्रयत्न करता है और खुश होता है मगर वास्तविक खुशी नहीं होती। असली खुशी तो वह है जो किसी परेशान व्यक्ति की मदद करें और किसी की परेशानी दूरी करें तो उसके चेहरे पर जो

रौनक फूट पड़ती है, मदद करनेवाला जब परेशान व्यक्ति की खुशी को देखता है तो उसका मन, दिल जो सुकुन, शांति महसूस करता है वही दुनिया की सबसे बड़ी और वास्तविक खुशी है।

* दिल में ऐसे व्यक्ति की तस्वीर उतारें जो वास्तव में दिल को लगे।

* अनुभव वो कंघी है जो वक्त के बादल गिर जाने के बाद नसीब होती है।

* आंखे हमेशा बिछड़ के गम से भीग जाती है। मगर भीगी हुई आंख गम को ही प्रकट नहीं करती बल्कि खुशी के आंसू की शक्ल में प्रकट होती है। जब कोई पुराना, हमदम, साथी बरसों बाद होठोंपर मुस्कुराहट लिये आँखों में सर्द नमी के आँसू लिये मिलें उस समय ही महसूस होगा कि बिछड़ने का गम अधिक था या मिलने की खुशी।

* वो व्यक्ति जिस समय क्रोधित होता है उस समय अपने गुस्से को पी ले या बर्दाश्त कर ले गुस्सा निकालने की ताकत रखता हो फिर भी वह उसे नजरअंदाज कर दे वह व्यक्ति महान है।

* बच्चे देश का भविष्य होते है, बच्चों के अंदर हौसले का जज्बात फूंका जाएं तो उन्हें नाकामियों में भी कामियाबी की रौशनी दिखायी देगी।

* आप दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करेंगे लोग भी आपसे ऐसा ही व्यवहार करेंगे। दूसरों को खुशियां देंगे तो बदले में खुशियां पाएंगे। खुशियां लोगों की जिंदगी, सोच बदल सकती है, उनका व्यक्तित्व बदला जा सकता है।

* सोचने से पहले जुबान को दौड़ने मत दो।

* अगर दुनिया में कामियाबी के साथ रहना चाहते हो तो अपने आप में मुकाबला करने की हिम्मत रखो।

* फूलों से खेलना चाहते हो तो कांटों से दामन बचाने का ज्ञान सीखना पड़ेगा।

* ऐसे फायदे से स्वयं को दूर रखो जो दूसरों के लिए नुकसान की वजह बनें।

* बादशाह जबर्दस्ती लोगों को अपने पास जमा करता है और बेकाम आदमी लोगों से दूर भागता है फिर भी लोग उसका पीछा नहीं छोड़ते।

* वो व्यक्ति कभी भी विद्वान नहीं है। जिसके दिल में ईश्वर का कोप ना हो और दुनिया की लालच में फँसा हो।

* ऐसा दोस्त सदा के लिए अच्छा है जो सिर्फ भगवान के लिए आपसे मुहब्बत करें।

* विद्यार्थी के लिए अच्छी नियत, गुरु की बातें ध्यान से सुनना और उससे गौर करना, गुरु की बातों को अच्छे लोगों तक फैलाना यह निहायत जरूरी है।

* बुरी संगति से, ऐसी जगह से जहां तोहमत और इल्जाम लगे, झगड़े और मुकदबे बाजी से दूर रहना, चुगली करने और सुनने से दूर रहना। किसी की बुराई करने से व जुबान के गलत इस्तेमाल से हमेशा दूर रहना चाहिए।

* वही सबसे प्रिय व्यक्ति है जो बदले की ताकत तो रखता हो पर साथ में माफ करने का भी जज्बा रखता हो।

* ऐसे उपदेश मान लेने चाहिए जो सुनने में कड़वे ही हो, भाई की आपत्ति चाहे अपना दिल न गँवारे, दोस्त का उपहार चाहे कमतर ही हो। गरीब का निमंत्रण स्वीकार कर लेना चाहिए चाहे तकलीफ ही हो, माँ-बाप की आज्ञा चाहे नागवार ही हो, अपनी गलती चाहे उसमें अपमान ही हो, अच्छी पत्नी की मुहब्बत चाहे बदसूरत ही हो हमेशा स्वीकार करने योग्य है।

* बुद्धिमान वही व्यक्ति है जो अच्छी बातें सुनकर उसपर आचरण करें।

* किसी का दिल दुखाना भी एक बद्दुआ है जो सिर्फ जुबान से ही नहीं दिल से निकलती है।

* जो काम लोगों के सामने करना गलत है, संभव नहीं है उसे छुपकर भी नहीं करना चाहिए।

* अपने गम के आंसू बहाकर नहीं बल्कि उसे छुपाकर जिओ। (मेरा नाम जोकर)

* दिन में रोजी की तलाश करो और रात को रोजी देनेवाले की तलाश करो।

* दुनिया में अगर स्वर्ग देखना है तो उस घर को देखो जिस घर में बूढ़े माँ-बाप खुशी-खुशी रहते है।

* इच्छाएं, धन और जिंदगी की चाहत इनसे दोस्ती नुकसानदेह है।

* किसीपर कीचड़ उछालने का प्रयत्न मत करो हो सकता है कि आपका निशाना चूक जाएं पर इस प्रयत्न में आपके हाथ तो जरूर गंदे हो जाएंगे।

* व्यक्ति अपने कर्मों से पहचाना जाता है शक्ल से नहीं।

* भले ही कोई आपके साथ बुराई करे पर आप उसके साथ अच्छा ही करो।

* दोस्ती में कभी भी गुरुर को बीच में मत आने दो।

* सोने को आँख परखती है और मनुष्य को दुनिया की मुसीबतें।

* झगड़ा अधिक बढ़े उससे पहले ही उसे खत्म कर देना चाहिए।

* सच कभी झूठ से शिकस्त नहीं खाता।

* ऐशोआराम, भोगविलास ऐसी बला है जिससे जल्दी ही दूर भागना चाहिए।

* बेकारी और सुस्ती मनुष्य का विनाश कर देती है।

* झूठ बोलने से सदा बचना चाहिए। क्योंकि एक झूठ से बहुत से नये झूठ जन्म ले लेते है।

* परहेजगार आदमी बादशाह से भी ज्यादा इज्जतवाला होता है।

* शहद की मक्खी मीठे की तलाश में खूबसूरत फूलों पर बैठती है और कड़वे से कतराती है जबकि घरेलू मक्खी हमेशा जख्मों की तलाश में रहती है।

* दिल की दुनिया ही अलग होती है। अगर उसमें कोई चुपके से बसेरा कर ले तो दिल की बंजर जमीन भी किसी के अचानक आने से आबाद व खुशहाल हो जाती है। पर मेहमान जब चले जाता है जाते हुए तमाम सपने तोड़ जाता है। इस दिल की हंसती बसती दुनिया को हमेशा के लिए उजाड़ जाता है और हमारे इस दिल के दर्द को सहना पड़ता है और किसी को भी हम उस जालिम मेहमान की बेरुखी को बता नहीं सकते।

* अपने पड़ोसियों की छोटी-छोटी बातों को दिल से लगाने के बजाय सम्बन्धों को महत्व दे और चुभनेवाली बातों को संभव हो जहाँतक नजरअंदाज करें। पड़ोसियों के साथ धैर्य, समझदारी और अपनेपन का भाव अहम होता है ना किसी तरह की प्रतियोगिता और द्वेष। पड़ोसियों के व्यक्ति के जीवन में तांक-झांक या बेवजह हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए इससे रिश्तों में खटास उत्पन्न हो सकती है। परिवार में कलह आसानी से फैल सकती है। किसी की निजता का हनन भी उचित नहीं है। बेहतर यही है कि पड़ोसियों के साथ अगाढ़ रिश्ते बनाएं जाएं जिन लोगों से आपका स्वभाव और विचारधारा मेल खाती हो। जब भी अवसर मिले पड़ोसियों की मदद करें उनके परिवार में कोई खुशनुमा क्षण हो तो उस खुशी में शामिल होना चाहिए और यदि कोई दु:ख है तो उसमें भरपूर सांत्वना और सहानुभूति का परिचय बताना चाहिए साथ में ही उनके हर मदद के प्रति आभार प्रकट करना चाहिए। पड़ोसी एक ऐसे रिश्तेदार-नातेदार है जो हर वक्त सबसे पहले आपके पास मौजूद हो सकते है। आपका पड़ोस आपके प्रति कैसी भावना रखता है यह जान लेना बहुत जरूरी है। तभी सही और गलत की पहचान हो सकती है। कुछ विशेष प्रकार के पड़ोसी सिर्फ इधर-उधर की बात करने का शौक रखते है ऐसे

लोगों से सदा सावधान रहना चाहिए। वे अपना उद्देश्य पूरा करने के लिए दो परिवारों में मतभेद उत्पन्न कराने का प्रयत्न करते रहते है। वो मनुष्य अच्छा नहीं है जो खुद का पेट भर लेता है और उसका पड़ोसी भूखा रहता है।

* जो अच्छी शिक्षाएं हम दूसरों को देते हैं, हमें खुद भी उनपर अंमल करना चाहिए तो हम जरूर अच्छे मनुष्य बन सकते है।

* बोलते समय जबान पर नियंत्रण रखना जरूरी है, क्योंकि तीन इंच की जुबान छ: फुट के आदमी को मारने की ताकत रखती है।

* शिष्टाचार एक आसान नेकी है इसमें कुछ भी खर्चा नहीं आता और मनुष्य को बहुत ज्यादा फायदे से नवाजता है।

* एहसान को भूल जानेवाला इस काबिल नहीं होता कि उसके साथ बैठा जाएं।

* ईश्वर से डरनेवाले किसी और चीज से नहीं डरते।

* बुलंद हौसला रखनेवाले मनुष्य के हाथ में मिट्टी भी सोना बन जाती है।

* अच्छी बात अगर दुश्मन से भी सुनी जाएं तो उसे भी स्वीकार कर लेनी चाहिए।

* हमें चाहिए कि हम किस्मत के मारे सताएं हुए लोगोंपर अपनी मेहरबानियां न्यौछावर कर दें।

* यह संभव ही नहीं कि अच्छों की संगत में बैठे और हमपर अच्छाई का असर नहीं आवें, हर काम को जल्दी से करें और उसमें नुकसान न हो। हिम्मत और हौसले से काम करें पर कामयाब ना हो, अधिक बातें करें और बदनाम न हो, दूसरों के झगड़े में पड़े और परेशान ना हो।

* अतिथि रिश्तेदार के आनेपर मुस्कुराकर उनका स्वागत करना चाहिए। आपकी मुस्कुराहट आपके स्नेह को प्रदर्शित करते है। उम्र दराज व्यक्ति को झुककर प्रणाम करना चाहिए, चरणस्पर्श करें। यदि अनचाहे मेहमान भी हो तो भी अतिथि का स्वागत करना बाहर से परंपरा रही है। मधुर स्वर में बातचीत करनी चाहिए और पूर्ण शालीनता बरते। मेहमान के साथ कभी भी वाद-विवाद में ना उलझे। उसके साथ की असहमति को भी शालीनता से ही प्रकट करे। मेहमान को विदा करते समय उसे दरवाजे तक छोड़ने जाएं।

* हर वक्त नाकारात्मक रवैया अपनाने से या सोचने से कुछ भी हासिल नहीं होता। दिमाग में हमेशा सकारात्मक बातें ही सोचनी चाहिए।

* आप कभी किसी पर कीचड़ मत उछालो जिससे दूसरों के कपड़ों पर दाग लगे या नहीं लगे पर आपके हाथ जरूर गंदे हो जाएंगे।

* जो मेहनती और ईमानदार व्यक्ति है वह कभी भूखा नहीं मरेगा। भूख मेहनती के घर में झांकती अवश्य है मगर अंदर प्रवेश नहीं करती।

* तलवार तोप और बंदूक से मनुष्यता इतनी बर्बाद नहीं होती जितनी अधिक खाने से क्योंकि इसीसे हजारों तरह की बीमारियां पैदा होती है।

* जिंदगी की जरूरतों को कम कर देना ही सबसे ज्यादा अमीरी है झूठ बोलने से झूठ बोलनेवाले की सच्ची बातों का भी विश्वास जाते रहता है।

* कभी-कभी भलाई किसी और के साथ की जाती है और उसका श्रेय किसी और को जाता है।

✻ सूखे दरकतों पर भी फूल खिल सकते है। अगर आप में मंजिल को पाने की लगन और जुनून है तो मंजिल आपके सामने खड़ी होगी।

✻ जो झूठ बोलेगा, वादा खिलाफी करेगा, विश्वासघात करेगा, यह किसी काफिर व्यक्ति की पहचान है जो बात-बात पर झगड़े पर उतर आएगा। दिल में कुछ और जुबान पर कुछ। ऐसा व्यक्ति कभी सुखी नहीं हो सकता।

✻ अपनी योजनाओं को मूर्त रूप देकर अपने भविष्य का निर्माण कैसे किया जाए यह आप स्वयं पर निर्भर है। जिन बातों पर सिर्फ आपका नियंत्रण है, जिन्हें सिर्फ आप ही जानते है तो फिर असफलता के लिए आप किसी और को दोषी नहीं ठहरा सकते। आप ही तय करते है कि आपको कब क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। जल्दी में किया गया कोई भी व्यवहार गलत हो सकता है। इसके लिए आगे चलकर आपको पश्चाताप महसूस करना पड़ सकता है।

✻ आपके विचार आप जो सोचते है वही है आप। आप खुश है तो वास्तव में आप खुश है। प्रत्येक व्यक्ति के भीतर एक अंतर्मन होता है जिसपर उसका नियंत्रण नहीं होता। जिनपर आप विश्वास करते है, विचारधारा बनाते है वह सब आपके अपने होते है। हमेशा अच्छा सोचे और खुश रहे।

✻ शब्द एक तीर के समान होते है। एकबार मुँह से निकलने के बाद उसे वापस नहीं लिया जा सकता। इसलिए तोल-मोलकर बोलना चाहिए। गुस्से में हमारा विवेक जागृत न होने से मुंह से गलत शब्द निकल जाते है।

✻ आप अपने समय को किस प्रकार व्यतीत करते है यह आपके हाथ में है। यदि समय से आपका काम पूरा नहीं होता तो इसके लिए जिम्मेदार आप है। समय का प्रबंधन करना आना चाहिए अगर नहीं हो रहा तो इसका अर्थ है कि आप अपना समय बर्बाद कर रहे हो।

✻ एक-दूसरों के विचारों का मेल मिलाप न खाने से ही मनमुटाव का कारण उत्पन्न होता है। अपनी लड़ाई का एक-दूसरे की शिकायतों का निराकरण करने तक ही सीमित रखें। एक-दूसरे को बोलने का अवसर दें। उँगली दिखा-दिखाकर बात करने से भी क्रोध की दुगनी वृद्धि कर सकता है। सम्वादों का स्वरूप उलाहनापूर्ण न हो। किसी भी एक बात को बार-बार न दोहराएं। उसी बात को बार-बार दोहराने से स्वयं की कमी मालूम पड़ती है।

✻ हमारी आत्मा पवित्रता, शांति, शक्ति, ज्ञान, प्यार, खुशी और आनंद से मिलकर बनी है। जिंदगी की इस यात्रा में कहीं कोई न कोई चीज खो गयी है या धूमिल हो गयी है। इसलिए हम इनकी तलाश बाहर कर रहे है। इसलिए अपनी आत्मा का वास्तविक स्वरूप पहचानना आवश्यक है। इसलिए दूसरों में गलतियां निकालना बंद कर उन्हें सुधारने का प्रयत्न करे। पूरी दुनिया का बोझ अपने दिमाग पर लेकर न चले। यदि आप शांति, सुख, आनंद या प्यार चाहते है तो आपके पास जो गुस्सा, क्रोध, बुरे विचार है उन्हें आपको त्यागना पड़ेगा। दिल में किसी के प्रति घृणा, नफरत लेकर आप मंदिर और मस्जिद चले भी जाएंगे तो आपको वहां भी शांति नहीं मिलनेवाली। इसलिए नफरत छोड़ दे तो शांति घरमें ही है। नफरत का बीज अगर पनपने लगे तो उसे बार-बार याद करके उसे खाद-पानी न डालें और उसे नजरअंदाज करें। तो नफरत का बीज खुद ब खुद खराब हो जाएगा।

✻ वह आदमी सबसे बेहतरीन जिंदगी गुजारता है जो अपनी जरूरतों के लिए किसी दूसरे पर भरोसा और विश्वास नहीं रखता।

✻ आप दुखी इसलिए है कि आप पुल नहीं दीवार बनाते है। जब तक आप दूसरों की खुशी से खुश होने की कला नहीं जानते तब तक दु:ख आपका पीछा करता रहेगा। आज अधिकतर लोग अपने दुखों से दुखी नहीं है बल्कि दूसरों की खुशी से दुखी है।

✻ जोश और होश बहुत कम एकसाथ इकट्ठे होते है। लेकिन जिसमें दोनों गुण आ गये वो कभी गलती नहीं करता।

* अपने घरेलू झगड़े को इतना मत बढ़ाओ कि वो घर की चौखट से बाहर चला जाएं और किसी तीसरे को आसानी से अमेरीका बनने का श्रेय मिल जाए।

* कुछ न करने से कुछ करना बेहतर है।

* बुद्धिमान वो व्यक्ति है जो वक्त को देखकर काम करता है।

* परेशानी और कठिनाइयों का सामना करनेका नाम जिंदगी है और उसपर हावी हो जानेका नाम कामयाबी है।

* जिस व्यक्ति पर नसीहत का कोई असर ना हो उसका दिल और दिमाग ईमान से खाली है।

* आदमी की बुद्धि उसकी बातों से, उसकी खूबियों से जाहिर होती है और शराफत उसके अच्छे व्यवहार से मालूम पड़ती है।

* अच्छी बातें दोस्तों के द्वारा पहुंचाओ और विरोध करनेवालों से बहस मत करो।

* मौन रहना सबसे अक्लमंद, आसान काम है और सबसे अधिक लाभदायक है।

* अय्याशी छोटे कम्बल की तरह है, उसमे सर छुपाने जाओगे तो पैर नंगे हो जायेंगे।

* अगर आप किसी के बहते हुए आँसुओं को रोक सकते हो तो उसमें देर मत करो। अगर यह आँसू किसी के सताये जानेपर बहाएं गये हो तो इसमें शक नहीं। इन आँसुओं की पुकार का जवाब ही तबाही है।

* इस दुनिया में बहुत से ऐसे लोग है जिनके बदसूरत चेहरे को देखकर उन्हें तुच्छ और अपमानित समझा जाता है। लेकिन वो अपने चरित्र के कारण जमीन व आसमान की बहुमूल्य नेमतें पायें हुए है जो उन्हें पुरस्कार के रूप में मिली हुई है।

* अगर लोगों में शर्म हया नहीं रहीं तो सारी-की-सारी सामाजिक, पारिवारिक, मानवीय व्यवस्थाएं छिन्न-भिन्न हो जायेगी। इसलिए हया और शर्म जीवन में आवश्यक है।

* अहिंसा और सत्य से ही सभी जीवों और विश्व का कल्याण सम्भव है।

* बिना त्याग के द्वंद्वों को सहने की शक्ति, धर्म में दृढ़ रहना और प्राणियों के सम्मान करने की क्षमता नहीं आती है। सुख-दुख में समभाव से रहना, बुराई के बदले क्षमा और सद्आचरण सदैव अपनाना चाहिए। श्रद्धा, अक्रोध और बुरे कर्म का सही मन से पश्चाताप ही उन्नति का मार्ग है।

* सच्चे पश्चाताप से दुबारा पाप नहीं हो सकता। पापी पुरुष धर्म का आडम्बर भले ही ओढ़ लें परन्तु उसमें धर्मात्मा पुरुषों जैसा शिष्टाचार और धर्माचरण नहीं होता। यज्ञ, तप, दान, वेदज्ञान, सत्यभाषण के मूल आचरण के साथ जो काम, क्रोध, मद, लोभ और उद्दण्डता को पूरी तरह नियंत्रण में रखता हो, वही शिष्ट उत्तम व्यक्ति होता है। वे गुरुजन, ज्ञानी और ज्येष्ठ लोगों का बहुत आदर करनेवाले होते है। वे सदा नियमित जीवन जीते है।

* आप बिन बुलाई, अनचाही मुसीबतों से अपने आपको बचाना चाहते हो तो कम बोलो, खामोश ज्यादा रहो, ज्यादा बोलने से ही गुनाह हो जाते है।

* जिन्हें तेजी से आगे बढ़ना है वे लोग अपने स्वास्थ्य के बारे में बहाना नहीं बनाते। लगातार काम करते रहते है पर अपने लक्ष्य को पाकर ही रहते है। सफल लोग बीमारी के आगे घुटने नहीं टेकते बल्कि बीमारियां ही उनके आगे घुटने टेक देती है।

* उन लोगों के साथ न रहें जो अपना वक्त इधर-उधर की बातों में बर्बाद कर देते है। उन्हीं के साथ रहना अच्छा है जो वक्त-वक्त की कीमत जानते है। आप जिनके जैसा बनना चाहते है उनकी सोहबत में ही अपना समय ज्यादा से ज्यादा व्यतीत करें। वह आपको आगे बढ़ने में मददगार साबित होगा।

✻ हम जिन लोगों के साथ रहते है, जिनके साथ उठते-बैठते है, जिनसे बातें करते है, उनका असर हमपर पड़ता है। उनकी बातें, आदतें, सोच, कब हमारी बातें, आदतें, सोच बन जाती है हमें स्वयं को पता नहीं होता। इसलिए हमारे आसपास का माहौल अच्छा होना चाहिए। आप अपने आसपास अच्छे, ईमानदार, समझदार, पड़े-लिखे लोगों को ही साथ रखें। ऐसे लोगों से आप दोस्ती करें, जो आपके बेहतर भविष्य के लिए बेहद जरूरी है।

✻ दुनिया का कोई व्यक्ति सच बोलने से नहीं डरता। मगर दुनिया का हर व्यक्ति सच बोलने के बाद जो होता है उससे डरता है।

✻ दुनिया की दौलत की लालच में मत पड़ो और दुनिया में ईमानदारी की जिंदगी गुजारो।

✻ कभी भूलकर भी अपने माता-पिता और गुरु की शिकायत मत करो। विदा करने के बाद अपने मेहमान की भी शिकायत नहीं करनी चाहिए। किसी गैर के सामने अपने दोस्त की शिकायत मत करो।

✻ आपस में किसीसे दुश्मनी मत करो, एक दूसरे से आगे बढ़ने की हवस भी मत रखो, आपसी सम्बन्धों को मत तोड़ो।

✻ रिश्तों को ज्यादा मजबूती से पकड़कर न रखें, उन्हें सांस लेने दें और खुद भी खुली हवा में सांस लें, ऐसा करने से रिश्ते टूटेंगे नहीं बिखरेंगे नहीं। किसी भी एक चीज को बहुत महत्वपूर्ण न बना लें। जिंदगी में हर चीज व रिश्ते को समान महत्व दें। ताकि एक टूटे तो दूसरा उसे सम्भाल ले।

✻ काबिल होना जितना आवश्यक है उससे अधिक आवश्यक है काबिल दिखना। आपका व्यक्तित्व न सिर्फ दूसरों के सामने आपको प्रभावशाली बनाता है बल्कि आपकी सफलता भी सुनिश्चित करता है। आपका आत्मविश्वास इसके लिए आपकी अहम पूंजी है। वो दूसरे को यह बता देता है कि आप अपने लक्ष्य के प्रति कितने सजग और प्रयत्नशील है। आपका काम के प्रति लगन और समर्पण किस तरह का है। साक्षात् करनेवाले आपके समूचे व्यक्तित्व का आंकलन करते है। वे यह देखते है कि आप वक्त के साथ आनेवाली चुनौतियों का सामना करने के योग्य है या नहीं। आपके उठने-बैठने, चलने के तौर तरीके पर भी गौर करते है। अगर बोलचाल का तरीका हल्का और दबदबा हुआ तो आपकी पूरी काबिलियत समाप्त हो जायेगी।

✻ आजकल बड़ी मुश्किल से सच्चे दोस्त मिलते हैं, हर व्यक्ति सच्चे दोस्त की खोज में रहता है मगर खुद सच्चा दोस्त बनने की कोशिश नहीं करता।

✻ जो किसी के लिए दिल में नफरत नहीं रखता वो नेक होता है। नेक व्यक्तियों में यह खूबी होती है कि वो अपने गुस्से पर नियंत्रण रखते है और लोगों की गलतियों को माफ कर देते है।

✻ बुराई ऐसी है जैसे पहाड़ से नीचे उतरना। एक कदम उठाओ तो दूसरे अपने आप उठते चले जाते है और अच्छाई पहाड़ पर चढ़ने जैसी है हर कदम दूसरे कदम से मुश्किल पर हर कदम पर बुलंदी मिलती है।

✻ अपनी रोजी के पीछे नियत खराब मत करो क्योंकि रोजी मनुष्य को ऐसे तलाश करती है जैसे मरनेवाले को मौत।

✻ दौलत मिट्टी की तरह होती है। मिट्टी को पैरों के नीचे रहना चाहिए। अगर सिरपर चढ़ाओगे तो कब्र बन जायेगी और कब्र जिंदा व्यक्ति के लिए नहीं होती।

✻ खूबसूरत होना महत्वपूर्ण नहीं है महत्वपूर्ण होना खूबसूरत है। खूबसूरत मनुष्य से मुहब्बत नहीं होती बल्कि जिसे मुहब्बत हो जाए वो खूबसूरत होता है।

✻ जो चीज आपको चाहिए नहीं वो आपको अगर सस्ती से सस्ती भी मिले तब भी आपके लिये वो बेकार है और उसे खरीदनी नहीं चाहिए।

* जब तक हम स्वयं निरपराध न हों, तब तक दूसरों पर सफलता के साथ कोई आक्षेप नहीं कर सकते।

* छाले पर मक्खन लगाने से एक क्षण के लिए कष्ट कम हो जाता है, किन्तु फिर ताप की वेदना होने लगती है।

* परमात्मा की भक्ति के बिना कोई दूसरी पावन वस्तु नहीं हैं जो हृदयों को धो सकती हैं और सबको एक बना सकती है।

* किसी की बुराई करने की बजाय उससे बचना बेहतर कार्य है।

* आप अपने अल्फाज अपने शब्दों को तोहफे के बतौर पेश कर सकते है।

* ईश्वर कहता है वो अपराध छोड़ दो जो तुम प्रकट या अप्रकट रूप में करते हो नहीं तो तुम दुनिया में अपना चेहरा किसीको दिखानेके काबिल नहीं रहोगे।

* अच्छा काम शीघ्र कर लेना चाहिए इसमें टोकाटाकी ना हो। अच्छे काम के साथ-साथ ईश्वर का आशीर्वाद भी है और उसे करनेवाले की हार नहीं होती। शुभस्य शीघ्रम् और बुरा काम अगर मन को लगे तो उसमें जितनी देरी हो उतना ही अच्छा है। लोगों से पूछना चाहिए गलत काम करने से बचना भी हो जाएगा और मन भी अच्छा हो जाएगा। असुभस्य कालहरणम।

* मित्रता आनंद को दोगुना और दुख को आधा कर देती है।

* सत्य को बार-बार अग्नि परीक्षा देनी ही पड़ती है।

* जिंदगी जीने के दो तरीके है एक जो हो रहा है उसे होने दे और उन परिस्थितियों को स्वीकार कर बर्दाश्त करते रहे। दूसरा जो हो रहा है अगर वह गलत है तो उसे बदल डालना चाहिए। उसके खिलाफ आवाज उठानी चाहिए। प्रवाह के विरुद्ध बहना आसान काम नहीं है।

* बेहतर समाज के लिए महिलाओं का निर्भीक और सामाजिक होना अनिवार्य है। स्त्री खुद दूसरी स्त्री का सम्मान करे यह जरूरी है।

* प्रतिभा आपको ऊंचे ओहदे पर तो पहुँचा सकती है पर उसको बनाये रखने के लिए अच्छे चरित्र की आवश्यकता है।

* जिंदगी का आनंद लेने के लिए आपको किसी अन्य चीज की आवश्यकता नहीं होती। हर चीज का मजा लेने के लिए जिंदगी ही काफी है।

* हम दान करते है, देते है केवल अपने बराबरवाले को नीचा दिखानेके लिए। गुप्त रूप से दान नहीं देते है प्रकट करके देते है।

* पागल बने बिना कोई महान नहीं हो सकता। लेकिन हर पागल महान नहीं हो सकता।

* प्रेम का सर्वप्रधान धर्म है स्वार्थरहित होना। स्वार्थपरता और प्रेम परस्पर विरोधी हैं।

* नववर्ष नवजीवन, नवकल्पना, नवधारणा का समन्वय है। नई शक्ति और नव चेतना के संचार का उद्गम है। सद्भावना और अपनत्व का सुंदरतम उपहार है।

* आप अपना लक्ष्य निर्धारित करेंगे तो आपकी प्रतिभा निखरकर सबके सामने आयेंगी और लक्ष्यप्राप्ति की लालसा और बढ़ेगी फिर आप प्रतिभावान व्यक्ति बन सकते है।

* अपनी कमियों को कभी नकारना नहीं चाहिए बल्कि उन्हें जानकर उन्हें दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

* सेहतमंद व्यक्ति हमेशा खुश और तनावमुक्त रहता है। स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन से ही आजकी भागदौड़ और प्रतिस्पर्धा भरे माहौल में आगे बढ़ पाना आसान है।

* जो समय के साथ नहीं चलते समय उसे पीछे छोड़ देता है।

❋ संघर्ष का अर्थ है प्रतिकूल परिस्थितियों में जान लगाकर झूँझना चाहे जैसी प्रतिकूल परिस्थितियां हो। कठिन परिश्रम कर हम उसमें से उबर सकते है, आवश्यकता है अपने व्यक्तित्व को संघर्षशील बनाना। अपनी सोच को सकारात्मक बनाकर प्रतिकूल परिस्थितियों के विरुद्ध संघर्ष में सफलता शीघ्र मिलती है। अपनी प्रतिभा रचनात्मकता को उभारे जो प्रत्येक मनुष्य के अंदर कला-कौशल प्रतिभा है। हम सबमें कोई न कोई कला अवश्य है जो छुपी हुई है। समय के साथ वह कला दम तोड़ने लगती है। इसलिये समय रहते ही अपनी रचनात्मकता को अच्छी तरह उभारे।

❋ तनावयुक्त मनुष्य सदैव पीड़ित व मानसिक रूप से परेशान रहता है। तनाव मुक्त रहना सुखी जीवन की पहली सीढ़ी है इसलिए व्यक्ति को सदा ही सफल होने के लिए तनावमुक्त रहना चाहिए।

❋ व्यक्तित्व के गुण उसके पहनाव, हावभाव, रहन-सहन, बोलचाल आदि उसकी सफलता के लिए जिम्मेदार है। ईमानदारी, विनम्रता, कर्त्तव्यनिष्ठा सफलता की ओर तेजी से ले जाती है और हमारा सद्व्यवहार हमारे व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाता है।

❋ कोशिशें ही कामयाब होती हैं और वायदे तो अक्सर टूट जाते है। प्रयास विफल भी हो सकते है पर आदमी नहीं पर निरंतर प्रयासरत व्यक्ति ही सफलता की ऊंचाइयों को छू सकता है। किसी भी क्षेत्र में सफलता हासिल करने के लिए व्यक्ति को कभी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए और अविराम प्रयास करते रहना चाहिए।

❋ माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ कही गई हैं। इस महामहिमामयी मातृभूमि की सेवा सभी लोगों को करना चाहिए।

❋ संत महापुरुष ही वास्तविक तीर्थ और देवता हैं, क्योंकि इन संत महापुरुषों के दर्शन-मात्र से ही कल्याण हो जाता है।

❋ यदि आप स्वस्थ और सम्पन्न हैं, तो अभिमान मत कीजिए, क्योंकि समय बदलते हुए देर नहीं लगती है।

❋ केवल घर में रहने से कोई गृहस्थ नहीं होता, पत्नी के साथ में रहने से मनुष्य गृहस्थ कहलाता है। जहां भार्या है, वहीं घर है, भार्याहीन गृह तो वनतुल्य है।

❋ जो मनुष्य लोगों के व्यवहार से ऊबकर क्षण प्रतिक्षण अपने मन बदलते रहते हैं, वे दुर्बल हैं, उनमें आत्म-बल नहीं है।

❋ लोकसेवा व परिश्रम ही आत्म-शांति पाने का मार्ग है।

❋ हताश होकर मनुष्य स्वयं को दोषी मानने लगता है। अपनी तुलना में दूसरों की उन्नति और स्पर्शहीन भावना और इर्ष्या का जन्म देता है। इससे वह धीरे-धीरे अवसाद में गिरने लग जाता है।

❋ मनुष्य जो सोचता है वो होता नहीं और जो होता नहीं है उसीको सोचता है। यह मानसिकता मनुष्य को असंतुलित कर देती है। उसका आत्मविश्वास डगमगा उठता है। अपने मन का चाहा हो तो अच्छा है और न हो तो दु:ख होता है। कठिन परिस्थितियों का सामना करने के लिए आस्था और विश्वास के सहारे मनुष्य आत्मबल पा जाता है।

❋ सफलता हर समय विद्या या पौरुष से नहीं मिलती।

❋ भगवान दुखियों से अत्यन्त स्नेह करते हैं। दु:ख भगवान का सात्विक दान है, मंगलमय उपहार है।

❋ वे धनी आपसे भी अधिक अन्यायी और धनहीन है, जो गरीबों को आलसी और कामचोर कह कर पुकारते हैं।

❋ जीवन में ऐसे अवसर भी आते हैं जब निराशा में भी आशा होती है।

❋ वहम पर वफादारी नहीं होती, रिश्तों से गद्दारी नहीं होती। चार दिन की जिंदगी है यह, रूठना समझदारी नहीं होती।

❋ जो व्यक्ति अपने सामने ऊंचा उद्देश्य रखता है, वह अवश्य ही एक दिन उसे पूर्ण करने में सफल होता है, लेकिन

इसके लिए आवश्यक है कि वह अपने लक्ष्य पर तीव्र गति से निरंतर बढ़ता जाए। इसके विपरीत, जो व्यक्ति अपने सामने कोई लक्ष्य नहीं रखता, वह जीवन भर केंचुएं के समान ही रेंगता रह जाता है।

* जो व्यक्ति छोटे कर्मों को ईमानदारी से करता है, वही बड़े कामों को भी ईमानदारी से कर सकता है।

* आत्मविश्वास में वह अटूट शक्ति है, जिससे मनुष्य हजारों विपत्तियों का सामना अकेला कर सकता है। निर्धन मनुष्यों की सबसे बड़ी पूंजी और मित्र उनका आत्मविश्वास ही है। धनहीन होते हुए भी कितने ही मनुष्यों ने ऐसे काम किए हैं, जो धनवान कभी भी नहीं कर पाए।

* जीवन में आशा और निराशा धूप-छांव के समान हैं।

* ईमानदार मनुष्य स्वभावत: स्पष्टभाषी होता है। उसे अपनी बातों में नमक मिर्च लगाने की आवश्यकता नहीं होती।

* अपनी कर्मेन्द्रियों का संयम करते हुए जो मन से विषयों का चिन्तन करता है, वह पाखण्डी है। संयम का अर्थ है इस बात की समझ कि विषयों में सुख नहीं, वे दुख का कारण हैं।

* जिनके हृदय में उत्साह होता है, वे पुरुष कठिन से कठिन कार्य आ पड़ने पर भी हिम्मत नहीं हारते।

* जो व्यक्ति स्वभाव से धैर्यवान है, वह महान विपत्ति के समय भी अधीर नहीं होता।

* कोई भी वस्तु स्वभाव से न सुंदर होती है और न असुंदर। जिसे जो अच्छा लगे वही सुंदर है।

* परिश्रमी और धैर्यवान के लिए कोई वस्तु दुर्लभ नहीं।

* किसी आदमी की बुराई-भलाई उस समय तक मालूम नहीं होती जब तक कि वह बातचीत न करे।

* जहां विचार नहीं, वहां कार्य नहीं। अत: मस्तिष्क को उच्च विचारों से, उच्च आदर्शों से भर दो। उन्हें दिन-रात अपने सामने रखो और तब उसमें महान निष्पन्न होगा।

* जो ऐसी वाणी बोलता है कि सबके हृदय को आनंदित कर दे, उसके पास दु:खों को बढ़ानेवाली दरिद्रता कभी न आएगी।

* चैतन्य को बंधन में बांधने के लिए प्रकृति ने श्रद्धा के अतिरिक्त और कोई रस्सी बनाई ही नहीं। बांधने के लिए मनुष्य के हाथ केवल एक यही रस्सी आई। मन को चाहे देवता के साथ बांधे, चाहे मातृभूमि के साथ, श्रद्धा या प्रेम की दामरी के इनके सिवा और कोई उपाय नहीं।

* इस जगत में क्षमा वशीकरण रूप है। जिसके हाथ में शांति रूपी तलवार है, उसका दुष्ट पुरुष कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

* अपने साथ उपकार करनेवालों के साथ जो साधुता बरतता है, उसकी तारीफ नहीं है। महात्मा तो वह है जो अपने साथ बुराई करनेवालों के साथ भी भलाई करे।

* जो मनुष्य नम्र है और प्रभु की भक्ति करता है, उसको प्रतिफल में मिलता है- धन, सम्मान और दीर्घ जीवन।

* मन की प्रसन्नता ही व्यवहार में उदारता बन जाती है।

* कोई भी मनुष्य स्वयं के लिए ही गुलाब नहीं उगाता। आनन्द प्राप्ति के लिए सुन्दरता को दूसरों के साथ बांटने से ही उसकी प्राप्ति में वृद्धि होती है।

* जो सदाचरण का पालन नहीं करते उन्हें शिक्षित होने पर भी उसी प्रकार लाभ नहीं मिलता जैसे जादू की गाय दूध नहीं देती।

* मनुष्य ईश्वर के समीप जितनी शीघ्रता से भलाई करके पहुंचता है, उतना अन्य किसी कर्म से नहीं।

❋ दया के सम्मुख जैसे दुष्टता का नाश हो जाता है, वैसे ही प्रेम और उदार सहानुभूति के सम्मुख बुरे मनोविकारों का नाश हो जाता है।

❋ जिस मनुष्य को अपने पर काबू नहीं है, वह दुर्बल चरित्र वाला है।

❋ इच्छा बंदर के समान नटखट है। यदि इच्छा के साथ इर्ष्या जुड़ जाए तो इसका मतलब होगा वह बंदर जिसे बिच्छू ने डसा हो।

❋ कष्ट सहने पर ही अनुभव होता है।

❋ जो क्रोध और उत्तेजित होने पर मन को शांति की दिशा में मोड़ सकता है, वो ही सारथी कहलाता है।

❋ जन साधारण की दृष्टि में सब धनी व्यक्ति ऊंचे दिखाई देते हैं। लोग उनसे इर्ष्या करते हैं कि वे धनी, शक्तिशाली, सम्मानित, आदरणीय हैं। किंतु वे धनी हर घड़ी कांपते रहते हैं कि उन्हें जो समझा जाता है, वस्तुत: वे ऐसे हैं नहीं। वे भयभीत हैं कि कहीं उनकी कलई न खुल जाए।

❋ जिसे हम जमीर कहते हैं, वह अक्सर कान्स्टेबल का संभ्रांत भय मात्र ही होता है।

❋ जीवन में परिश्रम करके ही ज्ञान की प्राप्ति की जा सकती है।

❋ जो वीरता से भरा हुआ है, जिसका नाम लोग बड़े गौरव से लेते हैं, शत्रु भी जिसके गुणों की प्रशंसा करते हैं, वही पुरुष वास्तव में पुरुष है।

❋ जो बहुत घमंड करते थे, वही अपने घमंड के कारण गिरे। इसलिए किसी को कभी घमंड नहीं करना चाहिए। घमंड ही हार का द्वार है।

❋ जब तक आप बुद्धि और विद्या के चक्कर में रहोगे, तब तक आपको सफलता प्राप्ति कभी नहीं होगी।

❋ अधिक धन संपन्न होने पर भी जो असंतुष्ट रहता है, वह सदा निर्धन रहता है। धन से रहित होने पर भी जो संतुष्ट है, वह सदा धनी है।

❋ अगर कोई आदमी अपने को कीड़ा बना ले तो पद दलित होने पर उसे शिकायत का हक नहीं है।

❋ जितना समय हम किसी कार्य की चिंता में लगाते हैं, यदि उतना ही समय हम उस कार्य में लगाएं तो चिंता जैसी कोई चीज नहीं रह जाएगी।

❋ प्रशंसा से बचो, यह आपके व्यक्तित्व की अच्छाइयों को घुन की तरह चाट जाती हैं।

❋ जो किसी का उपकार करना नहीं जानता, उसे किसी प्रकार का उपकार पाने का कोई अधिकार नहीं।

❋ अपने जीवन का एक लक्ष्य निर्धारित करना और उसके बाद अपनी शारीरिक और मानसिक शक्ति उसमें लगा देनी चाहिए।

❋ कई लोग असाधारण अवसरों की बाट जोहा करते हैं, किंतु वास्तव में कोई अवसर छोटा या बड़ा नहीं है। छोटे से छोटे अवसर का प्रयोग करने से, अपनी बुद्धि को उसमें जुटा देने से वह छोटा अवसर बड़ा हो जाता है।

❋ जो कार्य जितनी श्रद्धा से किया जाएगा, उतना ही श्रेष्ठ होगा।

❋ गुणों में आत्मविश्वास पैदा हो जाता है, यदि उनके लिए बड़े लोगों से सम्मान प्राप्त हो।

❋ जब कोई बात हमारी आशा के विरुद्ध हो, तभी दु:ख होता है।

❋ बातचीत का प्रथम अंश है सत्य, द्वितीय सुंदर सूझबूझ, तृतीय सुंदर विनोद और चतुर्थ वाक चातुर्य।

* संयम इंसान का बेहतरीन गुण है। जो व्यक्ति संयम नहीं रखता उसके निर्णय, उसकी इच्छाएं बदलती रहती हैं और परीक्षा के क्षणों में वह निर्बल साबित होता है।

* काम करते रहने में उत्साह नहीं, कष्ट सहते रहने में उत्साह नहीं, प्रसन्न रहने में उत्साह नहीं, बल्कि काम करते हुए बीच में आनेवाले कष्ट को सहते हुए प्रसन्न रहें और काम करते चले जाएं, वही उत्साह है।

* अनेक काम धैर्य से संपन्न होते हैं और जल्दबाज मनुष्य सिर के बल गिरता है।

* अपने धैर्य के बिना अन्य कोई संकट से मनुष्य का उद्धार नहीं करता।

* अच्छा स्वभाव सदा सौंदर्य के अभाव को पूरा कर देगा, किंतु अच्छा सौंदर्य अच्छे स्वभाव के अभाव की कभी पूर्ति नहीं कर सकता।

* पुरुषार्थ रहित मनुष्य मुर्दों की गिनती में आता है।

* जीवन का रहस्य भोग में नहीं, अनुभव के द्वारा शिक्षा प्राप्ति में है।

* अपने सम्मान, सत्य और मनुष्यता के लिए प्राण देनेवाला वास्तविक विजेता होता है।

* गुण का सच्चा मापदण्ड मन में स्थित है। जिसमें सद्विचार हैं, वह सत्पुरुष है।

* कठोर वचन बुरा है क्योंकि तन-मन को जला देता है और मृदुल वचन अमृत वर्षा के समान है।

* सबकी श्रद्धा अपने स्वभाव का अनुसरण करती है। मनुष्य में कुछ न कुछ तो श्रद्धा होती ही है, जिसकी जैसी श्रद्धा होती है, वह वैसा ही होता है।

* दुष्टों का बल हिंसा है, राजाओं का बल दंड है और गुणवानों का क्षमा है।

* सुशील, धर्मात्मा और सबके मित्र व प्राणियों पर दया करनेवाले पात्र बनना चाहिए। दुनिया की तमाम सम्पत्तियां ऐसे पात्र को ही अपना आश्रय बनाती हैं, जैसे पानी नीचे की ओर तथा धुआं आसमान की ओर स्वाभाविक रूप से गति करता है।

* नम्रता के पीछे स्वार्थ हो तो वह ढोंग है।

* प्रसन्नता लुटाइए, उसका खजाना बढ़ता चला जाएगा।

* सत्य, दान, कर्म, क्षमा, धैर्य और गुरु इनका त्याग कभी नहीं करना चाहिए।

* संसार में पुस्तकें पढ़ने से कुछ नहीं सीखा जा सकता, जब तक कि ज्ञान को आचरण में न उतार लिया जाए।

* भली बातें कड़वी होती हैं, किंतु उसके कड़वेपन का स्वागत करना चाहिए। क्योंकि उनमें भलाई निवास करती है।

* दया व प्रेम के छोटे नाम रहित और विस्मृत कृत्य ही सज्जन के जीवन का सर्वोत्तम भाग होते हैं।

* जो कुछ हमने अपने चरित्र में संचित किया है, वह हम अपने साथ ले जाएंगे।

* इच्छाशक्ति सबसे बलवान है। इच्छा शक्ति के सामने सभी को झुकना पड़ता है, क्योंकि वह स्वयं प्रकृति से आती है। शुद्ध और दृढ़ इच्छाशक्ति सर्वशक्तिमान होती है।

* अनुभव बीस वर्ष में जितना सिखाता है, विद्वता एक वर्ष में उससे अधिक सिखा देती है।

* जो मन की पीड़ा को स्पष्ट रूप से नहीं कह सकता, उसीको क्रोध आता है।

* खतरा उनके सिर पर सदैव मंडराता रहता है, जो उससे डरते हैं।

* जब तक भगवान दूर व बाहर प्रतीत होते हैं, तब तक अज्ञान है, परन्तु जब अपने अंतर में उनका अनुभव होता है

तथा यथार्थ ज्ञान का उदय होता है, तब उन्हें हृदय मन्दिर और जगत मन्दिर दोनों स्थानों पर देखा जा सकता है।

✻ जो मनुष्य अपनी उन्नति चाहता है, उसे चाहिए कि वह दूसरों के गुण देखने की आदत डाले और स्वयं पर लागू करे।

✻ संसार में आदरपूर्वक जीने का सरल और शर्तिया उपाय यह है कि हम जो कुछ बाहर दिखना चाहते हैं, वैसे ही वास्तव में हों भी।

✻ जब तक व्यक्ति अहंकारयुक्त होता है, तब तक वह दु:ख भोगने के लिए बाध्य है और जब अहंकार नहीं रह जाता, तब कोई कष्ट नहीं होता। अत: उत्तम यही है कि बिना अहंकार के रहा जाए।

✻ जीवन संघर्ष में विजय पा लेना कोई सरल कार्य नहीं है, इसके लिए कठोर साधना की आवश्यकता है।

✻ असंतुष्ट व्यक्ति किसी भी वस्तु से संतुष्ट नहीं होता, उसके लिए सभी कर्त्तव्य नीरस होते हैं। फलस्वरूप उसका जीवन असफल होना स्वाभाविक है।

✻ जो पुरुष निरुत्साह, दीन और शोकाकुल रहता है, उसके सब काम बिगड़ जाते हैं और वह अनेक विपत्तियों में फंस जाता है।

✻ चिंता से मुक्ति पाना मनुष्य का प्रथम कर्तव्य होना चाहिए अन्यथा वह मनुष्य की शक्तियों को शून्य कर देगी।

✻ प्रशंसा कर्त्तव्यपरायणता के लिए बाध्य करती है, चापलूसी कर्त्तव्य विमुखता की ओर ले जाती है।

✻ जो मनुष्य अपने मुंह में लगाम देता है और जीभ को वश में रखता है, वह अपने प्राण को विपत्तियों से बचाता है।

✻ किसी को परेशान देखकर यह अवश्य कहो कि चिंता मत करो। आपके यह शब्द उसके जीवन में अपार ऊर्जा भर देंगे।

✻ अपनी पूरी ताकत के साथ लड़ो किसी अन्य की कमजोरियों के साथ नहीं, सच्ची सफलता खुद के प्रयासों में निहित है, दूसरों की हार में नहीं।

✻ मोक्ष सब भावों का खेल है। शरीर में परिवर्तन भावों से आता है। मनुष्य की आंखें मनुष्य के भावों को दर्शाती हैं। आँखों में कभी प्रेम दिखता है तो कभी घृणा, कभी भृकुटी तन जाती है तो कभी आंखों में लाल डोरे पड़ जाते हैं। स्वर्ग नरक सब भावों का खेल है।

✻ घर में कोई बूढ़ा है तो उसे बोझ की बजाय भाग्य मानिए। बूढ़ा पेड़ फल नहीं देता, पर छाया तो देता ही है।

✻ जीवन सौंदर्य से भरपूर है। इसे देखें, महसूस करें, इसे पूरी तरह से जीएं और अपने सपनों की पूर्ति के लिए पूरी कोशिश करें।

✻ मनुष्य जिंदगी में गलतियां करके उतना दुखी नहीं होता है, जितना कि वह बार-बार उन गलतियों के बारे में सोचकर होता है।

✻ किसी नेक काम में बहाना नहीं बनाना चाहिए।

✻ सत्संग में रुचि होना, ज्ञान में, कर्मशीलता में रुचि होना, कर्मयोगी होना, ज्ञानयोगी होना ये धन हैं जीवन के। धर्मवीर-ज्ञानवीर, शूरवीर-दानवीर होना, ये सब धन हैं। इन धनों को उत्पन्न करनेवाली शक्ति का नाम ज्ञान है। भगवान को ज्ञानवाला व्यक्ति प्रिय है।

✻ ज्ञानी व्यक्ति का जीवन खुशबू की तरह महकता है। महापुरुष अद्‌भुत लोग थे जो किसी एक देश, जाति वर्ग के नहीं है। उनकी सीमाओं को कैद करके नहीं रखा जा सकता। वो सारी दुनिया की सम्पत्ति है, सीमा से परे है, सीमा में बांधे नहीं

जा सकते। जिन्होंने ज्ञान धन को सुरक्षित रखा वह ज्ञान मानवमात्र की सम्पत्ति बन गया।

* दूसरों के दरवाजे को खटखटाने की आदत मत डालो, खुद परिश्रम करना सीखो आपका खजाना आपके अंदर है। सागर तट पर बिखरी हुई अनेक शिलाओं में से एक आप हो। अपने अंदर वह चमक पैदा करो जो हीरे में हुआ करती है।

*** कोई रिश्ता नया या पुराना नहीं होता, जिंदगी का हर पल सुहाना नहीं होता।**
जुदा होना तो किस्मत की बात है, पर जुदाई का मतलब भुलाना नहीं होता।।

* चोर और जुआरी चाहे जितनी बार तौबा करले लेकिन कोई झूठा सच नहीं बोल सकता।

* ज्ञान प्राप्त करना चाहते हो तो सख्तियां बर्दाश्त करना सीखो।

* प्रशासन का पहला कर्त्तव्य है कि देश में शांति, अमन कायम करें ताकि राज्य की तरफ से प्रजा को उसकी जिंदगी, धन, सम्पत्ति, धार्मिक विश्वास की रक्षा सुरक्षा की पूरी-पूरी जिम्मेदारी मिले।

* ज्ञान तलवार से भी अधिक ताकतवर है इसलिए अपने देश में ज्ञान को बढ़ाना चाहिए।

* हमें नाउम्मीद, निराश और बेहौसला कभी नहीं होना चाहिए।

* आप कोई फरिश्ता या देवता नहीं है बल्कि आप मनुष्य हैं और मुश्किलें मनुष्यों को ही पेश करनी पड़ती है।

* तीन आदमियों के बीच राज राज रह सकता है बशर्ते उनमें से दो मर गये हो।

* हमारे लिये यह अच्छी बात नहीं है कि अपनी वाणी से दूसरों पर कीचड़ उछालें।

* एक लम्बी जुबान मनुष्य को छोटा बना देती है।

* जो रास्तों के इश्क में गिरफ्तार हो जाते हैं मंजिले उनसे दूर हो जाती है।

* कुछ लम्हें चाकू की धार के जैसे होते हैं गलत निर्णय हो जाए तो उससे न जान बचती है और न ईमान।

* वक्त की कीमत पहचानें जितना समय हम अपने काम को देते हैं उतना ही अगर हम अपने परिवार वालों या दोस्तों, सगे-सम्बन्धी को दे तो हम सफलता की मंजिल पा जाएंगे।

* जिसने रिश्ते-नातों की काम के आगे परवाह नहीं की, कठिन वक्त आने पर वह अकेला रह जाता है और दिल में एक कसक-सी रह जाती है। इससे रिश्ते-नाते कमजोर पड़ जाते है।

* जब हमें अपने काम में धक्का लगता है और तब वक्त हमारे प्रतिकूल होने लगता है उस समय हमें दूसरों की याद आ जाती है पर हमारे व्यवहार की वजह से हम उनसे इतने दूर हो चुके होते हैं कि हम हमारा मनमुसोसकर रह जाते हैं। हम तनाव मे हो जाते है जिसका असर धीरे-धीरे हमारे काम पर भी पड़ जाता है।

* असली सफलता तो दूसरों को खुशी देने और उनके जीवन का अहम हिस्सा बन जाने में है। अपने चाहनेवालों को खो देना जीवन की सबसे बड़ी हार और भूल है।

* अगर आप सफल होना चाहते है, तो अपने आस-पास ऐसे लोगों कों रखो जो आपके शुभचिंतक हों और आपको हर नकारात्मक स्थिति में भी प्रोत्साहित करते रहें। साथ ही आप उन लोगों के संपर्क में भी रहे जो आपके धुर आलोचक हों, लेकिन उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली हो। जब आपसे वह लोग कहेंगे कि आप यह काम नहीं कर सकते, आप बेकार अपना समय जाया कर रहे हैं, ऐसी परिस्थिति में आपके अंदर खुद को साबित करने का जुनून उठता होगा। ऐसी स्थिति में उनकी सकारात्मक बातें आपके लिए एक उत्प्रेरक का काम करती हैं।

* अपने सामने एक ही लक्ष्य रखना चाहिए। उस लक्ष्य के सिद्ध होने तक दूसरी किसी बात की ओर ध्यान नहीं देना

चाहिए। रात-दिन सपने तक में उसी की धुन रहे, तभी सफलता मिलती है।

❋ उस वर्षा से कोई लाभ नहीं जो फसल जलने के बाद हो। उस पश्चाताप से कोई फायदा नहीं जो अवसर चूक जाने के कारण हो।

❋ कर्म की समाप्ति ज्ञान में और ज्ञान का अर्थ पूर्ण समर्पण में है।

❋ कठिन कार्य में सफल होने पर आत्मविश्वास बढ़ जाता है।

❋ जो केवल आशाओं के सहारे जीता है, शीघ्र ही वह भूखा मर जाएगा।

❋ आदमी को चाहिए कि वह पहले ईमानदार और सज्जन बने। बाद में शिष्टाचार और संतोष का मुलम्मा चढ़ाए।

❋ आत्मज्ञानी व संयमी पुरुषों को न तो विषयों में आसक्ति होती है और न ही वे विषयों के लिए युक्ति करते हैं।

❋ जिनमें उत्साह नहीं होता, मित्र भी उनके दुश्मन हो जाते हैं। जिनमें उत्साह हो, शत्रु भी उनकी मित्रता स्वीकार करते हैं।

❋ अच्छे श्रोता बनो। धैर्य से सुनो। लेकिन करो वही जो तुम्हारा विवेक कहता है।

❋ अपने स्वभाव के विरुद्ध आचरण करनेवाला, आत्मीयों को छोड़कर परायों में रहनेवाला नष्ट हो जाता है।

❋ जैसे लकड़ी में छिपी अग्नि स्वत: प्रकट नहीं होती, वैसे ही ज्ञानदीप भी स्वयं प्रकाश नहीं करते, दोनों के लिए श्रम आवश्यक है।

❋ जिसका वृत्तांत सुनकर, जिसको देखकर, जिनका स्मरण करके सब प्राणियों को आनन्द होता है, उसी का जीवन शोभा देता है।

❋ सदाचार की रक्षा सबसे पहले करनी चाहिए। क्योंकि धन तो आता जाता रहता है उसके न रहने पर सदाचारी कमजोर नहीं माना जाता, किन्तु जिसने सदाचार त्याग दिया, वह तो नष्ट ही होना है।

❋ इच्छा से दु:ख आता है। दु:ख से भय आता है। जो इच्छाओं से मुक्त हैं, वह न दु:ख जानता है न भय।

❋ कड़वी बात भी हंस कर कही जाए तो मीठी हो जाती है।

❋ प्रभु के न्याय में दृढ़विश्वास हो कि मखमल के गद्दों पर सोनेवालों के सपने जमीन पर सोनेवालों के सपनों से अधिक मधुर नहीं होते तो ईश्वर में दृढ़ विश्वास और श्रद्धा हो जाएगी।

❋ उस मनुष्य का आभार मानना चाहिए जिसने आपकी निंदा करके आपको सावधान बनाया।

❋ आदर पाने के लिए मनुष्य को पहले विनम्र बनना पड़ता है।

❋ प्रसन्नता और शोक मन की स्थितियां हैं और मन को वश में रखना मानव के हाथ में है।

❋ त्याग के अतिरिक्त कहीं भी वास्तविक आनंद नहीं मिल सकता है, त्याग के बिना न ईश्वर प्रेरणा हो पाती है, न प्रार्थना।

❋ ऊंचाई की ओर अग्नि का धुआं जाता है। हृदय में सदाचार व त्याग की अग्नि से आप अपनी कीर्ति के धुएं को दर्शा सकते हो।

❋ जो भलाई करने का सदा प्रयत्न करता है, वह मनुष्य और परमेश्वर, दोनों की कृपा प्राप्त करता है पर उसको बुराई ही मिलती है।

❋ दया यदि स्वयं पर की जाए तो मनुष्य अपना हित करता है, पर निर्दयी मनुष्य पर दया करनेवाला अपने पांवों पर कुल्हाड़ी मारता है।

❋ जिस मनुष्य को अपने ऊपर नियंत्रण नहीं है और जो दुर्बल चरित्रवाला है, वह उस सरकंडे के समान है जो वायु के झोंकों पर झुक जाता है।

❋ बुद्धिमान व्यक्ति सदैव आत्मसंतुष्टि रूपी लौ को अपनी इच्छाओं की आहुति से प्रकाशमान बनाए रखते हैं।

❋ अनुभव वह है जो आपके पास उस समय होता है, जब आप उसका इस्तेमाल न कर सके।

❋ क्रोधी व्यक्तियों को दूर रखना चाहिए, जैसे पक्षियों को उड़ाने से वे दूर हो जाते हैं। क्रोधी व्यक्ति की निकटता से हमारा स्वभाव प्रभावित होता है।

❋ भीरु को भय से जितनी पीड़ा होती है, उतनी सच्चे साहसी को उसका सामना करते भी नहीं होती।

❋ जहां अज्ञानता का बखान हो रहा हो, वहां बुद्धिमानी दिखाना भी मूर्खता है।

❋ जहां बहुत से गुण हों वहां यदि एक आध अवगुण भी आ जाए, तो उसका वैसे ही पता नहीं चल पाता जैसे चंद्रमा की किरणों में उसका कलंक।

❋ अंधा वह नहीं है जिसकी आंखें जाती रहीं, अपितु अंधा वह है जो अपनी कमियों को छिपाता है।

❋ घमंडी व्यक्ति प्राय: शक्की हुआ करता है और इसी कारण अपने जीवन को जहर बना लेता है।

❋ जो बात सफल होती है, वह निश्चय ही धर्म है, अधर्म और सफलता कभी एक साथ रह ही नहीं सकते।

❋ संतोष ताज पहनाता है, जहां भाग्य उससे वंचित रह जाता है।

❋ किसी से मेहरबानी मांगना अपनी आजादी बेचना है।

❋ चिंता का राक्षस आपके हृदय में डेरा डालता है।

❋ प्रशंसा केवल भड़कीले वस्त्रों में लिपटा हुआ असत्य है।

❋ जो ईश्वर की आराधना के साथ-साथ पुरुषार्थ करते हैं उनके दु:ख और दारिद्र्य दूर होते हैं और ऐश्वर्य बढ़ता है।

❋ वे लोग कर्मठ और नि:स्वार्थ है जिन्होंने अपने मन में कुछ कर गुजरने का ठान लिया हो।

❋ जो व्यक्ति अपनों के दर्द का अहसास नहीं कर सकता उसके हृदय में पराये के प्रति करुणा का भाव कभी नहीं उमड़ सकता।

❋ अपने मन को स्थिर रखकर सभी परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखें।

❋ अनुकूल में प्रसन्नता, प्रतिकूल में दु:ख होता है और मन की स्थिति बदल जाती है। प्रतिकूल से निराशा, हीन भावना, दयनीयता आती है। लाभ-अलाभ में समान रहना कठिन है।

❋ आजादी कभी खैरात में नहीं मिलती रास्तों पर उसके लिए जद्दोजहद करनी होती हैं खुद से भी जागो गुलामों जागो।

❋ सन्नाटा तो बेहद बुरा लगता है, भीतर की आवाजें ज्यादा तेज हो जाती हैं।

❋ हालात हमें यह सिखा देते हैं कि हम कैसे कम के भीतर संतोष कर लें। सामान जितना कम होगा, थकान भी उतनी ही कम होगी।

❋ बात किरदार में होती है वरना कद में साया भी मनुष्य से बड़ा होता है।

❋ यदि आपको कोई नजरअंदाज कर दें तो बुरा नहीं मानना चाहिए। लोग अक्सर बर्दाश्त से बाहर महंगी चीजों को भी नजरअंदाज कर देते है।

❋ झूठ की बुनियाद पर एक विशाल भवन निर्मित तो किया जा सकता है, किंतु उस भवन की नींव की मजबूती पर मन में सदा भय बना रहता है।

✻ सिर्फ नाम बदलने से न कहीं धर्म बनता है, ये तो सदा से एक ही है जो मनुष्य जानता है। जातियों से न कोई हिन्दू, मुसलमान बनता है, जो बनता है नजर ईश्वर के बेईमान बनता है।

✻ उफ्फ ये आकर्षण आईने की तरह होता है, जिसमें हर रोज चेहरे बदल जाते हैं।

✻ देश की सच्ची संपत्ति है देश की युवा शक्ति जिनके शरीर की आभा में प्रकृति का सबसे स्पष्ट दर्शन होता है।

✻ मैं अपने से बड़े किसी परिवार के लिए जीता हूं तो स्पष्ट है कि मेरा जीवन एक यज्ञ है। उस विचार के लिए अर्पित आहुति मैं हूं।

✻ मुक्त वही है जिसने अपना सारा जीवन दूसरों के लिए त्याग दिया। जो मुक्ति का राग अलापते रहते हैं, वे इधर उधर ही भटकते रह जाते हैं।

✻ अच्छा कर्म करने का भाव ही एक तरह से उचित पुरस्कार है।

✻ महान व्यक्ति जीवन में न कभी किसी मनुष्य का अपमान करता है और न उसे सहता है।

✻ जनता की दृष्टि में विद्या, बुद्धि और प्रतिभा का उतना मूल्य नहीं है, जितना चरित्र बल का।

✻ आदमी में शुभ गुण तभी तक हैं जब तक वह तृष्णा से दूर है। तृष्णा का स्पर्श होते ही सब गुण गायब हो जाते हैं।

✻ दाता का दोष उसी तरह छिप जाता है जिस तरह चन्द्रमा के किरण-जाल में उसका कलंक।

✻ जहां धर्म, ईश्वर और सन्तों की निंदा होती है, वहां बैठकर उसे सुनना भी अपराध है।

✻ ऐसी बहुत-सी बातें हैं जो धन से असाध्य है, किन्तु केवल पवित्रता के बल पर सिद्ध की जा सकती हैं।

✻ जब तक हम स्वयं निरपराध न हों, तब तक दूसरों पर सफलता के साथ कोई आक्षेप नहीं कर सकते।

✻ हमें देखना, जानना, सुनना और इसमें स्थित हो जाना ही स्व-स्वरूप में गुण के लिए हो जाना है। हर तरंग में पानी हर समय रहता है कभी अलग नहीं होता।

✻ क्षमा, सरलता, कोमलता जीव का स्वभाव है। इन्हें निमित्त की खोज नहीं होती। क्रोध, द्वेष, तनाव होता है पर दिखता नहीं। इनका अहसास किसी भी रासायनिक क्रिया से नहीं किया जा सकता।

✻ धर्म- धर्म के लिए भी देह आधार व बुद्धि संस्कार है। धर्म स्वयं चेतना है जो चरित्र में प्रकट होता है। प्रत्येक जीव, वस्तु और पदार्थ हर क्षण बीत रहा है, नया आ रहा है। इस आने-जाने और रहने के स्वभाव के साथ तन्मय होकर जीना ही धर्म को जीना है। धर्म बतलाता है कि हमें इस तरह जीने की आदत डालनी चाहिए जिससे हममें अशान्ति, क्षोभ, असंतोष जैसी कोई चीज पैदा न हो। ये सब चीजें जीवन-रस को नष्ट करनेवाली हैं। भौतिक विज्ञान पदार्थों को देखता है। प्रकृति का दोहन कर सुविधाओं का विस्तार ही उसकी उपलब्धि है। उपभोग की सामग्री का भरपूर उत्पादन ही इसकी सार्थकता और संपन्नता है। धर्म जीवन का गुण है, स्वभाव है जो सदैव विद्यमान रहता है। गुण में अपना ज्ञान, समझ और प्राण नहीं है, वह गुण अपने लक्षणों में प्रकट होता है। कोई भी वस्तु अपने लक्षण से अलग हो नहीं सकती। धर्म दीपक में ज्योति की तरह है। धर्म भी अपने गुणों में प्रकट होकर व्यापक होता है।

✻ किसीसे घृणा मत करो। कभी जो दूसरों से नफरत करता है उसका दिल कभी साफ नहीं होता चाहे वह दिन रात काम कर ले उसे चैन, सुख शांति नहीं मिलती।

✻ घमण्ड करना पाप है। जमीन पर अकड़कर मत चलो। अकड़कर चलने से न तो आप जमीन को फाड़ सकते हो अकड़कर चलने से न आप पहाड़ों के शिखर पर पहुंच सकते हो।

* ज्ञान के साथ कर्म और धन के साथ शराफत न हो तो दोनों ही बेकार है।

* धन दौलत से किताबें खरीदी जा सकती है ज्ञान नहीं।

* दान करने से धनदौलत कम नहीं होती।

* जानवर अपने मालिक को पहचानता है। बहुत से मनुष्य ऐसे है जो दूसरोंपर जुलम तो करते हैं पर वह अपने पैदा करनेवाले मालिक को नहीं पहचानते।

* मनुष्य खुद महान नहीं होता बल्कि उसका चरित्र उसे खास बना देता है। मनुष्य का चरित्र इतना बुलंद होना चाहिए अगर दुनिया में रहे तो लोग उसे दोबारा मिलने का शौक पालें और दुनिया से चला जाएं तो लोग उसे अच्छे लफ्जों में याद करें।

* सच बोलना नेकी की राह पर चलना है और नेकी मनुष्य को स्वर्ग के दरवाजे तक पहुंचा देती है।

* हर पेड़ अपने फल से पहचाना जाता है। दिल मनुष्य का खजाना है अच्छा मनुष्य इस खजाने से अच्छा माल पेश कर सकता है और बुरा मनुष्य इस खजाने से बुरा माल देता है। जो मनुष्य के दिल में भरा होता है वही उसकी जुबान से निकलता है। बर्तन में से वही चीज छलकती है जो उसमें भरी हुई हो।

* खुदकिस्मत वो है जो दूसरों से उपदेश ग्रहण करें।

* उस आदमी में कोई भलाई नहीं जो मेहमानों का आदर करना नहीं जानता हो।

* अपने घर परिवारवालों पर खर्च करना पुण्य है।

* कंजूसी की वजह से कई कौमे बर्बाद हो गयी इसलिए कंजूसी से बचो।

* सफलता की राह में आनेवाली रुकावटों से घबराये नहीं बल्कि हिम्मत से उनका सामना करें, पेड़ की वही डाली सबसे ज्यादा सुखी होती है जिसपर सबसे ज्यादा फल लगते है।

* दिल में कुछ कर गुजरने की लगन हो तो सफलता अपने आप आपके कदम चूमेगी। लोग आपके चरित्र से इसप्रकार प्रभावित होंगे एक बार मिलनेके बाद दोबारा आपसे मिलनेकी ख्वाहिश रखेंगे इसलिए मनुष्य अपने आचरण से पहचाना जाता है।

* चाहे नफा हो या नुकसान जिंदगी में कुछ भी बेकार नहीं जाता।

* मनुष्य का अनुभव ही उसका बेहतरीन गुरु है और जिंदगी की ठोकरें ही उसकी शिक्षा का जरिया है।

* किसी अच्छे आदमी का हक मारकर नालायक आदमियों का पालन-पोषण करना, न्याय का गला काटना है। न्याय को कभी मरने मत दो वरना ईमानदारों का जीना मुश्किल हो जाएगा।

* ईश्वर ने मनुष्य को बेटी, अतिथि, बारिश और बीमारी इनकी सौगात दी है जो इससे बर्दाश्त नहीं होती और वो इनसे घबरा जाता है। ईश्वर ने चार मुश्किलें दी है जिन्हें मनुष्य खुशी से स्वीकार कर लेता है। ब्याज, दहेज, चुगली और झूठ।

* भूखा पेट, खाली जेब और झूठा प्रेम मनुष्य को जीवन में बहुत कुछ सीखा जाता है।

* दुनिया की चीजों के लिए मनुष्य कितना संघर्ष करते है। अगर उसका आधा संघर्ष भी अपने तक पहुंचने के लिए करें तो दुनिया खुद ब खुद उनके कदमों में होगी।

* हमारा भाग्य अपने हाथ में है अगर इसे बुद्धिमानी से इस्तेमाल किया जाए तो थोड़ा भी बहुत है और बेवकूफी से इस्तेमाल किया गया तो बहुत भी थोड़ा है।

HHH(४४४)HHH

✻ खास होना खूबसूरत है पर खूबसूरत होना खास नहीं है।

✻ कम बोलना मनुष्य के चरित्र का खुशगँवार पहलू है।

✻ नियोजित योजना हर तरह की सफलता की पूँजी है।

✻ खास मनुष्य वो है जो स्वयं कभी न्यायाधीश न बनें और न ही उसे न्यायाधीश बनाया जाएं फिर भी लोग उसे न्यायाधीश की तरह मानें।

✻ कुछ स्त्री-पुरुषों में खराब आदत होती हैं कि वो जो भी काम करते हैं वो शोहरत, नाम और दिखावे के लिए करते है। यह एक ईश्वर का अपराध है। जिस काम में कणभर भी दिखावे का अंश हो उसे ईश्वर नापसंद करता है।

✻ किसी का दिल दुखाने से पहले हजार बार सोच लो कि आपके भी सीने में दिल है और उसे भी कोई दुखा सकता है।

✻ दुनिया आपको आपके दिखावे से जानती होगी पर आपका दिखावा कितना भी अच्छा हो ईश्वर आपको आपके नियत से जानता है।

✻ नादान लोग धन-दौलत के लिए दिल का चैन खो बैठते है और बुद्धिमान शांति पाने के लिए दौलत कुर्बान कर देते हैं।

✻ आप अपनी आवश्यकताओं को कम कर देंगे तो दुनिया में आप खुश रह सकेंगे।

✻ बेवकूफ लोग खाने-पीने के लिए जीते है और बुद्धिमान लोग इसलिए खाते पीते हैं कि वो जी सकें।

✻ उन्हीं आदमियों से उपदेश गृहण करों जो अच्छी बात करें और उसपर चलें।

✻ जब मनुष्य के दिल में ही रोशनी न हो तो वो चिरागों के मेले में कुछ हासिल नहीं कर पाता।

✻ दुनिया को जब रात के अंधेरे के बाद रोशनी दिखती है तो उसकी नजरें आसमान की तरफ उठ जाती है।

✻ वास्तविकता दर्पण के उस प्रतिबिंब की तरह है आप करीब आओ तो करीब होता है और आप दूर जाओ तो दूर होता है। आप सामने से हट जाओ तो वो भी हट जाता है।

✻ सब्र एक कड़वा फल है इस कड़वे फल का इस्तेमाल बार-बार करना चाहिए।

✻ शादी एक पवित्र बंधन है, हर काम अगर समयानुसार किया जाए तो अच्छा लगता है। इसलिए शादी भी मुनासिब वक्त पर कर देनी चाहिए। खानदान भी अपने कर्त्तव्य को अच्छा अंजाम दे सकता है। वक्त पर शादी कर देने से बहुत सारी ऐसी समस्याओं से बचा जा सकता है जो देरी से शादी करने की सूरत में पेश आती है। इसमें मां-बाप की गलतियां है। हर मां-बाप की बढ़ी हुई उम्मीदें, ख्वाहिशें होती है वे अपने बच्चों के लिए अच्छे से अच्छा रिश्ता चाहने की ख्वाहिश करते हैं। इस चक्कर में वे कई योग्य रिश्ते ठुकरा देते हैं। नतीजन बच्चों की उम्र बढ़ जाती है पर उनको सोचा हुआ योग्य रिश्ता नहीं मिलता। सब मुनासिब रिश्ते हाथ से निकल जाते है। इसलिये शादी योग्य समय पर कर देना ही ठीक है। एक अच्छी और खुशहाल जिंदगी गुजारने का नियम ही शादी है। माँ बाप का फर्ज है कि वो संतान को पढ़ाए, उनका सहीं लालन-पोषण करें और सही समय पर शादी करदे। इसीमें उनकी भलाई है और कामयाबी है। बच्चे अपनी जिद्द से सही समय पर ना ना करते रहते हैं पर उस समय उन्हें समझाने की आवश्यकता है।

✻ अपने आपको किसी की नजरों में मत गिराओ क्योंकि लोग तो गिरे मकान की ईंट तक उठा ले जाते है।

✻ जो मशहूर होता है वो हमेशा सही नहीं होता और जो सही होता है वो हमेशा मशहूर नहीं होता।

✻ अगर आप कुछ सोच सकते हैं तो आप उसे बना सकते हैं अगर कोई सपना देख सकते है तो आप बन सकते हैं, आवश्यकता है प्रयत्न करने की।

* भविष्य भी उन्हीं लोगों का खूबसूरत होता है जिन्हें अपने ख्वाबों की खूबसूरती पर यकीन हो।

* हर गधा दीवार फांदने से पहले अपने आपको हिरन समझता है।

* कर्ज वो मेहमान है जो एक बार आने के बाद फिर जाने का नाम ही नहीं लेता।

* अच्छा मनुष्य उस जुबान की तरह है जिसे सब पसंद करते है।

* जिसकी आदत में लालच आ गया उसने अपने आप को गुनहगार बना लिया।

* जिसने अपनी परेशानी किसी के सामने बयान कर दी उसे बेकार आदमियों के साथ अपना समझौता कर लिया।

* जिसकी जुबान किसी पर हावी हो गयी उसने आपकी बेइज्जती कर दी।

* जिसे अपनी इज्जत, आबरू प्यारी हो उसे अपना दिखावा छोड़ देना चाहिए।

* खुशहाली के दिनों में इतराना नहीं चाहिए और परेशानी के दिनों में सब्र रखनी चाहिए।

* सड़क चाहें कांच की हों पैदल चलनेवाले को थका देती है। अपने आपको नीचा समझना चाहिए। अपने आपको ऊपर मत समझो क्योंकि कल हमें भी वैसे ही पेश होना है।

* पत्थरों से पाला पड़ें या पत्थर दिलों से जिंदगी का सफर कभी रूकता नहीं।

* अगर आप चाहते हो कि आपकी संतानें आपका आदर करें, सम्मान करें तो आप भी अपने बुजुर्गों का आदर, सम्मान करो जो आप दोगे वही पाओगे, जो बोओगे वो ही काटोगे।

* दूसरों की गलतियों को माफ कर देना ही बेहतर है हो सकता है यह वक्त आप पर भी कभी आ जाएं।

* अनाथ वो है जिसने ज्ञान हासिल नहीं किया हो।

* अहंकार से दूर ही रहो सबसे पहला गुनाह वो है जो ईश्वर के सामने किया हुआ गुरूर ही था।

* बुरी संगति से अकेला रहना अच्छा है और अकेले रहनेवाले की संगति से ज्ञानवाले की संगति बेहतर है।

* किसी को दुख पहुंचाकर रुलाना आसान है और किसी को खुश करके हँसा देना मुश्किल का काम है। हो सके तो इस मुश्किल काम को करना चाहिए और उस आसान काम से दूर रहना चाहिए।

* ईश्वर के आगे आँसुओं का ढेर लगा देना ही अच्छा है न जाने उसे आपका कौनसा आँसू पसंद आ जाएं।

* मुस्कुराहट, गम और उदासी का बेहतरीन इलाज है।

* हमेशा छोटी-छोटी खुशियों का खुले दिल से स्वागत करो क्योंकि इन्हीं के पीछे मुहब्बतों का सैलाब होता है।

* आँसुओं का कोई मौसम नहीं होता यह हर मौसम के साथी है।

* अगर आप स्वयं नेकी नहीं कर सकते तो दूसरों की बुराई भी मत करो।

* हैरत इस बात की है बादशाह होकर जुल्म करता है, फकीर होकर घमंड करता है, जवान होकर आलसी होता है, धन-दौलतवाला कंजूसी करता है और ईमानदार होकर किसी के साथ धोखा करता है।

* ईश्वर को यह चीजें नापसंद है- कंजूसी, लालस, घमंड, दिखावा, बेशर्मी, दुनिया की मुहब्बत, काहिली, जुल्म और नामर्दी।

* किसी की बात सुनकर किसी दूसरे को कह देना कि दोनों में मतभेद और लड़ाई झगड़ा हो जाएं यह बहुत बड़ा अपराध और बुरी व गंदी आदत है। ऐसी बात सुनो ही मत जिसमें फसाद का कोई डर हो। आपकी जुबान ईश्वर की नेअमत है इसका इस्तेमाल नेकी और भलाई के लिए करो। जबान का इस्तेमाल सच्चाई को फैलाने और दिलों को जोड़ने के लिए करना चाहिए।

❋ सपने वो नहीं है जो सोते हुए देखे जाते हैं सपने तो वो होते हैं जिसके लिए आपकी नींद ही उड़ जाती है।

❋ फल की इच्छा ही किसी कार्य को प्रारंभ करने की प्रेरणा देती है। फल ही कार्य करने की भावना को दृढ़ करता है। फल ही कार्य की दिशा निर्धारित करता है। फल के अनुसार ही कार्य की योजना बनाई जाती है। कुछ लोग फल और उद्देश्य को अलग-अलग मानते हैं। उनके अनुसार जिसकी प्राप्ति के लिए मनुष्य कार्य करता है, वह उसका उद्देश्य है और जो उसे प्राप्त होता है, वह उसका फल है। यदि हम उद्देश्य को इच्छित फल की संज्ञा दें तो कोई गलत नहीं होगा। मनुष्य प्रत्येक कार्य इच्छित फल की प्राप्ति के लिए ही करता है। फल की इच्छा के बिना कार्य संभव ही नहीं है। यदि बिना फल की कामना के कार्य संभव होता तो कोई मनुष्य व्यर्थ की जमीन खोदता होता तथा कोई पहाड़ तोड़ता होता। यदि कार्य करते समय हमें फल प्राप्त नहीं होता तो हमें निराश होने की अपेक्षा पुन: उसकी प्राप्ति के लिए प्रयास करना चाहिए। फल की इतनी अधिक इच्छा नहीं करनी चाहिए कि वह कार्य करने की भावना को ही समाप्त कर दे। आज लोग एक वक्त में कई काम करते हैं, वह भी फटाफट। थोड़े समय में बहुत कुछ पा लेना चाहते हैं। आराम से खा भी नहीं सकते। खा रहे हैं और दूरदर्शन देख रहे हैं। आस-पास बैठे लोगों से बातचीत कर रहे हैं। कभी-कभी फोन पर भी बतिया रहे हैं। सोते भी हैं, तो शंकाओं और चिंताओं के साथ। पूजा-प्रार्थना करते हैं, लेकिन ध्यान कहीं और है और अंत में कहते हैं- हे ईश्वर, मुझे सुख दे, संतोष दे और धैर्य दे, लेकिन जरा जल्दी।

❋ भ्रष्टाचार आज एक ऐसा शब्द बन गया है जिससे हर कोई अवगत है और कहीं न कहीं अपने जीवन में उसका सामना कर रहा है। हमें हमारे बुजुर्गों से यह संस्कार मिला है कि ईमानदारी से बढ़कर कोई चीज नहीं होती और ईमानदारी से किये गये कार्य में कभी असफलता नहीं मिलती। लेकिन आज समय का पहिया कुछ विपरीत घूम रहा है, भ्रष्टाचारी लोगों की तादाद निरंतर बढ़ रही है और इसके कारण ईमानदार लोगों को बड़ी असुविधा का सामना करना पड़ रहा है। पर जिस तरह रात हो जाने से सूर्य का प्रकाश कम नहीं हो जाता, उसी तरह ईमानदार व्यक्तित्व के प्रकाश और लोगों में उनके प्रति आदर में कमी नहीं आ सकती।

❋ भ्रष्टाचारी कितना ही बलशाली और सफल क्यों न हो जाये, समाज में सिर ऊंचा करके नहीं चल सकता। समाज हमेशा इन्हें ओछी नजरों से देखता है। वहीं ईमानदार चरित्रवाला इन्सान हर जगह प्रतिष्ठा और सम्मान पाता है। आज समाज और अपने आसपास का वातावरण इस तरह का हो गया है, जिसमें लोग सफलता के पीछे पागल हुए जा रहे हैं। उन्हें किसी भी तरह सफलता चाहिए, लेकिन ऐसी सफलता अधिक दिनों तक टिक नहीं सकती।

❋ मुस्कान- मनुष्य का जीवन बड़ा विचित्र है। ज्यों-ज्यों वह बड़ा होता जाता है, त्यों-त्यों एक से एक नई जिम्मेदारी के बोझ तले दबता चला जाता है। इस बोझ भरे जीवन की मंजिल को पार करते हुए उसे अनेक दु:खों, कष्टों व मुसीबतों में से गुजरना पड़ता है, तनाव सहन करने पड़ते हैं व समस्याओं से जूझना पड़ता है। जहां रात है वहां दिन भी होगा, पतझड़ है तो बसन्त की बहार भी आएगी। धूप के साथसाथ छाया भी आती है।

अन्धकार के बाद प्रकाश भी होगा तो फिर दु:ख के बाद सुख की प्राप्ति भी होगी। इन सबका तो एक संगम है। तो क्यों न जीवन में सुख दु:ख की आंख मिचौनी के बीच मुस्कुराना सीख जाएं। जीवन में निराशा की बजाए आशा के फूल ही संजोए जाएं।

जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाकर ही हम अनेक समस्याओं का समाधान ढूंढ सकते हैं। गुलाब का फूल प्राप्त

करना हो तो कांटों से गुजरना ही पड़ेगा। अगर हम इन नई-नई मुसीबतों को देखकर चिन्ताग्रस्त हो जायेंगे तो गुजर रही जिंदगी के साथ-साथ भावी जिन्दगी को भी नष्ट कर रहे हैं। इसके साथ दूसरों के मन में भी अपना गलत प्रभाव छोड़ रहे हैं। दु:ख, तनाव, घुटन तो जिन्दगी में आएंगे ही। अकेला सुख ही सुख तो जीवन में प्राप्त नहीं हो सकता। इससे पहले कि दु:ख और तनाव हम पर हावी हो जाएं, क्यों न हम प्रसन्न रहकर, मुस्कुराकर इन दु:खों पर विजय प्राप्त कर लें।

हमारे जीवन में विचित्र तूफान आते हैं, हिमपात होता है, बिजली गिरती है पर हम नष्ट नहीं होते मगर चिन्ता से जिसको हम अपनी अंगुलियों से मसल सकते हैं, मात खा जाते हैं। चिंता को मसलने का सर्वोत्तम उपाय तो प्रसन्नचित रहना ही है। यही एक मुस्कान व खिला चेहरा ही तो पति-पत्नी को करीब लाता है। हमें जीवन में नकारात्मक दृष्टिकोण के स्थान पर सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। तभी जीवन की मंजिल हंसी खुशी, मुस्कराकर, आसानी से पार कर सकते हैं। जीवन में हमेशा मुस्कुराएंगे, मुस्कान प्रदान कर मुस्कान को ही पायेंगे। यह बड़े काम की चीज है यानी मुस्कान एक लम्हे की, फायदे कई लम्हों के।

* अगर आप योजनाबद्ध तरीके से एकाग्र होकर जो काम कर रहे हैं, वो स्वयं पर विश्वास रखकर करें कि जो आप कर रहे हैं वो सही कर रहे हैं। बीच-बीच में उसका परीक्षण भी कर लें कि आप सही रास्ते पर जा रहे हैं ताकि आपका आगे का रास्ता आसान हो सके।

* किसी की अचानक तरक्की को अधिकतर लोग गलत तरीके से देखते हैं उन्हें लगता है कि यह साधारण तरीके की उन्नति नहीं है। अपने आसपास के सामान्य जन भी अपने व्यक्तित्व विकास से चरमोत्कर्ष पर पहुंच सकते हैं हमें इसे मानने में संकोच नहीं करना चाहिए।

* जो व्यक्ति काम में अरुचि रखे, पूरे दिल से कार्य न करे, जिनके पास उद्देश्य न हो और जिनका मन चंचल रहता है, वे दृढ़ता से उद्देश्य पूर्ति में नहीं लगे रह सकते।

* सिर्फ असाधारण अवसरों की राह नहीं देखनी चाहिए। छोटे-से-छोटे अवसर का उपयोग किया जाए तो बड़े अवसर सामने आकर स्वयं खड़े हो जाते हैं।

* किसी भी मनुष्य के कार्य एक पुस्तक की विषय सूची के समान हैं, जो बताते हैं कि उसके अंदर क्या अनोखी बातें हैं।

* आत्मविश्वास के बिना महान कार्य करने की जुर्रत न करें।

* आशावाद ही वह पंथ है, जो सफलता की ओर से जाता है। आशा के बिना कोई भी कार्य किया ही नहीं जा सकता।

* न्यायाधीश को तीक्ष्ण बुद्धि होने, अधिक योग्य, प्रदर्शनीय होने, सम्मानित और पूर्ण विश्वस्त होने के बजाय अधिक विचारपूर्ण होना चाहिए। इससे भी ऊपर ईमानदारी और सच्चाई उनका असली गुण है।

* संयम का अर्थ है अपनी बिखरी शक्ति को एक निश्चित होते ही ऐसे पदार्थ और व्यक्ति निरर्थक लगने लगते हैं, जो लक्ष्य प्राप्ति के सहायक नहीं होते, बल्कि बाधक होते हैं। इस संदर्भ में की जानेवाली सतत विचार प्रक्रिया सहज संयम का कारण बनती है।

* साहसी व्यक्ति शत्रुओं की संख्या नहीं देखते, किंतु वह उनके छिपे होने का स्थान देखते हैं।

* धैर्य जब बढ़ता जाता है तो कड़वा लगता है लेकिन भोग के समय मीठा फल उसके कारण ही प्राप्त होता है।

* सज्जन स्वभावत: सतत सर्व साधारण का उपकार करने में लगे रहते हैं। फिर भी उनकी उन्नति दुर्जनों के हृदय में भारी रोष पैदा करती है।

HHH(४४८)HHH

* जिस श्रम से हमें आनंद प्राप्त होता है, वह हमारी व्याधियों के लिए अमृत तुल्य है, हमारी वेदना की निवृत्ति है।

* अच्छे-बुरे धागों से बुने हुए दिनों के वस्त्र को हम जीवन का नाम दे सकते हैं।

* मालिक से भी अधिक बुरा है लेनदार। चूंकि मालिक केवल तुम्हारे व्यक्तित्व पर अधिकार रखता है, लेकिन लेनदार तुम्हारी आबरू भी ले सकता है और कभी भी तुम्हें तंग कर सकता है।

* जब विचार चंचल होता है तो अस्त-व्यस्त और शक्तिहीन हो जाता है। इसलिए विचारों की स्थिरता ही व्यक्तित्व को संपूर्ण बनाती है।

* प्रश्न का समय पर उपयुक्त उत्तर देना आनंद प्रदान करता है। उचित समय पर कही गई बात ज्यादा वजन रखती है।

* विनम्रता जहां विद्या का प्रतिफल है, वहीं सुख का आधार भी है। जो जीवन में सुखी रहना चाहता है, उसे विनम्र होना ही पड़ेगा।

* जन्म और मृत्यु का कोई इलाज नहीं सिवाय इसके कि हम बीच के समय को खुशी से गुजार सकें।

* खुशी इस बात पर निर्भर करती है कि आप क्या दे सकते हैं, इस पर नहीं कि आप क्या पा सकते हैं।

* मनुष्य के आचरण से जाना जा सकता है कि वह विद्वान है या मूर्ख, वीर है या कायर अथवा चरित्रवान है या चरित्रहीन।

* जो मनुष्य भलाई के बदले में बुराई करता है, उसके घर में बुराई सदैव निवास करती है।

* उस जाति की स्थिति कितनी दयनीय है, जो परस्पर वैमनस्य के कारण कई सम्प्रदायों में बंट चुकी है और हर सम्प्रदाय स्वयं को एक जाति मानने लगा है।

* चरित्र वह श्वेत कागज है जिस पर कलंक लगने के पश्चात उसका साफ होना असंभव होता है।

* जो तमाम इच्छाओं से ऊपर उठ गया है, उसके द्वारा भलाई सदा इस तरह अनजाने, सहज और स्वाभाविक तौर से होती रहती है जैसे फूल से खुशबू और सितारों से रोशनी निकलती रहती है।

* पुरानी लकड़ी जलने में तथा पुराना घोड़ा सवारी करने में सर्वोत्तम होते हैं।

* भूल करके सीखा जाता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि जीवन भर भूल ही की जाए।

* अनुभव वह कंधा है जो कि जीवन में आपको उस समय नसीब होता है, जबकि आपके बाल झड़ चुके हों।

* मूर्ख के लिए क्रोध जोर-शोर से प्रकट करनेवाली वस्तु है, जबकि बुद्धिमान के लिए शांति से वश में करने की।

* जो भविष्य का भय नहीं करता वही वर्तमान का आनंद ले सकता है।

* अशिक्षित रहने से पैदा न होना ही अच्छा है, क्योंकि अज्ञान सब बुराइयों की जड़ है।

* गालियां स्वीकार न की जाएं तो देनेवाले के पास लौट जाती हैं, अत: चुप रहो।

* अपने सुख के लिए दूसरों को कष्ट देना महा पाप है।

* गुणवान व्यक्ति की परीक्षा धन से नहीं सद्गुण और शीलता से होती है, जिस प्रकार घोड़ा अपनी साज-सज्जा से नहीं बल्कि ताकत और दौड़ने के गुण से जाना जाता है।

* ऊंचाई से ही नीचे गिरा जाता है। अत: अपनी कमजोरियों को नीचे ही छोड़ दो, वरना वही तुम्हें नीचे धकेल देंगी।

* प्रभुता, महत्व और पद पाकर सभी को घमण्ड होता है। मनुष्य रूप में ऐसा कोई नहीं पैदा हुआ जो तीनों को पाकर नम्र रहे।

* जो नौजवान अपने चरित्र को अपनी पूंजी बनाने और अपने प्रत्येक वचन को पूरा करने के लिए सारे पौरुष की बाजी लगा देने का दृढ़ संकल्प लेकर चलता है, वह असफल नहीं हो सकता, चाहे उसे यश या धन कुछ भी न मिलें।

* संयम व्यक्ति प्रलोभन पर नहीं फिसलते, लेकिन एक बार फिसल गए तो फिर संभल नहीं सकते, क्योंकि तब उनकी संयत शक्तियों का वेग प्रतिकूल दिशा में हो जाता है।

* सन्तोष जीवन के उद्देश्य का दरवाजा खोलता है, क्योंकि सिवाय सन्तोष के उस दरवाजे की और कोई कुंजी नहीं।

* मनुष्य तभी तक सर्वोत्तम, सर्वगुण सम्पन्न और सर्वपूज्य बना रहता है, जब तक वह दूसरे से सामना नहीं करता।

* चिंता ऐसी काली दीवार का निर्माण कर देती है जिसमें घिरने के पश्चात फिर कोई गली नहीं सूझती।

* अपनी प्रशंसा सुनकर हम इतने मतवाले हो जाते हैं कि फिर हममें विवेक की शक्ति भी लुप्त हो जाती है। बड़े-से-बड़ा महात्मा भी अपनी प्रशंसा सुनकर फूल उठता है।

* जिसे हर कोई देने को तैयार रहता है पर लेता कोई नहीं, ऐसी वस्तु है उपदेश, सलाह।

* विज्ञान एकत्व को खोजने के सिवा और कुछ नहीं है। ज्यों ही कोई विज्ञान पूर्ण एकता तक पहुंच जाएगा, त्यों ही उसकी प्रगति रुक जाएगी, क्योंकि तब वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा।

* आज का अवसर मत खोओ, क्या भरोसा कि कल स्थितियां बदल ही जाएंगी? तो फिर आज ही क्यों नहीं?

* मनुष्य का उद्धार पुत्र पैदा करने में नहीं, कर्मों को पैदा करने में है। यश और कीर्ति कर्मों से प्राप्त होती है। संतान उस परीक्षा के समान है, जो ईश्वर ने मनुष्य को परखने के लिए ईजाद की है।

* आत्मविश्वास, आत्मज्ञान और आत्मसंयम ये तीन ही जीवन को परम शक्ति संपन्न बना देते हैं।

* निराशावादी संदेही और आशंकित रहने के कारण कायर बनता है और विवेक रहित हो जाता है, जिससे सामने पड़ते सुगम मार्ग को चुनना भी उसके लिए संभव नहीं रह जाता।

* ईमानदारी वैभव का मुंह नहीं देखती, वह तो मेहनत के पालने पर किलकारियां मारती है और सन्तोष पिता की तरह उसे देखकर तृप्त हुआ करता है।

* इंद्रियां शिथिल हो जाएं, लेकिन मन से वासना न जाए, ऐसी स्थिति में असंयमी व्यक्ति अत्यन्त हास्यास्पद हो जाता है। ऐसी घटनाएं आपको वृद्धों में, विशेषरूप से देखने को मिलती हैं। ऐसे वृद्ध अपने जीवन को नरक बना लेते हैं।

* साहस एक सर्वोत्तम मानसिक औषधि है यदि आप आशा और विश्वास के साथ महान कार्य संपन्न करना चाहते हैं तो आपकी आत्मा में साहस का वास होना चाहिए। यदि ऐसे व्यक्ति को कभी हार का भी सामना करना पड़े तो वह क्षणिक हार होती है। अंत में विजय साहस की ही होगी।

* मुसीबतें टूट पड़ें, हाल बेहाल हो जाए तब भी जो लोग निश्चय से डिगते नहीं और धीरज रखकर चलते हैं, वे ही सच्चे धैर्यशाली हैं।

* इस दुनिया में किसी भी व्यक्ति का स्वभाव प्राकृतिक रूप से ऐसा नहीं है जिसे पूर्ण कहा जा सके। उसे आवश्यकता होती है देखभाल की, आत्मसंयम की।

* श्रमजीवी होने का अर्थ है, स्वयं को इस बात के लिए तैयार करना कि कोई परवाह नहीं और कई रास्ते हैं।

* मनुष्य जीवन नदी की भांति है। साधारण मनुष्य बहाव से बहते हैं, असाधारण मनुष्य अपने बहाव से नई राहें बना लेते हैं।

* व्यवहार कुशल होने का यह अर्थ कदापि नहीं है कि आप दूसरों से गलत को सच मनवाने में कितने माहिर हैं। बल्कि इसका अर्थ है कि आप सच की कड़वी दवा को कैसी खूबसूरती से पेश करें, ताकि दूसरा व्यक्ति उसे बिना मुंह बिचकाए स्वयं मुस्कराता हुआ पी जाए।

* साधना को वासनाओं के नाश और सद्वृत्तियों के निर्माण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। वासनाएं नष्ट होंगी तो हृदय में उच्च विचार आएंगे। हृदय में उच्च विचार आते ही दुर्बलताएं भाग जाएंगी।

* शब्द विचारों को बहुत साफ ढंग से व्यक्त करने में असमर्थ होते हैं। व्यक्त करने के शीघ्र बाद वे सदैव कुछ भिन्न हो जाते हैं, तो कुछ विकृत हो जाते हैं, तो कुछ मूर्खतापूर्ण लगते हैं।

* विनम्रता का अर्थ है अत्यधिक प्रतिकूल परिस्थितियों में भी पूरी तरह से समायोजित होने की क्षमता पैदा कर लेना। इसीलिए विनम्र व्यक्ति कभी भी, कहीं भी नहीं टूटता।

* मनोवैज्ञानिक दृष्टि से खुलकर हंसना, मुस्कराना और प्रसन्न रहना दवा के समान है।

* बालक के लिए माता-पिता व स्कूल आचरण के कारखाने हैं। विद्या पाकर परिस्थिति के अनुसार आचरण करनेवाला बालक ही ज्ञानी बनता है।

* दया के सम्मुख जैसे दुष्टता का नाश हो जाता है, वैसे ही प्रेम और उदार सहानुभूति के सम्मुख बुरे मनोविकारों का नाश हो जाता है।

* जो मनुष्य दूसरों पर दया करता है, वह स्वयं अपना हित करता है, पर निर्दयी मनुष्य स्वयं अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारता है।

* मनुष्य के चरित्र को पहचानने के लिए उसकी संगति आवश्यक नहीं, उसकी बातचीत से भी चरित्र जाना जा सकता है।

* इच्छाशक्ति की अग्नि जहां प्रज्वलित होती है वहीं अहिंसा, सादगी और विजय की पताका दृष्टिगोचर होती है।

* जो नहीं बोलता उसकी भी लोग निंदा करते हैं और जो बहुत बोलता है उसे भी दोष लगाते हैं। इसी तरह मितभाषी की भी लोग निंदा करते हैं। संसार में ऐसा कोई नहीं जिसकी लोग निंदा न करें। बिलकुल ही प्रशंसित पुरुष न कभी हुआ, न कभी होगा और न आजकल है।

* अनुभव सिर्फ ज्ञान नहीं देता, बल्कि वासनाओं से मुक्ति दिला देता है।

* जो पुरुष, स्त्री, पुत्र और धनादि में आसक्त है, उसकी बुद्धि मोह जाल में फंसकर धर्मपथ से डिग जाती है। अत: सबसे पहले काम और क्रोध के वेग को वश में करो। इन्हें जीत लेने पर सारी कठिनाइयां स्वत: दूर हो जाएंगी।

* भूल से भी दूसरे के सर्वनाश का विचार न करो, क्योंकि न्याय उसके विनाश की युक्ति सोचता है, जो दूसरों के साथ बुराई करना चाहता है।

* अज्ञान अंधकार स्वरूप है। दीया बुझाकर भागनेवाला यही समझता है कि दूसरे उसे देख नहीं सकते, तो उसे यह भी समझ रखनी चाहिए कि वह ठोकर खाकर गिर भी सकता है।

* अपने दोषों की चिंता मत करते रहिए और दूसरे के दोषों की चिंता और भी कम कीजिए। जो व्यक्ति आपके पास आता है, उसके बारे में सोचने का प्रयत्न कीजिए कि उसमें क्या खूबी है और क्या ताकत है। उसकी विशेषताओं, सद्गुणों का अनुकरण करने का प्रयास कीजिए। इसका परिणाम यह होगा कि आपके दोष अपने आप दूर होते जाएंगे,

जैसे वृक्ष से पत्ते अपने आप झड़ जाते हैं।

✻ शांति संपूर्ण सृष्टि का मूल है, इसी के भय से मनुष्य विवेक के औचित्य को आत्मसात करता है।

✻ अहंकार का कारण है अपने असली स्वरूप अर्थात मैं को न समझना। जैसे ही व्यक्ति मैं को उसके असली रूप में देख लेता है, उसका अहंकार बिल्कुल वैसे ही अदृश्य हो जाता है, जैसे दीपक के जलने से अंधकार का कोई अता-पता नहीं रहता।

✻ असफल हो जाते हैं वे लोग जो केवल शारीरिक परिश्रम करते हैं और सफल हो जाते हैं वे लोग, जो कार्य को लगन और ध्यान एकाग्र करके करते हैं।

✻ बुनियादी आदमी की आंखें या तो सन्तोष से मर सकती है या कब्र की मिट्टी से।

✻ विश्व की समस्त शक्तियां हमारी हैं। हमने अपने हाथ अपनी आंखों पर रख लिए हैं और चिल्लाते हैं कि सब ओर अंधेरा है। जान लो कि हमारे चारों ओर अंधेरा नहीं है। अपने हाथ अलग करो, तुम्हें प्रकाश दिखाई देगा, जो पहले भी था। अंधेरा कभी नहीं था। कमजोरी कभी नहीं थी। हीनता कहीं नहीं थी। हम सब मूर्ख हैं जो चिल्लाते हैं कि हम दीन-हीन हैं, कमजोर हैं, अपवित्र हैं।

✻ चिंता तो चिता समान होती है जो मनुष्य को घुन की तरह अन्दर ही अन्दर खोखला कर देती हैं और उसकी क्रियाशीलता नष्ट हो जाती है।

✻ अत्यधिक प्रशंसा बहुत थोड़े समय रहनेवाली भावना है। ज्यों ही आपकी जानकारी उस व्यक्ति से बढ़ती है, जिसकी आप प्रशंसा करते थे, तब तुरंत ही आप उसकी प्रशंसा में कटौती करने लगते हैं।

✻ जिस घर में कोई नहीं रहता उसमें चमगादड़ बसेरा लेते हैं।

✻ लक्ष्य को पकड़ने (पाने) के लिए सहस्र बार आगे बढ़ो और यदि असफल हो जाओ, फिर भी एक बार नया प्रयास अवश्य करो।

✻ इस संसार में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसके पास एक बार भाग्योदय का अवसर न आया हो। परंतु जब भाग्य देखता है कि वह व्यक्ति उसका स्वागत करने के लिए तैयार ही नहीं, तो वह उल्टे पांव वापस चला जाता है।

✻ कर्म ही धर्म का दर्शन है। समय-समय पर पुरातन दर्शन की नये संदर्भ में समय के अनुसार बुद्धिमत्तापूर्ण व्याख्या की आवश्यकता होती है। बुद्धिमान व्यक्ति, पैगंबर और ऋषि, जनसाधारण को पुरातन दर्शन को वर्तमान संदर्भ में ही अपनाने का परामर्श देते हैं।

✻ आत्मविश्वासी समुद्र के मध्य जहाज नष्ट हो जाने पर भी तैरकर उसे पार कर लेता है।

✻ आशा और आत्मविश्वास ही वह वस्तुएं हैं, जो हमारी शक्तियों को जागृत करती हैं, हमारी उत्पादन शक्ति को दुगुना तिगुना बढ़ा देती हैं।

✻ ईमानदार होने का मतलब यह कतई नहीं है कि आप बेईमानी से किसी भी तरह से हारें। ऐसी परिस्थिति में ईमानदार को यमराज से भी ज्यादा क्रूर हो जाना चाहिए।

✻ जिसे नहीं करना चाहिए उस ओर जब मन आकृष्ट हो और आप उसे प्रयासपूर्वक रोकें, वैसा न करने दें, तो उसे संयम कहा जाता है। लेकिन संयम का अर्थ है, जब आकर्षणों की ओर जाने के लिए मन सहज रूप से रुक जाए।

✻ संसार में कठिन परिस्थितियां आने के पश्चात जो व्यक्ति साहस और धैर्य अपनाए रखता है वह कठिनाइयों पर काबू पा लेता है।

❋ धैर्य वह वजह है जिसके कारण हाथी मन भर खाता है। लेकिन कुत्ता एक-एक टुकड़े के लिए घर-घर मारा फिरता है, क्योंकि वह धैर्य से हीन होता है।

❋ जिसका जो स्वाभाविक गुण है, उसे उससे वंचित करने की क्षमता किसी में भी नहीं होती। हंस का स्वाभाविक गुण है कि वह दूध और पानी को अलग कर सकता है। स्वयं विधाता भी इस कार्य में असमर्थ हैं। हंस के कुपित होने पर विधाता उसका निवास स्थान छीन सकता है, किंतु उसके नीरक्षीर विवेक की बुद्धि को नहीं छीन सकता।

❋ कठोर श्रम तप है ऐसे तप के बाद आप मौन होकर लेटें या बैठ जाएं और देखें अपने मन पंछी को। आप पाएंगे कि वह अनन्त ऊंचाइयों तक फैले आकाश को छूने के लिए तैयार है। आप मौका दें, स्वतंत्रता दें और उड़ जाने दें उसे। आप हैरान होंगे यह महसूस करके कि जिसे आपने बरसों से नहीं प्राप्त किया, उसे कुछ ही क्षणों में पा लिया है मन-पंछी ने। इसलिए कठोर श्रम- जब तक तन-मन दोनों थक न जाएं और गिर न पड़ें अपनी जगह-जीवन साधना का महत्वपूर्ण क्षण है।

❋ जीवन को सफल बनाने के लिए शिक्षा की जरूरत है उपाधि की नहीं। हमारी उपाधि है- हमारा सेवाभाव, हमारी नम्रता, हमारे जीवन की सरलता। अगर यह उपाधि नहीं मिली, अगर हमारी आत्मा जागृत न हुई तो कागज की उपाधि व्यर्थ है।

❋ व्यवहार की व्याख्या करना उतनी आसान नहीं, जितना लोग समझते हैं। व्यवहार की सच्चाई वह नहीं जो दिखाई देती है। व्यक्ति कोई विशिष्ट व्यवहार क्यों करता है, यह वह भी नहीं जानता। यही वजह है कि व्यवहार पर उसका बिल्कुल भी नियंत्रण नहीं होता और वह कहता है ऐसा कैसे हो गया।

❋ सत्यवादी मनुष्य पर जब विपदा आती है तो लोग उससे सहानुभूति व्यक्त करते हैं। दुष्टों पर जब विपत्ति आती है तो वे लोगों के लिए उपहास की वस्तु बन जाते हैं। लेकिन दुष्टों की विपत्ति ईश्वर के न्याय को सिद्ध करती है और सत्यवादी मनुष्य पर आई विपदा उसके धैर्य को साबित करती है।

❋ शब्दों का सामर्थ्य भी हो जाता है व्यर्थ, आगे पीछे कीजिए, बदल जाएगा अर्थ।

❋ अगर भीतर गलत हो, तो तुम जो भी करोगे, उससे गलत फलित होगा। अगर तुम भीतर सही हो, तो तुम जो भी करोगे, वह सही फलित होगा।

❋ आप कितने आस्तिक हैं और कितने आध्यात्मिक, इसका पता आपके खिलखिलाते चेहरे और प्रसन्नताभरी आंखों की चमक से चलता है।

❋ आचरण केवल मात्र स्वप्नों से कभी नहीं बना करता। उसका सिर तो शिलाओं के ऊपर घिस-घिस कर बनता है।

❋ जो भलाई से प्रेम करता है, वह देवताओं की पूजा करता है, जो आदरणीयों का सम्मान करता है, वह ईश्वर के पास रहता है।

❋ दूसरों पर दया करनेवाला सहानुभूति पाता है, जो दया नहीं करता वह सहानुभूति पाने का अधिकारी भी नहीं।

❋ चरित्र निर्माण के तीन आधार स्तंभ हैं- अधिक निरीक्षण करना, अधिक अनुभव करना एवं अधिक अध्ययन करना।

❋ इच्छा करना और कर्म करना दोनों में आकाश पाताल का अंतर है। इच्छा को हम जल का नाम दें और कर्म को खौलता हुआ जल कहें तो खौलता जल ही जीवन की गाड़ी को उसके लक्ष्य तक पहुंचाएगा। यदि पहली इच्छा का दमन कर दोगे तो अन्य इच्छाओं के प्रसव से बच जाओगे।

❋ हमारे आध्यात्मिक अनुभव शब्दों के कमजोर माध्यम से नहीं, बल्कि हमारे जीवन दृष्टांत के द्वारा व्यक्त किए जाने चाहिए।

❋ क्रोध और उबलता पानी एक समान है। क्रोधी भलाई नहीं देख पाता और खौलते जल में प्रतिबिंब नहीं दिखता।

✻ ब्रह्म के स्वरूप का प्रेम जिन्होंने पा लिया है, उन्हें फिर किसी काल में भी भय प्राप्त नहीं होगा।

✻ अज्ञान एक ऐसा कांटा है, जो चुभने के बाद किसी दूसरे को नहीं दिखता; लेकिन जिसको चुभता है; उसे हमेशा परेशान करता रहता है।

✻ किसी भी चीज पर एकदम विश्वास न करो। लेकिन गहराई से जांचने के बाद विश्वास आ जाए तो फिर उससे उसी तरह चिपटे रहो जैसे चींटा मीठे पर चिपकता है।

✻ इर्ष्या करनेवाले का सबसे बड़ा शत्रु उसकी इर्ष्या ही है। दूसरे शत्रु उसका अहित करने से रह जाएं, परंतु इर्ष्या उसे हानि पहुंचा कर ही रहती है।

✻ दान करके गुप्त रखना चाहिए, घर आए शत्रु का सत्कार करना चाहिए, परोपकार करके मौन रहना चाहिए और दूसरों के उपकार को प्रकट करते रहना चाहिए। धन वैभव होने पर अभिमान नहीं करना चाहिए, पीठ पीछे निंदा नहीं करनी चाहिए, अपना दोष बताए जाने पर क्रोधित नहीं होना चाहिए और उपकार करनेवाले के प्रति कृतज्ञ रहना चाहिए ये ऐसे सद्गुण हैं, जो साधारण पुरुष को महापुरुष बना देते हैं।

✻ जो दान अपनी कीर्ति गाथा गाने को उतावला हो जाता है, वह दान नहीं रह जाता, अपितु अहंकार और आडम्बर मात्र रह जाता है।

✻ आप इतने श्रेष्ठ तब भी नहीं होते जितना कि आपकी जीत पर लोग आपको बताते हैं। न ही आप इतने बुरे होते हैं जितना कि आपकी हार पर लोग आपको समझते हैं।

✻ संसार का अध्ययन करने के पश्चात विद्वानों ने यह पाया है कि जो संतोषी व्यक्ति थे उनके पास सबसे ज्यादा प्राप्तियां थीं।

✻ मनुष्य को कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए, जिससे वह स्वयं को छोटा और हीन समझने लगे।

✻ किसी के कृपाभाजन होने से इर्ष्या का पात्र होना अधिक अच्छा है।

✻ कार्य कभी भी अधिक नहीं होता, चिंता उसे अधिक से अधिक बनाती जाती है। शहद की मधुमक्खी को जितना हटाओगे वह उतना ही चिपटती चली जाएगी, चिंता भी ऐसी ही है।

✻ प्रशंसा आपके व्यक्तित्व के मूल केन्द्र पर चोट करती है, इससे आप जान सकते हैं कि आपके सामने बैठे व्यक्ति का मानसिक तथा आध्यात्मिक स्तर क्या है।

✻ जब कोई मनुष्य किसी दूसरे के दोषों पर उंगली उठाता है, तो उसे ध्यान रखना चाहिए कि शेष तीन उंगलियां उसकी ही ओर संकेत कर रही हैं।

✻ मजाक करना अच्छा है लेकिन मजाक को एक पेशा बना लेना अच्छा नहीं।

✻ मनुष्य सुनिश्चित करता है तो भगवान अनिश्चित करा देता है। मनचाही होती नहीं, हरि चाही तत्काल होती है।

✻ धन संपदा कभी स्थायी नहीं होती। इसे इस हाथ से उस हाथ जाने में देर नहीं लगती।

✻ यदि कोई लक्ष्य सामने नहीं है, तो भी चलना शुरू करो। दोहरे पर खड़े रहने से क्या लाभ? चलने वाले कहीं न कहीं अवश्य पहुंचते हैं।

✻ जो खो गए उन अवसरों को याद करके अथवा दुखी होकर अपनी ऊर्जा नष्ट मत करो। यही समय किसी नए अवसर

को खोजने में अथवा जो कार्य हाथ में है, उसे सम्पन्न करने में लगाओ तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी।

❋ प्रतिभावान वह कार्य करते हैं जिसे किए बिना वे रह नहीं सकते। गुणी व्यक्ति वह कार्य करते हैं, जो वे कर सकते हैं।

❋ किसी भी कठिनाई का नतीजा अविश्वास नहीं है, क्योंकि अविश्वास से ही कठिनाई पैदा होती है।

❋ जो व्यक्ति छोटे-छोटे कामों को ईमानदारी से करता है, वही बड़े कामों को भी ईमानदारी से कर सकता है।

❋ संयम का अर्थ है सदा सचेत रहना कि अन्तस्तल में क्या घट रहा है। अविवेकी व्यक्ति संयम पर भाषण दे सकता है, संयम की मिठास भी चख नहीं सकता। जबकि यह मिठास आंवले की मिठास की तरह पुष्टिकारक तथा रोगों का निवारण करनेवाली हुआ करती है।

❋ उत्साह प्रेम का फल है, जिसमें सच्चा प्रभु प्रेम होता है, वही उसके दर्शन के लिए उत्सुक रहता है।

❋ जो धीरज रख सकता है, भूखा रह सकता है, उत्तेजना में भी अपनी चिंतनशक्ति को स्थिर रख सकता है, वह जीवन में कभी असफल नहीं होता। सफलता उसकी सदैव दासी बनकर रहती है।

❋ जन्म-जन्मान्तरों में किए गए कर्मों की निरंतरता का परिणाम होता है स्वभाव। नकारात्मक स्वभावों या आदतों को तोड़ने के लिए सद्‌विचार श्रेष्ठ साधन हैं।

❋ कठोर श्रम करके आप सीखते हैं कि थकान में भी कैसे अपने लक्ष्य पर अडिग रहा जाता है, या फिर थकान को पास फटकने भी नहीं दिया जा सकता।

❋ जीवन एक कहानी के समान है। विचारणीय यह नहीं है कि वह कितनी लंबी है, वरन् यह है कि वह कितनी अच्छी है।

❋ भौतिक स्तर पर प्राप्त होनेवाली संवेदना और उसके प्रति की जानेवाली प्रतिक्रिया से मिलकर बनता है व्यवहार। इस प्रकार आध्यात्मिक अनुभूतियों को प्राप्त करनेवाला शरीरी व्यवहार की किसी भी प्रकार से उपेक्षा नहीं कर सकता। यही कारण है कि जिसका अध्यात्म सध गया, उसका व्यवहार भी कुशलतापूर्वक होता है। योग का अर्थ कर्मों में कुशलता करते हुए श्रीकृष्ण ने व्यवहार की सत्यता को ही स्वीकार किया है।

❋ धन से अच्छे संस्कार उत्पन्न होना शायद संभव हो, लेकिन अच्छे विचारों से ही धन एवं इच्छित वस्तुएं प्राप्त होती हैं।

❋ पुरुष की शोभा न तो बाहुभूषण से, न चंद्र के समान उज्ज्वल हार से और न बालों को संवारने से, न उबटन से, न स्नान से, न पुरुषों के श्रृंगार से होती है, जितनी सुसंस्कृत वाणी से होती है।

❋ नम्रता का अर्थ लचीलापन है, लचीलेपन में भी तनने की शक्ति है, जीतने की कला है और शौर्य की पराकाष्ठा है।

❋ प्रसन्न रहना हमारा फर्ज है। यदि हम प्रसन्न रहेंगे तो अज्ञात रूप से विश्व की बहुत भलाई करेंगे।

❋ मनुष्य को अपनी परीक्षा विपत्ति में देनी होती है। विपत्ति के समय और घाव खाने के बाद रोने-धोने से कोई लाभ नहीं होता।

❋ भूल करना मनुष्य का स्वभाव है, किन्तु हुई भूल को मान लेना और इस तरह आचरण रखना कि वह भूल फिर न होने पाए, पूर्ण भूल सुधार है।

❋ बुरे आदमी के साथ भी भलाई ही करनी चाहिए। रोटी का एक टुकड़ा डालकर कुत्ते का मुंह बंद कर देना ही अच्छा है।

❋ जिस घर में पति-पत्नी एक-दूसरे के प्रति समभाव नहीं रखते, वहीं दरिद्रता का निवास है। वहां उन दोनों का जीवन निष्फल है।

❋ जो मनुष्य भलाई के बदले में बुराई करता है, उसके घर में बुराई सदैव निवास करती है।

* जैसे चंद्रमा चांडाल के घर भी रोशनी देता है, वैसे ही सज्जन पुरुष गुणहीन प्राणियों पर भी दया करते हैं।

* अधिकांश पुरुष नारियों में वह खोजते हैं, जिसका स्वयं उनके चरित्र में अभाव होता है।

* इच्छाओं को त्यागनेवाले यात्रियों के गुण गाना उतना ही असम्भव है जितना संसार में अब तक मरे जीवों की गिनती करना।

* जो अनुभव के स्रोत का जल पीने की उपेक्षा करता है वह सम्भवत: अज्ञानरूपी मरुस्थल में प्यासा ही मर जाएगा।

* जब तक मनुष्य के मन में काम, क्रोध, अहंकार और लोभ की अल्प मात्र भी शेष रहती है, तब तक पण्डित और मूर्ख दोनों एक समान होते हैं।

* यदि तुम ईश्वर से डरते हो तो मूर्ख हो, यदि तुम मनुष्य से डरते हो तो कायर हो, यदि तुम पंचभूतों से डरते हो तो उनका सामना करो। यदि तुम अपने आपसे डरते हो तो अपने आपको पहचानो और कहो कि मैं ही ब्रह्म हूं।

* गाली अर्थात दुर्वचनों से ही क्लेश, दु:ख तथा मृत्यु उत्पन्न होते हैं। जो गाली सुनकर हार मानकर चला जाए, वही सज्जन है। इसके विपरीत जो गाली देने के बदले में गाली देने लग जाता है, वह नीच प्रकृति का है।

* गरीब जातियों का यह यंत्र शाश्वत है कि कभी भी ज्ञान को बुद्धि का स्थान न दो। ज्ञान तुम्हें जीविका कमाने में सहायक होता है, जबकि बुद्धि तुम्हारा जीवन बनाने में।

* गुणवान को अपने गुणों के लिए प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं होती। जिस प्रकार कस्तूरी को अपनी उपस्थिति प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

* जिसका शरीर बलवान और हृष्ट-पुष्ट है, परंतु जिसके मन में बुरी वासना, काम, क्रोध, लोभ, द्वेष, बैर, हिंसा, अभिमान, कपट, इर्ष्या, स्वार्थ आदि दुर्गुण और दुष्ट विचार निवास करते हैं, उसकी नीरोगता बहुत जल्द नष्ट हो जाती है।

* दुनिया में जितनी बुराई मौजूद है, उसके समस्त दोष बुरा कर्म करनेवालों की खुशामद में सदैव तत्पर रहते हैं।

* संशय और दुविधा में रहनेवाले व्यक्ति को अंततोगत्वा कुछ भी उपलब्ध नहीं होता और न ही वह सब लोगों को प्रसन्न ही रख सकता है।

* परमात्मा प्रेम स्वरूप है और प्रेम से ही प्राप्त हो सकता है। दिल में नफरत, द्वेष, क्रोध और अहंकार जैसी बुराइयां होने पर परमात्मा को प्राप्त नहीं किया जा सकता।

* आगे बढ़ने के लिए आवश्यक है कि पहले हम स्वयं में विश्वास रखें और फिर ईश्वर में। जिसे स्वयं पर विश्वास नहीं, उसे ईश्वर पर कभी विश्वास नहीं हो सकता।

* असफलताएं कभी-कभी सफलता का आधार होती हैं। यदि हम अनेक बार भी असफल होते हैं, तो कोई बात नहीं। प्रयत्न करके असफल हो जाने की अपेक्षा प्रयत्न न करना अधिक अपमानजनक है।

* असन्तोषी और असन्तुष्ट व्यक्ति के लिए सभी कर्त्तव्य नीरस होते हैं, अत: उसका जीवन असफल होना स्वाभाविक है।

* दीनता-हीनता का प्रदर्शन किसी मनुष्य के समक्ष मत करो, वहां से सिवाय उपहास के कुछ न पाओगे, यदि दीन-हीन बनना है तो ईश्वर के समझ बनो जो सबका दाता है।

* सुबह से शाम तक काम करके आदमी उतना नहीं थकता जितना क्रोध या चिंता के एक घंटे में थक जाता है।

* प्रशंसा की तेज लहरों के बीच से उसे निकाल पाना आसान नहीं, जो आपको भुलावे में नहीं रखता, बल्कि आपके आत्मविश्वास को बढ़ाता है।

✻ कोई बाहरी ताकत मनुष्य को नीचे नहीं गिरा सकती, अपने को नीचे गिरानेवाला मनुष्य खुद ही है।

✻ किसी को भी अपना खुद का व्यक्तित्व छोड़कर किसी दूसरे का व्यक्तित्व नहीं अपनाना चाहिए।

✻ कायरों और संशयशील व्यक्तियों के लिए प्रत्येक वस्तु असंभव है, क्योंकि उन्हें ऐसा ही प्रतीत होता है।

✻ कोषों में विद्या कोष अपूर्ण है, जो व्यय न करने पर घट जाता है, लेकिन व्यय करने पर विशेष विस्तार को प्राप्त होता है।

✻ अपना पेट भरा हो तो भूखे को उपदेश देना बहुत सरल होता है।

✻ भगवान हमारा अस्तित्व इससे नहीं जांचता कि हम किस पद पर हैं अपितु इससे जांचता है कि हम उसको न्यायोचित ठहराने के लिए क्या करते हैं।

✻ परामर्श तो अनेक प्राप्त करते हैं, किंतु उससे लाभ उठाना बुद्धिमानों को ही आता है।

✻ प्रकृति ने हमें आंखें दो ही दी हैं और कान भी दो किन्तु मुंह एक, यह इसलिए कि हम देखें अधिक, सुनें अधिक, किन्तु बोलें कम।

✻ प्रेम सभी से करो, विश्वास कुछ पर करो। बुरा किसी का न करो।

✻ परिश्रम के पश्चात नींद, तूफानी समुद्र के पश्चात बंदरगाह, युद्ध के पश्चात शांति और सुखद जीवन के पश्चात मृत्यु अत्यधिक आनंदप्रद होती है।

✻ निर्धन व्यक्ति धनवान के घर यदि कुछ देने के लिए भी जाएगा तो समझा जाएगा कि वह मांगने गया है। ठीक इसी प्रकार बदनाम नारी की संगत करनेवाला उसे सुधारने का इरादा रखते हुए भी बुरा समझा जाता है।

✻ मुसीबतें टूट पड़ें, हाल बेहाल हो जाए तब भी जो लोग निश्चय से डिगते नहीं और धीरज रखकर चलते हैं, वे ही अपने लक्ष्य तक पहुंचते हैं।

✻ सहयोग के बिना समाज की श्रृंखला टूट जाती है। हर व्यक्ति अवसर पर विनयशीलता से ही काम ले और फिर उसके बाद सब कुछ भूल जाए।

✻ भाग्य के आदेश को मानने की अपेक्षा उत्साहमय कर्मशील जीवन श्रेष्ठ है। भाग्य कर्मों का ही परिणाम है। निर्विरोध आत्म पराजय की अपेक्षा सत्कर्म ही श्रेयस्कर है।

✻ आत्मविश्वास ही भावी उन्नति की प्रथम सीढ़ी है। अत: सर्वप्रथम आत्मविश्वास करना सीखो।

✻ निरर्थक आशा से बंधा मानव अपना हृदय सुखा डालता है और आशा की कड़ी टूटते ही वह झट से विदा हो जाता है।

✻ ईमानदार होने का अर्थ है, सब खुला है, कोई भय नहीं, किसी से कोई अपेक्षा नहीं, इसलिए ईमानदार का चेहरा प्रसन्नता से जगमगाता रहता है।

✻ इस सच्चाई से कोई इन्कार नहीं कर सकता है कि यातायात की पीली बत्ती देखने के पश्चात सिर्फ हरी बत्ती का इंतजार ही रहता है, चाहे आप समय नष्ट करने ही क्यों न जा रहे हों। फंसे रहना हम मंजूर नहीं करते।

✻ साहसी लोग अम्बर और धरती को एक करने का प्रयास करते हैं। ऐसे लोगों के सामने आपका प्रयास कम है।

✻ धैर्य जीवन के लक्ष्य का द्वार खोल देता है, क्योंकि सिवा धैर्य के उस द्वार की ओर कोई कुंजी नहीं है।

✻ बिना आपकी अपनी सहमति के कोई आदमी भी आपको यह सोचने पर मजबूर नहीं कर सकता कि आप उससे घटिया हैं।

* बुद्धिमान लोग बड़ी-बड़ी उपलब्धियों को इस भाव से आत्मसात कर जाते हैं जैसे कि कुछ हुआ ही न हो। लेकिन मूर्ख लोग जरा सा कुछ पा जाने के पश्चात बाजे गाजों के साथ नाचने लगते हैं।

* यदि हम आत्मिक सुख चाहते हैं, तो हमें हंसते-हंसते जीवन गुजारना होगा और इसके लिए आवश्यकता है स्वभाव को अनुकूल बनाने की।

* श्रम का अभ्यास स्वयं को जानने की तीव्र इच्छा, परमात्मा के प्रति समर्पण, स्वयं का स्वयं द्वारा विश्लेषण और सच्चाई से स्वयं के होने की स्वीकृति इन सभी को मिलाकर तैयार होती है जीवन की परम साधना की अलौकिक नींव।

* सरिता के सतत गतिशील प्रवाह को नियंत्रित रखने के लिए दो किनारे आवश्यक होते हैं। इसी प्रकार जीवन को नियंत्रित और मर्यादित रखने के लिए व्रतों और नियमों की आवश्यकता होती है।

* आदमी को चाहिए कि परोपकारी जीवन बिताए, न कि पापी। परोपकार करनेवाले इस दुनिया में भी खुश रहते हैं और दूसरी में भी।

* व्यवहार के परिष्कार का ही दूसरा नाम अध्यात्म है। जबकि धर्म इन दोनों के बीच की जरूरी कड़ी है।

* मेघ वर्षा करते समय उपजाऊ और बंजर भूमि में भेद नहीं करते। इसी प्रकार अपने सुंदर हृदय के विचार धर्मी और अधर्मी दोनों पर व्यक्त करने चाहिए।

* दूसरों के अप्रिय वचनों के बदले में मृदुल वचन कहनेवाला व्यक्ति उत्तम है।

* मनुष्य को इस बात की बड़ी सावधानी रखनी चाहिए कि वह इतना अधिक बुद्धिमान न हो जाए कि हंसने जैसी महान खुशी से अलग रहने लगे।

* प्रसन्नता आपका अनमोल खजाना है। छोटी-छोटी बातों पर उसे लुटने मत दीजिए।

* दूसरे का आचरण चाहे तुम्हें पसंद न हो, लेकिन तुम्हें अपना सदाचरण नहीं छोड़ना चाहिए।

* जिनके हृदय में सदैव परोपकार की भावना रहती है, उनकी आपदाएं समाप्त हो जाती हैं और पग-पग पर धन की प्राप्ति होती है।

* जो मनुष्य जगत की जितनी भलाई करेगा, उसको ईश्वर की व्यवस्था से उतना ही सुख प्राप्त होगा।

* आप जिस पर दया करते हैं, उसके मन में आपका नाम अमिट अक्षरों में लिखा जाता है।

* संगति को चरित्र से जोड़ा जाता है क्योंकि किसी भी व्यक्ति का चरित्र इतना सबल नहीं होता कि वह आस-पास की स्थितियों से प्रभावहीन रहे।

* यदि हमारी इच्छाओं का पवित्र ध्येय सदा परमात्मा होता, तो हम उतने दुखी न होते। परन्तु प्राय: कोई न कोई आसक्ति भीतर बनी ही रहती है या बाहर से कुछ ऐसी घटना हो जाती है जो हमें अपनी ओर आकर्षित करती है।

* अपना आदर करनेवालों के सामने अपना अपमान कई गुणा असह्य हो जाता है।

* दूसरों के अनुभवों के खजाने से सेंधमारी करनेवाला शख्स बुद्धिमान है।

* जो मनुष्य अपने क्रोध को अपने ऊपर झेल लेता है, वही दूसरों के क्रोध से बच सकता है और अपने जीवन को सुखी बना सकता है।

* एक बार धोखा खाया हुआ मनुष्य सत्य में भी विनाश का संदेह करने लगता है। सांप का काटा रस्सी से भी डरने लगता है।

✻ दुनिया भर का ज्ञान प्राप्त करने से पण्डित तो बना जा सकता है, लेकिन ज्ञानी बनने के लिए अनुभूति जरूरी है।

✻ मितव्ययता का रहस्य यह है कि वेतन मिलने के पश्चात कुछ दिन इतनी सस्ती जिंदगी गुजारो जितनी आपने वेतन मिलने से पहले कुछ दिन गुजारी थी।

✻ सत्य यह है कि जब तक मन में कामना शेष है ईश्वर प्राप्ति संभव नहीं है। धर्म की गति सूक्ष्म है। यदि हमें सूई में धागा डालना है तो यह तब तक संभव नहीं होगा जब तक कि धागा एक रूप न हो।

✻ विद्या तो मनुष्य की अतुल कीर्ति है। भाग्य का नाश होने पर यह मनुष्य का आश्रय है तब यह कामधेनु के समान है, विरह में रति के समान है। यह मनुष्य का तृतीय नेत्र है यह सत्कार का घर है, कुल की महिमा है और रत्नों के बिना ही आभूषण है। अत: अन्य सब विषयों की उपेक्षा करके विद्या प्राप्त करनी चाहिए।

✻ अपने पापों पर परदा डालना, अपने भविष्य पर परदा डालना है।

✻ महापुरुषों के गुण इस प्रकार हैं, विपत्ति के समय धैर्य रखते हैं, उन्नति के समय क्षमाशील रहते हैं, सभा में बोलते हुए विद्वान लगते हैं, युद्ध के समय पराक्रमी लगते हैं, यश के प्रति अभिरुचि रखते हैं और शास्त्रों के अध्ययन का उन्हें बड़ा चस्का होता है।

✻ सज्जन को उसकी गलती बताइए वह उसे सुधार कर गुण में बदल देगा। दुष्ट को उसकी गलती बताइए वह अपनी गलती को दुगुना कर लेगा और खुद आपको गलत साबित कर देगा।

✻ संकोच के सागर में विवेक की बड़ी नाव बनाकर उसमें अपने वचन रूपी राहगीर को जो बुद्धि समान केवट के बल से पार करना जानते हैं, वही विवेकवान हैं।

✻ विष के एक घड़े से समुद्र को दूषित नहीं किया जा सकता क्योंकि समुद्र की विशालता असीम है। इसी तरह महापुरुष को किसी की निंदा, दूषित नहीं कर सकती।

✻ पंखों के बिना उड़ा नहीं जा सकता। नाव के बिना पार नहीं उतर सकते। शील के बिना कभी भी निर्वाण प्राप्त नहीं किया जा सकता।

✻ दूसरों के दोष बिखरा-बिखरा कर दिखाए जाते हैं और अपने दोष किसी अनमोल रत्न की तरह से छिपाए जाते हैं।

✻ जो छिछला होता है, वह शब्द करता है, पर जो गंभीर होता है, वह धीमा रहता है। मूढ़ व्यक्ति अधजल गगरी के समान है, परंतु सुविज्ञ व्यक्ति समुद्र के समान शांत होता है।

✻ अपना कमाया धन खाना उत्तम, पिता का कमाया धन खाना मध्यम, भाई का कमाया धन खाना अधम और स्त्री का कमाया धन खाना अधम से भी अधम।

✻ मन में यदि संदेह के सर्प ने घर कर लिया है तो उसे सर्प से अधिक बेदर्दी से कुचल दो। क्योंकि सांप से ज्यादा खतरनाक संदेह है। सांप शायद आपके जीवन को छोड़ दे, संदेह ने तो आपके जीवन को समाप्त ही करना है।

✻ सत्ता जिसके हाथ में आती है, वही मदांध होकर बेईमान, दुश्चरित्र और बदनीयत हो जाता है।

✻ जब तक किसी मनुष्य के मन में यह विश्वास न हो जाए कि वह जिस वस्तु के लिए प्रयत्न कर रहा है, उसे प्राप्त भी करता जा रहा है, तब तक उसे सफलता नहीं मिल सकती। जब तक उसे अपनी सफलता पर पूर्ण भरोसा न हो जाए, वह कभी सफल नहीं हो सकता। आप उस काम को ठीक प्रकार से कर ही नहीं सकते, जिसकी सफलता में आपको पूर्ण विश्वास न हो।

* अपनी उन्नति चाहनेवाले पुरुषों को वही वस्तु खानी चाहिए, जो खाने योग्य हो तथा खायी जा सके, खाने पर पच सके और पच जाने पर हितकारी हो।

* जिन्हें बाल्यकाल से ही मन को वश में करने की आदत पड़ जाती है, वे अपने जीवन को खेद, दु:ख, कठिनाई और असफलता से बचाने में समर्थ हो जाते हैं। वे उन कटु अनुभवों से बचने में भी समर्थ हो जाते हैं, जिनके कारण जीवन अंधकारमय हो जाता है।

* जैसे जल के बिना नाव करोड़ यत्न करने पर नहीं बह सकती, इसी प्रकार सहज संतोष बिना शांति कभी नहीं मिलती।

* यदि धनवानों में न्याय और निर्धनों में सन्तोष होता तो संसार से भीख मांगने की प्रथा उठ गई होती।

* आप अपाहिज नहीं हो जो दूसरों का आसरा ढूंढ़ते हो।

* कीड़ों को रौंदने और शहंशाह के आगे गिड़गिड़ाने से घृणा करो।

* चिन्तन और चिन्ता में वही अन्तर होता है जो एक आत्मविश्वास भरे स्वस्थ व्यक्ति और रोगी व्यक्ति में होता है।

* सच्ची प्रशंसा आलोचक द्वारा की जाती है, क्योंकि जहां वह अपनी उंगली नहीं रख पाता मानो वह उन-उन स्थानों द्वारा तुम्हारी मूक प्रशंसा करता है।

* चालाकी पर किस प्रकार काबू पाया जाए। इसकी जानकारी कर लेना ही एक बहुत बड़ी चालाकी है।

* कामकाज की कल्पनाओं से केवल लाभ होता है, परन्तु उतावली करनेवाले को केवल हानि होती है।

* एक व्यक्ति मर जाता है, उसका धन लेकर दूसरा बहुत प्रमुदित होता है। तब वह नहीं जानता कि उसकी मृत्यु पर वह धन दूसरे के कोष में जानेवाला है। इस विषम मोह-अंधकार की रचना करनेवाली वासना को धिक्कार है।

* भाषा की उन्नति से सभ्यता की उन्नति स्वत: होती है।

* बाल काटने से मुर्दे हल्के नहीं हो जाते। वैसे ही चंदन का तिलक करने से मूर्ख पण्डित नहीं बन जाता। वरना प्रत्येक गधे का मालिक घुड़सवार बन जाता।

* फिजूलखर्ची गरीबों के लिए विलास की सामग्री है जबकि मितव्ययता मालदारों के लिए।

* प्रसिद्धि के साथ एक अभिशाप यह है कि इसके सफेद वस्त्र पर बदनामी का एक धब्बा भी बेहद काला होकर नजर आता है।

* परिवर्तन आवश्यकता है और हमें अपने अहम को दूर रखकर उसके अनुसार बदल जाना चाहिए।

* पुरुष जब किसी सुंदरी के अधीन हो जाता है तो वह स्त्री से भी नीचे गिर जाता है।

* प्रेम के साथ यदि वासना का कोयला जलने लगे तो उसे शांत करना चाहिए, नहीं तो वह दोनों हृदयों को जला देगा।

* प्रतिभा अग्नि में भी नष्ट नहीं होती। प्रतिभावान का एक लक्षण जिससे वह पहचाना जाता है, यह है कि वह पुरानी मान्यताओं को हिलाकर रख देता है।

* नए मित्र अवश्य बनाओ लेकिन पुरानों को बरकरार रहने दो चूंकि नए मित्र चांदी हैं और पुराने मित्र सोना हैं।

* कोई कार्य महत्वपूर्ण नहीं होता, महत्वपूर्ण होता है कार्य का उद्देश्य। महान ध्येय के प्रयत्न में ही आनन्द और खुशी है और एक हद तक प्राप्ति की मात्रा भी।

* वह अवसर नहीं जो कई बार आए, अवसर वह है जो एकाध बार आए। बुराई के अवसर हजार होते हैं, जबकि भलाई

के एकाध ही होते हैं जिन्हें चूकना नहीं चाहिए।

❋ मानवता एवं स्वतंत्रता के शोषण के लिए पुजारियों ने भगवान का आविष्कार किया। ईश्वर से तात्पर्य प्रेम, करुणा, सेवा, सत्य एवं चिंतन है। मनुष्य के द्वारा ईश्वर की उपासना निपट मूर्खता है। जब वह कर्म से ईश्वर की सेवा करने में पूर्ण सक्षम है।

❋ आप यदि ज्ञान के प्रकाश का दीपक बुझा देंगे, तो व्यावहारिक जिंदगी में एक कदम भी आत्मविश्वास से नहीं चल सकेंगे।

❋ जो विषयों की आशा करते हैं, वे तो दास हैं। जिन्होंने भगवान में विश्वास करके आशा को जीत लिया, वही भगवान के सच्चे सेवक हैं।

❋ उस तुच्छ व्यक्ति का चित्त कभी शान्त नहीं हो सकता, जिसने पैसे की खातिर अपना ईमान बेच दिया।

❋ साहस जाने के साथ मनुष्य की आधी समझदारी भी चली जाती है।

❋ धैर्य हो तो दरिद्रता भी शोभा देती है। धुले हुए हों तो फटे वस्त्र भी अच्छे लगते हैं। घटिया भोजन भी गरम होने से स्वादिष्ट होता है और सुन्दर स्वभाव के कारण कुरूपता भी शोभा पाती है।

❋ जैसे खारे जल से भरे महासागर का खारापन दो बूंद मीठे जल से दूर नहीं किया जा सकता, वैसे ही स्वभाव से दुर्जन व्यक्ति की गहरी दुष्टता को दो-चार मीठे उपदेशों से सज्जनता में नहीं बदला जा सकता।

❋ अचानक प्राप्त होनेवाला धन घर में टिकता नहीं, पर अपने परिश्रम से थोड़ा-थोड़ा एकत्र करनेवाला मनुष्य उसको और बढ़ाता है।

❋ शायद उन विचारों की अनुभूति कर लेने का नाम शिक्षा है, जो जीवन निर्माण, मनुष्य निर्माण तथा चरित्र निर्माण में सहायक हो।

❋ सांप के काटने से तो अक्सर लोग मर जाते हैं। कई बार तो तब लोगों को मरते देखा है जबकि सर्प विषैला नहीं होता। लेकिन कुछ लोग विषैले सांपों को पकड़ते हैं और उनका प्रदर्शन कर धन कमाते हैं। इस श्रेणी के लोगों को व्यवहारकुशल कहा जा सकता है।

❋ इच्छाएं कभी तृप्त नहीं होतीं। अत: उनको नियंत्रित रखो।

❋ मनुष्य पर उसके विचार इतने हावी होते हैं कि जैसा वह सोचता है वैसा ही बनता चला जाता है।

❋ प्रत्येक स्थान और समय बोलने के योग्य नहीं। कभी-कभी मौन वाणी से ज्यादा प्रभावी सिद्ध होता है।

❋ झुके हुए वृक्षों से नसीहत मिलती है कि गुणों से संपन्न को विनम्र होना चाहिए।

❋ मरना अच्छा है या जीना, यह हम नहीं जानते इसलिए प्रसन्नता से जीयो और मरने से भय न रखो।

❋ मनुष्य का आचरण ही बताता है कि वह कुलीन है अथवा अकुलीन, शूरवीर है अथवा भीरु, पवित्र है या फिर अपवित्र।

❋ आदमी को चाहिए कि बुराई के बजाय भलाई का रास्ता अपनाएं। भलाई करनेवाले लोग लोक व परलोक दोनों में ही सुख से रहते हैं।

❋ वास्तव में वे ही लोग श्रेष्ठ हैं जिनके हृदय में दया और धर्म बसता है। जो अमृतवाणी बोलते हैं तथा जिनके नेत्र नम्रता से झुके रहते हैं।

❋ चरित्र वृक्ष के समान होता है और यश उसकी छाया के समान। अत: हम किसी विषय में जो सोचते हैं, वह तो छाया है, वास्तविक वस्तु तो वृक्ष है।

* प्रारंभ में ही अपनी इच्छा को रोक लो और बुरी आदतों को छोड़ दो, अन्यथा धीरे-धीरे ये तुम्हें बहुत बड़ी हानि उठानी पड़ेगी।

* प्रभु के विश्वासी को सर्वदा सुकाल है, दुर्भाग्यशाली के लिए अकाल ही अकाल है।

* कोई भी व्यक्ति अनेक और बड़ी गलतियां किए बिना महान नहीं बनता।

* किसी के प्रति मन में क्रोध को दबाए रखने से अच्छा है कि उसे सरल शब्दों में तुरंत व्यक्त कर दिया जाए। इससे क्रोध की अग्नि शांत हो जाती है।

* मनुष्य के दिल और दिमाग पर भय जितना प्रभाव डालता है, उतना प्रभाव कोई अन्य शक्ति नहीं।

* युवकों को यह शिक्षा मिलना बहुत जरूरी है कि अपने सामने सर्वोत्तम आदर्श रखें।

* सच्चे विद्वान की दृष्टि में सभी सांसारिक वस्तुएं समान रहती हैं। पत्थर, कोयला, रेत, लोहा और सोना इन सभी चीजों को वह तिनके के तुल्य देखता है।

* दूसरों में त्रुटियां ढूंढ़ने की खतरनाक आदत रखनेवाला शख्स अपने दिल की प्रसन्नता को वैसे ही नष्ट कर देता है, जैसे फूल पर बैठा कीड़ा उसकी पंखुड़ियों को चबाकर करता है।

* जब मनुष्य अपने आप से घृणा करने लगता है, समझ लो उसका अंत आ गया है।

* अभिमान से मनुष्य परमात्मा और जनता से दूर हो जाता है और नम्रता से निकटतम।

* असफल होने पर केवल निराशा हो सकती है, पर प्रयास न करने पर तो सभी कुछ अंधकारमय है।

* संयम छोड़ देनेवाले स्त्री-पुरुष उस नाव के सवार हैं जिसमें नाविक नहीं है। ऐसे स्त्री-पुरुष व नाव पहली ही चट्टान से टकराकर चूर-चूर हो जाएंगे।

* असंतोष अपने ऊपर अविश्वास का फल है यह कमजोर इच्छा का रूप है।

* वह व्यक्ति अपनी पीठ पर वजन का गट्ठर बांध कर सोता है जो बिस्तर पर चिंताओं के साथ जाता है।

* जैसे चांदी की परख कुठाली पर और सोने की परख भट्टी में होती है, वैसे ही मनुष्य की परख लोगों के द्वारा की गई प्रशंसा से होती है।

* जिस हालत में हो ईश्वर को धन्यवाद करो। संसार में इससे भी अधिक कष्ट हैं।

* जो खाने पहनने को देता है, वह यदि दो-एक कड़वी बात कह भी दे, तो उसे भी खाने पहनने में समझना चाहिए।

* कुछ जीवों से सदा सावधान रहना चाहिए जैसे धनवान आदमी, कुत्ता, सांड और शराबी।

* किसी को अपने दु:खों के विषयों में न बताएं, क्योंकि दु:ख सुनने को लोग तैयार नहीं।

* एक छेद जहाज को डुबो देता है तथा एक पाप पापी को नष्ट कर देता है।

* उपदेश देते समय लोग शिष्टता का दिखावा करते हैं, लेकिन कार्य साधने के लिए वे अशिष्टता से परहेज नहीं करते।

* इस संसार में कई शास्त्र हैं, कई विधाएं हैं किंतु उनके लिए जीवन थोड़ा है, बाधाएं भी अनेक हैं। इस वजह से हमें वही ग्रहण करना चाहिए जो ग्रहण करने योग्य है। दूध और पानी में हंस दूध पी लेता है पानी छोड़ देता है।

* मानव की आवश्यकताएं पूर्ण होती हैं, परंतु इच्छाएं नहीं। यही ईश्वर का नियम है।

* मन की शांति का मूल्य जीवन में बहुत है, संपत्ति एवं स्वास्थ्य से भी अधिक।

* भूखा होने पर भी शेर घास नहीं खाता। विपदा में आया विद्वान भीख नहीं मांगता।

* प्रथम बार का विवाह आपका पावन कर्त्तव्य, दूसरी बार का विवाह आपकी मूर्खता और तीसरी बार का विवाह आपको पागल कहने के लिए काफी है।

* पत्नी से ज्यादा पति के चरित्र का ज्ञान किसी अन्य को नहीं होता।

* निर्णय दृढ़ और अटल हो तो संसार को भी अपने सांचे में ढाला जा सकता है।

* दुष्ट को, मूर्ख को और बहके हुए को समझा पाना बहुत कठिन है।

* दुष्टों की मित्रता दोपहर से पहले की छाया के समान होती है, आरंभ में बड़ी बाद में घटती हुई। सज्जनों की मित्रता दोपहर बाद की छाया के समान पहले छोटी और बाद में बढ़ती रहनेवाली।

* दूसरों के लिए जो कार्य कठिन है, उसे करना कुशलता है। औरों के लिए जो काम असंभव हो उसे करना प्रतिभा है।

* दोष चाहे सत्य ही हो, उसे दोषी पर व्यक्त करने से वैसी ही तकरार होगी, जैसे अंधे को अंधा कहने से होती है।

* ठीक समय पर किया हुआ थोड़ा सा उपकार भी बहुत बड़ा होता है और समय बीतने पर किया हुआ महान उपकार भी व्यर्थ हो जाता है।

* ठुकराया गया शख्स बन जाएगा या मिट जाएगा। लाड़ लड़ाया हुआ बिगड़ जाएगा या बिगाड़ा कर देगा।

* ठोकर खाकर जो न संभले उसे नसीहत करने से कोई फायदा नहीं।

* जो काम आप नहीं करना चाहते, उसके लिए दूसरे को प्रेरित करने का अधिकार आपको नहीं।

* अपने लक्ष्य से भटको मत। यही सफलता का रहस्य है। अर्जुन बनो, केवल लक्ष्य को देखो।

* ईश्वर प्रत्येक मनुष्य को जीवन में ऐसा एक सुअवसर अवश्य देता है, जिसका लाभ उठाकर वह धन, वैभव और सम्मान के साथ अपना जीवन व्यतीत कर सकता है।

* कर्म के बिना सुख नहीं मिलता, पर कर्म सदैव सुख नहीं लाते कुछ कर्म असफल भी हो जाते हैं।

* मनुष्य को जीवन में सफल होना है तो उसे प्रत्येक अवसर के लिए तैयार रहना चाहिए।

* बिना विश्वास और आस्था के कार्य करना ऐसे गड्ढे में पहुंचने का प्रयास है जिसका कोई तला ही नहीं।

* आप ज्ञान को अमूल्य मानो, ज्ञान कर्म से प्राप्त होगा, अन्यथा जीवन में सदैव भटकाव रहेगा। भक्ति और सेवा से ज्ञान की प्राप्ति संभव है।

* पुरातन धर्म कहता है, जो ईश्वर में विश्वास न रखे वह नास्तिक है। नास्तिक वह है जो स्वयं पर विश्वास न करे।

* जो आत्मा से ही परिचित नहीं, उसमें आत्मविश्वास कैसे हो सकता है?

* आशा मनुष्य के लिए अमृत के समान है। जिस प्रकार पेड़-पौधों को सूरज से जीवन मिलता है, उसी प्रकार आशा से मनुष्य में नए उत्साह का संचार होता है।

* मनुष्य को तपस्या द्वारा रूप, सौभाग्य और मनोवांछित रत्न प्राप्त होते हैं। भाग्य के भरोसे रहनेवाले को निराशा ही मिलती है।

* जो वाणी से ईमानदार नहीं, वह सब कामों में बेईमान हो सकता है।

* साहस सहन करने में है, बदला लेने में नहीं।

❋ कोई भी कार्य कठिन नहीं है जिसे धैर्यवान एवं मनोबलयुक्त मनुष्य संपन्न नहीं कर सकता।

❋ जिसका जो स्वभाव है, उसे छुड़ाना कठिन है। यदि कुत्ता राजा बना दिया जाए, तो क्या वह जूता नहीं चबाएगा?

❋ जो श्रम नहीं कर सकता, वह नहीं जान पाता कि विश्राम का क्या अर्थ है और न ही उसे आराम मिलता है।

❋ करुणामय हृदय ईश्वर का मंदिर है। अपना जीवन गुलाब की तरह बनाओ जो सुगंध की भाषा में शांतिपूर्वक वार्तालाप करता है।

❋ जो मनुष्य जिसके साथ जैसा व्यवहार करे, उसके साथ भी वैसा ही व्यवहार करना चाहिए, यह धर्म है। कपटपूर्ण आचरण करनेवाले को वैसे ही आचरण द्वारा दबाना उचित है और सदाचारी को सद्व्यवहार के द्वारा ही अपनाना चाहिए।

❋ विचारों को सजाकर मधुर ढंग से व्यक्त करनेवाला प्राप्त हो तो संसार शीघ्र उसके आदेशों को सुनेगा।

❋ सच बोलने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि आपको याद नहीं रखना पड़ता कि आपने कल, किससे क्या कहा था।

❋ मधुर वचनों के होते हुए उन्हें छोड़ कर कटु वचन का प्रयोग करना, पके फलों के होते हुए कच्चे फल खाने के समान है।

❋ गाली से प्रतिष्ठा नहीं बढ़ती दोनों ओर अपमान है। इस दुनिया में सबसे ज्यादा कमजोर चीज, कठोर बात है।

❋ विनय समस्त गुणों की आधारशिला है।

❋ निश्छल मुस्कान से आप अपनों को जहां प्रसन्न करते हैं, वहीं शत्रु उससे पूरी तरह कांप उठता है। कर्ण ने तभी तो कहा था कि वह मृत्यु से भयभीत नहीं होता, लेकिन कृष्ण की मुस्कान उसके समूचे अस्तित्व को हिला जाती है।

❋ सच्चा सुख पाना चाहते हो तो स्वार्थ का नाश कीजिए। उसके जीवित रहते आप सुखी नहीं बन सकते।

❋ सदाचार के लिए कोई राजपथ या तैयार मार्ग नहीं है।

❋ जिसमें उपकार वृत्ति नहीं, वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं।

❋ यदि शत्रु से सुलह करना चाहते हैं, तो बुराई का जवाब भी भलाई से दें।

❋ अगर तुम किसी की भलाई करते हो तो इहलोक और परलोक में तुम्हारी भलाई होती है। बुराई करते ही तो तुम्हारा दोनों जगह नाश होता है।

❋ किस पर दया की जाए और किसके साथ निर्दयी हुआ जाए? चींटी और हाथी सभी साई के जीव हैं।

❋ हम छाया के विषय में अधिक सोचते हैं, वृक्ष के विषय में नहीं। लेकिन चरित्र एक वृक्ष है और यश उसकी छाया।

❋ वास्तव में विद्वान वह है जो अपनी इच्छा को त्यागकर परमात्मा की इच्छा से कार्य करता है।

❋ अग्नि से सोना परखा जाता है और विपत्ति में वीर पुरुष।

❋ अच्छी स्त्री से विवाह, जीवन के तूफान में बंदरगाह और खराब स्त्री से विवाह, बंदरगाह में तूफान है।

❋ सही चीज के पीछे वक्त देना हमको खटकता है। निकम्मी के पीछे सवार होते हैं और खुश होते हैं।

❋ अपना कार्य सिद्ध होने तक ही कार्यार्थी व्यक्ति का सम्मान करता है। नदी के दूसरे किनारे पहुंचने पर नौका का कोई प्रयोजन नहीं होता।

❋ बुद्धि की शुद्धि के लिए भगवान की भक्ति से बढ़कर कोई भी साधन आज तक अनुभव में नहीं आया।

❋ क्रोध वह होता है जो पश्चात्ताप पर समाप्त होता है, लेकिन जिसका आरंभ मूर्खता से होता है।

❋ वह व्यक्ति जो भय या शंका से प्रभावित होता है, वही भय उसके नाश का कारण बन जाता है।

✻ वह सर्वश्रेष्ठ मूर्ख है जो संसार को सुखसागर मानता है।

✻ गाली एक तरह की अप्रत्यक्ष श्रद्धांजलि है।

✻ अज्ञान किसी भी जनतांत्रिक सरकार को, पशुओं द्वारा चुनी हुई, पशुओं के लिए, पशुओं की सरकार बना देती है।

✻ दोष यदि शारीरिक हो तो धन और साधन द्वारा समाप्त हो जाते हैं, लेकिन मानसिक दोष ज्ञान, विज्ञान, धैर्य, स्मृति, गुरु व समाधि से ही शांत हो सकते हैं।

✻ दूसरों के दोषों के समान स्वयं के दोषों से घृणा की जाने लगे तो इस संसार में दोषों का रहना दूभर हो जाएगा।

✻ अहंकारपूर्ण जीवन को छोड़ देना ही त्याग है और वही सौन्दर्य है।

✻ आपके लिए धर्मपुस्तक, देवालय और प्रार्थना की कोई आवश्यकता नहीं, यदि आपने अहंकार त्याग दिया है।

✻ यदि आप सफलता प्राप्त करने के लिए अपनी भावनाओं और इच्छाशक्तियों को प्रबल बनाना चाहते हैं, तो इन व्याधियों को अपने पास भी न फटकने दें- क्रोध, चिड़चिड़ापन, ईर्ष्या, निराशा, मानसिक खिन्नता और चिन्ता।

✻ संतोष का बांध जब टूटता है तो अपरिमित इच्छाओं के बहाव में इंसान अपने गुणों को भी बहा देता है।

✻ चिंता का क्या लाभ? चिंता तो कभी भी उचित नहीं। अत: अपने कष्टों को अपने पुराने झोले में अंदर करो और मुस्कराओ, सिर्फ मुस्कराओ।

✻ प्रशंसा एक ऐसा जाल है, जिसमें तेज रफ्तार परिंदा खुद आकर फंस जाता है।

✻ जिन घरों में असम्मानित व दु:खी स्त्रियां शाप देती हैं, वह घर शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। इसलिए जो मनुष्य समृद्धि चाहते हैं, उन्हें आभूषण, वस्त्र, भोजनादि से उनका सत्कार करना उचित है।

✻ जैसे पिता अपने प्रिय पुत्र को भी ताड़ना देता है, वैसे ही प्रभु उस मनुष्य को ताड़ना देता है, जिससे वह प्रेम करता है।

✻ जो सीखता तो है मगर अपनी विद्या का उपयोग नहीं करता वह किताबों से लदा लद्दू जानवर है।

✻ जो आदमी यह समझता है कि हर बात तुरंत उसकी समझ में आ जाती है, वह कुछ भी नहीं सीख पाता।

✻ जिसने अपनापन खोया, उसने सब कुछ खोया।

✻ गुण से रूप की, सदाचार से कुल की, सफलता से विद्या की और भोग से धन की शोभा होती है।

✻ कायर ने अगर धमकी दी है, तो समझ लो कि उस वक्त वह सुरक्षित है।

✻ काहिली और झिझक मूर्ख के लक्षण है।

✻ कुत्ते भौंकते हैं, उन्हें भौंकने दो- हाथी यह सीख देता है।

✻ कतरा दरिया में मिल जाए तो दरिया हो जाए। काम वह अच्छा है जिसका कि अन्त अच्छा है।

✻ किसी की सिफारिश से स्वर्ग जाना भी नरक जाने के बराबर है।

✻ कोई भी व्यक्ति दो मालिकों की सेवा एक साथ नहीं कर सकता।

✻ एक मां घर को सुख का बाग भी बना सकती है और बीहड़ जंगल भी। घर वही है जिसमें सब मिल जुलकर रहें।

✻ एक साथ ही लक्ष्मी और विवेक का वरदान प्राय: मनुष्यों को कम ही मिलता है।

✻ एक शेर को भी मक्खियों से अपनी रक्षा करनी पड़ती है।

✻ ऊन तो भेड़ें देंगी, तुम उन भेड़ों को टाट के वस्त्र तो दो, ताकि शीत से उनका बचाव भी हो।

❋ धन, साधन, समय, कर्म तथा स्नान इनका स्पष्ट विचार करके किसी कार्य में प्रवृत्त होना चाहिए।

❋ महान ध्येय महान मस्तिष्क का जनक है।

❋ अपने विरोधी के साथ सम्मानपूर्वक समझौता होने का अवसर न खोना और उसे अपने विचारों में ले आना भी सत्याग्रह का ही एक रूप है।

❋ धन्य है वह पुरुष जो कार्य करने से कभी पीछे नहीं हटता। भाग्य लक्ष्मी उसके घर की राह पूछती हुई आती है।

❋ बहुधा ऐसा एक ही बार होता है कि अवसर दो बार आपका द्वार खटखटाए।

❋ मनुष्य जब असाधारण कार्य कर दिखाता है, वह यश का कारण बन जाता है।

❋ आत्मविश्वास समान दूसरा मित्र नहीं। आत्मविश्वास ही भावी उन्नति का मूल आधार है।

❋ आशा परम दुख है, नैराश्य परम सुख है। परवश दुखी और स्ववश सुखी है।

❋ जो कहता है- ईमानदारी नामक कोई वस्तु नहीं है, वह स्वयं धूर्त है।

❋ उत्साह सफलता को निमंत्रण देता है।

❋ धैर्यवान पुरुष कार्य आरंभ करने के बाद असफल होकर नहीं लौटते।

❋ स्वभाव कच्ची मिट्टी की भांति होता है जिसकी कोई शक्ल नहीं होती। इसे आकृति देने की आवश्यकता होती है।

❋ जैसे बीज खेत में बोए बिना निष्फल रहता है, उसी प्रकार पुरुषार्थ के बिना भाग्य सिद्ध नहीं होता।

❋ सदा अपने मन को हर्षमय एवं उल्लासमय बनाएं तो आप हजारों हानियों एवं परेशानियों से बच जाएंगे और लंबा जीवन पाएंगे।

❋ असली शिक्षा अपने अंदर की सबसे अच्छी बातों को बाहर निकालना है। मनुष्यता से बढ़कर कोई अच्छी बात नहीं।

❋ सदा सांत्वनापूर्ण मधुर वचन ही बोलें, कभी कठोर वचन नहीं बोलें। पूजनीय पुरुषों का सत्कार करें। दूसरों को दान दें किंतु स्वयं कभी किसी से कुछ न मांगें।

❋ सदाचार धर्म उत्पन्न करता है और धर्म से आयु बढ़ती है।

❋ मित्र का हृदय मजाक में भी नहीं दुखाना चाहिए।

❋ मिलने पर मित्र का सम्मान करो, पीठ पीठे प्रशंसा करो, विपत्ति के समय सहयोग करो।

❋ आपका व्यवहार कसौटी है इस बात की कि आप असल में क्या हैं।

❋ जो कार्य बल और पराक्रम से पूर्ण नहीं हो पाता, उपाय द्वारा वह सरलता से पूर्ण हो जाता है।

❋ यदि पाशविक विचार समाप्त हो जाएं तो दैवी विचार प्रवाहित होने लगते हैं।

❋ जो अपने मुख और जिह्वा पर संयम रखता है, वह अपनी आत्मा को संतापों से बचाता है।

❋ अगर झूठ बोलने से किसी की जान बचती है तो झूठ बोलना पाप नहीं।

❋ आत्मसम्मान की भावना ही नम्रता की औषधि है।

❋ जो बड़ों की सेवा नहीं करते, वे जीवन में सुखी नहीं रहते।

❋ प्रसन्नचित्त व्यक्ति कभी अपने कर्म में असफल नहीं होता।

❋ सदाचार कल्याण उत्पन्न करनेवाला और कीर्ति बढ़ानेवाला होता है। सदाचार से आयु बढ़ती है और सदाचार ही बुरे

लक्षणों को नष्ट करता है।

❋ आपके भीतर सुगंध बढ़ती जाएगी, जैसे-जैसे आप सुख और आनंद के इत्र दूसरों पर छिड़कते जाएंगे।

❋ जो दूसरों की बुराई करते हैं, वे खुद निंदित होते हैं।

❋ अपने विनाश की ओर जानेवाले शत्रु को भी सज्जन सावधान करने की दयालुता का पालन करते हैं।

❋ शिक्षक का चरित्र इतना आदर्शमय और बुलंद होना चाहिए कि उसे देखकर ही शिक्षार्थी के मन में श्रद्धा के अंकुर उपज जाएं।

❋ इच्छा मानव ज्ञान की सहज स्फुरणा है, वह वासना के रूप में परिवर्तित न हो जाए, क्योंकि तब वह दुख ही देगी।

❋ किसी भी कार्य को करने में जितनी जल्दी करोगे उतनी ही देर लगेगी।

❋ अगर आप अपने रहस्यों को अपने तक नहीं रख सकते, तो अपने मित्रों से यह आशा मत रखो कि वह उसे गुप्त रखेंगे।

❋ दूसरों के अनुभव से लाभ उठानेवाला ही बुद्धिमान है।

❋ क्रोध में व्यक्ति सच्चाई नहीं कहता, वह तब सिर्फ दूसरे का दिल दुखाना चाहता है।

❋ साहस से बढ़कर जिज्ञासा ही भय पर विजय पाने में समर्थ है।

❋ कला चित्त को क्षुद्र वासनाओं से विरक्त करने का बड़ा साधन है।

❋ अज्ञान प्रभु का श्राप है। ज्ञान वह पंख है, जिससे हम स्वर्ग में उड़ते हैं।

❋ जो स्वयं के अवगुण व दूसरों के गुण देखकर इस जगत में व्यवहार करता है, महानता उसका अनुसरण करती है।

❋ मित्र से पीछा छुड़ाना है, उसे उधार दे दो।

❋ कुदरत को कमजोरी से घृणा है, कमजोर से नहीं।

❋ अहंकार सोने का हार भी मिट्टी बना देता है।

❋ असफलता की अवस्था तभी अनुभव होती है, जब व्यक्ति के अतीत में गर्व करने योग्य कुछ न हो और भविष्य के लिए भी कोई आशा न बची हो।

❋ जो दरिद्र होकर भी संतुष्ट है, वह धनी है और पर्याप्त धनी है।

❋ अपनी ताकत का भरोसा रखो, उधार की ताकत घातक होती है।

❋वह व्यक्ति बेवकूफ मानने लायक है जो किसी हानि या नुकसान के बाद उस पर चिंता कर अपना समय गंवाता है, इसलिए जो हो गया, उसे भूल जाओ।

❋ दूसरे की प्रशंसा करना बहुत कम लोग जानते हैं, इसलिए जब भी कोई आपकी प्रशंसा करे, तो यह जानने की कोशिश करें कि सामनेवाला आपसे आखिर चाहता क्या है।

❋ जब मैं और तू मेरे बीच न रह जाएंगे, उस समय मंदिर, मस्जिद और गिरजा सब आपके लिए समान हो जाएंगे।

❋ कन्यादान न करनेवाले का जन्म व्यर्थ चला जाता है।

❋ काबू किया जा सकता है क्रोध को प्रेम से, बुराई को भलाई से, लोभ को उदारता से और असत्य को सत्य से।

❋ कुशल व्यक्ति छोटे-बड़े शास्त्रों के सार सब प्रकार वैसे ही ग्रहण करते हैं जैसे भौरा फूलों से रस ग्रहण करता है।

❋ एक दूसरे को इस प्रकार प्रेम करो जैसे एक गाय अपने बछड़े को करती है।

❋ उन्नति करने के लिए स्वयं को उपदेश देते रहिए।

❋ उपदेश यदि नीच के मुख से भी प्राप्त हो तो उसे ग्रहण करें। यह आवश्यक नहीं कि उपदेश देनेवाले स्वयं उन पर आचरण करते हों।

❋ इससे प्रयोजन ही क्या कि बिल्ली काली है या सफेद जब तक वह चूहे पकड़ने योग्य है।

❋ अपने सुख के लिए दूसरों को उपदेश देना सबसे बड़ा पाप है।

❋ मानसिक व्यभिचार शारीरिक व्यभिचार से भी भयंकर है।

❋ मेरे आगे न चलो, मैं शायद आपके पीछे न चल सकूं। मेरे पीछे न चलो, मैं शायद आपकी अगवानी न कर सकूं। मेरे बराबर में चलो और मेरे मित्र बन जाओ।

❋ भाग्य सदैव उनकी सहायता करता है जो अपनी सहायता करना जानते हैं।

❋ बार-बार यत्न करने से असंभव भी संभव हो जाता है, शत्रु मित्र हो जाता है और विष अमृत बन जाता है।

❋ बड़ी बात को थोड़े में कहना ही चतुराई है।

❋ बुराई के अवसर तो दिन में सौ बार आते हैं लेकिन भलाई का अवसर वर्ष में एक बार ही आ पाता है।

❋ प्रात:काल का भ्रमण पूरे दिन का वरदान होता है।

❋ प्राप्त वस्तु का सदुपयोग ही परिस्थिति का सदुपयोग है।

❋ प्रत्येक का उपदेश सुन लो, पर उपदेश कुछ ही व्यक्तियों को दो।

❋ धन से धन की भूख बढ़ती है, तृप्ति नहीं होती।

❋ धन-दौलत की यह प्रवृत्ति है कि जितना उससे दूर भागो, वह उतना ही पास आती है।

❋ मनुष्य की खुशियों में बहुत से चेहरे साथ होते है। मगर वो चेहरा हमेशा याद रहता है जो मुश्किल और दु:ख में आपके साथ रहता है।

❋ ज्ञान ही सबसे बड़ी अच्छाई है और अज्ञानता ही सबसे बड़ी बुराई है।

❋ दूसरा व्यक्ति क्या कर रहा है उसपर हमारा नियंत्रण नहीं है पर हम क्या कर रहे है उसपर ही हमारा नियंत्रण हैं।

❋ परेशान आदमी मंदिर भी जाता है, मस्जिद भी जाता है उसका न कोई धर्म होता है, न कोई मजहब होता है। जो भी कोई उसकी परेशानी सुलझा दे वो ही उसका ईश्वर होता है।

❋ कामना सागर की तरह अतृप्त है। जैसे जैसे हम उसकी आवश्यकता पूरी करते हैं, वैसे वैसे उसका कोलाहल बढ़ता जाता है।

❋ शासक वर्ग जब जनता को दिए गए आश्वासनों को स्वप्न की भांति भूलने लगता है, तो मृत्यु की निद्रा ही उसका स्वागत करती है।

❋ अभाव पर विजय पाना ही जीवन की सफलता है। उसे स्वीकार करके उसकी गुलामी करना ही कायरता है।

❋ चुगली- जाने या अनजाने में पड़ चुकी चुगलखोरी की लत आदमी को कहीं का नहीं छोड़ती। झूठ-सच का घालमेल उसे आत्मिक सुख देता है। किसी की कमजोरियों को जगजाहिर करने में गर्व का अहसास होता है, दूसरों की छिछालेदारी में आत्मिक आनंद की अनुभूति होती है लेकिन ये क्षणिक सुख, गर्व और आनंद चुगलखोर को एक ऐसे मोड़ पर ला खड़ा करते

हैं कि वह सबके लिए अविश्वास का पात्र बन जाता है। सब उससे बचने, कन्नी काटकर चलना चाहते हैं। देखते ही देखते वह अलोकप्रियता के गर्त में डूब जाता या डूब जाती है। चुगलखोरी एक ऐसी लत है जो आसानी से पिंड नहीं छोड़ती। यह एक ऐसा चस्का है जो धीरे-धीरे चस्केबाज को ही लील जाता है। अत: अच्छा यही है कि इस इल्लत से शुरू से ही बचें।

किसी की बात इधर से उधर करने से पहले जरा सोचें कि यदि कोई आपके बारे में ऐसा करे तो कैसा लगेगा? किसी की कमजोर नस पर हाथ रखने से पूर्व अपनी भी कमजोरियों और उनके सार्वजनिक होने से पहुंचनेवाली पीड़ा का अहसास कर लें तो शायद चुगलखोरी से दूसरों को पहुंची पीड़ा की अनुभूति हो सके। आपकी एक चुगली किसी का घर तोड़ सकती है, किसी की सामाजिक प्रतिष्ठा को दाग लगा सकती है, किसी के लिए अपमान का सबब बन सकती है।

* जिंदगी में धैर्य और संतोष हो तो निर्धनता भी बुरी नहीं लगती। कपड़े साधारण हो साफ-सुथरे हों तो बुरे नहीं लगते। भोजन स्वादिष्ट न हो पर ताजा और गरम हो तो बुरा नहीं लगता। व्यक्ति सुंदर न हो लेकिन सेवाभावी और विनम्र स्वभावी हो तो बुरा नहीं लगता। तन स्वास्थ्य और मन प्रसन्न हो तो कुछ भी बुरा नहीं लगता।

* जीवन में आपसे कौन मिलेगा यह समय तय करता है। जीवन में आप किसे चाहते हैं आपका दिल तय करता है। पर जीवन में आपके साथ कौन बना रहेगा यह आपका अपना व्यवहार तय करता है।

* प्रत्यक्ष रूप से बहुत लोग सुंदर नहीं दिखते पर आंतरिक रूप से वे असीम सुन्दर होते है। अपने सुन्दर स्वभाव व आचरण के कारण सभी में लोकप्रिय बन जाते है। सभी उनसे मिलना, उनसे बात करना और उन्हें अपना मित्र बनाना पसंद करते है। हमारे समाज में ऐसे लोगों का भी कोई अभाव नहीं सुन्दर व्यक्तित्व के स्वामी होने के उपरान्त ही समाज में अपनी कोई विशेष छवि या पहचान नहीं रखते। स्वभाव की सुन्दरता स्थायी सुन्दरता होती है जिसका प्रभाव दूसरे लोगोंपर अधिक समय तक रहता है। शारीरिक सौन्दर्य का प्रभाव क्षणिक और अस्थायी होता है। मनुष्य समाज में अपनी छबि अपने आप बनाता है। अपनी वाणी, अपने आचरण, अपने स्वभाव से उन्नत बनाता है। मन को सुन्दर बनाने में पवित्र विचारों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। सुन्दर चेहरा नहीं बल्कि सुन्दर स्वभाव ही व्यक्तित्व की कसौटी है।

* पहले मनुष्य में संग्रह का रोग नहीं था उसकी आवश्यकताएं सीमित थी। वह संतोष में जीता था। छीना-झपटी और संचय की होड़ नहीं थी लेकिन आज सबकुछ बदल गया है। सादगी का सौंदर्य और संतोष की सुगंध हमारे जीवन में कहीं दिखाई नहीं देती। व्यय का आय के साथ कोई संतुलन ही नहीं रहा। हमारी असीम आकांक्षाओं का कोई ओर-छोर नहीं है। आज भी अगर संचय की भूख न हो और हमारी इच्छाएं सीमित हों, तो हर आंगन में कल्पवृक्ष उगाए जा सकते हैं। हमने अपने सुख-दुख को धन-संपत्ति के साथ जोड़ रखा है। सुख और दुख संपत्ति में नहीं, उसके साथ हमारी समझ में निहित है। जिस पदार्थ या जिस जीव के साथ हमारा जैसा रागात्मक संबंध है, उसे लेकर वैसे ही सुख-दुख हमें मिलते हैं। सुख और दुख के सारे समीकरण हमारी समझ और दृष्टिकोण पर निर्भर हैं। आज जिसका संपर्क हमें अच्छा लगता है, परिस्थितियां बदलते ही उसका संग-साथ दुखद लगने लगता है। सुख और दुख वास्तविक नहीं, काल्पनिक हैं। वे हमारी सोच में पैदा होते हैं। हमारे लाभ या लोभ में होते हैं।

* वह व्यक्ति जो स्वयं को नहीं पहचानता, अपने साथ शत्रु सा व्यवहार करता है। बहुत जन्मों के बीज लेकर आए। हर जन्म में ऐसा ही किए तो कर्मों की श्रृंखला कभी खत्म नहीं होगी। इस जन्म में होशपूर्वक कर्म करते हुए अपने को पावन करने के लिए उस पतित पावन परमात्मा से मन व भावना को जोड़ना है। जिंदगी की यात्रा निर्भरता से शुरू होती

है, उसके बाद सुख-दुख, फिर परिवार में परस्पर निर्भरता और फिर एक स्थिति आती है जब सबको साथ लेकर चलना होता है, एक-दूसरे को परस्पर निर्भरता से जोड़ना और सम्पूर्णता की ओर ले जाना।

जिसे जोड़ना आ गया उसमें नेतृत्व का गुण आ जाता है क्योंकि अकेली उंगली बोझ नहीं उठा सकती, सारी उंगलियां मिल जाएं तो बोझ उठाने में कठिनाई नहीं आती। मिलकर काम करने से सभी सपने साकार हो सकते हैं। व्यक्ति अपनी शक्तियां पहचान लेता है तो विकास होता है। अपनी शक्तियां नहीं पहचानने का मतलब है आप स्वयं के शत्रु हैं। जो शक्तियां क्षमताएं पहचानते हैं, वह जीवन में कमाल कर जाते हैं। समस्याएं सबके पास हैं, इनके जालों से बाहर निकलो। आपकी क्षमता से समस्याएं भागने लग जाएंगी। हर व्यक्ति को स्वयं अपना सर्वश्रेष्ठ मित्र बनना चाहिए। आत्महीनता नहीं आने देनी चाहिए। दीन-हीन बनकर जीवन मत जियो। जब स्वयं को नहीं पहचानोगे, दुनिया में दुख, चिंताएं, समस्याएं सताएंगी। जब स्वयं की पहचान कर लोगे, चिंताएं डरकर दूर भागेंगी। साहस रखकर भीड़ से हटकर, लगातार प्रयास द्वारा आप सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आप जागरूक हैं तो स्वयं के मित्र हैं, नहीं तो स्वयं के शत्रु हैं। स्वयं के मित्र बनो- शत्रु नहीं।

✻ मनुष्य चेतनावस्था में अगर ईश्वर में लीन हो जाता है तो वह सबकुछ भूला हुआ होता है पर संसार का ज्ञान होते ही वह विषय विकारों में डूब जाता है। उसे अपने सभी भावों का एहसास होने लगता है। ईश्वर के ध्यान में तन-तन की सुध भूला मनुष्य भी संसारी-चेतना के लौटते ही छोटी-छोटी बातों पर भी विचलित होने लगता है। मनुष्य की चेतना दो स्थितियों में बंटी होती है- जब वह संसार की गतिविधियों में डूबा होता है तब साधारण प्राणी के समान सुख-दु:ख, प्रेम-घृणा, स्नेह-क्रोध, लाभ-हानि के फेर में रहता है किन्तु जब वह ईश्वर के ध्यान में लीन होता है तब उसे अपने तन की भी सुध नहीं रहती।

✻ शान्ति और खुशी की तलाश में देश-विदेश घूमने फिरने की बजाय उस धन को किसी गरीब को बाँट दो तो खुशियाँ चिड़ियों की तरह आपके घरमें चहचहायेगी और गरीब की दुआँ आपके उद्योग में तरक्की लायेगी।

✻ पानी प्यासे की जरूरत है, बंजर जमीन की जिंदगी है, हरियाली और धरती के तमाम जीवन के लिए खुशहाली है, आप कुदरत के अनमोल उपहार की कदर करना सीखो और पानी का दुरुपयोग मत करो।

✻ संगति का असर अवश्य होता है। बुरी संगत से बुरा असर और अच्छी संगत से अच्छा असर होता है।

✻ वो मनुष्य मूर्ख है जो अपराध पर अपराध करे यह उम्मीद रखें कि मैं अच्छा मनुष्य हूं।

✻ झूठी शपथ खानेवाले के घर से रिद्धी-सिद्धि चली जाती है और उसे बर्बाद कर जाती है।

✻ श्मशान भूमि वह जगह है जो शिक्षा देती है वहाँ जाकर हँसना या कहकहे लगाना या किसी प्रकार का खाना-पीना, कोई दुनियादारी का काम करना उचित नहीं है।

✻ मौत आनी अवश्य है आनेके पहले ही इस सफर की तैयारी कर लेनी चाहिए।

✻ गरीब की आह ईश्वर से भी सही नहीं जाती। लोहार की भट्टी में चमड़े की खाल में फूँकने से लोहा भी पिघल जाता है।

✻ ईश्वर हर परिंदे को जीविका देता है पर उसके घौसले में नहीं डालता।

✻ जरूरत से ज्यादा भोले मत बनो नहीं तो कभी नुकसान कर लोगे।

✻ उपदेश एक ऐसी चीज है जिसकी बुद्धिमानों को कोई जरूरत नहीं होती और मूर्ख उसे कुबूल नहीं करते।

✻ फूलों की ख्वाहिश रखनेवाले यह भूल जाते हैं गुलाब की सांख पर कांटे भी होते है।

✻ दुनिया में जिंदा रहना है तो इस तरह जियो कि लोग आपको मिलने को तरसे और मरो तो लोग तुम्हें याद करके आँसू बहाएं।

* उठो, जागो और तब तक चलते रहो, जब तक लक्ष्य प्राप्त न कर लो।

* अवसर का अर्थ है, सब अनुकूल है, देरी है, तो सिर्फ आपकी ओर से।

* मनुष्य को अपने कार्य का स्वामी बनना चाहिए, कार्य को अपना स्वामी नहीं बनने देना चाहिए।

* वही काम करना ठीक है जिसे करके पछताना न पड़े और जिसके फल को प्रसन्न मन से भोग सकें।

* सभी लोग आपके दुश्मन हो जाएंगे, यदि आपने आत्मविश्वास खो दिया।

* जिस व्यक्ति में सफलता के लिए आशा और आत्मविश्वास है, वही व्यक्ति जीवन की सभी कठिनाइयों को झेलते, हंसते-हंसते जीवन के उच्च शिखर पर पहुंच जाते हैं।

* यदि आपका हृदय ईमान से भरा है तो एक शत्रु क्या, सारा संसार आपके सम्मुख हथियार डाल देगा।

* भय का जो स्थान दु:ख वर्ग में है, उत्साह का वही स्थान आनंद वर्ग में है।

* मित्रता करने में धैर्य से काम लेना चाहिए, अगर मित्रता कर लो तो उसे अचल और दृढ़ होकर निभाओ।

* हमारे स्वभाव का प्रभाव हमारे परिवार के दूसरे किसी सदस्य की उन्नति या अवनति पर भी पड़ता है।

* बुरे लोगों को निंदा में ही आनंद आता है। सारे रसों को चखकर भी कौआ गंदगी से ही तृप्त होता है।

* श्रम की अपेक्षा करनेवाले को कभी क्षमा न करो, उससे कठोर श्रम करवाओ। ऐसा व्यक्ति अपना सर्वनाश तो करता ही है, दूसरों को भी कामचोरी का विष पिलाता है।

* जो बीत गया सो बीत गया। शेष जीवन को ही लक्ष्य में रखते हुए प्राप्त अवसर को परखकर समय का मूल्य समझो।

* मूर्ख आदमी अनुमति के बिना आता है और अनुमति के बिना बोलने लगता है। वह बड़ा मूर्ख है जो ऐसे व्यक्ति पर विश्वास करता है।

* दूसरों के साथ वही व्यवहार करें जैसा आप अपने लिए चाहते हैं।

* समय कैसा चल रहा है, मेरे मित्र कैसे हैं, जहां मैं रहता हूं वह देश कैसा है, मेरी आमदनी क्या है और मेरे खर्च क्या हैं, मैं कौन हूं और मेरी शक्ति कितनी है? इन बातों पर जो मनुष्य बार-बार विचार करता है वह श्रेष्ठ है।

* मौन के वृक्ष पर शांति के फल सदैव लदे रहते हैं।

* छिपी हुई वह बात, जो हर सभा में नहीं कही जा सके, कहना उचित नहीं है।

* सबकी बात ध्यान से सुनो परंतु अपनी सलाह केवल थोड़े ही मनुष्यों को दो।

* जो विनम्र है वही विश्व विजयी है। जिनमें नम्रता नहीं आती, वे विद्या का पूरा सदुपयोग नहीं कर सकते।

* चित्त के प्रसन्न रहने से सब सुख नष्ट हो जाते हैं। जिसे प्रसन्नता प्राप्त हो जाती है, उसकी बुद्धि तुरन्त स्थिर हो जाती है।

* अगर आपकी बुराई की जाए और वह सच हो तो अपने को सुधार लो और अगर वह झूठ हो तो उस पर मुस्करा दो।

* परमेश्वर की दृष्टि में सदाचारी मनुष्य अत्यंत सम्माननीय समझा जाता है।

* भलाई करने के बाद यह अहसास होना कि भला किया, बुरा करने की तैयारी हुआ करती है।

* शुद्ध न्याय में शुद्ध दया होनी चाहिए। न्याय का विरोध करनेवाली दया, दया नहीं क्रूरता है।

* मानव की सबसे बड़ी आवश्यकता शिक्षा नहीं, चरित्र है और यही उसका सबसे बड़ा रक्षक भी है।

* यदि आप स्वयं को अपनी इच्छा के अनुकूल नहीं बना सकते, तो आप दूसरों से कैसे आशा कर सकते हो कि वे

आपकी इच्छा के अनुकूल हों।

* अनुभव सच्चा गुरु है।

* पांच वर्ष तक पुत्र को प्यार करें, दस वर्ष तक पुत्र को अच्छे मार्ग पर चलाने के लिए दण्डित कर सकते हो, लेकिन सोलह वर्ष के बाद पुत्र को मित्र की भांति स्वीकार कर लो।

* मूर्ख बुद्धिमानी का दावा करता है। अनुभव अमूल्य कसौटी है।

* जिसके चित्त में कभी क्रोध नहीं आता और जिसके हृदय में सर्वदा परमेश्वर विराजमान रहता हो, वह व्यक्ति ईश्वर तुल्य है।

* भय की भावनाओं से ही धर्मों का प्रारंभ हुआ, यह बात झूठी नहीं। भय के बिना प्रीति नहीं होती।

* भावनाओं में बहकर कर्त्तव्य से विमुख होना अस्वस्थ मानसिकता का द्योतक है।

* अज्ञानी के लिए मौन से श्रेष्ठ कुछ नहीं और यदि यह युक्ति वह समझ ले तो अज्ञानी न रहे।

* सदैव के लिए शांत हो जाना ही मृत्यु नहीं होती, अपनी ही गलतियों से उत्पन्न स्थितियां भी एक प्रकार से मृत्यु के समान ही हैं, जिन्हें जीते जी भोगना पड़ता है।

* सहनशीलता, समय का सदुपयोग, भोगासक्ति का नाश, इष्टदेव का निरंतर चिन्तन और सद्गुरु की शरण, शीघ्र भगवान से मिलाप करा देती हैं।

* मिथ्या बोलना, विचार किए बिना कार्य करना, धोखा देना, लालच करना, अपवित्र व्यवहार करना और दया हीनता- यह सब तमाम स्त्रियों के स्वभाविक दोष हैं।

* मनुष्य ने यदि लोभ के प्याले को अपने अधरों से लगा लिया है तो फिर उसके मूर्ख और दीवाना होने में कुछ ही समय का विलंब शेष रहता है।

* सुंदर वह है जिसका हृदय सुंदर है। आकृति, रंग और चेहरे की बनावट आकर्षक हो परंतु हृदय में दुर्गुण और दोष भरे हों तो सुंदर भी असुंदर बन जाता है।

* हमारी लगन और संयम प्रतिदिन बढ़ते ही जाने चाहिए।

* अभिमान अपने अपमान को नहीं भूलता।

* लगातार सफलता हमें संसार का एक पक्ष दिखाती है। विफलताएं उस चित्र का दूसरा पक्ष भी दर्शाती हैं।

* कामयाबी हो गई तो बेवकूफी पर भी नाज और जो नाकामी हुई तो अक्ल भी शर्मिंदा है।

* तृष्णा उस अग्नि को उत्पन्न कर देती है जिससे संतोष रूपी गुण जल जाता है।

* यदि चिंता से ही कार्यसिद्ध होते तो सभी कार्य के बजाय चिंता ही करते।

* जो प्रशंसा के क्षणों में अपना होश बनाए रख सकता है, असल में वही साधक है। सच्ची प्रशंसा करना सीखो, यह श्रेष्ठ गुण है।

* आपके पचास मित्र और एक शत्रु वो ही बहुत होते है।

* कभी उस व्यक्ति से मित्रता मत करो, जिसने तीन मित्र बनाकर त्याग दिए हों।

* कठिन काम पड़ने पर सेवक की, संकट के समय भाई बंधु की, आपात काल में मित्र की व धन के नाश हो जाने पर स्त्री की परीक्षा होती है।

* एक गुणवान पुत्र ही बेहतर है सौ मूर्ख पुत्रों से। एक चंद्रमा सारा अंधकार दूर कर देता है, जो झुंड के झुंड तारे नहीं कर पाते।

* एक ही शर्त पर भगवान ने मनुष्य को स्वतंत्रता दी है कि वह अनंतकाल तक सावधान रहे।

* मन, वचन और कर्म द्वारा चोट पहुंचाना पाप है। इनसे सुख पहुंचाना पुण्य है।

* मनुष्य यदि सम्मान के लायक है तो अवश्य उनका सम्मान करो। आवश्यकता से अधिक सम्मान उसे नीचे गिरा देगा।

* मन यदि नियंत्रण में नहीं है तो उससे दुष्परिणामों की ही आशा रखो।

* दुर्भाग्य घोड़े पर सवार होकर आता है और पैदल-पैदल जाता है।

* तुच्छ व्यक्ति त्रुटियों के विषय में सोचते हैं, उन्हें दूर करने का प्रयास नहीं करते। अत: त्रुटियों में सुधार का रंग भरते रहो।

* झगड़े को जितना बढ़ाया जाए, उतना ही बढ़ जाता है।

* जब तक संभव हो तब तक स्वयं के लिए दूसरों के आगे हाथ नहीं फैलाना चाहिए।

* जो दूसरों पर आश्रित हो वह सदैव दु:खी रहेगा और आसानी से अपना कल्याण नहीं कर पाएगा।

* जिसके हाथ में एक भी कला है वह भूखा नहीं मर सकता।

* यह आवश्यक नहीं कि जो रूप से ठीक है, वह सद्‌गुण संपन्न भी हो।

* जवानी, खूबसूरती और ऐश्वर्य इनमें से हर एक में मनुष्य को मदांध बनाने की शक्ति है।

* जब कोई पुरुष हमारे साथ अकारण मित्रता का व्यवहार करने लगे तो हमें सोच लेना चाहिए कि इसमें उसका कोई स्वार्थ तो नहीं छिपा है।

* जो दूसरे पर आश्रित रहते हैं, उनका काम चौपट हो जाता है।

* जमीन जायदाद चली जाएगी तो वापिस पैदा की जा सकती है, घर-बार चला जाए तो वापिस खड़ा हो जाएगा, मगर इज्जत चली जाए तो यह कभी वापिस नहीं आती।

* जो मनुष्य हंसी उड़ानेवालों को शिक्षा देता है, वह स्वयं अपमानित होता है। दुर्जनों को चेतावनी देनेवाला अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारता है।

* जिसे संदेह है, उसे कहीं ठिकाना नहीं। उसका विनाश निश्चित है। वह रास्ते चलता हुआ भी नहीं चलता, क्योंकि वह जानता ही नहीं कि मैं कहां हूं।

* जो विपत्ति से डरते हैं, वह उन्हीं पर ज्यादा आती है। जो मन को दृढ़ रखते हैं और आनेवाले हर एक सुख-दु:ख को भगवान का दान समझकर प्रसन्नता से रहते हैं, उसके लिए विपत्ति कोई चीज नहीं।

* जो व्यक्ति अपने रहस्य को छिपाए रखता है, वह अपनी कुशलता अपने हाथ में रखता है।

* जहां नदी गहरी होती है, वहां जल प्रवाह अत्यंत शांत और गंभीर होता है।

* जिंदगी और दौलत की तरह जवानी को भी जाते देर नहीं लगती।

* जन्म के समय मनुष्य चाहे कितना भी धनवान हो, मृत्यु के समय सर्वथा निर्धन होता है।

* जो मद्यपानादि के समय या आंखों के सामने प्रिय बन जाता है, वह सच्चा मित्र नहीं। जो काम निकल जाने के बाद भी मित्र बना रहता है, वही मित्र है।

* जो आज तुम्हारा है कल किसी और का था परसों किसी और का हो जाएगा।

* जब तक मनुष्य उद्योग करता है, तब तक उससे भूल होना संभव है।

* जो हर किसी की प्रशंसा करता है, वह वास्तव में किसी की प्रशंसा नहीं करता।

* बुराई व भलाई के अवसरों में हजार और एक का अनुपात होता है, अत: भलाई का अवसर भुनाओ।

* प्रथम श्रेणी में वह मनुष्य जो बाधा के भय से कार्य शुरू नहीं करते, दूसरे वह मनुष्य जो काम तो शुरू करते हैं लेकिन बाधा पड़ने पर उसे अधूरा छोड़ देते हैं, तीसरे उत्तम पुरुष वे हैं जो कार्य शुरू करते हैं और हजार बाधाएं आने पर भी उसे पूर्ण करते हैं।

* जहां भी आप जाएं, अपने आत्मविश्वास के साथ जाना चाहिए।

* आप दूसरों से आशा नहीं कर सकते हो कि वह आपकी आशा के अनुकूल हो, यदि आप स्वयं को ही अपनी इच्छा के अनुरूप नहीं बना सकते।

* ईमानवाले वे हैं जो अपनी अमानतों और प्रतिज्ञा का ध्यान रखते हैं और अपने वादों की रक्षा करते हैं।

* साहस की सुगंध वीरों का प्रथम गुण है। साहसी ही सही मायने में जीते हैं।

* सज्जन यदि निर्धन भी है तो उसे धनवान जानो क्योंकि उसके पास धैर्य का धन है।

* धर्म और वेदों का अध्ययन करनेवाला दुराचारी नहीं होगा। यह सोचना गलत है, क्योंकि स्वभाव ही वह चीज है जिससे सदाचारी बनते हैं। जैसे गाय का दूध स्वभाव से ही मीठा होता है।

* श्रम द्वारा प्राप्त सम्पत्ति ही स्थायी होती है।

* खाने और सोने का नाम जीवन नहीं है। जीवन नाम है सदैव आगे बढ़ते रहने की लगन का।

* अपने साथियों के साथ शत्रुओं जैसा व्यवहार करने का अर्थ होगा शत्रु के दृष्टिकोण को अपना लेना।

* अपने को पारदर्शी बनाओ तो तुम्हारे अंतर्गत प्रकाशों का प्रकाश और परमात्मा का ज्ञान प्रकाशित होगा।

* अच्छे बनने पर तो आप आश्वस्त रहो कि आप अकेले रह जाओगे, अर्थात् तब कोई आपकी बराबरी न कर सकेगा।

* सत्य हजार ढंग से प्रकट कीजिए हर ढंग सत्य को ही उजागर करेगा।

* सत्य के मार्ग पर न तो कांटे होते हैं और न ही कोई परेशानी। अत: सत्य को अपने आचरण में धारण करना चाहिए।

* दिल में कभी बुरे विचार मत आने दो, वह अपना असर दिखाए बिना नहीं रहते।

* गूंगे ही बातूनों से ईर्ष्या करते हैं। नम्रता और मीठे वचन ही मनुष्य का आभूषण हैं। ऐसा वचन न कहो, जो खुद को पसंद न हो।

* नम्रता और धैर्य जीवन के मूलमंत्र हैं।

* औरों को प्रसन्नता दिए बिना प्रसन्न रहने का अधिकार नहीं है यद्यपि आप धन पैदा किए बिना उसका उपभोग कर सकते हो।

* अपनी निंदा और प्रशंसा, पराई निंदा और पराई स्तुति- यह आचरण श्रेष्ठ पुरुषों ने कभी नहीं किया।

* सच्चा मनुष्य वह है जो बुराई का बदला भलाई से दे।

* जो केवल दया से प्रेरित होकर सेवा करते हैं, उन्हें नि:संशय सुख की प्राप्ति होगी।

✻ जो निर्बल को क्षमा नहीं करता उसे बलवानों के अत्याचार सहने होंगे।

✻ हमारी बुद्धिमत्ता का अंत स्वतंत्रता है, संस्कृति का अन्त पूर्णता है, ज्ञान का अन्त प्रेम है और शिक्षा का अंत चरित्र है।

✻ मनुष्य की इच्छाओं पर उसके विवेक का शासन आवश्यक है।

✻ वह क्रोध है जो आपको अपने वश में कर सकता है अत: आप भी उसे अपने वश में कर लीजिए।

✻ स्वभाव में जब भय घुल जाए तब कायरता का आरंभ हो जाता है।

✻ सत्य रूप में देखा जाए तो ज्ञान दो प्रकार से दिया जाता है पहला श्रद्धावश और दूसरा दयावश।

✻ जो मानव अपने अवगुण व दूसरों के गुण देखता है, वही महान मानव बन सकता है।

✻ अहंकार प्रेम की अनुपस्थिति का परिणाम है।

✻ जिसे कर्म करने का सही तरीका आ गया वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफल और सुखी होता है।

✻ जो परम सुख चाहनेवाला हो उसे अत्यंत संतोषी होना चाहिए, क्योंकि संतोष ही समस्त सुखों का मूल है।

✻ आकाश की ऊंचाई आपके पैरों के तले होगी, यदि आप चिंता से मुक्त हो जाएं।

✻ प्रशंसा विवेकी को नम्र बनाती है मूर्ख को अहंकारी और दुर्बल मन को मदहोश कर देती है।

✻ एक ही पुत्र हो, वह विद्वान और साधु चरित्र का हो तो संपूर्ण कुल ऐसा आनंदित हो जाता है जैसे एक ही चंद्रमा से रात्रि शोभायमान होती है।

✻ एकता से रहो, अजेय रहो।

✻ एक अच्छी माता सौ शिक्षकों के बराबर होती है, इसलिए उसका हर हालत में सम्मान करना चाहिए।

✻ आपद काल में धैर्य, धर्म, मित्र और नारी की परीक्षा होती है।

✻ आप सौ को खाना नहीं खिला सकते तो आप एक को ही खिलाइए।

✻ उपदेश देने में मन भर, ग्रहण करने में कण भर।

✻ जितनी आवश्यकता शरीर के लिए व्यायाम की होती है, उतनी ही मस्तिष्क के लिए अध्ययन की होती है।

✻ मनुष्य से यह उम्मीद रखना कैसे नामुमकिन है कि वह सलाह ले लेगा जबकि वह चेतावनी तक से सावधान नहीं होता।

✻ मजदूर को उसकी मजदूरी उसके पसीना रहते दोगे तो आपको भी संतोष होगा और मजदूर को भी।

✻ हाथ में आए अवसर को कभी नहीं खोना चाहिए।

✻ जिसकी तुम आकांक्षा करते हो, यदि वह करना संभव नहीं, तो उसी की आकांक्षा करो जो तुम कर सकते हो। तुम जिसके योग्य हो।

✻ जिन लोगों में यह आत्मविश्वास है कि मुझमें दृढ़ शक्ति है और मेरा हृदय पवित्र है इस विश्वास का पोषण करना चाहिए पर इसे उजागर मत करो।

✻ आशा का अर्थ है बीते को भूलकर नए सिरे से कुछ पाने की तैयारी।

✻ ईमानदार का हर काम खुलेआम होता है।

✻ दुर्लभ कुछ भी नहीं, यदि उत्साह का साथ न छोड़ा जाए।

✻ धैर्य, मनोनिगृह, इन्द्रियसंयम, पवित्रता, दया, कोमल वाणी और मित्र से द्रोह न करना यह सब बातें लक्ष्मी को बढ़ानेवाली हैं।

* व्यक्ति के स्वभाव पर उसका भविष्य निर्भर करता है।
* पुरुषार्थ भाग्य का निर्माता होता है।
* जिंदगी की असंख्य चिंताओं के संतुलन स्वरूप ईश्वर ने हमें आशा और निद्रा भी प्रदान की है।
* जीवन के लिए खाना और सोना अनिवार्य है लेकिन जीवन कार्य और लगन से सफल होता है।
* अगर लोग आपको मुक्के मारते हैं तो बदले में उन्हें न मार, बल्कि उनके पैरों को चूमकर अपने घर आ जाओ।
* दुष्ट विचार अपनी उत्पत्ति के साथ ही दुष्ट कर्म की ओर खींचने लगता है।
* मनुष्यों के पास धन-दौलत के अंबार हो सकते हैं लेकिन बुद्धिमान मनुष्य की वाणी तो अनमोल होती है।
* नम्रता दिखाते समय हम महान व्यक्तियों के समकक्ष हो जाते हैं।
* मुस्कान से सजे चेहरे द्वारा किया गया स्वागत जलपान और भोजन के बराबर होता है।
* सबको प्रसन्न करने की शक्ति सबमें नहीं होती।
* भले बनकर तुम दूसरों की भलाई का कारण बन जाते हो।
* परमात्मा के स्थान पर सदाचारी की पूजा करना श्रेयस्कर है।
* दया ईश्वर से प्राप्त दो तरफा कृपा है। वह ईश्वरीय कृपा देनेवाले पर और दूसरे पानेवाले पर भी लागू होती है।
* जिसमें दया नहीं, धर्म नहीं, निज भाषा से प्रेम नहीं, चरित्र नहीं, आत्मबल नहीं, वे मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है।
* परस्पर विरोधी इच्छाएं कठिनाइयां, रंज और दुख लाती हैं।
* क्रोध न दिखाई देनेवाली चिता है जो भीतर ही भीतर आपको जला रही है।
* विपत्ति में हार तभी तक होती है, जब तक मनुष्य उससे डरता है।
* अपने कुल से ऊंचे कुल में विवाह करने का अर्थ है अपनी स्वतंत्रता खो देना।
* अभीष्ट फल की प्राप्ति हो या न हो, विद्वान पुरुष उसके लिए शोक नहीं करता।
* वह हाथ जो किसी की सहायता करते हैं, उन होठों से जो प्रार्थना करते हैं, अधिक पवित्र हैं।
* माता-पिता के समान कोई पूज्य नहीं और गुरु के समान कोई देवता नहीं, ज्ञान के समान कोई उपकारी नहीं और मोक्ष से बढ़कर कोई सुख नहीं। अत: मानव जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष पाना ही है।
* जो मनुष्य धनवान बनना चाहता हो, उसे चाहिए कि निद्रा, तन्द्रा, भय, क्रोध, आलस्य और ढिलाई इन दोषों को त्याग दे।
* बुढ़ापा रूप को, आशा धैर्य को, मृत्यु प्राण को, आलस्य धर्मचर्या को, क्रोध कीर्ति को, काम लज्जा को और अभिमान सबको हरता है।
* अभिमानी व्यक्ति स्वयं को खा जाता है।
* खड़े हो जाओ, साहसी बनो, शक्तिमान होवो। सारा उत्तरदायित्व अपने कंधों पर लो और मान लो कि आप अपने भाग्यविधाता हो। आपको जो कुछ बल और सहायता चाहिए, सब आपके ही भीतर है। अतएव अपना भविष्य आप स्वयं गढ़ो।
* कर्म करना बहुत अच्छा है, पर वह विचारों से आता है, इसलिए अपने मस्तिष्क को उच्च विचारों से भर लो, उन्हें

रात-दिन अपने सामने रखो, उन्हीं में से महान कार्यों का जन्म होगा।

* यह संसार कायरों के लिए नहीं है। भागने का प्रयत्न मत करो। सफलता या असफलता की परवाह मत करो।

* सर्वशक्तिमान ईश्वर को कहा जाता है, आत्मसंयमी को हम अर्द्ध-सर्वशक्तिमान तो कह ही सकते हैं।

* संतोष के समान अमृत से जो लोग संतुष्ट होते हैं उन्हें सुख और शान्ति मिलती है, वह धन के लोभियों को कभी हासिल नहीं होती।

* आप अपने जीवन के शत्रु हैं, यदि चिंता करते हैं। चिंताएं मनुष्य की सारी शक्ति नष्ट कर देती हैं।

* प्रशंसा की मीठी अग्नि यमराज के कठोर हृदय को भी मोम बना देती है, तभी तो वह अपने भक्त को अमर होने का वर दे देता है, यह जानते हुए भी कि इस संसार में कोई अमर नहीं।

* मूर्ख को उपदेश दिया जाए तो वह क्रोधित होता है। सांप को दूध पिलाने से जैसे उसका विष बढ़ता है।

* मूर्ख की तरह बोलने के बजाय चुप रहना अच्छा है।

* महापुरुषों का सम्मान करना ही चाहते हो तो उनके कार्यों का अनुकरण करो, यह सबसे बड़ा सम्मान है।

* मनुष्य न तो कभी मरता है, न कभी जन्म लेता है, शरीर मरते हैं पर आत्मा अमर रहती है।

* जिससे हम कुछ भी नहीं ले सकते, ऐसा संसार में कोई नहीं है।

* कभी भी ऐसे व्यक्ति के साथ दोस्ती के लिए नहीं सोचना चाहिए जो किसी के लिए मिट न सकता हो।

* मुझे ऐसी मित्रता नहीं चाहिए जो मेरे पांव में उलझकर आगे चलने में बाधक हो।

* मूर्ख मित्र से अक्लमंद दुश्मन हजार दर्जे बेहतर है।

* मित्र वह व्यक्ति है जो मन में पूर्ण समर्पित होने का भाव उत्पन्न करता है।

* जब आपने किसी को यह बता दिया कि मरने के पश्चात आप उसके लिए धन छोड़ रहे हैं तो आपके लिए यही सबसे अच्छी बात होगी कि आप तुरन्त मर जाएं।

* आपका सबसे बड़ा मित्र वह व्यक्ति है जो आपके प्रति शुभकामनाएं रखता है और उन्हें व्यक्त भी करता है।

* मित्र वह गिने चुने लोग हैं जो हमसे पूछते हैं कि हम कैसे हैं और फिर उसके उत्तर की प्रतीक्षा करते हैं।

* भूल करने में पाप तो है ही, परंतु उसे छिपाने में उससे भी बड़ा पाप है।

* भाग्य केवल बहादुरों का साथ देता है।

* भीरु और कायर अपनी मौत से पहले कई बार मर जाते हैं लेकिन बहादुर केवल एक बार ही मृत्यु का आलिंगन करते हैं।

* बच्चा वास्तव में आदमी का पिता होता है।

* बुद्धि ईश्वर का वरदान है। इसका उपयोग पूरी ईमानदारी से होना चाहिए।

* बच्चों के साथ समझदार बच्चे बनकर जितनी शिक्षा उन्हें दी जा सकती है, उतनी बड़े-बूढ़े बनकर नहीं।

* बदनामी से छूटने का शर्तिया और फौरी इलाज अपने को सुधार लेना है।

* बहादुरी का प्रहार करके मरने में बहादुरी है। बजाय हजारों कायरता भरे दंभ और अपमान सहते हुए सौ वर्ष जीने से।

* बुद्धिमान दूसरों की त्रुटियों से और मूर्ख अपनी त्रुटियों से शिक्षा लेते हैं।

* प्रथम तौर पर नींव रखी जाती है। मनुष्य की नींव है सुंदर स्वास्थ्य।

* फिजूलखर्ची करनेवाला सदैव कष्टमय जीवन व्यतीत करेगा।

* पुण्य की नहर होती है और पाप की नाली।

* फूल चुनकर इकट्ठा करने के लिए मत ठहरो। आगे बढ़े चलो, आपके पथ में फूल निरंतर खिलते रहेंगे।

* पसंद का कार्य सभी करते हैं, बुद्धिमान प्रत्येक कार्य को रुचिकर बना लेते हैं।

* विचारों का विस्तार ही आपका अतीत है, वर्तमान और भविष्य है। आप आज जो भी हैं, आपके विचारों के परिणामस्वरूप है और भविष्य का निर्धारण आपके वर्तमान विचार ही करेंगे। उज्ज्वल भविष्य की आकांक्षा करनेवाले आप शुभ-विचारों से अपने दिलो-दिमाग को पूरित करें।

* अवसर हाथ से निकल जाने पर हर कोई बुद्धिमान बन जाता है।

* जो मनुष्य अपने कर्त्तव्य को अच्छी तरह करने की शिक्षा पा चुका है, वह मनुष्य से संबंध रखनेवाले सभी कर्मों को भली-भांति करेगा।

* व्यर्थ कर्म भारीपन व थकान देते हैं, जबकि श्रेष्ठ कर्म हमें प्रसन्न व हल्का बनाकर ताजगी प्रदान करते हैं।

* आशा ही मानव जीवन का आधार है। सारा संसार ही आशा के कंधों पर टिका हुआ है और उसे गति मिलती है विश्वास से। आशावादी के चेहरे आपको सदैव हंसते और खिले-खिले से मिलेंगे और निराशावादी हमेशा रोता हुआ ही मिलेगा।

* ईमान सभी प्रकार की हिसाओं का नियमन करता है। ईमानदार होना दस हजार में से एक होना है।

* कटा हुआ वृक्ष भी पनपने लगता है। क्षीण चंद्रमा भी बढ़कर पूर्ण हो जाता है अत: विपत्ति में साहस न छोड़ें।

* धैर्य और सन्तोष जीवन-नौका की पतवार हैं जो नौका को मंजिल तक पहुंचाते हैं।

* एक चोट को आदमी शीघ्र भूल जाता है लेकिन अपमान को देरी से।

* स्वभाव ही मनुष्य के जीवन का स्वर्ग या नर्क निर्धारित करता है।

* नवयुवकों के लिए संदेश है कठोर परिश्रम करो।

* जिंदगी के मायने ही हैं, जहां अपनों के सिवाय कोई दूसरा रहे ही नहीं, अर्थात् सभी अपने हो जाएं, कोई दूसरा न हो। यह थोथा आदर्श नहीं, व्यावहारिक सत्य है।

* व्यवहार को साफ सुथरा और मजबूत बनाने के लिए ऐसे गुणों की आवश्यकता होती है, जो दूसरों में अपनापन जगा सकें।

* आप यदि बुरे विचारों के भटकाव से बचना चाहते हो तो अपने मन को सदा व्यस्त रखो।

* जहां इच्छा है, वहां आंसू हैं।

* सत्य बोलें, प्रिय बोलें, किन्तु अप्रिय सत्य न बोलें। किसी के साथ व्यर्थ वैर और शुष्क विवाद न करें।

* महान व्यक्ति का लक्षण उसकी नम्रता है।

* प्रसन्न-हृदय का व्यक्ति अपने चेहरे को फूल समान खिलाए रखता है।

* पढ़ना एक बार, चिंतन दो बार और आचरण हर बार करना चाहिए।

* जो मेरे साथ भलाई करता है, वह मुझे भला होना सिखा देता है।

* दया का पात्र बनने के बजाय ईर्ष्या का पात्र बनना कहीं अच्छा है।

* चरित्र की शिक्षा पाए हुए के लिए सभी देश और सभी नगर पराए होकर भी अपने बन जाते हैं।

* मन का संबंध जब बाहरी वस्तुओं से होता है तो वे उसे बिल्कुल उसी तरह उद्वेलित करती हैं, जैसे तेज हवा गंभीर समुद्र के तल को तेज उफनती लहरों में बदल देती है। लहरों में छिपी ऊर्जा समुद्र की गंभीरता और शांति को नष्ट-भ्रष्ट और छिन्न-विछिन्न कर देती है। इच्छा, वासना, कामना, तृष्णा आदि मन की स्थितियां ऐसी ही ऊर्जा संपन्न लहरें हैं। यदि ये जहां आपको आनन्द के महासागर की यात्रा कराती हैं, वहीं दम घोटकर पल-पल मरने को भी विवश कर देती हैं। मन साधन है मुक्ति का और बंधन का भी।

* जितनी अल्प होंगी इच्छाएं, जीवन उतना ही होगा सुखी। दुनिया में प्रसन्न व स्वस्थ रहने का एक ही उपाय है कि अपनी जरूरतों को कम से कम कर देना चाहिए।

* जहां अध्यात्म जीवित है, वहां अनीतियां आत्महत्या कर लेती हैं।

* अगर कोई मनुष्य स्वयं के क्रोध पर काबू नहीं पा सकता तो वह दूसरों के क्रोध का सामना करने से नहीं बच सकता।

* हमेशा डरते रहने से एक बार खतरे का सामना कर डालना अच्छा है।

* सत् ज्ञान मनुष्य को यह दर्शाता है कि वह शरीरधारी आत्मा है। जबकि अज्ञानी समझता है कि वह एक शरीर है, जिसमें आत्मा विद्यमान है।

* उपयोगी, निरापद, निश्चित लाभदायक और प्राप्त करने योग्य गुण एकाग्रता है।

* हम कुछ लोगों से नफरत करते हैं, क्योंकि उन्हें नहीं जानते और हम उन्हें जानेंगे भी नहीं क्योंकि हम उनसे नफरत करते हैं।

* हम जितने ही शांत होंगे, हमारे स्नायु उतने ही कम उत्तेजित होंगे। साथ ही प्रेम और कार्य में वृद्धि होती है।

* हड्डियों का एक नगर है जो मांस और रक्त से लेपा गया है, जिसमें सन्देह, मृत्यु, अभिमान और डाह छिपे हुए हैं।

* दूसरों की निंदा करने से हजार गुना अच्छा है अपनी प्रशंसा करना।

* जब तक मानव रहेगा, तब तक बुराई रहेगी।

* आदमी को बदमाशियां करते देखकर मुझे तनिक भी आश्चर्य नहीं होता। लेकिन उसे शर्मिंदा न होते देखकर मुझे अक्सर आश्चर्य होता है।

* अनुशासन के बिना न परिवार चल सकता है, न राष्ट्र।

* मन को विकारमुक्त रखने का एक ही उपाय है कि उसे सदैव क्रियाशील रखा जाए।

* अहंकार से देवता दानव बन जाते हैं और नम्रता से मानव देवता।

* मनुष्य को सफलता कुछ सिखाए या ना सिखाए, असफलता बहुत कुछ सिखा जाती है।

* लुटेरा वह नहीं जो धन लूटता है, लुटेरा वह भी है जो आपके अन्दर बैठकर लालच के हथियार से आपका संतोष लूट लेता है।

* चिंता करो, यदि तुम रूप, बल और ज्ञान का नाश चाहते हो।

* प्रत्येक व्यक्ति प्रशंसा चाहता है। प्रशंसा खोजनेवालों को वह नहीं मिलती।

* सुबह से शाम तक व्यक्ति अनगिनत शब्दों का प्रयोग करता है। ये सभी वचन हैं। ज्यादातर वचन निरर्थक ही हुआ करते हैं। वचन तब प्रवचन बनता है, जब वह हितकारी ही नहीं- कल्याणकारी भी हो। वचन मात्र वाणी का विलास है। यह तब प्रवचन बन जाता है, जब किसी विशिष्ट लक्ष्य की ओर संकेत करता है। आध्यात्मिक वार्ता को इसीलिए प्रवचन

कहा जाता है, क्योंकि वह मनुष्य जीवन के लक्ष्य की ओर संकेत करती है।

* पेड़ अपने सिर पर गरमी सह लेता है लेकिन अपनी छाया द्वारा औरों को गरमी से बचाता है।
* प्यास लगने से पहले ही कुआं खोद कर रखें।
* प्रकृति हमारी सबसे करीबी मित्र है।
* प्रेम करनेवाला पड़ोसी दूर रहनेवाले भाई से उत्तम है।
* प्रेमी की आंखें उसके हृदय में होती हैं।
* पराधीन व्यक्ति के सपने भी अपने नहीं होते।
* परमेश्वर मुझे प्रार्थना करनेवाले हाथ नहीं सहायता करनेवाले हाथ दे।
* कुल की परीक्षा नाना प्रकार की भोग सामग्री, माता, घर, स्वागत सत्कार के ढंग और भोजन वस्त्र के द्वारा होती है।
* पुरुष और उसका पौरूष भाग्य के अनुकूल रहने तक है। भाग्य प्रतिकूल हुआ तो न पुरुष रहेगा न पौरूष।
* परदेस में रह रहे हो तो विद्या को मित्र जानो, घर में स्त्री को, रोग में औषधि को और मरने के पश्चात अपने कर्मों को।
* प्रेम की शक्ति घृणा की शक्ति से हजार गुना प्रभावशाली और स्थायी होती है।
* पृथ्वी में जितना भी सच है, मृत्यु उसमें सबसे बड़ा सच है।
* पुरुष साधारणतया इस भ्रम में जीते हैं कि वह स्त्रियों को ज्यादा समझ पाते हैं। लेकिन स्त्रियां पुरुषों को ज्यादा बेहतर समझती हैं।
* पुरुष यदि स्त्री की रक्षा नहीं करेगा तो वह किन्नर से भी गया गुजरा है।
* अवहेलना न अपनी करो, न दूसरों की।
* निर्लज्ज हारकर भी नहीं हारता, मरकर भी नहीं मरता।
* धन गया, कुछ नहीं गया। स्वास्थ्य गया, कुछ गया। चरित्र गया, सब कुछ गया।
* नरक के तीन द्वार हैं जो त्याज्य हैं- काम, क्रोध और लोभ।
* धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का उच्चतम आधार व्यक्ति का उत्तम स्वास्थ्य होता है।
* धन नाश होने पर, मन दु:खी होने पर, घर की बुराइयों को ठगे जाने पर और नीचों द्वारा अपमान कर दिया गया हो तो विवेकवान व्यक्ति इनका जिक्र किसी से न करे।
* धन की अधिकता से मित्रों की बाढ़ आ जाती है लेकिन गरीब का एक ही मित्र हो, गरीबी में वह भी उसका साथ छोड़ देता है।
* धर्म ज्ञान होने पर यदि इंसान वृद्धजनों का सम्मान करते हैं, उनके लिए इस लोक में यश है और परलोक में मुक्ति।
* दही में दूध डालते रहिए, वह दही होता चला जाएगा। शंकित हृदय में प्रेम की वाणी भी शंका ही उत्पन्न करती है।
* धोखा देकर दगाबाजी से धन जमा करना ऐसा है जैसे कि मिट्टी के कच्चे घड़े में पानी भरकर रखना।
* दूसरों के गुण देखने की आदत डालें, यदि आप अपनी उन्नति चाहते हैं।
* दरिद्रों में दरिद्र वह है जो अतिथि का सत्कार नहीं करता।
* दुनिया में गुणवत्ता सिर्फ दो हैं- सक्षमता और अक्षमता। इस प्रकार केवल दो प्रकार के लोग हैं- सक्षम और असक्षम।
* दु:ख और विपदा ऐसे मेहमान हैं, जो बिना निमंत्रण के ही आते हैं।

❋ दूसरों के प्रति किए गए छोटे अपराध अपने लिए बड़े अपराध बन जाते हैं।

❋ दुनिया की नजरों से भले ही सब कुछ छिपा लें परंतु भगवान की नजर से आप कुछ भी नहीं छिपा सकते।

❋ दिमाग के लिए अध्ययन की उतनी ही जरूरत है, जितनी शरीर को व्यायाम करने की।

❋ दुनिया के प्रत्येक मनुष्य भोजन, निद्रा, भय, मैथुन पशुओं के समान ही करते हैं, किंतु मनुष्यों में ज्ञान अधिक होता है, जबकि ज्ञान रहित मनुष्य पशु के समान होता है।

❋ दुर्जन व्यक्ति की पहचान निंदा करते हुए उसकी प्रसन्नता द्वारा व्यक्त होती है।

❋ थके हारे पति को जिस घर में चैन न मिले ऐसा पति घर होते हुए भी बेघर है।

❋ काम करने से पहले सोचना बुद्धिमानी, काम करते हुए सोचना सतर्कता और काम करने के बाद सोचना मूर्खता है।

❋ आशा उस वक्त भी आपके साथ रहती है, जब दु:ख में हर व्यक्ति आपका साथ छोड़ चुका हो।

❋ साहस व संपत्ति साथ रहते हैं।

❋ धैर्य प्रतिभा का एक आवश्यक अंग है।

❋ दया मनुष्य का स्वाभाविक गुण है।

❋ घर की खुशहाली में स्वभाव का बड़ा महत्व होता है।

❋ जिंदगी का अर्थ सिर्फ सांस लेना नहीं है, संवेदना विहीन व्यक्ति को मरा ही समझना चाहिए। जिसमें महसूस करने की सामर्थ्य होगी, वही किसी के लिए कुछ करने की बात सोचेगा और किसी के लिए कुछ करेगा भी।

❋ पुरुष जीवन को जल्दी पहचानते हैं, नारियां विलम्ब से।

❋ जो प्रतिशोध का विचार करता है, वह स्वयं अपने घाव को नासूर बनाता है।

❋ झूठ बोलना तलवार के घाव के समान है, घाव भर जाएगा, किंतु उसका निशान सदा बना रहेगा।

❋ नम्रता सारे गुणों का दृढ़ स्तम्भ है।

❋ जो क्षण प्रसन्नता प्रदान करते हैं, वे हमें बुद्धिमान भी बनाते हैं।

❋ दुर्जनों के साथ की गई भलाई सज्जनों के साथ की गई बुराई के समान है।

❋ दया की भाषा को बहरे व गूंगे भी समझ सकते हैं।

❋ चरित्र का हीरा विपदाओं के तमाम पाषाण खण्डों को भी काट देता है।

❋ देवताओं की समीपता पाने के लिए इच्छाओं में कमी करना चाहिए। आत्मा इच्छाओं को बल और बढ़ावा देती है।

❋ क्षणभर में जल जाना। देर तक सुलगने से अच्छा है। अत: क्रोध का कारण सामने आते ही प्रकट कर देना चाहिए।

❋ यह सबसे बड़ी त्रासदी है कि हम सभी सदा एक-दूसरे से डरे रहते हैं।

❋ कीर्तिवान व्यक्ति के लिए कीर्तिनाश की अपेक्षा मृत्यु श्रेयस्कर है।

❋ दु:ख यदि मौत के लिए है तो वह अज्ञानता की कोख से पैदा होता है।

❋ छोटे से बीज में विशाल वृक्ष छिपा होता है।

❋ गालियों का उत्तर मौन से दें। गाली के उत्तर में गाली तो मूर्ख भी देता है।

❋ सर्दी, गरमी, अनुराग, संपत्ति अथवा दरिद्रता जिसके कार्य में विघ्न नहीं डालते, वही पंडित कहलाता है।

* एक मनुष्य को उससे अधिक वायदे नहीं करने चाहिए, जितने वह निभा सके।

* अपने अज्ञान का आभास होना ही ज्ञान की ओर एक बढ़ा कदम है।

* परोपकार न करनेवाले मनुष्य को धिक्कार है। क्योंकि पशु भी परोपकार के लिए अपना चमड़ा देते हैं।

* प्रत्येक प्रकार की व्याधियां क्षम्य हो सकती हैं लेकिन मनुष्य निरंकुश तथा असंवेदनशील हो जाए, वह कभी भी क्षम्य नहीं हो सकती।

* पराये धन की चोरी, पर स्त्री के साथ संसर्ग और अच्छे लोगों पर शंका। यदि यह तीन दोष आपमें हैं तो आप विनाश को दावत दे रहे हैं।

* संसार में मनुष्य को सद्‌गुण पाने के प्रयास करने चाहिए न कि आडम्बर। बांझ गाय के गले में यदि घंटी बांधी जाए तो भी वह बाजार में नहीं बिकती।

* अहंकार का नाश करके जिन्होंने आत्मानंद प्राप्त किया है, उन्हें और कुछ पाना बाकी नहीं रह जाता। अहंकार तो रावण का भी नहीं रहा, फिर तुम क्या चीज हो।

* आलोचक प्राय: वे ही व्यक्ति बनते हैं, जो कला और साहित्य के क्षेत्र में असफल रहते हैं।

* जो अपनी बुराइयों पर विजय प्राप्त कर लेता है, वही अजेय होकर संसार पर शासन कर सकता है।

* असफलता केवल यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयत्न पूरे मन से नहीं हुआ।

* अपनी निंदा सहने की शक्ति रखनेवाला व्यक्ति मानो विश्व पर विजय पा लेता है।

* सुख को संतोषी व्यक्ति के हृदय में देखिए विलासी के हृदय में उसका वास नहीं।

* असंतोष किसी भी जाति के व्यक्ति की उन्नति की पहली सीढ़ी है।

* चिंता और शहद की मक्खी को जितना हटाओ उतना ही चिपटती है।

* प्रशंसा तो भाग्य से मिलती है ईमानदार आप स्वयं बन सकते हैं।

* तटस्थ आदमी शैतान के साथी होते हैं।

* आप यह सोचकर मुझे गालियां देते हो कि मुझे कष्ट होगा लेकिन सच्चाई यह है कि गालियों ने सदा मुझे लाभ पहुंचाया है।

* तर्कों, वादों, कटु संघर्षों में खोए जन, निर्मित कर सकते न सौंध सामाजिकता की।

* झगड़े से बचना उचित है, अगर उसमें आप पड़ ही जाएं तो बैरी को अपना तेज, बल और पौरुष दिखा दें।

* अगर आप चाहते हो कि लोग आप पर विश्वास करें, तो आप उन पर विश्वास करना आरंभ कर दो।

* ठोकर खाया हुआ नौकर ठोकर खाए दुश्मन से ज्यादा खतरनाक होता है।

* झक्की को सुधारने न जाओ, वह तुम्हें भी बिगाड़ देगा।

* जिसके लिए आपका अंतरंग प्रेरणा दे वह सर्वोत्तम है।

* जो कुछ मानवतापूर्ण है, वही अमर रहेगा।

* जो कुपथ पर पग रखते हैं, उनमें तनिक भी बुद्धिबल नहीं रह जाता।

* जो मनुष्य आए हुए हर्ष या शोक को नहीं संभाल सकता वह ऐश्वर्य पाकर, जल में नष्ट हुए कच्चे घड़े की भांति टूटकर बिखर जाता है।

* जैसे आकाश से गिरा जल समुद्र को प्राप्त होता है, उसी प्रकार सब देवताओं को किया गया नमन केशव को प्राप्त होता है।

* जिन पण्डितों को परमार्थ का ज्ञान होता है, उनका अपमान नहीं करना चाहिए।

* जीभ को जीत लेना सब वस्तुओं को जीत लेने के बराबर है।

* जितने भी दिन जियो फूल बनकर जियो, कांटा बनकर मत जियो।

* जिस प्रकार बिना भूख के खाया हुआ भोजन नहीं पचता, उसी प्रकार बिना दु:ख के सुख भी नहीं पचता।

* जो दूसरों से सम्मान नहीं चाहते और स्वयं दूसरों को सम्मान देते हैं तथा सम्मानीय पुरुषों को नमस्कार करते हैं वे दुर्गम संकटों से पार हो जाते हैं।

* जब दिल में जगह हो तो घर में जगह बन जाती है।

* तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ विशुद्ध हृदय है। पवित्र वस्तुओं में अति पवित्र भी विशुद्ध हृदय है।

* जो लोग यह सोचते हैं कि वे किसी भी प्रकार की सेवा करने के योग्य नहीं हैं, लगता है कि वे जानवरों और वनस्पतियों को भूल जाते हैं।

* जिस सौंदर्य में भोलेपन की झलक नहीं, वह बनावटी सौंदर्य है।

* जो मनुष्य दूसरों के सुख का नाश करके सुखी होने की आशा करता है, वह बड़ा ही अभागा है। ऐसे कर्मों से भगवान की अप्रसन्नता और परिणाम में असीम दु:खों की प्राप्ति होती है।

* जो अधिक धन का स्वामी होकर भी इंद्रियों पर अधिकार नहीं रखता, वह ऐश्वर्य से भ्रष्ट हो जाता है।

* अच्छे कामों की सिद्धि में बड़ी देर लगती है, पर बुरे कामों की सिद्धि में यह बात नहीं होती।

* निराशा में प्रतीक्षा अंधे की लाठी है, जो वार ही करती है।

* स्वभाव ही इस बात के लिए जिम्मेदार होता है कि दोष देखने के बाद वह समस्त गुणों को भी भूल जाता है।

* भाग्यशाली को जीवन छोटा और भाग्यहीन को लंबा लगता है।

* बुराई भरे विचार और सद्विचार प्रत्येक काल में रहे हैं। महत्व इस बात का है कि हम किन विचारों को ग्रहण करते हैं।

* जो आदमी तौलकर बात नहीं करता, उसे सख्त बात सुननी पड़ती है। अगर किसी की कड़वी बात न सुनना चाहो तो उसका मुंह मीठा करो।

* गरीबी विनम्रता की परीक्षा और मित्रता की कसौटी है।

* प्रसन्नता आत्मा को शक्ति प्रदान करती है। दूसरों को प्रसन्न रखने की कला प्रसन्न होने में है।

* जो दूसरों की भलाई करना चाहता है, उसने अपना भला तो कर ही लिया।

* दया के द्वारा आप अपने गुणों में एक श्रृंगार बढ़ाते हैं। दया धर्म की जननी है।

* चरित्र की पहचान के लिए संगति की आवश्यकता नहीं। वार्तालाप से ही उसका ज्ञान हो जाता है।

* इच्छा पर विचार का शासन रहता है। अभिलाषा सब दु:खों का मूल है।

* वह मनुष्य वास्तव में बुद्धिमान है जो क्रोधावस्था में भी गलत बात मुंह से नहीं निकालता।

* स्वत: भय से अधिक भयानक और कुछ भी नहीं।

* गाली के उत्तर में मूर्ख गाली दे बैठते हैं। ज्ञानी मौन से जवाब देते हैं।

* संसार में अपने गुणों को, अपने पंखों को फैलाना सीखो, क्योंकि दूसरों के गुणों से और पंखों से न विद्वता सम्भव है न उड़ान।

* जो अहंकारी को शिक्षा देता है, उसे स्वयं शिक्षा की आवश्यकता है।

* पवित्रता, धैर्य और अध्यवसाय, इन्हीं तीन गुणों से सफलता मिलती है और यह सर्वोपरि है लेकिन इनसे ऊपर है प्रेम।

* संतोष पाए हुए व्यक्ति शांत चित्त होते हैं, धन के लोभ में भटकनेवालों को वह शांति नसीब नहीं हो सकती।

* चिंतित व्यक्ति के मन में राक्षस अपना स्थायी डेरा जमा लेता है, फिर वह न कार्य आरंभ करने देता है और न सफलता प्राप्त करने देता है।

* जब कोई आदमी आपसे नसीहत चाहता है, तो वास्तव में आपकी प्रशंसा चाहता है।

* चालीस वर्ष की अवस्था युवावस्था का वृद्धत्व है और पचास वर्ष की अवस्था वृद्धावस्था का तारुण्य।

* जब तक फल न मिलें तब तक साधना जारी रखनी चाहिए।

* जो जल्दी सोता है और जल्दी उठता है, वह स्वस्थ, संपन्न और मेधावी होता है। जब तक शरीर स्वस्थ और नीरोग है और मृत्यु दूर है, तभी तक अपने कल्याण के उपाय करते रहना चाहिए, मृत्यु हो जाने पर कुछ नहीं किया जा सकता।

* जो जैसी संगति करता है, वैसा ही फल पाता है।

* जो सीखता है, मगर विद्या का प्रयोग नहीं करता, वह किताबों से लदा भारवाहक पशु है।

* जब ईश्वर रक्षक हो तो नुकसान पहुंचाने की किसीमें भी हिम्मत नहीं।

* जो बेवकूफों के सम्मुख विद्वान दिखना चाहते हैं, वे विद्वानों को बेवकूफ दिखेंगे।

* जहां अपूज्यों की पूजा होती है तथा पूज्यों का अपमान होता है, वहां दुर्भिक्ष, मरण तथा भय ये तीनों होते हैं।

* जो मनुष्य अपने भाई, मित्र और गुरु व स्वामी की शिक्षा को शिरोधार्य कर नहीं मानता वह जी भरकर पछताता है और हानि उठाता है।

* जो अपने ऊपर शासन नहीं करेगा, वह सदैव दूसरों का सेवक रहेगा।

* जिसके पास विद्यारूपी नेत्र नहीं, वह अंधे के समान है।

* जो व्यक्ति अपना रहस्य अपने सेवक को बताता है, वह सेवक को अपना स्वामी बना लेता है।

* जिस घर में मूर्खों की पूजा नहीं होती, जहां अन्न का संचित भण्डार रहता है तथा जिस घर में स्त्री-पुरुष में कलह नहीं होती, उस घर में लक्ष्मी सर्वदा विद्यमान रहती है।

* जो व्यक्ति अकेले में आपका दोष बताए, उसे अपना मित्र समझो।

* हर साल एक बुरी आदत को जड़ से खोदकर फेंका जाए तो कुछ ही साल में एक बुरा आदमी भी एक भला मनुष्य बन सकता है।

* जो मित्रता बराबरी की नहीं होती, वह हमेशा घृणा में ही समाप्त होती है।

* जो कायर है, जिसमें पराक्रम नहीं है, वही भाग्य पर भरोसा करता है।

* हर शख्स जिससे आप मिलते हो वह किसी न किसी बात में आपसे बढ़कर है। यह सोच रखनेवाला बहुत कुछ सीख सकता है।

HHH(४८४)HHH

❋ कर्म निर्णायक है सुख और दु:ख का। पाप कर्म से दु:ख, शुभ कर्म से सुख प्राप्त होता है और न किया हुआ कर्म कोई फल नहीं देता।

❋ जीवन में ऐसे अवसर भी आते हैं, जब निराशा में भी आशा होती है।

❋ तत्वज्ञान होने से मनुष्य का पूर्ण स्वभाव बदल जाता है।

❋ जिसके जीवन को उसके इर्द-गिर्द की जनता चाहती है। वह सच्चा धनी है।

❋ केवल मूर्ख और मृतक ही अपने विचारों को कभी नहीं बदलते।

❋ खामोश रहो या फिर ऐसी बात कहो, जो खामोशी से बेहतर हो।

❋ मौन उस अज्ञानी के लिए आभूषण है जो ज्ञानियों की सभा में जा बैठा है।

❋ विनम्रता शरीर की अंतरात्मा है। जिसमें विनय नहीं, वह विद्वान नहीं।

❋ प्रसन्न रहना सीखिए, यही श्रेष्ठ पूजा है। मन की प्रसन्नता से आप अपने तमाम मानसिक व शारीरिक रोग दूर कर सकते हो।

❋ जो दूसरों की बुराई करते हैं, वे खुद निंदित होते हैं।

❋ जिसमें दया नहीं, उसमें कोई सदगुण नहीं है।

❋ चरित्र वही है जो कि आप जानते हैं कि आप हैं, वह नहीं है जो दूसरे लोग सोचते हैं कि आप हैं।

❋ यौन आनन्द उठाने की इच्छा सबसे बुरी इच्छा है अर्थात आप संतान उत्पन्न करने की विद्या का दुरुपयोग करते हैं।

❋ क्रोध ज्ञानी पुरुषों के हृदय में ही निवास करता है।

❋ भय वह कर है, जिसे अंत:करण अपराधी को देता है।

❋ सुख के मंदिर में ही अज्ञान रूपी विषाद की सर्वश्रेष्ठ समाधि है।

❋ धन ऐसी शक्ति है जिससे अवगुणों पर आवरण पड़ जाता है, लेकिन अच्छे गुण निर्धनता के द्वारा ही पोषित होते हैं।

❋ अहंकार आदमी की सभी उपलब्धियों पर पानी फेर देता है।

❋ जीवन की सफलता इसमें है कि किसी की गुलामी किए बिना जीवन बिताए। पराधीन को जीवित कहें तो फिर मृतक कोई नहीं है।

❋ संतोष स्वाभाविक संपत्ति है, विकास कृत्रिम निर्धनता है।

❋ एक चिन्ता सैकड़ों दूसरी चिंताओं को जन्म देती है।

❋ प्रशंसा अच्छे गुणों की छाया है और गुणों की छाया के अनुसार योग्यता साबित करती है।

❋ जो आराम करता है, उसका भाग्य भी आराम करता है। जो उठ खड़ा होता है, उसका भाग्य भी उठ खड़ा होता है। जो लेटता है, उसका भाग्य भी धराशायी हो जाता है। जो आगे बढ़ता है, उसका भाग्य भी आगे बढ़ता है।

❋ श्रेष्ठ पुरुष वही है, जो दूसरों के हित में लगा हुआ है।

❋ सबसे कठिन ये कार्य हैं- रहस्य अप्रकट रखना, कष्ट को भूल जाना और अवकाश का सदुपयोग करना।

❋ हो सकता है कि आपका मोती एक और गोते की प्रतीक्षा कर रहा हो।

❋ हताश न होना ही सफलता का मूलमंत्र है।

* हजार झूठ बोलने के पीछे पहला झूठ जिम्मेदार होता है।

* स्वयं को वश में रखने से ही मनुष्यत्व प्राप्त होता है।

* सुनना सीखो, आपको उन लोगों से भी लाभ ही होगा, जिन्हें ठीक प्रकार से बातचीत करना भी नहीं आता।

* सिवाय मूर्ख के कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं जो सदैव सही (ठीक रास्ते पर) हो।

* सबसे पक्का नियम या कानून जो हम जानते हैं, यह है कि व्यक्ति सदैव ही अपने को भला आदमी बताता है, वह कभी भी भला आदमी नहीं हो सकता।

* साधना मार्ग में मनुष्य की वैसी ही परीक्षा होती है जैसे आग की भट्टी में सोने की।

* सहनशीलता और संयम खोकर कोई भी गृहस्थ धर्म का उचित पालन नहीं कर सकता।

* सुनो सबकी लेकिन निर्णय अपना करो।

* सेवा का फल कभी व्यर्थ नहीं जाता।

* स्वयं के अध्ययन की संपत्ति से परमात्मा को भी पाया जा सकता है।

* सुख चैन की सूखी रोटी उस स्वादिष्ट व्यंजन से अच्छी है जिन्हें लड़ाई-झगड़े करके अर्जित किया जाता है।

* सेवा करके विज्ञापन नहीं करना चाहिए, जिसकी सेवा की है, उस पर बोझ मत डालो। नहीं तो आपकी सेवा पुन: स्वीकार करने में उसे संकोच होगा और पिछली सेवा के लिए जो उसने स्वीकार की थी, उसके मन में पछतावा होगा।

* सबसे अच्छी सुगंध वीरता के प्रसिद्धिपूर्ण कार्यों में है।

* सुख चाहते हो तो विद्या छोड़ दो, वह तुम्हारे पास नहीं आएगी। यदि विद्या चाहते हो तो सुख का त्याग करो।

* सुखों को बाहर मत तलाशो उसे हृदय में खोजो।

* सुखों के पलायन के पश्चात हमें उनका महत्व समझ में आता है। सुख में रहते समय उनका महत्व नहीं जान पाते।

* सदा सुख मिले, यह मुमकिन नहीं है।

* समझदारी के मामले में स्त्रियां पुरुषों से अधिक बुद्धिमान होती हैं। वह पुरुष से कम जानती हैं किन्तु उनसे अधिक समझती हैं।

* स्वयं को परखते रहिए, दु:खों से मुक्ति मिलती रहेगी।

* संसार में रहकर भी संसार को अपने भीतर प्रवेश न करने दो। यह विवेक का लक्षण है।

* सच्चा मित्र उस दर्पण के समान है जो आपके दोषों को दोष बताता है और गुणों को गुण बताता है।

* सम्पन्न होनेपर मित्रों की संख्या में वृद्धि हो सकती है, किन्तु उनकी परख विपदा में ही होती है।

* संसार में ऐसा कोई स्थान नहीं है, जहां पैदा होनेवाला मरा न हो।

* सम्पन्नता की परख मन की शान्ति से होती है, बड़प्पन की परख बुद्धि से होती है।

* सहानुभूति की भाषा को विश्व के समस्त प्राणी समझते हैं।

* स्त्री प्रसन्न है तो परिवार प्रसन्न है, वह दु:खी है तो परिवार में कुछ अच्छा नहीं।

* कोई व्यक्ति हमेशा दु:ख नहीं भोग सकता। कोई भी व्यक्ति जीवन भर कष्ट में नहीं रहेगा। प्रत्येक कर्म का फल और उसी अनुसार ही व्यक्ति सुख या दु:ख भोगा करता है।

❋ जिसके पास आशा से बंधे कर्म हैं, उसके पास सबकुछ है।

❋ जल तो आग की गरमी पाकर ही गरम होता है, उसका अपना स्वभाव तो ठण्डा ही होता है।

❋ जीवन हर इंसान को प्रिय है, किंतु शूरवीर को अपना सम्मान जीवन से भी अधिक मूल्यवान और प्रिय है।

❋ मनुष्य के विचार उसके जीने के ढंग से जाने जाते हैं।

❋ कितना भी दु:खद विषय हो, उसकी चर्चा कठोर भाषा में नहीं करनी चाहिए।

❋ धन्य हैं वे लोग जो नम्र हैं, वे ही पृथ्वी के अधिकारी होंगे।

❋ प्रसन्नता देह और मन दोनों की मित्र है।

❋ दयालु बनने का एक सबसे बड़ा फायदा तो यही है कि आप बिना खर्च किए प्रसिद्धि पाते हैं।

❋ मनुष्य का चरित्र वह वस्त्र है जो विचारों के धागों से बनता है।

❋ सारी आफत इच्छा और कामवासना में है, नहीं तो इस दुनिया में सबकुछ मीठा ही मीठा है।

❋ क्रोधी मनुष्य के पास और कोयले की खदान में काम करनेवाले के पास क्रमश: क्रोध और कालिमा आती है।

❋ जैसे पके फलों को गिरने के अतिरिक्त कोई भय नहीं, उसी प्रकार जिसने ज्ञान लिया है, उस मनुष्य को मृत्यु के अतिरिक्त कोई भय नहीं। मृत्यु अटल है, अत: उससे भी भय नहीं। असली भय तो मृत्युपूर्व किए कर्मों का है।

❋ जिसने एक बार भी ज्ञानरूपी अमृत का स्वाद ले लिया, वह सब कार्यों को छोड़कर उसी की ओर दौड़ पड़ता है।

❋ गुणवान में गुण के अलावा कुछ नहीं देखा जाता। गुण सब स्थानों पर अपना आदर करा लेता है।

❋ लोग जीवन में कर्म को महत्व देते है विचार को नहीं। जो जानता है इच्छा करता है और प्रयत्न करता है एक ऐसी प्रक्रिया है कि जानना और इच्छा करना विचार के ही पहलू है। विचारों का ही विस्तार अतीत, वर्तमान और भविष्य है। आज आप जो भी हैं, अपने विचारों के परिणामस्वरूप ही हैं भविष्य का निर्धारण आपके वर्तमान विचार ही करेंगे।

❋ परस्पर विरोधी विचारों में एकता कराने से बढ़कर दुष्कर कर्म और नहीं है।

❋ जो अन्य से आशा नहीं करता, वही शूर है।

❋ जीवन में बुद्धि का नहीं, लक्ष्मी का साम्राज्य है।

❋ बुरे विचार ही हमारी सुख-शांति के शत्रु हैं। सुन्दर विचार, अनमोल धन हैं।

❋ शब्द से ही सृष्टि का उद्‌गम है और उसी में सृष्टि का विनाश और पुन: शब्द से ही सृष्टि की नई रचना होता है।

❋ किसी महान व्यक्ति की प्रथम परीक्षा उसकी नम्रता से ही होती है।

❋ दयाशील का अन्त:करण प्रत्यक्ष स्वर्ग है।

❋ चरित्रवान ऐसी चट्टान की तरह होता है, जिसका तेज-से-तेज हवाएं कुछ नहीं बिगाड़ पातीं, बल्कि उससे टकराकर वे अशक्त हो जाती हैं। तेज से तेज लहरें उसको बहा नहीं पातीं, बल्कि तराशती हैं उसे, और वह चमक उठता है अनमोल हीरे की तरह, जिसे देखकर लोगों के मुख से सहजरूप से वाहवाही निकलती है। चरित्रवान से संसार के लोग ही नहीं, स्वयं भगवान भी प्यार करते हैं। क्योंकि संसार के प्रलोभनों से स्वयं को बचाकर ले जाना साधारण व्यक्ति का काम नहीं होता, देवता भी कहां संभाल पाते हैं अपना चरित्र, इसीलिए चरित्रवान व्यक्ति देवताओं द्वारा भी पूजा जाता है। **साथ जब छोड़ जाते हैं साथी, खूबियां अंग-संग चलती हैं।**

* जो पत्नी हर समय क्रोध करती रहे, उसे त्याग देना ही सुखकर है।

* जिससे प्राय: हम डरते हैं, कालांतर में उसी से घृणा करते हैं।

* जो लोग सदैव दूसरों की निंदा में लगे रहते हैं, उनसे बचना चाहिए।

* घृणा करनेवाले मनुष्यों के होठों पर मीठी-मीठी बातें होती हैं, पर हृदय में कपट बसता है।

* किसी की आलोचना मत करो। इससे तुम स्वयं को आलोचना से बचा लोगे।

* मानव के अंदर जो सर्वोत्तम गुण हैं उन्हें विकसित करने के लिए प्रशंसा तथा प्रोत्साहन में कमी नहीं रखनी चाहिए।

* अपनी भूल को स्वीकार करने में जो गौरव है, वह भूल को चिरायु रखने में नहीं।

* किसी भी अवस्था में अहंकार न होने दें। अज्ञानी आत्मा पाप करके भी अहंकार करता है।

* जो युवा पुरुष सब बातों में दूसरों का सहारा चाहते हैं, जो सदा ही नया अगुआ ढूंढा करते हैं और उनके अनुयायी भी बना सकते हैं, वे आत्मसंस्कार के कार्य में उन्नति नहीं कर सकते।

* मनोयोग और पुरुषार्थ ही विजय का सेतु है, कोई बल से संयुक्त होने पर ही प्रमाद करे तो वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सकता।

* संतोष बड़ी से बड़ी दौलत से भी अच्छा है। जहां सन्तोष है, वहां भगवान है, जहां भगवान है, वहां सन्तोष है।

* जिसे सन्तोष है, वह सदा सुखी है। जिसे सब तरह से सन्तोष है, वही धनवान है। सन्तोष ही आनन्द का मूल है।

* मनुष्य चिंता से नहीं मर पाता, सूख जाता है।

* आप स्वयं अपनी प्रशंसा नहीं करें, चाहे फिर कोई कितनी भी तुम्हारी निन्दा करे, तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

* आज तक स्त्री को कोई नहीं समझ सका।

* सहानुभूति से आत्मबल बढ़ता है और संताप कटता है। सहानुभूति एक मानवीय गुण है। सहानुभूति अच्छे हृदय की निशानी है।

* सम्मान की आशा रखनेवाले व्यक्ति से सम्मान दूर भागता है और जो सम्मान से दूर रहना चाहता है सम्मान उसके पीछे-पीछे भागता है। योग्यता के बिना सम्मान प्राप्त नहीं होगा और योग्यता है तो इंसान चाहे स्वयं को कितना भी छिपए, सम्मान उसे महिमा मंडित अवश्य करता है- भले ही देर से।

* सज्जन की सलाह को न माननेवाला और दूसरों के द्वारा विशेष बननेवाला मारा जाता है।

* यह आपको सोचना है समस्या के अंग हैं या समाधान के संग हैं।

* सांप को दूध पिलाने से उसके विष में ही वृद्धि होती है, दुष्ट को सम्मान देने से उसकी दुष्टता में ही वृद्धि होती है।

* सभी प्रकार के अंत अपने साथ नई शुरुआत का संदेश लेकर आते हैं।

* सलाह तो अनेक प्राप्त करते हैं, किंतु उससे लाभ उठाना बुद्धिमानों को ही आता है।

* सज्जन व्यक्ति मिलते हैं तो दो-दो बातें होती हैं, गधे मिलते हैं तो दो-दो लातें होती हैं।

* सच्ची मदद लेने और देने से दोनों का विकास होता है।

* सबसे बड़ी मूर्खता स्वास्थ्य को किसी अनिश्चित लाभ के पीछे बरबाद कर देना है।

* सब मनुष्य भाई हैं, इनमें जन्म से कोई ऊंचा या नीचा नहीं है। परमात्मा सबका पिता, पृथ्वी सबकी माता है।

✻ स्वाभिमान, आत्मज्ञान और आत्मसंयम ये तीन ही जीवन को अलौकिक शक्ति की ओर ले जाते हैं।

✻ समुद्र में अनेकों नदियां समा जाने पर भी वह विचलित नहीं होता, अचल ही बना रहता है, ठीक इसी प्रकार जिस मनुष्य को सुख और दुख विचलित नहीं करते, वह शांति का अधिकारी है।

✻ स्पष्टभाषी प्राय: धोखेबाज नहीं होता।

✻ सिद्धान्तों की रक्षा के लिए मनुष्यों की हत्या करना बुद्धिमानी नहीं। अहिंसा और मानवता को त्यागकर मानव, मानव नहीं रह सकता।

✻ सामनेवाले की बात सुनने-समझने के बाद प्रतिक्रिया ऐसी व्यक्त करें कि वह सदा के लिए आपका बन जाए।

✻ सावधान चित्त के बनो, पर साथ ही बहुत चिंतन भी मत करो। हीन विचारों से मुक्त और ब्रह्मपरायण बनो।

✻ शिक्षा का अर्थ केवल मानव को वह व्यवहार करना सिखाता है, जो उनके अपेक्षित है और वह उसे नहीं करते हैं।

✻ वर्ग या जाति केवल एक है। वह है मानवता। भाषा केवल एक है हृदय भाषा। धर्म केवल एक है- प्रेम धर्म। ईश्वर एक है- वह सर्वशक्तिमान है।

✻ सैकड़ों हाथों से इकट्ठा करो और हजारों हाथों से बांटो।

✻ सब धोखों से खराब अपने आपको धोखा देना है।

✻ सज्जन न्याय का ही अवलंबन करते हैं। वे अन्याय का परिणाम जानते हैं ।

✻ साहित्य सारे मानव समाज को सुंदर बना सकता है।

✻ शक्ति का गलत दिशा में प्रयोग करना ही पाप है।

✻ लोहा जब गरम हो तो उसे पीटना चाहिए, इस पर पॉलिश तो हम फुरसत में भी चमका सकते है।

✻ शराब पीना और कुछ नहीं, अपनी इच्छा से पागल होना है।

✻ वृक्ष से सीख, वह काटनेवाले को भी छाया देता है।

✻ लेकर दान देने की अपेक्षा, न लेना ही बढ़िया है।

✻ वासना से बढ़कर कोई अग्नि नहीं, घृणा से बड़ा पाप नहीं। शरीर से बड़ा कोई रोग नहीं और शांति से बढ़कर कोई सुख नहीं।

✻ जिस कार्य को तुम्हें हर प्रकार करना ही है, उसे मुस्करा कर करना ही सहकारिता है।

✻ पहले सब चीजे देखें फिर उचित निर्णय के साथ कार्य आरंभ करें। लेकिन आरंभ करके छोड़ देने के बजाय आरंभ न करना अच्छा।

✻ आशा बुद्धि को धोखा दे जाती है।

✻ अच्छा स्वभाव शहद की मक्खी की तरह है, जो प्रत्येक झाड़ी से शहद ही निकालती है।

✻ इस बात का कोई महत्व नहीं कि मनुष्य मरता किस प्रकार है, महत्व इस बात का है कि वह जीवित किस प्रकार रहता है।

✻ संसार में न तो कोई हमारा शत्रु है न ही कोई मित्र। उनके प्रति हमारे विचार मित्र और शत्रु का अंतर करते हैं।

✻ अधिक देखें, अधिक सुनें, किन्तु बोलें कम। अल्पभाषी सर्वोत्तम मनुष्य है।

✻ इतने विनम्र न बनो, आप इतने बड़े आदमी नहीं हो।

✻ दया की खोज में सभी के हाथ खड़े हो जाते हैं। दीन पर दया करने से ईश्वर प्रसन्न होता है।

* चरित्र की शिक्षा जीवन के ऊंचे मानदण्डों के लिए है, जीविका उपार्जन करने के लिए नहीं। चरित्र द्वारा शासित व्यक्ति वैसे ही श्रेष्ठ है, जैसे जीवित मृतकों से।

* क्रोध सागर की तरह बहरा और अग्नि की तरह उतावला है।

* यदि ईश्वर से प्रेम करना चाहते हो तो पहले मानव से प्रेम करना सीखो।

* अल्प ज्ञान खतरनाक होता है।

* जो व्यक्ति आपके सामने दूसरों की निंदा करता है, वह दूसरों के सामने आपकी भी निंदा करेगा।

* घृणा से घृणा को नष्ट नहीं किया जा सकता। घृणा को दूर करने के लिए प्रेम की आवश्यकता है।

* कोई तुम्हारी निंदा करे तो तुम प्रसन्न रहो, ऐसा करके वह तुम्हारा पाप अपने ऊपर ले रहा है।

* अपने दोष ढूंढ निकालना साहसी वीरों का काम है।

* जिसने गर्व किया उसका पतन हुआ। जो मनुष्य अहंकार करता है, उसका एक दिन पतन अवश्य ही होगा।

* घमंडी व्यक्ति दूसरों के घमंड को घृणा से देखते हैं।

* कष्ट और विपत्ति वह अध्यापक है जो हमें जीवन में विजयी होने की प्रेरणा देते हैं।

* जो इंद्रियों पर अंकुश रखते हैं, उनकी विजय होती है।

* जिसने अपनी इच्छाओं का दमन करके मन पर विजय पा ली है, चाहे वह राजा हो या रंक, उसे जगत में सुख ही सुख है।

* जो कुल सदाचार से हीन है, वे गौओं, पशुओं, घोड़ों तथा हरी-भरी खेती से संपन्न होने पर भी उन्नति नहीं कर सकते।

* जो विश्व की थोड़ी सी ही वस्तुओं से सन्तोष कर लेता है, वह सच्ची शान्ति पाता है।

* शक्तियां होते हुए भी उनका उपयोग नहीं हो पाता, यदि दिल में चिंता हो।

* चिता जलाए मुर्दे को, चिंता जलाए जिंदा को।

* ध्वनियों में सबसे मधुर है प्रशंसा की ध्वनि।

* लुकमान हकीम से पूछा गया कि आपने विद्वता किससे सीखी उन्होंने कहा- नेत्रहीनों से, वह जब तक जगह टटोल नहीं लेते, पैर नहीं रखते।

* वाचालता से बड़ी है खामोशी।

* लोगों से नफरत करना इस प्रकार है जैसे कि आप चूहों को भगाने के लिए अपने मकान में स्वयं ही आग लगा दें।

* लक्ष्मी शुभकर्मों से उत्पन्न होती है, चतुरता से बढ़ती है, निपुणता से जड़ बांधती है और संयम से स्थिर रहती है।

* रखवाली का दायित्व चोर पर डाल दिया जाए तो उसे शाह बनाने के लिए आप यह पहला कदम उठाएंगे।

* रात्रि के अंधकार को दीपक की लौ जिस तरह प्रकाशमान कर देती है, उसी प्रकार आत्मचिंतन व्यक्ति के व्यवहार को देदीप्यमान कर देता है।

* रिवाज के कुएं में तैरना अच्छा है, उसमें डूबना आत्महत्या है।

* रात्रि की निद्रा दिन की निद्रा से वैसे ही बेहतर है, जैसे पत्नी किसी वेश्या से।

* यदि तुम सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने के आकांक्षी हो तो सबसे नीचे से चढ़ना शुरू करो।

* रोष उपयोग से बढ़ता है और संयम से घटता है।

✻ यदि कुछ लेना चाहते हो तो कुछ देना सीखो।

✻ यदि आप अपने बारे में दूसरे की राय जानने को उत्सुक रहते हो तो इसका अर्थ यह है कि आपकी अपने बारे में कोई राय नहीं है।

✻ यदि आपको अपनी इज्जत का खयाल है तो सदैव अच्छे लोगों से संपर्क रखिए, चूंकि बुरी सोहबत से अकेले रहना कहीं अच्छा है।

✻ यदि चाहते हो कि अच्छे लोग आपसे घृणा न करें, आपका आदर करें तो शिष्टाचार के नियमों का सावधानी से पालन करो।

✻ जो मनुष्य अपने क्रोध को अपने ही ऊपर झेल सकता है, वही दूसरों के क्रोध से बच सकता है।

✻ बुरी किताबें जहर हैं जो शरीर को नहीं आत्मा को मार डालती हैं।

✻ किसी को भी दूसरे के श्रम पर मोटे होने का अधिकार नहीं है। कर्म करना प्राणी मात्र का धर्म है।

✻ नास्तिक वह है जो स्वयं में विश्वास नहीं करता।

✻ यदि ईश्वर है तो हमें उसे देखना चाहिए, यदि आत्मा है तो हमें उसकी प्रत्यक्ष अनुभूति कर लेनी चाहिए, अन्यथा उन पर विश्वास न करना ही अच्छा है। ढोंगी बनने की अपेक्षा स्पष्ट रूप से नास्तिक बनना ज्यादा अच्छा है।

✻ अगर कोई व्यक्ति लम्बे समय तक बिल्कुल मौन रख ले, तो कुछ और करना न पड़ेगा, भीतर का विचार अपने आप टूट जाएगा।

✻ चुप रहने का नाम मौन नहीं है। चुप तो आदमी हजारों कारणों से रह जाता है। जब तक मन है, मौन नहीं। मन की मृत्यु का नाम मौन है। भीतर विचार न चलें, तरंगें न उठें, तो मौन।

✻ ज्ञान आत्मोद्धार का वह मार्ग है, जिसका केवल बौद्धिक विवाद करने से कोई तात्पर्य नहीं निकलता।

✻ मूर्खता सदा कष्टदायक ही होती है। इसी तरह जवानी से भी कभी सुख की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इन दोनों से भी अधिक कष्टदायक होता है किसी दूसरे के घर में निवास करना और किसी पर आश्रित होना।

✻ धनहीन होने और दरिद्र होने में अंतर है। धनहीन व्यक्ति श्रीमान हो सकता है और धनवान दरिद्र। क्योंकि दरिद्र तो वो है, जिसकी तृष्णा विशाल है, जिसकी और-और की भूख शांत नहीं होती।

✻ ऋण को थोड़ा, घाव को छोटा, आग को तनिक और कषाय को अल्प मान विश्वस्त होकर नहीं बैठ जाना चाहिए, क्योंकि ये थोड़े भी बढ़कर बहुत हो जाते हैं।

✻ सुख बाहर से मिलने की चीज नहीं, वह तो हमारे अंदर मौजूद है। मगर अहंकार छोड़े बगैर उसकी प्राप्ति नहीं होनेवाली।

✻ प्रकाश के आगमन पर अंधेरा चला जाता है। ऐसे ही ज्ञान के आगमन पर जीवन में जो भी कलुषित है, वह बह जाता है और तब जो शेष रह जाता है, वह संन्यास है।

✻ फल सदा भविष्य में है और कर्म सदा आज, अभी और यहीं। इसलिए जो कर्म में आनंद को प्राप्त नहीं करेगा वह फल से भी कभी संतुष्ट नहीं हो सकता।

✻ जो धुरंधर महापुरुष आपत्ति में दुखी न होकर सावधानी के साथ उद्यम का आश्रय लेता है तथा समय पर दुख भी सहन कर लेता है, उसके शत्रु सदा पराजित होते हैं।

* किया हुआ पुरुषार्थ ही देव का अनुसरण करता है, किंतु पुरुषार्थ न करने पर देव किसी को कुछ नहीं दे सकता।

* आशा दु:खियों के लिए एकमात्र औषधि है।

* जीवन संघर्ष में विजय पा लेना कोई सरल कार्य नहीं है इसके लिए कठोर साधना की आवश्यकता है।

* जीवन न तो सुखमय है न केवल भार रूप है, यह एक साधना है। जीवन परमात्मा तक का तीर्थ है।

* जीवन में मित्रता से अधिक और कोई प्रसन्नता नहीं।

* इस संसार में इच्छा बिना किसी मनुष्य का कोई काम कभी भी दिखाई नहीं देता। मनुष्य जो कुछ करता है, वह सब इच्छा के कारण।

* इसे करने से मेरा क्या लाभ होगा और न करने से क्या हानि होगी इस प्रकार भली-भांति विचार कर फिर मनुष्य कोई कर्म करे अथवा न करे।

* मीठा व्यवहार अवश्य मिलेगा, आप मीठे बोल बोलो।

* कठोर किन्तु हित की बात कहनेवाले लोग थोड़े ही होते हैं।

* हृदय केवल हृदय से ही बात कर सकता है क्योंकि उसके पास वाणी नहीं होती।

* चरित्र निर्माण का अर्थ है स्वयं को अनुशासित, सुसंगठित और व्यवस्थित बनाना।

* जिस राष्ट्र में चरित्रशीलता नहीं है, उसमें कोई योजना काम नहीं कर सकती।

* जो मनुष्य क्रोधी पर क्रोध नहीं बल्कि क्षमा करता है वह अपनी और क्रोध करनेवाले की महासंकट से रक्षा करता है। जहां क्रोध रहता है, वहां मृत्यु रहती है, जहां क्षमा रहती है, वहां भगवान रहते हैं।

* आत्मा ही ब्रह्म है। आत्मा स्वयं अदृष्ट रहकर भी दृष्टा है।

* लोभ को केवल एक ही शस्त्र से काटा जा सकता है और वह है ज्ञान। ज्ञान के अतिरिक्त इस महारोग की अन्य औषधि नहीं है।

* घृणा करनेवालों का मन वैसे ही मर-सा जाता है। जिस प्रकार मनुष्य का तन मर जाता है। घृणा पाप से करो, पापी से नहीं।

* आप कुछ लोगों को सदैव तथा सब लोगों को कुछ समय के लिए मूर्ख बना सकते हो किंतु सभी लोगों को सदैव मूर्ख नहीं बना सकते।

* घोर तथा निरंतर घृणा की भावना से न केवल कई बार पाचनशक्ति नष्ट हो जाती है, बल्कि भोजन का सात्विकरण तथा रक्त निर्माण रुक जाता है और मानसिक शांति नष्ट होकर चरित्र भी बिगड़ जाता है।

* आज सारा संसार चाहे जितनी भौतिक प्रगति कर ले, परंतु जब तक हमारा मन विषयों का दास है, काम, क्रोध, लोभ, हिंसा और द्वेष हमारे जीवन के साथ हैं, तब तक उन्नति नहीं होगी, सुख नहीं होगा। यह निश्चित है कि बुरे का परिणाम अच्छा नहीं होता। यह जो उन्नति है, वह वास्तव में अवनति है, क्योंकि कलह, द्वेष और वैर के मूल में भोग बाहुल्य और भोगासक्ति ही भौतिक प्रगति का कारण बनी है।

* जिस व्यक्ति में लोभ है, उसे दूसरे अवगुण की कोई आवश्यकता नहीं।

* घमंडी का घर खाली होता है। घमंड से आदमी फूल सकता है, फल नहीं सकता।

* जीतता वही है, जिसमें धैर्य, साहस और सत्य होता है।

* जिन्हें अपनी क्षमता पर विश्वास है, वे विजय प्राप्त कर सकते हैं।

* सफलता का मंत्र सिर्फ यही है कि वह घोर परिश्रम चाहती है।

* मूढ़ मनुष्य असंतोषी होते हैं, ज्ञानवान को संतोष प्राप्त होता है।

* तृष्णा आपको दु:ख देगी और आप उसे कठिनता से छोड़ पाओगे।

* चिंता जीवन में कायरता और विष भर देती है।

* एक बुद्धिमान पुरुष की प्रशंसा उसकी अनुपस्थिति में करनी चाहिए किंतु स्त्री की प्रशंसा उसके मुख पर।

* जिसका हृदय गरीबों के लिए रोता है, वही महात्मा है अन्यथा वह तो दुरात्मा है।

* यह सारा संसार मन का दास है अर्थात् जैसा मन चाहता है, यहां के लोग वैसा ही करते हैं। परंतु सदगुरु के दास तो विरले साधु-संत ही होते हैं। जो गुरु के सदुपदेश-ज्ञान प्रवचन को मानता है (गुरु सेवा-भक्ति करता है), उसका मत (सिद्धांत) अथाह गंभीर है।

* जिस प्रकार अन्न को पकाने का प्रत्यक्ष कारण अग्नि है, उसी प्रकार ज्ञान ही मुक्ति का प्रत्यक्ष कारण है, अन्य कोई साधन नहीं। क्योंकि बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं मिल सकती।

* क्रोध प्रीति को नष्ट करता है, मान विनय को नष्ट करता है, माया मैत्री को नष्ट करती है और लोभ सबकुछ नष्ट करता है।

* ऐसा कोई व्यक्ति न तो हुआ है, न होगा और न है, जो पूरी तरह से निन्दित हो या पूर्णत: प्रशंसित।

* जो जन्म और मृत्यु की पीड़ा से डरता है, उसे साधु की खोज करनी चाहिए।

* अपने को पुरुष अथवा स्त्री कहना, अपने को क्षुद्र, दीन-हीन जीव बतलाना असत्य और नास्तिकता है।

* जिसने अपनी भावनाओं को वश में कर लिया, उसने सबकुछ पा लिया।

* प्रेम- प्रेम को जगाता है। घृणा-घृणा को जगा देती है। हम जो देते हैं हम पर वही वापिस लौट आता है। यही शाश्वत नियम है।

* अपनी इंद्रियों पर अपना आधिपत्य बनाए रखना राज्य की स्थिरता का सबसे बड़ा आधार है।

* जो पुरुष अपने सुख में प्रसन्न नहीं होता, दूसरे के दु:ख में प्रसन्न नहीं होता और दान देने के बाद संताप नहीं करता है, उसे ही उत्तम पुरुष की संज्ञा दी गई है।

* कोई भी मानव अहंकार के संपूर्ण नाश के बिना आध्यात्मिक प्रगति नहीं कर सकता।

* सत्य को ग्रहण करने और अस्तेय को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

* डूबनेवाले के साथ सहानुभूति का अर्थ यह नहीं कि उसके साथ डूब जाओ, बल्कि तैरकर उसे बचाने का प्रयास करो।

* गुण सब स्थानों पर अपना आदर करा लेता है।

* अपने प्रसिद्ध मृतक बुजुर्गों की इज्जत हम उनके बताए हुए रास्ते पर चलकर ही कर सकते हैं।

* असहिष्णुता स्वयं हिंसा का रूप है और सच्ची प्रजातांत्रिक भावना के जन एवं विकास में बहुत बड़ी बाधा है।

* अगर आपने किसी जरूरतमंद की सेवा की तो धन्यवाद के पात्र आप नहीं, वह जरूरतमंद व्यक्ति है, क्योंकि उसने आपको सेवा का मौका दिया।

* अविद्या से उत्पन्न शक्ति नाशवान है, क्योंकि अविद्या विद्या से बाधित होती है। किंतु विद्या को बाधित करनेवाला कुछ भी नहीं है। इस कारण विद्या से उत्पन्न शक्ति अमर है।

* अपने दुख के दिनों का स्मरण करने से बड़ा दु:ख कोई और नहीं है।

* अहिंसा परम धर्म, परमतम, परम ज्ञान और परम पद है।
* अन्य सद्गुणों के विकास के लिए निर्भयता अनिवार्य है। प्यार और सच्चाई तक पहुंचना निर्भयता के बिना संभव ही नहीं है।
* अहिंसा की भावना से अनुशासित होकर ही प्राणियों पर अनुशासन करना चाहिए।
* अहिंसा की पूर्ण स्थिति होने पर उसके सानिध्य में सब प्राणी निर्भय हो जाते हैं।
* अहिंसा उस शक्ति का प्रतीक है। जो किसी प्रकार से कष्ट न पहुंचाए।
* अन्याय को हटाओ और मिटाओ लेकिन अपने आपको मिटाकर नहीं। अन्याय सह लेना भी अपराध है।
* अधिक वर्षों की आयु होने से, बाल सफेद हो जाने से, धन से अथवा बंधुओं के होने से भी कोई बड़ा नहीं माना जाता। हममें से जो उस परम तत्व को जानता है, वही बड़ा है। यह धर्म मर्यादा ऋषियों ने ही स्थापित की है।
* अनुपयुक्त समय पर युद्ध करनेवाला उपयुक्त समय पर युद्ध करनेवाले द्वारा मारा जाता है।
* अगर किसी को अपने से प्रेम है तो उसे पाप की ओर जरा सा भी नहीं झुकना चाहिए।
* अगर आप पढ़ना ही चाहते हो तो प्रत्येक मनुष्य का जीवन एक संपूर्ण ग्रंथ है।
* जब हम कोई काम करने की इच्छा करते हैं, तो शक्ति आप ही आ जाती है।
* कर्म की सार्थकता फल में नहीं, कर्मण्यता में है, उस पुरुषार्थ में है जो एक-एक कदम की गति, एक-एक कदम की चढ़ाई का आनंद लेता है। चढ़ाई के प्रयत्न का सुख इतना मीठा है कि उसकी तृप्ति की कोई सीमा नहीं।
* आशा तो बड़ी चीज है और फिर बच्चों की आशा। उनकी कल्पना तो राई को पर्वत बना देती है।
* धर्मरहित जीवन सिद्धान्त रहित जीवन है और सिद्धान्त रहित जीवन पतवार रहित नौका के समान है।
* हम प्रतिदिन वर्धमान रहते हुए सौ शरद्, सौ हेमन्त और सौ बसंतों तक जीवित रहें।
* अत्याचार की खिलाफत के लिए मनुष्य का जीवन प्राप्त हुआ है।
* विज्ञान व्यवस्थित ज्ञान है और बुद्धिमत्ता व्यवस्थित जीवन।
* वाणी ही मानव का ऐसा आभूषण है जो आभूषणों के सदृश कभी घिसता नहीं।
* मौन और एकांत पवित्र आत्मा के सर्वोत्तम मित्र हैं।
* हितकर किंतु अप्रिय वचन को कहने और सुननेवाले दोनों दुर्लभ हैं।
* मिट्टी का बर्तन और चरित्र एक बार भी गिर जाए तो चकनाचूर हो जाता है।
* जीवन सफलता की ओर है तो चरित्रवान होने का द्योतक है, अन्यथा पतन के साथ चरित्रहीन होने का।
* क्रोध से मनुष्य का विनाश होता है, इसलिए क्रोध को यमराज कहा जाता है। मूर्ख ही क्रोध करते हैं, ज्ञानी नहीं।
* एक सच्चा मित्र दो शरीर में एक आत्मा के समान है।
* स्वयं को ज्ञानवान समझना सबसे बड़ा अज्ञान है और अज्ञानी सदा दुखी रहता है।
* जिसके मन में संशय भरा हुआ है, उसके लिए न यह लोक है, न परलोक और न सुख ही है।
* दूसरों के दोष कितने ही छिपे हुए क्यों न हो, लोग उन्हें ढूंढ निकालने में समर्थ हो जाते हैं। किंतु अपने दोष चाहे कितने ही समीप क्यों न हों, उन्हें नहीं देख पाते।
* अहंभाव का नाश करना और आत्मा में अवस्थित होना ही परमानन्द है।

✻ सच्चा काम अहंकार और स्वार्थ को छोड़े बिना नहीं होता।

✻ यदि सफलता को चाहते हो तो निराशावादी विचारों को मन से निकाल बाहर करो।

✻ गलती कभी भी ज्ञान द्वारा नहीं बल्कि निर्णय द्वारा होती है।

✻ हृदय की विशालता ही उन्नति की नींव है।

✻ सभी प्रकार के संयम जुबान और जननेंद्रिय के नियंत्रण में है।

✻ धन और दौलत के बल पर संतोष कभी नहीं खरीदा जा सकता।

✻ ईंधन से जैसे अग्नि बढ़ती है, ऐसे ही सोचने से चिंता बढ़ती है। न सोचने से चिंता वैसे ही नष्ट हो जाती है जैसे ईंधन के बिना अग्नि।

✻ प्रशंसा अज्ञान की बेटी है।

✻ अपना उपकार ही दूसरों का उपकार है। जो अपना उपकार नहीं कर सकता, वह दूसरों का क्या उपकार करेगा।

✻ अपने जीवन में पाप और पुण्य का जिसने परित्याग कर दिया है, जो पवित्र और विवेकयुक्त है, वही वास्तविक रूप में भिक्षु है।

✻ अपने और श्रेष्ठ पत्नी के स्वास्थ्य की सुरक्षा स्वर्ण और मुक्ता के बराबर है।

✻ अच्छा स्वास्थ्य एवं अच्छी समझ जीवन में दो सर्वोत्तम वरदान हैं।

✻ अपनी प्रशंसा सुन जो वास्तविकता भूल जाते हैं, वे मूर्ख हैं। अपनी निंदा सुनकर मनुष्य अपने आपको संभालता है और प्रशंसा सुनकर स्वयं को खो देता है।

✻ अपनी मन का भेद दूसरे को कभी मत बताओ। मन का भेद दूसरे को बतानेवाले लोग सदा ही धोखा खाते हैं।

✻ अगर आप सेवा को अपना एकमात्र आनंद बना लेते हैं तो जीवन में दूसरे किसी आनंद की आपको जरूरत नहीं पड़ेगी।

✻ अशिक्षित व्यक्तियों के लिए सूक्ति ग्रंथों का अध्ययन उपयोगी है।

✻ अच्छे मित्र का यही लक्षण है कि वह मित्र के पाप को रोकता है, हितकारी कार्यों में लगाता है, उसकी गुप्त बातों को छिपाता है, उसके गुणों को प्रकट करता है, विपत्ति काल में उसका साथ नहीं छोड़ता और समय आने पर धन देता है।

✻ अकाल मृत्यु कदाचित हमारी दृष्टि में ईश्वर का सबसे बड़ा अन्याय है। यह विपत्ति, श्रद्धा और भक्ति का नाश कर देती है। हमें ईश्वरद्रोही बना देती है।

✻ अगर आप अपने रहस्य अपने शत्रु से बचाना चाहते हो तो अपने मित्र से भी उसकी चर्चा न करो।

✻ अपनी पीड़ा सह लेना और दूसरे जीवों को पीड़ा न पहुंचाना यही तपस्या का स्वरूप है।

✻ अगर आप अतीत पर पिस्तौल से गोली चलाओगे, तो भविष्य आप पर तोप से गोले बरसाएगा।

✻ अपनी विद्वता को अपनी घड़ी की तरह अपनी अंदर की जेब में रखो और उसे केवल यह दिखाने के लिए कि वह तुम्हारे पास भी है, न बाहर निकालो न ही पटको।

✻ अपने भीतर शांति हो जाने पर संसार शांत नजर आता है, चाहे पूरे संसार में आग ही लगी हो।

✻ अपमान को आगे व मान को पीछे रखकर मनुष्य को प्रयोजन सिद्ध करना चाहिए, स्वार्थनाश व्यावहारिक मूर्खता है।

✻ आप अपने आपको बड़ा समझ सकते हो पर किसी को छोटा समझने की भूल मत करो।

* प्रसन्न रहने के लिए आप आत्मविस्मृत हो जाओ, परोपकारी बनो, दूषित विचार दूर करने का यही एक उपाय है।

* प्रतिष्ठा आलसियों और अपाहिजों की तरह दूसरों के बल पर जीने में नहीं है, वह है स्वयं अपना कार्य करने में और पसीना बहाकर रोटी कमाने में।

* प्रत्येक काम को पूरी सावधानी से करो। किसी काम को छोटा समझकर उसकी उपेक्षा मत करो।

* मनुष्यों के कर्म उनके विचारों के सर्वोत्तम व्याख्याता हैं।

* पहले किए हुए कर्मों के द्वारा आप अपने भाग्य को पा रहे हैं।

* नर की सूची में वह व्यक्ति नहीं आते जिनमें देश के प्रति कर्त्तव्यशीलता नहीं।

* महान काम और महान बलिदान महान उपायों के बिना नहीं किए जा सकते।

* निराशा और आशा को धूप-छांव के समान समझें।

* अपना जीवन लेने के लिए नहीं, देने के लिए है। बल ही जीवन है और दुर्बलता मृत्यु।

* बोलना व वाग्मिता होना एक नहीं है, बोलना और अच्छी तरह बोलना दो चीजें हैं। पराक्रम तो भुजाओं में रहता है, न कि वाणी में।

* चरित्र की शिक्षा घटिया प्राणी से भी मिले तो ग्रहण करनी चाहिए। चरित्र की शिक्षाएं विद्वान और श्रेष्ठ कर्म करनेवालों से प्राप्त करें, खोटे स्वभाव के व्यक्ति को निकट न आने दें।

* महात्माओं का क्रोध नमस्कार से ही शांत हो जाता है। मूर्खों और ज्ञानियों में प्रमुख अंतर यही है कि मूर्खों को क्रोध आता है।

* सांख्य के समान कोई ज्ञान नहीं है और योग के समान कोई बल नहीं है। मनुष्य की अज्ञान ग्रंथी का नष्ट होना ही मोक्ष कहा जाता है।

* अभिप्राय में उदारता, कार्य संपादन में मानवता, सफलता में संयम, इन्हीं गुणों से मानव महान बन जाता है।

* अपने विवेक को अपना शिक्षक बना लो, कर्म को वचन के अनुरूप और वचन को कर्म के अनुरूप कर लो।

* जो हम करते हैं, वह दूसरे भी कर सकते हैं, ऐसा मानें। यदि न मानें तो हम अहंकारी ठहराए जाएंगे।

* गर्व ने देवदूतों को भी नष्ट कर दिया।

* किसी भी स्थिति में घमंड मत करो क्योंकि यह बहुरूपिया संसार हर घड़ी हजारों रंग बदलता है।

* यह बात अपने दिल से निकाल देनी चाहिए कि गरीब घर में जन्म लेने के कारण वो उन्नति नहीं करता। इसके विपरीत गरीब घर में जन्म लेने के कारण ही उसके उन्नति के सर्वाधिक अवसर हैं।

* सफलता का रहस्य आप उस समय पा लेते हैं जब आपको अपने विषय में कोई भ्रम नहीं रहता और इस स्थिति तक आने के लिए आपने निरंतर अपना अध्ययन किया हो।

* जिसके मन में संतोष है, उसके लिए सब जगह संपन्नता है। संतोष से ही सर्वोत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

* चिंता कमजोरी का संकेत है जो जीवन को विषतुल्य बना देती है।

* प्रशंसा वह पुष्प है जो मृतक के नाम के साथ खिलता है। प्रशंसा को वीरता के कार्यों की सुगंध ही समझिए।

* अपने अधिकारों को हासिल करने में संकोच नहीं करना चाहिए।

❊ अपने नाम से प्रसिद्ध होनेवाला व्यक्ति उत्तम है। पिता के नाम से प्रसिद्ध होनेवाला मध्यम है। मामा के नाम से प्रसिद्ध होनेवाला अधम है। श्वसुर के नाम से प्रसिद्ध होने वाला अधम से भी अधम है।

❊ अपने घर में कुत्ता भी बलवान होता है। अपने घर में हर कोई राजा होता है।

❊ अगर तुम किसी मूर्ख को इसलिए अपना विश्वासपात्र सलाहकार बनाना चाहते हो कि तुम उसे प्यार करते हो, तो याद रखो वह तुम्हें अनंत मूर्खताओं में ला पटकेगा।

❊ मुसीबत और धर्म संकट के समय अपनी किताबों और परंपराओं को भूल जाओ और अपनी तात्कालिक नैतिक दृष्टि का कहना मानो।

❊ अगर सेवक सुख चाहे, भिखारी मान चाहे और व्यसनी धन चाहे तो समझ लो यह लोग आकाश से दूध दुहना चाहते हैं।

❊ अग्नि में घी की आहुति डालिए अग्नि बढ़ जाएगी। विषय भोग घी के समान है जितना उपभोग करोगे उतना ही बढ़ते चले जाएंगे।

❊ ईश्वर जिसे घर से निकालता है फिर उसे गली में भी शरण नहीं लेने देता।

❊ अंत:करण मलिन और अपवित्र बना रहे, तो परमात्मा की उपासना भी फलवती न होगी। अत: ईश्वर की उपासना निष्पाप हृदय से करें।

❊ अशक्त मनुष्य अपमान के कारण अपने को नीचा समझने लगता है और उस समय वह दु:ख से भर जाता है।

❊ अभ्यास न करने पर विद्या विष हो जाती है।

❊ अपराधी मन संदेह का अड्डा है।

❊ अपने घर में शांति पानेवाला ही सुखी है चाहे राजा हो या किसान।

❊ अध्ययन के प्रति प्रेम, जीवन में आनेवाले विषाद और क्लांति के क्षणों को आनंद और प्रसन्नता के क्षणों में परिवर्तित करने की क्षमता प्रदान करता है।

❊ अपमान मनुष्य के मुख पर लिखा होता है।

❊ अपराध करने और दण्ड देने में मनुष्य एक दूसरे का सहायक होता है।

❊ अतिथि आपका अन्न खाकर आपके पापों को धोता है।

❊ अन्याय सहनेवाले की अपेक्षा अन्याय करनेवाला ज्यादा दु:खी होता है।

❊ आधुनिक मालिक वह व्यक्ति है जो पच्चीस और तीस वर्ष की आयु के उस नौकर की खोज में है, जिसको चालीस वर्ष कार्य करने का अनुभव हो।

❊ अतिथि सत्कार न हो तो घर का चूल्हा श्मशान की अग्नि है। अतिथि सत्कार से इन्कार सबसे बड़ी दरिद्रता है।

❊ आंसू दर्द की मौन भाषा है।

❊ अन्याय के न्याय हेतु बंधु को भी दण्डित करें।

❊ अहिंसा सब धर्मों में श्रेष्ठ है, हिंसा के पीछे हर तरह का पाप लगा रहता है।

❊ कोई भी व्यक्ति किसी कार्य को सर्वोत्तम ढंग से करना चाहता है तो उसे अपनी संपूर्ण योग्यता पूरी सामर्थ्य उसमें लगा देनी चाहिए। कोई भी व्यक्ति उस कार्य को कर सकता है, जिसे पहले कोई मनुष्य कर चुका है।

* निराशा मस्तिष्क के लिए पक्षाघात है, जैसे जिस्म के लिए लकवा। निराशा मूर्खता का निमंत्रण पत्र है।

* मनुष्य जीवन अनुभव का शास्त्र है। अनिश्चित जीवन से मृत्यु श्रेष्ठ है।

* हम जो कुछ भी बोलें, उसमें बल होना चाहिए। थोड़ा बोलो, थोड़े शब्दों में अधिक कहो।

* चरित्रवान व्यक्ति शिक्षा के द्वारा स्वयं को स्वावलंबी बना लेता है।

* गुस्से का बेहतरीन इलाज खामोशी है। क्रोध करने से पहले यदि उसके परिणाम पर गौर कर लिया जाए तो क्रोध नहीं आएगा। क्रोध लक्ष्मी और कीर्ति का नाश करता है।

* जहां अज्ञान है, वहां दु:ख आकर ही रहेगा। जितना हम अध्ययन करते हैं, उतना ही हमको अपने अज्ञान का आभास होता है।

* गुणवान व्यक्ति के लिए इस संसार में बहुत कम वस्तुएं दुर्लभ रह पाती हैं। गुण तो आदमी उसमें देखता है, जिसके साथ जन्मभर निर्वाह करना हो।

* जहां से डींग का अंत होता है, वहीं से सम्मान आरंभ होता है।

* भला बनने के लिए हर समय बुराई को त्यागते रहिए। सद्गुण ही ज्ञान है।

* प्रयत्न नहीं करने पर भी विद्वान लोग जिसे आदर दें वही सम्मानित है। दूसरों से सम्मान पाकर भी अभिमान नहीं करे और सम्मानीय पुरुषों को देखकर जले नहीं।

* सच्ची लगन को कांटों की परवाह नहीं होती।

* तन, धन और भाग्य पर अभिमान नहीं करना चाहिए। तन-धन और यौवन नष्ट होंगे। इनका अभिमान न करो।

* मनुष्य की सफलता का रहस्य प्रत्येक अवसर के लिए तैयार रहना ही है। प्रत्येक काम को हिम्मत और शांति के साथ करो, यही सफलता का साधन है।

* सुखी और पवित्र जीवन बिताने के लिए यह आवश्यक है कि संतोष की प्रवृत्ति को धारण किया जाए। जिसके मन में संतोष नहीं, वह कंगाल है।

* चिंता रूपी सांपिन ने जन्म लेनेवाले प्रत्येक मनुष्य को डसा है।

* लोग आपकी प्रशंसा करके आपको ज्यादा ठगते है आज भी यही हो रहा है।

* आप यदि किसी गुलाम की गरदन में जंजीर डाल दें तो उसका दूसरा सिरा स्वयं ही आपकी गरदन को जकड़ लेगा।

* आत्मा में यश पाने के लिए इनकी पूजा करनी चाहिए- देवता, पितृ, जीव, संन्यासी और अतिथि।

* आपके वफादार दोस्त हैं- आपकी वृद्ध बीवी, वृद्ध कुत्ता और जेब का रुपया।

* औरों ने आपके प्रति जो अपराध किए हैं, उनका उपाय है, उन्हें भूल जाना।

* आंखें आत्मा का दर्पण हैं।

* आप घड़ी को पीछे नहीं कर सकते अपितु आप इसमें बार-बार चाबी दे सकते हैं।

* आप जो भी हैं, ईश्वर की कृपा से हैं। आप ईश्वर प्रदत्त जीवन को कैसा बनाते हैं- यह आपका ईश्वर को दिया उपहार है।

* आधा नुकसान तो दुनिया को उन मनुष्यों के द्वारा हुआ है जो अपने को प्रभावशाली महसूस कराना या दिखाना चाहते हैं।

* आपकी दुकान का माल अगर खरा है तो आज हो या चार दिन बाद खरीददार जमा होंगे ही, माल अच्छा नहीं होने पर हजार कोशिश करने पर भी दूकान नहीं चलेगी। दो चार दिन में या महीने में दिवाला पिट ही जाएगा।

* आनंद और कर्म से घंटे छोटे प्रतीत होने लगते हैं।

* आदर्श एक वस्तु है, उसका पालन दूसरी वस्तु है।

* आनंद ही आत्मा का स्वरूप है।

* आदमी जितना असमर्थ है, भगवान उतना ही समर्थ है। उसकी कृपा अपरंपार है और वह हजारों हाथों से मदद करता है।

* आपत्ति-विपत्ति आने पर जो व्यक्ति घबराते नहीं हैं, वे मनुष्य ही मेधा बुद्धिवाले होते हैं।

* आनंद हर आदमी के अंदर है और वह पूर्णत: सत्य की खोज से मिलता है।

* आनंद ही एक ऐसी वस्तु है जो आपके पास न होने पर भी आप दूसरों को बिना किसी असुविधा के दे सकते हैं।

* आचरण उस दर्पण के समान है, जिसमें हर मनुष्य अपना प्रतिबिंब होता है।

* आत्मा ही अपना स्वर्ग और नरक है।

* आनंद का पहला स्रोत है, स्वास्थ्य। आनंद के अवसर पर हम अपने दु:खों को भूल जाते हैं। आनंदित रहनेवाला हृदय उत्तम दवा है। निराश मन हड्डियों को भी सुखा देता है।

* आत्मज्ञान शेष समस्त विज्ञानों का विज्ञान है और अपना भी।

* आनंद हमारे अपने घर में ही होता है। उसे दूसरों के बगीचों में ढूंढ़ना बेकार है।

* आदमी काम की अधिकता से नहीं, उसे भार समझकर अनियमित रूप से करने पर थकता है।

* आपत्ति और कष्ट में भी बुद्धिमान उत्साह नहीं छोड़ते।

* आत्मा परमात्मा का अंश है। आत्मा को न तो शस्त्र काट सकते हैं, न आग जला सकती है। उसी प्रकार न पानी गला सकता है और न वायु सुखा सकती है। यह आत्मा कभी न कटनेवाली, न जलनेवाली, न सूखनेवाली तथा न भोगनेवाली और नित्य सर्वव्यापी, स्थिर, अचल एवं सनातन है। आत्मा अनादि, अविनाशी, विकारहीन, शाश्वत और सर्वव्यापी है।

* आलोचना की उपेक्षा कर पूर्ण शक्ति से अपना कार्य करो। आलोचना को छोड़कर हर व्यवसाय को सीखने में मनुष्य को अपनी समझ लगाना चाहिए, क्योंकि आलोचक तो सब बने बनाए ही हैं।

* आत्मा के लिए विवेक उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना शरीर के लिए स्वास्थ्य।

* आज के लिए और सदा के लिए सबसे अच्छा मित्र है, अच्छी पुस्तकें।

* आपका सच्चा और सबसे अच्छा दोस्त वह है जो आपकी कमजोरियों की दूसरों से चर्चा नहीं करता, लेकिन आपसे साफ-साफ कह डालता है।

* आनेवाले संकट को देखकर अपना भावी कार्यक्रम निश्चित करनेवाला सुखी रहता है।

* जो सच्ची सेवा करनेवाला है, उसका प्रचार तो अपने आप होनेवाला है।

* न्याय किए जाने में देरी न्याय न किए जाने के बराबर है।

* आज पढ़ाना सब जानते हैं, लेकिन पढ़ना क्या चाहिए, यह कोई नहीं जानता।

* जिस प्रकार गूंगा गुड़ खाकर उसका स्वाद नहीं बता पाता। वैसे ही ज्ञानी भी आत्मानुभव का वर्णन नहीं कर पाता।

✻ आपत्ति का सामना करने में मुस्कान से बढ़कर कोई सहायक वस्तु नहीं होती।

✻ इतिहास केवल एक ऐसी कहानी है जिस पर कि सब रजामंद हैं। इतिहास का अध्ययन ऐसी शक्तियों की खोज और उनकी तलाश करना है जो उस सत्य का कारण बनी, जो हमारी आंखों के सामने ऐतिहासिक घटनाओं के रूप में उपस्थित हुई हैं। इतिहास एक बेहूदगी है। इतिहास को साहित्य में प्रतिष्ठित करने के लिए घटना को जीवन से और जीवन को मनुष्य के मनोरोगों से जोड़ना पड़ता है।

✻ इतिहास के तजुर्बों से हम नहीं सीखते इसलिए इतिहास अपने आपको दोहराता है।

✻ इष्ट मित्रों से प्रेमपूर्वक मिलना और उन्हें भोजन के लिए आमंत्रित करना स्नेह और प्रेम बढ़ानेवाली बातें हैं।

✻ इस संसार में सबसे बड़ा जादूगर स्नेह है।

✻ इस पृथ्वी पर मौजूद हम सभी मनुष्य एक ही हैं, हमारी जाति एक ही है, हमारी नस्ल एक ही है, भगवान भी एक ही है। वह एक ही प्रभु विभिन्न रूपों में व्यक्त होता है।

✻ ज्ञान द्वारा नेतृत्व प्रदान करो, जिस प्रकार अधिकांश व्यक्ति स्वयं से नेतृत्व प्राप्त कर रहे होते हैं।

✻ भूख से कम खाना, लोक प्रतिष्ठा का त्याग, निर्धनता का स्वीकार और ईश्वर की इच्छा में संतोष इनका पालन करने से शुद्ध साधना हो सकती है।

✻ कार्य आरंभ न करने से उद्देश्य सिद्ध नहीं होता, परंतु पुरुषार्थ करने से भी जिनके कार्य सिद्ध न हों, वे भाग्य के मारे होते हैं।

✻ कर्म के द्वारा मौन रहते हुए चींटी से अच्छा उपदेश कोई दूसरा नहीं देता।

✻ निराशा मूर्खता का निमंत्रण पत्र है।

✻ आशा अंतिम श्वास तक साथ नहीं छोड़ती।

✻ गति अथवा परिवर्तन जीवन की गति है। गलत जीवन जीते हुए सीधा नहीं सोच सकते।

✻ मौन से अच्छा भाषण दूसरा नहीं। फिर भी बोलना पड़े तो जहां एक शब्द से काम चलता हो वहां दूसरा शब्द न बोलें। बोलना तो सज्जनों की कुल विद्या का आभास है।

✻ चरित्र के बजाय महानता को कपड़ों से आंकनेवाले सर्वथा मूर्ख होते हैं। चरित्र मानव जीवन के लिए एक परम पावन और आवश्यक निधि है। उसका निवास संसार में नहीं, हृदय में होता है।

✻ क्रोध को मन में और स्नेह को आंखों में रखो। क्रोध मनुष्य को पशु और दूसरे की नजर में पतित बना देता है।

✻ जो कुछ मुझे ज्ञान है वह यही कि मेरे पास रंचमात्र भी ज्ञान नहीं।

✻ इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करनेवाला नि:संदेह कुछ भी नहीं है।

✻ गुणीजनों के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। गुणरहित नाम कितना निरर्थक होता है। गुणवान से उसकी जाति नहीं पूछी जाती।

✻ अहंकार जितना बड़ा होगा मनुष्य उतना ही छोटा होगा। अहंकारी का विनाश जरूरी होता है। अहंकार नरक का मूल है।

✻ अपने कर्त्तव्यों के प्रति प्रयत्नशील रहना असफलता को सबसे अच्छा उत्तर प्रदान करना है। असफलता निराशा का सूत्र कभी नहीं है, अपितु वह तो नई प्रेरणा है।

✻ अवसर को खो देना सफलता को खो देना है।

HHH(५००)HHH

* मनुष्य संतोष के द्वारा स्वयं स्वर्ग का निर्माण कर सकता है।

* संतोष से सर्वोत्तम सुख प्राप्त होते हैं।

* रूप, बल और ज्ञान इनका नाश करना हो तो चिंता करो।

* इंद्रियों तथा मन को जीतनेवाले धीरपुरुष की लक्ष्मी अत्यंत सेवा करती है।

* इच्छानुसार कार्य ही अच्छी बहादुरी है।

* लोग पिछली पीढ़ी पर दोषारोपण करते हैं? क्योंकि उनके पास एक यही विकल्प है।

* इस नाशवान जगत के जीवों से यह आशा मत रखो कि वे अपने वचनों को पूरा करेंगे। वे हजारों वचन देते हैं।

* इस गतिशील संसार में जो बीत गया वह फिर लौटकर नहीं आता।

* इंद्रियों को वश में रखना बुद्धिमान पुरुषों का काम है, उनके वश में होना मूर्खों का।

* मनुष्य जितना प्रेम धन, स्त्री, संतान और कामनाओं के प्रति रखता है, यदि उसका एक प्रतिशत भी ईश्वर से प्रेम करे तो अन्य प्रेम की वस्तुएं स्वत: ही उपस्थित हो जाती हैं।

* मनुष्य दीर्घजीवी हो। उसकी संतान सुख देनेवाली हो। जो धन संपत्ति एकत्र करे, जिसके संपर्क में बुरे लोग भी सुधर जाएं। वही शख्स संसार में अच्छा आचरण करता हुआ जीवन गुजारता है।

* संसार को बाजार समझो। यहां सभी आदमी व्यापारी हैं। जो जैसा व्यापार करता है वैसा फल पाता है। मूर्ख और गंवार व्यर्थ हानि उठाते हैं, लाभ नहीं कमा पाते।

* ईश्वर न काबा में है, न काशी में। वह तो कण-कण में व्याप्त है- हर दिल में मौजूद है।

* ईश्वर की इच्छा से कहीं विष अमृत है और कहीं अमृत भी विष हो जाता है।

* इस नाशवान संसार में कौन नहीं मरता? कौन नहीं पैदा होता? यही परिवर्तन संसार है लेकिन जो वंश का नाम करे, वह मरकर भी अमर हो जाता है।

* ईश्वर एक है और वह विश्व की एकता को पसंद करता है।

* ईश्वर का दाहिना हाथ कोमल, परंतु बायां बहुत कठोर है।

* ईश्वर से अधिक निकट वस्तु और कोई नहीं है।

* ईश्वर के दो निवास स्थान हैं- एक बैकुण्ठ में और दूसरा नम्र और कृतज्ञ हृदय में।

* ईश्वर- विश्वास बहुत बड़ी शक्ति है। हमें इस शक्ति से वंचित नहीं रहना चाहिए।

* एकता से हमारा अस्तित्व कायम रहता है और विभाजन से पतन होता है।

* ईश्वर की शरण में गए बगैर साधना नहीं होती। ईश्वर ऐसा कृपालु है कि अपने भक्तों को बिना मांगे देता है।

* एकांत में रहना ही महान आत्माओं का भाग्य है।

* एक असैनिक सेवक उस नए शिक्षित घोड़े की तरह है जिसका बरताव उस जांच से प्रभावित होगा कि उसकी पीठ पर कैसा सवार है।

* एक कत्ल करनेवाला खलनायक कहलाता है लेकिन लाखों कत्ल करनेवाला नायक कहलाता है।

* जो काम हाथ में लेना हो, उसमें पूरी श्रद्धा होनी चाहिए। श्रद्धा होने पर ही काम को मन और लगन से किया जा सकता है।

❋ संयम की प्रकृति के समान निरंतर कर्म करनेवाले कर्मनिष्ठ व्यक्तियों का नाम ही मानव समाज के इतिहास में दर्ज होता है।

❋ अच्छी निद्रा और परम सुख उन्हें प्राप्त होता है जो आशा से बरी हैं।

❋ जिसकी कीर्ति नष्ट हो गई, उसका जीवन भी नष्ट हो जाता है। जीवन का रहस्य कला में है। जीवन का रहस्य नि:स्वार्थ सेवा।

❋ कटु वचन रूपी बाण मुख से निकल कर दूसरों के मर्म स्थान पर ही चोट करते हैं, उनसे आहत मनुष्य रात-दिन घुलता रहता है। अत: विद्वान पुरुष दूसरों पर उनका प्रयोग न करें।

❋ चरित्र निर्माण ही शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। इससे साहस का विकास होगा, गुणों में वृद्धि होगी और उद्देश्यों के प्रति लगन जागृत होगी। चरित्रवान को सब कुछ उपलब्ध है और चरित्रहीन उपलब्ध को भी खो देते हैं।

❋ क्रोध की तुलना में शांति द्वारा ज्यादा कार्य बनते हैं। क्रोध की सर्वोत्तम औषधि है विलम्ब।

❋ अज्ञानी की सबसे बड़ी संपत्ति होती है मौन। जब वह इस रहस्य को जान जाता है तो फिर वह अज्ञानी नहीं रह जाता। मूर्ख का मन ज्ञान में नहीं अज्ञान में लगता है। अज्ञान से बड़ा शत्रु कोई भी नहीं।

❋ गुणवान होने के लिए विनम्रता, जिज्ञासा और सेवा को अपने व्यवहार में सम्मिलित करना चाहिए। तब हमें अमिट ज्ञान की प्राप्ति होगी। गुण और ज्ञान पाने के पश्चात इस जगत में कोई भी झंझट शेष नहीं रह जाता।

❋ अहंकार छोड़ने पर सुखों की अनुभूति होना प्रारंभ हो जाएगी। अभिमान की अपेक्षा नम्रता से अधिक लाभ होता है।

❋ जो नीति की दृष्टि से लड़ता है, वह आशा नहीं छोड़ता। जिसका कार्य शुद्ध है और जिसके साधन भी शुद्ध हैं उसे मानना चाहिए कि सफलता अवश्य मिलेगी। निर्धारित समय पर न मिले तो इतना ही कहेगा, मेरे अनुमान में कहीं भूल थी, किंतु इस मार्ग से सफलता तो मिलेगी ही। जो योग्यता रखता है, उसे सफलता का श्रेय लेने दो।

❋ संयम की तपस्या से संतोष का सुख प्राप्त होता है।

❋ संयम के रूप- मन का संयम, वचन का संयम, देह का संयम और प्रतिष्ठा का संयम है।

❋ धर्म के लिए मरनेवाले कभी धार्मिक नहीं हो सकते।

❋ आपके आभूषण, हीरे और सोने चांदी की चमक उनकी गर्मजोशी से भरी, उदार और ईमानदार मुस्कराहट की चमक से मुकाबला नहीं कर सकती।

❋ परहित व सहिष्णुता रखनेवाले ही सच्चे धार्मिक हैं।

❋ कभी-कभी हमारी हंसी के पीछे भी दर्द होता है, गुस्से के पीछे प्यार और खामोशी में भी बहुत सारी बाते छिपी होती है।

❋ गलतियां जिन्दगी का एक पन्ना है परंतु रिश्ते पूरी किताब है। जरूरत पड़ने पर गलती का पन्ना फाड़ देना लेकिन एक पन्ने के लिए पूरी किताब मत फाड़ देना।

❋ मनुष्य एक संवेदनशील प्राणी है उसकी संवेदनाएं हमेशा सक्रिय रहती हैं, लेकिन कुछ व्यक्ति इन संवेदनाओं को अपने अंत:करण में छिपाए रहते हैं और कुछेक इसे बाहर प्रकट कर देते हैं, ऐसे में दूसरे प्रकार के व्यक्ति ही समाज को जीवन प्रदान करता है।

❋ भय से बुद्धि शंकित बन जाती है, बुद्धि के शंकित होने पर भ्रम और अंधविश्वास जन्म लेते हैं। एक भय के कारण

अनेकों भय उत्पन्न हो जाते है जो अनेक कष्टोंका कारण बन जाते है। सदा भयमुक्त होकर ईश्वर को याद करना चाहिए।

* जबसे गधे ने सुना बारात के लिए घोड़ी सजायी जा रही है तो गधा नाराज हो गया।

* जिस बात को सुनने मात्र से आपकी खुशी नष्ट होती हो तो उसे सुनने का मौका ही मत दो।

* उलफतें, उलझनें, रंजिसें और तन्हाईयाँ यह सब यूं ही जिंदगी का एक दिन है और वो भी बीत जायेगा।

* तानाशाही, नौकरशाही, प्रशासन को हमेशा गलत काम पर न रोक कर अच्छे काम में रोकने का काम विधायिका नाम की लोकतंत्र है।

* अपना शहर भी अजनबी सा लगने लगता है जब आपस की दूरियां अब हर घर में दिखने लगती है।

* आपकी जबान सुधर जायें तो जीवन सुधरने में समय नहीं लगेगा।

* जो जीवन समर में जीतकर आगे बढ़ता है वह अपने जीवन में कीर्तिमान खुद ही गढ़ लेता है।

* जिन्दगी जीना एक साइकिल चलाने की तरह है, यदि आप स्वयं को आगे नहीं बढ़ाते हैं तो संतुलन नहीं बना पायेंगे।

* बलवान तो वही होते हैं, जिनके पास बुद्धि-बल होता है। केवल शारीरिक बलवाले वास्तविक बलवान नहीं होते।

* कायर बहुसंख्यक होने में प्रसन्न होते हैं। बहादुर अकेले ही लड़ने में अपना गौरव समझते हैं।

* जो व्यक्ति तौलकर बातें नहीं करता, उसे कठोर बातें सुननी पड़ती हैं।

* जिन्हें गुस्सा आता है वो लोग सच्चे होते हैं। झूठे तो अक्सर मुस्कराते हुए देखे जाते हैं।

* मेहनत सीढ़ियों की तरह होती है और भाग्य लिफ्ट की तरह। लिफ्ट तो कभी भी खराब हो सकती है पर सीढ़ियां हमेशा ऊंचाई तक ले जाती है। आग लगने पर लिफ्ट का प्रयोग नहीं कर सकते उस समय जान बचाने के लिए सीढ़ियों का उपयोग किया जाता है।

* सबसे प्रेम का बर्ताव करें। कुछेक लोगोंपर भरोसा और विश्वास करना चाहिए और बुरा किसीका भी नहीं करना चाहिए।

* मनुष्य के सारे गुणों पर उसका मूल स्वभाव ही हावी रहता है। किसी पर भी विश्वास करने के पूर्व उसके स्वभाव को परखना अत्यंत आवश्यक है।

* नेकी से विमुख हो जाना और बदी करना नि:संदेह बुरा है मगर सामने हँसकर बोलना और पीठ पीछे चुगलखोरी करना उससे भी बुरा है।

* कुछ लोग पानी से डरते है, कुछ लोग ऊंचाई से डरते है तो कुछ लोग अनजाने भय से घबराए रहते हैं। ऐसे डर का कारण पिछले जन्म की यादों में छुपा होता है जो हमारे अवचेतन में कहीं न कहीं दबा हुआ होता है।

* वक्त भी सिखाता है और शिक्षा भी। पर अंतर सिर्फ इतना है, शिक्षा सिखा कर इम्तेहान लेती है और वक्त इम्तेहान लेकर सिखाता है।

* दूसरों के साथ वह व्यवहार न करो, जो तुम्हें अपने लिए पसंद नहीं।

* टकराव हमेशा टालना चाहिए। टकराव बिखराव का कारण है। दीवार हो या आदमी दोनोंसे टकराना ठीक नहीं। जीवन के हर एक मोड़ पर प्रतिदिन हमें बहुत से लोग मिलेंगे जो टकराने के मूड़ में होंगे पर टकराना नहीं है चुपचाप आगे बढ़ जाना है। टकराव में जोखिम है। इसलिए टकराव टालने का प्रयत्न करना चाहिए।

* बेहतर जिंदगी के लिए हँसना ही नहीं रोना भी जरूरी है। जो लोग मस्त रहते है या रोजाना खुलकर हँसते है उनकी

जिंदगी कहीं ज्यादा संतुलित और व्यवस्थित रहती है। रोने से अंत:करण का तनाव और दूसरी समस्याएं काफी कम हो जाती है। मन हल्का हो जाता है पर सभी लोग खुलकर रो भी नहीं सकते। जब आप अंदर से भर जाएं तो एकांत में सही जरूर रो लेना चाहिए। समाज में महिलाएं तो मौका आनेपर रो लेती है पर पुरुष अंदर ही अंदर घुटकर रोता है। कारुणिक होना मानवीय होने की कसौटी है। इसलिए रोने के जो फायदे है वो हंसने से हासिल नहीं हो सकते।

* उम्मीद की दुनिया सबसे खूबसूरत चीज है इसका दामन कभी नहीं छोड़ना चाहिए। यह हमेशा रंगबिरंगी होती है। यथास्थितिवाद बहुत से लोगों का स्वभाव बन जाता है। उसे जो परिस्थितियां मिली उसे स्वीकार कर लेते है। उनके लिए उसे छोड़ना कठिन हो जाता है। नाउम्मीदें सबसे पहले साहस और सामर्थ्य कम कर देती है और फिर व्यक्तित्व संदेहशील बना डालती है। आपका जीवन उस मानसिक सांचे में ढल रहा है जिसकी आप उम्मीद कर रहे है।

* विचार से अधिक विश्वास की शक्ति है।

* आदमी जंग लगने के लिए पैदा नहीं हुआ उसे अपनी क्रियाशीलता बनायी रखनी पड़ती है।

* जागरूक होकर हम कोई भी उपलब्धि प्राप्त कर सकते है और हमारे लिए कुछ भी असंभव नहीं रह जाता। अपनी चेतना को जागृत रखने के लिए यह मानव जीवन मिला है। जागे बिना हम न खुद को जान पाते है न ईश्वर को।

* अध्यात्म संपृक्त होने का संदेश देता है, यह चेतना को जगाता है। हम मोह की नींद में खोये हुए है। यह लोभ की नींद है, माया की नींद है। हमारी चेतना जभी जागती है जब हम काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह इत्यादि का त्याग कर देते हैं। जब हमारे पास आत्मविश्वास घनीभूत होकर रह जाता है और हम समाज के लिए महत्वपूर्ण कार्य करते है तभी यह सच्चा जागरण होता है। हमारे भीतर के राग, द्वेष, आसक्ति आदि मिटनी चाहिए इसीको जागरण कहते है। ईश्वर को खोजने से पहले हमें अपने आपको खोजना होगा। अध्यात्म और योगशास्त्र हमें जागरूक करना सीखाते हैं।

* अनेक लोग तो अपनी बात कह देते है आप सुने या न सुने यह आपका दुर्भाग्य है। कहीं समस्याएं तो इसलिए है जो लोग अच्छे है, दूसरों का दर्द समझते है वे चुप हो जाते है बोलते नहीं। समझदार लोगों को अपनी बात अवश्य बोलनी चाहिए जहां भी बोल सकें।

* कोई सुने या न सुने, अपनी बात कह डालनी चाहिए। कोई सुनेगा, इस उम्मीद में कोई बैठा थोड़े ही रहेगा। कभी-कभी कही गई बात को कोई बरसों बाद भी सुनता है। चुप्पीवादी होने से अच्छा है कि अपनी राय से कुछ न कुछ कहते रहा जाये। कई अच्छे समझदार लोग भी मौन में चले जाते हैं। एक अवस्था उनके जीवन में ऐसी आती है, जब उन्हें लगता है कि बस अब बेहतर यही है कि चुप हो जाएं। एक गहरा अवसाद उनके जीवन में उतर आता है और वे अपने होठ सिल लेते हैं। कई धार्मिक परम्पराएं भी इसका समर्थन करती हैं। लेकिन जब अच्छे संवेदनशील लोग नहीं बोलेंगे तो भी जो क्रूर और दुष्ट हैं, उनकी बड़बड़ाहट तो जारी रहेगी ही। तो कभी उनका असर कम करने के लिए भी बेहतर है कि समझ-बूझवाले लोग अपनी बात कहें। सुनी तो लोगों ने बुद्ध और ईसामसीह की भी नहीं। सुकरात और कबीर को भी नहीं सुना। या उनकी बगल से गुजर गए, उनकी पूजा की और मौका मिलने पर उन्हें दुनिया से ही मिटा डाला। लेकिन उन्हें सुना और समझा नहीं। जिन्होंने सुनने का भ्रम पाला उन्होंने उनकी ऐसी छीछलेदार की कि बेहतर होता कि वे उनको सुनते ही नहीं। जिस बुद्ध ने कहा कि मेरी आराधना मत करो, उनकी सबसे अधिक मूर्तियां लोगों ने बना डालीं। इतनी ज्यादा कि फारसी का बुत शब्द ही बुद्ध से उपजा हुआ शब्द माना जाने लगा।

* हम अपनी संकीर्णताओं से बाहर निकलने के बजाय दूसरे लोगों में कमियां खोजते रहते हैं। अपनी योग्यता को पहचानकर हम आगे बढ़ने की जगह पर दूसरे के दोषों को कुदेरते रहते है उनकी जड़ें काटने में अपना समय बर्बाद करते है। न तो हम परिस्थितियां बदल सकते हैं और न ही हम अपना विकास कर पाते हैं। मनुष्य परिस्थितियों पर अपना जोर नहीं चला सकता। यदि वह अपने गुणों का विकास करने में लग जाएं तो विपरीत परिस्थितियों को भी अपने पक्ष में कर सकता है। अगर हम यह उम्मीद रखें कि दूसरे लोग हमारी सुविधा के लिए मार्ग प्रशस्त करेंगे तो वह गलत है सच तो यही है कि हर मनुष्य को अपने लिए खुद ही प्रयत्न करना पड़ता है। दूसरे लोग तो सिर्फ राहभर दिखा सकते है। उस राहपर चलना और स्वयं को साबित करना उसका अपना दायित्व है। उसे अपना प्रगति मार्ग खुद ही ढूंढना पड़ता है और बनाना पड़ता है और राह में आनेवाली ठोकर रूपी बाधाओं से खुद ही जूझना पड़ता है।

* हर व्यक्ति के अंदर एक सर्जक, एक कलाकार छुपा होता है जो अपनी प्रतिभा से निर्माण करने की कला जानता है।

* सीखने की प्रक्रिया में अनुकरण अथवा नकल का महत्वपूर्ण स्थान है इससे हम दूसरों के अनुभव का लाभ आसानी से उठा सकते है लेकिन जीवन के हर क्षेत्र में नकल करना हमारे लिए अच्छा नहीं होता। जो जितना समझदार होता है वह उतनी ही अच्छी तरह से नकल, चीटिंग, बेईमानी करने में सक्षम होता है।

* जीवन में एक चीज होती है मौलिकता, कला। जीवन का कोई भी क्षेत्र हो मौलिकता में एक ऐसा आकर्षण है कि लोग उसका अनुकरण भी करते है। यदि आपमें मौलिकता है तो लोग आपसे बात करेंगे, आपके बारे में जानना चाहेंगे। वही मौलिकता स्वीकारने लायक है जिससे हमारे विकास के साथ-साथ हमारी संस्कृति और सभ्यता का विकास संभव हो।

* दर्शन शास्त्र का अर्थ है सत्य को तर्कसंमत ढंग से और उसकी पूर्णता: से समझना। अनुभव मनुष्य के जीवन का आधार है। दर्शन अनुभवों का विश्लेषण करता है। धर्म मानवीय अनुभव है। धर्म और दर्शन का उद्देश्य है सब प्रत्ययों का तर्कसंगत मूल्यांकन करना। दर्शन धर्म से जूड़े मूल प्रश्नों का अध्ययन करता है। मनुष्य की बुद्धि परम सत्य या ईश्वर को कभी नहीं समझ सकती उसे सिर्फ श्रद्धा और भक्तिद्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। तर्क और बुद्धि की अपनी सीमाएं है। श्रेष्ठ धर्म वही है जो तर्कसंगत है। धार्मिक दर्शन व्यक्ति समाज को अंधविश्वास, संकीर्णता हठवादिता के दायरे से बाहर निकालने का प्रयास करता है। दार्शनिक व्यक्ति धार्मिक विश्वासों, मान्यताओं तथा उपासना पद्धतियों आदि का विश्लेषण करता है इसलिए धर्म और दर्शन साथ-साथ चलते है। अंधविश्वास और रूढ़ियों का खंडन ये सब धर्म दर्शन के कार्य है। दर्शन हमें सहिष्णु बनने की प्रेरणा देता है। अशिक्षित वर्ग धार्मिक क्रियाओं को अपने ढंग से तोड़ने मरोड़ने और अपने ढंग से प्रचारित करने की छूट चाहता है। इसका इस्तेमाल वह अपने स्वार्थों के लिए करता है। वही वर्ग धर्म के नाम पर असहनशीलता का प्रदर्शन करता है और धर्म के नाम पर धन उपार्जित करना चाहता है। दर्शन धर्म के मर्म को स्पर्श करता है जिसने दर्शन समझ लिया उसके लिए कोई भी कर्मकांड बिना जाने धर्म की जगह नहीं ले सकता। वह दूसरे धर्म की पद्धतियों के प्रति असहनशील भी नहीं है इसलिए कोई भी धर्म और मान्यताओं, परंपराओं और रिवाजों को मानने के पहले उसके दर्शन को समझने का प्रयत्न करो। दर्शन शास्त्र की आवश्यकता तब पड़ती है जब चली आ रही परंपराएं विश्वास के योग्य नहीं रहतीं और नई नीतियों की आवश्यकता महसूस होती है।

* मुँह से कभी चिराग नहीं बुझाना चाहिए लालच मत करो जितना ईश्वर ने दिया है उसे स्वीकार कर संतोष में रहो।

* सच बात को कभी छुपाना नहीं चाहिए और झूठ बोलने से परहेज करना चाहिए।

❋ स्वयं भलाई करो और दूसरों को भी भलाई करना सीखाओ।

❋ जबान की भलाई से सुरक्षित रहना चाहते हो तो मौन रहना चाहिए।

❋ आग की एक चिंगारी की तरह एक बुरी बात मनुष्य की परिस्थिति को तबाह कर देती है।

❋ लोगों के ऐब बयान मत करो यह एक बीमारी है।

❋ जागृत अवस्था में रहकर ही कोई कार्य करना चाहिए।

❋ लड़कियों को कभी भी घर से भागकर शादी नहीं करनी चाहिए। ऐसी शादियों में आपको वो सब करना पड़ सकता है, खामियाजां भुगतना पड़ सकता है जिसकी आपने कभी कल्पना भी नहीं की हो।

❋ कोई भी काम शुरू करने के पहले यह विचारो कि किसलिए करना है, इसका परिणाम क्या होगा और क्या यह सफल हो पायेगा।

❋ डर से कभी घबराना नहीं चाहिए। अगर यह आ भी जाएं तो डटकर सामना करना चाहिए। भय से भागो मत इसका सामना करो।

❋ जब तक तुममें दूसरों के दोष ही दोष देखने की आदत है, तब तक तुम्हारे लिए ईश्वर का साक्षात्कार करना अत्यन्त कठिन है।

❋ सत्य बोलें, प्रिय बोलें, अप्रिय सत्य न बोलें साथ ही प्रिय होने पर भी असत्य न बोलें। यही सनातन धर्म है।

❋ पत्थर के खम्भे के समान जीवन में कभी न झुकनेवाला अहंकार आत्मा को नरक की ओर ले जाता है।

❋ दो प्रकार के मनुष्य स्वर्ग के ऊपर स्थान पाते हैं- एक तो वह जो ऐश्वर्यशाली होकर भी क्षमावान हों और दूसरे वह जो दरिद्र हो करके भी दानी हों।

❋ भूल करना तो पाप ही है, पर उसे छिपाना उससे भी बड़ा पाप है।

❋ असफलता का सामना किए बिना कोई सफल नहीं होता। असफलता, सफलता के साथ-साथ चलती है। हर सफल व्यक्ति के पीछे उसकी असफलताओं की कहानी होती है। हर असफलता आपको कुछ न कुछ सिखाती है। असफलता जीवन की वह कसौटी है जिसपर आपको परखा जाता है कि आप सफलता के योग्य है या नहीं। आपमें दृढ़ इच्छाशक्ति है तो आप असफलता की चुनौती का सामना कर पायेंगे और आपके सफल होने में कोई बाधा नहीं होगी और जीवन में मुश्किलों का सामना करने का साहस आता है।

❋ कभी कभी जीवन में मुश्किलें एक के बाद एक कई सारी एकसाथ आ जाती है और हम अपने आपको जंगल में राह भटके हुए की तरह रहते है। सफलता के लिए जितना जरूरी लक्ष्य और योजना है उतनी ही जरूरी असफलता का सामना करने की ताकत। जब कोई अणु टूटकर पुन: अपनी पुर्वावस्था में आता है तो वह पहले से भी अधिक मजबूत हो जाता है। ऐसे ही हम किसी परेशानी का सामना करने के बाद पहले से अधिक मजबूत हो जाते है और जीवन में इससे भी आगे तरक्की करते है।

❋ कई लोगों को बातचीत में अपशब्द कहने की आदत होती है। अपशब्द कहनेवाले व्यक्ति को पेशेवर नहीं माना जाता और उसे वरिष्ठ पदों से दूर रखने की कोशिश की जाती है। किसी को भी नेतृत्व के लिए अभद्र भाषा बोलने के प्रयोग से बचना चाहिए। यह उसके छिछेलेपन को दिखाता है। जीवन में अगर आपको आगे बढ़ना है तो यह आदत छोड़ देनी चाहिए। सामान्य बातचीत और दफ्तर में संवाद आपको स्वयं को एक प्रभावशाली रूप में पेश करना होता है। अपनी

बात कहते हुए यह ध्यान रखना पड़ता है उसका कोई दूसरा अर्थ न निकल जाएं। सम्वाद से आप सबसे अच्छे सम्बन्ध बनाते हुए काम को सुचारू रूप से करवा सकते है। वही आपका हल्का मजाक आपकी छबि को भी खराब कर सकता है।

* काम करना तो अच्छा है लेकिन बेवजह कुछ न कुछ करते रहना हमारी मानसिक बेचैनी का संकेत है। इससे दूसरों की काम में बाधा हो सकती है। लोगों को यह भी पता चल जाता है कि आपका ध्यान काम में नहीं है और आप असहज है।

* कभी आपके साथ कुछ गलत हो तो आंखें नम होना स्वाभाविक है लेकिन दफ्तर में भावनाओं पर नियंत्रण करना चाहिए। यह किसी की भी नेतृत्व की गुणवत्ता की कमी को दर्शाता है।

* महिलाओं को बात-बात पर जोर जोर से हंसने की आदत होती है और बातें अधिक करती है। दफ्तर में इस तरह का बर्ताव उनके व्यक्तित्व को कम कर देता है। उस समय ऊंची आवाज, कठोर आवाज बात करने की आदत होती है जो उनके विकास में सबसे बड़ी बाधा है। तीखी और कठोर आवाज को अधिक उग्रता का संकेत माना जाता है। दूसरों की आवाज इससे दब जाती है यह दफ्तर के संवाद के लिए उचित नहीं।

* कई बार हम बातचीत के दौरान चुप्पी साध लेते है और इस कोशिश में कभी-कभार कुछ बोल भी जाते है या किसीसे बात शुरू करने के लिए बेवजह बात करने लग जाते है जो कि शिष्टाचार के विरुद्ध है। बातचीत के दौरान कभी-कभी चुप्पी भी बहुत कुछ कह जाती है। हर बार शब्दों का प्रयोग करके चुप्पी के महत्व को कम नहीं करें। अपनी बात में लय रखनी चाहिए उसे अच्छी तरह बोलें। कहीं ऐसा न हो कि आपने अपनी बात भी पूरी कर ली और सुननेवाले की समझ में नहीं आई। बातचीत में लय, क्रम, संदर्भ और अर्थ का होना जरूरी है।

* पेशेवर जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए आपका मजाक या लहजा भी एक रुकावट हो सकता है। मजाक हमेशा हर जगह और लोगोंको देखकर करना चाहिए। महिला सहकर्मियों के बीच ऐसा कोई मजाक न करें जिससे आपके ऊपर अभद्रता का आरोप लग जाए। कार्यस्थल पर महिलाओं से किसी प्रकार की बदसलूकी से पेश न आएं। दफ्तर में मजाक करना लोगों को असहज बना देता है। आपके वरिष्ठ अधिकारी यह समझ जाते है कि आपको मौके की नजाकत समझ में नहीं आती है और न ही लोगों की सही पहचान है। दूसरे लोगों के मूड़ को पहचानें और परिस्थिति तथा जगह के अनुसार अपनी भाषा और आवाज पर नियंत्रण रखें।

* मनुष्य को चाहिए कि वह हर एक के आगे अपने हाथ न पसारता फिरें जो गरजते हैं, कभी बरसते नहीं है। केवल बरसने योग्य के आगे ही सहायता की प्रार्थना करना उचित होता है। नहीं तो गरजनेवाले तो आप की हंसी ही उड़ाएंगे।

* परिवार भारतीय समाज की ऐसी धुरी है, जिसके बल पर संस्कृति का महल निर्मित होता है, लेकिन जब परिवार के आधुनिक स्वरूप को आत्मसात करते हैं, तो नि:संदेह भारतीय संस्कृति का महल कमजोर होता दिखाई देता है। अत: परिवार समाज की ऐसी रीढ़ है, जिसे संतुलित करना लोकजन का परम कर्त्तव्य है।

* किसी की मदद करते वक्त उसके चेहरे की तरफ न देखें, हो सकता है उसकी शर्मिंदा आंखें आपके मन में गरूर पैदा कर दें।

* दूसरों की गलतियों से सीखना चाहिए अपने ही ऊपर प्रयोग करके सीखने को आपकी आयु भी कम पड़ेगी।

* किसी भी व्यक्ति को बहुत ईमानदार नहीं होना चाहिए। जहां आवश्यक हो वहीं ईमानदारी बरतनी चाहिए। सीधे वृक्ष और सीधे व्यक्ति पहले ही काटे जाते हैं।

* कोई सर्प जहरीला न हो तो भी उसे अपने आपको जहरीला दिखना चाहिए वैसे भले ही दंश न करें दंश दे सकने की क्षमता का दूसरों को अहसास करवाते रहना चाहिए।

* हर मित्रता के पीछे कोई स्वार्थ अवश्य होता है यह कड़वा सच है।

* दुनिया की सबसे बड़ी ताकत पुरुष का विवेक और महिला की सुन्दरता है।

* काम का निष्पादन करो, परिणाम से मत डरो।

* सुगंध का प्रसार हवा के रुख का मोहताज होता है पर अच्छाई सभी दिशाओं में फैलती है।

* ईश्वर चित्र में नहीं चरित्र में बसता है अपनी आत्मा को मंदिर बनाओ।

* व्यक्ति अपने आचरण से महान होता है जन्म से नहीं।

* ऐसे व्यक्ति जो आपके स्तर से ऊपर या नीचे हो उन्हें अपना दोस्त नहीं बनाना चाहिए और आपके कष्टोंका कारण बनेंगे। हमेशा समान स्तर के मित्र ही सुखदायक होते हैं।

* अपने बच्चों को पाँच साल तक बहुत प्यार करना चाहिए। छ: साल से १५ साल तक कठोर अनुशासन सीखाना चाहिए और संस्कार देने चाहिए। सोलह साल के बाद उसके साथ मित्र जैसा व्यवहार करना चाहिए। आपकी संतति आपकी सबसे अच्छी मित्र होगी।

* अज्ञानी के लिए किताबें और अंधे के लिए दर्पण एकसमान उपयोगी होता है।

* शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है। शिक्षित व्यक्ति सदैव हर स्थल पर सम्मान पाता है। शिक्षा की शक्ति के आगे युवा शक्ति और सौंदर्य दोनों भी कमजोर पड़ते है।

* कान हमारे गुरुदेव है।

* प्रेम दो प्रेमियों के बीच पारदर्शी परदा है।

* विरागी जन मुक्ति की खोज में भटक गए हैं और संसारी जन सुख की तलाश में यहीं भटक रहे हैं।

* शरीरधारियों को ऐसा सुख स्वर्ग में भी नहीं मिलता, जैसा कि दरिद्र होने पर भी अपने देश, गांव और घर में मिलता है।

* यदि सरोवर का पानी खारा हो, तब भी हंस उसको नहीं छोड़ता, क्योंकि गढ़े-तलैया में घूमते रहने पर उसे कोई भला नहीं कहता।

* शरीर आत्मा के रहने की जगह होने के कारण तीर्थ जैसा पवित्र है।

* बड़े नादान हैं वो लोग जो इस दौर में भी वफा की उम्मीद रखते हैं। यहां तो दुआ कबूल ना हो तो लोग भगवान बदल देते हैं।

* उदार बनो पर अपने आपको इस्तेमाल मत होने दो, प्यार करो पर खुद को ठेस न लगने दो, विश्वास करो पर भोले मत बनो, दूसरों को सुनो लेकिन अपनी आवाज न खोने दो।

* शीत लहर में कम्बल और रजाई सुख देते हैं।

* हर कोई खींचतान करता है फिर भी खुद को महान कहता है।

* आसमान की ऊंचाइयों को हम क्या जाने ये तो परिंदे ही बता सकते है।

* अंधेरे में उजाले की ओर ले जाना या उजाले से अंधेरे की ओर ले जाना यह सौंदर्य नहीं छल है, प्रेम नहीं वासना है जिसके सान्निध्य के लिए आपको अंधेरा उपयुक्त लगे, जिसके लिए, जिसे भोगने के लिए आपको बत्ती बुझानी पड़े। वह

वासना है जो अंधेरे की ओर जाने की लिए आपको प्रेरित करते है। वह सौंदर्य नहीं है वह छल का स्वरूप है।

❋ हीरा अगर कीचड़ में गिर जाये तो भी अनमोल ही रहता है और धूल अगर आसमान पर भी पहुंच जाये तो बेकार होती है। जीवन में अच्छे बनो अच्छाई की हमेशा कद्र होती है।

❋ खुशी की हालत में किसी से कोई वादा मत करो और गुस्से की हालत में कभी कोई फैसला मत करो। क्योंकि ऐसे हालात में दोनों भी बातें गलत हो सकती है।

❋ अच्छी बातें एक ऐसा फूल हैं जो कभी नहीं मुरझाता।

❋ मनुष्यों में सबसे अच्छा मनुष्य वो है जिसके आचरण, शिष्टाचार, बर्ताव अच्छे हो।

❋ अच्छे कर्म करो ताकि आपकी उम्र में बढ़ोत्तरी होगी।

❋ बोली एक ऐसा दरिंदा है अगर इसे छूट दे दी जाएं तो फाड़ खाएं।

❋ मनुष्य में अच्छी निष्ठा का पाये जाना बेहतरीन ईमान की निशानी है।

❋ जो शिष्टाचार व आदर से दूर रहता है वास्तव में वो ईमान की आत्मा से दूर हो जाता है।

❋ दुनिया की इज्जत धन-दौलत है और परलोक की इज्जत मनुष्य का कर्म है।

❋ किसी को आंखों में बसाने के पहले उसे अच्छी तरह परख लिया जाना चाहिए कहीं ऐसा नहीं हो कि उसकी बेवफाई आपके आँखों की रोशनी छीन लें।

❋ बिना सोचे समझे अगर आपने किसी को दिल की गहराई से चाहना शुरू कर दिया तो वो अंधेरा आपका मुकद्दर बन सकता है।

❋ अपने अतीत के दु:खों को भूलने का प्रयत्न करो। अगर ऐसा नहीं कर पाएं तो एक दिन यह जहरीले नाग बनकर तुम्हारे वजूद को मिट्टी में मिला देंगे।

❋ इच्छाएं वह घोड़ा है जिसपर सवार मनुष्य अगर उसपर काबू पा ले तो दुनिया उसके कदमों में होगी।

❋ अगर आप किसी विषय या मुद्दे पर या किसी निर्णय से असहमत है तो असहमति जताते वक्त यह न दिखाएं कि आप सम्बन्धित निर्णय लेने की पूरी प्रक्रिया से असहमत है। ऐसे में बेवजह कई लोगों को अपना विरोधी बना लेंगे। पेशेवर जीवन में या व्यक्तिगत जीवन में आपको हर उम्र के व्यक्तियों के साथ काम करना है। आपके असहमति जताने पर भी आपको दूसरों को सम्मान जरूर देना चाहिए। नही तो मनमें नकारात्मक भाव आ जायेगा। इसलिए छोटे-बड़े सभी का सम्मान जरूरी है। आपकी असहमति किसी भी निर्णय को लेकर किसी भी व्यक्ति के साथ हो सकती है पर आपकी असहमति बिना कोई कारण नहीं होनी चाहिए। आप तर्कों के साथ सम्बन्धित लोगों से आपकी असहमति का कारण चर्चा करें और उसे तरीके से पेश करें। जीवन का कोई भी क्षेत्र हो अपनी बात को बलप्रदान करने के लिए तार्किक बातें होना जरूरी है। जो बात जिसको कहना चाहते हो उसीको कहें। उसपर लक्ष्य करके व्यंग रूप में किसी दूसरे को न कहें। सम्बन्धित व्यक्ति के समूह के समक्ष ही बातें करें। सम्बन्धित पक्ष को आपका प्रत्युत्तर देने के लिए समय दें। अक्सर ऐसे समय में भावनाओं पर नियंत्रण रखें। असहमति जताते वक्त कुछ लोग ऐसी बातें कह जाते है जो दूसरों को नापसंद हो और उनकी भावनाएं आहत हो जाती है। जीवन के किसी भी क्षेत्र में अपनी बात कहने के लिए सही माध्यम का चुनाव बहुत महत्वपूर्ण है। सहमत असहमत होना एक साधारण बात है। असहमति जताते समय आपके निजी सम्बन्ध किसी तरह

प्रभावित न हो। असहमति जताते वक्त शब्दों का चयन बहुत सावधानी से करना चाहिए।

❋ दूसरों से तुलना करना अपनी तुलना ईर्ष्या और असुरक्षता पैदा करती है। हमारा बहुत समय अक्सर दूसरों के साथ अपनी तुलना करने में निकल जाता है। हमारे कर्म पुरुषार्थ के साथ मिलकर तय करते है कि हमें क्या मिलता है और क्या नहीं मिलता। यदि अपने आपमें स्वस्थ तुलना है तो हम किसी को हराने की इच्छा से नहीं बल्कि अपनी कमियों पर विजय पाने के लिए करते है। कम ही लोग ऐसी सकारात्मक तुलना करते है। जो हमारे पास है उससे हम संतुष्ट नहीं और हम वो सबकुछ पाना चाहते है जो दूसरों के पास है जैसे पद-प्रतिष्ठा, सम्पत्ति ताकि हमें खुशी मिल सकें पर यह उचित नहीं।

❋ शिक्षा का मूल अर्थ मानव व्यवहार में शालीनता लाना है। आधुनिक समय में शिक्षा को एकमात्र व्यवसायिक आधार माना गया है। वास्तविक शिक्षा वह निधि है जिससे व्यक्तित्व का निर्माण हो।

❋ रिश्तों की डोर तब कमजोर हो जाती है जब मनुष्य गलत फहमी में पैदा होनेवाले प्रश्नों के उत्तर स्वयं ही बना लेता है।

❋ आजकल लोगों को हार या जीत में कोई दिलचस्पी नहीं है। दिलचस्पी है बस अपनी रीत का पालन किया जाएं।

❋ दिन खत्म हो रहा है, बाजार समाप्त हो रहे है, उनकी रौनक खत्म हो रही है फिर भी आदमी को अपने रूप पर गरूर हो रहा है।

❋ सर्दी में हरियाली चली जाती है, भरी सर्दी में भी जख्म हरे हो जाते है। दुख दर्द का कोई खास मौसम नहीं होता। बारह महीने हंसकर चले जाना चाहिए।

❋ आज का दौर प्रतिस्पर्धा का दौर है। ऐसे में वही लोग सफलता हासिल कर सकते हैं, जो अपने सभी कार्यों में एक संतुलन बनाकर चलते है। काम और गुणवत्ता से ही नेतृत्व विकास पाता है। जब तक हम अपने कमियों को खुद पहचानकर उन्हें दूर नहीं करते तबतक हमें दूसरे के दोष बताने का हक नहीं है। अच्छा नेतृत्व अनुभव से आता है, सहयोगी दल के साथ काम करने से आता है। चीजों को सीखने की कोशिश करना चाहिए। अन्वेषण असफलता से ही शुरू होते है हमें अपनी गलतियों से डगमगाना नहीं चाहिए। हमें अपनी गलतियां स्वीकार करनी चाहिए और यह जानना चाहिए कि यह हुई क्यों। जिंदगी में कई बार ऐसा होता है प्रतिभा होते हुए भी हम सफल नहीं होते। हम कई मूलभूत बातों को भूल जाते हैं जिसके कारण हमारे सभी प्रयास निष्फल हो जाते है और सफलता दूर रहती है। सुधार कभी न रखनेवाली प्रक्रिया है। सिखने की कोई उम्र नहीं होती है पर सिखानेवाला कोई भी हो सकता है। इसलिए जहां कहीं भी जिस किसीसे कुछ भी सिखने को मिलें उसे जरूर सीख लेनी चाहिए।

❋ दु:ख कभी कभी सुख से भी बड़ा शिक्षक हो जाता है। मानवजाति का चरम लक्ष्य, ज्ञान है। मनुष्य का अंतिम ध्येय सुख नहीं वरन ज्ञान है क्योंकि सुख और आनन्द का तो एक-न-एक दिन अंत हो जाएगा। अत: सुख को ही परमलक्ष्य मान लेना मनुष्य की सबसे बड़ी भूल है। मनुष्य अज्ञानतावश यह समझ भी लेता है कि सुख ही सबकुछ है। सुख और दु:ख दोनों ही मनुष्य की अपनी जीवन के लिए महान शिक्षक है। जितनी शिक्षा उसे सुख से मिलती है उतनी ही दुख से भी। सुख और दु:ख जो जो आत्मा पर से होकर जाते रहते है वैसे वैसे उसके ऊपर अनेक प्रकार के चित्र अंकित होते हैं। इन चित्रों अथवा संस्कारों के फल को मानव का चरित्र कहा जाता है। मानव के चरित्रगठन में सुख और दुख दोनों ही समान रूप से उपादान स्वरूप है। चरित्र को एक विशिष्ठ ढांचे में ढालने में अच्छाई और बुराई दोनों का समान अंश है। सुख की अपेक्षा दु:ख नहीं तथा संपत्ति की अपेक्षा दारिद्र्य ने ही अधिक शिक्षा दी है एवं प्रशंसा की उपेक्षा निंदारूपी

आघात ने ही उसकी अंतस्थ ज्ञानाग्नि को अधिक स्फुरित किया है।

❋ धर्म को खतरा नास्तिकों से नहीं धर्म के ठेकेदारों से अधिक है। अंतर्मन की आवाज जात-पात, ऊंच-नीच किसी चीज को नहीं देखती। हर व्यक्ति मंदिर, गिरजाघर, मस्जिद, गुरुद्वारा, संत दर्शन इत्यादि के लिए समय निकालता है पर अपने आपके लिए समय नहीं निकाल पाता। यदि अपने लिए समय निकालकर अपने आपको जानने का प्रयत्न करें तो मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारा जाने की आवश्यकता ही नहीं हो। मनुष्य धार्मिक स्थलों पर जाकर धार्मिक होने का लेबल तो जरूर लगा लेता है लेकिन वास्तव में वह धर्मात्मा नहीं होता। धर्मात्मा तो वह अंतर्मन से आत्मा की आवाज सुनने तथा उसे अंमल में लाने के बाद ही होता है।

❋ कभी भी किसी के बारे में बुरा न सोचें। सामनेवाला आपको चोट पहुंचाये, तो माफ करें और उसे बदले में सकारात्मक ऊर्जा ही दें।

❋ बीते समय की गलतियों पर पछताने से अब कोई फायदा नहीं बस कोशिश करें कि मौजूदा समय में किसी को नुकसान न पहुंचायें।

❋ हमारे द्वारा सोची गयी अच्छी और बुरी बातें भी कर्म में आती है। जो विचार हम सामनेवाले के लिए सोचते हैं वही घूम फिर कर हमारे पास आ जाते हैं। हम यदि दूसरे के लिए बुरा सोचेंगे तो सामनेवाला भी हमारे लिए बुरा ही सोचेगा।

❋ सफाई सभी के साथ घनिष्ठता और मधुर सम्बन्ध बढ़ाने में काफी मदद करती है। ये ऐसा गुण हैं जो आपको पूर्णता की ओर ले जाता है। अच्छी कार्यशैली हमेशा प्रसन्नता होती है और सफाई अच्छी कार्यशैली की प्रेरणा देता है।

❋ यह निश्चित है कि जो किसी की परवाह नहीं करता उसकी परवाह भी कोई नहीं करता।

❋ ईमानदार शब्द व्यक्ति के कर्मों के विशेषण के रूप में कर्म की दिशा देखकर उसके व्यक्तित्व का गुण बताता है। इसके विपरितार्थ बेईमान है। बेईमानी का प्रतिफल है भ्रष्टाचार। हमारी नीयत ही हमारे कर्मों का मूल है। किसी व्यक्ति के कर्मों का आकलन करना हो तो उसकी नीयत को खरे देखना चाहिए। नीयत एक प्रकार का संस्कार है, जिसमें जन्मजात गुण की कम व अर्जित की मात्रा अधिक होती है। ईमानदार नीयत को अभ्यास और व्यवहार में लाने पर वह व्यक्ति की पहचान बन जाती है। ऐसे व्यक्ति चाहकर भी बेईमान नहीं हो सकते। ईमानदार नीयत से काम करने पर जो पहचान मिलती है वह सुख देनेवाली होती है।

❋ छोटी-छोटी बातों पर दोस्ती के पुराने रिश्ते को खत्म न करो, क्योंकि टूटी हुई दोस्ती फिर से जुड़ तो सकती है पर मजबूत और भरोसेमंद नहीं हो सकती।

❋ किसी चीज का लालच मत करो, जिस मनुष्य के दिल में जितना अधिक लालच होगा वो उतना ही कमजोर होता है और स्वयं पर उतना ही कम यकीन रखता है।

❋ अपने भाई की बात को हमेशा अच्छे दृष्टिकोण से देखना चाहिए।

❋ ईमानदार व्यक्ति की जुबान से जो भी बात निकले उसमें से कोई भलाई की बात निकाल सकते हो। उससे बुरे मतलब, बुरी बातों की कल्पना और सोच भी मत रखो।

❋ जो अपने राज को अपने पास रखेगा वो अपने ऊपर राज करेगा।

❋ जो बात अभी तक हुई नहीं उसके वहम और अंदेशो में मत पड़ो।

✻ अपनी आवश्यकता उस व्यक्ति को मत बताओ, जो यह चाहता ही नहीं कि आप अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर लो।

✻ जो यह मान ले कि वो मूर्ख है वो दुनिया का सबसे बुद्धिमान मनुष्य है लेकिन जो मूर्ख होने के साथ-साथ अपनी मूर्खता से बेखबर है वो दुनिया का सबसे बड़ा बेवकूफ है।

✻ जो भी ईमानदार व्यक्ति पेड़ लगाता है, खेती करता है उसके फल में से कोई परिंदा मनुष्य या जानवर खाता है तो वह उसके लिए निष्कर्म दान है।

✻ किसी से भलाई की आस में रहना जानवरों का काम है और किसी की भलाई करना मनुष्यों का काम है।

✻ जो ईश्वर का आज्ञाकारी है दूसरे उसकी आज्ञा का पालन करते है।

✻ सगाई और शादी के बीच लम्बा अन्तराल करना ठीक नहीं होता क्योंकि युवावस्था में मिलने की बेचैनी तीव्र होती है। दोनों में ही संयम का अभाव होता है।

✻ झूठी शेखी बघारना अपनी झूठी शान प्रदर्शित करना, बढ़चढ़कर डिंगे मारना आजकल किसीको पसन्द नहीं आती। व्यक्ति की सहज सरलता ही सबको लुभाती है।

✻ लज्जा स्त्री का आभूषण है। ज्यादा बेबाक और बेशर्म लड़की किसी का दिल नहीं लुभा सकती। सलीकेदार लिवास में ही अपनी गरिमा से लड़कियां ज्यादा प्रभावित कर सकती है।

✻ दिल से दूसरों की सेवा करो तो दुआओं का दरवाजा खुल जाता है।

✻ जो लोग सभा में भाषण देने के लिए सभी के शांत होने का इंतजार करते हैं वे कभी भी जनता के सामने बोल नहीं पाते।

✻ जो भी काम करने का आप मन बनाते है उसे तुरंत पूरा कर लेना चाहिए किसी का इंतजार नहीं करना चाहिए।

✻ नकारात्मक यादें दिमाग में हमेशा बकरार रहती है। नकारात्मक भावनाएं उदासी की बातें याददाश्त के प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी रहती है। आप खुशी के क्षणों को कम याद रखते है वही दु:खों के क्षणों को आप आपके जहन में चिपकाएं रखते है। भावात्मक पलों को बेहद लंबे समय तक अपने दिमाग में रखते है। इससे भविष्य में व्यक्ति के द्वारा कई गलतियां हो सकती है।

✻ कोई चीज वक्त से पहले चाहने से किस्मत से ज्यादा व पहले मांगने से, दूसरों का धन हड़पकर अपना कर लेने से मनुष्य को गम होता है।

✻ जब कभी गलतफहमी होने लगती है तो यह समझना कि जिंदगी का नियंत्रण हाथ में आ गया है और अचानक कोई एक मौहर आदमी को उसकी औकाद की तरफ ले आता है।

✻ शर्म और कम बोलना ईमानदारी की शाखा है।

✻ पाँव गीला किए बिना समुन्दर तो पार किया जा सकता है लेकिन आँसू बहायें बगैर जिंदगी नहीं गुजारी जा सकती।

✻ कोई व्यवसाय, उद्योग शुरू करते समय अधिक लाभ कमाने की कोशिश मत करो क्योंकि शीघ्र खाया हुआ खाना और जल्दी मिला हुआ फायदा कभी हजम नहीं होता।

✻ बुद्धिमान से ज्ञान प्राप्त करो पर उससे उसका मजहब मत पूछो। चमकते सूरज से उसका मजहब नहीं पूछा जाता बल्कि उससे उसकी रोशनी से फायदा उठाया जा सकता है।

✻ कर्ज के अलावा शहीद का हर अपराध माफ कर दिया जाता है।

✻ नेक लोग गुस्से पर नियंत्रण रखते है और लोगों के कसूर माफ कर देते है।

❋ रात और दिन की गहमा-गहमी, आह और वाह, कौन जानता है, किसलिए हो रही है। लक्ष्य को तय किये बगैर लोग बस चले जा रहे हैं। बेखबर हैं इस बात से कि कौन सा रास्ता किस मंजिल की तरफ जायेगा? लोग बेखबर हैं इस बात से कौन सा रास्ता सही है और कौन सा गलत? लोगों को इस बात की भी चेतना और समझ नहीं है कि बगैर दिशा और मंजिल से दूर जानेवाले रास्ते पर चलने से मंजिल दूर होती जाती है। कोई नहीं जानता कि ये दुनिया एक खेल तमाशा है। हर इंसान चाहे माने या न माने, एक ऐसे दिन और एक ऐसी मंजिल की तरफ बढ़ता चला जा रहा है जिसमें कोई शक नहीं, वो घड़ी आकर रहेगी। लेकिन लोग दुनिया में खोए हुए हैं। जहां सिर्फ धोखा ही धोखा है। इसलिए वक्त रहते होश में आओ। **सब कुछ लुटा के होश में आये तो क्या किया? दिन में अगर चिराग जलाए तो क्या किया?**

❋ जीवन में संतोष रखते हुए जीना ही श्रेयस्कर है।

❋ मेहनत से कमाया धन अधिक सुख शांति व संतोष प्रदान करता है। धर्म के बगैर धन का सही उपयोग नहीं होता। संतोष ही परमसुख है।

❋ धर्म हमें मर्यादित होकर जीवन जीना सिखाता है।

❋ माया, मोह व तृष्णा से परे रहकर अपना जीवन आध्यात्मिकता की ओर उन्मुख करना चाहिए। आज व्यक्ति असीमित इच्छाओं की पूर्ति के लिए असंतोष का जीवन जी रहा है। सभी इच्छा और कामनाओं की पूर्ति संभव नहीं होती। एक इच्छा की पूर्ति होनेपर अनेक पूरक इच्छाएं पनपने लगती है।

❋ जब हम क्रोधित होते है उस समय हमारे अंदर भीषण और उत्तेजना का प्रभाव होता है और हम उग्र हो जाते है। इस प्रवाह को ही असंतुलन कहा जाता है।

❋ सुगंध का प्रसार हवा के रुख का मोहताज होता है पर अच्छाई सभी दिशाओं में फैलती है।

❋ यदि बेटे ईश्वर की सौगात है तो बेटियां ईश्वर की दया है।

❋ जो नेकी और भलाई के रास्ते पर चलता है ईश्वर उसके लिए स्वर्ग के दरवाजे खोल देता है।

❋ दुनिया में आराम चाहनेवाला मूर्ख है और बेअक्ल है इसलिए दुनिया की मुसीबतों को बर्दाश्त करने का हौसला रखो यही तुम्हारी उन्नति का कारण बनेगी।

❋ ईश्वर की याद सब विपत्तियों से मुक्ति दिलाती है।

❋ भलाई से बुराइयों को मिटाते रहो, लोगों के साथ अच्छे बर्ताव से पेश आओ, ईश्वर से डरते रहो।

❋ जो व्यक्ति जमीन पर रहनेवालों पर दयाभाव नहीं रखता तो आसमान वाला भी उसपर रहम नहीं करता।

❋ ज्ञान एक ऐसा समुन्दर है जिसमें छलांग लगाने गोता खाने के बाद ही उसकी गहराई और विस्तार का सच्चा और सही पता लगता है। जो लोग किनारे पर खड़े हैं उनको ज्ञान की मोती तलाश करने की कठिनाई का अंदाजा हो सकता है क्या। न ही उसकी हिम्मत और न ही उसकी लगन का। एकबार जो ज्ञान प्राप्त करना शुरू कर देता है तो उसपर उसकी पहलू खुलते चले जाते है। अज्ञानता यकीनन बुराई है, अंधेरा है। जब अज्ञानता का सही अहसास हो जायेगा तो यह अहसास ही उसके जीवन की रोशनी है।

❋ हर घर में और हर रिश्ते में कुछ न कुछ समस्याएं पैदा होती है। उन समस्याओं का समाधान करने के लिए कोशिश करते रहना चाहिए। समस्या को जानकर भी अनजान बने रहना समस्या का हल नहीं है। रिश्तों में कभी कुछ न कुछ खटास आ जाती

है जो तकलीफ देते है। इन समस्याओं को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। कोई भी समस्या खुद ब खुद हल नहीं हो सकती। आप चाहते है कि आपके घरमें खुशहाली बनी रहें तो दिखावा करने की कोशिश कभी मत करें। रिश्तों में कोई शर्त नहीं होती हर रिश्ते में कोई अच्छी बातें होती है तो खामियां भी हो सकती है। खामियों को अच्छाई में बदलने की कोशिश करते रहें और अपने अंदर दूसरों के लिए प्रेम, मुहब्बत का जज्बा पैदा करें फिर कोई समस्याएं हल करने में परेशानी नहीं होगी।

* यदि कोई मनुष्य किसी कार्य को अनिश्चितता से आरंभ करता है तो उसे दुविधा का सामना करना होगा और दुविधा से आरंभ करेगा तो अनिश्चितता में कार्य समाप्ति होगी। सज्जन की उपयोगिता कर्म से है, कण्ठ से नहीं।

* इस सत्य को धारण करो कि भगवान न पराए हैं, न तुमसे दूर हैं और न ही दुर्लभ हैं।

* मनुष्य के लिए निराशा पाप समान है। पाप की निराशा रूपी लता को हटाकर आशावादी बनो।

* केवल वही जीवन सफल है जिसे दूसरों के लिए जीया जाए। कला में उतर जाइए। जीवन का तल पा लेंगे।

* मनुष्य की वाणी से उसके गुण और अवगुण जाने जा सकते हैं।

* कोमल उत्तर से क्रोध शांत हो जाता है। कटु वचन से उठता है।

* चरित्र विचारों के तानोबानों से बुना जाता है। चरित्र निर्माण हो गया तो बाकी निर्माण स्वत: ही हो जाएंगे। चरित्र निर्माण हो गया तो साहस, धन, लगन और दुनिया की सफलताएं दौड़ी चली आएंगी।

* चोर से जैसे सावधान रहते हो, वैसे ही क्रोध से भी रहो। क्रोध को जीतने के लिए मौन सबसे बड़ा शस्त्र है।

* अपनी अज्ञानता का आभास ज्ञान का प्रथम सोपान है। अपनी अज्ञानता का अहसास होना बुद्धिमत्ता का पहला लक्षण है।

* गुणवान व्यक्ति दूसरे की गलतियों से अपनी गलती सुधारते हैं।

* गुण को यदि प्रभावी गुणात्मकता के साथ प्रस्तुत किया जाए तो सभी सहमत हो जाते हैं। असहमत मूर्खों की जरूरत भी नहीं होती।

* अहंकार के समूल नाश से तृष्णाओं का अंत होता है।

* अहंकार ही पराजय का द्वार है।

* स्वयं को उपदेश देनेवाले ही उन्नति की मंजिल पर पहुंचते हैं।

* सफल होने के लिए तुरंत फैसला कर डालने की शक्ति होना अति आवश्यक है।

* आनंद का मूल स्रोत है संतोष। संतोष समाज सुधार का मूल मंत्र है।

* चिंता, किए जानेवाले प्रश्नों की सजा चिता के समान है, चिंता को अपने शत्रुओं की सूचि में पहले स्थान पर रखो।

* मन चंचल और कठिनता से वश में आनेवाला है, परंतु अभ्यास और अध्यवसाय से उसे वश में किया जा सकता है।

* कवि हो, प्रेमी हो अथवा पागल, इन सबकी कल्पना शक्ति बड़ी तीव्र होती है।

* उन्नति की भाषा मेल-मिलाप है।

* एक बार संदेह का बीज मन में पड़ जाए तो व्यक्ति जैसे अपने शत्रु पक्ष पर संदेह करने लग जाता है, वैसे ही मित्र पक्ष से भी उसका विश्वास उठ जाता है।

* क्रांति सदैव द्रुतगामी होती है।

* एक समय जो प्रिय लगता है, वही आगे चलकर अप्रिय हो जाता है।

* कोई व्यक्ति पाप करके धन लाता है, तो उसका उपभोग परिवार के सब लोग करते हैं, लेकिन पाप का फल वह अकेला भोगता है।

* काल पर हम विजय प्राप्त करते हैं अपनी सुकीर्ति से, यश से, व्रत से।

* किसी वस्तु को जानने और समझने में बड़ा अंतर है। जैसे खाकर अपच होना और खाकर पचा लेना।

* काव्य की विशेषता है कि वह कवि से भी आगे बढ़ जाता है।

* किंवदंतिया वे ही बनते हैं, जो जीवन के प्रत्येक क्षण से सीखने की क्षमता रखते हैं।

* किसी राजा की जय-जयकार केवल उसके राज्य में होती है परंतु एक विद्वान का आदर हर कहीं होता है।

* कोई भी महान कलाकार वस्तुओं को वैसा का वैसा नहीं देखता जैसी कि वे होती हैं। यदि ऐसा होता है तो वह कलाकार ही नहीं रह जाता।

* कुमारियां पति के अलावा कुछ नहीं चाहतीं, लेकिन विवाह होते ही वे सब कुछ चाहने लगती हैं।

* किसी देश की संस्कृति एक प्रकार का जेलखाना है, एक स्वप्न है जिससे जगाना असंभव है और जिसको भूल जाना भी सम्भव नहीं।

* कोई भी मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता। आप परमेश्वर और धन लोलुपता दोनों की सेवा एक साथ नहीं कर सकते।

* किसी व्यक्ति की भुखमरी से बच पाने की क्षमता उसके स्वामित्व अधिकार और विनिमय अधिकारिता निरूपणों पर निर्भर करती है।

* केवल अखबारों की पाल चढ़ाकर संसार सागर में यात्रा करने का साहस नहीं करना चाहिए।

* कोई चीज भी इतनी आसान नहीं जितना कि बड़ा होना। वास्तव में सीधा-सादा होना ही बड़प्पन है।

* आपके भीतर अभी भी कितना तेज, कितनी शक्ति छिपी हुई है? मनुष्य का जन्म हुए लाखों वर्ष हो गए, पर अभी तक उसकी असीम शक्ति का एक अत्यन्त क्षुद्र भाग ही अभिव्यक्त हुआ है। इसलिए हमें यह नहीं कहना चाहिए कि तुम शक्तिहीन हो। आपके पीछे अनन्त शक्ति और शांति का सागर है।

* कई मामलों में जानवर भी मनुष्यों को प्रेम और दया का पाठ पढ़ा सकते हैं।

* कार्य कुशलता रहस्य नहीं है। इस रहस्य को भूल जाना दोष है। सुस्ती करना उससे भी बड़ा दोष है, दुनिया की उपेक्षा करना और उसके बहाने तलाश करना सबसे बड़ा दोष है। तुरन्तकार्य कर डालना और देरी न करना पूर्णता का सबसे बड़ा रहस्य है।

* कोई भी मूर्ख नियम बना सकता है और प्रत्येक मूर्ख उसका पालन करेगा।

* कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं जिससे कि खुशकिस्मती जीवन में एक बार नहीं टकराती लेकिन जब वह देखती है कि वह उसका स्वागत करने के लिए तैयार नहीं तो वह दरवाजे से घुसकर खिड़की से निकल जाती है।

* कोई भी व्यक्ति अपनी पत्नी के लिए नायक नहीं और न कोई स्त्री किसी नायक की धर्मपत्नी है।

* काया का भ्रम एक भयानक आवरण है। इससे मुक्त होना कठिन है।

* कानून मकड़ी के उन जालों की तरह होते हैं जो केवल छोटी मक्खियों को पकड़ सकते हैं किन्तु ततैये उन्हें तोड़ देते हैं।

* आपको लिखते समय यह ज्ञान ही न हो कि आप क्या लिखना चाहते हैं और समाप्त करते समय यह कि आपने क्या लिखा है।

* किसी अपराध की सहज स्वीकारोक्ति उसके निरपराधी होने का साक्ष्य नहीं है।

* किसी भी राज्य की कोई भी वस्तु इतनी हानिकारक नहीं जितनी कि यह बात है कि उस राज्य में चालाक लोग अपने को बुद्धिमान सिद्ध करने का ढोंग रचें।

* किया हुआ कर्म और बोया हुआ बीज उचित समय लेता ही है।

* उत्तम पुरुषों की यह रीति है कि वे किसी भी कार्य को अधूरा नहीं छोड़ते।

* आशा, विश्वास और दान सबसे उत्तम है।

* आशा ही दुख की जननी है और निराशा (विरक्ति) ही परम सुख शान्ति देनेवाली है।

* जीवन एक पुष्प है और प्यार उसका मधु। जीवन एक दर्पण के समान हैं, हमें अच्छे परिणाम तब मिलते हैं जब हम इसे देखकर मुस्कराते हैं।

* कम बोलने से मन की शक्ति बढ़ती है। मौन शब्दों से भी अधिक शक्तिशाली है।

* चरित्र वृक्ष है, प्रतिष्ठा छाया। तमाम पाषाण खण्ड एक हीरे से काटे जाते हैं। जिसका नाम है चरित्र।

* मूर्ख का क्रोध नगाड़े के समान शोर करता है, किंतु बुद्धिमान मनुष्य का क्रोध गहरी झील के समान शांत रहता है।

* गाली कमजोर लोग देते हैं।

* किसी दोष का इकरार कर लेना उसको आधा दुरुस्त कर लेना है।

* सज्जनों का स्वभाव गुणों को पास रखना है और दुर्जनों का स्वभाव अवगुणों को अपने पास रखना है।

* सद्‌गुण उस कार की भांति हैं जो आपने खरीद तो ली है, लेकिन उसे व्यवस्थित रखना अत्यंत आवश्यक है।

* अभिमानी स्वयं को खा जाता है। जिसे होश है, उसे अहंकार नहीं होता।

* आप जिस शक्ति और सफलता को प्राप्त करना चाहते हैं। उसकी सामर्थ्य आपके अंदर है, अत: अपना भविष्य स्वयं बनाइए। किसी की सफलता देखकर ईर्ष्या करना सबसे बड़ा पाप है।

* संयम की चाबी से सफलता के प्रत्येक द्वार खोले जा सकते हैं।

* संसार में कई सुख हैं, लेकिन संतोष सर्वोपरि है।

* काम करते-करते घिस जाओ यह बेहतर है बिना काम किए सड़ जाने से।

* कुलटा पत्नी, धोखेबाज मित्र, जवाब देनेवाला नौकर और घर में सर्प रखनेवाला व्यक्ति मृत्यु के साथ रहता है।

* कोई व्यक्ति चाहे तमाम बातें छिपा सकता है पर मदिरा पान और प्रेम का मर्ज नहीं छिपा सकता।

* कायर जीना जानते हैं और वीर मरना।

* कंजूस का धन जमीन से तब बाहर आता है जब वह स्वयं जमीन में दफन हो जाता है।

* कोयल का सौंदर्य उसके स्वर में, स्त्री का सौंदर्य पतिव्रत धर्म में और कुरूपों का सौंदर्य विद्या में तथा तपस्वियों का सौंदर्य क्षमा में निवास करता है।

* खाकी और खादी में कौन अधिक खतरनाक है? यह निर्णय भुक्तभोगी ही कर सकते है।

* कांच का टुकड़ा टूटकर तेज धारवाला खंजर बन जाता है। यही कैफियत मनुष्य के टूटे हुए दिल की है।

* कोमल हृदयवाले व्यक्ति प्रकृति से ही करुणामयी होते हैं।

* खुशामदी के मुंह और मन में सदा ही भेद रहता है।

* खोटे सिक्के और खोटे पुत्र को अधिक अवसर प्रदान किए जाते हैं।

* खरगोश की बहादुरी संकट के समय फुरती से भागने में है और शेर की झपट कर आक्रमण करने में।

* गाली सहन करनेवाला जिस क्रोध को रोकता है वह गाली देनेवाले को जला डालता है और उसके पुण्य को भी हर लेता है।

* गरीबी में मनुष्य जितना बनता है, उतना अमीरी में नहीं बनता।

* गलती हमारे ज्ञान की नहीं बल्कि निर्णय की होती है, जो झूठ के लिए अपनी मंजूरी दे देती है।

* गरीब को दान देने से पुण्य मिलता ही है, परन्तु रिश्तेदारों और इष्टमित्रों को दान करने से एक तो दान का पुण्य और दूसरा रिश्तेदारों की मदद करने का पुण्य। इस प्रकार अधिक पुण्य मिलता है।

* गरीब वह नहीं है, जिसके पास कम है, बल्कि वह है जो अधिक चाहता है।

* गालियां और स्तुति करना, इसे सांस लेने के समान साधारण समझो।

* गाली के बदले गाली, यह नीच प्रकृति है। गाली के बदले हार मानी जाए यह सज्जनता है।

* गलती कोई भी कर सकता है, पर मूर्ख उसे दोहराने की गलती करता है।

* गरीबों में अगर ईर्ष्या है तो वह स्वार्थ के लिए या पेट के लिए, जबकि बड़े आदमियों की ईर्ष्या केवल आनंद के लिए है।

* गरीबी के लाभ भी बड़े मधुर हैं, जो कि मूर्ख व्यक्ति को बदसूरत और घिनौने दिखाई देते हैं। लेकिन एक कीमती पत्थर उसके सिर में जड़ा है। यह विद्वान गरीब जानते हैं।

* गाली का सामना हमें सहनशीलता से करना चाहिए।

* गुड़ से मारनेवाला जहर से मारनेवाले की अपेक्षा कहीं ज्यादा सफल हो सकता है।

* गलती को स्वीकार कर लेना उस लगाई गई झाड़ू के सामन है जो गंदगी को हटाकर सतह साफ कर देती है।

* गरीबी मनुष्य को स्वयं की जानकारी कराती है।

* गुप्त रूप से किया गया पाप मरते समय तक चुभता रहता है।

* गाओ, हंसो और प्रसन्न रहो तो तुम्हारे मन की गांठें भी खुलेंगी और दूसरों की भी।

* घाव पर बार-बार चोट लगती है, क्योंकि दुखों में बहुलता से नए दुख आते रहते हैं।

* घृणा करनेवाले अपने दिल में मृत्यु समान बेचैनी का अनुभव करते हैं। घृणा की अंधता वास्तविक अंधता से अधिक बुरी है, क्योंकि अज्ञान जिस प्रकार को जगाए बिना छोड़ देता है, घृणा बुझा देती है।

* घर एक वह स्थान है जहां जब कभी भी आप पहुंचते हैं, वह आपको अंदर बुला लेता है।

* घर लड़की के लिए स्वतंत्रता का स्थान और स्त्री के लिए कार्यक्षेत्र है।

* घनिष्ठता एक जादूगर है जो कुरूपता के प्रति तो दयालु है, लेकिन सौंदर्य के प्रति कठोर।

* घर की शोभा उसके स्वामी से होनी चाहिए न कि घर से स्वामी की शोभा हो।

* चरित्रवान पत्नी पति की शोभा है, पर व्यभिचारिणी पत्नी पति की हड्डियों का क्षय है।

* चालाकी की चोरी हो सकती है लेकिन विद्वता की चोरी दुनिया का कोई भी चोर नहीं कर सकता।

* चेतना अंतर्मुखी होते ही दैवी शक्ति आ जाती है।

* चलते, खड़े, बैठते अथवा सोते हुए जो मनुष्य मन को शांत रखता है, वह अवश्य ही शांति को प्राप्त करता है।

* चंद्रमा की कलाओं के समान नारी का हृदय भी सदैव परिवर्तनशील होता है, परंतु उसमें सदा ही एक पुरुष का वास होता है।

* किसी कार्य को आरंभ न करें, यह ज्यादा अच्छा है उससे जो कार्य आरंभ करके छोड़ दिया जाए। अत: कार्य आरंभ करने से पहले सब चीजें देख सोच लेनी चाहिए।

* कर्म से आदमी ऊंचा नीचा होता है। प्रभु सबको उसके कर्मफल से ऊंचा पद व मान मर्यादा देते हैं।

* आशा जीवन है, निराशा मृत्यु। आशा का अर्थ है थका हुआ नहीं, टूटा हुआ नहीं।

* जीवन के संघर्ष में प्रेमकी विजय होती है। जीवन और कर्म- एक ही चीज के दो नाम हैं।

* प्रिय होने पर भी जो वचन हितकर न हो, उसे न कहें। हितकर कहना ही अच्छा है। चाहे वह सुनने में अत्यन्त अप्रिय ही क्यों न हो।

* आदमी की खुशहालियां उसकी सच्चरित्रता का फल हैं और चरित्र की पहचान विचारों से होती है।

* असावधानी विनाश को बहुत शीघ्र बुलाती है। जीवन महल के किसी भी दरवाजे से काम-क्रोध रूपी चोर को अंदर न घुसने दो और सावधानी के साथ, जो पहले घुसे बैठे हों, उन्हें दृढ़ता और शूरता के साथ निकालने की प्राणपण से चेष्टा करते रहो।

* किसी व्यक्ति में कितना ज्ञान है, इसका पता इस बात से लगता है कि उसका मन विषयों में कितना अटका हुआ है या उनसे मुड़ा हुआ है। उस विषय में अज्ञानी रहो, यह ज्यादा बेहतर है बजाय अधूरा ज्ञान प्राप्त करने के।

* किसी के गुणों को गाने में अपना समय नष्ट करने के बजाय उसे अपनाने में समय लगाओ।

* आप ख्याति बढ़ाना चाहते हैं तो यह यह गुण अपना लीजिए- बुद्धि, इन्द्रिय निग्रह, कुलीनता, पराक्रम, शास्त्रज्ञान, मौन, दान और कृतज्ञता।

* जिन्हें आलोचना सुनकर दु:ख हो, उन्हें समझ लेना चाहिए कि वे अहंकारी हैं। स्वार्थ और अहंकार को त्यागे बिना सद्कार्य संभव नहीं।

* सफलता की शिक्षा विफलता की पीठ से मिलती है। सफलता इसमें नहीं है कि भूलें कभी न हों, बल्कि इसमें है कि एक ही भूल दोबारा न हो।

* अपनी स्त्री, धन और भोजन इन्हीं में संतोष करना चाहिए। विद्या पढ़ना, जाप करना-कराना और दान देना- इनमें संतोष न करना चाहिए।

* छोटी नदियां शोर करती हैं और बड़ी नदियां शांत बहती हैं।

* छुपा ऐब वह चिकना घड़ा है, जिस पर किसी बात का असर नहीं होता।

* छोटी वस्तुओं की तुलना में बड़ी वस्तुओं का बलिदान होता है।

* जो आघात सहन करता है, वही संत है।

* जो सब मानवों को समान रूप से देखता है, वही सच्चा मानव है।

* जिसका पुत्र आज्ञाकारी हो, स्त्री कहने में हो और मन में धन का लोभ न हो। वह धरती पर रहता हुआ भी स्वर्ग में है।

* जो पुस्तकें अधिक सोचने पर मजबूर करती हैं, वही आपकी सबसे बड़ी सहायक हैं।

* जो वंश का नाम उजागर करे, वही अमर है।

* जो तलवार धारण करते हैं, वे तलवार ही के घाट उतरते हैं

* ज्यों-ज्यों लाभ होता है, त्यों-त्यों लोभ बढ़ता जाता है। लोभ की कहीं सीमा नहीं है।

* जहां प्रभु की ज्योति है, वहां सदैव कल्याण है।

* जिस मानव की बुद्धि का विकास नहीं होता या जो अविवेकी होता है, मानवता से गिर जाता है।

* जब दृढ़ता पर्याप्त है तो उतावलापन आवश्यक है।

* जैसे दूध में शक्कर मिलती है, ऐसे विदेशी पुरुष जब स्वदेशी के साथ मिल जाता है, तब ही स्वागत सत्कार के योग्य बनता है।

* जो धूल पैर से आहत होने से उठकर सिर पर चढ़ती है, वह उस मनुष्य से अच्छी है जो अपमान होने पर भी शांत बैठा रहता है।

* जो शिक्षा आदमी को संकीर्ण और स्वार्थी बना देती है, उसका मूल्य किसी जमाने में चाहे जो रहा हो, अब नहीं है।

* जन्म लेना एक मुसीबत है, जीवित रहना कष्ट और मृत्यु को प्राप्त होना एक परेशानी।

* जो दोष दूर कर सकता है लेकिन मित्रता टूटने के भय से सावधानी बरतता है, वह मित्र नहीं है।

* जो माता-पिता, ब्राह्मण और आचार्य का अपमान करता है, वह यमराज के पाश में पड़कर उस पाप का फल भोगता है।

* जो जीवों की हिंसा करता है, वह आर्य नहीं होता। सभी जीवों के प्रति अहिंसा का भाव रखनेवाला ही आर्य कहलाता है।

* जिसका अपना मन दूसरे के साथ चला जाता है, विश्व में उससे बढ़कर असहाय और निरुपाय कदाचित और कोई नहीं।

* जो कला जनता के हित में न होकर केवल गिने-चुने भाग्यवानों के लिए होती है, वह निरुपयोगी है।

* जिसका मन के द्वारा मनन नहीं होता, किंतु जिसकी शक्ति से मन मनन व्यापार में सफल होता है, उसी को ब्रह्म समझो।

* जो व्यक्ति जितना अशिक्षित है उतना ही गरीब है।

* जब कोई व्यक्ति अहिंसा की कसौटी पर पूरा उतर जाता है तो दूसरा व्यक्ति स्वयं ही उसके पास आकर वैरभाव भूल जाता है।

* जहां अध्यात्म जीवित है, वहां अनीतियां आत्महत्या कर लेती हैं।

* जो मनुष्य दर्प, क्रोध और विषयलालसाओं से रहित है, उसमें एक प्रकार का गौरव रहता है जो उसके सौभाग्य को भूषित करता है।

* जो दूसरों से सम्मान नहीं चाहते और स्वयं दूसरों को सम्मान देते हैं तथा सम्माननीय पुरुषों को नमस्कार करते हैं, वे महान संकटों से पार हो जाते हैं।

* जहाज किसी भी दिशा में क्यों न जाए, कंपास की सुई उत्तर दिशा ही दिखाती है। इस कारण जहाज का दिशा भ्रम

नहीं होता। इसी प्रकार मनुष्य का मन यदि भगवान की ओर रहे तो फिर उसे कोई डर नहीं।

* जो मनुष्य लगातार उन्नति करने का यत्न करता है, उसकी ख्याति फैल जाती है। यह ख्याति भी बहुत लाभदायक होती है। इससे दूसरे लोग समझने लगते हैं कि वह व्यक्ति धुन का पक्का है, मेहनती है, नेक है। यह प्रसिद्धि भी एक प्रकार की पूंजी ही है।

* जिसके घर माता अथवा प्रियवादिनी पत्नी नहीं है, उसे वन में चले जाना चाहिए क्योंकि उसके लिए जैसा वन, वैसा ही घर।

* जिस कथन को आचरण में न उतारा जाए, उसमें शक्ति नहीं होती।

* जो युवक शादी के लिए दहेज की मांग करता है, वह अपनी शिक्षा, समाज और परिवार को बदनाम करता है।

* जैसे मनुष्य पुराने वस्त्र फेंककर नए ग्रहण करता है, उसी प्रकार आत्मा भी पुराना शरीर छोड़कर नवीन शरीर को ग्रहण करती है।

* जो ईश्वर को पा लेता है, मूक और शांत हो जाता है।

* जो आदमी दूसरी जाति से घृणा करता है, वह तो ईश्वर से भी घृणा करता है।

* जिसने सुख में तो ईश्वर को कभी स्मरण नहीं किया और दु:ख में याद किया, ऐसे दास की प्रार्थना नहीं सुनी जाती। अथात् भगवान उसी की सुनते हैं, जो सुख और दु:ख में समान भाव से रहता है।

* जो कला आत्मदर्शन करने की शिक्षा नहीं देती, वह कला ही नहीं है।

* जैसे मछली को पानी प्रिय लगता है, लोभी को धन और माता को अपना बालक प्रिय लगता है, वैसे ही भक्त को ईश्वर प्रिय लगता है।

* जैसे गांधी और बुद्ध को हमने मूर्तियों में कैद कर दिया है वैसे ही दूसरे धर्मों में भी हुआ है। विचार, मूल्य और उपदेश आदि गौण हो गए हैं। हमने उन्हें भुला दिया है।

* जो लोग आजादी के आराम को पसंद करते हैं स्वतंत्रता के सुख का मूल्य अधिक मानते हैं, वे न तो आराम पाते हैं और न ही आजाद रह पाते हैं।

* सेवा से बढ़कर कोई दूसरा धर्म नहीं। सेवा धर्म का यथार्थ अनुष्ठान करने से संसार का बंधन सुगमता से खत्म हो जाता है।

* जिस तरह भरी हुई नदी चलती है, रुकती नहीं, उसी प्रकार श्रेष्ठ मनुष्यों की कीर्ति भी चलती ही जाती है, रुकती नहीं।

* जो बोलता है, वह बीज बो देता है। जो सुनता है, वह फसल काटता है।

* मौके हमेशा हमारे पैरों के नीचे दबे होते हैं। हमें उनकी तलाश में कहीं जाने की जरूरत नहीं। हमें केवल उनको पहचान लेना हैं।

* समस्या को देखकर, उसका आकार देखकर न घबराएं। दुनिया में ऐसी कोई समस्या ही नहीं बनी है, जिसका कोई हल न हो।

* हर बड़ी समस्या हल होने के बाद ढेर सारी खुशियां लेकर आती है और अपने साथ बड़ा अवसर साथ लाती है।

* दफ्तर में काम करनेवालों को काम व जिम्मेदारियों के प्रति छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा, चिड़चिड़ापन या असंतोष नहीं दिखाना चाहिए। दफ्तर में अधिकतम खुले व पारदर्शी कपड़ों को पहनकर न जाएं।

* मुहब्बत एक बच्चे की तरह है जो हर उस चीज की ख्वाहिश करती है जो उसके रास्ते में आ जाये।

* एक देव की सी ताकत रखना अच्छा है लेकिन देव की तरह इस्तेमाल करना जुल्म है।

* गुरूर हमेशा मुंह के बल गिरता है और उस घमंडी आदमी की गर्दन तोड़ देता है जो उसकी पीठ पर सवार हो।

* आपस में असंतुलित होकर बहस या तकरार करने से स्वास्थ्य बिगड़ता है। बात-बात पर बहस कर बैठने से तकरार में बदलते देर नहीं लगती। इससे स्वास्थ्य खराब होता है, तीव्रता बढ़ जाती है, सांस, हृदयरोग, रक्तचाप जैसी बीमारियां उग्र हो जाती है। तकरार में मस्तिष्क से संतुलन टूटने लगता है।

* जीवन में कभी भी कठिन हालात में अपनी आस्था को कम न होने दे। ईश्वर जिन्हें सच्चे मन से चाहते है उन्हें ही अग्निपरीक्षाओं से होकर गुजरना पड़ता है।

* जिस ज्ञानी पर मूर्खों का शासन चले, जिस शरीफ पर कमीना शासक हो, नेकी करनेवाला बुरे के प्रभाव में हो, अप्रवृत्तियों पर रहम आती है।

* किसी की खूबियों की तारीफ में अपना समय बर्बाद नहीं करना चाहिए बल्कि उसकी खुबियों को अपनाने का प्रयत्न करो।

* सीधे-साधे मनुष्य के लिए जिंदगी आसान है और समझदार के लिए मुश्किल है।

* जो जिंदगी भलाई की दौलत से रहित है वो बेकार है।

* सज्जन पुरुष को जनाजे के साथ जाना चाहिए और निमंत्रणों को स्वीकार भी करना चाहिए।

* भलाई करना सीखो और बुराइयों से आंखें मोड़ लो। भलाई करते रहो और बुराइयों को रोकते रहो।

* बातचीत पर नर्मी हो तो लोंगों का अच्छा प्रभाव पड़ेगा। अच्छे व्यवहार की यही बुनियाद है।

* सब्र करनवेालों के साथ ईश्वर है। मनुष्य का सब्र बड़ा दुश्मन शैतान है। शैतान हमें अच्छे काम से हटाकर बुरे काम की तरफ ले जाता है।

* अपने ईमान को इस दुनिया से बचाकर ले जाना यह असली कामयाबी है।

* नेक दिल आदमी उस गाय की तरह है जो दूध देती है और गुनहगार आदमी उस सांप की तरह है जिसे दूध पिलाओ तो डंक मारता है ऐसे व्यक्तिसे दूर ही रहना ठीक है।

* मीठे बोल गुस्से को खत्म करते है और ईश्वर के नजदीक लाते है। ईश्वर के भय से उम्र बढ़ती है। गलत कामों को अंजाम देने से उम्र कम होती है।

* खुशमिजाजी गमगीन लोगोंकी दवा है।

* मूर्ख अपने दिल की बात पहले ही जाहिर कर देता है और बुद्धिमान अपना राज आखिर दम तक छिपाये रखता है।

* जब मनुष्य का कर्म ईश्वर की मर्जी के मुताबिक होता है तो वह दुश्मनों के दिल में भी अपना घर कर लेता है।

* दु:ख जिंदगी को, क्रोध बुद्धि को, क्षमा अपराध को, चुगली दोस्ती को, प्रार्थना बुराई को खत्म कर देती है।

* बुद्धिमान वो है जो अच्छाई और बुराई में फर्क करके बुराई को हमेशा के लिए छोड़ दे और अच्छाई को हमेशा के लिए ग्रहण कर ले। बुराई न छोड़ना और अच्छाई को न अपनाना ही बेवकूफी है।

* आप कितने भी बड़े धनवान बन जाओ पर अपना काम नौकरों के भरोसे कभी नहीं छोड़ना। अपना काम स्वयं करते रहो ताकि समय के उतार चढ़ाव को झेलने की ताकत बनी रहे।

* ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा जिसने अपनी तकदीर का रोना न रोया हो। यह शिकायत हर किसी के जुबान पर रहती

है। हर व्यक्ति अपने से अच्छे व्यक्तित्ववाले के साथ तुलना करता है और अपनी किस्मत को कोसता है, फटकारता है। वो यह नहीं देखते कि यह उसकी किन कारणों की वजह से हो रहा है। अगर वो अपने अतीत में झांककर देखें तो मालूम पड़ता है कि उन्होंने भी कोई लोगों के साथ अच्छा सलूक नहीं किया है।

* जिंदगी ईश्वर का दिया हुआ अनमोल नेअमत है। मनुष्य अपनी आधी जिंदगी सोने में गुजार देता है, आधा हिस्सा जवानी और बुढ़ापे में आता है। जिंदगी खत्म होने पर लोग उसे भुला देते है। जिंदगी को यादगार अच्छे शिष्टाचार, संस्कृति और अच्छे बर्ताव से बनायी जा सकती है। जो जिंदगी को जिंदगी की तरह जीते हैं वो एक-एक लम्हे की कदर करते हैं वो ही असली जीवन जीते हैं और वो लोग जीने की ढंग से वंचित होते है जो दिन-रात का समय बर्बाद करने में लगे हुए रहते हैं। वक्त उनको भी बर्बाद कर छोड़ता है। इसलिए वक्त का सही इस्तेमाल करना जिंदगी का मक्सद है। जिंदगी एक सफर है माँ का गर्भ उसका पहला स्टेशन है और श्मशान उसकी आखरी स्टेशन है। वर्ष उसकी मंजिले हैं, महीने उसकी मील है, दिल मील का पत्थर है और उसकी हर सांस इंजिन के चलने की आवाज है।

* मुस्कान सकारात्मक भावनाएं, तनाव को दूर करने में मदद करती है। इससे हमारी भावनाएं प्रभावित होती है। क्रोध स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर डालता है। मनुष्य को गुस्सा अधिक चिंता करने के कारण आता है। क्रोध और बेचैनी एक-दूसरे से जुड़े हुए है।

* ईश्वर की भक्ति के बिना उसकी कृपा की आशा करना अज्ञानता और बेवकूफी है।

* दुनिया बहुत महत्वपूर्ण जगह है और हमें सही लाभ उठाने के लिए पूरे तौर पर मनुष्य बनने की कोशिश करनी चाहिए इसलिए दुनिया में फिजूल वक्त नहीं गँवाना चाहिए।

* अच्छी बात हमेशा लिख लेनी चाहिए और इसी को बयान करना चाहिए और उसपर स्वयं भी अमल करें।

* जिसतरह हम खुबसूरत बनने के लिए नये-नये प्रयोग करते है वैसे ही हमें नेक बनने की कोशिश करनी चाहिए।

* लालची और मतलब परस्त व्यक्ति से दूर रहना चाहिए जिस तरह आग पानी से दूर रहती है।

* आलसी निकम्मा होता है। मेहनत करनेवाला कभी नाकाम नहीं होता। मेहनत की आदत डालनी चाहिए। मेहनत करनेवाले को ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है। जिसने मेहनत से जी चुराया उसे कभी शान्ति नहीं मिलती। मेहनत करनेवाले को धन, दौलत, यश, कीर्ति प्राप्त होती है। मेहनत के रंग से बड़े-बड़े मुल्कों के नजारे देखने को मिलते है। मेहनत से प्यार करनेवाले को अच्छी आदतें आती है। जिंदा कौमे उसीके बारे में विचार करती है।

* सोना टूटकर जुड़ सकता है मगर हीरा टूटकर कभी नहीं जुड़ता।

* तरक्की की मंजिल तय करने में देर लगती है, इसलिए हर कदम सोच-समझकर और सम्भालकर रखना चाहिए। कदम कभी लड़खड़ाने न पायें वरना खाई में गिरते देर नहीं लगेगी।

* अच्छे बर्ताव से आप दुश्मन के दिल में भी जगह बना सकते हो। अच्छे आचरण से जिंदगी शांति और आराम से गुजरेगी। यह सब अच्छे संस्कारों के लक्षण है।

* क्षमा करने की आदत डालो, इन्तकाम का विचार मस्तिष्क को नाकाम बना देता है।

* किसी भी काम में महत्वपूर्ण यह नहीं है कि आप हार गये बल्कि यह है कि हारने के बाद भी आपकी हिम्मत बरकरार है।

* समय को कभी भी बर्बाद मत करो नहीं तो समय आपको बर्बाद कर दे।

* किसी से इस तरह मिलो कि वो अपना दुख भूल जाये, बुझे चेहरे से किसी का स्वागत मत करो कि उसका दिल उदास हो जाएं और वो आपकी मुलाकात को बोझ समझने लगे।

* मनुष्य की असली सुन्दरता उसका ज्ञान है।

* कमियों का अहसास सफलता के नजदीक लाता है।

* चिड़िया से सबक सिखो कि वह सुबह कितने पहले जाग जाती है।

* वो गुनाह सबसे बड़ा गुनाह है जिसे गुनाह करनेवाला मामूली समझता हो।

* भलाई पर गुरुर करनेवाला उसका गुण ही खत्म कर देता है।

* यह दुनिया की मजलिसें शैतान की जगह है उनसे बचना चाहिए।

* वो बात किसलिए कहते हो जो आप कर नहीं सकते।

* सब मुसीबतों की जड़ मनुष्य की बातचीत ही है। इसलिए मौन रहना ही सर्वश्रेष्ठ है।

* बुद्धिमान पहले सोचता है फिर मुंह से बात निकालता है।

* मूर्ख के लिए सबसे अच्छी बात खामोशी है।

* अच्छी बात को गौर से सुनो कहनेवाला चाहे कोई भी हो। बात को पहले सुनो, सोचो तब उसका उत्तर दो।

* चरित्र दुनिया की सबसे बड़ी ताकत है। उसे खोकर कोई भी राष्ट्र, जाति उन्नति का सपना पूरा नहीं कर सकते।

* आँखें कई बार सबकुछ देखती है मगर बोलती नहीं। किसीकी बेवसी का अंदाजा उसकी आँखों में आँख डालकर देखने से अंदाजा लगा सकते है। मगर इसके लिए भी देखनेवाली आँख होनी चाहिए।

* एक अच्छा पति वो है जो नर्मी, प्रसन्नचित्त, शिष्टाचार और भले तरीके से अपनी पत्नी से पेश आये। जो अपनी पत्नी के अधिकारों को अदा करने में किसी प्रकार की कमी न करें। जो अपनी पत्नी के साथ पूरी वफादारी के साथ रहें और किसी परायी स्त्री पर निगाहें न डालें। जो अपनी पत्नी को अपने खुशियों में शामिल करें। अपनी पत्नी पर किसी तरह का जुल्म, अत्याचार न करें। जो अपनी पत्नी की कर्कश और कठोर आवाज पर, बुरे स्वभाव पर समझौता करना सीखे। जो अपनी पत्नी के गुणों की प्रशंसा करें और मामूली साधारण गलतियों को नजर अंदाज करें। जो अपनरी पत्नी की बीमारी और दु:ख में उसका पूरा खयाल रखें और उसकी सेवा करें। जो अपने पत्नी के कामों में हाथ बट़ाएं। अपनी पत्नी और घरवालों को ईमानदारी की कमाई से खिलाएं। पत्नी के मायके और उसके रिश्तेदारों, पत्नी के सहेलियों के साथ अच्छा व्यवहार करें। अपनी पत्नी के खर्चे में कंजूसी न करें। अपनी पत्नी पर किसी तरह की शंका संदेह न करें और इसप्रकार अपनी पत्नीपर पूरी तरह नियंत्रण रखकर देखें कि वो किसी बुराई की तरफ रूख न करें।

* जबान वो चीज है जो सिर्फ मनुष्य को मिली हुई है और मनुष्य इसका सही इस्तेमाल कर सकते हैं। जुबान के गुनाहोंका फसाद भी दूसरे गुनाहों से अधिक होता है। जब कोई बेहूदा बात बोली जाती है तो उसे न सुनकर मुंह फेर लेना चाहिए। जबान के गलत इस्तेमाल से ही समाज में झगड़े पैदा हो जाते हैं। मनुष्य को जबान इसलिए मिली है कि वो अपने समाज में भले तरीके से लोगोंसे बात करें। विचारों और खयालों का लेनदेन करों। यह ईश्वर की नेअमत हैं।

* खामोशी अक्लमंदी की निशानी है। बेकार बातें करना मूर्खों का काम है। इसलिए अपने मकसद पर ध्यान रखना चाहिए और खूब नापतौल कर सोच समझकर बात करनी चाहिए। खामोश रहने की बदौलत अनगिनत रंज और फसाद से

मनुष्य बचा रहता है। बेमक्सद बोलने से जबान से गलतियां होना स्वाभाविक है। अक्लमंद आदमी की शान उसीमें हैं कि वो अपनी जबान की हिफाजत करें।

* अपनी जबान से हमेशा मीठी वाणी और अच्छी बात निकालनी चाहिए। गाली, बुरी बात से दूर रहो क्योंकि ईश्वर के नजर में सबसे बुरा आदमी वो है जिसकी बुरी जबान की वजह से लोग उससे मिलना छोड़ देते हैं।

* जबान मनुष्य की सबसे बड़ी विशेषता है। कान से बुरी बात नहीं सुननी चाहिए, आँख से बुरी बात नहीं देखनी चाहिए, हाथ से बुरी बात नहीं छुनी चाहिए और पाँव से बुरी जगह नहीं जाना चाहिए और दिल से ईश्वर को याद करना चाहिए।

* घर आये मेहमान का स्वागत सत्कार करना चाहिए। उसके आनेपर खुशी दिखानी चाहिए। उसे पेट भरकर खाना खिलाओ। मेहमानों की सेवा से ईश्वर खुश होता है।

* आलस्य एक ऐसी मनहूस आदत है जिसके कारण सैकड़ों दूसरी खराब आदतें पैदा होती है। इस आदत को कभी अपने पास मत फटकने दो। आपको हर धार्मिक व दुनियादारी के कामों में लगे रहना चाहिए जिससे यह आदत आपको न लगें। मेहनती आदमी हर आदमी का प्यारा होता है और आलसी आदमी हर एक दर से फटकारा जाता है और हर काम में वह पीछे रह जाता है। आलसी आदमी न तो दुनिया का काम कर सकता है और न धर्म का। इसलिए हमेशा चुस्त-दुरुस्त बना रहना चाहिए और अपना काम सही वक्त पर करते रहना चाहिए।

* सभा में किसी दूसरे की बात काटकर अपनी बात शुरू नहीं करनी चाहिए। जब तक जिस विषय में बात हो रही हो उसके बारे में कुछ निर्णय न हो जाएं। अगर कोई ऐसी जरूरत आ भी जाएं कि आपके लिए तुरन्त बोलना आवश्यक है तो बोलनेवाले से पहले इजाजत लेनी चाहिए यही सभ्यता की निशानी है।

* प्यासे दो ही प्रकार के है- एक ज्ञान का प्यासा जो कभी तृप्त नहीं होता दूसरा दुनिया का प्यासा- लालची, वो भी कभी तृप्त नहीं होता।

* पत्नी केवल पत्नी न रहे पति की सक्रिय मित्र बन जाएं तो पति को सहारा मिलता है। पत्नियां चाहें तो बखूबी रूचि लेकर पति का काम में हाथ बटा सकती है, पति के व्यवसाय को सम्भाल सकती है। पत्नी की पढ़ाई का सदुपयोग हो सकता है। पति के काम की जानकारी पत्नी और बच्चों को सुरक्षित भविष्य दे पाती है।

* सारे दुखों, परेशानियों और मुसीबतों का कारण स्वार्थ है, सही रास्ते से दूर रहना है, इन बुराइयों को छोड़कर ही आप दु:खों से मुक्ति हासिल कर सकते हो।

* अपनी जबान का गलत दुरुपयोग मत करो जिससे आपके दुश्मन बन जाते हैं बल्कि दुश्मन से भी उस तरह बात करो कि कभी उससे दोस्ती भी हो जाए तो उसके सामने शर्मिंदा नहीं होना पड़े।

* अच्छा ज्ञान रखनेवाला अगर अपने ज्ञानपर आचरण नहीं करे तो वह उस बीमार की तरह है जिसके पास मर्ज की दवा तो है लेकिन वो उसे प्रयोग नहीं करता।

* मुहब्बत- मुहब्बत एक अंधेरे जंगल की तरह होती है जिसके अन्दर एकबार जाने के बाद बाहर निकलना मुश्किल है। यह बाहर नहीं आने देती। अगर बाहर आ भी गये तो आँखें अंधेरों की इतनी आदी हो जाती है कि रोशनी में कुछ नहीं देख सकते। वो भी नहीं जो बिलकुल साफ दिखता है और रोशन होता है। जो तुम्हें खुशी में याद आने लगे तो समझना चाहिए तुम्हें उससे मुहब्बत हो गयी है और जो तुमको गम में याद आने लगे तो समझो वो तुमसे मुहब्बत करने लगा है। यादें

मुहब्बत करनेवालों से ज्यादा वफादार होती है क्योंकि मुहब्बत करनेवाले तो साथ छोड़कर चले जाते हैं मगर यादें हमेशा साथ रह जाती हैं। मुहब्बत सबसे करो लेकिन उससे और भी ज्यादा करो जिसके दिल में आपके लिए आपसे भी ज्यादा मुहब्बत है।

* मनुष्य को कुत्ते से वफादारी का सबक सीखना चाहिए। वो भूखा भी हो जाता है तो भी अपने मालिक का दरवाजा नहीं छोड़ता पूरी रात जागता है। मालिक के घर की चौकीदारी करता है, मालिक मारे तो भी किसी दूसरे के दरवाजे पर नहीं जाता।

* जो करना है वो आज ही करना चाहिए कल का कोई भरोसा नहीं। कल हो ना हो। कल आपका नहीं है। इसलिए जो कुछ करना है आज ही कर लेना चाहिए।

* जिस प्रकार रात्रि का अंधकार केवल सूर्य दूर कर सकता है, उसी प्रकार मनुष्य की विपत्ति को केवल ज्ञान ही दूर कर सकता है।

* निर्धारित समय पर अपना वायदा पूरा न कर सकना बेईमानी है। किसी व्यक्ति से समय माँगना उससे कर्ज मांगने जैसा ही है।

* जीवन में आगे बढ़ने की इच्छा रखनेवाले हर नौजवान को इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए, बिल गेट्स ने आयबीएम से सौदा नहीं किया होता, थॉमस एडिसन ने बल्ब नहीं बनाया होता और ग्राहम बेल ने टेलिफोन का आविष्कार नहीं किया होता तो दुनिया कहां रह जाती। दुनिया के अधिकतर सफल लोगों के पास कुछ भी पास न होने पर भी उन्होंने काम करने का जोखिम उठाया और अपने विश्वास और मेहनत के नाम पर साधन और पैसा सबकुछ हासिल कर लिया।

* लोगों से माँगना एक तरह की मुश्किल है। अगर वो दे दे तो वो अहसान है और न दे तो शर्मिंदगी है इससे बेहतर है कि जो कुछ माँगा जाये ईश्वर से माँगो जिससे लेकर कभी वापिस नहीं देना पड़ता।

* किसी पर बद्चलन आचरणहीनता को दोष मत लगाओ ऐसा करना अपराध है।

* जिसके दिल में कंजूसी और लालच हो वो कभी ईमानदार नहीं हो सकता।

* मनुष्यता की अस्सल बुलंदी तो वही है कि वह मनुष्यों की बेगरज नि:स्वार्थ खिदमत करें।

* हमारे दिलों पर तमन्नाएं, चाहत, इच्छाएं और लालच के बादल छाएं हुए है। जब मनुष्य इन सबको छोड़ देता है तो ईश्वर की कृपा बरसती है। उस हर बुरे काम से बचो जो आपको ईश्वर के बनाये हुए नियमों के विरुद्ध काम करने पर मजबूर करते है।

* बड़े-बुजुर्गों ने हमसे ज्यादा दुनिया देखी है। हम कितनी भी पढ़ाई कर लें, लोगों के व्यवहार को पहचानने के उनके अनुभव हमसे ज्यादा ही होंगे। बड़े बुजुर्गों की सलाह की अनदेखी नहीं करनी चाहिए।

* खुद को तेज और बुजुर्गों को पुराने खयालात का समझना बेवकूफी है। कई बार जो चीजें वो देख सकते हैं, उन्हें हम नहीं देख पाते।

* बारिश की हर बूंद का अपना अस्तित्व है। समुन्दर में गिरनेवाली हर बूंद समुन्दर के पानी के साथ मिलकर लहरें बनाती है।

* छोटे से छोटा संघर्ष भी बेकार नहीं जाता।

* इस दुनिया में सफलता पर खुश होना उतना ही बेअक्ल है जितना असफलता पर हौसला हारना क्योंकि दुनिया में सफलता और असफलता सामायिक है।

✻ किसी के साथ नम्रता से पेश आओ। नम्रता से किया गया व्यवहार लोगोंपर अच्छा असर डाल सकता है।

✻ जो चीज शक और संदेह में डालनेवाली हो उस काम को छोड़कर उस काम को पसन्द करो जो शक और संदेह से परे हो।

✻ जिंदगी का एक उद्देश्य बनाओ तो यकीनन सफल हो पाओगे।

✻ अगर आपके दिल में किसी के लिए नफरत हो तो आप दूसरों से मुहब्बत की उम्मीद मत रखो।

✻ निष्ठा के फूल न्यौछावर करते रहोगे तो नफरत के कांटे से बच पाओगे।

✻ निष्ठा की ख्वाहिश हो तो वफादार लोग मिलेंगे। बेवफाई के पेड़ पर वफा के फूल नहीं खिलते।

✻ जब भी कोई लोगों के साथ फैसला करो तो न्याय के साथ करो। न्याय का बोलबाला होता है पर अन्याय धोखे के सिवाय कुछ भी नहीं है।

✻ ऐसा कभी नहीं हो सकता कि प्रकृति एक बात कहे और बुद्धि दूसरी।

✻ मजाक से जितना दूर रहेंगे उतना ही सच्चाई के करीब होंगे। मजाक जितना आपको गुदगुदायेगी उतना ही घायल भी कर जायेगी।

✻ हमेशा भलाई के काम करो क्योंकि आप मनुष्य हो और मनुष्य का काम दूसरे मनुष्य के काम आना है। किसी के आंसुओं को जमीन पर गिरने से पहले आप उन्हें अपने दामन में समेट लो।

✻ अगर आप कामियाबी हासिल करना चाहते हो तो मेहनत से मत डरो और कष्ट बर्दाश्त करने की आदत डालो क्योंकि जो लोग रास्तों के कांटे और जलती हुई धूप से डरते है वो कभी कामयाब नहीं हो सकते।

✻ अच्छा और बेहतरीन साथी वो है जो दूसरों के लिए बेहतर हो। अच्छा बेहतरीन पड़ोसी वो है जो अपने पड़ोसी के हक में अच्छा हो।

✻ मनुष्य के लिए उसकी जिंदगी का एक-एक लम्हा बड़ा महत्व रखता है। यह मनुष्य का मुकद्दर और उसकी शान है कि वो जिन्दगी की तमाम परेशानियों और उलझनों की चुनौती को स्वीकार करके हंसी-खुशी जिंदा रहने का दृढ़संकल्प करता है।

✻ वो व्यक्ति बेहतरीन है जो भलाई की चाबी और बुराई का ताला बनें, परहेजगारी दिल में हो झुककर चलने में नहीं। परहेजगारी का अर्थ है अकेले में ईश्वर से डरना। सच्चाई पर कायम रहें इसीमें उसकी मुक्ति है। किसीके भी बारे में कभी बुरा नहीं सोचे। ऐसा व्यक्ति ही श्रेष्ठ कहा गया है।

✻ मनुष्य को अपने आप पर नियंत्रण रखना चाहिए। आत्मसंयम की आदत डालें। अपने जज्बों, खयालों, ख्वाहिशों, वासनाओं पर नियंत्रण करें। अपनी निगाहों को आवारा होने से बचाएं। ख्वाहिशों का बहकाव और नजरों की आवारगी, दिल व दिमाग व शान्ति से वंचित हो जाते है फिर वे जिंदगी के हर मैदान में हिम्मत और हौसला हार जाते है और डरपोक साबित होते हैं। इससे आदमी की चेहरे की रौनक जाती है। गरीबी और फकीरी की मुसीबत उतरती है और आयु कम होने लगती है। जिंदगी को खुशहाल बनाने के लिए दुनिया के रंग ही बहुत है। इस जिंदगी को खेल-तमाशों और बुरे कामों से बचाएं तथा नेकियोंवाले काम करें।

✻ सब्र का बार-बार इस्तेमाल करना चाहिए। यह एक कड़वा फल है।

✻ मनुष्य का लिबास ज्ञान है, शरीर का लिबास तंदुरुस्ती है, ज्ञान का लिबास कर्म है और नारी का लिबास शर्म है।

❋ जब बुढ़ापा आ जाए तन्हाई मुकद्दर बन जाती है। उम्मीद की शमा बुझने लगती है। मुस्कुराने की आदत छूट जाती है। शरीर में ताकत नहीं रहती। दु:खों का मेला लग जाता है। ऐसे समय में दुनिया कहती है जा और कब्र कहती है आ। ऐसी दुनिया बेवफा है।

❋ जो सिर्फ काम की बात करते हैं, वे अवश्य सफल होते हैं।

❋ कर्म करने से पहले यह तय कर लेना चाहिए कि उससे पछतावा होगा या प्रसन्नता प्राप्त होगी।

❋ कार्य वह औषधि है जिससे मनुष्य अपनी व्याधि, दु:ख और पीड़ा को भी भूल जाता है।

❋ मनुष्य मूर्ख है जो इस बालू के मकान में रहकर भी आशा करता है। यह बालू का मकान पलक झपकते ही गिर जाएगा।

❋ बाइबिल ग्रंथ आशाओं के जेलखानों की वह खिड़की है जिससे आप अनंत की ओर देख सकते हैं।

❋ कर्महीन जीवन व्यतीत करनेवाले को देखकर अपार दुख की अनुभूति होती है।

❋ अन्नदान महादान है, विद्यादान और भी बड़ा दान है, अन्न से क्षणिक तृप्ति होती है किंतु विद्या से जीवन पर्यंत तृप्ति होती है।

❋ बोलना हो तो उपयोगी ही बोलना उचित है। प्रसंगानुसार जो उचित हो वही बोलना चाहिए।

❋ आप अगर स्पष्टवक्ता ही बनना चाहते हैं, तो हर कार्य सावधानी से ही करें।

❋ सामने तो शहद समान मधुर वचन बोले और पीठ पीछे निंदा की छुरी मारे, ऐसे मित्र को त्याग देना बढ़िया है।

❋ विद्यार्थियों का चरित्र निर्माण नैतिक शिक्षा से ही सम्भव है।

❋ थोड़ा-सा प्यार बहुत बड़े क्रोध को भी छूमंतर कर देता है। कुश्ती में सामनेवाले को पछाड़ने वाला बलशाली नहीं है, बल्कि क्रोध को काबू में रखनेवाला बलशाली है।

❋ यह इकरार करने में तनिक भी लज्जा मत करो कि आप इस बात से पूर्णतया अनभिज्ञ है कि आपको किन-किन चीजों का ज्ञान नहीं है।

❋ भगवान की परम भक्ति मनुष्यों में कामधेनु के समान मानी गई है। उसके रहते हुए भी अज्ञानी मनुष्य संसार रूपी विष का पान करते हैं, यह कितने आश्चर्य की बात है।

❋ दुनिया की प्रत्येक लड़की के दोष को जाना जा सकता है, बशर्ते आप उसकी प्रशंसा सिर्फ उसकी सहेली के सामने कर दो।

❋ आपको मन में विषाद नहीं करना चाहिए, क्योंकि विषाद बहुत बड़ा दोष है। वह उसी प्रकार मनुष्य का नाश कर देता है, जिस प्रकार क्रुद्ध सर्प पास आए बालक को डस लेता है।

❋ निंदक आखिर स्वयं ही निंदित हो जाता है।

❋ इस संसार के अहंकारियों से कह दो कि अपनी पूंजी को कम कर लें। हानि और लाभ यहां समान हैं। जिसे होश है, वह कभी अहंकार नहीं करता।

❋ आप विजय के इतना नजदीक कभी नहीं हो, जितने तब, जब आप किसी नेक काम में हार जाओ। सफलता मिलती है परिश्रम और समझदारी से। यदि आपको आगे बढ़ना है तो दोनों को अपनाओ।

❋ संतोष को प्रयासों में देखना चाहिए, उपलब्धि में तो गर्व नजर आएगा।

* जब कभी दोष देखने की इच्छा हो तो स्वयं से ही आरंभ करना चाहिए। स्वयं में ही दोष ढूंढने का प्रयत्न करो।

* जैसे रथ का पहिया घूमता है, वैसे ही धन भी विभिन्न व्यक्तियों के पास आता-जाता रहता है। वह कभी एक स्थान पर स्थिर नहीं होता।

* जिसके पास धन होता है, उसी के बहुत से मित्र, भाई-बंधु होते हैं। वही पुरुष कहलाता है और वही पंडित माना जाता है।

* जो पति अपनी पत्नी से किसी भी विषय में राय लेने में अपना अपमान समझे, उसकी बुद्धि बिगड़ी हुई है।

* जिस प्रकार घिसकर, काटकर, तपाकर और पीटकर चार प्रकार से सोने की परीक्षा ली जाती है, वैसे ही पुरुष की परीक्षा भी चार प्रकार से होती है, त्याग, शील, गुण और कर्म से।

* जिसके हृदय की पुस्तक खुल चुकी है, उसे अन्य किसी पुस्तक की आवश्यकता नहीं रह जाती। पुस्तकों का महत्व केवल इतना भर है कि हममें लालसा जागती हैं। वे प्राय: अन्य व्यक्ति के अनुभव की होती हैं।

* जलती हुई आग से स्वर्ण की पहचान होती है, सदाचार से सत्य पुरुष की, भय से शूर की, आर्थिक कठिनाई में धीर की और कठिन आपत्ति में शत्रु और मित्र की परीक्षा होती है।

* जो अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को क्षति पहुंचाए, वह दुष्ट है।

* जैसे जंगल में एक हाथी के पीछे बहुत से हाथी चले आते हैं, उसी प्रकार धन से ही धन बंधा चला आता है।

* जो पुरुष अपने ही समान दूसरों को भी सुखी देखने की कामना करते हैं, उनके पास रहने से विद्या प्राप्त होती है और अज्ञान का अंधकार दूर होता है। धन प्राप्त होता है और दरिद्रता का विनाश होता है। अतएव हम सदैव आत्मदर्शी महापुरुषों के समीप रहें।

* जो कार्य दूसरे व्यक्तियों के लिए कठिन होता है उसे कर डालना बुद्धिमत्ता है और जो बुद्धिमानों के लिए नामुमकिन है उसको कर डालना आपके लिए अपूर्व बुद्धि का परिचायक है।

* जो पत्नी अपने पति का अपमान करती है, उसे लोक-परलोक, कहीं भी शांति नहीं मिलती।

* जिसकी पत्नी अनुकूल है, उसका स्वर्ग यहीं है और जिसकी पत्नी प्रतिकूल है, उसका नरक यहीं है।

* जो देवताओं की बातें सुनते हैं, देवता उनकी बातें सुनते हैं।

* जिस स्त्री को लोकनिंदा की लाज नहीं, उसे कोई शक्ति सुधार नहीं सकती।

* जिस मनुष्य के हृदय से प्रेम निकल गया, वह अस्थि-चर्म का एक ढेर रह जाता है।

* जिसमें बुद्धि नहीं है, उसको शास्त्र से कोई लाभ नहीं, जैसे नेत्रहीन मनुष्य के लिए दर्पण बेकार है।

* जिसने मन को जीत लिया उसने सारे जगत को जीत लिया।

* जो दूसरों को जानता है, वह विद्वान है। जो स्वयं को जानता है, वह बुद्धिमान है।

* जैसे सुनार चांदी के मैल को दूर करता है, उसी तरह बुद्धिमान पुरुष को चाहिए कि वह अपने पापों को प्रति क्षण थोड़ा-थोड़ा दूर करता रहे।

* जब भाग्य अनुकूल होता है, तब जिनके बारे में सोचा भी नहीं गया हो, ऐसी सब संपत्तियां अपने आप आ जाती हैं।

* जवानी की अगर कोई पहचान है, तो वह है जिस्म और दिमाग का लचीलापन। जैसे ही जिस्म में सख्ती आ जाती है, आपकी उम्र ढलने लगती है।

* जिस क्षण हमें अपनी भूल मालूम हो, उसी क्षण हमारा पुनर्जन्म हुआ मानो। उसे अपना नवीन बचपन और अपने जीवन का नव प्रभात समझो।

* जब आदमी का कोई बस नहीं चलता तो वह अपने को तकदीर पर ही छोड़ देता है।

* जिस व्यक्ति ने खुद पर विजय प्राप्त कर ली हो, उसे ईश्वर भी नहीं हरा सकता।

* जो अपनी गलती से कुछ न सीख सके, वह निपट मूर्ख है।

* जिसके मन होता है, उसी को चोट लगती है।

* जो धर्म से डरता है, ईश्वर का अपमान करता है वह स्वयं अपनी हत्या करता है।

* जितने कम तथ्य होंगे, उतनी ही मजबूत राय बनेगी।

* जिन्हें हम बड़ा मानते हैं वे इसीलिए बड़े हैं क्योंकि उनके सामने हम घुटने टेके हुए हैं।

* जिसने पाप नहीं किया, दूसरों को पीड़ा नहीं पहुंचाई और सत्यमार्ग पर चला, उसे मृत्यु की पीड़ा नहीं होती।

* जब तक मन अस्थिर और चंचल है, तब तक अच्छे गुरु और संत लोगों की संगति मिल जाने पर भी कोई लाभ नहीं होता।

* जो शरीर, वाणी तथा मन से संयत है, मन से कोई पाप नहीं करता तथा स्वार्थ के लिए झूठ नहीं बोलता, ऐसे व्यक्ति सदाचारी कहलाते हैं।

* जिस क्षण कोई मूर्ख अपने को कम बुद्धिमान स्वीकार कर लेगा, उसी क्षण उसकी मूर्खता कम होनी शुरू हो जाएगी।

* जो पुत्र पैदा ही न हुआ अथवा पैदा होकर मर गया हो अथवा मूर्ख हो, इन तीनों से पहले दो ही बेहतर हैं, न कि तीसरा। कारण यह है कि प्रथम दोनों तो एक बार ही दु:ख देते हैं, जबकि तीसरा पग-पग पर दु:खदायी होता है।

* जब हम अपनी भूल पर लज्जित होते हैं, तो यथार्थ बात आप ही मुंह से निकल पड़ती है।

* जो जिस जगह ठीक है, वही सम्मानपूर्वक है और सम्मानपूर्वक वही है, जो अपनी जगह ठीक हो।

* जिस सिर पर ताज है वह सदैव बेचैन रहता है।

* जो लक्ष्मी प्राणों के देने पर भी प्राप्त नहीं होती, वह चंचल होते हुए भी नीतिज्ञ मनुष्य के पास अपने आप दौड़ी आती है।

* जिसके अंतरंग में शांति है, उसे बाह्य वेदना कभी कष्ट नहीं दे सकती।

* जो मैला वस्त्र पहनने वाला, दांतों का मैल साफ न करनेवाला, अधिक भोजन करनेवाला, कटुवादी, सूर्य के उदय और अस्त होने तक सोनेवाला है, उसको लक्ष्मी छोड़ देती है, चाहे वह भगवान विष्णु ही क्यों न हों।

* जंगली जानवरों के बीच में शांति मिल सकती है, लेकिन सांसारिकता में लीन मनुष्यों के बीच में शांति का मिलना कठिन है।

* जो मनुष्य दुष्ट से धन लेकर सज्जन को देता है, वह स्वयं नाव बनकर दोनों को पार करा देता है।

* जो व्यक्ति स्वयं अयोग्य है और अपने पुरखों के पराक्रम और सम्मान पर गर्व करता है, वह उस चोर के समान है, जो बचाव के लिए मंदिर में छिप जाता है।

* हरेक आदमी स्वार्थ में मग्न है, जो जितना ही महान है, उसका स्वार्थ भी उतना ही महान है।

* जब हम यह सोचते हैं कि हम नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं तो अधिकांश व्यक्ति स्वयं किसी से नेतृत्व प्राप्त कर रहे होते हैं।

* जहां अनभिज्ञता परम सुख देती है, जानकारी होना बेवकूफी है।

* जो चाहना, चिंता को छोड़कर कामना रहित है, वही संतुष्ट है।

* जब बुद्धि की प्रखरता परिपक्व हो जाती है और हिफाजत के साथ हृदय में निवास करती है तो यह बुद्धिमत्ता बन जाती है। जब बुद्धिमत्ता का प्रयोग जीवन में होता है और यह कार्य का रूप धारण कर लेती है तो भक्ति कहलाती है।

* जो आनंद देता है, उसी को मन सुंदर कहता है और वही साहित्य की सामग्री है।

* जितना पुण्य धन-धान्य से पूर्ण इस समस्त पृथ्वी को दान देने से मिलता है, उसका तीन गुणा पुण्य तथा उससे भी अधिक पुण्य स्वाध्याय करनेवाले को प्राप्त होता है।

* जैसे मनुष्य कुदाल से पृथ्वी खोदकर उसके तल से जल प्राप्त कर लेता है, उसी प्रकार गुरु की सेवा करनेवाला शिष्य गुरु के पास विद्यमान विद्या को प्राप्त कर लेता है।

* जब तक शरीर स्वस्थ और नीरोग है, जब तक बुढ़ापा दूर है, जब तक सभी इंद्रियों में भरपूर शक्ति है, जब तक प्राण शक्ति क्षीण नहीं हुई है- तभी तक अपने आत्म कल्याण और उत्थान का प्रयत्न करते रहना बुद्धिमानी है, अन्यथा घर में आग लग जाने पर कुआं खोदने से कोई लाभ नहीं।

* जहां-तहां जो भी कुछ खाकर, जैसा-तैसा वस्त्र पहनकर, जहां-तहां भी रहकर, जो आत्मतुष्ट रहता है, निर्जन स्थान में रहता है और दूसरों के संसर्ग को ऐसे त्यागता है, जैसे कांटे को, वह बुद्धिमान शांति-सुख के रस को जानता है और वही ज्ञानी है।

* जिस प्रकार भूख से व्याकुल होने पर भी सिंह दूसरों के पराक्रम से प्रस्तुत मांस नहीं खाता, उसी प्रकार महान दु:ख होने पर भी दूसरों के द्वारा लाए गए धन को स्वाभिमानी मनुष्य नहीं चाहते।

* जो व्यक्ति साधु-संगति रूपी शीतल निर्मल गंगा में स्नान करता है, उसे फिर किसी तीर्थ, तप, दान और यज्ञ आदि की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती।

* जो सुख, दु:ख के पश्चात होता है, वह साधारण से अधिक सुखमय होता है।

* जिस मानव की बुद्धि का विकास नहीं होता या जो अविवेकी होता है, मानवता से गिर जाता है।

* जिसके हृदय में मंगलमय भगवान का वास है, उनके यहां सर्वदा उत्स, सर्वदा लक्ष्मी और सर्वदा मंगल का निवास रहता है।

* जिसके मन में कभी क्रोध नहीं होता और जिसके हृदय में रात-दिन राम बसते हैं, वह भक्त भगवान के समान ही है।

* जिस श्रम से हमें आनंद प्राप्त होता है, वह हमारी व्याधियों के लिए अमृत तुल्य है, हमारी वेदना की निवृत्ति है।

* जिसने पर्वत उठाकर गोकुल पर छत्र बना दिया, जिसने महाबलशाली देवताओं के शत्रु राहु को समाप्त कर दिया, जिसने पृथ्वी को तीन डगों में नापकर बलि को लीलापूर्वक बांध दिया वह युगपति, तीन लोकों का स्वामी विष्णु युग-युग में रक्षा करता है।

* जो हानि हो चुकी है उसके लिए शोक करना, अधिक हानि को निमंत्रित करना है।

* जब दिल भर जाता है तो आंखें छलक जाती हैं।

* जो धन झूठ के द्वारा अर्जित किया गया हो, वह वायु से उड़ जानेवाला कोहरा है। उसको ढूंढ़नेवाले मृत्यु को ढूंढ़ते हैं।

* जो चीज विकार को मिटा सके, राग-द्वेष को कम कर सके, जिस चीज के उपयोग से मन सूली पर चढ़ते समय भी

सत्य पर डटा रहे, वही धर्म की शिक्षा है।

❋ जो सब जीतनेवाला, सब जाननेवाला, सुबुद्धि, सब पदार्थों से अलिप्त रहनेवाला सर्वत्यागी और तृष्णा के क्षय से मुक्त होता है, उसे ज्ञानी लोग मुनि कहते हैं।

❋ जो मनुष्य दर्प, क्रोध और विषय-लालसाओं से रहित है, उसमें एक प्रकार का गौरव रहता है। जो उसके सौभाग्य को भूषित करता है।

❋ जो विद्या और सदाचार से संपन्न है, वह सब देवताओं और मनुष्यों में श्रेष्ठ है।

❋ जैसा ग्राहक वैसा व्यवहार, यह व्यवसाय की व्यावहारिकता तो है पर समानता का व्यवहार व्यवसाय में सैद्धांतिकता व विश्वसनीयता की स्थापना करता है।

❋ नेक कामों में देरी नहीं करनी चाहिए कारण की मौत आपके घात में लगी है।

❋ अगर किसी प्रश्न का उत्तम मालूम न हो तो अज्ञानता का इकरार आधा ज्ञान है।

❋ जो व्यक्ति आपके दोषों की बात करता है तो यकीनन दूसरों के सामने आपकी बुराई भी करता होगा।

❋ दिल को शैतान का खिलौना मत बनने दो।

❋ अन्धेरे को कोसने की बजाय अपना चिराग सुधारने की कोशिश करो।

❋ कोई भी संस्थान किसी एक वस्तु की वजह से नहीं चलता। यह तो सभी का सहयोग है। कहीं आप यह सोच रहे हो कि इसे आप अकेले चला रहे है तो अपना भ्रम न पाले उसे दूर कर लें।

❋ संसार किसी के लिए भी नहीं रुकता। इस संसार में सभी के बिना काम चल सकता है। इस संसार को चलानेवाला अकेला परमात्मा है।

❋ सबकुछ आपके अनुकूल नहीं हो सकता। जिस माहौल में पले-बड़े होने के कारण लोगों की सोच अलग-अलग होती है।

❋ सामनेवाले का जवाब हमारे अनुकूल नहीं हो ऐसे में हमें अपना संतुलन नहीं खोना चाहिए और उसके जवाब के पीछे छिपी वजह जानने का प्रयत्न करना चाहिए।

❋ जिंदगी को पूरी जिंदादिली और उत्साह से जीने के लिए प्यार से खूबसूरत अहसास कोई दूसरा नहीं है। घर जीवन के सभी रिश्तों में सबसे ज्यादा नाजुक, संवेदनशील व उर्जा भरा होता है। वहां प्रेम ही काम करता है।

❋ सफल वैवाहिक जीवन की इमारत केवल प्रेम से अधिक जरूरी है समझ, समर्पण व एक दूसरे को पहचानना। सिर्फ प्रेम से पेट नहीं भरता और न ही वैवाहिक जीवन की जिम्मेदारियां पूरी होती है।

❋ संबंध स्थायी, मधुर व सुदृढ़ बनानेके लिए सबसे प्राथमिक जरूरत है अपनी ओर से ऐसा व्यवहार किया जाए जो सामनेवाले को केवल पसंद ही नहीं आए बल्कि उसके सम्मान के लायक भी हो।

❋ जीवनसाथी का चुनाव समझदारी व दूरदर्शिता से किया जाए तो सर्वाधिक अच्छा है। ऐसे जीवनसाथी जिसकी मान्यताएं व जीवनमूल्य मिलते जुलते हों चुनना चाहिए। ऐसे सम्बन्धों को दीर्घायु मिलती है।

❋ कुछ दम्पत्ति जीवन के दायित्वों को बोझ एवं मजबूरी मानकर जीवनभर ढोते रहते है। पति-पत्नी के बीच एक जैसी एकरूपता, दोस्ताना व्यवहार, सम्बन्धों पर टिका रहता है। उन्हें आपस में एक-दूसरे की मूलभूत जरूरतें पूरी करनी

पड़ती है। जबरन दूसरे की आकांक्षा पर कब्जा करने से सम्बन्धों की नींव बराबर टूटकर गिर जायेगी। छुटपुट, भेद, विभिन्नताएं अनदेखी करनी चाहिए यह तो जीवनभर चलते रहेगा।

* जब तक बच्चा बोलना नहीं सीखता उसे सबसे पहले मां-बाप या आसपास के लोगों की तरफ से कहे जानेवाले शब्द उसके जेहन पर गहरा असर डालते हैं। जब बच्चा बोलना सीख जाता है तो यही शब्द उसके व्यक्तित्व को सुधारने में मदद करते है।

* समाज पर आपका यह सबसे बड़ा अहसान होगा कि आप स्वयं को सुधार लो।

* अगर बुराई को शुरु में ही नहीं रोका गया तो वह आहिस्ता आहिस्ता आपकी जरूरत बन जायेगी।

* सपनों के पीछे मत भागो, बल्कि नित नये विचार तलाश करो।

* भलाई का हर काम शुरू में नामुमकिन नजर आता है।

* सच्ची किताबें मनुष्य की बेहतरीन दोस्त होती है जो वक्त के साथ बदलती है और कभी धोखा नहीं देती।

* धन-सम्पत्ति को व्यर्थ में और अनावश्यक खर्च करना गुनाह है। इसलिए अपनी दौलत का सही इस्तेमाल करना चाहिए और गरीब, मजबूर, परेशान व कर्जदारों की मदद करके ईश्वर को खुश करें और गरीबों की दुआएं ले।

* जब आपके ऊपर कोई परेशानी आये तो उससे घबराने की बजाय उसका संयम के साथ मुकाबला करना चाहिए, सब्र वो हथियार है जिससे सभी आयी मुसीबतों और आफतों का सामना किया जा सकता है।

* दोस्ती करने से पहले किसी की सूरत नहीं सीरत (चरित्र) देखो।

* कोई भी कार्य ऐसा नहीं करो जिससे किसी का दिल दुखे।

* बुद्धिमान अपनी जबान का मालिक होता है जबकि मूर्ख अपनी जबान का गुलाम होता है।

* गिर जाना कोई कमजोरी नहीं है पर गिरकर न उठना उसकी कमजोरी दर्शाती है।

* बुजदिल कायर मनुष्य मौत आने से पहले बार-बार मरता है जबकि बहादुर एक ही बार मरता है।

* ईश्वर के पास जानेपर ईश्वर आपसे पूछेगा आपकी आयु कौनसे कामों में व्यतीत हुई है, आपकी जवानी की शक्ति कहाँ खर्च हुयी। आपने धन कहां से कमाया और कहांपर खर्च किया। जो ज्ञान हासिल किया उसपर कितना अमल किया।

* मनुष्य के दो आँखें ऐसी हैं जो नरक की आग से सुरक्षित रहती है। ये वो आँखें है जिसमें ईश्वर की डर से आँसू आ जाते है। यह आँखें रातभर ईश्वर की राह में पहरा देती है।

* इस दुनिया में ऐसे रहना चाहिए जैसे आप अजनबी हो या राह चलते मुसाफिर।

* दोस्त के किये हुए अहसानों पर हमेशा धन्यवाद अदा करो।

* बेइज्जती उठाने से बेहतर है कि तकलीफ उठाओ।

* मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन उसका पेट है।

* ज्ञानी वो ही है जिसका अपने ज्ञान पर आचरण हो।

* जिसतरह मनुष्यों को तकलीफ पहुंचाना कानूनी जुर्म है उसी तरह जानवरों को भी सताना, उन्हें भूखा-प्यास रखना और बिनाकारण तकलीफ पहुँचाना बड़ा अपराध है।

* रोने पर तो आंसू भी पराये हो जाते हैं और मुस्कुराने से पराये भी अपने हो जाते हैं।

❋ हमेशा बड़ों का अदब करना चाहिए। झूठ बोलने और दूसरों की बुराइयों से हमेशा बचते रहना चाहिए।

❋ अपने अच्छे बर्ताव से हमेशा दूसरों का दिल जीतो कभी किसी का दिल मत दुखावो। आपस में लड़ाई झगड़े और बुरी बातों से बचते रहो।

❋ अपना हर काम वक्त पर करने की आदत डालो।

❋ कोई भी अच्छी बात सुनो तो उसपर चलने की कोशिश करो। अच्छी बातों को हमेशा सुनो उसे सुनकर आगे सुना दो इससे आपके सुनने की जिम्मेदारी अदा हो जायेगी।

❋ शिक्षा एक ऐसी दौलत है जो दुनिया के किसी भी खजाने में नहीं मिलती, इसलिए मन लगाकर शिक्षा हासिल करनी चाहिए।

❋ अधिक दौलत का लालच मत करो। जिन्दगी और स्वास्थ्य थोड़ी सी आमदनी पर भी कायम रखा जा सकता है।

❋ बेकारी ही मनुष्य के गुणों को जंग लगा देती है इसलिए सदा काम करते रहो, नेकनियत का प्रयत्न करो इससे आपका जीवन खुशहाल हो जायेगा।

❋ मेहनती आदमी कभी भूखा नहीं मरता।

❋ हर परिस्थिति में दो विकल्प आपके सामने आते हैं, मनुष्य उनमें से जो सही विकल्प चुनता है तो उसका जीवन खुशहाल हो जाता है।

❋ खुश रहना या दु:खी रहना आपके हाथों में है। बुरी घटना घट जानेपर रोने से बेहतर है कि उससे सीख लेकर तुरंत आगे बढ़ना चाहिए और सदा ही बेहतर विकल्प चुनने का प्रयत्न करना चाहिए।

❋ कोई भी काम मुश्किल मानसिकता से होता है। आपका दृढ़ आत्मविश्वास आपकी सब समस्याओं का समाधान करता है। बाधाएं सिर्फ मानसिक होती है। हरेक के जीवन में बाधाएं आती है। वास्तव में वो उतनी कठिन नहीं होती है जितना आप सोचते हैं।

❋ सकारात्मक सोच का करिश्मा है सकारात्मक सोचें और सकारात्मक जिएं।

❋ रावण बड़ा शक्तिशाली था। रावण में शक्ति तो थी, पर भक्ति नहीं थी। बिना भक्ति की शक्ति असीमित अनर्थ कर देती है। मरते वक्त रावण की इच्छा यह थी पर कोई भी इच्छाएं पूर्ण नहीं हुई। कुछ नहीं कर पाया। रावण के पास सब कुछ था, तख्त, ताज, वैभव, विलास पर रावण का कोई गुरु नहीं था। बिना गुरु के बुद्धि के, बिना गुरु के सम्पत्ति के कितना अनर्थ होता है यह रावण के उदाहरण से सीखना चाहिए।

❋ कोई आपकी निंदा करे तो यह सोचना लोग उसी पेड़ पर पत्थर फेंकते है जिसपर मीठे मीठे फल लगते हैं। दुनिया में आलोचना भी उसीकी होती है जिसमें कोई दख-खम होता है।

❋ अपनों की गलती को, बच्चों की शरारत को, बड़ों की डांट को, गुरु की फटकार को, दोस्तों के मजाक को और अपने बुरे दिनों को भूल जाना ही बेहतर है।

❋ गुरु मन की चिकित्सा करता है। शिष्य के लिए गुरु का द्वार किसी भी मंदिर या मस्जिद की चौखट से अधिक महत्वपूर्ण होता है। सागर तो बिना लहरों के हो सकता है, मगर लहरें बिना सागर के नहीं हो सकतीं। गुरू तो बिना शिष्य के हो सकता है, मगर शिष्य बिना गुरु के नहीं हो सकता।

❋ सच्चे रिश्तों की खूबसूरती एक दूसरे की गलतियों को बर्दाश्त करने में है, बिना कमी का मनुष्य तलाश करोगे तो

अकेले ही रह जाओगे।

* अपने ध्यान को इधर-उधर की मनोकामनाओं में नहीं, बल्कि उस चीज में लगाओ, जो तुम्हारे अंदर जीवन का स्रोत है, जहां से तुम्हारा जीवन शुरू होता है, जहां से आशीर्वाद तुम्हारे अंदर आता है।

* निंदा में बड़ा रस आता है। निंदा करना, सुनना दोनों पाप है। निंदा और निद्रा से जितना दूर रहा जाएं उतना ही अच्छा है।

* किसी मकसद के लिए खड़े हों तो एक पेड़ की तरह और गिरो तो बीज की तरह ताकि फिर से उगकर उसी मकसद के लिए लड़ सको।

* समय चलता नहीं स्थिर रहता है केवल हम चलते जाते हैं, समय हमेशा जवान रहता है।

* जीवन खुद की तलाश नहीं है, बल्कि यह स्वयं का निर्माण है। आप जीवन को नजरअंदाज करके शांति नहीं पा सकते।

* समृद्धियां पराक्रमी के साथ रहती हैं, अनुत्साही के साथ नहीं। भविष्य की श्रेष्ठता वर्तमान पर निर्भर करती है।

* पैसा ही सबसे पहले क्रमांक की चीज है जिसको लेकर पति-पत्नी में भी झगड़े हो जाते है।

* जब आपको लगे कि आपकी दूसरों के साथ नहीं बनती तो उनको दोष देनेके बजाय अपने में कमियां और दोष ढूंढे।

* जब बाल या नाखून बढ़ जाते हैं, तो बाल या नाखून ही काटे जाते हैं। सिर या अंगुली नहीं काटी जाती। उसी तरह किसे रिश्ते में दरार आ जाए तो दरार को मिटाने का प्रयत्न करना चाहिए रिश्ते को नहीं।

* ज्ञान के कठिन मार्ग पर चलते वक्त आपके सामने भारी विपत्ति एवं दुख आ जायें तो उसे सुख ही समझना चाहिए क्योंकि इस मार्ग में दु:ख ही नित्यानंद प्राप्त करने में निमित्त बनता है।

* मनुष्य गुनाह उस वक्त करता है जब वो मौत को भूल जाता है।

* अगर आप लोगों से अधिक दौलत में नहीं बढ़ सकते तो कम से कम शिष्टाचार अच्छा बनाकर ही उनसे आगे बढ़ जाओ।

* मुहब्बत और शक दोनों एकसाथ एक दिल में नहीं रह सकते।

* जब किसी फकीर को कुछ दो तो उससे ईश्वर के लिए प्रार्थना करने को कहो। गरिबी की वजह से किसी को फकीर मत समझो क्योंकि उसका भी ईश्वर वही है जो आपका है। वो चाहे तो उसे भी वो सबकुछ दे सकता है जो आपके पास है और आपसे भी वापिस ले सकता है जो आपके पास है।

* वो आदमी सबसे बेहतरीन जिंदगी गुजारता है जो अपनी जरूरत के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रहता।

* जिंदगी को अच्छी से अच्छी खुशनुमा व्यतीत करो। ऐसा करके आप जिंदगी के सही रास्ते पर सफलता के साथ चल सकते हो।

* समाज में न्याय करना चाहिए और अत्याचार को खत्म करने में देर नहीं करनी चाहिए। अत्याचार के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए जितनी देर से उठोगे उतनी ज्यादा कुर्बानियां देनी पड़ेगी।

* मनुष्यता के रवैये मौसमी होते हैं। उनसे निपटने के लिए कारणों को अपना लिबास बदलना पड़ता है।

* हम किसीको भी मुहब्बत और नफरत के सिवाय कुछ नहीं दे सकते।

* शाम ढलने पर इतनी रोशनी जरूर कर लिया करो कि आप अपना स्वयं का चेहरा पहचान सको।

* नकारात्मक बात शुरू होने से दामन ही नहीं दिल भी तंग हो जाता है फिर न दिल में जगह मिलती है और न ही दामन है।

* यह सच है कि मुहब्बत कभी मरती नहीं मगर उसके मापदंड बदलते रहते हैं।

❋ दूसरों का न्याय करने के लिए जब मनुष्य को न्यायाधीश बनाया जाता है तो वो मनुष्य उनकी मामूली गलतियां भी नजर में रखता है मगर अपना न्यायाधीश बनने पर वो हमेशा अपनी बुद्धि, स्वार्थ और फायदा नजर में रखता है।

❋ शर्म हया नारी का आभूषण है। परदे में ही कोई चीज ज्यादा खूबसूरत नजर आती है। जितने कम कपड़े पहनते है उतना ही खुद को आधुनिक समझते है। हमारा लिबास हमारी पहचान है। यदि आजकल की महिलाएं पाक लिबास पहने तो किसी पुरुष की ताकत नहीं कि वो उससे बदसलूकी कर सकें। खुले, नग्न वस्त्र पहनकर महिलाएं ही उसे दावत देती है आधे-अधूरे, बेढ़ंगे, बेशर्मीवाले वस्त्र अपने पति के सिवा दूसरेके सामने कभी नहीं पहनना चाहिए।

❋ यदि आप अपनी गलतियों से कुछ सीखते हो तो होशियार हैं, लेकिन यदि आप दूसरों की गलतियों से कुछ सीख लेते हो तो आप जिनियस है।

❋ ज्ञान वही है जो आपको अच्छे कर्मों में लगाएं।

❋ दुनिया एक सपना है परलोक नींद से जागना है।

❋ भरोसा ही जीवन की गतिशील ताकत है।

❋ पेट भर खाने के बाद ईश्वर की याद में कमी आती है और इच्छाएं प्रबल हो जाती है।

❋ दिल की तरह सख्त कठोर और मुलायम कोई चीज नहीं है।

❋ दुनिया में वही लोग बुलन्दी पर जाते हैं जो घमंड के ताज को दूर फेंक देते है।

❋ मनुष्य उम्रभर अपने आपको ज्यादा झेलता है क्योंकि वह अपने आपसे ज्यादा बातें करता है।

❋ किसी स्त्री पर सबसे ज्यादा हक उसके पति का होता है और किसी पुरुष पर सबसे ज्यादा हक उसकी माँ का होता है।

❋ अपनी बुराइयों से आंखें बंद करनेवाला दूसरों में बुराइयां तलाश करता है।

❋ किसी मनुष्य को अकेले में उसकी बुराइयों से परिचित कराना, उसे समझाना एक अच्छा उपदेश कहलाता है, लेकिन किसी के दोष ऐब को जाहिर करना बुराई है।

❋ शिक्षा ऐसी रोशनी है जो मनुष्य के दिलों दिमाग के अंधेरे को खत्म कर देती है।

❋ हर व्यक्ति को इस तरह उपदेश दो कि वो आपकी बात मान लें न कि आपकी बातोंका दुश्मन बन जाएं।

❋ ये दुनिया किसी के साथ वफा नहीं करती, लेकिन मुहब्बत और खिदमत करनेवाले को भुलाना आसान नहीं होता, इस बेवफा दुनिया ने भी हमेशा बेवफा मनुष्य की कदर की है।

❋ दुख बिछड़नेका नहीं होता है बल्कि उन रिश्तों के टूटने का होता है जो बरसों से मुहब्बत के बाद एक पल में टूट जाते हैं और हम कुछ नहीं कर पाते हैं।

❋ यदि आप किसी आदमी की चीज से फायदा उठाओ तो उस आदमी का धन्यवाद भी अदा करना चाहिए। जिस कुएं से पानी पिया जाता है उस समय उसके निर्माण करनेवाले को भी याद किया जाता है।

❋ प्रेम सफलता और समृद्धि हमेशा एकसाथ चलते है।

❋ प्रकृति ने आपकी जबान बहुत ही नाजुक, नर्म और मुलायम बनायी है इसलिए आप भी अपनी बातचीत को नर्म और मुलायम बनाइए।

❋ जब कोई मनुष्य आपके पास मदद के लिए आये, सम्भव हो तो उसकी मदद कर दो, नहीं तो अच्छे ढंग से जवाब

दो, मगर उसे झूठी उम्मीदों पर मत रखो।

✻ सबसे ज्यादा खुशनसीब वो मनुष्य है जो दूसरों की अच्छाइयों की कदर करता है और उनकी खुशियां तलाश कर उनमें शामिल होता है।

✻ मनुष्य दो चेहरों को कभी नहीं भूल सकता एक तो वो जो मुश्किल में साथ देता है और दूसरा वो जो मुश्किल में साथ छोड़ देता है।

✻ आँखों की खूबसूरती के लिए ईश्वर की डर से आँसू बहाएं। हाथ की खूबसूरती के लिए अपने हाथ से दान करें। दिल की खूबसूरती के लिए अपने दिल में ईश्वर की याद करें।

✻ जब कोई बात दुआओं और कोशिशों से भी नहीं बने, तो इसका निर्णय ईश्वर पर छोड़ दो। ईश्वर अपने बंदों के लिए बेहतर निर्णय करनेवाला है।

✻ खूबसूरती की कमी को अच्छा आचरण पूरा कर सकता है पर अच्छे आचरण की कमी को खूबसूरती पूरा नहीं कर सकती।

✻ उसका ज्ञान बेकार है जिसका मकसद ज्ञानियों से बहस करना, मूर्खों पर रौब जमाना और लोगों का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करना। शिक्षा का असली मकसद यह है कि मनुष्य भलाई, बुराई में फर्क करना सीखें, भलाई को अपनाकर जिंदगी गुजारें। बुराई से अपने आपको दूर रखें यही उसकी जिंदगी का सही मकसद है।

✻ आपको शक्ति दी गयी है तो किसी की मदद करो यह नेकी है। आपके पास ज्ञान है, तो दूसरे को सही दिशा बतलाओ। भूखे को खाना खिलाओ। प्यासे को पानी पिलाओ, बीमार का इलाज करवाओ। भूले को रास्ता बताओ। यह सब नेकी के काम है जो हम आसानी से कर सकते है।

✻ आप सच्चाई पर चलो, सच्चों का साथ दो, झूठ का साथ मत दो। झूठ बोलकर जीत जाने से बेहतर है सच बोलकर हार जाओ।

✻ कम पढ़ना और ज्यादा सोचना बुद्धिमानी की निशानी है।

✻ किताबी ज्ञान बिना अनुभव के अन्धा ज्ञान है।

✻ दौलत की रक्षा जबान की सुरक्षा से आसान है।

✻ प्यार वो जज्बा है जिसकी पवित्रता पर पूरी दुनिया कुर्बान की जा सकती है।

✻ झूठी कसमें और शपथ खा-खाकर व्यापार बढ़ाना नेअमत नहीं होती है इसलिए कारोबार में झूठी कसमें मत खाओ।

✻ किसीको खुश करने के लिए किसीकी कमजोरियां और गलतियों की तलाश में मत रहो इससे आप दिल के रोगी बन जाओगे। जिसके लिए आप यह सब कर रहे हो वो शायद आपको दौलत तो दे सकें पर स्वस्थ दिल नहीं। इसलिए स्वयं का काम ईमानदारी से करो दूसरों से क्या लेना देना? इसके लिए अपना स्वास्थ्य मत खराब करो।

✻ जो मालिक आज दे रहा है वो कल भी जरूर देगा। उसकी दी हुई नेमतोंका अहसास करो। दुनिया में मनुष्य को जो भी राहत, सुकून आराम और खुशी हासिल है, दुनिया की जो भी चीजें उसके पास है यह सब ईश्वर की नेअमतें है, उसका धन्यवाद अदा करना नेक मनुष्य का काम है। ईश्वर के फैसले पर राजी रहना और उसे स्वीकार करना ही मनुष्य के लिए उपाय है।

✻ अच्छे आदमी को पहचानकर उसकी कदर करनी चाहिए, क्योंकि अच्छे आदमी कीमत से नहीं किस्मत से मिलते है।

* जिस तरह नौका में पानी भरने से नौका डूब जाती है उसी तरह दिल में दौलत की मुहब्बत रहने से भी, मनुष्य का चरित्र खराब हो जाता है।

* चुगली करना, पीठ पीछे बुराई करना, शिष्टाचार के खिलाफ कोई भी काम करना इन चीजों से परहेज करना चाहिए।

* माँ-बाप का, भाई-बहन, संतान व दोस्तों का, रिश्तेदारों का लिहाज करना चाहिए।

* अच्छे लोगों से मिलना एक खूबी है, उनका अनुसरण करना जरूरी होता है।

* श्मशान घाट पर जाने से मरने के बाद का अहसास होता है।

* जो लोग अध्ययन नहीं करते उनके पास सोचने को बहुत कम बातें होती है।

* ईश्वर को जुबान की सख्ती पसन्द नहीं है इसलिए जुबान में हड्डी नहीं होती है।

* परिश्रमी का हाथ उसे कभी न कभी दौलतमंद बना देता है।

* दिलों को जीतने के लिए तलवार की जरूरत नहीं चरित्र की जरूरत होती है।

* अपनी कमजोरी अपने किसी खास दोस्त के सामने प्रकट मत करो शायद वही दोस्त किसी वक्त आपका दुश्मन बन जाएं और दुश्मन को भी तकलीफ मत दो मुमकिन है वो भी कभी दोस्त बन जाए।

* दुनिया की धन-दौलत आराम से जिंदगी गुजारने के लिए होती है न की संग्रह के लिए। वे व्यक्ति हमेशा खुशकिस्मत है जो कमाएं और नेकी के बीज बोएं बदकिस्मत है वो कंजूस जो जमा करता रहे और मर जाए।

* गम जितना गहरा और दु:खदायी होगा मनुष्य की जुबान उतनी ही खामोश और बन्द रहेगी। जो लोग गम का इजहार कर लेते है और दिल की भड़ास निकाल देते है उन्हें जो सान्त्वना मिल जाती है पर जो लोग अपने गम को छुपा लेते है वो बहुत गहरे होते है ऐसे ही लोग एक दिन सोना बन जाते है।

* गम एक वफादार साथी होता है। जहां सब दामन छुड़ा लेते है पर गम वहां भी हमारे साथ रहता है। गम से मनुष्य की अक्ल में निखार आता है। गम भी ईश्वर की एक नेअमत है। गम से अधिक कीमती इस दुनिया में कोई दूसरी खुशी नहीं। गम का सामना सब्र और दुआओं से करना चाहिए और जुबान से कभी शिकायत नहीं करना चाहिए।

* आज की नारी दफ्तर से लेकर देश तक चलाने में काबिल है लेकिन वो घर को चलाने में लड़खड़ा जाती है।

* अपना गुस्सा और क्रोध अपने तक ही सीमित रखें उसका लक्ष्य पत्नी को न बनाएं। पत्नी के ऊपर व्यक्ति का गुस्सा होना पुरुषत्व नहीं है। संयुक्त परिवारों में इसी बात पर वाद-विवाद हो जाता है पति का मन अशांत हो जाता है और वह अपना गुस्सा पत्नी पर उतारता है। आपकी पत्नी कोई पत्थर तो है नहीं जिसपर आप अपने मन की भड़ास निकाल दें। बेवजह से पत्नी की प्रताड़ना से उसे कितना दु:ख होता है।

* अगर भलाई करना चाहते हो तो बुराई बोलने की गलती मत करना।

* भले लोग दूसरों की भी भलाई करके लाभ प्राप्त करते है।

* इच्छाओं की गुलामी करना एक लाइजाज बीमारी है।

* महान लोग अपने आपको बड़ा कहने और समझनेकी गलती कभी नहीं करते।

* योग्यता किस्मत के अधीन होती है।

* कुदरत हमेशा हुस्न के जाल से बुद्धि का शिकार कराती है।

* अगर आप अपने से अधिक गरीब को देखकर जिंदगी जीयेंगे तो हमेशा खुशहाल रहेंगे और अपने आपको सम्पन्न पायेंगे।

* दुश्मन कम और दोस्त अधिक बनाओ, दोस्त हजार हो तब भी कम है और दुश्मन एक हो तब भी ज्यादा है।

* कम खाना तमाम बीमारियों का इलाज है। पेट भर खाना बीमारी की जड़ है। जब पेट भर जाता है तो सोचने समझने की ताकत कमजोर पड़ जाती है।

* आपके लिए भलाई यही है कि आप बुराई से दूर रहो।

* सच बोलोगे और नीयत सही होगी, कार्य में सच्चाई होगी तो दिल में भी इज्जत पाओगे।

* बहादुरों का काम माफ करना है। इसलिए अगर कमजोर आदमी आपकी बेईज्जती कर दे तो उसे आप माफ कर दो।

* अपनी हैसियत के मुताबिक ही जिंदगी गुजरनी चाहिए वरना आपका चैन, सुकून खत्म हो जाएगा। अपनी चादर से ज्यादा पैर न फैलाए तो आप सदा के लिए खुश रहोगे।

* ईश्वर से हमेशा वो ही मांगो जिसके आप हकदार हो न कि वो जो आप चाहते हो। हो सकता है आपकी चाहत थोड़ी हो और आपका हक ज्यादा बनता हो। इसलिए यही प्रार्थना करो कि मेरे हक में जो भलाई हो वो मुझे अदा कर।

* सच को फैलाया जा सकता है मगर उसे तोड़ा नहीं जा सकता और सच हमेशा झूठ के ऊपर हावी रहता है जिसतरह तेल पानी के ऊपर तैरता है।

* अगर आप लोगों से मुहब्बत करते है और उनकी खिदमत करते है तो आपका यह कर्म बेकार नहीं जायेगा बल्कि आपको महानता की बुलंदियों पर पहुंचाएगा।

* जहां धोखा और बेईमानी का लिवाज होगा वह कौम भूखमरी का शिकार होगा और वहां नाहक गलत फैसले होंगे। लाजमी तौरपर मारकाट होगी। जो भी कौम अपना वादा खिलाफी करेगी उसपर दुश्मन कब्जा कर लेगा।

* दुनिया में धन दौलत और संतान के ऊपर अधिक भरोसा करते है यह सब होने से उसके अंदर कुछ अंश तक अहंकार और घमंड भी पैदा हो जाता है जबकि धन-दौलत और संतान ये दुनिया की चीजें है यह सब होने से भी वह भगवान का प्रिय नहीं होता। भगवान का प्रिय तो नेकी और भलाई, सच्चे ईमान से काम करने से होता है।

* सच्चाई मनुष्यता का हुस्न है।

* असफलता सफलता के लिए अनुभव है।

* खुशी एक अनमोल दौलत है जो बहुत कम लोगों को मिलती है।

* बुद्धिमान हमेशा सोच और चिंता में व्यस्त होता है।

* कड़वी सच्चाई झूठी तारीफ से मीठी होती है।

* एक अच्छा मनुष्य एक अच्छा दोस्त भी साबित हो सकता है, ऐसे दोस्त से दोस्ती करने में जरा भी देरी नहीं करें।

* जब ख्वाहिशें आपस में टकराती है तो नतीजा लड़ाई-झगड़े और दंगा फसाद की सूरत में सामने आता है। मुकदमेबाजी से दुश्मनी जन्म लेती है। रिश्तवखोरी का बाजार गरम हो जाता है। सुख शांति भी हराम हो जाती है। झूठी गवाहियों और गलत बयानों का सिक्का चलता है जिससे धन और समय भी बर्बाद होता है। धर्म और आचरण भी बिगड़ता है। अटल न्याय के मूल्य भी गिरते है। कभी भी मुकदमेबाजी के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए बल्कि दोनों पक्षों में समझा बुझाकर सुलह करा देनी चाहिए। अदालत जाने में कोई कीर्ति नहीं है। जहाँ हर मनुष्य एक-दूसरे के अधिकार को अदा

करनेवाला और न्याय के तकाजों को पूरा करनेवाला हो तो मुकदमेबाजी की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी।

❋ ईश्वर पर भरोसा करनेवाले को रोजी रोटी ऐसे ही मिलती है जैसे चिड़ियों को मिलती है। वो सुबह खाली पेट आती है और शाम को भरेपेट अपने घौंसले में वापिस जाती है।

❋ जो मुसीबत ईश्वर की तरफ ले जाएं वो परीक्षा है और जो मुसीबत ईश्वर से दूरा कर दे वह सजा है।

❋ ईश्वर हमारी तरक्की को इस बात पर तय नहीं करता है कि हमने दुनिया में कितने दु:ख उठाएं बल्कि यह बात करेगा कि हमने दुनिया में लोगोंके कितने दु:ख उठाएं। सही मायने में वो ही मनुष्य है वह दूसरों के लिए उनकी खुशी के लिए काम करता है।

❋ ईश्वर किसी एक का नहीं होता।

❋ जीवनका सबसे बड़ा उपयोग यह है कि उसे किसी ऐसे कार्य में लगाएं जिसका जीवन आपके पास भी जारी रहे।

❋ किसी की एक ही बात पर नहीं मर मिटना चाहिए उसकी बाकी आदतों पर भी गौर करो।

❋ किया हुआ गुनाह किसी न किसी सूरत में दिल को परेशान करते रहता है।

❋ अपनी क्षणभर की खुशी के लिए दूसरों के होठों की हसीन मुस्कुराहट मत छीनो।

❋ किसी का दिल न दुखाओ हो सकता है तो उसके आँसू पोंछो।

❋ अपना हरदिन इस तरह गुजारो कि वो यादगार बन जाए।

❋ दोस्ती उससे मत करो जो दुनिया में सबसे ज्यादा खूबसूरत हो बल्कि उससे करो जो आपकी जिन्दगी को खूबसूरत बना दें।

❋ जो चीज अपने लिए पसंद करों वो ही दूसरे के लिए पसंद करो।

❋ रिश्ते सिर्फ खून के ही नहीं होते बल्कि इंसानियत के भी होते है। इन्सानियत वो रिश्ता है जो पराये को भी अपना बना देता है।

❋ सब्र तो उस वक्त महत्वपूर्ण होता है जब सदमा बड़ा हो और हाल ही का हो। बाद में तो सब्र खुद ब खुद आ जाता है।

❋ समय मनुष्य की सबसे बड़ी सम्पत्ति है। समय का सही उपयोग जिस दिशा में भी किया जाएं उसी दिशा में प्रगति मिलने लगती है।

❋ विश्वास एवं लगन के बिना किया गया कार्य कागज के फूल की तरह है जिसमें कोई सुगन्ध नहीं होती।

❋ समतापूर्वक स्वयं आचरण करके लोगों में कर्म की रुचि पैदा करनी चाहिए।

❋ जीवन में मित्रता से अधिक और कोई प्रसन्नता नहीं है। जीवन है तो आनंद है और परिश्रम है तो जीवन है।

❋ कटु वचन दूसरे के मर्म स्थान पर चोट करते हैं और बदले में वह श्राप देता है, जो निष्फल नहीं जाता।

❋ चरित्र के बिना मानव पशु से एक सीढ़ी नीचे गिर जाता है। चरित्र का सीधा संबंध हमारे हृदय से निकले उन विचारों से है जो कल्याण की खोज करते हैं।

❋ चारित्रिक गठन इंसान की प्रथम आवश्यकता है। चरित्र की शुद्धि तक आकर ज्ञान के सारे मार्ग रुक जाते हैं।

❋ शत्रु का बल देखकर क्रोध करने और न करने का विचार करना चाहिए।

❋ परमेश्वर को धारण किए व्यक्ति ईश्वर के समान होते हैं, यदि उन्हें क्रोध नहीं आता।

❋ अज्ञान की दासता से मृत्यु श्रेयस्कर है। संतोष से बढ़कर कोई सुख नहीं और धैर्य से बड़ी शक्ति नहीं।

❋ अज्ञान जहां वरदान हो, वहां बुद्धिमानी दिखाना मूर्खता है।

* शत्रुता और घृणा सदैव ही साथ-साथ रहती है और वे एक दूसरे के साथ मित्रता से जुड़ी हुई होती हैं।
* सुमन की सुगंध समीर के विपरीत नहीं जाती, किंतु मनुष्य के सद्‌गुण की सुगंध सब ओर फैल जाती है।
* स्वभाव व चरित्र निर्माण के बिना किसी भी व्यक्ति ने बड़ी सफलता अर्जित नहीं की।
* सफलता इन साधनों से प्राप्त होती है- विवेक, श्रम, आत्मबल और व्यावहारिकता।
* झूठी शान शाश्वत और सनातन नहीं होती।
* जिसे परहित साधने में स्वयं की सुध न रहे, उसके हितों की रक्षा परमात्मा को करनी पड़ती है।
* जैसे अग्नि के लिए आंधी है वैसे ही प्रेम के लिए विरह। यह कमजोर को बुझा देता है और महान को प्रकाशवान बना देता है।
* जीव ब्रह्म ही है, ब्रह्म से अलग नहीं है।
* जिस किसी ने भी पृष्ठभूमि में मरते हुए सैनिक की चमकदार आंखों में आंखें डाली हैं, वह युद्ध शुरू करने से पहले काफी विचार करेगा।
* जिस प्रकार फसल को कीड़ा नष्ट करता है, उसी प्रकार कपट मनुष्य को प्रत्येक क्षेत्र में नष्ट करता है।
* आप हंसते समय देखोगे कि संसार आपके साथ हंसता खिलखिलाता है। लेकिन रोते समय आप स्वयं को अकेला पाओगे।
* जब प्रजा विद्रोह करे तो शासन को अत्याचारी समझो।
* जो हुआ, उसे निश्चित समझ जो भविष्यगत है, उसे तू निश्चित कर।
* जिसकी पीठ पर परमेश्वर का हाथ हो, उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं।
* जो शासन नहीं कर सकते, उन्हें शासित होना होगा।
* झगड़ों को उकसाने वाले सदैव समर्थ होते हैं, कमजोर ऐसा खतरनाक मनोरंजन नहीं कर सकते।
* तीर्थस्थल इस संसार में अनगिनत हैं, लेकिन विशुद्ध हृदय से बड़ा तीर्थस्थल कोई नहीं।
* तत्काल बुद्धि से बड़ा न शास्त्र है न शस्त्र।
* आपने बड़ी कठिनाई से एक वर्ष में एक मित्र बनाया और एक घंटे में एक मित्र खो दिया।
* त्याग से पाप का मूलधन ही चुकता है और दान से पाप का ब्याज।
* आप दूसरे की आंख का तिनका क्यों देखते है अपनी आंख का शहतीर तो निकाल लो।
* दौलत आपकी सेविका है यदि आप उसका उपयोग जानते हैं, वह आपकी स्वामिनी बन जाएगी यदि आप उसका उपयोग नहीं जानते।
* तप और सदाचार, जाति से निम्न को भी उच्च स्थान प्राप्त करवा देता है।
* आप किसी भी घोड़े को पानी तक तो ले जा सकते हो, लेकिन उसे पानी पीने के लिए बाध्य नहीं कर सकते।
* आप चाहते हो कि लक्ष्मी सदैव अनुग्रहीत रहे तो अपने यश को स्थिर रखो और स्वाभिमानी बने रहो।
* आप पृथ्वी के नमक हो परंतु यदि नमक अपना स्वाद खो बैठे तो उसे किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा?
* आप यदि स्वर्ग की ओर उड़ान भरना चाहते हो तो ज्ञान के पंख प्राप्त करो।
* धन की उपासना इस संसार में आवश्यक है, यदि हम लोक-परलोक में इसके द्वारा अपना उद्धार कर पाने की कला जानें।
* बुद्धि और हृदय को जो सच मालूम हो, वही कार्य करना चाहिए।

* जो थोड़ा रहने पर भी जो दान दिया जाता है, वह हजार के बराबर है।

* दान के विषय में बुद्धिमान लोगों ने इस संसार में गोदान, पृथ्वीदान तथा अन्नदान को भी उतना श्रेष्ठ नहीं बताया, जितना श्रेष्ठ अभयदान को बताया है।

* दरिद्र व्यक्ति प्राय: भाग्य पर निर्भर हो जाता है।

* दूसरों से प्रेम करना स्वयं अपने साथ प्रेम करने के बराबर है।

* दण्ड देनेवाले वे व्यक्ति आदरणीय बने रहते हैं, जो प्रेम भी करते हैं।

* दौलतमंद व्यक्तियों में भोजन पचाने की शक्ति नहीं होती, परंतु गरीब लोग काठ को भी पचा लेते हैं।

* दान यदि मांगने पर दिया जाए तो अच्छा है, लेकिन बिना मांगे दिया जाए तो ज्यादा अच्छा है।

* दु:ख और हानि इंसान को नरम और ज्ञानी बना देती है।

* दु:ख के विषय में दुखती-सच्चाई यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने दुख को ही सबसे बड़ा मानता है।

* दुर्भाग्य कभी अकेला नहीं आता।

* दान देने से धन में कमी नहीं आती। जिस प्रकार नदी का पानी पीने से कम नहीं हो जाता।

* दान यदि निर्धनों को दिया गया, तभी दान है, वर्ना वह उधार देने के समान है।

* दान सत्कार से दो, अपने हाथ से दो, हृदय से एवं दोष रहित दान दो।

* दु:ख के बारे में यह व्यक्ति अनभिज्ञ रहते हैं- राजा, वेश्या, यमराज, अग्नि, चोर, बालक, भिक्षुक और चुगलखोर।

* दान हृदय का कमाल है, हाथों का नहीं।

* दानी व्यक्ति वही है जो उसकी प्रसिद्धि नहीं चाहता।

* दु:खों में घिरा व्यक्ति नए-नए दु:ख पाता है। जैसे लगी हुई चोट पर बार-बार चोट लगती है।

* दु:ख भोगने से ही सुख के मूल्य का ज्ञान होता है।

* दुष्ट, सज्जनों को सहन नहीं कर पाते, जैसे बाजारू कुत्ते शिकारी कुत्तों को देखकर भौंकते हैं, किंतु पास जाने का साहस नहीं कर पाते।

* दु:खी वह है जो आंसू बहाता है क्योंकि व्यस्त व्यक्ति तो दु:ख में भी आंसू नहीं बहाता।

* दु:ख के पश्चात आनेवाला सुख ज्यादा आनंद देता है, जैसे धूप से जले हुए को वृक्ष की शीतलता शांति देती है।

* दु:ख में जो उपाय किए जाते हैं, यदि वह सुख के समय ही किए जाते तो दु:ख की सृष्टि ही नहीं होती।

* दु:ख से मुक्त होने का एकमात्र उपाय यह है कि उसका चिंतन छोड़ दिया जाए।

* दु:ख और सुख दोनों को ईश्वरीय प्रसाद मानकर स्वीकार किया जाए तो दु:ख का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।

* दु:ख का एक क्षण एक युग की भांति प्रतीत होता है।

* दु:ख में लंबाई होती है और सुख में गहराई नहीं होती। जिन्हें हम सुखी कहते हैं, वह हमेशा छिछले होते हैं। जो लोग दु:ख से गुजरते हैं, उनकी आंखों और जीवन में गहनता होती है। दु:ख हमारे गुणों को मांजता है और दु:ख में भी आनंद मनाते रहने की शिक्षा देता है।

* दुष्ट मनुष्य को सज्जन बनाने के लिए इस पृथ्वी पर कोई उपाय नहीं है, जैसे मल त्याग करनेवाली इंद्रियों को सौ-सौ

बार धोएं, पर वह अन्य इंद्रियों की तरह शुद्ध नहीं हो सकतीं।

* दुष्ट लोग अपने दोष के संबंध में जन्मजात अंधे होते हैं, लेकिन दूसरों के दोष देखने में दिव्य दृष्टि रखते हैं। ऐसे लोग अपने गुण का वर्णन गला फाड़कर करते हैं और दूसरे की प्रशंसा के समय मौन धारण कर लेते हैं।

* दुष्ट औरसांप में सांप फिर भी अच्छा है, क्योंकि वह काल के आदेशवश काटता है, पर दुष्ट तो सदैव ही काटता रहता है।

* दुष्ट व्यक्ति बैर करनेवाले से भी बैर करते हैं और भलाई करनेवाले से भी।

* दुर्भाग्य को भाग्य में पुरुषार्थी ही बदल सकता है।

* दुर्जन विद्वान हो, तब भी उसका त्याग कर दें। क्योंकि मणि से अलंकृत सर्प भी भयंकर होता है।

* दुर्भाग्य के समय शत्रु को मित्र, मित्र को शत्रु और शुभ को अशुभ माना जाने लगता है।

* दुर्भाग्य उन द्वारों से प्रविष्ट होते हैं जिन्हें हम खुला छोड़ देते हैं।

* दुर्भाग्य की सभी किस्में एक ही ढेर में रखी जाएं और उनमें से चुनाव करना पड़े तो अधिकांश व्यक्ति अपना ही हिस्सा लेकर विदा हो जाएंगे।

* दुर्भाग्य से त्रस्त मनुष्य प्राप्त वस्तु को भी प्राप्त नहीं कर पाता।

* दु:ख में एक-एक क्षण भी व्यतीत करना संसार के संपूर्ण सुखों से कहीं बढ़कर है।

* दु:खी सुख चाहता है। सुखी अधिक सुख चाहता है। लेकिन दु:ख के प्रति उपेक्षा भाव रखकर सबसे ज्यादा सुख पाया जा सकता है।

* देवत्व रखनेवाला मानव वह है जिसके हृदय में दैवी गुण प्रकट होते हैं।

* दूसरों की त्रुटियां सुनकर प्रसन्न होनेवाला अपनी बुराइयां सुनकर विक्षुब्ध होगा।

* शान किसी कार्य के कर डालने में नहीं अपितु उसे पूर्ण करने के प्रयास में है।

* प्रेम देवता का, क्षमा मनुष्य का और घृणा शैतान का कर्म है।

* सौ वर्ष जीने की इच्छा कर्म करते हुए ही की जा सकती है।

* सच्चा काम स्वार्थ और अहंकार को छोड़े बिना नहीं होता।

* जितने भी दिन जियो फूल बनकर जियो, कांटा बनकर नहीं।

* सदैव जीवित रहें, यह इच्छा करना एक बहुत बड़ी भूल को सदैव के लिए स्थायित्व प्रदान करना है।

* चरित्रवान बनो, संसार स्वयं तुम पर मुग्ध होगा। फूल खिलने दोगे तो मधुमक्खियां स्वत: ही चली आएंगी।

* चरित्र का ज्ञान हुए बिना कुलीन व अकुलीन, वीर व दंभी, पवित्र या अपवित्र नहीं होता है।

* आदमी की तमाम कामनाएं तुरंत पूरी हो जातीं, यदि वह अपने क्रोध को काबू कर ले।

* दूसरे की गलतियों के कारण आप स्वयं से बदला लेते हैं यदि क्रोध को काबू नहीं कर पाते।

* अज्ञान के समान दूसरा कोई बैरी नहीं।

* अज्ञान प्रकाश को जाग्रत नहीं कर सकता, लेकिन घृणा तो ज्ञान के प्रकाश को भी बुझा देती है।

* गुण तो आदमी उसमें देखता है, जिसके साथ जन्म भर निर्वाह करना हो।

* उनके लिए कुछ दुष्कर नहीं, जो गुणवान हैं।

* सफलता को निमंत्रण देने के लिए उत्साह का पता अपने पास रखिए।

* सफलता का मूलमंत्र यही है कि इंसान साहस के साथ सतत परिश्रम करता रहे।

* दीन दु:खी एवं पीड़ित बंधुओं की सेवा करने एवं उनके साथ मिल बांट कर रूखा-सूखा खाने में जो गौरव प्राप्त होता है, वह सभ्य समाज की दावतों में भी प्राप्त नहीं होता।

* दुश्मन के साथ नेकी करना, रोगी की सेवा से छोटा काम नहीं है।

* दीन दु:खियों की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है।

* दु:खी ईश्वर में भक्ति रखता है आशा से, सुखी भय से। दु:खी पर दु:ख बढ़ता जाए तो उसकी भक्ति भी बढ़ती जाएगी। सुखी पर दु:ख पड़े तो वह विद्रोह करने लगता है। वह ईश्वर को भी अपने धन के सामने झुकाना चाहेगा।

* दूसरों की उन्नति करते हुए जो स्वयं भी उन्नति करे, वह महापुरुष है।

* दिन का कर्त्तव्य पालन रात्रि का मधुर संगीत है।

* दान एवं क्षमा प्रेम का आधार है। लेकर भूल जाना कृतघ्नता है। प्रेम-निस्वार्थ है। स्वार्थ युक्त प्रेम छल है। वासना रहित प्रेम ही सुखी जीवन का आधार है।

* दूसरे लोगों की जेब से पैसे निकालने की अहिंसक कला भीख मांगना।

* दान या उदारता की मुर्दों से अधिक जीवित लोगों को आवश्यकता है।

* दुनिया में कोई भी वस्तु इतनी निश्चित नहीं है जितनी कर और मृत्यु।

* दुनिया का इतिहास मनुष्य की अपनी प्रतिदिन की रोजी की तलाश का लिखित वर्णन है।

* दूर रहने पर भी सज्जनों का स्नेह नहीं जाता।

* दोस्त बड़ा प्यारा शब्द था, साथी बड़ा प्यारा शब्द था, कामरेड बड़ा प्यारा शब्द था, पर ये शब्द इन्सान के साथ कितनी दूर तक चल सके। इन्सान चलता रहा, शब्द थक गए।

* दयालुता का दिया जाना सबसे अधिक कठिन चीज है, लेकिन आमतौर पर यह वापिस दे दी जाती है।

* दु:ख पुरुषार्थी की करवट है, सुख श्रम की परिणति का घर है।

* दुनिया में सबसे बड़ा निरंकुश शासक आत्मा की आवाज है।

* दुनिया की चीजों में सुख की तलाश फिजूल है। आनंद का खजाना तो आपके अन्दर है।

* देवगण आत्मा के शोर को नहीं, गहराई को पसंद करते हैं।

* धर्म को कलंकित करना, उसे विकृत करने का प्रयास करना या फिर उसका अपमान करना, अत्यंत त्रासद है, इसकी भर्त्सना की जानी चाहिए।

* बंधुत्व की भावना से, सम्मिलित होकर, एक सूत्र में बंधकर रहने में कितना आनंद है।

* दूसरे के उपकार का विस्मरण उचित नहीं। पर दूसरे पर किए उपकार को उसी दम भूल जाना उचित है।

* दुष्ट के सामने झुकनेवाला गृहस्थ दुनिया में दुष्टता को बढ़ाने का कारण होता है।

* देश की एकता व अखंडता के लिए पहली शर्त यह है कि उसकी युवा शक्ति कितनी प्रखर और रचनात्मक है और उसका नेतृत्व कैसे लोगों के हाथों में है।

❋ दु:ख असम्भव की आशा का प्रतिफल है।

❋ दूसरों की सद्भावना का आदर करना श्रेष्ठ पुरुषों का कर्त्तव्य है।

❋ धर्मनियंत्रित राजनीति ही आदर्श राष्ट्र बना सकती है।

❋ धन और ईश्वर में बनती नहीं। इसी कारण प्रभु का निवास गरीब के घर में होता है।

❋ धर्म ही मनुष्य का सच्चा मित्र है, जो मृत्यु के बाद भी उसके साथ जाता है या फिर जीवित रहता है।

❋ धर्म कभी पूर्णत: प्राप्त नहीं होता, पर अनवरत प्रयास करता है। प्रयास किए जाने की भावना उस चश्मे की तरह है जो सदैव उबलता रहता है, न कि पोखर जिसमें बदबू आती है।

❋ धूर्तता और विश्वासशीलता के बीच समझदारी की आवाज घुट कर रह जाती है।

❋ धर्म और शांति की चर्चा जरूरी नहीं कि गंभीरता का आवरण ओढ़कर ही की जाए। हंसते व खिलखिलाते उल्लास के साथ भी मानवता की समस्याओं का निदान ढूंढ़ा जा सकता है।

❋ दान से पुण्य बढ़ता है, संदर्भ से बैर का बढ़ना रोका जाता है।

❋ धन के मद ने सभीको टेढ़ा कर दिया।

❋ धर्म की शिक्षा दिए बिना किसी को शिक्षित करने का अर्थ उसे एक चतुर शैतान बनाना है।

❋ धर्म के कट्टरपन पर गर्व करना लज्जा की बात है।

❋ धर्म छिलका है और अध्यात्म केला। कई बार व्यक्ति के हाथ में केवल छिलका रह जाता है। धर्म वह है जो बाहर दिखाई नहीं देता है, कर्मकांड की परत नियम और अभ्यास मात्र, जबकि फल तो अध्यात्म है। वहीं आंतरिक चीज है।

❋ धनिकों के लिए दूसरी निधियां हैं परंतु सज्जनों के लिए गुणी मनुष्यों की समीपता ही श्रेष्ठ निधि है।

❋ धन जिनका गुलाम है, वे बड़भागी है और धन के जो गुलाम हैं, वे बड़े अभागे हैं।

❋ धन की यह गतियां होती हैं- दान, भोग और नाश। जो दान नहीं देता, भोग भी नहीं करता उसके धन की तीसरी गति होती है नाश।

❋ धर्म ही एक ऐसा तत्व है, जिससे व्यक्ति आत्मिक सुख और शान्ति को प्राप्त कर सकता है।

❋ धर्म का भले ही नाश हो रहा हो, जातीय जीवन भले ही रसातल को जा रहा हो, देव-मन्दिरों की भले ही ईंट से ईंट बज रही हो, परंतु नीच प्रवृत्ति का व्यक्ति अपनी स्वार्थ निद्रा से नहीं जागता।

❋ धन से चाहे आदमी का जी भर जाए, प्रेम से तृप्ति नहीं होती। ऐसे कान बहुत कम हैं जो प्रेम के शब्द सुनकर फूल न उठे।

❋ धन और रूप से संपन्न होने पर भी शील के अभाव में मनुष्य फल और पुष्पों से युक्त होने पर भी कांटों से भरे हुए वृक्षों की भांति है।

❋ धन खोकर अगर हम अपनी आत्मा को पा सकें, तो यह कोई महंगा सौदा नहीं है।

❋ धारणा की दृढ़ता और उपदेश की पवित्रता यह दोनों मिलकर अवश्य बाजी मार लेते हैं।

❋ धन्य है, सराहना का पात्र है वह मनुष्य, जिसे विवेक मिल गया है, जिसने ज्ञान को वश में कर लिया है। ज्ञान की प्राप्ति चांदी से श्रेष्ठ है और सोने से बढ़कर।

❋ धुआं आसमान से शेखी बघारता है और राख पृथ्वी से कि वह अग्नि वंश के हैं।

* धनी बेवकूफ उस सूअर के समान है, जो अपनी ही चर्बी के कारण घुट मरता है।

* धर्म से सहिष्णुता, सत्यता, विश्वास और भावुकता का निर्माण होता है।

* धर्म का व्याख्यान सुनने पर, श्मशान जाने पर, रोगियों और दु:खियों को देखने से जो अनुभव उत्पन्न होता है, वह यदि स्थायी रहे तो इस संसार में सभी व्यक्ति योगी हो जाएं।

* धन-धान्य के उपयोग में, विद्या प्राप्त करने में, भोजन और नीति में, जो लज्जा का त्याग कर देता है, वह सुख पाता है।

* धन न रहने पर मनुष्य जब जरूरतों का निवारण नहीं कर पाता, तब मजबूरी में उसे लज्जा त्यागनी ही पड़ती है।

* धर्म का सबसे बड़ा साधन स्वस्थ शरीर है।

* न्याय का सिद्धांत वहां निरर्थक हो जाता है, जहां न्याय करनेवालों को ही राजनीति करने की भी छूट होती है।

* धन और खाद एक समान हैं। उपयोगिता लेने के लिए दोनों को फैलना पड़ता है।

* धोखेबाज को धोखा देने में दोगुनी प्रसन्नता का अनुभव होता है।

* निष्काम बौद्धिक जिज्ञासा यथार्थ सभ्यता का जीवन रस है।

* नासमझ को कोई भी बात आसानी से समझाई जा सकती है। समझदार को समझाना और भी आसान है, लेकिन बीच के व्यक्ति को समझाना स्वयं ब्रह्मा के भी वश की बात नहीं है।

* न जानते हुए भी हम एक ही धर्म के उपासक हैं।

* नीरवता की गहनता में ही ईश्वर की वाणी सुनी जा सकती है।

* निष्काम कर्म शक्ति का उद्‌गम है, चूंकि वह कर्म ही ईश्वर की पूजा है।

* नसीहत-जहां इसकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है, वहीं सबसे अधिक लापरवाही से सुनी जाती है।

* नौकरशाही एक भीमकाय यंत्र है, जिसे बौने चलाते हैं।

* शूरजनों को अपने मुख से अपनी प्रशंसा करना कभी नहीं भाता। वे वाणी के द्वारा प्रदर्शन न करके शुभकर कर्म ही करते हैं।

* स्वयं को कर्म के अधीन रखो। तुम्हारा अधिकार कर्म पर है और कर्मफल कर्मानुरूप प्राप्त होगा।

* जिंदगी फूलों की सेज नहीं, संघर्ष का मैदान है।

* जीवन से मरना अच्छा है। अगर कोई मरना जान ले। मृत्यु के पूर्व ही मन को मार लेनेवाला अजर अमर है।

* चरित्र के दर्पण में छोटी-छोटी बातों से मनुष्य का व्यवहार झलकता है न कि लंबी-चौड़ी बातों से। चरित्र के दर्पण में छोटी-छोटी बातें शोभा पाती हैं और लंबी-चौड़ी बातें विकृत नजर आती हैं।

* जन्नत उन लोगों के लिए है, जो अपने गुस्से को काबू में रखते हैं।

* जो क्रोध पर उचित नियंत्रण रख सकते हैं, वे ही स्वर्ग के उत्तराधिकारी हैं।

* आपका सब स्थानों पर आदर होगा, यदि आप गुणवान हैं।

* अपने दोषों को परखे बिना दूसरों पर दोष लगाना व्यर्थ है।

* कर्मवीरों की सफलता सहज है क्योंकि यही उनका ध्येय है।

* जो लोग सचमुच बुद्धिमान हैं, वे असफलता से नहीं घबराते।

* न्याय की अदालतों से भी बड़ी एक अदालत होती है अंतर की आवाज और यह अन्य सभी अदालतों से ऊपर की अदालत है।

* निन्दा वह कर है जो जनता किसी भी प्रतिष्ठित मनुष्य से वसूल करती है।

* नफरत हिंसा की बहुत ही सूक्ष्म आकृति है।

* न तो आकाश में, न समुद्र के बीच में और न ही पहाड़ की गुफाओं में, दुनिया में कोई जगह ऐसी नहीं जहां कि मृत्यु न पहुंच सकती हो।

* निद्रा एक ऐसा अथाह सागर है, जिसमें हम सब अपने दु:खों को डुबा देते हैं।

* न्याय कभी-कभी सो जाता है, मरता कभी नहीं।

* न्याय के समान विषय भी अंधा है।

* न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहे नचाती है।

* निर्धन अनुभव करना निर्धनता का सूचक है।

* निर्धनता नहीं, निर्धनता से शर्मिंदा होना शर्म की बात है।

* प्रतिभा अपना दीपक लेकर चलती है इसी कारण अपना मार्ग स्वयं खोजती है। प्रतिभा जन्म से प्राप्त होती है। उसे बढ़ाया जा सकता है, लेकिन सिखाया नहीं जा सकता।

* प्रकृति की अपेक्षा ज्यादा लोग उसके अध्ययन द्वारा महान बनते हैं।

* निर्धनता मनुष्य को निर्बल करती है और दु:ख देती है। अत: निर्धनता को दूर भगाएं।

* निर्धनता से लज्जा पैदा होती है, लज्जा से पराक्रम नष्ट होता है, पराक्रम न होने से अपमान होता है, अपमान से दु:ख मिलता है, दु:ख से शोक होता है, शोक से बुद्धि नष्ट होती है और बुद्धि न होने से नाश हो जाता है। अत: निर्धनता ही सब आपत्तियों की आधारशिला है।

* प्रत्येक व्यक्ति स्वयं की उन्नति में संतुष्ट न रहे बल्कि सबकी उन्नति में वास्तविक उन्नति समझे।

* प्रतिभा जाति पर नहीं परिश्रमी पर निर्भर करती है।

* परमेश्वर के भय से किए जानेवाले कार्यों में सुधार आता है और जो कार्य निर्भय होकर किए जाते हैं, वह बिगड़ जाते हैं।

* प्राप्ति वह आहुति है जो तृष्णा की अग्नि को और भड़काती है।

* प्रतिभा बढ़ाने के लिए संस्कार का अभ्यास एकमात्र उपाय है।

* प्रेम मनुष्यता का एक लक्षण है।

* प्रेम की कोई जाति नहीं, कोई धर्म नहीं, विचार-विवेक और भलाई-बुराई का उसे कुछ ज्ञान नहीं।

* प्यार और हमदर्दी से एक आदमी दूसरे को अपना सही परिचय दे सकता है।

* प्रेम और वासना में उतना ही अंतर है, जितना अमृत और विष में।

* प्रेम आत्मा से तृप्त होता है, वासना शरीर से।

* प्रेम न दावा करता है, न क्रोध करता है और न बदला लेता है। वह सदा देता है और तकलीफ उठाता है।

* पुरुष यदि खेत के लिए है तो स्त्री चूल्हे के लिए। पुरुष यदि तलवार के लिए है तो स्त्री सुई के लिए। पुरुष मस्तिष्क

से सोचता है और नारी हृदय से। पुरुष आदेश देता है, स्त्री पालना करती है।

* पुरुष का यह मिजाज है कि वह चाहे संसार का सबसे कुरूप व्यक्ति ही क्यों न हो, उसकी निगाह अप्सराओं पर ही जाकर टिकती है।

* प्राण, धन और शरीर से परोपकार करना चाहिए। परोपकार से प्राप्त पुण्य सैकड़ों यज्ञों से भी ज्यादा दुर्लभ है।

* पुरुष दु:ख को क्षण भर में भूल जाते हैं, लेकिन नारी जीवन भर दु:खों को याद रखती है।

* प्रत्येक स्त्री को चाहिए कि वह जल्दी से शादी करे और पुरुष को चाहिए कि वह जब तक संभव हो शादी से दूर रहे।

* पति होना पूर्ण समय के लिए नौकर होना है।

* पति और पत्नी का संक्षेप में सर्वश्रेष्ठ धर्म यह है कि वह मृत्यु तक परस्पर विश्वास करें।

* प्रार्थना करनेवाले को लक्ष्मी मिले या न मिले, लेकिन जिसे लक्ष्मी चाहे वह लक्ष्मी के लिए दुर्लभ नहीं।

* प्रत्येक व्यक्ति बुद्धिमान होने का प्रयत्न करता है और वे लोग जो बुद्धिमान नहीं हो सकते, वे लगभग सदैव ही चालाक होते हैं।

* प्यार रहने तक स्वप्न रहते हैं, शादी होते ही आंखें खुल जाती हैं।

* परमात्मा को प्राप्त करानेवाली विद्या वास्तव में विद्या है।

* हमें दूसरों की आशा छोड़ देनी चाहिए। जहां दूसरों की आशा नहीं होती वहीं स्वराज्य होता है।

* मनुष्य जीवन का उद्देश्य आत्म-दर्शन है और उसकी सिद्धि का मुख्य एवं एकमात्र उपाय परमार्थिक भाव से जीव-मात्र की सेवा करना है।

* कर्मशील लोग शायद ही कभी उदास रहते हों- कर्मशीलता और उदासी दोनों साथ-साथ नहीं रहती।

* आदमी में शुभ गुण तभी तक हैं, जब तक वह तृष्णा से दूर है। तृष्णा का स्पर्श होते ही सब गुण गायब हो जाते हैं।

* सत्यव्रती के लिए शरीर, स्त्री, पुत्र, घर, धन और पृथ्वी सब तिनके के बराबर कहे गए हैं।

* पाप या अपराध करने के पश्चात यदि मनुष्य राजा के दिए हुए दंड को भोग लेते हैं, तो वे शुद्ध होकर पुण्यात्मा पुरुषों की भांति स्वर्ग में आ जाते हैं।

* धनवानों का हृदय धन के भार से दबकर सिकुड़ जाता है, उसमें उदारता के लिए स्थान नहीं रहता।

* जो मानव अपनी निन्दा सुन लेता है, वह सारे जगत पर विजय प्राप्त कर लेता है।

* जैसे हाथी स्नान करके फिर बहुत-सी धूल अपने ऊपर डाल लेता है, उसी तरह अज्ञानी साधक साधना करता हुआ भी नये कर्मफल का संचय करता जाता है।

* जो दूसरों के जीवन के अंधकार में सूर्य का प्रकाश पहुंचाते हैं, उनका इस मृत्युलोक से कभी नाश न होगा, वे अमर हैं।

* मनुष्य की जिन्दगी एक सुन्दर पक्षी की भांति है, जो किसी डाल पर बैठा हुआ थोड़ी देर चहचहाता है और फिर उड़ जाता है।

* तप के द्वारा पूजा-प्रतिष्ठा की अभिलाषा नहीं करनी चाहिए।

* अति क्रोध, कटु वाणी, दरिद्रता, स्वजनों से वैर, नीचों का संग और अकुलीन की सेवा- ये नरकवासियों के लक्षण हैं।

* जो आदमी नशे में मदहोश हो, उसकी सूरत उसकी मां को भी बुरी लगती है।

* दुष्ट लोग जिनके कारण बड़ाई पाते हैं, सबसे पहले उन्हीं का नाश करते हैं।

* जैसे धन के नाश होने पर सगे-संबंधी छोड़ देते हैं, वैसे ही पुण्य क्षीण हो जाने पर देवता भी मनुष्य को स्वर्ग से गिरा देते हैं।

* पिता की सेवा अथवा उनकी आज्ञा के पालन के समान कोई भी दूसरा धर्म नहीं है।

* आग से जलते हुए एक ही सूखे वृक्ष से सारा वन इस प्रकार जल जाता है जैसे एक ही कुपुत्र से समस्त कुल।

* जैसे पके हुए फलों को गिरने के अतिरिक्त दूसरा कोई भय नहीं होता, उसी प्रकार उत्पन्न हुए मनुष्य को मृत्यु के सिवा अन्यत्र कोई भय नहीं है।

* धनी को अपने धन का मद रहता है, घमण्ड रहता है, परन्तु गरीब के झोपड़े में क्रोध और अहंकार के लिए स्थान नहीं रहता है।

* हंसमुख, विनोदपूर्ण, आशापूर्ण और सन्तुष्ट मनुष्य हर जगह अपना रास्ता बना लेता है। सब उसका सम्मान करते हैं, सब उसकी प्रशंसा करते हैं।

* अनुभव मनुष्य को गलत फैसलों से बचाता है मगर अनुभव गलत फैसलों से ही आता है।

* जिसने अन्यायपूर्वक धन इकट्ठा किया हो और घमंड से सिर को उठा रखता है ऐसे लोगों से सदा दूर रहो। ऐसे लोग स्वयं पर ही बोझ होते है इन्हें कभी शांति नहीं मिलती।

* जिस काम को करने का डर लगता हो उसको करने का नाम ही साहस है।

* जो तस्वीर दिल के आईने में है वो ही प्यार के काबिल है वरना दीवार के काबिल तो हर तस्वीर हुआ करती है।

* अगर कोई छोटे मामलों में सच के प्रति लापरवाह होता है तो उसपर बड़े मामलों की जिम्मेदारी नहीं सौंपी जा सकती।

* कर्त्तव्य और वर्तमान हमारा है, फल और भविष्य प्रकृति का है।

* दूसरों की भूलों से बुद्धिमान लोग अपनी भूलें सुधारते हैं।

* बहुमत की आवाज न्याय की सूचना हो, वह जरूरी नहीं।

* जो हर हाल में राजी है उसे कोई दुखी नहीं कर सकता।

* झूठ को इज्जत देकर जितना ऊंचा उठाया जाता है, उतनी ही ग्लानि, उतना ही कीचड़, उतना ही अनाचार इकट्ठा होता है।

* जिस वस्तु को मनुष्य दे नहीं सकता, उसे ले लेने की स्पर्धा से बढ़कर दूसरा कोई दंभ नहीं।

* शुद्ध न्याय में शुद्ध दया होनी चाहिए। न्याय का विरोध करनेवाली दया, दया नहीं बल्कि क्रूरता है।

* जब गुलाम अपनी बेड़ी को आभूषण समझकर मुस्कराए, तब उसके मालिक की पूरी जीत हुई मानी जाती है।

* जनता कल्पवृक्ष है। जो भावना लेकर आप उसके पास जाएंगे, वही आप उससे पाएंगे।

* व्यक्ति का सबसे बड़ा दुश्मन उसका घमंड है।

* प्रजातंत्र का अपना संगठन और शासन होना चाहिए, परंतु व्यक्तिगत स्वतंत्रता ही उसका प्राण है।

* शांतिपूर्वक सरकार बदल देने की शक्ति प्रजातंत्र की आवश्यक शर्त है।

* प्रजातंत्र का प्रेम समानता का प्रेम है।

* हजारों खोखले शब्दों से अच्छा वह एक शब्द है जो शांति ला सकता है।

* अगर मंजिल पर निगाहें हो और कदम राहों पर चले तो ऐसी कोई राह नहीं जो मंजिल तक न जाती हो।

* जब किसी व्यक्ति पर अहं का भूत सवार हो जाता है तो उसके जीवन के सभी ब्रह्म-पिशाच सक्रिय हो जाते हैं और उस

पर कोई भी टोटका काम नहीं करता बनिस्वत आत्मविश्लेषण के। अत: अहं व्यक्तित्व विनाश का सबसे बड़ा कारण होता है।

* कितने मजबूर हैं हम तकदीर के हाथों, ना उसे पाने की औकात रखते हैं और ना उसे खोने का हौसला।

* मेरा अधिकार मिलेगा या नहीं- इससे अधिक महत्व की बात ये है कि आप गलत का विरोध करते हो या नहीं।

* इसकी चिंता छोड़ दो कि आपने क्या खोया है। इसपर ध्यान रखो कि आपने क्या हासिल किया है।

* आप चाहे कितने भी अच्छे काम करो, या कितने भी ईमानदार बनो, पर दुनिया तो आपकी एक गलती का इंतजार करती है।

* संसार रूपी कटु वृक्ष के केवल दो फल ही अमृत के समान हैं; पहला सुभाषितों का रसास्वाद और दूसरा, अच्छे लोगों की संगति।

* प्रतिभा आपको अच्छे ओहदे पर पहुंचाती है, लेकिन आपका चरित्र आपको उस पर बनाए रखता है।

* जो लोग जीतते हैं, वह कोई अलग चीजों को अंजाम नहीं देते, बल्कि वे आम चीजों को खास अंदाज में पूरा करते हैं।

* सुधार के बिना पश्चाताप ऐसा है जैसे सुराख बंद किये बिना जहाज में से पानी निकालना।

* जिसे समय का सदुपयोग करने की कला आ गई, उसने सफलता के रहस्य को समझ लिया।

* जो लोग जिम्मेदार, सरल, ईमानदार एवं मेहनती होते हैं, उन्हें ईश्वर द्वारा विशेष सम्मान मिलता है क्योंकि वे इस धरती पर उसकी श्रेष्ठ रचना हैं।

* चुनौतियों को स्वीकार करें ताकि आप विजय के हर्ष का आनंद महसूस कर सकें।

* जीवन में शांति पाने के लिए क्रोध पर काबू पाना सीख लो। जिसने जीवन से समझौता करना सीख लिया वह संत हो गया। वर्तमान में जीने के लिए सजग और सावधान रहने की आवश्यकता है।

* मूर्खों से बहस करके कोई भी व्यक्ति बुद्धिमान नहीं कहला सकता मूर्ख पर विजय पाने का एकमात्र उपाय यही है कि उसकी ओर ध्यान नहीं दिया जाए।

* प्रकृति अपरिमित ज्ञान का भंडार है, पत्ते-पत्ते में शिक्षापूर्ण पाठ है, परंतु उनसे लाभ उठाने के लिए अनुभव आवश्यक है।

* बल और शक्ति की आज्ञा टालना आसान है किंतु प्यार की आज्ञा टालना आसान नहीं।

* निरंकुश शक्ति की क्षुधा उपयोग से बढ़ती है।

* एक डरा हुआ इन्सान- खुशी बातचीत से भागता है।

* लोकशाही में विचारों का आदान प्रदान बेहद जरूरी होता है।

* अपनी कमियों को दुरुस्त करना किसी भी दल के लिए जरूरी होता है- अहंकारी-देरी से ही सही- ठोकर जरूर खाता है।

* चाटुकारिता देश और दल दोनों को नुकसान पहुंचाता है।

* आज प्रतिस्पर्धा तो इसी बात की है, हमारा भाई, पड़ोसी, मित्र, रिश्तेदार हमसे आगे न होने पाये, भले ही टाटा बिड़ला अंबानी कई गुना तरक्की कर लें।

* मरा हाथी भी सवा लाख का बिक जाता है।

* सुख और दुख वास्तविक नहीं, काल्पनिक हैं। वे हमारी सोच में पैदा होते हैं।

* आज भी अगर संचय की भूख न हो और हमारी इच्छाएं सीमित हों तो हर आंगन में कल्पवृक्ष उगाए जा सकते हैं।

* व्यय का आय के साथ कोई संतुलन ही नहीं रहा। लगता है, हमारी असीम आकांक्षाओं का कोई ओर छोर नहीं है।

* सादगी का सौंदर्य और संतोष की सुगंध हमारे जीवन में कहीं दिखाई नहीं देती।

* लोकतंत्र में सबको अपनी राय बनाने का अधिकार है।

* इस पृथ्वी पर कामयाबी ही अच्छे-बुरे की निर्णायक है।

* मनुष्य की सबसे बड़ी जरूरत शिक्षा नहीं, बल्कि चरित्र है। यही उसका सबसे बड़ा रक्षक भी है।

* सभी सरकारों का ध्येय समाज का सामूहिक सुख है, या होना चाहिए।

* प्रेम थकान को मिटाता है। दुख को सुख में बदलता है। प्रेम ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान है।

* जीवन में काटना भी जरूरी है सुधारना भी जरूरी है और जोड़ना भी जरूरी है उसको किसी भी स्थान में रखा जाये यह कोई जरूरी नहीं है।

* यही कारण है कि दर्जी सुई को टोपी पर लगाता और कैंची को पैर के नीचे दबाता है। कैंची काटने का काम करती है और सुई जोड़ने का काम करती है। काटनेवाले की जगह हमेशा नीचे होती है पर जोड़नेवाले की जगह हमेशा ऊपर होती है।

* रिश्ते नाते सब धरे रह जायेंगे, खाली हाथ आये थे खाली हाथ जायेंगे।

* मेहनत मजदूरी करनेवाले तो समाज में नींव के पत्थर होते, वो गहरे दबे होते हैं।

* जीवन एक समंदर जैसा लगता है। सुख और दु:ख की लहरें आती जाती।

* नम्रता और मुस्कान ही मनुष्य के सबसे कीमती आभूषण हैं।

* बिना मांगे किसी को कोई सलाह नहीं देनी चाहिए।

* जलन एक खतरनाक बीमारी है।

* सीख वा को दीज्ये जाको सीख सुहाये, सीख न दीजे बनरा जो बेया को घर जाये।

* धन की यह दशाएं हैं, दान, भोग और नाश। जो मनुष्य अपने धन का परोपकार के लिए दान नहीं करता और खुद भी भोग नहीं करता, उसके धन का नाश तय है।

* सत्य बोलने से परम शान्ति मिलती है।

* जिंदगी में हर गम को खो देना खुशी को नहीं हर मुश्किल को खो देना कामयाबी को नहीं।

* जो लोगों को मजहब के तराजू से बांटता है, वो देश-द्रोही है, उन्हें इंसान नहीं कहा जाता है।

* जाति न मेरी पूछ तू, जिह्वा जरा संभाल। हिन्दू, मुस्लिम सिक्ख मैं, रंग खून का लाल।

* प्रकृति का कोई तोड़ नहीं। लोग प्रकृति के नियम का उल्लंघन करते हैं।

* इसके विचार सही होंगे उसके बोल भी सही होंगे। एक अच्छा, नेक, पवित्र और सदाचारी मनुष्य बनने के लिए सदैव प्रयत्न करते रहना चाहिए। अपनी सोच और समझ को सुधारना चाहिए।

* हमलोग दुनिया को एक दृष्टिकोण से देखते हैं जैसे-जैसे हमारी समझ और जैसे जैसे संस्कार, अनुभव हो वैसी ही हमारी सोच भी बन जाती है।

* शिक्षित वो ही है जो अंत में खड़े होने के लिए राजी हो। जिंदगी अब दौड़ न रही, जिंदगी अब जीना हो गयी है। जीना है और अभी जीना होगा कल नहीं। दौड़ हमेशा कल के लिए होती है। दौड़नेवाला भविष्य की तरफ देखता है

और सोचता है जब इतना धन मिलेगा तो जीऊंगा, जब इतनी बड़ी गाड़ी होगी तो सुख से जी सकूंगा, अभी कैसे जी सकता हूं। जब यह सब चीजें भी हासिल होने लगती है तो आकांक्षाओं का जाल और आगे बढ़ते चले जाता है। इसलिए जीना है तो आज ही जियो कल का कोई भरोसा नहीं।

❋ गलतियां करो, गलती सभी से होती है पर एक गलती को दोबारा मत करो। गलतियां उन्हींसे होती है जो कोशिश करते है। गिरते वो ही है जो चलते है। अपनी गलती से सबक सीखो। गलती से सबक न लेना सबसे बड़ी मूर्खता है।

❋ दूसरों की गलतियों से सीखो अपने ही ऊपर प्रयोग करके सीखने को तुम्हारी आयु कम पड़ेगी।

❋ किसी भी व्यक्ति को बहुत ईमानदार नहीं होना चाहिए। सीधे वृक्ष और व्यक्ति पहले काटे जाते हैं।

❋ जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति होनी चाहिए। आत्मनियंत्रण और इच्छाशक्ति के सहयोग से हम जीवन में कुछ भी हासिल कर सकते है। यह हमारे शरीर की एक रचनात्मक प्रतिक्रिया है। इच्छाशक्ति का सही दिशा में किया गया उपयोग जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने में सहयोग देता है। इच्छाशक्ति की दृढ़ता के अभाव में हम संसाधनों के चलते भी जीवन के कई क्षेत्रों में हार जाते हैं। इच्छाशक्ति दृढ़ हो तो साधनों के अभाव में भी हम जीवन का लक्ष्य पा सकते है।

❋ दु:ख की जड़ ममता है और सुखों की जड़ क्षमता है। मेरे और तेरे का ही झगड़ा है। ममता का वास सभी स्थानों पर है। मरते समय भी यदि किसी वस्तु में या उसमें हमारा मन फँस गया तो हमारा मन बिगड़ता है।

❋ धर्म के मार्ग पर चलनेवाले लोग कभी असफल नहीं होते। मनुष्य को जीवन में सही रास्ते पर चलकर ही अपना मार्ग ढूंढना चाहिए।

❋ अत्याचार और अन्याय का विरोध न करना ही अत्याचार को बढ़ावा देना है।

❋ जो तुम चाहो वो काम न करो बल्कि वो काम करो जो करना चाहिए और इस बात की कोशिश करो कि आपके हाथसे किसीका बुरा न हो।

❋ झूठ नहीं बोलना चाहिए क्योंकि एक छोटा झूठ भी एक बड़ा अलगाव पैदा कर देता है।

❋ त्याग जीवन को ऊंचा उठाता है।

❋ मन का स्वभाव है कि जो हमारे पास में है उसमें मनुष्य संतुष्ट नहीं होता और जो नहीं है वो चाहिए क्योंकि मन हमेशा बदलाव में खुशी तलाशते रहता है।

❋ छाता और दिमाग जब खुले होते हैं तभी उचित प्रयोग में आते हैं नहीं तो बेकार का बोझ बन जाते हैं।

❋ अगर अच्छी पत्नी मिली तो आपकी जिन्दगी खुशहाल होगी अगर बुरी पत्नी मिल जायेगी तो आप दार्शनिक बन जाएंगे।

❋ मनुष्य का धर्म है कि मनुष्य को जोड़े न कि तोड़े। किसीको भी उल्टा जवाब मत दो नहीं तो घर का माहौल खराब हो जाएगा। झगड़ा, क्लेश व द्वेष फैलेगा। बुजुर्गों का सम्मान करना सीखो आज जो बुजुर्गों के साथ कर रहे हो कल वही आपके साथ होगा।

❋ ज्ञान ही सबसे बड़ी अच्छाई है और अज्ञानता ही सबसे बड़ी बुराई है।

❋ सच बोलकर जो नुकसान पहुंचता है वह उस नफे से बेहतर है जो झूठ बोलकर मिलता है।

❋ हमेशा काम की बातें करनी चाहिए बेकार की बात नहीं करनी चाहिए, चेहरे की सुन्दरता खत्म हो जाती है और बुद्धि कम हो जाती है।

* कोई आपके अन्दर ऐब निकालें तो भी उसे आप अच्छे शब्दों में याद करो।

* बोलना ही चाहते हो तो मीठी जबान से बोलो।

* ज्ञान प्राप्त करो और जिससे ज्ञान सीखते हो उसके साथ आदर से पेश आओ।

* गुनाहों की शुरूआत बुरी नजर से होती है। अपनी नजरों से अच्छे से देखभाल करनी चाहिए।

* बड़ी आग छोटी चिंगारी से भी लग जाती है।

* जो व्यक्ति गंदे कामों में लिप्त है उसका दिल कठोर और काला हो जाता है।

* बुद्धिमान आदमी वही है जो मनुष्यता का, शराफत का मानक हर हाल में बरकरार रखता है।

* ईश्वर के किसी बंदे से दुश्मनी करना ईश्वर से लड़ाई मोल लेना है।

* दोस्ती वफादारी के साथ करनी चाहिए, मुहब्बत निष्कपटता के साथ करनी चाहिए, पर्दा शर्म से करना चाहिए, सेवा चाहत के साथ करनी चाहिए, फैसला न्याय के साथ करना चाहिए, अहसान खामोशी के साथ, निकटता ईश्वर के साथ, बातचीत में अच्छापन माँ-बाप के साथ, करुणा बच्चों के साथ करनी चाहिए।

* अच्छी बात बताना घाव है पर नरमी से पेश आना इसके लिए मरहम है। इसलिए नेक बात सख्ती से नहीं नरमी से बतानी चाहिए।

* नेकी पाने पर आगे बढ़ने की कोशिश करो।

* जब दर्पण जुड़ा रहता है तो वो आदमी की एक तस्वीर बताता है लेकिन जब दर्पण टूट जाता है तो उसी एक आदमी की उन टुकड़ों में अलग-अलग तस्वीर नजर आने लगती है इसीतरह मनुष्य जुड़ा रहे तो समाजवाले उसकी एक तस्वीर बनाते है लेकिन जब वह टूटकर बिखर जायें तो उसकी कई तस्वीरें बन जाती है।

* अक्लमंदों के रजिस्टर में कल नहीं होता। बेवकूफों की डायरी में यह शब्द अधिक पाया जाता है। बुद्धिमान इस शब्द को न कबूल करते हैं और न ही इसे सोसायटी मंजूर करती है। यह तो महज बहकावा है। वास्तव में कल ऐसे लोगों के इस्तेमाल में आनेवाली चीज है जो सुबह से शाम तक खयाली पुलाव बनाते है।

* किसी बात का पक्का निर्णय और इरादा कर लो तो उसे बदलो मत क्योंकि जो लोग सुबह निर्णय लेते है और शाम को भूल जाते है वो जिंदगी में कभी सफल नहीं होते।

* जिंदगी का सबक है एक-दूसरे से मुहब्बत करना, एक-दूसरे के काम आना, लोगों के दिल में अपनी वो जगह बनाओ कि लोग आपको अच्छे नाम से याद करें, आपकी इज्जत करे।

* बादशाहों को वही नसीहत दे सकता है जिसको न अपना सर कट जाने का डर हो और न ही दौलत की तमन्ना हो।

* जिंदगी का हर पल मुहब्बत और खुशियों से भरा है सिर्फ मनुष्य को उसे महसूस करने की जरूरत है।

* जिसने आपको जिंदगी का एक शब्द भी सिखाया हो वो आपका गुरु है।

* आनेवाले कल की उम्मीद तो की जा सकती है पर उसके बारे में यकीन से कुछ भी कहां नहीं जा सकता। इसलिए आज को ही गनीमत समझे और उससे भरपूर फायदा उठाइये।

* घरमें नौकर-नौकरानी रखते वक्त पूरी तरह से जांच पड़ताल करनी चाहिए उसके रहने का स्थान, पता, माता-पिता का नाम, उसका पोस्टकार्ड साईज फोटो, वोटर आयडी कार्ड, राशनकार्ड इन सबकी कॉपी आपके पास होनी चाहिए। यह

भी देखे घर में काम करने के लिए आनेवाले व्यक्ति का चालचलन कैसा है। पहले वो जहां काम करता था उसने काम क्यों छोड़ा। उसके पुराने मालिक से भी जानकारी हासिल कर लें। किसी एक जाननेवाले का भी पता उससे पूछ ले। नौकर पर शांतिपूर्वक ढंग से कड़ी नजर रखें। पूरी छानबीन करके ही उसे रखा जाएं।

* अगर आप पर कोई अहसान करे तो सबको बताओ और आप किसी पर अहसान करो तो छुपाओ।

* आपके पाँव से उड़ती धूल में किसी की मंजिल न खो जाएं। किसी के आँसुओं को जमीन पर गिरने से पहले ही उसे अपने दामन में समेट लेना चाहिए यही इन्सानियत की जरूरत है।

* जो ईमानदारी के साथ अच्छी जिंदगी गुजारी जाएं वो ही अच्छी लम्बी सही जिंदगी है वरना जिंदगी का बेकार गंवाया हुआ वक्त आपकी जिंदगी में नहीं गिना जाता।

* भरोसा बिना परीक्षा किये, जिन्दगी बगैर हमदर्द के, शिक्षा बगैर कर्म के, भलाई बिना नियत के और जवानी बिना प्यार के बेकार है।

* विवाह की वर्षगांठ पर अपने प्रेम का इजहार करें यह वो विशिष्ट अवसर है जो कि दाम्पत्य की मधुर सम्बन्धों की याद ताजा करा देता है। उन्हें आनंदित और रोमांचित कर देता है। यह नयी उमंग और नया जोश उत्पन्न करता है। विवाह की वर्षगांठ एक अवसर देती है, एक-दूसरे की इच्छाओं और भावनाओं को समझने और व्यक्त करने का।

* मनुष्य की जिंदगी दु:खों से भरी पड़ी है। इसलिए ज्ञान में दिल लगाओ। ज्ञान एक ऐसा खजाना है जिससे कोई छुड़ा नहीं सकता और मनुष्य की जिंदगी सुख में बदल सकती है।

* किसी की बात को छुपकर सुनना अपराध है।

* लोग जल्दी से उन्नति क्यों नहीं करते? क्योंकि बाहर की विचारधाराओं का बहुत बड़ा बोझ हिमालय की तरह उनकी पीठ पर लदा हुआ है।

* सबसे बड़ा दीन-दुर्बल वह है, जिसका अपने ऊपर नियंत्रण नहीं।

* प्रकृति प्रसन्नचित्त एवं उद्योगी कार्यकर्ता को हर प्रकार से सहायता करती हैं।

* मन को कर्त्तव्य की डोरी से बांधना पड़ता है वरना उसकी चंचलता आदमी को न जाने कहां कहां ले जाए।

* यदि तुम मुझे अपने विचारों और उद्देश्य की एकमात्र वस्तु रखोगे, तो तुम सर्वोच्च लक्ष्य प्राप्त करोगे।

* प्रत्येक मनुष्य कुछ न कुछ काम करता है किंतु ऐसे बहुत कम हैं, जो अपने काम को भरसक उत्तम तरीके से करते हैं और वे ही सफल होते हैं।

* जीतनेवाले अलग चीजें नहीं करते, वो चीजों को अलग तरह से करते हैं।

* स्वयं को अन्य लोगों की आँखों से देखना, अपने वास्तविक स्वरूप को न देखकर अपना निरीक्षण अन्य लोगों की दृष्टि से करना, यह जो स्वभाव है वही हमारे सब दुखों का कारण है।

* आप अगर भलाई के काम करोगे तो ईश्वर आपकी मदद करेगा और कोई आपकी बुराई भी नहीं कर सकता। क्योंकि जिसका काम ईश्वर बनाता है सब मिलकर भी उसका काम नहीं बिगाड़ सकते है।

* ईश्वर के अलावा किसी और के आगे सिर झुकाना इन्सानियत की तौहीन है। उसीके आगे सिर झुकाना उसकी बुलंदी है।

* बुरे काम करना मना है, बुरे काम नुकसानदेह है।

* जो शब्द आपके जबान से निकले नहीं आप उन शब्दों के मालिक होते हैं और जो शब्द आपकी जबान से निकल चुके है वो आपके मालिक बन जाते है।

* बुद्धिमान मनुष्य मुसीबतों में सब्र करता है, मुसीबतों से बचने का रास्ता तलाश करता है। जबकि मूर्ख संसार के आनन्द से प्रसन्न होता है और मुसीबतों में घबरा जाता है।

* ज्ञान उपाधियों के लिये या नौकरी के लिए मत हासिल करो।

* आप दूसरों के दोष छुपाओ आपके अपने दोष अपने आप छुप जाएंगे।

* सच बोलना ही अच्छा है झूठ बोलने से गुनाह बढ़ जाते है।

* सब्र वो हथियार है जिसके जरिए तमाम मुसीबतों और आफतोंका सामना किया जा सकता है।

* अगर हम किसी वृद्ध की सेवा करेंगे उसके बुढ़ापे का खयाल करेंगे तो आनेवाले कल में कोई हमारा भी खयाल करेगा।

* जिंदगी की मुसीबतें कम करना चाहते हो तो अपने आपको ज्यादा से ज्यादा व्यस्त रखो।

* नेक कर्म वो है जिसपर लोगों की तारीफ की उम्मीद न रखी जाए।

* गुस्सा एक वो आंधी है जो बुद्धि के भी चिराग को बुझा देती है।

* हमदर्दी का एक शब्द हजारों घावों पर मरहम का काम कर देता है।

* गुस्से में आदमी अपना मुंह खोल देता है और आंखें बन्द कर लेता है।

* पछतावे के आंसू अभिमान की हँसी से अधिक बेहतर है।

* प्रत्येक व्यक्ति में ढेर सारी खूबियां होती है पर उसके साथ-साथ ऐसी आदतें भी घर बना लेती हैं जिनसे उसके व्यक्तित्व की सारी खूबियों पर परदा पड़ने लगता है और इससे बचने के लिए तर्क देकर प्रयास करते हैं। यह आदतें हमारे स्वभाव का हिस्सा बन जाती हैं।

* किसी की बात सुनकर उसकी मांग, उसमें छिपी भावना को समझे बिना अचानक भड़क जाना, चेहरे की भाव-भंगिमा बदलकर तीखे शब्दों में उत्तर देना, क्रोधित हो जाना, पांव पटककर चलते बनना तीव्र प्रतिक्रिया की ही श्रेणी में आते हैं। इससे बचना हो तो धैर्य से दूसरों की बात सुनने व समझने की आदत डालें।

* यह स्थिति तब उत्पन्न होती है जब आप आंखों देखी की बजाय दूसरे के कहे पर झट से विश्वास करके अपने मन में पूर्वाग्रह बसा लेते हो। इसकी सत्यता की जांच करना या संबंधित व्यक्ति को सफाई देने का मौका दिया जाना भी जरूरी नहीं समझते। उससे बचना हो तो सुनें सबकी, मगर माने वही जो सही हो।

* जब समूह में आप सिर्फ अपने बारे में बोलते रहते हों, दूसरों की तुलना में हमेशा खुद को सही व श्रेष्ठ साबित करने में लगे रहते हों, साम-दाम-दंड-भेद जैसे भी हो अपनी बात मनवाना चाहते हो तो स्थिति बड़ी अप्रिय हो जाती है। इस आदत को बदलना हो तो सबको महत्व देना सीखें। दूसरों की बात सुनने की भी आदत डालें।

* दूसरों को मालूम है कि गलती आपकी है। आप स्वयं भी इसे जानते हैं। मगर तर्क-कुतर्क करके, बेवजह स्थिति को उचित बता करके अपने आपको सही सिद्ध करने की कोशिश करते रहना, क्या यह ज्यादती नहीं? एक नन्हा-सा शब्द सॉरी या माफ कर दें बोलने से आप अप्रिय स्थिति से बचेंगे।

* वादा करना एक तरह की गुलामी है और वादा को पूरा करना स्वतंत्रता है।

* बुरे दोस्तों से बचो क्योंकि वो आपकी पहचान बनते हैं।

* हर काम की शुरूआत परीक्षा (इम्तिहान) से होती है।

* वो व्यक्ति बदनसीब है जो अपने बूढ़े माँ-बाप की सेवा नहीं करता।

* गलतियां बेवकूफ और बुद्धिमान दोनों करते है बस उनमें अंतर यही है एक को आखिर तक अहसास नहीं होता दूसरे को फौरन हो जाता है।

* अच्छी बात को अच्छा और बुरी बात को बुरा कह देना भलाई नहीं है बल्कि भलाई तो यह है कि आप अच्छी बात को काम में लाओ और बुरी बात के नजदीक भी मत जाओ।

* खूबसूरती और हुस्न को हम सारी दुनिया में तलाश करते फिरते है लेकिन वो हमारे अंदर ही मौजूद है। उन्हें हम देखते नहीं।

* जो अपने सद्गुणों के आधार पर श्रेष्ठ कर्म करने का प्रयत्न करते हैं, उन्हें संसार में विद्या, धन और यश मिलता है।

* हर समय किसी उपयोगी काम में लगे रहो।

* जिसके जीने से बहुत से लोग जीवित हैं, वही इस संसार में जीता हुआ रहता है।

* अपनी इंद्रियों पर काबू पा लेना जीवन का आदर्श होना चाहिए, न कि उन्हें तृप्त करने का प्रयास करना।

* आप कुलीन हो या अकुलीन, वीर हो या कायर, पवित्र हो या अपवित्र यह आपके चरित्र से ज्ञात हो जाएगा।

* किसीका वास्तविक चरित्र जानना हो तो उसे सत्ता के पद पर बैठा दो।

* क्रोधी व्यक्ति को एक बार पुन: क्रोध आता है, जब उसे क्रोध न करने की बात समझ में आती है। क्रोध एक प्रकार का पागलपन है।

* यदि हम सद्गुण के उपदेशों को आचरण में लाएं तो हमारे अंतर में छिपी अपार आध्यात्मिक शक्ति हमें प्राप्त हो जाएगी।

* जो आपके सामने औरों की निंदा करता है, वह औरों के सामने आपकी निंदा करेगा।

* परोपकार से बड़ा धर्म नहीं और पर पीड़ा के समान अधर्म नहीं।

* स्वार्थ ही पाप है, नीचता ही दुर्गुण है, घृणा ही अपराध है।

* संसार में अच्छा कार्य भी बुरा कहलाता है, यदि सफल न हो।

* सफलता उन्हीं को प्राप्त होती है, जिनकी मनोवृत्ति या प्रवृत्ति निश्चयात्मक होती है।

* प्रतिभा लेखक नहीं बना सकती। उसके पीछे बहुत बड़ा व्यक्तित्व होना चाहिए।

* परमेश्वर की दृष्टि में सदाचारी मनुष्य नास्तिक होते हुए भी सम्माननीय है।

* कुछ पैदा होने के साथ महान बन जाते हैं, कुछ कर्मों के द्वारा महान बनते हैं और कुछ पर महानता थोप दी जाती है।

* परिवर्तन का नाम असंगति नहीं है। परिवर्तन यदि आपको अपने लक्ष्य की ओर न ले जाता हो तो वह असंगति हो सकती है।

* प्राणियों में स्त्री जाति पुरुष जाति से अधिक घातक होती है।

* पृथ्वी पर कोई ऐसा दु:ख नहीं जिसकी दवा स्वर्ग में न हो। लेकिन उस दवा के लिए स्वर्ग जाने को कोई तैयार नहीं.।

* प्राप्त करने योग्य दो विधाएं हैं- शस्त्र विद्या और शास्त्र विद्या। इनमें से प्रथम तो वृद्धावस्था में हास्यास्पद बनती है दूसरी सदा आदर देती है।

* पतंग सदैव हवा के विरुद्ध सबसे ऊंची होती है न कि उसके साथ-साथ।

* प्रत्येक देश में वैसी ही सरकार होती है जिसके लायक वह देश होता है।

* परमेश्वर विद्वानों की संगति से प्राप्त होता है।

* पदार्थ, जीवन, मन तथा आत्मा की मान्यताएं हमारी बुद्धि के विभाजन के कारण हैं, सम्पूर्ण सत्य इनसे परे तथा इनमें भी व्याप्त होने के कारण एक तथा अखंडनीय है।

* प्रत्येक क्षण का उपयोग कर विद्या और प्रत्येक कण का ध्यान रखकर धन का अर्जन करना चाहिए, क्योंकि क्षण का नाश होने पर विद्या कहां? और कण का त्याग करने पर धन कहां?

* प्रलय के समय समुद्र अपनी मर्यादा को त्याग देता है और किनारों को छोड़ देता है। लेकिन सज्जन पुरुष प्रलय के समान विपत्ति आने पर भी मर्यादा नहीं छोड़ता।

* पेट पालने के लिए ही तो हम आदमी नहीं बनाए गए हैं। हमारे जीवन का आदर्श तो कुछ ऊंचा होना चाहिए। विशेषकर उन लोगों का जो सभ्य कहलाते हैं। ठाट से रहना ही सभ्यता नहीं है।

* परमात्मा ने अपनी महिमा के प्रदर्शन के लिए ही मनुष्य की सृष्टि की है।

* पुराने लोग नेकी कर दरिया में डाल आते थे। इस दौर का मनुष्य नेकी करके चीखता है।

* पतझड़ हुए बिना पेड़ों में फल नहीं लगते।

* पाने की अपेक्षा देने की भावना श्रेयस्कर है।

* प्रखर बुद्धि से भले सभ्यता हो नव निर्मित, संस्कृति निर्माण के लिए हृदय ही चाहिए।

* प्रेम मानवता का दूसरा नाम है।

* प्रभु के प्रति सच्ची भक्ति ही जीवन में सच्चे वर की प्राप्ति है। वेद, शास्त्र, पुराणों आदि का अध्ययन ही अपने में कोई विशेष पद नहीं हो सकता। जब तक उनके सारभूत तत्व को आत्मसात नहीं कर लिया जाए।

* प्रेम सौंदर्य का सबसे बड़ा जन्मदाता है।

* पीड़ा तो स्वयं को संभालनी है, परंतु आनंद का अमृत बांटने के लिए तो किसी मनुष्य का तुम्हारे साथ होना आवश्यक है।

* प्रेम की आंख नहीं होती, वह सदैव भावना से ही देखता है।

* प्रेम आंखों से नहीं हृदय से होता है इसलिए प्रेम के देवता को अन्धा बताया जाता है।

* प्रतिरोध से बड़ी शक्तियां नहीं रुकतीं, बल्कि उनका वेग और भी बढ़ जाता है।

* प्रोत्साहन हमें जीवित रखता है तथा इसका अभाव हमें मार डालता है धीमी, दु:खद एवं आक्रोश भरी मौत।

* पोथे-पोथियां पढ़ जाने मात्र से नीच सुसंस्कृत तथा सभ्य नहीं बन सकता है। उसके मन का ओछापन दूर नहीं हो सकता। भला पीठ पर इत्र वगैरह सुगंधित वस्तुएं ढोने मात्र से गधा कहीं गौरवान्वित हो सकता है।

* पतझड़ का मौसम अपने ठीक पीछे वसंत की सुखद प्रतीक्षा लिए आता है।

* प्रत्येक देश का साहित्य उस देश के मनुष्यों का हृदय दर्शाता है।

* पढ़ने योग्य रचनाओं की सृष्टि करो या प्रशंसा करनेवाले कर्म करो तो यह संसार मरने के बाद भी आपको याद रखेगा।

* पशुबल के आधार पर लोगों को अधिक व कम कायर की श्रेणी में बांटा जा सकता है।

* पूंछ और सींग से रहित पशु को आप देख सकते हैं, मनुष्य के रूप में, यदि वह साहित्य, संगीत और कला से अनभिज्ञ है।

* प्रेम की गहराई कविता की वस्तु है और साधारण बोलचाल में व्याप्त नहीं हो सकती।

* प्रिय और अप्रिय भावों की अभिव्यक्ति के लिए मनुष्य जब विवश हो उठता है तो उसकी यही कामना कला के रूप में साकार हो उठती है।

* प्रतिदिन एक बुराई को छोड़ते चलोगे, तब शीघ्र ही आप अच्छों की श्रेणी में स्वयं को पाओगे।

* प्रतिभावान की संगति से बुद्धि पैनी होती है, ज्ञान बढ़ता है। मूर्ख के संग रहने से बुद्धि मलिन होती है। बुद्धि का प्रयोग न होने से मनुष्य में जड़ता आ जाती है और उसका विकास रुक जाता है।

* पूर्वाग्रहों से ग्रसित व्यक्ति सदैव मानव होने के आभास में जीवन बिताता है, कभी मानव नहीं बन पाता।

* प्रबुद्ध लोग मृतकों एवं जीवितों के लिए शोक नहीं करते।

* प्रेम का फूल कभी मुरझाता नहीं, प्रेम की नींद कभी नहीं उतरती।

* प्रकृति एक ऐसा ग्रंथ है जिसका रचयिता ईश्वर है।

* प्रकाश जब काले बादलों का चुंबन करता है तो वे स्वर्ग के फूल बन जाते हैं।

* प्रेम में अंत:करण निर्मल हो जाता है, वासनाओं का लेश भी नहीं रहता।

* प्रथम हृदय है फिर बुद्धि। प्रथम सिद्धांत फिर प्रमाण। प्रथम कर्म फिर बुद्धि। इसलिए बुद्धि कर्मानुसारिणी नदी कही गई है।

* प्रेम सदैव आनंद की अभिव्यक्ति करता है। इस पर दु:ख की तनिक भी छाया पड़ना सदैव शरीरप्रियता और स्वार्थपरता के चिन्ह हैं।

* प्रकृति उनके लिए निश्चेष्ट और निष्क्रिय है, जिसमें परिवर्तन नहीं होता।

* प्यार की प्यास एक आजीवन कमजोरी बनकर मानव के साथ रहती है।

* प्यार एकमात्र मानवीय कमजोरी है, इस कमजोरी का ही आदर किया जाता है। कमजोरी भी आदरणीय हो सकती है।

* पुरुषों में त्रुटि है तो उसका कारण स्वार्थ, नारियों में त्रुटि है तो उसका कारण उनकी दुर्बलता।

* पवित्र और दृढ़ अभिलाषा सर्वशक्तिमान है।

* पुरुषार्थ का सहारा पाकर ही भाग्य भली-भांति बढ़ता है।

* पश्चात्ताप ही पापियों के लिए सबसे बड़ा प्रायश्चित है। पश्चात्ताप से ही समस्त पापों की शुद्धि होती है।

* फुरसत उस समय को कहते हैं, जिसमें कि कोई लाभदायक कार्य किया जा सकता है।

* बुद्धिमानों को इसकी आवश्यकता नहीं और नासमझ इसको लेते नहीं। परामर्श उस वस्तु का नाम है।

* बुरी से बुरी बातों को अच्छे से अच्छे ढंग से कहने या करने का नाम कूटनीति है।

* फासला या दूरी किसी भी हृदय को आकर्षक बना देती है।

* बड़े काम करना बहुत कठिन काम है, लेकिन बड़े कार्यों पर अधिकार जमाना और भी कठिन है।

* बिना उचित कर्त्तव्य पालन के, अधिकारों का उपयोग अर्थहीन है।

* बचपन कच्ची मिट्टी के समान है, इसे मनचाहा आकार बच्चे को अच्छी शिक्षा देकर दिया जा सकता है।

* बादल समुद्र का जल पीकर पुष्ट होते हैं, फिर भी वे उसकी गंभीरता को ग्रहण नहीं कर पाते।

* बेसब्री में खाये कच्चे फल भूख मिटाने के बजाय प्राणों को ही ले बैठते हैं।

* बुराई के साथ असहयोग करना हमारा पवित्र कर्त्तव्य है।

* ब्रह्मभाव ही मोक्ष है। मोक्ष ब्रह्मस्वरूप ही है जो नित्य व शुद्ध, बुद्ध और मुक्त है।

* बिना भगवान की कृपा के सज्जन लोगों का साथ नहीं मिलता।

* बुद्धिमता माणिक से भी अधिक मूल्यवान है।

* जो व्यक्ति कार्य करते रहते हैं उनके पास लक्ष्मी का वास उनके न चाहते हुए भी रहता है। वैसे ही जैसे समुद्र कोई कामना न रखकर भी अनेक नदियों का प्रसाद पाता है।

* जो स्वावलंबी व्यक्ति अपने कर्म के पालन में तत्पर रहता है, उसे ही सिद्धि मिलती है।

* स्मृति उच्च जीवन का पुरस्कार है।

* आपका सम्मान ही आपका जीवन है। आप साथ साथ बढ़े हैं, आपका सम्मान नष्ट हो तो आपका जीवन भी नष्ट हो जाएगा।

* चरित्र बगैर सफलता के भी रह सकता है।

* मनुष्य के चरित्र से ज्ञात हो जाता है कि वह किस प्रवृत्ति का है।

* जिसके मन में कभी क्रोध नहीं होता और जिसके हृदय में रात-दिन राम बसते हैं, वह भक्त भगवान के समान ही है।

* कर लेने के बाद जिसका अहसास होता है वह है क्रोध।

* गुरु के दुर्गुण त्यागो, शत्रु के गुण ग्रहण करो।

* अपने दोष हम नहीं देखना चाहते, दूसरों के देखने में हमें आनन्द मिलता है। बहुधा दु:ख तो इसी आदत से पैदा होता है।

* घमंड छोटे आदमियों को भगवान की एक अनुपम भेंट है। जिसके सहारे वह जिंदा रहते हैं।

* ईर्ष्या असफलता का दूसरा नाम है। ईर्ष्या करने से अपना ही महत्व कम होता है।

* हमारा उद्देश्य विजय है। हर हालत में विजय सारे आतंक के होते हुए भी विजय। मार्ग कितना ही लंबा और कठिन क्यों न हो फिर भी विजय के बिना अस्तित्व बनाए रखना संभव नहीं है।

* किसी बड़े कार्य में असफलता से अधिक भयानक कोई भी नैराश्य नहीं है।

* बहुत से व्यक्ति यदि महान आकांक्षाओं से आक्रांत न होते तो छोटी बातों में अवश्य सफल हो जाते।

* बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है।

* बिना विवेक का जीवन, बिना ब्रेक की गाड़ी के समान है।

* बहाना झूठ से भी बदतर व भयंकर चीज है, क्योंकि बहाना सुरक्षित झूठ है।

* फूल स्नेह की सच्ची भाषा है।

* बच्चे वे चमकते तारे हैं जो भगवान के हाथ से छूटकर धरती पर आए हैं।

* बुद्धि तो केवल क्रिया का चेतनाहीन अंग है। भावना का संयोग होने पर ही उस अंग में गति आती है और वे कार्य

करने लगते हैं।

* बुद्धि आत्मा के इस प्रकार अधीन है, जिस प्रकार कोई भोला पुरुष चालाक स्त्री के वश में हो।

* बहुमूल्य वस्तु को प्राप्त करना तभी सौभाग्य है, जब उसका मूल्य समझने की शक्ति भी कुछ परिणाम में प्राप्त हो जाए।

* बुराई की हस्ती नहीं है। बुराई अपने आप में टिक नहीं सकती। लेकिन बुरे लोग उसे आश्रय देकर उसे जिन्दा रखे हुए हैं।

* बालक भगवान के जीते-जागते खिलौने हैं। भगवान का दर्शन जितनी जल्दी बालकों में हो सकता है उतना अन्य किसी में नहीं।

* बदला लेने से मनुष्य अपने दुश्मन के समान हो जाता है, किंतु न लेने से वह उससे उत्तम बन जाता है।

* बलवान होने में बड़प्पन नहीं है बड़प्पन तो इस बात में है कि उसका सदुपयोग किया जा रहा है।

* बहुत सी ऐसी बदनामियां हैं जिनके सम्मुख विश्वविजयी भी हिम्मत छोड़ देता है।

* बालकों की कर्त्तव्यशीलता ही सब गुणों की नींव है।

* बड़ों की शरण में आए नीच को भी ममता प्राप्त होती है।

* बुद्धिमान मनुष्य आपत्ति में नहीं घबराता।

* बंधन में जब कष्ट की अनुभूति हो, वह तुम्हारी स्वतंत्रता अनुभूति का तब प्रथम आभास होता है।

* बिना अमरता की भावना से प्रेरित हुए आज तक किसी ने अपने देश के लिए प्राणों का उत्सर्ग नहीं किया।

* मूर्ख को उससे बड़ा मूर्ख उसका प्रशंसक बनकर मिलता है।

* बहुधा देखा गया है कि अवसरवादी नाखून कटा कर शहादत देने का ढिंढोरा पीटते हैं। दु:ख इस बात का है कि वह ढिंढोरा शहादत की महिमा भी पा जाता है।

* भाग्य भी उन्हें नहीं रोक सकता जो महान उद्देश्य से शासित हैं।

* भार समझकर और अनियमित रूप से काम करने पर मनुष्य थकता है, न कि काम के उद्देश्य या उसकी अधिकता से।

* भगवान के सभी जीव-जंतुओं का कुनबा एक ही है, जो इन सभी को सबसे अधिक प्यार करता है वही भगवान का सबसे प्यारा है।

* भाग्य के पास हमें कुचलने के दो तरीके हैं- हमारी इच्छाओं की पूर्ति से इन्कार कर देना और उन्हें अपने तरीके से पूरी करना।

* भगवान का सेवक होना एक बात है, लेकिन भगवान का दास होना उससे भी बड़ी बात है।

* भूल वह शक्ति है जो मनुष्यों को एक जगह जोड़ देती है। सच्चाई तो केवल सच्चे कार्यों द्वारा ही दिखायी जा सकती है।

* भक्ति तब तक पूर्णत: चरितार्थ नहीं होती, जब तक वह कर्म और ज्ञान नहीं बन जाती।

* बुद्धि विकास के लिए सच्चा क्षेत्र गांव ही है, शहर नहीं।

* भगवान हमारी सहायता उस वक्त करता है जब हम अपने को अपने पैरों के नीचे की धूल से भी अधिक गिरा हुआ मान लेते हैं। केवल कमजोर और असहाय व्यक्तियों के लिए ही भगवान की सहायता उपलब्ध है।

* भूतकाल स्वप्न है, भविष्य अनुमान है और वर्तमान को गनीमत समझ।

* भूषणों में उत्तम भूषण है शील।

* भगवान के प्रति संपूर्ण अनुराग ही भक्ति है।

* भाग्य जिसे प्यार करता है, उसे मूर्ख बना देता है।

* मानव का आंतरिक प्रवाह जब सामने आता है तभी वह कला के ज्वालामुखी रूप में फूटता है।

* भगवान की प्राप्ति के इच्छुक ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं।

* भाग्य का देवता वेश्या की तरह व्यवहार करता है।

* भक्त की आलोचना से प्रेम नहीं होता।

* भगवान का कोई प्रिय, अप्रिय, अपना अथवा पराया नहीं है। उनके लिए सभी प्राणि प्रिय है, क्योंकि वे सभी की आत्मा में है।

* भाग्य कुछ भी नहीं करता, यह तो केवल कल्पना का भ्रम है और सांत्वना के उद्देश्य से गढ़ा गया शब्द है।

* मन जहां-जहां जाता है, वहां-वहां परम पद की प्राप्ति होती है।

* मानव जाति की सेवा अंत में अपनी ही सेवा है।

* आपने जो गालियां सुनीं उनसे कष्ट कम होता है और लाभ अधिक होगा।

* मन यदि शांत है तो तन को जीवन मिल जाएगा। परंतु मन में ईर्ष्या की अग्नि है तो तन ही नहीं हड्डियां भी जल जाती हैं।

* मनुष्य पूंछ कटा जानवर हो जाएगा यदि कला से हीन है।

* महान उद्देश्यों के स्वामी महापुरुष बनते हैं।

* मूर्ति को कला में परिणित कर देना कला का विचार है।

* मौन बातचीत भी एक कला है।

* महानता की आकांक्षा करने से हमारी आत्मा की सर्वश्रेष्ठ शक्तियों का विकास होता है।

* ममत्व युक्त पुरुष पुण्य व पाप दोनों को इस लोक में ही त्याग देता है।

* मनुष्य को शैशव उसी प्रकार प्रदर्शित करता है जिस प्रकार कि सवेरा दिन को।

* मनुष्य के अन्दर ईश्वर के रहने का स्थान आत्मा है।

* भूख की आग ऊंचे से ऊंचे और कोमल से कोमल हृदय के व्यक्तियों को भी नीच से नीच कार्य करने पर विवश कर देती है।

* हमेशा उसके लिए तैयार रहो जो भी अच्छाई कर सकते हों, उस कार्य में जिसमें सहायता की आवश्यकता है, उस बुराई में जिसका मुकाबला करने की आवश्यकता है और उस आनेवाले समय के लिए जो दूर है।

* आप मृत्यु से इतना भयभीत नहीं जितना दीर्घकाल तक जीवित रहने से।

* मित्रता की पवित्र भावना इतनी मजबूत, इतनी सच्ची और इतनी मीठी तथा देर तक कायम रहनेवाली है कि यह जीवन अन्त तक बनी रह सकती है यदि इसमें रुपये का लेन-देन न हो।

* मित्रता एक चीनी मिट्टी के प्याले की तरह है, बहुत मूल्यवान और कम मिलनेवाली।

* मस्तिष्क सदैव हृदय का विरोधी रहा है।

* मित्रता वह गुलाब का फूल है जो जाड़े की छांव में खिलता है और वह मित्र जो इसका मूल्य जानता है इसे कभी मुरझाने नहीं देता।

❋ आप भविष्य के बारे में कभी मत सोचो चूंकि वह बहुत जल्दी आ खड़ा होता है।

❋ मेहरबानी के छोटे-छोटे कार्य और प्यार के छोटे-छोटे शब्द इस धरती को इस प्रकार आनन्दित करने में सहायक होते हैं जैसे कि स्वर्ग।

❋ महापुरुषों की कार्यसिद्धि सत्व से होती हैं, साधन से नहीं।

❋ मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाएं ही संस्कृति है।

❋ मार्गों के किनारों पर वृक्ष हैं और हर मार्ग में पथिक उनका आश्रय लेते हैं। लेकिन ऐसा वृक्ष विरला ही होता है, जिसका स्मरण घर पहुंचकर पथिक करता हो।

❋ मनुष्य की संस्कृति क्या है, वह आत्म संशोधन से आत्मोद्धार द्वारा अपने आपको मुक्त कराने की प्रक्रिया है।

❋ भक्तिशून्य कर्म अहंकार का प्रतीक है और भक्ति रहित उपासना दंभ का नामांतर है।

❋ पापकर्म की याद जब व्यथित करे, तो ईश्वर का आदेश होता है कि नेककर्म करने की आवश्यकता है।

❋ जीवन का सुख दूसरों को सुखी करने में है, उनको लूटने में नहीं।

❋ थोड़ी देर की कुसंगति भी मनुष्य के जीवन को बरबाद करने के लिए काफी है।

❋ अपना चरित्र निर्मल होने पर भी सज्जन अपने दोष ही सामने रखते हैं, अग्नि का तेज उज्ज्वल होने से पूर्व धुआं ही उगलता है।

❋ मधुमक्खियां निमंत्रित नहीं की जातीं, खिले फूल पर दौड़ आती हैं। जगत का इंतजार न करो। चरित्रवान बनो वह स्वयं आपके पास आएगा।

❋ अग्नि को जिस प्रकार जल से वश में किया जाता है वैसे ही क्रोध को बुद्धि के द्वारा वश में करनेवाले पुरुष महान एवं धन्य हैं।

❋ जल पर खींची रेखा और सज्जनों का क्रोध शीघ्र ही विलुप्त हो जाते है।

❋ सद्‌गुण का पुरस्कार सम्मान है।

❋ सज्जनों के मन थोड़े से गुणों के कारण फूलों की भांति ग्रहण करने योग्य हो जाते हैं।

❋ साध्य के सिद्ध होने तक अन्य किसी बात की ओर ध्यान दिए बिना, रात-दिन सपने में भी उसी की धुन रहे, तब सफलता निश्चित है।

❋ सफलता जब आती है तो इंसान उतना नहीं सीखता जितना असफल होने पर सीखता है।

❋ मधुर फूल धीरे-धीरे उगते हैं, लेकिन घास जल्दी-जल्दी।

❋ मूर्ख जितना अधिक विद्वान से सीखते हैं, उससे कहीं अधिक विद्वान मूर्ख से सीख जाते हैं।

❋ मजबूरी में हमें उन लोगों की याद आती है जिनकी सूरत भी विस्मृत हो चुकी होती है।

❋ मनुष्य स्वयं को रथ का मालिक समझे। शरीर को रथ, दिमाग रथवान और मन को इस रथ की लगाम जानें। इंद्रियां रथ के घोड़े हैं तथा इंद्रियों के विषय वे स्थान हैं जहां-जहां ये घोड़े जाते हैं।

❋ महज यश नामवाले परमात्मा का कोई परमात्मा नहीं है, न उसकी कोई उपमा है।

❋ मनुष्य का जन्म दुर्लभ है, बार-बार नहीं मिलता।

* मुक्ति चाहनेवाले विरक्त लोगों का भी अच्छे लोगों के प्रति पक्षपात होता है।
* मौत सभी दायित्वों से हमें मुक्त कर देती है।
* माता-पिता, गुरु, स्वामी, भ्राता, पुत्र और मित्र का कभी मन में क्षणभर के लिए भी विरोध या अपकार नहीं करना चाहिए।
* मानव का दानव होना उसकी हार है, मानव का महामानव होना उसका चमत्कार है। मनुष्य का मानव होना उसकी जीत है।
* मतभेद भुलाकर किसी विशिष्ट कार्य के लिए सारे पक्षों का एक हो जाना जिन्दा राष्ट्र का लक्षण है।
* मस्तिष्क स्वयं अपने आप स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग में बदल सकता है।
* हमें मूर्खता से इतनी तकलीफें नहीं होतीं जितनी इसे ही अपना गुण समझनेवालों से।
* किसी के द्वारा मूर्ख बनाए जाने पर भी मित्रतापूर्ण मुस्कराहट का प्रदर्शन बहुत बड़ी गलती है।
* मृत्यु अंतिम सत्य है। उसका स्वागत प्रिय मित्र की तरह करना चाहिए।
* मौन उस निद्रा के समान है जिसे निकालने के पश्चात मनुष्य स्वयं को तरोताजा महसूस करता है।
* मानव यदि विद्वान है, तो उसका सच्चा मित्र विद्या को होना चाहिए।
* माता के समान यदि कोई सुख दे सकती है तो वह मात्र विद्या है।
* मनुष्य जीवन में लक्ष्मी और सरस्वती एक साथ बहुत कम मिलती है।
* मेघों से यह सीख मिलती है कि वस्तु को दान करने के लिए ही ग्रहण करो।
* मनुष्य के लिए असली चुंबक प्रेम है।
* मन की प्रसन्नता व उदारता बहनें हैं।
* मानव मन के प्रदूषण की सफाई कराना जरूरी है। यह प्रदूषण घातक रासायनिक प्रदूषण से भी अधिक भयानक है।
* महापुरुषों का धन उनका सम्मान होता है।
* मनुष्य जन्म से स्वार्थी होता है।
* मानव समाज में जो कुछ सत्य और सुंदर है, उसे साहित्य कहते हैं।
* मन और मुख यदि एक भाषा बोलते प्रतीत हों तो समझ लीजिए कि वह व्यक्ति साधक है।
* मूर्खों की संगति में रहने से शोक, शत्रु और दु:ख को निमंत्रण देने की आवश्यकता नहीं पड़ती।
* मूर्ख की लंबी संगति मूर्ख ही कर सकता है।
* मानवता की राह पर फूल मिलते हैं, कांटे नहीं।
* मनुष्य जितना वासनाओं की पूर्ति करता है, उतना ही तृष्णाओं को बढ़ाता चला जाता है।
* मन में दुख होने पर हमारी देह संतप्त हो जाती है। जैसे तपाया हुआ लोहा शीतल जल को गरम कर देता है।
* मनुष्य के पास श्रेष्ठतम वस्तु बुद्धिबल है।
* मूर्ख शिष्य को पढ़ाने से, दुष्टा स्त्री के पालन पोषण से और दुखियों के संपर्क में रहने से बुद्धिमान भी दु:ख पाते हैं।
* मूर्ख स्वयं को बुद्धिमान एवं वास्तविक बुद्धिमान स्वयं को मूर्ख समझते हैं।
* मनुष्य को कोई बंधन में नहीं डालता, वह स्वयं डालता है।

* मनुष्य दुनिया को सुधारना चाहता है, पर स्वयं सुधरना नहीं चाहता, यही मानव की सबसे बड़ी भूल है।

* मन का घोड़ा सफेद होता है, उसे जिस रंग में रंगना चाहोगे, वह रंग चढ़ जाएगा।

* मन दु:खी है तो सुख भी सहन नहीं होता।

* मूर्ख के साथ मूर्ख मित्र रहते हैं, विद्वान के साथ विद्वान। समान कर्म और समान व्यसन की मित्रता क्षणिक होती है।

* मनुष्य का मापदण्ड संपदा से नहीं बुद्धिमत्ता से है।

* मन उस सरसों की पोटली के समान है, जो गिर गई तो सारे दानों को बटोर लेना असंभव हो जाता है।

* महान लोगों की मित्रता नीचों से नहीं होती, हाथी सियार के मित्र नहीं होते।

* मूर्ख व्यक्ति लोगों की संगति से बुरी बातें ग्रहण करता है। जैसे सुअर अन्य वस्तु को छोड़कर विष्ठा को ही अपना आहार बनाता है।

* मूर्ख आधे भरे हुए घड़े की तरह शोर मचाते हैं, पर बुद्धिमान मनुष्य सरोवर की भांति शांत रहते हैं।

* मृत्यु का दूत अंधा और बहरा होता है, तभी वह अपना कार्य कर पाता है। यदि उसके नेत्र और कान होते तो वह करुण दृश्य और करुण क्रंदन से पसीज जाता।

* मनुष्य जितना प्रेम भौतिक वस्तुओं के प्रति रखता है, उसका एक प्रतिशत भी ईश्वर में रखे तो उसे भौतिक सुखों की आवश्यकता ही नहीं रह जाएगी।

* मानव जब मन के भावों को अभिव्यक्त करने के लिए विवश हो उठता है, तो उसकी यही विवशता कला के रूप में सामने आती है।

* महापुरुष स्वयं की उन्नति के साथ दूसरों की भी उन्नति चाहते हैं।

* मानव को कायर नहीं होना चाहिए। बहादुरी से प्रहार करते हुए और सहते हुए मरना बेहतर होता है।

* महत्वाकांक्षी के लिए प्रसिद्धि खारे जल के समान है। खारा जल जितना पीया जाता है, प्यास उतनी ही बढ़ती जाती है।

* मनुष्य को अपनी ओर खींचनेवाला यदि जगत में कोई असली चुंबक है तो वह केवल प्रेम है।

* मृदुल हास्य और तोतले शब्दों का आनंद उठाने के बाद एकांतवास असहाय प्रतीत होता है।

* मायामोह का स्थान मन है, घर नहीं।

* महानता की आकांक्षा करने से हमारी आत्मा की सर्वोत्कृष्ट शक्तियों का विकास होता है।

* मन की स्वाधीनता आपके पास है तो इष्ट संभव है।

* मानसिक स्वास्थ्य के लिए तर्कों के बोझ के बजाय हंसी का हल्का गठ्ठर उठाएं।

* मित्रता का कारण असुरक्षा की भावना से प्रेरित होता है।

* मनुष्य बराबर वालों की हंसी सहन नहीं कर सकता, क्योंकि उनकी हंसी में ईर्ष्या, व्यंग्य और जलन होती है।

* यदि अन्याय खत्म हो जाए तो बहादुरी का गुण भी न हो।

* यह संसार सेवा भाव सीखने की एक पाठशाला है।

* मन द्वारा क्षणिक और आत्मा द्वारा शाश्वत खुशी मिलती है।

* यदि कायर पुरुष इस संसार में आनंद प्राप्त करना चाहते हैं तो उन्हें जान लेना चाहिए कि वह आनंद उनके वश में नहीं।

✻ यह बलिदान है मृत्यु नहीं, जो मानव को शहीद बना देता है। मृत्यु तो कायर की भी होती है।

✻ यदि शांति पाना चाहते हो तो लोकप्रियता के स्वप्न से बचो।

✻ यदि आप हमेशा भूतों के बारे में सोचते रहोगे तो आप स्वयं भी भूत हो जाओगे और भगवान का स्मरण करोगे तो भगवान बन जाओगे। चुनाव आपके हाथ में है।

✻ सफलता गलतियों से बचने का नाम नहीं है बल्कि किसी एक गल्ती को दुबारा नहीं दोहरा जाएं उसीका नाम सफलता है।

✻ मुहब्बत में ये मुश्किल होती है जिससे मुहब्बत की जाएं उसे स्वयं से अलग करते समय बहुत तकलीफ होती है और सच्चे आशिक इस तकलीफ को बर्दाश्त करते है।

✻ दुनिया की इज्जत धन-दौलत है और परलोक की साधना उसके अच्छे कर्म है।

✻ खुशी वो ही हासिल कर सकता है जो अपनी ख्वाहिशों पर नियंत्रण कर ले।

✻ जहां सूरज निकलता है वहां रात भी अवश्य होती है।

✻ आप यदि समझदार हो तो हमेशा अपनी छोटी-छोटी गलतियों से बचने की कोशिश करो क्योंकि मनुष्य बड़े पहाड़ों से नहीं छोटे पत्थरों से ठोकर खाकर गिरता है।

✻ दिमाग जब गुलाम हो तो विचार आझाद नहीं हो सकते।

✻ उस चांदनी की तरह रहो जो अमीर के बंगले पर और गरीब की झोपड़ी पर समान रूप से पड़ती है। उस बरसनेवाले बादल की तरह रहो जो फूलों पर ही अपनी वर्षा नहीं करता, कांटोंपर भी करता है।

✻ आपका शत्रु चाहे चींटी से भी छोटा हो उसे हाथी से भी बड़ा समझो।

✻ मूर्ख लोग उसीको इस चमक दमक की दुनिया में इधर-उधर ढूंढते फिरते है जबकि बुद्धिमान खुशी को अपने पैरोंतले पाते है।

✻ जो ज्ञान किसी प्रयोग में नहीं लाया जाय वह तो पत्थर की नकली आंख की तरह है जो सिर्फ दिखावे के लिए होती है उसका फायदा कोई नहीं होता।

✻ अगर आप किसी को बुराई करते देखो तो उसे रोकने का प्रयत्न करो। रोक न सको तो अपने दिल में उसके लिए बुरा समझो।

✻ अच्छाई पर चलना पहाड़ पर चढ़ने जैसा है, हर कदम पिछले कदम से अधिक मुश्किल होता है, पर हर कदम चलने से बुलन्दी मिलती है।

✻ मजाक में भी कभी झूठ मत बोलो और झगड़ा करना छोड़ देना चाहिए।

✻ किसी को भी धोखा मत देना, धोखे में बड़ी जान होती है। यह कभी नहीं मरता। यह एक दिन घूम-फिरकर आपके पास पहुंच जाता है। क्योंकि उसे अपने ठिकाने से बहुत मुहब्बत होती है जहां से चलता है वही वापस पहुंचता है या किसी न किसी रूप में आपको वापस मिल जायेगा।

✻ जो दु:ख दे उसे छोड़ दो मगर जिसे छोड़ दो उसे दु:ख मत दो।

✻ ख्वाहिशें बादशाहों को गुलाम बना देती है और सब्र गुलामों को बादशाह बना देता है।

* मुहब्बत के जवाब में आपको मुहब्बत मिलेगी और नफरत के जवाब में आपको नफरत मिलेगी।

* एक ऐसा बड़ा खानदान जिसमें सब एकसाथ रहते हो वह एक पाठशाला की तरह है। जिसमें पलनेवाला बच्चा जिम्मेदार नागरिक बनता है।

* पहाड़ से नीचे उतरना तो इस तरह है जैसे एक कदम उठाओ तो बाकी उठते चले जाते है। उसी तरह बुराई होती है अच्छाई पहाड़ पर चढ़ने के समान है हर कदम पिछले कदम से मुश्किल होता है पर हर कदम पर बुलंदी मिलती है।

* जिस रास्ते पर आप चलते हो अपनी निगाहों को इधर-उधर मत भटकने दो क्योंकि इससे आपकी जान और आपके ईमान को खतरा है।

* हमारी जिंदगी उतनी पेचीदा नहीं है जितनी हम खुद उसे बनाते हैं।

* जो शख्स अच्छी नीयत से मरता है उसे अच्छी नीयतवाले ही लोग मिलते है।

* ठोकरें सिर्फ धरती से धूल उड़ाती है उनसे फसल नहीं उगती।

* बहादुर वो लोग है जो मुसीबत के वक्त सब्र से काम लें और आड़े वक्त में पड़ोसी की मदद करें।

* मनुष्य को इन लोगों से अपनी हार मान लेनी चाहिए - ज्ञान व हुनर को प्रकट करने में अपने गुरु से, जबान चलाने में महिला से, ऊंची आवाज में बोलने में गधे से, बहस करने में मूर्ख से, खाने पीने में अपने साथी से और धन-दौलत खर्च करने में शेखी मारनेवालों से।

* अधिक नालायक लड़कों में से एक लायक बेटा ही बहुत होता है। एक चाँद दुनिया के अंधेरे को दूर कर सकता है जबकि दुनिया के अन्धेरे को सब तारे मिलकर भी दूर नहीं कर सकते जैसे की शेरनी अपने एक बहादुर बेटे की बदौलत आराम की नींद सोती है लेकिन गधा बीसों बेटे जन्म देने के बावजूद भी जीवनभर बोझ उठाता है।

* जब मनुष्य नेक बन जाता है तो उसके हाथसे होनेवाला हर काम खुद ब खुद नेकी और भलाई का बन जाता है।

* खुद को ऐसा जाहिर करो जैसे आप हो, या वैसा बन जाओ जैसे आप खुदको प्रकट करते हो।

* ज्यादा खानेवाला बीमारी का इंतजार करता है। चुगलखोर अपमान व रूस्वाई का इंतजार करता है। अत्याचार करनेवाला अपनी बर्बादी का इंतजार करता है। पड़ोसी को सतानेवाला ईश्वर के कहर व प्रकोप का इंतजार करता है।

* कुछ निर्णय चाकू की धार जैसे होते हैं अगर गलत हो जायें तो उनकी काट से न जान बचती है न ईमान इसलिये निर्णय समझ बूझकर लेने चाहिए।

* आपके साथ कोई भलाई करे या बुराई पर आपको सबके साथ भलाई करनी चाहिए यही ईश्वर आपसे चाहता है।

* अपनी वर्तमान की दुश्मनी को भविष्य में मत ले जाओ, लड़ाई के बाद जल्दी सुलह कर लेनी चाहिए। लड़ झगड़कर भी दिल में घृणा मत रखो।

* कभी-कभी नाकामी से टकराकर मनुष्य चकनाचूर हो जाता है मगर कामयाबी कोसों दूर रहती है। इतने संघर्ष के साथ-साथ एक अच्छा मुकद्दर का होना जरूरी है।

* स्त्री पुरुष की शादी एक प्राकृतिक उसूल है। ईश्वर ने मनुष्य को पैदा किया तो उसके साथ ही साथ उसकी बहुत सी जरूरतों को पैदा किया, फिर उन जरूरतों को पूरा करने के लिए मनुष्य की प्रकृति के अनुसार साधन भी पैदा कर दिये और इन्हीं प्राकृतिक नियमों के साथ इंसान के पूरे जीवन चक्र को जोड़ दिया। यदि इन प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन

किया गया तो पूरी इंसानी प्रकृति यानी फितरी व्यवस्था चरमरा जायेगी। स्त्री-पुरुष मिलने से सिर्फ शारीरिक ख्वाहिशात ही पूरी नहीं होती बल्कि इससे मनुष्य अगली नस्ल को आगे बढ़ाने की व्यवस्था भी जुड़ी हुई है। इसीसे खानदान, परिवार और समाज अस्तित्व में आते है। मनुष्य के अंदर प्राकृतिक तौर पर विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण रखा गया है। यह ईश्वर की बनायी हुई प्रकृति है और उसका उल्लंघन करना प्रकृति के कानून से बगावत है।

* यदि आप खुश नहीं रह सकते तो घर के बाहर ही न निकलें क्योंकि रोती सूरत, लटका चेहरा लेकर आप जहां भी जायेंगे, बदले में उपेक्षा ही पायेंगे।

* चेहरे पर थिरकती हल्की मुस्कान आपके मन की प्रसन्नता को आंखों के माध्यम से बाहर प्रदर्शित्त करती है। इसलिए हमेशा प्रसन्न और खुश रहें।

* प्रसन्न मन ही आपको प्रसन्न रखता है इसलिए आप हीन भावना का शिकार होने से बचें तथा किसी के पास रोने की आदत का सर्वथा परित्याग करें।

* अपनों से बड़ी-बड़ी अपेक्षाएं करना और फिर इन अपेक्षाओं के पूरा न होने पर दुखी होना मूर्खतापूर्ण सोच है। अपेक्षाओं की यह सोच ही हमें दूसरों से नहीं जुड़ने देती और हम मित्रों, रिश्तेदारों और शुभचिंतकों से दूर होते चले जाते हैं।

* ताने, उलाहने, हमेशा जली-कटी सुनाना, व्यंग्य कसना, दूसरों की सफलताओं को देखकर जलना, जो आपको हमेशा तनावग्रस्त बनाए रखते हैं। शिकायतों, तानों और अपेक्षाओं के इस व्यवहार में हमेशा यह सोचें कि इन व्यवहारों का प्रभाव हमेशा प्रतिक्रियावादी होता है।

* मिठास रिश्तों के बीच की वह कड़ी है जो अपने आपमें एक-दूसरे को जकड़े रहती है। जरा भी मिठास में कमी आयी तो कड़ी अपने आप खुलने लगती है और टूटने लगती है।

* आपका अच्छा मित्र वही है जो आपकी कमियों को बतायें और उन्हें दूर करने का उपाय करें।

* जो मनुष्य हमेशा आपकी तारीफ करें तो वो आपका अच्छा दोस्त नहीं है।

* लोगों से पूछकर अपनी कमियां जानकर उन्हें सुधार सकते है और अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकते है।

* सफल होनेवाले लोग जीवन की शुरूआत में ही खुद की खूबियों को पहचानकर उन्हें तलाशने में लग जाते हैं ऐसे लोगों में सफलता के लिये गजब का जुनून होता है।

* भरे पेट से बुद्धि की बात नहीं आ सकती।

* जो बीत गया उसको पछताने से कोई फायदा नहीं। जो वक्त आनेवाला है उसके बारे में अभी मत सोचो। जो वक्त अभी मौजूद है उसकी कद्र करो और उसकी हिफाजत करो।

* हर काम कहने के मुताबिक करो। क्योंकि अधिकतर लोग ऐसे है जो कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं।

* कुछ ख्वाबों को पाने के लिए कुछ ख्वाबों को छोड़ना भी पड़ता है।

* बेअदब लोगों से मिलनेपर मनुष्य हैरत से सोचता है कि यह अब तक कहां थे? जहां यह थे वहां वापिस कब जायेंगे।

* जो व्यक्ति हर अच्छी और बुरी चीज से संगति रखता है वह कभी सुरक्षित नहीं रह सकता।

* जो जबान पर नियंत्रण नही रखता वो हमेशा परेशान रहता है।

* आपके बोलने का तरीका इतनी जल्दी भी न हो कि सामनेवाला समझ भी नहीं सके कि आप क्या कहना चाहते है।

और इतना धीमा भी न हो कि सामनेवाला सुनकर बोर हो जाएं।

❋ जीवन में एक निश्चित उद्देश्य के साथ मेहनत करने पर सफलता अवश्य कदम चूमेगी। जब तक हमें लक्ष्य प्राप्त नहीं हो जाता है, तब तक हमें निराशा नहीं होना चाहिए। हमें पूरी ईमानदारी और मेहनत के साथ फल की चिन्ता किए बिना अपना कार्य करना चाहिए।

❋ प्रतियोगिता में किसी भी क्षेत्र में सफलता के लिए सर्वप्रथम सतत प्रयत्नशील, आशावादी दृष्टिकोण, संकल्प शक्ति तथा अपने को किसी से कम न समझने की प्रवृत्ति होनी चाहिए।

❋ हर युवा जीविका का अच्छा साधन, आर्थिक दृष्टि से प्राप्त करना चाहता है। इन स्वप्नों को साकार करने के लिए प्रयत्नशील होना बहुत जरूरी है। केवल इच्छा करने में युवा जितना समय व्यतीत करते हैं, यदि उसकी आधी भी मेहनत करें तो हर सपना पूरा हो सकता है। जीवन में सफल होने के लिए केवल कल्पना ही नहीं मेहनत करना भी जरूरी है।

❋ अपने गम को कभी गुस्सा मत बनाओ क्योंकि गम को गुस्सा तो वो बनाता है जो किसी नसीब को नहीं मानता और ईश्वर को नहीं जानता।

❋ अपनी थोड़ी सी क्षणिक खुशी के लिए किसी का उम्रभर का सुख चैन मत छीनो।

❋ अपनी खुशी को छोड़कर दूसरे की खुशियों को अहमियत दो तो आपको खुशी मिलेगी।

❋ जबान अच्छी हो तो दिल भी अच्छा हो जाता है।

❋ कदम उठाने से पहले यह सोच लो कि यह रास्ता किधर जा रहा है।

❋ गुस्सा एक ऐसी आंधी है जो दिमाग के चिराग को भी बुझा देती है।

❋ मनुष्य वही है जो किसी के दर्द को अपना दर्द समझ ले।

❋ अच्छी आदतें हमेशा दोस्ती को बढ़ाती है।

❋ दोस्त वो ही अच्छे और प्यारे होते हैं जो दोस्त के दिल की गहराइयों में झांककर उसके व्यक्तित्व को देखकर उसको पहचान सके, दिल में उतर जायें, दिल और दिमाग को ठंडक पहुंचाए, जो सिर्फ प्यार की राह बताते हैं। इस दुनिया में दोस्तों की कमी तो नहीं लेकिन अच्छे दोस्त किस्मत से ही मिलते हैं।

❋ अपने से छोटे को देखकर जिंदगी जिओगे तो प्रसन्न रहोगे। अपने से बड़े को देखोगे तो दु:खी हो जाओगे। जमीन पर देखकर चलोगे तो मंजिल मिल जायेगी, आसमान की ओर देखकर चलोगे तो ठोकर खाकर गिर जाओगे।

❋ जमीर जब तक सोया है, मनुष्य आजाद हो जाता है। हर काम अपनी मर्जी से करता है और अंजाम पाता है। उसका दिल चाहता है वो ही करता है लेकिन जब जमीर जाग रहा होता है तो उसके कर्म, उसकी मर्जी के अनुसार होते है। कोई भी गलत काम करने नहीं देता। इसलिए जमीर को सोने मत दो और आप बेलगाम मत बनो। बेकार ख्वाहिशात के जंगलों में न भटकते जाओ इसलिए जमीर का जागते रहना ही आवश्यक है।

❋ ज्ञान रोशनी है उसे फैलाना चाहिए, ज्ञान दौलत है उसे प्राप्त करना चाहिए, ज्ञान खजाना है इसे बांटना चाहिए, ज्ञान जिंदगी है, इसकी कद्र करना सीखो, ज्ञान ताकत है इसे बढ़ाना चाहिए। ज्ञान एक ऐसा समुंदर है जिसका कोई किनारा नहीं।

❋ करुणा एक भाषा है जिसे बधिर सुन सकते है और नेत्रहीन देख सकते हैं, आप भी हमेशा अपनी भाषा में नम्रता बनाए रखें।

❋ स्वयं को सच्चा कहने से मनुष्य सच्चा नहीं होता। सच्चा तो वो है जिसकी सच्चाई बातों और उसके कर्मों में हर

हालात में हमेशा कायम रहें।

* हम इतने अच्छे नहीं होते जितना हमें मुहब्बत अच्छा कर देती है।

* हरकत में ही बरकत है, बरकत में ही कृपा है, कृपा में कर्म है, कर्म में नेमत है, नेमत में लुफ्त है, लुफ्त में जोश है, जोश में जज्बा है, जज्बा में हिम्मत है, हिम्मत में कोशिश है, कोशिश में मुसीबत है, मुसीबत में सच्चाई है, सच्चाई में रोशनी है, रोशनी में कशिश है, कशिश में योग्यता है, योग्यता में उजाला है और उजाले में चैन और शांति है।

* अपने आपको बचाने के लिए तर्क-वितर्क करना हर व्यक्ति की आदत है, जैसे क्रोधी व लोभी आदमी भी अपने बचाव में सदा यह कहता है कि यह सब मैंने तुम्हारे कारण या तुम्हारे लिए किया है।

* जो आपसे छोटा हो उसके साथ प्यार, मुहब्बत और नरमी से पेश आओ। बड़ा हो उसका आदर करो और अच्छे मनुष्य बनो।

* मुहब्बत दुश्मनी की आग को बुझा देती है, इसलिए सदैव दुश्मन से मुहब्बत करनी चाहिए वो आपका दोस्त बन जाएगा। आग आग से नहीं बुझती पानी से बुझती है।

* दोस्ती एक अनमोल हीरा है जो दौलत से नहीं बल्कि दिल से खरीदी जाती है।

* जो कोई अपने भाई की जरूरत पूरी करता है ईश्वर उसकी जरूरत पूरी करता है।

* वो सबसे बेहतरीन व्यक्ति है जो सबको बुराई से मना करता है।

* जो हमें तकलीफ भी दें तो भी हम ईश्वर से उसके लिये सद्‌बुद्धि की प्रार्थना करें।

* बुरे शिष्टाचार व्यवहार को खराब कर देते है।

* आधे अधूरे नंगे बेढ़ंगे वस्त्रों में महिलाओं का व्यक्तित्व हल्का बन जाता है। उन्हें देखनेवाली आंखें वासनाभरी निगाहों से देखती है। इसलिए उचित परिधान ही महिलाओं की इज्जत आबरू है।

* यदि फल सामने रखकर कर्म करेंगे तो उस प्रसन्नता को खो देंगे जो फल प्राप्त होने पर उपजती है। अत: दीन हैं वे लोग, जो फल के कारण कार्य करते हैं।

* मनुष्य का कर्म ही उसके विचारों की सबसे अच्छी व्याख्या है।

* सुगंध के बिना पुष्प, तृप्ति के बिना प्राप्ति, ध्येय के बिना कर्म व प्रसन्नता के बिना जीवन व्यर्थ है।

* सामान्यतया जीवन सभी को प्रिय लगता है।

* चरित्र साथ नहीं है तो हाथ की वस्तु भी खो देंगे। चरित्र है तो सब कुछ पा लेंगे।

* कुल की प्रशंसा करने से कोई लाभ नहीं। उस लोक में चरित्र ही महानता का कारण बनेगा।

* अभेद्य दीवारों से मार्ग बना लेने की शक्ति चरित्र में है।

* क्रोध से भलीभांति वह बचा रहता है, जो स्मरण रखता है कि ईश्वर उसे हर समय देख रहा है।

* क्रोध बुद्धि को घर से बाहर निकाल देता है और दरवाजे पर चिटकनी लगा देता है।

* अन्न जिस तरह भूख मिटाता है, वैसे ही सद्‌गुणों को अपने जीवन में धारण कर दोष-दुर्गुणों को दूर भगावें।

* अवगुण नाव की पेंदी में छेद के समान है, जो चाहे छोटा हो या बड़ा एक दिन डुबो ही देगा।

* अपनी बुराई को अपने से पहले मर जाने दो।

* केवल जीवन की असफलताएं ही सद्गुणों से वंचित रखती हैं।

* हर व्यक्ति हर कार्य अपनी बुद्धि के अनुसार सही करता है, लेकिन सफलता सभी को प्राप्त हो, यह आवश्यक नहीं है।

* यह जानने के लिए कि मित्रता का क्या अर्थ है शब्दकोष देखा जा सकता है पर आपका एक मित्र होना आवश्यक है।

* यहां कानून गरीबों पर शासन करता है और अमीर कानूनों पर शासन करता है।

* यदि भाषा शुद्ध नहीं है तो जो कहा जाता है वह समझा नहीं जाता, जो समझाया जाना है वह स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त न किया जाए तो जो परिणाम अपेक्षित है वह प्राप्त नहीं हो पाता।

* युद्ध मूलत: पुरुषों की फितरत है। इससे बचना होगा। महिलाएं शांति की वाहक हैं।

* यदि आप सूर्य को खो बैठने पर आंसू बहाओगे तो तारों को भी खो बैठोगे।

* युद्ध बर्बर लोगों का पेशा है।

* यदि व्यक्ति तरक्की की रफ्तार से कुछ पीछे रहे तो श्रेयस्कर है, पर सभ्यता और विज्ञान दोनों ही उसे आज तेजी दे रहे हैं, जो सुविधा भले ही दे, सुख कहां दे पाते हैं।

* यह सर्वथा सत्य है कि हिंसा शांत हो सकती है बशर्ते पहल पूरी ईमानदारी और दृढ़ता से की जाए।

* राजा अपनी नीति के कारण कठोर हो सकता है लेकिन प्रजा केवल सिद्धान्त के कारण ही विद्रोही बनती है।

* राजा एक-एक से बड़ा है लेकिन प्रत्येक संगठन से छोटा है।

* राजनीतिज्ञ पारे की तरह है। अगर आप उस पर उंगली रखने की कोशिश करो तो उसके नीचे कुछ नहीं मिलता।

* रात और सूर्य कभी एक स्थान पर इकट्ठे नहीं रह सकते।

* लोग अपनी स्वतंत्रता कभी नहीं छोड़ते, जब तक कि वे किसी दबाव में न हो।

* राम के बिना हिन्दू जीवन नाम रहित है। यही रामरस उसका नाम बनाए रहा और बनाए रहेगा। राम ही का मुंह देखकर हिन्दू जनता का इतना बड़ा भाग अपने धर्म और जाति के घेरे में पड़ा रहा। न उसे तलवार हटा सकी, न धन मान का लोभ, न उपदेशों की तड़क-भड़क।

* राजनीति युद्ध जैसी ही रोमांचकारी है और उतनी ही खतरनाक भी। युद्ध में आप सिर्फ एक बार मरते हैं, परंतु राजनीति में अनेक बार मर सकते हैं।

* रूप की पहुंच आंखों तक है, लेकिन गुण आत्मा को जीतते हैं।

* लोहे की मीनारें नष्ट हो सकती हैं परंतु यश अमर है।

* लोगों की जरूरत पूरी हो सकती है लेकिन उनकी लालसा नहीं।

* लालच का पुत्र, अन्याय का भाई और शरारत का पिता ही जुआ है।

* लिपि किसी जाति की संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है, लेकिन भाषा का वह अभिन्न अंग नहीं है।

* विद्या शील के अभाव में शोचनीय हो जाती है और द्वेष से अपवित्र हो जाती है।

* लज्जा एक ऐसा पावन संकेत है जिसे प्रकृति पवित्रता तथा सम्मान का निवास दिखाने के लिए बाहर लटका देती है।

* विपत्ति में सभी लोग करुणा, दया, शांति तथा प्रेम की स्तुति करते हैं।

* विश्व, विजयी पर ही विश्वास करता है।

✻ विषयातुर मनुष्य ही दूसरे प्राणियों को परिताप देते हैं।

✻ व्रत का पालन करना सज्जनों का आभूषण है।

✻ वह मनुष्य रूढ़िवादी होता है जो लड़ने के लिए अधिक भीरु और दौड़ने के लिए आवश्यकता से अधिक भोला होगा।

✻ वार्तालाप से न उबने का एक ही तरीका है कि आप झूठ का सहारा लें।

✻ विश्वास एक बड़े हृदय में आहिस्ता-आहिस्ता उगनेवाला पौधा है और जवानी तो विश्वास का मौसम है।

✻ वातावरण में जो अहित मंडरा रहा होता है, उसका पूर्वाभ्यास मनुष्यों को तो क्या पशु-पक्षियों तक को हो जाता है। यही लक्षण पृथ्वी की प्रारंभिक चेतावनियों के प्रतीक बन जाते हैं।

✻ वास्तविक शिक्षा का आदर्श यह है कि हम अन्दर से कितनी विद्या निकाल सकते हैं, यह नहीं कि बाहर से कितनी अंदर डाल चुके हैं।

✻ वह जिसके एक हजार मित्र हैं, उसके पास एक मित्र भी फालतू नहीं और वह जिसका एक शत्रु है वह प्रत्येक स्थान पर दिखाई देगा।

✻ विश्व इतिहास महापुरुषों की कथा है। वे लोग जो इतिहास से कुछ नहीं सीखते, उनको दोहराने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

✻ वह जो खुशी की तलाश में नहीं हैं, उनको बहुत मुमकिन है कि खुशी मिल जाए, चूंकि वे जो खुशी की तलाश में हैं, यह भूल जाते हैं कि खुश होने का सबसे यकीनी तरीका दूसरों के लिए खुशी तलाश करना है।

✻ विदेशी राज्य चाहे वह कितना ही अच्छा क्यों न हो, स्वदेशी राज्य की तुलना में कभी अच्छा नहीं हो सकता।

✻ वह जो किसी भी कार्य को करने में हिचकिचाता है, समाप्त हो जाता है।

✻ वह भगवान की निन्दा करता है जो मनुष्य की अपूर्णता पर झगड़ा करता है।

✻ वह कुछ नहीं जानता जो अपनी बीवी को सब कुछ बता देता है जो वह जानता है।

✻ वासना की भूमि पर कभी भी स्वतंत्रता अंकुरित नहीं होती, स्वतंत्रता ज्ञान से पैदा होती है।

✻ वृक्ष काटकर, पशुओं को मारकर तथा खून की नदी बहाकर ही यदि स्वर्ग प्राप्त होगा तो नरक किसे भी नहीं मिलेगा। विभिन्न मतों के अनुयायियों को एक दूसरे के विश्वास तथा मूल्यों का सम्मान करना चाहिए जब तक गरीबी, सामाजिक अन्याय, असमानता, दमन तथा पर्यावरण अवमानना रहेगी। जब तक कमजोर और छोटों का धनाढ्य तथा सशक्त लोगों द्वारा दमन जारी रहेगा, तब तक शांति स्थापित नहीं हो सकती।

✻ विद्रोही बनते नहीं, उत्पन्न होते हैं।

✻ वासना के त्याग से संसार का त्याग हो जाता है इसके बाद आप कहीं भी रह सकते हो।

✻ व्यक्तिवाद अधर्म है। राष्ट्र के लिए काम करना धर्म है। राष्ट्र कार्य को साधने के लिए जो कुछ बन पड़े, करना ही उचित है।

✻ विद्वान को चाहिए कि वह मन को सावधान होकर वश में रखे।

✻ विश्वास करना है तो भगवान पर ही करो, मिलने-बिछुड़ने वाली वस्तुओं पर विश्वास करने से धोखा ही होगा, दु:ख ही पाना पड़ेगा।

✻ वास्तव में विज्ञान ने जितनी समस्याएं हल की हैं, उतनी ही नई समस्याएं खड़ी कर दी हैं।

* विद्वान लोग विष्णु के श्रेष्ठ स्थान को सदा देखते हैं।
* वासना को भली भांति त्याग देने पर, चित्त अचित्तता को प्राप्त होता है।
* वह मनुष्य जिसने नहीं कहना नहीं सीखा, जब तक वह जीवित रहेगा अगर दीन नहीं तो दुर्बल अवश्य रहेगा।
* शूरवीर वह है जो न्याय का पक्ष ले।
* शिथिल अभ्यास से कुछ नहीं होनेवाला।
* वचन का पालन करनेवाला कंजूस की भांति तोल-मोलकर अपने मुख से वचन निकालता है।
* वह शासक अत्याचारी है, जो नियमों को स्वयं पर लागू नहीं करता।
* शरीर ठीक रहते हुए ही इसका सदुपयोग कर लेना चाहिए।
* शरीर का सदुपयोग केवल संसार की सेवा में होता है।
* शैतान सबसे पहला प्रजातंत्र का हामी था।
* शिक्षा मनुष्य के लिए नेतृत्व करना सरल बना देती है, लेकिन अंधानुकरण कठिन कर देती है। शिक्षित आसानी से शासन कर सकते हैं लेकिन किसी को गुलाम नहीं बना सकते।
* शिक्षा के दो मुख्य उद्देश्य हैं- लिखना-पढ़ना सिखाना और दूसरा आत्म निर्भरता का कौशल सिखा कर उन्हें अच्छा नागरिक बनाना। लेकिन जहां तक दूसरे उद्देश्य का संबंध है, अलग अलग राजनैतिक व्यवस्थाओं में इसकी भिन्न-भिन्न अवधारणाएं हैं।
* शत्रुओं के छांटने में कोई भी मनुष्य समझदारी से कार्य नहीं कर सकता।
* जो कर्म यज्ञ के लिए किए जाते हैं, उनके अलावा हुए कर्मों से बंधन उत्पन्न हो जाते हैं।
* कर्म करने पर ही तुम्हारा अधिकार है, फल में नहीं। तुम कर्मफल का कारण मत बनो और अपनी प्रवृत्ति कर्म करने में रखो।
* जीवन में शून्य होकर शून्य ध्यान द्वारा प्रभु की साधना करने से, मृत्यु का भय छूट जाएगा।
* जीवन नम्रता का महान पाठ है।
* क्रोध में कभी किसी के पत्र का उत्तर नहीं देना चाहिए।
* क्रुद्ध आकाश की ओर से क्षमा मांगते हैं इंद्रधनुष। यदि आप इंद्रधनुष न बन सकें, तो क्रोध भी न करें।
* इन पर क्रोध नहीं करना चाहिए- देवता, सद्गुरु, गाय, राजा, ब्राह्मण, बालक, वृद्ध और रोगी।
* मनुष्य को चाहिए कि वह गुण को अवगुणी से भी ग्रहण करे।
* मानव जब तक तृष्णा से दूर है, गुणवान बना रहता है।
* असफलता के विचार से सफलता का उत्पन्न होना, उतना ही असंभव है, जितना बबूल के पेड़ से गुलाब के फूल का निकलना।
* असफलता निराशा का सूत्र नहीं, बल्कि वह तो नई प्रेरणा है।
* अपने को मनुष्य बनाने का प्रयत्न करो, यदि तुम इसमें सफल हो गए तो हर काम में सफलता मिलेगी।
* शिक्षा का उद्देश्य आत्मनिर्भर बनाना होना चाहिए।
* श्रद्धा या आस्था के बिना जीवन दृष्टि तो नहीं होती, जीने का ढर्रा या नक्शा भर बन सकता है।
* शील ही कल्याणकारी है। लोक में शील से बढ़कर कुछ नहीं है।

* शारीरिक सुख पराधीन है, परंतु आत्मिक सुख स्वाधीन है।

* शील, परोपकार, विनय, क्षमा, धैर्य और अलोभ ये विद्या की पूर्णता के उज्ज्वल फल हैं।

* वो शिक्षा कोई काम की नहीं जो उद्योग और नौकरी में लगा दे।

* शांति की विजय भी युद्ध की विजय से कम महत्वपूर्ण नहीं है।

* शरीर वीणा है और आनंद संगीत, यह आवश्यक है कि यंत्र ठीक रहे।

* शिक्षा परिवर्तनशील हथियार है जिसका प्रभाव उसके प्रयोग करनेवाले पर निर्भर करता है।

* सब कुछ मिला नए मानव को, एक न मिला हृदय कातर, जिसे तोड़ दे अनायास ही, करुणा की हल्की ठोकर।

* सभ्यता की उच्चतम स्थिति तब होती है, जब वह मानव को विकास और इतिहास के परे और स्वयं अपने से परे जाने के लिए प्रेरित करती है और मार्गदर्शन भी करती है।

* स्वयं को उच्च रखने के लिए बुद्धिमानों का अनुष्ठान एक आविष्कार है।

* साहित्य का पतन राष्ट्र के पतन का द्योतक है। पतन के वक्त वह एक दूसरे का साथ देते हैं।

* सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक वही है, जिसे आप खोजते हो, किंतु पाते नहीं।

* समाज के अविचार और अत्याचार का जो पहला प्रतिवाद करता है, उसी को दु:ख भोगना पड़ता है।

* समृद्धि के साथ बहुत सी आशंकाएं और असुविधाएं भी हैं और विपत्ति सुखों और आशाओं से रहित नहीं होती।

* सेना को चाहिए वह जनता के साथ एकरूप हो ताकि जनता उसे अपनी ही सेना समझे। ऐसी सेना अपराजेय बन जाती है।

* समाज के क्षय की प्रक्रिया को पहचानने में समय लगता है।

* साहित्य मानव विकास का सचेत अंग है।

* सरलतापूर्वक कहे गए वचन को अन्यथा नहीं समझना चाहिए।

* सभ्यता का आंतरिक प्रभाव संस्कृति है। सभ्यता समाज की बाह्य व्यवस्थाओं का नाम है। संस्कृति व्यक्ति के अंतर विकास का।

* संस्कृति का असली अर्थ है जीवन में साझेदारी। दूसरे के जीवन में शामिल होना और दूसरे को अपने जीवन में शामिल करना संस्कृति है।

* सबसे बड़ा बहादुर बदला न लेनेवाला है।

* सच्ची आसक्ति के साथ किया जानेवाला काम सत्फल देता है। सयुक्ति वचन, समय के अनुकूल कहे जाकर जीवन में सफलता देते हैं।

* सत्पुरुष की बुद्धि तीक्ष्ण होती है, परंतु मर्मभेदी नहीं। कर्म तेजस्वी होता है, परंतु शांत भी, मन उष्ण होता है, पर ताप देनेवाला नहीं। वाग्मी सत्पुरुष एकवाक होता है।

* साहित्य सभ्यता का मधुरतम फल है। इसी से सभ्यता का माप होता है।

* सज्जनों की संगति सदा लाभदायक होती है। इसी में मान सम्मान है। सज्जनों की संगति चारों ओर यश फैलाती है।

* सज्जनों को दूसरों की तुलना में अपने आपसे अधिक लज्जा महसूस होती है।

* साहित्य के साथ सदा मंगल और कल्याण की भावना लगी रहती है। उसको धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का विनायक माना गया है।

* संस्कृति जिंदगी का एक तरीका है और यह तरीका सदियों से जमा होकर उस समाज में छाया रहता है जिसमें हम जन्म लेते हैं।

* सज्जन पुरुष दुष्टों के संसर्ग में भी सहज स्वभाव नहीं छोड़ते।

* साहित्य मनुष्य को उसकी समस्त आशा व आकांक्षाओं के साथ उसकी सभी सबलताओं और दुर्बलताओं के साथ हमारे सामने प्रत्यक्ष लाकर खड़ा कर देता है, वही महान साहित्य है।

* सुधार प्रारंभ करना क्रांति प्रारंभ करना है।

* संस्कृति शारीरिक और मानसिक शक्तियों का प्रशिक्षण दृढ़ीकरण, विकास और उसमें उत्पन्न आस्था है।

* सच्चा मानवतावादी अपनी हानिकारक शक्तियों पर कभी गर्व नहीं करता। उसके लिए वह सदा लज्जित रहता है।

* संस्कृति हमारे दैनिक व्यवहार, कला, साहित्य, धर्म, मनोरंजन तथा आनंद में पाए जानेवाले रहन सहन और विचार के तरीकों में हमारी प्रकृति, स्वभाव व प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति है।

* सौंदर्योपासना में ही मनुष्य और दृश्यमान जगत को एकता का सच्चा प्रमाण मिलता है।

* सहिष्णुता का अभाव ही सभी समस्याओं की जड़ है। समाज का माहौल तभी सौहार्द्रपूर्ण और विकासशील हो सकता है, जब सहिष्णुता की भावना हर नागरिक में घर कर जाए।

* नारी ने अपने अथाह आंसुओं से संसार के हृदय को ऐसे घेर रखा है, जैसे समुद्र पृथ्वी को घेरे हुए हैं।

* सच्चा धर्म ईश्वर पर विश्वास मात्र नहीं है, बल्कि मनुष्य की अच्छाइयों में पूर्ण निष्ठा एवं विश्वास है।

* संकटों से घृणा की जाए तो वह बड़े हो जाते हैं।

* सत्याग्रह की लड़ाई हमेशा दो प्रकार की होती है एक जुल्मों के विरुद्ध और दूसरी अपनी दुर्बलता के विरुद्ध।

* संत पुरुष के लिए एकांत में रहकर विचार मात्र से भी सेवा कर सकना संभव है। ऐसा लाखों में से एक मनुष्य निकल सकता है।

* सब धर्म एक ही वृक्ष की शाखाएं हैं।

* सामंजस्य एक कला है। उसकी साधना बहुत कठिन है। दो व्यक्ति एक साथ रहें और परस्पर सामंजस्य करें, यह मानसिक शांति का सशक्त सूत्र है। भेद की स्थिति में भी अभेद का सूत्र ढूंढकर सामंजस्य बनाए रखनेवाले लोग सचमुच कलाकार हैं।

* सात सागरों के जल की अपेक्षा मानव के नेत्रों से कहीं अधिक आंसू बह चुके हैं।

* सर्वस्व न्यौछावर करने पर ही प्रभु की प्राप्ति हो सकती है।

* संसार में जो वस्तु पैदा होती है, वह मिटती है और उसके लिए शोक नहीं करना चाहिए।

* स्वतंत्रता केवल अनुशासन की श्रृंखलाओं द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है।

* अच्छे मित्र के ये लक्षण इसप्रकार हैं- वह अपने मित्र को पापों से दूर रखता है, उसे अच्छे हितकर कार्यों में लगाता है, उसके गुप्त रहस्यों को छिपाए रखता है और उसके गुणों को उजागर करता है तथा आपत्ति में उसका साथ नहीं छोड़ता।

* सरल मार्ग को छोड़कर कुटिल मार्ग को ग्रहण मत करो, ज्ञान निकट है, कहीं दूर मत जाओ।

* सभी लोगों को, जो आनंद चाहते हैं, आनंद बांटना चाहिए, क्योंकि आनंद जुड़वां पैदा हुआ है।

* सुख और आनंद ऐसे इत्र हैं जिन्हें जितना छिड़कोगे, उतनी ही अधिक सुगंध आपके अंदर समाएगी।

* सज्जन को सम्मान और दुर्जन को दण्ड सुशासन के आवश्यक तत्व हैं।

* संस्कृति तो शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त एक उपकरण है जिससे वे शिष्यों का निर्माण कर सकें, जो अपनी बारी आने पर पुन: शिष्यों का निर्माण कर सकेंगे।

* संस्कृति हमें राह बताती है तो सभ्यता हमें उस राह पर चलाती है। दोनों मनुष्य की सृजनात्मकता क्रिया के कार्य का परिणाम है। जब यह क्रिया उपयोगी लक्ष्य की ओर गतिमान होती है, तब संस्कृति का उदय होता है।

* संस्थाओं के दोष दिखाना आसान होता है क्योंकि सभी संस्थाएं थोड़ी बहुत अपूर्ण होती हैं। परंतु मानव जाति का सच्चा कल्याण करनेवाला तो वह है, जो व्यक्तियों को, चाहे वे जिन संस्थाओं में रहते हों, अपनी अपूर्णताओं से ऊपर उठने में सहायता देता है।

* सच्चा तप यह है कि अपने भाइयों के ताप से तपा जाए। सच्चा यज्ञ वह है जिसमें अपने स्वार्थ की आहुति दी जाए। सच्चा दान वह है जिसमें परमार्थ किया जाए और सच्ची ईश्वर सेवा यह है जिससे दुखी जीवों की सहायता की जाए।

* सभी साहित्य संबंधी रत्न अंग्रेजी भाषा में ही नहीं हैं, अन्य भाषाओं में इन रत्नों की बहुलता है। वे सभी हमारे देश के आम लोगों के लिए उपलब्ध है।

* सब उपजातियां भिन्न-भिन्न हैं क्योंकि वे मनुष्य से आई हैं। नैतिकता हर जगह वही है, क्योंकि वह ईश्वर से आई है।

* सांस्कृतिक अस्मिताएं नकल से नहीं बनतीं, विदेशी मनोवृत्तियां और मनोभाव आयातित करके भी नहीं बनतीं, अपनी ही सच्ची पहचान से बनती हैं। सांस्कृतिक जीवन के बारे में ही यह बात सबसे अधिक सत्य है कि हम वही बन सकते हैं, जो हम हैं।

* साहित्य में विचार और भाव दोनों का समावेश रहता है।

* स्वराज का राज्य संविधान चलाने की युक्तिसंगत आशा हमसे तभी की जा सकती है जब हम पहले स्वराज चरित्र को प्राप्त कर लें।

* स्वार्थ में अच्छाइयां ऐसे खो जाती हैं जैसे समुद्र में नदियां।

* संसार एक कारावास है। यहां कोई आवश्यकताओं का बंधक है तो कोई महत्वाकांक्षाओं का दास।

* सच्ची महानता हृदय की पवित्रता में है, इसमें नहीं कि कोई आपके बारे में क्या कहता है।

* सैनिक हमेशा सैनिक ही रहता है चाहे वह सेना में रहे अथवा अवकाश प्राप्त कर ले।

* संसार में लाखों प्रकार की प्राप्तियां हैं लेकिन शिक्षा प्राप्ति सर्वोत्तम है।

* सम्पत्ति एवं स्वास्थ्य से भी अधिक मन की शान्ति का महत्व जीवन में सर्वाधिक होता है।

* समकालीन मानव गुण की अपेक्षा मानव की प्रशंसा करते हैं, आनेवाली पीढ़ियां मानव की अपेक्षा उसके अवगुणों का सम्मान करेंगी।

* सज्जन चाहे कितना ही फटेहाल क्यों न हो वह उस दुर्जन से सदैव शक्तिशाली होता है जिसके पास महज बड़प्पन के ठाट होते हैं।

✻ सज्जनता से किसी का अहित नहीं होता, यदि होता है तो दुर्जन व्यक्तियों का।

✻ साहित्य का फल उस व्यक्ति को मिलता है, जो निश्चित अंतराल के पश्चात अपनी मानसिक हलचलों को व्यक्त करता है। जमीन को भी विश्राम देने के पश्चात ही अगली फसल ली जाती है।

✻ साहित्य को हम मानव की शक्ति-दुर्बलता, जय-पराजय, मित्र, शत्रु और जीवन-मृत्यु की कहानी कह सकते हैं।

✻ स्वस्थ मन हो तो शरीर सदैव स्वस्थ होगा लेकिन शरीर स्वस्थ हो तो आवश्यक नहीं कि मन भी स्वस्थ होगा।

✻ साहित्य यदि किसान और विद्वान दोनों की समझ में सहजता से आए, तो वह साहित्य सार्थक है।

✻ साहित्य यदि नष्ट हो जाए तो उस राष्ट्र का सब कुछ समाप्त हुआ समझना चाहिए। लेकिन सब कुछ खत्म होने के पश्चात भी यदि साहित्य जिंदा है तो राष्ट्र कभी नष्ट नहीं होगा।

✻ सच्चे आदमी को कोई चाहकर भी धोखा नहीं दे सकता क्योंकि उसकी सच्चाई दूसरों के हृदय में भी उच्च भावनाओं की सृष्टि कर देती है।

✻ स्वस्थ मनुष्य वह होता है जो शारीरिक और मानसिक स्वस्थता का संतुलन बनाए रखता है।

✻ सुंदर स्वास्थ्य महान सम्पत्ति है।

✻ स्वस्थ शरीर एवं स्वस्थ समझ जीवन में दो सर्वोत्तम वरदान हैं।

✻ स्वास्थ्य को परिश्रम से हासिल भी किया जाता है और बनाए भी रखा जा सकता है।

✻ संसार के ज्ञानदान को सर्वश्रेष्ठ दान कहना चाहिए, न तो इसे चुराया जा सकता है, न इसे नष्ट किया जा सकता है और यह निरंतर बढ़ता रहता है। साथ ही लोगों को स्थायी सुख देने का माध्यम भी बनता है।

✻ जो दानी प्रसिद्धि का अभिलाषी है वह सच्चा दानी नहीं।

✻ संसार में यह सबसे हास्यास्पद बात है कि जो दुर्जन हों वे स्वयं ही सज्जनों को दुर्जन कहते हैं।

✻ सुख भोग की लालसा आत्मसम्मान का सर्वनाश कर देती है।

✻ सात्विकता पर सभी का समान अधिकार है चाहे वह नारी हो या पुरुष, चाहे वह ज्ञानी हो या अज्ञानी, चाहे वह आस्तिक हो अथवा नास्तिक। मनुष्य जीवन पाकर सात्विकता को गंवा देना सबसे बड़ा दुर्भाग्य है।

✻ स्त्री को पुरुष के लिए उच्चतम वरदान भी कहा जा सकता है और सबसे बड़ा अभिशाप भी।

✻ स्त्रियों को यदि विधाता ने सुन्दरता दी है तो धन से वंचित न रखे। क्योंकि निर्धन, सुन्दर और चतुर स्त्री पर दुर्व्यसन का मंत्र शीघ्र ही चल जाता है।

✻ सार्वजनिक हित के लिए जो व्यक्ति जीवन गुजारता है उस पर अत्यधिक कीचड़ उछाली जाती है। दुर्भाग्यवश कुछ न कुछ कीचड़ उसे लगती है चाहे वह न्यायसंगत हो या न हो।

✻ स्त्रियों को जितना सम्मान सौंदर्य के लिए दिया जाता है, उससे ज्यादा स्वाभाविक गुणों के लिए उन पर गौरव किया जाता है।

✻ स्त्री यदि सदा पति के अनुकूल और संतुष्ट रहनेवाली, चतुर, शीलवान और मेधावी हो तो निश्चय ही लक्ष्मी समान आदरणीय होती है।

✻ सदाचार और आज्ञाकारिता का मिलना जिस प्रकार सौभाग्य की बात है, उसी प्रकार पति पत्नी के लिए विश्वास एक सर्वोत्तम सुख है।

❋ स्त्री को पति के बल और पुरुषत्व का दर्प होता है। उसका बल और साहस, मान और मर्यादा पति होता है।

❋ सच्चा दोस्त वृक्ष की भांति मजबूत होता है, झूठे दोस्त पतझड़ की पत्तियों के रूप में हर जगह देखे जा सकते हैं।

❋ सर्वोत्तम एवं दुर्लभ वस्तु को संसार में यौवन के नाम से जाना जाता है।

❋ संतुष्ट मन जिस व्यक्ति का है उसे सभी दिशाओं से प्रेम होता है। जैसे जूता पहननेवाले शख्स को कंकड़ धूल और कांटों से कोई भय नहीं होता।

❋ स्वाभिमानी मनुष्य शत्रुओं का सम्पूर्ण नाश किए बिना शस्त्र नहीं रखते।

❋ सुंदर चेहरा देखकर विद्वत्ता भैंस चराने चली जाती है।

❋ संसार रूपी कड़वे वृक्ष पर दो फल अमृत के समान हैं- पहला प्रिय वचन और दूसरा सज्जनों की संगति।

❋ संदेह के पाताल में झांकने से पहले विवेक की मजबूती का सहारा ले लेना अक्लमंदी है।

❋ संदेह से मुक्त होने का आसान उपाय यह है कि ठीक उसके विपरीत सोचो। अपने दिल में यह विश्वास पैदा करो कि तुम योग्य हो और आरम्भ किए हुए कार्य को कुशलतापूर्वक सम्पन्न कर सकते हो।

❋ सुंदर हो, यौवन सम्पन्न हो, धनवान हो, उच्च कुल में जन्म लिया हो और संसार का तमाम बल लिया हो लेकिन विद्या से रिक्त हो तो फिर उसके तमाम गुण उस पुष्प के समान होते हैं जो दिखने में सुंदर है लेकिन गंधहीन है।

❋ सावधान व्यक्ति कम गलतियां करता है और सशस्त्र व्यक्ति के समान होता है।

❋ सावधानी को बुद्धिमत्ता की बड़ी संतान भी कहा जाता है।

❋ साधना में लीन रहते हुए उसके लिए मन-प्राण अर्पण करो। तभी परम सिद्धि प्राप्त होगी।

❋ विद्यालय-महाविद्यालय की पढ़ाई से अक्षर ज्ञान होता है। यह शिक्षा का शरीर है लेकिन ऊंचाइयों को छूनेवाले स्वाध्याय की पढ़ाई करते हैं।

❋ साधना के तत्व हैं- कर्म, ज्ञान और भक्ति।

❋ सुखी व्यक्ति के लक्षण हैं- समुद्र के समान अचल गंभीर बुद्धि, पृथ्वी के समान क्षमा, सूर्य के समान पालना, गौ के समान दानी और नदी के वेग समान निरंतर क्रियाशीलता।

❋ सुख के पीछे मत दौड़ो, वह दूर हो जाएगा। सुख से दूर भागो, वह तुम्हारे-पीछे दौड़ा आएगा।

❋ सुख आदमी के सामने आता है तो दुःख का मुकुट पहनकर। जो उसका स्वागत करता है वह उसके सिर की शोभा बढ़ाता है।

❋ सेवा पैसों के द्वारा ही की जाए, यह जरूरी नहीं। जरूरी यह है कि अपने स्वार्थ त्याग कर दुखियों की सेवा करें।

❋ सत्संग के द्वारा बुद्धि की दुर्बलता को दूर किया जा सकता है, वाणी के दोष को नष्ट किया जा सकता है, पापों को हरा जा सकता है, साथ ही यश प्राप्ति, चित्त की प्रसन्नता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

❋ सेवा द्वारा हृदय पवित्र होता है, अहंकार की भावना नष्ट होती है और ईश्वर के निकट होने का अहसास शांति प्रदान करता है।

❋ सुख बांटने से बढ़ता है और दुःख बांटने से घटता है।

❋ सेवा करके उसे अहसान के रूप में गिनाना, सेवा के बदले में कुछ चाह रखना और सेवा द्वारा फल कामना की पूर्ति चाहनेवाला शख्स सेवा का अपमान करता है। सेवा इस भाव से करनी चाहिए कि सेवा प्राप्त करनेवाले व्यक्ति को उसका नाम भी मालूम न हो।

❋ सुंदरता मन के भावों में निवास करती है। माता अपने कुरूप बालक को संसार का सबसे सुंदर बालक समझती है।

❋ सौंदर्य पर आधारित प्रेम सौंदर्य की ही भांति शीघ्र नष्ट हो जाता है।

❋ सुंदर आकृति वालों के प्रति सबके मन में स्नेह होता है।

❋ किसी से ईर्ष्या करके मनुष्य उसका तो कुछ बिगाड़ नहीं सकता है, पर अपनी निद्रा अपना सुख और अपना संतोष अवश्य खो देता है।

❋ उस जीवन को नष्ट करने का हमें कोई अधिकार नहीं जिसको बनाने की शक्ति हममें न हो इसलिये आत्महत्या करना महापाप है।

❋ बुरा आदमी जब चलन में हो जाता है, तो अच्छे आदमी को चलन से बाहर कर देता है।

❋ सच्ची कामयाबी सच्ची खुशी तक पहुंचने का सबसे बढ़िया तरीका ऐसा मनुष्य बनना है, जो बदले में कुछ नहीं चाहता। स्वार्थहीन व्यक्ति से ज्यादा प्रसन्न कोई नहीं होता।

❋ खुशामदी आदमी इसलिए आपकी खुशामद करता है कि वह आपको अयोग्य समझता है। लेकिन आप अपनी प्रशंसा सुनकर कुप्पा हो जाते हैं।

❋ आवश्यकता उपयोगी कलाओं की जननी है और विलासिता ललित कलाओं की।

❋ जब लगन और प्रवीणता मिलकर काम करे तो समझिए कि एक बेहतरीन कला जन्म लेगी।

❋ जो लोग डरने, घबराने में जितनी शक्ति नष्ट करते हैं, उसकी आधी भी यदि प्रस्तुत कठिनाइयों से निपटने का उपाय सोचने के लिए लगायें, तो आधा संकट अपने आप ही टल सकता है।

❋ समाज और देश को विकसित करना हो तो गरीबी और निरक्षरता को खत्म करना चाहिए।

❋ क्रोध में मनुष्य अपने मन की बात नहीं कहता, वह केवल दूसरों का दिल दुखाना चाहता है।

❋ जन्म दूसरे ने दिया, नाम दूसरे ने दिया शिक्षा दूसरे ने दी, रिश्ता भी दूसरों से जुड़ा, काम करना भी दूसरों ने सिखाया अन्त में श्मशान भी दूसरे ले जाएंगे। तुम्हारा अपना इस संसार में क्या है?

❋ इस संसार में प्यार करने लायक दु:ख और श्रम है। दु:ख के बिना हृदय निर्मल नहीं होता और श्रम के बगैर मनुष्य का विकास नहीं होता।

❋ हार और जीत मनुष्य की सोच पर निर्भर करती है मान लो तो हार है और ठान लो तो जीत है।

❋ मुस्कान की कोई कीमत नहीं होती। यह पानेवाले को खुशी देती है और देनेवाले का कुछ भी घटता नहीं।

❋ प्रेम उत्तेजित होकर भी दुखी नहीं होता। प्रेम सदा धैर्यवान, क्षमाशील, वफादार व आस्थावान और बिना किसी इच्छा के सदा दानशील रहता है।

❋ ये जिंदगी उस ईश्वर की रजा है, जिसका अपना ही मजा है, हर वक्त ईश्वर से हमारी यही प्रार्थना है, कि आपको इतनी सुविधायें दे, कि आप भी सोचो इसकी वजह क्या है।

❋ जो मनुष्य प्रेम करता व प्रेम पाता है, उसके लिए हमेशा शीतकाल बसंत ऋतु है और यह संसार ईश्वर का उपवन हैं।

❋ हमारे देश की स्त्रियां बुद्धि, विद्या अर्जित करें, यह हम हृदय से चाहते हैं लेकिन पवित्रता की बलि देकर यदि यह करना पड़े तो कदापि नहीं।

* आनन्द से बढ़कर एक और आनन्द भी है और वह उसे ही प्राप्त होता है जो स्वयं को भूलकर दूसरों को आनन्दित करता है।

* इस संसार में प्रभु-प्रेम ही सच्चा है। वह प्रेम ही अपने भक्तों को पार लगता है, कभी मझधार में नहीं छोड़ता।

* स्वयं के प्रेम में न पड़ें तो प्रभु से प्रेम होने लगेगा। आत्मकेन्द्रित न बनें, सब तुम्हें प्रेम करने लगेंगे।

* अपनी धारणाओं व कल्पनाओं पर नियंत्रण रखो उनमें चुम्बकीय शक्ति है। आपकी आज की कल्पना आपका भविष्य निश्चित करती है।

* लोग कहते हैं दु:ख बुरा होता है। जब आता है रुलाता है पर दु:ख अच्छा होता है। जब भी आता है कुछ न कुछ सिखा कर जाता है।

* दूसरों को सहयोग देना ही उन्हें अपना सहयोगी बनाता है।

* अगर रास्ता खूबसूरत है, तो यह जरूर जाने कि वह किस ओर जा रहा है। लेकिन अगर लक्ष्य खूबसूरत है तो रास्ता जैसा भी हो उसकी परवाह नहीं करते।

* कोई इतना अमीर नहीं होता कि वो अपना गुजरा हुआ कल खरीद सके और इतना गरीब नहीं होता कि वो अपना आनेवाला कल न बदल सकें।

* आप जो चाहते हो अगर वह हो जाए, तो आपको खुशी मिलेगी। वैसे ही अगर आप खुश रहने लगो तो वह होने लगेगा जो आप चाहते हो।

* काम ऐसे करना चाहिए जैसे कि सब कुछ हम पर ही निर्भर है।

* सब्र एक ऐसी सवारी है जो अपने सवार को कभी गिरने नहीं देती, ना किसी के करमों में और न किसी की नजरों से।

* संभव, असंभव से पूछता है- तुम्हारा निवास स्थान कहां है? - निर्बल के स्वप्न में।

* विश्वास करना एक गुण है अविश्वास दुर्बलता की जननी है।

* अविचारशील मनुष्य दुख को प्राप्त होते हैं।

* बहुत सारे लोग जब किसी सामूहिक आदर्श से प्रभावित होकर उसकी प्राप्ति के लिए आगे बढ़ते हैं, वही समाज का विकास कहलाता है, विस्तार कहलाता है। सामाजिक प्रगति का अर्थ है- एक साथ चलते हुए मजबूत बनना। समाज को सही पथ पर आगे बढ़ाने के लिए महान आदर्श और महान व्यक्तित्व प्रेरणा का काम करते हैं। सामाजिक चेतना का बीज साथ चलने और एक साथ चिंतन करने के मूलमंत्र में टिका है। जहां ऐसे मंत्र नहीं है, वहां कोई आदर्श नहीं है और जहां आदर्श नहीं, वहां जीवन लक्ष्यविहीन है। अगर मनुष्य सिर्फ जरूरतों के कारण एक दूसरे से जुड़ा रहे तो वहां स्वार्थ भाव बना रहता है। सभ्य समाज में बौद्धिक विकास का बड़ा महत्व है। यही विकास की सही दिशा दिखा सकता है। यह समाज में कला, साहित्य और संगीत के महत्व को सामने रखता है। व्यक्ति को उसके छोटे दायरे से बाहर ले जाता है। ये कलाएं ही हमारी सोच को प्रभावित करती है। विकास ने हमारी कलाओं पर भी असर छोड़ा है। एक नई संस्कृति का जन्म हो रहा है। हमारी उदारता, सहिष्णुता और विवेकशीलता की जरूरत समाज को रहेगी। इन्हीं के सहारे हम एक दूसरे को समझते हुए विकास कर सकते हैं।

* हम सभी अपने मन के गुलाम है लेकिन मन को गुलाम बनाकर हम बड़े-बड़े काम सहज ही कर पाते है। हमारे काम, हमारी आकृति, हमारे मन की छाया भर हैं। हमारे विचारों का असर हमारे चेहरे पर झलकता है। भयभीत होने पर चेहरा

पीला पड़ जाता है, गुस्सा आनेपर आंखे लाल हो जाती है, उत्साहित होने पर सामर्थ्य से ज्यादा काम कर जाते हैं और थकान महसूस नहीं होती। उत्तेजना भरी बात सुनकर बीमार होते हुए भी हम उठ खड़े होते हैं। यह है मन की शक्ति। मन में जैसे विचार होते हैं वैसे ही लक्षण प्रकट होने लगते है। मनोबल ही सफलता का मार्ग बनाता है। मन में पहले कुछ करने की इच्छा पैदा होती है फिर वह उसे पूरा करने में जुट जाता है। जिस चीज की हम इच्छा करते है उसे पाने के अनुकूल सुविधाएं खुद ब खुद बन जाती है। चाह होते ही राह दिखाई पड़ने लगती है।

* किसी लक्ष्य को पाने की सच्ची लगन लग जाए तो मन जीत दिलाता ही है। दृढ़ मनोबल और मजबूत इच्छाशक्ति सच्ची चाह है।

* जीवन में सफलता के लिए आशा और उत्साह बनाए रखना बहुत जरूरी है।

* जब आप अच्छा महसूस करते हैं तो मुस्कराते हैं। इससे अंदर की खुशी जाहिर होती है। यह बरकरार रहे इसके लिए उत्साह का होना जरूरी है। अपना उद्धार स्वयं करे इसके लिए अपने आपको जानना व पहचानना है।

* आप अपने चित्त में उत्साह के बीज बोएंगे तो उत्साह भरेगा और निराशा के बीज बोएंगे तो निराशा भरेगी। मनुष्य के जीवन में उत्साह बरकरार है और सारी समस्याएं अपने आप में हल हो जाती है।

* हमेशा प्रेम की भाषा बोलिए क्योंकि इसे बहरे भी सुन सकते हैं और गूंगे भी समझ सकते हैं।

* सामनेवाले व्यक्ति की बात पर ध्यान देना चाहिए उसमें से कोई हित व कल्याण का तथ्य प्राप्त हो सकता है।

* बुजुर्गों की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। उनको कभी प्रतिउत्तर नहीं देना चाहिए नहीं तो घर का माहौल खराब हो जाएगा। झगड़ा, क्लेश, कलह फैलेगी। आज बुजुर्गों के साथ जो करोगे वही कल आपकी सन्तान आपके साथ करेगी।

* जिंदगी के हर सफे पर कुछ हर्फ लिखे रहते है, लोग ये कहते हैं गुजरे जमाने की किसी भाषा में दस्तखत थे।

* व्यक्ति स्वयं को कई हिस्सों में बांट देता है और फिर सुख शांति से जीना चाहता है। आदमी अपने पैरों पर ही कुल्हाड़ी मारता है।

* हर सफल व्यापार नैतिकता की नींव पर खड़ा होता है।

* दुनिया की यह सबसे दुर्लभ जोड़ी है आँसू और खुशी। दोनों का एक साथ मिलना मुश्किल है, लेकिन जब दोनों साथ होते हैं तो वह पल सबसे खूबसूरत होते हैं।

* जो बात दिल में है उसे बोलने की हिम्मत रखो और जो बात दूसरे के दिल में है उसको समझने की समझ रखो।

* कठिनाइयां जब भी आती हैं तो कष्ट देती हैं, पर जब जाती हैं तो आत्मबल का ऐसा उत्तम पुरस्कार दे जाती हैं, जो उन कष्टों की तुलना में हजार गुना ज्यादा कीमती होता है।

* सम्पत्ति सदा आपके पास नहीं रहेगी, सद्‌बुद्धि रहेगी तो सम्पत्ति फिसलने नहीं देगी। जहां सुकृत कार्य होते है वहां पुण्य की प्राप्ति होती है और वहीं लक्ष्मी का स्थाई निवास होता है।

* जीवन में ज्यादा रिश्ते होना जरूरी नहीं है, पर जो रिश्ते हैं उनमें जीवन होना बहुत जरूरी है।

* दिल से ज्यादा कोई उपजाऊ जगह नहीं हो सकती, क्योंकि यहाँ पर जो कुछ भी बोया जाता है वो ही बहुत पनपता है, फिर चाहे प्यार हो या नफरत।

* जिन्हें कुछ करना है उनके शब्दकोष में असंभव और नामुमकिन जैसा कोई शब्द नहीं होता। अपने हर सपने को हकीकत में बदलने के लिए उनका चिंतन हमेशा आशावादी और सकारात्मक होता है। उनकी सोच हमेशा I can, I must, I will रहती है।

❋ लक्ष्य जितना बड़ा हो मेहनत भी उतनी ही बड़ी चाहिए और समय भी उतना ही ज्यादा देना पड़ता है। जो लोग जिन्दगी में कामयाबी चाहते हैं वो समय नहीं है का बहाना कभी नहीं करते।

❋ अगर आप ईश्वर की पूजा करते हो तो उसमें विश्वास करना सीखो। किसी भी बात को बोलने से पहले सुनना सीखो। अगर खर्च करना चाहते हो तो कमाना सीखो। लिखना चाहते हो तो सोचकर लिखो। हार मानने से पहले कोशिश करना सीखो और मरने से पहले खुल के जीना सीखो।

❋ जीवन में लोकप्रिय होने के लिए हमेशा आप शब्द का उपयोग करें नहीं तो हम शब्द का करें और सबसे कम मैं शब्द का उपयोग करना चाहिए।

❋ क्रोध की कई किस्में हैं। एक बेहद-क्रोध है, जो पत्थर पर खींची गई रेखा के समान होता है। दूसरा बहुत-क्रोध है, जो ईंट की रेखा के समान होता है। क्रोध की एक तीसरी किस्म भी है जो मामूली-क्रोध कहलाती है। यह क्रोध रेत पर खींची गई रेखा के जैसा हल्का होता है। क्रोध की चौथी किस्म है मीठा- क्रोध जो कि जल पर खींची रेखा के समान क्षणिक होता है। गृहस्थ जीवन में सिर्फ मामूली क्रोध और मीठा क्रोध ग्राह्य है। बेहद क्रोध और बहुत क्रोध हर हाल में त्याज्य हैं।

❋ जब तक मन अस्थिर और चंचल है, तब तक अच्छे गुरु और साधु लोगों की संगति मिल जाने पर भी किसी को कोई लाभ नहीं होता।

❋ जिससे मनुष्यत्व का अपमान होता है वह किसी भी दशा में उन्नति का रास्ता नहीं हो सकता।

❋ सूर्य उदय होते ही कमलों को श्री प्रदान करता है। वह जगत को यह दिखाता है कि मित्र पर अनुग्रह करना ही सम्पत्ति का फल है।

❋ ज्ञान अगर बुद्धि में रहे तो बोझ बनता है और जब व्यवहार में आ जाये तो आचरण बनता है।

❋ सबको उदासी को पढ़ने का सलीका नहीं आता। बड़ी मुश्किल से ये हुनर मिला करता है।

❋ सोने के सिराहने पर सोने से आप नींद नहीं खरीद सकते। बेशकीमत है जो फकीरी मस्ती नहीं खरीद सकते।

❋ कुछ लोग दुनिया में फूलों जैसे महकते है, तो कुछ लोग नागफनी जैसे जहरीले होते हैं।

❋ चंद सांसें लेकर भी आदमी असंख्य उम्मीदों में जीता है। भूल जाता है कि वो नितांत रीता है।

❋ कलम केवल आप बीती ही नहीं लिखती, वो आसपास के चित्र भी खींच लेती है।

❋ पराया व्यक्ति अधूरे मन और अधूरे आत्मविश्वास से अपने कार्यक्षेत्र में उतरता है। परिणाम यह होता है कि जीवन लक्ष्यहीन अपूर्ण और जंजाल सा बन जाता है। कार्य के औचित्य और अनौचित्य को पूरी तरह से तोलकर ही अपने कार्यक्षेत्र में उतरना चाहिये। आप अपने भीतर आत्मविश्वास को जगाओ इसीमें सुख दुख का निर्माण है। अपनी गहराई में बैठकर आप अपने को पा सकते हो।

❋ हमारे पास दुनिया के पूरे सुख साधन और वैभव उपलब्ध है पर हमें शांति नहीं है। संसार में मनुष्य द्वारा जितने भी कार्य अथवा उद्यम किए जा रहे हैं सबका एक ही उद्देश्य है शांति। शांति का अर्थ केवल यह नहीं है कि मुख से चुप रहें अपितु मन का चुप रहना ही सच्ची सुख शांति का आधार है। सुख और शांति का गहरा नाता है। लड़ाई, दु:ख और लालच को नष्ट करने के लिए शांति सशक्त औजार है। धन-दौलत और संपदा से संसाधन खरीदे जा सकते हैं परंतु शांति नहीं। आवश्यकताओं को पूरा करते-करते पूरा समय निकल जाता है फिर भी न शांति मिलती है न खुशी। जहां शांति है

वहां विकास है, जहाँ विकास है वहां सुख है। शांति का सागर परमात्मा है।

* अगर आप प्रयत्न करते है फिर भी सफलता नहीं मिलती तो निराश होने की जरूरत नहीं है ऐसा ही एक उदाहरण अमेरिकन राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन का है जो बार-बार असफल होने पर भी सफल हुए। कोशिश करते रहो सफलता अवश्य मिलेगी।

* काम करनेवाला मरने से कुछ घंटे पूर्व ही बूढ़ा होता है।

* कर्मफल का त्याग ही सच्चा त्याग है। यही मुक्ति है।

* कर्मनिष्ठता से पुरुषार्थ उसी तरह देदीप्यमान होता है, जिस प्रकार अग्नि में तपने से कुंदन।

* आश्चर्य यह है कि लोग जीवन को बढ़ाना चाहते हैं सुधारना नहीं।

* मनुष्य जीवन अत्याचार से लड़ने को मिला है।

* मनुष्य गुणों से श्रेष्ठ बनता है, आसन पर बैठने से नहीं। महल के शिखर पर बैठने से कौआ गरुड़ नहीं बन जाता।

* मनुष्य सुसंगति में रहकर गुण पाता है तो अपने एक अवगुण से भी मुक्त हो जाता है।

* संयम सफलता की कुंजी है।

* मित्रता से मनुष्य को जो सफलता मिलती है, किन्तु आचरण की पवित्रता उसकी हर इच्छा को पूर्ण कर देती है।

* दुनिया में अच्छे दोस्त बहुत कम मिलते है और उनकी भी कद्र करनेवाले उससे भी कम।

* अपने दिल की शांति चाहते हो तो अपनी ख्वाहिशों और हसरतों को सब्र की कब्र में दफना देना चाहिए।

* दूसरों को खुश करो और खुशी प्राप्त करो क्योंकि जो दूसरों को खुश रखता है ईश्वर उसे भी खुश रखता है।

* बुराई का बदला बुराई और भलाई का बदला भलाई होता है। आप दूसरों को जख्मी करते हुए अपने आपको फायदा नहीं पहुंचा सकते।

* अगर आप चाहते है कि आपके बाद भी आपका नाम कायम रहे, तो अपनी संतान को अच्छे संस्कार दो।

* वे लोग इतने खास होते हैं जो दूसरों का दुख अपने दिल में समेट लेते हैं लेकिन अपने गम अपने पास ही रखते हैं।

* नफरत को नफरत से नहीं बल्कि मुहब्बत से खत्म किया जा सकता है।

* मुस्कुराहट आत्मा का दरवाजा खोल देती है।

* किस्मत हमेशा हिम्मतवालों का ही साथ देती है।

* ऊंचे पहाड़ पर चलने के लिए हमेशा आहिस्ते आहिस्ते चलना चाहिए।

* व्यापार वैसे तो संसारी काम है उसे सच्चाई और ईमानदारी से किया जाए तो वे इबादत बन जाती है और व्यापार करते समय ग्राहक के सामने अपने लाभ के लिए झूठी कस्मे और शपथ नहीं खानी चाहिए। नहीं तो व्यापार धन्धे में बरकत नहीं रहती।

* हम जिसे पसन्द करते हैं उसे देखकर मुस्कराते हैं, जिसकी फिक्र रहती है उसके लिए रोते है, जिससे प्यार करते हैं उससे सभी बातें बताते हैं लेकिन नाराज भी उसीसे होते है जिसे हम अपना मानते हैं।

* जब घटना के साथ मन जुड़ता है, प्रियता और अप्रियता के संवेदन की अनुभूति जुड़ती है तब अकस्मात् सुख या दुख का अनुभव होता है। हमारे दुख का मूल परिस्थिति नहीं है, पदार्थ नहीं है, घटना नहीं है। ये सब निमित्त बन सकते हैं।

किन्तु जहां सुख और दुख पैदा होता है वह सारा चेतनाशक्ति की अनुभूति में पैदा होता है। हमने अनुभूति को निकाल दिया। जब तक मिथ्यादृष्टि समाप्त नहीं होती, तब तक दुख के कारणों को समाप्त नहीं किया जा सकता।

* महिलाओं की मौजूदगी किसी भी जगह के माहौल को बेहतर बना देती है। ऐसी जगह पर नकारात्मक सोच नहीं होती। माहौल काफी ऊर्जावान रहता है।

* धर्म का सानिध्य शाश्वत है। वीतराग धर्म ही आपको पार लगा सकता है।

* जब तक मन में पाप है तब तक पूजा-पाठ करना व्यर्थ है।

* अपने शत्रु में अच्छी बातों को खोजना और उसे अपनाना ही अच्छा गुण है। साहसी लोग यह खोज नहीं करते कि कितने शत्रु हैं, वे जानना चाहते हैं कि वे कहां से है?

* दूसरों को सिखानेवाला खुद कुछ नहीं सीख सकता। यदि मनुष्य कुछ सीखना चाहे तो उसकी हर भूल उसे कुछ न कुछ सिखा सकती है।

* स्त्री के सम्मान से सभ्यता का परिचय मिलता है।

* जिसके हृदय में सच है उसे डरने की जरूरत नहीं है।

* धन के लोभी के लिए सच्चाई कुछ नहीं और व्यभिचारी के लिए पवित्रता कुछ नहीं होती।

* शाह की हैसियत हारती है तो फकीर की हैसियत से ही।

* लोग विवेकशील कीचड़ में पड़े रत्न को भी पहचान जाते हैं।

* पछतावा कायरता के लिए होता है, वीरता के लिए नहीं। वीरता कभी नहीं पछताती।

* जनता कल्पवृक्ष है। जो भावना आप लेकर जाएंगे, वही आप उससे पाएंगे।

* नफरत नफरत से कभी कम नहीं होती। वह प्रेम से ही कम होती है।

* गलती कोई भी कर सकता है लेकिन मूर्ख के अलावा कोई और उसे करना जारी नहीं रखेगा।

* ख्याति की अभिलाषा वह पोशाक है जिसे ज्ञानी भी अंत में उतारते हैं।

* काम उपयोगी हो तो उसकी कठिनता की परवाह नहीं करनी चाहिए।

* जो अपमान और हानि चुपचाप बर्दाश्त कर लेते हैं, उन्हें स्वर्ग में भी सुख नहीं मिल सकता।

* वही काम सबसे अच्छा होता है जिससे ज्यादा से ज्यादा लोगों को आनंद मिलता हो।

* इतिहास प्राय: सगों से नहीं, परायों से बनता है।

* संदेह हमारा शत्रु है, वह हमारे हृदय में संदेह उत्पन्न करता है।

* चरित्र को हमेशा उज्ज्वल और पवित्र रखना चाहिए।

* सत्य का सर्वश्रेष्ठ अभिनंदन यह है कि हम उसे अपने आचरण में लाएं।

* जो विद्यार्थी कोई प्रश्न पूछता है वह कुछ क्षणों के लिए मूर्ख होता है लेकिन जो पूछता ही नहीं वो जिंदगी भर मूर्ख ही रहता है।

* देश का उद्धार विलासियों से नहीं हो सकता। उसके लिए सच्चा त्यागी होना आवश्यक है।

* जो बात मन में है उसे बोलने की हिम्मत रखो और जो बात किसी के दिल में है उसे समझने की समझ रखो।

* अच्छे लोगों का हमारी जिंदगी में आना हमारी किस्मत होती है और उन्हें संभालकर रखना हमारा हुनर और प्रतिभा होती है।

✻ खुशी तब मिलेगी जब आप जो सोचते हैं, जो कहते हैं और जो करते हैं, उसमें तालमेल हो।

✻ पुराने जमाने में लोग अपनी नींद, भोजन, हंसी, परिवार एवं अन्य सांसारिक सुखों का त्याग करके एकांतवासी हो जाते थे, वे संत कहलाते थे परंतु आजकल उन्हें पेशेवर कहा जाता है।

✻ अजीब है हमारे मन का तर्क हम समझौता चाहते हैं जब हम गलत होते हैं, पर हम न्याय चाहते हैं जब दूसरे गलत होते हैं।

✻ जीवन एक किताब की तरह है उसके कुछ अध्याय सुख के हैं, कुछ दु:ख के और कुछ रोमांचक। जब तक आप अगला पृष्ठ नहीं बदलोगे तो आप आनेवाले अध्याय के बारे में आप कुछ नहीं जान पाओगे कि उसमें आपके लिये क्या लिखा गया है।

✻ मनुष्य मकान बदलता है, वस्त्र बदलता है, रिश्तेदार बदलता है, फिर भी दु:खी रहता है कारण वह अपना स्वभाव नहीं बदलता।

✻ दुनिया में चार तरह के लोग हैं- एक वे, जिनका मानना है कि मेरा तो मेरा है ही, तेरा भी मेरा है। ये मिथ्यादृष्टि है। दूसरे वे, जिनका मानना है कि भाई, मेरा मेरा है और तेरा तेराहै। ये सम्यक् दृष्टि है। तीसरे वे, जिनका मानना है कि भाई, तेरा-तेरा ही है, मेरा भी तेरा है। ये संत-दृष्टि है और चौथे वे, जिनका मानना है कि न मेरा है- न तेरा है ये सब एक झमेला है- यह हंस दृष्टि है।

✻ विश्वास और प्रेम में समानता है। दोनों में से कोई भी जबर्दस्ती पैदा नहीं किया जा सकता।

✻ अनुभव मनुष्य को गलत फैसलों से बचाता है मगर अनुभव गलत फैसले से ही आता है।

✻ ज्ञान का घमंड सबसे बड़ी अज्ञानता है एवं अपनी अज्ञानता की सीमा को जानना ही सच्चा ज्ञान है।

✻ तर्क न करें क्योंकि तर्क से तकरार बढ़ती है। समर्पण से सौहार्द बढ़ता है। तर्क सिर्फ उलझाता है। समर्पण समाधान देता है। जो सुख समर्पण में है, अकड़ में कहां? जो सुख झुकने में है वो तनने में कहां? तर्क नर्क है। समर्पण स्वर्ग है। समर्पण पर जिएँ।

✻ मनुष्य के जीवन में तीन चीजों का बड़ा महत्व है- संपत्ति, सन्मति, सद्कृति। संपत्ति मनुष्य को प्रतिष्ठा प्रदान करती है। सन्मति प्रभाव और सद्कृति परलोक सुधारती है। मनुष्यों को अपना उच्चारण और आचरण दोनों सुधारना चाहिए। क्योंकि एक तस्वीर हजार शब्दों के बराबर होती है और एक तकदीर तस्वीर से भी बढ़कर।

✻ आप जब कामयाबी की बुलंदियों पर होते हैं, तो लोगों को भूल जाते हैं और आप जब बर्बादी की कगार पर होते हैं, तो लोग आपको भूल जाते हैं।

✻ इस संसार में दुख और श्रम प्यार करने लायक है। दु:ख के बिना हृदय निर्मल नहीं होता और श्रम के बिना मनुष्यता का विकास नहीं होता।

✻ जो आपके साथ दिल से बात करता हो, उनको कभी दिमाग से जवाब मत देना।

✻ गुस्सा अक्ल को खा जाता है, अहंकार मन को खा जाता है। प्रायश्चित पाप को खा जाता है, लालच ईमान को खा जाता है, चिंता आयु को खा जाती है और रिश्वत मनुष्य को खा जाती है।

✻ प्यार उसे करो जो आपसे प्यार करे। स्वयं से भी ज्यादा आपपर ऐतबार करें। आप बस एक बार कहो कि रुको दो पल और वो उन दो पलों के लिए पूरी जिन्दगी इंतजार करे।

✻ ज्ञान जहाँ से मिले वहां से फटाफट उठा लेना चाहिए।

❋ भरोसा हर किसी का जीतते रहो, आगे उसका फायदा मिलेगा।

❋ दोस्त बनाते रहो क्योंकि कोई ये नहीं जानता कि किस समय किस कंधे की जरूरत पड़ जाये।

❋ जिंदगी में बदलाव जरूरी है। सिर्फ मूर्ख और मुर्दा कभी नहीं बदलते।

❋ सीढ़ी और सड़क बैठने के लिए नहीं होती इनपर चढ़ते रहना, बढ़ते रहना जरूरी है। बदलाव का मतलब यह नहीं कि हम अपने अतीत को भूल जाएं बदलाव का अर्थ है गतिशीलता। अगर जीवन ठहर जाये तो धुंधला हो जायेगा।

❋ ईश्वर को उसके प्रेम के लिए धन्यवाद मत करो। वह तो प्रेम करेगा ही। उसे धन्यवाद इस बात के लिये करो कि उसने आपके हृदय में अपने प्रति प्रेम की लौ जगाई।

❋ इन्द्रधनुष बनने के लिये वर्षा व धूप दोनों की जरूरत है। इसी प्रकार जीवन को सुन्दर व रंगीन बनाने के लिये सुख और दुख दोनों की आवश्यकता है।

❋ लोग अज्ञान के कारण दु:खी है? क्योंकि अज्ञान के कारण वे अपने सत्यस्वरूप को भूल गये हैं और अन्य लोग जैसा कहते हैं वैसा ही अपने को मान बैठते हैं। यह दु:ख तब तक दूर नहीं होगा जब तक मनुष्य आत्म-साक्षात्कार नहीं कर लेगा।

❋ नासमझ दूसरों में दोष देखते हैं। अर्ध समझदार अपने को दोषी मानते हैं। बुद्धिमान किसी में दोष नहीं देखते। वे जीवन-धारा को वैसे ही स्वीकार करते हैं, जैसे वह बह रही है। प्रेम ज्ञान की कुंजी है।

❋ हर व्यक्ति जो ये जानता है कि दूसरों को कैसे जीना चाहिए, और वो दूसरों को सलाह देने लगता है पर वो यह नहीं सुनना चाहता कि उसे कैसे जीना चाहिए।

❋ सबका अपना-अपना स्वभाव है। किसीको साधु बनने से सुख मिलता है। जिसके अंदर त्याग के संस्कार है उसे त्याग में सुख मिलता है और जिसे भोग का संस्कार है उसे भोग में सुख मिलता है।

❋ उपलब्धि और आलोचना एक दूसरे की मित्र हैं, उपलब्धियाँ बढ़ेगी तो निश्चित ही आलोचना भी बढ़ेगी।

❋ लोग जल्दी से उन्नति नहीं कर पाते क्योंकि बाहर की विचारधाराओं का बहुत बड़ा बोझ हिमालय की तरह उनकी पीठ पर लदा हुआ है।

❋ हमारे जीवन का उद्देश्य है इस बात को समझना कि हम अमर तत्व हैं। ऊपर से ओढ़ा हुआ शरीर नहीं।

❋ हमें बहुत सी बातों का ज्ञान हो। किंतु उससे बेहतर होगा कि अपने थोड़े-बहुत ज्ञान का हम उत्तम प्रयोग करें।

❋ जिस क्षण आप सांसारिक पदार्थों में सुख की खोज करना छोड़ देंगे और स्वाधीन हो जायेंगे, अपने अन्दर की वास्तविकता का अनुभव करेंगे, उसी क्षण आपको ईश्वर के पास जाना नहीं पड़ेगा ईश्वर स्वयं आपके पास चलकर आयेंगे यही दैवी विधान है।

❋ समय ईश्वर की देन है, जो कि हमें उधार दिया गया है हमें चाहिये कि प्रत्येक क्षण हम उत्तम तरीके से बितायें।

❋ यदि आप प्रेम-पथ पर चलते हो तो पीड़ा को जीवन का अंग मानो, दुखी न हो, क्रोधित न हो आनंद की प्राप्ति प्रेम करने व प्रेम पाने में है।

❋ मित्र साथ छोड़ सकते हैं और संबंधी हमें अस्वीकार कर सकते हैं- किंतु एक है जो हमें सदा प्यार करता है और वह है ईश्वर।

❋ साधना का सबसे सीधा व सरल मार्ग ईश्वर-प्रेम का मार्ग है।

* इच्छा पूर्ण होना सफलता है और इच्छायें बढ़ती ही जाती हैं, असली खुशी को पाने के लिये प्रभु के वरदानों की गणना करो।

* कई व्यक्ति अपने अन्याय का पोषण करने के लिए प्राचीन दलीलें देते थे जिसमें मानव घुट घुटकर अपने आपको समाप्त कर रहा होता है। प्राचीन अन्याय और वर्तमान की दुर्घटनाओं के आधार पर अपने अन्याय की मंजिल खड़ी करने वाले शैतान लोग है मनुष्य नहीं। मनुष्य तो वो ही हो सकता है जो उपस्थित परिस्थितियों में सर्वोत्तम सिद्धांतों को स्वीकार करें।

* कर्मफल की इच्छा रखना कृपण का कार्य है।

* कर्म की मुक्ति आनंद में एवं आनंद की मुक्ति कर्म में है। कर्म ही आनंद है।

* आत्मा जिस कार्य को करने में सहमत न हो, उस कार्य को करने में शीघ्रता न करो।

* अधूरा काम और अपराजित शत्रु दोनों ही बिना बुझी चिंगारी के समान हैं।

* बिना मित्र के जीवन इस प्रकार है जैसे बिना गवाह के मृत्यु।

* फुटबॉल के खेल की तरह ही जीवन का भी यही नियम है, पूरी मजबूती से अपनी जगह बनाओ।

* दूसरों पर दोष नहीं लगाए? हम अपने को ही सुधारेंगे। यह भाव रखना चाहिए।

* अपने अनुभवों से बड़ा गुण कोई नहीं।

* धन से सद्‌गुण नहीं उत्पन्न होते, लेकिन सद्‌गुणों से धन एवं दूसरी वस्तुएं प्राप्त होती हैं।

* बड़े कार्यों की सफलता के लिए छोटे कार्यों को आरंभ में करना चाहिए।

* प्रत्येक अवसर के लिए तैयार रहना सफलता का रहस्य है।

* सेवा ही वह सीमेंट है, जो दंपति को जीवन पर्यंत स्नेह और साहचर्य में जोड़े रख सकता है, जिस पर बड़े-बड़े आघातों का भी कोई असर नहीं होता। जहां सेवा का अभाव है, वहीं विवाह विच्छेद है, परित्याग और अविश्वास है।

* सुंदरता आंखों से नजर आती है और मन के द्वारा स्वीकार या अस्वीकार की जाती है।

* सौंदर्य यदि दोष के ग्रहण से युक्त हुआ तो फिर सदैव के लिए नष्ट हो जाता है।

* सुंदर मुख अपनी मौन प्रशंसा करवा लेता है।

* स्त्रियों का सौंदर्य उनकी लज्जा और पति प्रेम में है। इसके बिना सुंदरता का फल विषमय और दग्ध करनेवाला होता है।

* सौंदर्य रसिक लोगों को रिझाता है।

* सौंदर्य प्रकृति से प्राप्त होता है और विद्वत्ता से जवान बना रहता है।

* सुंदरता को श्रृंगार की आवश्यकता नहीं।

* सुंदर वस्तु निरंतर आनंद प्रदान करती है।

* सुंदर हृदय विश्व की समग्र सम्पत्ति से ज्यादा मूल्यवान है।

* स्त्री एक आंख से रोती है और दूसरी आंख से हंसती है। पुरुष ऐसा नहीं कर सकता।

* सौ वर्ष जीने की कामना रखते हो तो जवान और हंसमुख मित्रों के बीच रहो।

* स्वर्ग पाने के लिए झूठ बोलनेवाला भूत और भविष्य की पीढ़ियों को नरकगामी करता है। सर्वनाश को निमंत्रण देता है, जो पृथ्वी तथा स्त्री प्राप्ति के लिए झूठ बोलता है।

* सांप की केंचुली एक बार उसके जिस्म से अलग हो जाए तो फिर उसके शरीर पर नहीं चढ़ती। इसी प्रकार शरीर छूटने के बाद सुंदरता पुन: प्राप्त नहीं होती।

* सज्जन लोग रत्न पाकर उतने प्रसन्न नहीं होते, जितने प्रसन्न उस रत्न को किसी उचित पात्र को देकर होते हैं।

* साधारण जीवन की यही गति- जवानी में भूल, बुढ़ापे में पश्चात्ताप और मृत्यु में सार-हीनता।

* सभ्यता तो गति है, स्थिति नहीं, यात्रा है, बंदरगाह नहीं।

* समुद्र की तुलना में आकाश और आकाश की तुलना में मनुष्य की आत्मा सदा बड़ी होती है।

* सुंदर शरीर की तुलना में सुंदर आचरण ज्यादा अच्छा है।

* संपूर्ण योग्यता और पूरी सामर्थ्य से ही व्यक्ति के कार्य सर्वोत्तम रूप में सामने आते हैं।

* समस्त कला अनुकरण योग्य है।

* सबसे सस्ता मनोरंजन पुस्तक पढ़ना है, जिसकी तुलना अन्य मनोरंजनों से अधिक स्थायी खुशी प्रदान करती है।

* सच्चा बलवान वही है, जिसने मन पर काबू पा लिया है।

* सूर्योदय के पश्चात तक सोते रहने वालों का तेज, बल, आयु एवं लक्ष्मी नष्ट हो जाती है। ब्रह्ममुहूर्त में ही निद्रा त्यागनेवाले उत्तम स्वास्थ्य एवं सुखी जीवन प्राप्त करते हैं।

* सभी साधकों को श्रीमद्भागवद्गीता में अपने कल्याण का साधन मिल जाता है।

* सभी दूसरे लोग खाने के लिए जीवित रहते हैं जबकि जीवित रहने के लिए खाना चाहिए।

* सेवा हेतु अर्पण किया गया बल अमर है।

* स्वार्थ के लिए भगवान की कीर्ति को नष्ट नहीं करना चाहिए।

* स्वतंत्र वही हो सकता है जो अपना कार्य स्वयं कर ले।

* संत किसी भी सद्कार्य को पूर्णत: परमात्मा में समर्पित करता है।

* सच्ची लगन के बिना किसी में भी महान प्रतिभा पैदा नहीं हो सकती।

* संस्कृति स्वभाव का मिठास, दृष्टिकोण की समझदारी, आत्मा की शक्ति, बुद्धिमत्तापूर्ण हिम्मत और एक सुसंस्कृत मस्तिष्क की विशेषता है।

* सहनशीलता की भी एक सीमा होती है और उस सीमा के पश्चात सहनशीलता भी एक दोष हो जाती है।

* संसार रूपी इस वाटिका में फूलों के अतिरिक्त कुछ नहीं है। अपना भ्रम ही एक कांटा है।

* स्वाधीनता विकास का प्रथम चरण है।

* स्वतंत्रता कानून सम्मत कार्य करने का अधिकार है।

* सनकी उस आदमी को कहते हैं जो प्रत्येक वस्तु का मूल्य तो जानता है लेकिन उसकी अहमियत नहीं।

* स्वतंत्रता और न्याय की महत्ता के पश्चात जनसाधारण के लिए शिक्षा का महत्व है, जिसके बिना स्वतंत्रता और न्याय सदैव के लिए नहीं ठहर सकते।

* समाज की अंतिम शक्ति को हिफाजत के साथ संजोए रखने का कार्य समाज के व्यक्तियों के अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं कर सकता और यदि हम उनको इतना जागरूक नहीं समझते कि वे अपने पूर्ण विवेक के साथ उस शक्ति

को कायम रख सकें, तो उसका इलाज उनसे इस शक्ति को छीनना नहीं है, अपितु उनके विवेक को शिक्षा द्वारा जाग्रत किया जाना अति आवश्यक है।

* सिपाही लड़ते हैं और राजा नायक बन जाते हैं।
* समस्त इतिहास झूठ का एक ऐसा पुलिंदा है जिसे सच का पुट दिया जाता है।
* संसार में केवल एक ही जाति है और वह है मनुष्यता।
* स्वास्थ्य भौतिक पदार्थों पर नहीं अपितु सोचने की शक्ति पर निर्भर करता है। स्वास्थ्य के विषय का विश्वसनीय प्रमाण भौतिक इंद्रियां नहीं हैं।
* संसार सोने का मृग है, दो विरोधी इसे बांटने पर सहमत हो जाएंगे, लेकिन वह आपस में ही कट मरेंगे और सोने का मृग यथावत रहेगा। इस कलियुग में मृगतृष्णा के पीछे भागनेवालों का यही अंजाम होगा।
* सतत सतर्कता ही स्वतंत्रता का मूल्य है।
* स्वतंत्रता सम्मान की तरह एक पथरीला द्वीप है। जिसका कोई किनारा नहीं।
* सत्कार ही सज्जनों का धन है।
* संस्कृति सौंदर्य की भावना को जाग्रत करती है।
* सुधार के बिना प्रायश्चित ऐसा है, जैसे छिद्र किए बिना यान से जल निकालना।
* समस्त महापुरुष मध्यम वर्ग से उत्पन्न होते हैं।
* सर्व साधारण जनता की उपेक्षा एक बड़ा राष्ट्रीय पाप है।
* समस्त भौतिक सुखों को पाकर भी हम संतुष्ट नहीं होते, क्योंकि तब हम मानसिक शांति खो बैठते हैं।
* सम्मानित जन के लिए अपयश मौत से भी बुरा है।
* सच्चे हृदय से निकला हुआ वचन कभी निष्फल नहीं होता।
* सुखों के भोग की लालसा आत्मसम्मान का सर्वनाश कर देती है।
* स्वाभिमानी और पवित्र हृदय पुरुष निर्धन होने पर भी श्रेष्ठ माना जाता है।
* सितारों तक पहुंच जाने के पश्चात (कल्पना की दुनिया के स्वप्न) यह भी हो सकता है कि एक भी सितारा तुम्हारे हाथ न लगे और तब आपके पास मुट्ठी भर (यथार्थ जगत) धूल भी न होगी।
* सुख भाग्यशाली को परखता है और संकट महान व्यक्ति को।
* सुख संपूर्ण संसार में है लेकिन वह महसूस अपने हृदय से ही किया जा सकता है।
* संसार में ऐसे अपराध कम हैं जिन्हें क्षमा नहीं किया जा सकता।
* सुखी परिवार सभी एक जैसे होते हैं, लेकिन प्रत्येक दुखी परिवार अपने तरीके से दु:खी होता है।
* स्वस्थ शरीर आत्मा का अतिथि भवन है और अस्वस्थ शरीर इसका कारागार।
* सर्वोत्तम मनुष्य त्रुटियों की भट्टी से ढलकर निकलते हैं।
* सत्यहीन तप और सत्यहीन पूजा वैसे ही व्यर्थ है, जैसे ऊसर भूमि में बोए जानेवाले बीज।
* साहित्य ऐसा कुछ लिखने की कला है, जिसे दो बार पढ़ा जाएगा, पत्रकारिता ऐसा कुछ लिखने की कला है, जो

तत्काल समझ लिया जाएगा।

* सच्ची शिक्षा वह है जो स्वयं को, आत्मा को, ईश्वर को और सत्य को पहचानने में सहायता दे सके।

* सुख-शांति के लिए अंदर उतरो, बाहर मत भागो।

* इस संसार में वही जीवित है जिसने यश एवं कीर्ति के कर्म किए।

* इस पृथ्वी पर साधन करने से सभी काम सफल होते हैं।

* दर्शन का उद्देश्य जीवन की व्याख्या करना नहीं, उसे बदलना है।

* आप जगत की आत्मा हो, आप सूर्यचन्द्र तारा हो, आप सर्वत्र चमक रहे हो, समस्त जगत तुम्ही हो किससे घृणा करोगे और किससे झगड़ा करोगे अतएव जान लो कि तुम वही हो और इसी रुचि में अपना जीवन ढालो।

* सुंदरता बढ़ जाती है यदि आपमें गुण भी हों।

* पुरुषार्थ दाएं हाथ में, तो सफलता आपके बाएं हाथ में होगी।

* आप विवेक को अपना गुरु बना लो सफलताएं तुम्हारे इर्द-गिर्द होंगी।

* हमारे विवेक के द्वारा इच्छाएं नियंत्रित होती हैं। ऐसा न हो तो प्रत्येक व्यक्ति विश्व विजेता हो जाए।

* हृदय यदि पागल हो जाए तो उसका लक्ष्य घृणा में नजर आता है।

* हमे कई बार रस्म रिवाज की वजह से आत्मा की खिलाफत करनी पड़ती है। हमारी शान गिरकर उठने में है क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो गिरा न हो। हमारा गौरव कभी न गिरने में नहीं है अपितु हर बार उठने में है।

* हर हाल में खुश रहने की विद्या सत्संग से ही मिलती है।

* हम दूसरों को बड़ी कठोरता से सुधारना चाहते हैं परन्तु अपना सुधार नहीं करते।

* हम जो कुछ देते हैं, वास्तव में देते नहीं अपितु कुछ पाते हैं।

* हमारा मन और मस्तिष्क शांत होना चाहिए- चाहे हम हिंदू हों, मुसलमान हों, ईसाई हों या किसी अन्य धर्म के अनुयायी। समाज की शांति को व्यक्ति से अलग करके नहीं देखा जा सकता।

* सत्याग्रह ऐसी तलवार है जिसके सब ओर धार है।

* हम किसी भी वस्तु को इतनी उदारता के साथ नहीं बांटते, जितनी नसीहत को।

* हमारा जन्म केवल निद्रा और भूल के समान है।

* हीरा एकमात्र ऐसी बर्फ है जो किसी भी लड़की को गरम रख सकता है।

* हमें मूर्खों का आभारी होना चाहिए, वे न होते तो हम लोग कैसे कामयाब होते।

* हमें अपने युद्ध के हथियारों को गाड़ देना चाहिए जिससे विश्व में शांति और परमानंद के फूल उगें, हमें हथियार डाल देने चाहिए, जिससे कि हम परमात्मा की ओर हाथ उठाकर प्रार्थना कर सकें। हममें से प्रत्येक इस विश्व में शांति लाने के लिए प्रेम और प्रकाश फैलाए।

* हृदय के पास कुछ विवेक होते हैं जिनका कारण स्वयं हृदय भी नहीं जानता।

* हर बच्चा इस संदेश को लेकर आता है कि ईश्वर अभी मनुष्य से निराश नहीं हुआ है।

* अपने उचित कर्म में लगे रहने से ही मानव को सिद्धि प्राप्त होती है।

* अच्छे कार्य, जो छिपकर किए जाते हैं, सबसे अधिक आदर के पात्र हैं।

* जब तक जीवन है, सद्‌गुणों की आराधना करते रहना चाहिए।

* जीवन संस्कार प्राप्ति का दूसरा नाम है।

* जो मनुष्य अपनी इंद्रियों को काबू में रखता है, सफलताएं स्वयं ही उसके काबू में हो जाती हैं।

* संसार में जो व्यक्ति सफलता की खोज में है, वस्तुत: वह या तो रुपया खोज रहा है अथवा कीर्ति।

* हजारों संगीनों की अपेक्षा चार विरोधी समाचार पत्रों से अधिक डरना चाहिए।

* हमें अपनी संस्कृति के स्रोतों को खुला रखकर उसकी धारा को प्रेममय बनाना है, तब और संस्कृतियां भी उसमें मिलकर भारतीय संस्कृति को पुष्ट कर सकेंगी।

* हर मनुष्य में ईश्वर का वास है, कटु वचन से वह ईश्वर भी आहत होता है।

* हमारा बौद्ध मत केवल अपनी बात नहीं करता बल्कि सब प्राणियों की बात करता है, ताकि आत्मा में शांति रहे। लेकिन हम सामाजिक न्याय और पर्यावरण के लिए अहिंसक ढंग से काम करते रहें।

* हमें आज अनगिनत संप्रदायों की नहीं बल्कि ऐसे मनुष्यों की जरूरत है जो कर्म की दृष्टि से बेहतर हों।

* यह धर्म के पहलू हैं- मूल्य, प्रतीक और अभ्यास। अभ्यास और प्रतीक में विविधता होती है, लेकिन मूल्य हर धर्म में समान है।

* हमारे समाज का आज जो रूप है, वह न जाने कितने ग्रहण और त्यागों के पश्चात साकार हुआ है।

* हम अक्सर धार्मिक सहिष्णुता की बात करते हैं, लेकिन आज के संदर्भ में यह शब्द निरर्थक हो चुका है। सहने की जरूरत तो वहां पड़ती है, जहां प्रेम का अभाव हो। हम जिसे प्रेम नहीं करते उसे सहते हैं, उसकी हरकतों को बरदाश्त करते हैं, उसके अस्तित्व को निबाहते हैं। दूसरे धर्मों और दूसरी आस्थाओं में भी ऐसा ही होता है।

* हजारों रास्ते ऐसे हैं जिस पर हम कभी चले नहीं, जीवन के हजारों स्वास्थ्यप्रद और गुप्त द्वीप हैं। मनुष्य और मनुष्य का जगत अभी भी और अन्वेषित है।

* हमारा मनुष्यत्व एक दरिद्र वस्तु होता यदि उसमें वह देवत्व न होता जो हमारे अंदर उभरता है।

* हिंदू धर्म वेद प्रणीत है और वेदों में छुआछूत का कोई आधार नहीं है।

* हम जितना शीघ्र लोगों की भावनाओं का अनुमान लगा सकें, उतना ही विश्वहित के लिए अच्छा होगा।

* हमारी आवश्यकताएं जितनी कम होंगी, हम ईश्वर के उतने ही नजदीक होंगे।

* हंसमुख तथा बुद्धिमान चेहरा संस्कृति का संकेत है।

* श्रीकृष्ण के पास एक ही अर्जुन था जबकि आज हर शख्स अर्जुन है और श्रीकृष्ण की उसे कोई आवश्यकता नहीं है।

* श्रेष्ठ पुरुष सफल कहे जानेवाले पापियों के पाप का सदैव परित्याग करते हैं।

* हिंसा से समस्या का हल नहीं होता। पारस्परिक सहयोग एवं शांति से ही एक आदर्श समाज की स्थापना हो सकती है।

* हम इतना बुराई से नहीं डरते जितना बदनामी से। बदनामी का डर न हो तो विश्व में पापों की संख्या कई गुणा बढ़ जाए।

* हर कार्य संपन्न होता है और हर समय के लिए कार्य होता है।

* श्रेष्ठ साध्य के लिए श्रेष्ठ साधन भी आवश्यक है।

✻ खोदनेवालों का भी भार जिस प्रकार पृथ्वी सहन करती है उसी प्रकार अपने निंदकों को सहन करना एक विशिष्ट धर्म है।

✻ संसार में जब कोई प्रतिभा का धनी व्यक्ति दिखाई देता है तो उसकी एक ही संकेत से पहचान हो जाती है कि मूर्ख लोग उसके विरुद्ध गिरोह बनाने लगते हैं।

✻ घृणा करना शैतान का कार्य है, क्षमा करना मनुष्य का धर्म है, प्रेम करना देवताओं का गुण है।

✻ किसी को भी अनुपस्थित की निन्दा का हक नहीं।

✻ कोई भी आए उसे ईश्वर समझो, लेकिन तब स्वयं को अधम भी मत समझो।

✻ जो बल से विजय प्राप्त करता है वह शत्रु पर आधी विजय ही प्राप्त करता है।

✻ कोई खुशी ऐसी नहीं, जो गम से भीगी न हो।

✻ दुनिया में आज आतंकवाद, उग्रपंथ और असहिष्णुता बढ़ रही है, क्योंकि लोग केवल धर्म के अभ्यास, प्रतीकों और रीति-रिवाजों से बंधकर रह गए हैं। लोग मानव मूल्यों को भूल गए हैं।

✻ अपने से हो सके, वह काम दूसरे से नहीं करवाना चाहिए।

✻ मनुष्य को कर्म करते हुए सौ वर्ष जीने की इच्छा रखनी चाहिए।

✻ अपने कार्य को पूरा करो और खरे बनकर पेट भरो। बलवान, क्रियाशील, कर्त्तव्यपरायण, ईमानदार और मेहनती व्यक्तियों को ही जीवन का सर्वोच्च आनंद प्राप्त होता है।

✻ जीवन वीरों का है, जो मरना जानते हैं। कायर तो पानी के बुलबुले के समान हैं, उनका जीना झूठा है।

✻ जीवन फल है, कला उसका रस।

✻ जिसको रहस्य गोपनीय रखना नहीं आता वह सफलता का मुंह नहीं देख सकता।

✻ जो लोग सचमुच बुद्धिमान हैं, वे असफलताओं से कभी घबराते नहीं।

✻ असफलता का प्रधान कारण प्राय धनाभाव नहीं, अपितु शक्ति और सामर्थ्य का अभाव है।

✻ असफलता का भूत सभी को परेशान करता है। यह किसी भी कार्य की सफलता के प्रति आपके मन में सन्देह उत्पन्न करता है। यही सन्देह आपके साहस का सबसे बड़ा शत्रु है। सभ्यता का निर्माण करने में उन्हीं लोगों को सफलता हासिल हुई है, जिन्हें विश्वास था कि जिस कार्य का बीड़ा उन्होंने उठाया है, उसे वे पूरा करके ही रहेंगे और जिन लोगों के मन में असफलता का भय समाया रहता है, वे सदैव प्रगति एवं उन्नति में बाधक रहे हैं।

✻ पूरी हिम्मत से लड़ते रहो, यदि जीत गए तो यह देश हमारा है। हार में तो मौत ही मौत है। क्योंकि हमें यहां से कोई भागकर जीवित तो जाने नहीं देगा।

✻ जब विचार चंचल होता है तो वह अस्त-व्यस्त और शक्तिहीन हो जाता है, इसलिए विचारों की स्थिरता ही व्यक्ति को सम्पूर्ण बनाती है।

✻ जीवन में सफलता हासिल करना तनिक भी कठिन नहीं है। लेकिन अभीष्ट सफलता की प्राप्ति के लिए सबसे पहले हमें भय को अपने भीतर से निकाल बाहर करना चाहिए।

✻ जो व्यक्ति अपने साथियों से जल्दी सोकर उठता है और अपने स्वास्थ्य की सीमाओं की चिन्ता न करके अधिकाधिक काम करता है, वह अन्त में जरूर ही सफल होता है। जीवन में कामयाबी हासिल करने के लिए व्यक्ति

को लगातार कठिन परिश्रम करना चाहिए। उसे दिन-रात अधिक से अधिक काम में लगे रहना चाहिए। सफलता के लिए इससे बढ़कर अन्य कोई विचारधारा नहीं।

* जो व्यक्ति अपने कार्य में ईमानदार हैं, उन्हें यह समस्त संसार पुरस्कार के रूप में दिया जाता है।

* जब कोई मनुष्य अपने काम में पूरी निष्ठा से जुट जाता है और पूर्ण प्रयास करता है तो उसे अपने मन में शक्ति और उत्साह का अनुभव होता है। यदि वह उसी काम को किसी अन्य तरीके से करता, तो उसे ऐसी शक्ति व उत्साह कभी भी हासिल नहीं होते। इस बात का कोई महत्व नहीं कि आप क्या काम करते हैं। कोई भी काम हो, आपको उसे इस प्रकार करना चाहिए कि वह आपका अपना है।

* लोग प्राय: व्यापार में इसलिए असफल होते हैं, क्योंकि वे अपने मन को उस काम पर एकाग्र नहीं कर पाते।

* जीवन में किसी योजना के बिना कार्य करना ऐसी ही मूर्खता है जैसे बिना दिग्दर्शक यंत्र के जहाज को समुद्र में ले जाना। जिस जहाज की पतवार टूट चुकी हो तथा जिसमें दिग्दर्शक यंत्र भी न लगा हो, तो उसके इंजन में कितना ही ईंधन क्यों न भरा हो, वह सम्पूर्ण समय इधर-उधर तैरता रहेगा और अपने निश्चित स्थान पर कभी नहीं पहुंच पाएगा।

* उद्देश्यहीन व्यक्ति ही जीवन में असफलता का सामना करते हैं, क्योंकि उद्देश्यहीन होने पर वे न तो काम में रूचि लेते है न पूरी निष्ठा से ही काम को करते है। उनका मन हमेशा चंचल रहता है इसलिए वे दृढ़ता से काम में नहीं लगे रह सकते। वे अपने कामों को एक सूत्र में नहीं पिरो सकते। वे अपने जीवन को न कोई दिशा दे सकते हैं और न उसे सार्थक ही कर सकते हैं।

* जो व्यक्ति किसी निर्धारित उद्देश्य के प्रति पूरी तरह समर्पित होकर काम करते हैं, संसार उनकी गाथाओं को गाता है। ऐसे व्यक्तियों का एक नैतिक दृष्टिकोण होता है। उनका कोई-न-कोई लक्ष्य होता है और तभी उन्हें अभीष्ट सफलता भी प्राप्त होती है। यदि व्यक्ति में जरा भी क्षमता है और उस विषय का समग्र ज्ञान है, तो उसे सफलता के साथ-साथ यश की भी निश्चित प्राप्ति होगी।

* परिस्थितियों को अपने अनुरूप या स्वयं को माहौल के अनुरूप ढालने का गुण किसी भी व्यक्ति के लिए बहुत जरूरी है, परन्तु इसके साथ-साथ यह भी सत्य है कि आप जिस किसी काम में लगें, आपको पूरी तरह वहीं होना चाहिए। जिस काम में लगे, उसी के सम्बन्ध में सोचना चाहिए, उसी के सम्बन्ध में योजनाएं बनानी चाहिए, उसी के लिए काम करना चाहिए और उसी के लिए अपनी शक्ति, एकाग्रता यहां तक कि सब कुछ अर्पित कर देना चाहिए।

* ईश्वर ने मुझे बनाया ही इसलिए है कि मैं विशाल धन-सम्पदा कमाऊं और उस धनराशि को लगातार बढ़ाता चला जाऊं। मैं जो धनराशि कमाता हूं, वह उधार मांगने वाले निखट्टू और भिखमंगों के लिए नहीं है।

* जीवन किसी को स्थाई सम्पत्ति के रूप में नहीं मिला है। वह तो थोड़े समय के लिए सिर्फ प्रयोग के लिए मिला है।

* अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए आपको मानसिक रूप से भी तैयारी करनी होगी। जिस काम को आप शारीरिक रूप से करने में सक्षम हैं, उसे मानसिक रूप से करने की क्षमता भी आपमें होनी चाहिए।

* महान लोग सुख एवं दु:ख में एक समान व्यवहार करते हैं।

* अधिक गर्व करना, अधिक बोलना, अधिक जोश दिखाना, शक्ति का परिचायक नहीं होता।

* विश्व की सर्वोत्तम शक्तियां शब्दविहीन है।

* एक शान्त, स्थिरचित्त सर्जन ही ऑपरेशनों में अधिक सफल होता है। एक सन्तुलित मस्तिष्कवाला विद्यार्थी, अध्यापक एवं नेता ही अधिक सफल होता है। शान्त मस्तिष्क ही ठीक से सोच सकता है। शांत चित्त व्यक्ति अपने मस्तिष्क को सदैव संतुलित रखता है।

* जो व्यक्ति जरा सी बात पर चिन्तित होने लगता है, कुढ़ने लगता है अथवा क्रोध में भर जाता है, वह अपनी ही दुर्बलता प्रकट करता है। इससे सामनेवालों को यह पता चल जाता है कि उस व्यक्ति को न तो अपनी शक्तियों का ही ज्ञान है तथा न ही उसमें आत्मसंयम है। जो व्यक्ति स्वयं को नियंत्रित नहीं रख सकता, उसे किसी भी क्षैत्र में अग्रगणी नहीं बनाया जा सकता। वह असफल होगा, यह निश्चित है। सन्तुतिल मस्तिष्कवाला मनुष्य कभी भी असफल नहीं रहता।

* सफलता के लिए उत्साह एक जरूरी गुण है। इसके अभाव में सफलता नहीं मिल सकती। जो व्यक्ति अपने निश्चित उद्देश्य को पूरा करता है, मन में आए आलस्य को दूर भगा देता है, अपने कार्य को निरन्तर करता चला जाता है, वह अवश्य सफल होता है। क्योंकि वह अपने कार्य को प्रधानता देता है न कि सुख आराम को।

* जो व्यक्ति सबल है, योग्य है, गुणी है, वह समुद्र की तरह गम्भीर होता है। छोटी-मोटी बातों से वह विचलित नहीं होता। वह शीघ्र ही जोश अथवा क्रोध में नहीं आता।

* कभी भी राजनेता बनाएं, आपका उद्देश्य सदैव चाहिए कि आप स्वयं को सर्वोत्तम कलाकार या राजनेता बनाएं। आपका उद्देश्य सदैव यह होना चाहिए कि आप स्वयं को सर्वश्रेष्ठ मानव के रूप में स्थापित करेंगे।

* संसार में तीन प्रकार के मनुष्य हैं- नीच, मध्यम और उत्तम। नीच मनुष्य बाधाओं के भय से काम शुरू ही नहीं करते, मध्यम पुरुष काम शुरू तो कर देते हैं, लेकिन बाधा पड़ने पर उसे बीच में ही छोड़ देते हैं। केवल उत्तम पुरुष ही जिस काम को शुरू करते हैं, हजार बाधाएं पड़ने पर भी उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं।

* यदि हम अपने समाज में श्रेष्ठ इंसानों का निर्माण करना चाहते हैं तो हमें प्रत्येक व्यक्ति को यह सिखाना होगा कि वह अपनी शक्तियों को संरक्षित रखे। जो अपनी शक्तियों को व्यर्थ ही नष्ट नहीं होने देता, वह प्रत्येक बात की ठीक नाप-तौल करता है। उसकी चेष्टाओं में समरसता पाई जाती है, उसके प्रत्येक कार्य में उचित तालमेल होता है। उसकी चाल में लय-ताल होती है। जिस तरफ से भी उसे देखो, वह सुन्दर दिखाई देगा, महान एवं पूर्ण दिखाई देगा तथा उसमें विराटता के दर्शन होंगे।

* सम्पत्ति मिलने पर जो हर्ष में आपे से बाहर नहीं हो जाता, विपत्ति आने पर जो विकल होकर रोने नहीं लगता, युद्ध की स्थिति में जो कायरता नहीं दिखाता, ऐसे पुत्र को जन्म देकर उसकी जननी धन्य हो जाती है।

* बहुत से लोगों का जीवन इसलिए भी बिगड़ जाता है कि उनमें विवेक-शक्ति नहीं होती। उनमें धीरता व स्थिरता का अभाव होता है।

* हर एक बात को बारीकी से परखो, उसकी परीक्षा करो, छानबीन करो व उसे भली-भांति समझो। प्रत्येक बात की अच्छाई-बुराई पर विचार-विमर्श करो। इससे आपकी निर्णय-शक्ति में हजारों गुणा बढ़ोत्तरी हो जाएगी। इससे आपकी कार्यक्षमता भी बढ़ेगी।

* उद्दण्ड प्रकृति के व्यक्ति संकीर्ण हृदय होते हैं। उनमें विशालता नहीं होती। उनमें सहानुभूति नहीं होती। उनमें उदारता नहीं होती। उनमें दूसरे का दृष्टिकोण समझने का धैर्य नहीं होता। वे कभी मान ही नहीं सकते कि उनसे भूल भी हो सकती है। संभवत: विश्व की अधिकांश दुर्घटनाएं ऐसे लोगों के ही हाथों हुई हैं या होती हैं।

* समाज में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो कि अपने किसी विचार अथवा मत को सदैव दूसरों पर थोपने का प्रयास भी किया करते हैं। दूसरे चाहें अथवा न चाहें, वे अपने विचारों का बखान अवश्य करेंगे। वे हठ करेंगे कि उनका मत पूर्णत: ठीक है। वे कहेंगे कि उनके मत से अच्छा मत और कोई हो ही नहीं सकता। वे अपने मत को बदलने के लिए अथवा उसमें आंशिक परिवर्तन करने के लिए भी कभी तैयार न होंगे। अक्सर ऐसे हठधर्मियों से समाज दूर ही भागता है।

* जो भी महान पुरुष हैं वे परिस्थितियों के अनुरूप शीघ्रता से स्वयं को ढाल लेते हैं। उद्योग में असफल हो जाना, घाटा पड़ जाना, परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाना अथवा कोई संकट आ पड़ना- महान पुरुषों का मन ऐसी बातों से विचलित नहीं होता। वे अपने पैरों पर खड़े रहते हैं। वे मैदान छोड़कर नहीं भागते। उनका पलायन में विश्वास नहीं रहता। वे परिस्थितियों का डटकर मुकाबला करते हैं। वे अपने मस्तिष्क का सन्तुलन नहीं गंवा बैठते और अन्त में वे विजयी होते हैं। सन्तुलित मस्तिष्कवाला व्यक्ति अच्छा निर्णय लेने की सामर्थ्य रखता है। उसके शारीरिक गुणों में ऐसा समन्वय होता है कि वे परस्पर मिल-जुलकर उसका मदद करते हैं। उसाक यह गुण उसके जोश एवं उत्साह की शक्ति को बढ़ाता है। वह उसे क्रोधित, हताश अथवा अधीर नहीं होने देता जिससे वह अपने कार्य को एकाग्रता, निष्ठा व लगन से पूर्ण करके ऊंची पायदान की ओर छलांग लगा देता है।

* ज्यादातर मनुष्य स्वयं को चिन्ताओं से घिरा हुआ महसूस करते हैं। खाते-पीते, चलते-फिरते वे किसी न किसी चिन्ता का शिकार हुए नजर आते हैं। ये चिन्ताएं ही उनके शारीरिक एवं मानसिक विकास में अवरोध उत्पन्न करती हैं। लेकिन दुनिया में कोई भी चिन्ता ऐसी नहीं है जिसका साहस के द्वारा मुकाबला न किया जा सके।

* दैहिक चिन्ताएं सर्वथा व्यर्थ हुआ करती हैं और अधिकांश का जन्म वहम के कारण होता है। जब आपके मन में वहम के कारण दैहिक चिंताएं जन्म ले लिया करती हैं तो आप उनका शिकार बन जाया करते हैं। फिर यह चिंताएं आपका शरीर कमजोर कर डालती हैं।

* वह प्रत्येक बात, जो हमारी योग्यता व हमारे विश्वास को दृढ़ बनाती है, हमारे साहस को कई गुणा बढ़ा देती है।

* साहस किसी कार्य को करने की सामर्थ्य नहीं, अपितु उस कार्य के प्रति हमारा रवैया है तथा वही सफलता-असफलता की विभाजन रेखा है। कोई मनुष्य जिस कार्य को भली-भांति कर सकता है, यदि वह उसी कार्य को अनिश्चित मन से डरते-झिझकते प्रारम्भ करता है, तो वह आधी बाजी तो उसी समय हार जाता है।

* युद्ध हार गए तो कोई बात नहीं, सब कुछ तो नहीं हारे? अपराजित निश्चय एवं साहस कभी हार नहीं मानता।

* मनुष्य की महानता उसके साहस से मांपी जाती है। यदि कोई मनुष्य साहसी एवं पराक्रमी हो तो दुनिया उसका गुणगान करती है और उसे वीर एवं साहसी कहकर उसे सम्मानित करती है। सभ्यता एवं संस्कृति का निर्माण सदैव साहसी एवं दूरदर्शी लोगों के हाथों से ही हुआ है।

* अच्छा यही रहेगा कि बच्चे को हम उसे शुरू से ही ऐसे सांचे में ढालने का प्रयास करें कि वह साहसी, आत्मविश्वासी एवं निर्भीक बन सके।

* साहस अवसर की पहचान करता है।

* हमें चाहिए कि हम बाधाओं, भयों, आशंकाओं से घबराएं नहीं, अपितु सभी कठिनाइयों का मुस्कराते हुए साहसपूर्वक स्वागत करें।

* दुनिया के वैज्ञानिक, विचारक एवं विजेता सदैव असम्भव को सम्भव बनाते रहते। लॉरी ब्राउनिंग ने कहा- मैं हमेशा

से लड़ाका हूं- एक लड़ाई और सही- मैं इसे भी पूरे मनोबल से लडूंगा।

❋ अपने कार्य को पहले समझो तथा फिर दानव की भांति उस पर टूट पड़ो।

❋ हमें अपने जीवन से हीन भावना, निरुत्साह, अकर्मण्यता आदि मनोविकारों को पूर्णत: त्यागकर साहस, उत्साह एवं कर्त्तव्यपरायणता का परिचय देना होगा। यदि हम चाहते हैं कि हमारे जीवन में आनेवाली बाधाएं खुद ही हमारे समक्ष नतमस्तक होकर हमारे लिए रास्ता छोड़ दें तो हमें सच्ची लगन, आत्मविश्वास, साहस एवं कर्त्तव्यनिष्ठा से अपने कर्मक्षेत्र में जुट जाना पड़ेगा।

❋ संसार में जिन लोगों ने भी अपार धन-सम्पदा कमाई है वह उनकी प्रेरणा, उत्साह और साहस की बदौलत ही है। उनके पास प्रारम्भ में कुछ भी नहीं था। केवल इच्छाशक्ति, उत्साह, बुद्धिमत्ता और साहस ही ऐसी पूंजी है जिसकी बदौलत सौभाग्य के द्वार खुलते हैं। इन व्यक्तियों ने केवल सम्पत्ति कमाने में ही नहीं, अपितु समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने में भी किसी का सहारा नहीं लिया। उन्होंने किसी अन्य व्यक्ति के बजाय केवल अपने आप पर ही भरोसा किया और सफलताएं अर्जित कीं।

❋ ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसने प्रयत्न किया हो और सफलता ने उसके लिए अपने द्वार न खोले हों।

❋ हम्फ्रे डेबी ने कहां- मैं जो कुछ भी हूं, मैंने स्वयं का निर्माण किया है।

❋ सच्ची लगनवाले व्यक्ति के लिए किसी भी प्रकार के कठिन लक्ष्य तक पहुंचना असंभव नहीं।

❋ अपनी संतान के लिए हममें से हर कोई सम्पत्ति जोड़कर छोड़ जाता है। आपने वास्तव में उसे क्या दिया? आपने अपनी सम्पत्ति को अर्जित करने से जो नियंत्रण, अनुभव और ऊर्जा प्राप्त की थी वह ऊर्जा आप अपने बेटे को नहीं दे सके।

❋ जिन लोगों ने अपना जीवन दूसरों के सहारे बिताया है, वे संकट के समय इधर-उधर सहारा ढूंढने में समय बिताते हैं। यदि उन्हें कोई सहारा नहीं मिलता तो उनका विनाश हो जाता है। उनकी स्थिति डूबती नाव जैसी हो जाती है।

❋ इस बात की आशा मत रखो कि तुम्हें कोई मंजिल तक पहुंचा देगा। तुम्हें उस मंजिल तक पहुंचने के लिए स्वयं के कदमों पर चलना होगा। आपको इस बात पर भरोसा नहीं रखना चाहिए तुम्हें कोई आदमी आगे बढ़ने में सहायता करेगा। तुम्हें स्वयं ऊपर उठना है। इसलिए अपनी सहायता स्वयं करो। हर कोई अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है। वह केवल अपने भाग्य का शिल्पी ही नहीं बल्कि उसकी नींव के निर्माण के लिए सामग्री भी स्वयं जुटाता है।

❋ संसार में केवल श्रम द्वारा ही सफलता अर्जित की जा सकती है। सफलता रूपी मंदिर का द्वार आपको अपने हाथों ही खोलना पड़ेगा। महान व्यक्तियों को अपने जीवन में परिस्थितियां कभी भी अनुकूल नहीं मिलीं। उन्होंने अपने मार्ग की सभी कठिनाइयों और विरोधों के साथ संघर्ष किया, तभी उन्हें विजय प्राप्त हुई है।

❋ अधिकांश लोग किसी अवसर की तलाश में रहते हैं। यदि आप मस्तिष्क की शक्ति के बजाय आर्थिक शक्ति बढ़ाना चाहते हैं, यदि आप अपने व्यवसाय की शक्ति के बजाय उद्योग की शक्ति बढ़ाना चाहते हैं तो आपको और अधिक प्रयत्न करना होगा और इस बात की चिन्ता नहीं करनी होगी कि आपके सामने कौन-सी कठिनाइयां या अवरोध खड़े हुए हैं। एक पढ़ने का इच्छुक व्यक्ति, जिसे रोशनी के लिए मोमबत्तियां भी उपलब्ध नहीं थीं, शहर की दुकानों की खिड़कियों से निकलनेवाली रोशनी में बैठकर पढ़ा करता था और जब दुकानें बंद हो जाती थीं तो वह सड़क पर लगी लैम्प पोस्टों के नीचे बैठकर पढ़ता था। वह इतना कमजोर था कि एक हाथ से सड़क की बत्ती वाले खम्भे को पकड़े रहता था और दूसरे हाथ में पुस्तक रहती थी। फिर एक दिन वह प्रख्यात विद्वान बना। मनुष्य अपने जीवन में जिन मूल्यों की प्राप्ति करता है वह

उसकी अपनी टकसाल का ही ढला हुआ सिक्का होता है। उसे अपने स्वयं के अनुरूप ही मूल्य मिलता है। जार्ज वॉशिंगटन एक विधवा का पुत्र था। उसने अपना बाल्यकाल एक अनाथ के रूप में बिताया था। समाज से उसे कोई सत्कार नहीं मिला और न मानद उपाधियां। शेक्सपियर ने स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई के बजाय अपने आपसे स्वयं अधिक सीखा और साहित्य जगत में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में लिखवा लिया। बर्न्स को भी शिक्षा का इतना अवसर नहीं मिला और उसका यौवन घोर गरीबी से गुजरा। रिच एक भूखे-नंगे किसान का बेटा था। उसने पढ़ना-लिखना अपने बड़े भाइयों से छोटी-छोटी कविताएं सुन-सुनकर सीखा।

* हमारे बुजुर्ग लोग कहा करते है कि अपने आपको जानो और वर्तमान युग यह कहता है कि अपनी सहायता स्वयं करो। परिस्थितियों का मुकाबला करते हुए अपना निर्माण स्वयं करना दूसरा जन्म लेने के समान है। ज्ञान में उन्नति करना वास्तविक पुनर्जीवन है। जो व्यक्तित्व निर्माण के लिए संघर्ष करता है, शिक्षा और संस्कृति उसे महत्वपूर्ण सहायक सिद्ध होते हैं। जरूरत है गतिशील रहने की।

* कुछ लोगों के साथ सादगी एवं भोलेपन से कही गई बातें भी व्यंग्य अथवा ताने का रूप धारण कर लेती हैं। इसका कारण यह है कि उसकी अतिशय भावुकता उसे प्रत्येक व्यक्ति के कथन के प्रति संशयात्मक बना देती है। दूसरों की नीयत पर वह शक करने लगता है। वह यही सोचने लगता है कि उसके बहुत-से मित्र हर पल उसकी हंसी उड़ाने की फिराक में लगे रहते हैं। वह इस तरह की कल्पनाओं से जान-बूझकर अपने जीवन को दु:खमय बना लेता है।

* भावुकता चाहे किसी स्त्री में हो अथवा पुरुष में, यह एक प्रकार का अतिवादी अहं ही है। लेकिन इसी अहंवृत्ति के कारण ऐसा व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को अन्य सभी व्यक्तियों एवं वस्तुओं से ऊपर समझने लगता है। भावुक व्यक्ति अनुभव करता है कि वह जो कुछ करता है, जहां कहीं जाता है, जो कुछ कहता है, लोगों की निगाहों का केन्द्रबिन्दु वह स्वयं ही है। अस्वाभाविक तथा अस्वस्थ भावुकता के लिए साहसपूर्ण उपचार की जरूरत होती है। जो अपनी भावुकता पर विजय प्राप्त करना चाहता है, उसे चाहिए कि पहले स्वयं पर नियंत्रण रखे। अति शीघ्र क्रोधित होना छोड़ दे। एक ऐसा अतिशय भावुक व्यक्ति भी है जिससे उसके जिगरी दोस्त एवं निकट सम्बन्धी भी हमेशा सावधान रहते हैं। एक मामूली-से हंसी-मजाक पर भी वह व्यक्ति चिढ़ जाता है तथा उसे अपना जान-बूझकर किया गया अपमान मान लेता है।

* कवि, लेखक, चित्रकार आदि कलात्मक स्वभाववाले व्यक्ति प्राय: काफी भावुक होते हैं। वास्तव में अतिशय भावुकता अविकसित व्यक्तित्व का परिणाम है, अत: इसे त्यागनेवाला ही अपने उद्देश्य में कामयाब हो सकता है।

* आपको कभी भी छोटी-मोटी बातों से व्यग्र अथवा व्यथित नहीं होना चाहिए। वास्तव में इस प्रकार की कमजोरी ओछे चरित्र की परिचायक है।

* आपको चाहिए कि आप विशाल हृदयी बनें, स्नेही बनें, लोगों के हृदय के निकट पहुंचने का प्रयास करें, उनसे आप घुल-मिलकर रहें, उन्हें अपने समान तथा स्वयं को उनके समान समझें। आपको सदैव यह सावधानी भी बरतनी चाहिए कि आप किसी पर नाहक टीका-टिप्पणी न करें, लेकिन यदि किसी ने आप पर ताना कस दिया हो तो, उसे गैस के गुब्बारे की तरह हवा में उड़ा दें। किसी का अपमान करने का प्रयास आपको कदापि नहीं करना चाहिए। क्योंकि यदि आप आसमान की ओर मुंह करके थूकेंगे तो वह आप पर ही गिरेगी।

* मन में उपजी कुण्ठाएं, अभाव, लाचारी ही व्यक्ति में अतिशय भावुकता के भावों को बढ़ाते हैं। खाली दिमाग सदैव

आपके लिए मुसीबतें ही खड़ी करेगा; अत: सामाजिक क्रिया-कलापों में बढ़-चढ़कर भाग लें। नकारात्मक सोचों को अपने मन में तनिक भी स्थान नही दें।

❋ लक्ष्मी एक ही स्थान पर स्थिर नहीं होती। नदी, साधु और धन यदि एक ही स्थान पर रुक गये तो बदचलन हो जाते है। इनका चलते रहना ही कल्याणकारी है।

❋ धन का उपयोग इसप्रकार करो- बालक की तरह उसे भोगो, युवक की तरह दान दो और वृद्ध की तरह सम्भालकर रखो। शरीर का मूल स्वरूप आरोग्य है।

❋ कोकिला का स्वर ही उसका सौन्दर्य है और स्त्रियों का सौन्दर्य उनका पतिव्रत धर्म है। कुरूपों का सौन्दर्य उनकी विद्या है और तपस्वियों का सौन्दर्य उनकी क्षमा है।

❋ जैसे गूंगे के संकेत को गूंगा ही पहचानता है, उसी प्रकार ज्ञानी के सुख को वही जानता है जो ज्ञानी होता है।

❋ जब तक हम स्वयं निरपराध न हों, तब तक दूसरों पर सफलता के साथ कोई आक्षेप नहीं कर सकते।

❋ अच्छे लोग तटस्थ होते जा रहे हैं। वे निरपेक्षता अपना रहे हैं। डरपोक हो गये हैं। उनमें नैतिक साहस नहीं है कि वे समाज में फैली बुराइयां और उन बुराइयों को फैलानेवालों का मुकाबला करें। सामाजिक कामों में नैतिक लोग हिस्सा नहीं लेते। यह उनका पलायनवादी दृष्टिकोण और व्यवहार समाज को पतन की ओर ले जा रहा है। इससे समाज विरोधी काम करनेवालों की तादाद बढ़ रही है। समाज, नेतृत्व की अपेक्षा हमेशा नैतिक रूप से मजबूत लोगों से करता है।

❋ बुराई बुरे लोगों में ही नहीं है बुराई अच्छे लोगों के अपने कर्त्तव्यों से विमुख रहने में भी छिपी है। समाज के प्रति उत्तरदायी कर्त्तव्यों के पालन किये बिना नैतिक समाज की कल्पना कोरी रह जायेगी। खतरे में जियो, एकांत में रहना यह सब डर से दूर भागना है। बुराई का मुकाबला सिर्फ नैतिक साहस से ही हो सकता है।

❋ जो दूसरों की भलाई करना चाहता है उसने भलाई का इरादा करके भलाई करने से पहले ही अपने लिए भलाई कर ली।

❋ वही काम करो जो अच्छे मनुष्य को करना चाहिए, न कि वो जिसे करने का आपका दिल चाहे क्योंकि दिलचाहा काम गलत भी हो सकता है।

❋ लोगों को देखकर उनके बारे में अंदाजा मत लगाओ।

❋ आज का दिन सिर्फ आज ही इस्तेमाल कर सकते हो।

❋ अगर आप कुछ बनना चाहते हो तो एक लम्हा भी व्यर्थ मत गंवाओ।

❋ किसी भी काम का फैसला करने से पहले उसके बारे में उसका अंजाम एकबार फिरसे सोच लो।

❋ जब कोई काम करो तो यह समझ के करो कि ईश्वर आपको देख रहा है, वही आपका गवाह है और वही आपका निर्णय करनेवाला न्यायाधीश है।

❋ इतना फैलो कि सिमटना मुश्किल न हो और इतना हासिल करो कि छोड़ते वक्त किसी प्रकार का कष्ट न हो।

❋ अगर कोई जिंदगी बचाने की कीमत आपकी पूरी जिंदगी भी मांग ले तो उसे इनकार नहीं करना।

❋ गुनाहों में फँसा व्यक्ति दुआओं पर यकीन नहीं करता।

❋ जिंदगी में तकाजा और शिकवा-शिकायत निकाल दी जाये तो शान्ति पैदा होगी।

❋ अच्छी बातें और अच्छे आदाब हीरे की अंगूठी जैसे होते हैं चाहे दाएं से परखो चाहे बाएं से खोट नजर नहीं आयेगी।

✻ जीवन में अगर कुछ करना चाहते हो खाना चाहते हो तो गरीबों का गम खाओ, पीना चाहते हो तो अपने गुस्से को पीलो, किसी से लेना चाहते हो तो बुजुर्गों के आशीर्वाद और दुआएं लो, किसी को देना चाहते हो तो ईश्वर की राह पर चलने दो। अगर रोना चाहते हो तो अपने गुनाहों पर रोओ। अगर जीना चाहते हो तो जीवन जीकर जियो और अगर मरना चाहते हो तो शहीदों की मौत मरो।

✻ अगर कोई व्यक्ति सच्ची गवाही छुपाता है तो यकीनन उसका दिल गुनेहगार है।

✻ कितना बदनसीब है वो मनुष्य जिसके दिल में ईश्वर ने प्राणियों पर रहम करने की आदत पैदा नहीं की।

✻ अगर किसी चीज को अमरता प्राप्त है तो सिर्फ उसके अच्छे कर्म है जिनके कारण हमेशा की जिंदगी में अमन, चैन और आराम नसीब होगा। जिंदगी चाहे कितनी भी हसीन और लम्बी हो अंत में खत्म हो जानेवाली है।

✻ दुनिया की जिन्दगी में वही मनुष्य बार-बार ठोकर खाता है जो ऊपर ऊंचाई की तरफ देखकर चलता है। नीचे देखकर चलनेवाला ठोकरों से बच जाता है। उसके दिल में सब्र होता है और सब्र से ही शांति से जिंदगी जीने का हौसला मिलता है।

✻ एक दूसरे की जड़ मत काटो न एक दूसरे से दुश्मनी मत करो न आपस में नफरत करो न ही एक दूसरे से ईर्ष्या करो।

✻ ताअज्जुब है उस व्यक्ति पर जो नरक की वास्तविकता को जानता है और फिर भी गुनाह पर गुनाह किये जा रहा है। तरअज्जुब है उस व्यक्ति पर जो मौत को सच जानता है और हंसते रहता है पर उसकी तैयारी नहीं करता। आश्चर्य है वो ज्ञान बर्बाद है जिसपर अमल न किया जाए।

✻ युक्ति की पहली निशानी खामोशी है। जरूरत के मुताबिक बात करनी चाहिए।

✻ ईश्वर अपने बंदों से चाहता है कि वो अपनी जुबान से इकरार करे और लोगों से नर्म व्यवहार करें।

✻ अगर आप अच्छा स्वास्थ्य चाहते है तो नेक बनो, नेक बनने के लिए बुद्धिमान बनो और बुद्धिमान बनने के लिए धर्म का पालन करो। ईश्वर से डरो क्योंकि ईश्वर का डर ही बुद्धि की जड़ है।

✻ दुनिया से मुहब्बत करनेवालों का अंजाम नरक है। कोई सिर्फ दुनिया का तलबगार होता है ईश्वर उसे ऐशोआराम और दौलत दे दे पर परलोक उसके लिए नरक ही है।

✻ ज्ञानी धर्म का चिकित्सक होता है और धन-दौलत धर्म का रोग। अगर चिकित्सक खुद रोग में फंस जाये तो फिर दूसरों का इलाज क्या करेगा।

✻ ईश्वर के पास हर समस्या का इलाज है।

✻ दुनिया में कई ऐसे लोग है जो कभी पाठशाला, महाविद्यालय नहीं गये लेकिन फिर भी अपने जीवन में सफल है क्योंकि उन्होंने लोगों को समझा है।

✻ अपने आसपास के माहौल के किसी भी व्यक्ति को अपने से कम न समझे। एक छोटा बच्चा, एक भिखारी, एक जानवर, एक चींटी भी आपको कुछ न कुछ सीखा सकती है।

✻ जीवन में सबसे बड़ी बाधा अधिक बोलना, सबसे बड़ा पाप- भय, सबसे खतरनाक घृणा, सबसे बुरी भावना है ईर्ष्या, सबसे बड़ी भूल समय की बर्बादी, सबसे बड़ा विश्वसनीय मित्र स्वयं का अपना हाथ और कभी न वापिस मिलनेवाला खोया सम्मान है।

✻ मनुष्य का बेहतरीन शिक्षक अनुभव है। जिंदगी की मुसीबतें और ठोकरें उसकी शिक्षा का जरिया है।

❋ अच्छा चरित्र बुराइयों से बचने का नाम नहीं है बल्कि दिलों दिमाग में बुराई करने की इच्छा तक न होने का नाम है।

❋ खामोशी इज्जत को बढ़ाने में मददगार साबित होती है।

❋ जो काम हंसी नहीं कर पाती वो काम आंसू कर गुजरते हैं।

❋ दिलों को जीतने के लिए ज्ञान और कर्म दोनों की जरूरत होती है।

❋ फूलों की तरह हमेशा मुस्कुराते रहो यह जिंदगी कुछ ही दिनों की बहार है। सुबह सूरज निकलने तक रोजी में कमी पैदा करता है।

❋ घमंड एक शैतानी बुराई है जो मनुष्य की खूबियों को बुराई में बदलती है और मनुष्य को तबाह करनेवाली आदत है। जिस आदमी में घमंड की आदत पैदा हो जायेगी उसका पतन होगा। जो मनुष्य खाने, कपड़े, चाल-चलन, मकान, सामान, संस्कृति और सभ्यता, धन-दौलत सब चीजों में अपने को दूसरों से अच्छा और दूसरों को अपने से नीचा समझकर उनके साथ ऊंच-नीच का व्यवहार रखता है उसे यह तुरंत छोड़ देना चाहिए। यह आदत मनुष्य को मनुष्य से अलग करती है और ऊंच नीच की खाई को गहरा बनाती है। मनुष्य के दिल में अपनी कमी और लापरवाही का ख्याल आ जाये तो घमंड का भूत मनुष्य से काफी दूर हो जायेगा।

❋ मेहमान के आनेपर खुशी और मुहब्बत का इजहार करना चाहिए। उसके खाने-पीने में कोई कमी न होनी पाए, उसकी इज्जत और आब्रू की हिफाजत करें। मेहमान को तन्हाई का एहसास न हों।

❋ यदि मनुष्य मर्यादा में रहकर कोई काम करता है तो वह सदा सुखी रहेगा। मर्यादा से बाहर रहकर अधिक बोलना दु:खों का कारण बनता है।

❋ जब व्यक्ति के जीवन में कोई दूरदृष्टि, कोई मकसद उसे हासिल करने का संकल्प नहीं होता तो जीवन में संघर्ष करना भी छोड़ देता है। जीवन में संघर्ष नहीं होगा तो कुछ भी हासिल नहीं होगा, कोई खुशी भी नहीं मिलेगी।

❋ रिश्ते एक दिन में नहीं बनते और न ही एक दिन में मजबूत होते हैं। सही तरीका यह है कि रिश्तों को बेहतर बनाने के लिए हमेशा काम करते रहो, जब तुम दुखी होना भूल जाओ, तो समझ लेना रिश्ता मजबूत हो गया है।

❋ ऐसे व्यक्ति जो आपके स्तर से बहुत ऊपर या बहुत नीचे के हैं उन्हें दोस्त न बनाओ क्योंकि वह तुम्हारे कष्ट का कारण बन सकते हैं समान स्तर के मित्र ही सुखदाई होते हैं।

❋ धर्मज्ञानी की संगति और धर्म की किताबों के अध्ययन से खुशहाल जिन्दगी हासिल हो सकती है।

❋ फकीरी यह है कि किसी चीजपर लालच न करें। जब बिना मांगे कोई दे दे तो मना नहीं करे और जब ले ले तो उसे संग्रह नहीं करें।

❋ जब आप किसी नीयत समय के लिए आपस में उधार का लेन-देन करो तो उसे लिख लेना ही बेहतर है।

❋ मुहब्बत सूरज से करो पर उसमें तपिश होती है। आग से करो पर वह जला देने की क्षमता रखती है। पानी से करो वह बहाकर ले जाता है। फूलों से करो पर वो मुरझा जाते है। कांटों से करो उनमें चुभन होती है। खुशियों से करो यह सामायिक होती है तो फिर मुहब्बत किससे की जाए। तो फिर ईश्वर से ही मुहब्बत करनी चाहिए। हम सबको सिर्फ उसी का मोहताज रहना है। वह हर चीज का मालिक है। वो हमसे राजी होगा तो हम सब राजी होंगे।

❋ सबसे बड़ी ख्वाहिश हर मनुष्य को खुश करने की ख्वाहिश है पर आप किसीको खुश करने में सक्षम नहीं होंगे।

❋ दुनिया को जब रात को आसमान में तारों की रोशनी नजर आती है तो उसकी निगाहें खुद ब खुद आसमान की तरफ उठ जाती है।

❋ हम पुराने लोगों को तो याद करते है और नये लोगों में जिन्दगी गुजारते है फिर हमें शान्ति कैसे मिल सकती है। पुराने लोग चले गये। जमाना बीत गया। उनकी याद अपने हाल को बदहाल बना देती है।

❋ मुस्कुराहट जिन्दगी के लिये जरूरी है क्योंकि अपनी जिंदगी हंसते-मुस्कुराते गुनगुनाते गुजारेंगे तो खुशहाल जिन्दगी से बीमारियां दूर रहती है जिसतरह ज्ञान के बिना दिमाग बेकार होता है उसीतरह मुस्कराहट के बिना जिंदगी सिर्फ एक मिट्टी का ढेर है। इस जिंदगी में मुस्कराहट के लिए वक्त मिलना मुश्किल है। लोग यहां तक कहते है कि हमें दवा खाने की फुर्सत नहीं मिलती पर इस जीवन में वो ही व्यक्ति मुस्कुराता है जिसको ईश्वर ने मुस्कुराने के लिए तकदीर दी है। कहते है- **या तो दिवाना हंसता है, या तू जिसे तौफीक दे, वर्ना इस दुनिया में आकर कौन मुस्कुराता है?** अक्सर चेहरों पर अनजाने भय, तनाव और परेशानी की घटाएं छायी रहती है। दुख ही सुख का अहसास कराता है। प्यासे को ही पानी की अहमियत का अंदाजा होता है। इसलिए आप दु:ख में भी मुस्कुराने की कोशिश करो।

❋ किसी को भी आप सुझाव दे सकते है पर निर्णय उसको स्वयं लेना पड़ता है। अच्छे-बुरे परिणाम के लिए स्वयं वो जिम्मेदार है। सुझाव आपको हर किसी व्यक्ति से नहीं लेना चाहिए। उस क्षेत्र के विशेषज्ञ से ही सुझाव ले। उन लोगों से ले जिन पर आपके निर्णय का असर होनेवाला है। गलत मनुष्य से सुझाव लेनेवाले लोग गलत होते है।

❋ नकल करो लेकिन किसी नायक की, खलनायक की नहीं।

❋ जब हम सही समय पर सही पाठ नहीं सीख पाते हैं तो बुरे समय में वही पाठ हमें मजबूर होकर सीखना पड़ता है।

❋ यदि आप भलाई का अनुकरण परिश्रम के साथ करो तो परिश्रम खत्म हो जाता है और भलाई बनी रहती है। यदि बुराई का अनुकरण सुख के साथ करो तो सुख चला जाता है और बुराई बनी रहती है।

❋ समृद्धियां पराक्रमी के साथ रहती हैं, अनुत्साही के साथ नहीं।

❋ भविष्य की श्रेष्ठता वर्तमान पर निर्भर होती है।

❋ जीवन बहुत छोटा है। इसे दूसरों के दोष निकालने में, ईर्ष्या-द्वेष या अपने प्रति हुए अनुचित व्यवहार की दुखद यादों में व्यर्थ खर्च न होने दें।

❋ चुनौतियों को स्वीकार करें ताकि आप विजय के हर्ष का आनंद महसूस कर सकें।

❋ कर्म भूमि पर फल के लिए श्रम सबको करना पड़ता है, ईश्वर सिर्फ लकीरें देता है, रंग हमको भरना पड़ता है।

❋ हर आदमी की जिंदगी में कुछ ही सच्चे लोग होते हैं, बाकी सब सिर्फ एक भीड़ का हिस्सा होते हैं।

❋ अपनी किस्मत की और अपने जमाने की, अपनी संतान के सामने, अपने बड़ों के सामने, किसी गैर के सामने, अपने दोस्त के सामने चले जाने के बाद अपने मेहमान की कभी भूलकर भी माँ-बाप और गुरु की, खाने की बाद भोजन के स्वाद की शिकायत मत करो।

❋ पुरुष विवाह के पहले स्वतंत्र होता है तो नारी विवाह के बाद स्वतंत्र होती है। पुरुष शादी से पहले अपनी जबान हिलाता है और शादी के बाद अपना सिर। विवाह नहीं हुआ तो एक ही दु:ख है, विवाह हो गया तो हजार दु:ख। सुकून की जिंदगी जीना हो तो सब्र करो।

✻ मनुष्य के पास तन, मन और धन है। जो तन और धन को सम्भालता है वो संसारी है, जो मन और जीवन को सम्भालता है वह संत है। संसारी को चिंता रहती है संसार की। संत शरीर से बेसुध रहता है पर उसे चिंता रहती है कि कहीं उसका मन नहीं बिगड़ जाएं। संसारी अपना धन, तन, बीवी-बच्चों को देता है, अपने कुटुंब कबीले को देता है पर उसको चाहिए अपना मन सिवाय प्रभु के किसी और को न दें। अगर संसार को आपने अपना मन दे दिया तो दुनिया आपके मन को खट्टा कर देगी।

✻ मुफ्त में मिली हुइ, कोई चीज इतनी कीमती नहीं होती जितनी जिंदगी।

✻ किसी और के लिए भी जीना हो तो स्वयं को जीना पड़ता है।

✻ जिंदगी की गाड़ी पर सवार हर व्यक्ति स्वयं उसका अभियांत्रिक होता है। जिंदगी की गाड़ी वैधता निश्चित है पर उसे प्रकट नहीं किया जाता उसके संदेश आते रहते है, बुढ़ापा इसका आखिरी संदेश है।

✻ फायदेमंद दवा अक्सर कड़वी होती है।

✻ कपड़े को काटने से पहले उसे सात बार नाप कर देख लो क्योंकि उसे काटने का एक ही मौका मिलता है।

✻ घर में ईमानदारी से एक ही नौकर काम करता है वो है घर का मालिक।

✻ जो बात बुद्धि छुपाती है नशा उसे प्रकट कर देता है।

✻ पहले तो अपनी पत्नी से कभी किसी प्रकार का वादा मत करो और यदि करते हो तो उसे पूरा करने की योग्यता रखो।

✻ दौलत से जो आदमी को सम्मान मिलता है वो उस आदमी का नहीं, उसकी दौलत का सम्मान है।

✻ प्रभु का प्रेम सूरज से अधिक प्रकाशमान, चांद से अधिक शीतल, मधुर से अधिक मधुर व कस्तूरी से अधिक सुगंधमय है।

✻ जो निष्ठा रखता है, वह कई गुना अधिक शक्तिशाली होता है। सफलता का सबसे पहला नियम यही है, निष्ठावान बनो और सफलता प्राप्त करो।

✻ चिंता झूलनेवाली कुर्सी है आपको व्यस्त तो रखती है पर आप पहुंचते कहीं नहीं।

✻ यदि आप सही हैं तो आपको गुस्सा होने की जरूरत नहीं और यदि आप गलत है तो आपको गुस्सा होने का कोई हक नहीं।

✻ गुस्सा अकेला आता है, मगर हमसे सारी अच्छाई ले जाता है। सब्र भी अकेला आता है मगर हमें सारी अच्छाई दे जाता है।

✻ मृत्यु को एक दिन अवश्य आना है और अपने निर्धारित समय पर ही। फिर भी पूरा संसार मृत्यु से निरन्तर भयभीत रहता है।

✻ प्रेम उत्तेजित होकर भी दुखी नहीं होता। प्रेम सदा धैर्यवान, क्षमाशील, वफादार व आस्थावान और बिना किसी इच्छा के सदा दानशील रहता है।

✻ प्रभु के आशीर्वादों की गणाना करो, तो जीवन में कोई कमी नहीं होगी।

✻ अपने देश की भाषा और संस्कृति के समुचित ज्ञान के बिना देशप्रेम की बातें करनेवाले केवल स्वार्थी होते हैं।

✻ सिर्फ धन कम रहने से कोई गरीब नहीं होता, यदि कोई व्यक्ति धनवान है और इसकी इच्छाएं और बहुत धन कमाने की है, तो वही सबसे गरीब है।

✻ एक खूबसूरत दिल हजार चेहरों से ज्यादा बेहतर होता है इसलिए जिंदगी में हमेशा चुनो ऐसे लोग, जिनका दिल, चेहरे से ज्यादा खूबसूरत हो।

HHH(६००)HHH

✻ किसी भी धर्म में किसी धर्म को बनाए रखने और बढ़ाने के लिए दूसरों को मारना नहीं बताया गया।

✻ जब तक कष्ट सहने की तैयारी नहीं होती तब तक लाभ दिखाई नहीं देता। लाभ की इमारत कष्ट की धूप में ही बनती है।

✻ वक्त भी सिखाता है और शिक्षक भी पर, दोनों में फर्क सिर्फ इतना है कि शिक्षक सिखाकर इम्तिहान लेता है और वक्त इम्तिहान लेकर सिखाता है।

✻ जीना एक कला है। हंसते हुए जीना इससे भी बड़ी कला है। हंसाते हुए जीना और भी बड़ी कला है। पर हंसते हुए मरना सबसे बड़ी कला है। जब तुम पैदा हुए तो दुनिया हँस रही थी और तुम रो रहे थे। अब कुछ ऐसा करो कि जब तुम मरो तब दुनिया रोए और तुम हँसो। रोते हुए पैदा होना दुर्भाग्य नहीं है, वरन् रोते-रोते जीना और रोते-रोते मर जाना- यह दुर्भाग्य है। हँसना खुशियों का खजाना है। संसार में रुदन तो सबके पास है। अगर तुम दूसरों को कुछ देना चाहते हो तो बस उसका चेहरा मुस्कुराहट से भर दो। इससे बेहतर और कोई तोहफा नहीं होगा।

✻ अगर किसी देश को भ्रष्टाचार मुक्त और सुन्दर-मनवाले लोगों का देश बनाना है तो उसके लिए माता, पिता और गुरु ही ये काम कर सकते हैं।

✻ मोह एक बंधन है। कम बोलना एक अच्छी आदत है। घमंड पतन का लक्षण है।

✻ अपने घर का वातावरण सुखद बनाएं रखें। किसी को दु:ख न पहुंचाए। भगवान पर विश्वास रखें। कुछ आदर्शों और सिद्धांतों को जीवन में ढालने का प्रयास करें।

✻ जीवन में सत्यता को प्रमुखता दे क्योंकि एक झूठ के लिए कई झूठ का सहारा लेना पड़ता है।

✻ क्रोध से दूर रहें, क्रोध स्वास्थ्य का शत्रु है। स्वयं को और औरों को भी इसके वातावरण से दूर रखें।

✻ आलस्य को अपने जीवन में प्रवेश न करने दें। आलस्य से शरीर पर खराब असर पड़ता है।

✻ चिंता न करें। चिंतन से अपनी समस्याओं का समाधान ढूंढने का प्रयास करें।

✻ बड़ों के प्रति आदरभाव रखें। अपने आदर्श दूसरों पर जबदरस्ती न थोपें। खुद आदर्शवादी बनकर दिखायें।

✻ अपने कर्त्तव्यों से मुख ना मोड़ें। अपनी असफलता से कुछ सीखें और हिम्मत न हारें।

✻ ज्ञान बांटने से बढ़ता है। आवश्यकता पड़ने पर ही ज्ञान बांटें। दूसरों से शिक्षा लेने के अवसर तलाशते रहें।

✻ दूसरों पर निर्भर रहना ठीक नहीं। दूसरों के सामने स्वयं को दीन-हीन महसूस न करें।

✻ दान देने से धन कभी घटता नहीं, इसलिए जरूरतमंदों पर कुछ धन अवश्य खर्च करें।

✻ परिश्रम सफलता की कुंजी है। परिश्रम करें सफलता आपके कदम चूमेगी।

✻ किसी की निंदा न करें, बेवजह दूसरों की चापलूसी न करें, आत्मविश्वासी बनें।

✻ प्यार में बहुत ताकत होती है, इसलिये जो भी आपके संपर्क में आये प्यार बांटें।

✻ अच्छी बातों को सुनो और सुनकर उसे आगे सुना दो, इससे सुनने की जिम्मेदारी अदा हो जायेगी।

✻ अधिक धन-दौलत का लालच मत करो। जिन्दगी और स्वास्थ्य थोड़ी सी आमदनी पर भी चल सकता है।

✻ बेकारी मनुष्य के गुणों को जंग लगा देती है। इसलिए काम करते रहना चाहिए।

✻ नेक नियती की कोशिश करो, इससे आपका जीवन खुशहाल होगा। मेहनती आदमी कभी भूखा नहीं रहता।

✻ किसी व्यक्ति की अनुपस्थिति में निंदा करना गलत है।

✻ अगर आप किसी बच्चे को किसी रास्ते पर जाने से जितना रोकेंगे वह उस रास्ते पर जाने के लिए उतना ही अधिक उतावला होगा। बेहतर होगा कि उसे खुद रास्ता चुनने दें।

✻ आपका बच्चा सही निर्णय ले, इसके लिए पहले से ही उसे थोड़ी-थोड़ी जिम्मेदारी सौपे ताकि धीरे-धीरे उसकी समझ विकसित हो।

✻ किसी भी कार्य को करने के लिए मन का शक्तिशाली होना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि मन ही मस्तिष्क को सन्देश देकर शरीर को उस कार्य के अनुरूप बनाता है। मन को शक्तिशाली बनाकर ही व्यक्ति अपने कार्य करने की समस्त शक्तियों को जाग्रत कर सकता है। तभी उसे स्वयं पर विश्वास करना आएगा और उसे अपनी योग्यता पर सन्देह नहीं होगा। तभी वह अपने आपको सफलता के मार्ग पर ले जा सकेगा।

✻ मन में दृढ़ संकल्पता तभी आती है, जब वह व्यक्ति स्वयं पर विश्वास करे। उसकी अपने प्रति उच्च विचारधारा हो, वह अपनी योग्यता के बल पर अपने भविष्य को संवारने के लिए प्रयत्नशील हो, तभी व्यक्ति अपना ही नहीं बल्कि पूरे समाज का भी कल्याण कर पाता है, समाज के उत्थान में सहायक सिद्ध होने पर उसकी स्वयं की प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी और वह लोकप्रियता भी प्राप्त कर लेगा।

✻ यदि आप अपने ऊपर विश्वास रखेंगे तो वे शक्तियां जो आपकी कल्पना में भी नहीं होंगी, आपकी सहायता के लिए आ पहुंचेंगी।

✻ जो व्यक्ति हर समय अपने आदर्श को सामने रखता है, जो बाधाओं और कठिनाइयों की चिन्ता नहीं करता, जो विफलता के बारे में सोचा नहीं करता, जिसे अपनी विजय तथा सफलता पर पूर्ण विश्वास होता है, वही अन्ततः विजयी होता है। आप जो कुछ बनना चाहते हैं, जो काम आप करना चाहते हैं, उसी उद्देश्य को सोते-जागते, उठते-बैठते, खाते-पीते, हरदम सामने रखकर उसी पर आपको अपना ध्यान केन्द्रित कर देना चाहिए। यही है सफलता तथा सुख प्राप्त करने का बेहतर तरीका।

✻ वैयक्तिक विश्वास से साहस तथा दृढ़ता उत्पन्न होती है। यह आपकी शक्ति के भण्डार की अन्तिम बूंद भी निकाल लाती है। जंगली जानवरों को प्रशिक्षित करने में उस व्यक्ति को सफलता प्राप्त नहीं हो सकती जो ढुलमुल विश्वास, भय और शंका के साथ पहली बार प्रशिक्षण देना आरम्भ करता है।

✻ कोई व्यक्ति दृढ़ संकल्प से उस समय तक काम नहीं कर सकता जब तक उसे पूरा-पूरा विश्वास न हो जाए कि वह जिस काम के लिए प्रयत्नशील है, उसे वह पूरा कर ही लेगा।

✻ वह चीज आस्था ही है जो जीवन के यथार्थ स्रोतों के बंद द्वार खोल देती है और हम अपने विश्वास तथा निष्ठा के द्वारा उस निस्सीम शक्ति, उस परमपिता तक भी पहुंच सकते हैं। जब आपको स्वयं पर विश्वास हो जाए तो आप कठिनाइयों रूपी इन पहाड़ों को भी उखाड़ सकते हैं और आपका जीवन अपने अभीष्ट लक्ष्य की ओर चल पड़ता है। केवल आप अपने व्यक्तित्व पर भरोसा करना आरम्भ कर दें। अगर आप सोचरूपी इन झंझावातों में उलझे रह गए तो इनसे निकलना आपके लिए दूभर हो जाएगा और आप जीवन की उन ऊंचाइयों को नहीं छू पाएंगे।

✻ कायर बहुसंख्यक होने से प्रसन्न होते है। बहादुर अकेले ही लड़ने में अपना गौरव समझते है।

✻ शिक्षण का कार्य कोई स्वतन्त्र तत्व उत्पन्न करना नही है, सुप्त को जाग्रत करना है।

* क्षण-प्रतिक्षण जो नया दिखाई पडे वही सुन्दरता का और कला का उत्कृष्ट नमूना है।
* वाचालता और कोरी कलम घिसने मात्र से देशसेवा नहीं होती।
* मनुष्य की जिव्हा छोटी होती है, पर वह बडे-बडे दोष कर बैठती है।
* संसार मे ऐसा कोई भी नहीं है जो नीति का जानकार न हो, परन्तु उसके प्रयोग से लोग विहीन होते है।
* जो पुरुषार्थहीन है वह जीवित होते हुये भी मृत के समान है।
* निष्काम होकर नित्य पराक्रम करनेवाले की गोद में उत्सुक होकर सफलता आती ही है।
* एक ही धर्मतत्व को प्राणी पृथक-पृथक रूप में ग्रहण करते है।
* सुदिन अच्छी तुला नहीं है, विपत्ति ही केवल ऐसी तुला है जिसपर हम मित्रों को तोल सकते है।
* हृदय से लालच निकल जाये तो गले से जंजीर निकल जाये।
* कठिन विरह भी मिलन की आशा में सह्य हो जाता है।
* शिक्षा जीवन की तैयारी का शिक्षण काल है।
* श्रम श्रेष्ठ पुरुषों की श्रेष्ठता का मूलमन्त्र है।
* साहित्य से ही साहित्य जाग उठता है।
* निकम्मापन जिन्दगी को उसी तरह खा जाता है जैसे लोहे को जंग।
* कठिन परिक्रम करने पर भी सफलता दूर रहे तो उसे ईश्वर की मर्जी ही मान लेनी चाहिए।
* यदि आपका किसी के साथ वाद-विवाद हो गया हो तो उसे निपटाने का कारगार तरीका यही है कि आप उस व्यक्ति से मधुर शब्दों में बात करे।
* अहिंसा में ही सत्येश्वर के दर्शन करने का सीधा और छोटा सा मार्ग दिखाई देता है।
* आलस्य में दरिद्रता का वास होता है।
* आनन्द उछलता कूदता जाता है, शान्ति मुस्कुराती हुई चलती है।
* मन के साथ संग्राम करना ही सबसे बडा संग्राम है।
* शिक्षा का सबसे बडा उद्देश्य आत्मनिर्भर बनाना है।
* यदि बात तुम्हारे हृदय से उत्पन्न नहीं हुई है तो तुम दूसरों के हृदय को कदापि प्रसन्न नहीं कर सकते।
* जो दिन हमे प्रसन्नता प्रदान करते हैं वे हमे बुद्धिमान बनाते हैं।
* हमारी बुद्धियां विविध प्रकार की है। मनुष्य के कर्म भी विविध प्रकार के हैं।
* अच्छी सन्तान इस लोक और परलोक दोनों में सुख देती है।
* सुदृढ़ मीनारें नष्ट हो जाती है परन्तु यश चिरंजीवी होता है।
* गरीबी अभिशाप भले हो पर आदमी को यह जितना सिखाती है शायद कोई दूसरा नहीं।
* रात नहीं होगी तो सुबह कैसे आयेगी, परेशानी में अवसरों को तलाशे।
* जो प्रतिस्पर्धात्मक कार्यों को सम्मान देता है वही मनुष्य हर स्पर्धा में सफल होता है।
* कम जानकारी खतरनाक होती है लेकिन जानकारी न होना दर्दनाक होता है।

* सफलता कितनी मिलती है इसकी अपेक्षा किस रास्ते से मिलती है इसका महत्व अधिक रहता है।

* किसी ने यदि आपके साथ मजाक भी किया हो तो उस पर प्रसन्नता व्यक्त करें, उस व्यक्ति से लडे नहीं।

* ईश्वर का नजदीक का दोस्त बेहतरीन है जो अपने दोस्त का भला चाहनेवाला हो।

* किसी भी काम को कमतर मत जानो कि जिसको करने में मनुष्य को शर्म या झिझक महसूस हो।

* कोई बीमारी मनुष्य को तोडकर रख दे उस हाल में भी वह अपने लिये दुआ मांगता है।

* किसी की आजिजी करना सबसे बडी इबादत है। बात मान लेना आजिजी है। हक बात मान लेना आजिजी है।

* बन्दे को देख कर ईश्वर याद आये ऐसे शरीफ मनुष्य के साथ उठा बैठा करे।

* दो लोगों के बीच झगडा करवाना गुनाह है। सिर्फ अपनी ही बात पर अडे रहना और दूसरों से बहस करना अच्छी आदत नहीं है।

* ऐसा कोई काम मत करो जिससे किसी का दिल दु:खे। किसीने तुम्हारा दिल दुखाया इसलिये तुम भी उसका दिल दुखाओ यह नेकी नही है।

* जब अपनों पर मुसीबत आ जाती है और वह उनके लिये कुछ नहीं कर पाता है ऐसे हाल में भी वह ईश्वर से दुआ मांगता है।

* जिसका दिल तोड चुके हो उसे खुश रहने के लिये कहना राख में दबी चिनगारी को हवा देना जैसा है।

* जोश और होश बहुत कम एक साथ नजर आते है मगर जिस व्यक्ति में यह दोनों खूबियां मौजूद है वह कभी भी मात नहीं खाता।

* ज्ञान हासिल करो कामयाब रहोगे। ज्ञान मनुष्य के खयालात बुलन्द करता है और राह दिखाता है। ज्ञान मनुष्य की हिफाजत करता है। ईश्वर की राह है ज्ञान। ज्ञान हर नामुमकिन बात को मुमकिन करता है।

* अगर आदमी की जबान मीठी चासनी है तो सब लोग उसके लिये भलाई सोचेंगे और अगर आदमी की जबान कडवी है तो उसको अपनी बीवी बच्चे भी उसके दुश्मन हो जायेंगे।

* लक्ष्य निश्चित होते ही आपके कर्म एक यात्रा का रूप ले लेते है। और फिर आज नहीं तो कल आप अपने लक्ष्य पर पहुंच ही जाते है।

* प्रत्येक प्राणी के जीवन में ऐसा एक अवसर आता है जब भाग्य उसे कुछ करने या कुछ बनने का मौका देता है और वही मौका उसके भविष्य का भी निर्णय कर देता है।

* शुभ कर्म के बिना हासिल किया ज्ञान पाप हो जाता है।

* नापाक आदमी हर भले आदमी का दुश्मन होता है।

* जब प्रकृति को कोई कार्य सम्पन्न कराना होता है तो वह उसे करने के लिये प्रतिभा का निर्माण करती है।

* परीक्षायें तब तक कठिन मालूम होती है जबतक कि परिश्रम से, जी जान से, और आत्मविश्वास से आप उसका मुकाबला नहीं करते।

* निराशा सम्भव को असम्भव बनाकर प्रस्तुत करती है। निराशा बुद्धि की पोषक है।

* संयम की जानकारी और उसका अभ्यास दोनों अलग-अलग है। दोनों एक-दूसरे के बिना अधूरे है क्योंकि अन्धेरेपने में भटकने की पूरी सम्भावना बनी रहती है।

* संसार मे आधे से अधिक लोग तो इसलिये असफल हो जाते है कि समय पर उनमें साहस का संचार नहीं हो पाता और वे भयभीत हो उठते है।

* धैर्य और सहनशीलता का गुण पाने के पश्चात बाकी गुणों की आवश्यकता नहीं रह जाती, क्योंकि प्रत्येक वीर में ही यह गुण होते है।

* स्वभाव यदि सुन्दर है तो वह जादू के समान है। धन की अपेक्षा इसकी शक्ति दुनिया के तमाम खजानों से भी अधिक है और जिसका सौरभ सम्पूर्ण पृथ्वी को अपनी सुरभि से भर देता है।

* जो पुरुषार्थ नहीं करते वे धन, मित्र, ऐश्वर्य, कुल तथा दुर्लभ लक्ष्मी का उपयोग नहीं कर सकते।

* विचार के सिवाय जगत और कुछ भी नहीं है। जगत विचार का ही ठोस रूप है।

* मधुर वचन सुनने में भी और कहने में भी प्रसन्नता देते है लेकिन मधुर वचन अहंकार त्याग से ही सम्भव है।

* सन्तोष यद्यपि कडवा वृक्ष है तथापि इसका फल बडा ही मधुर और हितकर है।

* जब आपको अवसर मिले तो अपने से अधिक अच्छे लोगों का साथ करो।

* सावधान मनुष्य कदाचित ही गलती करते है।

* परिश्रमी धीर व्यक्ति के इस जगत में कोई वस्तु अलभ्य नहीं है।

* जो अन्यायी है उनकी ओर मत झुको।

* असत्य की जीत हो भी जाये तब भी वह अल्पकालिक ही होती है।

* अहंकारी मनुष्य दूसरे के अहंकार से सदैव अत्यन्त उत्तेजित हो जाते है।

* दूसरों के धन का अपहरण करना सबसे बड़ा पाप है।

* भय की भांति ही साहस भी संक्रामक होता है।

* पराधीन मनुष्य सुख के आनन्द को नहीं जान सकता है।

* दु:ख को धैर्य से सहना चाहिये। उसके सामने घुटने नहीं टेकने चाहिये। दु:ख की तरह सुख को भी सावधानी से बरतना चाहिये।

* यदि मनुष्य प्रतीक्षा करे तो हर वस्तु प्राप्त हो जाती है।

* देशाटन सहनशीलता की शिक्षा देता है।

* सांसारिक आकांक्षाये मनुष्य को बांधती है और साथ-साथ घसीटती है।

* ऐसे मनुष्य से मित्रता मत करो जो तुमसे श्रेष्ठ न हो।

* जैसे जंगल में एक हाथी के पीछे बहुत से हाथी चले आते है, उसी प्रकार धन से धन बंधा चला आता है।

* जिस मनुष्य में जितना साहस होता है, उसीके अनुसार उसके संकल्प भी होते है।

* मान बडाई मीठी छुरी है यह विष भरा सोने का घडा है।

* जो कायर है जिसमें पराक्रम का नाम नहीं है, वही दैव का भरोसा करता है।

* विनम्रता के मार्ग से ही विपत्तियों के दलदल को पार किया जा सकता है।

* हमने गलती की है, यह बात हम जिस पल में मान लेते है, उसी पल हम भूल सुधारने की पहली सीढ़ी चढ़ रहे होते हैं।

* छोटी बातों में बडा होना ही सच्चा बडप्पन है।
* एकान्तवास शोक ज्वाला के लिये समीर के समान है।
* कर्म से ही अपने को बहुगुणित कर सकते हो।
* जिन पंडितों को परमार्थ का ज्ञान है उनका अपमान मत करो।
* एक की मूर्खता से किसी दूसरे का भाग्य बनता है।
* आदमी केवल रोटी से जीवित नहीं रहता।
* दूसरों के गुण और अपने अवगुण ढुंढो।
* यह ध्येय है, मृत्यु नहीं, जो मनुष्य को शहीद बना देता है।
* प्रयोजन के दावे अत्यन्त प्रबल है और वे असंख्य है।
* जीवन की महत्वकांक्षाये शिशुओं के रूप में आती है।
* प्राय: संकट विजय के साथ में ही आता है।
* सज्जन पुरुष की वास्तविक परिभाषा यही है कि वह कभी किसी पुरुष को पीडित नहीं करता।
* सत्य चिर-नवीन होता है उसका रस अक्षय है।
* जीवन में सफल होने और प्रभावशाली व्यक्तित्व के लिये प्रबल आत्मविश्वास आवश्यक है। अपने काम के प्रति अच्छी लगन भी आत्मविश्वास को बढाती है और मन को सन्तुष्टि देती है।
* सन्तुष्ट मनवाले के लिये सदा सभी दिशायें सुखमयी है।
* विकृत विचार से बचने का एक अमोघ उपाय रामनाम है। लेकिन यह नाम कंठ से नहीं हृदय से निकलना चाहिये।
* यदि आप जगत का उपकार करना चाहो तो जगत पर दोषारोपण करना छोड दो उसे और दुर्बल मत बनाओ।
* जो मारता है वह सबल है, जो भय करता है वह निर्बल है।
* सत्य बहुधा लोक में अप्रिय होता है।
* दु:ख प्रेम के साथ ही निरन्तर घूमते रहता है।
* भिक्षु हो या राजा जो निष्काम है वही शोभित होता है।
* पुण्यवान लोग जिसको स्वीकृत कर लेते है, उसका पालन करते हैं।
* विपत्ति में पडे व्यक्ति का भला करनेवाले लोग कम ही होते है।
* तकदीर, मुकद्दर, किस्मत, नसीब ये सभी भाग्य के ही नाम है यह जरूर बदलता है पर अपने कर्मों से।
* सफलता दूसरों की तरह बनने में नहीं, खुद को अनूठा बनाने में है।
* अभ्यास न करनेपर विद्या विष समान हो जाती है।
* जैसे नेत्रों के लिये पलक है वैसे ही काम के लिये विश्राम है।
* जिस व्यक्ति ने कभी पर्वत नहीं चढा तो वह नीचे कैसे गिर सकता है। सफलता भी एक शिखर के समान है उस पर चढने की कला मनुष्य को सीखना चाहिये।
* राजा अपने राज्य का प्रथम सेवक होता है।

* अधिक सम्पन्न होने पर भी जो असन्तुष्ट रहता है वह सदा निर्धन है। धन से रहित होनेपर भी जो सन्तुष्ट रहता है वह सदा धनी है।

* जिस प्रकार वृक्ष पर समागम के पश्चात पक्षी पृथक-पृथक दिशाओं में चले जाते है उसी प्रकार प्राणियों के समागम का अन्त वियोग है।

* प्राय: संकट विजय के साथ ही आता है।

* गुरु हमे कितना देता है यह इस बात पर निर्भर है कि हम उससे कितना ले पाते है।

* सफल व्यक्ति की बजाय कोशिश करें कि लोग आपको मूल्यों पर चलनेवाले के रूप में जाने।

* नियमित दिनचर्या आपके जीवन में भी नियमितता लाती है व आपकी एकाग्रता कार्य के प्रति सच्ची लगन, माता-पिता द्वारा दिये गये संस्कारों को भी सामने लाती है।

* मनुष्य यदि आदर्शों के लिये संघर्ष करता है तो बहुत अच्छा है लेकिन यदि वह इन आदर्शों के साथ जीवन व्यतीत करे तो सर्वोत्तम है।

* अगर आप में प्रतिभा है तो दौलत प्राप्त की जा सकती है मगर दौलत के दम पर प्रतिभा कभी प्राप्त नहीं की जा सकती।

* अपनी स्वयं की आत्मा के द्वारा सत्य का अनुसन्धान करो।

* अन्वेषक में दृढ़ निष्ठा होनी चाहिये विश्वास नहीं।

* अपरिचित होने से देवता को भी तिरस्कृत होना पडता है।

* भयभीत व्यक्ति स्वयं दूसरे को भी भयभीत कर देता है।

* पारमार्थिक कर्मों के आचरण से ही मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होता है।

* सज्जन पुरुष की वास्तविक परिभाषा यही है कि वह कभी किसी पुरुष को पीडित नहीं करता।

* सर्वोत्तम विजय प्रेम की है जो सदा के लिये विजेताओं का हृदय बांध लेती है।

* प्रतिभा की अपनी सुगन्ध होती है। प्रतिभाशाली व्यक्ति की इसीसे हर जगह पहचान हो जाती है।

* शास्त्र को जाननेवाला भी जो पुरुष लोक व्यवहार में पटु नहीं होता, वह मूर्ख के समान है।

* विद्वान तो बहुत होते है पर विद्या के साथ जीवन का आचरण करनेवाले बहुत कम होते है।

* जो निष्काम कर्म की राह पर चलता है, उसे इस बात की परवाह कब रहती है कि किसने उसका अहित साधन किया है।

* मनुष्य का विवेक ही उसका सबसे बडा हितैषी है।

* प्रेम करनेवाला पडोसी दूर रहनेवाले भाई से कहीं उत्तम है।

* विश्राम करने का समय वही होता है जब आपके पास उसके लिये समय हो।

* संगीत मानव की विश्वव्यापी भाषा है।

* जीवनभर के कितने अनुभवों का अमृत सूक्ति के एक बिन्दु में रहता है।

* स्नेह जो नित्य नया नहीं उभरता निश्चय ही समाप्त हो जाता है।

* अपमान का भय कानून के भय से किसी तरह कम क्रियाशील नहीं है।

* विनोद प्रियता से ज्यादा असरकारक कोई भी स्वास्थ्यवर्धक टॉनिक नहीं होता।

* आश्चर्य बुद्धिमानी की पहली सीढ़ी है।
* लोभ के कारण सत्य ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती।
* मांगने पर देना अच्छा है पर आवश्यकता अनुभव करके बिना मांगे देना और भी अच्छा है।
* मंगलमयी कोमल वाणीवाला मनुष्य प्राणियों को आनंदित करता है।
* यदि तुम एक बार बोलने से पहले दो बार सोच लेते हो तो तुम अच्छा बोलोगे।
* विद्या शील के अभाव में शोचनीय हो जाती है और द्वेष से अपवित्र हो जाती है।
* यदि आप यह जानना चाहते हो कि नरक क्या है तो जान लो कि अज्ञानी व्यक्ति की संगति ही नरक है।
* जो मनुष्य न किसी से द्वेष करता है और न किसी की आकांक्षा करता है वह सदा सन्यासी ही समझने योग्य है।
* नम्रता तो सबके साथ रखें पर निकटता कुछ लोगों के ही साथ।
* हवा जो साथ लाती है वह उसे उडाकर ले भी जाती है।
* कृतघ्नता से बडा कोई पाप नहीं है।
* चित्त एकाग्र हुये बिना ध्यान और समाधि कठिन है।
* दूसरे के ऐब मत देखो क्योंकि ऐबों के बीज अपने ही अन्दर है।
* मृत्यु मनुष्य की पराजय नहीं है, पराजय है उससे भय।
* ऊंचाई से जल बरसानेवाले बादल के असर को छोड देना उचित नहीं है।
* डूबते सूरज के प्रति लोग अपने द्वार बन्द कर लेते है।
* मित्र पाने का एक मात्र उपाय स्वयं मित्र बनना है।
* दूसरों से नफरत करनेवाले एक दिन खुद घृणा के पात्र बन जाते हैं।
* कोई दूसरा आदमी आपके जीवन पर नियंत्रण करे इससे पहले ही आपको अपने जीवन को काबू में कर लेना चाहिये, आप किसी भी घात-प्रतिघात, षडयन्त्र से सुरक्षित रहेंगे।
* महान लोगों की उदारता का भंडार कभी नहीं घटता।
* भय और दंड से पाप कभी बन्द नही होते।
* गम्भीरता से शंका करनेवाला मन सजीव मन है।
* राज्य छाते के समान होता है जिसका अपने हाथ में पकडा हुआ दंड थकान को उतना दूर नहीं करता जितना कि थकान उत्पन्न करता है।
* मन के दु:खी होने पर सब कुछ असह्य हो जाता है।
* अमृत और मृत्यु, दोनों इसी शरीर में स्थित है। मनुष्य मोह से मृत्यु को और सत्य से अमृत को प्राप्त होता है।
* धीर पुरुष आपत्ति के समय और दृढ़ बन जाते है।
* संयमी पुरुषों को न तो विषयों में आसक्ति होती है और न ही इसके लिये कोई युक्ति करते है।
* इतिहास का सबसे महान व्यक्ति निर्धन होता है।
* विचार से अधिक ठोस वस्तु ब्रह्मांड मे नहीं है।

* बाधाओं पर विजय पाना और अवसर देखकर काम करना ही मनुष्य का कर्त्तव्य है।
* सेना के हमले को तो रोका जा सकता है पर विचारों के हमले को नहीं।
* यदि सही काम करने का वक्त अभी नहीं मिला तो आप उसे पूरा नहीं कर पाओगे।
* अनुभव मनुष्य का सबसे अच्छा अध्यापक होता है पर मूर्ख लोग इससे कुछ नहीं सीख पाते।
* ज्यादा गम्भीर वक्तव्य कई बार चुप्पी में छिपे होते हैं।
* जीवन यापन के दौरान हर मनुष्य को अच्छे बुरे हालात और उनसे जुडे तनावों के साथ जीना पडता है। आप जिस तरह इन मुश्किल क्षणों का सामना करते है उसी पर आपकी सफलता निर्भर रहती है।
* पाप का दंड अवश्य भोगना पडता है।
* शत्रुता का अन्त शत्रु के जीवन के साथ ही हो जाता है।
* बहुत अधिक विश्राम स्वयं दर्द बन जाता है।
* जिसने विपत्ति नहीं झेली, उसे राजमुकुट नहीं मिला।
* सम्पूर्ण राष्ट्र के रक्तरहित विरोध के समक्ष कोई शासन सम्भवत: टिक नहीं पाता।
* रेगिस्तान की मरीचिका जैसी लक्ष्मी बुद्धिमान को मोहित नहीं कर पाती।
* परस्पर विरोधी बातों में एकता करने से बढ़कर दुष्कर कार्य और नहीं है।
* शुभ कर्मों के द्वार कभी बन्द नहीं होते।
* जीवन में रंग कर्मशीलता ही भरती है।
* प्राण भय से दुबक जाना कायरों का काम है।
* शराब का एक प्याला मनुष्य को बुद्धिमान बनाता है, दूसरा प्याला पागल बनाता है और तीसरा डूबो देता है अर्थात चेतनाहीन बना देता है।
* खुशी तंदुरुस्ती है इसके विपरीत विषाद रोग है।
* हमारी वास्तविकता शान्त है और कृत्रिमता वाचाल है।
* विरोध उत्साहियों को सदैव उत्तेजित करता है, उन्हे बदलता नहीं।
* सत्य सदा का है, सत्य का कोई अतीत और वर्तमान नहीं होता।
* निरन्तर अथक परिश्रम करनेवाले भाग्य को भी परास्त कर देते है।
* निवृत्ति का स्थान प्रवृत्ति के काफी उपर है।
* दान देने से सम्पत्ति कम नहीं होती है।
* पराक्रम का प्रमुख अंग विवेक है।
* शिक्षा मानवता के लिये वैसी ही है जैसे संगमरमर के टुकड़े के लिये शिल्पकला है।
* जो सत्य की खोज में रहता है, उसे किसी एक देश का नहीं होना चाहिये।
* जीवमात्र की अहिंसा स्वर्ग को देनेवाली है।
* जिस पुरुष को जिसके साथ संगति होती है वह उसके गुण को मणि के समान धारण करनेवाला बन जाता है।

* पराक्रम भुजाओं में रहता है न कि वाणी में।
* सत्य की बात तो सभी कहते हैं पर उसका पालन बहुत ही कम लोग करते हैं।
* गलतियों की सम्भावना तभी शून्य हो सकती है जब कोई काम ही न किया जाये।
* प्रसन्नता पीडा के विराम के अलावा और कुछ नहीं है।
* वास्तव में इतिहास कुछ नहीं, केवल जीवन चरित्र ही है।
* जीवन में आकांक्षायें होती है तो अपना सम्मान और आत्माभिमान भी होता है।
* प्राणियों के लिये चिन्ता ही ज्वर है।
* जब हम लडने की बजाय झुकते हैं, तब हम विवेक के अधिक निकट होते है।
* सम्पन्नता मन से होती है धन से नहीं, बडप्पन बुद्धि से होता है, आयु से नहीं।
* शिक्षा जीवन के लिये है जीविका के लिये नहीं।
* संसार में दो ही व्यक्ति दुर्लभ है उपकारी और कृतज्ञ।
* श्रेष्ठ विद्वानों की सभा का प्रभावी वक्ता मूर्खों की सभा में भूलकर भी न बोले।
* बिना भरोसे और जिम्मेदारी के योग्यता एक बोझ होती है।
* हर मनुष्य को लगातार काम करते रहना चाहिये, जिस घडी उसने काम करने से अपना हाथ रोक लिया उसी घडी से समझ लीजिये कि उसका जीवन ही थम सा गया।
* ईर्ष्या, द्वेष, जलन जैसे तीरों से दूसरों पर निशाना साधनेवाला स्वयं अपने तीरों से घायल होता है, इसलिये ईर्ष्या को भुलाकर प्रेम, सद्भाव और सम्मान का जीवन में उपयोग करे।
* दरिद्र प्राणी उस धनी से कही अधिक सुखी है, जिसे उसका धन सांप बनकर काटने दौडे।
* जहां तक हो सके निरन्तर हंसते रहो, यह सस्ती दवा है।
* पढनीय ग्रन्थों में प्राचीन लेखकों के ग्रन्थ सर्वोत्तम होते हैं।
* चिन्ता जीवन की शत्रु है।
* वाणी मनसे छोटी है। मन अपरिमित है, वाणी परिमित है।
* सत्य जितना शक्तिशाली होता है उतना खतरनाक भी।
* बडा आदमी वो ही है जो गुस्से में नपा तुला ही बोलता है।
* अपने जीवन को व्यतीत करते समय औरों के द्वारा बनाये गये रास्तों पर नहीं बल्कि अपने खुद के बनाये मार्गों पर चलने का प्रयत्न करें तो आपकी यात्रा सफल होगी।
* दुनिया का सारा सौन्दर्य स्वस्थ शरीर में है।
* जगत का संसर्ग या तो दिल को तोडता है या उसे कठोर बनाता है।
* मनुष्यों को पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिये तैयार करना ही शिक्षा का उद्देश्य है।
* दौडना व्यर्थ है। मुख्य बात तो समय पर काम निकालना है।
* कभी-कभी मौन रह जाना सबसे कटु आलोचना होती है।

* दो व्यक्तियों के एक चित्त होने पर कोई कार्य असाध्य नहीं होता।

* दोस्ती भले ही दो लोगों को जोडती हो, पर दो देशों को केवल स्वार्थ ही जोड सकता है।

* जो मनुष्य भविष्य में आनेवाली मुश्किलों, चुनौतियों का सामना करने के लिये हरदम तैयार रहता है वही मनुष्य वर्तमान समय में आनन्द से जीवन गुजार सकता है।

* सौन्दर्य और पवित्रता का संयोग कभी ही होता है।

* साहसहीन और आलसी मनुष्य ही दैव के भरोसे रहते हैं और परिश्रम नहीं करते।

* भूखा आदमी सभी पाप कर बैठता है। भूख से क्षीण व्यक्ति क्रूर हो जाता है।

* सर्वप्रथम आत्मविश्वास करना सीखो।

* मैं देशप्रेम को अपने धर्म का ही एक हिस्सा समझता हूँ लेकिन देशप्रेम के बिना धर्म का पालन पूरा हुआ कहा नहीं जा सकता।

* देश का अर्थ मिट्टी नहीं है, देश का अर्थ है जन समुदाय। जो अपने देशवासियों से प्रेम नहीं करता उसका देश की मिट्टी से मोह भी व्यर्थ है।

* यदि किसी की राष्ट्रभक्ति में मानवीयता कम है तो समझना चाहिये कि उसकी राष्ट्रभक्ति में भी उसी अनुपात में कमी है।

* ऐसा सत्य वचन बोलना चाहिये जो हित, मित और ग्राह्य हो।

* मान ही महापुरुषों का धन है।

* दूर रहने पर भी सज्जनों का स्नेह नहीं जाता।

* किसी मनुष्य का स्वभाव उसे विश्वसनीय बनाता है, न कि उसकी सम्पत्ति।

* नासमझ लोगों के द्वारा की गई तारीफ के मुकाबले समझदार की आलोचना अच्छी होती है।

* अज्ञानी होना उतनी शर्म की बात नहीं है जितनी कि सीखने की इच्छा का न होना।

* बुढापा शरीर की बात नही, मन की हारी हुई अवस्था का नाम है। जीवन से जिसका प्रेम है वो जवान है और जीवन से जिसका प्रेम नहीं वो बूढ़ा है।

* एकबार राह भटकने से अच्छा है दो बार पूछ लेना।

* जीवन को सही रूप में जीने के कई मार्ग है, प्रेम, माया, आशा, भक्ति, युक्ति और शक्ति इनमें से प्रमुख है। कौनसे मार्ग का सहारा लेकर आप अपना जीवन गुजारना चाहते है।

* लोगों की धर्म तथा अधर्म की प्रवृत्ति में कारण राजा ही होता है।

* कर्म और वचन झूठे भी हो सकते है इसलिये व्यक्ति के अंतर्मन को परखना चाहिये।

* धर्म के सर्वोच्च पालन के लिये बिल्कुल निष्परिग्रह हो जाना जरूरी है।

* अपराधी के दंड मे उपयोगिता होनी चाहिए। एक मनुष्य को फांसी देने से कोई लाभ नहीं।

* जैसे बुढापा सुंदर रूप रंग का नाश कर देता है उसी प्रकार अधर्म से लक्ष्मी का नाश हो जाता है।

* अधिकार और बदनामी का चोली दामन का साथ है।

* भलाई की इच्छा बुराई की इच्छा को दबा देती है।

* त्याग ने भोग की ओर सिर झुका दिया, मर्यादा की बेडी गले में पडी।
* मनुष्यत्व भातृप्रेम से उच्चतर है।
* जो पाप हमे विनम्र और विनीत बनाता है वह बेहतर है उस पुण्य से जो हमे घमंडी और उद्धत बनाता है।
* कभी-कभी समय के फेर से मित्र शत्रु बन जाता है और शत्रु भी मित्र हो जाता है क्योंकि स्वार्थ बडा बलवान है।
* सहयोग प्रेम की सामान्य अभिव्यक्ति के अलावा कुछ नहीं है।
* हर तरक्की एक बदलाव है लेकिन हर बदलाव एक तरक्की नहीं है।
* जो एक क्षण में टूट जाता है उसे बनने में सालों लगते है।
* जीवन में किये गये हर गलत कार्य का परिणाम हमें भोगना पडता है।
* विश्व में झूठी तुलाओं का सम्मान होता है और न्याय दीनारों के मोल बिकता है।
* दुरात्म के लिये देश भक्ति अंतिम शरण है।
* जो परोपकार में प्रवृत्त रहता है उसीका जीवन सफल माना जाता है।
* झूठ का कभी पीछा मत करो। उसे अकेला छोड दो। वह अपनी मौत खुद मर जायेगा।
* जिस विचार का सही समय आ जाता है उसकी ताकत के आगे कोई सेना नहीं ठहर सकती।
* अपनी बुद्धि से साधु होना अच्छा है बल्कि पराई बुद्धि से साधु होना अच्छा नहीं है।
* अपराध मनुष्य के चेहरे पर लिखा रहता है।
* जितना आदमी अनैतिक होता जाता है उतनी ही उसकी वर्जना सख्त होती जाती है।
* सुख सर्वत्र विद्यमान है उसका स्त्रोत हमारे हृदयों में है।
* विजय का मूल अच्छी मन्त्रणा है।
* प्राण देकर भी मित्र के प्राण की रक्षा करनी चाहिये।
* बुद्धिमानों की परीक्षा संकट काल में होती है और सूरों की संग्राम में।
* पहले हर अच्छी बात का मजाक बनता है फिर उसका विरोध होता है और अन्त में उसको स्वीकार कर लिया जाता है।
* दुनिया में रहते हुये सेवाभाव से और सेवा के लिये जो जीता है, वह सन्यासी है।
* यदि मनुष्य नैतिक रहना चाहता है तो उसे विलासिता का त्याग करना पड़ेगा।
* आलोचना, निंदा और शिकायत कोई भी मूर्ख कर सकता है और ज्यादातर मूर्ख ऐसा करते भी हैं।
* किसी भी आदत को हम ही मजबूत बनाया करते है और यही आदत कभी कभी मुसीबत बनकर हमारे सामने खडी हो जाती है।
* क्रोध और आवेश में समस्या का समाधान नहीं होता।
* दूसरों को अपमानित करने से समस्याओं का हल नहीं होगा।
* विद्यार्थियों का भविष्य ही भारत का भविष्य है।
* खोज के सामने सबसे बडी बाधा अज्ञान नहीं बल्कि ज्ञान का भ्रम है।
* अच्छे चलचित्र का अर्थ केवल व्यावसायिक सफलता नहीं होता, उसमें दर्शकों में अन्तर्दृष्टि विकसित करने का गुण भी होना चाहिये।

❋ महान लोगों की उदारता का भंडार कभी नहीं घटता।

❋ जिन्दगी में अगर सिर्फ उदासी है, गम्भीरता है तो जिन्दगी में कुछ भी नहीं है। जिन्दगी तो हंसते, लोगों को मुस्कुराने के लिये मजबूर कर देने का नाम है।

❋ सच्चा बलवान वही है जिसने अपने बल पर काबू पा लिया है।

❋ मानवता का खेल प्रात:कालीन रवि के समान सुन्दर है।

❋ वक्त सबसे अधिक बुद्धिमान परामर्शदाता है।

❋ असहमति किसी भी क्रियाशील समाज की प्राणशक्ति है।

❋ सफल मनुष्य वह है जो दूसरों द्वारा अपने पर फेंकी गई ईटों से एक सुदृढ़ नींव डाल सकता है।

❋ नेता को नेतृत्व करना चाहिये नहीं तो उसे राजनीति में नहीं रहना चाहिये।

❋ दूसरों की सुन लो पर अपना फैसला गुप्त रखो।

❋ सज्जन न्याय का ही अवलम्बन करते हैं।

❋ यदि झूठ से कुछ पाया है तो वह पाना नहीं खोना है और सत्य के लिये जो खोया है वह खोना नहीं पाना है।

❋ गलतियों से सबक न लेनेवालों के लिये सफलता के दरवाजे कभी नहीं खुलते।

❋ शान्ति के अतिरिक्त दूसरा कोई आनन्द नहीं।

❋ हर काम के लिये एक समय और अवसर होता है उसीका उपयोग करना चाहिये।

❋ धैर्य मनुष्य की दूसरी बहादुरी है, शायद पहली से बढ़कर।

❋ कभी-कभी नाकामी सफलता से ज्यादा बडा सबक सिखाती है। सफल वही है जो अपनी गलतियों से सीखता है और आगे बढ़ता है।

❋ जीवन यापन के बिना पता नहीं चल सकता कि हम किस तरह जिये। सिद्धान्त नीति और तरीके से ही जिये तो ही जीवन सफल कहलाता है।

❋ जिसके पास अधिक शक्ति है उसे उसका उपयोग मृदुलता से करना चाहिये।

❋ बिना बुद्धिमता के न्याय असम्भव है।

❋ बिना देशाटन किये पराधीनता का यथेष्ट ज्ञान नहीं होता।

❋ सज्जनों की विभूतियां परोपकार के लिये ही होती है।

❋ कोशिश करने का जोखिम उठाने से पूरी तरह से असफल होना असम्भव है।

❋ धैर्य आनन्द की कुंजी है और जल्दबाजी दु:ख की।

❋ अन्धकार भरे रास्ते पर दीपक बनकर जलना ठीक उसी तरह है जैसे किसी मनुष्य के अंधियारे जीवन में प्रकाश किरण बनकर जगमगाना।

❋ परिपूर्णता धीरे-धीरे प्राप्त होती है, उसको समय की आवश्यकता होती है।

❋ जो सबका है उसे अपना बनाकर रखना या उसका संग्रह करना परिग्रह है।

❋ धर्म सदैव सत्कर्म की नींव पर खडा रहता है, रूढ़िवादिता पर नहीं।

* दयालुता से दयालुता और विश्वास से विश्वास का जन्म होता है।
* कुल की प्रशंसा करने से क्या? इस लोक में शील ही महानता का कारण है।
* अपने जीवन को सही राह पर लगाने और तेज रफ्तार देने के लिये जरूरत है हिम्मत की। यही हिम्मत जीवन को कामयाब बना देती है।
* अच्छी प्रकार से राष्ट्र शासन करनेवाले प्रधानमन्त्री के लिये अधिक सुनना और कम बोलना बहुत आवश्यक है।
* मन की प्रसन्नता ही व्यवहार में उदारता बन जाती है।
* जो व्यक्ति अपने साथियों के चुनाव में विवेकी नहीं है, वह अपने समय का सदुपयोग नहीं कर सकता।
* अच्छा समाज शरीर जैसा है। समाज में जो दु:खी हिस्सा है उसकी ओर सबको ध्यान देना उचित है।
* जो सचमुच मनुष्य है, वह विद्रोह करेगा, अन्याय सहन नहीं करेगा।
* जो कायर है, जिसमें पराक्रम का नाम नहीं है, वही दैव का भरोसा करता है।
* परोपकार का आचरण कभी भी मत त्यागो। संसार क्षणिक है।
* मनुष्य सुख और दु:ख सहने के लिये बनाया गया है। किसी एक से मुंह मोड लेना कायरता है।
* कामयाबी हासिल करने से ज्यादा मुश्किल उसे सम्भाले रखना होता है।
* एकाग्रता ही वह माध्यम है जो बडे-बडे लक्ष्य को अन्तत: प्राप्त करने में सहायक होती है।
* मानव के सभी गुणों में साहस पहला गुण है, यह सभी गुणों की जिम्मेदारी लेता है।
* मानव समाज निम्न व पतित होने की अपेक्षा उच्च व दिव्य है।
* निराशा से जीवन के बहुमूल्य तत्व नष्ट हो जाते है। इससे विजय के बहुत से अवसर खो जाते है।
* अच्छा स्वास्थ्य एवं अच्छी समझ जीवन के दो सर्वोत्तम वरदान है।
* यदि आप समझते है कि आपमें कोई त्रुटि नहीं है तो यह आप में एक और त्रुटि है।
* स्वाधीन होना ही जन्म की सफलता है। जो पराधीन होकर जीते है वे मृतक के समान है।
* पुरुषार्थ परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने में है।
* शिक्षक का काम ज्ञान देने से अधिक ज्ञान के लिये अन्तहीन जिज्ञासा पैदा करना है।
* जो पापियों से जानबूझकर कडे शब्द बोलता है, वह मानो उनके पाप रूपी घाव पर नमक छिडकना है।
* जब पेट खाली होता है तो शरीर रूह बन जाता है और जब वह भरा होता है तो रूह शरीर बन जाती है।
* मनुष्य अपनी प्रसन्नता के लिये स्वयं ही उत्तरदायी है।
* सच की भाषा सदा सरल होती है।
* जीवन मे शंकाओं से त्रस्त होकर मत चलो।
* सज्जन अपना नाम नहीं लेते, श्रेष्ठ लोगों की यही आचार परम्परा है।
* सच्चे सन्यासी तो अपनी मुक्ति की भी उपेक्षा करते है, जगत के मंगल के लिये ही उनका जन्म होता है।
* पढ़ना सीखने का एक तरीका है लेकिन व्यवहार करना भी सीखने का एक तरीका है और यह कही ज्यादा महत्वपूर्ण है।
* असफलताओं के अनुभव के बिना सफलता का लुत्फ नहीं उठाया जा सकता।

* अपने जीवन में एक बार जो गलती हो चुकी है वह फिर कभी दोबारा न हो इसके लिये अपने उद्देश्य को ध्यान में रखकर काम करना चाहिये।

* पुरानी बातों को जब तक भुलाया न जाय नई बातों के लिये अवसर नहीं बनते।

* प्रलय में भी महान व्यक्ति अचल होते है।

* जिन्दगी जीने के लिये पेट भरना आवश्यक है इसके लिये दाने पाने की तलाश आवश्यक है मगर सिर्फ दाना पानी की खोज ही जरूरी नहीं है बल्कि सफल जिन्दगी जीने के लिये एक सही लक्ष्य भी निर्धारित करें।

* जितनी जल्दी करोगे उतनी ही देर लगेगी।

* नशे में क्रोध की भांति ग्लानि का वेग भी सहज ही में उठ आता है।

* पाप करनेवाला लोक परलोक दोनों जगह शोक करता है।

* कुटिलता कभी-कभी सफल हो जाती है पर सदा ही आत्मघाती सिद्ध होती है।

* गुस्सा इंजिन है, अविवेक और अज्ञान उसके पहिये है।

* ज्ञान पाप बन जाता है यदि उद्देश्य शुभ न हो।

* मौन की भाषा वाणी की भाषा की अपेक्षा अधिक बलवती होती है।

* श्रेष्ठ व्यक्तियों का सम्मान करके उन्हे अपना बना लेना दुर्लभ पदार्थों से भी अधिक दुर्लभ है।

* यह मेरा है यह तेरा है, यह क्षुद्र चित्तवालों की बात होती है। उदार चरित्रवालों के लिये तो सारा संसार ही अपना कुटुम्ब होता है।

* मनुष्य के चरित्र का सबसे सही परिचय इससे मिलता है कि वह किन बातों पर हंसता है।

* धोखेबाज, प्यार में सिर्फ मजा देखते है जब कि भरोसेमन्द लोग इसकी त्रासदी।

* भावनाओं को अभिव्यक्त करें इसमें ज्यादा श्रम नहीं लगता।

* जो मनुष्य अपना आनन्द छुपाने में समर्थ होता है वह मनुष्य दु:खों को छुपानेवाले लोगों से भी श्रेष्ठ होता है।

* कुछ लोग हमेशा रोते है कि गुलाब में कांटे है, पर शुक्र है कि कांटों में गुलाब है।

* आस्था के सामने तर्क के लिये बहुत जगह नहीं होती।

* जिज्ञासा तेज बुद्धि का एक स्थायी और निश्चित गुण है।

* मुहब्बत के जोश में आदमी अपने आपको भूल जाता है।

* एक झूठ को छिपाने के लिये सौ झूठ बोलने पडते है।

* उदारता मानव के सब रोगों का इलाज है।

* लोभ के कारण सत्य ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती।

* सन्तुष्ट मनवाले के लिये सदा सभी दिशायें सुखमयी है।

* क्रोध को क्षमा से, विरोध को अनुरोध से, घृणा को दया से, द्वेष को प्रेम से, और हिंसा को अहिंसा की भावना से जीतो।

* दरिद्र वे लोग है जो अपने को दरिद्र मानते है, दरिद्रता दरिद्र समझने में ही रहती है।

* अज्ञान ही पाप है। शेष सारे पाप तो उसकी छाया है।

* अधिकार-प्रेम वृद्धजनों को कटु और कलह प्रिय बना दिया करता है।

* किस्मत और मेहनत एक-दूसरे की मदद से ही फलीभूत होती है।

* मनुष्य की गरीबी में ही उसके धनी और सफल बनने के गुण छिपे रहते हैं मगर उन्हे ढुंढने के लिये दिव्य दृष्टि की जरूरत होती है।

* थोडे भी कुकर्म बहुत से गुणों को दूषित करने के लिये पर्याप्त है।

* कृतज्ञता मित्रता को चिरस्थायी रखती है और नये मित्र बनाती है।

* आलस्य में मित्रता का वास है, किन्तु जो आलस्य नहीं करता, उसके श्रम में लक्ष्मी बसती है।

* चींटी से अच्छा उपदेश कोई नहीं देता और वह मौन रहती है।

* सफलता के लिये संयोग का इन्तजार न करे।

* राजा जैसा आचरण करता है प्रजा भी वैसा ही आचरण करती है।

* इतनी संक्षिप्तता भी मत रखो कि तुम स्वयं अस्पष्ट हो जाओ।

* प्रिय वचन बोलने से सब प्राणी सन्तुष्ट हो जाते है अत: प्रिय वचन ही बोलने चाहिये।

* सत्य का सर्वश्रेष्ठ अभिनन्दन है कि हम उसे आचरण में लावे।

* विश्वासघात से बचने की कोई युक्ति नहीं है।

* शक्ति ही जीवन है, परम सुख है, जीवन अजर और अमर है।

* यह धरती हमारे कर्मों की भूमि है।

* प्रतिभा का अर्थ है सबसे पहले कष्ट उठाने की क्षमता।

* हृदय की गांठों का खुल जाना ही ज्ञान है और ज्ञान होने पर ही मुक्ति होती है।

* सबसे अधिक आनन्द इस भावना में है कि हमने मानवता की प्रगति में कुछ योगदान दिया है, भले भी वह कितना ही कम, यहां तक कि बिल्कुल ही तुच्छ क्यों न हो?

* जनता की दृष्टि में एक-बार विश्वास खोकर फिर से विश्वास उत्पन्न करना मुश्किल है।

* सब दानों में ज्ञान दान ही श्रेष्ठ है।

* साधना के क्षेत्र में जो अद्वैतवाद है, काव्य के क्षेत्र में वही रहस्यवाद है।

* जिन्दगी घूमता फिरता दरवाजा है जिससे कभी भी बाहर या भीतर जाया जाता है।

* प्रत्येक मनुष्य के जीवन में अच्छे और दु:खदायी अवसर आते रहते है। ऐसे दुर्भाग्यपूर्ण अवसरों की अपेक्षा सौभाग्यपूर्ण अवसरों को सहन करते समय हिम्मत की अधिक आवश्यकता होती है।

* चिन्ता का विकल्प प्रार्थना है।

* बर्फ जैसी शीतलता और मिश्री जितनी मधुरता की पूंजी सर्वोत्तम तरीके से जीने के लिये पर्याप्त है।

* विज्ञान में सत्य मिथ्या का विचार ही अन्तिम विचार है।

* विश्वासघातक विष से कम घातक नहीं होता।

* शिक्षा राष्ट्र की सस्ती सुरक्षा है।

* सत्य का हर एक उल्लंघन मानव समाज के स्वास्थ्य में छुरी भौंकने के समान है।

* कर्म ही धर्म है, कर्म ही पूजा है और कर्म ही जीवन है। कर्म किये बिना जीवन का वास्तविक आनन्द उठाना सम्भव नही।

* आंसू बहुत सस्ते हैं जो तोहफे में मिल जाते हैं।

* गम हमे सुनाये जाते है हम किसी को नहीं सुनाते, डायरियों में लिख देते है।

* दुआ के साथ कर्म न हो, चरित्र न हो, आचरण न हो तो दुआयें भी जमीन के किनारों से बाहर नहीं निकलती।

* कर्म के बिना दुआ एक ऐसा शरीर है जिसमें आत्मा नहीं है और जब शरीर में से आत्मा निकल जाती है तो उसकी हैसियत एक लाश की सी होती है जो किसी के काम नहीं आती।

* किसी की नकल मत उतारो। ऐसा मजाक भी न करो जिससे किसी का दिल दुखे।

* क्षमा तपस्वियों का रूप है।

* घर सेवा की सीढ़ी का पहला डंडा है इसे छोडकर तुम ऊपर नहीं जा सकते।

* बिना कर्म के अच्छा विचार दिन के स्वप्न की भांति है जब कि बिना विचार के किया गया कर्म दु:स्वप्न की तरह।

* जो भविष्य का भय नहीं करता वही वर्तमान का आनन्द उठा सकता है।

* आपके पास यदि कुछ भी नहीं है फिर भी आप दूसरों को एक चीज जरूर बांट सकते है वह है मधुर स्वरों में आत्मीयता से बोलने के बाद प्राप्त होनेवाला सुख।

* सभी महान धार्मिक नेताओं ने जान बूझकर गरीबी को अपने भाग्य की तरह अपनाया।

* स्पष्टवादिता मनुष्य का एक उच्च गुण है।

* जिस प्रकार प्रभात दिन का आभास कराता है, उसी प्रकार बचपन युवावस्था का।

* जो मनुष्य दु:ख को जीवन का सबसे बडा अभिशाप समझता है वह बहादुर नहीं हो सकता।

* संसार मे सबसे दयनीय वो है जो धनवान होकर भी कंजूस है।

* केवल कर्म करके ही कोई कर्मयोगी नहीं बनता इसके लिये निष्काम वृत्ति की आवश्यकता होती है।

* सभी धर्म सत्य के अंशावतार है।

* उत्सव में, कष्ट में, अकाल में, शत्रु संकट में, राजद्वार पर और श्मसान में जो साथ देता है, वही बन्धु है।

* कौन जानता है कि यह संसार आज रात ही समाप्त नहीं हो जायेगा।

* यदि कपट करके कोई धूल भी मांगे तो देना कठिन है और कृपा के लिये प्राण भी देना सरल है।

* संसार में इससे बढ़कर हास्यास्पद कुछ भी नहीं है कि जो दुर्जन है, वही सज्जन पुरुषों को दुर्जन के रूप में प्रचारित करने की कोशिश करते है।

* नेतृत्व का काम नेता पैदा करना होता है न कि अनुयायी।

* कठिनाइयों का मुकाबला करो चाहे सारी दुनिया दुश्मन ही क्यों न बन जाये।

* जंगली पशु क्रीड़ा के लिये कभी किसी की हत्या नहीं करते। यह तो मानव ही वह प्राणी है जो अपने मनोरंजन के लिये अपने साथी प्राणियों की यन्त्रणा तथा मृत्यु करता है।

* व्यक्ति का मान नष्ट होने पर फिर नहीं प्राप्त होता।

✻ ज्ञान, भक्ति और वैराग्य की प्रवाहित निर्मल त्रिवेणी का नाम ही रामायण है।

✻ भोगी मनुष्य हाथ जोड़कर अहं की अर्चना करता है और जीवन पर्यंत अहं की ओर ताकते रहता है।

✻ सत्य तो एक ही है पर विद्वान उसका अनेकों प्रकार से वर्णन करते है।

✻ जिस तरह पुरुष की मृत्यु के बाद स्त्री अनाथ हो जाती है उसी तरह औरत की मृत्यु के पश्चात आदमी भी आश्रयहीन और साहसहीन हो जाता है।

✻ अपने आदर्शों और निष्ठाओं का त्याग कभी मत करो।

✻ अनुचित आलोचना वास्तव में छिपी हुई प्रशंसा होती है।

✻ अपने सपनों पर डर को कभी हावी न होने दे।

✻ बिना वजह के शक करने का अर्थ है स्वयं अपना ही सर्वनाश करना।

✻ सक्रियता से मनुष्य न केवल लक्ष्य हासिल करता है बल्कि दूसरों के लिये प्रेरणास्रोत ही बन जाता है।

✻ निष्क्रिय होना मृत्यु समान है, सक्रियता सकारात्मकता को आमन्त्रण करती है।

✻ मूर्च्छा में जो करे वो पाप है और जागरूकता में करे वो पुण्य है।

✻ अच्छे, भले, बुरे दिन मनुष्य के चरित्र पर सदैव के लिये अपना निशान छोड़ जाते है।

✻ ईश्वर भक्ति के सिवा दूसरी कोई पावन वस्तु नहीं है जो हृदयों को धो सके और सबको जोड़कर एक बना दे।

✻ ब्रह्मा ने भाग्य में जो कुछ लिख दिया है उसे मिटाकर उससे अधिक कोई कार्य नहीं कर सकता।

✻ आचरण एक शीशे के समान है जिसमें प्रत्येक मानव अपना प्रतिबिम्ब देखता है।

✻ जिस प्रकार औषधि शरीर के सब रोगों को दूर कर देती है उसी तरह ईश चिन्तन मन के विकारों को दूर कर देता है।

✻ मौन निरन्तर वाणी है वह सर्वोत्तम भाषा है।

✻ गुमान खोखला है स्वमान ठोस है। हमारे सिवाय हमारा और कोई स्वमान नहीं कर सकता।

✻ जब आदमी का कोई बस नहीं चलता तो अपने को तकदीर पर छोड़ देता है।

✻ पाप के पंजे में फंसा हुआ मन पतझड़ के पत्ते के समान है जो हवा के जरा से झोंके से गिर पड़ता है।

✻ अपनी पीड़ा सह लेना और दूसरे जीवों को पीड़ा न देना यही तपस्या का स्वरूप है।

✻ एक कठोर दंड बरसों के प्रेम को मिट्ठी में मिला देता है।

✻ आत्मा कुछ न कुछ अवश्य कहती है, उसकी सलाह मानना आपका धर्म है।

✻ अव्यक्त से व्यक्त की रचना कला का एक कार्य है।

✻ महान विभूतियां देह त्याग करने के बाद अधिक बलवती हो जाती है।

✻ सज्जनों का धन तो धैर्य ही है।

✻ देश की रक्षा राजा की सेना नहीं करती बल्कि देश की प्रजा करती है।

✻ न्याय की धारणा मनुष्य समाज को क्रम और नियंत्रण में रखनेवाली आन्तरिक श्रृंखला है।

✻ सभी प्रकार के बलों में नैतिक बल सर्वश्रेष्ठ है।

✻ घाव कभी रोने धोने से नहीं भरते।

* अपनी पवित्रता के सम्बन्धों में सज्जनों का चित्त ही साक्षी है।
* किसी किसी समय जब हमारे सद्भाव पराजित हो जाते हैं तब दुष्परिणाम का भय ही हमें कर्मच्युत होने से बचा लेता है।
* धीर व्यक्ति विपत्ति को पार कर लेते है।
* मन, बुद्धि और अहंकार का लय ही प्रलय है।
* भाग्य के लिये कुछ भी दुष्कर नहीं है।
* भोग जीवन की आवश्यकता है किन्तु भोग ही जीवन का आदि अन्त नहीं है।
* जब तक मनुष्य कोई उद्योग करता है तो उससे भूल होना संभव है।
* धर्म चिन्तन मात्र नहीं है अपितु चिंतन और आचरण है।
* दुर्जन को यज्ञ करके भी सज्जन नहीं बनाया जा सकता।
* संसार में जिस दिन राजाओं की जरूरत न होगी उस दिन उसका अन्त हो जायेगा।
* मधुर संगीत आत्मा के ताम को शान्त कर सकता है।
* एक गुणी पुत्र श्रेष्ठ है बजाय सैकड़ों मूर्ख पुत्रों के। एक ही चन्द्रमा अन्धकार को नष्ट कर देता है सहस्रों तारे नहीं।
* बाल्यावस्था के पश्चात उद्दण्डता की धुन सिर पर सवार हो जाती है।
* शौर्य किसी में बाहर से पैदा नहीं किया जा सकता है वह तो मनुष्य के स्वभाव में होना चाहिए।
* इस संसार में प्रिय भी नहीं रहेगा, अप्रिय भी नहीं। सब कुछ भी नहीं रहेगा।
* कार्यसिद्धि में विलम्ब होनेपर भी धीर पुरुष अपने सर्वस्वभूत धैर्य को नहीं त्यागते।
* भाग्य कुछ भी नहीं करता यह तो केवल कल्पना है।
* एक याचक अन्य याचक को देखकर कुत्ते की तरह गुर्राता है।
* जो बोलता है वह फसल बोता है जो सुनता है वह फसल काटता है।
* आप खुद पर विश्वास रखें नहीं तो दूसरा कोई भी आपपर भरोसा नहीं करेगा।
* मेहनत करने से नसीब भी बदला जा सकता है।
* सभ्य लोगों का आदर्श ऊंचा होना चाहिए।
* जीवन में यदि हम थोड़ा सहज और संतुलित तथा संयम से कोई निर्णय लें तो न केवल तनाव से बच सकते हैं बल्कि इसके अतिरिक्त आनन्द के क्षण भी प्राप्त कर सकते हैं।
* प्रेम की ताकत के आगे तलवारें भी झुक जाती है।
* आर्थिक विषमता के आगे राजनैतिक समता की एक नहीं चलती।
* भयभीत चित्त सत्य नहीं सुरक्षा और सन्तोष चाहता है।
* महात्माओं का चरित्र विभिन्न होता है। वे धन वैभव को तिनके के समान समझते हैं और इसके प्राप्त हो जानेपर बोझ से झुक जाते हैं।
* एकता चापलूसी से कायम नहीं की जा सकती।
* यदि मनुष्य केवल प्रतीक्षा करे तो हर वस्तु उसे प्राप्त हो जाती है।

* ऐसी कोई बात किसी मनुष्य के बारे में मत कहो जो उस मनुष्य के सामने या मुंह पर नहीं कह सकते।
* निर्लज्ज हारकर भी नहीं हारता, मरकर भी नहीं मरता।
* प्रमाद में मनुष्य कठोर सत्य का भी अनुभव नहीं करता।
* ललाट में लिखी गई लिपि ईश्वर भी नहीं मिटा सकता।
* कुल मर्यादा संसार की सबसे उत्तम भावना है। उस पर मनुष्य प्राण तक न्यौछावर करने के लिये तैयार हो जाता है।
* मनुष्य के विकास के लिये जीवन जितनी ही मृत्यु आवश्यक है।
* सर्वश्रेष्ठ मनुष्य वही है जिसने मनरूपी राक्षस को अपने वश में कर लिया है।
* कार्य सिद्धि के लिये प्रयत्नशील मनस्वी व्यक्ति सुख और दु:ख को कुछ नहीं समझते।
* धर्म का मूल विनय है और मोक्ष उसका अन्तिम फल है।
* जो स्वयं हिंसा करता है हिंसा करनेवालों का अनुमोदन करता है वह विश्व में अपने लिये बैर को बढ़ाता है।
* अपनी विफलताओं को अकेले में जरूर पहचानिए।
* आदमी सबसे भाग सकता है पर अपने आप से नहीं।
* मेहनत से तकदीर भी बदली जा सकती है।
* व्यक्ति का विवेक ही उसके पथ का प्रदीप है।
* समय बड़े से बड़े घाव भर देता है, उनपर मरहम लगा देता है।
* सभ्य व्यक्ति बने सभ्यता ही आपको औरों से अलग पहचान देती है।
* मन ही मनुष्य की प्रगति अथवा पतन का शिल्पी है।
* हमारा अस्तित्व एक बूंद और लहर से अधिक नहीं है।
* जब तक बादशाहत नहीं होती है तब तक मनुष्य बादशाह होता है।
* सच्ची तृप्ति भोग में नहीं त्याग में निहित है।
* महान ध्येय के प्रयत्न में ही आनन्द है, खुशी और एक सीमा तक प्राप्ति की मात्रा भी।
* पूर्णता करने की शक्ति की ही सब जगह प्रशंसा होती है।
* जिसके कथन को आचरण में न उतारा जाय उसमें शक्ति नहीं होती।
* विज्ञान धर्म के बिना लंगड़ा है, धर्म विज्ञान के बिना अन्धा है।
* अनुराग परिणाम के द्वारा ही प्रतीत होता है।
* विवेक बुद्धि की पूर्णता है, यौवन के सभी कर्त्तव्यों में वह हमारा पथ प्रदर्शन करता है।
* विश्व विद्यालयों की परीक्षा विद्यार्थियों के ज्ञान से नहीं वरन उनके धर्माचरण से होनी चाहिये।
* धन अपना-पराया नहीं देखता।
* संसार में अपना मत ही बहुत सम्मानित वस्तु लगता है।
* शरणागत की रक्षा करना बड़े पुण्य का काम है, ऐसा करने से पापी के भी पापों का प्रायश्चित हो जाता है।
* ईर्ष्या अग्नि है परन्तु अग्नि का गुण उसमें नहीं है। वह हृदय को फैलाती नहीं है बल्कि उसे और भी संकीर्ण बना देती है।

* जीवन का रहस्य भोग में नहीं पर अनुभव द्वारा शिक्षा प्राप्ति में है।
* नम्रता और स्नेह महापुरुषों का प्रथम गुण होता है।
* मनुष्य गुरु चरणों में कदापि धोखा नहीं खा सकता।
* दुष्ट मनुष्य के हाथ में नीति शास्त्र का हथियार आने से ही वह शैतान बन जाता है।
* जहां आदर और विश्वास मिले वहीं श्रद्धा उत्पन्न होती है।
* कर्मों का उपयोग कर प्रारब्ध को संचित रखे।
* स्वतन्त्र बुद्धि के लोग भी एक हद तक यदि परिस्थिति के गुलाम नहीं होते तो कम से कम परिस्थिति द्वारा गढे जाते है।
* त्याग तो बिल्कुल जड़ पर ही आघात करनेवाला है। दान ऊपर ही ऊपर से कोपलें खोंसने जैसा होता है।
* सच्ची जिन्दगी वहीं है जहां हम अपने लिये नहीं सबके लिये जीते है।
* निराशा एक तरह की कायरता और नास्तिकता है।
* व्यक्ति के आत्मविश्वास का सबसे अच्छा पैमाना है उसकी जोखिम उठाने की इच्छा।
* दूसरों के लिये कुछ न करने पर आप खुद के लिय भी कुछ नहीं कर सकते।
* केवल धर्म को छोड़कर घर, परिजन, राज्य, सम्पदा, जीवन और प्रवर लक्ष्मी ये सब अस्थिर है।
* देश की सेवा करने में जो शान्ति मिलती है वह कही नहीं है।
* सरकार का सबसे अच्छा स्वरूप लोकतन्त्र में ही सम्भव है।
* देश का उद्धार विलासियों के हाथ से नहीं हो सकता, उसके लिये सच्चा त्याग होना चाहिए।
* आजकल और बातों की तरह धर्म परिवर्तन ने भी व्यापार का रूप ले लिया है।
* आदर्श की धुन में व्यावहारिकता का विचार न करना ठीक नहीं है, कोरा आदर्शवाद खयाली पुलाव है।
* जब युद्ध भीतर होता है, तो बाहर दुश्मन पैदा होता है।
* अहिंसा केवल उनके चित्त में होती है जिनका अपना-पराया मिट गया।
* आशा अमर है उसकी आराधना कभी निष्फल नहीं होती।
* प्रतिभा जाति पर निर्भर नहीं है बल्कि जो परिश्रमी है वही उसे प्राप्त करता है।
* युद्ध मानव जाति का विनाशक है अत: उससे बचने के सभी उपाय करने चाहिये।
* संसार में यश और धन की महिमा कोई आज भी ठीक-ठीक नहीं जान पाया।
* छल से मिला धन अधिक काल नहीं टिकता।
* ज्ञान अतीत का संचयन है परन्तु सीखना सदैव वर्तमान की क्रिया है।
* सत्य को स्वयं के आत्यंतिक सत्य को जिसने नहीं जाना है, वह दरिद्र है।
* जीवन को देखने का ढंग ही जीवन का आधार बन जाता है।
* बुद्धिमान को सदैव आशावान रहना चाहिए।
* धन से चाहे आदमी का जी भर जाये पर प्रेम से तृप्ति नहीं होती।
* ऐसे कान बहुत कम है जो प्रेम के शब्द सुनकर फूल न उठे।

✻ आवश्यकता से अधिक बोलना व्यर्थ है।

✻ खाने-पीने और सोने का नाम जीवन नहीं है। जीवन नाम है सदा आगे बढ़ने की लगन का।

✻ दुर्दिन में मन के कोमल भावों का सर्वनाश हो जाता है और उनकी जगह कठोर एवं पाशविक भाव जाग्रत हो जाता है।

✻ जो मन से गम्भीर प्रश्न को सोचता है, जो लोभ के वशीभूत हो आत्महित के विरुद्ध कर्म नहीं करता और क्रमागत अवसर को हाथ से नहीं जाने देता, वही प्रज्ञावान पुरुष कहलाता है।

✻ भूल करना मानवीय है, क्षमा करना दैवीय है।

✻ सज्जनों से प्रेम दर्शन मात्र से ही हो जाता है।

✻ जीवन में आशावादी तस्वीर के साथ प्रार्थना और आस्था हो तो सफलता निश्चित है।

✻ ईश्वर न काबा में है, न काशी में, वो तो घट-घट में व्याप्त है। हर स्थिति में मौजूद है।

✻ अनादि असीम हो गया प्रेम ही प्रार्थना है।

✻ प्रेम के अभाव में जीवन एक पीड़ा है, सन्ताप है, घुटन है।

✻ आधुनिक राजनीति मनुष्यों का नहीं बल्कि शक्तियों का संघर्ष है।

✻ पुरुषार्थ का सहारा पाकर भाग्य भलीभांति चमकता है।

✻ खोटे सिक्के सच्चे सिक्कों की आड़ में चल पाते है।

✻ स्वाधीनता का पक्ष ईश्वर का पक्ष है।

✻ चिन्ता न्यायमूलक है, निश्चिन्तता का आमोद प्रमोद से मेल है।

✻ जो सेना के नष्ट हो जाने पर भी साथ देता है वही मित्र है।

✻ प्रेम रोशनी है और आपके जीवन में प्रेम का कोई भी दिया नहीं जलता इसलिये पाप है। पाप के पास कोई विधायक ऊर्जा नहीं है। कोई सकारात्मक ऊर्जा नहीं है, पाप सिर्फ नकारात्मक है। वह सिर्फ अभाव है, आप यह कर पाते हो क्योंकि जो आपके भीतर जो होना था वो नहीं हो पाया।

✻ अज्ञान ही मृत्यु है।

✻ बुद्धिमान मनुष्य वही है जो सदैव अपने विवेक को जागृत रखता है।

✻ दो व्यक्तियों के एकचित्त होनेपर कोई कार्य असाध्य नहीं होता।

✻ ब्रह्मचर्य ब्रह्म की सत्य की शोध में चर्या अर्थात उन सम्बन्धी आचार ब्रह्म एकमेव, अद्वितीय और सनातन है।

✻ प्रेम के आगे सारे तर्क निरर्थक है।

✻ हर समय अतिगम्भीर होना भी उचित नहीं है।

✻ मनुष्य अपनी भूलों से संसार की विचित्र स्थितियों में पड़ जाता है।

✻ अहिंसा से यदि कायरता पैदा होती हो तो उसे छोड़ देना ही बेहतर है।

✻ बन्धु के अपरिचित होने पर भी उसके मिलन पर चित्त प्रसन्न होता है।

✻ दुष्ट पत्नी, कपटी मित्र, सामने जवाब देनेवाला नौकर और जिस घर में सांप रहते हो उसमें रहना मृत्यु समान है।

✻ धीरपुरुष कार्यसिद्धि में विलम्ब होनेपर भी अपने सर्वभूत धैर्य का त्याग नहीं करते।

* युद्ध मानव जाति का विनाशक है, अत: उससे बचने के सभी सम्भव प्रयत्न करने चाहिये।
* जैसे ही श्रद्धा का भाव उदय होता है, वैसे ही तर्क शान्त हो जाते है।
* किसी व्यक्ति, वस्तु या प्रतिष्ठा से आसक्ति पीड़ा का कारण बनती है।
* क्रियात्मक रवैया अपनाये नाकि प्रतिक्रियात्मक रवैया अपनायें।
* प्रेम ही अमृत है।
* सामाजिक और राजनैतिक उन्नति प्रेम और लगन से पैदा होती है न कि उपदेशों और भाषणबाजी से।
* जलता हुआ कोयला हाथ जला देता है और ठंडा कोयला स्पर्श करने पर हाथ काला कर देता है। इसी तरह दुर्जन व्यक्ति के साथ कभी भी प्रेम और मैत्री नहीं कर ना चाहिये।
* आदमी महज रोटी ही नहीं चाहता इसके अलावा भी उसकी बहुत सारी आवश्यकतायें हैं।
* पुरुषार्थ का सहारा पाकर ही भाग्य भलीभांति फल देता है।
* जिस प्रकार दूसरों के अधिकार को सम्मान देना मानव का कर्त्तव्य है, उसी प्रकार अपना सम्मान रखना भी उसका कर्त्तव्य है।
* मनुष्य के लिये धर्म के बिना जीवन का अर्थ समझना सम्भव नहीं है।
* सकारात्मक रवैया श्रृंखलाबद्ध तरीकों से सकारात्मक विचारों को जन्म देता है।
* सत्य आपको मुक्त करेगा और अगर वह मुक्त न करे तो यह समझना कि वह सत्य नहीं है।
* जिनकी सारी उम्र तिनके जोड़ने में गुजरी उन बुजुर्गों के लिये घर कैदखाने हो गये।
* किसी किसी समय पर जब हमारे सद्भाव पराजित हो जाते है तब दुष्परिणाम का भय ही हमें कर्मच्युत होने से बचा देता है।
* जो अपनी की हुई प्रतिज्ञा पूरी नहीं करता वो असभ्य है।
* केवल उपासना ही नहीं बल्कि आचरण को भी धर्म बनाएं।
* चरित्र अस्तित्व बनाये रखता है, अच्छाई जीवित रहती है और प्रेम अमर होता है।
* बुद्धिमत्ता में ही समृद्धि का निवास है।
* ध्यान का द्वार भीतर की तरफ खुलता है, धन का द्वार बाहर की तरफ खुलता है।
* सद्बुद्धिवाले पुरुष को अल्प सुख एवं अधिक क्लेशवाले कार्य नहीं करना चाहिए।
* जीवन में संघर्ष करनेवाले लोग ही मुश्किलों को हरा सकते है।
* यदि कोई सीमा है तो वह केवल आपकी दृष्टि की है।
* जन्म से कोई धार्मिक नहीं होता है, जीवन से धार्मिक होता है।
* बड़ी से बड़ी यात्रा एक-एक कदम उठाकर ही तय की जाती है।
* जीवन में अन्त:करण की पवित्रता ही वास्तविक आनन्द का आधार हैं।
* ईश्वर सबके भीतर अपने अलग-अलग द्वार से आता है।
* जीवन से पलायन व्यर्थ ही नहीं अनर्थ भी है।
* जीवनोपयोगी दर्शन ही धर्म कहलाता है।
* विश्व तुम्हारा बाहुबल नहीं बल्कि नीरव आश्वासन और सुकुमार हृदय की शक्ति का निर्झर विश्वास ही चाहता है।

* जो मिथ्या है वो हमें सच्चा लगता है, जो सत्य है वो मिथ्याप्रतीत होता है।
* सब कार्य प्रसन्नता से करो परन्तु प्रसन्नता कभी आपके कार्य का प्रेरक भाव न बनने पाये।
* मुस्कराहट जिन्हें मिलती है वे समृद्ध हो जाते है परन्तु इसे बिखेरनेवाले भी कभी गरीब नहीं होते।
* समस्या को दूर करनेके लिये इसका हल ढुंढ़ीये।
* जो ज्ञान मुक्ति नहीं दे वह ज्ञान नहीं, ज्ञान की परिभाषा यही है जो मुक्त करे।
* धनहीन प्राणी को जब कष्ट निवारण का कोई उपाय नहीं रह जाता, तो वह लज्जा को त्याग देता है।
* द्वन्द्वों की प्रवृत्ति प्रबल होती है।
* सज्जन अपने चारित्र्य से ही विभूषित होता है।
* नैतिक सिद्धान्त लचीले नहीं होते, छोटा झूठ भी आखिर झूठ ही होता है।
* मनुष्य स्वयं ही बोता है और स्वयं ही काटता है।
* किसी की प्रशंसा जोर से करें, आलोचना धीरे से।
* प्रतिभा केवल सतत प्रयास करनेकी शक्ति है।
* बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन होता है।
* पल-पल असुरक्षा में जीना ही जीवन का आनन्द है।
* झगड़ने के लिये दो व्यक्तियों की आवश्यकता होती है।
* सौन्दर्य जीवन सुधा है, इसका असर घातक और मादक होता है।
* निरन्तर अथक परिश्रम करनेवाले भाग्य को भी परास्त कर देते है।
* हंसो और संसार तुम्हारे साथ हंसेगा, रोओ तुम्हें अकेले रोना पड़ेगा।
* योग में स्थित होकर तत्व को जानकर मनुष्य मृत्यु काल में त्रस्त नहीं होता है।
* यदि व्यक्ति अपने नैतिक मूल्य खो देता है तो मानो अपना सब कुछ खो देता है।
* मन को भरना है तो बाहर दौड़ना पड़ता है और परमात्मा को भरना है तो भीतर।
* कोई इतना अमीर नहीं हुआ कि उसे पड़ोसी की जरूरत ही नहीं पड़े।
* माया सबको मोहित करती है किन्तु भगवान के भक्त से वह हारी हुई है।
* बुद्धि तो केवल क्रिया का एक चेतनाहीन अंग है। भावना का संयोग होने पर ही उस अंग में गति आती है और वे कार्य करने लगते है।
* जितने धन से पेट भर लिया जाये उतना ही अपना समझना चाहिये।
* हंसना जीवन का एक अंग है इसलिये इसको गम्भीर साहित्य से भी अलग नहीं करना चाहिये।
* शक्ति यदि सृजन न बन सके तो वह विनाश बन जाती है।
* धर्म धूर्तों के हाथों में है इसीलिये ही तो जगत में अधर्म हो रहा है।
* पुरुष अर्थ का दास है, पर अर्थ किसी का दास नहीं।
* आत्मबल की सफलता का सबसे बड़ा प्रमाण यही है कि इतने सारे युद्धों के बावजूद भी दुनिया अभी तक कायम है।

* पूर्ण से पूर्ण का उदय होता है। पूर्ण ही पूर्ण के द्वारा सींचा जाता है।
* मूर्ख को चाहे जितना समझा लो पर वह अपनी जिद नहीं छोड़ता है।
* सुसम्पन्न कार्य का पुरस्कार उसको सम्पन्न करा लेना ही है।
* स्नेह भरी वाणी सदा बोलनी चाहिये जिससे सुनकर सभी प्राणी हर्षित हो। दूसरों को पीड़ा देना, कटु वचन कहना यह सब गर्हित कर्म है।
* बहुमत की वाणी न्याय का प्रमाण नहीं है।
* शिक्षा जीवन के लिये होती है न कि मात्र जीविका के लिये।
* सन्तुलन जीवन की कुंजी है।
* सुख प्राय: हमसे मिलकर चल देते हैं पर दुख निर्दयपूर्वक चिपके रहते है।
* प्रतिहिंसा पशुधर्म है।
* सुन्दर दृष्टि मौन को वाचाल बना देती है, कृपालु दृष्टि विरोध को सहमति बना देती है। क्रुद्ध दृष्टि सौन्दर्य को विकृत बना देती है।
* धन से धन का आकर्षण होता है।
* स्त्री हो या पुरुष, जीवमात्र में गुण और स्वभाव ही उसमें मुख्य वस्तु है। इनके सिवा और सभी बातें गौण है।
* किसी किसी समय जब हमारे सदभाव पराजित हो जाते है तब दुष्परिणाम का भय ही हमें कर्मच्युत होने से बचाता है।
* कर्त्तव्य का पालन ही चित्त की शान्ति का मूलमंत्र है।
* राजा की निगाहें चारों ओर दौड़नी चाहिये। अगर उसमें इतनी योग्यता न हो तो उसे राजा बने रहने का कोई अधिकार ही नहीं।
* सभ्यता कभी भी एकान्तिक वस्तु नहीं होती, पश्चिम की सभ्यता पूरब की सभ्यता भी हो सकती है।
* पुराना नष्ट होता है, समय परिवर्तित होता है और खंडहरों में से भी एक नया जीवन उदित होता है।
* जब हम आनंदित होते है उसी समय हम अच्छा सुख पाते है।
* निराश व्यक्ति को कभी प्रलोभन नहीं देना चाहिये।
* राष्ट्रद्रोही अपराधी मृत्युदंड के योग्य ही होते है।
* जिम्मेदारियां उस व्यक्ति की ओर खिंची चली आती है जो उन्हें कन्धोंपर ढो सकता है।
* समय और लहरें किसी के लिये रुकते नहीं।
* मनुष्य अपने ही दोषों से शंकित होता है।
* क्रोध को जीतने में मौन जितना सहायक होता है उतनी कोई और शक्ति कारीगर नहीं।
* मनुष्य अपनी भूलों से संसार की विचित्र स्थितियों में फंस जाता है।
* जीवन की भांति मृत्यु का भी सबसे विशिष्ट आलोक मुख पर ही पड़ता है।
* मानव जाति बहुत अधिक यथार्थ को सहन नहीं कर सकती।
* शत्रु वीर वही है जो बिना शस्त्र धारण किये शत्रु के सामने छाती खोल कर मरने का साहस करता है।
* प्रतिज्ञा का पालन ही महानता का लक्षण है।

* कोई भी मनुष्य अपने सच्चाई और निर्भिकता के कारण याद किया जाता है, अन्य चीजों के लिये नहीं।

* स्वयं को अपनी सकारात्मक सूचनायें देते रहें और जिन्दगी में मुस्कुराना न भूलें।

* सूर्योदय में जो नाटक भरा है, सौन्दर्य भरा है और जो लीला भरी है वह और कही देखने को नहीं मिल सकती।

* जो मनुष्य निश्चय करके कार्य प्रारम्भ करता है, कार्य को बीच में छोड़ता नहीं, समय को व्यर्थ नहीं गंवाता वह पंडित मानने योग्य है।

* महात्माओं का चरित्र विभिन्न होता है। वे धन वैभव को तिनके के समान समझते है किन्तु इसके प्राप्त होने पर बोझ से झुक जाते हैं।

* कायर बहुसंख्यक होने से प्रसन्न होते है जबकि बहादुर अकेले ही लड़ने में अपना गौरव समझते है।

* पति की प्रसन्नता में ही पत्नी का सौभाग्य है।

* नि:स्वार्थता ही धर्म की कसौटी है। जो जितना अधिक नि:स्वार्थी है वह उतना ही अधिक आध्यात्मिक और शिव के समीप है।

* महापुरुषों का सबकुछ अलौकिक ही होता है।

* जिसे खुद पर विश्वास नहीं, वह दूसरों पर भरोसा नहीं कर सकता।

* निराशावादी हर अवसर में कठिनाई ढूंढेगा और आशावादी हर कठिनाई में अवसर तलाश लेगा।

* नियम के बिना और अभिमान के साथ किया गया तप व्यर्थ ही होता है।

* जिन्दगी में सबसे बड़ी गलती अपनी किसी गलती को न मानना है।

* यदि मनुष्य प्रतीक्षा करे तो हर वस्तु प्राप्त हो जाती है।

* महापुरुषों से विरोध भी हो तो अच्छा ही है।

* सत्य के ऊपर कोई ईश्वर नहीं है, सत्य ही सर्वप्रथम खोजने की वस्तु है।

* मन, बुद्धि अहंकार का लय ही प्रलय है।

* मौन रहने से कलह नहीं होती और जागते रहने से भय नहीं होता।

* आपको जो मिलता है उससे आप जीवन चला सकते है लेकिन आप किसी को कुछ देते है उससे आप उसका जीवन बना सकते हैं।

* बड़प्पन सिर्फ उम्र से नहीं, उम्र के कारण मिले हुए ज्ञान और चतुराई में है।

* इस संसार में अपने लिये कौन मानव नहीं जीता है परन्तु परोपकार के लिये जो जीता है वही वास्तव में जीता है।

* मोह माया के चक्कर में पड़कर मनुष्य सक्षम होते हुए भी कुछ नहीं कर पाता।

* जो दूसरों पर नियंत्रण करता है वह ताकतवर हो सकता है पर जो स्वयं पर नियंत्रण रख पाता है वह कही अधिक सशक्त है।

* नकारात्मक विचार जीवन को नष्ट करते हैं अत: सकारात्मक विचारों से ही काम करें।

* ऐसे व्यक्ति को जीने का अधिकार नहीं जो समय के साथ नहीं चल सकता हो।

* हमारे मन का दायां हाथ तर्क और बायां हाथ विश्वास है।

* सारे संसार पर विजय पाने से अधिक जरूरी है कि अपने मन पर ही विजय पायी जाएं।

* अपना काम मन लगाकर करो, निष्ठासे व श्रेष्ठ तरीके से करना भी समाजसेवा है।

* कुछ न करनेवालों से कभी भूल नहीं होती लेकिन कुछ न करना ही सबसे बड़ी गलती है।

* राह के पत्थर प्रज्ञावानों के लिये अवरोध नहीं, सीढ़ियां ही सिद्ध होते है।

* रचनात्मक सोच मन और मस्तिष्क के लिये सदा ही उपयुक्त है।

* अंतकरण की भावमयता में से ही वाणी मुखरित होती है और अंत:करण की संकुलता के पश्चात ही हाथ भी कार्य करते है।

* अच्छा विश्वास ऐसी दवा है जो हमारी सर्वोत्तम शक्ति को सक्रिय बनाता है।

* शब्द ही हमारे घर के धन रत्न है इनका इस्तेमाल बहुत सोच समझकर करना चाहिये।

* अच्छे विचारों को अपनाते रहे इससे आपके हाथों अच्छे काम होते रहेंगे।

* संसार की सबसे उत्तम देवदुर्लभ वस्तु यौवन है।

* दुनिया में कुछ ऐसे भी महात्मा होते है, जो अपना पेट चाहे ना भर सके, पर पड़ोसियों को न्यौता देते हैं।

* यदि पर्वत भी वृक्ष के समान तेज आंधी से हिल उठे तो फिर दोनों में अंतर ही नहीं है।

* जो लोग मूर्खता पूर्वक या धृष्टतापूर्वक व्यवहार करते है उनपर क्रोध करने का कोई लाभ नहीं।

* जिसमें जितना साहस होता है उसके अनुसार उसके संकल्प भी होते हैं।

* मैं कौन हूं? इसकी खोज दूसरों की नजरों से नहीं बल्कि स्वयं की नजरों से करें।

* दुख के पल याद करने से मनुष्य निराशा और असफलता को प्राप्त करता है।

* अतीत का अध्ययन करो, जियो वर्तमान में और भविष्य के लिये तैयार रहो।

* कभी कभार छोटी चीजों का भी आनन्द लें, किसी दिन ये भी बड़ी हो जाती है।

* जो दूसरों पर उपकार करने के इच्छुक है वह द्वार खटखटाता है, जिसके हृदय में दूसरों के लिये प्रेम है उसके लिये सब द्वार खुले हैं।

* किसी के गुणों की प्रशंसा करने से समय नष्ट न करो बल्कि उनके गुणों को अपनाने का प्रयास करो।

* जब किसी विचार को दृढ़तापूर्वक करने की इच्छा हो तो वही संकल्प बन जाता है।

* जीवन में सबसे बड़ा खतरा है कोई जोखिम न उठाना।

* आलस्य की कब्र में सब सद्‌गुण दफन हो जाते हैं।

* बार-बार निर्णय बदलना सफलता के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा है।

* सब कुछ बांटो सब मिलेगा, सब अपने पास रखोगे तो सब नष्ट हो जायेगा।

* जीवन एक संघर्ष है, यदि जीवन से प्रेम करना है तो संघर्ष से भी प्रेम करे।

* किसी का वध करना सबसे बड़ा अपराध है। इसका दंड मृत्युदंड से कम नहीं हो सकता।

* युवा काल की आशा पुआल की आग है जिसके जलने में और बुझने में देर नहीं लगती।

* सत्य में विश्वास रखना प्रत्येक मनुष्य का धर्म है। जिस मनुष्य के चित्त से विश्वास जाता रहता है, उसे मृतक ही समझना चाहिये।

* जो सत्य विषय है उनमें सब का एक मत है, विवाद सिर्फ झूठे विषयों में होता है।

* जो गहरे उतरते हैं वे जानते है कि उन्हें अभी बहुत कुछ जानना बाकी है।
* मानवता ही समस्त विश्व का एकमात्र धर्म है।
* बाधायें ऐसी डरावनी चीजें है, जो लक्ष्य से निगाहें हटते ही आपको दिखने लगती हैं।
* जीवन चुनावों से भरा है, प्रेम को चुनिये।
* कोई इतना अमीर नहीं हुआ कि उसको पड़ोसी की जरूरत न हो।
* संसार में अपने पंखों से उड़ना सीखो क्योंकि दूसरों के पंखों के सहारे उड़ना सम्भव नहीं।
* प्रेम आंखों से नहीं मन से देखता है।
* जो काननू के साथ है वह सही है।
* आत्मविश्वास एक ऐसी दवा है जो हमारी सर्वोत्तम शक्ति को सक्रिय बनाता है।
* हमारी समस्यायें ही हमारी सम्भावनायें हैं।
* युवावस्था में एकान्तवास चरित्र के लिये बहुत ही हानिकारक है।
* ईमानदारी की आदत लग जाने पर कामचोरी व आलस्य स्वयं भाग जाता है।
* सत्य सदैव प्रकट रहता है, हम ही उसे देख नहीं पाते।
* सकारात्मक सोच चुम्बक की तरह है जो सकारात्मक परिणामों को खींचता है।
* जीवन की बाजी में हार जीत तो हमारे हाथ नहीं, पर बाजी खेलना हमारे हाथ में है।
* सच्ची जिन्दगी वही है जहां हम अपने लिये नहीं सबके लिये जीते हैं।
* बुद्धि बिना शक्ति के छल और कल्पना मात्र है और शक्ति के बिना बुद्धि मूर्खता और उन्माद है।
* चन्द्रमा की किरणों से खिल उठनेवाला कुमुद पुष्प सूर्य की किरणों से नहीं खिला करता।
* यदि शारीरिक उपवास के साथ-साथ मन का उपवास न हो, तो वह दम्भपूर्ण और हानिकारक होता है।
* जो निर्बल है, वह सर्वगुण सम्पन्न होकर भी क्या करेगा? पराक्रम में सभी गुण गुणीभूत होकर रहते हैं।
* राम नाम मृत्यु के दु:ख को मिटा देता है, यह राम नाम का कोई छोटा मोटा चमत्कार नहीं है।
* मान-सम्मान तभी तक है जब किसी के सामने मदद के लिये हाथ न फैलाया जाये।
* देश का भविष्य महज नेताओं के हाथ में नहीं बल्कि देश की जनता के हाथ में है।
* वो ही विजय महान है जो बिना रक्तपात के मिलती है।
* दुनिया में खाई में धकेलनेवाले अनेकों है मगर उसमें से निकालनेवाले लोग गिने चुने ही है।
* पत्नी पुरुष की अर्धांगिनी और परम मित्र है। संसार में जिसका सहायक कोई न हो, उसकी पत्नी जीवन यात्रा में साथ देती है।
* राजा सत्य है, राजा धर्म है, राजा कुलीन पुरुषों का कुल है, राजा ही माता-पिता है तथा राजा मनुष्यों का हित साधन करनेवाला है।
* जिसने पहले आपका उपकार किया हो वह यदि बड़ा अपराध कर भी दे तो उसके उपकारों का स्मरण कर उसका अपराध क्षमा कर देना चाहिये।

* कार्य की सिद्धि होने पर लोग राजा के बल की प्रशंसा करते है और असिद्धि होने पर लोग मंत्री की बुद्धि को दोष देते हैं।

* नेतृत्व का उद्देश्य लोगों का सही मार्गदर्शन करना है, हुकूमत करना नहीं।

* किसान को अपने बैल अपने लड़कों के समान प्यारे होते हैं वह उन्हें पशु नहीं, अपना मित्र और सहायक समझता है।

* जीवन वास्तव में अन्धकार है, सिवाय उन घड़ियों के जिनमें प्रेरणा का अस्तित्व है।

* प्रेम से शासन करना मानवता है, अन्याय से शासन करना बर्बरता है।

* विश्व का इतिहास केवल महापुरुषों का चरित्र है।

* बुद्धिमत्ता ही समृद्धि का निवासस्थान है।

* श्वेत वस्तु के बीच कालिमा सरलता से दिखाई पड़ जाती है।

* यदि हम भगवान को मानते हैं तो हमें यह भी मानना होगा कि यह सृष्टि भी उसी के अन्दर से निकले हुये ताने बाने का परिणाम है।

* एक तपे हुये लोहे को दूसरे तपे हुये लोहे से जोड़ देना ठीक है।

* पति-पत्नी पक्के और सच्चे साथी है। दोनों धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पदार्थों की प्राप्ति के लिये सामूहिक प्रयत्न करते हैं।

* इस धरती पर ऐसा कोई भी स्थान नहीं है जहां प्रेम न हो।

* सोने का प्रत्येक धागा मूल्यवान होता है इसी प्रकार समय का प्रत्येक क्षण भी मूल्यवान होता है।

* अज्ञानता प्रशंसा की जननी है।

* बाल्यावस्था के पश्चात ऐसा समय आता है जब उद्दण्डता की धुन सिर पर सवार हो जाती है।

* प्रेम सबको वश में कर लेता है। हमें भी प्रेम के वश में हो जाना चाहिये।

* प्रसन्नता पीड़ा के विराम के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

* यदि स्त्री और पुरुष के विचार और आदर्श एक जैसे हो तो स्त्री पुरुषों के कामों में बाधक होने के बदले सहायक हो सकती है।

* कांटों को देखकर भागनेवाला व्यर्थ ही फूलों से भी वंचित रह जाता है।

* वही मनुष्य श्रेष्ठ है जो पराये को भी अपना बना ले।

* जीवन देखने का ढंग ही जीवन का आधार बन जाता है।

* अचल निष्ठा ही महान कार्यों की जननी है।

* संकल्प स्वतन्त्र नहीं होता, वह भी कार्यकारण से बन्धा एक तत्व है लेकिन संकल्प के पीछे कुछ होता है जो स्वतन्त्र है।

* मन बुद्धि और अहंकार का लय ही प्रलय है।

* देश तथा समाज की सच्ची खिदमत वही करता है जो बदला तथा यश की आशा न रखकर निस्वार्थ भाव से सेवा करता है।

* हर ध्वंस में निर्माण के और हर प्रलय में सृष्टि के बीज पड़ते हैं।

* अनुभव की पाठशाला में जो पाठ सीखे जाते हैं वे कही और नहीं मिलते।

* नेता को नेतृत्व करना चाहिये नही तो उसे राजनीति में नहीं रहना चाहिये।
* धूर्तता तो निर्बलों का हथियार है। बलवान कभी नीच नहीं होता।
* दूसरों के अनुभव से होशियारी सीखने की मनुष्य की इच्छा नही होती, उसको स्वतन्त्र ठोकर चाहिये।
* व्यक्तित्व पर चरित्र से पहिले ध्यान केन्द्रित करना बिना जड़ों के पेड़ लगाने की कोशिश जैसा है।
* द्वन्द को जीतने का उपाय द्वन्द को मिटाना नहीं है बल्कि द्वंदातीत होना है।
* महान लोगों की उदारता का भंडार कभी नहीं घटता।
* कामना, भय, लोभ अथवा जीवन रक्षा के लिये भी धर्म का त्याग नहीं करना चाहिये।
* यदि देश भक्ति का मतलब व्यापक मानवमात्र का हित चिन्तन नही है तो उसका कोई अर्थ ही नहीं है।
* मन वश में हो जाये तो कुछ भी किया जा सकता है।
* संदिग्ध काम करना कोई बुद्धिमानी नहीं है।
* श्रेष्ठ ज्ञानी पिता के समान होता है।
* आपका कोई भी काम महत्वहीन हो सकता है, पर महत्वपूर्ण यह है कि आप कुछ करे।
* जैसा को तैसा का व्यवहार पूरी तरह न्याय सम्मत होता है।
* जिनसे बहुत लोग डरते हैं वह स्वयं भी बहुतों से डरता है।
* खेल पूरी दुनिया को भाईचारे और शान्ति का सन्देश देते हैं।
* शक करने से आदमी शक्की हो जाता है तब बड़े-बड़े अनर्थ होने लगते है।
* कानों के दुरुपयोग से मन बहुत अशान्त और कलुषित हो जाता है।
* जिस काम के लिये परदे की आवश्यकता है, चाहे उसका उद्देश्य कितना ही पवित्र क्यों न हो, वह अपमान जनक है।
* हर आदमी हर दिन कुछ क्षणों के लिये मूर्ख होता है, समझदारी इसी में है कि इसे बढ़ने न दिया जाये।
* दुनिया की सबसे बड़ी उपलब्धि आपकी अपनी मेहनत है।
* राजनीति में विचार बदलते हैं।
* विद्वान, विवेचन, बलवान, कुलीन, धैर्यवान और उद्योगी पुरुष को भी यह चंचल लक्ष्मी दुर्जन बना डालती है।
* दुष्कर्म से सफलता प्राप्त करने की अपेक्षा धर्माचरण करते हुये मर जाना भी अच्छा है।
* देश बुद्धिमानों से ही सुशोभित होता है।
* मातृभाषा का अनादर मां के अनादर के समान है और जो कोई भी मातृभाषा का अपमान करता है वह स्वदेश भक्त कहलाने योग्य नहीं है।
* परस्पर फूटवाले लोगों का शीघ्र ही नाश हो जाता है।
* गुणवान पुरुष की जिन गुणों से जीविका चलती है तथा सभ्य समाज में प्रतिष्ठा होती है उन गुणों की वह रक्षा करे और वृद्धि करे।
* बड़े लोग विपत्ति आने पर विचलित नहीं होते, धैर्य धारण करते है।
* क्षणभर भी बिना काम के रहना ईश्वर के घर चोरी है।
* जो शूद्र सत्य और धर्म में रत है वह ब्राह्मण है क्योंकि मनुष्य सदाचार से ही ब्राह्मण बनता है।

* शरीर में जो प्राणों का स्थान है वही राष्ट्र में नेता को प्राप्त है।
* अपने विचारों को बदलो, दुनिया यो ही अपने आप बदल जायेगी।
* मन की अभिलाषित वस्तु की चिन्ता करने से भी दु:ख छंट जाते हैं।
* विचार ही हैं जो दुनिया पर राज कर सकते हैं।
* मार्ग को जानकर ही उस मार्ग पर चलो।
* मौन स्वीकृति का लक्षण है।
* तूफान में फंस जाने पर विश्वास का आश्रय लो।
* सुखद मधुर वचन व्यक्त करनेवालों के पास दु:ख दारिद्र्य कभी नहीं फटकता।
* दावें असाधारण हो तो सबूतों में भी दम होना चाहिये।
* सज्जनों का प्रेम दर्शनमात्र से ही हो जाता है।
* भीड़ की मानसिकता एक अन्धी शक्ति है।
* जब मन का द्वन्द खत्म होता है तभी संकल्प पूरे होते हैं।
* पवित्रता ही सुख शान्ति की जननी है।
* संसार में नाम और पैसे की महिमा कोई ठीक ठीक नहीं जान पाया।
* दया आध्यात्मिक जीवन की आवश्यकता है।
* भय हमारी इच्छाओं की लगाम है।
* मित्र अहित होने से रोकता है, हित में लगाता है और विपत्ति में साथ देता है।
* व्यक्ति के जीवन में हर दिन नया दिन होना चाहिये।
* देश की सेवा करने में जो मिठास है वह किसी और चीज में नहीं है।
* माता-पिता और शिक्षक पूजनीय होते हैं।
* भला व मददगार रवैया संक्रात्मक है, यह खुशी फैलाता है।
* प्रेम और विनम्रता से हर मनुष्य का दिल जीता जा सकता है।
* काम करना ही काम से प्यार करना है।
* अहंकार, घमंड और घृणा अज्ञानता की निशानी है।
* जिन्दगी में कुछ करने के लिये वक्त का सही इस्तेमाल आवश्यक है।
* इरादे अगर पक्के हो तो हर मुश्किल आसान हो सकती है।
* सफलता आप जो चाहे वह पाना है, खुशी जो आपके पास है उसे पसन्द करना है।
* जैसे सूर्य आकाश में छिपकर नहीं विचर सकता वैसे ही महापुरुष भी संसार में छिपकर नहीं रह सकते।
* प्रचलित फैशन हमेशा सुन्दर लगता है और व्यक्ति उसका अनुकरण करता है।
* यदि लोभ को जीवन से हटाना चाहते हो तो उसकी जननी विलासिता को पहिले हटाओ।
* सही बोलने से आपको सोचना नहीं पड़ेगा कि पहले आपने क्या बोला था।

* उत्तम विचारों से ही व्यक्ति का सही विकास होता है।
* ईश्वर का भय ही बुद्धि का आरम्भ है।
* धर्म की आज्ञा सर्वोच्च है।
* किसी कठिन कार्य में सफल हो जाना आत्मविश्वास के लिये संजीवनी के समान है।
* वास्तविक स्वरूप तो गुणों से ही प्रकट होता है। अपनी छाप गुणवान होकर डालनी चाहिये, रूपवान होकर नहीं।
* जो सुख दुख को सर्वत्र समता से देखता है, वह परम योगी जानने योग्य है।
* धैर्यवान व्यक्ति को जीवन में हमेशा सफलता मिलती है।
* कर्मठ मनुष्य भाग्य को भी बदलने की शक्ति रखता है।
* सुख की चाह हो तो दु:ख दूर करें।
* श्रद्धा सामर्थ्य के प्रति होता है, दया असमर्थ के प्रति।
* भद्दे कपड़ों व भद्दी भाषा के इस्तेमाल से बचना चाहिये।
* अपनी मान्यताओं से मुक्त हो जाना संसार से मुक्त हो जाना है।
* जो केवल खड़े रहते है, प्रतीक्षा करते वो भी सेवाका ही रूप है।
* जीवन के माधुर्य का रस लेने के लिये हमें अतीत की बीती बातों को भूला देने की शक्ति सामर्थ्य धारण करनी चाहिये।
* सूरज की हर पहली किरण एक नये जीवन की प्रेरणा देती है।
* भविष्य को वर्तमान खरीदता है।
* दूसरों को खुशी देना सर्वोत्तम दान है।
* दुनिया की सबसे बड़ी उपलब्धि आपकी अपनी मेहनत है।
* राज्य के सभी प्रतीकों का सम्मान करना राजा का परम धर्म है।
* वक्त पर काम आनेवाले ही सच्चे मित्र होते हैं।
* जिस मनुष्य में जितना साहस होता है उसीके अनुसार उसके संकल्प होते हैं।
* जो बनाया गया वो अनित्य है।
* प्रेम ही हमारे अस्तित्व की आधारशिला है।
* मनोविकारों पर विजय प्राप्त करना ही आत्मा की सच्ची स्वतन्त्रता है।
* पराधीन व्यक्ति सुख के आनन्द को नहीं जान सकता।
* सरलता का अर्थ है जैसा भीतर हो वैसा ही बाहर प्रकट कर दे।
* छिपकर किया गया पाप जीवन भर कांटे की तरह चुभता है।
* नसीहत देने के साथ ही खुद भी उन पर अमल करें।
* जब तक आप अपनी कद्र नहीं करते आप समय की कद्र नहीं करेंगे।
* धर्म प्रयोग है विचार नहीं, धर्म प्रक्रिया है चिन्तन नहीं, धर्म विज्ञान है दर्शन नहीं।
* मनुष्य में देवता और दानव दोनों रहते हैं।

* दंड के भय से शील बनता है।
* खेल मानव चरित्र के प्रतीक होते है इसलिये खिलाड़ियों को अपने चरित्र की सदा रक्षा करनी चाहिये।
* मरना तो है ही फिर मनुष्यता और अधिकार के लिये मरना ही श्रेयस्कर है।
* अपने धैर्य के बिना कोई और संकट से मनुष्य का उद्धार नहीं करता।
* हत्या से बड़ा कोई अपराध नहीं होता, इसके लिये कोई भी सजा कम ही है।
* ज्यादा बोलने से दूरियां बढ़ने लग जाती है।
* सरकार का सर्वोच्च दायित्व नागरिकों को सुशासन व सुरक्षा प्रदान करना है।
* अनजान होना उतनी शर्म की बात नहीं जितना सीखने के लिये तैयार न होना।
* हमेशा विजय उन्हीं की होती है जिन्हें उसपर विश्वास है।
* व्रत बन्धन नहीं बल्कि स्वतन्त्रता का द्वार है।
* दूसरों के धन का अपहरण करना सबसे बड़ा पाप है।
* सभ्यता स्वरूप है सादगी, अपने लिये कठोरता और दूसरों के लिये उदारता।
* प्रकृति के अनुकूल आना धर्म है।
* लोग कहते हैं कि जीवन कठिन है पर किसकी तुलना में?
* प्यार और सहकार से भरा पूरा परिवार ही धरती का स्वर्ग होता है।
* प्रेम समूचे विश्व को रूपांतरित कर सकता है।
* ईश्वर का प्यार केवल सदाचारी और कर्त्तव्य परायणों के लिये सुरक्षित रहता है।
* हमेशा सुधार करते रहना चाहिये, सदा सूरज की चमक में ज्यादा रहने पर भी जलने का खतरा होता है।
* सार्थक और प्रभावी उपदेश ब्रह्म है जो वाणी से नहीं अपने आचरण से प्रस्तुत किया जाता है।
* विनय के बिना सम्पत्ति का कोई उपयोग नहीं? चन्द्रमा के बिना रात का महत्व नहीं।
* कुकर्मी से बढ़कर अभागा कोई नहीं, क्योंकि विपत्ति में उसका कोई साथ नहीं देता।
* भक्त और ज्ञानी को सब सुख प्राप्त होते हैं।
* गृहस्थ एक तपोवन है जिसमें संयम सेवा और सहिष्णुता की साधना करनी पड़ती है।
* जो जैसा सोचता है वह वैसा ही बन जाता है।
* सत्य सदैव निराला होता है कल्पना से भी निराला।
* आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है।
* विध्वंस सरल, सृजन कठिन है, कुछ निर्माण तो करो जीवन में उल्लास होगा, जीवन में उत्सव होगा।
* अपनी रोटी मिल बांटकर खानी चाहिये ताकि तुम्हारे सभी भाई-बन्धु सुखी रह सके।
* जो कुछ आता है वह जाता भी है।
* जब तक मनुष्य प्रयास करता है उसके लिये कुछ भी असंभव नहीं है।
* कष्ट ही वह प्रेरक शक्ति है जो मनुष्य को कसौटी पर परखती है।

* कर्म जीवन का अमृत है, व्यस्त व्यक्ति ही सबसे सुखी है।
* द्वेष बुद्धि को हम द्वेष से नहीं मिटा सकते, प्रेम की शक्ति ही उसे मिटाने में सक्षम है।
* सिवाय अवसर के इस पृथ्वी पर कुछ भी निश्चित नहीं है।
* यात्रा कम उम्र में शिक्षा होती है और ज्यादा उम्र में अनुभव।
* जो बनाया गया है वो तो अनित्य है, स्थायी नहीं है।
* हताश न होना ही सफलता का मूल है और यही परम सुख है।
* प्रकृति को पराजित नहीं किया जा सकता।
* वही उन्नति करता है जो स्वयं अपने को उपदेश देता है।
* जो अपने ऊपर विजय प्राप्त कर सकता है, वही सबसे बड़ा विजयी है।
* खेल मानव जीवन का प्रतीक है इसलिये खिलाड़ियों को अपने चरित्र को उज्ज्वल बनाना चाहिये।
* जब करुणा प्राणों में बस जाती है तभी धर्म दर्शन देता है।
* सचमुच में जो मनुष्य है वह अन्याय के विरुद्ध विद्रोह करेगा।
* कुटिल लोगों के प्रति सरल व्यवहार अच्छी नीति नहीं।
* करुणा में शीतल अग्नि होती है जो क्रूर व्यक्ति का हृदय भी आर्द्र कर देती है।
* क्रियात्मक रवैया रखना चाहिये न कि प्रतिक्रियात्मक रवैया अपनाये।
* जल अग्नि को शीतल करता है वैसे ही ज्ञान मन को शान्त करता है।
* आसान होने के पहले हर चीज कठिन होती है।
* सत्य का अर्थ केवल सच बोलना नही है। सत्य का अर्थ है प्रामाणिकता से बोलना, सत्य का अर्थ है जैसा मैं भीतर हूं वैसा ही बाहर हूं। कथनी और करनी में फर्क नहीं होना।
* जिन्दगी का सबसे बड़ा पाप है किसी को घर से बेघर करना।
* जिन्दगी का महत्व तभी है जब उसे जिया जाय।
* मन की अभिलाषित वस्तु की चिन्ता करने से भी दुख घट जाते हैं।
* प्रकृति, समय और धैर्य से हर दर्द की दवा है।
* दोस्तों की भाषा शब्दों से नहीं उसके अर्थों से बनती है।
* एक सच्चा हृदय सारे संसार की विलक्षण शक्तियों से मूल्यवान है।
* जहां प्रकाश रहता है वहां अन्धकार कभी नहीं आ सकता।
* ज्ञानी तो सभी होते है लेकिन ज्ञान का उपयोग करनेवाले को ही संसार ज्ञानी कहता है।
* विद्वता अच्छे दिनों में आभूषण, विपत्ति में सहायक और बुढ़ापे में संचित धन है।
* कष्ट और विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देनेवाले श्रेष्ठ गुण है।
* श्रम करना और इन्तजार करना सीखना चाहिये।
* जब तक मनुष्य प्रयास करता है उसके लिये कुछ भी असम्भव नहीं।

* लोहा भी कठोर सख्त पदार्थ है पर गरम होने पर कमजोर और मुलायम हो जाता है। इसलिये हर परिस्थिति में खुश रहो ठंडे रहो तो जिन्दगी में दृढ़ बन जाओगे।

* सत्य को परख कर धारण की जानेवाली श्रद्धा ही श्रेष्ठ है।

* प्रवाह ही प्रगति व सुख का सूत्र है।

* दया करना सबसे बड़ा धर्म है।

* दोस्ती जितनी पुरानी हो उतनी अच्छी होती है।

* मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, पुण्य करने से पाप नहीं रहता।

* जीतना आदत होती है, दुर्भाग्य से हारना भी आदत बन जाती है।

* दु:ख का एक क्षण एक युग के बराबर होता है।

* वे ही विजयी हो सकते है जिनमें विश्वास है विजयी होने का।

* विष, अग्नि, सर्प तथा शस्त्र भी संसार को उतना भय नहीं है जितना भय बिना कारण संसार के शत्रु दुष्टों से होता है।

* प्रकृति को कभी पराजित नहीं किया जा सकता।

* जो वास्तव में मनुष्य है वह अन्याय के प्रति विद्रोह करेगा।

* मानव का मानव होना ही उसकी जीत है, दानव होना हार है।

* सबसे अधिक ज्ञानी वो ही है जो अपनी कमियों को समझकर उनका सुधार कर सके।

* मनुष्य मन की शक्तियों का बादशाह है, संसार की समस्त शक्तियां उसके सामने नतमस्तक हैं।

* सोच कर ही लक्ष्य हासिल किया जा सकता है।

* जनता में किसी की भी सत्ता बदल देने का बल होता है।

* लगातार जीतना ही कुशल खिलाड़ी की निशानी होती है।

* प्रकृति की असीम शक्ति के समक्ष मानव असहाय होता है।

* मानव हृदय में घृणा लोभ और द्वेष विषैली घास के समान है जो प्रेम रूपी पौधे को नष्ट कर देती है।

* बुद्धिमत्ता वह गुण है जो जटिल को सरल बना देता है।

* न्याय कर्मठ सत्य है।

* कदम-कदम पर आनेवाली असफलतायें और लगातार समस्याएं मनुष्य के जीवन को नकारात्मक भावों और विचारों से भर देती है। सकारात्मक विचार हमें ऐसे समय में आशा व उत्साह प्रदान करते हैं मृतभावों को जीवित करते हैं।

* दुर्जन व्यक्ति बिना दूसरों की निन्दा किये हुये प्रसन्न नहीं होता।

* बुद्धि और परिश्रम के बलपर ही सफलता हासिल होती है।

* जो कुछ आप कर रहे हैं उसे उत्साह से करो आपका आनन्द बढ़ जायेगा।

* दान पुण्य करने से आत्मिक शान्ति मिलती है।

* सत्य और अहिंसा के पालन से ही जीवन सार्थक बनता है।

* क्रोधी मनुष्य पशु के समान है।

* थोड़े से पैसों के लिये अपने सपने मत बेचो।
* पुरुष सृष्टि की सबसे चमत्कार पूर्ण रचना है।
* निर्मल आत्मा व्यक्ति के चरित्र को ऊंचाई तक ले जाती है।
* विचारों में मतभेद होना कोई गलत नहीं होता।
* आप जो भी हो पर भला मनुष्य अवश्य बने।
* जहां भोग होता है वहां योग नहीं हो सकता।
* भोजन की थाली में जूठन छोड़ना किसी के मुंह से निवाला छीनने के समान है।
* ईश्वर सबके भीतर अलग-अलग रूप से आता है।
* अविश्रान्त क्रियाशीलता ही पुरुषार्थ का लक्षण है।
* सबसे उत्तम विजय प्रेम की होती है।
* दुनिया में माता-पिता के सिवा हर वस्तु का विकल्प है।
* समय और बुद्धि बड़े से बड़े शोक को भी भूला देते हैं।
* विवेक वीरता का श्रेष्ठतम भाग है।
* युद्ध अहंकार की सन्तान है और अहंकार धन सम्पत्ति की पुत्री है।
* बड़े लोक विपत्ति आने पर धैर्य धारण करते हैं।
* जीवन में व्यावहारिक ज्ञान अनुभव से ही प्राप्त होता है।
* दुख दूर करने की एक ही दवा है, मन से दुखों की चिन्ता न करना।
* दीन दुखियों की सेवा करनेवाला मनुष्य भगवान को प्रिय होता है।
* मंजिल उन्हीं को मिलती है जिनके सपनों में जान होती है।
* अनुभवी व्यक्ति मुश्किलों का सामना दृढ़ आत्मविश्वास से करता है।
* संसार में रहो पर संसार को अपने अन्दर प्रवेश मत होने दो।
* अच्छा होना अपने आपमें बहुत अच्छा है।
* सात्विक आहार लेने से तन स्वस्थ और मन प्रसन्न रहता है।
* नम्रता और मधुर वचन ही मनुष्य के आभूषण है।
* देश भक्त स्वदेश के लिये जीता है और स्वदेश के लिये ही मरता है।
* जो अपने पर विजय पा लेता है वास्तव में वही सच्चा विजयी है।
* प्रेम आंखों से नहीं मन से देखता है।
* प्रतिहिंसा पाश्विक धर्म है।
* दुख सुख के साथ ही निरन्तर घूमता रहता है।
* दुर्जन व्यक्ति बिना दूसरों की निन्दा किये हुये प्रसन्न नहीं होता।
* जब भी मनुष्य कोई कर्म, उद्योग करेगा तो उससे भूल होना स्वाभाविक है, सम्भव है।

* वास्तविकता को स्वीकार करनेवाला मनुष्य ही सफलता को प्राप्त करता है।
* सम्पन्नता मन से होती है धन से नहीं।
* श्रेष्ठ पुरुष जिस मार्ग से चलते है उसका सभी लोग अनुसरण करते हैं।
* आत्मविश्वास ही जीवन में प्रगति का मार्ग है।
* हार ही जीत है यदि उससे कुछ सीखा जा सके।
* ईश्वर विज्ञानों की संगति से प्राप्त होता है।
* जीवन यात्रा सुखमय हो इसके लिये अति परिग्रह और अति परिचया से बचे।
* अपने को संकट में डालकर कार्य करनेवालों की विजय सुनिश्चित है।
* सपने हमेशा सच नहीं होते पर जिन्दगी तो उम्मीद पर टिकी होती है।
* अपनी योग्यता का अधिकतम उपयोग ही सफलता है।
* जो सत्य के लिये जीवन को दांव पर लगाते हैं वे ही जिन्दा है।
* सत्य की एक चिनगारी असत्य को भस्म कर देती है।
* सपनों को सच करने के लिये पहले जाग जाना होता है।
* व्यक्ति को विनयशील होना ही शोभा देता है।
* व्यस्त मनुष्य तनावों से दूर रहता है।
* जो आपके अधीनस्थ है उनके प्रति ईमानदार रहे।
* प्रशंसा पाना है तो प्रशंसा करना सीखे।
* दुर्जन व्यक्ति बिना दूसरों की निन्दा किये हुये प्रसन्न नहीं रह सकता।
* किसी बात से अहमत होने का अधिकार पवित्र अधिकार है।
* आपके विचार आपका जीवन बनाते हैं।
* जीवन में सुख और दु:ख का समान महत्व है।
* सकारात्मक विचारों से आपका जीवन उन्नत होता है।
* सहयोग सफलता का सर्वश्रेष्ठ उपाय है।
* प्रवाह प्रगति व सुख का सूत्र है।
* दुर्बलता एक पाप है।
* निर्दोष युवावस्था एक अनमोल निधि है।
* यदि विश्व का विश्वास चाहते हो तो लोगों पर दोषारोपण करना छोड़ दो।
* प्रकृति की असीम शक्ति के समक्ष मानव असहाय होता है।
* दरिद्रता में नैतिकता का समावेश सम्भव नहीं हो सकता।
* हीन भावना से ग्रस्त व्यक्ति कभी सफल नहीं होता।
* भली प्रतिष्ठा व्यक्ति की सबसे बड़ी सम्पत्ति है।

* मानव ही मानव का सर्वाधिक भक्षक है।
* मन एक भीरु शत्रु है जो सन्देश पीठ के पीछे से वार करता है।
* सम्मान अपने आप से मिलता है मांगने से नहीं।
* जो आपत्ति काम में धर्म को धारण करता है वही धर्मात्माओं में श्रेष्ठ है।
* ज्ञानी जन विवेक से सीखते है, साधारण मनुष्य अनुभव से।
* प्रत्येक कार्य अपने समय से ही होता है इसमें शीघ्रता करना ठीक नहीं।
* हमें अधिकतर तनाव हमारी थोड़ी सी लापरवाही और आलस्य से होता है।
* धैर्यवान मनुष्य आत्मविश्वास के बल पर सफलता प्राप्त करते हैं।
* हम जो चाहे कर सकते हैं केवल हम उस पर स्थिर रहें।
* अभय धर्म का प्राण है, अभय की चट्टान पर ही धर्म का भवन खड़ा होता है।
* होली समाज के लिये इन्द्रधनुषी उत्सव है।
* संवेदनशीलता न्याय की पहिली अनिवार्यता है।
* धर्म मनुष्य को मुक्त करने की कला है।
* शास्त्र में जो धर्म है वह राख है, जीवन में जो धर्म है वह अंगार है।
* निर्दोष युवावस्था एक अनमोल निधि है।
* बिना लक्ष्य के कुछ भी हासिल नहीं हो सकता।
* अपने को मनुष्य बनाने का प्रयत्न करो तो हर काम में सफलता मिलेगी।
* बड़ा आदमी वो ही है जो गुस्से में भी नपा तुला ही बोलता है।
* कर्म, ज्ञान और भक्ति ये तीनों जहां मिलते हैं वही सर्वश्रेष्ठ पुरुषार्थ जन्म लेता है।
* आलस्य की कब्र में सब सद्‌गुण दफन हो जाते हैं।
* नम्रता और मीठे बोल ही मनुष्य के सच्चे भूषण हैं।
* बुरे लोगों की दोस्ती से बचना जरूरी है। अगर वो भलाई भी करना चाहे तो उनसे बुराई हो सकती है।
* मनुष्य ने मनुष्यों को गुलाम बनाया हालांकि मांओं ने तो उन्हें आजाद पैदा किया है।
* आँख दिल का दरवाजा है, उसकी रक्षा करनी चाहिए कारण की तमाम मुसीबतें और बुराइयां इसी दरवाजे से मनुष्य के शरीर में प्रवेश करती है।
* सच्चाई का दर्पण बिल्कुल साफ होता है मगर झूठे लोग इसमें अपनी शक्ल नहीं देख सकते क्योंकि दर्पण में चमकदार चीज ही नजर आती है अन्धेरा नहीं।
* ईश्वर ने मनुष्य पर इतने अनगिनत अहसान किये हैं जिनको गिनना भी मुश्किल है। उसकी जरूरत की हर चीज पैदा की है। उसके खाने-पीने रहने की सारी चीजें दी है पर दु:ख इस बात का है कि मनुष्य ईश्वर के साथ नाइन्साफी करता है और उसके उपहारों की नाकद्री करता है।
* आज का काम कल पर न छोड़े आज का झगड़ा आज ही निपटा लेना चाहिए।
* जब भी किसी मुद्दे पर बात हो, पुराने झगड़ों को उसमें शामिल न करें। विवाद को अधूरा न छोड़ें उसे हल करके ही

उठें। वरना जख्म बना रहेगा। हम बातों को, मनमुटाव को दिमाग में न भरकर गलतफहमियों को उसी वक्त बातचीत करके दूर कर ले।

* आत्मनिर्भरता से ही आत्मोन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है।

* सदैव काम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए और कभी भी अपने काम या व्यवसाय को हेय दृष्टि से न देखें।

* जब मनुष्यों में बेहयाई पैदा हो जाती है तो सामाजिक मूल्यों में गिरावट आ जाती है और समाज की बीमारियां तरह-तरह के रूप बदलकर सर उठाने लगती है। वो मनुष्य को अंधेरे दलदल में ढकेल देती है।

* आप कितना जल्दी कार्य करते हैं, इसे लोग याद नहीं रखते बल्कि कार्य आप कितने अच्छे तरीके से करते हैं यह याद जरूर रखा जाता है।

* जाति, धर्म अलग-अलग हो सकते हैं और ईश्वर को याद करने के तरीके भी भिन्न हो सकते है पर ईश्वर सबका एक ही है।

* जीवन निर्वाह के लिए कमाने में इतने व्यस्त न हो जाएं कि सही तरीके का जीवन जीना ही भूल जाएं।

* हमेशा बड़ों का अदब और आदर करो। झूठ बोलने और दूसरों की बुराई करने से हमेशा बचो। अपने अच्छे बर्ताव से हमेशा दूसरों का दिल जीतो। आपस में लड़ाई झगड़े से और बुरी बातों से बचते रहो।

* कभी किसी का दिल मत दुखाओ क्योंकि ऐसा करने से ईश्वर आपसे नाराज रहता है।

* अपना हर काम वक्त पर करने की आदत डालो।

* कोई भी अच्छी बात सुनो और उसपर अमल करने की कोशिश करो।

* शिक्षा एक ऐसी दौलत है जो दुनिया के किसी खजाने में नहीं मिलती। इसलिए मन लगाकर शिक्षा हासिल करनी चाहिए।

* मनुष्य दुनिया की जिंदगी में जो भी काम करता है, छोटा या बड़ा, छुपकर या खुल्लम खुल्ला चाहे उसका सम्बन्ध भलाई से हो या बुराई से। जिसने नेकी की होगी ईश्वर उसे देखकर खुश होता है और जिसने बुराई की होगी उसको देखकर दुखी और गमगीन होता है। मनुष्य को हमेशा उस आदेश का अहसास होना चाहिए कि नेक कामी कभी बर्बाद नहीं होता यह खयाल बिलकुल गलत है कि उसका फल सिर्फ आनेवाली जिंदगी में ही मिलेगा। मनुष्य को कभी भी ईश्वर की रहमत से मायूस नहीं होना चाहिए।

* जो रास्ता मालूम न हो उसपर सफर मत करो।

* जिस चीज के बारे में कोई ज्ञान नहीं हो, उसके बारे में किसीसे कुछ मत कहो।

* बहादुरी यह नहीं है कि किसी से इंतकाम ली जाये, बल्कि बहादुरी इसमें है कि ताकत होते हुए भी उसे माफ कर दिया जाए।

* आजमाए हुए को दोबारा आजमाना और मीठी मीठी बातें करनेवाले को अपना हमदर्द समझ लेना नादानी है।

* मुसीबतें तो जिंदगी में झेलनी पड़ती है और मौत तमाम मुसीबतों से छुटकारा दिला देती है।

* जिस झूठ को हम चुन लेंगे वही कल सच बन जायेगा।

* आप सकारात्मक सोच रखकर अच्छी चीजों को आकर्षित कर सकते हैं और नकारात्मक सोच से बुरी चीजें हावी होती है।

* अपना काम दूसरों पर छोड़ना भी एक तरह से दूसरे दिन काम टालने के समान ही है। ऐसे व्यक्ति का अवसर भी निकल जाता है और उसका काम भी पूरा नहीं होता।

* घर की खुशहाली में स्वभाव का बड़ा महत्व होता है। वैवाहिक जीवन में तो पति-पत्नी का स्वभाव ही जीवन की बुनियाद है। यदि दोनों का ही स्वभाव उग्र हो तो जीवन नर्क तुल्य हो जाता है और यदि एक का उग्र और दूसरे का नर्म हो तथा

मेल खा जाए तो जीवन सार्थक हो जाता है, किन्तु यदि दोनों का स्वभाव नर्म हो, अच्छा हो तो जीवन स्वर्ग बन जाता है।

✻ स्वयं भी हंसते मुस्कराते जियो और दूसरों के मार्ग में व्यवधान पैदा न करो। जीना उसीका सत्य है जिसका स्वभाव जिन्दा है, जो हंसमुख है, प्रफुल्लित है।

✻ व्यक्ति के जीवन में उसके स्वभाव की अहम् भूमिका होती है। स्वभाव कच्ची मिट्टी की भांति होता है, जिसकी कोई शक्ल नहीं होती। इसे आकृति देने की आवश्यकता होती है।

✻ दुनिया में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसकी प्रकृति और स्वभाव को संवारा न जा सके। जीवन हमें गुजारना है चाहे हंसकर, चाहे रोकर। मगर हंसते-हंसते जीवन गुजारना रोते रहने के मुकाबले कहीं कठिन होता है।

✻ हद से ज्यादा परिश्रम, सर्दी गर्मी का प्रभाव अच्छी व पौष्टिक खुराक का अभाव, गन्दा रहन-सहन, सुस्ती, निर्बलता, आलस्य ये सब मानव के शत्रु हैं, परन्तु इन सबसे भी अधिक उग्र और तीव्र प्रभाव डालनेवाला मनुष्य का अपना स्वभाव होता है। मनुष्य पर स्वयं के स्वभाव का जितना जबरदस्त प्रभाव पड़ता है, उतना किसी रोग या बीमारी का भी नहीं पड़ता। कुछ लोग किसी दुख या बीमारी के कारण चिड़चिड़े हो जाते हैं, किन्तु उस दुख-बीमारी की समाप्ति के साथ ही व्यक्ति की चिड़चिड़ाहट भी समाप्त हो जाती है, मगर स्वभावगत जो चिड़चिड़ाहट है, वह आजीवन समाप्त नहीं होती। मनुष्य का स्वभाव उसे शारीरिक रूप से ही नहीं, सामाजिक रूप से भी प्रभावित करता है। स्वभाव के कारण ही व्यक्ति लोकप्रिय या अलोकप्रिय होता है। कीर्ति और अपकीर्ति स्वभाव से प्राप्त होती है। जिसका स्वभाव मधुर हो, मिलनसार हो, प्रिय हो, जिसके होठों पर सदैव मुस्कान रहती हो, उसे सभी पसंद करते हैं, सभी उससे निकटता बढ़ाना चाहते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने क्षेत्र में बहुत लोकप्रिय होते हैं।

✻ वैवाहिक जीवन में तो पति-पत्नी का स्वभाव ही जीवन की बुनियाद है। घर की खुशहाली या बदहाली में स्वभाव का बड़ा महत्व होता है। दोनों का स्वभाव नम्र हो तो जीवन सार्थक हो जाता है।

✻ दान न देनेवाला व्यक्ति अपने सहज स्वभाव के कारण स्वर्ग का हकदार हो जाता है। स्वभाव ही मनुष्य के जीवन का स्वर्ग या नर्क निर्धारित करता है। इसलिए अपने स्वभाव को सरल और सहज बना लो। ऐसा स्वभाव बड़ा सुखदायी होता है और जब-जब व्यक्ति असहज हो जाता है तो उसके जीवन में स्वयं द्वारा उत्पन्न की हुई परेशानियां खड़ी होकर उसे संकट में डाल देती हैं और उसकी खुशियों को ग्रहण लग जाता है।

✻ हमारे स्वभाव का प्रभाव दूसरे की उन्नति या अवनति पर भी पड़ता है। हंसते खेलते जीवन में आग लग जाती है। स्वभाव के बल पर मनुष्य बहुत कुछ चमत्कार कर सकता है। मनुष्य यदि स्वभाव को सहज बनाए रखें तो उसके जीवन में खुशहाली आ सकती है।

✻ किन्ही भी परिस्थितियों में मनुष्य को विचलित नहीं होना चाहिए। अपने सहज स्वभाव से मृत्युपर विजय पा सकते हैं।

✻ क्रोध सदैव ही दुखदायी होता है। क्रोध में आकर मनुष्य कुछ भी कर बैठता है, बड़े से बड़ा अपराध हो जाता है। उत्तेजना में आकर व्यक्ति हत्या, आत्महत्या और खूनखराबा कर बैठता है। क्रोध के समय आपको खामोश रहना चाहिए।

✻ ईर्ष्या, द्वेष, मात्सर्य आदि में क्रोध सर्वाधिक हानिकारक है। मानव जीवन में इतना दुष्प्रभाव कोई अन्य भावना नहीं डालती जितना कि क्रोध। कई बार जब मनुष्य परिस्थितिजन्य ही सही आत्मसंयमी हो जाता है तो वह मधुरता और परम शांति को पा सकता है। शांति और धैर्य जीवन के मूलमंत्र है।